राजस्थानी-हिन्दी
शब्द कोश

[प्रथम खण्ड]

[अ से न]

सम्पादक :
प्रो० बदरीप्रसाद साकरिया
प्रो० भूपतिराम साकरिया

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

सम्पादक आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया
प्रो॰ भूपतिराम साकरिया

भूमिका

प्रेरणा स्रोत और कार्य:

छ दशक पूर्व मेरे जन्म स्थान बालोतरा में हाती के प्रारम्भ व प्रन्त्य-च्छ खल हुडदग मे राव आदि के भद्दे स्वाग बनते थे और अश्लील गीत गाये जाते थे। परिणामस्वरूप गाँव मे अनेक झगडे-टंटे हो जाते थे। कुछ सहयोगी-साथियो के साथ यह निश्चित किया गया कि इन निर्लज्ज सवारियो और अश्लील गीतो का सर्वथा बद कर वेद भगवान की सवारी निकाल कर, उसके साथ स्थान स्थान पर राजस्थानी भाषा मे और राजस्थानी तर्जों मे ही समाजसुधार के गायन गाये जाय तथा तत्सबधी प्रवचन राजस्थानी भाषा मे किये जाय।

सुधार-गीत बनाते समय राजस्थानी भाषा की अनूठी लक्षणा और व्यजना शक्ति का अनुभव हुआ और इन गीतो के ऐसे विशिष्ट शब्दो का कोश बनाने के सकल्प के साथ हिन्दी मे उनके अर्थ लिखने का कार्य आरम्भ किया। एक ही दिन मे दो सौ शब्दो का सकलन कर लिया। यही प्रेरणा का प्रथम सोपान था। कुछ पारिवारिक संस्कारो और कुछ सुधारवादी वृत्ति तथा साहित्यिक रुचि ने उपयुक्त प्रवृत्ति मे इतना रस बढाया कि थोडे ही समय मे निजी सग्रह के ग्रथो मे से मैंने अकेले ने लगभग दस हजार शब्दों का संकलन तथा रफ (Rough) सपादन कर लिया पर गाव मे विद्याप्रासक मडल, कन्या-पाठशाला (मारवाड मे प्रथम), सरस्वती पुस्तकालय आदि की स्थापना और उनका सुचारु रूप से सचालन इस प्रवृत्ति को और आगे बढाने मे कुछ बाधक ही रहे।

कुछ समय पश्चात् मेरे परम मित्र स्व० रामयश गुप्त 'नैणसी री ख्यात' को हस्तलिखित प्रति गूगा गाव से लाये और कहा कि इसका सपादन करना है। प्रतिलिपि तयार की गई। इस ग्रथ का सम्पादन करते समय शब्दो के अर्थ देने के लिये राजस्थानी भाषा के शब्द कोश की नितात आवश्यकता का अनुभव हुआ। ख्यात के शब्दो का एक अलग कोश भी आवश्यक था। लबे समय तक ख्यात की अन्य प्रतियो के अभाव मे काम मद गति से ही चलता रहा।

सन् १९३२ मे जोधपुर निजाम के समय राज्य के भूतपूर्व प्राइम मिनिस्टर सर सुखदेव प्रसाद काक ने जो डिंगल का एक अद्वितीय कोश स्व० प० राम-करणजी आसोपा के देखरेख मे निजी खर्चे से बनवा रहे थे, मेरी भी सहायक

सँम्पादक और व्यवस्थापक के रूप मे नियुक्ति की। काम को गति देने के लिये वहां छ सात चारण वधुग्रो को भी नियुक्त किया गया, जिनमें श्री देवकरण ग्रौर किशोरदानजी 'घूमरजी' मुख्य थे। सर शुकदेव प्रसाद के देहान्त तक सारा काम सुचारू रूप से चला, पर बाद म उनके ही पुत्र श्री घम नारायण काक ने उसे ग्रनावश्यक समझ कर बद कर दिया। तब तक यहां डिंगळ के मानक ग्र थो (राम रासो, रघुवर जस प्रकाश, क्रिसन रुकमणी री वेली ग्रादि) और डिंगळ गीतो मे से लक्षाधिक शब्द[1] छाट कर उदाहरणो के साथ चिट बद्ध कर उनका ग्रनुक्रमण कर लिया गया था।

कार्य बद होने पर सारी सामग्री एक छोटे कमरे मे पडी रही, जहां दीमको ग्रौर चूहो ने काफी सामग्री को ग्रपना भोज्य बनाया। कुछ वहां से उडा ली गई[2] ग्रौर शेष सहस्रो रुपये की ग्रमूल्य सामग्री श्री घमनारायण काक ने सादूल राजस्थानी रिसर्च इस्टीट्यूट को केवल इस शर्त पर दे दी कि ग्रथ के छपने पर, ग्राभार स्वीकार करते हुए उनके पिता का एक बडा चित्र उसमे दिया जाय। इस्टीट्यूट के ग्रधिकारियो के बार बार कहने पर मुझे जोधपुर जाना पडा। श्री घमनारायण काक ने ग्रपने पू० पिताजी सर शुकदेव प्रसाद काक के एक बडे फोटो ग्रौर उपयुक्त शर्त के साथ मुझे अवशिष्ट सारी सामग्री दी, जिसे लेकर मैं बीकानेर ग्राया ग्रौर इस्टीट्यूट को दे दी। उस ग्रद्वितीय कोश के चिटो के कॉलम्स बडी विद्वता से बनाये गये थे[3]। यदि वह सपूर्ण हो जाता तो राजस्थानी का विश्व कोश बनता।

---

१ ग्रनेक ग्र थों मे से एक एक शब्द ग्रनेक बार ग्राने से तथा एक शब्द के ग्रनेक ग्रर्थ होने के कारण चिटों म लिये शब्दो की सख्या बहुत बडी है। यह सख्या इन सब के एकीकरण मे कम हो जाती है।

२ यहां हमने जिन ग्रनेको हस्तलिखित ग्र थो की प्रतिलिपियाँ करवाई थीं, वे ग्रनेक वर्षों के पश्चात् जोधपुर के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति के यहां लिपिकारों के दैनिक काम पर मेरे हस्ताक्षरो सहित साश्चर्य देखने को मिली।

३ शब्द-चिट के कॉलम इस प्रकार थे—

१ मूल शब्द।	५ उदाहरण।	८ विरुद्ध शब्द।
२ व्युत्पत्ति।	६ उदाहरण का हिंदी ग्रनुवाद।	९ विरुद्ध शब्द का ग्रंग्रेजी पर्याय।
३ व्याकरण।		
४ हिन्दी में ग्रर्थ।	७ उदाहरण का ग्रंग्रेजी ग्रनुवाद।	१० विशेष विवरण (सांस्कृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक ग्रादि।
		११ विशेष विवरण का ग्रंग्रेजी ग्रनुवाद।

सन १६४७-४८ में स्व० नाथूदानजी महियारिया, उदयपुर की वीर सतसई जो जोधपुर सरकार द्वारा प्रकाशित की जा रही थी, उसकी टीका व संपादन करने के लिये मुझे व श्री सीताराम लालस को नियुक्त किया गया। काम सुचारू रूप से संपादित हुआ, कारणवश महियारियाजी को जोधपुर छोड़ना पड़ा और वे फिर लौट कर न आ सके। वीर सतसई का संपादन करते समय राजस्थानी शब्दकोश की नितांत आवश्यकता का हम दोनों संपादकों ने अनुभव किया व उसके निर्माण की योजना का भी विचार किया[4]।

इसी बीच सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीटयूट, बीकानेर में राजस्थान भारती (शोध पत्रिका) व राजस्थानी शब्द कोश के कार्य के लिये शोध सहायक के पद पर मेरी नियुक्ति हो गई। दो तीन वर्षों के पश्चात् मैं शोध-पत्रिका का सम्पादक नियुक्त किया गया। शोध-पत्रिका के कारण इंस्टीटयुट की प्रतिष्ठा तो बहुत बढ़ी पर धनाभाव और समुचित व्यवस्था के अभाव में कोश कार्य आगे नहीं बढ़ सका। कोश व पत्रिका सम्पादन के लिये मैं अकेला था। इतना होते हुये भी लगभग साठ सहस्र शब्दों का सम्पादन हो चुका था। इसी समय सरकारी नियमानुसार मुझे साठ वर्ष की अवस्था पर रिटायर कर दिया गया। जितना भी काम हो चुका था उसे प्रकाशित करवाया जा सकता था, पर इंस्टीट्युट वह भी न कर सका। दो एक वर्षों पूर्व समाचार मिला था कि कोश की बहुत सारी सामग्री इंस्टीट्युट से गायब हो गई है।

रिटायर होने के बाद मुझे खानगी रूप से कहा गया कि मैं बीकानेर में ही रहूँ और कार्य जारी रखूं, परन्तु मेरे चिरंजीव प्रा० भूपतिराम ने अकेला वहां रहना ठीक नहीं समझ करके मुझे वल्लभविद्यानगर (गुजरात) बुला लिया।

बालोतरा, जोधपुर वगैरह में कोश की जो सामग्री ऐसी ही पड़ी थी उसका जीर्णोद्धार और परिवर्द्धन करने का काम यहां आकर पुनः शुरू किया। *हमारी स्वयं की हस्तलिखित ग्रंथों की सामग्री जो बडेरों की संग्रह की हुई तो थी* ही, पर अनेक अन्य प्रकाशित ग्रंथों को क्रय करना पड़ा तथा मानक हस्तलिखित

---

४ वीर सतसई जोधपुर सरकार द्वारा प्रकाशित नहीं हुई। अपने मु... ... संपादक के रूप में देकर उन्होंने खुद ने प्रकाशित की। भूमिका में हम दोनों किसी के नाम तक का उल्लेख नहीं किया। मानदेय (Honorarium) तो अदृश्य हो गया।

, ग्रथा की प्रतिलिपियाँ करवानी पड़ी। इस प्रकार यहाँ आने पर कोश-कार्य एक नये ढग से प्रारम्भ करना पड़ा।

अत्यन्त विनम्रता पूर्वक कहा जा सकता है कि यह कोश जिस ढग से तैयार किया गया है वह एक अनूठा और पहिला मौलिक प्रकार है। इस कोश मे बोलचाल और प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य के शब्दो का चयन इस प्रकार किया गया है कि शोधार्थी हो या अध्यापक, विद्यार्थी हो या विद्वान्—सर्व-साधारण के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। शब्दो के अर्थ प्रामाणिकता से व प्रसगो के गहरे अध्ययन के पश्चात् लिखे गये हैं। अतएव साहस के साथ कहा जा सकता है कि मातृभाषा राजस्थानी का ऐसा कोश अद्यावधि प्रकाशित नही हो सका है।

यहाँ जानकारी के लिये नीचे एक ऐसी विषय सूची दी जा रही है जो शब्दो के चयन मे सहायक रही है —

१ मनुष्य। सबध-रिश्ते।
२ जातियाँ और उनके धधे।
३ परिधान (ऊनी रेशमी, सूती), आभूषण, शृ गारादि।
४ भोजन (साग-तरकारी, रोटी-बाटी इत्यादि भोज्य पदार्थ) व बरतन।
५ खेल, मनोरजन, उत्सव, त्योहार, मेले, पर्व।
६ धार्मिक—तीर्थ, देवी-देवता, धर्म व्रत, उपवास, भक्ति, पूजा, सम्प्रदाय, साधु-सन्यासी, मठ-मदिर।
७ शरीर—अग, उपाग, स्वास्थ्य, रोग, क्रियाएँ—खाना पीना, आना-जाना, हँसना-रोना, विचार-विनिमय, दौडना-भागना, जीना-मरना इत्यादि शरीर धर्म।
८ स्थान—मकान-दुकान, किला-महल रावला, गली-बाजार, मार्ग आदि और इनसे सबधित निर्माण इत्यादि।
९ वनस्पति—वृक्ष, पौधे, लता, फूल कद, मूल, बीज।
वर्षा, जल, वायु ऋतु, जलाशय। (नदी सागर झील, निवाण इत्यादि)।
१० खगोल—आकाश, नक्षत्र, ज्योतिष।
११ भूगोल—देश, गाव, नगर, पहाड, नदी और पृथ्वी।
१२ गणित—पट्टी-पहाडा, आना पाई।
१३ सस्कार—जन्म, झड़ूलिया (चौलकर्म), उपनयन, विवाह, मृत्यु (अग्नि सस्कार, प्रेतकर्म, श्राद्ध इत्यादि)।

१४ खेती—खेत, धान्य, हल चलगाडी, कुंआ कोष कृषक, पाणती और इनसे सम्बधित।

१५ भाषा, शिक्षा—१ राजस्थानी, हिन्दी, महाजनी अपभ्रंश इत्यादि से सम्बधित।

२ शिक्षा के अनेक अग—विद्याएं शास्त्र कलाएं विद्यार्थी, अध्यापक, अध्ययन और अध्यापन।

३ व्याकरण।

१६ साहित्य—गद्य, कविता छन्द, गीत रस, अलकार साहित्य के प्रकार, लोक साहित्य इत्यादि। लेखन सामग्री पुस्तकें इत्यादि।

१७ पशु-पक्षी-कीटादि—

(।) पालतू पशु—१ गाय, भैस आदि दुधारू (धीणो) से सबधित दूध दही छाछ मक्खन, घी चमडा बिलौने का सामान।

२ ऊंट, घोडा हाथी यन—सवारी के पशु और उनकी सजावट का सामान।

(॥) इतर—पशु-पक्षी, कीट-पतगे। समुद्री जीव।

(॥।) इन सबसे सबधित घास चारा दाना चुग्गा इत्यादि।

१८ व्यापार—दुकानदारी सट्टा दलाली आढत लेन-देन चिट्ठी-पत्री, हुडी दस्तावेज, (खत) बहीखाता व्याज-काटा इत्यादि।

१९ राज दरबार—महल पासवान, नाजर रणवास। राज परिवार, राजा, जागीरदार, छुटभाई जागीरी गोला लवाजमा विरद ताजीम पुरस्कार।

२० शासन—लगान जकात, नेग, अधिकारी।

२१ युद्ध—सेना शस्त्र-अस्त्र, योद्धा जूझार, जौहर युद्ध-क्षेत्र।

२२ चलन—सिक्के, तोल माप, नाप।

२३ भूगर्भ—खानें, खनिज पदाथ, धातुएं।

२४ विविध—(१) गुण-अवगुण पाप-पुण्य, स्वग-नरक।

(२) शारीरिक शक्तिया।

(३) मानसिक शक्तिया।

(४) रग, रगोली।

सक्षिप्त मे प्रयत्न यह रहा है कि कोश को सर्वांगपूर्ण बनाने के लिये कोई विषय अछूता नही रहे।

कोश संबंधी विशेषताएँ—

इस कोश की अनेक विशेषताओं में से अन्यतम विशेषता यह है कि राजस्थानी शब्दों के हिन्दी पर्याय, अर्थ और व्याख्याओं के अनन्तर काले अक्षरों में राजस्थानी पर्याय, अर्थ भी अधिकांश स्थलों पर दिये गये हैं, यथा—(१) **देवनागरी** *(ना०)* संस्कृत राजस्थानी हिन्दी, मराठी आदि भाषाओं की लिपि। **बाळबोध**। २ **छत**–*(अव्य०)* होते हुए। **होतायका**। इस प्रकार यह कोश केवल राजस्थानी-हिन्दी कोश न रह कर एक प्रकार का राजस्थानी-हिन्दी-राजस्थानी शब्द कोश बन गया है।

हम यह मानते हैं कि यदि हिन्दी को सही मानो में राजभाषा बनना है तो देश की भाषा-भगिनियों के अनेक शब्दों से अपने शब्द भंडार को भरना होगा। इसी दृष्टि से अनेक स्थानों पर मूल राजस्थानी शब्दों की व्याख्या करते समय वाक्य रचना में उनका हिन्दी व्याकरणानुसार प्रयोग किया गया है। यथा—(१) धमोळी–*(ना०)* २ धमोली का विशिष्ट भोजन ३ धमोली के लिये ननधियों द्वारा भेजी जाने वाली मिष्ठान्न आदि की सौगात। ४ स्त्रियों द्वारा धमोली भोजन करने की क्रिया। पृष्ठ १०३ पर आनापाण *(न०)* २ आने और पाणो के पहाड़े।

राजस्थानी भाषा में अपनाये गये कुछ अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में भी दिया गया है जिससे कि विदेशी भाषा के शब्द के तत्सम रूप से परिचित हुआ जा सके।

शब्दों के अर्थ देते समय सामान्यतः यह ध्यान रखा गया है कि प्रथम वह अर्थ दिया है जो अधिक प्रचलित हो। इसके बाद क्रमशः कम प्रचलित अर्थों को रखा गया है। प्रचलित और व्यवहृत सभी अर्थों को देने का प्रयत्न किया गया है फिर वे चाहे प्राचीन काव्य में प्रयुक्त हुए हों अथवा आधुनिक साहित्य में। इसी प्रकार कतिपय शब्दों के कुछ प्रचलित मुहावरे भी यथा स्थान दिये गये हैं। राजस्थानी भाषा की व्यंजना शक्ति का विद्वद्गण इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि अकेले 'हाथ' शब्द से बने तीन सौ मुहावरे हमारे संग्रह में हैं।

अक्षरादि क्रम में भी थोड़ा परिवर्तन हमने वैज्ञानिक दृष्टि से उचित समझा है। अनुस्वार वाले शब्द मात्राओं के पहिले न देकर अपनी अपनी मात्राओं के बाद दिये गये हैं। यथा—इस कोश में पृ० ६८० पर 'ना' का अंतिम शब्द 'नाहेसर रो मगरो' है इसके पश्चात् अनुस्वार युक्त 'नां' का प्रारम्भ होता है। यथा—नां, नांई नांखणो आदि।

'ट' और 'ड' तथा 'ल' और 'ळ' क्रमशः ट वर्ग और अंतस्थ वर्ग के हैं अतएव इनको अलग क्रम से न रख कर एक ही क्रम में रखा गया है, यथा—

पृ० ६७ पर आडो' शब्द है। उसके तुरन्त बाद आडो' आया है और फिर 'आडो अडि' आडो अवळो' आये है। इसी प्रकार पृ० २६४ पर खड' और खड' ह। पृ० २७१ पर खळ' खलक' 'खळाट खळकणो और खलकत' दशनीय है।

एक और परिवर्तन शब्दा के लिंग भेद सूचक सकेतो मे किया गया है। हिन्दी और सस्कृत कोशो मे प्रयुक्त पुल्लिग और स्त्रीलिंग के स्थान पर नर' और 'नारी' का प्रयोग उनके सक्षिप्त रूप न' और 'ना' मे किया गया है।

राजस्थान और राजस्थानी

एक समय था जब राजस्थानी भापा का ध्वज देश के विशाल भूभाग के साहित्याकाश मे लहरा रहा था और आज दशा यह है कि प्रातीय भापाओ की कक्षा मे भी उसे स्थान नही मिल सका है। मातृभापा की इस दयनीय स्थिति से हृदय क्षोभ से भर जाता है पर सतोप इतना ही है कि आज परिस्थिति ने अेक करवट बदली है और इसकी साहित्य-सेवी सतान अब मा-भारती के विभिन्न अगो और उपागो को सबल बनाने म सलग्न है।

जब राजस्थान दुहरी गुलामी (अग्रेजो और राजाओ) की मार से पीडित था, सब प्रकार की चेतना (शैक्षणिक, सामाजिक व राजनैतिक) के अभाव मे राजस्थानी को हिन्दी की एक बोली मान लिया गया। इस प्रकार राजस्थानी भापा अपने ही घर मे अपने न्याययुक्त आसन से च्युत कर दी गई— एक विशाल राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हो राजस्थान वासियो न भी इस असत्य को सत्य मान लिया। प्रसिद्ध भापाविद डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डॉ० ग्रियसन और डॉ० तस्सितोरी जैसे प्रसिद्ध देश विदेश के विद्वान् राजस्थानी को सवथा स्वतन्त्र भापा स्वीकार करते है। डॉ० चाटुर्ज्या का भापा वश-वृक्ष दशनीय है —
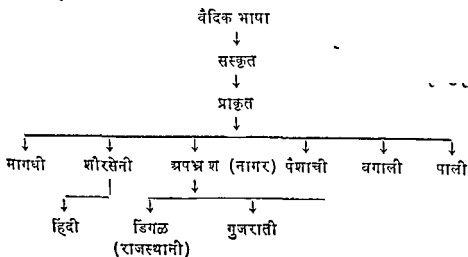
डॉ० तैस्सितोरी ने नागर अपभ्रंश और डिंगळ तथा गुजराती के बीच में पुरानी पश्चिमी राजस्थानी (जूनी गुजराती) को माना है, जिसे सारे गुजराती विद्वान् सहर्ष स्वीकार करते हैं तथा इसी से आधुनिक गुजराती और आधुनिक राजस्थानी का उद्भव हुआ है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी का कोई सीधा सम्बन्ध राजस्थानी से नहीं है।

राजस्थान में प्रयुक्त डिंगळ और पिंगळ भाषाओं के सम्बन्ध में भी थोड़ा विचार करने की आवश्यकता है। पिंगळ के भाषाकीय स्वरूप को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में यह एक शैली विशेष और तत्पश्चात् एक स्वतन्त्र भाषा के रूप में निखरी होगी। कुछ भी हो आज ये दोनों पृथक शैलियां न होकर स्वतन्त्र भाषायें हैं। डिंगळ निश्चय ही पिंगळ से प्राचीन है, अतएव डिंगल के अनुकरण पर नामाभिधान होना सुसंगत लगता है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी और अनेक देशी तथा विदेशी विद्वानों का यही मत है। वास्तव में व्रज मिश्रित राजस्थानी से उत्पन्न एक नई भाषा का नाम पिंगळ पड़ा। वैसे कृष्ण भक्ति के कारण राजस्थान व्रज भाषा का भी प्रेमी रहा है। व्रजभाषा के अनेक प्रसिद्ध और श्रेष्ठ कवि राजस्थान के भी रहे हैं।

राजस्थानी का प्राचीन नाम मरुभाषा है। भारतीय भाषा भगिनियों में अति प्राचीन और समृद्ध मरुभाषा का उद्गम वि० सं० ८३५ से भी बहुत पूर्व का है। वि० सं० ८३५ में भूतपूर्व मारवाड़ राज्यान्तगत जालोर नगर में मुनि उद्योतन सूरि रचित *कुवलयमाला* में वर्णित १८ भाषाओं में मरु भाषा का उल्लेख इस बात का पुष्ट प्रमाण है कि इस भाषा का साहित्य इससे भी पूर्व का रहा है—

> अप्पा-तुप्पा' भणिरे अह पेच्छइ मारुए तत्तो
> न उरे भल्लउ' भणिरे अह पच्छइ गुज्जरे अवरे
> अम्ह काउ तुम्ह' भणिरे अह पेच्छइ लाडे
> भाइ य इ भइणी तुब्भे भणिरे अह मालवे दिट्ठे

(कुवलयमाला)

इसका प्राणवान व सशक्त वीर रसीय साहित्य कालानुसार अतिशयोक्ति-पूर्ण होते हुये भी बेजोड़ तथा भारतीय साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है, जिसे राजस्थान वासियों ने अपने रक्तदान से सींचित व पल्लवित किया था। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर तो इस काव्य के कुछ ओजस्वी अंशों को सुनकर इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने मुक्तकंठ से इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

अनेक सम्प्रदायों (रामसनेही, जसनाथी, विश्नोई, दादूपंथ, निरंजनी आदि) के प्रवर्त्तक सिद्ध-महात्मा और मीरा, पृथ्वीराज आदि शताधिक भक्तों की रसप्लावित धारा ने इस प्रदेश को ही नहीं, देश के समूचे भक्तिकाल को सविशेष

प्रभावित किया है। इसका लोक साहित्य तो हमारी अगाध सचित निधि है, जो राजस्थान के सास्कृतिक जीवन को सही परिप्रेक्ष्य मे प्रतिबिम्बित करने का मुकुर है।

विधाओ मे वैविध्य और राशि मे विपुलता के होते हुये भी देश के स्वतन्त्रता-युद्ध मे और स्वातन्त्र्य-सूर्य के उदित होने के पश्चात् भी राजनैतिक चेतना के अभाव मे देश के सविधान मे इसे मान्यता नही दी गई। राजस्थान के राष्ट्र प्रेम और राजभाषा के प्रति उसकी आसक्ति को एक विशिष्ट गुण के स्थान पर कमजोरी माना गया और राजस्थानी को एक बोली के रूप मे सतुष्ट होना पडा।

आज जब राजस्थान के सपूत इस ओर जाग्रत हुये हैं सरकारी मान्यता के अभाव मे भी इस भाषा के आधुनिक साहित्य के निर्माण मे अपनी उत्कट इच्छा, अदम्य साहस और प्रतिभा के त्रिवेणी सगम से अपूर्व योगदान दे रहे है। कच्छप-चाल से ही सही, पर विविध विधाओ में जो अधुनातन विचारो स प्रेरित साहित्य निर्मित किया जा रहा है, वह कम प्रशसनीय नही है। इधर राजस्थानी साहित्य सगम की स्थापना केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा राजस्थानी भाषा को अन्य भारतीय भाषाओ के समकक्ष साहित्यिक मान्यता प्रदान करना तथा राजस्थान सरकार द्वारा एक विषय (ऐच्छिक ही सही) के रूप मे विविध स्तरो पर विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रमो मे स्थान देना, इसकी उपयु क्त धीमी गति को त्वरित करने मे सहायक बने है।

भाषा की एकरूपता को लेकर जाने अनजाने एक आतरिक कलह और द्वपवृत्ति को बाह्य तत्वो द्वारा उभारा जा रहा है। आधुनिक काल मे साहित्य निर्माण की दृष्टि से एकरूपता की नितात आवश्यकता को सभी स्वीकार करते है और इसके लिये सद्प्रयत्न भी हुये है तथा एकरूपता के लक्ष्य पर पहुँचा जा रहा है, पर इसको लेकर चितित होने की आवश्यकता नहीं है। हमारे समक्ष गुजराती तथा अन्य भाषाओ के उदाहरण प्रस्तुत है। स्वय हिन्दी मे ब्रज, अवधी, पहाडी, बुन्देलखडी, भोजपुरी आदि अनेक बोलिया है। फिर राजस्थानी की बोलियो से ही चिंतित होने की बात समझ मे नही आ रही है।

यह ठीक है कि राजस्थानी मे आधुनिक कोश का अभाव अब तक खटकता था, पर इस भाषा मे कोशो का अभाव कभी न रहा। **डिंगळ नाम माळा नागराज डिंगळ कोश हमीर नाममाळा नाममाळा अवधान माळा, डिंगळ कोश, अनेकारथी कोश, एकाक्षरी नाम माळा** आदि अनेक कोश विद्यमान है।

व्याकरण को समझने के लिये इस कोश मे प्रयुक्त सकेतो की एक अलग तालिका दी जा रही है।

कोश के प्रकाशक श्री मूलचंदजी गुप्ता साधुवाद के पात्र हैं। कोश के जैसे बृहद् प्रकाशन के लिये जब बड़े बड़े प्रकाशक कतराते हैं तब मातृभाषा की सेवा करने के लिए श्री गुप्ता के साहस की जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम होगी। यहाँ इसी प्रकाशन संस्था के प्रतिनिधि श्री कुंभसिंह राठौड को भुलाया नहीं जा सकता।

कोश का द्वितीय भाग भी प्रकाशनाधीन है और कुछ ही मासोपरांत वह भी विद्या-व्यसनियों के हाथ में होगा।

मातृभूमि से दूर इस अंतिम अवस्था में, मैं अपनी जिस साध को पूरी कर सका हूं, वह मातृभूमि की रज की कृपा और आशीर्वाद का प्रताप है, नहीं तो किसी संस्था या सरकारी सहायता के बिना शब्द कोश जैसे महत्वपूर्ण और व्यय साध्य कार्य का पूर्ण होना असम्भव था। राजस्थान छोडने के बाद इसकी आशा ही छोड दी थी।

इस कार्य में मेरे पुत्र चि० प्रो० भूपतिराम का सहयोग नहीं होता तो इस रूप में आज भी इसका तैयार होना कठिन था। दो युगों से गुजरात में रहते हुये और हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन करते रहने पर भी मातृभूमि और मातृ-भाषा के प्रति यह उसकी असीम भक्ति का परिचायक है। **आधुनिक राजस्थानी साहित्य और महाकवि पृथ्वीराज राठोड व्यक्तित्व और कृतित्व** आदि उसके मौलिक ग्रंथ तथा अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियाँ इसकी साक्षी हैं।

अध्यापन कार्य की अनेक-विध प्रवृत्तियों, एन सी सी, विश्व-विद्यालय की सेनेट का सदस्य आदि अनेक स्थानिक गति-विधियों में भाग लेते हुये जो अमूल्य सहयोग (शब्द संकलन अर्थ-विचार, प्रेस कापी बनाने प्रूफ संशोधन तथा पत्र-व्यवहार आदि) रहा है उसको तो उसने मात्र सेवा और कर्त्तव्य समझ कर ही किया है, परन्तु उसका मूल्य आंका नहीं जा सकता। शतशः आशीर्वाद।

डॉ० नरेन्द्र भानावत ने दो एक वर्ष पूर्व कोश को प्रकाशित करने की तत्परता बतलाई थी और सुकवि मुकनसिंह बीदावत ने मेरे आवास आदि की व्यवस्था करने की जिम्मेवारी उठाने का सहज भाव से जो निमंत्रण दिया था, उसके लिये उनका आभारी हूँ।

[illegible handwritten signature] सीतारिया

सकेत

(अनु०)	अनुकरण
(अव्य०)	अव्यय
(आ क्रि०)	आज्ञासूचक क्रिया
(उदा०)	उदाहरण
(उप०)	उपसर्ग
(ए०व०)	एक वचन
(का०)	काव्य
(क्रि०)	क्रिया
(क्रि०भ०)	क्रिया भविष्यत् काल
(क्रि०भ०का०)	क्रिया भविष्यत् काल
(क्रि०भू०)	क्रिया भूतकाल
(क्रि०भू०का०)	क्रिया भूतकाल
(क्रि०वि०)	क्रिया विशेषण
(जैन०)	जैन धर्म सम्बन्धी
(जस०जसल०)	जसलमेरी
(ज्यो०)	ज्योतिष शास्त्र
(त०पु०)	तृतीय पुरुष
(दे०)	देखिये
(द्वि० पु०)	द्वितीय पुरुष
(न०)	नर जाति सज्ञा
(न०ब०व०)	नर जाति बहुवचन
(ना०)	नारी जाति सज्ञा
(ना०ब०व०)	नारी जाति बहुवचन
(प्र० या प्रत्य०)	प्रत्यय
(प्र पु०)	प्रथम पुरुष
(ब० व०)	बहुवचन
(ब० वा०)	बहुवाची प्रयोग
(भ०क्रि०)	भविष्यत् क्रिया
(भू०)	भूतकाल
(भू०कृ०)	भूतकाल कृदन्त
(भू०क्रि०)	भूतकाल क्रिया
(वव्य०)	वर्ण व्यतिक्रम
(वि०)	विशेषण

(वि०न०)	विशेषण नर जाति
(वि०ना०)	विशेषण नारी जाति
(विभ०)	विभक्ति
(वि०वि०)	विशेष विवरण
(वि०सर्व०)	विशेषण सवनाम
(व्या०)	व्याकरण
(शिला०)	शिलालेख
(सव०)	सवनाम
(स०)	अर्थ सख्या

अ
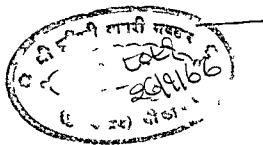
अ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का पहला स्वर वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है।

अ—१ शब्दों के पहले लगने वाला एक उपसर्ग जिसका अर्थ—निषेध अभाव थोड़ा अधिक्षेप इत्यादि होता है जैसे—अकटक अबोलो, अथाघ अग्वार इत्यादि में। स्वर से आरंभ होने वाले शब्दों के पहले आने पर इसका रूप 'अण' हो जाता है। २ संस्कृत परिवार की भाषाओं की वर्णमालाओं के व्यंजन वर्णों की स्वर मात्राओं में स्वरूप रहित प्रथम मात्रा। (न०) ३ शिव। ४ ब्रह्मा। ५ विष्णु।

अइयो—(अव्य०) ओ अरे हे आदि संबोधन सूचक शब्द।

अउब—(वि०) अपूर्व। अद्भुत। अनोखो।

अउबगति—(ना०) १ अपूर्व गति। २ अद्भुत गति। (क्रि० वि०) अद्भुत गति से।

अउबभत—(ना०) १ अपूर्व भांति। २ अद्भुत भांति। (क्रि० वि०) अद्भुत भांति से।

अउर—दे० और।

अउळग—(न०) १ उल्लंघन। २ सेवा। चाकरी। ३ याद। स्मृति। ओळग।

अऊत—(वि०) १ अपुत्र। निसंतान। निपूतो। २ निडर। ३ कुपूत।

अऊती—(वि०) निसंतान। निपूती।

अक—(न०) १ दुख। २ पाप। ३ आक। आकड़ो।

अकच—(वि०) केश रहित। गंजो।

अकज—(न०) १ नाश। २ बुरा काम। अकाज। (वि०) बेगार। (अव्य०) बिना मतलब के। व्यर्थ। अणहूतो। अणुतो।

अकज्ज—दे० अकज।

अकठ—(वि०) जिसके थन कठिन न हों और आसानी से दोहे जा सकें (वह गाय भैंस आदि)।

अकड़—(ना०) १ ऐंठ। मरोड़। २ अभिमान ३ अनम्रता। ४ हठ। ५ धृष्टता। ढिठाई। (वि०) १ कड़ा। सख्त। २ नहीं झुकने वाला।

अकड़णो—(क्रि०) १ ऐंठ जाना। अकड़ जाना। २ ठिठुरना। ३ हठ करना। ४ घमंड करना। ५ धृष्टता करना। ६ झगड़ा करना। ७ कड़ा होना।

अकड़पणो—दे० अकड़।

अकड़ाई—दे० अकड़।

अकड़ाट—दे० अकड़।

अकड़ाणो—(क्रि०) १ घमंड करना। अकड़ना। २ शरीर (की नसें) में वायु से पीड़ा होना। ३ शरीर के किसी अंग का अकड़ जाना।

अकड़ावणो—दे० अकड़ाणो।

अकड़ीजणो—(क्रि०) १ सर्दी या वायु से शरीर (के किसी अंग) का ऐंठ जाना। अकड़ जाना। २ ठिठुरना। ३ तनना। ४ जिद करना। ५ घमंड करना।

अकडाडियो—(न०) आक का फल। आकड़ डोडो।

अकढ—(वि०) १ नहीं निकाला हुआ। २ नहीं उबाला हुआ (दूध)।

अवढियो—दे० अवट ।
अवतो—दे० अगतो ।
अवथ—(वि०) १ नही वहन याग्य । २ जो नही वही गई हा ।
अवथ वथ—(ना०) १ अवथनीय बात । २ अवथनीय घटना । ३ जिसवा वर्णन नही किया जा सवे उसवी चर्चा । ४ ईश्वर वे अवथनीय गुणों वा वर्णन ।
अवथनीय—(वि०) जिसवा वर्णन नही हो सवे । अवर्णनीय ।
अवन ववारी—(वि०) १ आजीवन ववारी । (ना०) ववारा । २ अखंड ववारी । १ अक्षतयोनि । २ ब्रह्मचारिणी ।
अवन वँवारो—(वि०) १ वह जिसवा वौमार्य खंडित नही हुआ हो । अखंड ववारा । २ आजीवन ववारा । वाँढो । ३ अक्षत वीर्य ।
अवन कुँवारो—दे० अवन वँवारो ।
अवबर—(न०) एव मुगल बादशाह (१५५६ १६०५ ई०) वा नाम ।
अववध—(वि०) १ बिना खोला हुआ । २ बिना तोडा हुआ । ३ पूरा । समस्त । ४ ज्यो वा त्यो । ५ सीलबंध । साबुत । आखो ।
अवरण—(वि०) १ जिसवो वोई वर न सवे । जो किया नही जा सवे । २ जो वरने योग्य नही । ३ अघटनीय । ४ असंभावीय ।
अवरण-करण—(न०) १ ईश्वर । २ नही किये जा सवने वाले वो वरने वाला ।
अवरणीय—(वि०) नही वरने योग्य ।
अवरम—(न०) १ अवर्म । २ कुवर्म । खोटो वाम ।
अवरमी—(वि०) १ अवर्मी । पापी । २ बुरा वाम वरने वाला । कुवर्मी ।
अवरमो—(वि०) निवम्मा । १ निकामो । २ निवरो । दे० अवरमी ।

अवराळ—(वि०) १ भयवर । विवराल । २ जो भयवर न हो ।
अवरूर—दे० अक्रूर ।
अवण—(वि०) १ बिना कान वाला । २ बहरा । (न०) साँप ।
अवतव्य—(वि०) नही वरने योग्य । अनुचित । (न०) दुराचरण ।
अवर्ता—(वि०) १ न वरने वाला । २ मानसिव रूप से वर्मों से अलिप्त ।
अवम—दे० अवरम ।
अवमण्य—(वि०) निवम्मा । निकामो ।
अवर्मा—(वि०) १ बिना वाम वा । २ आलसी । ३ निवम्मा । निकामो । ४ फुरसत । ववार । निवरो । दे० अवर्मी । अकरमो ।
अकर्मी—दे० अवरमा ।
अवल—(ना०) बुद्धि । अवल । समझ ।
अवळ—(वि०) १ जो समझा नही जा सवे । २ समर्थ । शक्तिमान । ३ सीमा रहित । असीम । ४ समस्त । संपूर्ण । समूचा । ५ व्याकुल । (नि०) १ परब्रह्म । २ ईश्वर । ३ शिव ।
अवलवरो-(न०) अवरवरा । एव औषधि ।
अकलमद—(वि०) १ अक्लमद । बुद्धिमान । समझदार । २ मद अवल वा । बेसमझ ।
अवलवान—(वि) अवलमद । समझदार ।
अळव-विवळ—(वि०) आकुल-व्याकुल । घबराया हुआ ।
अवळव—(वि०) १ वलव रहित । निष्वलव । २ निर्दोष । (न०) ईश्वर ।
अवळाणो—दे० अवळावणो ।
अवळामण—(ना०) १ घबराहट । व्याकुलता । बेचैनी । २ अमूझण । ३ ऊब ।
अवळावणो—(क्रि०) १ अकुलाना । घबराना । २ उवताना । ऊबना । ऊबणो ।
अवलीम—(न०) १ राज्य । २ देश ।
अवळीम—(न०) ईश्वर ।

अवल्मनाय
का ग
वर्तान्-
न का ग
अक गा
सागे
अक्षु-
(वि०
अक्षु
२
अक

अकल्पनीय—(वि०) जिसकी कल्पना नहीं की जा सके। अकळ।

अकल्पित—(वि०) १ जिसकी कल्पना भी न की गई हो। २ कल्पना रहित।

अकल्याण—(न०) अशुभ। अमंगल। खोटो। मूंडो।

अकस—(ना०) १ ईर्ष्या। २ शत्रुता। (वि०) कस रहित। सार हीन।

अकसर—(अव्य०) १ प्राय। बहुधा। २ बार बार।

अक्सीर—(वि०) १ निश्चित रूप से प्रभावी। २ अचूक गुणकारी। ३ सब रोगों के लिए अचूक (दवा)। रामबाण (दवा)।

अकस्मात—(क्रि० वि०) १ अचानक। सहसा। २ दैव योग से।

अकंटक—(वि०) १ निष्कंटक। २ निर्विघ्न।

अकाज—(न०) १ बुरा काम। कुकर्म। २ बिना काम। ३ अनर्थ। ४ दुर्घटना। ५ विघ्न। ६ हानि। नुकसान। ७ कार्याभाव।

अकाटय—(वि०) १ जो काटा नहीं जा सके। २ जिसका खंडन नहीं हो सके।

अकाथ—(वि०) १ अशक्त। निर्बल। निबळो। २ अकथ्य। ३ वृथा। बिरथा।

अकादमी—(ना०) १ विद्या मंदिर। २ विद्वत् परिषद्।

अकाम—(वि०) १ कामना रहित। इच्छा रहित। (क्रि० वि०) अकारण। व्यर्थ। (न०) १ हानि। नुकसान। २ विघ्न। ३ खराब काम। खोटो काम। ४ नाश।

अकामी—(वि०) कामना रहित। निस्पृह।

अकाय—(न०) १ कामदेव। (वि०) १ अशरीरी। देह रहित। २ निराकार। ३ अजन्मा।

अकार—(न०) १ 'अ' वर्ण। २ आकार। आकृति। (वि०) बेकार। बेकाम।

अकारज—दे० अकाज।

अकारण—(वि०) बिना कारण। निष्प्रयोजन।

अकारथ—(क्रि० वि०) व्यर्थ। फिजूल।

अकारो—(वि०) १ प्रचंड। तेज। करारा। २ अप्रिय। नापसंद। ३ कठोर। कठिन। ४ अधिक। ५ व्यय। ६ जबरदस्त।

अकाय—दे० अग्रम।

अकाळ—(न०) १ दुष्काल। अकाल। काळ। (वि०) असमय। कुसमय।

अकाळणी—(ना०) मृत्यु। मौत।

अकाळ मिरतू—दे० अकाळ मौत।

अकाल मृत्यु—दे० अकाळ मौत।

अकाळमौत—(ना०) १ असामयिक मृत्यु। २ बचपन व युवावस्था की मृत्यु। ३ डूबने जलने या गिरने आदि अकस्मातों से होने वाली मृत्यु।

अकास—(न०) १ आकाश। २ शून्य स्थान। (वि०) शून्य।

अकास गंगा—(ना०) उत्तर दक्षिण में विस्तृत बहुत घने तारों का समूह। आकाश गंगा।

अकास दीवो—(न०) आकाश दीप।

अकास वाणी—(ना०) १ आकाश वाणी। देववाणी। २ रेडियो स्टेशन।

अकास-वेल—(ना०) आकाश वल्ली। अमर बेल।

अकासी विरत—(ना०) १ वर्षा द्वारा खेतों से प्राप्त होने वाले आजीविका के साधन। २ भिक्षा वृत्ति। ३ पराश्रित और अनिश्चित आमदनी के साधन।

अकीक—(न०) एक प्रकार का चिकना कीमती पत्थर।

अकीध—दे० अकीधो।

अकीधो—(क्रि० वि०) नहीं किया। (वि०) नहीं किया हुआ।

अक्षय तृतीया—दे० आखा तीज।
अक्षय वट—दे० अग वड।
अक्षर—(न०) १ वह वर्ण जो शब्द के साथ जुडा हुआ हो। (व्या०) २ अकारादि वर्ण। आखर। ३ आत्मा। ४ सत्य। ५ ब्रह्म। ६ मोक्ष। ७ विधि का लेख। (वि०) १ नित्य। २ अविनाशी।
अक्षरमेळ—(न०) वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रम की समानता वाला वृत्त। अक्षरवृत्त। वर्णिक छंद। आखरमेळ। (का०)।
अक्षि—(ना०) आंख।
अक्षुण्ण—(वि०) बिना टूटा हुआ। अखंडित।
अक्षोट—(न०) अखरोट।
अक्षोणी—दे० अक्षौहिणी।
अक्षौहिणी—(ना०) प्राचीन युग में सेना का एक परिमाण जिसमें १०९३५० पदल ६५६१० घोड़े २१८७० रथ और हाथी रहते थे।
अक्स—(न०) १ प्रतिबिंब। २ चित्र।
अक्सर—(क्रि० वि०) प्राय। बहुधा। घणो करने।
अखज—(वि०) नही खाने योग्य। अखाद्य। (न०) १ नही खाने योग्य पदार्थ। २ मासाहार।
अखड—(वि०) १ बिना जोता हुआ। (खेत)। जो खडा नही गया हो। परती। पडत। पडतल। अणखड।
अखडी—(वि०) बिना खडी या जोती हुई (जमीन)। परती। पडतल।
अखडैत—(वि०) १ अखाडा बाज। २ मल्ल। ३ वीर। ४ जबरदस्त। ५ रणजीत।
अखण—(न०) १ मुँह। मूंढो। २ कथन।
अखणो—(क्रि०) कहना।

अखत—(न०) १ पूजा के काम में आने वाले बिना टूटे चावल। अक्षत। २ चावल। ३ धान्य। भाषा। ४ मंत्र वाणी। ५ नमाज। (वि०) १ जो टूटा न हो। २ जिसके घाव न लगा हो। अक्षत।
अखतरो—(न०) १ प्रयोग। २ आजमाइश। अजमास।
अख्तियार—(न०) इख्तियार। अधिकार।
अखत्र—(वि०) १ अखंडित। अक्षत। २ अजस्र। निरंतर। (न०) अक्षत चावल।
अखबार—(न०) समाचार पत्र। छापो।
अखम—(वि०) १ लाचार। विवश। २ अशक्त। ३ अधा। आधो। ४ क्षमा रहित। ५ क्षमता रहित। ६ असह्य। ७ असमर्थ।
अखर—(न०) अक्षर। आखर। दे० अक्षर।
अखरणो—(क्रि०) अखरना। बुरा लगना।
अखरावट—(ना०) बार बार कह कर किसी बात को पक्का करना। खरावट। दे० अखरावळ।
अखरावणो—(क्रि०) १ बार बार कह कर बात को पक्का करना। २ सामने वाले से बार बार कहलवाकर बात को पक्का करना।
अखरावळ—(ना०) १ अक्षरावली। अक्षर पंक्ति। २ वर्णानुक्रम। अखरावट। ३ अनुक्रमणिका। ४ एक प्रकार की कविता जिसके चरण (पंक्ति) वर्णमाला के अक्षर क्रम के अनुसार आरंभ होते है। अक्षरौटी। अखरावट। ५ लिखावट। ६ साक्षी के रूप में की जाने वाली लिखा पढी। साक्षी पत्र। ७ जमानतनामा।
अखरावळी—(ना०) १ अक्षरावली। अक्षर पंक्ति। २ वर्ण माला।
अखरे—(अव्य०) १ अंको में लिखने के

साथ संख्या का अक्षरों में लिखा जाना। २ हुंडी चैक आदि में रुपयों की संख्या का शब्दों द्वारा उल्लेख करने का पारिभाषिक शब्द। जैसे—रु० १०५) अखरै रुपिया एक सौ पाच। ३ अक्षरों में। अक्षरों द्वारा व्यक्त। (वि०) खरा। पक्का निश्चय।

अखरो—(वि०) १ कृत्रिम। बनावटी। खोटो। २ झूठा। कूड़ो। ३ कठिन। मुश्किल।

अखरोट—(न०) एक मेवा।

अखग—(वि०) जिसके दाग न लगाया गया हो (पशु)। २ जिसके दाग (तप्त चिन्ह) न लगा हुआ हो (पशु)। ३ अक्षय।

अखड—(वि०) १ खडित नहीं। पूरा। २ समस्त। आखो। ३ अविरल। निरतर।

अखडळ—(न०) आखडल। इद्र।

अखडित—(वि०) जिसके टुकड़े न हुए हों। पूरा। आखो। साबतो।

अखाडमल—(न०) १ योद्धा। २ पहलवान।

अखाडसिध—दे० अखाडमल।

अखाडो—(न०) १ साधुओं का मठ। २ अखाड़े के साधुओं की मडली व जमात। ३ ख्याल तमाशों में अभिनय करने वालों का (गोलाकार स्थान) व उसके आजू बाजू गायक मडली के गोलाकार रूप में बैठने का घेरा व स्थान। ४ नृत्य सभा। ५ नाट्य शाला। ६ व्यायाम शाला। ७ कुश्ती बाजों का स्थान। दगल। ८ नशा बाजों के एकत्रित होने का स्थान। ९ जूआ खेलने वालों का अड्डा। १० युद्ध भूमि। ११ युद्ध। १२ सेना। १३ तमाशा। १४ चमत्कारपूर्ण कार्य।

अखातो—(वि०) १ भूखा। दीन। गरीब।

अखार—(वि०) १ क्षार रहित। २ मिलावट रहित। ३ क्रोध रहित। ४ शत्रुता रहित।

अखियात—(वि०) १ प्रसिद्ध। आख्यात। २ आश्चर्यजनक। ३ स्तुत्य। ४ चिरस्थायी। (न०) यश। कीर्ति।

अखिर—दे० आखिर।

अखिल—(वि०) १ सपूर्ण। समग्र। २ सर्वांगपूर्ण।

अखिलपति—(न०) परमेश्वर।

अखिलेश—(न०) परमेश्वर।

अखी—(वि०) १ जिसका क्षय न हो। अक्षय्य। २ न मरने वाला। अमर। ३ कीर्तिमान। यशस्वी।

अखी अमावस—(ना०) आखातीज के पहले की अमावस। वैशाख मास की अमावस्या।

अखीर—(न०) अत। आखिर। (क्रि० वि०) आखिर में। अत में।

अखी रहो—(अ०य०) गुरुजनों की ओर से दिया जाने वाला आशीवचन। अमर रहो, यशस्वी बनो इत्यादि आशीर्वादात्मक पद।

अखूट—(वि०) नहीं खूटने वाला। अपरिमित। अपार।

अखूत—(न०) १ शस्त्र। २ कवच। ३ वीर पुरुष। (वि०) उतावला।

अखूतो—(वि०) १ उतावला। २ बचन।

अखेलो—(वि०) १ जो सबके लिए सुगम नहीं ऐसा खेल (युद्ध) खेलने वाला। २ अद्भुत। ३ व्याकुल। दुखी। ४ मरणासन्न। ५ असाध्य रोग वाला। (न०) १ असाध्य रोगावस्था। २ असाध्य रोगी।

अखेलो खेल—(न०) १ जिसे सर्वसाधारण नहीं खेल सकता ऐसा खेल। युद्ध। २ अद्भुत कार्य। ३ विचित्र खेल।

१ ईश्वर । २ वृक्ष । ३ पर्वत । ४ भविष्य । ५ दूरदर्शिता ।

अगम चेती—(वि०) दूरदर्शी । आगम सोचू । आगम सोची ।

अगम निगम—(न०) १ आगम निगम । वेद और शास्त्र । २ वेद । ३ वेद भी जिसे नहीं जानता वह । ४ ब्रह्मज्ञान । ५ ब्रह्मज्ञान की चर्चा । ६ योग विद्या । योग शास्त्र । ७ भूत और भविष्य ।

अगमबुद्धि—(ना०) आगम बुद्धि । दूरदर्शिता । (वि०) दूरदर्शी ।

अगमभाखी—(वि०) १ भविष्य वक्ता । २ योग सिद्धि द्वारा भविष्य कथन करने वाला ।

अगमवाणी—(ना०) आगम वाणी । गूढ़ गिरा । २ रहस्य वाणी ।

अगम्या—(ना०) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध है जैसे—माता, कन्या गुरुपत्नी इत्यादि ।

अगर—(न०) १ सुगंध वाला एक वृक्ष । २ एक औषधि । (क्रि० वि०) १ यदि । जो । २ आगे ।

अगरबत्ती—(ना०) अगर आदि सुगंधिदार वस्तुओं की बनाई हुई बत्ती जो सुगंध के लिए जलाई जाती है । धूपबत्ती ।

अगरवाळ—(न०) एक वैश्य जाति । अग्रवाल ।

अगरवाळण—(ना०) अग्रवाल जाति की स्त्री ।

अगरवाळी—दे० अगरवाळण ।

अगराटो—(वि०) बिना बिछौने की खाट पर सोया हुआ ।

अगरेल—(न०) १ अगर का तेल । २ अगर वृक्ष ।

अगल बगल—(क्रि० वि०) १ आस-पास । २ इधर उधर ।

अगलूणो—(वि०) १ अगला । पहले का । २ व्यतीत काल का । ३ आगे का । आने वाले समय का । ४ सामने का ।

अगलो (वि०) १ पहले का । भूत काल का । २ अगला । आगलो । भविष्य काल का । ३ सामने का । आगे का ।

अगवाई—(ना०) अतिथि का सामने जाकर किया जाने वालास्वागत ।

अगवाणी— (वि०) १ मुख्य । प्रधान । २ आगे रहनेवाला । आगे चलनेवाला । (ना०) अतिथि का सामने जाकर किया जाने वाला स्वागत ।

अगस्त—(न०) १ ईसवी सन का आठवां महीना । ऑगस्ट । २ एक ऋषि का नाम । अगस्त्य ऋषि । ३ एक तारा ।

अगहन—(न०) मार्गशीर्ष मास ।

अगज—(वि०) १ जिसका नाश नहीं किया जा सके । २ जिस पर विजय नहीं पाई जा सके ।

अगजी—(वि०) १ जिसका नाश नहीं किया जा सके । २ जिस पर विजय नहीं पाई जा सके । अजेय । (न०) गढ़ । किला ।

अगड—(न०) कवच । रुण्ड ।

अगा—(क्रि० वि०) १ पहले । पूर्व । २ सामने । सम्मुख ।

अगाउ—(वि०) १ पहले का । पूर्व समय का । २ आगे वाला । (क्रि० वि०) १ पहले । पेश्तर । २ आगे ।

अगाउ थी—(अव्य०) पहले से । आगे से ।

अगाउ लग—(अव्य०) आगे तक ।

अगाऊ — दे० अगाउ ।

अगाडी—(क्रि०वि०) १ आगे । सामने । २ पहले । ३ भविष्य में । (ना०) १ घोडे के अगले पैर का बंधन । २ प्रथम आक्रमण ।

अगाडी पछाडी—(ना० ब० व०) घोडे के आगे और पीछे के पांवों में बांधने की दो रस्सियां । (अव्य०) आगे और पीछे ।

अगात—*(वि०)* निराकार । अशरीरी ।
अगाध—*(वि०)* १ अथाह । अत्यंत । २ गहरा । ऊंडो ।
अगार—*(न०)* १ कोष । खजाना । आगार । २ घर ।
अगालग—*(क्रि० वि०)* १ आगे तक । २ लगातार । आगूलगू ।
अगाळी—*(ना०)* बरछी ।
अगास—*(न०)* आकाश ।
अगासी—*(ना०)* १ छत पर बना छोटा छप्पर । २ छत पर की खुली जगह ।
अगाह—*(वि०)* १ अगाध । अथाह । २ गहरा । ऊंडो । ३ जो पकड़ा न जा सके । ४ अग्राह्य । *(क्रि० वि०)* १ आगे । २ सम्मुख ।
अगाहट—*(न०)* जमीन का दान ।
अगा—*(वि०)* १ आगे का । २ पहला । *(न०)* १ बीता हुआ समय । २ आने वाला समय । *(क्रि० वि०)* बीते हुए समय में । २ आने वाले समय में । ३ सामने ।
अगिन—*(ना०)* अग्नि ।
अगिनाण—*(ना०)* १ अग्नि ज्वाला । २ अनाज ।
अगियाण—दे० अनाज ।
अगिवाण—*(वि०)* १ अगुआ । मुखिया । २ मार्ग दर्शक ।
अगुओ—*(वि०)* १ अगुआ । मुखिया । २ मार्ग दर्शक ।
अगुण—*(न०)* १ निर्गुण । गुणरहित । २ औगुन । दोष । बुराई ।
अगुवाणि—दे० अगिवाणी ।
अगुवो—दे० अगुओ ।
अगूढ—*(वि०)* १ जो गूढ़ न हो । स्पष्ट । २ सरल ।
अगूण—*(न०)* पूर्व दिशा ।
अगत—दे० आगतरी ।
अगेती—दे० आगतरी ।
अगेस—*(क्रि० वि०)* आगे ।
अगेह—*(वि०)* घर रहित । बिना घर का ।
अग—*(क्रि० वि०)* १ पूर्व काल में । अतीत में । २ आगे । ३ सम्मुख । ४ पहले । ५ भविष्य में ।
अगोचर—*(वि०)* १ जो इंद्रियों से न जाना जा सके । इंद्रियातीत । २ अव्यक्त । *(न०)* १ परब्रह्म । परमात्मा । २ विष्णु ।
अग्गि—*(क्रि० वि०)* आगे । *(ना०)* आग ।
अग्नान—दे० अनाज ।
अग्नानी—दे० अज्ञानी ।
अग्नि—*(ना०)* वैश्वानर । आग ।
अग्निकुंड—*(न०)* यज्ञकुंड । दे० अग्न कुंड *(वि० वि०)*
अग्निज्वाला—*(ना०)* आग की लपट । झाळ ।
अग्निदाह—*(न०)* शव को जलाना । अग्नि संस्कार । दाग ।
अग्नि परीक्षा—*(ना०)* १ अग्नि के द्वारा परीक्षा करने की क्रिया । २ बहुत कठिन परीक्षा ।
अग्नि पुराण—*(न०)* अठारह पुराणों में से एक ।
अग्निपूजक—*(न०)* पारसी ।
अग्निबाण—*(न०)* अग्न्यास्त्र ।
अग्नि संस्कार—*(न०)* शव को जलाने की क्रिया । दाहक्रिया ।
अग्निहोत्र—*(न०)* वेदमंत्रों द्वारा अग्नि में आहुति देने की क्रिया ।
अग्निहोत्री—*(वि०)* अग्निहोत्र करनेवाला ।
अग्य—दे० अन ।
अग्या—दे० आज्ञा ।
अग्यात—दे० अज्ञात ।
अग्यान—दे० अज्ञान ।
अग्यानी—दे० अज्ञानी ।

अग्र—(वि०) १ अगला। २ पहला। ३ श्रेष्ठ। ४ प्रधान। (क्रि० वि०) १ आगे। २ सामने। (न०) १ आग का भाग। २ सिरा। सिरो।
अग्रगामी—(वि०) आगे चलने वाला। (न०) १ प्रधान। २ नेता।
अग्रगाव—(न०) पवन।
अग्रज—(न०) १ बड़ा भाई। मोटोभाई। २ ब्राह्मण।
अग्रजा—(ना०) बडी बहन। मोटी बुन्न।
अग्रणी—(वि०) अगुआ।
अग्रदास—(न०) रामानन्दी सम्प्रदाय के गलता (जयपुर) निवासी एक प्रसिद्ध रामभक्त कवि जो नाभादास के गुरु और कुंडलिया रामायण आदि कई भक्ति ग्रंथों के रचयिता थे।
अग्रसर—(वि०) १ अगुआ। २ मुख्य। प्रधान।
अग्राज—(ना०) गर्जन। दहाड़।
अग्राजणो—(क्रि०) दहाड़ना। गरजना।
अग्राह—दे० अग्राह्य।
अग्राह्य—(वि०) ग्रहण करने योग्य नहीं।
अग्रिम—(वि०) १ पणगी। २ पहला। ३ अगला।
अग्र—(क्रि० वि०) १ पहले। २ आगे। ३ आगे में।
अघ—(न०) १ पाप। २ दुख।
अघअवतार—(वि०) पापी।
अघट—(वि०) १ नहीं होने योग्य। २ अयोग्य। ३ अनुपयुक्त। ४ कठिन। ५ जो सभव न हो। ६ नहीं घटने या कम होने वाला। ७ सदा एक जैसा।
अघटित—(वि०) जो कभी न हुआ हो।
अघडडी—(न०) यमराज। जमराज।
अघमजण—(वि०) पापों को धोने वाला। पापो का नाश करने वाला। (न०) १ विष्णु। २ गगा।
अघमोचण—(वि०) पापो का नाश करने वाला। (न०) १ विष्णु। २ गगा। ३ शिव।
अघरणी—(ना०) १ पहला गर्भ। २ गर्भ धारण करने के आठवें महीने किया जाने वाला सस्कार। सीमतोन्नयन सस्कार। सीमत।
अघराण—दे० अघाण।
अघरायण—(वि०) १ असह्य। २ कठिन। ३ भयकर। दे० अघाण।
अघवारण—(वि०) पापो का नाश करने वाला। (न०) ईश्वर।
अघहारी—(वि०) पापो का नाश करने वाला। (न०) ईश्वर।
अघाट—(वि०) १ बिना रूप का। अरूप। २ जो कम नहीं। अन्यून। ३ अनत। अपार। (न०) १ समस्त स्वत्वों वाला हस्तलेख। सभी हकों वाला दस्तावेज। २ दानपत्र। ३ शिलालेख। ४ माफी की जमीन जिसे उसका मालिक बेच न सके। ५ दान में प्राप्त भूमि या गाँव।
अघाणो—(क्रि०) अघाना। तृप्त होना। धापणो।
अघात—(ना०) १ आघात। चोट (वि०) प्रहार रहित।
अघायो—वि०) १ आघात रहित। अक्षत। २ स्वस्थ। ३ अघाया हुआ। तृप्त। धापियोड़ो।
अघावणो—दे० अघाणो।
अघासुर—(न०) एक राक्षस का नाम।
अघोर—(वि०) १ भयकर। २ घोर। ३ मन भावन। ४ प्रिय। ५ पूर्ण। ६ बहुत। (न०) १ शिव का एक रूप। २ अघोर पथ।
अघोरपथ—(न०) अघोरियो का सप्रदाय।
अघोरपथी—(न०) अघोरपथ का अनुयायी। अघोरी।

अघोरी—*(न०)* १ अघोर पंथी । औघड । *(वि०)* २ अधिक खानेवाला । ३ भक्ष्याभक्ष्य का विचार नहीं करने वाला । ३ अत्यन्त गंदा । घिनौना । ४ अधिक नींद लेने वाला । अति निद्रालु । ५ सुस्त । अहदी । आळसी । ऐदी ।

अघोष—*(वि०)* १ आवाज रहित । नीरव । शान्त । *(न०)* राजस्थानी वर्णमाला के व्यंजन वर्गों के पहले दूसरे वर्ण यथा—क ख च छ ट ठ त थ और प फ—ये अघोष व्यंजन कहलाते हैं । *(व्या०)*

अघ्राण—*(ना०)* १ सुगंधि । सौरभ । आघ्राण । २ दुर्गंधि । *(वि०)* गंध रहित ।

अघ्रायण—दे० अघ्राण । दे० अग्रहायण ।

अच—*(न०)* हाथ । आच ।

अचकन—*(न०)* एक प्रकार का लम्बा कोट ।

अचगळ—*(वि०)* १ दानी । २ उदार । ३ वीर ।

अचड—*(वि०)* १ निश्चल । अचल । २ श्रेष्ठ । ३ वीर । *(न०)* १ यश । कीर्ति । २ चरित्र । ३ श्रेष्ठ कार्य । ४ चरण । ५ कृपा । ६ युद्ध ।

अचडाकरण—*(वि०* १ उत्तम काम करने वाला । २ शरण रखने वाला । ३ शरणागत की रक्षा के लिये युद्ध करने वाला । ४ योद्धा ।

अचडावाल—*(न०)* १ आप्त पुरुषों का वचन । २ प्रमाण कथन । प्रमाण वाक्य ।

अचणो—*(क्रि०)* १ आचमन करना । २ पीना । ३ खाना । ४ कहना ।

अचपडा—*(न०)* बच्चों का होने वाला एक प्रकार का हलका चेचक । मदुवडा ।

अचपळाई—*(ना०)* १ चपलता । २ उद्दण्डता । उजड्डता । ३ उत्पात ।

अचपळो—*(वि०)* १ चंचल । चपल । २ उद्दंड । ३ उत्पाती । ऊधमी ।

अचरज—*(न०)* आश्चर्य । अचंभो ।

अचल—दे० अचळ ।

अचळ—*(वि०)* १ अचल । निश्चल । २ दृढ *(न०)* १ पृथ्वी । २ पर्वत । ३ ध्रुव । ४ सूर्य । ५ सात की संख्या का सूचक शब्द ।

अचळगढ—*(न०)* १ आबू पर्वत का एक तीर्थस्थान जहाँ अचलेश्वर महादेव का प्रख्यात मंदिर है । २ आबू पर्वत का एक ऐतिहासिक स्थान, जहाँ पहले दुर्ग और नगर बसा हुआ था ।

अचळा—*(ना०)* पृथ्वी ।

अचळेश्वर—*(न०)* आबू पर्वत पर अचलगढ में स्थित इतिहास प्रसिद्ध शिवमंदिर के महादेव । २ शिव ।

अचवन—*(न०)* आचमन ।

अचंभ—*(न०)* अचरज । अचंभा । *(वि०)* १ आश्चर्यजनक । २ चकित ।

अचंभणा—*(न०)* अचंभा करना । आश्चर्य करना । अचंभीकरणो ।

अचंभम—दे० अचंभ्रम ।

अचंभो—*(न०)* आश्चर्य । अचंभा ।

अचंभ्रम—*(न०)* आश्चर्य । अचरज ।

अचागळ—*वि०)* १ उदार । दातार । २ वीर । बहादुर । ३ अपूर्व । अद्भुत ।

अचागळो—दे० अचागळ ।

अचाचूक—*(क्रि० वि०)* अचानक ।

अचार—*(न०)* अमिया, कैर, गूंदा इत्यादि फल या तरकारियों को मिर्च मसाले डाल कर बनाया हुआ एक स्वादिष्ट व्यंजन । अथाना । अथाणो ।

अचारज—*(न०)* १ आचार्य । २ एक अल्ल । उपनाम । ३ एक ब्राह्मण जाति । कारटियो ।

अचाळ—*(वि०)* १ अचल । अटल ।

२ प्रचड। ३ भयकर। ४ तेज। ५ अधिक।

अचावणी—(वि०) १ नही चाहने वाली। २ नही चाही गई। ३ अरुचिकर।

अचाही—(वि०) निस्पृह। निष्कामी।

अचित—(क्रि० वि०) एकाएक। अकस्मात।

अचित्य—(वि०) १ जिसका चिंतन न हो सके। २ जिस पर विचार नही किया जा सके। कल्पनातीत।

अचित्यो—(क्रि० वि०) १ बिना सोचा हुआ। २ अकस्मात।

अचीतो—(क्रि० वि०) १ जो ख्याल म न हो। २ एकाएक।

अचीतो—दे० अचितयो।

अचुतानद—(न०) अच्युतानद।

अचुड—(वि०) १ डरावना। भयावना। २ अद्भुत। ३ निमय।

अचूक—(वि०) १ नही चूकने वाला। २ जो अपना प्रभाव अवश्य दिखावे। अमाघ। असरकारक। ३ ठीक। पक्का। भ्रम रहित। (क्रि०वि०) १ निश्चय ही। २ चूक बिना। ३ अवश्य ही। ४ एकदम।

अचूको—(वि०) १ नही चूकने वाला। २ दृढ निश्चयी। (क्रि०वि०) १ निश्चय ही। २ अवश्य ही।

अचूको—(वि०) १ निडर। नि शक।

अचूड—दे० अचुड।

अचेत—(वि०) बेसुध। मूर्च्छित। बेहोश। बेभान। २ असावधान। बेखबर। ३ नासमझ। ४ जड।

अचेतो—(वि०) १ अचेत। बेहोश। २ असावधान।

अचन—(न०) १ दुख। कष्ट। २ व्याकुलता। ३ बचन।

अचोट—(न०) किला।

अच्छर—(ना०) १ अप्सरा। (ना०) अक्षर। आखर।

अच्छरा—(ना०) अप्सरा।

अच्छाई—(ना०) अच्छापन।

अच्छु—(अव्य) अस्तु। अच्छा। अच्छा जी। खर। आछो।

अच्छेर—दे० अछेर।

अच्छेरो—दे० अछेरो।

अच्छो—(वि०) अच्छा। भला। चोखो।

अच्युत—(वि०) १ न गिरा हुआ। २ दृढ। ३ अटल। ४ शाश्वत। (न०) १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

अच्युतानद—(न०) १ अखड आनद। २ अखड आनद भोगने वाला। ईश्वर। परब्रह्म।

अछइ—(क्रि०) होना क्रिया का वतमान रूप। है और 'छ क्रियाओ का काय रूप। दे० अछै।

अछक—(वि०) १ अतृप्त। २ उन्मत्त। ३ अपार।

अछत—(ना०) १ अभाव। कमी। आवश्यकता। माँग। ३ अभिलाषा। (वि०) १ प्रच्छन्न। छिपा हुआ। २ बिना छत्र का। ३ बिना स्वामी का।

अछतो—(वि०) १ अभाव वाला। २ गुप्त। छिपा हुआ। ३ साधन हीन। (न०) अभाव। कमी।

अछन—(अव्य) १ प्रकट। जाहिर। २ पास। निकट। (वि०) अक्षुण्ण। (न०) लाड। प्यार।

अछन अछन—(अव्य०) १ प्रीति और सम्मान सूचक एव शुभकाक्षार्थ एक द्विरुक्ति पद। गुरुजन मित्र अथवा सगे सबधी के प्रति अति स्नेह सम्मान स्वागत, दीर्घायु और नैराग्य आदि मगल भावनाओ का सूचक एक पद। २ लाड प्यार।

अछबडा—(न०) १ चेचक का एक प्रकार। छोटी चेचक। २ बच्चा को होने वाला एक प्रकार की हल की चेचक। अचपडा।

१ अशांति । २ आतुरता । ३ उतावलापन ।

अजवो—(वि०) १ चंचल । अशांत । २ चचल । ३ सावधान । ४ आतुर । ५ वीर ।

अजगर—(न०) एक जाति का मोटा और बड़ा सांप ।

अजड—(वि०) १ अविवेकी । २ अनम्र । अक्खड । ३ बिना तमीज का । बदतमीज । ४ मूर्ख । जड । ५ जो रथ वनगाडा और हल इत्यादि में जुतने के योग्य तयार नहीं किया गया हो । (बैल) । अजडो । जडो ।

अजडो—दे० अजड सं० ४

अजण—(न०) पाण्डु पुत्र अर्जुन । (वि०) १ निर्जन । २ अजन्मा ।

अजन,—दे० अजण ।

अजनबी—(वि०) अपरिचित । असेंधा ।

अजपा—(न०) १ मन में किया जाने वाला जाप । २ उच्चरित न होने वाला मंत्र । (वि०) न जपा हुआ ।

अजपा-जाप,—दे० अजपा जाप ।

अजब—(वि०) आश्चर्यजनक । अद्भुत ।

अजभख—(न०) बबूल और बेरी के वृक्ष जिनकी पत्तियों को बकरियां बड़ी रुचि से चरती हैं । अजाभक्ष ।

अजमाणो—दे० अजमावणो ।

अजमाव—दे० अजमाम ।

अजमावणो—(क्रि०) आजमाना । परीक्षा करना । परखणो । जांचणो ।

अजमाम—(ना०) आजमाइश । परीक्षा । जांच ।

अजमेर—(न०) राजस्थान का एक प्रसिद्ध नगर जिसे अजयपाल ने ११ वीं सदी में पुष्कर और नागपर्वत के पास बसाया था ।

अजमेरी—(वि०) १ अजमेर सम्बन्धी । २ अजमेर का निवासी । ३ अजमेर की बनी हुई ।

अजमो—(न०) अजवाइन ।

अजमोद—(ना०) अजवाइन के जैसी एक औषधि । अजमोदा ।

अजय—(न०) पराजय । हार । (वि०) जो हराया न जा सके ।

अजयमेरु—दे० अजमेर ।

अजया—(ना०) १ बकरी । छाळी । २ दुर्गा । ३ भांग ।

अजर—(वि०) १ जरा रहित । जो वृद्ध न हो । २ जो हजम न हो सके । ३ वीर । बलवान् । (न०) १ देवता । २ परब्रह्म ।

अजरट—(वि०) बलवान । जबरदस्त ।

अजराइल—दे० अजरायल ।

अजराग—(वि०) बलवान । जबरदस्त ।

अजराट—दे० अजरट ।

अजरामर—(वि०) सदा अजर और अमर रहने वाला । अविनाशी ।

अजरायल—(वि०) १ सदा एकसा रहने वाला । चिरस्थायी । २ जो हराया नहीं जा सके । जिस पर विजय नहीं पाई जा सके ३ नहीं हारने वाला । ४ जबरदस्त । बलवान । पराक्रमी । ५ निडर । ६ चचल । अजराळ ।

अजराळ—दे० अजरायल ।

अजरेल—दे० अजरायल ।

अजरो—(वि०) १ उत्पाती । २ अशांत । ३ चचल । ४ झगडालू । ५ वीर । बहादुर ।

अजवाण—(ना०) अजवाइन । अजमो ।

अजवाळणो—(क्रि०) १ प्रकाशित करना । २ उज्वल करना । ३ प्रतिष्ठा । बढाना । यशस्वी बनाना । ४ प्रसिद्ध करना ।

अजवाळीरात—(ना०) चांदनी रात । चानणीरात ।

अजवाळो—(न०) उजाला। प्रकाश। चानणो।

अजवाळोपख—(न०) १ चान्द्रमास का सुदि पक्ष। शुक्लपक्ष। सुदपख। २ किसी बात या काम का उज्वल पक्ष या श्रेष्ठ पहलू।

अजस—(न०) अपयश। अपकीर्ति। बदनामी। कुजस।

अजसु—(वि०) लगातार चलने वाला। निरंतर।

अजम्सिव—(न०) ब्रह्मा और शिव।

अजहद—वि०) बहुत अधिक।

अजपा जाप—(न०) १ मन में जपा जाने वाला जाप। अजपा जाप। २ गायत्री मंत्र का मन में किया जाने वाला जप। ३ परब्रह्म का ध्यान। ४ पीरदान लालस के एक डिंगल ग्रंथ का नाम।

अजपा—(न०) १ बेचैनी। अशान्ति। हायतोबा। २ उतावलापन। ३ जल्दबाजी।

अजा—(ना०) १ बकरी। छाळी। २ दुर्गा।

अजागळ—(न०) अजगर। (वि०) विजयी।

अजाग्रत—(वि०) १ जगा हुआ नहीं। २ असावधान। गाफिल।

अजाचक—(वि०) १ नहीं माँगने वाला। याचक वृत्ति की जाति का होने पर भी जिसने याचना करना छोड़ दिया हो। ३ एक ही किसी उदार व्यक्ति का याचक। ४ एक के सिवाय अन्य से नहीं माँगने वाला।

अजाची—दे० अजाचक।

अजाजूथ—(न०) १ भेड़ बकरियों का झुंड। २ गोटाला। झमेला।

अजाण—(वि०) १ अनजान। अनभिज्ञ। नावाकिफ। २ अप्रत्यक्ष। ३ अज्ञानी। मूर्ख।

अजाणचक—(क्रि० वि०) अचानक। एकाएक।

अजाणपण—(ना०) १ अज्ञानता। मूर्खता। २ नासमझी। ३ बेखबरी। ४ असावधानी।

अजाणवो—(वि०) १ अनजान। २ अज्ञानी। मूर्ख।

अजाणियो—(वि०) अनजान। अपरिचित। असैंधो। अज्ञात।

अजाणी—वि०) अपरिचित। असैंधो।

अजाणुआ—(वि०) १ अपरिचित। २ अनभिज्ञ। मूर्ख। अजाण।

अजाणू—(वि०) १ अपरिचित। २ अनभिज्ञ। मूर्ख। अजाण।

अजाणे—(क्रि०वि०) १ नहीं जानते हुए। २ नासमझी से।

अजाण्यो—दे० अजाणियो।

अजात—(वि०) १ नहीं जन्मा हुआ। अजन्मा। २ गर्भस्थ। ३ बिना जाति का। ४ नीच जाति का। कुजात।

अजातळ—(न०) १ कष्ट। २ दावा रापण। ३ विपत्ति। आफत। ४ खोटी जिम्मेदारी। ५ बोझा।

अजातशत्रु—(वि०) जिसका कोई शत्रु न हो।

अजाती—(वि०) १ जिसकी जाति नहीं। २ विजातीय।

अजाथर—दे० अजाथळ।

अजाथळ—दे० अजातळ।

अजान—दे० अजाण।

अजानबाहु—(वि०) आजानुबाहु।

अजामिल—(न०) एक प्रसिद्ध विष्णुभक्त।

अजामेल—दे० अजामिल।

अजायबघर—(न०) अद्भुत वस्तुओं का संग्रहालय। संग्रहालय। म्युजियम।

अजायबी—(ना०) आश्चर्य। अचंभो। नवाई।

अजायो—(वि०) अज मा। (न०) ईश्वर।
अजाँ—(अव्य०) १ अब तक। अभी तक। २ अभी।
अजाताई—(अव्य०) अभी तक।
अजा लग—(अव्य०) अभी तक।
अजिण—(न०) १ मृग व्याघ्र इत्यादि का चमड़ा। अजिन। २ कृष्णमृग चर्म। ३ व्याघ्रचर्म।
अजित—(वि०) अजय।
अजिन—दे० अजिण।
अजिया—(ना०) बकरी। छागी। छाळी।
अजिर—(न०) आंगन। आगणो।
अजी—(अव्य०) एक सम्मानसूचक संबोधन। आदरार्थी संबोधन।
अजीत—दे० अजित।
अजीब—(वि०) १ आश्चर्यजनक २ विलक्षण। ३ अद्भुत।
अजीरण—(न०) अजीर्ण। अपच। बद हजमी। अपचो।
अजीर्ण—दे० अजीरण।
अजीव—(वि०) निर्जीव।
अजु—(अव्य) १ जो। २ और जो।
अजुआळणो—दे० अजवाळणो।
अजुआळी—(ना०) चांदनी। चानणी।
अजुआळो—दे० अजवाळो।
अजुआळोपख—दे० अजवाळोपख।
अजुगत—(वि०) १ अयोग्य। २ अघटित। ३ असंगत। ४ अयुक्त। (ना०) अयुक्ति।
अजूं—(अव्य०) १ अब भी। २ अभी तक। हालताई।
अजे—(क्रि० वि०) १ अब तक २ अभी तक।
अजेज—(क्रि० वि०) १ अविलंब। शीघ्र। २ अभी भी।
अजेय—(वि०) १ जो जीता नहीं जा सके। २ जिस हराया नहीं जा सके।
अजेव—(वि०) जो जीता नहीं जा सके। अजेय।
अजेस—(क्रि० वि०) अभी तक। अब तक। अजे।
अजै—दे० अजय।
अजैपाळियो—(न०) जमालगोटा।
अजै विज—(वि०) समान। बराबर।
अजोख्यो—(वि०) १ बिना जोखम का। २ बिना तोला हुआ। ३ भय रहित।
अजोग—(वि०) १ अयोग्य। नालायक। २ निकम्मा। निकम्मो। ३ अनुचित। ४ बुरा। खोटो। (न०) १ कुसमय। २ संकट।
अजोगती—(वि० ना०) १ अनुचित। २ अयोग्य। ३ अनहोनी।
अजोगतो—(वि०) अनुचित। २ अयुक्त। ३ अयोग्य। ४ अनहोना।
अजोगो—(वि०) अयोग्य। नालायक।
अजोड़—(वि०) अद्वितीय। बेजोड़। २ अतुल्य। ३ अनुपम। ४ बिना जोड़ी का। बेमेल। कुजोड़। ५ बिना जोड़ का। संधि रहित। सांध बिनारो।
अजोड़ो—दे० अजाड़।
अजोणी—दे० अयोनि।
अजोणीनाथ—(न०) महादेव। शंकर।
अजोध्या—(ना०) श्रीराम की जन्मभूमि। अयोध्या। अवध।
अजोध्यानाथ—(न०) श्री रामचन्द्र।
अजोनी—दे० अजोणी।
अजोरो—(वि०) निबल। निजोरो। निरबळ।
अजोसा—दे० अयोसा।
अज्ज—(न०) १ आय। २ अज। ब्रह्मा। ३ आज। ४ बकरा। (वि०) अजन्मा।
अज्जण—(न०) अर्जुन।
अज्जा—(ना०) १ देवी। दुर्गा। २ बकरी।

अज्ञ—*(वि०)* १ मूख । मूर्ख । २ अनजान।
अज्ञा—*(ना०)* आना ।
अज्ञात—*(वि०)* १ अविदित । २ गुप्त । ३ अगोचर ।
अज्ञान—*(न०)* १ ज्ञानहीनता । ज्ञानाभाव । अजाण । २ जानकारी का अभाव । ३ मिथ्या ज्ञान । ४ अविद्या । माया । ५ अबुध । अबूझ ।
अज्ञानी—*(वि०)* १ ज्ञान शून्य । २ मूख । ३ मिथ्या ज्ञानी । ४ माया अविद्या म जथा हुआ । ५ अबुध । अबूझ ।
अटक—*(ना०)* १ रोक । रुकावट । अवरोध । २ उलझन । ३ हिचक । ४ सकोच । शका । ५ मनाई । ६ दिक्कत । कठिनाई । ७ उपनाम । अल्ल । ८ वश या गाव के नाम पर रखा जाने वाला किसी जाति या पुरुष का उपनाम । ९ जाति । १० वश । ११ प्रतिज्ञा । प्रण ।
अटकण—*(न०)* १ अटकन । टउरा । टेवको । २ सहारा ।
अटकणियो—*(न०)* अटकन । टेवको । २ सहारा । *(वि०)* १ अटकन वाला । २ रुकने वाला ।
अटकणी—*(ना०)* १ अगला । सिटकनी । चटकनी । आगळ । २ रोक ।
अटकणो—*(क्रि०)* १ अटकना । रुकना । थमना । २ उरभना । फँसना । *(न०)* टउरा । टेवको ।
अटकळ—*(ना०)* १ युक्ति । उपाय । उपाव । २ अनुमान । अन्दाज । ३ उद्भावना । कल्पना ।
अटकळणो—*(क्रि०)* १ अनुमान करना । २ उपाय सोचना । ३ कल्पना करना ।
अटकळपच्चू—*(न०)* अनुमान । अन्दाज । *(अव्य०)* अनुमान से ।
अटकाणो—*(क्रि०)* १ रोकना । २ उलझाना । ३ दूर कराना ।
अटकायत—*(ना०)* १ रुकावट । रोक । २ हिरासत । काचोकद ।
अटकाव—*(न०)* १ रोक । बाधा । २ विघ्न । ३ परहेज । ४ मृत्यु आदि के कारण मगल कार्यों म शामिल होने का निषेध । ५ रजोदर्शन । अभडाव । मैलोमायो ।
अटकावणो —दे० अटकाणो ।
अटको—*(न०)* जगदीशपुरी के जगनाथ जी के भोग का भात ।
अटण—*(न०)* १ पर । पाव । पग । २ यात्रा । प्रवास । अटन ।
अटणो—*(क्रि०)* १ चलना । चालणो । २ घूमना । फिरना । ३ यात्रा करना । ४ मारा मारा फिरना ।
अटपटी—*(वि०ना०)* १ बडगी । २ विचित्र । अनोखी ।
अटपटो—*(वि०)* १ अटपटा । पचीदा । २ कठिन । ३ बेढगा । कुडगो । ४ विचित्र । अनोखो ।
अटर-पटर—*(अव्य०)* १ परचूरण । २ बिखरी हुई चीजें । ३ फुटकर सामान । ४ सामान । *(वि०)* अव्य वस्थित ।
अटरम सटरम —दे० अटर पटर ।
अटळ—*(वि०)* नही टलने वाला । अटल ।
अटवाटो —दे० अठवाटो ।
अटवाटो सटवाटो—दे० अठवाटो सटवाटो ।
अटवी—*(ना०)* वन । जगल । रोही ।
अटरो—*(वि०)* १ बलवान । २ निशक । निडर ।
अटग—*(वि०)* १ नही छुआ हुआ । २ काम म नही लाया हुआ । ३ अभी बना हुआ । नया । ४ नये का विशेषण जसे—नवा अटग । *(अव्य०)* १ सवथा । बिलकुल । २ अभी का ।

अटा—(ना०) १ अटारी । २ महल । ३ गवाक्ष । झरोखो ।
अटाटोप—(वि०) १ घटाटोप २ छाया हुआ ।
अटामण—(न०) साग, तीवन आदि म भोल को गाढा बनाने के लिये मिलाया जाने वाला बसन । २ पलेथन । पळेथण ।
अटारी —दे० अटा ।
अटाळ—(वि०) बदमाश । आंटाळ । (न०) ढेर । राशि ।
अटाळो—(न०) १ टूटा फूटा सामान । २ फालतू सामान । क्याडो । ३ फालतू सामान का ढेर ।
अटूट—(वि०) १ नही टूटने वाला । दृढ । मजबूत । २ अजस्र । ३ अविच्छेद ।
अटेर—(ना०) १ अदीनता । अदैन्य । २ नाखुशामद । (वि०) खुशामद नही करने वाला ।
अटेरण—(न०) एक उपकरण जिसपर सूत को लपेटकर अटी बनाई जाती है । अटेरा । अटेरणो । फाळकियो ।
अटेरणियो—(न०) अटेरन । (वि०) अटेरने वाला ।
अटेरणो—(क्रि०) १ अटेरन पर सूत को लपेट कर अटी बनाना । २ खूब खाना । ३ खा जाना । (न०) अटेरन ।
अट्ठ—(वि०) आठ । (न०) आठ की सख्या ८ आठो ।
अट्ठाइस—(वि०) बीस और आठ । (न०) बीस और आठ की सख्या '२८ अठाइस ।
अट्ठाइसो—(न०) १ अठाइसवाँ वर्ष । २ दो हजार आठ सौ की सख्या २८००' (वि०) दो हजार आठ सौ ।
अटठावन—(वि०) पचास और आठ । (न०) पचास और आठ की सख्या ५८
अठ—दे० अट्ठ ।
अठजाम—(ना०) आठो प्रहर । अष्टयाम । (वि०) आठ मास म जन्मा हुआ । अठमासा । अठमासियो ।
अठडोतरसो—(न०) पहाडे म बोली जाने वाली एक सौ आठ (१०८) की सख्या ।
अठन्नी—(ना०) आठ आना या आधे रुपये का सिक्का ।
अठपहलू—(वि०) आठ पहलवाला ।
अठमासियो—(वि०) १ आठ मास म उत्पन्न होने वाला (बच्चा) । २ आठ महीनो का । अठमासा ।
अठवाटी—(ना०) मरणान्त दुराग्रह ।
अठवाटी खटवाटी,—दे० अठवाटी ।
अठवाडो—(न०) एक बार से उसी बार तक का समय । आठ दिनो का समय । अठवाडा । वारोवार ।
अठाइस—दे० अट्ठाइस ।
अठाइसो—दे० अट्ठाइसो ।
अठाई—(ना०) १ जैनो का आठ दिनो का उपवास । दे० अट्ठाइस ।
अठाऊ—(क्रि०वि०) यहा से ।अठेसू
अठाण—(न०) स्थान । (वि) १ स्थान रहित । बेघर । २ अकुलीन । ३ जबर दस्त ।
अठाणुओ—(न०) अट्ठावनवाँ वर्ष ।
अठाणू—(वि०) अठानवे । (न०) अठानवे की सख्या ९८
अठातक—(क्रि०वि०) यहा तक । अठतक ।
अठाताँई—(क्रि०वि०) यहाँ तक । अठताई ।
अठाम—(वि०) स्थान रहित । घर रहित । (न०) १ कुठौर कुठाम । २ बेमौका ।
अठालग—(क्रि०वि०) यहा तक ।
अठावन—दे० अट्ठावन ।
अठासू —दे० अठाऊ ।
अठी—(क्रि०वि०) १ इधर । यहा । अठै ।
अठी उठी—(क्रि०वि) इधर उधर । अठ ओठ ।

अठीकानी—*(क्रिoविo)* इधर।

अठीनली—*(विo)* इधर की। यहा की। अठरी।

अठीनलो—*(विo)* इधर का। यहा का। अठरो।

अठीन—*क्रिoविo)* इस ओर। इधर। ईनै।

अठीरी—*(नाoविo)* इधर की। अठरी।

अठीरो—*(विo)* इधर का। इस ओर का। अठरो।

अठीली—*देo* अठीरी।

अठीलो—*देo* अठीरो।

अठीव्हेन—*(क्रिoविo)* इधर होकर के।

अठेन—*(विo)* १ पीछे नही हटनेवाला। २ वीर। जोरावर। बहादुर। ४ अपार। बहुत।

अठेलमो—*(विo)* १ बहुत अधिक। २ आवश्यकता से अधिक। ३ परिपूर्ण। ४ पीछे नही हटने वाला। अविरत।

अठेलवो—*देo* अठेलमो।

अठै—*(क्रिoविo)* यहाँ।

अठैनक—*देo* अठातक।

अठैनाणी—*देo* अठानाई।

अठैताई—*देo* अठानाइ।

अठद्वारका—*(अव्यo)* यहाँ ही मुकाम। यही पडाव।

अठधाम—*देo* अठै द्वारका।

अठराग्या—*(अव्यo)* हुँडी का एक पारिभाषिक शब्द जिसका अर्थ है—अमुक स्थान से अमुक व्यक्ति ने रुपये लेकर हुँडी लिख दी है।

अठलग—*देo* अठालग।

अठैमार—*(अव्यo)* १ यहाँ लायक। २ हमारे योग्य।

अठमू—*देo* अठासू।

अठहिज—*(क्रिoविo)* यही।

अठोतरसो—*(विo)* एक सौ आठ। *(नo)* एक सौ आठ की सख्या, १०८'

अठोर—*(विo)* १ दृढ। मजबूत। २ अस्वस्थ। ३ निर्बल।

अड—*(नाo)* १ हठ। दुराग्रह। २ लडाई।

अडक—*(विo)* १ बिना बोये उगा हुआ (नाज)। २ गँवार। उद्दड। ३ हठी। दुराग्रही। *(नाo)* हठ। दुराग्रह।

अडकणो—*(क्रिo)* १ भिडना। २ छूना। ३ अडना। ४ हठकरना। अड करणो। अड करणी।

अडकबोलो—*(विo)* १ अप्रिय बोलने वाला। गवारूपन से बात करने वाला। २ अशिष्टभाषी।

अडकमौत—*(नाo)* १ अकारण मरना। मुफ्त का मरना। बेमौत। व्यर्थ म मरना। २ अकाल मृत्यु।

अडकियो,—*देo* अडक।

अडकीलो—*(विo)* हठी। दुराग्रही।

अडगजो—*(नo)* १ विविध प्रकार का वस्तु या सामान। २ भारी आयोजन धूम धाम। समारोह। ३ कृत्रिम आयोजन। बनावटी धूमधाम। ४ फैलाव। विस्तार। ५ प्रपच। ६ ढोग। आडबर।

अडग—*(विo)* १ नही डिगनेवाला। अडिग। दृढ। २ वीर।

अडचण—*(नाo)* १ रोक। रुकावट। बाधा। २ कठिनाई। ३ रजोदर्शन।

अडचल—*(नाo)* १ बीमारी। २ दुख। तकलीफ। ३ पीडा। दर्द। ४ रुकावट।

अडणो—*(क्रिo)* १ अडना। भिडना। २ युद्ध करने के लिये पाव रोपना। ३ पाँव रोपकर युद्ध करना। ४ अकडना। ५ छुआ जाना। स्पर्श होना। ६ छूना। स्पर्श करना। ७ अटकना। फँसना। ८ हठ करना।

अडताळी—*देo* अडताळीस।

अडताळीस—*(विo)* चालीस और आठ। *(नo)* अडतालीस की सख्या, ४८'

अडती—दे० अडतीस।

अडतीस—(वि०) तीस और आठ। (न०) अडतीस की संख्या, '३८

अडतो—(वि०) १ स्पर्श करता हुआ। छूता हुआ। २ रुकावट डालता। बाधा वाला।

अडदावो—(न०) १ कचरा। २ घूस आदि की मिलावट। ३ कुटाई। गस्त मार। मारपीट। ४ घोडे का एक साज। उडदावो।

अडधियो—(न०) १ आधे सेर का माप। २ आधी मुहर का सिक्का। आधी मुहर। ३ दसवार की मलमल का थान। आधी मलमल। साफा की मलमल। ४ छोटे इंजन की गाडी या (प्रारम्भ में बना रेलवे का) छोटा इंजन।

अडधो अडध—(वि०) १ आधा आधा। २ आधो आध। बराबर आधा।

अडप—(ना०) १ साहस। २ शरारत। छेडछाड। ३ हठ। जिद।

अडपदार—(वि०)१ साहसी। २ शरारती। ३ हठी। दुराग्रही।

अडपाई—(ना०) १ हठीलापन। २ हठ। ३ झगडा।

अडपायत—(वि०) १ अडियल। २ भिडने वाला। ३ निडर। ४ हठी। हठीलो। ५ वीर। बहादुर।

अडपायतो—दे० अडपायत।

अडपायल—दे० अडपायत।

अडपीलो—दे० अडपदार।

अडब—(वि०) सौ करोड। अरब। (न०) सौ करोड की संख्या।

अडबड—(ना०) १ अडबडाहट। अटपटा पन। २ एक ध्वनि।

अडबडाट—(ना०) १ अडबडाहट। अट पटापन। २ उलझन। ३ एक ध्वनि।

अडबपसाव—(न०) एक अरब रुपया का पुरस्कार।

अडबंग—(वि०) १ मूर्ख। उजड्ड। २ ...चारी। ३ नादान। ४ जबर...
५ हठी।

अडबंगी—दे० अडबंग।

अडबाऊ—(वि०) फालतू। बेकार।

अडबी—(ना०) १ रोक। रुकाव... २ विघ्न। बाधा। ३ झगडा। ट... ४ हठ। जिद। ५ वमनस्य।

अडबीलो—दे० अडीलो।

अडभंग—दे० अडबंग।

अडभंगी—दे० अडबंगी।

अडवड—(ना०) १ घबराहट। २ ट... ३ शरण। ४ भीड। ५ अनेकों के साथ चलने या दौडने की आहट।

अडवडणो—(क्रि०) १ भीड में घुस... २ भीड करना। ३ भीड का उमड... ४ धक्का लगाना। ५ ठोकर खा... ६ ठोकर खाकर गिर पडना। ७ ... में पडना। ८ शरण में जाना। श... लेना। ९ दौडना। भागना।

अडवड पंच—(न०) अपने आपको ... मानने वाला। जबरदस्ती से किसी ... पंचायती करने को उत्सुक। बिना ... बुलाये दखल करने वाला। धींगा... पंच।

अडवो—(न०) पशु पक्षियों को डराने ... लिये खेत में खडी की जाने वाली घा... मनुष्याकृति। (वि०) १ अडियल... २ अडिग।

अडस—(ना०) १ तकरार। वमनस्... २ टंटा। फिसाद।

अडसटो—(न०) अनुमान। अंदाज

अडसठ—(वि०) साठ और आठ। (न... अडसठ की संख्या ६८

अडसठो—(न०) अडसठवां वर्ष।

अडसग्राम—(न०) १ आक्रान्त या ... दलित की सहायतार्थ (बिना निमंत्र...

उपर शत्रु से) किया जाने वाला युद्ध। २ भयंकर युद्ध।

ग्रडसगामी —ग्रन्यगामी का साथी। पराया युद्ध लड़ने वाला।

ग्रडाणी—(वि०) हठी। जिद्दी। (न०) महाराना ग्रमरसी का पुत्र।

ग्रडमाल—(वि०) १ शत्रु के लिये ग्रभेद्य। ग्रजेय। २ वीर। ३ हठी।

ग्रडमानो—दे० ग्रडमाल।

ग्रडगो—(न०) १ ग्रडचन। २ विघ्न। ३ हस्तक्षेप। ४ पाखंड। (वि०) ग्रनम्र।

ग्रडाकी—(वि०) ग्रस्थिर।

ग्रडाखडी—(ना०) १ दुर्वृत्ति। २ दुष्टता। ३ छेड़छाड़। ४ ईर्ष्या। ५ द्वेष। ६ वैमनस्य। ७ टंटा फिसाद। खाडीलाई।

ग्रडाजीत—(वि०) १ वीर। बहादुर। २ शक्तिशाली। ३ हठी।

ग्रडाण—(न०) मकान बनाते समय छत का पाटने की पत्थर की पट्टियों के ऊपर चूना के लिये बल्लियों के सहारे बनाया हुआ चबूतरा (या टबुवों) भाग।

ग्रडाणो—(व०) १ रत्न। गिरवी। २ एक रागिनी।

ग्रडाभीड—(वि०) ग्रस्त्र शस्त्र सज्जित। कडाभीड। (ना०) १ भीड। २ धक्कम धक्का।

ग्रडायटा—(न०) १ प्राय ढाई पट्टी का ग्राढन का एक सूती वस्त्र। २ एक विशेष प्रकार की धानी का कपड़ा।

ग्रडार—(वि०) दस ग्रौर ग्राठ। (न०) ग्रठारह की संख्या १८

ग्रडारो—(न०) १ ग्रपच के कारण पेट म होने वाला भारीपन। ग्रफारा। ग्राफरो। २ ग्रपच। ग्रपचो।

ग्रडाव—(न०) १ रोक। प्रतिबंध। २ रुकावट। ३ स्वजन की मृत्यु पर पाला जानेवाला ग्राग ग्रादि। सोग।

ग्रडिग—दे० ग्रचल।

ग्रडियल— (वि०) जिद्दी। हठी। हठालो।

ग्रडिय भिडिय —(ग्रव्य०) १ गाढ़े ग्रवसर होने पर। २ किसी काम की रुकावट या उसके ग्रटक जाने पर। ३ ग्राव श्यकता के समय। ४ ग्रत्यावश्यक होने पर।

ग्रडिये वडिय—दे० ग्रडिय भिडिय।

ग्रडी—(ना०) १ युद्ध। २ रुकावट। ३ हठ। दुराग्रह। ४ मौका। टप्पा। सचो।

ग्रडीखम—दे० ग्रडीखम।

ग्रडीखम—(वि०) १ स्तम्भ के समान ग्रटल। ग्रडिग। २ विपत्ति म धीरज रखने वाला। ३ दूसरे के दुख को ग्रपने ऊपर लेने वाला। ४ जबरदस्त। ५ शूरवीर ६ हट्टा कट्टा।

ग्रडीठ—दे० ग्रदीठ।

ग्रडी-भिडी—(ना०) १ विपत्ति काल। संकटकाल २ रुकावट म पड़ा हुग्रा काम। ३ ग्रत्यावश्यक काम।

ग्रडीला—(वि०) १ हठीला। २ पीछे पाव नहीं देने वाला। ३ विघ्नकारी।

ग्रडीग—(वि०) जबरदस्त।

ग्रडूड—(वि०) १ ग्रारूढ। सन्नद्ध। २ दृढ। स्थिर। ३ ग्रधिक। ४ ग्रच्छा। श्रेष्ठ (सुगाल के लिये) ५ जबरदस्त। ६ भयानक। विकराल।

ग्रडै गडै—(ग्रव्य०) १ लगभग। करीब करीब। २ करीब। निकट।

ग्रडै वडै—(वि०) १ बहिसाब। बेहद। २ ग्रव्यवस्थित।

ग्रडो—(न०) युद्ध। २ हठ। ३ काष्ठ बढ़ना। कजी। ४ ग्रफारा। ग्राफरो।

ग्रडोग्रड—(ग्रव्य०) १ ग्रति समीप म।

बिलकुल पास । (न०) अति सामीप्य । अत्यन्त निकटता ।

अडोल—(वि०) १ अटल । अडिग । २ धयवान ।

अडोळ—(वि०) कुरूप । कुढगो ।

अडोलणो—(क्रि०) १ अटल रहना । अडिग रहना । (वि०) अडिग रहने वाला ।

अडोळो—दे० अडोळो ।

अडोस पडोस—(न०) १ आसपास । २ आसपास का घर, स्थान आदि ।

अडोसी-पडोसी—(न०) आसपास मे रहने वाला ।

अटळक—(वि०) अत्यधिक । अपरिमित । २ उदार ।

अढगो—(वि०) १ बिना ढग का । बेढंगा । कुढगो । २ अनोखा । ३ बिकट ४ बदसूरत ।

अढाई—(वि०) दो और आधा । (न०) ढाई की सख्या, २॥ या २½

अढार—(वि०) १ अठारह । २ समस्त । समष्टि जसे—अढार गिर । अढार दीप इत्यादि ।

अढारकबाण—दे० अढारटकी ।

अढारगिर—(न०) १ सभी पवत । पवत समष्टि । २ आबू पवत ।

अढारजोत—(ना०) अनेक दीपको वाला दीप स्तम्भ ।

अढारटक—(वि०) मजबूत । दृढ । (न०) १ बडा धनुष । २ अठारह बार ।

अढारटकी—(०) बडा धनुष ।

अढारदानो—दे० अढार जोत ।

अढारदीप—(न०) १ समस्त द्वीप समूह । २ दे० अढारजोत ।

अढार दीवट—दे० अढार जोत ।

अढारभार—(न०) १ किसी एक वस्तु का समष्टि रूप म परिमाण । २ अठारह भार परिमाण । ३ अष्टादश भार वनस्पति ।

अढारभार वनस्पति—(ना०) पेड, पौधे, लता, क्षुप और फल फूल इत्यादि वनस्पति वग का एक समष्टि परिमाण । अष्टादश भार परिमाण की वनस्पति सृष्टि । (अढार भार वनस्पति मे चार भार अपुष्प, आठ भार फल सहित तथा सपुष्प और छ भार लताए मानी गई हैं। एक भार वनस्पति का सख्या-परिमाण १२३००१६०८ बारह करोड तीस लाख और सोलह सौ आठ माना गया है)। समस्त उद्भिज वग । २ समस्त प्रकार की सघन वनस्पति ।

अढार वरण—(न०) १ चारो वर्णों की समस्त जातियाँ । २ विश्व की समस्त मानव जातियाँ । ३ चारण भाट इत्यादि गुण गायक याचक जातियाँ ।

अढारै—दे० अडार ।

अढाळो—(वि०) १ बिना ढग का । कुढाळो । २ प्रतिकूल ।

अढियो—(न०) ढाई का पहाडा । अढीरो गुढियो । अढी गुणिया । अढिया रो गुणियो ।

अढी—दे० अढाइ ।

अढीआना—(न० ब० व०) ढाई आने । अग्रेजी शासन के दस पसे । अग्रेजी दस पसो का एक मानक ।

अढीगुणा—(वि० ब० व०) ढाई गुना ।

अढीरुपिया—(न० ब० व०) १ अग्रेजी शासन काल के दो रुपये और आठ आने। एक सौ साठ पैसों का मुद्रा-मानक। २ वतमान स्वराज्य सरकार का दो सौ पचास पैसा का मुद्रा मानक ।

अढी सौ—(वि० ब० व०) ढाई सौ । दो सौ पचास ।

अढीहजार—(वि० ब० व०) ढाई हजार । पच्चीस सौ । दो हजार पाँच सौ ।

अण—(अ य०) एक उपसग जो नही के अथ म प्रयुक्त होता है। निषेध सूचक

५८ —शब्दकोश।

उपसाग। (सज्ञा) रग। (क्रि वि०) बिना। बगर।

अणआमय—(वि०) १ निरोग। २ निर्दोष। निष्पाप। ३ माया रहित। ४ उत्तम।

अण आवडत—(ना०) १ किसी वस्तु, काम या बात के न समझ सकने का भाव। २ बुद्धि हीनता। ३ जडता। ४ अनभिज्ञता। ५ किसी काम का ज्ञान न होने का भाव। ६ अप्राप्ति। अनुपलब्धि। ७ अकौशल। ८ मन नहीं लगना। मनोरंजन का अभाव। ९ अस्फुरण।

अणइच्छा—दे० अण इच्छा।

अणइ छा—(ना०) १ अनिच्छा। २ अरुचि।

अणक—(वि०) १ नीच। अधम। २ कुत्सित। खराब।

अणक-चोट—(न०) सचेत नहीं करके किया गया प्रहार। नीच घात।

अण कचोट—(वि०) १ शोक रहित। बेरज। २ मनस्ताप रहित।

अणकमाऊ—(वि०) १ नहीं कमाने वाला। धधा नहीं करने वाला। २ निठल्ला। निकम्मा। निक्मा।

अणकल—(वि०) १ जो समझा न जा सके। २ जो हराया न जा सके। ३ वीर। ४ शक्तिशाली। ५ निर्भय। ६ अकुशरहित। ७ अधीर ८ निष्कलक।

अणकळ—(वि०) १ अनजाना। अपरिचित। नहीं जाना हुआ। २ जिस पर विचार नहीं किया गया हो। ३ जो समझ में नहीं आ सके।

अणकारी—(वि०) १ अनहोनी। २ अलौकिक। ३ तीक्ष्ण। ४ अवश। विवश। ५ बवश। ५ जबरदस्त। ६ बतुर्कीब। उपायरहित।

अणकीला—(वि०) १ शीघ्र नाराज होने वाला। २ शीघ्र चिढ़ने वाला। ३ द्वेषी। ४ अभिमानी।

अणकू त—(वि०) १ बिना आँका हुआ। बिना जाना हुआ। २ अदाज। ३ नासमझ। मूर्ख।

अणख—(ना०) १ क्रोध। २ क्षोभ। ३ ईर्ष्या। ४ द्वेष। ५ ग्लानि। ६ झुंझलाहट।

अणखड—(वि०) बिना जोता हुआ (खेत)। पडत। अखड।

अणखणाट—(ना०) १ झुंझलाहट। २ बेचैनी। ३ नाराजगी। ४ उदासीनता।

अणखणो—(क्रि०) १ झुंझलाना। २ क्रोध करना। ३ द्वेष करना। ४ अच्छा नहीं लगना। (वि०) अच्छा नहीं लगने वाला। नहीं भाने वाला।

अणखला—(न० सियाना (मारवाड) के झुंझटपड़ क्षेत्र का एक नाम।

अणखाधी—(क्रि० वि०)१ यों ही। मुफ्त में। २ अकारण। ३ बिना मतलब के। ४ बिना लिये दिये।

अणखाधी रो—दे० अणखाधी।

अणखार—दे० अखार।

अणखावणो—(वि०) १ अप्रिय। असुहावना। २ अरुचिकर।

अणखो—(वि०) १ क्रोधी। २ द्वेषी।

अणखीलो—दे० अणकीलो।

अणखूट—(वि०) १ बहुत। अपार। अखूट। २ समाप्ति काल के पूर्व। बेवक्त। असमय।

अणखोट—(वि०) १ निर्दोष। २ शुद्ध। चोखो।

अणगम—(वि०) १ अरुचिकर। २ अप्रिय। असुहावना। ३ अनजानी। ४ बिना गम वाला। ४ अगम्य। (न०) १ अनजान। २ शत्रु। वैरी। ३ अरुचि।

अणगमो—(न०) १ अरुचि। २ अनिच्छा। ३ मन या नहीं लगना।

अणगळ—(वि०) बिना छाना हुआ। अळगण।

अणगाळ—(वि०) १ अगलित। अना छित। (ना०) प्रशसा।

अणगिणत—(वि०) अगणित। अगण्य। असख्य।

अणगिणती—दे० अणगिणत।

अणगेम—(वि०) १ निश्चल। २ निष्पाप। पाप रहित। निपापो।

अणघटतो—(वि०) अनहोता।

अणघड—(वि०) १ असभ्य। २ अपढ। अशिक्षित। ३ बेडौल। बढगा। कुढगो। ४ नहीं घडा हुआ। अनिर्मित।

अणघडी—(वि०) बिना घडी हुई। अनि मित। (क्रि० वि०) अभी। इसी समय। अबार। हमार।

अणचळ—दे० अचल।

अणचाया—दे० अणचाह्यो।

अणचाहत—(वि०) नहीं चाहने वाला।

अणचाहो—दे० अणचाह्यो।

अणचाह्यो—(वि०) १ बिना मर्जी का। नापसन्द। बिना चाहा हुआ। २ हानि कारक।

अणचीत—(क्रि० वि०) अचानक।

अणचीती—(क्रि० वि०) १ अचानक। २ बिना विचारे।

अणचीतो—(क्रि० वि०) १ अचानक। २ बिना विचारा हुआ।

अणचूक—(वि०) नहीं चूकने वाला। (क्रि० वि०) बिना चूके। अचूक। दे० अचूक।

अणचेत—(वि०) अचेत। बेहोश।

अणछाणियो—(वि०) बिना छाना हुआ। अणगळ।

अणछाण्यो—दे० अणछाणियो।

अणछेह—(वि०) जिसका अन्त नहीं। अनन्त। अपार। अछेह।

अणजाण—(वि०) १ अजान। अपरि चित। २ नासमझ। मूर्ख। (न०) अज्ञान।

अणजाणियो—(वि०) १ अपरिचित। असैंधा।

अणजाण्या—दे० अणजाणिया।

अणजीत—(वि०) १ नहीं जीता हुआ। हारा हुआ। २ जिसको कोई नहीं जीत सके। अपराजित।

अणजुगती—(वि०) १ युक्ति सगत नहीं। २ अनुचित।

अणजोगती—(वि०) १ अनहोनी। २ अनुचित। ३ अयोग्य।

अणटूट—(वि०) १ बिना टूटा हुआ। साबुत। २ नहीं टूटने वाला।

अणडर—(वि०) निडर। निर्भय।

अणडीठ—(वि०) १ बिना देखा हुआ। २ अन्धा।

अणडोल—(वि०) स्थिर।

अणत—(न०) १ अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखने वाले के बाहु में बाधा जाने वाला चौदह गाठों का एक अर्चित सूत्र। दे० अनन्त स १३। २ स्त्रियों के बाहु में पहनने का एक कडा। ३ अनन्त चतु दशी का व्रत। ४ अनन्त भगवान। ५ विष्णु। (वि०) अनत। दूसरा। दूजो।

अणतचवदस—दे० अनत चतुदशी।

अणतचौदस—दे० अनत चतुदशी।

अणतियो—(न०) अनत चतुदशी का व्रत रखनेवाला व्यक्ति।

अणताट—दे० अणटूट।

अणताल—(वि०) १ बिना तोला हुआ। २ जो तोला नहीं जा सके। ३ अपरि माण। बहुत अधिक। ४ अपार।

५ भारी वजनी। ६ जिसकी शक्ति का अनुमान नही लगाया जा सके।

अणतोलियो—दे० अणतोल।

अणतोल्यो—दे० अणतोल।

अणथाग—(वि०) १ गहरा। गम्भीर। ऊडा। २ अथाह। ३ बहुत अधिक।

अणथाघ—दे० अणथाग।

अणथाह—दे० अणथाग।

अणदगियो—(वि०) १ वह जिसके दाग (तप्त या दग्ध चिह्न) नही लगा हो (पशु)। २ जो दाग लगाकर चिह्नित नही किया गया हो। दाग रहित। ३ निष्कलंक।

अणदागल—दे० अणदागिया।

अणदाद—(वि०) १ अन्यायी। २ अवश। ३ दाद नही देने वाला। वश मे नही होने वाला। (न०) अन्याय। गैर इन्साफ।

अणदीठ—(वि०) १ बिना देखा। अनदेखा। २ अदृष्ट।

अणदीठा—दे० अणदाठ।

अणधाये—(क्रि० वि०) इस ओर। अठीने। इन।

अणधारियो—(वि०) बिना सोचा हुआ। अचींतो। (क्रि० वि०) एकाएक। अचानक।

अणधीर—दे० अधीर।

अणनम—(वि०) १ अनम्र। २ हठी। जिद्दी।

अणनामी—(वि०) १ बिना नाम वाला। २ किसी के आगे नही झुकने वाला। अनम्र। ३ हठी। ४ जो किसी को अपने आगे नही झुका सका। निबल। ५ जिसने किसी को अपने आगे नहीं झुकाया। ६ उदार।

अणपटा—(वि०) वह जिसके पास जागीरी (का पट्टा) न हो। बिना जागीरी वाला।

अणपढ—(वि०) १ बिना पढा। अपढ। २ अशिक्षित। ३ मूर्ख। कुपढ।

अणपढियो—दे० अणपढ।

अणपाण—(वि०) १ अशक्त। अणी पाणी वाला।

अणपार—(वि०) १ अपार। असीम। २ अगणित। (क्रि०वि०) १ इस किनारे। २ इस ओर।

अणफेर—(वि०) १ पीछे नहीं मुडने वाला। २ अपरिवर्तित। ३ वह जिसमे फर्क नही आय।

अणबण—(ना०)अनबन। खटपट। बिगाड।

अणबणाव—दे० अणबण।

अणबाध—(वि०) बेरोक-टोक।

अणबीह—(वि०) निर्भय। निडर। अणडर।

अणबूझ—(वि०) ना समझ। अबोध। अबूझ।

अणबोल—दे० अणबोला।

अणबोला—(न०ब०व०) १ अनबन। मन मुटाव। अबोला। २ आपस मे बातचीत बंद रहना।

अणबोलो—(न०) मौन। खामोशी। (वि०) १ चुप। खामोश। मौन। २ मूक। गूंगो।

अणभणिया—दे० अणपढ।

अणभय—(वि०)निडर। अभय। अणभ।

अणभल—(न०) १ अहित। खराब। भूडो। २ हानि।

अणभग—(वि०) १ नही टूटने वाला। २ नही हारने वाला। ३ पूर्ण। अखंड। ४ वीर।

अणभग नर—(न०) १ नही झुकने वाला वीर नर। २ पराजित नही होनेवाला वीर पुरुष।

अणभावता—(वि०) १ अरुचिकर। अप्रिय। २ पेट भरा हुआ होने से जो भावे नही।

अणभै—*(न०)* अनुभव। *(वि०)* निडर। अभय।

अणमण—*(ना०)* १ अप्रसन्नता। नाराजगी। २ अनबन। अणबण।

अणमणो—*(वि०)* अनमना। उदास।

अणमानेतण—*(ना०)* पति द्वारा असम्मानित या उपेक्षित पत्नी। स्नेहाभाव और सम्मानाभाव वाली पत्नी। *(वि०)* उपेक्षिता।

अणमानेती—दे० अणमानेतण।

अणमाप—*(वि०)* १ जो मापन में नहीं आय। २ असीम। अपार। अमाप।

अणमाप—*(क्रि०वि०)* १ बिना माप किये। २ बिना विचार किये। ३ बहुत अधिकता से।

अणमाव—*(वि०)* १ नहीं समाने वाला। २ नहीं समाया जा सके। ३ अधिक। बहुत। घणो। जादा।

अणमावतो—दे० अणमाव।

अणमोट—*(न०)* निर्भिमान। *(वि०)* निर्भिमान।

अणमोल—*(वि०)* १ अनमोल। अमूल्य। अमोल। २ बहुमूल्य।

अणमौत—*(क्रि०वि०)* १ बिना मौत आय। बेमौत। कुमौत।

अणराय—*(ना०)* १ कुविचार। २ विचारों की उथल पुथल। संकल्प विकल्प। ३ राय से मेल नहीं खाना। ४ उलटी राय।

अणरेस—*(वि०)* जिसको कोई जीत नहीं सके। अजेय।

अणरेह—*(वि०)* बिना रेखा या आकार का। निराकार।

अणवट—*(न०)* स्त्री के पाँव का एक गहना।

अणवड—*(वि०)* बिना बादा हुआ। *(ना०)* मित्रता।

अणवणत—*(ना०)* अनबन। मनमुटाव।

अणवर—*(उ०जा०)* विवाह काल में वर राजा के साथ में रहने वाला उसका मित्र या कोई अन्य पुरुष। इसी प्रकार दुलहिन के साथ रहनेवाली उसकी सहेली।

अणवछित—*(वि०)* अवांछित। *(न०)* शत्रु।

अणविढ—*(न०)* मित्र।

अणविसवास—*(न०)* अविश्वास। बेएतबारी।

अणविसवासी—*(वि०)* अविश्वासी। बेएतबार।

अणवीध—*(वि०)* बिना बींधा हुआ।

अणसमभ—*(वि०)* बेसमझ। मूर्ख।

अणसक—*(वि०)* निःशंक। निडर।

अणसार—*(वि०)* १ सार रहित। असार। निःसार। २ बेसम्हाल। बेपता। ३ इशारा। संकेत।

अणसुणी—*(वि०)* बिना सुनी हुई। अनसुनी।

अणसूत—*(वि०)* सूत्र में नहीं। अव्यवस्थित। *(न०)* १ अव्यवस्था। २ परंपरा का भंग। ३ विरुद्धाचरण।

अणसैधो—*(वि०)* अपरिचित। असैधो।

अणसोम—*(वि०)* १ अशान्त। २ क्रूर।

अणहद—*(वि०)* खूब। असीम।

अणहद नाद—दे० अनाहत नाद।

अणहलनयर—दे० अणहलवाडो पाटण।

अणहलपुर—दे० अणहलवाडो-पाटण।

अणहलपुरो—*(वि०)* १ अणहलपुर का निवासी। २ अणहलपुर के शासकों का विरद या विशेषण।

अणहलवाडो—दे० अणहलवाडो-पाटण।

अणहलवाडो पाटण—*(न०)* अणहल गडरिये के नाम पर वनराज चावडा द्वारा वि० सं० ८०२ वैशाख शुक्ल ३ को स्थापित मुहूर्त करके गुजरात की राजधानी के

रूप में सरस्वती (कुआरिका) के तट पर बसाया गया उत्तर गुजरात का इतिहास प्रसिद्ध नगर जो अब केवल पाटण नाम से प्रसिद्ध है।
अणहाल—*(वि०)* बेहाल।
अणहित—*(न०)* १ अहित। २ हानि।
अणहूत—*(वि०)* अनहोनी। असंभव। अणूत।
अणहूंती—*(वि०)* अनहोनी। असम्भव। २ अनुचित। ३ व्यर्थ। अणूती।
अणहूंनो—*(वि०)* १ अनहोना। असंभव। अणूतो। २ अयोग्य। अजोग। ३ अनुचित। ४ व्यर्थ। ५ नहीं करने योग्य।
अणहोणी—*(वि०)* न होने वाला। नामुमकिन। *(ना०)* न होनेवाली बात या घटना।
अणक—*(वि०)* १ निर्भय। निशंक। २ वीर। बहादुर। *(न०)* गर्व। अभिमान।
अणकल—*(वि०)* १ चिन्ह रहित। बेनिशान। २ बेदाग। ३ निष्कलंक। निर्लेप।
अणकव—*(न०)* निर्दोष। निरपराध।
अणत—दे० अनंत।
अणद—दे० आणद।
अणाणो—*(वि०)* मगवाना। लाने के लिये कहना।
अणाद—दे० अनाद।
अणादर—*(न०)* अनादर। निरादर।
अणामय—दे० अण आमय।
अणाय—*(क्रि०वि०)* १ ला करके। मगवा करके।
अणारत—*(न०)* सुख। *(व०)* सुखी।
अणारु—*(न०)* असत्य। झूठ। कूड। *(वि०)* शुष्क।
अणाळ—*(वि०)* नोकदार। पनी। *(ना०)* कटारी।
अणावडत—दे० अण आवडत।
अणावटो—*(न०)* कुटुम्ब से अधिक समय तक दूर रहने के कारण उत्पन्न होने वाली मिलन की तीव्र इच्छा। प्रियजन और कुटुम्बियों से मिलन की उत्कंठा। २ मन नहीं लगना।
अणिमा—*(ना०)* आठ सिद्धियों में से प्रथम। अति सूक्ष्म रूप धारण करने की सिद्धि।
अणिमादिक—*(ना० ब० व०)* योग की अणिमा इत्यादि आठ सिद्धियां।
अणियारो—दे० उणियारो।
अणियाळ—*(ना०)* कटारी। *(वि०)* १ नोकदार। अनीवाली। पनी। २ अनी पानी वाला। वीरांगना। ३ सुन्दर नेत्रों वाला। पैने नेत्रों वाली।
अणियाळा—*(न० ब० व०)* नेत्र।
अणियाळी—दे० अणियाळ।
अणियाळो—*(न०)* १ भाला। २ हरिण। ३ ऊंट *(वि०)* १ नोकदार। पना। अणीदार। अनी पानी वाला। ३ वीर। सूरमो।
अणिया भँवर—*(न०)* १ सेनापति। २ योद्धा।
अणी—*(ना०)* १ सेना। २ शस्त्र की नोक। ३ कटारी। ४ तलवार। ५ लेखनी की नोक। ६ सीमा। *(वि०)* श्रेष्ठ। *(सर्व०)* १ इस। २ इन।
अणीक—*(ना०)* १ सेना। २ युद्ध।
अणीपति—*(न०)* सेनापति।
अणीपळ—*(अव्य)* अभी। इसी समय।
अणी पाणी—*(ना०)* १ साहस। हिम्मत। २ शक्ति। पराक्रम। ३ ओज। तेज। प्रताप। कान्ति। ४ शौर्य। वीरता ५ शक्ति और प्रतिष्ठा। ६ स्वाभिमान। ७ सामर्थ्य। हैसियत। ८ हौसला। उत्साह। ९ बुद्धिमता। १० योग्यता। ११ मान मर्यादा।

अणीमेळ—(न०) सेनाओं का आमने-सामने आना। दो सेनाओं का मुकाबिला।
अणी रो भवर—दे० अणिया भँवर।
अणीवाळो—दे० अणियाळा।
अणीमुध—(वि०) १ सच्चा वीर। २ शुद्ध आचरण वाला। ३ सपूर्ण दोष रहित। ४ अपने स्वरूप के अनुसार सभी प्रकार से सही रूप में तैयार की गई (कोई वस्तु)।
अणु—(न०) सूक्ष्मकण। (वि०) अति सूक्ष्म।
अणुबम—(न०) अणुओं के विश्लेषण संश्लेषण से बना एक महा विनाशक शस्त्र। एटम बाम्ब।
अणुमात्र—(वि०) बहुत थोड़ा।
अणुराव—(न०) १ प्रेम। अनुराग। आसक्ति। २ संकल्प विकल्प। ३ उच्चाट। ४ उपेक्षा। ५ अनुकरण।
अणुवाद—(न०) १ अणुओं का विज्ञान। २ एक आध्यात्मिक दर्शन।
अणुसार—(वि०) अनुसार। समान। सदृश। माफक।
अणूत—(ना०) १ छोटी जिद। २ किसी को हानि पहुँचाने की जिद्द। ३ बद माशी। ४ बेईमानी। ५ न होने योग्य काम या बात।
अणूताई—(ना०) १ नहीं करने योग्य काम या बात। २ अशिष्ट व्यवहार। अशिष्टता। ३ शरारत। बदमाशी।
अणूती—दे० अणहूती।
अणूतो—दे० अणहूतो।
अणूरो—(न०) १ संशय। २ मनस्ताप।
अणेसो—(न०) १ कहने सुनने पर भी नहीं मानना। २ आँख की लाज। सामने होने की शर्म। ३ लिहाज। ४ संकोच। ५ अंदेशा। आशंका। अंदेसो। ६ भरोसो। ७ दुख। ८ निराकांक्षा।
अणोखो—दे० अनोखो।
अणोपती—(वि० ना०) १ बिना फबनी। २ अनुचित। बेठीक।
अणोपतो—(वि०) १ बिना फबता। २ अनुचित। बेठीक।
अणोवम—(वि०) अनुपम।
अत—(वि०) अति। अधिक।
अतएव—(अव्य०) १ इसलिये। इसी कारण से।
अतकत—(ना०) ज्यादती। अत्याचार। (वि०) अतिक्रम। अत्याचारी।
अतखभ—(न०) भाला।
अतगत—दे० अतक्त।
अतग—दे० अथग।
अत चपळ—(न०) मन।
अतण—दे० अतन।
अतन—(वि०) बिना शरीर का। (न०) कामदेव।
अतबार—(न०) एतबार। भरोसा।
अतमल—(वि०) प्रबल वीर।
अतमलो—दे० अतमल।
अतर—(न०) १ इत्र। अतर। २ समुद्र।
अतरदान—(ना०) इत्रदान। अतरदान।
अतरा—(वि० ब० व०) इतने। इत्ता। इत्तरा। अत्ता।
अतराज—(वि०) आपत्ति। एतराज। (वि०) अप्रसन्न। नाराज।
अतरा माहे—(क्रि० वि०) इतने में। इत्ते में।
अतरा मे—दे० अतरा माहे।
अतरी—(वि० ना०) इतनी। इत्ती। इतरी। अत्ती।
अतरे—(क्रि० वि०) १ इतने में। २ तब तक। ३ इसके बाद। इत्ते। इतरे। इतरे में। अत्ते में।
अतरो—(वि०) इतना। इत्तो। इतरो। अत्तो।

अतल—(न०) गाद पाताना म स तर। (वि०) तल रहित। अथाह। अथाग।

अतलस—(न०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अतलाग—(ना०) १ अति लगाव। २ पूर्ण लगाव। ३ याद। स्मृति।

अतळूज—(ना०) भाजाना था नाग नता म चन जाता है तब म लगा वाला बंधन।

अतळा—(वि०) १ बुरा। खोटा। २ अविश्वासी। ३ जिना वश ना। ४ जिसका तल नहीं लाग।

अतवैर—(न०) युद्ध। युध।

अतर्क—(न०) १ आदर। ताव। २ व्या। ३ भय।

अतग—(वि०) १ जो तग नहीं। जगा लगा नहीं। ढीला। २ सरोग नहीं। विस्मृत। ३ स्पष्ट।

अतत—(वि०) १ अयत्न। अविर। २ तत्वहीन। ३ तत्र रहित।

अता—(वि० क्र० व०) लगत

अताग— क्रि० वि०) १ लगत म। २ लग समय। अभा। अबार। हमार। हमाए।

अताए—(क्रि वि०) अभी। दे० अतरु।

अताळ—(वि०) १ अत्यन्त। बहुत। २ तज २ बताव। (क्रि० वि०) शीघ्र। जल्दी। वेगो। उतावळ।

अताळा—(वि०) १ उतावला। तज। फुरतीलो। २ जोताला।

अति—(वि०) १ अत्यन्त। बहुत। (ना०) १ अधिकता। २ ज्यादती। अत्याचार।

अतिक्रम—(न०) १ मर्यादा का उल्लंघन। सीमा से आगे बढ़ना। २ नियम भग। आगे निकल जाना।

अतिचार—(न०) १ मर्यादा का उल्लंघन। औचित्य भग।

अतिचारी—(वि०) गति तरल चाला।

अतिथि—(न०) १ मेहमान। पाहुना। पावणो। २ सदाचार आया हुआ मेहमान। एक स्थान पर एक रात से अधिक नहीं रहने वाला सन्यासी।

अतिनित्त—(वि०) १ याद म रहने या जाना रहा। २ आवश्यकता से अधिक। (क्रि० वि०) अलावा। सिवा। का छाड़ कर।

अतिरेक—(न०) १ अतिव्यता। बहुतता। मर्यादा से ज्यादा होना। ३ व्यय। की वृद्धि।

अति वरसण—(न०) अत्यधिक वर्षा। अतिवृष्टि।

अतिवृष्टि—दे० अति वरसण।

अतिशय—(वि०) आवश्यकता से अधिक। अत्यधिक।

अतिशयोक्ति—(ना०) १ बढ़ा चढ़ा कर दिखाना या कहना। २ दर्शी तथ्य का एक अलकार।

अतिसार—(न०) आँव युक्त पतले दस्त होने का रोग। (वि०) दूर। बहुत।

अतीत—(वि०) १ बीता हुआ। २ निर्लेप। (न०) १ भूतकाल। २ सन्यासी। अतिथि। (क्रि० वि०) दूर। पर। अलग।

अतीथ—दे० अतिथि।

अतीव—(व०) बहुत अधिक।

अतुरात—(वि०) १ बिना तुक का। २ अन्त्यानुप्रास विहीन। (ना०) तुक बिना की कविता।

अतुल—(वि०) १ जिसे तौला न जा सके। बहुत अधिक। २ तुलना रहित। बजोड। ३ असमान।

अतुळी—(वि०) १ जो तौला नहीं जा सके। अतुल्य। २ अपरिमित। ३ जिसकी तुलना नहीं की जा सके।

अतुळीवळ—(वि०) अतुलित शक्तिशाली। अतुल बल वाला।

अतू—दे० अतू।

अतूट—दे० अटूट

अतूठ—(वि०) १ अतुष्ट। अप्रसन्न। २ असतुष्ट।

अतूठो—दे० अतूठ।

अतृप्त—(वि०) १ जो तृप्त न हो। असतुष्ट। २ वासनाओं से पीडित। ३ ३ भूखा। भूखो।

अतेरू—(वि०) जो तरना न जानता हो।

अतोट—(न०) वज्र।

अतोनाई—(वि० ना०) १ अति उतावली। अधीर। व्यग्र। २ ओछे स्वभाव की। ३ झगडालू। कलहप्रिया।

अतोतायो—(वि०) १ उतावला। २ ओछे स्वभाव का। ३ झगडालू।

अतोल—(वि०) १ जो तोला न जा सके। २ अतुल। ३ अपार। (न०) पवत।

अत्तार—(न०) इत्र बनाने तथा बेचने वाला।

अत्ती—(वि० ना०) इतनी। इतरी।

अत्तू—(न०) १ खत (ऋणपत्र) के रुपयों की ब्याज रहित वसूली। ऋणपत्र की समस्त वसूली। २ खत या खाते की मर्यादा बढ़ाने के लिये उसके खतम होने के पूर्व जमा की जाने वाली रकम। लखेवणो।

अत्तो—(वि०) इतना। इतरो।

अत्थ—(न०) अर्थ। धन। सम्पत्ति। आय।

अत्यधिक—(वि०) बहुत अधिक। हद से ज्यादा।

अत्यत—(वि०) बहुत अधिक। मर्यादा से बाहर।

अत्याचार—(न०) १ जुल्म। ज्यादती। २ पाप। ३ अधर्माचरण। ४ बलात्कार।

अत्याचारी—(वि०) १ अत्याचार करने वाला। जुल्मी। जालिम। २ पापी। बलात्कारी।

अत्यावश्यक—(वि०) अति आवश्यक। बहुत जरूरी।

अत्युक्ति—(ना०) १ बहुत बढ़ा चढ़ाकर किया जाने वाला वर्णन। २ एक अर्थालकार। अतिशयोक्ति।

अत्युत्तम—(वि०) अति उत्तम। श्रेष्ठ।

अत्रपत—दे० अतृप्त।

अत्रि—(न०) सप्तऋषियों में से एक ऋषि।

अत्रिप्त—दे० अतृप्त।

अथ—(अव्य) १ ग्रथ लिखना आरम्भ करने के पूर्व ग्रथ के नाम के पहले लिखा जाने वाला प्रारम्भतासूचक शब्द जैसे—'अथ श्रीहरिरस गुण लिख्यते।' २ ग्रथ समाप्ति पर लिखा जाने वाला 'इति' शब्द का विपरीतार्थ शब्द। ३ ग्रथ के प्रारभ में लिखा जाने वाला मगलार्थक शब्द। ४ आरभ सूचक मागलिक शब्द। ५ आरभ। प्रारभ। शुरू। (न०) १ धन। सम्पत्ति। अर्थ। आय। २ अस्त। ३ मृत्यु। (क्रि० वि०) अनतर।

अथक—(वि०) १ नहीं थकने वाला। २ नहीं थका हुआ। ३ बिना थके हुए।

अथग—(वि०) जिसका थाग नहीं। अत्यधिक। २ अथाह।

अथगणो—(क्रि०) १ रुकना। ठहरना। थमणो। २ नहीं रुकना ३ देर लगाना। थग लगाणो। ४ ढेर उठाना।

अथघ—दे० अथग।

अथडा अथडी—(अव्य० व० व०) १ बार बार लगने वाली टक्करें। टक्करा। पर टक्करें। २ लडाई। झगडा। ३ हाथापाई।

अथडाणो—(क्रि०) १ टकराना। २ तकरार होना। ३ हाथापाई होना।

४ लगना ५ भिड़ना । भिड़णो ।

अथडावणो—दे० अथडाणो ।

अथमणो—(क्रि०) १ अस्त होना । २ नष्ट होना (न०) पश्चिम दिशा ।

अथर—(वि०) अस्थिर ।

अथर्व—(न०) एक वेद का नाम ।

अथवा—(अव्य०) एक वियोजक अव्यय । या । वा । किम्वा । क ।

अथाग—दे० अथाघ ।

अथाघ—(वि०) १ जिसकी थाह न लग सके । अथाह । २ अत्यधिक । ३ अपार । ४ गंभीर । गहरो ।

अथाणो—(न०) १ अचार । अथाणा । २ कचूमर ।

अथाह—दे० अथाघ ।

अथिर—(वि०) अस्थिर । रुनागमान ।

अथी—(ना०) धन सम्पत्ति ।

अथोग—(वि०) अथाह ।

अथोड—(वि०) थोड़ा नहीं । पर्याप्त ।

अद—(न०) १ मान । प्रतिष्ठा । आदर । २ मूल्य । मोल । ३ परत । ३ भोजन ।

अदग—(वि०) १ बेदाग । निष्कलंक । २ निरपराध ।

अदत—(वि०) कृपण । कंजूस ।

अदतार—(वि०) कृपण । कंजूस ।

अदत्ता—(वि०) कुमारी (कन्या) । कंवारी ।

अदद—(न०) १ संख्या । २ गिनती । तादाद ।

अदन—(न०) भोजन ।

अदनो—(वि०) १ साधारण । मामूली । २ तुच्छ । ३ नीच ।

अदब—(न०) १ विवेक । २ मर्यादा । ३ प्रतिष्ठा । आदर । ४ शिष्टाचार । सभ्य व्यवहार । ४ ढंग । तरीका । ५ लिहाज ।

अदबुदजी—दे० अदभुतजी ।

अदब—(क्रि०वि०) १ अपेक्षाकृत । २ संभवतया । ३ थोड़ा बहुत । थोड़ोपणो ।

अदभुज—(न०) उद्भिज । वृक्ष । पेड़ पौधा ।

अदभुत—दे० अद्भुत ।

अदभुतजी—(न०) एक लोक देवता ।

अदम—(वि०) १ जिसका दमन न हो सके । अदम्य । २ दमन रहित । स्वतंत्र । (न०) किसी चीज के बात या काम के न होने की अवस्था । अभाव । जैसे—अदम सबूत । अदम हाजरी इत्यादि ।

अदमकारवाई—(ना०) कार्यवाई न हो सकना । अदम पैरवी ।

अदम पैरवी—(ना०)मुकदमे की पैरवी का नहीं हो सकना । कार्यवाही का अभाव ।

अदमसबूत—(न०) प्रमाणाभाव ।

अदमहाजरी—(ना०)गैर हाजरी । अनुपस्थिति ।

अदम्य—(वि०) जिसका दमन न हो सके । प्रबल ।

अदर—(न०) बाण । तीर ।

अदरक—(न०) ताजा हरी सोंठ । अदरख । आदो ।

अदरस—(वि०) अदृश्य । लुप्त । अदर्श ।

अदरसण—(न०) अदर्शन । अविद्यमानता । (वि०) अदृश्य ।

अदरा—(न०) आर्द्रा । नक्षत्र ।

अदशन—दे० अदरसण ।

अदल—(न०) न्याय । इंसाफ । (वि०) पक्का । सच्चा ।

अदल इंसाफ—(न०) पक्का इंसाफ । पक्षपात रहित न्याय ।

अदल न्याव—दे० अदल इंसाफ ।

अदल बदल—(न०) परिवर्तन । उलट पलट ।

अदला बदली—(ना०) १ अदला बदली । परिवर्तन । २ हेरफेर । ३ आदान प्रदान ।

अदव—(वि०) कृपण । कंजूस ।

अदवो—दे० अदब।

अदन्त—(वि०) १ जिसके दांत न हों। दन्तहीन। २ जिसके दांत न निकले हों। (ऊंट बच्चा)।

अदा—(ना०) हावभाव। नखरा। अग भगी। (वि०) चुकता। बराबर।

अदाकरणो—(न०) चुकता करना २ कर्जा चुकाना। ३ निभाना। पालन करना। (फर्ज का)।

अदाग—(वि०) वेदाग।

अदागी—(वि०) १ वेदाग। २ निर्दोष। ३ निमल।

अदाता—(वि०) कजूस। सूम।

अदातार—दे० अदाता।

अदानी—(वि०) कजूस। कृपण।

अदाप—(न०) अल्प। निरभिमान (वि०) दपरहित। अदप। निरभिमानी।

अदायगी—(ना०) ऋण को चुकता करने की क्रिया। अदा करने की क्रिया या भाव।

अदालत—(ना०) न्यायालय।

अदावत—(ना०) शत्रुता। वैर।

अदावती—(ना०) शत्रुता। ईर्ष्या।

अदावदी—दे० अदावती।

अदिठ—(वि०) जिसको कभी देखा नहीं। अदृष्ट। अनदेखा।

अदियण—(वि०) कृपण। कजूस।

अदिस—(वि०) दिशा रहित।

अदिस्ट—(वि०) अदृष्ट।

अदीठ—(न०) १ पीठ का एक व्रण। २ अदृष्ट। भाग्य। (वि०) अदृष्ट। अनदेखा। (क्रि०वि०) दृष्टि से परे।

अदीठ चक्कर—(न०) अदृष्ट चक्र। दवी प्रकोप।

अदीत—(न०) आदित्य। सूय। (वि०) न दिया जाने वाला।

अदीतवार—(न०) रविवार। सूरजवार।

अदीन—(वि०) १ धैर्यवान। २ तेजस्वी। ३ उदार। ४ दीनता रहित। निडर।

अदीह—(न०) १ बुरा दिन। कुदिवस। २ रात।

अदु द—(वि०) निद्व द्व। द्व द्वाभाव।

अदूर—(क्रि०वि०) जो दूर न हो। निकट।

अदूरदर्शी—(वि०) १ ओछी दृष्टि का २ दूर की नहीं सोच सकने वाला। आग की नहीं सोचने वाला ३ मोटी अक्ल का।

अदूरदर्शिता—(ना०) अदूरदृष्टि। नासमझी। बेअक्ली।

अदृढ—(वि०) १ जो दृढ नहीं। नामजबूत। २ अस्थिर।

अदृश्य—(वि०)१ जो देखा नहीं जाए। जो दिखाई न दे। २ लुप्त। ३ अगोचर।

अदृष्ट—(वि०) न देखा हुआ। लुप्त। (न०) १ भाग्य। २ दवी प्रकोप। अदीठ।

अदृष्टफल—(न०) भाग्य।

अदृष्टि—(ना०) खराब दृष्टि। कुदृष्टि।

अदेखाई—(ना०) ईर्ष्या। डाह।

अदेख्यो—(न०) ईर्ष्या। डाह। (वि०) नहीं देखा हुआ। अदेखा।

अदेव—(न०) असुर। राक्षस। (वि०) कृपण।

अदेवाळ—(वि०) १ कृपण। कजूस। २ नहीं देनेवाला।

अदेवो—(वि०) कृपण।

अदेस—(न०) १ आदेश। आज्ञा। २ प्रणाम। ३ असभ्यदेश। असस्कृत देश। कुदेश।

अदेह—(वि०) १ बिना देह का। अशरीरी। २ कृपण। (न०) १ कामदेव। २ परब्रह्म।

अदोख—(वि०) निर्दोष।

अदोखी—(वि०) १ निर्दोषी। निरपराधी। २ किसी का बुरा नहीं चाहने वाला। ३ अद्वेषी।

अधपाव—(न०) आधे पाव का तौल। (वि०) जो तौल म आधा पाव हो।
अधफर—(न०) १ पवन या टीव का मध्य भाग। २ मध्यान्तर। आधी दूरी। ३ आकाश। अतरिक्ष। ४ मरण शोच वालो के बठन की चटाई या विछावन। अधप्रतर।
अधबळियो—(वि०) अधजला।
अधविच—(न०) मध्य। बीच। अधबीच।
अध बिचलो—(वि) १ बीच का। २ आधी दूरी का।
अधबीच—(न०) किसी विस्तार या लम्बाइ का मध्य भाग। (क्रि० वि०) बीच म।
अधवूढ—(वि०) प्रौढ। अधेड।
अधबेगडो—(न०) १ एक हिंसक पशु। (वि०) वर्णसकर।
अधम—(वि०) १ नीच। २ दुष्ट। ३ पापी।
अधम उधारण—(न०) अधमो का उद्धार करन वाला। प्रभु। ईश्वर। परमात्मा।
अधमण—(न०) आधे मन का तौल। (वि०) जो तौल मे आधा मन हो।
अधमणियो—(न०) आधे मन का तौल।
अधमणीको—(न०) आधे मन का तौल।
अधमता—(ना०) नीचता। नीचपणो।
अधमरियो—(वि०) १ मृतप्राय। मृत्यु के पास पहुचा हुआ। अधमरा। २ अत्यन्त निबल। अधमरो।
अधमरो—दे० अधमरियो।
अधमाई—(ना०) १ अधमता। नीचता। २ कुटिलता। ३ अपवित्रता।
अधमीच—दे० अधमरियो।
अधमीची—(वि०) आधी मीची हुई (आंखें)। अर्द्ध उन्मीलित।
अधमुओ—दे० अधमरियो।
अधमुवो—दे० अधमुओ।
अधर—(न०) १ ओठ। होठ। २ नीचे का होठ। ३ बिना आधार का स्थान या वस्तु। ४ आकाश। (वि०) १ न इधर का न उधर का। बीच का। २ बिना आधार का। ३ जो धरती पर न हो। ४ लटकता हुआ। (क्रि० वि०) बीच म।
अधरज—(ना०) होठो की लाली।
अधरत—(ना०) आधी रात।
अधरतियो—(वि०) १ आधी रात से सबधित। २ आधी रात म सम्पन्न होने वाला।
अधरपान—(न०) होठो का गहरा चुबन।
अधरबब—(वि०) अधर में लटका हुआ। (क्रि० वि०) १ न नीचे न ऊपर। २ न इधर न उधर।
अधरबिंब—(न०) बिम्बफल के समान लाल होंठ।
अधरम—(न०) १ अधम। पाप। कुकम। २ अकर्तव्य कम। ३ श्रुति स्मृति विरुद्ध कम या आचरण।
अधरमी—(वि०) अधर्मी। पापी। दुराचारी। कुकर्मी।
अधरयण—(ना०) आधी रात।
अधर रस—(न०) १ अधर मे से टपकने वाला रस। अधरामृत। २ अधर चुबन का आनद।
अधरसुधा—दे० अधरामृत।
अधराजियो—(न०) १ राजा। अधिराज। २ सामत। ३ बडा जागीरदार। ४ आधे राज्य का स्वामी।
अधराणो—दे० अधवराणो।
अधरात—(ना०) आधी रात।
अधरामृत—(न०) १ प्रिय के होठो को चूमन स मिलन वाला मिठास या आनद। २ अधर रस रूपी अमृत।
अधरैण—(ना०) आधी रात। अधरयण।

अधम—दे० अधरम ।
अधर्मी—दे० अधरमी ।
अधवच—दे० अधविच ।
अधवचलो—दे० अधविचला ।
अधवचाळ —दे० अधविचाळै ।
अधवधरो—(वि०) १ अपूर्ण । २ अपूर्ण । ३ अपरिपक्व । ४ कम बुद्धिवाला । कच्ची समझ वाला । ५ नासमझ ।
अधवराणो—(वि०) १ जो आधा पुराना हो गया हो । न नया न बिल्कुल पुराना । जो पूरा पुराना नहीं हुआ । २ अद्धव्यवहृत ।
अधवाली—(ना०) आधी पायली का माप । (वि०) आधी पायली के माप का । आधी पायली जितना ।
अधवावरियो—(वि०) १ आधा काम में लिया हुआ । २ आधा खर्चा हुआ ।
अधविच—(न०) बीच । मध्य । अधबीच । (क्रि० वि०) बीच में ।
अधविचलो—(वि०) १ बीच का । २ आधी दूरी का ।
अधविचाळै—(अव्य०) १ बीच में । अधविच में । (वि०) बीच में रहा हुआ । ३ बीच में लटका हुआ ।
अधवीच—(न०) किसी विस्तार या लंबाई का मध्य भाग ।
अधवीटो—(वि०) १ अर्द्ध वेष्टित । २ अधूरा किया हुआ । अधूरा छोड़ा हुआ । असमाप्त । अपूर्ण ।
अधसीजो—(वि०) १ आधा सिका हुआ । २ आधा सीजा हुआ । ३ आधा पका हुआ । ४ अपक्व ।
अधसूको—(वि०) आधा सूखा और आधा गीला । जिसमें थोड़ी नमी है । जो पूरा शुष्क नहीं हुआ है ।
अधसेर—(न०) आधा सेर का तौल । (वि०) जो तौल में आधा सेर हो ।
अधसेरी—(ना०) आधे सेर का तौल ।
अधसेरो—(न०) आधे सेर का तौल ।
अधतर—(न०) १ आकाश । २ आधी दूरी । ३ मध्य । (वि०) १ ऊंचा । २ नीचा ।
अधानो—(न०) १ आधा आना । २ आधे आने का सिक्का । ब्रिटिश काल का दो पैसे का सिक्का । अधन्ना ।
अधायो—(वि०) १ अतृप्त । २ भूखा ।
अधार—(न०) आधार । सहारा ।
अधारी—(ना०) साधुओं के हाथ के सहारे का काठ का बना हुआ टेका ।
अधार्मिक—(वि०) १ जो धर्मानुसार न हो । २ धर्म रहित । ३ धर्म के विरुद्ध ।
अधि—(उप०) शब्द के पहले आने पर मुख्य श्रेष्ठ अधिक ऊपर इत्यादि अर्थ बताने वाला उपसर्ग ।
अधिक—(वि०) १ ज्यादा । विशेष । बहुत । २ फालतू । अतिरिक्त । (न०) एक काव्यालंकार ।
अधिकतम—(वि०) सबसे अधिक । मैक्सिमम ।
अधिकतर—(क्रि० वि०) १ दूसरे की अपेक्षा अधिक । तुलना में अधिक । २ आधे से अधिक । ३ प्राय । अक्सर । बहुत बार ।
अधिकता—(ना०) बहुतायत । आधिक्य ।
अधिक मास—(न०)मलमास । लौंद का महीना । पुरुषोत्तम मास ।
अधिकरण—(न०) १ आधार । सहारा । २ क्रिया के आधार का बोधक सातवाँ कारक (व्या०) ३ प्रकरण । ४ न्यायालय । ५ विभाग । महकमा ।
अधिकाई—(ना०)१ अधिकता । विशेषता । २ विलक्षणता । ३ महिमा । गौरव ।
अधिकाणी—(क्रि० वि०) ज्यादातर । बहुधा । घणी करनै ।

अधिकार—*(न०)* १ स्वत्व। हक। २ उत्तराधिकारित्व। जिम्मेदारी। ३ कब्जा। आधिपत्य। ४ वश। इख्तियार। ५ उचित दावा। ६ विषय का पूरा ज्ञान। ७ उच्च योग्यता। ८ पद। ९ शक्ति। १० प्रकरण। ११ सत्ता। हुकूमत। १२ वाक्य में शब्द का संबंध।

अधिकारी—*(वि०)* १ हकदार। २ योग्य। पात्र। ३ समर्थ। *(न०)* १ अधिकार सम्पन्न व्यक्ति। २ योग्य व्यक्ति। ३ अफसर।

अधिकांश—*(न०)* १ अधिक अंश। बड़ा हिस्सा। २ आधे से अधिक भाग। *(वि०)* बहुत सा। *(क्रि० वि०)* १ बहुधा। ज्यादातर। २ प्राय। अक्सर।

अधिकृत—*(वि०)* १ अधिकार से युक्त। २ अधिकार में आया हुआ। ३ अधिकार में किया हुआ। ४ जिसे किसी काम करने का स्वत्व प्रदान किया गया हो। ५ सत्ता प्राप्त।

अधिकेरो—*(वि०)* १ अधिक। २ तुलना में अधिक। ३ जाति, गुण परिमाण इत्यादि की तुलना में अधिक।

अधिको—*(वि०)* १ अधिक। २ विशेषता युक्त।

अधिदेव—*(न०)* १ इष्टदेव। २ मुख्य अधिष्ठाता देव। ३ रक्षक देव। ४ परमेश्वर।

अधिनायक—*(न०)* १ मुख्य नायक। मुखिया। सरदार। २ तानाशाह।

अधिपति—*(न०)* १ राजा। २ प्रधान अधिकारी ३ स्वामी। मालिक।

अधिमास—*(न०)* मलमास।

अधियार—*(दे०)* अधियाळ।

अधियाळ—*(वि०)* आधा। *(न०)* १ आधा भाग। २ आधे हिस्से का मालिक। ३ जात में आधा हिस्सेदार।

अधियाव—*(दे०)* अधियाळ।

अधियो—*(न०)* अद्धियो। पूरी बोतल (के माप) से आधे परिमाण की बोतल।

अधिराज—*(न०)* सम्राट। महाराजा।

अधिवष—*(न०)* २९ फरवरी वाला वष। लीप ईयर।

अधिवास—*(न०)* १ रहने की जगह। २ दूसरे के यहां रहना। ३ दूसरे देश में जाकर रहना।

अधिवासी—*(वि०)* १ दूसरे देश में बसा हुआ। २ निवासी।

अधिवेशन—*(न०)* १ जलसा, सभा, सम्मेलन आदि की बैठक। २ इकट्ठा होकर बैठना। ३ सम्मेलन। सभा। जलसा।

अधिष्ठाता—*(न०)* १ व्यवस्था या प्रबन्ध करने वाला। २ देखभाल करने वाला। ३ प्रमुख। ४ मालिक। ५ ईश्वर।

अधिष्ठान—*(न०)* १ रहने का स्थान। वास स्थान। २ नगर। जनपद। ३ पड़ाव। ४ संस्था और उसके कार्यकर्त्ता इत्यादि का समूह। ५ शासन तथा उसकी व्यवस्था नियम इत्यादि।

अधिष्ठायक—*(दे०)* अधिष्ठाता।

अधीश—*(दे०)* अधीस।

अधीश्वर—*(दे०)* अधीसर।

अधीस—*(न०)* १ अधीश। ईश्वर। २ राजा।

अधीसर—*(न०)* १ अधीश्वर। ईश्वर। २ राजा।

अधूरो—*(वि०)* १ अपूर्ण। अधूरा। २ शेष रहा हुआ। शेष। बाकी।

अधेड़—*(वि०)* प्रौढ़। जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो।

अधेली—*(ना०)* आधे रुपये का सिक्का। अठन्नी। आठानी।

अधेलो—*(न०)* आधे पैसे का सिक्का। धेला।

अधगिरा—(क्रि०वि०) थाल ख़ाम म।

आधो आध—(वि०) बराबर आधा। आधा। आधो आध।

अधोक्षज—दे० अधोगज।

अधोखज—(न०) अधोगज। विष्णु। परब्रह्म।

अधोगत—(ना०) अधोगति। अवनति। पतन। (वि०) अवनत। पतित।

अधोगति—(ना०) पतन। दुर्दशा।

अधोडी—(ना०) १ मना म आधा भाग। २ आधे भाग की मना। ३ मरे हुए गाय-बैल का साफ किया हुआ आधा चमडा।

अधोनर—(न०) १ अधोवस्त्र। धोती। २ भारी कपडा।

अधोफर—दे० अधफर।

अधोळी—(ना०) १ घी दूध इत्यादि लेने का और माप का नम्बी डडीवाला एक पात्र। २ आध पाव या आधे सेर का एक माप। ३ मना म आधा भाग।

अधोलोक—(न०) १ नागलोक। २ पाताल।

अधोवस्त्र—(न०) कमर के नीचे पहना जाने वाला कपडा धोती लुगी इत्यादि।

अधोवायु—(न०) अपान वायु। पाद। गाज।

अध्यक्ष—(न०) १ स्वामी। मालिक। २ सभापति।

अध्ययन—(न०) १ पठन पाठन। २ पढना ३ अभ्यास।

अध्यवसाय—(न०) १ अनथक प्रयत्न। २ उत्साहपूर्वक परिश्रम।

अध्यवसायी—(वि०) लगन से काम करने वाला।

अध्यात्म—(न०) आत्मा परमात्मा से सबधित चिन्तन या दर्शन। ब्रह्मविचार।

अध्यात्मविद्या—(ना०) आत्मा परमात्मा से सम्बधित शास्त्र। ब्रह्मविद्या।

अध्यापक—(न०) १ पढाने वाला। शिक्षक। २ गुरु।

अध्यापन—(न०) १ अध्यापक का काम। पढाना। २ पठन।

अध्यापिका—(ना०) शिक्षिका।

अध्याय—(न०) ग्रथ का परिच्छेद। प्रकरण।

अध्यास—(न०) १ मिथ्याज्ञान। २ भ्रम। धोखा।

अध्याहार—(न०) १ अस्पष्ट आशय दूढ निकालना। तर्क निकालना। २ छूटा बीज। जाल पसार। ३ ऊहापोह। तर्कवितर्क।

अध्रम—दे० अधम।

अध्रमी—दे० अधर्मी।

अध्रियामणी—(ना०) १ कटारी। २ तलवार। वीरांगना। (वि०) १ विनाशकारी। २ ज्वालामय। प्रज्वलित। ३ डरावनी। भयकर।

अध्रियामणो—(वि०) भयकर। डरावना। २ पराक्रमी। वीर।

अन—(अव्य०) निषेध, विरोध अभाव आदि के अर्थ म प्रयुक्त एक उपसर्ग। (क्रि०वि०) बिना। बगैर। (वि०) अन्य। दूसरा (न०) अन्न।

अनअन—(क्रि०वि०) १ अन्योन्य। आपस म। परस्पर। २ एक दूसरे के सबध म। (वि०) एक दूसरे के साथ किया लिया जाने वाला।

अन अवसर—(न०) कुसमय। असमय।

अनइ—(क्रि०वि०) और।

अनइच्छा—(ना०) इच्छा का अभाव। अनिच्छा। अरुचि।

अनकार—(वि०) १ वीर। २ कृपण। ३ कायर। (न०) १ बिना प्रयोजन। २ इनकार।

अनकारो—(वि०) जबरदस्त।

अनकोट—(न०) अन्नकूट।

ग्रनस—(न०) १ क्रोध। २ ईर्ष्या। ३ दुग।

ग्रनग—(वि०) १ मूढ़। २ गाहित। ३ ग्राश्चय चरित।

ग्रनघ—(वि०) निष्पाप।

ग्रनघड—दे० ग्रणघड।

ग्रनचर—(न०) यनचर जीवा म व जो ग्रन्नजीवी है। ग्रनचर। ग्रन्नजीवी। मनुष्य।

ग्रनजळ—(न०) १ ग्रनजल। दाना पानी। २ जीविका। ३ सयोग।

ग्रनज्ज—(न०) ग्रनाय।

ग्रनड—(न०) १ पवत। २ दुग। किला। ३ द्रोणाचल। ४ ग्रनडपक्षी। ५ राजा। ६ हाथी। (वि०) १ वीर। बलवान। २ नही झुकने वाला। ग्रनम्र। उद्दड। ३ बधन रहित।

ग्रनडनड—(वि०) उद्दडा को मद नष्ट करने वाला।

ग्रनडग्राडो—(वि०) ग्ररावली पवत। ग्राडावळो।

ग्रनडपख—(न०) एक बहुत बडा ग्रौर बलवान पक्षी। भारड। ग्रनलपख। इसके सबध म एसी किवदन्ती है कि यह सदव ग्राकाश म ही उडता रहता है। हाथियो के झुड के ऊपर ग्राकाश म ही ग्रण्डा देता है ग्रौर भूमि पर पहुँचने से पहले ही वह फूट जाता है बच्चा ग्रडे से निकल कर ग्रपनी चोच या पजा म हाथी को पकडकर ऊपर उड जाता है। जिस प्रकार गरुड सर्पों का शत्रु माना जाता है उसी प्रकार यह हाथियो का शत्रु माना जाता है। कवि प्रसिद्धि म भी ऐसे उल्लेख मिलते है यथा—घर जहर देखिया गुरड घख पेखिया पराभर ग्रनडपख। यह केवल कवि प्रसिद्धि (कवि समय की ही बात मानी जाती है परन्तु कहा जाता है कि मैडागास्कर के प्राणी सग्रहालय (ज़ू) म एक पक्षी Pterodactyls की हड्डियो के विचार ग्रौर रचना के लिए ही एक बडा कमरा खास तौर से बनाया गया है। जिसम उस देखने को सजाया गया है)।

ग्रनडपखचर—(न०) हाथी। पटाझर।

ग्रनडमेर—(न०) सुमरु पवत। मेरगिर।

ग्रनडर—(वि०) ग्रडर। निडर।

ग्रनडवान—(न०) १ बैल। बळद। २ पवनवासी।

ग्रनडहेम—(न०) १ स्वर्णगिरि। सोन गिर। २ हिमालय।

ग्रनडाँ-ग्रनड—(वि०) १ उद्दडा को दड देने वाला। २ वीर। जोरावर।

ग्रनडाँनड—दे० ग्रनडाँ ग्रनड।

ग्रनडी—(वि०) १ ग्रनाडी। २ मूख। (ना०) १ ग्रनाडीपन। २ मूखता।

ग्रनडीठ—(वि०) ग्रदृष्ट। बिना देखा। ग्रदीठ।

ग्रनडुह—(न०) बल। बळद।

अनडू—(न०) बैल। बळद।

ग्रनडू—(न०) गढ़। किलो। दुग।

ग्रनत—(वि०) १ ग्रनत। २ दूसरा। ३ नही झुकने वाला। ३ ग्रसीम। (न०) १ विष्णु। २ ग्रनत भगवान। ३ ईश्वर। ४ महादेव। (क्रि० वि०) ग्रन्यत्र।

ग्रनतद्वार—(न०) १ विष्णु लोक। स्वग।

ग्रनता—(ना०) पृथ्वी।

ग्रनथ—(वि०) १ वह जिसके नाथ नही डाली जा सकी हो। २ जो किसी के वश म नही हो सका हो। ३ उन्मुक्त। ४ उद्दड। ५ निरकुश। ६ बिना नथ का।

ग्रनथ नथ—(वि०) १ वश म नही होने वालो को वश म करने वाला। पराजित

नही होन वालो नो पराजित करने वाला । २ गर्विष्टो का गव नष्ट करन वाला ।

अनर्थां-नथ—दे० अनथ-नथ ।

अनर्थां-नथी—दे० अनथ नथ ।

अनदान—दे० अन्नदान ।

अनदाता—दे० अन्नदाता ।

अनधिकार—(वि०) १ बिना अधिकार का । अधिकार रहित । २ अपात्र । (न०) अधिकार के न रहने की स्थिति । अधिकार का अभाव । (नि० वि०) बिना अधिकार के ।

अनधिकारी—(वि०) १ जिसे अधिकार न हो । अपात्र । २ अयोग्य ।

अनधू—दे० अनडू ।

अनध्याय—(न०) वह दिन जिसमे शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने का निषेध हो । पढ़ाई नही करने का दिन । पढ़न की छुट्टी । अगतो ।

अनन्य—(वि०) एक निष्ठ ।

अनन्य भाव—(न०) एक निष्ठ भक्ति या लगन ।

अनपच—(न०) अजीर्ण । बदहजमी । अपचो ।

अनपाणी—दे०अन्नपाळ या अन्नजल ।

अनपूरणा—दे० अन्नपूर्णा ।

अनबन—दे० अणबण ।

अनबध—दे० अनमध ।

अनबधी—दे० अनमध ।

अनबाध—दे० अणबाध ।

अनबांध—(वि०) बिना बधा हुआ । खुलो । खुलियोडो ।

अनबूझ—दे० अणबूझ ।

अनबोल—(वि०) न बोलने वाला । बेजबान । गूगो ।

अनबोला—दे० अणबोला ।

अनभल—(न०) अहित ।

अनभिज्ञ—(वि०) १ अनजान २ मूर्ख ।

अनभ्यास—(न०) १ अभ्यास नही होना । २ आदत नही होना ।

अनम—दे० अनमी ।

अनम-जायो—(न०) १ नही झुकने वाले का पुत्र । २ वीर पिता का वीर पुत्र । ३ वीर परपरा को कायम रखने वाला वीर पुत्र ।

अनमद—(न०) अन्न का नशा । अन्नमद । वि०) १ मद रहित । २ गर्व रहित ।

अनमनो—(वि०) १ अन्यमनस्क । अनमना २ उदास । ३ अस्वस्थ ।

अनमध—(वि०) १ बंधन मे नही आने वाला । २ नही झुकने वाला । ३ आत्मसमर्पण नही करने वाला । ४ अजय । ५ अपार ।

अनमधी—दे० अनमध ।

अनमाग्यो—असंख्य । (न०) १ अजय वीर । २ शत्रु । (वि०) बिना मांगा हुआ ।

अनमिख—(वि०) अनिमेष ।

अनमिळ—(वि०) बमेल । बजोड । (न०) शत्रु ।

अनमित—(वि०) अपार । असंख्य ।

अनमी—(वि०) १ अनम्र । २ नही झुकने वाला वीर ।

अनमीवध—(वि०) जबरदस्त । बलवान ।

अनमीखध—दे० अनमिखध ।

अनमेख—दे० अनमिख ।

अनमेळ—(न०) १ शत्रुता । वैर । २ शत्रु । बैरी ।

अनमोल—(वि०) १ अमूल्य । २ बहुमूल्य ३ श्रेष्ठ ।

अनम्म—दे० अनम ।

अनम्र—दे० अनम ।

अनय—(न०) १ अन्याय । अनीति । २ आफत ।

अनामनी—*(वि०)* गमानत पर रखा हुआ। अमानती।
अनामिका—*(ना०)* कनिष्ठिका के पास की अगुली।
अनामी—*(वि०)* बिना नाम का। अप्रसिद्ध।
अनायास—*(क्रि०वि०)* १ बिना प्रयास के २ सहसा। अचानक।
अनार—*(न०)* दाडिम फल।
अनारदाणा—*(न०व०व०)* दाडिम के बीज। अनार दाने।
अनाय—*(वि०)* १ जो आर्य न हो। २ दुष्ट। *(न०)* १ आर्येतर जाति। २ आर्येतर जाति का व्यक्ति।
अनावश्यक—*(वि०)* बजरूरी। फालतू।
अनावष्टि—*(ना०)* बरसात का न होना। वर्षाभाव। सूखा।
अनामतो—*(अव्य०)* १ नास्ति नहीं। विद्यमानता। २ जिसका ख्याल ही न हो। ३ अचानक। एकदम। *(वि०)* बुरा।
अनासुरत—*दे०* अनासुरती।
अनासुरती—*(वि०)* १ जो सुनने में नहीं आया हो। अनानुश्रुत। २ जिसका खयाल ही न हो। ३ जो सहज ही में बन जाय। *(क्रि० वि०)* अचानक। अकस्मात।
अनाह—*(वि०)* अनाथ।
अनाहक—*(क्रि० वि०)* नाहक। व्यर्थ में।
अनाहत—*दे०* अनहद नाद।
अनाहतनाद—*दे०* अनहद नाद।
अनाहार—*(वि०)* निराहार।
अनि—*(वि०)* अन्य। दूसरा। और।
अनिच्छा—*(ना०)* १ इच्छा का अभाव। २ अरुचि।
अनिठ—*(वि०)* जो निठे नहीं। जो समाप्त न हो। अपार।
अनित्य—*(वि०)* १ अस्थायी। २ असत्य। ३ नश्वर।
अनिद्रा—*(न०)* नींद नहीं आने का रोग।
अनियम—*(वि०)* १ नियम का अभाव। बेकायदगी। २ अव्यवस्था।
अनियाई—*(वि०)* अन्यायी। अत्याचारी।
अनियाव—*(न०)* अन्याय। अत्याचार।
अनिल—*(न०)* पवन। वायु।
अनिलकुमार—*(न०)* हनुमान।
अनिवार—*(क्रि०वि०)* १ दूसरी बार। २ फिर कभी। दे० अनिवार्य।
अनिवार्य—*(वि०)* १ अवश्यम्भावी। २ अटल।
अनिश्चित—*(वि०)* जिसका निश्चय न किया गया हो।
अनिष्ट—*(वि०)* १ अवांछित। २ अशुभ। *(न०)* १ अमंगल। २ विपत्ति। ३ हानि।
अनिंद्य—*(वि०)* १ निंदा नहीं करने योग्य। २ निर्दोष। ३ सुन्दर।
अनी—*(ना०)* सेना। फौज।
अनीक—*(ना०)* १ सेना। फौज। २ युद्ध। ३ वीर।
अनीच—*(वि०)* १ जो नीच न हो। अनिकृष्ट। अच्छा। २ जो नीचा न हो। ऊंचा।
अनीठ—*(वि०)* १ जो कठिन न हो। सरल। सुगम। २ जो समाप्त न हो। बहुत। *(क्रि०वि०)* सरलता से।
अनीत—*दे०* अनीति।
अनीति—*(ना०)* १ अन्याय। बदमाशी। २ दुराचरण। ३ पाप। ४ अत्याचार।
अनीतो—*(वि०)* १ नीति विरुद्ध चलने वाला। अन्यायी। २ जुल्मी। दुराचारी। ३ बदमाश। ४ पापी।
अनीश्वर—*(वि०)* १ ईश्वर रहित। २ नास्तिक।
अनिश्वरवाद—*(न०)* ईश्वर को नहीं मानने का सिद्धान्त।

अनीश्वरवादी —(न०) नास्तिक।
अनीम—(न०) १ जतन। रोक। २ अनीत।
अनीह—(वि०) १, निष्काम। २ निर्लोभी।
अनीद—(वि०) जाग्रत।
अनु—(अव्य०) समापता सादृश्यता। पीछे बाद म, साथ साथ लगा हुआ कई ग्रार प्रत्यय इत्यादि ग्रथ म प्रयुक्त गक उपमग।
अनुकरण—(न०) १ कुछ देख करके उसी प्रकार करना। नकल। देखादेखी। २ पीछे पीछे चलना।
अनुकंपा—(ना०) १ दया। २ सहानुभूति।
अनुकूळ— (वि०) १ अनुकूल। ग्रनुसार। २ हितकर। ३ प्रसन्न। ४ समर्थक। हिमायती।
अनुकूळता—(ना०) १ अनुकूल होने का भाव। २ पक्ष म होन की स्थिति।
अनुक्रम—(न०) १ क्रम। सिलसिला। २ पद्धति। परपरा। ४ व्यवस्था। ५ नियम।
अनुक्रमणिका—(ना०) अक्षरादि क्रम स बनाई हुई सूची।
अनुक्रमणो—(क्रि०) १ अनुक्रम म चलना। २ पीछे पीछे चलना।
अनुग—(न०) सवक। दास। (वि०) १ अनुगामी। २ अनुयायी।
अनुगमन—(न०) १ अनुसरण। अनुकरण। २ पति के पीछे सती होना। सहमरण।
अनुगामी—(वि०) अनुगमन करनेवाला। अनुयायी।
अनुग्या—(ना०) आज्ञा। अनुज्ञा।
अनुग्रह—(ना०) १ कृपा। दया। २ आभार। ३ उपकार। पाड।
अनुचर—(न०) सवक। दास। चाकर। नौकर।
अनुचित—(वि०) अयोग्य। अयोग।
अनुज—(न०) छोटा भाई।
अनुजा—(ना०) छोटी बहन।
अनुजीवी—(वि०) आश्रित। (न०) सेवक। चाकर।
अनुताप—(न०) १ मानसिक सताप। २ दुख। ३ पश्चात्ताप। पछतावो।
अनुत्तम—(वि०) १ जो उत्तम न हो। २ सबसे उत्तम।
अनुत्तर—(वि०) निरुत्तर।
अनुत्तीरण—(वि०) उत्तीर्ण नहीं। परीक्षा या जाच म असफल। नापास। फेल।
अनुदात्त—(न०) स्वर के तीन भेदो म का एक (उदात्त अनुदात्त और स्वरित)। लघुस्वर। (वि०) १ नीचा (स्वर)। २ लघु (उच्चारण)। ३ लघु। तुच्छ।
अनुदान—(न०) सस्था को ग्रार स सहायता के रूप म दिया जाने वाला धन। ग्राट।
अनुद्यमी—(वि०) १ उद्यम रहित। २ आलसी।
अनुनय—(ना०) १ विनय। २ खुशामद।
अनुनासिक—(वि०) १ नासिका सबधी। २ जिसका उच्चारण नासिका और मुख स हो। सानुनासिक। (न०) अनुनासिक वर्ण, यथा—ङ ञ ण न म।
अनुपम—(वि०) १ उपमारहित। अतुल्य। अद्वितीय। २ सर्वोत्तम।
अनुपयुक्त—(वि०) १ जो उपयुक्त न हो। अनुपयोगी। २ अयोग्य।
अनुपयोगी—(वि०) अनुपयुक्त।
अनुपस्थित—(वि०) गैर हाजिर।
अनुपस्थिति—(ना०) गैर हाजिरी।
अनुपान—(न०) औषधि के अगभूत रूप म उसके साथ या बाद म खाई जाने वाली वस्तु।
अनुप्रास—(न०) एक शब्दालकार। वर्ण मैत्री।
अनुबंध—(न०) १ पारस्परिक बधन। २ समझौता। एग्रीमेन्ट। ३ आगे पीछे

का सम्बन्ध। ४ विषय प्रयोग अनि वार्य तथा सम्बन्ध-इन चारों का समूह (वदान्त)। ५ वस्तु जीव या अग इत्यादि म होनेवाला पारस्परिक सबध।

अनुभव—(न० १ परीक्षण या प्रयोग द्वारा सचित ज्ञान। प्रयोग द्वारा प्राप्त ज्ञान। २ सवेदना शक्ति स प्राप्त बोध। तजुर्बा। अनुभूति।

अनुभवणो—(क्रि०) अनुभव करना।

अनुभवी—(वि०) अनुभव वाला। तजुबा कार।

अनुभाव—(न०) १ मनोगत भावो से उत्पन्न शारीरिक चेष्टाएँ। रोमाच इत्यादि। २ महिमा। ३ प्रभाव।

अनुभूत—(वि०) अनुभव किया हुआ।

अनुमति—(ना०) १ सम्मति। २ अनु मादन। मजूरी।

अनुमान—(न०) १ अन्दाज। अटकळ। २ तर्क। ३ न्याय। शास्त्र क चार प्रमाणो से एक। अनुमिति का साधन।

अनुमानणो—(क्रि०) अनुमान करना।

अनुमादन—(वि०) अनुमोदन करने वाला।

अनुमादणो—(क्रि०) अनुमोदन करना। सम्मति देना। मजूरी देणी।

अनुमादन—(न०) १ समर्थन। २ सम्मति। टेको।

अनुयायी—(वि०) १ पथ या मत का। २ अनुसरण करने वाला। ३ शिष्य।

अनुरक्त—(वि०) १ रँगा हुआ। २ आसक्त।

अनुराग—(न०) १ प्रम। २ प्रणय भाव। ३ आशक्ति। अत्यन्त लगाव।

अनुरागी—(वि०) अनुराग वाला। प्रेमी।

अनुरूप—(वि०) १ सदृश। २ तुल्य। ३ उपयुक्त।

अनुरोध—(न०) १ आग्रहपूर्वक विनय। २ विनय पूर्वक आग्रह।

अनुलेप—(न०) नकल। २ भूत लेपन।

अनुलोम—(न०) १ ऊपर से नीच की ओर क्रमश उतार। २ सगीत का अवरोह। ३ यथाक्रम। ४ नीच वर्ण की स्त्री क साथ का (विवाह)।

अनुलोमज—(न०) अनुलोम विवाह से उत्पन्न हुई सतान।

अनुवाद—(न०) कहा या लिखी हुई बात का दूसरी भाषा म कहना या लिखना। भाषान्तर।

अनुवादक—(न०) भाषान्तरकार।

अनुशासक—(न०) १ अनुशासन करन वाला। २ आज्ञा देन वाला।

अनुशासन—(न०) १ नियमानुशीलता। वह विधान जो किसी सस्था या वर्ग के सभी सदस्यो को मर्यादा म रह कर काय अथवा आचरण करन के लिय बाध्य करे। २ आज्ञा। आदेश। ३ उपदेश। ४ नियम। कायदा। ५ शासन करना। ६ महाभारत का एक पर्व।

अनुष्टुप—(न०) आठ वर्णों के पद वाला एक वर्ग वृत्त। एक छद।

अनुष्ठान—(न०) १ फल की अपेक्षा स की जाने वाली देवता की पूजा या आराधना। २ कोई धार्मिक क्रिया। ३ कार्यारम्भ। ४ काय का विधि पूर्वक सम्पादन।

अनुसरण—(न०) १ अनुकरण। नकल।

अनुसरणो—(क्रि०) अनुकरण करना। २ पीछे चलना।

अनुसधान—(न०) १ अन्वेषण। खोज। २ जाच पड़ताल।

अनुसार—(क्रि०वि०) १ अनुकूल। सदृश। २ के समान। की तरह।

अनुस्वार—(न०) १ स्वर के पीछे उच्चरित होन वाला अनुनासिक वर्ण। २ वर्ण के ऊपर लगने वाला अनुनासिकता सूचक बिंदु। ( )।

अनूठो—(वि०) १ अनोखा । अनूठा । २ विलक्षण । ३ अपने ढंग का निराला । ४ असाधारण ।
अनूढ—(वि०) अविवाहित ।
अनूढा—(ना०) अविवाहिता स्त्री । २ परकीया नायिका ।
अनूनो—दे० अणूनो ।
अनूप—(वि०) १ अनुपम । २ अद्भुत । ३ सुन्दर । (न०) जल बहुल प्रदेश ।
अनूपम—दे० अनुपम ।
अनूरो—(वि०) अतूर । कामहीन ।
अनेक—(वि०) एक से अधिक । बहुत ।
अनेकता—(ना०) १ भेद । २ विरोध । ३ संगठन का अभाव । ४ अधिकता ।
अनेकार्थी—(वि०) अनेक अर्थवाला । (न०) वह कोश ग्रंथ जिसमें एक शब्द के अनेक अर्थ या पर्याय दिये हुए हों ।
अनेर—(वि०) अन्य । दूसरा ।
अनेरण—(वि०) अजेय । (अव्य०) अन्य प्रकार से ।
अनेरी—(वि०) १ दूसरी । २ निराली ।
अनेरो—(वि०) १ दूसरा । २ निराला । ३ अपूर्व । अनोखा ।
अनेस—(वि०) १ घर रहित । २ स्नेह रहित । ३ स्वामी रहित ।
अनेसी—(वि०) १ असह्य । २ बिना घर वाला ।
अनेसो—दे० अणेसो ।
अनेह—(न०) १ स्नेहाभाव । २ द्वेष । ३ शत्रुता ।
अनेहो—(वि०) स्नेह नहीं रखने वाला । २ द्वेषी । ३ शत्रु ।
अन—(अव्य०) १ और २ फिर । पुनः ।
अनोअन—(सर्व०) १ अन्यान्य । परस्पर । आपस में । २ और दूसरे ।
अनोखो—(वि०) १ अनोखा । निराला । २ सुंदर । ३ नहीं देखा हुआ ।
अनोप—दे० अनुपम ।
अनोपम—दे० अनुपम ।
अन्न—(न०) नाज । अनाज ।
अन्नकूट—(न०) १ श्रीठाकुरजी के आगे रखा जानेवाला अनेक प्रकार के पकवानों की राशि । २ श्री ठाकुरजी के पकवानों का भोग लगाने का एक पर्व ।
अन्नखेत्र—(न०) भूखों को भोजन या अन्न वितरण करने का स्थान ।
अन्नजळ—दे० दानापानी ।
अन्नदाता—(वि०) १ अन्न देने वाला । २ आश्रयदाता ।
अन्नदान—(न०) अन्न का दान ।
अन्नपाणी—दे० अन्नपानी ।
अन्नपूर्णा—(ना०) १ अन्न की अधिष्ठात्री देवी । २ पार्वती ।
अन्नप्राशन—(न०) बालक को छठे या आठवें महीने पहले पहल अन्न खिलाने का संस्कार ।
अन्नळा—(ना०) १ अन्नपूर्णा २ हिंगुलाज देवी । ३ प्रबल वायुवेग । आँधी । ४ पवन । ५ अग्नि ।
अन्नाज—(न०) अनाज ।
अन्य—(वि०) १ इतर । और । २ बाकी । ३ पराया ।
अन्यत्र—(क्रि० वि०) १ और कहीं । २ दूसरी जगह ।
अन्यथा—(अव्य०) १ अन्य प्रकार से । २ नहीं तो । ३ व्यर्थ । (न०) असत्य । झूठ । कूड़ । (वि०) १ विपरीत । उलटा । २ मिथ्या ।
अन्यपुरुष—(न०) १ पुरुषवाची सर्वनाम का तीसरा भेद । वक्ता एवं श्रोता से इतर व्यक्ति (व्या०) ।
अन्याई—दे० अन्यायी ।
अन्याऊ—(वि०) १ अन्याय करने वाला । अन्यायी । १ अन्याय से सम्बन्धित ।

अन्याय—(न०) १ न्याय विरुद्ध काम। २ अधर्म। ३ अनीति। ४ अत्याचार।
अन्यायी—(वि०) १ अन्याय करने वाला। २ अत्याचारी।
अन्याव—दे० अन्याय।
अन्वय—(न०) १ पद्य के शब्दों को वाक्य रचना के अनुसार पहले कर्त्ता फिर कर्म तदनतर क्रिया का रखना (व्या०)। २ पदों का एक दूसरे से संबंध (व्या०)। ३ ठीक और संगत अर्थ। ४ परस्पर संबंध। ५ कार्य कारण का सम्बन्ध। ६ संयोग। मेल।
अन्वेषण—(न०) अनुसंधान। खोज।
अप—(उप०) अलग अनुचित नीच, पीछे रहित विरुद्ध इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होने वाला एक उपसर्ग। (न०) पानी।
अपकज—(क्रि० वि०) स्वकार्यार्थ। अपने लिये। (न०) बुरा काम।
अपकर्म—(न०) बुरा काम। कुकर्म।
अपकंठ—(न०) बालक।
अपकाज—दे० अपकार।
अपकाजी—(वि०) आपस्वार्थी। मतलबी।
अपकाय—(न०) पीने के जीव।
अपकार—(न०) १ कुकर्म। २ हानि ३ अनिष्ट। ४ अहित। बुराई। ५ विरोध। ६ अत्याचार। ७ अनादर।
अपकारी—(वि०) १ अपकार करने वाला। २ विरोध करने वाला। अनिष्ट करने वाला।
अपकीरत—(ना०) अपकीर्ति। अपयश। अपजस। निंदा। बदनामी।
अपकीरतो—दे० अपकीरत।
अपकीर्ति—दे० अपकीरत।
अपक्ष—दे० अपख।
अपख—(वि०) १ पर रहित। अपक्ष। २ असहाय। ३ बिना पाँख वाला।
अपगत—(ना०) १ अपगति। बुरी गति। २ बुरे मार्ग पर जाना। ३ नाश।
(वि०) १ भागा हुआ। २ हटा हुआ।
अपगा—(ना०) नदी।
अपगो—(वि०) १ रगड़ा। खोडो। २ अविश्वासी। निपगो।
अपघात—(न०) १ आत्महत्या। आपघात। २ हत्या। हिंसा। ३ विश्वासघात।
अपघाती—(वि०) १ आत्महत्यारा। आपघाती। २ विश्वासघाती। ३ हिंसक। हत्यारा।
अपच—दे० अपचो।
अपचाल—(ना०) १ बुरी चाल। कुचाल। २ खोटाई। बदमाशी।
अपचो—(न०) अजीर्ण। बदहजमी।
अपछर—(ना०) अप्सरा।
अपछरा—(ना०) अप्सरा।
अपजस—(न०) अपयश। बदनामी। अपकीर्ति।
अपजीव—(न०) १ प्राण। २ आत्मा।
अपजोग—(न०) १ फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की वह स्थिति जो अमंगलकारी समझी जाती है। अपयोग। कुजोग। २ बुरा समय। कुसमय। ३ असगुन।
अपजोर—(न०) १ अपना जोर। २ आत्मशक्ति। ३ अपने बल का घमंड। ४ अभिमान।
अपजोरी—(क्रि० वि०) १ अपने जोर से। २ अभिमान से। (न०) अभिमान।
अपजोरो—(वि०) १ अपनी शक्ति पर निर्भर रहने वाला। २ किसी के वश में नहीं रहने वाला। स्वच्छंद। स्वच्छाचारी। ३ किसी के अधिकार को नहीं मानने वाला। ४ अपनी शक्ति का गर्व करने वाला।
अपट—(वि०) १ बहुत अधिक। अपार। २ जबरदस्त।
अपटांपूर—(न०) १ दोनों किनारों तक

भरी हुई और खूब जोर से बहनेवाली। (नदी)। २ पूरा भरा हुआ (तालाब)। ३ अस्थिर।

अपठ—(वि०) नहीं पढ़ा हुआ। अशिक्षित।

अपड़—(ना०) १ पकड़ने की क्रिया। पकड़। २ ग्रहण करने की शक्ति। ३ समझ। बुद्धि। (वि०) १ जो गिरफ्तार न हो। २ जो हराया नहीं जा सके। ३ वीर।

अपड़णो—(क्रि०) १ भाग कर दूसरे के बराबर पहुँचना। २ थामना। ग्रहण करना। पकड़ना। पकड़णो। ३ काबू में लेना। ४ गिरफ्तार करना। ५ ढूँढ निकालना। ६ अवरुद्ध करना। गति को बंद करना। ७ समझना। ८ गलती को ढूँढ निकालना।

अपड़ाणो—दे० अपड़ावणो।

अपड़ावणो—(क्रि०) १ पकड़वाना। २ थामना। ३ पकड़ा जाना।

अपड़ीजणो—(क्रि०) पकड़ा जाना।

अपढ़—(वि०) १ अनपढ़। २ मूर्ख।

अपणाइत—(ना०) अपनापन। अपनत्व। आत्मीयता।

अपणाणो—(क्रि०) १ अपनाना। अपना बनाना। २ प्यार से आवर्जित करना। ३ अपने अधिकार में करना।

अपणात—दे० अपणाइत।

अपणायत—दे० अपणाइत।

अपणावणो—दे० अपणाणो।

अपणी—(सर्व० वि०) अपनी।

अपणू—दे० अपणो।

अपणो—(क्रि०) १ अर्पण करना। २ देना। (सर्व०) अपना। स्वयं का। (ना०) आत्मीय। स्वजन।

अपत—(वि०) १ कृतघ्न। २ अविश्वासी। ३ दुष्ट। ४ नीच। अधम। ५ पत्तों से रहित। अपत्र। ६ निलज्ज। ७ अप्रतिष्ठित।

अपतरो—(वि०) १ अप्रतिष्ठित। २ अविश्वासी। ३ कुपात्र। ४ स्वच्छंद। ५ निलज्ज।

अपतियारो—(वि०) अविश्वासी। (ना०) अविश्वास।

अपतिया—(वि०) १ अविश्वासी। २ अप्रतिष्ठित। ३ स्वार्थी।

अपती—(वि०) १ अविश्वस्त। २ बदमाश। ३ नीच। अधम। ४ कृतघ्न। ५ दुराचारी। ६ पति विहीना।

अपथ—(ना०) १ कुमार्ग। २ अपथ्य। कुपथ्य।

अपथियो—(वि०) १ कुमार्गी। कुपथगामी। २ अपथ्य करने वाला।

अपदत—(ना०) कुपात्र को दिया हुआ दान। (वि०) १ कुपात्र को दिया हुआ। २ अपना दिया हुआ। स्वदत्त।

अपदेव—(ना०) भूत, प्रतादि आन देव।

अपधम—(ना०) अपध्वंस। नाश।

अपनाम—(ना०) बदनाम। बदनामी।

अपभ्रंश—(ना०) १ भारत की एक प्राचीन भाषा। २ प्राकृत भाषाओं के बाद की भाषा। ३ शब्द का वह रूप जो मूल से बिगड़ कर बना हो। ४ मूल धातु से बिगड़ कर बना हुआ शब्द। ५ पतन। ६ विकृति। बिगाड़।

अपमपर—दे० अपपर।

अपमल—(वि) १ आत्मबली। २ जोरावर। ३ स्वतन्त्र। ४ उद्दंड। आपमलो।

अपमलो—दे० अपमल।

अपमान—(ना०) अनादर। तिरस्कार।

अपमानित—(वि०) जिसका अपमान हुआ हो। अनादृत।

अपमाग—(ना०) कुमार्ग।

अपमृत्यु—(ना०) १ अकाल मृत्यु। २ अचानक मौत। कुमौत।

अपयश—दे० अपजस ।

अपर—(वि०) १ अन्य । दूसरा । २ और कोई । ३ जिसके बाद में कुछ न हो । ४ जो बाद में न हो । पहला । ५ अगला । ६ जो पराया न हो । ७ अभिन्न । ७ पिछला । ९ अपार ।

अपरचो—(ना०) १ अपरिचय । असिध । २ जानकारी का अभाव । ३ संशय । ४ अविश्वास ।

अपरता—(ना०) १ अविश्वास । २ संशय । ३ भिन्नता । ४ परायापन । ५ दुराव ।

अपरबळ—(ना०) अपार शक्ति । (वि०) प्रचण्ड शक्तिशाली । बलवान ।

अपरबळी—(वि०) प्रचण्ड शक्तिशाली । महाबलवान ।

अपरम—दे० अप्रम ।

अपरमप्रम—(ना०) परब्रह्म । २ ईश्वर । अप्रमेय ।

अपरलोक—(ना०) परलोक । स्वर्ग ।

अपरस—(वि०) १ न छूने योग्य । अस्पृश्य । २ बिना छुआ हुआ ।

अपरस—(ना०) १ अमैत्री । शत्रुता । २ बिगड़ा हुआ रस ।

अपरच—(अव्य०) १ इस मजमून के बाद । २ इसके आगे लिखना है कि । इसके पश्चात् । पश्चात् लेख यह है कि । ३ विशेष में । फिर भी । ४ फिर यह । उपरांत । उपरच ।

अपरपर—(ना०) १ परब्रह्म । २ ईश्वर । (वि०) १ अपरपार । अत्यधिक । अपार । पुष्कल ।

अपरपार—(वि०) अत्यधिक । अपरम्पार ।

अपरा—(ना०) १ लौकिक विद्या । २ पदार्थ विद्या । ३ पश्चिम दिशा ।

अपराजित—(वि०) १ न हारा हुआ । २ जो हराया न जा सके ।

अपराजिता—(ना०) १ दुर्गा । २ कोयल ।

अपराध—(ना०) १ भूल । गलती । २ दोष । कसूर । ३ पाप ।

अपराधी—(वि०) १ अपराध करने वाला । दोषी । कसूरवार । २ पापी ।

अपराधीन—(वि०) जो पराधीन न हो । स्वतंत्र । स्वाधीन ।

अपरिग्रह—(ना०) १ आवश्यकता से अधिक धन का परित्याग । २ संग्रह न करना । ३ दान न लेना ।

अपरिचय—(ना०) परिचय या जान पहचान का अभाव । असिध । अपरचो ।

अपरेल—(ना०) अंग्रेजी साल का चौथा महीना । अप्रिल ।

अपरार—(वि०) १ अपरिहार्य । २ नहीं टलने वाला । ३ नहीं चूकने वाला । (ना०) अवरोध । रुकावट ।

अपरोक्ष—(वि०) प्रत्यक्ष ।

अपर्णा—(ना०) १ पार्वती । २ दुर्गा ।

अपल—(वि०) १ अपार । बहुत । २ बराक । ३ नहीं मानने वाला । ४ वश में नहीं होने वाला ।

अपलक्षण—(ना०) कुलक्षण । कुलखण ।

अपलखण—दे० अपलक्षण ।

अपलखणो—(वि०) कुलक्षण वाला । कुलखणो ।

अपलच्छण—दे० अपलक्षण ।

अपलाणियो—(वि०) जिस पर पलान नहीं कसा गया हो । बिना पलान कसा हुआ (ऊंट, घोड़ा आदि) ।

अपलाणियोडो—दे० अपलाणियो ।

अपलाणो—दे० अपलाणियो ।

अपवर्ग—(ना०) १ मोक्ष । निर्वाण । २ त्याग । ३ दान ।

अपवर्जन—(ना०) १ त्याग । २ दान । ३ मोक्ष ।

अपवाद—(ना०) १ सामान्य नियम में विरोध जैसी वस्तु या उसका उदाहरण ।

२ सवसाधारण नियम के विरुद्ध बात या घटना। ३ विरुद्ध बात। ४ निंदा। बदनामी। ५ खडन। ६ अस्वीकार। ७ दोष।

अपवित्र—(वि०) १ अशुद्ध। मलिन। २ पाप युक्त। अधार्मिक। ३ न छूने योग्य।

अपशकुन—(न०) अशुभ शकुन। अपसुगन।

अपशब्द—(न०) १ गाली। २ दुर्वचन। ३ अशुद्ध शब्द।

अपसर—(ना०) अप्सरा।

अपसरा—(ना०) अप्सरा।

अपसवण—(न०) अपशकुन। बुरा सगुन। अपसुगन।

अपसु—(न०) अपशु। गदहा।

अपसुगन—दे० अपसुगन।

अपसुगन—(न०) अपशकुन।

अपसौण—दे० अपसवण।

अपहड—(वि०) १ उदार। दातार। २ अपने ही साहस और सामर्थ्य पर दान, मान सहायता और युद्धादि श्रेष्ठ कार्यों को करने वाला। ३ अत्यधिक। क्रूर।

अपहरण—(न०) जबरदस्ती छीनने या उठा ले जाने की क्रिया।

अपग—(वि०) १ अगहीन। २ लूला। लगड़ा। ३ असमर्थ।

अपथ—(न०) १ कुपथ। कुमार्ग। २ पथ रहित।

अपपर—दे० अपरपर।

अपाण—(न०) १ बल। शक्ति। २ बिना हाथों वाला। ३ अशक्त।

अपाणा—(सर्व० ब० व०) अपने।

अपाणी—(सर्व०) अपनी।

अपाणो—(सर्व०) आत्मीय। अपना।

अपात्र—(वि०) १ गुणहीन। २ अयोग्य। (न०) कुपात्र।

अपादान—(न०) १ किसी से अलगाव या पृथक्करण। २ एक कारक। ३ पांचवीं विभक्ति का अर्थ।

अपादान कारक—(न०) जिससे विश्लेष या अलगाव होता है उस संज्ञा शब्द का वाक्य में रूप अथवा कारक (व्या०)। व्याकरण में पांचवां कारक।

अपान—(न०) पांच प्राणों (प्राण अपान व्यान उदान और समान) में से एक जो गुदा द्वारा निकलता है। पाद। गोज।

अपान वायु—(न०) गुदा मार्ग से निकलने वाली हवा। अधो वायु। पाद। गोज।

अपार—(वि०) १ जिसका पार न हो। अनंत। २ अत्यधिक।

अपारण—दे० अपार।

अपाल—(वि०) १ बहुत। अपल। २ नहीं रुकने वाला। ३ नहीं रोकने वाला।

अपाळ—(वि०) जिसका कोई पालन करने वाला न हो।

अपाळो—(वि०) जो पैदल नहीं चल रहा हो। जो सवारी किया हुआ हो।

अपावन—(वि०) अपवित्र।

अपीत—(वि०) १ जिसमें सिंचाई न की जाती हो (खेत) २ सिंचाई के अयोग्य। ३ जो पीले रंग का न हो।

अपीधो—(वि०) १ बिना पिया हुआ। २ प्यासा। ३ बिना नशा किया हुआ।

अपील—(ना०) १ नीचे की कोर्ट के फैसले के विरुद्ध ऊपर की कोर्ट में की जाने वाली प्रार्थना। पुनर्विचारार्थ प्रार्थना। २ अनुरोध। ३ निवेदन।

अपुत्र—(वि०) १ पुत्र रहित। संतान रहित।

अपूज—(वि०) १ अप्रतिष्ठित। २ अपूजित। ३ जिसकी पूजा अर्चना नहीं होती हो (देवमूर्ति)। ४ जिसकी पूजा या सम्हाल की कोई व्यवस्था न हो। ५ नहीं पूजा जाने वाला।

अपूठ—(वि०) १ विरुद्ध । उलटा । २ पीठ तरफी । ३ सामने । सुलटा । ४ सामने की ओर का । अपृष्ठ ।

अपूठी—(ना०) पीठ की नस में पड़ने वाली गाँठ जो ऊपर चढ़ती हुई गले में आकर मृत्यु का कारण बन जाती है । (वि०) १ विमुखी । उलटी । (क्रि०वि०) इसके विरुद्ध । दे० अपूठा ।

अपूठो—(वि०) १ उलटा । विमुख । २ पीठ की ओर का । ३ पीठ फिराकर खड़ा या बैठा हुआ । ४ सामने की ओर का । अपृष्ठ ।

अपूत—(वि०) १ अपवित्र । २ निपूता । पुत्रहीन । (न०) कुपुत्र । कपूत ।

अपूरण—दे० अपूण ।

अपूरतो—(वि०) १ पूरा नहीं । चाहिये जितना नहीं । २ अपूर्ण । अधूरो ।

अपूरव—(वि०) अपूर्व ।

अपूण—(वि०) जो पूरा न हो । अधूरो ।

अपूर्व—(वि०) १ जो पहले न हुआ हो । २ अनोखा । अनूठा । ३ अनुपम ।

अपेक्षा—(ना०) १ आवश्यकता । २ आकांक्षा । ३ आशा । ४ प्रतीक्षा । ५ तुलना । ६ अनुरोध । (क्रि० वि०) तुलना में । इण करता । करता ।

अपेय—(वि०) १ न पीये योग्य । २ जो न पिया जा सके ।

अपेल—(वि०) १ थोड़ा । कम । २ न टलने वाला । अटल ।

अपैठ—(ना०) १ अप्रतिष्ठा । २ अविश्वास । ३ अप्रवेश ।

अपोचियो—दे० निपोचियो ।

अपोढणो (क्रि०) १ जागना । २ नहीं सोना । ३ नींद नहीं लेना ।

अपोढी—(वि०) नींद में से उठा हुआ । जगकर उठा हुआ । (ना०) निद्रा त्याग ।

अपोढी होणो—(मुहा०) नींद में से जगकर उठना ।

अपौरषेय—(वि०) १ जो पुरुष कृत न हो । २ ईश्वरीय ।

अप्पणो—(क्रि०) अर्पण करना (स०) अपना । अपणो ।

अप्रकाश—(न०) १ अंधेरा । २ अप्रकट ।

अप्रकाशित—(वि०) १ प्रकाश में न आया हुआ । गुप्त । २ न छपा हुआ (ग्रंथ) ।

अप्रगट—(वि०) १ जो प्रकट न हो । गुप्त । २ अप्रकाशित ।

अप्रछन—(वि०) १ अप्रच्छन्न । प्रकट । २ गुप्त । अप्रकट ।

अप्रज—(वि०) १ निस्संतान । २ निवंश ।

अप्रजत—(वि०)१ बनवारा । २ अप्रजात । नि संतान । ३ शत्रु वंशोच्छेदक ।

अप्रजाम—(वि०) अपार बलशाली ।

अप्रतख—दे० अप्रत्यक्ष ।

अप्रतिम—(वि०) अतुल्य । बेजोड़ ।

अप्रतिष्ठा—(ना०) १ बेइज्जती । अनादर । २ अपकीर्ति । बदनामी ।

अप्रतिष्ठित—(वि०) बदनाम । अपमानित ।

अप्रत्यक्ष—(वि०) अप्रकट । गुप्त । छानो ।

अप्रब—(न०) १ पर्व से रहित दिन । २ पर्व काल से भिन्न समय । ३ उत्सव नहीं मनाया जा सकना । ४ संकटकाल ।

अप्रबळ—(वि०) १ अपार शक्तिशाली । बहुत प्रबल । अपरबळ ।

अप्रबल—(वि०) अशक्त । कमजोर । दुर्बल । दुरबळ ।

अप्रबळी—(वि०) अपार शक्तिशाली । बड़ा बलवान । अपरबळी ।

अप्रम—(न०) परब्रह्म ।

अप्रम प्रम—(न०) १ परब्रह्म । २ ईश्वर । अपरम प्रम । २ अप्रमेय ।

अप्रमाण—(न०) प्रमाणाभाव । (वि०) अपरिमाण । बहुत अधिक ।

अप्रमाद—(वि०) १ प्रमाद रहित । अभिमान रहित । २ आलस्य रहित ।

अप्रमेय—(वि०) १ जो मापा न जा सके। अमाप। २ असीम। अनंत। ३ असिद्ध। अप्रमाणित। ४ अज्ञात।

अप्रमाण—दे० अप्रमाण।

अप्रयीत—(वि०) अपवित्र। अशुद्ध।

अप्रशस्त—(वि०) १ निंद्य। २ जिसकी प्रशंसा न हो। ३ अनिष्ट। ४ खराब। अाछा। तुच्छ। ५ अयोग्य।

अप्रसन्न—(वि०) १ नाराज। नाखुश। २ उदास। म्लान। दुखी।

अप्रसिद्ध—(वि०) जो प्रसिद्ध नहीं। अविख्यात।

अप्राकृत—(वि०) १ असाधारण। २ अस्वाभाविक। असाधारण। ४ अप्रकट नहीं। संस्कृत।

अप्राप्त—(वि०) १ न मिलने वाला। अलभ्य। २ दुर्लभ।

अप्रामाणिक—(वि०) १ प्रमाण रहित। २ अविश्वसनीय। ३ जो प्रमाण के द्वारा सिद्ध न हो।

अप्रिय—(वि०) जो प्रिय न हो। अरुचिकर।

अप्रीति—(ना०) १ प्रीति का न होना। २ विराग। घृणा।

अप्सरा—(ना०) १ स्वर्ग की निरतकरा गायिका। २ अनुपम सुन्दर तरुणी। परी। ३ देवांगना। ४ इन्द्र की सभा में नृत्य करने वाली स्त्री।

अफर—(वि०) १ नहीं फिरने वाला। नहीं मुकरने वाला। २ पाठ नहीं फिरान वाला। ३ अपनी बात पर हठ रहने वाला। हठ प्रतिज्ञ। (ना०) १ शत्रुता। २ गर्व। ३ ज्यादती। ४ बेवकूफी। ५ सेना।

अफरणो—(क्रि०) १ पाठ का भूलना। २ पाठ नहीं फिराना।

अफरी—दे० अफर।

अफट—(वि०) विफल। फल हीन। (न०) दुख परिणाम। दुख।

अफटावणो—(क्रि०) फटकाना। भिड़ाना।

अफता—(ना०) अकेला रास्ता। अपयात।

अफसर—(न०) १ अधिकारी। प्रधान। २ हाकिम। ३ मुखिया। प्रधान।

अफगान—(न०) १ शरीर। २ मर।

अफंड—(न०) १ उत्पात। नखरा। ऊधम। २ दंगा। झगड़ा। ३ उपद्रव। ४ फितूर। ५ आडम्बर। पाखंड। ढकोसला। ६ कपट। छल।

अफंडी—(वि०) १ उत्पाती। नखरेला। ऊधमी। २ झगड़ालू। ३ उपद्रवी। ४ पाखंडी। ५ कपटी। छलिया।

अफारा—(न०) १ अपच वायु इत्यादि के कारण पेट का फूलना। अफारा। अफरा। आफरो २ अजवायनी शाख। ३ जोश। (वि०) १ जोशीला। २ वीर। बहादुर। ३ क्रुद्ध। ४ अधिक।

अफाळणो—(क्रि०) १ पछाड़ना। भिड़ाना। २ टक्कर देना। ३ पटकना। ४ फेंकना।

अफाळा—(न० ब० व०) १ कष्ट। दुख। २ टक्कर। ३ निष्फल प्रयत्न।

अफाळा खाणो—(मुहा०) १ निष्फल प्रयत्न करना। २ कष्ट पाना। ३ भटकना।

अफिर—दे० अफर।

अफीण—(न०) अफीम। अमल।

अफीणियो—दे० अफीणी।

अफीणी—(वि०) अफीमची। अमली।

अफीम—दे० अफीण।

अफीमची—(वि०) अफीम खाने की आदत वाला। अमली।

अफेर—दे० अफर।

अब—(क्रि० वि०) १ इस समय। इसी प्रस्तुत क्षण में। २ इसके बाद।

अबय—(वि०) नहीं बहा जाया। २ व्यय। ३ अनिष्ट।

अबकलै—(क्रि० वि०) इसबार। इमक। अबकै।

अबकाई—(ना०) १ तलाप। कष्ट। २ कठिनाई। ३ अड़चन। ४ रोग की कष्ट साध्य या असाध्य अवस्था। ५ स्त्रियों का ऋतुकाल। ६ बगसी।

अबकाळै—दे० अबकलै।

अबकी—(क्रि० वि०) १ इस बार। २ अगली बार। दूसरा बार। फिर। इमकी। इमक। बीजो वेळा। दूजी वेळा।

अबक—दे० अबकी।

अबको—दे० अबको।

अबखाई—दे० अबकाई।

अबखी—(वि० ना०) १ कठिन। मुश्किल। २ कष्टदायक। ३ दुगम।

अबखी वेळा—(ना०) सकट काल।

अबखो—(वि०) १ कठिन २ कष्टदायक। ३ दुगम। ४ ववश।

अबज—(न०) सौ करोड की सख्या। अरब।

अबडो—दे० अबडो।

अबताणी—(क्रि० वि०) अभी तक। हालताई।

अबदाळ—(न०) फकीर। २ औलिया। अबलियो। अबदाली। ३ सिद्ध पुरुष। महात्मा। ४ सत्तर प्रकार के औलियाओ मे से एक (इस्लाम)।

अबदाळी—दे० अबदाळ।

अबरक—(न०) अभ्रक। भाडल। जळपू। जळपोस।

अबरकै—(क्रि० वि०) १ इस बार। हमकै। अबकळै। २ दूसरी बार। बीजीवेळा।

अबरी—(ना०) एक प्रकार का चित्रित कागज जो पुस्तको के पुट्ठो पर चिपकाया जाता है। मारबल पेपर।

अबळ—(वि०) निबल। अशक्त। (ना०) अबला। स्त्री।

अबलक—(वि०) १ सफेद और लाल या सफेद और काले रग का (घोड़ा)। २ चितकबरा। (न०) अबलक घोड़ा।

अबळखा—(ना०) १ अभिलाषा। २ सा की अभिलाषा ३ गर्भिणी की अमुक वस्तु खाने की इच्छा। दाहद।

अबळा—(ना०) १ अबला। स्त्री। २ गराविनी। ३ निबला।

अबळाखा—दे० अबळखा।

अबळी—(वि० ना०) अशक्त। निबला।

अबळो—(न०) निबल। अबल।

अबाध—(वि०) १ बाधा रहित। २ निर्विघ्न। ३ असीम। अपार।

अबार—(क्रि० वि०) इस समय। अभी। इमार। इमारू। अबारू।

अबारताई—दे० अबताणी।

अबारू—दे० अबार।

अबीह—(वि०) १ असहाय। २ बगर कौल।

अबीडो—दे० अबीढो।

अबीर—(ना०) एक रगीन बुकनी।

अबीर गुलाल—(ना०) अबीर और गुलाल।

अबीह—(वि०) १ निडर। निभय। २ जबरदस्त।

अबीहा—दे० अबीह।

अबुध—(वि०) १ ना समझ। अजाना।

अबूझ—(वि०) नासमझ। अज्ञ। मूख।

अबेढी—दे० अबढी।

अबेढो—दे० अबेढा।

अबै—(क्रि० वि०) १ अभी। इबार। हमार। अब। हमै।

अबोट—(वि०) १ बिना छुआ हुआ। अछूता। २ पवित्र। ३ अखड। साबुत।

अबोटियो—(न०) सेवा-पूजा या रसोई

म पीछे पाव नही दन वाला वीर । ३ बलवान विजयी वीर ।

अभाग—(न०) अभाग्य । दुभाग्य ।

अभागण—(वि० ना०) १ अभागिनी । २ विधवा ।

अभागणी—दे० अभागण ।

अभागियो—द० अभागा ।

अभागा—(वि०) अभागा । दुर्भागी । भाग्यहीन ।

अभाग्गो—दे० अभागो ।

अभायो—(वि०) १ अप्रिय । अरुचिकर । नापसन्द । (न०) जूठन ।

अभाळ—(वि०) १ जिसकी देख रेख नहीं । जिसकी सार सम्हाल नहीं । २ जिसकी खोज तलाश नहीं ।

अभाव—(न०) १ अविद्यमानता । २ कमी । न्यूनता । ३ असत्ता । ४ हानि । ५ बुरा भाव । दुभाव । ६ अप्रियता । ७ अश्रद्धा ।

अभावणा—(वि०) अरुचिकर । अप्रिय । (क्रि०) अप्रिय लगना ।

अभावो—(वि०) अप्रिय । अरुचिकर ।

अभि—(उप०) सामने पास तरफ अधिक श्रेष्ठ इत्यादि अर्थों म प्रयुक्त एक उपसग ।

अभिक्रमण—(न०) आक्रमण ।

अभिगमण—(न०) १ पास जाना । अभिगमन । २ सम्भोग ।

अभिचार—(न०) मत्र तत्र द्वारा मारण उच्चाटन आदि काय ।

अभिजित—(न०) १ एक नक्षत्र । २ दिवस का आठवा मुहूत । (वि०) विजयी ।

अभिज्ञ—(वि०) १ अनुभवी । २ जानकार । ३ निपुण ।

अभिधा—(ना०) १ शब्द का वाच्याथ शक्ति । सीधा सादा अथ बताने वाली शक्ति । २ शब्द का मूल अथ और उस अर्थ को बताने शक्ति ।

अभिधान—(न०) १ नाम । सज्ञा । २ पद का नाम । ३ शब्द ।

अभिधानमाळा—(ना०) १ नाम कोश । २ शब्द कोश ।

अभिनमो—(वि०) १ अभिनव । नवीन । २ अद्वितीय । ३ सदृश । समान । ४ द्वितीय । दूसरा । ५ वीर । (न०) १ पुत्र । २ पौत्र । ३ प्रपौत्र । ४ वशज ।

अभिनय—(न०) हाव भाव द्वारा किसी विषय का वास्तविक अनुकरण करके दिखाना । एक्टिंग । २ नाटक का खेल ।

अभिनव—(वि०) नवीन । नया ।

अभिन्न—(वि०) जो भिन्न हो । जुदा नहीं । सम्बद्ध ।

अभिप्राय—(न०) १ आशय । तात्पय । २ उद्देश्य । ३ इरादा ।

अभिमान—(न०) अहकार । गव । घमड ।

अभिमानी—(वि०) अहकारी । घमडी ।

अभियुक्त—(न०) अपराधी । मुलजिम । आरोपी ।

अभियोग—(न०) १ अपराध । २ मुकदमा । ३ आरोप । मामलो ।

अभिराम—(वि०) १ आह्लादकारी । आनदप्रदायक । २ मनोहर ।

अभिरुचि—(ना०) अतिशय रुचि । चाह । इच्छा । पसद ।

अभिळाखा—द० अभिलाषा ।

अभिलाषा—(ना०) इच्छा । आकांक्षा ।

अभिलासा—द० अभिलाषा ।

अभिलेख—(न०) महत्वपूर्ण लेख । दस्तावेज । रेकार्ड ।

अभिवादन—(न०) वन्दन । नमस्कार ।

अभिषेक—(न०) १ वद मत्रों क साथ जल छिड़कना या स्नान करवाना । २ विधि पूवक सिंहासन या राजगद्दी पर बैठाने की क्रिया । ३ यज्ञादि के बाद का शांति स्नान ।

अभिसार—(न०) १ मिलन। २ भिड़त। ३ नायक नायिका का पूर्व निश्चित स्थान पर मिलना। सकेतानुसार प्रेमिका का मिलन।

अभी—(क्रि० वि०) १ इसी समय। २ तुरन्त। हमार।

अभीच—(वि०) १ निडर। निर्भय। २ वीर।

अभीठो—वि० अबीठो।

अभीत—(वि०) निडर। निर्भय।

अभीर—(वि०) असहाय। (न०) अहीर। ग्वाला। ग्वाळियो।

अभूखण—(न०) आभूषण। (वि०) भूषण रहित।

अभूत—(वि०) १ जो पहले न हुआ हो। अपूर्व। २ अद्भुत।

अभूतपूर्व—(वि०) जो पहले न हुआ हो। अनोखा।

अभूनो—(वि०) १ आशय रहित। २ पागल। ३ मूर्ख।

अभूमो—(वि०) १ अनजान। २ अपरिचित। ३ मूर्ख।

अभेडो—(वि०) १ टेढ़ा। २ विकट। ३ कठिन।

अभेद—(वि०) १ भेद रहित। रहस्य रहित। २ एक जैसा। ३ अभिन्न। (न०) १ अभिन्नता। एक रूपता। २ एक शब्दालंकार।

अभेळणो—(क्रि०) १ न मिलाना। २ आक्रमण नहीं करना। ३ न सूटना।

अभेळियो—(वि०) बिना मिलावट का। निर्मालिस। शुद्ध।

अभेव—न० अभेद।

अभै—(वि०) १ अभय। निडर। २ न डरनेवाला। (न०) निर्भयता।

अभैदान—(न०) भय से रक्षा का भाश्वासन। रक्षा का वचन।

अभैधाम—(न०) १ अभय धाम। ईश्वर शरणागति। २ मोक्ष।

अभैपद—(न०) १ अभयपद। २ मोक्ष।

अभैपुरा—(न०) १ ठोडा की तरह शाखाओं में से एक।

अभोग—(न०) १ भजन पद या कविता की वह अंतिम कड़ी जिसमें कवि का नाम आता है। आभोग। (वि०) जिसका भोग या उपयोग न किया गया हो।

अभोगत—(वि०) १ नहीं जोता हुआ। (खेत)। २ काम में नहीं लाया हुआ। अभुक्त। अव्यवहृत। ३ नया।

अभ्यागत—(न०) १ मेहमान। पाहुना। अतिथि। २ भिखारी। भिक्षुक। ३ साधु संन्यासी। (वि०) दीन। गरीब।

अभ्यामरद—(न०) युद्ध।

अभ्यारण—(न०) वह रक्षित वन जिसमें पशुओं का शिकार नहीं किया जाता है। अभयारण्य।

अभ्यास—(न०) १ निरंतर अनुशीलन। २ हमेशा की जाने वाली क्रिया। ३ स्वभाव। मुहावरा। टेव। ४ पुनरावृत्ति। ५ परिश्रम। ६ पढ़ाई। शिक्षा।

अभ्यास करणो—(मुहा०) १ अभ्यास करना। २ निरंतर पढ़ना।

अभ्यासणो—(क्रि०) १ अभ्यास करना। २ पढ़ते रहना।

अभ्यासी—(वि०) १ निरंतर अभ्यास करने वाला। २ अभ्यस्त।

अभ्र—(न०) १ बादल। २ आकाश।

अभ्रक—(न०) १ भोडल। अबरक। जळधू। जळपोस।

अभ्रम—(वि०) भ्रम रहित।

अम—(सर्व०) १ हम। २ हमारा। ३ मेरा।

अम कज—(अव्य०) १ हमारे लिए। मेरे लिए।

अमख—*(न०)* आमिष। मास।
अमचूर—*(ना०)* कच्चे आम के सुखाय हुए टुकडे या चूर्ण।
अमणो—*(वि०)* १ बिना मन का। अमानस। २ विचार रहित।
अमतणो—*(सव०)* १ हमारा। २ मेरा।
अमन—*(वि०)* १ बिना मन का। २ मनातीत। *(न०)* १ मन का अभाव। २ परमात्मा। ३ शांति। ४ सुख।
अमन चमन—*(न०)* सुखशांति। मौज।
अमर—*(न०)* १ देवता। २ पारा। *(वि०)* १ नही मरने वाला। २ जिसका कभी नाश न हो।
अमर राखळी—*(ना०)* शत्रु पक्ष में पड़ने वाले बहनोई की सुरक्षा का (नहीं मारने का) भाई की ओर से बहन को दिया जाने वाला अभय वचन। सौभाग्य खंडित नहीं करने का बहन को दिया हुआ वचन। २ सौभाग्य वर्णन।
अमरकोट—*(न०)* थाट प्रांत (थर पार कर) का इतिहास प्रसिद्ध एक नगर। यह नगर और प्रदेश किसी समय मारवाड़ राज्य का एक भाग था किंतु अब पाकिस्तान का भाग बना हुआ है।
अमरकोश—*(न०)* अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत का एक प्रसिद्ध शब्दकोश।
अमरख—*(न०)* १ अमर्ष। क्रोध। २ जोश। ३ ग्लानि।
अमरगिर—*(न०)* आमेर (जयपुर) का पर्वत।
अमरण—*(न०)* मृत्यु नहीं होना।
अमरत—*(न०)* अमृत। सुधा।
अमरतबान—दे० अम्रतबाण।
अमरता—*(ना०)* अमरत्व। अमरपना।
अमरती—*(ना०)* एक मिठाई। इमरती।
अमरनाथ—*(न०)* काश्मीर का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जहाँ बर्फ के शिवलिंग के दर्शन होते हैं।
अमरनामो—*(न०)* १ वीरता, दान या उपकार आदि सत्कर्मों से जिसका नाम अमर हो गया हो। २ यश। कीर्ति।
अमरपटो—*(न०)* अमरता का लेख या वर्णन।
अमरपद—*(न०)* मोक्ष।
अमरपुरी—*(ना०)* १ देवलोक। २ स्वर्ग।
अमरलोक—*(न०)* १ देवलोक। २ स्वर्ग।
अमरवन—*(ना०)* १ अमरवलि। २ आकाश वलि।
अमरस—*(न०)* १ आम्ररस। २ अमर्ष। क्रोध।
अमरसुहाग—*(न०)* सदा अमर रहने वाला सौभाग्य।
अमरसुहागण—*(ना०)* १ जीवन भर सौभाग्यशालिनी बनी रहने वाली स्त्री। २ वेश्या।
अमराई—*(ना०)* आमों का बाग। आम्रवन।
अमराणो—*(न०)* १ थाट प्रदेश के अमरकोट नगर का लोकगीत और काव्य प्रसिद्ध नाम। २ अमरकोट जिला।
अमरापुर—*(न०)* स्वर्ग। देवलोक।
अमरापुरी—दे० अमरापुर।
अमराव—दे० उमराव।
अमरावती—*(ना०)* १ द्वारिका। द्वारकापुरी। २ अमरापुरी। इंद्रपुरी।
अमरीख—दे० अवरीष।
अमरूद—*(न०)* जामफल।
अमरेस—*(न०)* १ अमरेश। इन्द्र। नागोर के प्रसिद्ध वीर अमरसिंह राठौड़ का काव्य नाम।
अमळ—*(वि०)* निर्मल। मल रहित।
अमल—*(न०)* १ अफीम। २ शासन। अधिकार। ३ व्यवहार। ४ प्रभाव। असर ५ अधिकार समय।
अमल उतरणो—*(मु०ना०)* १ अफीम का नशा उतरना। २ अधिकार छिनना।

अमल करणो—(मुहा०) १ अधिकार करना। २ प्रभाव जमाना।

अमल गळणो—(मुहा०) १ अफीम का गोष्ठी में कसूंबा तैयार होना। २ अफीम की गोष्ठी होना।

अमलदार—(न०) १ अफीमची। २ अधिकारी।

अमलदारी—(ना०) १ अधिकार। शासन। २ अधिकारी का काम या पद।

अमल-पाणी—(न०) १ नाश्ता। कलवा। भारो। २ अफीम लेने के बाद किया जाने वाला नाश्ता।

अमल पाणी करणो—(मुहा०) १ नाश्ता करना। २ अफीम लेना और उसके ऊपर कुछ खाना। ३ यात्रा की थकान दूर करने के लिये विश्राम करना तथा अफीम लेना।

अमल रा गाट—(न०) बहुत अफीम खाने वाला। बड़ा अफीमची।

अमल-रो पोतो—(न०) अफीम रखने का खलची।

अमल होणो—(मुहा०) अधिकार होना।

अमलां चाक—(वि०) १ अफीम के नशे में चूर। २ अत्यधिक नशा।

अमली—(वि०) १ अफीमची। २ नशे वाला। ३ मस्त।

अमलीमाण—(वि०) १ नशे में मस्त रहनेवाला। २ अधिकारों का उपभोग करनेवाला। ३ अधिकार और ऐश्वर्य पूर्ण। ४ धनाढ्य। ५ मौजी। ६ दानी। दातार। ७ विजयी। ८ वीर। ९ अभिमानी।

अमलो—(न०ब०व०) १ राज्य कर्मचारी गण। अमला। २ भीड़।

अमख—(न०) आमिष। मांस।

अमखचर—दे० अमिखचर।

अमगण—(वि०) अयाचक।

अमगन—(वि०) अयाचक।

अमगळ—(वि०) अशुभ। अनिष्ट। (न०) दुर्भाग्य।

अमत्र—(न०) १ खोटी सलाह। कुमंत्र। असीख। २ कुमित्र। शत्रु। (वि०) खोटी सलाह देनेवाला।

अमत्रद—(वि०) खोटी सलाह देनेवाला। (न०) शत्रु।

अमा—(ना०) अमावस्या।

अमाई—(वि०) १ न समा सके जितना। अधिक। २ भय उत्पादक।

अमात—(वि०) १ मातृहीन। २ माता रहित।

अमात्य—(न०) १ राजा का मंत्री। २ मंत्री।

अमान—(वि०) अपार। अपरिमाण। (न०) अनादर। अप्रतिष्ठा।

अमानत—दे० अनामत।

अमानती—(वि०) अमानत पर रखा हुआ। अनामती।

अमानी—(वि०) १ मान रहित। २ अप्रतिष्ठित। ३ अभिमान रहित। दे० इमानी।

अमानेनण—(ना०) प्रेम और सम्मान से वंचित पाना।

अमाप—(वि०) १ बिना माप का। २ अपार। बहुत।

अमाम—(वि०) १ बहुत। अधिक। २ श्रेष्ठ। ३ ममता रहित। ४ इच्छा रहित। (ना०) १ अभय। २ अममत्व। ३ तृप्ति। संतोष।

अमामीदार—(वि०) १ सम्पन्न। धनवान २ साधन सम्पन्न।

अमामो—(वि०) १ बहुत। अधिक। २ उदार। ३ ममत्ववाला। ४ शान्त। धीर। गंभीर। ५ संतुष्ट। तृप्त।

अमायो—(वि०) जो समा न सके।

ग्रमार—दे० ग्रयार।
ग्रमाळो—(सर्व०) १ मेरा। २ हमारा।
ग्रमाव—दे० ग्रमायो।
ग्रमावट—(न०) ग्राम का पापड़। ग्राम रस की चपाती। ग्राम के सूखे हुए रस की जमी हुई परत।
ग्रमावड—(वि०) १ ग्रसीम। बहुत ग्रधिक। २ जबरदस्त।
ग्रमावतो—(वि०) १ नहीं समा सके जितना। २ नहीं समा सकने वाला। ३ बहुत। ग्रधिक।
ग्रमावस—(ना०) कृष्णपक्ष की ग्रंतिम तिथि। ग्रमावस्या।
ग्रमास्ती—(सर्व०) १ मैं। २ हम।
ग्रमिख—(न०) ग्रामिष। मांस।
ग्रमिखचर—(न०) १ मांस भक्षी पक्षी। २ गिद्ध। ३ पलचर।
ग्रमिट—(वि०) १ नहीं मिटने वाला। २ स्थायी। ३ नित्य।
ग्रमित—(वि०) १ ग्रपरिमित। ग्रपार।
ग्रमित्र—(न०) शत्रु।
ग्रमिय—(न०) ग्रमृत।
ग्रमित—(न०) ग्रमित्र। शत्रु।
ग्रमी—(न०) १ ग्रमृत। २ थूक।
ग्रमीड—(वि०) ग्रतुल्य। तुलना रहित।
ग्रमीडो—(वि०) जिसकी तुलना नहीं की जा सके। ग्रतुल्य।
ग्रमीणी—(सर्व०) १ मेरी। २ हमारी।
ग्रमीणो—(सर्व०) १ मेरा। २ हमारा।
ग्रमील—(न०) शत्रु। बैरी।
ग्रमीन—(न०) १ बाहर का काम करने वाला ग्रदालत का कर्मचारी। २ जमीन की नाप जोख करनेवाला माल विभाग का कर्मचारी।
ग्रमी नजर—(ना०) १ ग्रमृत दृष्टि। २ दया दृष्टि। ३ कृपा।
ग्रमीर—(वि०) १ धनवान। रईस। २ कोमल ग्रंगों वाला। सुकुमार। नाजुक। (न०) १ मुसलमान सरदारों की एक उपाधि। २ मुसलमान शासक। सरदार। ३ ग्रफगानिस्तान के बादशाह की एक उपाधि।
ग्रमीरपणो—(न०) १ धनवान होने के लक्षण। धनाढ्यता। २ धनवान होने का ग्रभिमान। धनवानी। ३ उदारता। ४ नजाकत।
ग्रमीरल—(न०ब०व०) १ ग्रमीरलोग। २ सरदार लोग।
ग्रमीरस—(न०) १ ग्रमृत। सुधा। २ थूक। ग्रमी।
ग्रमीराई—दे० ग्रमीरात।
ग्रमीरात—(ना०) १ धनवानपना। धनाढ्यता। २ ग्रमीरी। रईसी। ३ नाजुकपना। नजाकत।
ग्रमीरी—दे० ग्रमीरात।
ग्रमुक—(वि०) १ निर्दिष्ट (व्यक्ति या वस्तु)। २ ग्रनाम। ३ फलाँ। फलाणो।
ग्रमूभण—(ना०) १ घबराहट। २ दम घुट। घुटन। ३ मूर्च्छा।
ग्रमूभणी—दे० ग्रमूभण।
ग्रमूभणो—(क्रि०) १ ग्रमूभन होना। घबराहट होना। २ मूर्च्छित होना। ३ श्वासावरोध होना। दम घुटना।
ग्रमूभाणो—दे० ग्रमूभणो।
ग्रमूभावणो—दे० ग्रमूभणो।
ग्रमूभो—(न०) १ उमस। २ दमघुटन। श्वासावरोध।
ग्रमूमन—(ग्रव्य०) साधारणतया। प्राय।
ग्रमूळ—(वि०) १ मूल रहित। बिना जड का। निर्मूल। २ कारण रहित।
ग्रमून—(वि०) १ ग्रमूल्य। ग्रनमोल। २ बहुमूल्य। ३ बिना मूल्य का।
ग्रमूल्य—दे० ग्रमून।
ग्रमृत—(न०) १ जिसके पीने से ग्रमर हो जाय ऐसा एक कल्पित रस। २ देवलोक

का एक कल्पित पय जिसके पीने से बुढ़ापा और मृत्यु पास नहीं आती। सुधा। ३ बहुत स्वादिष्ट अथवा गुणकारी पदार्थ। ४ क्षीर। (वि०) १ नहीं मरा हुआ। २ कभी नहीं मरने वाला। अविनाशी।

अमृतधुनि—दे० अमृत ध्वनि।

अमृतध्वनि—(ना०) श्रीबालकृष्ण के नृत्य की ध्वनि। २ एक प्रकार का छंद।

अमृतधारा—(ना०) १ अमृत की धारा। २ जीभ के मूल में तालू से टपकनेवाला रस। (योग)। ३ एक औषधि।

अमृतबान—दे० अम्रतबाण।

अमृता—(ना०) हर्रे। हरीतकी। हरड़े।

अमेळ—(न०) १ विरोध। शत्रुता। (वि०) बिना मिलावट का।

अमोघ—(वि०) १ अत्यंत। अपार। २ अव्यय। अचूक।

अमोड़ा—(वि०) १ नहीं मुड़ने वाला। २ जिसको पीछे नहीं हटाया जा सके। अचल। (क्रि०वि०) जल्दी। अविलंब।

अमोरणो (क्रि०) १ किसी वस्तु के गुण प्रकार या परिणाम को सजातीय वस्तु से पूर्ति करना। २ स्नान के लिये गरम पानी में (अनुकूल ताप का बनाने के लिये) ठंडा पानी मिलाना। ३ मिश्रित करना। मिलाना।

अमोरो—(न०) और मिलाने की जाने वाली वृद्धि। बढ़ती। इजाफा।

अमोल—(वि०) १ अमूल्य। अनमोल। २ बहुमूल्य। ३ बिना मूल्य।

अमोलक—(वि०) १ अमूल्य। २ बहुमूल्य। कीमती।

अम्रत—दे० अमृत।

अम्रतबाण—(न०) घी तेल अचार आदि रखने का चीनी मिट्टी का एक पात्र। मृत्तिका भाजन।

अम्ह—(सर्व०) १ हम। २ हमारा। ३ हमारी। ४ मैं। ५ मेरा। ६ मेरी।

अम्हतणी—(सर्व०) १ हमारी। २ मेरी।

अम्हतणो—(सर्व०) १ हमारा। २ मेरा।

अम्ह थी—(सर्व०) १ हमारे से। २ मेरे से।

अम्हसू—दे० अम्हथी।

अम्हा—(सर्व०उ०व०) १ हम। २ हम। हमको। ३ हमारे। ४ हमारा।

अम्हीणी—(सर्व०) १ मेरी। २ हमारी।

अम्हीणो—(सर्व०) १ मेरा। २ हमारा।

अम्हे—(सर्व०उ०व०) हम।

अय—(न०) १ शस्त्र। २ लोहा।

अयबळ—(न०) शस्त्र बल।

अयाचक—दे० अजाचक।

अयाची—दे० अजाची।

अयाण—(वि०) अजान। अनान। मूर्ख।

अयाळ—(न०) घोड़े या सिंह की गरदन के ऊपरि भाग के लंबे बाल।

अयाम—(न०) १ आकाश। २ चिह्न। लक्षण।

अयोग—दे० अजोग।

अयोग्य—(वि०) १ जो योग्य न हो। २ असमर्थ। ३ अपात्र। ४ अनुपयुक्त। ५ कुपात्र। नालायक।

अयोनि—(वि०) १ जो योनि द्वारा न जन्मा हो। २ अजन्मा। (न०) १ ब्रह्मा। २ शिव। ३ विष्णु।

अयोमा—(न०) मादा (नारी) नहीं। नर। मनुष्य। मयोवा।

अर—(न०) अरि। शत्रु। (अव्य) १ और। २ पुनः।

अरक—(न०) १ सूर्य। अर्क। २ आक का पौधा। ३ अर्क से खींचा हुआ रस। ३ तांबा।

अरकाद—(न०) सूर्य, चन्द्र इत्यादि ग्रह।

अरग—(ना०) तलवार।

जहा एक खडित सूय मदिर, जिसकी सूय मूर्ति पर सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूय का प्रकाश पडता है। **अरणोदजोरो मदिर**। २ मवाड का एक प्रसिद्ध तीथ स्थान अरणाद गोतमजी'। ३ अरुणो दय। सूर्योदय। उषाकाल।

अरण्य—*(न०)* १ जगल। वन। २ दश नामों स यासियो का एक भेद।

अरण्य काड—*(न०)* रामायण का तीसरा काण्ड।

अरक्त—*(वि०)* १ विरक्त। २ जा लाल रग का न हो।

अरथ—*(न०)* १ धन। सम्पत्ति। २ शब्द का अभिप्राय। अथ। मतलब। ३ मना रथ। ४ अभिप्राय। प्रयाजन। ५ निमित्ति। हेतु। काम। *(क्रि वि०)* लिय। निमित्त।

अरथ आणो—*(मुहा०)* १ काम म महा यक होना। २ उपयाग म आना।

अरथ गरथ—*(न०)* १ धन और घर। २ धनमाल। ३ घर बार।

अरथाकळ—*(अ य०)* दे० अथाकळ।

अरथाणा—*(क्रि०)* १ अथ करके मम भाना। २ अथ का विवरण विवेचन और उदाहरण इत्यादि म स्पष्ट करना। ३ दुहराना। ४ स्मरण कराना। याद दिलाना। दे० अरथ आणा।

अरथात—*(अ य०)* १ अथ यह है कि। २ अभिप्राय यह है कि। अर्थात्। यानी।

अरथावणो— दे० अरथाणा।

अरथी—*(वि०)* १ लाभी। अर्थी। २ याचक। ३ जरूरत वाला। ४ धन वान। *(ना०)* मुर्दे का श्मशान ले जान की रथी। सीढी।

अरदली—*(वि०)* हुकुम बजान वाला। चाकर। अरदली।

अरदास—*(ना०)* १ अजदाश्त। प्राथना। २ सिख सम्प्रदाय की गुरु प्राथना।

अरध—*(वि०)* १ अद्ध। आधा। *(क्रि वि०)* नीचे।

अरधगोरो—*(न०)* डिंगल का एक छद।

अरध भाख—*(न०)* डिंगल का एक छद।

अरध भाखडी—*(ना०)* डिंगल का एक छद।

अरध सावभडा—*(न०)* डिंगल का एक छद।

अरधाळी—*(ना०)* छद की एक पक्ति के दो भागों म का एक भाग। अर्द्धाली।

अरधाग—*(न०)* अद्धाग नामक एक वात राग। पक्षाघात। २ आधा अग। *(ना०)* अर्द्धागिनी।

अरधागणी—*(ना०)* दे० अरधागी।

अरधागी—*(ना०)* अर्द्धागिनी। पत्नी।

अरधू म—*(न०)* १ एकाएक आपत्ति। आत्मसमर्पण। २ सेना।

अरधो— *(वि०)* आधा। आधो।

अरपण—दे० अपण।

अरपणो— *(क्रि०)* १ अपण करना। भेट करना। २ देना। सौंपना।

अरब—*(न०)* १ सौ करोड की सख्या। २ एक देश का नाम।

अरबी— *(वि०)* १ अरब देश का। *(ना०)* अरबी भाषा।

अरबुद—*(न०)* अबुद। आबू।

अरबुदियो—*(न०)* आबू पवत।

अरभक—*(न०)* नवजात बालक। अभक।

अरभग—*(न०)* १ रावल मल्लिनाथ के वीर पुत्र जगमाल के नगाडे का नाम। अभरग (विपर्यासनाम)। २ शत्रु का नाश करने वाला।

अरमान—*(न०)* इच्छा। अभिलाषा।

अरमाऊ—*(वि०)* शत्रु का पीछे हटान वाला।

अरर—*(अ य०)* भार दुख दर्द इत्यादि के कारण मुह स निकलनेवाला एक शब्द।

अरगजो—(न०) शरीर मे लेपन करने का एक सुगंधित द्रव्य । अरगजा ।

अरगती—(ना०) धातु को रगड़ कर उसे छीलने का एक औजार । रेती । रानस । अतरटी ।

अरगतो—प० बडी अरगती । बडी रानस । रेता ।

अरगनी—(ना०) कपडे लटकाने रखने की रस्सी, तार आदि साधन ।

अरगळा—(ना०) अगला । आगळ ।

अरगज—(वि०) शत्रु का नाश करने वाला । (ना०) रावळ मल्लिनाथ के पुत्र राठौड़ वीर जगमाल की प्रसिद्ध तलवार का नाम ।

अरगजरण—दे० अरिगजरण ।

अरगाहरण—दे० अरिगाहरण ।

अरघणो—(क्रि०) १ अर्घ्य देना । २ पूजा करना ।

अरघियो—दे० अरघा ।

अरघो—(न०) अर्घ देने का तांबे का एक पात्र । अरघा ।

अरचणो—(क्रि०) पूजा करना । अरचना ।

अरचा—(ना०) अर्चन । पूजा ।

अरज—(ना०) १ अर्ज । प्रार्थना । २ चौडाई ।

अरजण—(न०) शत्रु ।

अरजदार—(वि०) अर्जदार । फरियादी ।

अरजबेगी—(वि०) अर्ज गुजारने वाला ।

अरजळ—(ना०) १ कष्ट । तकलीफ । २ व्याकुलता । ३ बेहोशी । (वि०) १ बेहोश । २ व्याकुल । ३ घायल ।

अरजाऊ—(वि०) अर्ज करने वाला । अर्जदार ।

अरजी—(ना०) अर्जी । प्रार्थना पत्र ।

अरजी दावा—(न०) १ दीवानी अदालत में किये जाने वाले दावे का अर्जा । अर्जीदावा ।

अरजुण—(न०) १ पाण्डु पुत्र अर्जुन । २ सोना । ३ चाँदी । ४ बाँस ५ अर्जुन वृक्ष ।

अरट—(न०) रहँट ।

अरटियो—(न०) १ सूत कातने का चरखा । रहटिया । २ एक डिंगल छंद ।

अरडणो—(क्रि०) १ जोर से रोना । चिल्लाकर रोना । २ ऊंट का बल बलाना । ३ धक्का मारकर घँसना ।

अरडाटो—(न०) १ चिल्लाकर रोने की आवाज । रोने की चिल्लाहट । २ ऊंट की बलबलाहट । ३ धक्का ।

अरडीग—(वि०) १ जबरदस्त । २ शत्रु जयी ।

अरडुसो—दे० अरडूसो ।

अरडूसो—(न०) एक पौधा । अडूसा ।

अरडो—(न०) १ धक्का । टक्कर । २ फैला हुआ । चौडा । उरडो ।

अरण—(न०) १ अरण्य । जंगल । २ अरुण । सूर्य ।

अरणव—(न०) १ समुद्र । २ सूर्य ।

अरणी—(ना०) १ एक पौधा । २ अग्नि मंथनात्मक वृक्ष । ३ उसकी लकड़ी अरणि ।

अरणी छठ—(ना०) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की छठ को किया जाने वाला स्त्रियों का एक व्रत । अरणि षष्ठी या अरण्यषष्ठी ।

अरणो—(न०) १ अरणि वन २ अरण्य । जंगल । ३ जोधपुर के निकट एक तीर्थ स्थान जहाँ कुंड में स्नान करने का महात्म्य है । अरणोजी ।

अरणाजी—दे० अरणो स० ३

अरणा-झरणो—(न०) मारवाड़ के दक्षिण के पहाड़ों में एक तीर्थ स्थान जहाँ एक झरने के नीचे जलकुंड में स्नान करने का महात्म्य है । अरणि निझर ।

अरणोद—(न०) १ आबू पर्वत पर सन सट के नाम के पर्वत में एक तीर्थ स्थान

जहा एक खडित सूय मदिर जिसकी सूय मूर्ति पर सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूय का प्रकाश पडता है। **अरणोदजोरो मदिर**। २ मवाड का एक प्रसिद्ध तीथ स्थान 'अरणोद गोतमजी'। ३ अरुणा दय। सूर्योदय। उषाकाल।

अरण्य—*(न०)* १ जगल। वन। २ दश नामी स यासिया का एक भेद।

अरण्य काड—*(न०)* रामायण का तीसरा काण्ड।

अरक्त—*(वि०)* १ विरक्त। २ जो लाल रग का न हो।

अरथ—*(न०)* १ धन। सम्पत्ति। २ शब्द का अभिप्राय। अथ। मतलब। ३ मनो रथ। ४ अभिप्राय। प्रयोजन। ५ निमित्ति। इष्ट। काम। *(क्रि० वि०)* लिय। निमित्त।

अरथ आणो—*(मुहा०)* १ काम म सहा यक होना। २ उपयोग म आना।

अरथ गरथ—*(न०)* १ धन और घर। २ धनमाल। ३ घर बार।

अरथावळ—*(अव्य०)* दे० अथावळ।

अरथाणा—*(क्रि०)* १ अथ करके सम भाना। २ अथ का विवरण विवचन और उदाहरण इत्यादि स स्पष्ट करना। ३ दुहराना। ४ स्मरण कराना। याद दिलाना। दे० अरथ आणो।

अरथात—*(अव्य०)* १ अथ यह है कि। २ अभिप्राय यह है कि। अर्थात्। यानी।

अरथावणो—दे० अरथाणा।

अरथी—*(वि०)* १ लाभी। अर्थी। २ याचक। ३ जरूरत वाला। ४ धन वान। *(ना०)* मुर्दे को श्मशान ले जाने की रथी। सीढी।

अरदली—*(वि०)* हुकुम बजाने वाला। चाकर। अदली।

अरदास—*(ना०)* १ अजदाश्त। प्राथना। २ सिख सम्प्रदाय की गुरु प्राथना।

अरध—*(वि०)* १ अद्ध। आधा। *(क्रि० वि०)* नीचे।

अरधगोगो—*(न०)* डिंगल का एक छद।

अरध भाख—*(न०)* डिंगल का एक छद।

अरध भाखडी—*(ना०)* डिंगल का एक छद।

अरध सावभडा—*(न०)* डिंगल का एक छद।

अरधाळी—*(ना०)* छद की एक पक्ति के दो भागो म का एक भाग। अर्द्धाली।

अरधाग—*(न०)* अद्धाग नामक एक वात राग। पक्षाघात। २ आधा अग। *(ना०)* अद्धागिनी।

अरधागणी—*(ना०)* दे० अरधागी।

अरधागी—*(ना०)* अद्धागिनी। पत्नी।

अरधू म—*(न०)* १ एकाएक आपडना। आक्रमण। २ सेना।

अरधो—*(वि०)* आधा। आधो।

अरपण—दे० अपण।

अरपणो—*(क्रि०)* १ अपण करना। भेंट करना। २ देना। सौपना।

अरब—*(न०)* १ सौ करोड की सख्या। २ एक देश का नाम।

अरबी—*(वि०)* १ अरब देश का। *(ना०)* अरबी भाषा।

अरबुद—*(न०)* अबुद। आबू।

अरबुदिगो—*(न०)* आबू पवत।

अरभक—*(न०)* नवजात बालक। अभक।

अरभग—*(न०)* १ रावल मल्लिनाथ के वीर पुत्र जगमाल के नगाडे का नाम। अभरग (विपर्ययनाम)। २ शत्रु का नाश करने वाला।

अरमान—*(न०)* इच्छा। अभिलाषा।

अरमाडो—*(वि०)* शत्रु को पछाड डालने वाला।

अरर—*(अव्य०)* भार दुख दद इत्यादि के कारण मुह स निकलनेवाला एक शब्द।

अरराट—(न०) १ घोर शब्द। २ चिल्लाहट। ३ पीड़ा की चीख। ४ रुदन।
अरळ—(न०) १ झूठा इलजाम। दोषारोपण। आरोप। २ रोक। अवरोध। ३ मुसीबत। संकट। ४ उत्तरदायित्व। ५ राज्य भार। ६ अगला। आगळ। ७ शत्रु।
अरवजिया—(न०) एक वृक्ष।
अरवा—(न०) घोड़ा।
अरविंद—(न०) कमल।
अरस—(न०) १ आकाश। २ अर्श। बवासीर। ३ दुख। ४ अमैत्री। शत्रुता। (वि०) नीरस।
अरस परस—(क्रि० वि०) १ आपस में। परस्पर। २ प्रत्यक्ष। (न०) १ साक्षात्कार। २ दर्शन और स्पर्श।
अरसान—(वि०) शत्रु के लिए शल्य रूप (न०) किला।
अरसिक—(वि०) जो रसिक न हो।
अरसा—(न०) समय। काल। मुद्दत।
अरहट—(न०) रहँट। अरट।
अरहटणो—(वि०) शत्रु को भगानेवाला। (क्रि०) युद्ध करना। २ शत्रु को भगाना।
अरहर—(ना०) १ तुअर। २ तुअर की दाल। ३ उसका पौधा। दे० अरिहर।
अरा—(न०) अप्रीति।
अरा—(न० ब० व०) बैलगाड़ा के पहिये की व पखरियां जो पहिये के अंत केन्द्र से चारों ओर फैली रहती हैं।
अराई—दे० आहरी।
अराजकता—(ना०) १ अशांति। २ विप्लव। ३ उपद्रव। ४ शासन व्यवस्था का अभाव।
अराजी—(ना०) खेत की जमीन।
अराट—(न०) शत्रु राज्य।
अराडो—(वि०) १ बहुत। २ तेज। (न०) शान्ति।
अराण—(न०) युद्ध। आराण।
अरात—(न०) १ शत्रु। २ दिन।
अराति—(न०) १ शत्रु। २ काम, क्रोध लोभ, मोह, मद तथा मत्सर नामक विकार।
अराधणो—(क्रि०) आराधना करना।
अराधना—दे० आराधणो।
अराबो—(न०) १ छोटी तोप। २ तोपगाड़ी। ३ अराबा से सज्जित सेना। ४ सेना।
अरावो—(न०) १ बड़ी अराइ। गेंडुरा। २ साप का गोलाकार कुंडली लगाकर बैठना।
अराह—(न०) १ कुमार्ग। २ अधम।
अराहो—दे० अराबो।
अरि—(न०) १ शत्रु। २ विरोधी। ३ काम, क्रोध लोभ, मोह मद तथा मत्सर ये छ विकार।
अरि-अधार—(न०) सूर्य।
अरि-करि—(न०) सिंह।
अरि गजण—(वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
अरिगाहण—दे० अरिगजण।
अरिगाहणो—(क्रि०) शत्रु का नाश करना। (वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
अरिघड—(ना०) शत्रु सेना।
अरिघडा—दे० अरिघड।
अरियड—(न०) शत्रु सेना।
अरिथाट—(न०) शत्रु सेना।
अरिदळ—(न०) शत्रु सेना।
अरिपाल—(न०) १ शत्रु को रोकने वाला। २ प्रत्याक्रमण। ३ युद्ध।
अरिभजण—(वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
अरियण—(न० ब० व०) अरिजन। शत्रु गण।

अरियाण—दे० अरियण।
अरिवर—(न०) बड़ा शत्रु।
अरिमाथ—(न०) शत्रुदल।
अरिसाल—(न०) १ शत्रु के लिये शल्य रूप। २ चिंता। अरसाल।
अरिहण—(वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
अरिहर—(वि०) शत्रु का हरण करने वाला।
अरिहंत—(वि०) शत्रु का नाश करने वाला। (न०) अरिहंत। जिन। अर्हन्त
अरिहंतो—(वि०) अरिहंत।
अरी—(न०) अरि। शत्रु। (अव्य०) १ स्त्रियों के लिये संबोधन। २ री। निश्चय। ३ 'अरो' नर जाति का नारी रूप निश्चय ही यहाँ ... इत्यादि अर्थों में। उरी।
अरीभ—(वि०) नाराज। (ना०) नाराजगी। अप्रसन्नता।
अरीठो—(न०) रीठे का वृक्ष और उसका फल। आरेठो।
अरीढ—(वि०) पीठ नहीं दिखाने वाला।
अरीत—(वि०) १ बिना रीतिका। (क्रिवि०) बिना रीति के। (ना०) कुरीति। अरीति।
अरीश—(न०) बड़ा शत्रु।
अरीस—(ना०) १ क्रोधाभाव। शांति। २ अरीश।
अरुचि—(ना०) १ रुचि का अभाव। अनिच्छा। २ घृणा।
अरुण—(न०) १ सूर्य। २ सूर्य का सारथी। ३ लाल रंग। ४ लाली। (वि०) रक्त। लाल। रातो।
अरुणाई—(ना०) लाली। ललाई।
अरुणाद—(न०) अरुणोदय।
अरुणोदय—(न०) १ सूर्योदय। २ उषा काल।
अरुठ—(वि०) १ जबरदस्त। २ अरुष्ट। प्रसन्न। राजी।
अरूड—(वि०) १ अत्यधिक। २ श्रेष्ठ। बढ़िया। ३ जो रूडो नहीं। असुंदर। ४ कुरूप।
अरूडो—दे० अरूड।
अरूप—(वि०) जो रूपवान नहीं। २ जिसका कोई रूप नहीं। निराकार। ३ कुरूप। (न०) ईश्वर। परब्रह्म।
अरूपी—(वि०) निराकार। (न०) ईश्वर।
अरूबरू—(अव्य०) सामने। रोबरू। प्रत्यक्ष।
अरे—(अव्य०) १ अपने से उतरते दरजे के व्यक्ति के लिये संबोधन का उद्गार। २ आश्चर्य दुःख ... चिंता ... सूचक उद्गार।
अरेस—(न०) १ शस्त्र। २ युद्ध। ३ शत्रु संहार। ४ आकाश। अरस। (वि०) १ गुरभिन। २ हानि रहित। ३ अहिंसा। अरेष। ४ निष्कलंक।
अरेह—(न०) १ शत्रु। २ युद्ध। ३ शत्रु संहार। ४ पुत्र। (वि०) १ बिना टूटा हुआ। दुरुस्त। साजो। २ ठीक। ३ पवित्र।
अरेहण—(वि०) १ शत्रु संहारक। २ वीर। बहादुर। (न०) १ शत्रु समूह। २ युद्ध। ३ विघ्न। कलह। ४ पुत्र। ५ वंशज।
अरो—(न०) बैलगाड़ी के पहिये का एक उपकरण। दे० उरो अव्यय अर्थ।
अरोग—(वि०) रोग रहित। नीरोग। (न०) १ कुशल। कुशलक्षेम। कुसळखेम। २ सुख।
अरोगणो—(क्रि०) १ भोजन करना। २ पीना। पान करना।
अरोगी—(ना०) चिंता। आरोगी। (वि०) नीरोगी।

अरोड़—(वि०) १ नहीं रुकने वाला। २ जबरदस्त। ३ उग्र। अधिक। (न०) नहीं रुकना। अरोर।

अरोडणी—(क्रि०) १ नहीं रोकना। जाने देना। २ रोकना। रोडणो।

अरोडो—दे० अरोड़।

अरोहर—(वि०) आरोहक। सवार। असवार।

अरोहण—(न०) १ ऊपर की ओर जाना। चढ़ना। सवार होना। आरोहण।

अरोहणो—(क्रि०) आरोहणो। चढ़ना। सवार होना।

अर्य—दे० अरथ।

अर्थपिशाच—(वि०) धनलोलुप। बड़ा कंजूस।

अर्थशास्त्र—(न०) अर्थनीति संबंधी वह शास्त्र जिसमें धनोपार्जन रक्षण एवं वृद्धि का विधान हो।

अर्थांतरळ—(अव्य०) १ अर्थ के रूप में। २ भावार्थ के रूप में। (न०) १ रूपक। २ अर्थालंकार। ३ अर्थविशिष्टता। ४ अर्थरचना।

अर्थात्—(अव्य०) अर्थ यह है कि। अभिप्राय यह है कि। यानी। अरथात।

अर्थालंकार—(न०)अर्थ के चमत्कार से संबंधित अलंकार।

अर्ध—(वि०) १ आधा। अधूरा।

अर्धमागधी—(ना०) प्राकृत भाषा का एक स्वरूप।

अर्धाळी—(ना०) चौपाई की दो पंक्तियां। आधी चौपाई।

अर्धांग—(न०) १ आधा अंग। २ पक्षाघात। लकवा।

अर्धांगिनी—(ना०) पत्नी। अर्द्धांगिनी।

अर्पण—(न०) १ प्रदान। २ समर्पण। भेंट। नजर।

अर्पणो—(क्रि०) अर्पण करना। अरपणो।

अर्बुद—(न०) आबू पर्वत। २ बादल। ३ अर्बुद गांठ का रोग।

अर्बुदगिर—(न०) अर्बुदगिरि। आबू पर्वत।

अर्वाचीन—(वि०) १ आधुनिक। २ नया।

अर्श—(न०) बवासीर। मस्सा।

अल—(वि०) व्यर्थ। फजूल।

अळ—(ना०) १ पृथ्वी। २ विष। (वि०) व्यर्थ।

अलका—(न०) अलकापुरी। कुबेर की पुरी।

अलकावळि—(ना०) केशों की लटें। अलकावलि।

अलख—(वि०) १ जो दिखाई न दे। २ जो लखा न जा सके। ३ जो जाना न जा सके। (न०) ईश्वर परब्रह्म।

अलख जगाणो—(मुहा०) अलख के नाम पर भीख मांगना।

अलख निरंजण—(न०) ईश्वर।

अलख पुरस—दे० अलख पुरुष।

अलख पुरुष—(न०) परब्रह्म। ईश्वर।

अळखामणो—(वि०) १ अप्रिय। अरुचिकर। २ अस्वाभाविक। ३ असह्य। ४ अशिष्ट। ५ उद्दण्ड।

अळखावणो—दे० अळखामणो।

अलग—(क्रि०वि०) १ जुदा। पृथक। २ दूर।

अळगण—दे० अणगळ।

अळगी—(क्रि०वि०) १ जुदी। पृथक। २ दूर। (ना०) १ रजोदर्शन। २ रजोदर्शन का एकांत वास। (वि०) १ निराली। २ एकांत।

अळगो—(क्रि०वि०) १ जुदा। पृथक। २ दूर। (वि०) १ निराला। २ एकांत।

अळगोजा—(न०) एक प्रकार की बांसुरी।

अळगो थळगो—(वि०) १ अलग अलग। भिन्न प्रकार का। २ अकेला। ३ एकांत।

अलज—*(वि०)* निलज्ज ।
अळजो—*(वि०)* उद्विग्न । चिंतित ।
अलजो—*(वि०)* निलज्ज । अलज ।
अलज्ज—*(वि०)* निलज्ज ।
अलटो—*(न०)* १ बदनामी । २ लांछन । कलंक । ३ झूठा आरोप । झूठा कलंक ।
अलड-पलड—*(क्रि० वि०)* अटपट । अविचार पूर्वक ।
अळतो—*(न०)* १ अलत्तक । महावर । २ मेंहदी ।
अळथो—*(वि०)* व्यर्थ । निकम्मा ।
अलद्ध—*(न०)* १ अप्राप्ति *(वि०)* अप्राप्त ।
अलप—दे० अल्प ।
अलपताई—*(ना०)* १ न्यूनता । कमी । अल्पता । १ ओछापना । ३ चचलता । ४ शैतानी ।
अलपतो—*(वि०)* १ चचल । १ शैतान । ३ ओछा । हल्का ।
अलबत—*(अव्य०)* १ अलबत्ता । निस्सन्देह । २ परतु । ३ हाँ । ४ कम से कम ।
अलबेलियो—दे० अलबेलो ।
अलबेलो—*(वि०)* १ छैला । २ मौजी । ३ मस्त । ४ उदार । ५ बाँका तरुन ।
अलमस्त—*(वि०)* १ मतवाला । २ बेफिक्र ।
अलमारी—*(ना०)* काठ, लोहे आदि का खानेदार कपाट ।
अलल—*(न०)* १ घोडा । २ भाला । *(वि०)* १ अपार । बहुत । २ बहुत से । ३ आला दर्जे का ।
अलल टप्पू—*(वि०)*१ ऊटपटाग । २ बिना ठिकाने का । ३ बिना अदाज । ४ अदाजन ।
अलल हिसाब—*(क्रि० वि०)* १ लेन देन के अतगत बकाया रकम के पटे म । २ चुकता हिसाब किये बिना । बिना हिसाब किये । ३ बिना सोचे समझे । यो ही । *(वि०)* बहुत ज्यादा ।
अळवदो—दे० अळवध ।
अळवध—*(ना०)* आपत्ति । सकट । झगडा ।
अळवधो—दे० अळवध ।
अळवळाट—*(ना०)* १ व्यथ का विवाद । २ विवाद करने के इरादे से की जाने वाली व्यथ की बातें । फालतू बात । ३ बकवाद । ४ यो ही इधर उधर देखता फिरना ।
अळवाणा—*(न०)* झझट । ममता ।
अळवाणो—*(वि०)* बिना जूता पहने हुए । नगे पाँव । उळवाणो ।
अळवी—*(वि०)* १ दुसह । असह्य । २ कठिन । मुश्किल । ३ उलटी । विरुद्ध । ४ महँगी । ५ झगडालू ।
अलवेलिया—*(न०)* एक लोक गीत । दे० अलबेलो ।
अलवेलो—दे० अलबेलो ।
अलवेसर—*(वि०)* १ सदा प्रसन्न रहने वाला । २ सदा आनदोत्सव मनाने वाला । मौजी । अलबेला । ३ उदार मना । उदाराशय । ४ असहायों का सहायक । ५ शृंगारित । अलकृत । *(न०)* १ आनदी पुरुष । २ अद्वितीय पुरुष । परमेश्वर । ईश्वर ।
अलवेसरी—*(वि०)* १ सदा प्रसन्न रहने वाली । २ सदा आनदोत्सव मनाने वाली । ३ उदारमना । ४ असहायों की सहायक । *(ना०)* १ अद्वितीय नारी । २ सती स्त्री । ३ शक्ति । दुर्गा । ४ हिंगुलाज की अलि वल्लभेश्वरी । हिंगलाज देवी ।
अळवो—*(वि०)*१ अविश्वासी । २ असह्य । ३ कठिन । ४ उलटा । ५ झगडालू ।
अलवो—*(वि०)* १ मौजी । अलबेला । २ मूक गूगो ।
अळसाव—*(न०)* आलस्य । सुस्ती ।

अळसाणो—(क्रि०) १ काम की होड में सहयोगी को पीछे रख देना। काम में हरा देना। आलसाना। अळाणो। २ अलसाना। आलस करना। (न०) स्थगित। मुलतवी। आळाणा।

अळसियो—(न०) १ मिट्टी में पैदा होने वाला लम्बा बरसाती कीड़ा। २ पेट में उत्पन्न होने वाला एक लंबा कीड़ा। केंचुआ। गिजाई।

अळसी—(ना०) अलसी। तीसी।

अळसूट—दे० अलतूज।

अळसेट—(ना०) १ बाधा। विघ्न। अड़चन। २ एतराज। आपत्ति। मुसीबत। (वि०) १ नियम विरुद्ध। २ अनुचित। ३ अनुपयुक्त। ४ रुका हुआ।

अळसेडो—(न०) १ कचरा। कूस। २ झगड़ा। टंटा।

अळही—दे० अळवा।

अलंकार—(न०) १ गहना। आभूषण। २ शृंगार। सुन्दर वेश-भूषा। ३ काव्य में शब्द या अर्थ का चमत्कार अथवा अनूठापन दिखाने वाले विविध तत्व। ४ शब्द तथा अर्थ की वह योजना जिससे काव्य की शोभा बढ़े। ५ शब्द अथवा अर्थ की चमत्कार वाली रचना। ६ शब्द तथा अर्थ की चमत्कृति। ७ बहत्तर कलाओं में की एक कला।

अलग—(क्रि०वि०) १ दूर। २ ऊपर। (ना०) १ ओर। तरफ। २ दूरी। ३ मकान की ऊंचाई। ४ ऊंचाई। ५ घोड़ी की प्रसवदशा। ठाण।

अळा—(ना०) १ अग्नि। १ अनाज। ३ पृथ्वी।

अळाईया—(ना०ब०व०) ग्रीष्म ऋतु की गरमी से शरीर में उठने वाली पिटिकाएं। अम्होरी। अम्होरियां। गरमी दाने। अळायां।

अलाणो—दे० अगलाणो।

अळाणो—दे० अळसाणो।

अलाप—दे० आलाप।

अलापणो—दे० आलापणो।

अला-बला—(ना०)१ प्रेत बाधा। इल्लत। २ संकट। आफतें। बलाए।

अलाम—(वि०) १ दुष्ट। बदमाश। २ नालायक। ३ धोखेबाज। ४ चोर। ५ नीच।

अलायदो—(वि०) जुदा। अलग। अलहदा।

अलाय-बलाय—दे० अला बला।

अलाव—(न०) १ आँवा। २ अग्निकुंड। ३ आग का ढेर। ४ तापने की धूनी।

अळावणो—दे० अळसाणो।

अलावा—(क्रि०वि०) अतिरिक्त। सिवाय। छोड़कर।

अलाह—(न०) १ अलाभ। हानि। २ अल्ला। खुदा। (वि०) लाभ रहित।

अलिगळ—(ना०) १ अलि अवलि। भ्रमर पंक्ति। २ भ्रमर। भौंरा।

अलिय—(वि०) १ अलीक। २ अप्रतिष्ठित।

अलियळ—(वि०) १ मौजी। मन मौजी। शौकीन। २ स्वतन्त्र। स्वच्छन्द। ३ उदार। ४ दानी। (न०) १ अलि कुल। भ्रमर समूह। २ भौंरा।

अलियावळ—(ना०) भ्रमर पंक्ति।

अळियो—(वि०) सळिया का उलटा। १ झगड़ाखोर। अळीवाळो। २ अशिष्ट। अभद्र। ३ अव्यवस्थित। ४ केंचुआ। सूत सा लम्बा एक बरसाती कीड़ा। ५ नाज के अंदर का कंकड़ ढेला इत्यादि कचरा। ६ खेत में फसल के साथ उगने वाला घास।

अळी—(ना०) १ टंटा। फिसाद। २ झगड़ा। बखेड़ा। उपद्रव। (वि०) १ बुरी। खोटी। २ असत्य।

अलीक—(न०) १ कुमार्ग। २ मर्यादा उल्लंघन। अमर्यादा। (वि०) १ मर्यादा रहित। २ कुपथगामी। ३ मिथ्या। ४ अप्रिय।

अळी-गळी—(क्रि० वि०) १ गली गली में। २ इधर उधर।

अलीण—(वि०) १ असाध्य। २ अग्राह्य। ३ अनुचित। नाजायज। ४ अनुपयुक्त।

अलीध—(वि०) नहीं लिया हुआ। नहीं ग्रहण किया हुआ। (क्रि० वि०) १ बिना लिये ही २ लेने से पहले (क्रि० भू०) नहीं लिया।

अलीन—(वि०) १ अध्यानस्थ। ध्यान से रहित। २ अतन्मय। ३ विरत। अलग। ४ अनुचित। बेजा।

अलीनध—(न०) ढाल बसन (बांधने) का बसना।

अलीमन—(न०) मुसलमान।

अळीयळ—(न०) अतियळ।

अलीन—(वि०) १ बीमार। २ सूखा। हरा नहीं। ३ अनील।

अळुभाड—(न०) १ रस्सी धागे आदि में पड़ी हुई उलझन। २ टंटा झगड़ा। ३ पचीदा काम। ४ पेचीदापन। ५ उलझन। विकृत। ६ बिना सार-सम्हाल के बिखरा हुआ सामान। ७ अटाला। अटाळो।

अळुभाडो—दे० अळुभाड।

अळूभणो—(क्रि०) उलझना। फसना।

अळूभाणो—(क्रि०) उलझाना। फँसाना।

अलूणो—(वि०) १ जिसमें नमक न हो। अलोनी। २ नीरस। ३ फीकी। ४ नापसन्द।

अलूणो—(वि०) १ नमक रहित। अलोना। २ नीरस। ३ फीका।

अलेख—(वि०) १ लेख रहित। २ जिसका कोई लेखा नहीं। असंख्य। ३ जो लिखने के योग्य नहीं। (न०) अलख।

अलेखो—(वि०) १ असंख्य। बेहिसाब। २ अत्यधिक।

अलेखे—(क्रि० वि०) व्यर्थ।

अलेप—(वि०) अलिप्त। निर्लिप्त।

अलेल—(वि०) अपार।

अलोडजणो—(क्रि०) मिश्रित होना।

अलोडणो—(क्रि०) गीली वस्तुओं को परस्पर मिलाने के लिये हाथ से हिलाना या मंथन करना। मिश्रित करना।

अलोवीजणो—दे० अलोडजणो।

अलोक—(वि०) अलौकिक। २ अद्भुत।

अलोच—(वि०) लोच रहित। कड़ा। कठिन। काठो। दे० आलोच।

अलोज—न० आलाज।

अलोप—(वि०) अदृश्य। अंतर्धान। लुप्त।

अलोल—(वि०) नहीं हिलनेवाला। स्थिर। अचंचल।

अलोलक—(न०) स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

अलोवणो—(क्रि०) द्रव पदार्थ में चूर्ण आदि को हिला चलाकर एक मेक करना। मिलाना।

अलौकिक—(वि०) १ लोकोत्तर। २ असामान्य। अद्भुत। ३ अपूर्व। ४ अति मानुषी। ५ दिव्य।

अल्प—(वि०) १ थोड़ा। कम। २ छोटा।

अल्पजीवी—(वि०) कुछ समय तक जीने वाला। अल्पायु।

अल्पज्ञ—(वि०) बहुत कम जानने वाला। नासमझ।

अल्पप्राण—(न०) वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का पहला तीसरा और पांचवा अक्षर तथा य, र ल व वर्ण।

अल्पभाषी—(वि०) कम बोलने वाला।

अल्पभोजी—(वि०) थोड़ा खाने वाला।

अल्पविराम—(न०) वाक्य में किंचित ठहराव के स्थान पर प्रयुक्त एक विराम चिन्ह (,)। कामा।

अल्पायु—(वि०) कम आयु का।

अल्पाहार—(न०) १ साधारण से कम भोजन। २ कलेवा। नाश्ता। झारो। सिरावण।

अल्ल—(ना०) १ उपगोत्र। २ कुल नाम। ३ वंश की शाखा।

अल्ला—(न०) परमेश्वर। खुदा।

अल्हड—(वि०) १ अल्प वयस्क। २ अनुभव हीन। ३ भोला। ४ मौजी। ५ अनाडी।

अव—(उप०) दूषण हीनता, अनादर नीचाई कमी अभाव निश्चय व्याप्ति एवं विशिष्टता आदि का भाव प्रकट करने वाला एक उपसर्ग।

अवकाश—(न०) १ फुरसत। खाली समय। २ छुट्टी। रजा। ३ विश्राम। ४ आकाश। ५ मौका। अवसर।

अवकृपा—(ना०) नाराजी। अप्रसन्नता।

अवक्कीवाण—(ना०) १ आश्चर्यजनक कथन। २ नहीं कहने योग्य कथन। ३ टेढी बोली। ४ समझ में नहीं आने योग्य कथन। ५ जोर की चिल्लाहट।

अवक्र—(वि०) जो टेढा न हो। सीधा।

अवक्रपा—दे० अवकृपा।

अवखरलणो—१ टेकवाला। २ अक्कड। ३ अरुचिकर।

अवखाणो—दे० श्रोखाणो।

अवगणणा—(ना०) १ अवगणना। उपेक्षा। २ अनादर।

अवगणणो—(क्रि०) १ अवगणना करना। उपेक्षा करना। २ अनादर करना। ३ हेय समझना।

अवगत—(वि०) १ जाना हुआ। ज्ञात। २ जो जाना न जा सके। ३ अवगति प्राप्त। (ना०) १ याद। स्मरण। औसाण। २ अवगति। ३ कुसमय।

अवगति—(ना०) १ बुरी गति। कुदशा। २ भूत प्रेत की गति। ३ नरक में जाना। ४ जानकारी। ५ धारणा शक्ति। बुद्धि। (वि०) जिसकी गति जानी नहीं जा सके।

अवगाढ—(वि०) १ शूरवीर। पराक्रमी। २ अशक्त। निबल। ३ गर्व रहित। ४ निमग्न। (न०) युद्ध।

अवगात—(वि०) १ निबल। अशक्त। २ बौना। ३ निर्बल।

अवगाळ—(ना०) १ कलंक। लाञ्छन। औगाळ। २ बदनामी। अपयश। ३ शर्म। लाज।

अवगाह—(न०) १ स्नान। २ संकट का स्थान। ३ कठिनाई। ४ भीतर प्रवेश। ५ हाथी का मस्तक। ६ युद्ध। (वि०) जुदा। अलग। (क्रि० वि०) दूर।

अवगाहणो—(क्रि० वि०) १ स्नान करना। २ युद्ध करना। ३ प्रवेश करना। ४ थाह लेना। ५ सोचना विचारना। ६ गहरे विचार में पडना। ७ चिंतित होना। ८ हल चल मचाना। ९ मारना। नाश करना।

अवगुण—(न०) १ दुर्गुण। २ दोष। ३ हानि। ४ अपकार।

अवगुणी—(वि०) १ दुर्गुणी। २ कुकर्मी। ३ कृतघ्न। कृतघ्नी।

अवग्या—दे० अवज्ञा।

अवघट—(वि०) १ विकट। दुर्गम। कठिन। औघट। २ ऊबड-खाबड।

अवचळ—दे० अविचळ।

अवछळ—(वि०) १ सुंदर। २ पवित्र। ३ कपट रहित। निश्छल।

अवछाड—(वि०) १ सहायक। २ रक्षक। ३ कपडे का ढक्कन। औछाड।

अवछाह—(न०) उत्साह। औछाह।

अवजोग—(न०) १ अपयोग। दुर्योग। २ अशुभ मुहूर्त।

अवज्ञा—(ना०) १ अनादर । निरस्कार । २ उपेक्षा । अवहेलना । ३ लापरवाही ।

अवभट—दे० औभट ।

अवभाड—(ना०) प्रहार । चोट । धौनाड ।

अवभाडणो—(क्रि०) १ प्रहार करना । २ काटना । ३ मारना । धौनाडणी ।

अवट—(क्रि०) १ बिना मार्ग । ऊजड । २ जिसमें कर न हो । जो समाप्त न हो । (न०) १ विकट रास्ता । २ कुमार्ग । ३ विकटमार्ग । ४ नाश । ५ युद्ध । ६ निर्जन स्थान ।

अवटणो—(क्रि०) १ औटना । उबलना । २ गुस्सा होना । ३ मन में घुटना । कुढणो । ४ युद्ध करना ।

अवटावणो—(क्रि०) १ हैरान करना । २ औटाना । उबालना । ३ हराना । ४ उलटना । ५ पूरा करना । निष्पन्न करना ।

अवटीजणो—दे० अवटणो ।

अवडी—(वि०) १ इतनी । २ बहुत । ३ इस प्रकार का । ऐसी ।

अवडा—(वि०) १ इतना । २ बहुत । अधिक । इस प्रकार का ।

अवड—(वि०) १ वह (जगल और जिसके वृक्षों की लकडी) जिसके काटने की मनाई हो । रक्षित । रक्षत । २ विकट । दुर्गम ।

अवतरणो—(क्रि०) १ अवतार लेना । २ उत्पन्न होना । जन्म लेना । ३ उतरना ।

अवतार—(न०) १ प्रादुर्भाव । २ जन्म । ३ ईश्वर का प्राणी रूप में प्राकट्य । शरीर धारी के रूप में ईश्वर का धरती पर उतरना ।

अवतारणो—(क्रि०) १ उतारना । २ घुमाना । फिराना ।

अवतारी—(वि०) १ अवतार लेने वाला । ३ अलौकिक दैवगय गुणों से युक्त । दिव्य शक्ति सम्पन्न । ४ अलौकिक । ५ विद्धावरण वाला (व्यंग्य में) ।

अवथणो—(क्रि०) १ बिगडना । २ नाश होना । ३ अस्त होना । ४ हारना । ५ अवस्थित होना । विद्यमान होना । ६ होना । बनना ।

अवदशा—(ना०) बुरी दशा । गिरी हालत ।

अवदात—(वि०) १ उज्ज्वल । २ श्वेत । ३ शुद्ध । पवित्र । (न०) १ श्रेष्ठता । श्रेष्ठ चरित्र ।

अवदाळ—(वि०) उदार ।

अवदिशा—(ना०) विरुद्ध दिशा ।

अवदीर—(न०) युद्ध ।

अवदीत—दे० अवदात ।

अवध—(न०) १ अयोध्या । २ मर्यादा । सीमा । ३ मयाद । ४ आयु । (क्रि०) जब नहीं करने योग्य ।

अवधार—(न०) १ उद्धार । २ रक्षा । ३ निर्णय । ४ निश्चय ।

अवधारणो—(क्रि०) १ उद्धार करना । २ रक्षा करना । ३ धारण करना । ४ स्वीकार करना । ५ निश्चय करना ।

अवधि—(ना०) १ निश्चित समय । मियाद । २ सीमित समय । ३ सीमा । हद ।

अवधू—(न०) १ योगी । २ सन्यासी । साधु । (वि०) १ मस्त । २ उच्छृंखल ।

अवधूत—(न०) १ संसार से विरक्त । त्यागी । २ योगी । ३ नाथपंथी साधु । ४ सन्यासी । (वि०) मस्त ।

अवधूताणी—(ना०) सन्यासिनी ।

अवधेश—(न०) १ अवधपति । २ श्री रामचन्द्र ।

अवधेश्वर—(न०) श्री रामचन्द्र ।

अवध्वंस—(न०) १ नाश । संहार ।

अवनत—(वि०) १ झुका हुआ । २ दुर्दशा ग्रस्त । ३ पतित । गिरा हुआ । ४ नम्र ।

अवनति—(ना०) १ पतन । ह्रास । २ दुर्दशा ।
अवनाड—(वि०) १ अनम्र । २ योद्धा । वीर ।
अवनाडा—दे० अवनाड ।
अवनी—(ना०) पृथ्वी ।
अवनीप—(न०) राजा ।
अवप—(न०) अवपु । वामदेव । अनंग ।
अववेस —(वि०) निराश्रय । निःसहाय ।
अवमान—(न०) अपमान । निरादर ।
अवमानणा—(क्रि०) १ अपमान करना । २ उलटा समझना । ३ आज्ञा का पालन नहीं करना ।
अवयव—(न०) १ शरीर का अंग । २ वस्तु का पूरक अंश । हिस्सा ।
अवर—(वि०) १ तुच्छ । २ न्यून । कम । ३ अधीनस्थ । ४ दूसरा । अन्य । (अव्य०) और ।
अवरजण—(न०) स्वीकार । अवज्ञा ।
अवर जण—(न०) १ अन्य व्यक्ति । २ शत्रु । (वि०) पराया । अवर जन ।
अवरजणो—(क्रि०) १ इन्कार नहीं करना । २ स्वीकार करना । ३ निरादर करना ।
अवरण—(वि०) १ बिना वर्ण का । २ बिना रंग का । अवर्ण ।
अवरण-जरण—(न०) परब्रह्म । ईश्वर ।
अवरथा—(वि०) वृथा । निरर्थक । फजूल ।
अवरपण—(न०) १ अनात्मीयता । २ परायापन । ३ भिन्नता । अलगाव । अळगापणो ।
अवरपणो—दे० अवरपण ।
अवरसण—(न०) १ अवर्षण । अनावृष्टि । २ दुष्काल । अकाळ ।
अवरसणा—दे० अवरसण ।
अवरंग—(न०) १ औरंगजेब बादशाह । २ बदरंग ।
अवरंगशाह—(न०) औरंगशाह । औरंगजेब बादशाह ।
अवराधणो—दे० आराधणा ।
अवराधना—दे० आराधना ।
अवरापण—(वि०) क्वारा । दे० अवरपण ।
अवरां—(अव्य०) १ दूसरों । २ दूसरों को । औरों को । दूजांनै ।
अवरी—(वि०) १ अविवाहिता । क्वारी । कुंआरी । २ वह जिसने युद्ध नहीं किया हो (सेना) । (ना०) १ अप्सरा । २ एक नाग कन्या ।
अवरेख—(न०) १ अनुमान । २ विचार । ३ निश्चय । ४ अवलोकन ।
अवरेखणो—(क्रि०) १ अनुमान करना । २ विचार करना । ३ निश्चय करना । ४ देखना । अवलोकन करना ।
अवरेण—(अव्य०) १ दूसरा के द्वारा । औरों से । २ शत्रुओं के द्वारा । (वि० व० व०) दूसरे । दूजा ।
अवरेत—दे० उरेव ।
अवरो—(वि०) १ क्वारा । कुंआरो । २ दूसरा । दूजो ।
अवरोसणो—(क्रि०) १ रोष करना । क्रोध करना । २ प्रसन्न होना ।
अवरोध—(न०) १ रुकावट । २ अड़चन । बाधा ।
अवरोधक—(वि०) १ रोकने वाला । रोकणियो । २ बाधा डालने वाला ।
अवरोधणो—(क्रि०) १ रोकना । २ रुकावट डालना । बाधा डालना ।
अवरोह—(न०) १ उतार । २ पतन । गिराव । ३ ऊपर के स्वरों से नीचे के स्वरों पर आना । आलाप का नीचे आना (संगीत) । आरोह का उलटा स्वर ।
अवल—(वि०) १ पहला । प्रथम । २ उत्तम । श्रेष्ठ । ३ असल ।

अवळण—(न०) १ नहीं मोटना । २ सुधी नहीं लना । ३ उगमर ।

अवळणा— (ना०) अमुधि । बराबर ।

अवळणा—(क्रि०) १ नहीं लौटना । वापिस नहीं आना । २ नहीं मुड़ना ।

अवलंब—(न०) सहारा । आश्रय । आसरो ।

अवलंबणो—(क्रि० १ सहारा लेना । आधार लेना । आधार रखना ।

अवळाई—(ना०) १ टेढ़ा । २ चक्कर । घूम । ३ उदमा ी ।

अवलिया—(न०) औलिया । पहुँचा हुआ फकीर । २ सिद्ध पुरुष ।

अवळी—(वि०) १ विपरीत । विरुद्ध । २ टेढ़ी । (ना०) पंक्ति । पंक्ति ।

अवळीमाण—न० अमनामाण ।

अवळू—दे० उाढ ।

अवळूटी—एक लोक गीत । दे० पाळू ।

अवळे—(क्रि० वि०) परोक्ष में ।

अवळा—(वि०) १ विपरीत । विरुद्ध । २ टेढ़ा । ३ चक्कर वाला । घुमावदार ।

अवळो आवणो—(मुहा०) प्रसव के समय भ्रूण का आडा हो जाना । आडाआणो ।

अवळो करणा -(मुहा०) उलटा करना । ऊंधो करणो ।

अवळा वहणो—(मुहा०) १ विरुद्धाचरण करना । कुमार्ग पर चलना ।

अवळो हेणा—(मुहा०) विरुद्ध हो जाना ।

अवळो-सवळो— (वि०) १ उलटा सुलटा । २ जैसा तैसा ।

अवश—(वि०) १ बेबश । मजबूर । लाचार । २ परतंत्र ।

अवश्य—(क्रि० वि०) १ जिस पर कोई वश न हो । निश्चित । जरूर । २ अनिवार्य ।

अवस—(क्रि० वि०) अवश्य । जरूर । (वि०) १ जो वश में न किया जा सके । २ अवश । विवश ।

अवसर—(न०) १ महफिल । २ नृत्य । मौका । समय । ४ बार । दफा । ५ राग । पारी । ६ मृतक भोज । ओसर । मौसर । ७ कोई निमित्त पाया जन । आयोजन ।

अवसर चूकणा—(मुहा०) अनुकूल परिस्थित या मौके का लाभ न उठा सकना ।

अवसराऊ—(वि०) आवश्यकीय । जरूरी । (क्रि० वि०) यथावसर । अवसर पर ।

अवसाण—(न०) १ मृत्यु । मरण । २ मौका । अवसर । ३ विराम । ४ अंत । ५ चेत । होश । ६ युद्ध । ७ अहसान ।

अवसाण सिद्ध—(वि०) १ मृत्यु को सार्थक बनाने वाला । २ मृत्यु को सिद्ध करने वाला । ३ समय पर काम सिद्ध करने वाला । ४ समय का लाभ उठाने वाला । ५ युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाला । ६ विजयी ।

अवसाद—(न०) १ विषाद । २ थकावट । ३ नाश । ४ मृत्यु ।

अवसाप—(न०) १ यश । कीर्ति । २ वैभव । ३ बड़प्पन । ४ उदारता । ५ वदान्यता । औसाप । ६ सामर्थ्य । ७ शौर्य । ८ शक्ति । बल । ९ उपकार ।

अवस्था—(ना०) १ आयु । उम्र । २ दशा । हालत । ३ आयुष्य के चार अंश—बाल्य, कौमार यौवन और जरा । ४ वेदान्त के अनुसार चार अवस्थाएं—जागृति स्वप्न सुषुप्ति और तुर्य । ५ बुढ़ापा । वृद्धावस्था ।

अवस्थान—(न०)१ स्थान । २ टिकाव । ३ स्थिति ।

अवहार—(वि०) १ बंधनमुक्त । २ शिथिल । (न०) १ युद्ध विराम । विराम । २ शिथिलता ।

अवहेलना—(ना०) अवज्ञा । तिरस्कार ।

अवक—(वि०) गोपा।

अवका—(वि०) १ गोपा। टेढ़ा नहा। २ सरल।

अवगी—(वि०) १ वह जहाँ किसी का आवागमन न हो (स्थान)। एकान्त। २ जहाँ कोई जा न सके। दुगम। ३ कठिन। ४ सुविधा रहित। (ना०) १ एकांत जगह। २ नयायी जगह।

अवगो—(वि०) १ दुगम। २ कठिन। ३ भभटवाला। ४ कष्ट साध्य। ५ एकांत। ६ भयावना (स्थान)।

अवती—(ना०) १ मालवा की प्राचीन ऐतिहासिक राजधानी का एक नाम। उज्जयिनी। उज्जन। २ मालवा का प्राचीन नाम। मालव।

अवाई—(ना०) १ आन की क्रिया। आगमन। २ गदश।

अवाऊ—द० अवसाऊ।

अवाक—(वि०) १ मौन। चुप। २ चकित। अचंभित। ३ जिसमे चप न हो। चीरासहोत। ४ सत्व रहित। सतहीण।

अवाकी—(वि०) १ मौन रहन वाला। नहीं बोलने वाला। मौनी। २ मूक। गूगो। ३ नहीं बालन याग्य। ४ लज्जित। ५ चकित। ६ अप्रामाणिक।

अवाकी वाणी—दे० अवक्की वाणी।

अवाचा—(न०) १ प्रतिज्ञा पालन की मुक्ति। की हुई प्रतिज्ञा के प्रतिबंध की छुट्टी। २ प्रतिज्ञा का रद्द होना। वाचा अवाचा।

अवाची—(ना०) दक्षिण दिशा।

अवाच्य—(वि०) १ अवर्ण्य। अकथ्य। २ जो पढ़ा न जा सके।

अवाज—(ना०) १ आवाज। ध्वनि। बोली। २ पुकार। ३ स्वर। सुर।

अवाडो—(न०) पशुओं के लिये बनाया हुआ पानी पीने का थाला या खेली। उबारा। खेळी। हवाडो।

अवादा—द० मावादा।

अवादाी—(ना०) १ आमदनी। २ आबादी।

अवादो—(न०) १ वादा। वायदा। २ मियाद। ३ वादा खिलाफी। ४ स्वाद रहित। अस्वादो। असवादो। ५ वह ऋतु पहले का बना हुआ (खाद्य पदार्थ इत्यादि) बासी।

अवार—(ना०) १ देर विलंब। (क्रि०वि०) तुरंत। अभी। । अमार।

अवार-नवार—(क्रि०वि०) १ बार बार। २ कभी-कभी। कद कद।

अवारग—(वि०) बहुत समय से काम मे नहीं लाया हुआ। अव्यवहृत।

अवारग वातों—(न०) अव्यवस्था। बद इतजामी। गडबडवातो। गडबड।

अवारग्यानो—(न०) वह स्थान जहाँ बहुत समय से अव्यवस्थित ढंग से और अव्य वहृत वस्तुएं पड़ी हो। २ अव्यवहृत वस्तुओं का ढेर।

अवास—(न०) १ उपवास। व्रत। २ आवास। घर। (वि०) १ बिना घर का। आवास रहित। २ गंध रहित।

अवाह—(न०) आंवां। भट्टा। (वि०) प्रहार रहित।

अवाग—(वि०) बांधा हुआ नहीं। तेल दिया हुआ नहीं (पहिले की धुरी म)।

अवाछनीय—(वि०) १ जो इष्ट न हो। २ नही चाहा हुआ। ३ अनुचित।

अवातर—(वि०) १ अतगत। २ मध्य वर्ती। ३ गौण। अतिरिक्त।

अविग्रट—दे० अविग्राट।

अविग्राट—(न०) १ युद्ध। २ सेना। ३ तलवार। (वि०) १ जबरदस्त। वीर। २ उद्दड। ३ दृढ। मजबूत। ४ भयंकर।

अविकल—(वि०) १ जो विकल न हो। अव्याकुल। २ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ३ ज्यों का त्यों। ४ पूरा। सम्पूर्ण।

अविकारी—(वि०) १ विकार रहित। निर्विकार। २ रोग रहित। नीरोग। ३ जिसके रूप में कभी विकार या परिवर्तन नहीं होता ऐसा (शब्द) अव्यय। (व्या०)

अविगत—(वि०) १ अज्ञात। २ अनय। ३ अनिर्वचनीय। ४ विवरण रहित। (न०) परब्रह्म।

अविचळ—(वि०) १ स्थिर। ध्रुव। २ दृढ। धीर। स्थिर।

अविचार—(न०) १ कुविचार। २ अविवेक।

अविचारी—(वि०) अविवेकी। नासमझ।

अविणास—(न०) अविनाश। नाशरहित।

अविणासी—(वि०) १ जिसका नाश न हो। अविनाशी। २ नित्य। शाश्वत। (न०) परब्रह्म।

अविद्या—(ना०) १ विद्या का अभाव। २ मूर्खता। ३ अज्ञान। ४ माया का एक भेद। ५ माया।

अविधान—(न०) १ अभिधान। नाम। २ अव्यवस्था। ३ अनियम। ४ विधान के विरुद्ध।

अविनय—(ना०) १ उद्दंडता। २ धृष्टता।

अविनाश—दे० अविणास।

अविनाशी—दे० अविणासी।

अवियट—दे० अविग्राट।

अवियाट—दे० अविग्राट।

अवियार—(न०) अविचार।

अविरळ—(वि०) १ विरल नहीं। सामान्य। २ घट्ट। ३ घना। ४ सटा हुआ। ५ सतत। लगातार।

अविराम—(क्रि० वि०) विराम रहित। बिना रुके।

अविवेक—(न०) विवेक हीनता। नासमझी। बेवकूफी।

अविवेकी—(वि०) १ विवेकहीन। नासमझ। बेवकूफ। २ अविचारी।

अविश्वास—(न०) विश्वास का अभाव।

अविश्वासी—(वि०) १ जिसका कोई विश्वास न करे। २ जो किसी पर विश्वास न करे। विश्वास न करने वाला।

अविहट—दे० अविग्राट।

अविहड—दे० अविग्राट।

अवीढा—(वि०) १ वीर। योद्धा। २ अद्भुत। अनोखा। कठिन। दुरूह। विषम। ४ जबरदस्त। ५ भयंकर।

अवीध—(वि०) १ बिना बाधा हुआ। अविद्ध। अनबींध।

अवूठणो—(न०) अवर्षण। अवरसण। (क्रि०) वर्षा न होना।

अवेखणो—(क्रि०) देखना। जोवणो।

अवेडो—(वि०) १ कठिन। २ विकट। भीषण। ३ प्रतिकूल। विरुद्ध। ४ निडर। ५ भयावना। ६ अद्भुत। ७ जबरदस्त। ८ चिह्न रहित। ९ घाव रहित।

अवेढो—दे० अवेडो।

अवेर—(ना०) १ उपार्जन। सम्हाल। सुरक्षा। २ सुव्यवस्था। ३ विवेकपन का उपयोग और उसका फल। ४ मितव्ययिता। ५ सुघडता। निपुणता। ६ देरी। विलंब।

अवेरणो—(क्रि०) १ सम्हाल करके रखना। सम्हालना। २ संग्रह करना। ३ सुव्यवस्थित करना या रखना। ४ वस्तु को वापिस लौटाना या सम्हालना।

अवरो—(न०) १ काम करते समय होने वाला बरतन, औजार आदि वस्तुओं का

जिसराव। २ जिसरी हुई वस्तुएँ। ३ नित्य व्यवहार की वे वस्तुएँ जिन्हें काम करने के बाद यथास्थान रखना है।

अवेळा—(ना०) १ विलंब। देर। २ असमय। कुसमय। (क्रि० वि०) शीघ्र। भट। बेगा।

अवेर—(न०) १ अवयव। २ भेद। रहस्य।

अवस—(क्रि० वि०) अवश्य। जरूर। (वि०) वश रहित। (न०) आवश।

अवसास—(न०) अविश्वास।

अव—(सर्व०) १ उसने। २ उन्हों।

अवोचणा—(न०) पदानशीन औरतों के ओढने या मार्गी के ऊपर ओढने का एक वस्त्र।

अवाडी—न० योडी।

अव्यक्त—(वि०) १ अप्रकट। २ अगम्य। ३ नहीं कहा हुआ। (न०) ईश्वर।

अव्यय—(वि०) १ व्यय रहित। २ विकार रहित। अविकारी। ३ सदा एक रूप। (न०) सभी लिंगों वचनों कारकों इत्यादि में अपरिवर्तित रहने वाला शब्द। (व्या०)

अव्यवस्था—(ना०) कुव्यवस्था। व्यवस्था का अभाव। बदइंतजामी।

अव्यवहार—(वि०) जो व्यवहार में न आ सके। व्यवहार के उपयुक्त नहीं।

अशकुन—(न०) बुरा शकुन।

अशक्त—(वि०) निबल।

अशक्ति—(ना०) निवलता। कमजोरी।

अशरण—(वि०) १ निराधार। २ अनाथ।

अशरण-शरण—(वि०) निराधार को शरण देने वाला। (न०) ईश्वर।

अशांत—(वि०) १ बेचैन। २ क्षुब्ध।

अशांति—(न०) १ बेचैनी। २ अस्थिरता। ३ क्षुब्धता।

अशिक्षित—(वि०) अनपढ़।

अशिव—(वि०) १ अमंगलकारी। २ बीभत्स। (न०) अमंगल।

अशिष्ट—(वि०) १ उजड्ड। गँवार। २ अभद्र।

अशुद्ध—(वि०) १ अपवित्र। २ नापाक। ३ भूलयुक्त। गलत। खाटो। खोटो।

अशुद्धि—(ना०) १ अपवित्रता। २ भूल। गलती। खोट।

अशुभ—(वि०) १ अमंगल। २ पाप। अपराध। ३ खाटो।

अशेष—(वि०) १ न बचा हुआ। समाप्त। २ पूरा। ३ अनंत। अपार।

अशोक—(वि०) शोक रहित। (न०) एक अति प्रसिद्ध प्राचीन मगध सम्राट। २ एक प्रसिद्ध मांगलिक वृक्ष।

अशोच—(न०) १ अपवित्रता। २ वह अशुद्धि जो परिवार में जनन या मृत्यु पर मानी जाती है। सूतक।

अश्रद्धा—(ना०) १ श्रद्धा का अभाव। २ घृणा। सुग। ३ अनास्था।

अश्रु—(न०) आँसू।

अश्रुत—(वि०) नहीं सुना हुआ।

अश्लील—(वि०) १ कामाचार संबंधी। २ कुत्सित। ३ गन्दो। भद्दा। फूहड़।

अश्व—(न०) घोड़ा।

अश्वमेध—(न०) प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध यज्ञ।

आषाढ—(न०) असाढ मास।

अष्ट—(वि०) आठ। (न०) आठ की संख्या। ८

अष्ट कल्याणी—(वि०) १ आठ श्वेत शुभ चिह्नों वाला (घोड़ा)। चारों पाँव ललाट छाती कंधा तथा पूँछ जिसके सफेद हों वह (घोड़ा)। अष्टमंगळी। २ खान पान में पवित्रता अपवित्रता छुआछूत शुद्धाशुद्ध तथा सफाई इत्यादि का जहाँ विचार तथा व्यवस्था न हो। अठ कल्याणी।

अष्टकुळ—*(न०)* १ सर्पों के आठ कुल। २ पवनों के आठ कुल।

अष्टछाप—*(न०)* व्रज के सर्वोत्तम पुष्टिमार्गी कवियों का वर्ग।

अष्टधातु—*(ना०)* सोना चाँदी तांबा राँगा जस्ता सीसा लोहा और पारा।

अष्ट नायिका—*(ना०)* काव्य शास्त्र में वर्णित अवस्था भेद के अनुसार—मुग्धा, मध्या और प्रौढ़ा नायिकाओं के अतिरिक्त आठ प्रकार की नायिकाएँ—स्वाधीन पतिका खंडिता, अभिसारिका कलहांत रिता विप्रलब्धा प्रोषितभर्तृका वासक सज्जा और विरहोत्कंठा।

अष्टपद—*(न०)* १ सिंह। २ मकड़ा। ३ सोना। सुवर्ण।

अष्ट पहर—*(ना०उ०व०)* दिन रात के आठ पहर। आठपहर का समय। आठों पहर।

अष्टभुजा—*(वि०)* आठ भुजाओं वाला। *(ना०)* दुर्गा।

अष्टमंगळी—दे० अष्ट मंगळी।

अष्ट मंगळीक—दे० अष्ट मंगळी।

अष्टमी—दे० आठम।

अष्टसिद्धि—*(ना०)* आठ सिद्धियाँ—अणिमा महिमा गरिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य इशित्व और वशित्व।

अष्ट सौभाग्य—*(न०ब०व०)* सौभाग्यवती स्त्री के आठ चिह्न—(१) माँग में सिंदूर (२) ललाट पर कुंकुम की टीकी (बिन्दी)। (३) आँख में काजल (४) नाक में बाला (नथ) (५) कानों में कुंडल टोटी, भंवर इत्यादि (६) गले में हार (पातमाला) (७) हाथों में चूड़ा (८) पांवों में झांझर कड़ले इत्यादि।

अष्टाध्यायी—*(ना०)* पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं।

अष्टावक्र—*(न०)* एक प्रसिद्ध ऋषि। *(वि०)* शरीर के आठों ही अंगों में बांका टेढ़ा। **कूबड़ो।**

अस—*(न०)* अश्व। घोड़ा। *(वि०)* ऐसा।

असई—*(वि०)* असती। कुलटा।

असगंध—*(न०)* १ असगंध। २ आलस जाता। विवाद। ... ४ छेड़ छाड़।

असगार—*(न०)* एक बाजार। ... मसखरी।

असगोल—*(न०)* असगोल नाम की एक भाड़ी तथा औषधि। असगंध। आसगंध।

असगुन—*(न०)* अपशकुन। अपशुकन।

असगो—*(वि०)* १ जो सगा न हो। २ जिसका रिश्ता न हो। *(न०)* शत्रु।

असज्ज—*(वि०)* १ असाध्य। २ तैयार नहीं। सज्ज हुआ नहीं। ३ टूटा फूटा।

असज्जन—*(न०)* १ जो सज्जन नहीं। दुष्ट। २ चोर।

असज्झ—दे० असज्ज।

असट—दे० अष्ट।

असड़ो—*(वि०)* ऐसा। इस प्रकार का। ऐड़ो।

असड़ो—*(वि०)* ऐसा। इस प्रकार का। ऐड़ो।

असण—*(न०)* १ भोजन। अन्न। २ बिजली। ३ वज्र। ४ बाण। ५ आता।

असणी—*(ना०)* बिजली। अशनि। खिवण।

असत—*(वि०)* १ असत्य। मिथ्या। २ अधर्मी। अन्यायी। कायर। ४ बुरा। खराब। ५ सत्य हुआ। ६ सत्व हीन। ७ अशक्त। ८ अस्त। तिरोहित।

असत धान—*(न०)* १ हलकी किस्म का अनाज। २ नहीं खाने योग्य सड़ा गला अनाज। ३ अग्राह्य अनाज। ४ अधम की कमाई का दाना।

असताई—*(वि०)* १ कायर। डरपोक। बोकण। २ सत्वहीन। ३ शक्तिहीन। ४ झूठा।

असती—(वि०) १ कटुक। २ कायर। ३ दुराचारी। पापी। ४ विपर्मी। ५ अन्यायी। ६ झूठा। ७ असत्त। (ना०) १ पतिव्रता धर्म का त्याग करने वाली स्त्री। २ कुलटा। ३ अभिचारिणी। छिनाळ।

असत्य—(वि०) मिथ्या। झूठ। असत।

असथळ—(न०) साधुओं के रहने का स्थान। आश्रम। मठ।

असथान—(न०) स्थान। जगह।

असद—(वि०) १ असत्य। २ खराब। ३ खोटा।

असन—दे० असण।

असनान—(ना०) स्नान। नहान।

असनाळ—(ना०) १ घोड़े पर लगी जाने वाली बंदूक। २ घोड़े के खुर की नाल।

असप—(न०) अश्व। घोड़ा। अस्प।

असपत—दे० असपति।

असपताल—(ना०) १ औषधालय। दवाखाना। २ चिकित्सालय। हास्पिटल।

असपति—(न०) १ राजा। २ बादशाह। ३ अश्वपति। घोड़े का स्वामी।

असफळ—(वि०) असफल। विफल।

असबाब—(न०) सामान।

असभ्य—(वि०) अशिष्ट। गँवार।

असभ्यता—(ना०) अशिष्टता। गँवारपन।

असम—(वि०) १ जो एकसा न हो। २ ऊबड़ खाबड़। ३ असमान। असदृश। ४ अतुल्य।

असमझ—(ना०) १ मूर्खता। २ अज्ञानता। (वि०) मूर्ख। बेवकूफ।

असमत्थ—(वि०) १ असमर्थ। अशक्त। २ अयोग्य।

असमय—(न०) १ खराब समय। कुसमय। बेवक्त।

असमर—(ना०) तलवार।

असमर-झल—(वि०) खड्गधारी।

असमरथ—दे० असमर्थ।

असमर्थ—(वि०) १ सामर्थ्यहीन। अशक्त। २ अयोग्य।

असमंजस—(ना०) १ अनिश्चय की मानसिक स्थिति। २ दुविधा।

असमान—(न०) १ आसमान। २ असमानता।

असमाग—(न०) आसमान। आकाश। (वि०) असमान। अतुल्य।

असमाथ—दे० असमर्थ।

असमाध—(न०) १ उपद्रव। २ रोग। ३ पीड़ा। ४ मृत्यु।

असमाधणो—(क्रि०) मरना। अवसान होना।

असमाधियो—(वि०) १ मरणासन्न। २ रोगी। ३ दुखी। ४ मरा हुआ। (भू०क्रि०) मर गया।

असमान—(वि०) १ जो बराबर न हो। अतुल्य (न०) आकाश। आसमान।

असमाप्त—(वि०) जो पूरा न हुआ हो। अपूर्ण। अधूरो।

असमेध—दे० अश्वमेध।

असम्मत—(वि०) १ असहमत। २ जो राजी न हो।

असर—(ना०) १ प्रभाव। २ तासीर। गुण। ३ परिणाम। दे० असुर।

असरचो—(न०) १ भ्रम मूलक बात। २ विवाद। ३ गलत फहमी। भ्रम। ४ झगड़ा। टंटा। ५ कलह। ६ मनोमालिन्य। ७ अविश्वास।

असरण—दे० अशरण।

असरण-सरण—दे० अशरण शरण।

असरणो—(क्रि०) १ काम नहीं चलना। २ काम नहीं बनना। (वि०) शरण रहित। आश्रय रहित।

असरधा—दे० अश्रद्धा।

असराफ—(वि०) १ अशराफ। शरीफ। २ सज्जन।

असराळ—*(वि०)* १ भयंकर। २ जबर दस्त। *(क्रि०वि०)* निरंतर। लगातार। *(न०)* असुर समूह।

असल—*(वि०)* जो बनावटी न हो। सच्चा। खरा। २ शुद्ध। खालिस। ३ कुलीन। ४ खास। मुख्य। *(न०)* १ मूलधन। २ जड़। बुनियाद।

असळाई—*(ना०)* १ आलस्य। २ मजाक। ३ छेड़छाड़।

असळावणो—*(क्रि०)* आलस से अंग मोड़ना। २ छेड़छाड़ करना।

असलियत—*(ना०)* वास्तविकता।

असली—*दे०* असल।

असलील—*दे०* अश्लील।

असव—*दे०* अश्व।

असवादो—*(वि०)* १ बिना स्वाद का। स्वाद रहित। २ जिसे ह्वाद हुआ स्वाद का।

असवार—*(न०)* सवार।

असवारी—*(ना०)* १ सवारी। २ शोभा यात्रा। जुलूस। ३ आक्रमण।

असह—*(न०)* शत्रु। *(वि०)* न सहन योग्य। असह्य।

असहण—*(न०)* शत्रु।

असहयोग—*(न०)* सहयोग न देने का भाव। साथ न देना।

असहाय—*(वि०)* जिसका कोई सहायक न हो। निःसहाय।

असहा—*(सर्व०)* १ हमको। २ हमारा। ३ मुझको। *(अव्य०)* असहायजना का।

असही—*(न०)* शत्रु। *(वि०)* १ जो शुद्ध न हो। २ असह्य। ३ नहीं सहन करने वाला।

असहा—*(न०)* शत्रु। *(वि०)* असह्य।

असंक—*(वि०)* १ शंका रहित। भ्रम रहित। २ निर्भय। निडर।

असंख—*(वि०)* असंख्य। अगणित।

असंख प्रवाडे जैतवादी—*(वि०)* असंख्य युद्धों में विजय प्राप्त करने वाला। *(न०)* चित्तौड़ के राणा रायमल के अत्यन्त रणवाँकी और असंख्य युद्धों में (कभी नहीं हार कर) विजय प्राप्त करने वाले पुत्र पृथ्वीराज का विरुद।

असंख्यात—*(वि०)* अगणित।

असंग—*(वि०)* १ संग रहित। अकेला। २ निर्लिप्त ३ विरक्त।

असंगत—*(वि०)* १ असंबद्ध। २ अनुपयुक्त। ३ अनुचित।

असंगी—*(वि०)* विरक्त।

असंत—*(वि०)* असाधु। दुष्ट। दुर्जन।

असंतोष—*(न०)* १ संतोष का अभाव। २ अतृप्ति। ३ अप्रसन्नता।

असंध—*(वि०)* १ बिना संधि का। २ टूटा हुआ। ३ संधि रहित। बिना सांध का। ४ बिना टूटा हुआ। साबुत। *(न०)* रावण।

असंधा—*दे०* असंध। *दे०* असेंधा।

असंपा—*दे०* कुसंप।

असंपट—*(वि०)* १ नहीं प्राप्त होने वाला। २ बिना स्नान किया हुआ।

असंभ—*(वि०)* १ असंभव। २ वीर ३ अद्वितीय। ४ भयंकर। ५ बहुत *(न०)* १ स्वयंभू। अज मा। २ शिव ३ युद्ध।

असंभम—*दे०* असंभव।

असंभव—*(वि०)* जो संभव न हो। अन होना। नामुमकिन।

असंभ्रम—*(वि०)* १ बिना जल्दबाजी के बिना हलचल। शांत। बिना घबराहट २ बिना चक्कर खाए। साधा। *(न०)* १ अव्याकुलता। शांति। चैन। २ निडरता। ३ संशय रहित अवस्था। असंशय

असाइत—*(न०)* १४वीं शती का एक कवि जिसने हंसाउळी काव्य की रचना की थी।

असाढ—(न०) आषाढ मास।
असाता—दे० असायत।
असाध—(न०) असाधु। असज्जन। (वि०) १ असाध्य। २ जो साधा न जा सके।
असाधारण—(वि) जो साधारण न हो। असामान्य।
असाधु—(वि०) असज्जन। दुष्ट।
असाध्य—(वि०) १ ठीक न होने वाला (रोग)। २ न हो सकने वाला। ३ जो सिद्ध न हो सके। ४ कठिन। दुष्कर।
असामी—दे० आसामी।
असार—(न०) १ आसार। चाल चलन। रहन सहन। २ वातावरण। ३ ढंग। ४ लक्षण। ५ दीवार की चौड़ाई। (वि०) सार रहित। निःसार।
असालतन—(अव्य०) स्वयं। खुद। आप।
असाळियो—(न०) एक वनौषधि। अग्लिम। चंद्रसूर।
असावधान—(वि०) बेपरवाह। गाफिल।
असावधानी—(ना०) बेपरवाही।
असावरी—दे० आसावरी।
असायत—(ना०) अशांति। बेचैनी।
असि—(ना०) १ तलवार। २ घोड़ा।
असित—(वि०) १ काला। २ नीला।
असिद्ध—(वि०) १ जो सिद्ध न हो। अप्रामाणिक। २ अपक्व। कच्चा। ३ अपूर्ण।
असिधावक—(न०) १ सिकलीगर। २ तलवार से प्रहार करने वाला। ३ अश्वारोही। घुड़सवार।
असिधावण—दे० असिधावक।
असिमर—दे० असमर।
असिया—(न०ब०व०) घोड़े।
असियो—(न०) १ अस्सी वर्ष। २ घोड़ा।
असिवर—दे० असमर।
असी—(ना०) १ घोड़ी। अश्वी। २ अस्सी की संख्या। '८०' (वि०) १ सत्तर और दस। २ अस्सी। दस प्रकार का।
असीम—(वि०) १ सीमा रहित। २ अनंत। अपार।
असीस—(ना०) आशिष। (वि०) बिना सिर का।
असीसणो—(क्रि०) आशिष देना।
असीसरणो—दे० आसीसणो।
असु—(न०) घोड़ा।
असुख—(न०) १ असुखता। २ अप्रीति। ३ दुःख। कष्ट। ४ रोग।
असगुन—(न०) अपशकुन।
असुध—(वि०) सुधि रहित। अचेतन। (ना०) विस्मृति। दे० अशुद्ध।
असुभ—दे० अशुभ।
असुभकारियो—(न०)१ बनिया। वणिक। वाणियो। (वि०) अशुभकारी।
असुर—(न०) १ राक्षस। २ मुसलमान। ३ विधर्मी। ४ शत्रु। ५ बादशाह।
असुरगुरु—(न०) शुक्राचार्य।
असुराण—(न०ब०व०) १ असुर समूह। २ यवनसमूह। ३ शत्रुसमूह। ४ बादशाह।
असुरायण—दे० असुराण।
असुरारि—(न०) १ देवता। २ विष्णु।
असूझ—(वि०) बिना सूझ का। अबुध। बेअक्ल।
असूधो—(वि०) १ असरल। टेढ़ा। २ कपटी। ३ अशांत। ४ अपवित्र। ५ अशिष्ट।
असूस—(ना०) गाढ़ी नींद। (वि०) बेखबर।
असेत—(वि०) १ श्वेत वर्ण का नहीं। अश्वेत। २ काला।
असेर—दे० आसेर।
असेस—दे० अशेष।

अहम्-जाभम्—(न०) मद्य बिच्छू आदि विषैले जन्तु। टहमांजर।

अहन—(ना०) १ अत्यन्त जरता धवरा। नाराण दुर। अति। गत। २ कष्ट। दुःख। ३ पीड़ा।

अहळ—(अव्य०) व्यर्थ। योंही। फालतू।

अहनवें—(अव्य) १ इस बार। २ इस वर्ष। ऐलक। ऊण। ऐस।

अहनाण—दे० अन्नाण।

अहळी—दे० अहळ।

अहळै—(अव्य०) १ यों २ स्वाभाविक तौर से। ३ अतेभी। ४ अकारण। मुफ्त में।

अहळो—दे० अहळ।

अहनोर—(न०) १ इहलोक। २ अहिलोक। नागलोक। ३ पाताल।

अहव—दे० आन्व।

अहवात—(न०) पति का जीवितावस्था का स्त्री का मांगलिक उत्सव। सौभाग्य। अहिवात। सुहाग।

अहवानियो—दे० अहमानियो।

अहवान—(न०) हात। तत्ता त।

अहवाळणो—(क्रि०) १ उज्ज्वल करना। २ प्रकाशित करना। ३ पवित्र करना। ४ प्रतिष्ठा बढ़ाना।

अहवी—(वि०) ऐसी।

अहवो—(वि०) ऐसा।

अहसास—(न०) अहसान। उपकार।

अहसाण—दे० अहसाण।

अह—(सर्व०) मैं। अहम्। २ अहंकार। अभिमान।

अहंकार—(न०) १ अभिमान। २ अहम् का भाव।

अहंकारी—(वि०) अभिमानी।

अहड—(वि०) लगटा।

अहम—दे० आहस।

अहसणो—दे० आहसणो।

अहमी—दे० आहमी।

अहार—(न०) राजस्थान के मेवाड़ प्रान्त का एक प्राचीन नगर आघाट का प्राकृत नाम।

अहाड़ो—(न०) मेवाड़ के गहलोत वंश की शाखा।

अहाता—(न०) चारदीवारी। अहाता। बाड़ो।

अहार—(न०) आहार। भोजन।

अहि—(न०) १ सर्प। २ सूर्य।

अहिकार—(न०) १ अधिकार। २ अहंकार। ३ भार।

अहिछत्र—(न०) मारवाड़ के नागौर नगर का एक नाम।

अहिणी—(ना०) नागिन। सर्पिणी।

अहित—(न०) १ अपकार। २ बुराई। ३ बिगाड़। ४ शत्रु। अहितु।

अहिनाह—(न०) १ शेषनाग। २ महादेव।

अहिपुर—(न०) १ नागौर। २ नागपुर।

अहिफीण—(न०) अहिफेन। अफीम। अमल।

अहिमकर—(न०) सूर्य।

अहिमाण—(न०) अभिमान।

अहिराणी—(ना०) १ शेषनाग की पत्नी। २ सर्पिणी। ३ अहीरनी। ग्वालिन।

अहिरामण—(न०) रावण का साथी नागलोक का स्वामी।

अहिराव—(न०) शेषनाग।

अहिरिप—(न०) १ गरुड़। २ मोर।

अहिलोळ—(न०) समुद्र।

अहिवात—दे० अहवात।

अहिवारण—(न०) १ कालीनाग को नाथने वाले श्रीकृष्ण। २ नाग दमन। ३ सर्प के विष को उतारने का मंत्र।

अहिहाण—(न०) १ अभिधान। शब्दकोश। २ कथन।

अहीरणो—(न०) घर की गाय भैंस का दूध देना बंद हो जाने की स्थिति।

अहीश—*(न०)* १ शेषनाग। २ शेषावतार लक्ष्मण।

अहुटणो—दे० आहुटणो।

अहुठ—*(वि०)* तीन और आधा। साढ़े तीन। हूठो।

अहेडी—दे० आहेडी।

अहेस—दे० अहीश।

अहेसुर—*(न०)* अहीश्वर। शेषनाग।

अहोटणो—*(क्रि०)* १ उगाना। २ वजन का उठाना। ३ हटाना। ४ मारना।

अहोडो—*(न०)* १ गुरुजनों की बात का अशिष्ट व नकारात्मक उत्तर। २ अवज्ञापूर्ण उत्तर। ३ अशिष्ट कथन। ४ अशिष्ट संबोधन।

अहोनिस—*(क्रि०वि०)* १ अहर्निश। रात दिन। २ निरंतर। सदा।

अहोभाग—*(न०)* अहोभाग्य। सौभाग्य।

अंक—*(न०)* १ भाग्य। प्रारब्ध। २ उपकार। अहसान। ३ गोद। ४ नाटक का एक अंश। ५ गणना का चिह्न। ६ संख्या। आँक। ७ नौ की संख्या। ८ पत्र पत्रिकाओं का समयावधि में प्रकाशित नंबर। ९ धब्बा। दाग।

अंकगणित—*(ना०)* १ वह विद्या जिसमें संख्याओं के जोड़ने घटाने गुणा भाग इत्यादि के करने की रीति बतलाई जाती है। २ हिसाब लेखा करने की विद्या।

अंकडा—*(न०)* १ लोहे का एक प्रकार का काँटा। अकोडा। २ हुक। *(वि०)* बाँका। टेढ़ा।

अंकपळाई—*(ना०)* अंकों के माध्यम से लिखने या बातचीत करने की विद्या। अंकपल्लवी। अंकलिपि।

अंकमाळ—*(न०)* आलिंगन। गले लगाना।

अंकाई—*(ना०)* १ आँकने या तालने का काम। २ आँकने की मजदूरी।

अंकाणो—दे० अंकावणो।

अंकाळो—*(न०)* आक की लकड़ी का छिलका जिसकी रस्सी बटी जाती है।

अंकावणो—*(क्रि०)* १ तुलवाना। २ किसी वस्तु के परिमाण का अनुमान करवाना। ३ अंकित करवाना। चिह्न लगवाना। दगवाना।

अंकित—*(वि०)* १ चिह्नित। २ लिखित। ३ वर्णित। ४ अनुमानित।

अंकुर—*(न०)* १ अंखुआ। २ कोंपल। ३ भरते घाव में उगने वाले छोटे छोटे दाने।

अंकुश—दे० अंकुस।

अंकुस—*(न०)* १ प्रतिबंध। रोक। २ भय। डर। ३ हाथी को वश में रखने का लोहे का बना हुआ एक काँटा।

अंकुसमख—*(न०)* रथ।

अंके—*(अव्य०)* १ अंकों में। २ अंकों में इस प्रकार है। *(न०)* पत्रों में लिखी जाने वाली संख्या।

अंकोडो—*(न०)* १ लंबे बाँस में बँधा हुआ हँसिया। २ जंजीर की कड़ी। ३ हुक। अंकुडा।

अंग—*(न०)* १ शरीर। २ शरीर या वस्तु का कोई भाग। अवयव। ३ अंश। भाग। ४ स्वभाव। ५ पक्ष। *(सर्व०)* आप। स्वयम्।

अंग उधार—*(न०)* १ बिना एवजाना लिये दिया जाने वाला ऋण। हाथ उधार। २ बंधक रखे बिना लिया हुआ ऋण।

अंग खंभ—*(न०)* हाथी।

अंगज—*(न०)* १ पुत्र। बीकरो। २ केश। ३ पसीना। परसेवो। ४ जूं। ५ कामदेव।

अंगजा—*(ना०)* पुत्री। बीकरी।

अंगजाई—दे० अंगजा।

अगजात—दे० अगज ।
अगजाया—दे० अगजा ।
अग टूटणो—(मुहा०) शरीर मे दर्द होना । कळतर होणी ।
अगडाई—(ना०) अगो को एठाना (प्राय जम्हाई लेने के साथ) ।
अगडाणो—(क्रि०) अगडाई लेना । अगडाना ।
अगण—(ना०) १ अगना । स्त्री । २ आगन । ३ चौक ।
अगणा—(ना०) अगना । स्त्री ।
अग तोडणो—(मुहा०) खूब परिश्रम करना ।
अगत्राण—(न०) कवच ।
अगद—(न०) १ प्रसिद्ध वानर वाली के पुत्र का नाम । २ बाजूबद ।
अगदार—(वि०) १ अपने स्वभाव के विरुद्ध आचरण का सहन नही करने वाला । २ किसी के परामश का नही मानने वाला । ३ हठीला ४ एकगो । ५ नखरो वाला ।
अगना—(ना०) स्त्री ।
अगबळ—(न०) १ स्वबल । २ स्वावलबन । ३ स्वाभिमान । ४ घृत । घी ।
अग मरोडणो—(मुहा०) १ आलस खाना । २ अग को ऐंठाना ।
अग माडणो—(मुहा०) करवट बदलना ।
अगमाठ—(वि०) १ सुस्त । आलसी । २ मस्त । ३ अभिमानी । ४ बलाभिमानी । ५ बलिष्ठ ।
अगरखी—(ना०) पुरानी ढब का कसो से बाधा जाने वाला बाहो और धड म पहनने का एक वस्त्र ।
अगरखो—दे० अगरखा ।
अग-रगो—(वि०) १ हठी । जिद्दी । २ स्वेच्छाचारी । ३ एक स्वभाव का । एकगो ।
अगरळी—(ना०) १ मैथुन । सभोग । २ मौज । आनद ।
अगरस—(न०) १ वीय । २ सभोग । ३ रक्त । लोही ।
अगरग—(न०) सभोग । अगसग ।
अगराग—(न०) १ उबटन । २ महावर । ३ शरीर की सजावट । ४ शरीर के सजावट की सामग्री ।
अगरेज—(न०) इगलड का निवासी । अग्रेज ।
अगरेजी—(ना०) अगरेजो की भाषा । इगलड की भाषा । अग्रेजी ।
अगळ—(ना०) १ छेडछाड । २ मजाक । ३ ताना । चुटीली बात ।
अग लागणो—(मुहा०) १ जँचना । २ हृदय म बैठना । ३ चिपटना ।
अग लीलग—(न०) हस ।
अगवढी—(ना०) १ परिश्रम द्वारा दी जाने वाली पारस्परिक सहायता । २ शारीरिक परिश्रम ।
अग वारो—दे० अगवढी ।
अगसग—(न०) सभोग । अगरग ।
अगहीण—(वि०) बिना अग का । खडिताग ।
अगार—(न०) अगारा । अगारो ।
अगारा—(न०) १ अगारा । २ उपलों के अगारो म सेकी जाने वाली बाटी । बटक । रोटो । दडियो ।
अगारा-नाग- (न०) दाह सस्कार ।
अगारो—(न०) १ दहकता हुआ कोयला । अगारा । चिनगारी ।
अगिया—(ना०) १ चोली । कचुकी । काचळी । २ तीथकर की मूर्ति के गले व नीचे व समस्त अगो के अग म धारण कराई जाने वाली सोने या चादी का खोल । आंगी ।
अगी—(वि०) देहधारी । (न०) नाटक का प्रधान नायक । दे० अगिया सं २ ।

अंगीकार—(न०) स्वीकार। मंजूर।

अंगीठी—(ना०) आग जलाने का एक पात्र। घोरसी।

अंगीठो—(न०) विशेष प्रकार की एक अंगीठी। अंगेठो।

अंगुनी—(ना०) उंगली। आंगळी।

अंगूठी—(ना०) मुद्रिका। १ मुंदड़ी। बींटी। २ दरजी की अंगुली में पहनने की एक टोपी। अंगोरी। अंगुस्ताना।

अंगूठो—दे० अंगोठो।

अंगूर—(न०) द्राक्षा। हरी दाख। लीली दाख।

अंगै—(अव्य०) १ किसी अंग या अंश में। २ यथार्थ में। ३ नितान्त। बिलकुल।

अंगैई—(अव्य०) १ किसी अंग या अंश में भी। २ यथार्थ में भी। ३ बिल्कुल ही।

अंगैजणो—(क्रि०) १ स्वीकार करना। २ ग्रहण करना। ३ सहना।

अंगैठी—दे० अंगीठी।

अंगैठो—दे० अंगीठो।

अंगोअंग—(अव्य०) १ अंग प्रत्यंग। २ अंग प्रत्यंग में। सम्पूर्ण अंगों में। अंग अंग में। ३ अंग से अंग सटाकर। ४ दिमाग में। समझ में। ५ विचार में।

अंगोछो—(न०) १ शरीर पोंछने का मोटा कपड़ा। तौलिया। गमछो। २ स्नान। ३ उपवस्त्र।

अंगोठी—(ना०) १ स्त्रियों के पांव की अंगुली में पहनने का छल्ला। पोलरी। २ अंगूठी। ३ दरजी की अंगोरी। अंगुली त्राण। अंगुस्ताना।

अंगोठो—(न०) १ हाथ या पांव की सबसे मोटी व पहली अंगुली। २ स्त्रियों के पांव के अंगूठे का छल्ला। अंगूठो।

अंगोठा दिखाणो—(मुहा०) १ [illegible] देना। २ इनकार करना।

अंगोठो लगाणो—(मुहा०) हस्ताक्षर की जगह अंगूठे का चिह्न लगाना।

अंगोभर—(न०) पुत्र। बेटो।

अंगोभ्रम—(न०) १ पुत्र। बेटो। २ पौत्र। पोतो। पोतरो। ३ व्याज। (वि०) समान। सदृश।

अंगाळ—(ना०) १ स्नान। २ दूल्हे को स्नान कराते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

अंगाळिया—(न०) १ मर्दन मालिश तथा स्नान कराने वाला व्यक्ति। २ नाई। ३ स्नान करने का पानी का बड़ा पात्र। ४ स्नान करने के लिए बैठने का पाटा। ५ स्नानघर।

अंगोळी—(ना०) स्नान। सिनान।

अंग्रेज—दे० अंगरेज।

अंग्रेजी—दे० अंगरेजी।

अंघ्रि—(न०) पैर। चरण। पग।

अघोर—(ना०) १ योगी की अर्द्ध चेतन अवस्था। २ रुग्णावस्था की नींद।

अंचळ—दे० अंचल।

अंचल—(न०) १ ओढ़ने या साड़ी का आगे की ओर रहने वाला छोर। आंचल। पल्लो। अचळो।

अंचळा [illegible]—(न०) [illegible] और ओढ़नी का गठबंधन। [illegible] अचळो।

अंचळो—(न०) १ [illegible] २ [illegible]।

[illegible]

अंजळी—(ना०) हथेली का एक सम्पुट। अजलि। लप।

अजम—(न०) १ आत्मीय जनों के सुकृत्यों से होनेवाला गर्व। २ अपनी प्रतिष्ठा का गर्व। ३ स्वाभिमान। ४ गर्व। ५ प्रसन्नता।

अजसणो—(क्रि०) १ गर्व करना। २ प्रसन्न होना।

अजाम—(न०) १ परिणाम। नतीजो। फळ। २ अंत। समाप्ति।

अजीर—(न०) १ गूलर के समान एक फल। २ इस फल का वृक्ष।

अट—(न०) १ नोक। २ कलम की नोक। ३ निब। ४ अटी। टेंट। ५ भाग्य।

अटस—(ना०) वैर। शत्रुता। दुसमणी।

अट-सट—(वि०) १ विषयच्युत। २ क्रम-रहित। बेढंग। (न०) व्यर्थ की बात चीत। बकवाद। प्रलाप। (क्रि० वि०) विना सोचे विचारे। कुछ का कुछ।

अटाणो—दे० अटावणो।

अटावणो—(क्रि०) मालिक की मौजूदगी में उसकी आँख बचाकर उसकी किसी वस्तु को चुरा लेना।

अटी—(ना०) धोती की गिरह। टेंट। खुटी।

अड—(न०) १ अडकोश। २ अण्डा।

अडकोश—(न०) फोता। आड। पोत वाळिया।

अडज—(वि०) अडे से उत्पन्न (पक्षी आदि)।

अडजा—(ना०) कस्तूरी।

अडवड—(वि०) १ असम्बद्ध। बे सिर पर का। २ अनुचित।

अडाकार—(वि०) अडे के समान आकार वाला।

अडी—(ना०) एक प्रकार का मोटा रेशमी कपडा। अरडी।

अडा—(न०) अडा। ईंडो।

अडोळो—(वि०) आभूषण रहित।

अढो—(न०) दिन का पिछला पहर। ढलता दिन।

अत करण—(न०) १ हृदय। २ मन। ३ विवेक।

अत पुर—(न०) रनिवास। जनाना घर।

अत—(न०) १ मृत्यु। अवसान। २ समाप्ति। आखीर। ३ छोर। ४ परिणाम। (वि०) निकृष्ट।

अतक—(न०) १ यमराज। २ काल। मृत्यु। ३ शत्रु। ४ नष्ट करने वाला।

अतकरण—दे० अत करण।

अतकराय—(न०) यमराज। जमराणो।

अतकाळ—(न०) मृत्यु काल। मौत।

अतक्रिया—(ना०) मरणोपरात किया जाने वाला सस्कार। अत्येष्टिक्रिया।

अतजथा—(ना०) डिंगल गीत रचना का एक नियम।

अत विगडणो—(मुहा०) मृत्यु समय दुरवस्था होना। मौत बिगडना।

अतमेळ—(न०) राजस्थानी दोह (दूहे) का एक भेद। चडो दूहो।

अतर—(न०) १ भेद। फर्क। २ दूरी। फासला। ३ अत करण। हृदय। ४ अतर। इत्र। ५ समय। काल। (क्रि० वि०) भीतर। अन्दर।

अतरगति—(ना०) मन का भाव।

अतरछाल—(ना०) पेड पौधो के तने, शाखा और जड के ऊपर की छाल के नीचे की पतली छाल।

अतरजामी—(वि०) मन की बात जानने वाला। अतर्यामी। (न०) ईश्वर।

अतरदशा—(ना०) १ मन की अवस्था। २ बडी दशा (गज दशा) के अदर चलने वाली छोटी दशा। (ज्योतिष)।

अतरदान—(ना०) इत्रदान। अतरदानी।

अतरदानी—दे० अतरदान।
अतरधान—(न०) अतर्धान। गायब।
अतर पडणो—(मुहा०) १ भेद पडना। २ मतभेद होना। ३ दूरी पडना।
अतरसेवो—दे० अतरवो।
अतरात्मा—(न०) अन्तर स्थित आत्मा। २ जीवात्मा। ३ अत करण ४ ईश्वर।
अतराय—(ना०) १ भेद। अलगाव। २ वियोग। ३ विघ्न। बाधा।
अतराळ—(न०) १ अनर। बीच। फर्क। २ अदर। ३ मध्य। ४ कोना। ५ आकाश। ६ अत्रावली। आँतें। अतरावळ।
अनरावळ—(ना०) अत्रावली। आँतें।
अतरिक्ष—दे० अतरिख।
अतरिख—(न०) अतरिक्ष। आकाश। आसो। २ स्वर्ग। ३ अध्यतर। ४ ऊचा स्थान। ५ ऊचाई।
अतरे—(क्रि०वि०) १ अनर रख कर। २ इस बीच। ३ बीच मे। ४ अदर मे।
अनरेवो—(न०) घाघरा, लहगा या जामा इत्यादि की नीचाई कम करने के लिये उसके नीचे के भाग को अन्दर की ओर मोड कर समस्त घेरे मे की जाने वाली एक सिलाई। अतरसेवो। आनरेवो।
अतरो—(न०) १ ध्रुपद के बाद आने वाली प्रत्येक टेक (सगीत)। २ अतर। फर्क।
अत लेणो—(मुहा०) खूब सताना।
अत वेळा—(ना०) अतकाल।
अतस—(न०) १ रक्त सबधी। स्वजन। कुटुम्बी। २ स्नेह। प्रीति। ३ अत करण।
अत समय—(न०) मृत्यु समय।
अत सुधरणो—(मुहा०) १ सुख से मरना। २ मृत्यु सुधरना।
अतहपुर—(न०) रनिवास। अत पुर।
अताळ—(ना०) उतावल। जल्दी।
अतावळ—(ना०) १ उतावल। जल्दी। २ अत्रावलि।
अतिम—(वि०) आखिरी।
अतिम यात्रा—(ना०) मृत्यु।
अतेउर—दे० अतवर।
अतेवर—(ना०) १ पत्नी। स्त्री। २ अत पुर।
अत्यज—(न०) शूद्र।
अत्यानुप्रास—(न०) एक प्रकार का अनुप्रास अलकार (काव्य)।
अत्येष्टि—(ना०) मृतक का दाह सस्कार आदि।
अत्र—(ना०) आँत। अनरावळ।
अत्राळ—(ना०ब०व०) आँतें। अतरावळ।
अत्रावळ—(ना०ब०व०) आँतें। अत्रावलि।
अदर—(क्रि०वि०) भीतर। माँहे।
अदरूणी—(वि०) भीतर का। भीतरी। अदर की। माँयली।
अदाज—(न०) अनुमान। अटकळ।
अदाजन—(क्रि०वि०) अदाज से। अनुमान से। अटकळ सू।
अदाजो—दे० अदाज।
अदाता—(न०) अन्नदाता।
अदेसा—(न०) १ अदेशा। शका। खटको। २ खतरा। भय। चिंता। फिक्र।
अदोह—(न०) १ चिल्लाहट। रोना धोना। २ वमनस्य। शत्रुता। ३ असतोष। अनय। ४ वृथा भागदौड। वृथा प्रयत्न।
अध—(वि०) १ अधा। २ अविवेकी। असावधान।
अधकार—(न०) अधेरा।
अधकूप—(न०) १ सूखा हुआ कुआ। २ एक नरक। ३ घोर अधेरा।
अध विश्वास—(न०) विवेकहीन आस्था। खोटी धारणा।
अध श्रद्धा—(ना०) विवेकहीन श्रद्धा। खोटी निष्ठा।

अंधाधुंध—(न०) १ घोर अंधकार। २ अन्याय। ३ अव्यवस्था। धींगा धींगी। (वि०) १ बेहिसाब। अत्यधिक। २ अंधकार से परिपूर्ण। अंधकार मय। (क्रि० वि०) १ बिना सोचे समझे। अविचारपूर्वक। २ धींगामस्ती से।

अंधापो—(न०) अंधापन। अंधावस्था।

अंधार—(न०) अंधकार।

अंधारियोपख—(न०) कृष्णपक्ष। वदि पख।

अंधारी—(ना०) १ अंधेरा। २ आंधी। ३ कृष्णपक्ष की अंधेरी रात। ४ नशा या चक्कर के कारण आँखों से नहीं सूझने की स्थिति। ५ हाथी के कुंभस्थल पर रखा जाने वाला आवरण।

अंधारो—(न०) १ अंधेरा। २ अज्ञान। ३ अत्यंत कष्टदायी समय।

अंधारो पख—(न०) कृष्ण पक्ष। वदि पक्ष।

अंधियारो—(न०) अंधेरा। अंधारो।

अंधेर—(न०) १ अन्याय। २ कुप्रबंध। ३ अव्यवस्था। ४ अराजकता।

अंधेर खातो—दे० अंधेर।

अंधेर नगरी—(ना०) १ वह नगरी जहां कुप्रबंध और अन्याय का बोलबाला हो। ऐसी जगह या स्थिति जहाँ नियम, न्याय, व्यवस्था आदि कुछ न हो। २ मूर्खों की नगरी।

अंधेरो—(न०) १ अज्ञान। २ अंधेरा। अंधारो। ३ अत्यंत विपत्तिकाल।

अंधो—(वि०) नेत्रहीन। अंधा। आंधो।

अंधोटा—(न०) वह पट्टी या ढक्कन जो घोड़े बैल आदि की आंखों पर बांधा जाता है।

अंब—(ना०) १ अम्बा देवी। दुर्गा। २ पार्वती। ३ माता। ४ शीतलादेवी। (न०) ५ आम्रफल। आम। ६ आम का वृक्ष। ७ आकाश। ८ जल। ९ वस्त्र।

अंबक—(ना०) आंख।

अंबनयर—(न०) जयपुर के पास अंबनगर नाम का एक ऐतिहासिक प्राचीन नगर। आधुनिक आमेर।

अंब पुरण—(न०) शीतला का वाहन। अंब प्रवहण। गदहा। गधो।

अंबर—(न०) १ आकाश। २ वस्त्र। ३ बादल। ४ एक विशिष्ट मछली की आंतों से निकलने वाला एक सुगंधित पौष्टिक द्रव्य।

अंबराळ—(न०) १ आकाश। २ मेघ पंक्ति।

अंबरीष—(न०) विष्णु भगवान के अनन्य भक्त एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

अंब वाहण—दे० अंब पुरण।

अंबहर—(न०) १ आकाश। २ बादल।

अंबा—(ना०) १ दुर्गा। २ पार्वती। ३ माता।

अंबाजी—(ना०) १ आबू पर्वत का एक तीर्थ स्थान। अर्बुदा देवी। २ आबू के निकट ईडर और दांता राज्यों की प्रसिद्ध कुलदेवी तथा धाम (नगर)।

अंबाडी—(ना०) हाथी का हौदा। अमारी।

अंबापति—(न०) महादेव। शिव।

अंबा पोहण—दे० अंब पुरण।

अंबार—(न०) ढेर। राशि। ढिगलो।

अंबारत—(ना०) इमारत। मकान।

अंबु—(न०) पानी।

अंबुआळ—(न०) १ प्रसिद्ध धर्मवीर पाबूजी राठौड़ का विरद। कांतिमान पुरुष पाबूजी। २ कांतिमान पुरुष।

अंबुआ—(वि०) गहरे हरे रंग का। आम के पत्ते के समान हरे रंग वाला।

अंबुध—(न०) अंबुधि। समुद्र।

अंबुवो—दे० अंबुओ।

अंबोडो—(न०) स्त्री का वेणी गुच्छ। जूड़ो।

अबाळ—(ना०) १ असतुर। २ आम की सटाई।
अभ—(न०) १ तन। २ जाल।
अभोज—(न०) कमल।
अभोरुह—(न०) कमल।
अभोरु—(न०) कमल।
अँवळाई—(ना०) १ चक्कर। वक्रमार्ग। लंबा मार्ग। २ कुटिलता। ३ प्रतिकूलता।
अँवळी—(वि०) १ टेढ़ी। २ उलटा। ३ प्रतिकूल।
अँवळीमारण—दे० अमनीमारण।
अँवळो—(वि०) १ टेढ़ा। २ उलटा। ३ प्रतिकूल। (न०) दुख।
अँवळो आवणा—(मुहा०) प्रसव समय भ्रूण का आड़ा हो जाना।
अँवळा करणा—(मुहा०) १ उलटा करना। २ विरुद्धाचरण करना।
अँवळा होणा—(मुहा०) विरुद्ध होना।
अँवार—(न०) बारी हुई भरवारी की कटोती टहनियों का ढेर। दे० अवार।
अश—(न०) १ भाग। हिस्सा। २ शक्ति। पराक्रम। ३ पुत्र। ४ वशज। ५ वीर्य। ६ कला।
अशावतार—(न०) ईश्वर का आंशिक गुण वाला अवतार।
अस—दे० अश।
असधारी—(वि०) १ दैविक शक्तिवाला। २ अवतारी। ३ वशज।
असी—(न०) १ पुत्र। २ वशज।
असुक—(न०) १ एक रेशमी वस्त्र। २ महीन वस्त्र।

आ

आ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का दूसरा स्वर वर्ण। नागरी लिपि में अ का दीर्घ स्वर।
आ—(अव्य०) तक पर्यन्त आदि से अंत तक सर्वत्र व्यापक, कुछ थोड़ा सीमा का अतिक्रमण इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त। तथा अतिरिक्त लगभग वस्तुत के अर्थों में प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग। (ना०) १ माता। माँ। २ लक्ष्मी। (न०) ३ महादेव। ४ ब्रह्मा। (सर्व०ना०) यह।
आउठाण—(न०) १ चिह्न। २ स्थान। ३ रगड़ से हो गई हुई हथेली आदि की निर्जीव मोटी चमड़ी।
आइडा—(न०) वर्णमाला के 'अ' वर्ण का नाम।
आइणो—दे० आईणा।
आइणा—दे० आइणो।
आइत—(न०) कर। महसूल। चुंगी। (वि०) १ शरणागत। २ आया हुआ। आयोड़ो।
आइती—(ना०) महाजनी पाठशाला में पढ़ाया जाने वाला व्याकरण के पाठ का एक अपभ्रंश रूप।
आइना—(न०) आईना। दर्पण।
आइस—(ना०) १ आदेश। आज्ञा। (न०) २ योगी। ३ संन्यासी। (भ०क्रि०) आऊंगा।
आइंदा—(ना०) भविष्यकाल। (क्रि०वि०) भविष्य में। आगे। (वि०) आने वाला (समय)।
आई—(ना०) १ दुर्गा देवी। २ माता। माँ। ३ करणी देवी। ४ धाय। उप

माता। ४ बिलाड़ा (मारवाड़) की सीरवी जाति की कुलदेवी।
आईणी—दे० आंईणी।
आईसा—दे० आईणा।
आईपथ—(न०) बिलाड़ा की आई द्वारा चलाया हुआ पथ।
आईपथी—(न०) आईपथ का अनुयायी।
आईवाळो—दे० माहीवाळो।
आउखाग—(न०) मरे हुए पशु का पूरा चमड़ा। आवखाण।
आउखी—(वि०ना०) पूरी। समस्त।
आउखो—(वि०) समस्त। पूरा। (न०) १ जीवन। २ आयुष। उम्र।
आउगाळ—(न०) १ वर्षा ऋतु का आगमन। २ वर्षागम के चिह्न। ३ वर्षागम के बादल। ४ अच्छा समय। सुकाल। ५ सस्तापन। सस्तीवाडो।
आउगाळो—दे० आउगाळ।
आउठ—(वि०) १ साढे तीन। हुठ। हूठो। २ गाठ।
आउदा—दे० आसूधा।
आउद—(न०) आयुध। शस्त्रास्त्र।
आउधो—दे० आसूधो।
आऊं छूं—(क्रि०) आता हूं। आवूं हूं।
आऊगा—(भ०क्रि०) आऊंगा। आसूं।
आऊली—(भ०क्रि०) आऊंगी। आसूं।
आक—दे० आकडा।
आकडा—(न०) अर्क। आक का पौधा।
आकर—(ना०) १ खान। २ खजाना। भंडार। ३ भेद। रहस्य। ४ पाताल।
आकरखण—(ना०) १ आकर्षण। खिंचाव। २ अपनी ओर खींचने की शक्ति या क्रिया। ३ मोह।
आकरखणो—(क्रि०) १ आकर्षित करना। खींचना। २ मोहित करना।
आकरसण—दे० आकरखण।
आकरसणो—दे० आकरखणो।
आकरी—(वि०) दे० आकरो।
आकरी रत—(ना०) १ ग्रीष्म ऋतु। ऊनाळो। २ दुष्काल। दुकाळ।
आकरो—(वि०) १ कड़ा। सख्त। २ कठिन। मुश्किल। ३ कुरकुरा। कराग। ४ महंगा। ५ तगडा। ६ उग्र। ७ तेज। ८ खरा।
आकळ—(वि०) आकुल। व्याकुल।
आकळ-बाकळ—(वि०) आकुल-व्याकुल। घबराया हुआ।
आकळी—(ना०) पानी के बहते रहने से नदी, नाले आदि में पड़ने वाला खड्डा।
आकळो—(वि०) आकुल। अधीर। उतावळो।
आकाय—(न०) १ शक्ति। बल। २ साहस। हिम्मत। ३ शौर्य। वीरता। ४ बलवान। जबरदस्त।
आकार—(न०) १ आकृति। स्वरूप। २ 'आ' अक्षर। ३ पाताल। ४ शरीर।
आकारणो—(क्रि०) आकार बनाना। रेखाचित्र बनाना।
आकारांत—(वि०) अंत में आ वाला (शब्द)।
आकारीठ—(न०) १ संग्राम। युद्ध। २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि। ३ प्रहारों पर प्रहार। ४ घमासान युद्ध। ५ संहार। (वि०) १ जबरदस्त। बलवान। २ भीषण। भयंकर। ३ क्रोधी। (क्रि०वि०) १ अत्यधिक तीव्र गति से। २ खूब जोर से।
आकारीठो—(न०) घमासान युद्ध। घोर संग्राम।
आकास—(न०) आकाश। आसमान। आभो।
आकास गंगा—(ना०) अत्यंत छोटे छोटे तारों का विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर दक्षिण में फैला हुआ दिखाई देता है।

आकासदीवो—(न०) मकान या ऊंचे पर गड़े किये गये बांस के सिर पर रखा हुआ प्रकाश।

आकासवाणी—(ना०) १ देव वाणी। २ रेडियो भाषण। ३ रेडियो।

आकासवेल—(ना०) अमरबेल।

आकासी—(ना०) पत्र आदि में ऊपर के लिये खाली छोड़ी हुई जगह।

आकासी विरत—(ना०) दे० आकासा विरत।

आकिंचन—(वि०) परवश। असमर्थ।

आकीन—(न०) १ यकीन। भरोसा। २ श्रद्धा। आस्था।

आकीनदार—(वि०) भरोसापात्र।

आकीन वाळा—(वि०) भरोसापात्र।

आकुळ—(वि०) १ आकुल। व्याकुल। २ व्यग्र। ३ विह्वल।

आकुळणो—(क्रि०) व्याकुल होना। घबराहट होना। घबराना।

आकुळता—(ना०) घबराहट। आकुलता। व्याकुलता।

आकूत—(ना०) १ करामात। चमत्कार। २ बुद्धि। ३ माणिक। पद्मराग। याकूत रत्न।

आकूती—(ना०) घी और पानी मिली हुई मग की बुकनी।

आकृति—(ना०) १ आकार। बनावट। २ मूर्ति। ३ रूप। ४ मुख का भाव।

आकती—दे० आकृति।

आक्रम—(न०) पराक्रम। शूरता।

आक्रमण—(न०) १ हमला। चढ़ाई। २ प्रहार। ३ आक्षेप।

आक्रोश—(न०) श्रापपूर्वक कोसना।

आक्षेप—(न०) १ दोष लगाना। २ निन्दा करना। ३ ताना। ४ फेंकना।

आखडणो—(क्रि०) १ ठोकर खाना। २ लडना। झगडना।

आखत—(ना०) १ अक्षत। अन्न। २ अक्षता द्वारा लिया हुआ शकुन। मतौता।

आखतार—(न०) सूअर। सूकर।

आखतणो—(क्रि०) सहना। सहन करना।

आखती पाखती—दे० आसा ती पासा ती।

आखता—दे० आखतो।

आखर—(न०) १ अक्षर। वर्ण। २ प्रतिज्ञा। ३ हस्ताक्षर। हस्तखत। (क्रि०वि०) आखिर। अंत में।

आखर मठ—दे० अक्षर मठ।

आखरी—(वि०) अंतिम। पिछला।

आखरो—(ना०) खान के पास का वह स्थान जहां पत्थर तोड़कर इकट्ठे किये जाते हैं और बाद में इस में से बाहर ले जाये जाते हैं।

आखतो—(न०) १ बिना बधिया किया हुआ जवान बैल। २ सांड।

आखंडो—(न०) दंड। (वि०) सब। समस्त। सारा।

आखड़ो—(ना०) १ डंडाळी। (न०) २ दंड।

आखा—(न०ब०व०) १ बिना टूटे चावल। अक्षत (देव पूजार्थ)। २ अनाज जिन्हें अक्षत के तौर काम में लाया जाता है। ३ भिक्षुक को (अंजलि में भर कर) दिया जाने वाला अनाज।

आखाडमल—(वि०) १ बलवान। वीर। २ युद्ध वीर। ३ मल्ल।

आखाडसिध—(वि०) १ युद्ध कुशल। २ युद्ध में पीछे नहीं हटने वाला।

आखाडो—दे० अखाड़ो।

आखाण—दे० आख्यान।

आखातीज—(ना०) अक्षय तृतीया। वैशाख शुक्ल ३ और उस दिन का पर्व। अखतीज।

आखानीज—दे० आखातीज।

आखाबीज—(ना०) अक्षय तृतीया रा पहला दिन। अक्षय द्वितीया। अर्खबीज।

आखारी—(ना०) १ कुएँ से सिंचाई करते समय बना की प्रमुख समय के बाद की जाने वाली उद्दली। २ जारी। पारी। (वि०) १ विकट। कठिन। २ दुगम। ३ भीषण। भयंकर।

आखिर—(क्रि०वि०) अंत में। अंततोगत्वा। (वि०) अंतिम। (न०) अंत।

आखिरकार—(क्रि०वि०) अंत में।

आखी—(वि०ना०) १ अखंड। २ पूर्ण। पूरी। ३ समस्त। सब।

आखीर—दे० आखिर।

आखू—(न०) चूहा। ऊंदरो। २ चूहा। ३ चोर। ४ सूअर।

आखेट—(ना०) मृगया। शिकार।

आखेटक—(न०) शिकारी।

आखेटी—(न०) शिकारी।

आखेप—दे० आक्षेप।

आखो—(वि०) १ अखंड। २ पूरा। पूर्ण। ३ समस्त। ४ कसी नहीं किया हुआ। बधिया नहीं किया हुआ (बैल घोड़ा आदि)।

आख्यात—(वि०) १ विख्यात। प्रसिद्ध। २ आश्चर्यजनक। अखियात।

आख्यान—(न०) १ वर्णन। २ कथा। कहानी।

आग—(ना०) अग्नि। बासदे। २ ताप। जलन। ३ क्रोध। ४ कामाग्नि। ५ डाह। ईर्ष्या।

आगड—(ना०) चूल्हे के आगे का पाला बनाकर घरा हुआ भाग जिसमें चूल्हे का राख इकट्ठी होता है। वेकली। वेउडो।

आगडदी—(क्रि०वि०) आगे।

आगडा—(न०) १ किसी वस्तु की गाँठ या पव वाला भाग। २ माप का निशान। ३ किसी वस्तु को बारबार रगड़ से हो जाने वाला निशान। ४ चिह्न। निशान। ५ अनुमान।

आगण—(न०) अगहन। मार्गशीर्ष मास।

आगत—(वि०) १ आया हुआ। २ उपस्थित।

आगतरी—(ना०) १ वह बाआई जो ठीक समय पर या कुछ पहले की गई हो। २ पहली वर्षा में की गई बुवाई। ३ खेती जो पहली वर्षा से तैयार हो रही हो।

आगतरो—(न०) उचित समय पर या पहली वर्षा के होते ही हाथ में लिया हुआ खेती का काम।

आगत-स्वागत—दे० आगता स्वागता।

आगता-स्वागता—(ना०) १ आगत स्वागत। आवभगत। खातिरी। २ अतिथि का आदर सत्कार।

आगती पागती—(क्रि०वि०) १ आस पास। २ इधर उधर। अडं गडं।

आगतो—(वि०) १ क्रोधित। २ उतावला। ३ नाराज। ४ दुखी। बेचैन।

आगना—दे० आग्ना।

आगबध—(न०) घोडे का जीन का आगे का बधन।

आगबोट—(न०) आग का शक्ति से चलने वाला जहाज।

आगम—(न०) १ भविष्यकाल। २ भविष्य की जानकारी। ३ होने वाली घटनाओं की जानकारी। ४ भवितव्यता। होन हार। ५ आगम। परब्रह्म। ६ आय। आमदनी। ७ आगमन। ८ प्रारंभ। शुरू। ९ आदि। १० प्रथम। ११ उत्पत्ति। १२ शब्द साधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय (व्या०) १३ वेद। १४ जैन शास्त्र।

आगमच—(वि०) पहले। (अव्य०) पहले से। आगूंच।

आगम ज्ञानी—(न०) १ वेदवेत्ता। वेदज्ञ। २ शास्त्रज्ञाता। ३ भविष्यवेत्ता।

आगमण—दे० आगमन।

आगम दिस्टी—दे० आगम दृष्टि।

आगम दृष्टि—(ना०) दूरदर्शिता।

आगमन—(न०) १ आवन। आना। आमद। २ प्राप्ति।

आगम-निगम—(न०) १ वेदशास्त्र। २ शास्त्र।

आगमनी—(ना०) सेना का आगे का भाग। हरावल।

आगम भाखी—(वि०) भविष्यवक्ता।

आगमवक्ता—(वि०) भविष्यवक्ता।

आगम वाणी—(ना०) भविष्य वाणी।

आगमम—दे० आगमच।

आगमसोचू—(वि०) दूरदर्शी।

आगर—(न०) १ खान। २ खजाना। ३ घर। ४ ढेर। समूह। ५ नमक जमाने का क्यारा। ६ नमक की खान। ७ छप्पर। (वि०) १ बहुत अधिक। २ श्रेष्ठ। उत्तम। ३ चतुर। दक्ष।

आगराई—(वि०) आगरे का (अफीम)।

आगरो—(न०) भारत का एक प्रसिद्ध शहर। आगरा। (वि०) १ अत्यधिक। २ राशि। ढेर।

आगळ—(ना०) १ अगला। याडा। भोगळ। २ सिटकनी। ३ रोक। बाधा। (वि०) १ रक्षक। २ बाधक। (क्रि०वि०) सामने। आगे।

आगळ कूंची—(ना०) बाहर से भीतर की अगला को खोलने का एक उपकरण। २ उपाय। ३ जानकारी। ४ भेद। रहस्य।

आगलडा—(वि०) १ आगे वाला। २ आगे का।

आगळ सीगो—(वि०) वह जिसके सींग आगे की ओर झुके बढ़े हों (बैल)।

आगळिगार—(न०) १ सेवक। चाकर। २ मुखिया। अग्रणी। (वि०) १ आगे रहने वाला। (क्रि० वि०) आगे।

आगळी—(ना०) अगला। याडा। भागळ।

आगली—(वि०) १ बढ़कर। विशेष। २ अग्रणी। (क्रि० वि०) अगाड़ी।

आगली-पाछली—(वि०) १ आगे पीछे की। पुरानी या गई गुजरी (बात)।

आगलो—(वि०) १ पूर्व का। पहले का। २ सामने का। आगे का। ३ सामने वाले पक्ष का। ४ आगामी। आने वाला। ५ अग्रणी।

आगळो—(न०) बड़ी अगला। याडो। भोगळ। (वि०) १ अग्रणी। २ बढ़कर।

आगलो-पाछलो—(वि०) १ आगे और पीछे का। २ पहले पीछे का। ३ नया पुराना।

आगवो—(वि०) १ कुल। समस्त। २ अगुआ। मुखिया।

आग-अजाग—(न०) वज्राग्नि। बिजली की आग। २ जठराग्नि।

आगतुक—(वि०) १ आया हुआ। २ आने वाला। (न०) अतिथि। मेहमान।

आगध—(न०) अश्वगन्धा। आसगंध।

आगाज—(ना०) आग्राज। गर्जन। आगजन। २ रोष। क्रोध।

आगा-पीछा—(न०) अगला और पिछला भाग। २ कुरते का अगला और पीछे का भाग। ३ दुविधा। ४ परिणाम। (वि०) अगला पिछला।

आगामी—(वि०) १ आगे का। २ आने वाला। ३ भविष्य में आने या होने वाला।

आगार—(न०) १ घर। २ स्थान। ३ कोठार। ४ खजानो। कोष।

आगास—(न०) आकाश। आभो।

आगासी—(ना०) १ घर क ऊपर क कमर क आग का छारा। २ चन्दवा। चांदनी।
आगाहट—(न०) १ राज्य की ओर से दव स्थान को अपण की हुई भूमि। अग्रहार। २ चारण भाट ब्राह्मण, साधु आदि का दान म दी हुई भूमि या गांव। ३ दान।
आगिया—(न०) १ जुगनूं। खद्योत। २ चिनगारी। ३ पतंगा। फतिंगा। ४ ज्वार की फसल का एक रोग। ५ पशुओं का एक रोग।
आगी—(ना०) आग। अग्नि। (क्रि०वि०) १ आगे। २ दूर।
आगीन—(क्रि०वि०) १ आग को। २ सामने। आगे।
आगी-पाछी—(ना०) १ इधर का उधर और उधर की इधर। २ परस्पर भिड़ाने कराने की बात। ३ पीठ पीछे की निन्दा। चुगली। ४ बुराई। निन्दा।
आगीवाण—(वि०) अगुआ। मुखिया।
आगू—(वि०) १ अगुआ। पथ प्रदर्शक। (वि०) अगला। (क्रि०वि०) १ पहले। २ पहले से। ३ भविष्य म।
आगूक्थ—(ना०) भविष्य वाणी।
आगूने—(क्रि०वि०) आगे।
आगूलग—दे० आग लगै।
आगू च—(क्रि० वि०) पहले। पहले से। पेशगी। अग्रिम।
आगवाणी—दे० आगावाण।
आगै—(क्रि० वि०) १ सामने। सम्मुख। २ अगाडी। ३ इसके बाद। और। ४ दूर। ५ पहले। बीते समय मे।
आग पाछै—(क्रि० वि०) १ आगे और पाछे। २ इधर उधर। ३ एक के बाद दूसरा। ४ एक एक करके।
आग-पीछै—दे० आगै पाछै।
आग-लग—दे० आगै लगै।
आगै-नगै—(क्रि० वि०) १ लगातार। निरंतर। २ क्रम से। ३ आदि से। शुरू से। (वि०) क्रमानुसार। सिलसिलेवार। (न०) सिलसिला। क्रम।
आगै-लारै—(अव्य०) १ परिवार या रिश्ते म। २ पहले या बाद म। ३ कभी आगे, कभी पीछे। स० आगे पाछे।
आगवाण—दे० आगीवाण।
आगोलग—(न०) अगला जन्म। मरने के बाद होने वाला जन्म।
आगो पाछो—(न०) इधर उधर करने की क्रिया या भाव। (क्रि० वि०) इधर उधर।
आगा पीछो—दे० आगा-पीछा।
आगार—(ना०) तालाब के पास की वह जमीन जिसको वर्षा का पानी उस जलाशय म आता है।
आगालग—दे० आगै लग।
आग्ना—(ना०) आज्ञा। हुक्म।
आग्नेय—(वि०) १ अग्नि सम्बन्धी। २ अग्नि का।
आग्नेय दिशा—(ना०) अग्निकोण।
आग्नेयास्त्र—(न०) आग फेंकने या उगलने वाला अस्त्र।
आग्या—(ना०) आज्ञा। हुक्म।
आग्याकारी—दे० आज्ञाकारी।
आग्यापत्र—दे० आज्ञापत्र।
आग्यापाळक—दे० आज्ञापालक।
आग्यापाळण—दे० आज्ञापालन।
आग्या भंग—दे० आज्ञा भंग।
आग्रह—(न०) १ अनुरोध। २ हठ। जिद। ३ बल। जोर। ४ तत्परता। मुस्तैदी।
आग्राज—(ना०) १ गर्जन। दहाड़। २ गंभीर ध्वनि।

आग्राजणो—(क्रि०)१ गरजना। दहाड़ना। २ गंभीर ध्वनि करना।

आघ—(न०) १ आदर। मान। २ स्वागत सत्कार। ३ अघ। पाप।

आघड़ी—(क्रि० वि०) दूर। अलग।

आघड़ो—(क्रि० वि०) दूर। अलग।

आघण—(न०) मार्गशीर्ष मास। अगहन। मार्गशीर्ष।

आघरणी—(ना०) मार्गशीर्ष समान। दे० अघरणी।

आघाट—दे० आगाट।

आघात—(न०) १ चोट। प्रहार। २ आक्रमण। (वि०) युद्ध। जार का।

आघी—(क्रि०वि०) दूर। आगे।

आघेरी—(क्रि०वि०) दूर। आघा।

आघेरो—(क्रि०वि०) दूर। आघो।

आघा—(क्रि०वि०) दूर। परन्तु पर। आघरो।

आघा कर—दे० आघा धकेल।

आघा-रहियो—दे० आघो धकन।

आघो अवेरन—(वि०) बिना निष्ठा के जमा-खर्च किया हुआ। लगन और इच्छा के अभाव में किया हुआ (काम)।

आघो-पाछो—(क्रि०वि०) १ आगे पीछे। २ सब प्रकार से।

आघ्राण—(ना०) १ सुगंध। २ तृप्ति।

आघ्राण-गुंज—(न०) भ्रमर। भौंरा।

आच—(न०) १ हाथ। २ समुद्र।

आचगळो—दे० आचागळो।

आचज—(न०) क्षत्री।

आच प्रभव—(न०) क्षत्री।

आचमण—दे० आचमन।

आचमणो—दे० आचमणो।

आचमन—(न०) १ दहिने हाथ की हथेली में जल लेकर मंत्र पढ़ते हुए पीना। २ चुल्लू। चळू।

आचमनी—(ना०) आचमन करने की छोटी चमची।

आचरज—(न०) आश्चर्य। अचरज।

आचरण—(न०) व्यवहार। चाल चलन। बर्ताव।

आचरणो—(क्रि०) आचरण करना। व्यवहार करना। रीत्यनुसार कार्य संपन्न करना। २ रीति करना। व्यवहार में लाना। ४ स्नान करना।

आचरणो—(क्रि०) आचमन करना। चळू करणो।

आचन—(वि०) १ अचल। २ अच्छा। (क्रि०) ?।

आचागळ—(वि०) १ आचारवान। २ अच्छा। अच्छि। ३ वीर ४ उदार।

आचागळो—दे० आचागळ।

आचार—(न०) १ चरित्र। २ व्यवहार। पारम्परिक नियम। ४ दान। ५ त्याग। ६ स्नान। उपकार। ७ रीति रस्म। ८ कर्त्तव्य। ९ पवित्रता। शुद्धि।

आचार करणो—(मुहा०) १ दान देना। २ नेग चुकाना। ३ रीति संपन्न करना।

आचारज—(न०) १ आचार्य। गुरु। २ पंडित। विद्वान। ३ ब्राह्मणों की एक जाति। ४ एक उपाधि। ५ मृत्यु पराँत क्रिया कर्म कराने वाला व्यक्ति। कट्टिया। महाब्राह्मण। कारटियो।

आचारजी—(वि०) सवर्णों के अतिरिक्त उपभोग में नहीं लाने दी जाने वाली (हुक्का चिलम थाली आदि)। २ आचार से संबंध रखने वाली। ३ आचार्य से संबंध रखने वाली। ४ आचार्य की।

आचारवान—(वि०) शुद्ध आचरण वाला।

आचार विचार—(न०) १ सामाजिक तथा धार्मिक रूढ व्यवहार। २ रहन

आजमास—(ना०) आजमाइश। परीक्षण। जाच।

आजाजीन—(वि०) जिसको जीता नहीं जा सके। अजीत।

आजाणो—दे० 'आणो' व क्रिया भेद।

आजाद—(वि०) १ स्वतन्त्र। २ मुक्त। छूटा हुआ। ३ बेपरवाह। ४ निडर।

आजादगी—(ना०) स्वतन्त्रता।

आजादी—(ना०) स्वतन्त्रता।

आजानुबाहु—(वि०) १ घुटनों तक लम्बे हाथों वाला। २ शूरवीर।

आजावणो—दे० आवणो।

आजी—(न०) १ घृत। घी। २ युद्ध।

आजीवन—(वि०) जीवन पर्यंत। जिन्दगी भर।

आजीविका—(ना०) १ वृत्ति। रोजगार। २ रोजी। गुजरान।

आजरो—(वि०) १ आज की। २ अभी की।

आजूणो—(वि०) १ आज का। २ इस समय का। अभी का।

आजूबाजू—(क्रि०वि०) आस-पास।

आजो—(न०) १ बल। शक्ति। २ साहस। ३ भरोसा। ४ सहारा। ५ सहायता।

आजोरो—दे० आजूणो।

आज्ञा—(ना०) आदेश। हुक्म। परवानगी।

आज्ञाकारी—(वि०) आज्ञा मानने वाला। (न०) सेवक।

आज्ञापत्र—(न०) हुक्म नामा।

आज्ञापालक—(वि०) आज्ञाकारी।

आज्ञापालन—(न०) आज्ञा के अनुसार काम करना।

आज्ञाभंग—(न०) आज्ञा का न मानना।

आझाळ—(वि०) १ क्रोधी। २ वीर। ३ तेजस्वी (न०) क्रोध। २ ज्वाला।

आझाळो—(वि०) १ अति क्रोधी। २ वीर। ३ प्रतापी। (न०) परवार। परवाल।

आझो—दे० आजो।

आट-पाट—(ना०) १ बाढ़ (नदी के पानी की) २ ध्वंस। नाश।

आटानाटा—(न०) १ शत्रुता। २ झगड़ा। टंटा।

आटो—(न०) आटा। चून। पिसान।

आटो-लूण—(न०) १ आटा और नमक। २ बिसात। हैसियत। ३ बुद्धि। समझ।

आटो-साटो—(न०) साटा म० २ ?

आठ—(वि०) पाच और तीन। चार का दूना। (न०) आठ का अंक। ८

आठ गाती—दे० अठती।

आठउं—दे० आठ।

आठ पहोर—(न०) १ आठो पहर। दिन रात। हर समय। २ रात और दिन के आठ पहर।

आठम—(ना०) पक्ष का आठवां दिन। अष्टमी। आठ।

आठमासियो—(वि०) आठवे मास में जन्मा हुआ। अठमासियो।

आठमो—(वि०) जो क्रम में सात के बाद आता हो। आठवां।

आठवळो—दे० आठू वळो।

आठवाट—(न०) नाश। नष्ट। (क्रि०वि०) इधर उधर।

आठवो—दे० आठमो।

आठानी—दे० अठन्नी।

आठी—(ना०) १ वेणी को लम्बी करने के लिये उसमें गूंथी जाने वाली काले रंग की ऊनी मोटी डोरी। २ अटरन पर लपटी हुई सूत की आंटी। लच्छी।

आठू पाट—(क्रि०वि०) १ सभी प्रकार। सब तरह से। २ पूरा का पूरा। ३ सभी अंगों से।

आठू पहर—(क्रि०वि०) आठों पहर। हर समय। रातदिन।

आठू वळी—(क्रि०वि०) आठों दिशाओं में। सब तरफ।

आठ—दे० आठम।

आठो—(न०) आठ का अंक। '८'।
२ विक्रम संवत् का आठवां वर्ष।

आड—(ना०) १ नाक पर धर्मावलंबियों का तिलक। त्रिपुण्ड्र। २ स्त्रियों का एक शिरोभूषण। ३ स्त्रियों के गले में पहनने का एक आभूषण। ४ ढपाल ओढ़ने का स्थान। ५ एक जल पक्षी। ६ ओट। परदा। ७ रोक। अवरोध। ८ किवाड़ को बंद करने की एक लंबी और मोटी लकड़ी। ६ पानी से भरा हुआ खड्ड।

आड-टढ—(ना०) थोड़ी देर के लिए लेट कर किया जाने वाला आराम।

आडण—दे० आडणी। (न०) २ जामा। ३ दूल्हे का जामा।

आडणी- (ना०) १ [illegible]। २ [illegible]।

आडणो—(क्रि०) १ मांडना। रचना। बनाना। २ किसी वस्तु का पूर्व रूप (नमूना) तैयार करना। ३ निर्माण की जाने वाली वस्तु के यथारूप बन जाने की जांच करने के लिए उसके सभी भागों को जोड़ कर देखना। वस्तु का कच्चा रूप तैयार करना। ४ जुए में किसी वस्तु को बाजी (शर्त) पर लगाना।

आडत—(ना०) १ कमीशन लेकर माल को खरीद फरोख्त करने या कराने का धंधा। आढ़त। दलाली। २ खरीद फरोख्त कराने का पारिश्रमिक।

आडतियो—(न०) १ कमीशन लेकर खरीद फरोख्त करने या कराने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। २ चोरी का माल खरीदने वाला व्यक्ति। (चोरों की भाषा में) ३ मित्र।

आड-पलाण—(न०) ऊंट पर कसे पलान पर दोनों पांव एक ओर रखकर की जाने वाली सवारी।

आडबंध—(न०) १ साधुओं की लंगोट बांधने की कमर में बांधी जाने वाली मोटी रस्सी। कटिबंध। मेखला। २ साधुओं का लंगोट। ३ बालन्दिया भाट बनजारों और भीलों आदि के सिर पर बांधी जाने वाली एक सफेद या लाल रंग के कपड़े की पट्टी।

आड बलोळो—दे० आड बलोळा।

आडवळो—दे० आडावळा।

आड बदाळो—(न०) पाणिग्रहण के पूर्व कन्या को घोड़ी पर बिठाकर वर के घर पर बदोला देने का ले जाने का शोभा यात्रा।

आड बाहर—(ना०) वह बाहर या पीछा जो डाकुओं आदि से आड़ा आकर किया जाता है। लुटेरे या आक्रमणकारियों का आगे आगे किया जाने वाला पीछा। तिरछी बाहर।

आड बाहरू—(वि०) आड़ा बाहर करने वाला।

आडंग—१ (न०) वर्षा के आगमन की सूचना देने वाली गरमी। उमस। २ ताप। गरमी।

आड गिया—(न० ब० व०) वर्षा ऋतु की उमस में अम्हौरियों में उठने वाली चुभन।

आड गिया खाणो—(मुहा०) उमस के कारण अम्हौरियों में चुभन उठना।

आड गियो—(न०) अग्निकण। चिनगारी। चिणग।

आडवर—(न०) १ उत्सव। धूमधाम। २ ढोंग। पाखंड। ढूंग। दिखावा। ३ तड़क भड़क। ठाट बाट। ४ महंत गुरु तथा राजा के ऊपर रखा जाने वाला छत्र। बड़ा छाता। ५ आच्छादन। छाजन। ६ तंबू। ७ गंभीर शब्द। ८ हाथी की चिंघाड़। ६ तुरही का

शब्द । १० युद्ध में बजाया जाने वाला बड़ा ढोल । ११ ललकार ।

आडवरी—(वि०) आडंबर वाला । ढोंगी । पाखंडी । ढोंगी ।

आडा गवड़ावणो—(मुहा०) १ शोक मनाना । २ मरसिया कहना या गाना । ३ मृत्युगीत गाना या गवाना ।

आडायत—(वि०) १ आड़ा आने वाला । २ रोकने वाला । ३ सेना से अकेला लोहा लेने वाला । ४ आक्रमण को रोकने वाला ।

आडा रजपूत—(न०) १ वह राजपूत जाति जिसमें विधवाएं पुनर्विवाह करती हैं । २ पुनर्विवाहिता राजपूतानियों से उत्पन्न राजपूत समुदाय ।

आडावळो—(न०) स्वनाम एक पर्वत । अरावली पर्वत ।

आडिया—(न०) बच्चों द्वारा नाक (का रेंट) को अँगरखे की बांह के अग्र भाग से पोंछने की क्रिया ।

आडी—(ना०) १ पहेली । प्रहेलिका । २ किवाड़ । कपाट । ३ बाधा । अवरोध । (वि०) टेढ़ी । बांकी । २ विरुद्ध ।

आडी ओळ—(ना०) १ बस्ती के सभी लोग । गांव के सभी स्त्री पुरुष । २ मोहल्ले के सभी स्त्री पुरुष । ३ अमुक विस्तार के सभी गली मुहल्ले । ४ खेतों की पंक्ति । (वि०) सभी । समस्त ।

आडी टाग—(ना०) १ विघ्न । बाधा । २ उलझन ।

आडी देणी—(मुहा०) १ किसी के काम में रुकावट डालना । २ द्वार बंद करना ।

आडी माळ—(ना०) १ आस पास के एक के एक सभी खेतों में की गई बुवाई । २ एक ही प्रकार के नाज की बुवाई किये हुए खेतों की पंक्ति ।

आडी वेळा—दे० आड समय ।

आडै कट—(न०) १ सभी प्राणी । २ सभी लोग । (वि०) १ समस्त । सभी । २ बरोबर टोक ।

आडै छाज—(न०) नाज को छाज के द्वारा साफ करने की एक विधि ।

आडै टील वाळा—(न०) साटी बागड़ जातियों को मांगने वाली एक साधु जमात जो अपनी ललाट पर चंदन की एक सीधी उर्ध्व रेखा खींची रखते हैं जो सिर पर मुड़ी हुई (टेढ़ी) होती है ।

आडै समय—(न०) विपत्तिकाल । (अव्य०) विपत्ति में । दुख पड़ने पर ।

आडो—(न०) १ दरवाजा । द्वार । २ कपाट । किवाड़ । ३ अवरोध । बाधा । (वि०) १ टेढ़ा । २ विरुद्ध । (क्रि वि०) अवरोध रूप में । बीच में ।

आडो—(न०) १ दुराग्रह । हठ । जिद । २ आंध । ३ राग । रास ।

आडो अड़ि—(क्रि वि०) १ आड़ा आकर । २ सामने से आकर । ३ सहसा अटककर । रुकावट डालकर ।

आडो अवळो—(क्रि वि०) १ इधर उधर । यहाँ वहाँ । २ कोने खांचे में । (वि०) १ अनुचित । खोटा । बुरा । २ अशिष्ट । ३ विरुद्ध ।

आडो आणो—(मुहा०) १ सहायता करना । २ रुकावट डालना । ३ प्रसव के समय भ्रूण का आड़ा हो जाना ।

आडो आवणो—दे० आडो आणो ।

आडो खोलणो—(मुहा०) बंद किवाड़ को खुला करना । द्वार खोलना ।

आडो धस—(न०) आगा भाग ।

आडो देणो—(मुहा०) द्वार बंद करना ।

आडो फरणो—(मुहा०) १ विरुद्ध होना । २ रोकना ।

आडो बोलणो—(मुहा०) १ विरुद्ध बोलना । २ किसी की बात के बीच में बोलना ।

आडो मारग—(न०) १ मुख्य मार्ग में मिलने वाला (उसमें से निकलने वाला) किसी दूसरी ओर का मार्ग। शाखा मार्ग। २ मार्ग का वाट पर जाने वाला मार्ग। ३ विरुद्धाचरण।

आडो रजपूत—(न०) उस राजपूत जाति का व्यक्ति जिसमें पुनर्विवाह होता है।

आडो लेणो—(मुहा०) जिद करना।

आडो वाळणो—(मुहा०) द्वार बंद करना।

आडो वैर—(न०) एक पक्ष की सहायता करने से दूसरे पक्ष से बन जाने वाली शत्रुता। उधारी शत्रुता। २ व्यर्थ की शत्रुता। फालतू दुश्मनी।

आडो व्हेणो—दे० आडो होणो।

आडो होणो—(मुहा०) १ लेट करके आराम करना। लेटना। सोना। २ रुकावट डालना।

आण—(ना०) १ सौगंद। शपथ। २ दुहाई। ३ आना। ४ घोषणा। ढंढेरो। (वि०) अन्य। और। दूसरा।

आण-काण—(ना०) मान मर्यादा।

आण-जाण—दे० आवण जावण।

आणण—(न०) आनन। मुख। मूंढो।

आणण पच—(न०) पंचानन। सिंह।

आणणो—(क्रि०) १ लाना। २ ले आना। लाणो। लावणो।

आण-दुवाई—(ना०) दे० आण दुहाई।

आण दुहाई—(ना०) १ शपथ। सौगंद। २ शासनाधिकार। हुकूमत। ३ दुहाई।

आणन—(अव्य०) ला करके। लायन।

आण भराणी अक—१ सुकृत समाप्त हो गये। २ अनीति अत्याचार के परिणाम भुगतने का समय आ गया। ३ होनहार आ पहुंचा।

आण भराणो—(मुहा०) १ हो गया। बन गया। २ पापोदय हो गया।

आण-माण—(न०) १ आन-मान। प्रतिष्ठा। २ ठाट बाट। शान। ३ अभिमान।

आणंद—(न०) १ आनंद। हर्ष। मोद। २ ईश्वर। शंकर। ३ विष्णु।

आणंदकंद—(न०) १ श्रीकृष्ण। २ ईश्वर। आनंदकंद।

आणंदकारी—(वि०) आनंद देनेवाला।

आणंदघण—(न०) १ श्रीकृष्ण। आनंद घन। २ आनंद से भरपूर।

आणंदणो—(क्रि०) १ आनंद करना। २ आनन्दित होना। प्रसन्न होना।

आणंद मंगळ—(न०) १ आनंदोत्सव। २ सुख चैन।

आणंद वधाई—(ना०) १ किसी उत्सव की बधाई। २ मंगल अवसर। ३ मंगल उत्सव।

आणंदियउ—(क्रि० भू०) १ आनंद हुआ। २ आनंदित हुआ। ३ आनंद मनाया।

आणंदी—(वि०) १ हरदम प्रसन्न रहने वाला। आनंद में रहने वाला। आनंदी।

आणायत—(न०) 'आणा' लेने या कराने के लिये जाने वाला जमाई।

आणियोडो—(भू० कृ०) लाया हुआ। लायोडो।

आणी—(प्रत्य०) एक प्रत्यय जो पुरुष के नाम के अंत में लगकर पुत्र के अर्थ का बोध कराता है जैसे—अमरचंद रामचंदाणी (अमरचंद रामचंद का पुत्र)। (क्रि० भू०) १ ले आया। २ ले आई।

आणो—(न०) १ विवाहोपरांत वधु का पहली बार ससुराल को आना। द्विरागमन। गौना। हलाणो। मुकळावो। २ वधु को उसके पीहर से ससुराल में और बेटी को उसकी ससुराल से पीहर में लाने का भाव। ३ आणो कराने के समय पुत्री को दिये जाने वाले वस्त्राभूषण।

आणो कराणो—*(मुहा०)* १ नव विवाहिता पुत्री को प्रथम बार ससुराल भेजना। २ पुत्री का ससुराल भेजना। ३ वधु का पीहर भेजना।

आणो-टाणो—*(न०)* १ पर्व। उत्सव। २ विवाहादि मांगलिक अवसर।

आणो-मुकळावो—*(न०)* द्विरागमन। गौना।

आणो लाणो—*(मुहा०)* पत्नी को पीहर से अपने घर लाना। वर का वधु को उसके पीहर से ससुराल में लाना।

आततांई—*(न०)* धन-माल लूटने स्त्रियों का हरण करने और घरों में आग लगाने इत्यादि दुष्कर्म करने वाला व्यक्ति। आततायी।

आतप—*(न०)* १ सूर्य प्रकाश। धूप। २ सूर्य के प्रकाश की गरमी। उष्णता। गरमी।

आतपत्र—*(न०)* छाता। छत्री। छतरडो।

आतपवारण—दे० आतपत्र।

आतम—*(न०)* १ आत्मा। २ परमात्मा। ब्रह्म। ३ जीव। *(वि०)* निजी। स्वकीय। *(अव्य)* निज। स्वयम्।

आतमग्यान—दे० आतमज्ञान।

आतमग्यानी—*(न०)* आत्मा तथा परमात्मा के संबंध में जानकारी रखने वाला। आत्मज्ञानी।

आतमघात—*(ना०)* आत्मघात। आतम हत्या।

आतमज—*(न०)* आत्मज। पुत्र।

आतमजा—*(ना०)* आत्मजा। पुत्री।

आतमजोणी—*(न०)* १ आत्मयोनि। ब्रह्मा। २ शिव। ३ विष्णु। ४ कामदेव।

आतमग्यान—*(न०)* आत्मा और परमात्मा के संबंध की जानकारी। ब्रह्म का साक्षात्कार। आत्मज्ञान।

आतमदेव—*(न०)* प्राण।

आतमबळ—*(न०)* अपना और अपनी आत्मा का बल। आत्मबल। अपना बल।

आतमराम—*(न०)* १ परमात्मा। ब्रह्म। २ जीव।

आतमसुख—*(न०)* एक प्रकार का रूंदार अंगरखा।

आतमहत्या—*(ना०)* आत्म हत्या। आत्मघात।

आतमा—*(ना०)* १ अंतःकरण के व्यापारों का ज्ञान कराने वाली सत्ता। आत्मा। २ जीवात्मा। ३ मन। ४ हृदय।

आतमाराम—दे० आतमराम।

आतळ—*(क्रि० वि०)* जबरदस्ती से।

आतस—(ना०) १ अग्नि। आतश। २ गरमी। ३ क्रोध। ४ जोश। ५ कामपीड़ा। ६ एक रोग। उपदंश। आतशक।

आतसबाजी—*(ना०)* बारूद के खिलौनों का जलाने का दृश्य या क्रिया। आतशबाजी।

आतस झाळ—(ना०) १ अग्नि ज्वाला। २ कामाग्नि। काम ज्वाला।

आतसपीड—*(ना०)* १ काम पीड़ा। २ गरमी से होने वाली पीड़ा।

आतस पीडू—*(वि०)* काम पीड़ित।

आतस पीडो—दे० आतसपीड़।

आतसा—*(न०व०व०)* बादशाही जमाने में मनाया जाने वाला एक बादशाही जलसा। दे० आतस।

आतंक—*(न०)* १ रोब। दब दबा। २ प्रताप। तेज। ३ भय। ४ शंका। ५ उपद्रव।

आताळ—*(न०)* १ संकट। दुःख। २ तेज गति।

आताळो—*(वि०)* १ उतावला। २ आतुर।

आतिम—दे० आतम ।
आतिश—दे० आतस ।
आती—(ना०) दुख । कष्ट । (वि०) १ तंग । सँकड़ा । २ हैरान । तंग ।
आतुर—(वि०) १ व्याकुल । २ अधीर । ३ उतावला । ४ दुखी ।
आतुरता—(ना०) १ व्याकुलता । २ अधीरता । ३ उतावल ।
आतो—(वि०) १ तंग । सँकरा । २ गम । बाधित । ३ हैरान ।
आत्म—दे० आतम ।
आत्मज—दे० आतमज ।
आत्मज्ञान—दे० आतम ग्यान ।
आत्मज्ञानी—दे० आतमग्यानी ।
आत्मबल—दे० आतमबळ ।
आत्मयोनि—दे० आतमजोणी ।
आत्मराम—दे० आतमराम ।
आत्महत्या—दे० आतमहत्या ।
आत्मा—दे० आतमा ।
आत्मीय—(वि०) १ निजी । २ घनिष्ठ । (न०) १ बहुत नजदीक का रिश्तेदार । २ मित्र । ३ स्नेही ।
आथ—(ना०) १ धन । संपत्ति । २ अपने काम या मजदूरी के पारिश्रमिक के बदले में वर्षाशन विशेष अवसरों पर इनाम या विवाह आदि अवसरों पर नेग आदि प्राप्त करने की कुछ मजदूर पेशा (नाई, कुम्हार, मेघवाल आदि) जातियों के धन्धे की एक प्रथा । (अव्य०) १ ही । २ भी । ३ सर्वथा । बिल्कुल ।
आथडणो—(क्रि०) १ लड़ना । भिड़ना । २ भटकना । ३ कठिन परिश्रम करना ।
आथण—(ना०) १ सन्ध्या समय । साँझ । आथणवेळा । २ पश्चिम । आथुण ।
आथणो—(ना०) दही जमाने की हाँडी । जामणो ।
आथद—(न०) १ कृषि-कर । मालगुजारी । लगान । २ भूमि-कर । लगान । ३ माल गुजारी देने वाला । कृषक ।
आथमण—(ना०) पश्चिम दिशा ।
आथमणी दिसा—(ना०) पश्चिम दिशा । आथुण ।
आथमणो—(न०) पश्चिम दिशा । (क्रि०) १ अस्त होना । २ मरना । ३ पतन होना ।
आथर—(न०) १ चादर । २ बिछौना । ३ फटा-पुराना ओढ़न बिछाने का कपड़ा । ४ सर्दी से बचाने के लिए मवेशी को ओढ़ाने का टाट या मोटा कपड़ा । ५ टाट का बिछावन ।
आथरियो—(न०) १ टाट का बिछावन । २ गोदड़ी । ३ फटा पुराना ओढ़ने का मोटा कपड़ा ।
आथरो—दे० आथरियो ।
आथाण—(न०) १ स्थान । स्थल । २ घर । मकान । ३ गाँव । नगर । ४ दुर्ग । गढ़ । ५ राजधानी । ६ सृष्टि । दुनिया । ७ नाश । ८ पश्चिम दिशा ।
आथा पोथी—(ना०) १ धन माल । पूंजी । २ घर का सभी सामान ।
आथुडणो—दे० आथडणो ।
आथुण—(ना०) पश्चिम दिशा । २ दे० आथण ।
आथू—(न०) आथ प्रथा पर काम करने वाला व्यक्ति ।
आथूणो—(न०) पश्चिम दिशा ।
आद—(वि०) १ आदि । प्रथम । पहला । (न०) १ प्रारम्भ । मूल । २ उत्पत्ति स्थान । (ना०) याद । स्मरण ।
आद जथा—(ना०) डिंगल छंद का एक रचना प्रकार । आदिजथा ।
आद जुगाद—(वि०) १ अनादि काल का । अति प्राचीन । २ परम्परा का । (क्रि० वि०) अनादि काल से ।

ग्रादत—(ना०) ग्रादत । स्वभाव ।
ग्राद पुरस—(न०) १ ग्रादि पुरुष । ब्रह्म । २ विष्णु । ३ ब्रह्मा ।
ग्राद भवानी—(ना०) ग्रादि भवानी । ग्राद्यशक्ति ।
ग्रादम—(न०) मनुष्य । ग्रादमी । मिनख ।
ग्रादमरा—(ना०) १ स्त्री । नारी । लुगाई । २ नौकरानी । ३ मजदूरनी । मजूरणी ।
ग्रादमी—(न०) १ ग्रादमी । मनुष्य । मिनख । २ पति । खाविंद । धणी । ३ नौकर । ४ मजदूर । मजूर ।
ग्रादर—(न०) १ ग्रादर । सम्मान । खातिर । २ इज्जत । प्रतिष्ठा ।
ग्रादरणा—(क्रि०) १ ग्रादर करना । सत्कार करना । २ ग्रारंभ करना । शुरु करना । ३ स्वीकार करना । मानना ।
ग्रादर भाव—(न०) १ सम्मान करने की भावना । २ श्रद्धापूर्वक सम्मान । ३ ग्रादर । सम्मान ।
ग्रादरस—(न०) १ ग्रादर्श । दर्पण । २ नमूना । ग्रादर्श ।
ग्रादर-सत्कार—(न०) सम्मान के साथ की जाने वाली ग्राव-भगत ।
ग्रादरा—(न०) ग्रार्द्रा नक्षत्र ।
ग्रादर्श—(न०) १ दर्पण । शीशा । २ वह जिसके रूप गुणादि का अनुसरण किया जाय । ३ नमूना ।
ग्राद सगत—(ना०) ग्रादि शक्ति । दुर्गा ।
ग्रादत—(न०) ग्रादि ग्रौर ग्रंत । ग्राद्यंत । (ग्रव्य०) ग्रादि से ग्रंत तक ।
ग्रादि—(न०) १ मूल कारण । २ उत्पत्ति स्थान । ३ परमेश्वर । ४ प्रारम्भ । (वि०) प्रथम । पहला । (ग्रव्य०) वगैरह । इत्यादि ।
ग्रादिक—(ग्रव्य०) ग्रादि । इत्यादि । वगैरह ।
ग्रादि कवि—(न०) १ वाल्मीकि ऋषि । २ ब्रह्मा ।
ग्रादि काव्य—(न०) वाल्मीकि रामायण ।
ग्रादित—(न०) ग्रादित्य । सूर्य ।
ग्रादित वार—रविवार ।
ग्रादित्य—(न०) सूर्य । रवि ।
ग्रादिनाथ—(न०) १ शिव । २ नाथ सम्प्रदाय के प्रथम ग्राचार्य । ३ जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर । ऋषभनाथ ।
ग्रादि नारायण—(न०) विष्णु भगवान ।
ग्रादि पुरुष—(न०) १ परमेश्वर । २ किसी वंश का मूल पुरुष ।
ग्रादि भवानी—(ना०) ग्राद्यशक्ति ।
ग्रादि वराह—(न०)ग्रादि वाराह । वाराह ग्रवतार ।
ग्रादि शक्ति—दे० ग्राद सगत ।
ग्रादीत—(न०) ग्रादित्य । सूर्य । दे० ग्रादीत ब्राह्मण ।
ग्रादीत ब्राह्मण—(न०) चित्तौड़ के शासक सीसोदिया के पूर्वजों की एक उपाधि या ग्रल्ल ।
ग्रादू—(वि०) १ प्रथम । पहला । २ ग्रादि । प्रारम्भ का । (क्रि० वि०) १ प्रारंभ में । शुरू में । २ प्रारंभ से । शुरू से ।
ग्रादू काळ—(न०) प्रारम्भ । ग्रादि काल ।
ग्रादेश—(न०) १ ग्राज्ञा । हुक्म । २ प्रणाम । नमस्कार । ३ एक वर्ण के स्थान पर दूसरे वर्ण का ग्राना (व्या०) ।
ग्रादेस—दे० ग्रादेश ।
ग्रादेसणो—(क्रि०) १ ग्राज्ञा करना । प्रणाम करना ।
ग्रादेसातु—(न०) प्राचीन समय में दानपत्र पट्टे परवाने पत्र ग्रौर ग्रधिकार प्रदान इत्यादि के ग्राज्ञा पत्रों में लिखा जाने वाला राजा की ग्राज्ञा का एक प्रमाण (पारिभाषिक) शब्द । २ की ग्राज्ञा से । ग्रादेशात् ।

ग्रानक—(न०) १ बडा ढोल। २ बडा नगाडा। ३ गरजता हुआ बादल।
ग्रानथ—दे० ग्रानक।
ग्रानन—(न०) मुख। वदन। मूंढो।
ग्रानन पच—(न०) पचानन। सिंह।
ग्रान बान—(ना०) ठाट बाट। सजधज।
ग्रानद—(न०) हर्ष। प्रसन्नता। मोद। आणद।
ग्रानदकद—(न०) श्रीकृष्ण। २ परमात्मा।
ग्रानदकारी—(वि०) ग्रानद देने वाला।
ग्रानदघन—(न०) १ श्रीकृष्ण २ परमात्मा।
ग्रानदणो—दे० ग्राणदणो।
ग्रानद वधाई—(ना०) १ मगल उत्सव। २ मगल ग्रवसर। ग्राणद बधाई।
ग्रानद-मगल—दे० ग्राणद मगळ।
ग्रानदी—(वि०) ग्रानद मे रहने वाला। प्रसन्न रहने वाला।
ग्रानाकानी—(ना०) टालमटूल। ग्रागा पीछा। हा-ना।
ग्रानापाई—दे० ग्रानापाग।
ग्रानापाण—(न०) १ दशाश पद्धति के पूर्व रुपये के ६४ पसो के हिसाव से रुपये की रेजगारी को ग्राने ग्रौर पाइयो मे लिखकर दर्शाने की एक पद्धति जसे—=)' एक ग्राना (चार पसे) =) दो ग्राने (८ पसे), ≡) तीन ग्राने (१२पसे)। ।) चार ग्राने (१६ पसे) चवन्नी ॥) ग्रठन्नी (३२ पसे) ॥।) बारह ग्राने (४८ पसे) पौन रुपया। ।=) पाँच ग्राने (२० पसे), ।=)। सवा पाच ग्राने (२१ पसे) ।=)॥ साढे पाँच ग्राने (२२ पसे)। '।=)॥। पौने छ ग्राने (२३ पसे), ।=) छ ग्राने (२४ पसे ।≡) सात ग्राने। ८ पसे)। इसी प्रकार रेजगारी के सभी हिस्सो को ग्राना पाइयो मे लिखा जाता है। २ ग्राने ग्रौर पाणा के पहाड़े।

ग्रानी—(ना०) रुपये (६४ पैसा) के सोलहवे भाग का सिक्का। चार पैसो की कीमत का सिक्का।
ग्रानै—(सर्व०) इनको।
ग्रानो—(न०) १ एक रुपये का सोलहवाँ भाग। चार पसे। २ किसी वस्तु का सोलहवा भाग।
ग्राप—(सर्व०) १ तुम' ग्रौर वे के लिये ग्रादरार्थक शब्द। २ स्वय। खुद। थे।
ग्राप-ग्रगा—(वि०) १ मस्त। मौजी। २ घमडी। मिजाजी। ३ ग्रक्कड।
ग्राप ग्रापरै—(सर्व०) ग्रपने ग्रपने।
ग्राप ग्रापरो—(सर्व०) ग्रपना ग्रपना।
ग्राप करमी—(वि०) १ स्वभाग्य पर भरोसा करने वाली या करने वाला। २ कर्म करके भाग्य बनाने वाली या बनाने वाला। स्वावलबी।
ग्राप करमो—(वि०) १ स्वभाग्य पर भरोसा रखने वाला। २ कर्म करके भाग्य बनाने वाला। स्वावलबी।
ग्रापगा—(ना०) नदी।
ग्रापघात—(ना०) ग्रापघात। ग्रात्महत्या।
ग्रापघाती—(वि०) ग्रात्मघाती। ग्रात्म हत्यारा।
ग्रापच—(ना०) १ मनोव्यथा। २ ग्रात्म हत्या।
ग्रापच कूटो—(न०) १ कलह। २ मन स्ताप। ३ व्यर्थ का परिश्रम। बिना लाभ का ग्रौर पच मरने का काम।
ग्राप चीतो—(वि०) ग्रपनी इच्छा से ग्रौर इच्छानुसार काम करने वाला। २ ग्रपने ग्राप।
ग्रापज—(सर्व०) स्वय। ग्राप ही।
ग्रापजादो—(वि०) १ स्वावलबी। २ कमठ। ३ ग्रभिमानी ४ हठी।
ग्रापजी—(न०) १ दादा पिता ग्रादि गुरुजनो के लिए सम्मान सूचक सबोधन। २ दादा पिता ग्रादि गुरुजन। ३ पिता।

आपजी सा—दे० आपजी।

आपज्ञान—(न०) आत्मज्ञान।

आपडणो—(क्रि०) किसी के पीछे दौड़कर उसको पहुचना। पकड़ना। पहुचना।

आपण—(न०) १ भक्तकवि बारहठ ईसरदास का एक आत्मज्ञान सबधी काव्य। गुण आपण २ आत्मा। ३ बाजार। ४ दुकान। (सर्व०) १ अपन। अपन लोग। २ अपना। ३ अपन। हमारे।

आपणी—(सर्व०) अपनी।

आपणो—(सर्व०) अपना। (क्रि०)१ देना। २ अर्पण करना।

आपत—(ना०) आपत्ति। कष्ट। (क्रि०वि०) एक दूसरे के साथ। परस्पर।

आपतकाळ—(न०) १ आपत्काल। कुसमय। २ दुर्दिन।

आपदा—(ना०) विपत्ति।

आपनामी—(वि०) अपने नाम से प्रसिद्ध होनेवाला।

आपपर—(क्रि०वि०) परस्पर। आपस में।

आपबळ—(न०) आत्मबल।

आपबळी—(वि०) १ आत्मबली। २ स्वावलंबी। ३ सामर्थ्यवान।

आपमतो—(वि०) १ अपनी इच्छानुसार करने वाला। स्वच्छंद। २ स्वतंत्र। ३ वीर।

आपमुरादो—(वि०) स्वेच्छाचारी। स्वच्छंद।

आपमेळो—दे० आप चीतो।

आपरंगी—(वि०) अपने रंग में रंगा हुआ। मौजी। मस्त। २ मिजाजी। घमंडी।

आपरी—(सर्व०) अपनी। (वि०) आपकी।

आपरूप—(न०) १ आत्मस्वरूप। ब्रह्मस्वरूप। २ परमात्मा। ईश्वर। ३ अपना रूप। असली रूप। (क्रि०वि०) अपने रूप में। अपने असली रूप में।

आपरो—(सर्व०) अपना। (वि०) आपका।

आपवळ—(क्रि०वि०) अपने पक्ष में। अपनी ओर।

आपवीती—(वि०) १ अपने में बीती हुई। खुद की भुगती हुई। (ना०) अपनी घटना। घरबीती। 'परबीती' का उलटा।

आपस—(क्रि०वि०) परस्पर। एक दूसरे के साथ।

आपसरी—(क्रि०वि०) १ परस्पर में। परस्पर मिल करके। २ अपने आप।

आपसी—(वि०) पारस्परिक।

आपसूझ—(ना०) अपनी समझ। खुद की बुद्धि।

आपा ऊपर—(वि०) अपनी शक्ति से अधिक। अपनी हैसियत से बाहर। (क्रि० वि०) अपने असली रूप में। बिगड़े रूप में।

आपा ऊपरो—(वि०) १ अपनी शक्ति से अधिक काम करने वाला। २ अपनी हैसियत के उपरान्त बोलने वाला। ३ अपने असली रूप में आने वाला।

आपाण—(न०)१ शक्ति। पराक्रम। २ साहस। ३ करामात।

आपाणी—(वि०) १ आपाणवाला। शक्तिवान। पराक्रमी। २ साहसी। हिम्मती। (सर्व०) अपनी।

आपाधापी—(ना०) १ मनचाही। २ खींचातानी। ३ अपनी अपनी चिंता। ४ धांधली। शरारत।

आपापणो—(सर्व० वि०) (आप+आपणो का छोटा रूप) अपना अपना।

आपा पणो—(न०) १ अभिमान। अहंकार २ बल। शक्ति।

आपापथी—(वि०) १ सामाजिक व धार्मिक नियमों के विरुद्ध आचरण करने वाला। २ पारंपरिक आचार विचारों की अवहेलना करने वाला। ३ मनमानी करने वाला। स्वेच्छाचारी।

आपायत—*(वि०)* १ जबरदस्त । बलवान । २ साहसी ।

आपायतो—दे० आपायत । (स्त्री० आपायती) ।

आपाममो—*(वि०)* १ स्वच्छंद । अपने समान ।

आपा—*(सव०उ०व०)* १ अपन । २ हम ।

आपाउ—*(सव०)* १ अपन अपन । २ अपन । अपना अपना । ३ स्वय ।

आपे—*(सव०)* अपने आप । स्वत ।

आपेज—*(सव०)* अपने आप ही ।

आप थापै—*(वि०)* १ अपने भराम या महारे पर रहने वाला । स्वावलम्बी । २ मनमौजी । स्वेच्छाचारी । ३ स्वतत्र । *(अव्य०)* अपनी मर्जी स । स्वेच्छानुसार ।

आपै थापै—दे० आपै थाप ।

आपो—*(न०)* १ आत्मा । २ आत्मस्वरूप । ३ सहारा । आधार । ४ परिचय । ५ मृतावशिष्ट व्यक्ति द्वारा दिया जाने वाला मृत का परिचय । ६ शक्ति । ७ अपनी मनता । व्यक्तित्व । ८ स्वबल । ६ स्वाभिमान । १० जीवात्मा ।

आपो आप—*(सव०)* १ अपने आप । स्वत । २ स्वय ।

आफत—*(ना०)* विपत्ति । आपदा ।

आफताब—*(न०)* सूर्य ।

आफरणो—*(क्रि०)* पेट में वायु विकार होना । वायु से पेट फूलना । अफरना ।

आफरीवाद—*(न०)* धन्यवाद । शाबास ।

आफरो—*(न०)* पेट में होने वाला वायु विकार । वायु से पेट में होने वाला फुलाव । आफरा ।

आफळणो—*(क्रि०)* १ टकराना । २ भिड़ना । ३ युद्ध करना । ४ तड़पना । ५ नाश होना । मरना । ६ अत्यधिक परिश्रम करना ।

आफाळणो—*(क्रि०)* १ टक्कर दिलाना । २ भिड़ाना । ३ युद्ध कराना । ४ तड़पाना । ५ नाश कराना । मरवाना । ६ अत्यधिक परिश्रम करवाना ।

आफू—*(न०)* अफीम । अमल ।

आफूगो—*(वि०)* १ समस्त । सब । *(सव०)* अपने आप । स्वय ।

आफूडियो—*(वि०)* अफीमची । अमलदार ।

आब—*(ना०)* १ आभा । चमक । कान्ति । २ आबरू । प्रतिष्ठा । ३ छवि । शोभा । *(न०)* ४ पानी । ५ वर्ण । रग ।

आबकारी—*(वि०)* शराब आदि नशीली वस्तुओं से सबध रखने वाला (सरकारी महकमा) ।

आबखाना—*(न०)* १ पानीघर । पनिहारा । परीडो । २ स्नानघर । ३ शिशाखर ।

आबखोरा—*(न०)* एक जलपात्र ।

आबदार—*(वि०)* १ पानी वाला । आभायुक्त । कान्तिमान । २ चमकदार । सुवर्ण । ३ सुन्दर ।

आबनूस—*(न०)* एक वृक्ष ।

आबरू—*(ना०)* प्रतिष्ठा । इज्जत ।

आबरूदार—*(वि०)* प्रतिष्ठित । इज्जतदार ।

आब-हवा—*(ना०)* १ जलवायु । २ वातावरण ।

आबाद—*(वि०)* १ बसा हुआ । २ उपजाऊ ।

आबादी—*(ना०)* १ बस्ती । आबादी । २ जनसख्या ।

आबी—*(ना०)* १ चमक । ओप । कान्ति । २ शोभा । ३ प्रतिष्ठा । पानी । ४ शस्त्र में दी जाने वाली एक ओप । पानी । जौहर ।

आबू—*(न०)* १ आडावळा (अरावली) पर्वतमाला का सबसे ऊंचा शिखर । आबू पर्वत । अर्बुदगिरि २ राजस्थान का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक और पर्वतीय तीर्थ स्थान । ३ आबू पर्वत पर बसा हुआ एक नगर । ४ आबूरोड रेलवे स्टेशन के पास बसा हुआ खराड़ी नाम का नगर । खराड़ी । आबूरोड ।

आभ—(न०) १ आकाश। आभो। ऊवलाक। स्वर्ग। (ना०) २ आभा। कान्ति।

आभ-टूटणो—(मुहा०) १ घोर ध्वनि के साथ वज्राग्नि गिरना। २ घोर संकट या आ पड़ना।

आभड छेट—(ना०) १ अछूत व्यक्ति या रजस्वला स्त्री से स्पर्श होने का अशौच। २ स्पर्शदोष। ३ रजस्राव। प्रदकाव।

आभड छात—दे० आभडछेट।

आभडणो—(क्रि०) १ स्पर्श होना। छू जाना। २ अछूत जाति के व्यक्ति या ऋतुमती स्त्री से छू जाना एवं स्पर्श होने का अशौच लगना। ३ अशौच लगना। ४ स्पर्श करना। छूना। ५ भिड़ना।

आभडियोडी—(वि०) १ ऋतुमती। रजस्वला। कपड़ां आयोडी। २ स्पर्श की हुई।

आभडियोडो—(वि०) स्पर्श किया हुआ।

आभ फूटणो—(मुहा०) घोर वर्षा होना।

आभरण—(न०) आभूषण।

आभा—(ना०) १ शोभा। २ चमक।

आभार—(न०) १ धन्यवाद। १ उपकार। एहसान।

आभारी—(वि०) १ कृतज्ञ। २ उपकार मानने वाला।

आभास—(न०) १ किंचित भास या ज्ञान। २ छाया। झलक। ३ भ्रम।

आभीर—(न०) १ अहीर। ग्वाला। २ एक छंद। ३ एक राग।

आभूखण—(न०) आभूषण। गहना।

आभूषण—दे० आभूखण।

आभूसण—दे० आभूखण।

आभो—(न०) आकाश। (वि०) आश्चर्य चकित। चकित।

आभोग—(न०) भजन, पद या कविता की वह अंतिम कड़ी जिसमें कवि का नाम दिया हुआ रहता है। प्रभाव। २ समाप्त। ३ उपभोग। ४ [illegible] (वि०) परिपूर्ण। पूर्ण।

आम्रण—(न०) आभरण। आवरण।

आम—(वि०) १ सर्व-साधारण। २ साधारण में व्याप्त। (न०) आम्र।

आमडणो—(क्रि०) १ मिलना। होना। २ लगना। आ लगना। पहुँ[illegible]

आमण-दूमणा—(वि०) १ उ[illegible] नाराज। २ हताश।

आमद—(ना०) १ आय। आमदनी। २ आगमन।

आमदनी—(ना०) १ आय। आम[illegible] २ आयात।

आमना—(ना०) १ इच्छा। चाह। २ आम्नाय। वेद। ३ द्वि[illegible] आम्नाय सूचक भेद या फिरका। प्राचीन परिपाटी। परम्परा।

आमनै-सामनै—(क्रि०वि०) एक दूसरे [illegible] सामने। आमने सामने। प्रत्यक्ष।

आमनो—(न०) नाराजी।

आमना मामनो—(न०) मुठभेड़। मु[illegible] बला।

आमय—(न०) १ रोग। बीमारी। २ माया।

आमरस—(न०) आमरस। आम्ररस।

आमलवाणी—(न०) पुन: [illegible] जाने वाला इमली का पानी।

आमलकी ग्यारस—दे० आँवला-ग्यारस।

आमळासार-गधक—(न०) एक प्र[illegible] का गधक।

आमळासार गधक—दे० [illegible] गधक।

आमली—(ना०) इमली।

आमळो—दे० आँवळो। दे० [illegible]

आमहो-मामहो—दे० आमना-सामना।

आमरख—(न०) [illegible]। मद।

ग्रामचनर—(वि०) मास भक्षी (पशु व पक्षी)।
ग्रामत्रण—(न०) निमत्रण। बुलावा। तेडो।
ग्रामत्रणो—(क्रि०) ग्रामत्रण देना। बुलाना। तेडणो।
ग्रामादा—(वि०) तयार। तत्पर।
ग्रामा सामा—(क्रि०वि०) ग्रामने सामने।
ग्रामिस—(न०) ग्रामिष। मांस।
ग्रामिसचर—दे० ग्रामचनर।
ग्रामिष—दे० ग्रामिस।
ग्रामीसा—(वि०) इस प्रकार का।
ग्रामुख—(न०) १ प्रस्तावना। २ उपोद्‌घात।
ग्रामुहा-सामुहो—(क्रि० वि०) ग्रामने सामने।
ग्रामेज—(न०) १ मुकाबला। मुठभेड़। २ मिलन। (क्रि०वि०) १ ग्रामने सामने २ सामने। सम्मुख।
ग्रामोद—(न०) ग्रानन्द।
ग्राम्हा साम्हा—(क्रि०वि० ग्रामने सामने।
ग्राम्ही साम्ही—(क्रि०वि०) ग्रामने सामने।
ग्राम्हीणी—(सव०) हमारी। ग्रम्हीणी।
ग्राम्हीणो—(सव०) १ हमारा। ग्रपना। २ मेरा। ग्रम्हीणो।
ग्राय—(ना०) १ ग्राय। ग्रामदनी। २ लाभ।
ग्रायत—(वि०) १ शरणागत। २ विस्तृत। लबा चौडा। (न०) १ घरा। (ना०) कुरान का वाक्य। ग्रायत।
ग्रायता—(न०) मुसलमान लोग।
ग्रायत्तर—(वि०) पराधीन।
ग्रायल—(न०) १ चारण जाति की ग्रावड देवी। करणीदेवी। २ एक लोक गीत। ३ कुलटा स्त्री। पुश्चली स्त्री। (वि०) ग्रावड देवी की ग्राराधना या पूजा करने वाला।
ग्रायस—(न०) १ नाथ सम्प्रदाय के सन्यासियों का एक विरुद या पदवी। २ सन्यासी। योगी। ३ ग्रादेश। ग्राज्ञा। ४ लोहा।
ग्रायात—(वि०) बाहर से ग्राया हुग्रा (माल सामान)। (न०) ग्रायात माल पर लगने वाला कर।
ग्रायास—(न०) १ ग्रावास। निवास। २ ग्राकाश। ३ ग्राभास। ४ परिश्रम।
ग्रायु—(ना०) ग्रायुष्य। वय। उम्र।
ग्रायुध- (न०) ग्रस्त्र शस्त्र। हथियार।
ग्रायुर्वेद—(न०) १ भारतीय चिकित्सा शास्त्र। २ ग्रथर्ववेद का उपवेद।
ग्रायोजन—(न०) १ किसी काय मे लगना। २ तयारी। ३ सामग्री।
ग्रायोडी—(भू०कृ०ना०) ग्रायी हुई।
ग्रायाडो—(भू०कृ०) ग्राया हुग्रा।
ग्रायोधन—(न०) सग्राम।
ग्रार—(ना०) १ कील जो बैल हांकने के डंडे मे लगी रहती है। २ ऐसी कील वाला डडा। ३ कटीत। ग्रारी। ४ चमडा छेदने का सूग्रा। ५ हठ। जिद। (प्रत्य०) एक प्रत्यय जो काम करने वाला के ग्रथ को बताता है। करने वाला।
ग्रारख—(वि०) समान। बराबर। (न०) १ समानता। बराबरी। २ भांति। प्रकार। ३ चिह्न। निशान। ४ शक्ति। पराक्रम।
ग्रारखो—दे० ग्रारिखो।
ग्रारज—(न०) १ ग्राय। २ श्रेष्ठ पुरुष। ३ सबसे पहले सभ्यता प्राप्त करने वाली जाति। ४ हिंदू। (वि०) १ श्रेष्ठ। २ पूज्य। बडा।
ग्रारजा—(ना०) १ ग्रार्या। २ पार्वती। ३ साध्वी। ४ ग्रार्या छंद। ५ रोग। बीमारी।

आभ—(न०) १ आकाश । आभो । ऊर्ध्वलोक । स्वग । (ना०) २ आभा । कान्ति ।
आभ-टूटणो—(मुहा०) १ घोर ध्वनि के साथ वज्राग्नि गिरना । २ घोर सकट का आ पड़ना ।
आभड छेट—(ना०) १ अछूत व्यक्ति या रजस्वला स्त्री से स्पश होने का अशौच । २ स्पशदोष । ३ रजस्राव । अटकाव ।
आभड छात—दे० आभडछेट ।
आभडणो—(क्रि०) १ स्पश होना । छू जाना । २ अछूत जाति के व्यक्ति या ऋतुमती स्त्री से छू जाना एव स्पश होने का अशौच लगना । ३ अशौच लगना । ४ स्पश करना । छूना । ५ भिडना ।
आभडियोडी—(वि०) १ ऋतुमती । रजस्वला । कपड़ां आयोडी । २ स्पश की हुई ।
आभडियोडा—(वि०) स्पश किया हुआ ।
आभ फूटणो—(मुहा०) घोर वर्षा होना ।
आभरण—(न०) आभूषण ।
आभा—(ना०) १ शोभा । २ चमक ।
आभार—(न०) १ धन्यवाद । १ उपकार । एहसान ।
आभारी—(वि०) १ कृतज्ञ । २ उपकार मानने वाला ।
आभास—(न०) १ किंचित भास या ज्ञान । २ छाया । झलक । ३ भ्रम ।
आभीर—(न०) १ अहीर । ग्वाला । २ एक छद । ३ एक राग ।
आभूखण—(न०) आभूषण । गहना ।
आभूषण—दे० आभूखण ।
आभूसण—दे० आभूखण ।
आभो—(न०) आकाश । (वि०) आश्चय चकित । चकित ।
आभोग—(न०) भजन पद या कविता की वह अतिम कड़ी जिसमे कवि का नाम दिया हुआ रहता है । अभोग । २ पूण । समाप्त । ३ उपभोग । ४ विस्तार । (वि०) परिपूण । पूण ।
आभ्रण—(न०) आभरण । आभूषण ।
आम—(वि०) १ सव साधारण । २ सब साधारण में व्याप्त । (न०) आम्र ।
आमडणो—(क्रि०) १ मिटना । नाश होना । २ लगना । आ लगना । पहुचना ।
आमण-दूमणो—(वि०) १ उदास । नाराज । २ हताश ।
आमद—(ना०) १ आय । आमदनी । २ आगमन ।
आमदनी—(ना०) १ आय । आमद । २ आयात ।
आमना—(ना०) १ इच्छा । चाह । २ आम्नाय । वद । ३ द्विजो का आम्नाय सूचक भेद या फिरका । ४ प्राचीन परिपाटी । परम्परा ।
आमनै-सामनै—(क्रि०वि०) एक दूसरे के सामने । आमने सामने । प्रत्यक्ष ।
आमनो—(न०) नाराजी ।
आमनो सामनो—(न०) मुठभेड । मुकाबला ।
आमय—(न०) १ रोग । बीमारी । २ माया ।
आमरस—(ना०) आमरस । आम्ररस ।
आमलवाणी—(न०) गुड डालकर बनाया जाने वाला इमली का पानी ।
आमलकी ग्यारस—दे० आँवला ग्यारस ।
आमळासार-गधक—(न०) एक प्रकार का गधक ।
आमळासार गध्रप—दे० आमळासार गधक ।
आमली—(ना०) इमली ।
आमळो—दे० आँवळो । दे० आवळो ।
आमहा मामहो—दे० आमा-मामा ।
आमष—(न०) आमिष । मास ।

ग्रामखचर—*(वि०)* मास भक्षी (पशु व पक्षी)।
ग्रामत्रण—*(न०)* निमत्रण। बुलावा। तेडो।
ग्रामत्रणो—*(क्रि०)* ग्रामत्रण देना। बुलाना। तेडणो।
ग्रामादा—*(वि०)* तयार। तत्पर।
ग्रामा सामा—*(क्रि०वि०)* ग्रामने सामने।
ग्रामिख—*(न०)* ग्रामिष। मांस।
ग्रामिखचर—दे० ग्रामखचर।
ग्रामिष—दे० ग्रामिख।
ग्रामीणा—*(वि०)* इस प्रकार का।
ग्रामुख—*(न०)* १ प्रस्तावना। २ उपोद्घात।
ग्रामुहा-सामुहा—*(क्रि० वि०)* ग्रामने सामने।
ग्रामज—*(न०)* १ मुकाबला। मुठभेड़। २ मिलन। *(क्रि०वि०)* १ ग्रामने सामने २ सामने। सम्मुख।
ग्रामाद—*(न०)* ग्रानंद।
ग्राम्हा साम्हा—*(क्रि०वि०* ग्रामने सामने।
ग्राम्ही साम्ही—*(क्रि०वि०)* ग्रामने सामने।
ग्राम्हीणी—*(सव०)* हमारी। ग्रम्हीणी।
ग्राम्हीणो—*(सव०)* १ हमारा। ग्रपना। २ मेरा। ग्रम्हीणो।
ग्राय—*(ना०)* १ ग्राय। ग्रामदनी। २ लाभ।
ग्रायत—*(वि०)* १ शरणागत। २ विस्तृत। लबा चौडा। *(न०)* १ घेरा। *(ना०)* कुरान का वाक्य। ग्रायत।
ग्रायता—*(न०)* मुसलमान लोग।
ग्रायत्तर—*(वि०)* पराधीन।
ग्रायल—*(न०)* १ चारण जाति की ग्रावड देवी। करणीदेवी। २ एक लोक गीत। ३ कुलटा स्त्री। पुंश्चली स्त्री। *(वि०)* ग्रावड देवी की ग्राराधना या पूजा करने वाला।
ग्रायस—*(न०)* १ नाथ सम्प्रदाय के सन्यासियों का एक विरुद या पदवी। २ सन्यासी। योगी। ३ ग्रादेश। ग्राज्ञा। ४ लोहा।
ग्रायात—*(वि०)* बाहर से ग्राया हुग्रा (माल सामान) *(न०)* ग्रायात माल पर लगने वाला कर।
ग्रायाम—*(न०)* १ ग्रावास। निवास। २ ग्राकाश। ३ ग्राभास। ४ परिश्रम।
ग्रायु—*(ना०)* ग्रायुष्य। वय। उम्र।
ग्रायुध—*(न०)* ग्रस्त्र शस्त्र। हथियार।
ग्रायुर्वेद—*(न०)* १ भारतीय चिकित्सा शास्त्र। २ ग्रथर्ववेद का उपवेद।
ग्रायोजन—*(न०)* १ किसी कार्य में लगना। २ तयारी। ३ सामग्री।
ग्रायोडी—*(भू०कृ०ना०)* ग्रायी हुई।
ग्रायोडो—*(भू०कृ०)* ग्राया हुग्रा।
ग्रायोधन—*(न०)* सग्राम।
ग्रार—*(ना०)* १ कील जो बैल हांकने के डंडे में लगी रहती है। २ ऐसी कील वाला डंडा। ३ करौत। ग्रारी। ४ चमड़ा छेदने का सूग्रा। ५ हठ। जिद। *(प्रत्य०)* एक प्रत्यय जो काम करने वाला के ग्रर्थ को बताता है। करने वाला।
ग्रारख—*(वि०)* समान। बराबर। *(न०)* १ समानता। बराबरी। २ भाँति। प्रकार। ३ चिन्ह। निशान। ४ शक्ति। पराक्रम।
ग्रारखो—दे० ग्रारिखो।
ग्रारज—*(न०)* १ ग्रार्य। २ श्रेष्ठ पुरुष। ३ सबसे पहले सभ्यता प्राप्त करने वाली जाति। ४ हिन्दू। *(वि०)* १ श्रेष्ठ। २ पूज्य। बड़ा।
ग्रारजा—*(ना०)* १ ग्रार्या। २ पार्वती। ३ साध्वी। ४ ग्रार्या छंद। ५ रोग। बीमारी।

आरजिया—(ना०) जन साध्वी। आरजा।
आरण—(न०) १ अरण्य। वन। २ युद्ध। ३ लुहार की भट्टी।
आरणियो-छाणो—(न०) १ सूखा हुआ गोबर।। उपला। कंडा।
आरणो—(वि०) जंगल का। जंगली। आरणियो।
आरणो छाणो—दे० आरणिया छाणो।
आरण्य—(वि०) जंगल का। (न०) दशनामी संन्यासियों का एक भेद।
आरत—(ना०) १ जरूरत। आवश्यकता। २ कामना। इच्छा। ३ पीडा। ४ लालसा। ५ अपनत्व। अपनापन। ६ दीन पुकार। (वि०) १ जरूरत वाला। २ दुखी। आर्त। ३ आतुर। अधीर।
आरतडी—दे० आरती।
आरतवंत—दे० आरतवान।
आरतवान—(वि०) १ अधिक जरूरत वाला। २ आतुर। अधीर। ३ दुखी। पीडित। ४ संकट ग्रस्त।
आरती—(ना०) १ देवमूर्ति के सम्मुख घी का दीपक घुमाने की क्रिया। नीराजन। २ आरती का दीपक पात्र। ३ आरती करते समय गायी जाने वाली स्तुति। ४ विवाह की एक प्रथा जिसमें तोरण द्वार पर दूल्हे की सास द्वारा अनेक दीपकों वाली आरती उतारी जाती है। ५ दूल्हे की आरती करते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।
आरती उतारणी—(मुहा०) देवमूर्ति के सम्मुख आरती घुमाना।
आरती करणी—दे० आरती उतारणी।
आरतो—(न०) बडी आरती। आरती।
आरपार—(क्रि०वि०) १ इस किनारे से उस किनारे तक। २ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। ३ इधर से उधर।
आरब—(न०) १ मुसलमान। २ एक प्रकार की तोप। (वि०) अरब का रहने वाला।
आरबळ—(न०) १ आहारबल। २ शारीरिक बल। ३ आयु बल। लंबी आयु। ४ आयु का परिमाण। ५ आयु।
आरव—(न०) १ आर्त पुकार। २ आक्रंद। रुदन।
आरस पहाण—(न०) आदर्श पाषाण। संगमरमर। मकराणो। —
आरसपाण—दे० आरस पहाण।
आरसी—(ना०) १ दर्पण। आईना। काच। २ अंगूठे में पहनने की शीशा जडी हुई स्त्रियोंकी एक अंगूठी। (वि०) ऐसी। इस प्रकार की।
आरहट—(न०) युद्ध।
आराम—(न०)१ क्रीडा। केलि। २ केलि घर। ३ शस्त्र।
आरामपुर—(न०) केलिगृह।
आरंभ—(न०) १ शुरु। प्रारम्भ। २ उत्पत्ति। ३ कोई महत् कार्य। ४ उत्सव। ५ वैभव प्रदर्शन। ६ सजावट। ७ तयारी। ८ कार्य प्रवर्ती। ९ गतिशीलता। १० पाप। ११ बधन। १२ हिंसा। १३ युद्ध। १४ घर। १५ मंदिर। देवालय। १६ राजभवन। महल। १७ अटारी।
आरंभणो—(क्रि०) १ शुरु करना। २ युद्ध करना।
आरभराण—दे० आरभराम।
आरभराम—(न०) १ देशों को जीतने एवं राजाओं को आधीन बनाने के लिये आक्रमण करने को हर समय तयार रहने वाला शक्तिशाली राजा। २ वह राजा या बादशाह जिसने बडे बडे अधिपतियों को अपने वश में कर रखा हो। ३ युद्ध देवता। ४ सम्राट। बादशाह। ५ युद्ध

रसिक वीर। *(वि०)* ग्राक्रमण करने वाला।

ग्रारभराय—*(ना०)* १ युद्ध देवी। २ शक्ति। दुर्गा। ३ राठौड़ों की कुल देवी। चामुण्डा।

ग्रारांण—*(न०)* युद्ध।

ग्रारात—*(ग्रव्य)* १ पास। निकट। *(न०)* शत्रु।

ग्राराधणो—*(क्रि०)* १ ग्राराधना करना। २ पूजा करना। ३ रक्षार्थ यत्न करना। ४ ग्रधिकार जमाना।

ग्राराधना—*(ना०)* १ सेवा। पूजा। २ उपासना। *(क्रि०)* करना।

ग्राराधी—*(वि०)* ग्राराधना करने वाला।

ग्रारावो—*(न०)* १ ऊंट या बैलगाड़ी का ताप। २ छोटी तोप। ३ गाड़ा वाहन।

ग्राराम—*(न०)* १ स्वास्थ्य लाभ। २ विश्राम। ३ शांति। चैन। ४ बाग। बगीचा।

ग्रारास—*(न०)* १ शीशा। दर्पण। २ सजावट।

ग्रारासणो—*(क्रि०)* सजाना। सजावट करना।

ग्रारासुर—*(ना०)* एक देवी।

ग्राराहणो—*(क्रि०)* ग्राराधना करना।

ग्रारि—*(ना०)* भींगुर। भिल्ली।

ग्रारिख—*(न०)* १ चिह्न। निशान। २ जोश। ३ दशा। ग्रवस्था। ४ सूरत। *(वि०)* समान। सदृश।

ग्रारिखो—*(वि०)* १ समान। सदृश। *(न०)* १ दशा। ग्रवस्था। २ ढंग। प्रकार।

ग्रारी—*(ना०)* १ करौती। २ बैलों को हांकने के लिये पनी कील लगी हुई लकड़ी। ३ जूता सीने का सूग्रा। सुतारी। ४ चमड़ा कागज ग्रादि छेदने का एक ग्रौजार।

ग्रारी-वारी—*(ना०)* १ तैयारी। २ हल चल।

ग्रारीगग—*(न०)* १ ग्रार्यजन। ग्रार्य लोग। हिन्दू। २ ग्रार्यावर्त।

ग्रारीसा—*(न०)* दर्पण। शीशा। काच।

ग्रारु—*(न०)* १ स्वीकार। मंजूर। २ सीमा। हद। ३ किनारा। ४ ग्रधिकार। वश।

ग्रारे ग्राणो—*(मुहा०)* १ स्वीकार करना। २ विचार करना।

ग्रारे राखणो—*(मुहा०)* मंजूर रखना।

ग्रारठो—*(न०)* रीठा का वृक्ष ग्रथवा फल।

ग्रारो—*(न०)* १ बड़ा करौत। २ बैलगाड़ी का एक उपकरण। ३ समय। ४ जैन मतानुसार सृष्टिकाल के विभाग का नाम। ५ बारी। पारी।

ग्रारोगण—*(न०)* भोजन। जीमन। जीमण।

ग्रारोगणो—*(क्रि०)* भोजन करना। जीमना। जीमणो।

ग्रारोगी—*(ना०)* चिता।

ग्रारोट—*(वि०)* जबरदस्त। बलवान।

ग्रारोध—*(न०)* १ ग्रवरोध। रोक। २ बिना ग्रवरोध। शीघ्र।

ग्रारोप—*(न०)* १ स्थापित करना। स्थापन। २ ग्राक्षेप। ३ तोहमत।

ग्रारोपण—*(न०)* १ मिथ्या ज्ञान। २ स्थापित करने का काम। लगाने का काम। स्थापन। स्थापना। ३ मिथ्या धारणा। मिथ्या ख्याल (किसी के संबंध में) ४ किसी के विषय में यह कहना कि उसने ऐसा कहा है।

ग्रारोपणो—*(क्रि०)* १ ग्रारोप लगाना। २ ग्रारोपित करना। ३ धारण करना। ४ धारणा बनाना। ५ लगाना। लागू करना।

आरोपो—(न०) १ करामात। २ कलंक। ३ जमाव। ४ विवाद।

आरोह—(न०) १ बाण। तीर। २ आक्रमण। ३ चढाव। चढाई। ४ सवारी। ५ सीढी। ६ स्वर को ऊंचा खींचना। ७ आलाप (संगीत)।

आरोहणो—(क्रि०) १ सवार होना। २ सीढी पर चढना। ३ आक्रमण करना। ४ स्वर को ऊंचा खींचना। आलाप देना (संगीत)।

आर्त—(वि०) १ संकट ग्रस्त। २ दीन। ३ पीडित।

आर्थिक—(वि०) १ अर्थ से सम्बंधित। २ धन या पूंजी सम्बन्धी।

आर्द्रा—(न०) एक नक्षत्र।

आर्य—(न०) १ सबसे पहले सभ्य बनने वाली जाति। २ हिन्दू। (वि०) १ श्रेष्ठ। २ पूज्य। ४ श्रेष्ठ कुलोत्पन्न।

आर्यसमाज—(ना०) महर्षि दयानंद द्वारा संस्थापित एक प्रसिद्ध धार्मिक संगठन।

आर्या—(ना०) १ पार्वती। २ सास। ३ दादी। ४ कुलीन स्त्री। ५ एक छंद।

आर्यावर्त्त—(न०) भारतवर्ष के उत्तर मध्य भाग का नाम।

आर्ष—(वि०) १ ऋषि संबंधी। २ वैदिक।

आल—(ना०) १ लडकी की संतान। नाती। २ वंश। कुल। ३ गीलापन। आर्द्रता। नमी। ४ लौकी। दूधी। घीया। ५ लम्बे आकार का मतीरा। एक जाति का लंब गोल मतीरा। ६ एक क्षुप जिसकी छाल से लाल रंग बनता है।

आळ—(ना०) १ छेड़छाड़। छेचस। २ खेल। क्रीडा। ३ ठठोली। मजाक। दिल्लगी। ४ झंझट। झमेलो। ५ युद्ध। लड़ाई। ६ धंगा। ७ बखेड़ा। लांछन। ८ दोष। ९ असत्य। झूठ। कूड़। १० मादा पशुओं की कामेच्छा। ११ मादा पशुओं की जननेंद्रा। १२ अयाल। (वि०) फजूल। निरर्थक।

आल औलाद—(ना०) १ बाल बच्चे। परिवार। २ अपनी और अपनी लडकी की संतान।

आळकस—(न०) आलस्य। सुस्ती। आळस।

आळखो—(न०) १ ओट। २ आलस। आळस।

आळग—(ना०) १ रुचि के अनुकूल। पसंद। २ प्रीति। प्रणय। प्रेम।

आळगणो—(क्रि०) १ अच्छा लगना। पसंद आना। २ जी लगना।

आळ जंजाळ—(न०) जगत का मोह जाल। माया जाल। प्रपंच।

आलणा—(न०) साग तीवन आदि को पट्ट बनाने के लिये उसमें मिलाया जाने वाला बसन।

आलणो—(क्रि०) १ देना। २ सौंपना। (न०) १ कबूतर का घर। २ कबूतरों का दडबा। आळनो।

आळ-पताळियो—(वि०) १ अति चंचल। २ बखेड़ा बाज। ३ ऊधमी।

आळ पंपाळ—(न०) १ झंझट। बखेड़ा। २ झंझटबाजी। ३ प्रपंच। माया जाल मोह जाल। आळ-जंजाळ।

आलम—(न०) १ ईश्वर। २ संसार। दुनिया। ३ बडा जन समूह। ४ बादशाह। ५ मुसलमान। ६ 'माधवानल कामकंदला' प्रेम काव्य ग्रंथ के रचयिता एक मुसलमान कवि।

आलमखानो—(न०) १ नक्कारखाना। २ राज दरबार की गायिकाएँ और तबलचियों के रहने और उनके साज सामान रखने का स्थान।

आलमगीर—(न०) बादशाह औरंगजेब का विरुद।

आलमजी—(न०) मारवाड व मालानी प्रांत में राडधरा क्षेत्र के एक प्रसिद्ध लोक-देवता। (आलमजी अत्यन्त पराक्रमी राठौड राजपूत थे। वे वचनसिद्ध संत कहे जाते हैं।)

आलय—(न०) घर। स्थान।

आळस—(न०) आलस। सुस्ती।

आळसणो—(क्रि०) १ आलसी होना। २ आलस करना। ३ देरी करना। ४ मुलतवी करना।

आळसवाण—(वि०) १ आलसी। सुस्त। २ अकर्मण्य।

आळसाणो—(न०) स्थगित। मुलतवी। (क्रि०) अलसाना। आलस करना।

आळसी—(वि०) १ सुस्त। धीमा। २ आलसी। आळसी।

आळसेट—(न०) आलस। (क्रि० वि०) १ कठिनाई से। मुश्किल से। २ धीरे धीरे। ३ सुस्ती से।

आळसटू—(वि०) सुस्त। आलसी।

आलस्य—दे० आलस।

आळ ग—(ना०) घोडी की मस्ती।

आलवण—दे० आलबन।

आलबणो—(क्रि०) १ सहारा पाना। २ सहारा देना।

आलबन—(न०) १ सहारा। २ आश्रय। ३ रसोद्रेक की आधारभूत वस्तुएं। (साहि०) ४ रस का एक अंग। (साहि०)

आलाण—(न०) हाथी बांधने का खूंटा।

आळाणो—दे० आळसाणो।

आलाप—(ना०) १ तान। राग विस्तार। लय का उठाव। २ स्वर माधुरी। ३ संगीत मधुरिमा। ४ कोयल का स्वर।

आलापणो—(क्रि०) १ आलाप देना। आलापना। तान लगाना। २ गाना।

आळावणो—(क्रि०) हराना। परास्त करना।

आलावणो—(क्रि०) १ दांत पीसना। २ मुंह में आग लाना।

आळियो—(न०) १ छोटा आला। छोटा ताक। २ दे० असाळिया।

आलिंगणो—(क्रि०) आलिंगन करना। बाहुपाश में लेना।

आलीजा—(वि०) रसिक। अलबेला।

आलीजो भंवर—(न०) १ शौकीन युवक। २ प्रेम सम्बन्धी लोक गीतों का रसिक नायक। ३ रसिक नायक का एक विशेषण। (वि०) १ रसिक। शौकीन।

आलीणो—(वि०) आलीन। लीन। अनुरक्त।

आलू—(न०) एक खाद्य कंद। आलू।

आळूझणो—(क्रि०) उलझना।

आळूदा—(वि०) १ सज्जाभूत। सजा हुआ। २ तयार। ३ थकान मिटाया हुआ। स्वस्थ।

आळूधणो—(क्रि०) १ उलझना। २ बंधना। ३ जुडना।

आळूधो—(वि०) १ उलझा हुआ। २ फंसा हुआ। बंधा हुआ।

आळेटणो—दे० आळोटणो।

आलेटो—(न०) १ गीली मिट्टी। गारो। २ गीली मिट्टी के पिण्डा से बनाई हुई नीची दीवार। डंडवारा। ३ गीलापन। नमी। (वि०) मिट्टी से निर्मित।

आळै—दे० आलय।

आळै-नाहर—(न०) सिंह की गुफा। (अव्य०) नाहर की गुफा में।

आलो—(वि०) १ भीगा हुआ। २ नमी वाला। ३ जो सूखा न हो।

आळो—(न०) १ ताक। आला। २ घोंसला। (वि०) १ अपरिपक्व अथवा कच्चा (फल)। २ बिना कमाया

या बिना साफ किया हुआ (पशु या चमड़ा)। *(प्रत्य०)* १ सबंध कारक 'का' अर्थ का सूचित करने वाली एक विभक्ति। २ सबंध या कर्तृ वाचक एक प्रत्यय। वाला। जैसे—घर आळो = घरवाला। गाम आळो = गांव वाला।

आलोच—*(न०)* १ मन के भाव। २ विचार। ३ परामर्श। मंत्रणा। ४ चिंता। फिक्र। ५ चिंतन। आलोचन।

आलोचणो—*(क्रि०)* १ आलोचना करना। २ विचार करना। ३ परामर्श करना। ४ चिंता करना। ५ समझना।

आलोज—*(न०)* १ मन के भाव। २ विचार। ३ संकल्प। ४ आलोचना।

आलोजणो—दे० आलोचणो।

आळोटणो—*(क्रि०)* १ लेटे हुए करवटें बदलना। लोटना। जागते हुए रात रहना। लेटना। २ भय के कारण करवटें बदलना। ४ आराम करना। विश्राम करना। ५ वचन देकर फिर जाना। नट जाना।

आलो-तालो—*(वि०)* १ आला ताला। उदार। २ मौजी। ३ भाग्यवान। ४ चंचल। चपल।

आलोयणा—*(ना०)* आलोचना।

आलोवणो—*(क्रि०)* मिलाना।

आळ्हो—*(न०)* १ आलस्य। सुस्ती। ढिलाई।

आव—*(ना०)* १ आमद। आमदनी। २ आदर। सत्कार। आवभगत। ३ आयु। ४ उमंग। उत्साह।

आव-आदर—*(न०)* आदर। सत्कार। स्वागत। आवभगत।

आवक—*(ना०)* १ आमदनी। २ आयात।

आवकार—*(न०)* स्वागत। सम्मान।

आवखाण—दे० आवखान।

आवखान—*(न०)* मरे हुए गाय या बैल आदि का बिना साफ किया हुआ पूरा चमड़ा।

आवगो—दे० आउगो।

आवगी—*(वि० ना०)* संपूर्ण। पूरा।

आवगो—*(वि०)* १ पूरा। सम्पूर्ण। पूरा का पूरा। २ निजी। ३ मौलिक। *(न०)* १ बिना राजस्व की भूमि का दान। २ वह भूमि जिसका कर नहीं लिया जाता।

आवजाव—*(न०)* १ आना जाना। आवागमन। २ मेल मुलाकात। ३ आने जाने का संबंध। आतिथ्य संबंध।

आवट—*(न०)* १ उबाल। २ क्रोध। गरमी। ३ कुढ़न। ४ युद्ध। ५ संहार। नाश। ६ राह। बाट। प्रतीक्षा।

आवटकूटो—*(न०)* १ कलश। दुख। २ मनस्ताप। ३ नाश। ४ झगड़ा।

आवटणो—*(क्रि०)* १ उबाल आना। उबलना। औटना। २ क्रोध से मन ही मन दुखी होना। ३ कुढ़ना। व्यथित होना। ४ दूध का उबलकर गाढ़ा होना। ५ भिड़ना। लड़ना। ६ नाश होना।

आवड—*(ना०)* चारण जाति की एक लोक देवी।

आवडणो—*(क्रि०)* १ मन लगना। सुहाना। २ अनुकूलता होना। ३ भिड़ना। लड़ना।

आवडत—*(ना०)* १ स्मृति तथा बुद्धि की उपज। सूझ। उपज। उद्भावना। २ कल्पना।

आवडी—*(वि०)* इतनी।

आवडो—*(वि०)* इतना।

आवण—*(न०)* आगमन।

आवण-जावण—*(न०)* १ आवागमन। जन्म लेने और मरने की क्रिया। जन्म

मरण। २ एक दूसर के यहां आने-जाने का संबंध।

आवणारी—(वि०) आने वाली।

आवणारो—दे० आवणियो।

आवणियो—(वि०) आने वाला।

आवणू—(वि०) आने वाला।

आवणो—(क्रि०) १ आना। पहुँचना। २ प्राप्त होना। ३ किसी भाव का उत्पन्न होना।

आवत समा—(अव्य०) आते ही। पहुँचते ही।

आवध—(न०) आयुध। शस्त्र।

आवध-नख—(न०) १ सिंह। २ एक शस्त्र।

आवधान—(न०) गम। हमला।

आवधी—(न०) १ सिपाही। २ सैनिक। (वि०) आयुध वाला।

आवभगत—(ना०) स्वागत-सत्कार। आदर सत्कार।

आवर—दे० अवर।

आवरण—(न०) १ परदा। २ ढक्कन। ३ वेष्टन।

आवरणो—(क्रि०) १ घेरना। २ लपटना। ३ ढकना। ४ परदा डालना। ५ आवृत्त होना। घिर जाना। ६ आवृत्त करना।

आवरत—(वि०) १ आवृत्त। घिरा हुआ। २ छिपा हुआ। ३ आच्छादित। (न०) १ वृत्ताकार। घेरा। २ चक्कर। घुमाव। ३ संकट। ४ चिंता। ५ पानी का चक्र। भँवर। ६ सेना। ७ युद्ध।

आवरदा—(ना०) १ आयु। उम्र। २ जीवन। जिंदगी।

आवरो—(न०) १ ससुराल से मिलने वाला धन। २ दहेज। ३ आमदनी।

आवळ—(ना०) एक क्षुप जिसकी छाल से चमड़ा रंगा (कमाया या साफ किया) जाता है। (वि०) निषिद्ध। खराब।

आवळ-बावळ—(वि०) १ बेजा। कुत्सित। २ अश्लील। ३ उलटा।

आवळा भूल—(वि०) १ सोलह शृंगार से सुसज्जित (स्त्री)। २ अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित (योद्धा)।

आवळी—(ना०) अवली। पंक्ति। श्रेणी। (वि०) १ भयंकर। २ सज्जित। ३ टेढ़ी। ४ उलटी। ५ दृढ़। मजबूत।

आवळी-घड़ा—(ना०) १ विकट सेना। २ सुसज्जित सेना। ३ विजयी सेना।

आवळी चमू—दे० आवळी घड़ा।

आवळो—(वि०) १ विकट। २ मजबूत। दृढ़। सज्जित।

आवस—(क्रि० वि०) अवश्य। जरूर। (वि०) तयार। तत्पर।

आवा गमन—(न०) १ आना जाना। आवागमन। २ जीवात्मा के बार बार जनम लेने और मरने की क्रिया। जनमना और मरना। २ कर्म बंधन।

आवाच— (ना०) दक्षिण दिशा।

आवाज—दे० अवाज।

आवादान—(ना०) १ आमदनी। आय। २ उपज। पैदावार। ३ आबादी।

आवादानी—दे० आवादान।

आवारो—(वि०) १ निकम्मा। २ निठल्ला। आवारा। ३ बदमाश। ४ लुच्चा।

आवास—(न०) १ प्रासाद। महल। २ घर। ३ रहवास। रहठाण। निवास। ४ आकाश।

आवाह—(न०) आहव। युद्ध।

आवाहण—(न०) आह्वान। निमन्त्रण। बुलावा।

आवाहणो—(क्रि०) १ बुलाना। २ चलाना। ३ प्रहार करना।

आवां छा—(व०क्रि०) १ आते हैं। २ आता हूँ।

आवीला—(भ० क्रि०) १ आयेंगे। २ आयेंगी।

आवा हाँ—दे० आवां छां।

आवू छू—दे० आऊ छू।

आवू ला—(भ० क्रि०) १ आऊगा। २ आऊंगी।

आवू हूँ—दे० आऊ छू।

आवेस—(न०) १ आवश। जोश। २ क्रोध। ३ वेग। ४ भूत प्रेत का लगाव। ५ प्रवेश।

आवै छै—(व० क्रि०) १ आता है। २ आते हैं।

आवैला—(भ० क्रि०) १ आयेगा। आवगा। आयगा। २ आयगी।

आवैली—(भ० क्रि० ना०) आयगा। आयगी।

आवै है—दे० आवै छै।

आवो जावो—दे० आव जाव।

आव्रजणो—(क्रि०) १ धारण करना। २ त्यागना। छोड़ना।

आव्रत—दे० आवरत।

आश—दे० आशा।

आशना—(ना०) १ मित्र। दोस्त। २ परस्त्री लपट। ३ उपपति। जार। ४ जारिणी। व्यभिचारिणी। ५ प्रमिका।

आशनाई—(ना०) १ मित्रता। दोस्ती। यारी। २ स्त्री-पुरुष का नाजायज सबंध।

आशय—(न०) १ अभिप्राय। मतलब। २ इच्छा। ३ उद्देश्य।

आशका—दे० आसका।

आशा—दे० आसा।

आशावान—(वि०) आशा रखने वाला।

आशिष—(ना०) आशीर्वाद।

आशीवाद—(न०) आशीवचन। दुआ। मगल कामना।

आशुकवि—(न०) तुरत कविता बना देने वाला कवि।

आशुतोष—(वि०) शीघ्र प्रसन्न होने वाला।

आश्चय—दे० अचरज।

आश्रम—दे० आसम।

आश्रय—(न०) १ आसरा २ शरण।

आशीवाद—(न०) आशीर्वाद।

आश्वासन—(न०) दिलासा। [illegible]

आश्विन—(न०) कुआर मास का महीना।

आषाढ—दे० असाढ।

आषाढी—(वि०) १ आषाढ मा[illegible] धित (ना०) आषाढ मास की [illegible] या पूर्णिमा।

आस—(ना०) १ आशा। २ भरोसा। ३ छाछ का पानी [illegible]

आसकद—दे० आसगध।

आसका—(ना०) १ विभूति स्व[illegible] का भस्म। विभूति। भभूती। [illegible] महात्माओं की धूनी की भस्मी। [illegible] लाया का लिए जाने वाले धूपदानी [illegible] की भस्मी। भभूती। ४ आ[illegible] मगल कामना।

आसगध—(न०) अश्वगधा नामक [illegible] वनौषधि।

आसगणो—(क्रि०) १ स्वीकार क[illegible] २ साहस करना।

आसगीर—(वि०) आशावान। आशा[illegible]

आसण—(न०) १ सध्या वन्दन और [illegible] के समय बैठने का कुश या ऊन का [illegible] हुआ बिछावन। आसन। २ बैठने [illegible] विधि। बैठक। ३ पीढ़ा। च[illegible] ४ साधुओं का स्थान। आश्रम। म[illegible] ५ योग साधन के लिये योगी के ब[illegible] की विधि (पद्मासन, सिद्धासन, स्व[illegible] वामन आदि ८४ आसन)। ६ सुरत [illegible] विधि। (मैथुन के ६४ प्रकार के आसन[illegible] ७ ऊंट के ऊपर अगे आने वाले पला[illegible]

महावत के बैठने की जगह। हाथी का कंधा।

आसणियो—*(न०)* १ आसन। २ छोटा आसन। ३ पीढ़ा।

आसत—*(ना०)* १ भक्ति। अनुराग। आसक्ति। २ आस्तिकता। ३ सत्य। ४ शक्ति। बल। ५ करामात। चमत्कार। ६ विश्वास। ७ अभिलाषा। ८ लाभ। ९ मंगल। कल्याण। १० अधिकार। ११ अस्तित्व। स्थिति। १२ आस्था। *(वि०)* १ जन्म मरण रहित। २ आस्तिक।

आसता—दे० आसथान सं० १ से ५।

आसति—दे० आसत।

आसथा—*(ना०)* १ आस्था। श्रद्धा। २ विश्वास। ३ भावना।

आसथान—*(न०)* १ घर। २ ठौर। जगह। ३ नगर। ४ स्वस्थान। ५ सभा। आस्थान ६ खेड़पाटण (मारवाड़) में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले राव सीहा के पुत्र का नाम।

आसना—दे० आशना।

आसनाई—दे० आशनाई।

आसन्न—*(क्रि०वि०)* पास। निकट।

आसन्नो—दे० आसन्न।

आसपद—*(दे०)* आस्पद।

आसपास—*(क्रि०वि०)* १ निकट। नजदीक। नजीक। २ चारों ओर। ३ इधर उधर।

आसमाण—*(न०)* आसमान। आकाश।

आसमानो—*(न०)* तंबू। शामियाना।

आसमेध—दे० अश्वमेध।

आसरम—दे० आश्रम।

आसराम—*(न०)* १ आश्रम। २ मकान का कमरा। कोठरी। ओरो।

आसरियो—*(न०)* १ घर। मकान। २ आश्रय। सहारा। आसरो।

आसरी वचन—दे० आशीर्वाद।

आसरीवाद—दे० आशीर्वाद।

आसरो—*(न०)* १ आश्रय। अवलंब। २ शरण। ३ भरोसा। ४ मकान। ५ झोंपड़ा। ६ अन्दाजा। अनुमान। ७ प्रतीक्षा। ८ आसकरण का पुत्र वीर दुर्गादास राठौड़।

आसल—*(न०)* १ आक्रमण। २ आसकरण का पुत्र वीर दुर्गादास। ३ दुर्गादास के पिता आसकरण।

आसव—*(न०)* १ शराब। मदिरा। २ खमीर औषधि। पौधे के मद्य औषधि। ३ अर्क। अरक।

आसक—दे० आसका।

आसका—*(ना०)* १ संशय। संदेह। २ डर। भय। ३ चिंता। ४ अनिष्ट की संभावना। खटको।

आसग—*(ना०)* १ शक्ति। बल। २ साहस। ३ संग। लगाव। ४ साथ। ५ मिलाप। ६ संबंध। नाता।

आसगणो—*(क्रि०)* १ साहस करना। २ वश में करना। ३ अपनाना। ४ स्वीकार करना। ५ उत्पन्न होना। ६ तबियत लगना। ७ प्रगट होना।

आसग-बाहिरो—*(वि०)* १ अशक्त। शक्तिहीन। २ नाहिम्मत। साहसहीन।

आसगरू—*(वि०)* पराक्रमी। शक्तिशाली।

आसगो—*(न०)* १ पड़ोस। निकट निवास। २ आश्रय। सहारा। ३ भरोसा। ४ शक्ति। बल। ५ साहस। ६ स्पर्श। ७ पास। निकट। ८ आशा।

आसदी—*(ना०)* १ बैठने का पाटा। बाजोट। २ पूजा पाठ आदि करते समय बैठने का आसन। ३ प्रधान पुरुष का आसन। ४ साधु महात्माओं के बैठने का पाटा या आसन।

आसा—*(ना०)* १ आशा। उम्मेद २ गर्भ। हमल। ३ दिशा।
आसाउत—दे० आसाणी सं० १।
आसाऊ—*(वि०)* आशावान।
आसागीर—*(वि०)* आशावान।
आसाढ—*(न०)* आषाढ मास। जेठ और सावन के बीच का महीना।
आसाढी—*(वि०)* आषाढ मास संबंधी। आषाढ मास का।
आसाण— *(वि०)* आसान। सरल। सुगम।
आसाणी—*(न०)* १ आसकरण का पुत्र प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौड़। *(ना०)* आसानी। सरलता। *(क्रि०वि०)* आसानी से। सुगमता से।
आसान—दे० आसाण।
आसापुरा—*(ना०)* आशा पूरा करनेवाली एक देवी। आशापूर्णा।
आसापुरी—दे० आसापुरा।
आसापुरी धूप—*(न०)* देव पूजन के लिये (गंध द्रव्यों को कूट कर) बनाया हुआ एक सुगंधित धूप।
आसा बरदार—*(न०)* सोने या चाँदी के बने आसा को लेकर राजा या महंत के आगे चलने वाला सेवक। चोबदार।
आसाम—*(न०)* भारत का एक पूर्वोत्तरीय प्रदेश।
आसामी—*(वि०)* आसाम देश का। आसाम देश से संबंधित। *(न०)* १ लोक। जन। व्यक्ति। २ ऋणी। देनदार। ३ प्रतिष्ठित व्यक्ति। ४ मुवक्किल। ५ अभियुक्त। ६ कृषक। ७ वह व्यक्ति जिससे लेन देन या आर्थिक प्राप्ति का व्यवहार हो। ८ ऋणदाता का वह कर्जदार कृषक जो अपनी खेती के काम के लिये काटा और व्याज से समय-समय पर उससे कर्ज लेता रहता है। ९ भोग (अनाज का अमुक भाग) रूप में हासल देकर बोहरे की जमीन जोतने वाला व्यक्ति।
आसामीदार—*(न०)* १ बोहरगत का काम करने वाला व्यक्ति। आसामियों वाला। २ प्रतिष्ठित व्यक्ति। ३ धनवान। ४ मुखिया।
आसामुखी—*(वि०)* आशावान।
आसार—*(न०)* लक्षण। चिन्ह। २ ढंग। तरीका। ३ दीवार की चौड़ाई। घोसार। ४ वर्षा की झड़ी। ५ प्रतिवर्षा।
आसालुब्ध—*(वि०)* १ आशालुब्ध आशावान। २ प्रमातुर।
आसालुब्धी—*(वि०)* आशान्वित।
आसाळू—*(वि०)* आशावान।
आसावत—दे० आसाउत।
आसावत—*(वि०)* आशावान।
आसावरि—दे० आसापुर।
आसावरी—*(ना०)* प्रभात समय गाई जाने वाली एक रागिनी।
आसावान—*(वि०)* आशावान।
आसावासा—*(न०)* १ किसी व्यक्ति के विशेष आने जाने का स्थान। २ रहने का स्थान।
आसाँ—दे० आवाँला।
आसिरवाद—दे० आसास।
आसी—*(भ०क्रि०)* आयेगा। *(ना०)* सर्प की दाढ।
आसीवाळो—दे० आहीवाळो।
आसीस—*(ना०)* आशिष। आशीर्वाद।
आसीसणो—*(क्रि०)* आशिष देना।
आसीगणो—*(क्रि०)* १ स्थानान्तर या ग्रामान्तर का रुचिकर होना। मन लगना।
आसुगाळ—दे० आउगाळ।
आसुगाळो—दे० आउगाळ।
आसू—दे० आहू।

आसूदो—दे० आसूधा।
आसूधा—(वि०) १ परिवार और धन धान्य से सम्पन्न। २ धन का। ३ स्वस्थ। ४ जिसने विश्राम लेकर थकान दूर कर ली हो। प्रबलाना। ५ काम में नहीं ली हुई (वस्तु)। ६ बिना जोता हुआ (खेत)। पड़तल। आउमो।
आसू—दे० आसू ला।
आसेर—(न०) किला। दुर्ग। गढ़।
आसो—(न०) १ सोने या चांदी से मढ़ा एक डंडा जिसे राजाओं और महाधीशों के आगे चोबदार लेकर चलता है। २ साधुओं का एक आसन से उठकर भजन करते समय आगे की ओर हाथों को टिकाकर सहारा लेने का एक उपकरण। ३ आश्विन मास। ४ आसव रंग की एक शराब। आसव। ५ ध्यान। विचार। ६ एक रागिनी। (वि०) महीन। झीना।
आसोज—(न०) आश्विन मास। आसो। आहू।
आसोजी—(वि०) आसोज मास का। (न०) आसाजी बारहठ नाम का एक प्रसिद्ध चारण कवि।
आस्तिक—(वि०) ईश्वर का अस्तित्व मानने वाला।
आस्तीन—(ना०) पहनने के कपड़े की बांह।
आस्त—(क्रि० वि०) धीरे।
आस्था—(ना०) १ श्रद्धा। २ सहारा।
आस्थान—(न०) १ बैठने का स्थान। २ सभा। दे० आसथान।
आस्पद—(न०) १ स्थान। जगह। २ आधार। ३ कुल। वंश। ४ जाति। ५ पद। ओहदो।
आस्रम—(न०) १ ऋषि मुनियों का निवास स्थान। आश्रम। २ तपस्वी की कुटिया। ३ साधु सन्यासियों के रहने का स्थान। मठ। ४ मनुष्य जीवन की अलग अलग चार अवस्थाएं। आयु का दृष्टि से आर्यों (हिन्दुओं) द्वारा मनुष्य की आयु के किये गये शास्त्रोक्त चार विभाग। ५ दसनामी सन्यासियों का एक भाग। ६ चार की संख्या का सूचक शब्द।
आस्रय—दे० आश्रय।
आस्रीवाद—दे० आशीर्वाद।
आस्वाद—(न०) स्वाद। जायका। सवाद।
आह—(अ०) एक कष्ट सूचक शब्द।
आहट—(ना०) चलने का शब्द। पैर की खुड़का।
आहडनरेस—(न०) सीसोदिया वंश का राजा। मेवाड़ के महाराणाओं की एक उपाधि।
आहड पाहड—(क्रि०वि०) आसपास।
आहड़ा—(न०) १ सीसोदिया वंश का क्षत्री। २ आहड़ का निवासी।
आहण—(न०) १ आसन। २ ऊंट के पलान का बैठक। ३ युद्ध। ४ सेना।
आहणणो—(क्रि०) १ मारना। नाश करना। २ युद्ध करना।
आहत—(वि०) घायल। जख्मी।
आहरट—(ना०) १ सेना। २ युद्ध। ३ संहार।
आहरण—(न०) आभरण। आभूषण।
आहरी—(ना०) घास तिनकों आदि घास की सींकों से बनाई हुई ढढुरी। आश्रया।
आहरो—(न०)१ बड़ी आहरी। २ मकान। ३ झोंपड़ा। ४ आश्रय। आसरो।
आहव—(न०) युद्ध। लड़ाई।
आहवणो—(क्रि०) युद्ध करना। भिड़ना।
आहवणो—(क्रि०) १ मारना। नाश करना। २ प्रहार करना।
आहस—(न०) १ अंश। २ आत्मबल। ३ पराक्रम। शक्ति। ४ साहस।

५ प्राण । ६ जीवात्मा । ७ व्यक्तित्व । ८ स्वाभिमान ।
श्राह्मगो—(क्रि०) १ साहस करना । २ श्रात्मबल का जाग्रत होना । ३ श्रसीम शक्ति से भिड़ना ।
श्राह्मी—(वि०) १ साहसी । २ तेजस्वी । प्रतापी । ३ श्रात्मबली । ४ स्वाभिमानी ।
श्राहा—(श्रव्य०) श्राश्चर्य श्रौर हर्ष सूचक शब्द ।
श्राहाड—(न०) मेवाड़ का एक ऐतिहासिक प्राचीन नगर । श्रापाट ।
श्राहाडा—(न०) श्राहाड़ नगर से संबंधित होने के कारण मेवाड़ के गहलोत शाखा का एक नाम ।
श्राहार (न०) भोजन ।
श्राहार विहार—(न०) रहन-सहन ।
श्राहिज—(सर्व०) यही । (श्रव्य०) यहां तो ।
श्राहिस्ता—दे० श्रास्त ।
श्राही—(सर्व०) यही ।
श्राहीठाणा—दे० श्राइठाण ।
श्राहीणी—दे० श्राईणी । श्रांईणी ।
श्राहीर—(न०) श्रहीर । गूजर ।
श्राहीवाळा—(न०) ऋणी की श्रोर से ऋण दाता को लिखकर दिये गये दस्तावेज की वह शर्त जिसके अनुसार श्रमुक श्रवधि के श्रंदर ऋण न चुकाया जा सके तो ऋणी की चल श्रचल सम्पत्ति जिसका दस्तावेज में नामोल्लेख किया हुश्रा रहता है ऋणदाता का श्रधिकार हो जाता है ।
श्राहीवाळो-खत—(न०) ऋणी की श्रोर से ऋणदाता को लिखकर दिया गया दस्तावेज जिसमें श्राहीवाळे की शर्त लिखी रहती है ।
श्राहुगाळ—दे० श्राउगाळ ।
श्राहुगाळो—दे० श्राउगाळो ।
श्राहुट—(न०) युद्ध ।
श्राहुटणो—(क्रि०) १ युद्ध करना । २ मारना । वीरगति को प्राप्त होना । ३ प्राण गँवाना । नष्ट करना । ४ नष्ट होना । ५ पीछे मुड़ना । ६ भाग जाना । चला जाना ।
श्राहुड—(न०) युद्ध ।
श्राहुडणो—(क्रि०) १ लड़ना । भिड़ना । युद्ध करना ।
श्राहुति—(ना०) १ हवन में मंत्र बोलने के साथ घी, तिल जौ इत्यादि की डाली जाने वाली सामग्री । २ वह मात्रा जो एक बार हवन में डाली जाय । ३ बलिदान । ४ समर्पण ।
श्राहुटमा—(न०) चित्तौड़ के सिसोदियों का एक विरुद । (वि०) युद्ध रसिक । युद्धप्रिय ।
श्राहू—(न०) श्राश्विन मास । श्रासोज ।
श्राहूठणो—दे० श्राहुटणो ।
श्राहूत—(वि०) निमंत्रित । बुलाया हुश्रा । बुलायोड़ो ।
श्राहूतण—(ना०) १ श्रग्नि । श्राग । २ निमंत्रण । बुलावो । तेड़ो । (वि०) निमंत्रित ।
श्राहेड—(ना०) शिकार । श्राखेट ।
श्राहेडियो—दे० श्राहेडी ।
श्राहेडी—(न०) १ शिकारी । श्राखेटक । २ भील । ३ थोरी । ४ श्रार्द्रा नक्षत्र ।
श्राहेडो—(न०) १ शिकार । श्राखेट । २ शिकारी । श्राखेटक ।
श्रां—(सर्व०व०व०) १ इन्होंने । इनों । २ ये । (वि०) इन । इनके । (श्रव्य०) एक नकारात्मक उद्‌गार । 'श्रांहां' का छोटा रूप । २ श्राश्चर्य सूचक उद्‌गार ।
श्राईणी—(ना०) वह गाय या भैंस जिसने पुनः बियाने तक (बियाने के कुछ समय पूर्व) दूध देना बंद कर दिया हो । श्राइणी ।

आँईणो—*(न०)* १ किसी व्यक्ति के यहाँ मवेशियों के दूध देना बंद हो जाने की स्थिति। वह समय या स्थिति जिसमें किसी व्यक्ति के दुधारू पशुओं ने पुन: बियाने तक दूध देना बंद कर दिया हो। २ घर में दूध देने वाले पशुओं का अभाव।

आंक—*(न०)* १ अंक। चिह्न। निशान। २ संख्या का चिह्न। ३ रुपये का बीसवाँ भाग (गणित)। ४ रुपये का सौवाँ भाग (ब्याज फलावट में)। आँकड़ा। ५ भाग्य। ६ प्रतीक। ७ सीमा। ८ गोद।

आंकड़ो—*(न०)* १ माल सामान बनने का वार्षिक विवरण। २ आय व्यय का वार्षिक विवरण। ३ माल खरीदी का व्योरे वार पुरजा। बिल। ४ एक औजार या शस्त्र। ५ संख्या।

आंकणो—*(क्रि०)* १ मूल्यांकन करना। २ तोलना। ३ कूतना। अनुमान करना। ४ निश्चित करना। ५ निशान लगाना।

आंकल—*(वि०)* दाग कर के निशान लगाया हुआ (पशु)। चिह्नित। २ गिनती में उस कोटि का। ३ वीर।

आँकस—*(न०)* १ अंकुश। भय। डर। २ रोक। प्रतिबंध।

आँकुस—दे० आंकस।

आँकूर—*(न०)* ठीक होते हुए घाव में आने वाले अंकुर। जख्म का भराव।

आँको—*(न०)* १ पतन। २ भाग्य। उत्थान। ३ भवितव्यता। ४ सीमा। मर्यादा।

आंको आणो *(मुहा०)* १ दुर्दिन आना। २ भाग्य पलटना।

आंको आवणो—दे० आंको आणो।

आँकोडियो—*(न०)* १ एक लंबा बाँस जिसके एक सिरे पर हंसिया बंधी रहती है। २ लोहे का एक टेढ़ा काँटा।

आंकूर—दे० आँकूर।

आंख—*(ना०)* १ नेत्र। लोचन। २ आलू गन्ना आदि का वह भाग या स्थान जहाँ से अंकुर फूटता है। ३ वृक्ष पौधे आदि की शाखा का वह अंकुर जिसको किसी अन्य वृक्ष या पौधे में कलम करने के लिये काम में लाया जाता है। ४ मोटे चमड़े की सिलाई करने के लिये किया जाने वाला छेद। ५ सुराख। छेद।

आंखड़ली—*(ना०)* आँख।

आंखड़ी—*(ना०)* आँख।

आंख फूटणी—*(ना०)* एक लता। *(मुहा०)* आँख में चोट लगना। २ चोट लगने से आँख का बेकार होना।

आंख मीचणी—*(ना०)* आँख मिचौनी का खेल। *(मुहा०)* मरना। मरजाना।

आंख-रातड़—*(न०)* ऊंट।

आँखां-अखम—*(वि०)* अंधा।

आंखां-जखम—*(वि०)* अंधा।

आंख्यां-मजम—*(वि०)* अंधा।

आगछ—दे० आंकस।

आंगणो—*(न०)* १ आंगन। २ चौक। *(क्रि०)* बैलगाड़ी के पहिये की धुरी में तेल देना। औंगना।

आँगनियो—दे० आगणियो।

आंगम—*(न०)* १ अधिकार। २ गर्व। ३ शक्ति। बल। ४ हिम्मत। साहस। ५ उत्साह।

आँगमण—*(न०)* १ वश। अधिकार। २ गर्व। ३ शक्ति। बल। ४ साहस। ५ उत्तेजन। ६ सहनशक्ति। *(वि०)* १ वेगों को तीव्र करने वाला। उत्तेजक। २ उत्साह वाला। प्रेरक।

आँगमणो—*(क्रि०)* १ युद्ध करना। २ आक्रमण करना। ३ साहस करना।

४ जोश में आगे आगे बढ़ना। ५ कूदना। ६ वश में करना। ७ अधिकार करना। ८ कष्ट पहुंचाना। ९ स्वीकार करना। १० गर्व करना। ११ निश्चय करना। १२ गति का तीव्र करना।

आंगळ—(ना०) १ अंगुली। २ अंगुलियों से किया जाने वाला माप। ३ अंगुली की मोटाई का माप। अंगुल-परिमाण। ४ अंगूठे की मोटाई।

आंगळी—(ना०) १ अंगुली। उंगली। २ हाथी की सूंड के आगे का नोका भाग।

आंगळी भरन—(न०) पुनर्विवाह करने पर अपने साथ लेकर आई हुई पूर्व पति की संतान।

आंगवणो—दे० आंगमणो।

आंगी—(ना०) १ चोली। अंगिया। २ होली के उत्सव पर इंडियां की गैर नाचते समय पहिना जाने वाला बगलबंदी अंगरखी से जुड़ा हुआ बड़ा घाघरा। ३ जामा। ४ देवमूर्ति का मुंह के अतिरिक्त सामने के सर्वांग को ढक देने वाली सोने या चांदी के पत्तर की बनाई हुई शरीराकार एक खोल। अंगिया। ५ बादशाही जमाने में राजा, बादशाह, नवाबों आदि के पहिनने का अंगरखा सहित एक जामा।

आंगो—(न०)१ स्वभाव। आदत। २ भाग का हिस्सा।

आंच—(ना०) १ अग्नि। २ ज्वाला। ३ ताप। ४ कष्ट। तकलीफ। ५ क्रोध।

आंचळ—(न०) १ स्तन। २ स्त्रियों की ओढ़नी का छाती पर रहने वाला छोर।

आंचाताणो—(वि०) ऐंचाताना।

आंचै—(क्रि०वि०) शीघ्रता से।

आंजणी—(ना०) आंख की पलकों के किनारों पर होने वाली फुंसी। गुहरी। बिलनी। गुहाजनी।

आंजणो—(क्रि०) अंजन लगाना।

आंझो—(वि०पु०) १ अटपटा। २ कष्ट कर। दुखदाई। ३ कठिन। ४ दुर्गम (मार्ग)। ५ अथाह और बिना बस्ती वाला (प्रदेश)।

आंट—(ना०) १ टेढ़ापन। बांकापन। २ शत्रुता। ३ द्वेष। ४ हठ। दुराग्रह। ५ बांकापन। वीरता। ६ कपट। ८ लगने का दाव। घात। ७ घमंड। ९ दांव। १० धोती की ऐंठन। अंटी।

आंटण—(न०) हाथ-पांव की अंगुलियों तथा हथेली की चमड़ी में किसी वस्तु के निरन्तर घिसाव से गांठ की तरह उभरा हुआ निर्जीव चमड़ी का कठोर भाग। २ दे० अटी।

आंटल—दे० आंटाळ।

आंटाखोर—(वि०) १ झगड़ाखोर। २ बखेड़ाबाज।

आंटादार—(वि०) १ मरोड़दार। ऐंठदार। घमंडी। २ झगड़ालू।

आंटायत—(वि०) १ बैर का बदला लेने वाला। २ द्वेषी। ३ शत्रु।

आंटाळ—(वि०) १ झगड़ालू। २ बदमाश। ३ शत्रु। ४ दुष्ट।

आंटियळ—दे० आंटियाळ।

आंटियाळ—(वि०)१ आंटेदार। मरोड़दार। २ द्वेषी। ३ शत्रु। ४ विरोधी। ५ हठी। ६ चालाक। ७ अभिमानी। ८ हठव्रती।

आंटी—(ना०) १ कुश्ती में पांव का एक पेच। २ उलझन। फंदा। ३ आड। ४ हठ। जिद। ५ टेंट। (वि०) टेढ़ी। मुड़ी हुई।

आंटीलो—(वि०) १ झगड़ालू। २ अभिमानी। ३ अपनी बात पर दृढ़ रहने वाला। ४ बदला लेने वाला। ५ जबरदस्त। बलवान।

ग्रांटै—(क्रि०वि०) १ बन्दे म। २ लिये। निमित्त। वास्ते।

ग्राटो—(न०) १ लडाई। १ शत्रुता। वैर। ३ उलझन। ४ चक्कर। फेरा। ५ मरोड। (वि०) टेढा।

ग्राटो टाटो—(वि०) टेढा मेढा।

ग्राटो-टू टो—दे० ग्रांटा टांटा।

ग्राडू—(न०) १ पाडे, ऊट ग्रादि पशुग्रो की गरदन व नीचे ग्रगल पांवा का जोड का भाग। २ घोडे ग्रादि पशुग्रो के ग्रगल पाव का घुटना।

ग्राड—(न०) ग्रण्डकोश।

ग्राडल—(वि०) बडे हुए ग्रडकोशो वाला।

ग्राडिया—(न०ब०व०) ग्रडकोश।

ग्रात—दे० ग्रांतडी।

ग्रातडी—(ना०) ग्रतडी। ग्रांत।

ग्रातर सेवो—(न०) वस्त्र के ग्रन्दर क भाग की सिलाई। दे० ग्रतरवा।

ग्रातरिक—(वि०) १ भीतरी। २ घरेलू।

ग्रातरेवो—दे० ग्रातरसवा।

ग्रातर—(क्रि०वि०) दूर।

ग्रातरो—(न०) १ दूरी। फासिला। २ ग्रतर। भेद। ३ हृदय। ४ रक्त का सबधी। कुटुबी। ५ ग्रात। ग्रतडी।

ग्रांती—दे० ग्राती।

ग्रात्र—(ना०) ग्रांत। ग्रतडी।

ग्रादोलन—(न०) जनता को उत्तेजित करने या उभारने का प्रयास। २ हल चल।

ग्राधळघाटा—(न०) ग्रक्षय तृतीया के दिन ग्रांखें बाधकर खेला जाने वाला पकडा पकडी का खेल।

ग्रांधळी—(वि०ना०) ग्रधी। ग्राधरी।

ग्राधळो—(क्रि०) ग्रधा। ग्राधरा।

ग्राधी—(ना०) धूलिपूर्ण प्रचड वायु। ग्रधड। (वि०) १ ग्रांधरी। ग्रधी। २ धुधली। ३ विवेकहीन।

ग्रांधीभाटो—(न०) ग्रपामार्ग नामक क्षुप।

ग्रांधो—(वि०) १ ग्रधा। ग्रांधरा। २ धुधला। ३ विवेकहीन।

ग्रांधोभसो—(वि०) एक मल।

ग्रान—(सव०) ग्रापको। इन्हें।

ग्रांपण—(सव०) ग्रपना। (न०) ग्रात्म स्वरूप।

ग्रांपणी—(सव०ना०) ग्रपनी।

ग्रांपणीयांह—(सव०ब०व०) १ ग्रपनी। ग्रपना। ग्रपन सबका। २ ग्रपन सभी।

ग्रांपणा—(सव०) ग्रपना।

ग्रापां—(सव०ब०व०) ग्रपन।

ग्रापाणी—(सव०उ०व०) १ ग्रपनी। ग्रपन सबकी। २ हमारी।

ग्रांपाणो—(सव०उ०व०) १ ग्रपना। ग्रपन सबका। २ हमारा।

ग्रांपारी—दे० ग्रांपाणी।

ग्रापारा—दे० ग्रांपाणा।

ग्रांपाहैत—(ग्रव्य०) १ ग्रपना का। २ ग्रपने का। ३ ग्रपन सहित।

ग्राप—(सव०उ०व०) ग्रपन। ग्रपन लोग।

ग्राम्र—(न०) ग्राम्र वृक्ष ग्रथवा उसका फल। ग्राम।

ग्रांबणो—दे० ग्रांबीजणो।

ग्रांबलवाणी —दे० ग्रांवलवाणी।

ग्रांबली—(ना०) इमली का वृक्ष ग्रथवा उसका फल। इमली।

ग्रांबाहळद—दे० ग्रांबा हळदर।

ग्रांबा हळदर—(ना०) एक जाति की हल्दी जो ग्रौषधि के काम ग्राती है।

ग्रांबीजणो—(क्रि०) १ इमली, नीबू ग्रादि खट्टे पदार्थो के खाने से दांतो का ग्रँबिया जाना। दांतो म ग्रम्लता ग्रा जाना। २ शरीर का पीडा के साथ ग्रकड जाना।

ग्रांबी हळद—दे० ग्रांबा हळदर।

ग्रांबीहळदर—दे० ग्रांबा हळदर।

ग्रांबो—(न०) १ ग्राम्रफल। ग्राम। २ ग्राम्र वृक्ष। ३ एक लोक गीत।

ग्रांबो मोरियो—(न०) बधाई का एक लोक गीत। ग्रांबो।
ग्रामे—(सर्व०) १ इनमें। इनमें से।
ग्रार—(सर्व०) इनके। इणांर।
ग्रारो—(सर्व०) इनका। इणांरो।
ग्रांव—(ना०) १ पाचन हुए अन्न का अपचा हुग्रा लसदार सफेद चिकना मल। ग्राम। २ ग्रामरोग।
ग्रांवळ—(ना०) १ वह झिल्ली जो गर्भ में बच्चे के लिपटी रहती है। जेरी। जरायु। २ एक पीले फूलों वाला क्षुप जिसकी छाल से चमड़ा रंगा जाता है।
ग्रांवळणो—(क्रि०) १ मरोड़ना। २ कान ऐंठना।
ग्रावळनाळ—(ना०) जेरी ग्रौर उसकी नली। जरी। ग्रावळ।
ग्रांवळा—(न०ब०व०) १ स्त्रियों के पांवों में पहनने का एक गहना।
ग्रावळाइग्यारस—दे० ग्रांवळी ग्यारस।
ग्रावळामारगधक—दे० ग्रामळसार गधक।
ग्रावळासारगध्रप—दे० ग्रामळसार गधक।
ग्रांवळी इग्यारस—(ना०) १ फाल्गुन शुक्ल पक्ष की एकादशी। ग्रामलक एकादशी। २ झूला झूलने का एक वामतिक लोकगीत।
ग्रावळी ग्यारस—दे० ग्रांवळी इग्यारस।
ग्रांवळो—(न०)१ एक वृक्ष ग्रौर उसका फल। ग्रांवला। ग्रामलक। २ स्त्रियों की कलाई में पहना जाने वाला एक ग्राभूषण। ३ स्त्रियों के पांवों में पहनने का एक जेवर। ४ घट। बल। बळ। (वि०) टेढ़ा। ग्रांटो।
ग्रावो—(न०) कच्ची ईटें, मिट्टी के बरतन पकाने का कुम्हार का भट्टा। ग्रावां। पजावा। कजावो।
ग्रासू—(न०) दुख या हर्ष से ग्रांखों में से निकलने वाला पानी। ग्रश्रु। ग्रांहू।
ग्रासू—(सव०) इनसे।
ग्रांहन—(क्रि०वि०) १ शीघ्र। २ जोर से (चलना या चलना)।
ग्राहा—(ग्रव्य०) नकारात्मक उद्गार। ना। नहीं।
ग्रांहू—दे० ग्रांसू।

इ

इ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा का तीसरा स्वर वर्ण। (सर्व०) १ इस। २ इन। ३ यह। (ग्रव्य०) १ ग्रौर। २ पादपूर्णार्थ ग्रव्यय। (क्रि०वि०) ही।
इग्र—(सव०) इस।
इए—(सव०) इस।
इक—(वि०) एक।
इकग्वरो—(न०) डिंगल गीत छंद का एक भेद। इक्खरा।
इकट्ठो—(वि०) इकट्ठा। एकत्रित।
इकडंकिया धूंसो—(न०) १ नगाडे को एक डंके से बजाने का एक प्रकार। २ एक डंके से बजाया जाने वाला नगाड़ा या ढोल। ३ एक छत्रता का धौंसा।
इकडंकी—(ना०)१ स्वच्छंदता। २ निर्भयता। ३ एक छत्रता।
इकडाळियो—दे० ग्रगडाळियो।
इकतार—(न०) १ ध्यान। (वि०)१ एक रस। एक समान। २ समान। बराबर। (क्रि वि०) लगातार। निरंतर।
इकतारी—(ना०) १ उत्कट लगन। नहीं टूटने वाली ग्रासक्ति। २ निर्निमेष दृष्टि। टकटकी। स्थिर दृष्टि। ३ ध्यान। ४ समाधि।
इकतारो—(न०) एक तार वाला एक वाद्य यंत्र।

इकताळी—दे० इगताळीस। (क्रि० वि०) ताली देने के साथ। झट।

इकताळीस—दे० इगताळीस।

इकती—दे० इगतीस।

इकतीस—दे० इगतीस।

इकत्तीस—दे० इगतीस।

इकपोतिया लसण—(न०) लहसुन की एक जाति जिसके मूल में एक ही गांठ होती है। ऊंची जाति का लहसुन।

इकबाल—(न०) १ स्वीकार। २ भाग्य। नसीब। ३ प्रताप। (वि०) आबाद।

इकमात—(न०) १ अक्षर के ऊपर लगने वाली ए की मात्रा, जैसे—क के ऊपर ए' की मात्रा लगने से उसका के यह रूप बना। (क+ए=के)। (वि०) २ एक माता के उदर से उत्पन्न। सहोदर।

इकर—(क्रि० वि०) एक बार।

इक रदन—(न०) श्री गजानन।

इकरस्या—(क्रि० वि०) एक बार।

इकरंगा—(वि०) १ सदा एक सी प्रकृति वाला। २ अपनी बात पर स्थिर रहने वाला। ३ प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला। ४ पक्षपात रहित। ५ एक रंग का। एक रंग में रंगा हुआ। ६ एक जैसा। एक समान।

इकराणूओ—(न०) इक्यानवा वर्ष।

इकराणू—(वि०) नव्वे और एक। इक्यानवे। (न०) इक्यानवे की संख्या—९१'।

इकरार—(न०) १ प्रतिज्ञा। वादा। २ कबूल। कबूलात।

इकरारनामो—(न०) १ प्रतिज्ञा पूर्वक स्वीकृति का दस्तावेज। अनुबन्ध पत्र।

इकरां—(क्रि० वि०) एक बार।

इकळायो—दे० इकलासियो।

इकलास—(न०) १ मेल मिलाप। प्रेम। २ मित्रता। इखलास। ३ संगठन।

इकळासियो—(वि०) जिस पर एक ही सवार बैठ सके ऐसा छोटा (ऊंट)। (न०) वह ऊंट जिस पर एक ही सवार बैठा हो।

इकळाहियो—दे० इकळासियो।

इकलिंगजी—(न०) १ मेवाड़ के महाराणाओं के कुल देवता एकलिंग महादेव। २ मेवाड़ का इतिहास प्रसिद्ध पवित्र तीर्थ स्थान। ३ मेवाड़ राज्य के स्वामी एकलिंग महादेव। (मेवाड़ के महाराणा एकलिंग जी के दीवान कहलाते हैं।)

इकलोता—(वि०) अपने माता पिता का एक मात्र (पुत्र)।

इकवीस—(वि०) बीस और एक। इक्कीस। (न०) इक्कीस का अंक—२१।

इकसठ—(वि०) साठ और एक। (न०) इकसठ की संख्या—६१।

इक समच—(क्रि० वि०) १ एक संदेश में। २ एक इशारे में। ३ एक साथ सभी। ४ एकाएक। अचानक।

इक साखियो—(वि०) जहां वर्षाऋतु की एक ही फसल होती हो।

इकसार—(वि०) एक समान।

इकसूत—(वि०) एक सूत्र। संगठित। (क्रि०वि०)एक सूत्र में। संगठित रूप में।

इकंगो—(वि०) १ एक समान प्रकृति वाला। २ एक पक्ष वाला। एक तरफी। ३ एक सिद्धान्त पर रहने वाला। ४ इच्छानुसार करने वाला। ५ क्रोधी।

इकंत—(न०) एकान्त। (वि०) निर्जन। शून्य।

इकाई—(स्त्री०) एक का मान। एकाङ्क। २ अंकों की गिनती में प्रथम अंक। समूह अंकों में सबसे आगे का अंक। ४ अंकों की गिनती में प्रथम अंक का स्थान। (समूह अंकों में प्रथम अंक का

नेसा क्रम सबों का भ होता है जग— १२३ इसम तीन का अक प्रथम न इकाई के स्थान पर आया हुआ है।)
इकाणू—दे० इकराणू।
इकार—(न०) इ अक्षर। (अव्य०) एक बार। एक दफा।
इकावन—(वि०) पचास और एक। इक्यावन। (न०) पचास और एक की संख्या—'५१'
इकावनमा—(वि०) संख्या क्रम म जो पचास के बाद आता हो। इक्यावनवां।
इकावनो—(न०) इक्यावनवां वप।
इकावळी—(ना०) १ अकों की गिनती। २ एक से सौ तक के अक। ३ एक स सौ तक व अको की पढाई या रटाई।
इकांतर—(क्रि० वि०) एक दिन के अतर स। एक दिन को छोड कर। (वि०) एक दिन को छोड कर उसक बाद क दिन। इस क्रम से किया जान वाला या होने वाला।
इकातरो—(न०) एक दिन व अतर स आने वाला ज्वर।
इकियासियो—(न०) इक्यासीवां वप।
इकियासी—(वि०) अस्सी और एक। इक्यासी। (न०) इक्यासी की संख्या—८१।
इकीस—(वि०) १ बीस और एक। इक्कीस। २ श्रेष्ठतर। ३ तुलना मे श्रेष्ठ। (न०) इक्कीस की संख्या—'२१।
इकीसो—(न०) १ इक्कीसवा वप। २ इक्कीस सौ की संख्या—२१००। (वि०) १ विश्वासपात्र। खरा। ३ तुलना मे श्रेष्ठ। श्रेष्ठतर। ४ इक्कीस सौ। दो हजार एक सौ।
इकेवडो—(वि०) इकहरा। बिना तह का। (स्त्री० इकेवड़ी)।
इको ज—(वि०) एक ही।
इकोतर—(वि०) सत्तर और एक। इकहत्तर। (न०) इकहत्तर की संख्या—'७१'।
इकोतरो—(न०) इकहत्तरवा वप।
इको दुको—(वि०) १ कोई कोई। २ अकेला-दुकेला। ३ एक दो।
इक्कीस—दे० इकीस।
इक्कीसो—दे० इकीसो।
इक्को—(न०) १ बादशाही जमाने का एक बलशाली और शस्त्र विद्या म प्रवीण योद्धा जो अकेला ही कई योद्धाओं स लडने की सामर्थ्य रखनेवाला होता था। २ बादशाह का अग रक्षक। ३ एक घोड की घोडा गाडी। तागा। ४ एक बूटी वाला ताश का पत्ता। (वि०) बेजोड। अद्वितीय।
इक्को-दुक्को—दे० इको दुको।
इक्यासियो—दे० इकियासियो।
इक्यासी—दे० इकियासी।
इगढाळ—दे० अगढाळ।
इगनाळी—दे० इगनाळीस।
इगनाळीस—(वि०) चालीस और एक। इकतालीस। (न०) इकतालीस की संख्या—'४१'।
इगताळीसो—(न०) १ इकतालीसवा वप। २ इकतालीस सौ। ४१००।
इगती—दे० इकतीस।
इगतीस—(वि०) तीस और एक। इकतीस। (न०) इकतीस की संख्या—३१'।
इगतीसो—(न०) १ इकतीसवा वप। २ इकतीस सौ की संख्या। (वि०) इकतीस सौ। तीन हजार एक सौ।
इगसठ—दे० इकसठ।
इगसठसो—(न०) इकसठ सौ। ६१००।
इगसठो—(न०) इकसठवां वप।

इगियारमो—(न०) १ मृतक के ग्यारवें दिन का क्रियाकर्म। (वि०) जो संख्या क्रम में दस के बाद आता हो। ग्यारहवां।

इगियारस—(ना०) पक्ष का ग्यारहवां दिन। ग्यारस। एकादशी।

इगियारै—दे० इग्यारै।

इगियार सौ—(न०) ग्यारै सौ। ११००।

इगियार—(न०) १ ग्यारहवां वर्ष। २ मृतक के ग्यारहवें दिन का क्रियाकर्म।

इग्यारै—(वि०) दस और एक। ग्यारह। (न०) ग्यारह की संख्या।

इग्यु—(ना०) व्यंजन अक्षर के ऊपर मुड़कर आगे की ओर आने वाली मात्रा। दीर्घ ई की यह ी मात्रा। दीर्घ ई की मात्रा का नाम।

इचरज—(न०) आश्चर्य। अचरज।

इच्छाणो—दे० इछाणो।

इच्छा—(ना०) अभिलाषा। लालसा। चाह। रुचि।

इच्छा-भोजन—(न०) रुचि के अनुसार का भोजन।

इजत—दे० इज्जत।

इजलास—(ना०) न्यायालय। अदालत।

इजहार—दे० इजार सं० १ २ ३।

इजा—(ना०) १ क्षत। चोट। २ कष्ट। ३ हानि।

इजाजत—(ना०) १ हुक्म। आज्ञा। २ मंजूरी।

इजाफै—(वि०) अधिक। ज्यादा।

इजाफो—(न०) १ इजाफा। बढती। वृद्धि। २ लाभ। मुनाफा। बचत।

इजार—(न०) १ इजहार। अदालत में दिया गया वक्तव्य। बयान। २ साक्षी। ३ प्रकट। ४ पायजामा।

इजारदार—दे० इजारेदार।

इजारबंद—(न०) नाडा।

इजारेदार—(न०) १ इजारे पर काम करने वाला। इजारदार। २ ठेकेदार।

इजारो—(न०) १ निश्चित रकम और शर्तों पर भूमि ग्राम आदि की उपज या कर आदि को वसूल करने का लिया जाने वाला ठेका। २ अधिकार। ३ जिम्मेवारी।

इज रिजै—(वि०) समान रूप के। एकसी शक्ल के (दोनों)।

इज्जत—(ना०) १ इज्जत। प्रतिष्ठा। सम्मान। २ मान मर्यादा।

इज्जत-आमार—(वि०) लब्ध प्रतिष्ठ।

इठत्तर—(वि०) सत्तर और आठ। अठत्तर। (न०) अठत्तर की संख्या—७८।

इठत्तरो—(न०) अठत्तरवां वर्ष।

इठियासियो—(न०) अठासीवां वर्ष।

इठियासी—(वि०) अस्सी और आठ। अठासी। (न०) अठासी की संख्या—८८।

इठै—(क्रि० वि०) यहाँ।

इडा—(ना०) १ दे० इगळा। २ पृथ्वी। ३ गाय। ४ पार्वती। ५ सरस्वती।

इण—(सर्व०) १ इस। २ इसने।

इण कानी—(क्रि०वि०) इस ओर। इधर।

इणगी—(क्रि०वि०) इधर। इस ओर।

इणगी-उणगी—(क्रि०वि०) इधर उधर।

इणघडी—(क्रि०वि०) अभी। इसी समय।

इणनू—(सर्व०) इसको।

इणपरि—(क्रि० वि०) १ इस प्रकार। २ इस पर।

इणभांत—(क्रि०वि०) इस प्रकार।

इणमात—(अव्य०) अत। इसलिए।

इणरी—(सर्व०) इसकी।

इणरै—(सर्व०) इसके।

इणरो—(सर्व०) इसका।

इणविध—(क्रि०वि०) इस प्रकार।

इणसाइत—(क्रिoविo) अभी । इसी क्षण ।
इणहिज—(सवo) १ इसीन । इसने ही । २ इसी । इस ही ।
इणहीज—इणहिज ।
इणा—(सवo) १ इन । २ इन्होंन ।
इणानू—(सवo बo वo) इनको ।
इणीरी—(सवo) इनकी ।
इणारे—(सवo) इनके ।
इणारो—(सवo) इनका ।
इणि—देo इण ।
इणिया-गिणिया—(विo) इने गिने । थोडे से । कतिपय ।
इणी—(सवo) इस । इस ही ।
इणूँ—(सवo) इसने ।
इत—(क्रिoविo) यहां । इधर ।
इतकी—(विo) १ थोडी । २ इतनी ।
इतकीसी—(क्रिoविo) इतना ही ।
इतकीसीक— (विo) बहुत थोडी ।
इतको—(विo) १ थोडा । जरा । २ इतना । (क्रिoविo) १ इधर । इस ओर । २ इतना ही ।
इतकोसो—(अव्यo) थोडा सा । (सर्वo) इतना ही ।
इतकोसोक—(विo) बहुत थोडा ।
इतनो—देo इतरो ।
इतवार—(नo) एतबार । भरोसा ।
इतबारी—(विo) विश्वासी ।
इतमाम—(नo) ठाट बाट । तडक भडक । (विo) तमाम ।
इतर—(विo) १ दूसरा । अन्य । २ फालतू । ३ साधारण । (नo) इत्र । अतर ।
इतरणो—(क्रिo) १ इतराना । फूलना । गर्व करना । २ इठलाना । ठसकना । ३ अपने को बडा और बहुत बुद्धिमान समझना । ४ सिर चढना । ५ अपनी बडाई करना ।
इतराणो—देo इतरणो ।
इतरावणो—देo इतरणो ।
इतरा—(विo) इतने ।
इतराज—देo एतराज ।
इतरा मांहे—(अव्यo) १ इस बीच । २ इतने में ।
इतरी—(विo) इतनी ।
इतरै—(क्रिo विo) इतने में । (सवo) इतने ।
इतरो—(विo) इतना ।
इतरोसो—(विo सवo) इतनासा । इतना थोडा सा ।
इतरोहीज—(क्रिo विo) इतना ही । इतना थोडा ही । थोडा ही ।
इतला—(नाo) सूचना । इत्तिला ।
इतलानामो—(नo) अदालत में हाजिर होने का सूचनापत्र । इत्तिलानामा ।
इतवार—(नo) रविवार ।
इतवरी—(विo) कुलटा । व्यभिचारिणी ।
इता—(सवo) इतने ।
इता—(सवo) इतने ।
इति—(नाo) १ समाप्ति । अंत । २ उल्लंघन । ३ सीमा । हद । (अव्यo) १ समाप्त । २ समाप्ति ।
इतिवृत—(नo) १ इतिहास । २ वर्णन । ३ पुरानी कथा ।
इति श्री—(नाo) किसी धर्म ग्रंथ अथवा उसके किसी पर्व काण्ड या अध्याय आदि भाग का समाप्ति सूचक पद । समाप्ति ।
इतिहास—(नo) बीती हुई घटनाओं का क्रमानुसार वर्णन । ख्यात । तवारीख ।
इती— देo इतरी ।
इतीसी—(सवo) इतनी सी ।
इतै—(क्रिoविo) १ इतने में । २ इतनी देर में । ३ इतने समय तक । ४ यहाँ ।
इतैही—(क्रिoविo) १ इतने में ही । २ तब तक । ३ उसी क्षण । उसी समय ।

इतो—दे० इतरो ।
इतोमो—दे० इतरो मो ।
इतोमोक—दे० इतरो मा ।
इत्ता—दे० इता ।
इत्ता में—(अव्य०)१ इस बीच । २ इतने में ।
इत्तो—दे० इतरा । (स्त्री० इत्ती) ।
इत्याद—(अव्य०) इसी प्रकार और । इत्यादि । वगरह ।
इत्यादि—दे० इत्याद ।
इत्यादिक—दे० इत्याद ।
इत्र—(न०) अतर ।
इथ—(क्रि०वि०) यहा ।
इथिए—(क्रि०वि०) इधर । यहाँ ।
इथिय—दे० इथिए ।
इथ—(क्रि०वि०) यहा ।
इधक—(वि०) अधिक ।
इधक मास—(न०) अधिक मास । पुरुषोत्तम मास ।
इधकाई—(ना०) अधिकाई । अधिकता । विशेषता ।
इधकेरो—(वि०) १ दो या दो से अधिक की तुलना में एक अधिक अच्छा । २ अधिक । ज्यादा । ३ महत्त्व का ।
इधको—दे० इधकेरो ।
इधर—(क्रि०वि०)१ यहा । २ इस ओर ।
इनकार—(न०) १ मनाई । २ अस्वीकार । ३ अस्वीकृति । नामंजूरी ।
इनसान—(न०) १ मनुष्य । मानव । २ मानव जाति ।
इनसाफ—(न०) इसाफ । न्याय ।
इनात—दे० इनायत ।
इनाम—(न०) पारितोषिक । बख्शिश ।
इनायत—(ना०) १ कृपा । अनुग्रह । २ प्रदान । ३ भेंट ।
इनै—(सर्व०) इसे । इसको । (क्रि० वि०) इस ओर । इधर ।
इनै—दे० इन ।
इफरात—(ना०) अधिकता । (वि०) १ अधिक २ अत्यधिक ।
इब—(क्रि०वि०) अब ।
इबकी गात—(अव्य०) अभी का अभी ।
इबरळ—(वि०) अचल । अविचल । अवचळ ।
इबरक—(क्रि०वि०) १ इस बार । २ दूसरी बार । और । फिर ।
इबरात—दे० इबकी गात ।
इबादत—(ना०) भक्ति । उपासना ।
इबारत—(ना०) १ लेख । २ लेखशैली ।
इभ—(न०) हाथी ।
इम—(क्रि वि०) इस प्रकार । ऐसे ।
इमदाद—(ना०) सहायता । मदद ।
इमरत—(ना०) अमृत । सुधा ।
इमरती—(ना०) १ पानी पीने का एक पात्र । गडुवा । २ उड़द की पीठी से बनने वाली जलेबी जैसी एक मिठाई ।
इमरस—(न०) १ अमर्ष । क्रोध । २ कुढ़न । गाभ । ३ दुख ।
इमली—(ना०) एक वृक्ष और उसकी गूदेदार लबी खट्टी फली ।
इमानी—(ना०) मकान बनवाने का वह काम या व्यवस्था जो ठीके पर न हो । मकान बनवाने का वह काम या तरीका जो मजदूरों को दैनिक मजदूरी देकर (उनकी ईमानदारी पर) करवाया जाता है ।
इमामदस्तो—(न०) औषधियाँ आदि कूटने की लोहे या पीतल की ओखली और उसका दस्ता । हमामदस्तो ।
इमारत—(न०) बड़ा और पक्का मकान । हवेली ।
इमि—दे० इम ।
इमी—(न०) १ अमृत । अमी । २ थूक । अमी ।

इम्तिहान—(न०) परीक्षा ।
इम्रत—दे० इमरत ।
इया—(क्रि०वि०) यहाँ ।
इयारी—दे० इयरा ।
इया - (सव०) इन । (वि०) एसा । (क्रि० वि०) एस । इस प्रकार ।
इयावळो—(वि०) इस प्रकार का । ऐसा । (अव्य०) इनके जैसा ।
इयु —(क्रि०वि०) इस प्रकार । यो ।
इये—(सव०) इस । इसे ।
इयेनू —दे० इयेनै ।
इयेनै—(सव०) इसको ।
इयेरै—(सव०) इसके ।
इयेरो—(सव०) इसका ।
इयेसू —(सर्व०) इससे ।
इरकाणी—(ना०) ऊट के घुटन का ऊपरी भाग ।
इरगियो—(न०) ऊट के अगले पाव के मूल मे बाहू की रगड से होने वाला जख्म ।
इरकी—दे० इरकाणी ।
इरखो—दे० ईरखो ।
इरद-गिरद—(क्रि०वि०) इर्द गिर्द । आस पास । चारो ओर ।
इरड काकड़ी—(ना०) पपीता । पपयो ।
इरडियो—(न०) एरड का पौधा ।
इरडी—(ना०) १ एरड का बीज । २ एक रेशमी वस्त्र ।
इरादो—(न०) १ इरादा । मनोभाव । आशय । २ मित्रता ।
इळ—(ना०) इला । धरती । भूमि ।
इळकत—(न०) राजा । भूपति । इलाकात ।
इलकाब—(न०) खिताब ।
इळगार—(न०) १ उत्साह । उमग । २ जोश । ३ साहस । ४ प्रस्थान । कूच । रवानगी । ५ रोष । क्रोध ।
इळचक्र—(न०) क्षितिज ।
इळज—वृक्ष । पेड़ ।
इलजाम—(न०) १ अपराध । २ अभियोग ।
इळत्री—(ना०) तीनों लोक । त्रिभुवन ।
इळपत—(न०) इलापति । राजा ।
इळपुड—(न०) पृथ्वी तल ।
इळपूत—(न०) इलापुत्र । मगल ग्रह ।
इळपूतद्योस—(न०) मगलवार ।
इळपूतवार—(न०) मगलवार ।
इलम—(न०) १ विद्या । २ हुनर । इल्म । शिल्प । ३ जादू । ४ उपाय । ५ ज्ञान । ६ जानकारी ।
इळवइ—(न०) इलापति । राजा ।
इळा—(ना०) १ इडा । इगला । २ पृथ्वी । इला । ३ पार्वती । ४ सरस्वती । ५ गौ ।
इला—दे० इळा ।
इळाकत—दे० इळकत ।
इलाको—(न०) १ प्रान्त । इलाका । २ प्रदेश । ३ क्षेत्र । ४ अधिकार क्षेत्र ।
इळाचक्र—दे० इळचक्र ।
इलाज—(न०) १ उपचार । चिकित्सा । २ उपाय ।
इळात्रय—दे० इळत्री ।
इळाथभ—(न०) १ शेषनाग । २ राजा ।
इळाधर—(न०) पर्वत ।
इळापत—दे० इळपत ।
इळापुड—दे० इळपुड ।
इळायची—(ना०) इलायची । एला ।
इळायचो—(न०) एक बहुमूल्य रेशमी कपड़ा ।
इळाव्रत—(न०) १ इलावृत्त । पृथिवी मडल । २ एक पृथ्वी खड ।
इलोळ—(ना०) १ लहर । मौज । २ प्रसन्नता । ३ लहर । तरग । ४ तरीका । ढग । ५ एक राजस्थानी छद ।

इल्लत—(ना०) १ झंझट। २ भूत प्रेत आदि का लगाव। ३ रोग। ४ दोष। ४ कलंक।

इव-(क्रि०वि०) १ अब। २ ऐसे। (सर्व०) इस।

इव करता—(अव्य०) इस प्रकार।

इवडो—(वि०) १ इतना। २ ऐसा। (स्त्री० इवडी)

इशारो—दे० इसारो।

इश्क—(न०) १ प्रेम। स्नेह। २ काम विकार।

इष्ट—दे० इस्ट।

इष्टदेव—दे० इस्टदेव।

इसड़—(वि०) १ ऐसे। २ ऐसी।

इसक—(न०) इश्क। प्रेम।

इसक-चाळो—(न०) काम चेष्टा।

इसकी—(वि०) प्रेमी। रसिक। इश्की।

इसकूल—दे० स्कूल।

इसक्रू—दे० स्क्रू।

इसडी—(वि०) ऐसी।

इसडो—(वि०) ऐसा।

इसपताळ—(न०) अस्पताल (स्त्री० इसपती) हास्पिटल। दवाखानो।

इसबगुळ—(न०) १ एक बीजोवाला एक पौधा। २ इस पौधे के बीज। इसबगोल।

इसलाम—(न०) मुसलमानी धर्म। इस्लाम।

इसा—(वि०) १ ऐसे। ऐसे अनेक। २ इस प्रकार के। ऐसे।

इसान—(क्रि०वि०) इस प्रकार।

इसारो—(न०) १ इशारा। संकेत। २ सूचन।

इसी—(वि०) ऐसी।

इसू—(वि०) ऐसा।

इसे—(वि०) ऐसे।

इसो—(वि०) ऐसा।

इसो तिसो—(अव्य०) ऐसा-वैसा। ऐसा तैसा।

इस्ट—(न०) १ इष्ट। इष्टदेव। आराध्य देवता। २ कुल देवता। ३ मित्र। (वि० १ वांछित। इष्ट। अभिलषित। अभिप्रेत। २ पूज्य।

इस्टदेव—(न०) १ इष्टदेव। आराध्य देवता। कुल देवता।

इस्टाम—दे० स्टाम।

इस्तगासो—(न०) किसी के विरुद्ध फौजदारी कोर्ट में की जाने वाली अर्जी।

इस्तरी—(ना०) १ धोबी तथा दरजी का एक उपकरण जिससे कपड़े की सिकुड़न मिटाई जाती है। २ स्त्री।

इस्तीफो—(न०) इस्तीफा। त्यागपत्र।

इस्तेमाल—(न०) उपयोग।

इस्त्री—(ना०) स्त्री। दे० इस्तरी।

इस्या—(वि०) ऐसा।

इस्लाम—(न०) मुसलमानी धर्म।

इह—(सर्व०) १ यह। २ इस। (क्रि०वि०) यहां।

इहडी—(वि०) ऐसी।

इहडो—(वि०) ऐसा।

इहां—(क्रि०वि०) यहां।

इहि—(सर्व०) १ यह। २ इस।

इहि विचि—(वि०) इस बीच की। (अव्य०) इस वस्तु या समय के बीच में।

इहीं—(सर्व०) १ यह। २ यह। (वि०) ऐसा। (अव्य०) इस प्रकार।

इंगळा—(ना०) मेरु दण्ड के वाम भाग की इडा नाम की एक नाड़ी।

इंगलिश—(ना०) अंग्रेजी भाषा।

इंगलिस्तान—(न०) इंगलैंड।

इंगलैंड—(न०) अंग्रेजों का देश। इंगलिस्तान।

इंगित—(न०) इशारा।

इंच—(न०) १ एक फुट का बारहवां भाग। २ फुट के बारहवें भाग का माप।

इंछणो—(क्रि०) १ इच्छा करना। २ विचार करना। ३ निश्चय करना।

इछना—(ना०) इच्छा।
इछा—(ना०) इच्छा।
इछा-भोजन—ना० इच्छा भोजन।
इंजन—(न०) भाप की शक्ति से चलने वाला यंत्र। एंजिन।
इंजीनियर—(न०) यंत्र शास्त्र का विशारद।
इंजेक्शन—(न०) पिचकारी द्वारा शरीर में दवा प्रवेश करना।
इठै—(क्रि०वि०) यहाँ। इस जगह। अठे। इत।
इंडज—(न०) अंडे से उत्पन्न होने वाले प्राणी। अंडज।
इंडिया—(न०) भारत देश।
इडै—दे० इठै।
इंतकाळ—(न०) मृत्यु। मौत।
इंतजाम—(न०) प्रबंध। इंतजाम।
इंतजार—(न०) १ प्रतीक्षा। २ आतुरता।
इंतजारी—दे० इंतजार।
इंद—(न०) १ इंद्र। २ इन्दु। चंद्रमा।
इंदगोप—दे० इंद्रगोप।
इंदर—(न०) १ इंद्र। २ मेघ घटा। ३ स्वामी। ४ वृक्ष।
इंदर धनख—दे० इंद्र धनुष।
इंदराज—(वि०) १ ऊँचा। १ श्रेष्ठ। ३ बड़ा। (न०) १ लिखा जाना। लिखावट। २ नोंध। नुंध।
इंदरियो—(न०) १ मेघ घटा। २ इंद्र।
इंदिरा—(ना०) लक्ष्मी।
इंदीवर—(न०) नील कमल।
इंदु—(न०) चंद्रमा।
इंद्र—(न०) देवताओं का राजा। इंदर।
इंद्र कूण—(ना०) खगोल और शकुन शास्त्र की सोलह दिशाओं में से एक दिशा। इंद्रकोण।
इंद्र कूट—न० इंद्र कूण।
इंद्रगोप—(ना०) वीरबहूटी। ममोलो। ममोलियो।
इंद्रजव—(न०) कुड़ा बीज।
इंद्रजाळ—(न०) १ मंत्र तंत्र तथा हाथ की सफाई द्वारा अचंभे की बातें दिखाने की विद्या या कला। फरफंद। जादूगरी। २ मायाकर्म। ३ नट विद्या। ४ धोखा। छल। ५ मंत्र-तंत्र द्वारा आश्चर्योत्पादक कला का ग्रंथ।
इंद्रजीत—(न०) मेघनाद।
इंद्रधजा—(ना०) रंग बिरंगी अनेक छोटी धजाओं वाला एक बड़ा ध्वज। इंद्रध्वज।
इंद्र धनुष—दे० इंद्रधनुस।
इंद्र धनुस—(न०) सूर्य के सामने की दिशा में वर्षा होने के कारण सूर्य के प्रकाश से क्षितिज को छूता हुआ दिखाई देने वाला सात रंगों का अर्धवृत्त।
इंद्रपुरी—(ना०) १ इंद्र की नगरी। २ देवताओं की नगरी।
इंद्रप्रस्थ—(न०) पांडवों की राजधानी। प्राचीन दिल्ली।
इंद्रलोक—(न०) स्वर्ग।
इंद्रवधू—दे० इंद्रगोप।
इंद्राण—(न०) १ तसतू बा। इंद्रायण का फल। २ इंद्रायण की लता।
इंद्राणी—(ना०) इंद्र की पत्नी।
इंद्रापुरी—(ना०) १ इंद्र की राजधानी। अमरापुरी २ इंद्रापुरी के समान वैभव या सुख।
इंद्रायण—(ना०) १ तसतूबे की लता। २ इंद्रायण का फल। तसतू बो।
इंद्रासण—(न०) इंद्र का सिंहासन। इंद्रासन।
इंद्रासन—दे० इंद्रासण।
इंद्रिय—दे० इंद्री।
इंद्री—(ना०) १ शिश्न। लिंगेंद्रिय। २ वह शक्ति जिसके द्वारा बाहरी पदार्थों के भिन्न भिन्न गुणों का भिन्न भिन्न रूपों में अनुभव होता है (ज्ञानेंद्रिय)। ३ शरीर

कं व अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। (कर्मेंद्रिय)। ४ इंद्रिय।

इंसान—(न०)१ मनुष्य। २ मानव जाति।

इंसाफ—दे० इनसाफ।

इंस्पेक्टर—(न०) निरीक्षक।

ई

ई—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्ण माला का चौथा स्वर वर्ण। ई' का लोप रूप।

ई—(सव०) यह। (अव्यय०) १ ही। २ भी।

ईअे—(सव०)१ इसने। २ इस। ३ इसमें। (वि०) ऐसे। इसी प्रकार के।

ईंरड—(न०) मूंग मोठ के जैसा एक जंगली द्विदल नाज और उसका पौधा। इस पका कर खाय भूख भागि का विधान है।

ईकार—(न०) ई वर्ण।

ईख—(ना०) १ दृष्टि। २ गन्ना। ऊख।

ईखण—(ना०) नेत्र। आंख। ईक्षण।

ईखणा—(क्रि०) देखना।

ईटणो—(क्रि०) १ उपयोग करना। काम में लाना। २ बखेरना। छितराना। ३ बहाना। बहा देना।

ईठ—(न०) १ इष्ट। २ पति।

ईडर—(न०) १ ऊंट की छाती में उभरा हुआ एक गोल खुरदरा स्थान। २ गुजरात का एक ऐतिहासिक नगर और राज्य।

ईडरियो—(वि०) १ ईडर का। ईडर संबंधी। २ ईडर निवासी।

ईढ—(ना०) १ समानता। तुलना। बराबरी। २ ईर्ष्या। डाह। ३ शत्रुता। बैर। ४ हठ।

ईढक—(न०) नगाडा।

ईढग—दे० ईढगरो।

ईढगरो—(वि०) १ बराबरी करने वाला। २ ईर्ष्यालु। ३ पीछे नहीं रहने वाला। ४ शत्रु। बैरी।

ईत—(ना०) पशुओं की चमड़ी में चिपका रह कर खून चूसने वाला एक छोटा कीडा।

ईतरणो—दे० इतरणो।

ईति—(ना०) खेती को हानि पहुँचाने वाले उपद्रव।

ईद—(ना०) मुसलमानों का एक त्योहार।

ईनगी—दे० इधणी।

ईन मीन—(वि०) इन गिन। अल्प। थोड़े।

ईन मीन-तीन—दे० ईन मीन।

ईनला—(वि०) इधर का। इस ओर का।

ईनूणी—दे० इनोणी।

ईन—(सव०) इसको। (क्रि०वि०) इधर। यहाँ।

ईमान—(न०) १ धर्म। २ नीयत। ३ अच्छी नीयत। ४ विश्वास। भरोसा। ५ प्रामाणिकता।

ईमानदार—(वि०) १ सच्चाई से काम करने वाला। सच्चा। खरा। २ व्यवहार शुद्ध। ३ विश्वासपात्र। ४ धर्मभीरु। ५ प्रामाणिक।

ईमानदारी—(ना०) १ सच्चाई। २ व्यवहार शुद्धता। ३ धर्माचरण। ४ प्रामाणिकता।

ईमानी—दे० इमानी।

ईयर—दे० इयर।

ईयरो—दे० इयरो।

ईयेवळ—(क्रि०वि०) इस ओर। इधर।

ईरखा—(ना०) ईर्ष्या। डाह।

ईरखाळू—(वि०) ईर्ष्यालु।

ईरखो—(न०) ईर्ष्या ।
ईरण —(ना०) अग्नि ।
ईली—(ना०) अनाज का एक कीडा । अन्न-कीट । इलीका ।
ईलोजी—(न०) होली के हुडदग की एक अश्लील मूर्ति ।
ईवाडो—(न०) भेड बकरियों का बाडा ।
ईश—दे० ईश्वर ।
ईशान—(न०) उत्तर पूर्व के मध्य का कोण। इशान दिशा । २ शिव । महादेव ।
ईश्वर—(न०) १ ईश्वर । परमेश्वर । २ शकर । महादेव । ३ स्वामी । प्रभु ।
ईश्वरी—(ना०) १ दुर्गा । भगवती । २ पार्वती । भवानी ।
ईस—(न०) ईश्वर स० १ २ ३ (ना०) १ खाट की चौखट की लंबी लकडी। चारपाई के चौखटे की दाहिने या बाएँ की लकडी । २ किसी भूभाग की लंबाई। ३ लंबाई की ओर का नाप ।
ईसको --(न०) ईर्षा । डाह ।
ईसर—दे० ईश्वर ।
ईसरजी —(न०) १ महादेव की वह मूर्ति जो जामा सिडकिया पाघ और तुर्रे वाली राठौडी वेशभूषा में गनगौर के उत्सव (गौरी पर्व) पर गौरी की मूर्ति के साथ प्रदर्शित की जाती है । २ महादेवजी । शिवजी ।
ईसरदास—(न०)मालाणी प्रदेश (मारवाड) के भादरेस गाँव के निवासी प्रसिद्ध भक्त कवि ईसरदास बारहठ ।
ईसरी—दे० ईश्वरी ।
ईसरेस—(न०) महादेव । ईश्वरेश ।
ईसवीसन—(न०) ईसा के जन्म काल से चलाया हुआ वर्ष ।
ईसा—(न०) ईसाई धर्म का प्रवर्तक। ईसा मसीह ।
ईसाई—(न०) ईसा के मत का मानने वाला ।
ईसाणद—(न०) भक्तकवि ईसरदास बारहठ का महत्व सूचक नाम ।
ईसाण—दे० इशान ।
ईसाणी—(वि०) ईशान दिशा की ।
ईसान—दे० इशान । (स० पु०) अहसान । उपकार ।
ईसुरी—दे० ईश्वरी ।
ईह—(सव०) यह । (स०स्त्री०) इच्छा ।
ईहग—(न०) १ याचक । २ चारण। ३ भाट । (वि०) इच्छुक ।
ईहण—दे० ईहग ।
ईहा—(ना०) इच्छा ।
ईहाड—(ना०) एक तोप ।
ईं—(सव०) १ इस । २ इसने । ३ यह।
ईंकी—(सव०) इसकी ।
ईंके—(सव०) इसके ।
ईंको—(सव०) इसका ।
ईंगी—(सव०) इसकी ।
ईंगो—(सव०) इसका ।
ईंजा—(क्रि० वि०) यहा ।
ईंट—(ना०) १ पकाया हुआ मिट्टी का चौकोर टुकडा जिसे सीमेंट चूना या मिट्टी के गारे से जोडकर मकान की दीवार बनाई जाती है । इंट । २ चार कोनो की बूटी वाला ताश का पत्ता ।
ईंटाळी—दे० इंट ।
ईंटाळो—(न०) १ इंट का टुकडा । (वि०) १ इंटो वाला । इंटें पकाने वाला ।
ईंटोडो—(न०) इंट का टुकडा ।
ईंडो—(न०) १ अंडा । २ देव मंदिर के शिखर के ऊपर का स्वर्णादि का बना हुआ एक विशेष प्रकार का कलश ।
ईंडोणी—दे० इंढोणी ।
ईंडूणी—दे० इंढोणी ।
ईंढोणी—(ना०) कपडे आदि की बनी एक विशेष प्रकार की गोल गद्दी (कुंडली) जिसको पानी का घडा आदि बोझा

उठाने के लिये स्त्रियाँ सिर पर रखती है। इडुरी। ण्डुग्रा।

ईदावाटी—*(ना०)* मारवाड म इदा परिहारो का एक क्षेत्र। जोधपुर के पश्चिम म इदा राजपूता की जागीर का प्रदेश।

इधण—*(न०)* भोजन बनान के लिय जलाने की लकडी, कडा आदि। जलावन।

ईधणी—*(ना०)* भोजन पकान के लिय काम म आने वाली (जलान की) की लकडी। बलीते की लकडी (बलीता)।

इन—*(सव०)* १ इसन। २ इसको। इसे *(क्रि०वि०)* इधर। इस ओर।

ईं पर—*(अव्य०)* १ इस पर। तदुपरा न। २ इसके पश्चात्। इसके ऊपर।

इयाँ—*(क्रि०वि०)* १ एसे। २ बस।

ईंयार—*(सव०)* इनके।

ईंयारो—*(सव०)* इनका।

ईंरो—*(सव०)* इसका।

इसू—*(सव०)* इससे।

उ

उ—सस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्णमाला का पाचवाँ ओष्ठ स्थानीय स्वर वर्ण।

उअव—*(न०)* १ उद्भव। जन्म। १ वृद्धि। बन्ता *(वि०)* अद्भुत।

उअणो—*(क्रि०)* उगना।

उअर—*(न०)* उर। हृदय।

उअह—*(न०)* उदधि। समुद्र।

उआणो—*(क्रि०)* उगाना।

उआरणा—*(न०)* १ न्याछावर करन की वस्तु। २ निछावर। उत्सग। ३ उद्धार। रक्षा। बचाव। *(वि०)* उद्धार करन वाला।

उआरणा—*(न०)* बलया। न्योछावर।

उआरणो—*(क्रि०)* निछावर करना। बलिहार जाना। *(न०)* निछावर। उत्सग।

उआरो—*(न०)* १ उत्सग। निछावर। २ गाँव से बाहर निकलने का माग। गाँव स बाहर निकलने के माग का अतिम छोर तथा प्रवेश करने के माग का सिरा।

उआँ—दे० उणाँ।

उआरी—दे० उवाँर।

उआँरो—दे० उवाँरो।

उए—

उकट—*(न०)* १ कसाव। कसैलापन। २ क्रोध। गुस्सा। ३ मनोमालिन्य। ४ जोश। मनोवेग। ५ आवेश।

उकटणो—*(क्रि०)* कसाव पदा होना। कसाना। २ क्रोध पदा होना। ३ मनोमालिन्य पदा होना। ४ जोश म आना।

उकत—*(ना०)* १ उक्ति। कथन। २ समझ। बुद्धि। ३ युक्ति। उपाय।

उकताइजणो—*(क्रि०)* १ उकता जाना। ऊब जाना। २ अधीर होना।

उकतागो—दे० उकताइजणो।

उकतावणो—दे० उकताइजणो।

उकती—दे० उकत।

उकतीवान—*(वि०)* १ उक्ति वाला। २ बुद्धिमान। ३ प्रत्युत्पन्नमति।

उकर—*(न०)* बाण।

उकरडी—*(ना०)* छोटा उकरडा। घूरी।

उकरडो—*(न०)*१ कूडे कचरे का ढर। घूरा। २ कूडा कचरा डालने की जगह।

उकरास—*(न०)* १ चाल। धूत्तता। २ युक्ति। उपाय। ३ कौशल। ४ अवसर। मौका। ५ खेल का दाँव।

उकलणो—(क्रि०) १ सूझना। सूझ होना। फुरना। २ दिमाग में आना। उपजना। ३ (लिखावट आदि का) स्पष्ट पढ़ा जाना।

उकळणो—(क्रि०) १ औटना। उबलना। २ अकुलाना। उकताना। ऊबना। ३ क्रोध करना। ४ भीषण रूप धारण करना।

उकळतो काळजो—(न०) व्याकुल चित्त।

उकळाट—दे० उकळाटो।

उकळाटो—(न०) १ क्रोध। २ संताप। ३ घाम। ४ गरमी। ५ दमघुट। ६ उफान। उबाल।

उकस—(ना०) १ जोश। २ क्रोध। प्रज्वलन। ३ उत्तेजन।

उकसणो—(क्रि०) १ जोश में आना। २ क्रोध करना। ३ उत्तेजित होना।

उकसाणो—(क्रि०) उकसाना। उभारना। तैयार करना।

उकसावणो—दे० उकसाणो।

उकचणो—(क्रि०) सिर को ऊँचा उठाना।

उकाळ—(न०) उबाल।

उकाळणो (क्रि०) उबालना।

उकाळी—(ना०) उबाली हुई काष्ठादि औषधियों का पानी। औषधियों का उबाला हुआ रस। जोशादा। काढ़ा।

उकाळो—(न०) १ उबाल। उफान। २ काढ़ा। क्वाथ।

उकासणो—(क्रि०) १ अधिक प्रकाशमान करना। २ प्रज्वलित करना। ३ दीपक की बत्ती को ऊपर खिसकाना। बत्ती को और बाहर निकालना। ४ उत्तेजित करना। ५ उभारना। ६ हैरान करना। तंग करना।

उकीरो—(न०) गोबर का एक कीड़ा।

उकील—(न०) वकील।

उकेरी—(ना०) पानी प्राप्त करने के लिये सूखे हुए नदी या तालाब में खोदा जाने वाला खड्डा।

उकेल—(न०) १ परिणाम। निकाल। २ उपाय। रास्ता। सुलभाव। ३ सूझ। समझ। ४ उलझी हुई बात को सुलझाने की युक्ति। समाधान।

उकेलणो—(क्रि०) १ उलझी हुई बात को सुलझाना। २ सुलझाना। ३ गूंथ निकालना।

उक्त—(वि०) १ उपरोक्त। कथित। २ उल्लिखित।

उक्ति—(ना०) १ कथन। २ वाक् चातुर्य। ३ शब्द लालित्य। ४ चमत्कारपूर्ण वाक्य।

उख—(न०) बैल।

उखडणो—(क्रि०) १ जड़ सहित निकल आना। २ अलग होना। सटा हुआ न रहना। ३ नौकरी का छूट जाना। पद च्युत होना। ४ क्रोध करना।

उखणणो—(क्रि०) १ उठाकर ले जाना। २ भार उठाना। ३ शस्त्र उठाना।

उखणाणो—(क्रि०) बोझा उठवाने में सहायता करना। बोझा उठवाना।

उखध—(ना०) औषधि।

उखरडो—दे० उकरडो।

उखराळी—(वि०) १ वाण (रस्सियाँ) टूट कर ढीली बनी हुई (खाट)। टूटी फूटी (खाट)। २ जिस पर बिस्तर नहीं बिछा हो। बिना बिस्तर की (खाट) (ना०) कुतिया की धुरी।

उखलणो—(क्रि०) १ अपने स्थान से अलग होना। उखडना। २ परस्पर चिपटी हुई वस्तुओं का अलग होना।

उखा—(ना०) गाय।

उखाडणो—(क्रि०) १ किसी गडी या जमी हुई वस्तु को बाहर निकालना। २ अलग करना। हटाना। ३ नौकरी से दूर करना। पदच्युत करना। ४ नष्ट करना।

उखाड़-पछाड़—(ना०) १ भांग तोड़। २ उथल पुथल। तितर बितर। ३ छिन्न भिन्न। ४ बखेड़ा। उपद्रव।

उखाणो—(न०) १ उपाख्यान। ओखाणो। २ कहावत। ३ उक्ति। ४ दृष्टान्त। उदाहरण।

उखेख—(न०) खोज।

उखेखणो—(क्रि०) १ खोज करना। २ देखना।

उखेड़णो—दे० उखाड़णो।

उखेल—(न०) १ उत्पात। २ युद्ध। ३ कलह। ४ उत्खनन।

उखेलणो—(क्रि०) १ रस्सी पगड़ी आदि के आंटा का खोलना। २ अपने स्थान से अलग करना। उखेड़ना। ३ परस्पर चिपटी हुई वस्तुओं को अलग करना। दे० उखाड़णो स० १, २।

उखेवणो—(क्रि०) देवता के सामने धूप अगरबत्ती जलाना। धूप देना।

उगटणो—(क्रि०) कसाव उठना। वसला पन पदा होना। (न०) उबटन।

उगण चाळी—दे० उगण चाळीस।

उगण चाळीस—(वि०) तीस और नौ। (न०) उनतालीस की सख्या–३९'

उगण चाळीसो—(न०) उनचालीसवाँ वष।

उगणती—(वि०) बीस और नौ। (न०) उनतीस की सख्या–'२९।

उगणतीस—दे० उगणती।

उगणत्रीम—दे० उगणती।

उगणतीसो—(न०) उनतीसवाँ वष।

उगणपचा—दे० उगण पचास।

उगणपचास—(वि०) चालीस और नौ। (न०) उनचास की सख्या–४९।

उगणपचासो—(न०) उनचासवा वष।

उगणवो—दे० उगवणो।

उगणसाठ—(वि०) पचास और नौ। (न०) उनसाठ की सख्या–५९।

उगणसाठो—(न०) उनसाठवाँ वष।

उगणंतर—(वि०) साठ और नौ। (न०) उनहत्तर की सख्या–'६९।

उगणतरो—(न०) उनहत्तरवाँ वष।

उगणासियो—दे० उगणियासियो।

उगणासी—दे० उगणियासी।

उगणियासियो—(न०) उनासीवाँ वष।

उगणियासी—(वि०) सित्तर और नौ। (न०) उनासी की सख्या–७९।

उगणी—दे० उगणीस।

उगणीस—(वि०) दस और नौ। (न०) उन्नीस की सख्या–१९। (वि०) हलके दर्जे का। उतरता हुआ। खराब।

उगणीसो—(न०) उन्नीसवाँ वष। (वि०) १ उन्नीस सौ। एक हजार नौ सौ। २ जो तुलना म खराब हो। बदतर।

उगणोतर—दे० उगणतर।

उगणोतरो—दे० उगणतरो।

उगत—दे० उक्त।

उगम—(ना०) १ उद्गम। उदय। २ उत्पत्ति। ३ अकुरण।

उगमण—(ना०) पूव दिशा।

उगमणू—(क्रि०वि०) १ पूव दिशा की ओर (वि०) पूव दिशा का। (न०) पूव दिशा।

उगमणो—दे० उगमणू।

उगरणो—(क्रि०) उबरना। बचना।

उगराटो—दे० अगराटो।

उगरामणो—(क्रि०) प्रहार करने के लिये शस्त्र उठाना। हाथ उठाना।

उगळणो—(क्रि०) १ उगलना। २ जुगाली करना। ३ क करना। वमन करना। ४ वमन होना। उलटी होना।

उगळाणी—(वि०) नग्न। नगी। विवस्त्र। उघाड़ी। (ना०) क। उलटी। उगाळ।

उगळाणो—(क्रि०) उगळाणी का पुल्लिग। (क्रि०) क होना। उलटी होना।

उगवणो—(क्रि०वि०) पूव दिशा म। पूव दिशा की ओर।

उगाई—(ना०) १ अकुरन । २ अकुरित । होने की स्थिति । ३ उगाने का भाव ।
उगाडणो—(क्रि०) १ उगाना । २ बुवाई करना । बीज बोना । ३ पेड पौधे लगाना ।
उगाणो—दे० उगाडणो ।
उगामणो—(क्रि०) प्रहार करने के लिए लाठी, शस्त्र आदि का ऊचा उठाना ।
उगार—(न०) १ बचाव । उद्धार । २ बचत ।
उगारणो—(क्रि०) उबारना । बचाना ।
उगाळ—(न०) १ पीक । २ जुगाली । ३ वमन । क ।
उगाळणो—(क्रि०) १ जुगाली करना । २ वमन करना । ३ उच्चारना ।
उगाळदान—(ना०) पीकदान ।
उगाळी (ना०) १ उदय । २ सूर्योदय । ३ जुगाली । २ पीकदान ।
उगावणो—दे० उगाडणो ।
उगावो—(न०) उगने की क्रिया ।
उगूण—दे० उगमण ।
उगेरणो—(क्रि०) गीत गाना प्रारभ करना ।
उगर—(अव्य०) वगैरह । इत्यादि ।
उग्र—(वि०) १ तेज । प्रचड । २ भयानक । ३ क्रोधी । ४ ऊचा । ५ जबरदस्त । ६ अति । अधिक ।
उग्रज—(ना०) १ गजन । जोर की गजना । २ गव गजन । (वि०) गर्वोन्नत ।
उग्रजणो—(क्रि०) १ गजन होना । २ गव से गजना । २ गव से मस्तक ऊचा उठाना ।
उग्रजती—(न०) ह स ।
उग्रभागी—(वि०) १ ऊचे भाग्यवाला । भाग्यशाली । २ तेजस्वी ।
उग्रहणो—(क्रि०) १ बदला लेना । २ कन्या मांगना । ३ कर वसूल करना । ४ उगाहना । उगाही करना । ५ पकडना धारण करना । ६ ग्रहण करना । ७ मुक्त करना ।
उग्रहण-वैरी—(न०) तलवार भाला आदि शस्त्र ।
उग्राहणो—(क्रि०) दे० १ उधरावणो । २ छोडना । ३ प्रहार करने को शस्त्र उठाना । ४ छुडाना ।
उघडणो—(क्रि०) १ उघडना । खलना । २ आवरण रहित होना । ३ प्रगट होना । ४ नगा होना । उघाडा होना । ५ (भाग्य) खुलना ।
उघरणो—(क्रि०) १ उघाई का वसूल होना । लेनदारी का वसूल होना । २ कर की वसूली होना । ३ उघडना ।
उघराई—दे० उघाई ।
उघराणी—दे० उघाइ ।
उघराणियो—(न०) उघराणी करने वाला ।
उघराणो—(न०) १ नगे पाँव । २ उघाई । (क्रि०) उगाहना । उगाही करना ।
उघरावणी—दे० उघाई ।
उघरावणो—(क्रि०) उधार दी हुई रकम वस्तु या वस्तु का मूल्य वसूल करना । तकाजा करना । २ बदला लेना ।
उघवणो—दे० उघरावणो ।
उघाई—(ना०) १ उधार दी हुई रकम का तकाजा । २ उधार दी हुई वस्तु या वस्तु की कीमत का तकाजा । उगाही । ३ उगाही का काम । ४ उधार दी हुई रकम । ५ वसूल हुई रकम । वसूली ।
उघाड—(न०) १ प्रकट । अवरोधाभाव । २ रहस्य का प्रस्फुटन । रहस्योद्घाटन । ३ (समस्या का) स्पष्टीकरण । खुलासा । ४ मैदान । ५ समक्ष । ६ आकाश का बादल रहित होकर धूप निकलना ।
उघाडणो—(क्रि०) १ खोलना २ खुला करना । उघाडा करना । ३ ढक्कन का हटाना ।

उघाड पडणो—(मुहा०) १ समझ म
माना। २ रहस्य खुलना।
उघाड बार—दे० उघाडो बारो।
उघाड बारगे—(न०) १ खुला प्रवेश।
२ वह स्थान जिसमे चाहे जिधर से प्रवेश
हो सके। ३ मुख्य द्वार के अतिरिक्त
बिना प्रवरोध के आने जाने का मार्ग।
४ चार के आने जाने के लिए सरल
मार्ग। ५ चोरी करके भाग जाने का
सरल मार्ग।
उघाडीछातो—(ना०) हिम्मत। साहस।
(वि०) साहसी वीर। (क्रिoवि०) अत्यंत
वीरता पूर्वक।
उघाडो—(वि०) १ नगा। नग्न। उघारा।
२ खुला हुआ। बिना ढका हुआ।
३ स्पष्ट। साफ। ४ प्रगट। ५ जो
बद न हो। ६ नही ओढा हुआ।
उघाडो होणो—(क्रि०) १ नगा होना।
२ बदनाम होना। ३ खुल जाना।
४ खुला होना।
उघामणो—दे० उगामणो। उगरामणो।
उचकणियो—(न०) किसी वस्तु को ऊचा
उठाने के लिए उसके नीचे रखा जाने
वाला ईट पत्थर आदि का टुकडा। उच
कन। टग। (वि०) १ उठाने वाला।
२ बोझा ढोनेवाला। ३ आँखो के
सामने चोरी करने वाला। उचकाने
वाला।
उचकणो—(क्रि०) १ उचकना। ऊपर
उठना। २ भागना।
उचकावणो—(क्रि०) १ उचकाना। ऊपर
उठाना। २ आँखो के सामने किसी वस्तु
को चुरा लेना। उचकाना।
उचक्को—दे० उचगो।
उचटणो—(क्रि०) १ चौंकना। भडकना।
विचकना। १ नींद मे चौकना। ३ नींद
उड जाना। ४ मन नही लगना।
५ चित्त फट जाना।
उचरणो—(क्रि०) उच्चार करना। कहना।
उचगो—(वि०) १ उचक्का। उठाईगीर।
२ धाई। ठग। धूर्त। ३ बदमाश।
उचडणो—(क्रि०) १ उठाना। उचकना।
२ उछालना।
उचत—दे० उधार।
उचत खातो – दे० उधार खातो।
उचाट—(ना०) १ व्यथा। पीडा।
२ चिंता। ३ मन की अस्थिरता।
उचारणो—(क्रि०) १ उच्चारण करना।
२ बोलना। कहना।
उचाळा—(न०) १ दुष्काल या युद्ध आदि
सकट के कारण सामूहिक रूप से निवास
स्थान को छोड कर दूसरे किसी स्थान मे
निवास हेतु किया जाने वाला प्रजा का
प्रस्थान। २ सकट काल मे देशातर
निवास के लिये किया जाने वाला प्रजा
का एक साथ प्रस्थान। उच्चलन।
उचावणो—(क्रि०)१ बाझा आदि उठाना।
२ उठवाना।
उचासरो—(न०) १ श्रेष्ठ जाति का श्वेत
घोडा। २ इन्द्र के घोडे का नाम।
उच्चै श्रवा।
उचाचळो—(वि०)१ अविचारी। २ उद्धत।
३ चचल। ४ उतावला।
उचित—(वि०) योग्य। मुनासिब। ठीक।
उचीश्रव—दे० उचासरो।
उचश्रव—दे० उचासरो।
उचैस्रवो—दे० उचासरो।
उच्च—दे० ऊचो। श्रेष्ठ।
उच्चळचित्तो—(वि०) १ उच्च हृदय।
उदार। २ अस्थिर चित्त वाला।
उच्चाटन—(न०) १ जुडी हुई वस्तु को
अलग करना। उखाडना। २ एक
अभिचार।
उच्चार—(न०) कथन। बोल।

उच्चारण—(न०) १ शब्दों या वर्णों के बोलने का ढंग। २ मुँह से बोलना।
उच्चैश्रवा—(न०) १ चौदह रत्नों में से एक। २ इन्द्र का घोड़ा।
उच्छव—(न०) १ उत्सव। २ पर्व। त्यौहार। ३ उत्साह।
उछजणो—(क्रि०) १ प्रहार करने के लिए शस्त्र उठाना। २ हाथ ऊंचा उठाना। ३ जोश में आना। ४ ऊपर उठना। ५ ऊपर उठाना।
उछट—(ना०) १ कुदाई। २ भगदड़। ३ पानी का धक्का। जोर की लहर। ४ लहर। तरंग। ५ उग्रता।
उछटणो—(क्रि०) १ कूदना। २ भागना। ३ पानी का धक्का आना। ३ लहर के धक्के से सम्हल नहीं सकना।
उछत—(ना०) १ प्रसन्नता। खुशी। २ इच्छा। चाह। ३ शक्ति हैसियत। सामर्थ्य।
उछब—दे० उच्छव।
उछरणो—(क्रि०) १ पालण-पोषण प्राप्त करना। पालण पोषण होना। २ पोषण पाना। ३ पोषण पाकर वयस्क या योग्य होना। ४ गाय भैंस आदि पशुओं का जंगल में चरने को जाना।
उछरंग—(न०) १ उत्सव। २ हर्ष। आनंद।
उछरजण—(न०) दान।
उछळंग—(न०) १ नाच। नृत्य। उच्छलाग। २ उमंग। उत्साह। ३ खुशी। प्रसन्नता।
उछळ—(ना०) १ किसी कार्य को करने के लिये या किसी वस्तु की पसंदगी अथवा उसको प्राप्त करने के लिये दूसरों से पहले दिया जाने वाला अवसर। २ अनेक इकाइयों में से किसी एक की पसंदगी। ३ अधिक लाभ वाले भाग को लेने की पसंदगी। ४ अधिक लाभ वाले भाग को लेने की छूट। ५ अभिरुचि। मन की पसंद। ६ कुदान। छलांग।
उछळ-कूद—(ना०) १ ऊधम। उत्पात। २ चंचलता। अधीरता। ३ शोरगुल।
उछळणो—(क्रि०) १ कूदना। फांदना। २ खुशी से कूदना। ३ जोश में आना। ४ आगे बढ़ना।
उछळ-पांती—(ना०) १ पसंदगी वाला भाग। २ अधिक लाभ वाला भाग।
उछंग—(ना०) उत्संग। गोदी। क्रोड।
उछाळ—(ना०) १ पाणिग्रहण के बाद दूल्हा दुलहिन का जनिवासे जाते समय मार्ग में ठौर ठौर की जाने वाली रुपये पैसों की निछरावल वर्षा। २ राजा, महंत या धनाढ्य की मृत्यु होने पर श्मशान यात्रा के समय मार्ग में की जाने वाली रुपये-पैसों की फेंकाई। ३ उछलने की क्रिया। कुदान।
उछाळणो—(क्रि०) फेंकना। उछालना।
उछाळो—(न०) १ उछलने की क्रिया। २ ऊधम। शोर। ३ लहर। तरंग। ४ उमंग। ५ जोश। ६ बिना सार सम्हाल के इधर उधर बिखरी हुई और अव्यवस्थित रूप से पड़ी हुई सामग्री।
उछाव—(न०) १ उत्सव। २ उत्साह। ३ हर्ष। ४ जोश।
उछाह—दे० उछाव।
उछांट—(ना०) वमन। कै। उलटी।
उछेट—(ना०) अपूर्ण गर्भपात।
उछेद—(न०) १ उच्छेद। खंडन। २ नाश। ध्वंश।
उछेदणो—(क्रि०) १ उखाड़ना। २ खंडन करना। ३ नाश करना।
उछेर—(न०) १ पालण पोषण। भरण पोषण। २ पुत्र पुत्री की सन्तान। आल औलाद। ३ पुत्र-पुत्री। संतान।

उछेरणो—(क्रि०) १ पालन पोषण करना। २ पालन पोषण करके योग्य बनाना। ३ गाय भैंस आदि पशुओं को चराने के लिए जंगल में हांकना।

उछ्रंग—(न०) १ उत्संग। दान। २ निछावर।

उछ्रंग—दे० उछ्रंग।

उज—(न०) १ नत्र। २ आंसू। ३ हृदय। ४ स्तन। ५ आज। पुरुषार्थ। साहस। ६ कांति। ७ तेज। शक्ति। ऊर्जा। ८ शान। ठाट बाट।

उजा—दे० उज।

उजड—(वि०) १ निर्जन। वीरान। २ कटकाकीर्ण। झाड़ीदार। अप्रशस्त (मार्ग)। (न०) बिना मार्ग का गमन।

उजड—(वि०) १ मूर्ख। नासमझ। २ अनाड़ी। ३ असभ्य।

उजडणो—(क्रि०) १ उजाड होना। वीरान होना। २ बिखरना। ३ उखड़ना। ४ नष्ट होना। बरबाद होना।

उजदार—(न०) १ सेनाध्यक्ष। २ ओहदेदार। हुजदार। ३ नौकर वर्ग। (वि०) १ साहसी। २ तेजस्वी। ३ बड़े स्तनों वाली।

उजबक—(न०) १ रणबांकुरा वीर। २ घोड़ा। ३ तातारी नाग। ४ तातार जाति। ५ मुसलमान। ६ शत्रु। (वि०) १ आततायी। २ अनाड़ी। उजड्ड। ३ मूर्ख। नासमझ। ४ रण व्याकुल। रण विक्षिप्त। (क्रि० वि०) अविच्छिन्न रूप से। लगातार।

उजमणो—(न०) १ किसी प्रतिज्ञात नियमित व्रत का उद्यापन। २ प्रतिज्ञात नियमित व्रत की समाप्ति के अवसर पर किया जाने वाला भोज। उजमणो का भोजन समारोह। ३ व्रत का उद्यापनोत्सव। ४ उत्तम कार्य। ५ मंगल कार्य का सम्पादन। (क्रि०) १ व्रत का उद्यापन उत्सव करना। २ उजमणे के निमित्त भोजन समारोह करना।

उजर—(न०) १ उज्र। आपत्ति। एतराज। २ विरोध। ३ मना। अस्वीकृति।

उजरत—(ना०) पारिश्रमिक। मजदूरी।

उजरदार—(वि०) एतराज करने वाला। उज्र उठाने वाला। उजरदारी पेश करने वाला।

उजळणो—(क्रि०) १ उजला होना। साफ होना। २ प्रकाशित होना। प्रकाशना। चमकना।

उजळाई—(ना०) १ गुदा प्रक्षालन। २ शौचाचार। ३ स्वच्छता। सफाई। ४ उत्तमता। पवित्रता। ५ चमक।

उजळो—(वि०) १ उज्वल। स्वच्छ। २ श्वेत। सफेद। धोळो।

उजमणो—दे० उजमणो।

उजवाळक—(वि०) १ उज्वल करने वाला। २ प्रसिद्ध करने वाला। ३ ख्यातनामा।

उजवाळणो—(क्रि०) १ उज्वल करना। २ प्रसिद्ध करना। ३ यशस्वी बनाना। ४ प्रकाशित करना। चमकाना। दे० अजवाळणो।

उजवाळी—(ना०) चांदनी। (वि०) शुक्ल पक्ष की।

उजवाळो—(न०) उजाला। प्रकाश। दे० अजवाळो।

उजागर—(वि०) १ प्रकाशित। २ विख्यात। प्रसिद्ध। ३ श्रेष्ठ। ४ महत्वपूर्ण। ५ सुन्दर। मनोहर। ६ सचेत। सावधान। ७ अनोखा। ८ धीर वीर। ९ वंश को उज्वल करने वाला।

उजागरो—(न०) १ जागरण। २ नींद का अभाव। ३ नींद नहीं लेने के कारण

उत्पन्न आलस्य। (वि०) १ प्रसिद्ध। २ श्रेष्ठ। ३ सुंदर। ४ अनोखा। ५ वंश को उज्वल करने वाला।

उजाड़—(न०) १ निर्जन स्थान। २ जंगल। ३ ध्वंस। नाश। ४ हानि। नुकसान। (वि०) १ निर्जन। वीरान। २ नष्ट। ध्वस्त।

उजाड़णो—(क्रि०)१ नष्ट करना। ध्वस्त करना। २ बस्ती को निर्वासित करना। बस्ती निर्जन करना। वीरान करना। ३ बिगाड़ना।

उजाथर—दे० उजागर।

उजाळ—(न०) १ प्रकाश। २ प्रकाशित। करने वाली वस्तु। ३ प्रकाश देनेवाली वस्तु। ४ पानी मिश्रित वह तेजाब जिससे सोना चांदी आदि धातुएँ व गहने आदि साफ किये जाते हैं।

उजाळक—दे० उजवाळक।

उजाळणो—(क्रि०) १ प्रकाशित करना। २ चमकाना। उजाला करना। साफ करना। ३ कीर्तिवान बनाना।

उजाळी—(ना०) चांदनी। उजाली।

उजाळो—(न०) १ उजाला। चांदना। रोशनी। २ चमक। तेज।

उजाळो पख—(न०) शुक्ल पक्ष। अजवाळियो पाख।

उजावणो—(क्रि०) उपजाना। पैदा करना।

उजास—(न०) १ प्रकाश। उजाला। २ चमक। कान्ति। ३ सफेदी। उजलापन।

उजासणो—(क्रि०) प्रकाशित करना। चमकाना।

उजासी—(ना०) १ प्रकाश। २ सफेदी।

उजियाळी—(ना०) चांदनी। चंद्रिका।

उजियाळो—दे० उजाळो।

उजियास—दे० उजास।

उजीणी—(ना०) उज्जयिनी। उज्जैन नगर।

उजीर—(न०)१ वजीर। मंत्री। दीवान। २ शतरंज की एक गोटी का नाम।

उजूद—(वि०) गैर मौजूद। 'मौजूद' का उलटा।

उजेण—दे० उजीणी।

उजेणी—दे० उजीणी।

उजेस—(न०) प्रकाश। (वि०) १ प्रकाशमान। २ प्रकाशित।

उजोत—(न०) उद्योत। प्रकाश।

उज्जाग—(न०) उद्यान।

उज्जैन—(न०) १ मालवा की प्राचीन राजधानी का नगर। २ विक्रम सम्वत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य की राजधानी का उज्जयिनी नगर।

उज्वल—(न०) १ कांतिमान। उजला। देदीप्यमान। २ स्वच्छ। ३ सफेद।

उझळणो—(क्रि०) १ छलकना। २ मर्यादा के बाहर होना। ३ उफनना।

उझाखो—(न०) उजाला। प्रकाश।

उझेड़णो—(क्रि०) १ चीरना। फाड़ना। २ उधेड़ना।

उझेळ—(ना०) १ लहर। तरंग। २ जोश। (वि०) अत्यधिक।

उझेळणो—(क्रि०) १ तरंगित करना। २ जोश में लाना। ३ हिलाना। डुलाना।

उटीगण—(ना०) एक वनस्पति।

उठणो—ऊठणो।

उठग—(न०) तकिया। उपधान।

उठतरी—दे० उठातरी।

उठाइगरो—(वि०) १ चोर। २ आंख बचाकर वस्तु चुराने वाला। उचक्का।

उठाऊ—(वि०) १ चोर। २ उचक्का। ३ खर्चीला। ४ उभरा हुआ।

उठाऊगीर—(वि०) नजर चुका कर दूसरे की वस्तु को उठालेने या चुराने वाला।

उठाडणा—(क्रि०) दे० उठावणा।

उठाणो—(न०) दे० उठामणा। (क्रि०) १ उठाना। खड़ा करना। २ सोते हुए को जगाना। ३ धारण करना। लेना। ४ ऊपर करना। ५ ऊंचा लेना। ६ दूर करना।

उठामणी—दे० उठावणी। दे० उठामणो।

उठामणा—(न०) १ मरे हुए का बारह दिनों तक शोक मनाने के बाद (विज्ञापन करके) बैठ रहने की क्रिया को समाप्त करने की विधि। २ मृतक के शोक बैठक की समाप्ति। नावड़ की समाप्ति। ३ शोक-बैठक की समाप्ति के समय स्नेही-संबंधियों का मृत व्यक्ति के यहां जाने की क्रिया।

उठाव—(न०) १ किसी वस्तु का उठा हुआ भाग। २ उठाने या उभरने का काम। ३ दिखावा। ४ प्रारंभ। शुरू आत। ५ माल की बिक्री। खपत। ६ खर्च। व्यय। ७ गुंजायश। समाई।

उठावणी—दे० उठामणी।

उठावणा—दे० उठामणा। (क्रि०) १ उठाना। खड़ा करना। २ उठवाना। खड़ा करवाना। ३ सोते हुए को जगाना। ४ ऊंचा करना। ५ लेना। धारण करना।

उठावो—दे० उठाव।

उठांनरी—(ना०) १ चले जाने का भाव। गमन। २ बरखास्तगी। मौकूफी। ३ बदली। स्थानांतर। ४ चोरी। ५ चापलूसी। ६ उठाईगिरी।

उठी—(क्रि०वि०) उधर। वहां। उस ओर।

उठै—(क्रि०वि०) वहां। उधर।

उडक-दुडकियो—(वि०) १ कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में रहने वाला। पक्ष पलटू। २ दोनों पक्षों में रहनेवाला। ३ अविश्वसनीय।

उडगण—(न०) तारा समूह।

उडगाण—दे० उडगण।

उडगणटोळी—(न०) उडनेवाला खटोला। विमान।

उडणो—(क्रि०) १ पक्षी टिड्डी कीट आदि का आकाश में विचरण करना। २ विमान का आकाश में दौड़ना। ३ पतंग गुब्बारे आदि का आकाश में ऊपर उठना। ४ ध्वजा झंडे आदि का फहराना। ५ तेज भागना। ६ रंग का फीका पड़ना। ७ गायब होना। ८ इधर उधर हो जाना। ९ छलांग मारकर पार हो जाना। १० गुरुत्व के जोर से पदार्थों का ऊंचा जाकर दूर गिरना। ११ तेजी से शस्त्र का चलना। १२ वायु के प्रवाह से वृक्षों के पत्तों का हिलना। (वि०) उडनेवाला।

उडणा प्रणा—(न०) एक ही दिन में टोडा और जालोर का विजय कर लेने के उपलक्ष में प्राप्त किया गया चित्तौड़ के राणा रायमल कुंभावत के पुत्र पृथ्वीराज की अद्भुत वीरता का विरुद। दे० प्रसंग प्रवाद जतवाड़ी।

उडनो तीर—(न०) जान बूझकर सिर पर ली हुई आफत।

उडद—(न०) एक द्विदल अन्न। उरद। माष।

उडदा बेगम—(ना०) १ हरम की रक्षा में रहने वाली मुसलमान बादशाह की दासी। उर्दू बेगम। २ उद्दंड स्त्री।

उडदा वगण—दे० उडदा बेगम। (वि०) मूर्ख।

उडदावा—(न०) घोड़े का एक रोग। घोड़े की लापसी।

उडदी—(ना०) वर्दी। सरकारी वेशभूषा।

उडदू—(ना०) १ फारसी लिपि में लिखी जाने वाली एक यावनी भाषा। उर्दू।

उत्पन्न आसरा
२ और
५ वश म।
उजाड़—(न०)
२ जंगल। ३
नुकसान। (वि०
२ नष्ट। ध्वस्त।
उजाडणो—(क्रि०) १
करना। २ वस्ती को
वस्ती निर्जन करना।
३ बिगाड़ना।
उजाथर—दे० उजागर।
उजाळ—(न०) १ प्रकाश। २
करने वाली वस्तु। ३ प्रकाश
वस्तु। ४ पानी मिश्रित वह
जिससे सोना चाँदी आदि धातुएँ व
आदि साफ किये जाते हैं।
उजाळक—दे० उजवाळक।
उजाळणो—(क्रि०) १ प्रकाशित करना
२ चमकाना। उजाला करना। साफ
करना। ३ कीर्तिवान बनाना।
उजाळी—(ना०) चाँदनी। उजाली।
उजाळो—(न०) १ उजाला। चाँदना।
रोशनी। २ चमक। तेज।
उजाळो पख—(न०) शुक्ल पक्ष। अजवा
ळियो पाख।
उजावणो—(क्रि०) उपजाना। पैदा
करना।
उजास—(न०) १ प्रकाश। उजाला।
२ चमक। कान्ति। ३ सफेदी।
उजलापन।
उजासणो—(क्रि०) प्रकाशित करना।
चमकाना।
उजासी—(ना०) १ प्रकाश। २ सफेदी।
उजियाळी—(ना०) चान्दनी। चंद्रिका।
उजियाळो—दे० उजाळो।
उजियास—दे० उजास।

उ
उभैळ
२
झुला
उटीगण
उठणो—
उठग—(न०
उठतरी—दे०
उठाइगरी—(
बचाकर वस्तु
उठाऊ—(वि०) १
३ गर्वीला। ४ उ
उठाऊगीर—(वि०) नज
की वस्तु को उठालेने या घु

उणींरो—(सर्व०ब०व०) उनका ।

उणि—(सर्व०) १ उस । २ उसी । ३ उसे । उसको । ४ उसने ।

उणियार—(वि०) समान । सदृश । अनुहार । (न०) १ समान मुखाकृति । २ सूरत । शक्ल ।

उणियारो—(न०) १ मुखाकृति । सूरत । शक्ल । २ सादृश्य । ३ अनुकरण । ४ रूप ।

उणिग्रार—दे० उणियार ।

उणिहारो—दे० उणियारो ।

उणी—(सर्व०) १ उसी । उसको । २ उसने ।

उणीज—दे० उणिज ।

उत—(न०) सुत । पुत्र । (क्रि०वि०) वहाँ । उधर । (उप०) एक उपसर्ग ।

उताठ—(क्रि० वि०) उत्कंठापूर्वक । २ ऊपर को गर्दन उठाये हुए । (वि०) उत्कंठित । २ आतुर ।

उताठा—(ना०) १ प्रबल इच्छा । आतुरता । २ आशा ।

उतणो—(वि०) उतना ।

उतन—(न०) १ वतन । जन्मभूमि । २ देश । ३ निवास । ४ ठिकाना ।

उतपत—(ना०) उत्पत्ति ।

उतपन—(वि०) उत्पन्न । (क्रि०भू०का०) उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ ।

उतपात—(न०) १ ऊधम । २ शरारत । ३ उपद्रव । ४ विनाश कारक आपत्ति । उत्पात । ५ दुख ।

उतपाती—(वि०) १ नटखट । शरारती । २ उपद्रवी । उत्पाती ।

उतवग—(न०) सिर । मस्तक । उत्तमांग ।

उतमग—दे० उतवग ।

उतमाई—(ना०) १ उत्तमता । २ पवित्रता । अच्छापन । ३ विशेषता । खूबी ।

उतरणो—(क्रि०) १ मुकाम करना । ठहरना । मुसाफरी में विश्राम करना । २ ऊपर से नीचे आना । ३ सवारी आदि पर चढ़े हुए का सवारी परसे नीचे की स्थिति में (नीचे) आना । ४ किसी पद या अधिकार का छिन जाना । ५ पहिने हुए वस्त्र आभूषण आदि का शरीर से विलग होना । ६ भोजन सामग्री का पक कर तैयार हो जाने पर चूल्हे आदि से नीचे लिया जाना । ७ हिसाब लेख आदि की प्रतिलिपि होना । ८ वस्त्र लेख आदि तैयार होकर समाप्त होना । ९ छायाचित्र (फोटो) खिंचना । १० किसी वस्तु के भाव में मंदी आना । ११ कान्तिहीन होना । १२ सांप बिच्छू आदि के डंक का विष कम होना । १३ अमोत सूतक आदि के कारण घड़े आदि मिट्टी के बरतनों का अव्यवहार्य होना । १४ चोट लगने के कारण जोड़ की हड्डी का अपने स्थान से खिसक जाना । १५ नदी-नाले आदि से पार होना । १६ चाक खराद कल या सांचे आदि के द्वारा किसी वस्तु का तैयार होना । १७ बुखार या सिरदर्द का कम होना । १८ नशे का कम होना । १९ किसी वस्तु पर चढ़े हुए रंग या मुलम्मे का फीका पड़जाना या उड़जाना । २० किसी वस्तु को धोने छीलने या छिलके आदि दूर करने के बाद मूल वस्तु का (अनुमानित) तौल बैठना । २१ आवेश या क्रोध आदि का कम होना । २२ किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति मन की वृत्ति का हट जाना या कम हो जाना । २३ नदी आदि जलाशय का पानी कम हो जाना ।

(अर्थ संख्या १ से ३ के अतिरिक्त सभी व्याख्याएँ सम्बन्धित संज्ञाओं के साथ उतरणो क्रिया के लगने से यौगिक रूप

२ बादशाही जमाने का छावनी बाजार।
३ भीड भाड ।

उडपती—(न०) उडुपति । चन्द्रमा ।

उडवै—(न०) चन्द्रमा ।

उडछू—(अव्य०) छू बोलकर के किसी वस्तु को गायब कर देने का जादूगरी मंत्र । २ गायब । लुप्त । (न०) जादूगरी का खेल । जादूगरी । (वि०) गायब । लुप्त ।

उडगण—दे० उडगण ।

उडड—(न०) घोडा ।

उडडाण—(न०) अश्वसमूह । घोडे ।

उडडाणी—(न०) अश्वसमूह । घोडे । (ना०) घोडी ।

उडाऊ—(वि०) व्यर्थ खर्च करने वाला । अपव्ययी ।

उडाडणो—(क्रि०)१ उडाना । २ भगाना । ३ गायब करना । ४ चुराना । ५ तेज दौडाना । ६ शस्त्र से किसी अंग को काट कर दूर करना । ७ नष्ट करना ।

उडाण—(ना०) १ उडने का काम । उडान । २ शीघ्रगति । तेज चाल । ३ छलांग ।

उडाणो—दे० उडाडणो ।

उडावणो—दे० उडाडणो ।

उडागर—(न०) पक्षी ।

उडियद—(न०) चन्द्रमा ।

उडियण—(न०) उडुगण । तारा समूह ।

उडियाण—(न०) १ एक देश । २ साधुओं के शरीर में लपेटने का एक वस्त्र । गाती । ३ आकाश । ४ उडान । ५ तारासमूह । (वि०) १ डरावना । भयानक । २ ऊंचा ।

उडियाणी—(ना०) शरीर को कस कर बांधने का एक वस्त्र । गाती । २ पक्षी । गगनचर । ३ उडियाण देश का निवासी ।

उडिंगळ—(क्रि० वि०) उच्च स्वर से । ऊंची ध्वनि से । खूब जोर की आवाज से (ना०) १ उच्च स्वर । तेज आवाज ।
२ चारण भाट आदि कवियों की भाषा ।
३ 'डिंगल' शब्द का पर्याय ।

उडीक—(ना०) १ प्रतीक्षा । इंतजार ।
२ राजस्थानी खगोल और शकुन शास्त्र की सोलह दिशाओं में पूर्व और आग्नेय दिशाओं के बीच की दिशा ।

उडीकणो—(क्रि०) प्रतीक्षा करना । राह देखना । इंतजार करना ।

उढरणो—(न०) ओढना । ओढने का वस्त्र । २ दुपट्टा ।

उण—(सर्व०) १ उस । २ उसने ।

उणगी—(क्रि०वि०) उस ओर । उधर ।

उणचास—(वि०) पचास में एक कम । उचास । उचास की संख्या । '४९' ।

उणनाळीस—(न०) तीस और नौ की संख्या । '३९' । (वि०) उचालीस ।

उणमणापणो—(न०) उदासी । व्याकुलता ।

उणमणा—(वि०) १ उन्मना । अनमना । अन्यमनस्क । २ व्याकुल । ३ चिंतित । (स्त्री० उणमणी)

उणरी—(सर्व०) उसकी ।

उणरै—(सर्व०) उसके ।

उणरो—(सर्व०) उसका । (स्त्री० उणरी)

उणहिज—(सर्व०) उसी । उसही ।

उणहीज—दे० उणहिज ।

उणादि—(वि०) उ उर इर इत्यादि (प्रत्यय) । (व्या०)

उणाम—(न०) १ उपद्रव । २ अशांति । ३ खेती की वह नीची जमीन जिसमें वर्षा का पानी इकट्ठा होकर गेहूं चना उत्पन्न होता हो । उनाम । उनाव ।

उणाव—दे० उणाम सं० ३ ।

उणा—(सर्व०ब०व०) १ उन । २ उन्होंने ।

उणारा—(सर्व० ब० व०) १ उनके । २ उनका ।

उणारै—(सर्व०ब०व०) उनके ।

उणींरो—(सर्व०व०व०) उनका।
उणि—(सर्व०) १ उस। २ उसी ३ उसे। उसको। ४ उसी ने।
उणियार—(वि०) समान। सदृश। अनुहार। (न०) १ समान मुखाकृति। २ सूरत। नक्श।
उणियारो—(न०) १ मुखाकृति। सूरत। शक्ल। २ सादृश्य। ३ अनुहरण। ४ रूप।
उणिग्रार—दे० उणियार।
उणिहारो—दे० उणियारो।
उणी—(सर्व०) १ उसी। उसने। २ उसीने।
उणीज—दे० उणन्ज।
उत—(न०) सुत। पुत्र। (क्रि०वि०) वहाँ। उधर। (उप०) एक उपसर्ग।
उतकंठ—(क्रि० वि०) उत्कंठापूर्वक। २ ऊपर को गरदन उठाये हुए। (वि०) उत्कण्ठित। २ आतुर।
उतकंठा—(ना०) १ प्रबल इच्छा। आतुरता। २ आशा।
उतणा—(वि०) उतना।
उतन—(न०) १ वतन। जन्मभूमि। २ देश। ३ निवास। ४ ठिकाना।
उतपत—(ना०) उत्पत्ति।
उतपन—(वि०) उत्पन्न। (क्रि०भू०का०) उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ।
उतपात—(न०) १ ऊधम। २ शरारत। ३ उपद्रव। ४ विनाश कारक आपत्ति। उत्पात। ५ दुख।
उतपाती—(वि०) १ नटखट। शरारती। २ उपद्रवी। उत्पाती।
उतबंग—(न०) सिर। मस्तक। उत्तमांग।
उतमंग—दे० उतबंग।
उतमाई—(ना०) १ उत्तमता। २ पवित्रता। अच्छापन। ३ विशेषता। खूबी।

उतरणो—(क्रि०) १ मुकाम करना। ठहरना। मुसाफिरी में विश्राम करना। २ ऊपर से नीचे आना। ३ सवारी आदि पर चढ़े हुए का सवारी पर से पृथ्वी की स्थिति में (नीचे) आना। ४ किसी पद या अधिकार का छिन जाना। ५ पहिने हुए वस्त्र आभूषण आदि का शरीर से अलग होना। ६ भोजन सामग्री के पक कर तैयार हो जाने पर चूल्हे आदि से नीचे लिया जाना। ७ किताब लेख आदि की प्रतिलिपि होना। ८ कथा भाग आदि रूप विभाग का समाप्त होना। ९ छायाचित्र (फोटो) खिंचना। १० किसी वस्तु के भाव में मंदी आना। ११ कान्तिहीन होना। १२ सांप बिच्छू आदि के डंक का विष कम होना। १३ भूत प्रेत आदि के कारण चढ़े आदि मिट्टी के उतरने का प्रत्यवसाय होना। १४ चोट लगने के कारण जोड़ की हड्डी का अपने स्थान से खिसक जाना। १५ नशा-ताप आदि से पार होना। १६ चाक मशीन कल या सांचे आदि के द्वारा किसी वस्तु का तैयार होना। १७ बुखार या सिरदर्द का कम होना। १८ नशे का कम होना। १९ किसी वस्तु पर चढ़े हुए रंग या मुलम्मे का फीका पड़जाना या उड़जाना। २० किसी वस्तु को धोने छीलने या छिलके आदि दूर करने के बाद मूल वस्तु का (अनुमानित) तौल बैठना। २१ आवेश या क्रोध आदि का कम होना। २२ किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति मन की वृत्ति का हट जाना या कम हो जाना। २३ नदी आदि जलाशय का पानी कम हो जाना।

(अर्थ संख्या १ से ३ के अतिरिक्त सभी व्याख्याएँ सम्बन्धित संज्ञाओं के साथ उतरणो क्रिया के लगने से यौगिक रूप

मे तत्तत् ग्रर्थों को प्रगट करती है। जैसे (ग्रथ क्रम से)—४ हाकमी उतरणी। जागीरी उतरणी। ५ ग्रगरखी उतरणी। ६ रोटी उतरणी। सीरो उतरणो। ७ हिसाब उतरणा। ८ पखवाडो उतरणो। ६ फोट्र उतरणा। १० भाव उतरणो। ११ मूछो उतरणा। १२ जहर उतरणो। १३ मटकी उतरणी। १४ हाथ उतरणो। १५ नदी सू पार उतरणा। १६ खगद सू चूडी उतरणी। १७ ताव उतरणो। १८ नशो उतरणो। १६ रग उतरणा। २० बिदामरा छिनका काढिया ता सेर री ग्रधसेर उतरी। २१ रीस उतरणी। २२ मन उतरणो। २३ नदी रो पाणी उतरणो।

उतरतो—*(वि०)* १ जो तुलना म घटिया हो। २ निम्न श्रेणी का। हलके दर्जे का। ३ ऊपर स नीचे ग्राता हुग्रा। उतरता हुग्रा।

उतराई—*(ना०)* १ ऊपर से नीचे ग्राने की क्रिया। उतरान। २ ढलान। ढळाव। उतरान। ३ नाव द्वारा पार होने या पार करने का काम। ४ नाव द्वारा पार करने की मजदूरी। ५ पार उतरने का कर। ६ उठाई हुई वस्तु को सहारा देकर नीचे रखवाने का काम।

उतराखड—*(न०)* १ हिमालय पवत प्रदेश का एक नाम। २ बदरी-केदार, गगोत्तरी यमुनोत्तरी और कैलाश ग्रादि हिमालय का तीथ प्रदेश। ३ भारत के उत्तर प्रदेश का उत्तरी भाग। हिमालय पवत के ग्रास पास का प्रदेश।

उतराण—*(न०)* १ उत्तर दिशा। २ उतार। ढलाई। ढलाव। उतराई। ३ सूय का उत्तरायण प्रवेश पव। मकर सक्रांति।

उतराणो—*(क्रि०)* १ उठाई हुई वस्तु को सहारा देकर नीचे रखवाना। उतराना। उतरवाना। २ ऊपर से नीचे लाने में मदद करना।

उतराद—*(न०)* उत्तर दिशा।

उतरादू—*(वि०)* १ उत्तर दिशा की ग्रोर का। *(ग्रव्य)* उत्तर दिशा म।

उतरादा—दे० उतरादू।

उतराध—दे० उतराद।

उतराधी—दे० उतरादू।

उतराधू—दे० उतरादू।

उतरावणो—दे० उतराणो।

उतरामण—*(न०)* मकान के द्वार पर लगने वाले छज्जे के नीचे का पत्थर।

उतग—*(न०)* १ घोडा। २ नृप। *(वि०)* ऊँचा। उत्तुग।

उतत—*(वि०)* उत्पन्न।

उतरियोडो—*(वि०)* १ उतरा हुग्रा। २ व्याकुल। चिंतित। ३ बेकार।

उतरो—*(वि०)* उतना।

उताप—*(न०)* १ पीडा। दुख। २ रोग।

उतार—*(न०)* १ कद, विस्तार या मात्रा ग्रादि मे कमी होते रहने का भाव। क्रमश घटने की प्रवृत्ति। घटने की क्रिया। २ उतरने की क्रिया। ३ ढाळ। ढलाव। ४ घटाव। कमी। ५ पतन।

उतार-चढाव—*(न०)* १ उतरना चढना। २ उतराई-चढाई। ढलाव और चढाव। नीचाई ऊँचाई। ३ ग्रवनति ग्रौर उन्नति। पतनोन्नति।

उतारण-ग्रब्ब—*(न०)* १ गव उतारने वाला। गवभजन। २ परमात्मा।

उतारणो—*(क्रि०)* १ ऊँचे से नीचे लाना। २ उठाई हुई वस्तु को नीचे रखना। ३ पहने हुए वस्त्र को शरीर से ग्रलग करना। ४ निछावर करना। ५ निग लना। ६ पार ले जाना। ७ पद से हटाना। ८ ग्राश्रय देना। ठहराना। ६ तैयार करना। १० नकल करना। ११ उग्र प्रभाव दूर करना।

उतारू—*(वि०)* १ उपयोग मे लाया हुआ। व्यवहृत। उतरन। २ सनद्ध। तत्पर। उद्यत। ३ नदी म से पार करने वाला। ४ प्रवासी।

उतारो—*(न०)* १ विश्राम। पडाव। २ ठहरने का स्थान। ३ बरात के ठहरने का स्थान। जनिवासा। ४ निवास स्थान। ५ किसी काम या उसकी व्यवस्था के सबध की सूची। अवतरण। ६ प्रेत बाधा मिटाने की एक क्रिया।

उताळ—दे० उतावळ।

उताळो—दे० उतावळो।

उतावळ—*(ना०)* १ बेकरारी। सरगर्मी। व्यग्रता। २ शीघ्रता। जल्दी। ३ चचलता। अस्थिरता। *(क्रि०वि०)* शीघ्र। जल्दी। ताकीद।

उतावळो—*(वि०)* १ जल्दी करने वाला। उतावला। फुर्तीला। जल्दबाज। २ जोशीला। ३ बेकरार। व्यग्र। ४ चचल। अस्थिर। *(क्रि०वि०)* झट। शीघ्र।

उतिम—*(वि०)* उत्तम। उत्कृष्ट। श्रेष्ठ।

उतो—*(वि०)* उतना।

उत्कृष्ट—*(वि०)* श्रेष्ठ। उत्तम।

उत्तम—*(वि०)* उत्कृष्ट। श्रेष्ठ।

उत्तमता—*(ना०)* श्रेष्ठता।

उत्तमताई—दे० उतमाई।

उत्तम पुरुष—*(न०)* व्याकरण मे वह सर्वनाम जो बोलने वाले पुरुष का बोध कराता है। जैसे—मैं म्हूं हू म्हे म्हां।

उत्तमाग—*(न०)* १ सिर। २ मुख।

उत्तर—*(न०)* १ जवाब। प्रतिवचन। २ उत्तर दिशा। ३ बरात को दहेज के रूप म दी जाने वाली विदाई। ओतर। ४ इनकार। मना। ५ बहाना। मिस। ६ शेष। बाकी। पीछे। *(क्रि०वि०)* पीछे। बाद। अनन्तर।

उत्तरकाड—*(न०)* १ रामायण का शेष काण्ड। २ किसी पुस्तक का शेष भाग।

उत्तरकाळ—*(न०)* वृद्धावस्था।

उत्तरक्रिया—*(ना०)* मरण की अतिम क्रिया।

उत्तरदायी—*(वि०)* जवाबदार।

उत्तर दिशा—*(ना०)* दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। उदीची। उतराद।

उत्तरपद—*(न०)* समास का अतिम पद।

उत्तर मीमासा—*(ना०)* मीमासा दर्शन का अतिम भाग। वेदान्त।

उत्तराखड—दे० उतराखड।

उत्तराधिकार—*(न०)* १ सपत्ति का स्वामित्व। विरासत। २ किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी सपत्ति का पाने का अधिकार।

उत्तराधिकारी—*(न०)* वारिस।

उत्तरायण—*(न०)* सूर्य का उत्तर दिशा म गमन।

उत्तो—दे० उतो।

उत्थान—*(न०)* १ उन्नति। समृद्धि। २ उदय। ३ उठाव।

उत्पत्ति—*(ना०)* १ उद्भव। २ जन्म। ३ उपज। पैदास।

उत्पन्न—*(वि०)* १ जन्मा हुआ। २ पैदा। ३ उद्भूत।

उत्पात—दे० उतपात।

उत्पाती—दे० उतपाती।

उत्सव—*(न०)* १ आनद मगल का समय। २ धूमधाम। समारोह। ३ पर्व। त्यौहार।

उत्साह—*(न०)* १ उमग। २ आनद। ३ साहस।

उथ—*(क्रि०वि०)* वहाँ।

उथडणो—*(क्रि०)* १ गिरना। पडना। २ भिडना। लडना।

उथप—*(न०)* १ उत्थापन। २ अवज्ञा।

उथपणो—(क्रि०) १ उखाड़ना। ऊखना। २ उगाड़ना। उथापना। ३ आज्ञा का उल्लंघन करना। ४ राज्यच्युत करना। ५ हराना। ६ उल्लंघना।

उथळणो—(क्रि०) १ उलटना। २ उलट पुलट करना।

उथळ-पुथळ—(ना०) १ हलचल। क्रान्ति। २ उलटा-सीधा। क्रमभंग। ३ परिवर्तन। ४ अव्यवस्था। (वि०) अव्यवस्थित। उलटा-सीधा।

उथळावणो—(क्रि०) १ उलटाना। उथलाना। २ पदच्युत करना। ३ उलटवाना।

उथलो—(ना०) १ उत्तर। जवाब। २ किसी बात अथवा रोग आदि की पुनरावृत्ति। (वि०) १ थोड़ा गहरा। छिछला।

उथळो—दे० उथलो।

उथाप—(ना०) उत्थापन। उन्मूलन।

उथापण—(वि०) उत्थापन करने वाला। उन्मूलन करने वाला।

उथापणो—(क्रि०) १ उखाड़ना। उन्मूलन करना। २ राज्यच्युत करना। ३ आज्ञा का उल्लंघन करना। ४ पराजित करना। हराना।

उथाप थाप—दे० उथाप सथाप।

उथाप-सथाप—(ना०) उत्थापन और और स्थापन। (वि०) उत्थापन और स्थापन करने वाला। पदच्युत और प्रतिष्ठित करने वाला।

उथिए—(क्रि०वि०) उधर। वहाँ।

उथिये—दे० उथिए।

उथेलणो—(क्रि०) १ उलटना। उलटा। करना। २ उलट-पुलट करना। ३ पुस्तक का पन्ना उलटना।

उथेनो—(ना०) १ जवाब। उत्तर। प्रतिवचन। उथळो। २ टूटे हुए सिलसिले की पुनः की जाने वाली चर्चा। ३ निर्णय। ४ उथलने की क्रिया।

उदक—(ना०) १ पानी। २ दान। ३ विधिवत संकल्प करके दान में दी हुई भूमि, पशु आदि। ४ राज्य-कर से मुक्त ग्राम या दान में दी हुई भूमि।

उदकणो—(क्रि०) हाथ में जल लेकर संकल्प के साथ दान देना।

उदक-भोम—(ना०) संकल्प करके दी हुई दान की भूमि।

उदग—दे० उदक।

उदगणो—दे० उदकणो।

उदगिरणो—(क्रि०) १ निगली हुई वस्तु को बाहर निकालना। उगलना। २ उगरना। बाहर निकलना। ३ प्रगट होना।

उदाग—(वि०) १ ऊँचा। २ ऊँचा उठा हुआ। उदय। ३ प्रचण्ड।

उदणो—(क्रि०) १ उदय होना। २ उत्पन्न होना। ३ प्रकट होना।

उदध—(ना०) उदधि। समुद्र।

उदधि—दे० उदध।

उदधि मत—(वि०) गंभीर मति वाला गंभीर बुद्धिमान।

उदभव—दे० उद्भव।

उदभिज—(ना०) पेड़ पौधे आदि जो पृथ्वी में से उगते हैं। उद्भिज।

उदमाद—(ना०) १ उत्पात। २ उछल कूद। तोफान। शरारत। ऊधम। ३ जोश। ४ मस्ती। ५ मौज। आनंद। ६ उत्साह। उमंग। ७ उन्माद। पागलपन। ८ उद्योग। धंधा। ९ परिश्रम।

उधमादी—(वि०) १ नटखट। शरारती। २ उत्पाती। ३ उन्मादी। पागल। ४ उत्साही। ५ मस्त। ६ परिश्रमी।

उदय—(ना०) १ उदय। प्राकट्य। २ उद्गम। ३ निकास। ४ उन्नति। वृद्धि।

उदयागरि—*(न०)* १ एक कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्योदय होना माना जाता है। २ मेरु।
उदयाचळ—दे० उदयगिरि।
उदयास्त—*(न०)* १ उदय और अस्त। २ उन्नति और अवनति। चढ़ती-पड़ती।
उदर—*(न०)* १ पेट। २ गर्भ।
उदरनिर्वाह—*(न०)* गुजारा। आजीविका। पेट भराई।
उदरपूर्ति—*(ना०)* गुजारा। पेट भराई।
उदगळ—*(न०)* १ लड़ाई। युद्ध। २ उपद्रव। उत्पात। ३ टंटा बखेड़ा। ४ शोर। हो हल्ला।
उदड—*(वि०)* १ उद्दण्ड। अक्खड़। उजड्ड। २ निडर।
उदत—*(वि०)* १ दाँत आने के पहिले की अवस्था वाला (ऊंट)। वह जिसके दाँत न निकले हों। २ बिना दांतों का। ३ उद्यत। तत्पर। ४ प्रस्तुत। ५ उठाया हुआ। ६ उठता हुआ। ७ प्रज्वलित। *(न०)* प्रकाश। उद्योत।
उदार—*(वि०)* १ दानशील। त्यागशील। २ विशाल हृदय वाला। ३ सरल हृदय वाला। ४ श्रेष्ठ। ५ शिष्ट।
उदाळणो—*(क्रि०)* १ नाश करना। दलन करना। २ उलटा कर देना। ३ औंधा मार देना।
उदास—*(वि०)* १ खिन्न। २ दुखी। ३ नाराज। ४ विरक्त।
उदासी—*(ना०)* १ खिन्नता। ३ दुख। ३ नाराजी। विरक्ति। ५ एक सम्प्रदाय। उदासी सम्प्रदाय। *(वि०)* त्यागी। बिरक्त। वरागी।
उदाहरण—*(न०)* दृष्टान्त। मिसाल। दाखलो।
उदियाचळ—*(न०)* उदयाचल। उदयगिरि।
उदियापुर—*(न०)* उदयपुर नगर।
उदीच—*(ना०)* उत्तर दिशा। उदीची।
उदीपन—*(न०)* १ उद्दीपन। प्रकाशन। २ तापन। उत्तेजन। ३ काव्य में रसों का विभाव विशेष। ४ उत्तेजना उत्पन्न करने वाले पदार्थ। ५ उभाड़।
उदेई—*(ना०)* दीमक। वल्मीक।
उदेग—*(न०)* १ उद्वेग। बेचैनी। २ घबराहट। ३ चिन्ता। ४ आवेश। जोश।
उदै—दे० उदय।
उदैगिर—*(न०)* उदयगिरि।
उदो—*(न०)* १ उदय। २ भाग्योदय। ३ भाग्यकाल। ४ भाग्य। सौभाग्य। ५ भवितव्यता। प्रारब्ध। ६ काल। समय। ७ वृद्धि। बढ़ती। उन्नति।
उदो आणो—*(मुहा०)* दुर्दिन आना। भाग्य समाप्त होना।
उद्योत—*(न०)* १ उद्योत। प्रकाश। २ नक्ष।
उद्गम—*(न०)* १ आविर्भाव। निकास। २ उदय।
उद्घाटन—*(न०)* १ खोलना। उघाड़ना। २ स्पष्टता।
उद्मी—*(वि०)* उद्यमी। उद्योगी।
उद्दिम—दे० उद्यम।
उद्देश—*(न०)* १ अभिप्राय। मतलब। २ हेतु। कारण। ३ अनुसंधान। अन्वेषण। ४ नाम निर्देशपूर्वक वस्तु निरूपण। ५ अभिलाषा। उद्देश।
उद्देश्य—*(न०)* १ लक्ष्य। उद्देश्य। २ ध्येय। २ इष्ट।
उद्देस—दे० उद्देश।
उद्देस्य—दे० उद्देश्य।
उद्धत—*(वि०)* १ अविनयी। २ उच्छृंखल।
उद्धरणो—*(क्रि०)* १ उद्धार करना। २ उद्धार होना। ३ धारण करना।
उद्धार—*(न०)* १ मुक्ति। छुटकारा। निस्तार। २ दोषमोचन। ३ सुधार।

उद्घोर—दे० उद्धार । उघोर ।
उद्भव—(न०) १ जन्म । उत्पत्ति ।
उद्यम—(न०) १ परिश्रम । २ उद्योग । धधा । काम । ३ यत्न । प्रयास । ४ पुरुषार्थ ।
उद्यमी—(वि०) उद्यम करने वाला ।
उद्यान—(न०) बाग । बगीचा ।
उद्योग—(न०) १ धधा । रोजगार । २ प्रयत्न । चेष्टा । कोशिश । ३ परिश्रम ।
उद्योत—(न०) प्रकाश । तेज ।
उद्योतवत—(वि०) प्रकाशमान । जाज्वल्यमान ।
उद्रक—(न०) डर । भय ।
उद्रावणो—(क्रि०) भय दिखाना । डराना । (वि०) भयावना । डरावना ।
उद्रेक—(न०) वृद्धि । अधिकता ।
उधडणो—(क्रि०) १ सिले हुए का टाँका टूट जाना । २ उखडना ।
उधमणो—दे० ऊधमणो ।
उधरणो—दे० उद्धरणो ।
उधरत—(ना०) १ वह लेन देन जिसको (कच्ची रोकड बही म से) पक्की रोकड बही म नही लिखा जाता है । २ अल्प समय के लिये विना ब्याजू की जाने वाली लेन देन । ३ निश्चित अल्प कालिक अवधि के अदर (जिसमे रकम का ब्याज नही चढता) लेन देन का चुकता किया जाना । ४ बिना लिखा लेन देन (ऋण) । जबानी लेन देन ।
उधळणो—दे० ऊधळणो ।
उधळियोडी—दे० ऊधळियोडी ।
उधार—(ना०) १ पैसे बाकी रखकर की गई माल की खरीदी । बाद मे चुकाने की नियत से नाम पर लिखवाकर की गई खरीदी । २ बाद म चुका देने की नियत से लिया जाने वाला रुपये पैसे (या किसी वस्तु) का लेन देन । ३ गाहकों म लेना रुपया । तकाजा । उधाई । लेनदारी । (स०पु०) ४ उद्धार । मुक्ति । छुटकारा ।
उधार करणो—(मुहा०) १ नाम पर लिखकर माल बेचना । रुपया बाकी रख कर माल बेचना । २ उद्धार करना ।
उधार खातो—(न०) अल्पकालिक उधार दी गई या ली गई रकमों (रुपया-पैसा आदि) का अस्थाई (प्राय बिना ब्याज का) खाता । २ उधार ।
उधारण—(न०) समुद्र । (वि०) उद्धार करने वाला ।
उधारण-अळियळ—(न०) समुद्र ।
उधारणीक—(वि०) १ ऋणपत्र का एक पारिभाषिक शब्द । ऋण लेने वाला । उद्धारणिक । ३ रुपये उधार लेकर खत (दस्तावेज) लिखकर देने वाला । ऋणपत्र लिख कर देने वाला ।
उधारणीनाम—(न०) १ ऋण पत्र (दस्तावेज) का एक पारिभाषिक पद । २ ऋण लेने वाले का नाम । ३ ऋण पत्र (खत) लिखाने वाले का नाम । आसामी का नाम । ४ खत (दस्तावेज) म लिखे जाने वाले ऋणी का नाम ।
उधारणो—(क्रि०) १ उधार ले जाने वाले के नाम पर बही म लिखना । २ बही मे लेखे (उधार) बाजू म रकम का लिखना । उधार की नोंध करना । ३ उधार बाजू म खच की रकम लिखना । ४ उद्धार करना । निस्तार करना ।
उधारनूध—दे० उधार बही ।
उधार बही—दे० उधार बही ।
उधार-लहणो—(न०) ग्राहकों को उधार दिये हुए माल के बकाया रुपये । (क्रि०) १ नाम पर लिखवाकर माल खरीदना । २ नाम लिखवाकर रुपये लेना ।

उधार-वही—(ना०)१ उधार दिये हुए माल का रकम अथवा ली गई उधार रकम लिखने की वही। २ उधारी की याद।

उधारियो—(वि०) उधार लेने वाला। उधारिया।

उधारी—(वि०) उधार दी हुई या ली हुई (वस्तु)।

उधारी घड—(ना०) १ ली हुई सेना। २ भाड़े की सेना। ३ वह शत्रु सेना जो विजय न प्राप्त कर सकी हो। ४ पराजित सेना।

उधारी घड गहण—(वि०) १ शत्रु की सेना को अपने अधिकार में करने वाला। २ दूसरे की सहायता के लिए युद्ध करने वाला। ३ परोपकार के लिए युद्ध का आह्वान करने वाला। (ना०) मुंहता ।

उधारो—(वि०) उधार लिया हुआ।

उधियार—(ना०) १ विलम्ब। २ उधार। लेनदारी।

उधेडणो—(क्रि०) १ सिलाई खोलना। २ खाल उतारना। ३ परतों को अलग अलग करना। ४ चीरना फाड़ना।

उधोर—(वि०) १ वीर। बलिष्ठ। २ लंबे कद वाला। डीघो। (ना०) १ उद्धार। २ उठाना।

उधोरणो—(क्रि०) १ उद्धार करना। २ उठाना।

उनग—(वि०) नग्न। नंगा।

उनगणो—दे० उनगणो।

उनथ—(वि०) १ जिसके नाक में नथ नहीं हो। जिसके नाक में नकेल नहीं डाली गई हो। ३ बंधन रहित। ४ स्वतंत्र।

उनथ नथ—(वि०) १ नकेल रहित के नकेल डालने वाला। २ बंधन रहित को बंधन में डालने वाला। ३ वश में नहीं होने वाले को वश में करने वाला।

उनमणो—दे० उनमना।

उनमत—(वि०) १ उन्मत्त। पागल। २ मदांध।

उनमत्त—दे० उनमत।

उनमद—(ना०) उन्माद। मस्ती। (वि०) मस्त। मतवाला।

उनमनो—(वि०) १ व्याकुल। २ दुखी। ३ अन्यमनस्क। अनमना। खिन्न। उदास।

उनमाद—(ना०) १ उन्माद। पागलपन। २ गर्व।

उनमादक—(वि०) उन्मत्त बनाने वाला। उन्मादोत्पादक। (ना०) कामदेव का एक बाण।

उनमान—(ना०) १ अनुमान। अंदाज। (वि०) १ योग्य। सम। २ परिमाण अनुसार। ३ समान। बराबर।

उनमानणो—(क्रि०) अनुमान करना। अंदाजना।

उनगणो—(क्रि०) १ प्रहार करने को शस्त्र उठाना। २ प्रहार करना। ३ तलवार को म्यान से बाहर निकाल लेना। ४ नंगा करना। ५ नंगा होना।

उनाम—(ना०) खेत प्रदेश का वह भूमि भाग जिसके खेतों में वर्षा का पानी इकट्ठा हो जाता है। २ वह खेत जिसमें (बिना सिंचाई के) वर्षा की नमी से गेहूं और चना उत्पन्न होता है। सेवज खेत। ३ नीची भूमि। ४ जलाशय।

उनाळू—(वि०) ग्रीष्म ऋतु संबंधी। ग्रीष्म ऋतु का।

उनाळू वायरो—(ना०) नैऋत्य कोण की वायु।

उनाळू साख—(ना०) वसंत ऋतु में काटी जाने वाली फसल। वासंतिक। कृषि। ग्रीष्म शस्य। रबी की फसल।

उनाळो—(ना०) ग्रीष्म ऋतु। गरमी का मौसम।

उनाव—दे० उनाम ।
उनींदो—(वि०) जो नींद में हो । निद्रित । निद्रायमान । (क्रि०वि०) निद्रा त्याग कर ।
उन—(क्रि०वि०) वहाँ । उधर । (सर्व०) उसका ।
उन्नत—(वि०)१ ऊँचा । श्रेष्ठ । ३ आगे बढ़ा हुआ ।
उन्नति—(ना०) १ ऊँचाई । २ सुधार । ३ महत्ता । ४ तरक्की । बढ़ती ।
उन्मत्त—(वि०) १ पागल । २ बेसुध । ३ मदवाला । ४ अहंकारी ।
उन्माद—(न०)१ पागलपन । २ एक रोग ।
उप—(उप०) एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व लगकर उनमें समीपता, सादृश्य सामर्थ्य, व्याप्ति शक्ति गौणता तथा न्यूनता के अर्थों को प्रकाशित करता है ।
उपकथा—(ना०) मुख्य कथा के अंदर की छोटी कथा ।
उपकरण—(न०) १ साधन । २ सामग्री । ३ औजार । ४ राजा के छत्र चामर आदि ।
उपकार—(न०) १ नेकी । भलाई । २ अहसान । कृतज्ञता । ३ लाभ ।
उपकारी—(वि०) उपकार करने वाला ।
उपक्रम—(न०) १ आयोजन । तैयारी । २ अनुष्ठान । ३ भूमिका ।
उपक्रमणो—(क्रि०) १ आयोजन करना । २ भूमिका बाँधना । ३ तैयारी करना । ४ भूमिकानुसार कार्य को शुरू करना । ५ शुरू करना । ६ पहुँचना । ७ आगे बढ़ना ।
उपखान—(न०) उपाख्यान । कथा ।
उपखीण—(वि०) फटा मैला (वस्त्र) ।
उपगरणो—(क्रि०) १ प्राप्त करना । २ प्राप्त होना । ३ अधिकार में होना । ४ लेना । ग्रहण करना ।
उपगार—उपकार ।
उपगारण—(वि०) उपकार करने वाली ।
उपगारी—दे० उपकारी ।
उपचार—(न०) १ चिकित्सा । इलाज । २ व्यवहार । प्रयोग । ३ पूजा । ४ पूजाविधि । ५ सत्कार । ६ साधन । ७ मिथ्या कथन । ८ खुशामद । ९ सेवासुश्रूषा ।
उपज—(ना०) १ खेत में उपजा अन्न आदि । पैदावार । २ उत्पत्ति । ३ समझ । बुद्धि । ४ बुद्धिस्फुरण । सूझ । उक्ति ।
उपजण—(न०) १ जन्म । २ उत्पत्ति ।
उपजणो—(क्रि०) १ उपजना । सूझना । ध्यान में आना । २ उगना । ३ उत्पन्न होना । पैदा होना । ४ जन्म लेना ।
उपजाऊ—(वि०) १ जिसमें अधिक और अच्छी उपज हो । उर्वर । २ फलद्रुप ।
उपजाणो—(क्रि०) १ उत्पन्न करना । पैदा करना । बनाना । २ उगाना ।
उपजावणो—दे० उपजाणो ।
उपट—(न०) १ उठाव । उभार । २ लहर । तरंग । ३ उदारता । ४ दान ५ उखाड़ पछाड़ ।
उपटणो—(क्रि०) १ उमड़ना । २ उभरना । ३ उछलना । ४ उलड़ना ।
उपड़खणो—(क्रि०) १ आक्रमण करना । २ प्रस्थान करना । ३ क्रोध करना । ४ शल्य रूप होना ।
उपड़णो—(क्रि०) १ किसी वस्तु का ऊपर उठना । २ उठना । उठाया जाना । ३ उमड़ना । ४ उभरना । ५ घटा का उठना । ६ चलना । ७ दौड़ना । ८ खर्च होना ।
उपड़ाणो—(क्रि०)१ उठवाना । २ बोझे को कंधे या सिर पर रखवाना । भार उठवाना ।
उपड़ावणो—दे० उपड़ाणो ।
उपड़ाखणो—दे० उपड़खणो ।

उपडाखियो—दे० उवडाखियो ।

उपत—(ना०) १ उपज । २ उत्पत्ति । ३ आमदनी । कमाई ।

उपदरो—दे० उपद्रव ।

उपदेश—(न०) १ शिक्षा । २ नसीहत ।

उपदेस—दे० उपदेश ।

उपदेसणो—(क्रि०) उपदेश करना ।

उपद्रव—(न०) १ उत्पात । २ विप्लव । ३ गृह कलह । ४ भूतादि का आवश । ५ सकट । ६ लडाई । ७ रोग । बीमारी । ८ महामारी । ९ बीमारी म अन्य बीमारी ।

उपद्रवी—(वि०) उपद्रव करने वाला । उत्पाती ।

उपधातु—(ना०) मिश्र धातु जस—कासा पीतल आदि ।

उपनगर—(न०) नगर का बाहरी भाग । सबब ।

उपनणो—(क्रि०) उत्पन्न होना ।

उपनाम—(न०) दूसरा नाम ।

उपनायक—(न०) नाटक वार्तादि म मुख्य नायक का सहकारी नायक ।

उपनायिका—(ना०) मुख्य स्त्री पात्र के वाद का दूसरा स्त्री पात्र ।

उपनियम—(न०) पटानियम ।

उपनिपद—(न०) वेद की शाखाओ के ब्राह्मण ग्रथो के वे अतिम भाग जिनम ब्रह्मविद्या का निरूपण किया हुआ होता है ।

उपनो—(वि०) उत्पन्न । (भू०क्रि०) उत्पन्न हुआ । (स्त्री० उपनी) ।

उपभापा—(ना०) मुख्य भाषा का गौण भेद । बोली ।

उपभोग—(न०) किसी वस्तु के व्यवहार का सुख । २ किसी वस्तु को उपयोग म लेना ।

उपमत्री—(न०) सहायक मत्री ।

उपमा—(ना०) १ सादृश्य । समानता । २ मिलान । तुलना । ३ एक अर्थालकार ।

उपमाण—(न०) १ जिस से उपमा दी जाय वह पदाथ । २ सादृश्य तुल्यता । ३ दृष्टात । ४ प्रमाण विशेष ।

उपमाता—(ना०) १ धाय । २ अपर माता ।

उपमान—दे० उपमाण ।

उपमेय—(वि०) जिसकी उपमा दी जाय । वर्ण्य ।

उपयुक्त—(वि०) योग्य । उचित ।

उपयोग—(न०) १ व्यवहार । प्रयोग । इस्तमाल । १ लाभ । ३ आवश्यकता । ४ प्रयोजन ।

उपरणी—(ना०) १ लिडकिया या चू च दार पाघ के ऊपर बाधी जाने वाली विभिन्न रग की एक छोटी पगडी । स्थाई रूप से बँधी हुई पगडी के ऊपर छोटी पगडी । २ ओढन का छोटा वस्त्र । दुपट्टी ।

उपरणो—(न०) १ ऊपर से ओढन का वस्त्र । चादर । पिछोडी ।

उपरम—(न०) १ अतर्द्धान । लुप्त । विलीन । २ उपराम । विरति । ३ विश्राम । आराम । ४ मृत्यु । ५ सन्यास ।

उपरमणो—(क्रि०) १ अतर्द्धान होना । विलीन होना । २ विसक जाना । ३ उपराम होना । निवृत्त होना । विरक्त होना । ४ आराम करना । विश्राम करना । ५ मरना ।

उपरल्या—(ना०ब०व०) १ वायु म विचरण करने वाली वात प्रकोप की कल्पित लोक देवियाँ । मलडियाँ, मावडियाँ, बायाँसा आदि । २ एक वात रोग । वात पीडा । ३ बच्चा का एक वात रोग । बाल लकवा ।

उपरवाडो – दे० ऊारवाडो ।
उपरच—दे० अपरच ।
उपरत—(क्रि० वि०) १ अतिरिक्त । सिवाय । २ मानतर । बाद म । पीछे । ३ बन्तर । (वि०) १ अतिरिक्त । २ अधिक । दे० उपरात ।
उपराणा—(क्रि०) १ दुखी होना । २ घबराना । ३ ऊपर आना ।
उपराम—दे० उपरम ।
उपरामणो—दे० उपरमणो ।
उपराळी—दे० उपराळो ।
उपराळा—(न०) १ सहायता । २ सिफारिश । ३ पक्ष । तरफदारी । (वि०) १ बचा हुआ । शेष । २ अधिक ।
उपराठ—(ना०) १ शरीर का पृष्ठभाग । पट के पीछे का भाग । पीठ । २ अप्रसन्नता । ३ टढाई । वक्रता । (वि०) १ अप्रसन्न । २ टढा । विमुख । (क्रि०वि०) पीठ की ओर । पीछे की ओर ।
उपराठी बाहा—(न०ब०व०) उल्टी मुश्क । पीठ की ओर मोड कर बांधे हुए हाथ ।
उपराँठो—(वि०) १ विरुद्ध । २ विमुख । असम्मुख । ३ अप्रसन्न । ४ टेढा । वक्र । ५ पीठ फिराया हुआ । पीठ दिया हुआ ।
उपरात—(वि०) १ विशेप । अधिक । २ आवश्यकता मे अधिक । अतिरिक्त । ३ इससे अधिक । (क्रि०वि०) १ आगे जाकर । बढकर । २ अनन्तर । पीछे । बाद म । ३ इस पर भी । ४ नही हो तो । ५ इससे आगे ।
उपरायत—(ना०) १ ओढने की रालो । २ ओढन के वस्त्र के ऊपर ओढा जाने वाला दूसरा वस्त्र । ३ दोहरा आढना । दे० उपरात ।
उपरोक्त—(वि०) ऊपर कहा हुआ ।
उपरोथळी—(क्रि० वि०) ऊपरा ऊपरी । ऊपर-ऊपर ।
उपल—(न०) १ पत्थर । २ रत्न । ३ माला । ४ बादल ।
उपवन—(न०) बगीचा ।
उपवस्त्र—(न०) दुपट्टा । चादर ।
उपवास—(न०) १ अनाहार व्रत । भूखे रहकर भजन करने का (एक दिन रात का) व्रत । २ लंघन ।
उपवीत—(न०) यज्ञोपवीत । जनेऊ ।
उपवेद—(न०) वेदो म स निकली हुई विद्याएँ । आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्ववेद और स्थापत्य शास्त्र इत्यादि ।
उपसणो—(क्रि०) १ (व्रण का) उठना । २ फूलना । फूलकर मोटा होना । ३ उभरना ।
उपसहार—(न०) १ पुस्तक का अंतिम प्रकरण जिसम पुस्तक का साराश म निर्देशन किया हुआ होता है । २ साराश ।
उपस्थ (न०) १ लिंग । २ भग ।
उपस्थकच—(न०) गुह्येंद्रिय के बाल ।
उपस्थित—(वि०) विद्यमान । हाजिर ।
उपहार—(न०) भेंट ।
उपहास—(न०) हँसी । मश्करी ।
उपाख्यान—(न०) १ छोटा आख्यान । २ अतकथा । ३ वृत्तान्त ।
उपाड—(न०)१ फोडा । व्रण । २ उठाव । ३ खर्च । खपत । ४ बोझा । भार । दे० उपाडो ।
उपाडणो—(क्रि०) १ ऊँचा करना । उठाना । २ उखाडना । ३ खर्चा करना । ४ कर्जा करना । लेना । थामना । ६ बोझा उठाना । ७ (बच्चे को गोदी म) उठाना । कमर मे उठाना ।
उपाडू—(वि०) अधिक खर्चा करने वाला । खर्चीला ।

उपरवाडो – दे० उपरवाडा ।
उपरच—दे० अपरच ।
उपरत—(क्रि० वि०) १ अतिरिक्त । सिवाय । २ अनन्तर । बाद में । पीछे । ३ उदार । (वि०) १ अतिरिक्त । २ अधिक । दे० उपरात ।
उपराणो—(क्रि०) १ दुखी होना । २ घबराना । ३ ऊपर आना ।
उपराम—दे० उपरम ।
उपरामणा—दे० उपरमणा ।
उपराळी—दे० उपराळो ।
उपराळो—(न०) १ सहायता । २ सिफारिश । ३ पक्ष । तरफदारी । (वि०) १ बचा हुआ । शेष । २ अधिक ।
उपराठ—(ना०) १ शरीर का पृष्ठभाग । पट के पीछे का भाग । पीठ । २ अप्रसन्नता । ३ टेढ़ाई । वक्रता । (वि०) १ अप्रसन्न । २ टेढ़ा । विमुख । (क्रि०वि०) पीठ की ओर । पीछे की ओर ।
उपराठी बाहा—(न०व०व०) उल्टी मुश्क । पीठ की ओर मोड कर बांधे हुए हाथ ।
उपरांठा—(वि०) १ विरुद्ध । २ विमुख । असम्मुख । ३ अप्रसन्न । ४ टेढ़ा । वक्र । ५ पीठ फिराया हुआ । पीठ दिया हुआ ।
उपरात—(वि०) १ विशेष । अधिक । २ आवश्यकता से अधिक । अतिरिक्त । ३ इससे अधिक । (क्रि०वि०) १ आगे जाकर । बढकर । २ अनन्तर । पीछे । बाद में । ३ इस पर भी । ४ नहीं हो तो । ५ इससे आगे ।
उपरायत—(ना०) १ ओढन की शाला । २ ओढने के वस्त्र के ऊपर ओढ़ा जाने वाला दूसरा वस्त्र । ३ दोहरा ओढ़ना । दे० उपरांत ।
उपरोक्त—(वि०) ऊपर कहा हुआ ।
उपरोथळी—(क्रि० वि०) ऊपरा ऊपरी । ऊपर-ऊपर ।
उपल—(न०) १ पत्थर । २ रत्न । ३ ओला । ४ बादल ।
उपवन—(न०) बगीचा ।
उपवस्त्र—(न०) दुपट्टा । चादर ।
उपवास—(न०) १ अनाहार व्रत । भूख रहकर भजन करने का (एक दिन रात का) व्रत । २ लंघन ।
उपवीत—(न०) यज्ञोपवीत । जनेऊ ।
उपवेद—(न०) वेदों में से निकली हुई विद्याएँ । आयुर्वेद धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और स्थापत्य शास्त्र इत्यादि ।
उपसणो—(क्रि०) १ (व्रण का) उठना । २ फूलना । फूलकर मोटा होना । ३ उभरना ।
उपसंहार—(न०) १ पुस्तक का अंतिम प्रकरण जिसमें पुस्तक का संक्षेप में निरूपण किया हुआ होता है । २ सारांश ।
उपस्थ—(न०) १ लिंग । २ भग ।
उपस्थकच—(न०) गुह्येन्द्रिय के बाल ।
उपस्थित—(वि०) विद्यमान । हाजिर ।
उपहार—(न०) भेंट ।
उपहास—(न०) हँसी । मश्करी ।
उपाख्यान—(न०) १ छोटा आख्यान । २ अंतर्कथा । ३ वृत्तान्त ।
उपाड—(न०) १ फोड़ा । व्रण । २ उठाव । ३ खर्च । खपत । ४ बोझा । भार । दे० उपाडो ।
उपाडणो—(क्रि०) १ ऊँचा करना । उठाना । २ उखाड़ना । ३ खर्चा करना । ४ कर्जा करना । लेना । थामना । ६ बोझा उठाना । ७ (बच्चे को गोदी में) उठाना । कमर में उठाना ।
उपाडू—(वि०) अधिक खर्चा करने वाला । खर्चीला ।

उफतावणो—दे० उफणणो ।
उफाण—(न०) १ उफान । उबाल ।
२ जोश । ३ ताप ।
उफाणो—दे० उफाण ।
उफार—(वि०) आकार में उभार वाली और बड़ी किन्तु वजन में हलकी ।
उबकणो—(क्रि०) १ कै करना । वमन करना । २ जोश करना । ३ जोश में आना । ४ उमड़ना । छलकना ।
उबकाई—(ना०) १ वमन । कै । उलटी ।
२ मितली । उबकाई । मतली ।
उबटणो—(न०) उबटन । पीठी । (क्रि०) रंग का फीका पड़जाना या उड़ जाना ।
उबडणो—(क्रि०) १ सीव में से टूटना ।
२ उखड़ना । ३ टूटना ।
उबराव—दे० उबकाई ।
उबरेळा—(न०) १ वर्षा का बंद होना । आकाश का वर्षा और बादलों से रहित होना । २ बंद । समाप्त । रोक ।
उबळणो—(क्रि०) १ खौलना । उफनना ।
२ क्रोध करना । गरम होना ।
उबरो—(वि०) १ वीर । बहादुर ।
२ ऊँचा । श्रेष्ठ ।
उबाक—दे० उबकाई ।
उबाणो—(न०) नंगे पाँव । जूती रहित पाँव । (वि०) १ नंगे पैरों वाला । जूतों रहित पाँवों वाला । २ कोश रहित । म्यान रहित । (स्त्री० उबाणी) ।
उबारणो—(क्रि० १ उबारना । बचाना ।
२ उद्धार करना । मुक्त करना ।
उबारो—(न०) १ बचा हुआ अंश । बचत । २ शेष । ३ लाभ ।
उबाळ—(न०) १ उफान । उबाल ।
२ जोश । आवेश ।
उबाळणो—(क्रि०) उबालना । खौलाना ।
उबाळो—दे० उबाळ ।
उबासी—(ना०) जम्हाई । जँभाई ।
उबीरो—दे० उबरो ।
उबेडणो—(क्रि०) १ उखाड़ना । २ जुड़े हुए को अलग करना । ३ तोड़ना ।
उबेडो—(न०) १ शकुन में दाहिनी बाजू ।
२ दाहिनी बाजू का शकुन । (वि०) १ दाहिनी ओर से होने वाले शकुन से सम्बन्धित । २ टेढ़ा । विरुद्ध ।
उबेळ—(ना०) १ सहायता । म[illegible] ।
२ रक्षा । बचाव ।
उबेळणो—(क्रि०) १ सहायता करना ।
२ रक्षा करना । ३ उखेलना ।
उबेळू—(वि०) १ सहायता करने वाला ।
२ रक्षा करने वाला ।
उभय—दे० उभै ।
उभराणो—दे० उबाणो ।
उभार—(न०) १ उठाव । २ ऊँचाई ।
३ वृद्धि ।
उभारणो—(क्रि०) १ उभारना । ऊँचा उठाना । २ उकसाना । ३ धारण करना ।
उभौखरो—(वि०) १ [illegible] ।
२ भ्रमणशील । ऊभा खुरो ।
उभै—(वि०) उभय । दोनों ।
उभ्रत—(क्रिवि०) १ दूर करके ।
२ संशय हटा करके । ३ समाधान करके ।
उमक—(वि०) १ भूखा । २ दुखी ।
३ नहीं छका हुआ । अतृप्त ।
उमगणो—दे० उमगणो ।
उमटणो— (क्रि०) १ उमड़ना । बढ़ना ।
२ जोश करना । जोश में आना ।
३ क्रोध करना ।
उमडणो—(क्रि०) १ घटा छाना ।
२ घटा का वेग के साथ चढ आना ।
३ समूह रूप में आगे बढना । ४ (पानी का) अधिक वेग से बढ़ना । ५ उठना । ऊँचा आना ।

उमणो—दे० उणमणो ।
उमणो दुमणो—*(वि०)* उन्मना दुमना । उद्विग्नचित्त । उदास ।
उमदा- *(वि०)* अच्छा । बढिया ।
उमराव—*(न०)* १ श्रीमत । २ अमीर । ३ धनी । रईस । ४ सरदार । जमीदार । ५ राजा । ६ बादशाह के दरबार का हिन्दू राजा ।
उमराव बनी—*(ना०)* वैवाहिक लाकगीता की एक नायिका । २ दुलहिन ।
उमराव बनो—*(न०)* १ ववाहिक लाक गीता का एक नायक । २ दुलहा ।
उमळको—*(न०)* १ स्नह प्रेरित उत्साह का उफान । २ भावावश ।
उमग—*(ना०)* १ उत्साह । उल्लास । २ अभिलाषा ।
उमगणो—*(क्रि०)* १ उमग म आना । प्रसन्न होना । २ उत्साहित होना । ३ उमडना । उमग मे बढना ।
उमडणो—दे० उमडणो ।
उमा—*(ना०)* १ पावती । २ दुर्गा ।
उमाद—*(न०)* उन्माद । पागलपन ।
उमादे—*(ना०)* १ जोधपुर के राव मालदेव (१५८८ १५९९ वि०) की रानी उमादेवी भटियानी । (यह स्वाभिमानी रानी रूठी रानी' के नाम स प्रसिद्ध हुई और एक लोकदेवी की भाति पूजी जाती है) । २ एक लोक गीत ।
उमादो—*(वि०)* उन्माद ग्रसित । पागल ।
उमापति—*(न०)* महादेव ।
उमायो—*(वि०)* १ उमग से प्रेरित । २ उमगवाला । *(क्रि०वि०)* अनुरक्त होकर ।
उमावो—*(न०)* १ उत्साह । उमग । २ लगन । अनुराग । अनुरक्ति ।
उमाहणो—दे० ऊमाहणो ।
उमाहो—दे० उमावो ।
उमिया—*(ना०)* उमा । पावती ।
उमियावर—*(न०)* शिव । महादेव ।
उमिरायत—दे० अमीरात ।
उमीर—दे० अमीर ।
उमेद—*(ना०)* १ उम्मद । आशा । २ भरोसा । विश्वास । ३ आसरा ।
उमेरणो—*(क्रि०)* पूर्ति करना । कमी पूरी करना । और मिलाना ।
उमेरो—*(न०)* १ पूर्ति । २ वृद्धि ।
उमेश—*(न०)* महादव । शकर ।
उर—*(न०)* १ हृदय । २ वक्षस्थल । छाती । ३ लक्ष ।
उरग—*(न०)* सप । साप ।
उरग कोळी—*(न०)* गरुड ।
उरज—*(न०)* १ स्तन । कुच । २ शक्ति । बल । ३ वृद्धि । ४ कार्तिक मास ।
उरजस—*(न०)* १ ओज । कान्ति । २ बल । शक्ति । ३ गव । इच्छा । अभिलाषा । ५ अवसर ।
उरड—*(ना०)* १ बलात् प्रवेश । २ धक्का । टक्कर । ३ मुकाबिला । टक्कर । ४ साहस । ५ युद्ध । ६ रगड । ७ आक्रमण । ८ स्वपराक्रम । ९ खीचा तानी । झपटा झपटी । १० कामना ।
उरडणो—*(क्रि०)* १ भीड को लाघकर आगे बढना । २ धक्का मारकर भीड म घुसना । बलपूवक घुसना । ३ सीना तानकर आगे बढना । ४ लडना । ५ आक्रमण करना । ६ साहस करना ।
उरडो—*(न०)* १ टक्कर । धक्का । २ चौडाई । ३ छत की चौडाई । ४ समटी हुई वस्तु को परता को खोल कर फलाने का भाव । प्रसार । फलाव । *(वि०)* १ चौडा । २ खुला हुआ । विस्फुरित । विस्फारित । ३ फला हुआ । विस्तीण ।
उरणकी—*(ना०)* भेड ।
उरणियो—*(न०)* भेड का बच्चा । मेमना ।

उरदुत—(ना०)१ उराजद्युति। उराद्युति। स्तनों की शोभा। २ उराजद्वय। युगल स्तन। ३ स्तन।

उरध—(न०) आकाश। (वि०) उर्ध्व। ऊंचा।

उरधगत—(ना०) १ ऊर्ध्वगति। ऊंची गति। २ स्वर्ग। ३ स्वाभिमान। (वि०) १ स्वाभिमानी। २ बलाभिमानी। स्वर्वर्ती। ३ ऊंची गतिवाला।

उरधपुंड—(न०) १ वैष्णवी तिलक। ऊर्ध्वपुण्ड्र। श्रामुद्रा। २ विशिष्ट सम्प्रदायों के भिन्न भिन्न प्रकार के खड़े तिलक। ३ खड़ा तिलक।

उरधरेख—(ना०) हथेली तथा तलुवे की सौभाग्य सूचक एक खड़ी रेखा। ऊर्ध्व रेखा (सामु०)।

उरधलोक—(न०) ऊर्ध्वलोक। स्वर्ग।

उरप—(न०) नृत्य का एक प्रकार।

उरबाणो—दे० उबाणो।

उरमी दे० उर्मी।

उरमाळ—(न०)१ स्तन। २ पुष्पमाला। ३ स्तनों तक का सुवर्ण हार।

उरळाई—(ना०) १ विस्तार। विस्तृति। फैलाव। २ अवकाश। ३ खुला जगह। ४ चौड़ाई।

उरळो—दे० उरडो।

उरवड—दे० उरड।

उरस—(न०) १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ वक्षस्थल। ४ हृदय। ५ मौतिया के रोग की मरण तिथि। उर्स। (वि०) नीरस।

उरसथळ—(न०) १ वक्षस्थल। उरस्थल। छाती। २ स्तन। कुच।

उरसथळी—दे० उरसथळ।

उरसांगोजैत—(वि०) अत्यन्त मानना। २ शोभायमान।

उरसम—(न०) चीर।

उराट—(न०) १ छाती। २ हृदय।

उरासणो—(क्रि०) १ कुएँ में चरस को पानी भरने के लिए ऊंचा नीचा करना। २ चरस को कुएँ में उतारना।

उरांढालो—(वि०) १ ढाल के समान दृढ़ और उठे हुए वक्ष वाला। जिसका वक्षस्थल ढाल के समान दृढ़ है। २ चौड़ी छाती वाला। ३ साहसी। हिम्मतवाला।

उरिण—(वि०) उऋण। ऋणमुक्त।

उरिया—(क्रि०वि०) इस ओर। इधर।

उरेखणो—(क्रि०) १ चित्रित करना। चित्र बनाना। २ ढांचा बनाना। रेखा चित्र बनाना। रेखांकित करना। ३ अनुमान करना। ३ देखना। ४ जानना।

उरेब—(न०) १ बुनावट या टेढ़ा काट कर की जाने वाली एक प्रकार की सिलाई। २ बुनावट से टेढ़ा। (वि०) टेढ़ा। तिरछा।

उरेव—(न०) १ हृदय। (वि०) हृदयस्थ। हृदय में स्थित।

उरेहणो—दे० उरेखणो।

उरै—(क्रि०वि०) इस ओर। इधर।

उरो—(अव्य०) किसी क्रिया शब्द के साथ प्रयुक्त होने वाला निकटत्व निश्चय सूचक एक अव्यय। इसका प्रयोग—'यहाँ इधर और इस ओर' इस भावार्थ में होता है। यह उरै शब्द का एक रूप है। इसका स्त्रीलिंग उरी और बहुवचन 'उरा' है। दूरस्थ निश्चय सूचक परो इसका विपरीत शब्द है।

उरोज—(न०) स्तन। कुच।

उर्दू—(ना०) १ फारसी लिपि में लिखी जाने वाली एक भारतीय भाषा तथा लिपि। २ एक गड़ी भाषा जिसमें अरबी फारसी भाषाओं के शब्दों की अधिकता होती है।

उलखणो—दे० ओळखणो।

उलगणो—दे० कुरळणो।

उलगो—(वि०) १ नाराज। उदास। २ दीन। ३ उपेक्षित। ४ भूलने वाला। ५ ऊंचा। ६ उलटा।

उलगो मुलगो—(वि०) १ नाराज वेराजी। २ उलटा पुलटा। ३ ऊगा मूगा। ४ जसा तसा। जैसा भी। ५ भुलक्कड़ और मुलक्कड़ को नहीं समझने वाला। मूर्ख। ६ दीन। ७ दया पात्र।

उळग—(ना०) १ सेवा। चाकरी। २ पर देश की नौकरी। ३ परदेशगमन। ४ गीत। गायन। ५ वियोग गीत। ६ स्मृति गीत।

उळगणो—(क्रि०) १ गाना। गायन करना। २ दूरस्थ की उळग (वियोग गीत) करना।

उळगाणो—(न०) (वि०) १ प्रवासी पति। प्रवासी प्रियतम। २ महत्तर। नगी। (वि०) १ परदेशी। प्रवासी। २ परदेश में नौकरी करने वाला। ३ वह जिसकी उळग (वियोग गीत) की जाय।

उळभणो—(क्रि०) १ उलभना। फँसना। २ लड़ना। तकरार करना। ३ विवाद करना। ४ लपेट में आना। ५ आसक्त होना। प्रेम होना। ६ काम में लगा रहना। ७ कठिनाई में पड़ना।

उळभाड—दे० अट भाड।

उलटणो—(क्रि०) १ उलटना। पलटना। २ औंधा करना। ३ आक्रमण करना। टूट पड़ना। ४ उमड़ना। उमड़कर आना। बढ़ना। ५ घूमना। पीछे मुड़ना। ६ क्रम विरुद्ध होना। ७ अस्तव्यस्त करना।

उलट पलट—(ना०) १ परिवर्तन। अदल बदल। २ अव्यवस्था। गड़बड़ी।

उलट पुलट—दे० उलट पलट।

उलटफेर—(न०)१ हेरफेर। २ परिवर्तन।

उलटाणो—(क्रि०)१ उलटाना। पलटाना। २ औंधा करना। ३ क्रम विरुद्ध करना। ४ अस्तव्यस्त करना। ५ लौटाना।

उलटायणो—दे० उलटाणो।

उलटी—(ना०) वमन। उलटी। ३। (वि०) विरुद्ध। (क्रि०वि०) वापस।

उलटो—(वि०) १ उलटा। औंधा। २ आगे का पीछे और पीछे का आगे। ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर। क्रम विरुद्ध। ३ विपरीत।

उळथणो—(क्रि०) उथळणो' का वर्ण विपर्यय। दे० उथळणो।

उलरणो—(क्रि०) १ नक्षत्र का अस्त होने से निकट आना। नीचे उतरना। २ मध्या राशि से हटना। ३ मानसिक व्यथा का मिटना। दिल का हलका होना। ४ उचटना। पलटना।

उळवाणो—(वि०) बिना जूती पहने हुए। नंगे पाँव।

उलळणो—(क्रि०) १ लटकना। झुकना। २ आगे बढ़ना। ३ एक ओर बढ़ना। ४ लोगों का इकट्ठा होना। भीड़ करना। ५ बैलगाडी का पीछे की ओर झुकना।

उळवाणो—दे० उळवाणो।

उलसणो—(क्रि०) प्रसन्न होना। उल्लसित होना। खुश होना।

उलघणो—(क्रि०) १ लाँघना। उल्लंघन करना। २ अवज्ञा करना। अवहेलना करना।

उलघी—(वि०) १ लाँघने वाला। उल्लंघन करने वाला। २ अवहेलना करने वाला।

उलाक—(ना०) वमन। क। उलटी।

उलाळ—(न०) १ भार अधिक हो जाने के कारण बैलगाडी का पीछे की ओर झुकना। धराळ' का उलटा। २ झुकाव। ३ नष्ट।

उनाळणो—(क्रि०) १ बलगाडी का पीछे की ओर झुकाना। २ झुकाना। ३ उलट देना। ४ नष्ट करना। ५ चलाना। हटाना।

उरदुत—(ना०)१ उरोजद्युति। उरद्युति। स्तनों की शोभा। २ उरोजद्वय। युगल स्तन। ३ स्तन।

उरध—(न०) आकाश। (वि०) ऊर्ध्व। ऊंचा।

उरधगत—(ना०) १ ऊर्ध्वगति। ऊंची गति। २ स्वर्ग। ३ स्वाभिमान। (वि०) १ स्वाभिमानी। २ बलाभिमानी। स्वर्गली। ३ ऊंची गतिवाला।

उरधपुंड—(न०) १ वैष्णवी तिलक। ऊर्ध्वपुण्ड्र। श्रीमुद्रा। २ विशिष्ट सम्प्रदायों के भिन्न भिन्न प्रकार के खड़े तिलक। ४ खड़ा तिलक।

उरधरेख—(ना०) हथेली तथा तलुवे की सौभाग्य सूचक एक खड़ी रेखा। ऊर्ध्व रेखा (सामु०)।

उरधलोक—(न०) ऊर्ध्वलोक। स्वर्ग।

उरप—(न०) नृत्य का एक प्रकार।

उरपाणा—दे० उबाणा।

उरमी—दे० ऊर्मी।

उरमडण—(न०) १ स्तन। २ पुष्पमाला। ३ रत्नजटित सुवर्ण हार।

उरळाई—(ना०) १ विस्तार। विस्तृति। फैलाव। २ अवकाश। ३ खुली जगह। ४ चौड़ाई।

उरळो—दे० उरल।

उरवट—दे० उरट।

उरस—(न०) १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ वक्षस्थल। ४ हृदय। ५ औलिया फकीर की मरण तिथि। उस। (वि०) नीरस।

उरसथळ—(न०) १ वक्षस्थल। उरस्थल। छाती। २ स्तन। कुच।

उरसथळी—दे० उरसथळ।

उरा गोतो—(वि०) जबरदस्त साहसी। २ बोलपणा।

उरगम—(न०) सांप।

उराट—(न०) १ छाती। २ हृदय।

उरासणो—(क्रि०) १ कुंए में चरस पानी भरने के लिये ऊंचा नीचा क... २ चरस का कुएँ में उतारना।

उरा टाला—(वि०) १ ढाल के समान और उठे हुये वक्ष वाला। जिसका स्थल ढाल के समान दृढ़ है। ... छाती वाला। ३ साहसी। हिम्म...

उरिण—(वि०) उऋण। ऋणमु...

उरिया—(क्रिवि०) इस ओर।

उरेखणो—(क्रि०) १ चित्रित ... चित्र बनाना। २ ढाचा बना... चित्र बनाना। रेखांकित कर... मान करना। ३ दागना।

उरेब—(न०) १ बुनावट से ... की जाने वाली एक प्रकार... २ बुनावट से टेढा। तिरछा।

उरेव—(न०) १ हृदय। ... हृदय में स्थित।

उरेहणो—दे० उरेखणो

उरे—(क्रिवि०) इस ...

उरा—(अव्य०) किसी ... प्रयुक्त होने वाला ... एक अव्यय। इस... और दूसरा ... यह उर श... स्त्रीलिंग उरी ... दूरस्थ निश्चय ... रीत से ... है।

उरोज—(न०)...

उर्दू—(ना०) ... जाने वाला ... २ एक ... भाषाओं के श...

...ऊगणो—दे० ...

उलगणो—दे० कुम्हला...

उवारा-उरदी—(वि०) बिना वरदी वाला। जो वरदी पहिना हुआ नहीं है। (न०) बादशाह की ओर से प्राप्त अधिकार के रूप में खान उमरावों को सनिक रखने के प्रकारों में से 'उवारा उरदी' सनिक रखने का एक प्रकार।

उवारो—(न०) गाँव का निकास मार्ग। गाँव के बाहर जाने का रास्ता। उपद्वार।

उवाळ—(न०) पानी पर बहकर आया हुआ कचरा फेन आदि।

उवाह—(न०) विवाह। उद्वाह।

उवा—(सव०) १ उन। २ उन्हों। (क्रि०वि०) वहाँ। उठ।

उवारी—(सव०) उनकी। उणांरी।

उवार—(सव०) उनके। उणांर।

उवारो—(सव०) उनका।

उवे—(सव०)१ वे। २ उन। ३ उन्होंने। ४ वह। ५ उस। ६ उसने।

उवेखणो—(क्रि०) १ देखना। २ उपेक्षा करना। ३ नजरदाज करना।

उवेट—(वि०) १ भीषण। भयंकर। (न०) फन्दा। जाल। बंधन।

उवेठ—दे० उवट।

उवेळ—(ना०)१ लहर। तरंग। २ नशा। ३ छलका। उभराव। उद्वेग। ४ सहायता। मदद।

उवेळणो—(क्रि०) १ मदद करना। २ रक्षा करना। ३ छुड़वाना।

उवेव—(न०)१ उपभेद। प्रकार। २ भेद। ३ रूप

उवो—(सव०) वह।

उश्रा—(ना०) गाय।

उसडी—(वि०) असी। वडी। ओडी। अंडी।

उसडै—(वि०) वसे। उस प्रकार के।

उसडो—(वि०) वैसा। उस प्रकार का। ओडो। वडो।

उसर—(न०) १ असुर। २ मुसलमान।

उसराण—(न०ब०व०) १ असुरसमूह। २ यवनसमूह।

उसरावण—(न०) १ उऋण। २ पक हुए चावलों का पानी। ३ चक्की से निकाला हुआ चून।

उससणो—(क्रि०) १ बढ़ना। २ फूलना।

उसह—(न०) १ वृषभ। २ ऋषभ।

उसारणो—(क्रि०) १ चावलों के पकजाने पर उनमें बच हुए पानी को निकाल कर अलग करना। २ चक्की की वाटी (घेर) में से पिसे गये आटे को बाहर निकालना। ३ उथालना। ४ परना। ५ निकालना। ६ तयार करना। बनाना।

उसास—(न०) १ उच्छ्वास। उसाँस। साँस। २ आह। लंबी साँस।

उसी—(वि०) वैसी। विसी।

उसीलो—(न०) १ वसीला। जरिया। २ आश्रय। ३ संबंध। ४ सहायता। ५ सहारा।

उसीसो—(न०) तकिया। ओसियो।

उसुर—दे० उसर।

उसूल—(न०) सिद्धान्त।

उसो—(वि०) वसा। विसो।

उस्तरी—(न०) इस्तरी।

उस्ताणी—(ना०)१ गुरु पत्नी। २ अध्यापिका। ३ धूर्त स्त्री। ४ उस्ताद की स्त्री।

उस्ताद—(न०) १ गुरु। अध्यापक। २ विशेषज्ञ। ३ चिकित्सक। ४ नाई। ५ वेश्याओं का संगीत शिक्षक। (वि०) १ निपुण। दक्ष। २ धूर्त। चालाक।

उस्तादण—दे० उस्तादणी।

उस्तादणी—(ना०) दे० उस्ताणी।

उस्तादी—(ना०) १ चालाकी। धूर्तता। २ चतुराई। होशियारी। ३ निपुणता।

उनाळियो—*(ना०)* परस को पानी म डुबाने के लिए उसके मुंह की मुड मे बांधा जाने वाला भाग। *(वि०)* लुढकाने वाला। भुकाने वाला। उलाळने वाला। *(भू०क्रि०)* १ भुका दिया। उलाळ दिया। २ उलट कर दिया। उलट दिया। ३ नाश कर दिया।

उलाळो—*(ना०)* १ एक मात्रिक छन्द। २ चक्कर। टक्कर। ३ भुकाव। दे० उलाळ १ २ दे० उनाळियो *(ना०)* और *(वि०)*।

उळावणो—*(क्रि०)* १ उल्लासपूर्वक बुलाना। पुकारना। २ प्रेमपूर्वक सुमिरण करना। ३ भजना। ४ प्रसन्न करना।

उली कानी—*(क्रि० वि०)* इस ओर। इधर।

उळीचणो—*(क्रि०)* १ कुऍं म से गंदे पानी को बाहर फेंकना जिससे ताजा पानी आ जाय।

उलूखलमल्ल—दे० ऊखळमल।

उले पास—दे० उली कानी।

उलेळ—*(ना०)* १ उमग। उत्साह। २ लहर। तरग। ३ मौज। तरग। ४ बाहुल्य। अधिकता। ५ मनुहार। आग्रह। अनुरोध।

उलेळमो—*(क्रि०वि०)* १ मनुहार के साथ। अनुरोधपूर्वक। २ अधिकता से। ३ उडेलते हुए। *(वि०)* १ उँडेला हुआ। २ बहुत अधिक।

उलेळवो दे० उलेळमो।

उलोर—*(ना०)* १ उत्साह। उमग। २ हृष। ३ बहाव। उमडाव। ४ घिराव। ५ घटा।

उल्लास—*(ना०)* १ आनद। २ प्रकाश। ३ प्रकरण। अध्याय। ४ एक काव्यालकार।

उल्लू—*(ना०)* उलूक। घूघू। घूघूराजा।

उल्लेख—*(ना०)* १ निर्देश। २ कथन। ३ वर्णन। ४ चर्चा।

उल्हसणो—*(क्रि०)* १ उल्लसित होना। २ प्रसन्न होना। ३ कूदना।

उवट—*(ना०)* विकट माग। दुगम माग। *(वि०)* ऊबड खाबड। ऊचा नीचा।

उवडणो—*(क्रि०)* १ उमडना। २ ऊचा उठना।

उवडांखियो—*(ना०)* १ भूखा (सिंह)। २ क्रोधित सिंह। ३ सिंह के समान झपट कर लडने वाला साहसी वीर। ४ डाकू। लुटेरा। *(वि०)* १ भूखा (सिंह)। २ क्रोधी। ३ अत्यन्त साहसी। *(भू०क्रि०)* १ आक्रमण किया। २ प्रस्थान किया। ३ चलाया।

उवणि—*(सव०)* उस।

उवर—*(ना०)* १ हृदय। अंत करण। २ उदर। पेट। *(क्रि०वि०)* ऊपरि। ऊपर।

उवह—*(ना०)* उदधि। समुद्र। *(सव०)* १ वह। २ उस। ३ उसे।

उवहि—*(ना०)* उदधि। समुद्र।

उवाडो—*(ना०)* पशुओं के पानी पीने के लिए कुऍं के पास बनाया हुआ लबा उदपान। खेली। उदपान। २ गाय या भैंस के थनों का स्थान। थनों के ऊपर का दुग्धस्थान। गाय या भैंस का अयन।

उवार—*(ना०)* १ न्योछावर। २ न्योछावर की हुई वस्तु। ३ विलब। देर। *(क्रि०वि०)* रहित। बगैर। बिना।

उवारणा—*(ना०)* १ न्योछावर। वार फेर। वारी। वारीफेरी। २ उत्सर्ग। बारी।

उवारणो—*(क्रि०)* वारना। न्योछावर करना। वारी फेरी करना। २ बारी जाणो।

उवारसी—*(ना०)* १ सिफारिश। अनुकूल अनुरोध। २ सहायता। मदद।

उवारा-उरदी—*(वि०)* बिना वरदी वाला। जो वरदी पहिना हुआ नहीं है। *(न०)* बादशाह की ओर से प्राप्त अधिकार के रूप मे खान उमरावो को सनिक रखन के प्रकारा म से 'उवारा उरदी' सैनिक रखने का एक प्रकार।

उवारो—*(न०)* गाँव का निकास भाग। गाव के बाहर जाने का रास्ता। उपद्वार।

उवाळ—*(न०)* पानी पर बहकर आया हुआ कचरा फेन आदि।

उवाह—*(न०)* विवाह। उद्वाह।

उवा—*(सव०)* १ उन। २ उन्हो। *(नि०वि०)* वहाँ। उठ।

उवारी—*(सव०)* उनकी। उणारी।

उवारै—*(सव०)* उनके। उणार।

उवारो—*(सव०)* उनका।

उवे—*(सर्व०)*१ वे। २ उन। ३ उन्होने। ४ वह। ५ उस। ६ उसने।

उवेखणो—*(क्रि०)* १ देखना। २ उपेक्षा करना। ३ नजरदाज करना।

उवेट—*(वि०)* १ भीषण। भयकर। *(न०)* फदा। जाल। बधन।

उवेठ—दे० उवट।

उवेळ—*(ना०)*१ लहर। तरग। २ नशा। ३ छलका। उभराव। उद्वेल। ४ सहायता। मदद।

उवेळणो—*(क्रि०)* १ मदद करना। २ रक्षा करना। ३ छलकाना।

उवेव—*(न०)*१ उपभेद। प्रकार। २ भेद। ३ रूप

उवो—*(सव०)* वह।

उश्रा—*(ना०)* गाय।

उसडी—*(वि०)* ग्रसी। वडी। ओडी। अडी।

उसडै—*(वि०)* वैसे। उस प्रकार के।

उसडो—*(वि०)* वसा। उस प्रकार का। ओडो। वडो।

उसर—*(न०)* १ असुर। २ मुसलमान।

उसराण—*(न०ब०व०)* १ असुरसमूह। २ यवनसमूह।

उसरावण—*(न०)* १ उच्छ्रण। २ पक हुए चावला का पानी। ३ चक्की से निकाला हुआ चून।

उससणो—*(क्रि०)* १ बढ़ना। २ फूलना।

उसह—*(न०)* १ वृषभ। २ ऋषभ।

उसारणो—*(क्रि०)* १ चावलो के पकाने पर उनम बचे हुए पानी को निकाल कर अलग करना। २ चक्की की वाटी (घेरे) म से पिसे गये आटे को बाहर निकालना। ३ उखाडना। ४ पकना। ५ निकालना। ६ तयार करना। बनाना।

उसास—*(न०)* १ उच्छ्वास। उसाँस। साँस। २ आह। लबी सास।

उसी—*(वि०)* वसी। विसी।

उसीलो—*(न०)* १ वसीला। जरिया। २ आश्रय। ३ सबध। ४ सहायता। ५ सहारा।

उसीसो—*(न०)* तकिया। ओसिसो।

उसुर—दे० उसर।

उसूल—*(न०)* सिद्धात।

उसो—*(वि०)* वसा। विसो।

उस्तरी—*(न०)* इस्तरी।

उस्ताणी—*(ना०)*१ गुरु पत्नी। २ अध्यापिका। ३ धूर्त स्त्री। ४ उस्ताद की स्त्री।

उस्ताद—*(न०)* १ गुरु। अध्यापक। २ विशेषज्ञ। ३ चिकित्सक। ४ नाई। ५ वश्याओ का सगीत शिक्षक। *(वि०)* १ निपुण। दक्ष। २ धूर्त। चालाक।

उस्तादग—दे० उस्तादणी।

उस्तादणी—*(ना०)* दे० उस्ताणी।

उस्तादी—*(ना०)* १ चालाकी। धूर्तता। २ चतुराई। होशियारी। ३ निपुणता।

उस्तो—(ना०) (उस्ताद का अपभ्रंश रूप) । १ चित्रकार । चितारा । ३ शिल्पी । ४ कारीगर । उस्ताद ।

उहद—(सर्व०) वह ।

उहाडो—दे० उवाडो ।

उहाग (ना०) १ प्रकाश । चमक । उजास । २ ख्याति की चमक ।

उहागणो—(क्रि०) १ प्रकाश करना । २ प्रकाशित होना । ३ ख्याति का चमकना । ४ प्रति हँसना ।

उहि—(सर्व०) १ वही । २ उस । उसी ।

उहिज—(सर्व०) १ वही । २ उस ही । उसी ।

उही—दे० उहि ।

उहीज—दे० उहिज ।

उगळ—दे० ओगळ ।

उगळी—दे० ओगळी ।

उगाणो—दे० ऊवाणो ।

उगावणो—दे० ऊपावणो ।

उगीजणो—दे० ऊपीजणो ।

उगाई—दे० ऊगाई ।

उगाण—दे० ऊगाण ।

उडाडी—(वि०) गहराई वाला । गहरो । ऊंडो । (ना०) १ नाभि । घूंटी । टूंडी । २ मिट्टी का एक बरतन ।

उडाडो—(वि०) गहराई वाला । ऊंडा । (ना०) एक पात्र ।

उणीण—दे० ऊणीण ।

उताळ—दे० उतावळ ।

उताळो—दे० उतावळो ।

उतावळ—दे० उतावळ ।

उतावळा—दे० उतावळा ।

उतावळा—दे० ऊतावळा ।

उमरो—दे० ऊमरो । दे० उमराव ।

उवो—दे० ऊवो ।

उवार—(ना०) १ झडबेरी की टहनियों का ढेर । २ खेत में से काटी हुई झड़बेरियों का लगाया हुआ ढेर । अवार ।

उवारणो—दे० अवारणो ।

उहूं—दे० ऊहूं ।

ऊ

ऊ—राजस्थानी वर्णमाला का ओष्ठस्थानीय छठा स्वर वर्ण ।

ऊ—(सर्व०) वह ।

ऊक—(ना०) वदर ।

ऊकटणो—(क्रि०) १ क्रोध करना । २ क्सीजना । ३ आगे बढ़ना । ४ उभरना । ५ शस्त्र उठाना ।

ऊकटो—(ना०) घोड़े या ऊंट का तंग ।

ऊकडताणो—(वि०) १ पाँव समेटे हुए उलटा सोने की आदत वाला । उलटा सोने वाला । उकडताणो ।

ऊकडो—(सं०पु०) १ गूर । २ बदर ।

ऊकरडी—(ना०) छोटा घूरा ।

ऊकरडीलाग—(ना०) वह कर जो गाँव की सफाई के लिये लिया जाता है ।

ऊकरडीलाग—दे० ऊकरडी लाग ।

ऊकरडो—(ना०) घूरा ।

ऊकळणो—(क्रि०) दे० उकळणो ।

ऊकस—(वि०) गर्वोन्नत ।

ऊकसणो—(क्रि०) १ युद्ध करना । २ उठना । उभरना । ३ ऊंचा उठना । ४ गर्वोन्नत होना । ५ गर्व करना ।

ऊकेरी—(ना०) नदी या तालाब के सूख जाने पर वहाँ पर पानी के लिये खोदा जाने वाला खड्डा ।

ऊख—(ना०) १ गन्ना । ईख । सेलडी । २ गाय भैंस का स्तन प्रदेश ।

ऊखघी—*(ना०)* ग्रौषधि ।
ऊखम—*(ना०)* ऊष्म । ताप । गरमी ।
ऊखमल—*(न०)* ('उलूखलमल्ल' का ग्रन रूप) । दे० ऊखळमल ।
ऊखळ—*(न०)* ग्रोखली ।
ऊखळणो—*(क्रि०)* १ ऊखल म कूटना । खांडना । २ उखडना । ३ नाश होना । ४ नाश करना ।
ऊखळमल—*(न०)* (उलूखलमल्ल का ग्रन रूप) । १ रणक्षेत्र । २ युद्ध । रण । ३ योद्धा ।
ऊखळमेळी—*(न०)* युद्ध ।
ऊखळी—*(ना०)* १ ग्रोखली । २ किंवाड के चूळिय के नीचे रहने वाला लोह का एक उपकरण ।
ऊखेवणो—*(क्रि०)* दे० उखेवणो ।
ऊगट—*(न०)* १ उबटन । २ कसाव । कसलापन । *(वि०)* उच्छिष्ट । बचा हुग्रा । *(क्रि०वि०)* खूब । बहुत । पेट भर के ।
ऊगटो—*(न०)* ऊंट या घोडे पर काठी कसने का पट्टा । तंग । कसन ।
ऊगणो—*(क्रि०)* १ उदय होना । २ ग्रकुर फूटना । उगना । ३ बीज म से ग्रकुग्रा निकलना । ४ नशा चढना । ५ प्रकट होना ।
ऊगम—*(ना०)* १ उगाई । २ उद्गम ।
ऊगमण—*(ना०)* १ पूर्व दिशा । २ उदय ।
ऊगमणी—*(वि०)* १ पूर्व दिशा की । २ पूर्व दिशा से सबधित । *(ना०)* १ पूर्व दिशा । २ उगाई ।
ऊगमणो—*(वि०)* १ पूर्व दिशा का । २ पूर्व दिशा से सबधित । *(न०)* पूर्व दिशा ।
ऊगरणो—*(क्रि०)* दे० उगरणो ।
ऊगळणो—*(क्रि०)*दे० उगळणो ।
ऊगवण—*(ना०)* दे० ऊगमण ।
ऊगाढ—*(न०)* १ पौरुष । २ नाश । *(वि०)* प्रबल ।
ऊगँदीह—*(न०)* १ प्रभात । २ फल प्राप्ति वाला प्रभात । *(क्रि०वि०)* प्रभात होते ही ।
ऊगोडो—*(वि०)* १ उगा हुग्रा । २ उदित ।
ऊग्रजणो—*(क्रि०)* १ गर्व से गर्जना । २ गर्व से मस्तक ऊंचा करना ।
ऊग्रजती—*(ना०)* कटारी ।
ऊग्रजी—दे० उग्रजती ।
ऊग्रती—दे० उग्रजती ।
ऊग्रहणो—दे० उग्रहणो ।
ऊघडणो—*(क्रि०)* दे० उघडणो ।
ऊघाडो—दे० उघाडो ।
ऊघाडो—दे० उघाडो ।
ऊचकणो—*(क्रि०)* १ ऊंचा उठाना । २ सिर पर उठाना ।
ऊचळ चित्त—*(वि०)*ग्रशात चित्त । ग्रस्थिर चित्त । उदास ।
ऊचाळो—दे० उचाळो ।
ऊछजणो—*(क्रि०)* १ उठाना । २ तयार करना । ३ प्रहार करने के लिये शस्त्र को ऊपर उठाना ।
ऊछरणो—*(क्रि०)* १ गायें, भैंसें ग्रादि का समूह रूप से जंगल में चरने को जाना । २ पालन पोषण ग्रौर सार सम्हाल प्राप्त कर बडा होना ।
ऊछेरणो—दे० उछेरणो ।
ऊज—*(वि०)* बलवान । ऊर्ज । दे० उज ।
ऊजड—दे० उजड ।
ऊजडणो—दे० उजडणो ।
ऊजम—*(न०)* १ उद्यम । उद्योग । २ प्रयास । प्रयत्न ।
ऊजमणो—*(क्रि०)* दे० उजमणो ।
ऊजळ—*(वि०)* १ उज्ज्वल । कांतिमान । २ सफेद । श्वेत । ३ बेदाग । निर्मल । ४ पवित्र ।

ऊजळ वरण—(न०) १ उज्वल वर्ण। उच्चवर्ण। २ सवर्ण। ३ सत्शूद्र। (वि०) उच्चवर्ण का।
ऊजळाई—दे० उजळाई।
ऊजळा वरणो—(मुहा०) १ प्रतिष्ठा बनाना। २ यशस्वी बनाना। ३ उज्वल करना।
ऊजळा जुहार—(अव्य०) १ दूर से ही नमस्कार। ऊपरी नमस्कार। २ उपेक्षा। अवज्ञा। ३ साधारण जान पहिचान या साधारण रिश्ते का व्यवहार।
ऊजळो—(वि०) १ प्रकाश वाला। २ स्पष्ट। ३ निर्मल हृदय वाला। ४ उज्वल। ५ यशस्वी। ६ सफेद। ७ निर्मल। ८ निष्कलंक।
ऊजळोपख—(न०) १ शुक्ल पक्ष। किसी चान्द्र मास का सुदी पक्ष। २ सत्य पक्ष।
ऊजवणो—दे० उजमणो।
ऊझ—(ना०) ओझरी।
ऊझड़—दे० उजड़।
ऊझणो—(न०) पुत्री के द्विरागमन के समय दिये जाने वाले वस्त्राभूषण आदि। ओझणो।
ऊझम—(न०) १ उद्यम। २ उत्पन्न। ३ शांत। ४ उफान। ५ ज्वाला।
ऊझमणो—(क्रि०)१ बुझाना। २ औटाना। ३ घटाना। ४ जलाना। ५ गरम करना। ६ शांत करना। ७ उद्यम करना। ८ उत्पन्न करना।
ऊझळणो—(क्रि०)१ भर आना। छलकना। २ उमड़ना। ३ उफनना। ४ बहना। ५ उछलना। ६ मर्यादा के बाहर होना।
ऊझामणो—दे० ऊझमणो।
ऊटपटाग—(वि०) १ बेमेल। २ टेढ़ा मेढ़ा। ३ व्यर्थ।
ऊठ—(ना०) १ फुरती। तेजी। २ चेतनता। ३ बल। शक्ति। ४ उमंग।
ऊठणो—(क्रि०) १ खड़ा होना। उठना। २ नींद उड़ना। जगना। ३ सोकर उठना। बैठना। ४ उभरना। ५ ऊंचा होना। ६ उत्पन्न होना। ७ किसी प्रथा का ... मत होना। ८ खर्च होना। मरना।
ऊठबैठ—(ना०) १ दोनों हाथों से दोनों कान पकड़ कर बार बार उठने बैठने की सजा। २ उठने-बैठने का व्यायाम। ३ उठने बैठने का स्थान। अधिक आने जाने का स्थान।
ऊठाणो—(न०) मरे हुये के पीछे डाले हुए तापड़ को उठाने की विधि।
ऊड़ड़—(न०) घोड़ा।
ऊड़ी—(वि०) वैसी। मोटी। बड़ी।
ऊणत—(ना०) १ गुरुजन या महापुरुष की वियोगजनित सलने वाली स्मृति (जिसमें उनके आदर्शों की पूर्ति करने वाला कोई न हो।) २ कमी। अभाव। ३ हानि। घाटा। ४ दारिद्रय।
ऊणप—(ना०) १ कमी। खोट। भूल। २ गैरहाजिर या मरे हुये की खटकने वाली कमी। ३ ओछाई। ओछापन। क्षुद्रता। ४ दिल की दुबलता। हृदय दौबल्य।
ऊणारत—दे० ऊणत।
ऊणैं-खूणै—(क्रि०वि०) घर के कोने कोने में और इधर उधर। २ इधर उधर।
ऊणो—(वि०) १ उदास। २ कम। न्यून। ३ छोटा। ४ अपूर्ण।
ऊत—(न०) १ पुत्र। २ कुपुत्र। (वि०) अविचारी। अज्ञानी।
ऊत जाणो—(मुहा०) १ निःसंतान होना। २ निःसंतान मरना।
ऊत जावणो—दे० ऊत जाणो।
ऊत होणो—(मुहा०) १ कुपूत होना। २ कुपूत वत आचरण करना।
ऊथलो—(न०) १ पलटा। पलटा खाना। २ अच्छा होने के बाद फिर रोग

या आक्रमण होना। ३ उत्तर। ४ प्रत्यु त्तर। ५ सामने जवाब। मुहजोरी।

ऊदल—(न०) १ उदयसिंह या उदयराज का साहित्यिक या काव्य नाम। २ इन नामों का लघुता सूचक रूप।

ऊद्रवणो—(क्रि०) १ डरना। भयभीत होना। २ चौंकना। काँपना।

ऊद्रमणो—(क्रि०) दौड़ना। भागना।

ऊध—(न०) बलगाडी का एक उप करण।

ऊधडो—(न०) १ किसी वस्तु या राशि का तोल माप पर कीमत निश्चित किये बिना किया गया क्रय विक्रय। भाव तोल के बिना अनुमान से कियागया क्रय विक्रय। २ अनुमान से निश्चित किया हुआ मूल्य। अनुमानित मूल्य। अन्दाजा कीमत। ३ मकान आदि के बनाने का ठेका। (वि०) बिना भाव-तोल का। बिना हिसाब का। (क्रि०वि०) बिना भाव तोल के।

ऊधडो लणो—(मुहा०) १ डाँट फटकार बताना। धमकाना। २ बिना तोल माप के किसी वस्तु का खरीदना।

ऊधम—(न०) १ शोर। कोलाहल। २ शैतानी। शरारत। नटखटपना। ३ उपद्रव। उत्पात। ४ लड़ाई।

ऊधमणो—(क्रि०) १ अच्छे कार्यों में धन का खर्च करना। अतिथि-सत्कार दान और कुल की मर्यादा पालन में धन का उपभोग करना। २ सत् काय करना। ३ जीवन को सार्थक बनाना। ४ दान धर्म वीरता और उपकारादि के काम करना। ५ दान करना।

ऊधमी—(वि०) ऊधम करने वाला। शरारती।

ऊधरण—(वि०) उद्धार करने वाला। (न०) उद्धार।

ऊधरो—(वि०) १ ऊर्ध्व। ऊंचा। २ उदार। दानी। ३ साहसी। ४ उगा हुआ। उभरा हुआ। ५ विषम।

ऊधळणो—(क्रि०) विवाहित पति को छोड़ कर स्त्री का पर पुरुष के साथ भाग जाना। उढरना।

ऊधळाण—(ना०) पति को छोड़कर पर पुरुष की पत्नी बन कर रहने वाली स्त्री। पर पुरुष के साथ भाग जाने वाली स्त्री।

ऊधनाठ—दे० ऊधळाण।

ऊधळियाडी—(वि०) १ व्यभिचारिणी। स्वैरिणी। २ स्वच्छन्दाचारिणी। ३ बिना विवाह के पत्नी रूप से किसी पुरुष के घर में रही हुई। ४ पर पुरुष के साथ भागी हुई। ५ पर पुरुष के घर में पत्नी रूप से रही हुई। उढरी।

ऊधस—(न०) दूध। (न०) खाँसी। (वि०) ऊर्ध्व। ऊंचा।

ऊन—(ना०) भेड के बाल। ऊरण। ऊन। (वि०) १ छोटा। २ थोडा।

ऊनड—(न०) ऊनड जाम नाम का एक प्रसिद्ध दानी राजा जिसने अपना राज्य माउठरोड बभणवाड (सामई) सौंवळमुध रोहडिया को दान में दे दिया था।

ऊनमणो—(क्रि०) बादलों की घटा का उमड़ना।

ऊनवा—(न०) एक मूत्र रोग।

ऊनाळू—(वि०) ग्रीष्म ऋतु से सबंधित। उष्णकाल संबंधी। (ना०) उनालू फसल।

ऊनाळू साख—(ना०) रबी की फसल। ऊनालू खेती।

ऊनाळो—(न०) ग्रीष्म ऋतु। उष्णकाल।

ऊनियो—दे० उरणियो।

ऊनी—(वि०) १ ऊन का बना हुआ। ऊन से संबंधित। २ उष्ण। गरम।

ऊनी आँच—(ना०) नुकसान भय या अप्रतिष्ठित होने का प्रसंग।

ऊनै—*(सव०)* उसको । उसे । *(क्रि० वि०)* १ इधर । इस ओर । यहाँ । २ उधर । उस ओर । वहाँ ।

ऊनो—*(वि०)* गरम । उष्ण ।

ऊन्हाळो – दे० ऊनाळो ।

ऊपट—दे० उपट ।

ऊपटणो—*(क्रि०)* दे० उपटणो ।

ऊपडणो—दे० उपडणो ।

ऊपणणो—*(क्रि०)* दे० उफणणो स० २ व ऊफणणो स० १ ।

ऊपनणो—*(क्रि०)* उत्पन्न होना । पैदा होना ।

ऊपनियोडो—*(वि०)* १ उत्पन्न । पैदा । २ उपार्जित । पैदा किया हुआ ।

ऊपना—*(न०)* १ माल की बही मे माल के बेचने का इदराज । २ बेचान खाते मे लिखी जाने वाली रकम या रकमो के इदराज । ३ माल के बेचान की आमदनी ।

ऊपनो—*(वि०)* उत्पन्न । पैदा ।

ऊपर—*(वि०)* १ ऊचाई पर । २ ऊचा । ३ अतिरिक्त । ४ श्रेष्ठ ।

ऊपरकरणो—*(मुहा०)* सहायता करना ।

ऊपर चट्टो—*(वि०)* १ ऊपर ऊपर का । दिखावे का । २ व्यथ । (स्त्री० ऊपर चट्टी) ।

ऊपर चलो—*(वि०)* १ शक्ति उपरान्त । सामथ्य से अधिक । सामथ्य से ऊपर । २ आवश्यकता से अधिक । अतिरिक्त । ३ ऊपर ऊपर का । ४ साधारण । फुटकर । परचूरण । छोटा मोटा । ५ मुख्य काय के सपादनाथ की जाने वाली तैयारी का काम । *(अव्य०)* ऊपर होकर । मरजी के उपरान्त । मरजी के खिलाफ ।

ऊपरचू टो—*(वि०)* १ अतिरिक्त । २ फुटकर ।

ऊपरछल्लो—दे० ऊपरचलो ।

ऊपरणी—*(ना०)* चू चदार या खिडकिया पगडी के ऊपर बाँधी जाने वाली भिन्न रग की एक छोटी पगडी ।

ऊपरतळै—*(क्रि०वि०)* १ एक के ऊपर एक । २ अ यवस्थित । ३ ऊपर-नीचे ।

ऊपरदान—*(अव्य०)* १ आगे होकर के । बढ कर के । २ मना करने पर भी । ३ और ज्यादा । ४ और । विशेष ।

ऊपरमाळ—*(न०)* १ गाव की सीमा के किनारे आये हुये खेता की पँक्ति । किनारे के खेत । २ ऊपर का माग । ३ जो सवसाधारण के आने जाने का माग न हो ।

ऊपरलियाँ—*(ना०)* एक प्रकार की लोक देवियाँ जिनके प्रकोप से बालकों में एक प्रकार का वात रोग होना माना जाता है । मावडियाँ । मलडियाँ ।

ऊपरली पळ—*(ना०)* जीवन का श्रेष्ठ समय ।

ऊपरलो—*(वि०)* १ ऊपर वाला । ऊपर का । २ बलवान । जोरावर ।

ऊपर वट—*(ना०)*१ सहायता । २ सिफारिश । *(क्रि०वि०)* १ बढकर । ऊपर होकर के । *(वि०)* अधिक ।

ऊपर वाडी—*(ना०)*१ गणित के प्रश्न को शीघ्र हल करने की युक्ति । मूल युक्ति । शीघ्र रीति । शीघ्रनियम । मूल नियम शीघ्र-गणित गुर । २ काम को शीघ्र निपटाने की युक्ति । दे० ऊपरवाडो ।

ऊपर वाडो—*(न०)* १ नजदीक का माग । २ ऊपर का माग । ३ बिना माग का माग । ४ बाड आदि से घेरे हुए स्थान म प्रवेश करन के मुख्य द्वार के अतिरिक्त अनियमित रूप से बना हुआ शीघ्र पहुँचने का माग । बेकायदा रास्ता ।

ऊपरा ऊपरी—*(क्रि० वि०)* एक साथ । लगातार । एक के ऊपर एक ।

ऊपळी—(ना०)बैलगाडी का एक उपकरण।

ऊफळो—(न०) १ चारपाई के चौखट का सिर या पाव की ओर का डडा। चौखट की चौडाई का डडा। २ जमीन के नाप मे चौडाई का नाम। ३ चौडाई।

ऊफणणो—(क्रि०) १ अनाज का साफ करने के लिए छाज मे भरकर ऊपर से नीचे गिराना। २ अत्यन्त क्रोध करना। ३ उबलना। उफान आना। ४ जोश म आना।

ऊबको—(न०) उबकाई। ओकाई। मिचली।

ऊबट—दे० ऊवट।

ऊबटो—(न०) १ घाडे की जीन को कसने का तग। २ तग का कसने की उसके किनारे पर लगी हुइ चमडे की पट्टी।

ऊबड-खाबड—(वि०) ऊचा नीचा। खड्डे वाला (माग)।

ऊबडणो—(क्रि०) दे० उवडणा।

ऊबडियो—(न०) रहॅट का एक उपकरण।

ऊबडो—दे० ऊबडिया।

ऊबरणो—(क्रि०) १ बचना। शष रहना। २ कष्ट या दुघटना स बच जाना। ३ मृत्यु से बचना।

ऊबेलणो—(क्रि०) १ मदद करना। २ रक्षा करना।

ऊभघडी—(क्रि०वि०) १ तत्काल। २ तुरत। ३ एकाएक। अचानक।

ऊभछठ—(ना०) स्त्रिया द्वारा किया जाने वाला भादो कृष्ण षष्टी का एक व्रत। (इस व्रत म दीपक हो जाने के समय से चन्द्रोदय तक स्त्रियाँ खडी रहती हैं तथा चद्रदशन और पूजन के बाद पारणा करती हैं।)

ऊभणो—(क्रि०)१ खडा रहना। २ खडा होना। ३ तयार रहना।

ऊभता—(न०) हाथ ऊपर उठाकर खडे हुए मनुष्य के बराबर की गहराई तथा ऊचाई का माप।

ऊभताण—दे० ऊभता।

ऊभताळ—(न०) दे० ऊभता। (क्रि०वि०) १ सहसा। एकाएक। २ अभी का अभी। इसी समय।

ऊभसूख—(वि०) जो खडा खडा ही सूख गया हो (वृक्ष)। खडी स्थिति म सूखा हुआ (वृक्ष)।

ऊभाऊभ—(क्रि०वि०) १ खडे खडे। अभी का अभी। इसी वक्त। २ सहसा अचानक।

ऊभा पगाँ—(क्रि०वि०) १ अभी का अभी २ विना विश्राम लिये। तुरत। ३ जीवित रहने की दशा म। कायम होने की हालत म।

ऊभा पगा-री सगाई—जीवित होने तक का सबध।

ऊभा—(अव्य०) १ खडे। २ खडे रहते हुए। ३ उपस्थित रहते हुए। ४ जीवित रहते हुए।

ऊभा ऊभा—(अव्य०) खडे खडे। अभी का अभी। तुरत।

ऊभाखरा—(वि०) १ जो बठे नही। जो फिरता रहे। भ्रमणशील। २ खाना-बदोश।

ऊभा खुरो—(वि०) १ जो बठे नही। जो फिरता रहे। भ्रमणशील। २ खाना-बदोश। (न०) घाडा।

ऊभ-चूकॅ—(क्रि०वि०) एकाएक। अचानक।

ऊभ-छाज—(न०) छाज म नाज को फटकने का एक विशेष प्रकार।

ऊभो—(वि०) १ खडा। खडा हुआ। २ उठा हुआ।

ऊमण दूमणो—(वि०) उदास। खिन्न चित। अन्यमनस्क।

ऊमणो—(वि०) अनमना। उदास।

ऊमत्तो—(वि०) १ उन्मत्त। पागल। २ मस्त। मतवाला।

ऊमर—*(ना०)* आयु।

ऊमरकोट—*(न०)* पाकिस्तान सिंध प्रान्त के थरपारकर जिले का एक ऐतिहासिक प्रसिद्ध नगर। मध्यकालीन साढ़ाण क्षेत्र की राजधानी। (एक समय यह मारवाड राज्य का भाग था।)

ऊमर दराज—*(वि०)* दीर्घजीवी।

ऊमरदान—*(न०)* ऊमर काव्य के रचयिता मारवाड के एक प्रसिद्ध चारण कवि।

ऊमरो—*(न०)* १ द्वार भाग। घर का द्वार और उसके आसपास का भाग। २ मुख्य द्वार के चौखट की नीचे वाली लकडी। देहली। बारोक। ३ हल से बनने वाली पंक्ति। खेत में हल को चलाने से बनी रेखा।

ऊमस—*(ना०)* १ ऊष्णता। २ तपन। ३ वर्षा के पूर्व की गरमी।

ऊमादे—दे० उमादे और रूठी राणी।

ऊमावो—*(न०)* १ उत्साह। २ उमंग। सुखदायक मनोवेग।

ऊमाहणो—*(क्रि०)* उमंग में आना। उमंगित होना। उत्साहित होना।

ऊमाहो—दे० ऊमावो।

ऊरबो—*(न०)* १ आशा। २ दृढ विश्वास। ३ मान। प्रतिष्ठा।

ऊरणो—*(क्रि०)* १ खौलते पानी में दाल, खीच आदि का डालना। २ चक्की के मुंह में पीसने के लिए मुट्ठी भर करके नाज डालना। ३ घोडे पर सवार होकर अत्यंत वेग से युद्ध में प्रवेश करना।

ऊरीजणो—*(क्रि०)* १ दाल खीच आदि का गरम पानी होने पर हण्डिया में डाला जाना। २ नुकसान में पडना। हानि उठाना।

ऊरू—*(ना०)* जांघ। साथल।

ऊर्ध्व—*(वि०)* १ ऊंचा। ऊपर का। ३ सीधा। ४ उन्नत। ऊंचा उठाया हुआ।

ऊर्ध्वपुण्ड्र—*(न०)* वैष्णव सम्प्रदाय का खडा तिलक।

ऊर्ध्ववायु—*(न०)* डकार। मुख से निकलने वाला वायु का उद्गार।

ऊर्मी—*(ना०)* १ लहर। २ मन की लहर।

ऊल—*(ना०)* जीभ का मल।

ऊली—*(वि०)* १ इधर की। इस ओर की। २ उधर की। उस ओर की।

ऊन—*(सर्व०)* १ इस। २ उस।

ऊवट—*(न०)* ऊजड। उत्पथ। विकट मार्ग।

ऊवेरणो—*(क्रि०)* सहायता करना।

ऊस—*(न०)* १ गाय भैंस का थन प्रदेश। २ थनों के ऊपर का वह भाग जिसमें दूध रहता है।

ऊसर—*(ना०)* अनउपजाऊ भूमि।

ऊसव—*(न०)* उत्सव।

ऊसास—*(न०)* १ जोश। आवेग। २ उत्साह।

ऊससणो—*(क्रि०)* १ जोश से फूल जाना। २ ऊंचा उठना। ३ उत्साहित होना। ४ जोश में आकर युद्ध करना। ५ प्रफुल्लित होना। प्रसन्न होना।

ऊं—*(ना०)* १ गर्व। २ अकड। *(सर्व०)* उस।

ऊंघ—*(ना०)* १ नींद। निद्रा।

ऊंघणो—*(क्रि०)* नींद लेना। दे० ऊंघीजणो।

ऊंघाणो—*(क्रि०)* दे० ऊंघावणो। *(वि०)* सोया हुआ। निद्रित। निद्रावश।

ऊंघावणो—*(क्रि०)* १ सुलाना। २ बच्चे आदि को ऊंघाने का प्रयत्न करना।

ऊंघीजणो—*(क्रि०)* १ नींद आना। २ एक स्थान पर सतत दबा रहने से किसी अंग का (रक्त प्रवाह बन्द हो जाने से) सो जाना। ३ अनजान तथा अज्ञान में रहा करना।

ऊच—(वि०) १ ऊंचा। उच्च। २ अधिक अच्छा। श्रेष्ठ।
ऊच कुळी—(वि०) ऊंच कुल का।
ऊचनीच—(ना०) उच्च और नीचे का भेद। उच्च वर्ण व निम्न वर्ण का भेद। (वि०) १ ऊंचा और नीचा। २ भला और बुरा।
ऊचपण—(न०) १ बडप्पन। ऊंचापना। २ ऊंचाई।
ऊचपणो—(न०) दे० ऊचपण।
ऊचमन—(वि०) १ उदार। २ महत्वाकांक्षी।
ऊचमनो—दे० उचमन।
ऊचलो—(वि०) ऊपर का।
ऊचवरण—(न०) १ उच्च वर्ण। द्विजाति। २ ब्राह्मण।
ऊचवहो—(वि०) १ ऊर्ध्वगामी। २ ऊंच आचरण वाला। श्रेष्ठ आचरण वाला। ३ उपकारी। ४ उदार।
ऊचाई—(ना०) १ ऊंचापना। उठान। २ नीचे के स्तर से ऊंचा होता हुआ भाग। ३ बडप्पन। ४ गौरव।
ऊंचाण—(ना०) १ चढाव। २ ऊंचा स्थान। दे० ऊंचाई।
ऊचाणो—(क्रि०) दे० ऊचावणो।
ऊचावणा—(क्रि०) उठवाना। ऊंचा करना।
ऊचासरो—(वि०) १ यश और स्वाभिमान के कारण जिसका सिर ऊंचा हो। उच्चशीर्ष। २ सिरे नाम वाला। ऊंची ख्याति वाला। ३ गर्वोन्नत। ४ उच्चाशय। ५ उच्चाश्रय। (न०) १ पूर्वजों का स्थान। २ मूलस्थान। ३ उच्चश्रवा।
ऊचांत—दे० ऊचाण।
ऊचीताण—(वि०) उच्चाशय। (ना०) १ महत्वाकांक्षी। २ स्वाभिमान तथा कुलाभिमान को ऊंचा उठाये रखना।
ऊचीसरो—दे० ऊचासरो।
ऊचेरो—(वि०) १ तुलना में ऊंचा।
ऊचो—(वि०) १ ऊपर। २ लम्बा। ३ बडा। ४ श्रेष्ठ।
ऊट—(न०) सवारी का एक प्रसिद्ध पालतू पशु। उष्ट्र। उत्कंठ। (वि०) (ला०) १ लंबा। २ मूर्ख।
ऊट कटाळो—(न०) ऊंट के पसन्द की एक कंटीली घास।
ऊटडो—(न०) १ बलों को छोड देने पर छूटी बैलगाडी के जमीन पर टिके रहने का आगे के भाग में नीचे लगा हुआ मोटा डंडा। २ ऊंट।
ऊट-वाळदो—(न०) ऊंट बैल का संबंध। अनमेल सम्बन्ध। अस्वाभाविक संबंध।
ऊट-वैद—(न०) १ नीमहकीम। २ धूर्त वैद्य।
ऊटादेवी—(ना०) पुष्करणा ब्राह्मणों की एक देवी। उष्ट्रवाहिनी।
ऊडळ—(न०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को थामने के लिये हथेलियाँ फैला कर ऊपर उठाये हुये हाथ। अन्जलि। २ ऊपर से गिरती हुई वस्तु को बाहुपाश या गोद में थामे रखने की क्रिया। ३ गोद। ४ ऊपर उठाये या फैलाये हुए हाथ। ५ बाहुपाश (बाथ) में समावे जितनी वस्तु। ६ बाहुपाश। बाथ। (वि०) १ गहरा। ऊंडा। २ घिरा हुआ। सेना द्वारा घिरा हुआ। (न०) सेना का दूर दूर बना हुआ घेरा। घेरा।
ऊडाई—(ना०) गहरापन। गहराई।
ऊडाण—(ना०) गहराई।
ऊडात—(ना०) १ नीचा भूमि। २ गहराई। ३ गम्भीरता।
ऊडो—(वि०) १ गहरा। २ गम्भीर। ३ अगाध। ४ अन्दर में लंबा।
ऊण—(न०) इस वर्ष। चालू वर्ष। वर्तमान वर्ष।
ऊदर—(न०) चूहा। मूसा।
ऊदरी—(ना०) १ चुहिया। २ पीठ की नस में गांठ पड जाने का एक कष्ट साध्य

रोग । ३ गाड़ी मूत्र के साथ उड़ जाने का एक रोग । ४ गजरोग ।

ऊन्दो—(न०) चूहा । मूषक ।

ऊध—(ना०) १ बैलगाड़ी का एक भाग । २ राजस्थानी सगीत साहित्य की सामह दिशाओं में से एक दिशा । उत्तर और वायव्य कोण की दिशा । (वि०) औंधा । उलटा ।

ऊधकरमो—(वि०) १ उलटा काम करने वाला । २ बताये गये तरीके से नहीं करने वाला । ३ कुकर्मी । (स्त्री० ऊध करमी) ।

ऊधाकढो—(वि०) ऊधकरमो ।

ऊधागनो—(न०) मोटे पात्र में भरकर आटे को रखकर उसके ऊपर आग जलाकर भाप से पकाना । २ इस प्रकार पकाया हुआ खिचड़ी । ३ रोटी सेकने का उलटा तवा ।

ऊधावणो—(क्रि०) १ उलटा करना । २ झलना । गिरना । ३ भरे हुए पात्र का ढक्कन करके किसी दूसरे पात्र में खाली करना ।

ऊधो—(वि०) १ उलटा । औंधा । २ विरुद्ध । ३ हानिकारक । (स्त्री० ऊधी ।

ऊधा-पाधरा—(वि०) उलटा-सुलटा ।

ऊब—(न०) नैऋत्य कोण से ईशान कोण की ओर अपेक्षाकृत नीचे आकाश में तेजी से चलने वाला हलका बादल । मोर ।

ऊबरो—(न०) १ खेत में हल चलाने में छिपा रहा । छूट रहा । हल चलाकर निकाली गई रेखा । २ देहेला । देहलीज ।

ऊमी—(ना०) जौ या गेहूं की बाल । ऊमी ।

ऊहू—(अव्य०) १ अस्वीकृति अथवा हठ सूचक एक उद्गार । २ नहीं । ना ।

ऋ

ऋ—सस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला का सातवाँ स्वर वर्ण ।

ऋग्वेद—(न०) चारों वेदों में से एक जो पहला और प्रधान माना जाता है । ससार की सबसे प्राचीन धर्म पुस्तक । ऋग्वेद ।

ऋचा—(ना०) वेद मत्र ।

ऋण—(न०) कर्ज । देना । कर्जदारी ।

ऋणी—(वि०) १ ऋण लेने वाला । कर्जदार । २ उपकृत ।

ऋत—(न०) १ सत्य । २ अचल नियम ।

ऋतु—(ना०) मौसम । रुत । रितु ।

ऋतुकाल—(न०) स्त्रियों के रजोदर्शन के बाद के सोलह दिन । गर्भाधान का समय ।

ऋतुमती—(वि०) १ रजस्वला । २ वह जिसका रजोदर्शन काल समाप्त हो गया हो और सतानोत्पत्ति के लिये समागम के योग्य हो ।

ऋतुराज—(न०) वसत ऋतु ।

ऋतुस्नान—(ना०) रजोदर्शन के चौथे दिन का स्नान ।

ऋद्धि—(ना०) १ समृद्धि । वृद्धि । २ सिद्धि । ३ लक्ष्मी । ४ पार्वती ।

ऋद्धि-सिद्धि—(ना०) समृद्धि और सफलता । २ सुख सम्पत्ति ।

ऋषभ—(न०) १ ऋषभावतार । २ सगीत के सात स्वरों में से दूसरा । ३ बल । वृषभ ।

ऋषभदेव—(न०) १ ऋषभावतार । २ आदि तीर्थंकर । रिखभदेव ।

ऋषि—(न०) १ मत्र द्रष्टा। २ नया दर्शन प्राप्त करने या कराने वाला महात्मा। ३ मुनि। तपस्वी।
ऋषि-ऋण—(न०) ऋषियो का ऋण जो वेदो के पठन पाठन और उनके अनुसार आचरण करने से पूरा होता है।
ऋषिकल्प—(न०) ऋषियो के समान पूज्य व बडा।

अे

अे—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा का आठवाँ स्वर वर्ण।
अे—(सव०) १ यह। २ इस। (ब०व०) ३ ये। (अव्य०) सबोधन के रूप मे प्रयुक्त। एक शब्द।
अेक—(वि०) १ सख्या मे पहला। दो का आधा। २ बेजोड। ३ प्रधान। ४ अमुक (उदा० एक हतो राजा)। (न०) १ पहिला अंक या इकाई। २ एक की सख्या। ३ विष्णु। ४ परमात्मा। ५ सख्या वाचक शब्द के अंत मे 'लगभग', करीब अर्थ मे–उदा० पाचेक हजारेक। (अव्य०) मात्र। सिर्फ। उदा० एक रामरो भरोसो राखो।
अेक अगो—(वि०) १ एक तरफी प्रकृति वाला। अपनी इच्छानुसार करने वाला। २ हठी। जिद्दी।
अेक अेक—(वि०) १ एक के बाद अेक। २ एक के बाद दूसरा। क्रमिक।
अेकखरी—दे० अेकाक्षरी।
अेकचक्र—(वि०) चक्रवर्ती। (न०) सूर्य।
अेक चख—(वि०) एक चक्षु। एक आँख वाला। काना। काणो।
अेकच्छरी—दे० अेकाक्षरी।
अेकछत्र—(न०)१ एक तत्र शासन प्रणाली। वह शासन प्रणाली जिसमे एक ही का पूर्ण प्रभुत्व हो। २ एक हत्थी हुकूमत। ३ पूर्ण प्रभुत्व। (वि०) १ एक राजा वाला। २ पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न।
अेकज—(वि०) एक ही।
अेकजीव—(वि०) १ अभिन्न। २ मिला हुआ। मिश्रित। ३ सुघटित।
अेकटंगियो—(वि०) एक टाँग वाला। लगडा।
अेकटाणो—(न०) १ दे० अेकासणो। २ एक बार।
अेकठा—(ना०) एक जगह।
अेकठा—(वि०)१ एकत्रित। २ एक साथ।
अेकठा—(वि०) इकट्ठा। एकत्रित।
अेकड—(न०) १ ४८४० वर्ग गज जमीन। २ इतनी भूमि का नाप।
अेकडकी—दे० इकडकी।
अेकदमण—(न०) गणेश। गजानन। एक दशन।
अेकढाळ—(वि०) एक समान। एक तरह का।
अेकढाळियो—(न०) एक पलिया आसारा। एक ओर ढालू छाजन वाली कोठरी। अगढाळ। अगढाळियो।
अेकण—(वि०) एक ही।
अेकत—(न०) दे० अेकासणो। (क्रि०वि०) एकत्र। इकट्ठा।
अेकतरफी—(वि०) १ एक पक्ष का। २ जिसमे पक्षपात किया गया हो।
अेकता—(ना०) १ मेल। ऐक्य। २ बराबरी।
अेकताई—दे० एकता।
अेकतान—(ना०) सभी का एक साथ स्वर (सगीत)। २ एकाग्रचित्त। (वि०) लीन

ग्रेक्तारो—*(न०)* एक तार वाला वाद्ययंत्र। इकतारा।

ग्रेकत्र—*(क्रि०वि०)* इकट्ठा।

ग्रेकथभियो—*(वि०)* १ एक स्तंभ वाला। २ एक थभे ऊपर बनाया हुग्रा।

ग्रेकथभियो महल—*(न०)* १ एक थभे के ऊपर बनाया गया महल। २ एक थभे के ग्राकार का बना हुग्रा महल।

ग्रेकदत—दे० एकडसण।

ग्रेक्दम—*(ग्रव्य०)* १ एक्दम। तुरत। २ निपट। बिल्कुल।

ग्रेकदाँई-रो—*(वि०)* बराबर उम्र का। समवयस्क।

ग्रेकदा—*(वि०)* एक बार की। ग्रमुक समय की। *(क्रि० वि०)* एकबार। ग्रमुक समय।

ग्रेकदाण—*(ग्रव्य०)* एक बार।

ग्रेक्प्राण—*(वि०)* एकजीव।

ग्रेक फसली—*(वि०)* वर्ष में एक फसल वाला (देश या भूमि)।

ग्रेक बीजो—*(ग्रव्य०)* परस्पर।

ग्रेक भाव—*(वि०)* एक भाव का।

ग्रेकम—*(ना०)* १ प्रतिपदा। पक्ष का प्रथम दिन। २ इकाई। एकाई।

ग्रेक मत—*(वि०)* एक राय के।

ग्रेकमत—*(ग्रव्य०)* एक राय से।

ग्रेकमन—*(वि०)* १ सगठित। २ ग्रकमत।

ग्रेकमना—*(वि०)* १ एक मन वाले। एक मत वाले। २ सगठित।

ग्रेकमात्र—*(वि०)* केवल एक। एक ही।

ग्रेक्मेक—*(ग्रव्य०)* १ परस्पर। ग्रापस ग्रापस में। २ एक जसा। एक सरीखा। एक। *(न०)* मिश्रण। मिलन। *(वि०)* १ मिश्रित। मिला हुग्रा। २ परस्पर मिले हुये। एक दूसरे से मिला हुग्रा। २ एक समान।

ग्रेक रग—*(वि०)* १ बराबर। समान। २ एक समान। एक सरखा।

ग्रेकर—*(ग्रव्य०)* एक बार।

ग्रेक रदन—*(न०)* गणेशजी।

ग्रेक्रस—*(वि०)* शुरू से ग्रखीर तक एक जैसा।

ग्रेक्रसाँ—*(ग्रव्य०)* एक बार।

ग्रेकराग—*(न०)* एकमत। संप।

ग्रेकराह—*(न०)* १ राष्ट्र का एक धर्म। प्रजा का एक धर्म। २ मुसलमानी धर्म। इलाही मजहब। ३ राह। न्याय। *(वि०)* पक्षपात रहित।

ग्रेक रूप—*(वि०)* एक जसा।

ग्रेक रूपता—*(ना०)* रूप गुण बनावट ग्रादि में किसी ग्रन्य के समान होने का भाव।

ग्रेकल—*(न०)* सूग्रर। *(वि०)* १ ग्रकेला। २ ग्रनुपम। *(वि०)* इकल्ला।

ग्रेकलग्रगो—*(वि०)* १ इकतरफी स्वभाव का। ग्रपनी इच्छानुसार करने वाला। २ हठी। जिद्दी।

ग्रेकलखोरो—*(वि०)* १ ग्रकेला रहने वाला। २ ग्रकेला उपभोग करने वाला। ३ स्वार्थी।

ग्रेकलगिड—*(न०)* सदा ग्रकेला विचरण करने वाला निर्भय ग्रौर बडा शक्तिशाली सूग्रर।

ग्रेक्लडो—*(वि०)* १ एक लड वाला। २ ग्रकेला।

ग्रेकल दोकल—*(वि०)* १ ग्रकेला। २ ग्रकेला दुकेला। इक्का दुक्का।

ग्रेकलमल्ल—*(वि०)* १ ग्रकेला ही कई वीरों से लडने की शक्ति रखने वाला।

ग्रेक्लवाई—*(ना०)* लुहार का एक ग्रौजार।

ग्रेक्लवाड—*(न०)* शक्तिशाली। शूकर।

ग्रेकलवीर—*(न०)* ग्रकेला जूझने वाला वीर।

ग्रेकलमूरो—(वि०) १ स्वार्थी । मतलबी । २ बहादुर । वीर । ३ गायी रहित । अकेला ।

ग्रेकळाम—(न०) १ मेल । प्रीति । मित्रता । २ संगठन ।

ग्रेकलियो—(वि०) अकेला । एकाकी । (न०) एक बैल वाली छोटी गाडी । रेकलो ।

ग्रेकलिंग—(न०) १ मेवाड राज्य के स्वामी एकलिंग महादेव । २ सीसोदिया क्षत्रियों के इष्टदेव श्री एकलिंग महादेव । ३ उदयपुर के पूर्व में एक तीर्थ स्थान जहां एकलिंग महादेव का मन्दिर है । शिवपुरी ।

ग्रेकला—(वि०) १ अकेला । इकल्ला । २ अलग । ३ सहायहीन ।

ग्रेक लोहिग्रो—(वि०) १ एक रक्तवाला । एक वंश का । २ एक स्वभाव का ।

ग्रेक वचन—(न०) १ व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध हो । २ निश्चय ।

ग्रेकवडो—(वि०) १ एक परत वाला । इकहरा ।

ग्रेकसथ—(वि०) एकमत । एक राय के ।

ग्रेकसर—(वि०) एक समान ।

ग्रेक सरखो—(वि०) एक सरीखा । समान ।

ग्रेक सरीखो—(वि०) एक प्रकार का । एक जैसा ।

ग्रेक साथे—(अव्य०) १ सब मिल करके । २ एक साथ में । एक ही बार में ।

ग्रेक सिरीसा—(वि०) दे० एक सरीखा ।

ग्रेकसो—(वि०) १ एक समान । एक जैसा । २ दस दहाई । एक सौ । (न०) एक सौ की संख्या । १००

ग्रेकहथी—(वि०) वह (गाय या भैंस) जो नित्य दुहने वाले व्यक्ति से ही दुहाती हो । एक ही व्यक्ति से दुहाने की आदत वाली ।

ग्रेकहथो—(वि०) एक व्यक्ति द्वारा बनाया हुआ । एक हत्था ।

ग्रेकगा—दे० ग्रेक ग्रगा ।

ग्रेकाकार—दे० एकाकार ।

ग्रेकात—दे० ग्रेकांत ।

ग्रेकतर—दे० एकांतर ।

ग्रेकातरा—दे० ग्रेकांतरा ।

ग्रेकदर—(अव्य०) १ औसतन । २ आम तौर से । समग्रतया । सामान्यतया ।

ग्रेकाई—(ना०) १ अंक गणना में सबसे आगे का और प्रथम अंक । इकाई । २ एक का मान या भाव ।

ग्रेकाग्रेक—(वि०) १ मात्र एक । एक ही । २ अकेला । (क्रि० वि०) एक दम । सहसा । अचानक । अकस्मात ।

ग्रेकाग्रेकी—दे० एकाएक ।

ग्रेकाकार—(वि०) १ दूसरों के मेल से जिसने एक रूप या आकार धारण कर लिया हो । २ जो किसी से मिलकर उसी जैसा होगया हो । ३ एक आकार वाला । एक रूप । ४ मिला हुआ । मिश्रित । ५ भेद रहित (न०) १ एक होने का भाव । २ एकाचार । ३ एकधर्म । ४ तुल्य आकृति । ५ एक होने की क्रिया या भाव ।

ग्रेकाको—दे० एकाएक ।

ग्रेकाक्ष—(वि०) एक आँख वाला । काना । (न०) १ कौआ । २ शुक्राचार्य ।

ग्रेकाक्षरी—(वि०) १ जिसमें एक ही अक्षर हो । एकाक्षरी । (न०) १ एक छंद जिसमें एक ही अक्षर वाले शब्द का प्रयोग किया हुआ होता है । २ एक ऐसा गद्य साहित्य जिसमें अनेक प्रश्नों के उत्तर एक ही अक्षर (= शब्द) में प्राप्त किये हुए होते हैं ।

ग्रेकाखरी—दे० एकाक्षरी ।

ग्रेकाग्र—(वि०) १ एक ही ओर मन लगा हुआ । एक लक्षी २ तल्लीन ।

अेकाग्रता—*(ना०)* तल्लीनता। मन की स्थिरता।
अेकाणुआ—*(ना०)* इक्यानवाँ वर्ष।
अेकाणू—*(वि०)* नब्बे और एक। *(ना०)* ९१ की सख्या।
अेकाणू मो—*(वि०)* सख्या क्रम म जो नब्बे और बरानवे के बीच म आता हो। इक्यानवाँ।
अेकादशी—दे० अेकादसी।
अेकादसी—*(ना०)* चांद्रमास के उभय पक्षों की ग्यारहवी तिथि।
अेकादसो—*(न०)* १ मृतक का ग्यारहवें दिन का कृत्य। २ ग्यारहवाँ दिन।
अेकाध—*(वि०)* १ कोई। कोई-काई। २ क्वचित्। ३ कोई एक।
अेकाधो—*(वि०)* दे० अेकाध।
अेका वेका—दे० एकी-बेकी।
अेकावन—*(वि०)* पचास और अेक। *(न०)* इक्यावन की सख्या, ५१।
अेकावनमो—*(वि०)* सख्या क्रम म जो पचास और बावन के बीच मे आता हो।
अेकावनो—*(न०)* इक्यावनवाँ वर्ष।
अेकावळ—*(न०)* १ एक लडी का हार। २ गल का एक गहना।
अेकावळ हार—दे० अेकावळ।
अेकावळी—दे० इकावळी।
अेकासणो—*(न०)* दिन म केवल एक बार भोजन करने का व्रत। एकाशन।
अेकाकी—*(न०)* एक ही अक मे समाप्त होने वाला नाटक।
अेकागी—*(वि०)* १ एक अग वाला। २ अपग। ३ एक तरफी। ४ एकेंद्रिय। ५ एक ही बात को पकडे रहने वाला हठी। जिद्दी। एकगो।
अेकात—*(वि०)* १ किसी के आने जाने से रहित। २ खानगी। ३ अलग। ४ बिलकुल। नितात। *(न०)* १ जहाँ कोई न हो एसा स्थान। २ अकेलापन।
अेकातरै—*(अव्य०)* १ एक दिन के अतर मे। एक दिन के बाद। एक दिन का बीच।
अेकातरो—*(न०)* एक दिन के अतर स आन वाला ज्वर। *(वि०)* एक दिन का बीच देकर आन वाला।
अेकातवास—*(न०)* १ एकात म रहना। २ गुप्त रूप से रहना।
अेकात वासी—*(वि०)* एकात वास करने वाला।
अेकी—*(ना०)* १ वह जिस पर किसी एक वस्तु का चिह्न किया हुआ हो। २ जो दो स नि शेष विभाजित न हो सके। ३ विषम सख्या। इकाई। ४ एक बूटी वाला ताश का पत्ता। ५ एक अगुली उठाकर पिशाब करन को जाने का सकेत। ६ पिशाब की हाजत। मूत्रवेग। ७ एकता। मेल। सम्भूति।
अेकी-बेकी—*(न०)* १ विषम और सम सख्या। २ विषम और सम सख्या को मुट्ठी बद कर बनाये जाने का एक प्रकार का जुआ। मुट्ठी मे बद किये गय दानो की सम या विषम सख्या बताने की हार जीत का एक द्यूत। ३ बालको का एक खेल। ४ अेक अगुली उठाकर पिशाब और दो अगुलिया उठाकर टट्टी जाने का सकेत। ५ पिशाब और टट्टी।
अेकीसार—*(वि०)* एक जसा। एक समान। एकसा।
अेकूको—*(वि०)* एक एक। एक के बाद अेक। एक के बाद दूसरा एक।
अेकेंद्रिय—*(न०)* वह जीव जिसके एक ही इद्रिय होती है जसे—जोक।
अेक—*(ना०)* मास के पक्ष का प्रथम दिन। एकम। प्रतिपदा।

अेकेक—(वि०) एक एक। प्रति एक।

अेकेफेरे—(अव्य०) १ एक साथ। २ एक ही समय मे।

अेको—(न०) १ एक। २ एक की सख्या। ३ सगठन। एकता। ४ एक बूटी वाला ताश का पत्ता। ५ एक घोडे वाली गाडी। ६ राजा का अगरक्षक। इक्का। ७ बादशाही योद्धा जो अकेला ही अनेको से लडने की सामर्थ्य रखता हो। ८ विक्रम सवत् का पहला वर्ष।

अेकोज—(वि०) १ एक। २ एकही।

अेकोतर—(वि०) सत्तर और एक। इकहत्तर। (न०) सत्तर और एक की सख्या '७१'।

अेकोतरमो—(वि०) सख्या क्रम मे जो सत्तर और बहत्तर के बीच म आता है। इकहत्तरवाँ।

अेकोतरो—(न०) इकहत्तरवाँ वर्ष।

अेकोळाई—(ना०) दे० एकलवाई।

अेखरो—(न०) एक वनौषधि।

अेडी—(ना०) १ एडी। २ जूती या बूट की एड।

अेडै छेडै—(क्रि०वि०) १ इधर उधर। २ किनारा पर।

अेढो—(न०) १ पता। निशान। २ मौका।

अेण—(न०) १ हरिण। २ मृगचर्म। (सर्व०) १ इस। २ यह।

अेणि—(सर्व०) १ इस। २ इसने। ३ इसको।

अेणिपर—(अव्य०) १ इस प्रकार। २ इस पर।

अेतबार—(न०) विश्वास।

अेतराज—(न०) आपत्ति। उज्र।

अेतलो—(वि०) इतना।

अेतवार—(न०) रविवार।

अेतां—(वि०) १ इतने। २ इतनो को।

अेती—(वि०) इतनी।

अेते—(वि०) इतने।

अेतो—(वि०) इतना।

अेथ—(क्रि० वि०) १ यहाँ। इस ओर। इधर।

अेम—(क्रि०वि०) १ इस प्रकार। ऐसे। २ उस प्रकार। उस तरह।

अेम अे—(न०) पारगत विनयन (आर्ट स) शिक्षण की पदवी। (मास्टर आफ आर्ट स)

अेरड—(न०) रडी। इरडियो।

अेरण—(न०) निहाई। अहरन।

अेरसो—(वि०) ऐसा। इस प्रकार का।

अेराक—(न०) १ शराब। २ घोडा। ३ तलवार। ४ इराक देश।

अेरिमो—(वि०) दे० अरसो।

अेळची—(ना०) इलायची।

अेलान—(न०) घोषणा।

अलावेलो—(न०) १ इधर उधर हो जान क कारण परस्पर नही मिल सकन का भाव। २ बच्चो का एक खेल।

अेळियो—(न०) ग्वारपाठे का सुखाया हुआ रस। एलुवा। मुसब्बर।

अेळै—(अव्य०) वृथा। बेकार।

अेव—(अव्य०) इस प्रकार। ऐसा ही। २ और फिर।

अेवज—(न०) १ गहना। २ बदला। ३ परिवर्तन। ४ स्थानापन्न।

अेवज पाटी—(ना०) १ सभी प्रकार के आभूषण। २ सगाई विवाह सबधी आभूषण। ३ आभूषण वस्त्रादि।

अेवजान—(अव्य०) जगह म। परिवर्तन मे। अेवज मे।

अेवजानो—(न०) रुपये उधार देने के बदले मे रखी जाने वाली रुपयो से अधिक मूल्य की वस्तु। २ बदला। प्रतिकार। ३ प्रतिफल।

अेवजियो—दे० अेवजी।

अेवजी—(न०) बदले म काम करने वाला व्यक्ति।

अेवड—(न०) भेड़ बकरियों का झुंड।
अेवड-छेवड—(क्रि०वि०) आसपास। इधर-उधर। आजूबाजू।
अेवडी—(वि०) इतनी।
अेवडो—(वि०) इतना।
अेवमस्तु—(अव्य०) ऐसा हो हो।
अेवाळ—(न०) गडरिया।
अेवाळियो (न०) गडरिया।
अेवे—(सव०) वे।
अेसिया—(न०) पांच महाद्वीपों में से एक।
अेह—(सव०) १ यह। २ वह।
अेहडी—(वि०) ऐसी।
अेहडो—(वि०) ऐसा।
अेहवो (वि०) ऐसा।
अेहिज—(सव०अव्य०) १ यही। २ इन्हीं। (वि०) एसी।
अेहिजपरि—(अव्य०) इस प्रकार।
अेही—(सव०) १ यहां। २ ये भी। ३ इन्हीं। ४ यही। यह। ५ इसी
अेही—(वि०) ऐसी।
अेहो—(वि०) ऐसा।
अेचाताणो—दे० अचाताणो।
अेंजिन—दे० इंजन।
अेंठ—(ना०) १ उच्छिष्ट। जूठन। २ घमंड। ३ अकड। ४ मरोड।
अेंठणो—(क्रि०) १ जूठा करना। २ चखना। ३ बल देना। मरोडना। ४ अकडना। ५ गर्व करना। घमंड करना।
अेंठवाडो—(न०) जूठा। उच्छिष्ट। जूठन। (वि०) जूठा। उच्छिष्ट।
अेंठीजणो—(क्रि०) १ अकडना। २ गर्व करना। ३ बल लगना। ४ मोडा जाना।
अेंठो—(वि०) १ जूठा। २ वह जिसमें अेंठा लगा हो। ३ वह जिसमें जूठन या जूठा हाथ स्पर्श होगया हो। (स्त्री० अेंठी) (न०) जूठन।
अेंठो-चूंटो—दे० अेंठो जूठो।
अेंठो-जूठो—(वि०) जूठा। (न०) १ जूठन। उच्छिष्ट। २ इधर उधर बिखरी हुई जूठन।
अेंडणो—(क्रि०) १ तोल करना। तोलना। २ अनुमान करना। ३ अनुमान लगाना (वजन का)।
अेंडो—(न०) १ किसी के यहाँ भोजन के निमंत्रण पर साथ में ले जाया जाने वाला अनिमंत्रित व्यक्ति। २ तोल। वजन। ३ किसी पात्र में अंदर वस्तु को तोलने के पहले खाली पात्र को तोलने का वजन। (वि०) १ कठिन। २ विषम। दुगम।
अेंढणो—दे० अेंडणो।
अेंढो—दे० अेंडो।
अेंधाण—(न०) १ पहचान। निशानी। २ चिह्न। निशान। निशानी।

अै

अै—सम्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला का नौवां (स्वर) वर्ण।
अै—(सर्व०) आ सर्वनाम नारी जाति और 'आ' सर्वनाम नर जाति का बहुवचन। ये। ये लोग।
अैडी—(वि०) ऐसी। इस प्रकार की। इसी।
अैडो—(वि०) ऐसा। इस प्रकार का। इसो।
अैठ-पैठ—(ना०) १ जानकारी। पहचान। परिचय। ओळखाण। २ प्रतिष्ठा। ३ ख्याति।

ग्रतराज—(न०) ग्रापत्ति । विरोध । एतराज ।
ग्रतरेय—(न०) १ इस नाम का एक उपनिषद् । २ ऋग्वेद का एक ब्राह्मण ग्रंथ ।
ग्रैतिहासिक—(वि०) इतिहास से सम्बंधित ।
ग्रैंद—दे० ग्रहृद ।
ग्रैंदी—दे० ग्रहृदी ।
ग्रदीठौड—(ना०) १ विकट स्थान । २ गुप्त स्थान ।
ग्रधूळा—(न०)१ मौज । मस्ती । २ राग रंग ३ मौजमजा ।
ग्रैंधूळो—(वि०) १ मस्त । मौजी । २ वीर । ३ छल । शौकीन । (न०)भूत ।
ग्रन—(वि०) १ ग्रत्यन्त ठीक । २ उपयुक्त । ३ मुख्य । (ना०) १ प्रतिष्ठा । ग्राबरू । २ समाज या जाति की मर्यादा । ३ घर । ग्रयन । ४ ग्राश्रम । स्थान । ५ गति । चाल ।
ग्रैनरो—(वि०) १ वह जिसमे कष्ट सहने की शक्ति न हो । २ कामचोर । ३ ग्रमीर की तरह बना रहने वाला ।
ग्रनाण—(न०) १ निशान । चिह्न । २ लक्षण ।
ग्रनाण सैनाण—(न०) लक्षण चिह्न ग्रादि ।
ग्रैब—(न०) १ दूषण । २ खामी । ३ भूल । गलती । ४ ग्रवगुण । बुराई । ५ गुनाह । दोष । ग्रपराध । ६ कलंक । लाञ्छन ।
ग्रब गब—(क्रि०वि०) १ गुप्त रीति से । २ ग्रनजान से । ३ दृष्टि से बाहर ।(वि०) १ जिसका किसी को पता या ख्याल न हो । २ ग्राहानी ।
ग्रैबी—(वि०) १ दूषणवाला । २ बदमाश । ३ चालाक । ४ बेईमान । ५ दुष्ट । ६ ग्रंगहीन ।
ग्रैरण—दे० ग्रहरण ।
ग्रराक—(न०)१ शराब । मद्य । २ इराक देश । ३ इराक देश का बाजा । ४ इराक का घोडा । ५ घोडा । (ना०) तलवार । खड्ग ।
ग्रैराकी—(वि०) इराक देश से संबंधित । (न०) १ घोडा । २ इराक का घोडा ।
ग्ररापत—(न०) १ इन्द्र की सवारी का हाथी । एरावत । ऐरापति । सत्रवाह । २ गर्जन करता हुग्रा बिजली वाला बादल । विद्युत मेघ । ३ विद्युत । बिजली ।
ग्रैरावत—दे० ग्ररापत ।
ग्रैरावती—(ना०) १ रावी नदी । २ बिजली ।
ग्ररू—(न०) सर्प । साँप ।
ग्ररू-जाजरू—(न०) सर्प बिच्छू ग्रादि विषैले जन्तु ।
ग्ररा गैरो—(वि०)१ हरकोई । साधारण । २ ग्रपरिचित । ३ उचक्का । ४ पराया । ५ तुच्छ । हीन ।
ग्रलाण—(न०) १ रूपरंग । २ रंग ढंग । तौर तरीका । ३ चिह्न । निशान । ग्रहलाण । ग्रहनाण । ४ प्रसंग । ५ रहस्य । ६ लगाव । संबंध । ७ भूत भय । प्रेत । डर । ८ घोषणा । एलान । मुनादी ।
ग्रैलान—(न०)घोषणा । एलान । मुनादी ।
ग्रैवाकी—(वि०) १ दुष्ट । २ लुटेरा । ३ शत्रु ।
ग्रवास—(न०) घर । ग्रावास ।
ग्रैश्वर्य—(न०)१ ग्रणिमा ग्रादि सिद्धियाँ । २ धन-सम्पत्ति । ३ प्रभुत्व । ४ विभूति ।
ग्रैश्वर्यवान—(वि०) ऐश्वर्यवाला । वैभवशाली ।
ग्रस—(ग्रव्य०) १ इस वर्ष । वर्तमान वर्ष । एस । (न०) १ मौज मजा । ऐश । २ भोगविलास ।

ग्रैसके—(ग्रव्य०)१ इस बार। २ इस वर्ष। वर्तमान काल।
ग्रैसको—(वि०) इस बार का। वर्तमान वर्ष का।
ग्रैसो—(वि०) एसा। इस प्रकार का।
ग्रैहिक—(वि०) लौकिक। सासारिक।
ग्रैहिज—(सर्व०) ये ही।
ग्रही—(सर्व०) १ य ही। य भी।
ग्रैंचणो—(क्रि०) खीचना। तानना।
ग्रैंचाताणो—(वि०) जिसकी ग्रांख का कोया ग्रौर उसकी कीकी सामने नही हो। फिरी हुई ग्रांख वाला। भेंगा।
ग्रठ—दे० ग्रेंठ।
ग्रैठणा—दे० ग्रेंठणो।
ग्रैठवाडो—दे० ग्रेंठवाडो।
ग्रठो—दे० ग्रेंठो।
ग्रैंठो-चू टो—दे० ग्रेंठो ज़ूठो।
ग्रैंठो-जूठो—दे० ग्रेंठा झूठो।
ग्रडणो - दे० ग्रेंडणो।
ग्रैडे—(क्रि०वि०) इधर। यहा। अठ।
ग्रडो—दे० ग्रेंडो।
ग्रैढ—(वि०)१ उपयोग म नहीं लिया जाने वाला। २ उपयोग मे नहीं ग्रा सकने वाला।
ग्रढणो—(क्रि०)१ तौल करना। २ ग्रनुमान करना (वजन का)।
ग्रैंधाण—(न०) १ स्मृति रूप चिह्न। २ स्मारक। ग्रनाण।
ग्रधी ठौड—(ना०) ग्रनजानी जगह। ग्रसेंधी जागा।
ग्रधो—(वि०) ग्रपरिचित। ग्रसेंधो।

ग्रो

ग्रो—सस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला का दसवां (स्वर) वर्ण।
ग्रो—(सर्व०) यह।
ग्रोइछणो—(क्रि०) १ मनेच्छा पूर्ण होने की शर्त पर भेंट के रूप म सकल्प की हुई वस्तु को ग्राराध्य देव के ग्रर्पण कर देना। इच्छापूर्ति होने पर देवता को भेंट चढाना। २ योछावर करना। वारना।

ग्रोईछणो - दे० ग्रोइछणो।
ग्रोईजाळो—दे० ग्रोसीजाळो।
ग्रोक—(न०) १ समूह। २ घर। ३ ग्राश्रय। ४ पक्षी। ५ शूद्र। ६ निशान। ७ ग्रजलि। ८ खप्पर। ६ क। उलटी।
ग्रोकणो—(क्रि०) १ निशान करना। लकडी या धातु मे ग्रोजार से निशान करना। २ निशाना लगाना। निशान पर तीर लगाना। ३ शस्त्र प्रहार करना। ४ उलटी करना।
ग्रोकर—(न०) १ ताना। उपालभ। २ ग्रपशब्द। ३ तुच्छकार। तुच्छार्थक शब्द।
ग्रोकळी—(ना०) १ पानी के वेग से बहने के कारण पडने वाला खड्डा। २ रेती का छोटा धुस। पवन से उडकर बना हुग्रा छोटा टीला। ३ इस प्रकार बने हुए टीले के पास का खड्डा। ४ टीबे पर हवा के वेग से बनी हुई बालू रेत के लहर या लहर माला।
ग्रोकात—(ना०) १ हैसियत। बिसात। २ ताकत।
ग्रोकारी—(ना०) १ वमन। कै। २ मिचली।
ग्रोकीरो—(न०) वर्षाऋतु में गोबर में उत्पन्न होने वाला एक कीडा। गोगीड़ो।

ओख—(ना०) १ पर्व के दिन किसी आत्मीय की मृत्यु हो जाने के कारण उस पर्व को उस दिन मनाने का निषेध। २ कमी। न्यूनता।

ओखण—(न०) मूसल। साबीलो।

ओखणणो—(क्रि०) १ मूसल से ओखली में कूट कर नाज (के दाना) का छिलका दूर करना। छांडणो। २ उखेड़ना।

ओखणियो—(न०) मूसल। साबीलो। (वि०) मूसल द्वारा ओखली में कूटने वाला।

ओखणो—(क्रि०) मूसल द्वारा ओखली में कूटना। (न०) मूसल।

ओखद—(ना०) औषधि। दवा।

ओखदी—(ना०) औषधि। दवा।

ओखध—दे० ओखद।

ओखर—(न०)१ विष्टा। मल। गू। २ गोबर। ३ नरक। ४ गदगी।

ओखर बोलणो—(मुहा०)अशिष्ट बोलना। गाली गलौज देना।

ओखळण—(न०) १ प्रहार। चोट। २ नाश।

ओखळणो—(क्रि०) १ प्रहार करना। २ नाश करना।

ओखळी—(ना०) ओखली। दे० ओरळी।

ओखा—(ना०) अनिरुद्ध की पत्नी। उषा।

ओखाणो—(न०)१ उपाख्यान। २ कहावत। ३ उदाहरण। ४ दृष्टांत।

ओखा मडळ—(न०) द्वारका के पास का काठियावाड का एक भाग।

ओखी—(वि०) १ कठिन। २ दुःसाध्य। ३ दुर्लघ्य। ४ विकट। ५ अटपटी।

ओखीवार—(ना०) १ सकट काल। २ आर्ति काल।

ओखो—(वि०) १ अटपटा। २ कठिन। ३ दुःसाध्य। ४ दुर्लघ्य। ५ विकट।

ओगण—दे० औगुण।

ओगणगारो—(वि०) औगुन वाला। दोषी।

ओगनियो—(न०) स्त्रियों के कान के ऊपर की लोल में पहने जाने वाला सोने या चाँदी की एक लटकन। पीपळ पतियो। पीपळ पान्यो। (एक कान में ऐसे तीन तीन पहने जाते हैं।)

ओगाळ—(ना) १ कलक। लांछन। २ जुगाली।

ओगाळणो—(क्रि०) १ जुगाली करना। २ कलंकित करना। ३ जल्दी जल्दी खाना। पूरा चबाये बिना खाना।

ओगाळी—(ना०) जुगाली।

ओगाळो—(न०) चरने के बाद बचा हुआ डंठला वाला नहीं खाने योग्य घास।

ओगुण—(न०) १ अवगुण। दुर्गुण। २ दोष। एब।

ओगुणगारो—(वि०) १ औगुन करने वाला। औगुनी। अवगुणी। २ अपराधी। दोषी।

ओगुणी—(वि०) १ अवगुणी। २ दोषी।

ओघ—(न०) १ समूह। राशि। २ घनापन। ३ धारा। ४ बहाव।

ओघट—(वि०) १ दुर्गम। २ विकट। भयकर। ३ कठिन।

ओघड—(न०) १ अघोरी। २ मस्त। ३ मनमौजी। ४ जोगी।

ओघम—(ना०) १ शरीर की उष्मा। २ धरती या मकान आदि से प्राप्त होने वाली उष्मा।

ओघमो—(न०) १ शरीर की उष्मा। २ धरती, मकानादि से प्राप्त होने वाला उष्मा। ३ वर्षागम की तपन।

ओघाट—(न०) दुर्गम स्थान।

ओघो—(न०) जैन साधु के पास रहने वाला रजोहरण। रजोयणो।

ओचींतो—(वि०) अचिन्त्य। अप्रत्याशित आकस्मिक। अनचीता। अणचींतवियो।

ऐसके—(अव्य०) १ इस बार। २ इस वर्ष। वर्तमान काल।
ऐसको—(वि०) इस बार का। वर्तमान वर्ष का।
ऐसो—(वि०) ऐसा। इस प्रकार का।
ऐहिक—(वि०) लौकिक। सांसारिक।
ऐहिज—(सर्व०) ये ही।
ऐही—(सर्व०) १ ये ही। ये भी।
ऐंचणो—(क्रि०) खींचना। तानना।
ऐंचाताणो—(वि०) जिसकी आँख का कोया और उसकी कीकी सामने नहीं हो। फिरी हुई आँख वाला। भेंगा।
अठ—दे० ऐंठ।
ऐंठणो—दे० ऐंठणो।
अठवाडो—दे० ऐंठवाडो।
ऐंठो—दे० ऐंठो।
ऐंठो-चूंटो—दे० ऐंठो चूंठो।
अठा-जूठो—दे० ऐंठो जूठो।
अडगो—दे० ऐंडगो।
ऐंडे—(क्रि०वि०) इधर। यहाँ। अठै।
ऐंडो—दे० ऐंडो।
ऐंढ—(वि०) १ उपयोग में नहीं लिया जाने वाला। २ उपयोग में नहीं आ सकने वाला।
अढणो—(क्रि०) १ तौल करना। २ अनुमान करना (वजन का)।
अवाण—(न०) १ स्मृति रूप चिह्न। २ स्मारक। अनाण।
अधी ठौड—(ना०) अनजानी जगह। असैंधी जागा।
अधो—(वि०) अपरिचित। असैंधो।

ओ

ओ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला का दसवाँ (स्वर) वर्ण।
ओ—(सर्व०) यह।
ओइछणो—(क्रि०) १ मनच्छा पूर्ण होने की शर्त पर भेंट के रूप में संकल्प की हुई वस्तु को आराध्य देव के अर्पण कर देना। इच्छापूर्ति होने पर देवता को भेंट चढ़ाना। २ न्योछावर करना। वारना।
ओईछणो - दे० ओइछणो।
ओईजाळो—दे० ओसीजाळो।
ओक—(न०) १ समूह। २ घर। ३ आश्रय। ४ पक्षी। ५ शूद्र। ६ निशान। ७ अंजलि। ८ खप्पर। ९ क। उलटी।
ओकणो—(क्रि०) १ निशान करना। लकड़ी या धातु में औजार से निशान करना। २ निशाना लगाना। निशान पर तीर लगाना। ३ शस्त्र प्रहार करना। ४ उलटी करना।
ओकर—(न०) १ ताना। उपालंभ। २ अपशब्द। ३ तुच्छकार। तुच्छार्थक शब्द।
ओकळी—(ना०) १ पानी के वेग से बहने के कारण पड़ने वाला खड्डा। २ रेती का छोटा धुस। पवन से उड़कर बना हुआ छोटा टीला। ३ इस प्रकार बने हुए टीले के पास का खड्डा। ४ टीबे पर हवा के वेग से बनी हुई बालू रेत के लहर या लहर माला।
ओकात—(ना०) १ हैसियत। बिसात। २ ताकत।
ओकारी—(ना०) १ वमन। कै। २ मिचली।
ओकीरो—(न०) वर्षाऋतु में गोबर में उत्पन्न होने वाला एक कीड़ा। गोगीड़ो।

ओख—(ना०) १ पर्व के दिन किसी आत्मीय की मृत्यु हो जाने के कारण उस पर्व को उस दिन मनाने का निषेध। २ कमी। न्यूनता।

ओखण—(न०) मूसल। साबीलो।

ओखणणो—(क्रि०) १ मूसल से ओखली में कूट कर नाज (के दानों) का छिलका दूर करना। खांडणो। २ उखेडना।

ओखणियो—(न०) मूसल। साबीलो। (वि०) मूसल द्वारा ओखली में कूटने वाला।

ओखणो—(क्रि०) मूसल द्वारा ओखली में कूटना। (न०) मूसल।

ओखद—(ना०) औषधि। दवा।

ओखदी—(ना०) औषधि। दवा।

ओखध—दे० ओखद।

ओखर—(न०)१ विष्ठा। मल। गू। २ गोबर। ३ नरक। ४ गंदगी।

ओखर बोलणा—(मुहा०)अशिष्ट बोलना। गाली गलौज देना।

ओखळण—(न०) १ प्रहार। चोट। २ नाश।

ओखळणो—(क्रि०) १ प्रहार करना। २ नाश करना।

ओखळी—(ना०) ओखली। दे० ओरळी।

ओखा—(ना०) अनिरुद्ध की पत्नी। उषा।

ओखाणो—(न०)१ उपाख्यान। २ कहावत। ३ उदाहरण। ४ दृष्टान्त।

ओखा मंडळ—(न०) द्वारका के पास का काठियावाड का एक भाग।

ओखी—(वि०) १ कठिन। २ दुःसाध्य। ३ दुर्लभ्य। ४ विकट। ५ अटपटी।

ओखीवार—(ना०) १ संकट काल। २ आर्ति काल।

ओखो—(वि०) १ अटपटा। २ कठिन। ३ दुःसाध्य। ४ दुर्लभ्य। ५ विकट।

ओगण—दे० औगुण।

ओगणगारो—(वि०) औगुन वाला। दोषी।

ओगनियो—(न०) स्त्रियों के कान के ऊपर की लोल में पहने जाने वाला सोने या चांदी की एक लटकन। पीपळ पतियो। पीपळ पान्यो। (एक कान में ऐसे तीन तीन पहने जाते हैं।)

ओगाळ—(ना) १ रलक। पागुर। २ जुगाली।

ओगाळणा—(क्रि०) १ जुगाली करना। २ कवलित करना। जल्दी जल्दी खाना। पूरा चबाये बिना खाना।

ओगाळी—(ना०) जुगाली।

ओगाळो—(न०) चरने के बाद बचा हुआ डंठल वाला नहीं खाने योग्य घास।

ओगुण—(न०) १ अवगुण। दुर्गुण। २ दोष। ऐब।

ओगुणगारो—(वि०) १ औगुन करने वाला। औगुनी। अवगुणी। २ अपराधी। दोषी।

ओगुणी—(वि०) १ अवगुणी। २ दोषी।

ओघ—(न०) १ समूह। राशि। २ घना पन। ३ धारा। ४ बहाव।

ओघट—(वि०) १ दुर्गम। २ विकट। भयंकर। ३ कठिन।

ओघड—(न०) १ अघोरी। २ मस्त। ३ मनमौजी। ४ जोगी।

ओघम—(ना०) १ शरीर की उष्मा। २ धरती या मकान आदि में प्राप्त होने वाली उष्मा।

ओघमो—(न०) १ शरीर की उष्मा। २ धरती, मकानादि से प्राप्त होने वाला उष्मा। ३ वर्षागम की तपन।

ओघाट—(न०) दुर्गम स्थान।

ओघो—(न०) जैन साधु के पास रहने वाला रजोहरण। रजोयणो।

ओचींतो—(वि०) अचिन्त्य। अप्रत्याशित आकस्मिक। अनचीता। अणचींतवियो।

ग्रोछ—(ना०) १ ग्रोछापन। ओछापन। क्षुद्रता। २ कमी। न्यूनता।
ग्रोछटणो—(क्रि०) १ ग्लना। २ भागना।
ग्रोछणो—(क्रि०) १ ओछापन करना। क्षुद्रता दिखाना। २ ग्रोछा होना। कम होना। घट जाना।
ग्रोछव—(न०) उत्सव। उच्छव।
ग्रोछाई—(ना०) १ क्षुद्रता। ओछापन। २ कमी। न्यूनता।
ग्रोछाड—(न०) १ थाली ग्रादि में रखी हुई वस्तु को ढकने का वस्त्र। आच्छादन। २ भोजनाच्छादन। ३ कपड़े का ढक्कन। ४ ढकने का कपडा। ५ खोल। गिलाफ। ६ रक्षक।
ग्रोछाडणो—(क्रि०)१ ढकना। आच्छादित करना। २ पूर्ति करना। ३ रक्षा करना।
ग्रोछाणो—(क्रि०) १ कम हो जाना। घट जाना। २ कम कर देना। घटा देना। (क्रि०भू०) कम हो गया। घट गया।
ग्रोछापणो—(न०) १ ग्रोछापन। हलका पन। ग्रोछाई। २ नीचता। क्षुद्रता। ३ कमी।
ग्रोछा बोलो—(वि०) १ ओछा बोलने वाला। २ अशिष्ट भाषी।
ग्रोछी—(वि०)१ कम। थोडी। २ छोटी। ३ अशिष्ट बोलने वाली। ४ ठिगनी। बौनी। ५ हीन। तुच्छ।
ग्रोछी कापणी—दे० ग्रोछी वाढणी।
ग्रोछीजणो—(क्रि०) कम होना। घट जाना।
ग्रोछी दाण—(ना०) ऊँट की एक चाल। धीमी दौड़।
ग्रोछी वाढणी—(मुहा०) १ बात या काम के फैलाव को अधिक लंबाने से रुकना या रोकना। २ झंझट को फैलाने से रोकना। ३ हानिकारक बात का विस्तार नहीं करना।

ग्रोछो—(वि०) १ कम। थोडा। २ नीच प्रकृति वाला। ३ अपशब्द बोलने वाला। अशिष्ट भाषी। ४ निंदा करने वाला। ५ ठिगना। बौना। ६ क्षुद्र। तुच्छ। हीन ७ छोटा।
ग्रोज—(न०) १ बल। शक्ति। प्रताप। २ तेज। प्रकाश। ३ कान्ति। ४ शूर वीरता जगाने वाला काव्य।
ग्रोजगो—(वि०) १ किसी की स्मृति में रात भर नींद नहीं लेने वाला। २ रात में जगता रहने वाला।
ग्रोजगो—(न०) १ रात को नींद नहीं लेने या नहीं आने के कारण उत्पन्न आलस्य। नींद की खुमारी। उनींदापन। २ नींद का अभाव।
ग्रोजतो—(वि०) १ उपयोग में लिया जा सकने योग्य। खपता। २ जिसके उपयोग करने में बहिन बेटी के भाग की ग्रापत्ति न हो। ३ अनुकूल।
ग्रोजळा—(न०) (बिना सिंचाई के) केवल जमीन की तरी से होने वाले गेहूँ।
ग्रोजस—दे० ग्रोज।
ग्रोजस्वी—(वि०) ग्रोजसवाला।
ग्रोजार—(न०) औजार। उपकरण।
ग्रोजू—(क्रि०वि०) १ अभी। अब ही। २ अब भी। ३ अभी तक। ४ पुनः और। फिर।
ग्रोजो—(न०) खर्च में कमी तथा बचत करने की भावना। खर्च नहीं करना। बचत करने की मनोवृत्ति।
ग्रोभकणो—(क्रि०) १ डरना। भय मानना। २ डर के मारे उछलना। ३ अचानक जाग उठना। चौंक कर जाग उठना। ४ चौंकना। ५ कांपना।
ग्रोभड—(क्रि०वि०) लगातार। (वि०) १ असंख्य। अपार। २ भयंकर। (ना०) १ झटका। २ चोट। प्रहार।

ओझड़-झड़—*(वि०)* १ प्रहारों को सहने वाला। २ क्षत विक्षत। ३ प्रहार करने वाला। *(अव्य०)* प्रहारों पर प्रहार। *(क्रि०वि०)* प्रहारों को सहन करता हुआ।

ओझड़णो—*(क्रि०)* १ झटका मारना। २ प्रहार करना। ३ युद्ध करना। ४ लड़ना।

ओझणो—*(क्रि०)* दे० ओधणो। *(न०)* गौना की विदाई के समय कन्या को दिये जाने वाले वस्त्राभूषण आदि। दहेज। दात। दायजो।

ओझर—*(न०)* १ पेट। २ आंत।

ओझरी—*(ना०)* १ पेट। २ बढ़ा हुआ पेट।

ओझरो—*(न०)* दे० ओझरी।

ओझळ—*(वि०)* १ अप्रकट। अप्रत्यक्ष। २ अदृष्ट। अदृश्य। ३ अंतर्धान। तिरोहित। *(न०)* १ अप्रकटता। अप्रत्यक्षता। २ तीव्र ज्वाला। *(क्रि०वि०)* १ अप्रकट रूप से। अप्रत्यक्षता से। २ अदृष्ट।

ओझळणो—*(क्रि०)* १ बुझाना। २ बुझना। ३ मिटना। मिटाना। ४ गायब होना। लुप्त होना। ५ कूदना। ६ जलना।

ओझो—दे० १ ओघो। २ ब्राह्मणों की एक अल्ल। उपाध्याय। ३ झाड़ा झपटा करने वाला।

ओट—*(ना०)* १ शरण। २ आड़। ३ रोक। रुकावट। ४ सहारा। ५ बखिया की सिलाई।

ओटणी—*(ना०)* १ बखिया की सिलाई। धुरपाई। तुरपन। २ तुरपन की मजदूरी। ३ रूई और कपास अलग करने की क्रिया।

ओटणो—*(क्रि०)* १ एक प्रकार की सिलाई करना। २ बखिया की सिलाई करना। बखियाना। ३ चरखी के द्वारा रुई और कपास को अलग करना। ४ अग्नि का ताप में ढकना। ५ दूध आदि को उबाला देकर गाढ़ा करना।

ओटनी—*(ना०)* चबूतरी। चौतरी।

ओटनो—*(न०)* चबूतरा। ओटो। चौंतरो।

ओटवणो—*(क्रि०)* १ अधिकार में लेना। २ दबाना।

ओटाई—*(ना०)* १ ओटने का काम। २ ओटने की मजदूरी।

ओटाणो—*(क्रि०)* दूध आदि का उबाला देकर गाढ़ा करना।

ओटावणो—*दे०* ओटाणो तथा ओटीजणो।

ओटांटळो—*(वि०)* १ कम्मी गदन वाला। जिसकी गर्दन अकड़ गई हो। २ दुबला पतला। ३ अन्यिल। ४ झगड़ालू।

ओटाटीजणो—*(क्रि०)* वायु से गर्दन का अकड़ जाना।

ओटो—*(न०)* १ चबूतरा। चौंतरो। २ तालाब बंध आदि में परिमाण से अधिक आये हुए पानी को निकालने के लिये बनाया हुआ मार्ग। जलाशय में समा सकने की शक्ति के उपरान्त पानी के निकलने का बनाया हुआ मार्ग। ३ शरण। सहारा।

ओठ—*(ना०)* १ शरण। २ सहारा। मदद। ३ रोक। रुकावट। ४ एकांत जगह। ५ परदा। ६ होठ।

ओठक—*(न०)* १ ऊंट। २ ऊंट ऊंटनी टोड़ आदि। ऊंट जाति। ऊंट धन। *(वि०)* ऊंट संबंधी। ऊंट का।

ओठक पन्तल—*(न०)* ऊंट के ऊपर कसा जाने जाने वाला काठी गद्दा आदि सामान।

ओठम—*(वि०)* १ रक्षक। २ सहायक। ३ पोषक। *(ना०)* १ आश्रय। शरण। २ सहायता। मदद।

ओठभो—*(न०)* १ आश्रय। २ शरण।

ओठारू—(न०) ऊट, ऊटनी और उसके बच्चे। ऊट धन। ऊट समूह। २ ऊट या ऊटनी। ३ सांडनी। ऊटनी। (वि०) ऊट संबंधी।

ओठी—(क्रि०वि०) उधर। (न०) १ ऊट सवार। शुतुर सवार। २ उष्ट्रारोही दूत। (वि०) ऊट संबंधी। ऊट का।

ओठीजट—(ना०) ऊट के काटे हुये बाल। ऊट के बाल।

ओठीपो—(न०) १ आजीविका के लिये ऊट के द्वारा सवारी ले जाने माल लादने आदि का किया जाने वाला धंधा। २ ऊटो के क्रय विक्रय का काम। ऊटो के व्यापार का काम। ३ राज्य की शुतुरसवारी की नौकरी का काम। ४ ऊटो का प्रदेश (जैसलमेर)।

ओठै—(क्रि०वि०) १ वहां। २ उधर।

ओठो—(न०) १ उदाहरण। मिसाल। दृष्टान्त। २ परदा। ३ उपालंभ। ताना। ४ एकान्त। ५ सहारा। मदद। (वि०) ऊँट संबंधी। ऊट का। (वि०) १ खराब। बुरा। २ ऊट से संबंधित।

ओठो दूध—(न०) ऊटनी का दूध।

ओड—(न०) १ मिट्टी खोदने का काम करने वाला व्यक्ति। २ एक जाति। बेलदार। ३ किनारा। (वि०) समान। बराबर। (ना०) ओर। तरफ।

ओड—(ना०) १ समानता। बराबरी। २ समुद्र का किनारा। ३ गाँव का किनारा। (ना०) ओर। तरफ। (वि०) समान। बराबर।

ओडण—(ना०) १ ओड की स्त्री। २ ओड जाति की स्त्री। ३ ढाल। फलक।

ओडणो—(क्रि०) १ प्रहार करना। २ प्रहार हेतु हाथ या शस्त्र उठाना। ३ तयार करना। ४ भेलना। थामना। ५ सहन करना। ६ ढकना।

ओडव—(ना०) ढाल। फलक।

ओडवणो—(क्रि०) ढक देना। ढकना। २ ढाल से रक्षा करना।

ओडडी—(ना०) १ मुक्की। मुट्ठी। दे० ओडडीस।

ओडडीस—(वि०) १ उद्दण्ड। २ जबरदस्त।

ओडी—(ना०) १ टोकरी। डलिया। २ (ओडा से छोटा) घास का नाप।

ओडो—(न०) १ बडा टोकरा। २ कुतर किये हुए घास चारे का एक नाप।

ओडो—दे० ओहडो। (वि०) उस तरह का वैसा। ऊडो।

ओढ—(ना०) सिंचाई के लिये कुए पर रहने वाले बैलो और मनुष्यो के लिये बने घास के छाजन। हाळी, बैल आदि के रहने के लिये कुएँ पर बने हुये अस्थाई निवास के पडवे झोपडे।

ओढण—(न०) १ ओढने का वस्त्र। २ ढाल। ३ युद्ध में रक्षा का साधन।

ओढणियो—(न०) ओढनी या ओढना के लिये ऊनता सूचक शब्द। ओढना। ओढणो।

ओढणी—(ना०) १ स्त्री के ओढने का एक वस्त्र। ओढनी। २ चुनरी।

ओढणो—(न०) १ स्त्री के ओढने का एक वस्त्र। ओढना। (क्रि०) १ वस्त्र से शरीर को ढांकना। २ जिम्मेवारी लेना। ३ धारण करना।

ओढाडणो—(क्रि०) उढाना।

ओढामणी—दे० ओढावणी।

ओढाळणो—(क्रि०) दरवाजा बंद करना। किवाड ढकना।

ओढावणी—(ना०) १ विवाह में कन्या के पिता की ओर से वर के माता पिता आदि कुटुम्बीजनों को पगडी दुपट्टा ओढना रुपये आदि भेंट देकर किया जाने

वाला बरात की विदाई के समय का सम्मान। पहरावणी। २ दहेज।

ओढावणो—*(क्रि०)* वस्त्र से शरीर ढाकना। उढाना।

ओढो—*(वि०)* १ दुगम। विकट। बोढो। २ जबरदस्त। बलवान। ३ भयावना। डरावना।

ओण—*(न०)* पाँव। चरण। *(अव्य०)* और। फिर। दे० ओरण।

ओत - *(प्रत्य०)* १ एक अपत्य प्रत्यय। २ पुरुष के नाम के अत में लाने वाला एक प्रत्यय जिसका अर्थ—का पुत्र होता है। जसे—रघुनाथ करममीओत अर्थात् रघुनाथ करममी का पुत्र। ३ पुरुष नाम के अन्तिम अक्षर की अ की मात्रा से सधि विकार होने से बनने वाले उन शब्द का ओत रूप। *(न०)* सुत। पुत्र। पूत।

ओतप्रोत—*(वि०)* १ एक दूसरे के साथ मिला हुआ। २ तल्लीन। तन्मय।

ओतर—*(ना०)* १ बरात को दी जाने वाली विदाई। २ बरात की विदाई की अंतिम रस्म। ३ दहेज। दायजो।

ओतर देणी—*(मुहा०)*१ बरात को पहरावनी करना। २ दहेज देना।

ओतरादो—*(वि०)* उत्तर दिशा का। उतरादो।

ओथ—*(क्रि०वि०)* उधर। वहाँ। उठ। *(ना०)* १ हानि। नुकसान। घाटो। २ कमी। ३ सहारा।

ओथणो—*(क्रि०)* १ अस्त होना। २ कलंकित होना। ३ अवनत होना। बुरे दिन देखना। दुखी होना। ४ पराजित होना। हारना। ५ मरना।

ओथरणो—*(क्रि०)* १ उमड कर आना। २ हमला करना। ३ औंधा पड़ना। ४ हानि उठाना।

ओथिये—*(क्रि०वि०)* वहाँ। उधर। उस जगह। उठ। ओठ।

ओद—*(ना०)* १ बल वीर्य और गुण आदि में वंश की परम्परा। २ वंश। खानदान। ओध।

ओदण—*(न०)* १ बैलगाडी के पट्टों के आधार की मोटी बल्लियाँ। तख्ते के नीचे के लंबे डंडे। २ ओदन। भात।

ओदनिक—*(न०)* रसोईदार।

ओदर—*(ना०)*१ किसी धातु में कमल की धातु का मिश्रण। जसे-सोने में लोहा से मा आदि। २ पेट। उदर।

ओदी—*(ना०)* शिकार के लिये बैठने का ऊँचा और गुप्त स्थान।

ओद्रक—*(न०)* भय। डर। आतंक।

ओद्रकणो—*(क्रि०)* १ भय मानना। २ डरना। घबराना। भयभीत होना। ३ आश्चर्य करना। ४ संपूर्ण शक्ति व वेग के साथ आक्रमण करना।

ओद्राव—*(न०)* भय। आतंक।

ओध—*(ना०)* १ वंश। कुल। ओद। २ समूह। ३ खिचड़ी पकवान्न आदि भोज्यपदार्थों का पैंदे में जल जाने से होने वाला स्वाद परिवर्तन।

ओधकणो—*(क्रि०)* डरना। चौंकना।

ओधणो—*(क्रि०)* खिचड़ी पकवान्न आदि भोज्यपदार्थों का पकाते समय पैंदे में जल जाना।

ओधीजणो—दे० ओधणो।

ओधूठा—*(न०)* मौज। हंसी दिल्लगी। मजा। अधूठा। *(वि०)* निडर। निर्भय। *(क्रि०वि०)* निर्भय होकर।

ओधो—*(वि०)* पैंदे में जला हुआ। (खिचड़ी आदि भोज्यपदार्थ)।

ओन—*(न०)* १ भाग। २ निकास।

ओनाड—*(वि०)* १ योद्धा। वीर। २ मनम्र। अवनाड़।

ओप—*(न०)* १ शोभा । २ चमक । प्रकाश । ३ कान्ति । ४ पालिश । ५ कवच । *(वि०)* सदृश । समान ।

ओपर्णी—*(ना०)* सोने चाँदी के आभूषणों आदि पर जिलह देने का अकीक का मत्स्याकार टुकड़ा । ओपनी । *(क्रि०)* चमक देना । पालिश करना ।

ओपणो—*(क्रि०)* १ फबना । शोभा देना । २ शोभा पाना । सोपना । ३ चमक लाना । पालिश करना । आपना । ३ योग्य ठहरना । उपयुक्त होना । ४ उपयुक्त स्थान पर स्थित होना ।

ओपत—दे० उपत ।

ओपतो—*(वि०)* १ फबता । फबता हुआ । सजता हुआ । २ सुंदर । ३ उचित । *(अव्य०)* १ यथाविधि । विधि अनुरूप । २ यथास्थान । ठीक जगह पर ।

ओपम—*(ना०)*१ उपमा-*(वि०)* १ उपमा योग्य । २ सुंदर ।

ओपमा—*(ना०)* १ उपमा । सादृश्य । समानता । २ तुलना । मिलान । ३ शोभा । सुंदरता । ४ चिट्ठीपत्री में लिखा जाने वाला प्रशंसा सूचक वाक्य । प्रशस्ति ।

ओपरो—*(वि०)* १ उचक्का । २ लुच्चा । ३ सामान्य गुणों से रहित । ४ अज नबी । अपरिचित ।

ओपासरो—दे० उपासरो ।

ओफिस—*(न०)* कार्यालय । दफ्तर ।

ओफिसर—*(न०)* अधिकारी । अफसर ।

ओवासी—*(ना०)* उबासी ।

ओम—*(न०)* १ ओम् । ओंकार । २ पर ब्रह्म । ३ व्योम । आकाश ।

ओमगोम—*(न०)* १ आकाश और पृथ्वी । २ ब्रह्म और सृष्टि ।

ओमाहणो—दे० ऊमाहणो ।

ओयण—*(न०)* १ शूद्र । २ पाँव ।

ओरडी—*(ना०)* छोटी कोठरी ।

ओरडो—*(न०)* १ कोठरी । कोठा । २ एक द्वार वाली कोठरी ।

ओरण—*(ना०)* १ जंगल का वह भाग जो किसी देवी देवता के नाम अर्पित और रक्षित होता है । जिसमें वृक्ष की लकड़ी नहीं काटी जाती और खेती नहीं होती । देवारण्य । अरण्य । रखत । २ गोचर भूमि । रखा । रखत ।

ओरणो—*(क्रि०)*१ खौलते हुए पानी में दाल आदि का डालना । २ पीसने के लिए चक्की के गाले में नाज डालना । ३ सेना को ललकार कर युद्ध में प्रवृत्त करना । युद्ध में झोंकना । ४ सीमा लांघना । मर्यादा लांघना । ५ घोड़े का वेग से युद्ध में डालना ।

ओरतो—*(न०)* १ धोखा । २ पश्चाताप । पछतावो । ३ संदेह । शक । ४ अभिलाषा । ५ आनंद की उत्कंठा ।

ओरस—*(ना०)* १ दुख । ग्लानि । २ लज्जा । लाज ।

ओरसियो—*(न०)* चंदन घिसने का पत्थर का चकलोटा ।

ओरसो—*(वि०)* दुखदाई । अनखावना । अणखावणो ।

ओरा—*(क्रि०वि०)* १ यहाँ । इधर । २ समीप । पास ।

ओरी *(ना०)* १ चेचक जैसा एक रोग । छोटी चेचक । २ छोटा कमरा । कोठरी । ओरडी ।

ओरीजणो—दे० ऊरीजणो ।

ओरीसो—दे० ओरसियो ।

ओरू—*(क्रि०वि०)* और । फिर । अर्थ । फेर ।

ओरो—दे० ओरडो ।

ओळ—*(ना०)* १ पंक्ति । २ श्रेणी । ३ हल से खेत में खींची जाने वाली रेखा । कमरो ।

ओला-छाना—(न०) १ मिस। बहाना। २ अस्पष्टता।

ओलाद—(ना०) औलाद। संतान। वेड़।

ओळावो—(न०) १ आड़। ओट। २ परदा। घूंघट। घुंघटो। ३ बहाना। मिस।

ओलांडणो—(क्रि०)१ छोड़ना। त्यागना। २ अस्वीकार करना। ३ अवज्ञा करना। ४ उल्लंघन करना। लांघना। ५ उलटना। पलटना। औंधा करना।

ओळांतरा—(न०) दूर और सुरक्षित स्थान। दूर एकान्त जगह।

ओळियो—(न०) १ पत्र। चिट्ठी। २ संक्षिप्त रूप से लिखा जाने वाला पत्र। ३ पत्र लिखने का सँकड़ा और लम्बा कागज। ४ संक्षिप्त पचांग। ५ जमानत के रूप में आदमी को रहन। ओळ। ६ रहन रखा हुआ आदमी सामड़ी। ७ हस्तलिखित ग्रंथों के कागज पर बिना स्याही की रेखाएँ उभारने के लिये बना हुई एक ऐसी काष्ट पट्टी जिसके लंबाई के दोनों सिरों पर समानान्तर में आमने सामने २०-२५ छेद बनाये होते हैं जिनमें लंबाई की ओर मोटे धागों को ग्रथित करके चिपका दिया जाता है। लिखे जाने वाले कागज को उस पट्टी पर रख कर अँगुलिएँ फिराई जाती हैं जिससे रेखाएँ (ओळियाँ) उभर आती हैं। कागज पर ओळी (रेखा) उभारने की एक काष्ट पट्टी। दे० फाँटियो।

ओळी—(ना०) १ पंक्ति। २ लकीर। ३ चंदा। अनुदान। ३ जनियों का एक समूह व्रत।

ओली कानी—(अव्य०) १ इस ओर। २ उस ओर।

ओळी-दोळी—(क्रि०वि०) १ चारों ओर। २ आस-पास।

ओळी मांडणो—(मुहा०) चंदे में रकम देना। चंदे में नाम लिखाना।

ओळी में बठणो—(मुहा०) ओळी व्रत के दिन सहयोगियों के साथ उपाश्रय में बैठ कर उपवास और धर्म-ध्यान करना।

ओळीतर—(वि०) निकम्मा।

ओळू—(ना०) प्रेमी की वियोग जनित स्मृति। २ एक लोकगीत। ओळूंडी।

ओळूंटी—(ना०) 'ओळू' की तरह प्रेरित ऊन सना। दे० ओळू।

ओळूंवा—(न०) सांप बिच्छू आदि जहरीले जंतुओं के काटने पर रह रह कर अथवा प्रवाह की भांति होने वाला दर्द।

ओळै—(क्रि०वि०)१ ओट में। २ शरण में। ३ गुप्त रीति से।

ओलै—(वि०) १ इस। २ उस।

ओलै कानी—दे० ओली कानी।

ओनो—(न०) १ ओट। आड़। २ परदा।

ओळो—(न०) १ कोठरी। झोंपड़ी। २ ओट। परदा। ३ बंद या चीनी का बना लड्डू। मिसरी का लड्डू। सडौरा। ४ वर्षा के जलकण से जमा हुआ गोला। ५ शरण। ६ बचाव। रक्षा। ७ ठंड, ताप और वर्षा से बचने के लिये बलों के लिये बनाया गया ओरडा।

ओलो-दोलो—(वि०) १ भोला दौला। मौजी। २ उदार। ३ लापरवाह।

ओल्हरणो—(क्रि०)१ बरसना। २ बढ़ना। तरंग का उठना। ३ प्रवेश करना। ४ शुरू होना। ५ एक मास समाप्त होने के बाद दूसरे मास का प्रारम्भ होना। जसे—गौरी नै बीजोड़ो मास ओल्हरियो। (सोहर गीत)।

ओल्हो—(न०)१ मिस। बहाना। २ आड़। ३ शरण। (वि०) बचता हुआ। छिपता हुआ। भागता हुआ।

ओवरी—(ना०) छोटी कोठरी। ओरी। ओरड़ी।

ओवरो—*(न०)* १ साल के अंदर का कोठा (कमरा)। ओरो।
ओवारणो—*(क्रि०)* १ निछावर करना। वारना। ओइछणो। ओछना। २ निछावर होना।
ओवासणो—*(क्रि०)* दे० ओहासणो।
ओस—*(ना०)* १ शबनम। तुषार। २ पाला।
ओसण—*(वि०)* कटु। कडुआ।
ओसणणो—*(क्रि०)* आटा गूंधना। मांडना। सानना। मसळणो।
ओसणो—दे० ओळणो।
ओ स-तो—*(अव्य०)* यह तो।
ओसर—*(न०)*१ अवसर। मौका। समय। २ कोई खास वक्त। संयोग। ३ मौके की बात। ४ मृतक भोज। मौसर। औसर। न्यात।
ओसरणो—*(क्रि०)* १ घटा का बरसना। मेह का बरसना शुरू होना। २ आंसू आना। ३ गाल, बाण आदि की झडी लगना। अस्त्र शस्त्रों का बरसना। ४ प्रभाव होना।
ओसर-मोसर—*(न०)* १ वृहत् मृतक भोज। मृतक का बडा ख्याति भोज। न्यात। मौसर। औसर। २ छोटा बडा ख्याति भोज।
ओसरी—*(ना०)* १ मकान की भीत के सहारे खुली जगह में बनी हुई छाजन। बारजा। औसरी। ओहरी। २ छोटा दालान। वरंडा। बरामदा।
ओसरो—*(न०)* १ अवसर। २ बारी। पारी।
ओसळणो—दे० ओळणो।
ओसवाळ—*(न०)* १ एक वश्य जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।
ओसवाळण—*(ना०)* ओसवाल स्त्री।
ओसक—*(न०)*१ भय। आतंक। २ पराजय। हार। ३ घबराहट।
ओसकणो—*(क्रि०)* १ डरना। २ पराजित होना। ३ घबराना।
ओसाण—*(न०)* १ अवसर। मौका। २ अवसान। सुध बुध। होश हवास। ३ अवसान। समाप्ति। मृत्यु। ४ अहसान। उपकार।
ओसाप—*(न०)* १ यश। कीर्ति। २ शोभा। महिमा। ३ वैभव। ४ महत्त्व। ५ गुण। योग्यता। ६ उपकार। अहसान। ७ पराक्रम। शौर्य। ८ साहस। हिम्मत।
ओसामण—*(न०)* १ चावलों के पक जाने के बाद उनमें से निकाला जाने वाला इजाफे का पानी। मांड। २ अग्नि पर पकाई जाने वाली वस्तु का उसके पक जाने के बाद निकाला गया अधिक पानी। ३ दाल का छौंका हुआ पानी।
ओसार—*(न०)* दीवाल की मोटाई। भीत की चौडाई। आसार।
ओसारो—*(न०)* ओसारा। दालान। वरंडा। २ ओसरी। बारजा।
ओसावण—दे० ओसामण।
ओसावणो—*(क्रि०)* चावलों के पक जाने पर उनमें रहे हुए अधिक पानी (मांड) को निकालना।
ओसियाळो—*(न०)* १ किसी के किये गये उपकार के बदले में महसूस की जाने वाली पराधीनता। २ लाचारी। *(वि०)* १ लाचार। २ उपकार से दबा हुआ। ३ पराश्रित।
ओसीजाळो—*(न०)* १ अव्यवस्थित वस्तुओं का ढेर। २ निकम्मी वस्तुओं का अव्यवस्थित ढेर। ३ तितर बितर पडा हुआ सामान।
ओसीसो—*(न०)*१ तकिया। २ सिरहाना।
ओसो—*(न०)* आंख में डाली जाने वाली एक औषधि।
ओहटणो—*(क्रि०)* १ आच्छादित होना। ढंक जाना। २ ढक देना। ३ हटना।

४ हटाना। ५ नाश करना। ६ नष्ट होना। ७ कमजोरी दिखाना। कमजोर होना।

ओहडणो—(क्रि०) १ हटाना। दूर धकेलना। २ पीछे हटना।

ओहडो—दे० अहोडो।

ओहथणो—(क्रि०) १ अस्त होना। २ मिटना। नाश होना। ३ स्थिति का कमजोर हो जाना। अवनत होना। अवदशा होना।

ओहदो—(न०) ओहदा। पद।

ओहर—(ना०) हानि। नुकसान।

ओहरी—दे० ओसरी'।

ओहळणो—दे० ओळणो।

ओहलै—(अव्य०) १ एकान्त में। २ छिप छिपे।

ओहलो—(वि०) १ एकान्त। २ गुप्त।

ओह—(सर्व०) अहम्। मैं। (न०) ओऽम्।

ओहास—(ना०) १ नाराजगी। २ क्रोध। ३ व्यंग्य। ४ मजाक। ५ उपहास। हँसी। ६ प्रकाश।

ओहासणो—(क्रि०) १ नाराज होना। २ क्रोध करना। ३ व्यंग्य करना। ४ हँसी करना। उपहास करना। ५ अगरबत्ती आदि जलाना। धूप देना। ६ उद्भासित होना। प्रकाशित होना।

ओहिज—(सर्व०) यही।

ओही—(सर्व०) १ यही। २ यह भी।

ओहीजाळो—दे० ओसीजाळो।

ओं—(न०) १ एक परब्रह्म सूचक शब्द जो प्रणवमंत्र कहलाता है। ओ। ओम्। २ अ, उ और म् का संयुक्त रूप-ओऽम्, ओम् और ॐ। ३ ब्रह्म तथा ईश्वर सूचक नाम। प्रणव। ४ वेदमंत्र, प्रार्थना और धार्मिक क्रिया आदि के आरंभ में उच्चारण किया जाने वाला एक महान पवित्र नाम। ५ वेदत्रयी की सूचक संज्ञा। ६ देवत्रयी (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) सूचक नाम। प्रणव।

ओंकार—(न०) प्रणवमंत्र। ओम्। ओऽङ्कार। ओम्कार।

ओंकारेश्वर—(न०) १ महादेव। शिव। २ मध्यप्रदेश में नर्मदा के किनारे स्थित द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक।

ओंठ—दे० ऊँठ सं० १।

औ

औ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण।

औ—(सर्व०) १ यह। २ वह। (अव्य०) और।

औकात—(ना०) १ सामर्थ्य। शक्ति। २ बिसात। हैसियत।

औकास—(न०) अवकाश।

औखद—(ना०) औषधि।

औगण—(न०) अवगुण।

औगणगारो—(वि०) १ अवगुणी। दुर्गुणी। २ हानिकारक। ३ कृतघ्न।

औगत—(ना०) १ याद। स्मरण। २ नात। जाना हुआ। ३ अवगति। दुर्दशा।

औगाढ—(वि०) १ जबरदस्त। प्रबल। २ गंभीर। गहरा।

औगाळ—दे० आगाळ।

औगाळणो—दे० ओगाळणो।

औगाळो—(न०) १ जुगाली। २ पशुओं के खाने से बचा हुआ घास। अखोर। आखोर। ३ बिगड़ी हुई वस्तु।

औगुण—(न०) १ अवगुण। बुराई। दोष। २ हानि।

ओघट—(वि०) १ दुस्साध्य। कष्टसाध्य। दुगम २ कठिन। ३ विना सँवारा हुआ। अस्त-व्यस्त। छिन्न भिन।
ओघड—दे० ओघड।
ओंघणा—(क्रि०) १ इस प्रकार आपस म मिलना कि बीच म कुछ भी जगह न रहे। सटना। चिपकना। भिचना। भिठना। भिचीजणो। २ रगड खाना। ३ घषण करना।
ओछाड—(न०) ढँकने का वस्त्र। ढक्कन। आच्छादन।
ओछाडणा—(क्रि०) ढँकना। आच्छादित करना।
ओछाप—(ना०) बडप्पन। महत्व।
ओछाह—(न०) १ उत्सव। २ उत्साह।
ओछाही—(वि०) उत्साही।
ओछाहो—दे० ओछाह।
ओजळ—दे० ओजळा।
ओजम—(न०) अपमान।
ओजार—(न०) १ काम करने का साधन। लुहार बडई आदि शिल्पियो के काम करने का उपकरण। २ उस्तरा। पाछणो।
ओझड—(न०) शस्त्र प्रहार का शब्द। (क्रि०वि०) निरतर। लगातार।
ओझडणो—(क्रि०) १ शस्त्र प्रहार करना। २ शस्त्र प्रहार का शब्द होना। ३ लगातार प्रहार करना।
ओटाणो—दे० ओटावणो।
ओटावणो—(क्रि०) दूध आदि को आँच देकर गाढा करना। ओटाना।
ओडा—(न०) १ गुरुजनो की बात का दिया जाने वाला असभ्यतापूवक उत्तर। बडो को टोकना। २ उत्तर।
ओदर—दे० ओदर।
ओदसा—(ना०) अवदशा। दुदशा।
ओद्रकणो—(क्रि०) १ डरना। भयभीत होना। २ धडकना (दिल का)।
ओद्राव—(न०) भय। डर।
ओद्राव—(न०) आतक। रौब।
ओद्राह दे० ओद्राव।
ओध—(ना०) अवधि। समय।
ओधकणो—(क्रि०) डरना। चौकना।
ओधायत—(न० अहदेदार। पदाधिकारी।
ओधारणो—(क्रि०) १ उद्धार करना। अवधारना। २ ग्रहण करना। धारण करना। ३ उधार खाते लिखना। लेने (लहना लेना) लिखना। बही म उधार खाते म किसी के नाम रकम लिखना।
ओधो—(न०) ओहदा।
ओनाड—(वि०) १ अनम्र। २ जबरदस्त। ३ वीर। ३ गहलोत वश का।
ओर—(अव्य०) शब्द और वाक्य का एक सयोजक शब्द। (वि०) १ अन्य। दूसरा। निराला। अपर। अवर। २ अधिक। ज्यादा। (क्रि०वि०) १ अतिरिक्त। सिवाय। २ फिर। पुन।
ओर ठ—(अव्य०) और ठौर। दूसरी जगह।
ओरत—(ना०) १ स्त्री। नारी। महिला। २ पत्नी।
ओरता—(न०) १ पश्चात्ताप। उरस्ताप। २ सदेह। वहम।
ओरवो—(वि०) दूसरा।
ओरविया (अव्य०) १ दूसरे लोगो को। दूसरे लोगो के पास। (न०) दूसरे लोग।
ओरस—(न०) विवाहिता पत्नी से उत्पन्न पुत्र।
ओरग—(न०) औरगजेब।
औरगसाह—दे० अवरगसाह।

श्रौरू—(क्रिoविo) १ श्रौर भी । २ फिर । श्रौर । ३ पीछे । बाद मे ।

श्रौलाडणो—(क्रि०) उलट देना ।

श्रौलाद—(ना०) १ सतान । २ वश परम्परा ।

श्रौलो दौलो—दे० श्रोलो दोलो ।

श्रौवात—(न०) १ वियोग । २ श्रवगति । श्रहिवात । साहाग । सौभाग्य ।

श्रौसत—(ना०) कम श्रौर श्रधिक के योग का बराबर विभाजन । कम श्रौर श्रधिक जितनी राशियां हो उन सबके योग का उतनी ही राशि सख्या से विभाजित किया हुश्रा विभाजन फल । समष्टि का सम विभाजन । परता । सरेरास । सिरेराशि ।

श्रौसर—दे० श्रोसर ।

श्रौसरणो—दे० श्रोसरणो ।

श्रौसरी—दे० श्रोसरी ।

श्रौसकरणा—(क्रि०) डरना । भयभीत होना ।

श्रौसाण—दे० श्रोसाण ।

श्रौसाप—दे० श्रवसाप या श्रोसाप ।

श्रौसार—दे० श्रोसार ।

श्रौस्था—द० श्रवस्था ।

क

क-सस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्णमाला का बारहवां तथा क वर्ग का प्रथम व्यजन वर्ण । कठस्थानी पहला व्यजन ।

क-(श्रव्य०) १ श्रथवा । किंवा । या । २ है कि । यह है कि । ३ काव्य का एक पादपूर्णार्थक श्रव्यय । जैसे-नवी मूं ज री खाट क नवु व टापरी । (उप०) एक श्रव्यय उपसर्ग जो शब्द के पहिले लग कर रहित, बमल विरुद्ध श्रौर कुत्सित श्रर्थ को प्रकट करता है । जैसे-कऋतु कजोड कवला, कपूत इत्यादि । (न०) १ विष्णु । २ श्रग्नि । ३ सूर्य । ४ पानी । ५ मस्तक । ६ सेना ।

कश्रवसर-दे० कुश्रवसर ।

कइ-(क्रि०वि०) कब । (श्रव्य०) १ श्रथवा । २ सबध सूचक के विभक्ति का एक रूप । (सर्व०) क्या । कंइ ।

कइक-(वि०) कई । बहुत । बहुत से ।

कई-(वि०) श्रनेक । बहुत । (क्रि०वि०) कभी ।

कउ-(ना०) तापने की धूनी । (सर्व०)कोई ।

कउतिग-(न०) १ कौतुक । विनोद । २ कुतूहल ।

कऋतु-(ना०) प्रतिकूल ऋतु । बेमौसम ।

ककडो-(न०) १ दाढी या मूछ का लाल रग का बाल । २ टुकडा । ३ ज्योतिष मे एक योग ।

ककार-(न०) 'क श्रक्षर । ककियो ।

ककियो-दे० ककार ।

ककीलक-(न०) कवच ।

ककुदवान-(न०) १ बैल । २ सांड । वृषभ ।

ककुभ-(ना०) दिशा ।

ककुभाळी-(वि०) दिशाश्रो से श्राने वाली । (श्रांधी) ।

ककहावारी-(ना०) वर्णमाला का श्रनुक्रम । श्रनुक्रमणिका । वर्णाम्नाय । श्रखरावट । श्रखरावळ ।

ककको-(न०) १ क वर्ण । ककार । ककियो । २ वर्णमाला । ककहरा । ३ प्राथमिक ज्ञान ।

कस-(न०) १ तिनका । भूस । तिणखो । २ जगल । ३ भाग का कोना ।
कसरा-(ना०) १ ज्वार की एक जाति । २ सफेद ज्वार । जोहरी । ३ कगनी नाम का अन्न ।
कच-(न०) १ केश । बाल । २ घँसने का शब्द । (वि०) कच्चा । अपक्व ।
कचकच-(ना०) १ बक भक । किचकिच । माथापच्ची । २ हुज्जत । झोड । कजियो । वाग्युद्ध ।
कचकोळी-(ना०) कांच की चूड़ी ।
कचपीडी-(ना०) कांच के टुकड़ों से मंडित लाख की चूड़ी ।
कचर-(न०) १ कचरा । चूरा । (वि०) टूटा हुआ । फटा हुआ । विदीर्ण ।
कचर-कचर-(न०) १ कच्चा फल खाने का शब्द । २ हर समय खाते रहना । ३ कचकच । बकभक ।
कचरघाण-(न०) १ संहार । नाश । २ कीचड़ ।
कचरणो-(क्रि०) १ कुचलना । रौंदना । २ खूब खाना । ३ खाते रहना ।
कचरो-(न०) कूड़ा करकट ।
कचाट(-ना०) १ कच्चापन । २ अधूरापन । अपूर्णता । ३ कंजूसी ।
कचावट-(ना०) १ कच्चापन । कच्चाई । २ अनुभव हीनता । ३ अपूर्णता ।
कचूमर-(न०) किसी फल को कुचल कर बनाया गया अचार । दे० छूंदो ।
कचेडी-(न०) कचहरी । न्यायालय । अदालत ।
कचेरो-(ना०) १ कांच की चूड़ियाँ बनाने वाला तथा बेचने वाला व्यक्ति । २ कचेरा जाति का व्यक्ति । कचारा ।
कचोट-(ना०) १ दुख । रंज । शोक । २ मानसिक पीडा ।
कचोटणो-(क्रि०) दुख देना ।
कचोटीजणो (क्रि०) दुखी होना ।
कचोरी-(ना०) बेसन या दाल की पीठी में मसाले भर कर बनाई जाने वाली मैदे की पूरी । कचौड़ी ।
कचोळी-(ना०) कचोरी । २ कटोरी । ३ पानी की डोल ।
कचोळो-(न०) १ कटोरा । २ कुएँ में से सींच कर पानी निकालने की डोल ।
कच्चाई-(ना०) १ अपूर्णता । २ अनुभव हीनता । ३ कच्चापन । ४ मन की दुर्बलता । कमजोरी । कचावट ।
कच्ची रसोई-(ना०) वह भोज्य पदार्थ जो तला हुआ न हो । पानी के योग से पकाई गई दाल साग रोटी चावल आदि ।
कच्ची रोकड (ना०) वह बही जिसमें कच्चा या उपरत हिसाब लिखा जाता है ।
कच्चो-(वि०) १ कच्चा । अपक्व । काचो । २ डरपोक । ३ अर्द्ध पठित । ४ अनुभव रहित ।
कच्छ (न०) १ गुजरात का कच्छ प्रदेश । २ समुद्र के किनारे की भूमि । ३ कछुआ । ४ कच्छपावतार । ५ लंगोट । कछोटा । ६ धोती की लांग । ७ तट । किनारा ।
कच्छी-(वि०) १ कच्छ देश का निवासी । २ कच्छ देश से संबंधित । (ना०) १ कच्छ देश की भाषा । २ एक प्रकार की तलवार । (न०) कच्छ का घोडा ।
कच्छी पलाण-(न०) कच्छ की बनी हुई विशेष प्रकार की घोड़े या ऊंट की जीन ।
कछ-दे० कच्छ ।
कछणो (न०) १ चमड़े को चीर कर बनाई हुई रस्सी । चीर हुये चमड़े की रस्सी । चमड़े की लंबी पट्टी । २ कछनी ।
कछेरी-(वि०) कच्छदेशोत्पन्न (घोडी) । कच्छ देश की ।

कछोटो-(न०) १ छोटी धोती । घुटन की ऊपर की धोती । कछोटा । २ जांघिया ।
कछोरू-(न०) कुपुत्र । कपूत ।
कज-(न०) १ काम । काज । काय । २ वेश । ३ ब्रह्मा । (क्रि०वि०) लिये । हेतु । निमित्त ।
कजळी-(ना०) १ अंगारे के ऊपर की राख । २ पारा और गंधक को शामिल पीसकर बनाई हुई बुकनी । ३ एक जंगल ।
कजळीजणो-(क्रि०) अंगार के ऊपर राख जमना ।
कजस-दे० कुजस ।
कजा-(न०) १ मौत । मृत्यु । २ आफत । विपत्ति ।
कजाक-(वि०) १ मारने वाला । २ लुटेरा । ३ आततायी । ४ शत्रु । ५ योद्धा । ६ भयंकर ।
कजाकी-(वि०) १ दुष्ट । २ आततायी । ३ नीच । कुत्सित ।
क जाणा-(अव्य०) न जाने । क्या जाने । फँइठा ।
कजात-दे० कुजात ।
कजावो-(न०) १ कुम्हार का बरतन, इंट आदि पकाने का भट्टा । निमाड़ो । पजावो । २ ऊंट गधे आदि पर रखा जाने वाला पत्थर आदि सामान लादने का बना लकड़ी का ढांचा ।
कजि-(अव्य०) सम्प्रदान कारक की विभक्ति । लिये । वास्ते । निमित्त । कारण । हेतु । (ना०) काय ।
कजियाखोर-(वि०) लड़ाई झगड़ा करने वाला । टंटाखोर ।
कजियो-(न०) १ टंटा । झगड़ा । २ युद्ध ।
कजी-(ना०) १ दाग । २ लाछन । कलंक । ३ हानि । ४ विकृति । खराबी । ५ भ्रष्टता । ६ अनबन । (वि०) बेबश । लाचार ।
कजी करणो-(मुहा०) १ हराना । परास्त करना । २ लाचार बनाना । ३ तयार करना ।
कजी होणो-(मुहा०) १ तयार होना । २ सम्हलना । ३ लाचार होना । ४ परास्त होना । हारना ।
कजै-दे० कजि ।
कजोग-दे० कुजोग ।
कजोड-दे० कुजोड ।
कजोडो दे० कुजोड ।
कज्ज-(न०) १ काम । काज । २ सम्प्रदान कारक का एक चिह्न । लिये वास्ते आदि ।
कट-(ना०) १ कटि । कमर । २ कटा हुआ टुकड़ा । ३ कटने की क्रिया । ४ कपड़ा बाल आदि की कटाई । ५ नमून की कटाई । ६ मसाले, चानी आदि डाल कर बनाया हुआ इमली का पानी । ७ शव ।
कटक-(ना०) १ सेना । फौज । २ दल । समूह । ३ नितंब । चूतड़ । ४ उड़ीसा प्रांत का एक नगर । ५ सेंधा नमक ।
कटकट-(न०) दांतों से बजने का शब्द ।
कटकडो-(न०) विविध प्रकार की भांतो (चित्रकारी) वाले कांसे की बनी पट्टी जिस पर ठोक कर सोने चांदी के तार पर भांत उठाई जाती है ।
कटकणो-(क्रि०) १ बादल का जोर से गर्जना । कड़कना । २ आक्रमण करना । ३ क्रोध करना ।
कटकवध-(न०) १ सेना समुदाय । २ सुसज्जित सेना ।
कटकी-(ना०) आक्रमण । २ छोटा टुकड़ा ।
कटको-(न०) १ टुकड़ा । खड । २ अंगुली के चटकने का शब्द ।
कटणो-(क्रि०) १ किसी धारदार वस्तु से किसी वस्तु के टुकड़े होना ।

२ बीतना (समय का)। ३ लिखावट पर लकीर फिरना। लिखावट का गलत सिद्ध होना। लिखावट का निरर्थक होना। ४ दूर होना। *(न०)* शिलियो का एक औजार।

कटत–दे० कटती।

कटती–*(ना०)* मूल्य या वेतन में की जाने वाली कमी। कमी।

कटमी–*(ना०)* १ निंदा। बुराई। २ किसी की कही हुई बात को गलत ठहराना। काटना। खडन। *(वि०)* १ काटी हुई। तराशी हुई। २ कटी हुई। ३ विपरीत। उलटी।

कटमो–*(वि०)* १ कटा हुआ। कटवां।

कटमा व्याज–*(न०)* मिती काटा। कटुआ ब्याज।

कटवण–*(वि०)* १ काटने वाला। २ मारने वाला। ३ अपकारी। ४ बुरा करने वाला।

कटवी–दे० कटवी।

कटाई–*(ना०)* १ काटने का काम। २ काटने की मजूरी।

कटाकट–*(ना०)* १ मारकाट। २ लडाई। ३ कटकट का शब्द।

कटाछ–*(न०)* १ तिरछी नजर। २ व्यंग्य से भरी बात। ताना। कटाक्ष।

कटाणो–*(क्रि०)* कटवाना। कटाना।

कटार–*(ना०)* एक दुधारा छोटा शस्त्र। कटारी।

कटारडढो–*(न०)* सूअर।

कटारभांतछींट–*(ना०)* देशी रगाई छपाई की मोटे कपडे की एक प्रकार की घाघरे की छींट। कटार के चिह्न की छपाई का घाघरे का कपडा।

कटारमल–*(न०)* १ कटारी रखने वाला वीर। २ कटार चलाने में प्रवीण योद्धा।

कटारी–दे० कटार।

कटाव–*(न०)* १ काट छांट। कतरव्यांत। २ पानी के वेग से होने वाली जमीन की कटाई। भक्टन। ३ तास के खेल में हुक्म के पत्ते या दाव। ४ तास के खेल में अमुक (रग के) पत्तो का न होना। ५ कटाई का काम। दस्तकारी। शिल्प।

काटावदार–*(वि०)* कटाई के काम वाला। जिस पर कटाई का काम हो। कटाव दार। २ बेल बूटो वाला।

कटि–*(ना०)* कमर।

कटिमडगा–*(न०)* करधनी।

कटीजणो–*(क्रि०)* १ कसाव पैदा होना। २ काटा जाना। ३ जग लगना।

कटोती–*(ना०)* किसी रकम में से धर्मादा दस्तूरी आदि काट लेना।

कटोरदान–*(न०)* गोल डिब्बे के आकार का ढक्कनदार पात्र।

कटोरी–*(ना०)* छोटा कटोरा। प्याली। बाटकी।

कटोरो–*(न०)* प्याला। कटोरा। बाटको।

कट्टो–*(न०)* वह थैला जो पूरी बोरी से आधा हो। *(वि०)* १ मजबूत। २ बलवान।

कठरळ *(ना०)* १ फाटक। भापा। २ किवाड।

कठकारो–*(न०)* प्रस्थान करते समय पूछा जाने वाला कहाँ अर्थ सूचक अशुभ समझा जाने वाला कठ शब्द जैसे–कठै जाओ हो ? (कहाँ जा रहे हो ?) (ऐसा नही पूछ कर मगलकारी प्रश्न सिध जाओ हो ?' पूछा जाना चाहिये) १ अशुभ सूचक कठ शब्द का नाम। कुशब्द शब्द। (प्रस्थान करते समय कठै शब्द का प्रयोग अशुभ माना जाता है।)

कठचित्र–*(न०)* कठपुतली। काष्ठचित्र।

कठचीत–*(वि०)* लकडी में चित्रित।

कठठणो (क्रि०) १ तैयार होना। २ चढ़ाई के लिये तयार होना। ३ चढ़ाई करना। ४ जोश में आना। ५ उमड़ना।
कठडो-(न०) कठघरा।
कठण-(वि०) १ कठिन। मुश्किल। २ सख्त। कड़ा। कठोर। ३ दृढ़। मजबूत।
कठणाई (ना०) कठिनता।
कठपींजरो-(न०) काठ का पिंजरा।
कठपूतळी-(ना०) कठपुतली। काष्ठ की मूर्ति।
कठफाडो-(न०) जलाने के लिये चीरी हुई लकड़ी। (वि०) जलाने के लिये लकड़ियों को चीरने फाड़ने वाला।
कठवती-(ना०) कठौती।
कठसेडी-(वि०) जिसके थनों से दूध कठिनता से निकले (गाय भैंस)।
कठहडो-(न०) कठहरा।
कठजरो-(न०) रसोई घर में रखा रहने वाला खाद्य पदार्थ रखने का पिंजरा। २ कठघरा। कठडो।
कठा तक-(क्रिवि०) कहाँ तक।
कठाताणी-(क्रिवि०) कहाँ तक।
कठा ताई-(क्रिवि०) कहाँ तक।
कठा थी (क्रिवि०) कहाँ से।
कठा लग-(क्रिवि०) कहाँ तक।
कठा सूं-(क्रिवि०) कहाँ से।
कठाँ-(क्रिवि०) कहाँ।
कठिन-दे० कठण।
कठिनाई-दे० कठणाई।
कठियाणी-(ना०) कठियारा की स्त्री।
कठियारो (न०) जंगल में से लकड़ियें तोड़ कर लाने वाला और बेचने वाला व्यक्ति। काष्ठिक।
कठी-(क्रिवि०) कहाँ। किधर।
कठीनै-(क्रिवि०) किस ओर। किधर को।
कठीर-(न०) सिंह। कठीर।
कठीरो (न०) १ कठघरा। २ काठ का टुकड़ा। (वि०) कहाँ का। किस जगह का।
कठू-(क्रिवि०) कहाँ से ('कठ सूं' का छोटा रूप।)
कठेडो दे० कठहरो।
कठै-(क्रिवि०) कहाँ। किधर।
कठैई-(क्रिवि०) १ कहीं। २ कहीं भी। ३ कहीं कहीं। ४ कहाँ तक। ५ कहीं तो।
कठैथी-(क्रिवि०) १ कहाँ से। कठ सूं। २ जिधर से भी। जहाँ कहीं से भी।
कठ ही-(क्रिवि०) १ कहीं भी। २ कहीं।
कठोतरी-(ना०) काठ का छिछला बर्तन। कठौती। लकड़ी की परात।
कठोती-दे० कठोतरा।
कठोर-(वि०) १ कठिन। सख्त। कड़ा। २ निर्दय। निष्ठुर।
कठोरी-(ना०) १ कठौती। २ कपित्थ। कथ।
कठोळ-(न०) मूंग मोठ आदि द्विदल धान्य।
कड-(ना०) १ कमर। २ किनारा। तट। ३ ओर। तरफ। पक्ष।
कडक-(ना०) १ शक्ति। बल। २ काम शक्ति। ३ गर्जन। ४ कड़ापन। ५ हड्डी लकड़ी आदि टूटने का शब्द। (वि०) १ तेज स्वभाव का। उग्र। कठोर। २ सख्त। कड़ा। कठोर।
कडकड-(ना०) प्रहार की ध्वनि।
कडकड खाड-(ना०) ढेलों वाली एक प्रकार की कच्ची खांड। शक्कर। गड़गड़खांड। मुरलीखांड।
कडकडी-(न०) जोश या क्रोध में दाँतों के किटकिटाने की क्रिया।
कडकणो-(क्रि०) १ टूट पड़ना। आक्रमण करना। २ टूटना। ३ बिजली का बहुत जोर का शब्द होना। बहुत तेज आवाज का गर्जन होना।

कडकनाळ-(ना०) तोप विशेष।
कडको-(न०) १ अंगुलियों को चटखाने से होने वाला शब्द। २ शक्ति। ताकत। ३ कडाके की आवाज।
कडख-(ना०) नदी का ऊँचा किनारा।
कडखणो-(क्रि०) आक्रमण करना। टूट पडना। २ नोच करना। ३ इकट्ठा होना।
कडखेत-(वि०) १ कडखो गाने वाला चारण भाट ढाढी आदि। २ योद्धा।
कडखै-(क्रि०वि०) १ दूर। २ अलग।
कडखो-(न०) १ कगार। किनारा। २ छंद विशेष। ३ ढाढी भाट या चारणों द्वारा ऊंचे स्वरों में अलापा जाने वाला विजय गीत। ४ विजय गीत। ५ राग विशेष जो युद्ध के समय प्रोत्साहन देने के लिये गाई जाती है। सिंधु राग।
कडछणो-(क्रि०) १ उमगना। बढना। २ ललकना। उछलना। ३ तैयार होना। कमर कस कर तयार होना।
कडछी-(ना०) लंबी डंडी का बडा चम्मच। कलछी।
कडछो-(न०) बडी कलछी।
कडड-(ना०) १ बिजली की आवाज। २ लकडी के टूटने की आवाज।
कडतळ-(न०) १ तलवार। २ भाला राजपूत। ३ सौराष्ट्र के भाला राजपूतों का एक विरुद। (वि०) वीर।
कडतू (ना०) कमर। कटि।
कडतोडो (न०) १ ऊंट। २ करधनी। कदोरो। (वि०) १ वह (वस्तु) जिसका बीच का भाग टूटा हुआ हो। २ वह जिसकी कमर टूटी हुई हो। कटि से टूटा हुआ। ३ कमर तोडने वाला। ४ जो सुरक्षित नहीं। असुरक्षित। ५ वीर।
कडदो-(न०) १ तेल घी आदि का कीट (मैल)। २ नाज घी तेल आदि को बेचने खरीदने के समय तोल में बोरी टीन आदि (जिसमें वे भरे हुये हों) की की जाने वाली कटौती। करदा। ३ सोने चांदी के आभूषणों में भरी हुई लाख तथा जडत का सुरमा नग आदि विजातीय वस्तुएँ। ४ कूडे करकट के कारण मूल्य में की जाने वाली कमी। कटौती। ५ माल के क्रय विक्रय में दी जाने वाली छूट। ६ कूडा करकट। करदा।
कडनाळो-(न०) किवाड को बंद करने की साकल। कुंडा। वाढा।
कडप-कपडों में लगाया जाने वाला कलफ। मांडी।
कडपाण-(न०) १ कडप लगा हुआ। २ मजबूत। ठोस। दृढ।
कडब-(ना०) ज्वार के सूखे डंठल। कडबी।
कडबंध-(न०) १ कंदोरा। करधनी। २ कमर बंध। ३ तलवार।
कडबंधी-(ना०) १ कटारी। २ तलवार।
कडबी-दे० कडब।
कडमूल-(ना०) १ सेना। फौज। २ कमर के नीचे का भाग। ३ चूतड। नितंब। ढूगो।
कडला-(न०ब०व०) स्त्री के पाँवों में पहनने के सोने चांदी के पोले कडे।
कडवाई-(ना०) १ कडुआपन। कडवास। २ कटुता। अप्रियता।
कडवा जीभो-दे० कडवाबोलो।
कडवाट-दे० कडवास।
कडवा बोलो-(वि०) कटु बोलने वाला। अप्रियभाषी।
कडवास-(ना०) १ कटुता। अप्रियता। नाराजी। २ कडुआपन। तीखापन। कडवाई।
कडवी-(वि०) १ कटु। कडुई। २ अप्रिय। कटु।

कडवी रोटी-(ना०) किसी के यहाँ मृत्यु होने के दिन (मृतक का अग्नि संस्कार होने के बाद उसके घर वालों के लिये) किसी संबंधी के यहाँ से पहुँचाया जाने वाला खाना।

कडवो-(वि०) १ कटु। कड़ुआ। कड़ुए स्वाद वाला। २ अप्रिय। कटु।

कडवो तेल-(न०) १ सरसों का तेल (खाने के प्रयोग में) सरसियो। २ तारामीरा का तेल। जाभो तेल। (मालिश के प्रयोग में।)

कडाई-(ना०) कडापन। कठोरता।

कडाकूट-(ना०) मगजपच्ची। मायाकूट।

कडाक-(अव्य०)किसी वस्तु के टूटने का शब्द।

कडाको-(न०) १ किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। २ लकड़ी से माथे में मारने का शब्द। ३ भूखों मरना। उपवास। अनशन।

कडाजूभ-(वि०) १ कटि में आयुधों को कस कर युद्ध के लिये तयार। अस्त्र शस्त्रों से सज्जित। २ कटिबद्ध। तैयार।

कडाजूट-दे० कडाजूभ।

कडाझूड-दे० कडाजूझ।

कडाबध-(वि०) १ अस्त्र शस्त्रों से सज्जित। २ कमर कसा हुआ। कटिबद्ध। तैयार।

कडाबीण-(न०) १ एक शस्त्र। २ एक प्रकार की बंदूक। दे० कडाभीड।

कडाभीड-(वि०) अस्त्र शस्त्र और कवच आदि से सज्जित।

कडायलो-(न०) छोटी कड़ाही।

कडायी-दे० कड़ाही।

कडायो-दे० कडायलो।

कडाळ-(न०) १ बड़ा कड़ाह। २ कवच।

कडाळो-(न०) बडा कड़ाह।

कडाव-(न०) कड़ाह। बड़ा कड़ाहा।

कडाही-(ना०) छोटा कड़ाह। कड़ाही।

कडि-(ना०) कटि। कमर।

कडियाँ-(ना०ब०व०) कमर।

कडियाल (न०) १ कवच। २ कवचधारी योद्धा।

कडियाळी-(ना०) १ घोड़े की लगाम। २ लोह की कड़ियाँ लगी हुई लाठी। (वि०) कड़ीवाली।

कडियो-(न०) राज। चेजारो।

कडी-(ना०) १ जंजीर का छल्ला। २ गीत या कविता का एक पद। ३ पाँव का एक गहना। (वि०) कठोर। सख्त।

कडूबो-(न०) १ कुटुंब। वंश। २ कुटुंबीजनों या सगोत्रियों को दिया जाने वाला भोज।

कडेचा-(न०) सीसोदिया राजपूतों की एक शाखा।

कडेली-(न०) मिट्टी का तवा।

कडै-(क्रि वि०) निकट। पास। नड़ो। कन।

कडो-(न०) १ हाथ पांव में पहिनने का एक गहना। कड़ा। कंकण। २ कड़ाह आदि बरतन को पकड़ने के लिये किनारे पर लगा हुआ कंकणाकार कड़ा। ३ द्वार के ऊपर की हुई अर्द्ध गोलाकार चुनाई। मेहराब। ४ समूह। झुंड।

कडोळ-दे० कुडोळ।

कढणो-(क्रि०) १ औटना। खौलना। २ निकलना।

कढाणो-दे० कढावणो।

कढावणो-(क्रि०) १ औटाना। २ निकलवाना।

कढी-(ना०) एक तीवन जो दही या छाछ में बेसन और मसाले मिलाकर और उफान कर बनाया जाता है। कढी।

कढीजणो-(क्रि०) १ दूध का औंटा जाना या औटाना। २ औटाना। औटा जाना। ३ निकलना। ४ निकल सकना। निकल आना।

कढीणो-(न०) १ देवता के निमित्त बनाया हुआ पकवान। २ खाने से पूर्व देवता के निमित्त परोसा हुआ पकवान। ३ तली हुई भोजन सामग्री।

कढी बिगाड-दे० मुडी बिगाड।

कण-(न०) १ दाना। नग। अनाज। ३ धूलिकण। रजकण। ४ चूर्ण। भूरा। ५ मोती हीरा आदि रत्नकण। ६ हिम्मत। साहस। ७ ओदन। सिक्थ।

कणक-(न०) १ सफेद गेहूं। २ सोना। कनक।

कण कण-(क्रि०वि०) १ अलग अलग। २ टुकड़े टुकड़े।

कणकती-(ना०) कंदोरा। करधना। कणदोरो। कदोरो।

कणकी-(ना०) चावलों के टुकड़े।

कणगती-दे० कणकती।

कण-गूगळ-(न०) दानेदार बढ़िया गूगल।

कणचाळ-(न०) युद्ध।

कणछणा-(क्रि०) १ मद्ध होकर आक्रमण करना। २ काटना। ३ खाना। ४ दुख पाना। ५ पीड़ा के कारण कराहना। ६ टट्टी फिरने के समय जोर करना।

कणजा-(न०) १ करकट। कूड़ा। २ लाक्षा। लाख।

कणणाट-(ना०) १ सिंह का क्रोधपूर्ण दहाड़ना। २ वीरों की हुंकार।

कणदोरो-(न०) करधनी। कदोरो।

कणपाण-(वि०) १ ठोस बुना हुआ (वस्त्र)। २ दृढ़। मजबूत। कडपाण।

कणबण-(ना०) कणबी की स्त्री।

कणबी-(न०) १ एक कृषक जाति। २ इस जाति का मनुष्य।

कणय-(न०) सोना। कनक।

कणयगढ-(न०) १ जालोर का किला। कनकगढ। २ लंका।

कणयगिर-(न०) १ जालोर का पर्वत। कनकगिरि। २ जालोर का दुर्ग। ३ सुमेरु पर्वत। कनकगिरि। ४ लंका का किला। लंकागढ।

कणवार-(न०) दाल्भि। प्रकार।

कणवार-(न०) कणवारिये का काम। २ कणवारिये का पारिश्रमिक। ३ एक कर। जागीरदार की एक लाग।

कणवारियो-(न०) जागीरदार या राज्य के राजस्व विभाग की ओर से खेती की पैदावार की निगरानी रखने और उसके अनुसार कृषकों से राजस्व रूप में अनाज लेने आदि का काम करने वाला एक निम्न कर्मचारी। राजस्व विभाग का एक चपरासी।

कणमारी-दे० कणसारी।

कणसारो-(न०) अनाज भरने के लिए मिट्टी का बना एक कोठा। कोठीलो।

कणाद ऋषि-(न०) वैशेषिक दर्शन के प्रणेता ऋषि।

कणारी-(ना०) भींगुर। कणसारी।

कणारो-दे० कणसारो।

कणारळ-(न०) १ नाज का ढेर। २ भिक्षा में प्राप्त विविध प्रकार के अन्नकण। अनाज की भिक्षा।

कणा-(क्रि०वि०) कब। कद। कद। करां।

कणाई-(क्रि०वि०) कभी। कराई।

कणाकलो-(क्रि०वि०) कभी का। करांकलो। कदहरो।

कणियर-(न०) कनेर का पौधा। कणेर।

कणियागिर-दे० कणयगिर।

कणियागरो-(न०) १ जालोर का किला। २ जालोर का अधिपति। ३ सोनगरा राजपूत। सोनगरा चौहान। (वि०) जालोर का निवासी। जालोर वाला।

कणियाचल-दे० कणयगिर।

कणी-(ना०) १ चावल के छोटे टुकड़े। २ हीरा माणिक आदि किसी रत्न का छोटा टुकड़ा। रत्नकण। ३ टुकड़ा।

खड। ४ बल्ली। शहतीर। ५ फुटभर स्टील की गावदुम पतली शलाका। *(सव०)* १ कौन। २ किस।

कणूको-*(न०)* दाना। कण। अन्नकण। *(क्रि०वि०)* कभी का।

कणेठ-*(न०)* छोटा भाई। अनुज। *(वि०)* कनिष्ठ। छोटा। कणेठो।

कणेठो-*(न०)* कनिष्ठ। छोटाभाई। *(वि०)* छोटा। कनिष्ठ।

कणेर-*(न०)* १ कनेर का वृक्ष। कनेर।

कणेरीपाव-*(न०)* १ नाथ संन्यासियों की एक सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध महात्मा कनीपाव। कृष्णपाद। कण्हपा। २ नाथ सम्प्रदाय की कालबेलिया जाति के गुरु कनीपाव।

कणैं-*(न०)* सोना। कनक। *(सव०)* १ किस। २ किसन। *(क्रि०वि०)* कब। किस समय।

कणैंगढ-*(न०)* दे० कणयगढ।

कणैंगिर-दे० कणयगिर।

कणैंही-*(क्रि०वि०)* १ कभी। २ कभी भी।

कणो-*(न०)* १ रीढ की हड्डी। २ रीढ। ३ कमर। ४ गरदन। ५ सीमा। ६ हल चलाते समय उसके साथ बँधा रहने वाला एक पत्थर जिसकी रेखा से खेत (जाव) में पानी की सिंचाई के लिये नाली बन जाती है।

कतई-*(क्रि० वि०)* सर्वथा। बिलकुल। सम्पूर्णो।

कतरण-*(ना०)* सिलाई करने के पहिले कपड़े की की जाने वाली काट-छाँट के अतिरिक्त टुकड़े। कपड़े के काट ब्योंत की अतिरिक्त लीरियाँ।

कतरणी-*(ना०)* कैंची।

कतरणो-*(क्रि०)* १ कपड़ा या कागज आदि को कैंची से काटना। २ नष्ट करना। मारना। *(न०)* बड़ी कैंची।

कतरी-*(वि०)* कितनी। कित्ती। कितरी।

कतरो-*(वि०)* कितना। कित्तो। कितरो।

कतल-*(ना०)* हत्या। कत्ल।

कतळी-*(ना०)* १ गन्ने आदि को छील कर काटी हुई फाँक। २ एक मिठाई। बर्फी।

कतयाणो-*(क्रि०)* कतवाना।

कतवारी-*(वि०)* कातने वाला।

कताई-*(ना०)* १ कातने का काम। २ कातने की मजदूरी। *(वि०)* कितने ही।

कताणो-दे० कतावणो।

कतार-*(ना०)* १ पंक्ति। २ श्रेणी। ३ झुंड।

कतारियो-*(न०)* ऊँट द्वारा एक गाँव से दूसरे गाँव को माल लाने लेजाने वाला व्यक्ति।

कतावणो-*(क्रि०)* कातने का काम किसी अन्य व्यक्ति से करवाना। कतवाना।

कतिपय-*(वि०)* १ कितने ही। २ थोड़े से। कुछ।

कतियाणी-*(ना०)* १ कात्यायनी देवी। दुर्गा। २ एक रणपिशाचिनी। योगिनी।

कतियो-*(न०)* तार चद्दर आदि धातु की वस्तुओं को काटने की एक कैंची। कत्ती।

कतीलो-*(न०)* १ एक वृक्ष का गोंद। २ एक प्रकार का गोंद। कतीरा।

कतेब-*(ना०)* १ किताब। पुस्तक। २ वेद। ३ कुरान।

कतूहळ-*(न०)* १ कौतुहल। कुतूहल। २ आश्चर्य।

कतेई-*(अव्य०)* बिलकुल। सर्वथा। सम्पूर्णो। साव।

कतो-दे० कत्तो।

कत्ती-*(ना०)*१ छोटी तलवार। २ कटारी।

कत्तो-*(न०)* कितना। कतरो।

कत्थाई-*(वि०)* १ कत्थे के रंग जैसा। २ कत्थे के रंग का।

कस्थूरी-*(ना०)* कस्तूरी।

कदीम-(न०) १ प्राचीनकाल। (क्रिवि०) परम्परा से। प्राचीनकाल से। (वि०) पुराना।
कदीय-(क्रिवि०) १ कभी भी। २ किसी भी दिन।
कदे-(क्रिवि०) कब।
कदेक-(क्रिवि०) कभी।
कदेरो-दे० कदाको।
कदेकरण-(क्रिवि०) कभी-कभी।
कदेसको-दे० कदाको।
कदोको-(क्रिवि०) कभी का। कब का।
कधी-(क्रिवि०) कभी। कदे।
कन-(क्रिवि०) पास। (अव्य०) १ नहीं तो। २ या तो। ३ अथवा। या।
कनक-(न०) १ सोना। २ धतूरा। ३ एक छंद। ४ एक घोडा।
कनक कूट-(न०) सुमेरु पर्वत।
कनखजूरो-दे० कनसळायो।
कनकगढ-(न०) १ जालोर का किला। २ लंकागढ।
कनकगिर-(न०) १ जालोर का पर्वत। २ कनकगिरि पर बना जालोर का किला। ३ सुमेरु पर्वत।
कनकाचल-(न०) १ सुमेरु पर्वत। २ जालोर का पर्वत।
कनखळ-(न०)१ टंटा फसाद। २ शैतानी। ३ लडाई झगडा। दे० कनखळजी।
कनखळजी-(न०) हरिद्वार के पास एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।
कनठ-(ना०) कौंच पक्षी।
कनटोपो-(न०) सिर को कानों तक ढक देने वाली टोपी।
कनपटी-(ना०) कान और आंख के बीच की जगह।
कनपडी-(ना०) १ कान और आंख के बीच की जगह। कनपटी। २ कनपटी में होने वाली सूजन।
कनफटो-(न०) वह संन्यासी जो कानों को फड़वा कर उनमें मुद्राएँ पहिनता है।
कनपडो-(न०) आंख और कान के बीच की जगह। कनपटी।
कनफूल-(न०) स्त्री के कान का एक आभूषण। करणफूल।
कनमूळ-(न०) १ कान के नीचे का भाग। २ कान के मूल में होने वाली गाँठ।
कनलो-(वि०) पास का। निकट का। कनरो। गोडलो।
कनवज-(न०) कन्नौज।
कनवजियो-(वि०) १ कन्नौज का रहने वाला। २ कन्नौज से संबंधित। (न०) कन्नौज से आकर मारवाड में बस जाने के कारण राठौड़ राजपूतों का एक विशेषण।
कनसळाई-(ना०) कनखजूरा। कसळाई।
कनसळायो-दे० कनसळाई।
कनग-(न०) कुंदन।
कना-दे० किना।
कनात-(ना०) मोटे कपड़े की दीवार जिससे किसी जगह को घेर कर आड़ कर दी जाती है। मोटे कपड़े का परदा।
कनार-दे० किनार।
कनारी-दे० किनारी।
कनारो-दे० किनारो।
कनियाणी-(ना०) करणी देवी।
कनीपाव-दे० कणेरीपाव।
कने-(क्रिवि०) पास। निकट। गोढ।
कनयो-दे० कन्हैयो।
कनोती-(ना०) घोडे के कान या उसके कान की नोक।
कन्न-दे० कन।
कन्या-(ना०) १ पुत्री। लडकी। बेटी। २ कंवारी लडकी। ३ बारह राशियों में से एक राशि (ज्यो०)। ४ पाँच की संख्या।
कन्याकाळ-(ना०)१ कन्यावस्था। २ लड़की

क विवाह के लिये कन्याओं की प्राप्ति का अभाव। कन्याओं की कमी।

कन्याकुमारी-(ना०)१ भारत के दक्षिण किनारे का भूशिर। २ दुर्गा।

कन्यादान-(ना०) विवाह में धर्मशास्त्रानुसार वर को कन्या समर्पण करने की रीति।

कन्यावळ-(न०) १ पाणिग्रहण के दिन कन्या के बडीलों की ओर से रखा जाने वाला उपवास। २ विवाह में वर को कन्या समर्पण करने के बाद कन्या का मुख देख कर (उपवासी जनों का) भोजन करने की रीति।

कन्याराशि-(न०)एक राशि।(ज्यो०)

कन्या विक्रय-(न०) कन्या देने के बदले में पैसे लेने की क्रिया या भाव।

कन्याशाळा-(ना०) कन्याओं के पढने की पाठशाला।

कन्ह-(न०) श्रीकृष्ण।

कन्हैयो-(न०) १ श्रीकृष्ण। २ एक पक्षी।

कप-(न०) १ प्याला। २ कपि। बन्दर।

कपट-(न०) १ छल। दुराव। २ धोखा। छळ।

कपटाई-दे० कपट।

कपटी-(वि०) छली। दगाखोर। छळिया।

कपडकोट-(न०) १ बडा तम्बू। खेमा। शामियाना। २ वस्त्रागार।

कपडछाण-(वि०) कपडे से छाना हुआ। कपडछान। चूर्ण का कपडे से छानने की क्रिया।

कपडणो-(क्रि०) पकडणो शब्द का विपर्यय रूप। दे० पकडणो।

कपडै आयोडी-(वि०) रजस्वला। ऋतुमति। आभडियोडी।

कपडो-(न०) वस्त्र। कपडा। गाभो।

कपडो लत्तो-(न०ब०व०) पहनने ओढने के कपडे।

कपर्दिका-(ना०) कौडी।

कपर्दी-(न०) महादेव।

कपर्दिनी-(ना०) पार्वती।

कपाट-(न०) दरवाजे के पल्ले। किंवाड। पट। द्वार।

कपातर-दे० कुपातर।

कपाळ-(न०) १ खोपडी। कपाल। २ सिर। माथा। ३ भाल। ललाट।

कपाळ क्रिया-(ना०) शव दाह के समय कपाल को तोडकर उसमें घृत आहुति देने की एक क्रिया। कपालक्रिया। कपाळकिरिया।

कपाळियो-(वि०) सिर खपा देने वाला। झौडी। भौरी। विवादी। (न०) १ कापालिक। २ राठौड क्षत्रियों की कपाळिया शाखा का व्यक्ति।

कपाळी-(न०) १ शिव। २ भैरव।

कपालेश्वर-(न०) १ शिव। २ महादेव। ३ मारवाड के मालाणी प्रान्त में चोहटण गांव का प्रसिद्ध शिव मंदिर और उसमें प्रतिष्ठित शिवलिंग।

कपावणो-(क्रि०) कटाना। कटवाना। कटाणो।

कपास-(न०)१ रूई का पौधा। २ बिनौलों सहित रुई। ३ बिनौला।

कपासियो-(न०) १ बिनौला। २ सिर या खोपडी के अंदर का गूदा। भेजा। ३ पगतल या हथेली में उठने वाली कपास के आकार की एक गांठ।

कपासी-(वि०) कपास के फूल जैसे पीले रंग वाला।

कपि-(न०) १ बंदर। २ हनुमान। ३ हाथी। ४ सूर्य।

कपिध्वज-१ अर्जुन। कपिध्वज।

कपिल-(न०) १ सांख्य दर्शन के प्रणेता ऋषि। २ शिव। ३ सूर्य। ४ अग्नि। (वि०) १ सफेद। २ भूरा।

कपीश्वर–*(न०)* हनुमान।
कपीसर–दे० कपीश्वर।
कपिंद–*(न०)*१ सिंह। २ हनुमान। ३ सुग्रीव।
कपूत–*(न०)* कुपुत्र। बुरा लडका। अऊत। कछोरू।
कपूतर–दे० कपूत।
कपूती–*(ना०)* कुपुत्री।
कपूर–*(न०)* एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य। कपूर।
कपूरवासियो–*(वि०)*कपूर को मिलाकर के सुगंधित बनाया हुआ। कपूर वासित।
कपूर वासियो-पाणी–*(न०)* कपूर मिला कर सुगंधित बनाया हुआ स्नान करने का पानी।
कपूरियो–*(न०)* भेड बकरे आदि के अंडकोश का मास। *(वि०)* १ कपूर के जैसे रंग वाला। २ हल्के पीले रंग का।
कपूरी–*(ना०)* नागर बेल के पान की एक जाति। दे० कपूरियो।
कपोल–*(न०)* कपाल। गाल।
कपोळ कथा–*(ना०)* १ झूठी व लम्बी बात। गप्प। कल्पित बात। कल्पित वर्णन।
कफ–*(न०)* १ ऊलगम। श्लेष्म। २ कमीज की आस्तीन का अगला भाग जिसमें बटन लगे होते हैं।
कफण–दे० कफन।
कफन–*(न०)* मुर्दे को ढकने का वस्त्र। कफण।
कफनी–*(ना०)* साधु के पहनने का लंबा चोला।
कफायदो–दे० कुफायदो।
कफार–दे० कुफार।
कबज–*(न०)* १ वश। अधिकार। २ कब्जे में लेने या पकड़ने की क्रिया। ३ मलावरोध। कब्ज।
कबजो–दे० कब्जो।
कबड्डी–*(ना०)*श्वास को रोककर साहस और सतर्कता से दो दलों में खेला जाने वाला एक प्रसिद्ध कसरती खेल।
कबर–*(ना०)* मुडदा गाडने का गड्ढा। कब्र। घोर।
कबरी–*(ना०)* वेणी। चोटी।
कबरी डंड–*(न०)* वेणी। दंड। गथी हुई लम्बी चोटी। दंडाकार लंबी वेणी।
कबंध–*(न०)* सिर कटा धड। बिना सिर का धड।
कबंधज–*(न०)* १ सिर कटे धड से लड़ने वाले का पुत्र। वीर पुत्र। २ लड़ाई करता हुआ धड। शस्त्र चलाता हुआ धड।
कबाडखानो–*(०)* १ कबाड़े का ढेर। २ वह स्थान जहाँ कबाड़े की वस्तुएँ रखी रहती हैं। कबाड़े की दुकान।
कबाडणो–*(क्रि०)* १ प्राप्त करना। २ इधर उधर खोज करके किसी वस्तु को प्राप्त करना। ३ छल से किसी वस्तु का प्राप्त करना।
कबाडी–*(न०)* पुरानी वस्तुओं को खरीदने बेचने वाला व्यापारी। *(वि०)* १ चालाक। होशियार। कुशल। २ प्रपंची। ३ छली। कपटी।
कबाडो–*(न०)* १ लकड़ी का सामान। २ बेकार सामान। ३ पुराना सामान। ४ अनुचित काम। ५ प्रपंच। ६ बईमानी का काम।
कबाण–*(न०)* १ कमान। धनुष। २ मेहराब।
कबाणदार–दे० कमाणदार।
कबाणी–*(ना०)* १ लोह आदि किसी धातु की लचीली पतली सींक व लचीली पत्ती। २ घडी आदि के तारों के गोल चक्करों के आकार का पुर्जा। कमानी। ३ सारंगी, चकारो रावणहत्था आदि तार वाद्यों को बजाने का गज। ४ पतली

बेंत आदि लचीली लकड़ी के दानों किनारों में डोरी बँधा हुआ बरमा फिराने का एक साधन। कमानी। छेद करने के लिये बरमे को घुमाने की कमानी। ५ मेहराब।

कबीर-(न०) एक प्रसिद्ध निर्गुणपंथी संत जो जाति से मुसलमान जुलाहे थे। (इन्हीं के नाम से कबीरपंथ चल रहा है)।

कबीरपंथी-(न०) १ कबीर पंथ का अनुयायी। २ कबीर पंथी साधु।

कबीरी-(ना०) १ गुजरान। गुजारा। निर्वाह। २ उदरपूर्ति का काम। ३ पेट भराई। ४ धंधा। छोटा मोटा रोजगार। ५ गरीबी। ६ फक्कड़ जीवन।

कबीलेदार-(वि०) परिवार वाला।

कबीला-(न०) १ जनाना। रनिवास। २ परिवार। कुटुंब।

कबू-(न०) १ कबूतर। कपोत।

कबूतर-(न०) पारेवा। कपोत। (वि०) गरीब।

कबूतर खानो-(न०) १ कबूतरों को रखने का पिंजरा। २ गरीबखाना। अनाथाश्रम। (वि०) गरीब। दीन।

कबूतरी-(ना०) १ नट की स्त्री। २ अद्भुत नट कला के करतब दिखाने वाली नटनी। ३ कपोती। पारेवी।

कबूल-(न०) स्वीकार। अंगीकार।

कबूलणो-(क्रि०) स्वीकार करना। मंजूर करना।

कबूलात-(ना०) १ स्वीकृति। मंजूर। २ एक बिना अपराध की प्राचीन दंड प्रथा जिसके अंतर्गत राजा किसी भी जागीरदार धनाढ्य या प्रतिष्ठित व्यक्ति से अपनी जरूरत की बड़ी से बड़ी रकम वसूल कर सकता था। ३ किसी धनाढ्य व्यक्ति दीवान आदि बड़े पदाधिकारी या जागीरदार आदि से राजा के द्वारा अपनी आवश्यकता पर बलात् वसूल की जाने वाली रकम। ४ किसी अपराध पर रईसों से वसूल किया जाने वाला दंड।

कबूली-(ना०) १ नमक मसाले और आ... आदि डालकर बनाया जाने वाला चावलों का एक खाद्य पदार्थ। २ स्वीकृति। ३ विजय के रूप में लिया जाने वाला खर्चा या दंड दे० कबूलात।

कबोल-(न०) कुवचन।

कबोलो-(वि०) कुवचन बोलने वाला।

कब्जी-(ना०) कब्जा। मलावरोध। कोष्ठबद्धता।

कब्जो-(न०) १ अधिकार। कब्जा। स्वत्व। २ किवाड़ आदि में पेंच से जड़ा जाने वाला एक उपकरण। ३ स्त्रियों के पहिनने का एक वस्त्र।

कभागण-(वि०) अभागिनी। अभागण।

कभागियो-(वि०) अभागा। अभागो।

कभागी-(वि०) १ अभागा। अभागियो। २ अभागण।

कभारजा-दे० कुभारजा।

कभाव-दे० कुभाव।

कम-(वि०) थोड़ा। अल्प। थोड़ो।

कम अकल-(ना०) कम बुद्धि का। मूर्ख।

कम असल-दे० कमसल।

कमख-(न०) १ पाप। कल्मष। २ क्रोध। ३ हमला। ४ उत्कंठा।

कमची-(ना०) बेंत। छड़ी।

कमजात-(वि०) कम असल।

कमजादा-(वि०) न्यूनाधिक।

कमजोर-(वि०) अशक्त। दुर्बल।

कमजोरी-(ना०) अशक्ति। दुर्बलता।

कमज्या-(ना०)१ कमाई। २ कर्म। ३ जीवन के अच्छे बुरे कर्म। ४ परिश्रम। मजदूरी।

कम ज्यादा-(वि०) न्यूनाधिक। ओछो व...

कमठ-(न०) १ कच्छप। २ धनुष।

कमठाण-(न०) १ मकान। महल...

कपीश्वर–(न०) हनुमान ।
कपीसर–दे० कपीश्वर ।
कपिंद–(न०)१ सिंह । २ हनुमान । ३ सुग्रीव ।
कपूत–(न०) कुपुत्र । बुरा लडका । अऊत । कछोरू ।
कपूतर–दे० कपूत ।
कपूती–(ना०) कुपुत्री ।
कपूर–(न०) एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य । कपूर ।
कपूरवासियो–(वि०)कपूर को मिलाकर के सुगंधित बनाया हुआ । कपूर वासित ।
कपूर वासियो-पाणी–(न०) कपूर मिला कर सुगंधित बनाया हुआ स्नान करने का पानी ।
कपूरियो–(न०) भेड बकरे आदि के अंडकोश का मांस । (वि०) १ कपूर के जैसे रंग वाला । २ हल्के पीले रंग का ।
कपूरी–(ना०) नागर बेल के पान की एक जाति । दे० कपूरियो ।
कपोळ–(न०) कपाल । गाल ।
कपोळ कथा–(ना०) १ झूठी व लम्बी बात । गप्प । कल्पित बात । कल्पित वर्णन ।
कफ–(न०) १ बलगम । श्लेष्म । २ कमीज की आस्तीन का अगला भाग जिसमें बटन लगे होते हैं ।
कफण–दे० कफन ।
कफन–(न०) मुर्दे को ढकने का वस्त्र । कफण ।
कफनी–(ना०) साधु के पहनने का लंबा चोला ।
कफायदो–दे० कुफायदो ।
कफार–दे० कुफार ।
कबज–(न०) १ वश । अधिकार । २ कब्जे में लेने या पकड़ने की क्रिया । ३ मलावरोध । कब्ज ।
कबजो–दे० कब्जो ।
कबड्डी–(ना०)श्वास ... गतकता से दो दल ... एक प्रसिद्ध कसरती ...
कबर–(ना०) मुड़दा ... कब्र । घोर ।
कबरी–(ना०) वेणी ।
कबरी डड–(न०) बड़ ... लम्बी चोटी । दडाक ...
कबध–(न०) सिर कटा ... का धड़ ।
कबधज–(न०) १ सिर ... वाले का पुत्र । वीर ... करता हुआ धड़ । श ... धड़ ।
कबाडखानो–(०) १ ... २ वह स्थान जहाँ ... रखी रहती हैं । कबाडे ...
कबाडणो–(क्रि०) १ प्र... इधर उधर खोज करके ... प्राप्त करना । ३, छल ... को प्राप्त करना ।
कबाडी–(न०) पुरानी वस्तुएँ बेचने वाला व्यापारी । चालाक । होशियार । कुशल ३ छली । कपटी ।
कबाडो–(न०) १ लकड़ी ... २ बेकार सामान । ३ पुरा... ४ अनुचित काम । ५ प्रपंच ... मानी का काम ।
कबाण–(न०) १ कमान । ... मेहराव ।
कबाणदार–दे० कमाणदार ।
कबाणी–(ना०) १ लोह आदि ... की लचीली पतली सीक व लचीली ... २ घड़ी आदि के तारों के गोल ... के आकार का पुर्जा । कमानी ... सारंगी चकारो रावणहत्था ... वाद्यों को बजाने का गज । ४

२ घर। ३ भवन निर्माण। मकान बनाने का काम। ४ सृष्टि। ५ शरीर रचना।

कमठाणो–(न०) १ भवन निर्माण की कला। २ भवन निर्माण काम। वास्तु कला। ३ सृष्टि। ४ शरीर।

कमठावतार–(न०) कच्छपावतार। कमठ के रूप में भगवान विष्णु का एक अवतार।

कमठाळ–(न०) १ हाथी। २ तामीर। ३ धनुषधारी योद्धा।

कमठो–(न०) १ मकान बनाने का काम। कमठा। तामीर। २ कारोबार। ३ सृष्टि का निर्माण। ४ धनुष। कमठ।

कमण–(सर्व०) १ कौन। २ किस। ३ किसको। ४ किसक। ५ किसन।

कमणगर–(न०) १ धनुष बनाने वाला कमगर। २ चित्रकार। ३ टूटी हुई हड्डी को बिठाने वाला। हाडवैद्य। हाडवद।

कमणैत–(वि०) १ धनुषधारी। २ बाण चलाने में प्रवीण। तीरदाज। कमनैत।

कमत–दे० कुमत।

कमतर–(न०) १ कृषि काय। २ खेत मे किया जाने वाला काम या मजदूरी। ३ काम। ४ श्रेष्ठ काम। ५ धधा। व्यवसाय। ६ कुकम। ७ छिपा काम। ८ मजदूरी। ९ दशा। स्थिति।

कमतरी–(वि०) १ मजदूरी करने वाला। २ खेती करने वाला।

कम ताकत–(वि०) अशक्त। कमजोर।

कम ताक्ती–(ना०) कमजोरी। अशक्ति।

कमती–(वि०) थोडा। कम। ओछो।

कमध–(न०) राठौड क्षत्री। कमधज।

कमधज–(न०) १ राठौड क्षत्रिय। २ कमध्वज।

कम धजियो–(न०) राठौड क्षत्री। कमधज।

कम नजर–(ना०) १ अवकृपा। २ दृष्टि माद्य।

कम नसीब–(न०) दुर्भाग्य। (वि०) दुभागी।

कम नसीबी–(ना०) दुर्भाग्य।

कमनीय–(वि०) सुदर। फूटरो।

कमबख्त–(वि०) १ दुभागी। २ बदमाश। धूर्त।

कमबख्ती–(ना०) १ कमनसीबी। दुर्भाग्य।

कमर–(ना०) शरीर का मध्य भाग। कटि। कमर।

कमर कसणो–(मुहा०) १ तयार होना। २ हिम्मत करना। ३ लडने को तयार होना। ४ लडना।

कमर खोलाई–(ना०) एक प्राचीन कर जो हाकिम अपने दौडे के समय पडाव वाले गाँव से भोजन प्राप्ति खर्च के लिये कमर खोलन के नाम से वसूल करता था।

कमरतोड–(वि०) कमर तोड डालने जैसा कठिन (काम)।

कमरपट्टो–(न०) कमर में बाँधने का पट्टा।

कमर बद–(न०) कमर में लपेट कर बाधने का कपडा। पेटी।

कमर बदो–(न०) १ साफा। फेंटो। २ कमरबद। कमरबदो।

कमरबध–दे० कमरबद।

कमरबधो–दे० कमरबदो।

कमरी–(ना०) ऊट के पिछले पाँव में होने वाला एक वात रोग।

कमरो–(न०) कमरा। बठक। कोठरी। ओरडो।

कमळ–(न०) १ मस्तिष्क। कमल। मस्तक। २ कमल पुष्प। पद्म। ३ गभमुख। गभाशय का अग्रभाग। ४ हठयोग के अनुसार मस्तिष्क आदि शरीर के भीतरी भागों की कल्पित ग्रथियाँ। ५ जल। ६ मृग। ६ ताबा।

कमळ चख–दे० कमल नण।

कमळजा–(ना०) लक्ष्मी।

कमळ जूण–दे० कमलयोनि।

कमळ जोणी–दे० कमलयोनि ।
कमळ नयण–दे० कमळ नण ।
कमळ नयणी–(वि०) कमल पुष्प के समान सुंदर नेत्रों वाली ।
कमळ नण–(न०) विष्णु । (वि०) कमल पुष्प के समान सुंदर नेत्रों वाला ।
कमळ पूजा–(ना०) १ मस्तिष्क पूजा । २ अपने हाथ से मस्तिष्क काट कर देवी देवता के अर्पण करने की क्रिया । मस्तक काट कर भेंट करने की पूजा । ३ कमल पुष्प से की जाने वाली पूजा ।
कमल योनि–(न०) ब्रह्मा ।
कमळा–(ना०) १ पृथ्वी । २ लक्ष्मी । ३ देवी । ४ धनसम्पत्ति ।
कमळाक्षी–(ना०) कमल के समान सुंदर नेत्रों वाली । कमलाक्षी ।
कमळापति–(न०) विष्णु ।
कमळियो–(न०) कामला रोग । पीलिया ।
कमळो–(न०) १ ऊंट । २ एक रोग । कामला ।
कमवखत–(वि०) अभागा । बदकिस्मत । कमबख्त ।
कम समझ–(वि०) कमबुद्धि वाला । मूर्ख ।
कमसल–(वि०) १ कम असल । दोगला । वर्णसंकर । २ दगाबाज । ३ नालायक । ४ नीच । ५ कमजात ।
कमसीस–(न०) शिरस्त्राण । सिर का कवच ।
कमंडळ–(न०) १ साधु संन्यासियों का जलपात्र । कमंडल । २ शराब आदि परोसने का एक पात्र ।
कमध–(न०) १ राठौड़ क्षत्री । २ कबंध ।
कमधज–दे० कमधज ।
कमाई–(ना०) १ उपार्जित धन । २ आमदनी । ३ नफा । ४ कमाने का धंधा । उद्यम व्यवसाय । ५ पूर्व कर्म । ६ संचित कर्म । ७ मनुष्य जीवन के भले बुरे कर्म ।
कमाऊ–(वि०) कमाने वाला । कमाई करने वाला ।
कमागर–(वि०) १ कमठ बनाने का काम करने वाला । कमकार । लुहार । २ मजदूर । ३ सेवक । दास ।
कमाड–(न०) १ कपाट । किवाड । २ छाती की हड्डियाँ ।
कमाडियो–दे० किवाडियो ।
कमाडी–दे० किवाडी ।
कमाण–(ना०) १ कमाई । २ कमान । धनुष । ३ महराब ।
कमाणदार–(वि०) १ कमान वाला । २ अर्ध गोलाकार ।
कमाणस–दे० कुमाणस ।
कमाणी–(ना०) १ कमाई । प्राप्ति । २ नफा । ३ कमानी । ४ तीर कमान बनाने वाला व्यक्ति ।
कमाणो–(क्रि०) १ उपार्जन करना । कमाना । २ नफा होना । ३ साफ करना (चमडा) (न०) १ प्रिय पुत्र । २ कमाने वाला बेटा । (वि०) कमाऊ ।
कमान–(न०) १ धनुष । २ महराब । ३ स्प्रिंग ।
कमारग–दे० कुमारग ।
कमाल–(वि०) १ बहुत अच्छा । उत्कृष्ट । २ सर्वोच्च । सर्वोपरि । ३ सुंदर । (न०) १ कौशल से भरा अद्भुत अनोखा साहसपूर्ण काम । २ खूबी । ३ गुण ।
कमाळी–(ना०) ऊंटनी । (न०) १ शिव । २ भैरव । ३ मुसलमान ।
कमावणो–(क्रि०) १ उद्यम से पैसा प्राप्त करना । २ चमडे को सुधारना । (वि०) कमाने वाला ।
कमिटी–दे० कमेटी ।
कमी–(ना०) १ न्यूनता । हीनता । २ हानि । नुकसान ।
कमीज–(न०) एक प्रकार का कुरता ।
कमीण–(वि०) १ नीच । हलका । क्षुद्र । कमीना । कमीणो । (न०) १ कुछ ऐसी

हलकी जातियाँ जो जन्म, मरण विवाह औसर मौसर इत्यादि पर जीमन और नेग लेती है और बदले म वेठ निकालती हैं।

कमीणपणो-*(न०)* क्षुद्रता। कमीनापन। नीचता।

कमीणो-*(वि०)* कमीना। नीच।

कमीशन-*(न०)* १ दलाली। २ पच।

कमेटी-*(ना०)* कुछ मनुष्यों की बनी समिति। समिति।

कमेडी-*(ना०)* फाखता। पडुक। हुडकली।

कमेस-*(वि०)* १ कम। थोडा। २ कम बेसी।

कमोद-*(न०)* १ कमल। २ कुमुदिनी। ३ चावल की एक ऊची जाति। ४ ऊची जाति का चावल। ५ जल की स्वच्छता का एक विशेषण।

कमोदणी-*(ना०)* कुमुदिनी। कुंई।

कमौत-दे० कुमौत।

कम्माल-*(ना०)* मुण्डमाला।

कयत्यद्र-*(वि०)* कृतार्थ।

कयतु-*(न०)* कृतान्त। काल।

कयामत-*(ना०)* १ वहुत बडी विपत्ति। २ प्रलय। ३ मरने बाद खुदा के आगे जबाब देने का दिन।

कया-*(क्रि०वि०)* १ क्यों। २ कैसे। कीकर।

कयो-*(सव०)* कौनसा। कुणसो।

कर-*(न०)* १ हाथ। २ हाथी की सूड। ३ महसूल। कर। ३ किरण। *(वि०)* करने देने अथवा प्राप्त करने वाला, इन अर्थों को सूचित करने वाला पदान्त जैसे-सुखकर, दिनकर आदि।

करक-*(न०)* १ अस्थि। हड्डी। २ अस्थि पजर। ३ बल। शक्ति। ४ दर्द। पीडा। ५ खटक। ६ बारह राशियों म से एक राशि। कर्क राशि। (ज्यो०)

करकणो-*(क्रि०)* दर्द के कारण चिल्लाना। कराहना।

करकर-*(ना०)* १ मिली हुई वस्तु मिश्रित रेती-ककर। महीन ककर। २ धूल। रेती। किरकिर।

करकरी-*(ना०)* कगूरे वाली अगूठी। *(वि०)* गूज सिकी हुई (रोटी)। करारी। खारी।

करकरा-*(वि०)* १ अच्छा सिका हुआ। खूब सेका हुआ (रोटी, सागरा)। २ करारा। कडा। खुरखरा।

करकली-*(ना०)* १ कान की बाली। २ छोटी बाली। ३ कगूरों वाल तार की पतली अगूठी।

करकाटो-*(न०)* नाखून।

करख-*(न०)* १ विरोध। २ शत्रुता। ३ क्रोध। ४ मन मुटाव। कप। ५ पीन। दुख।

करग-*(न०)* १ हाथ। २ अगुली। ३ पजा। ४ कटारी।

करगसा-*(वि०)* झगडालू। कलह प्रिय (स्त्री)। कर्कशा।

करज-*(न०)* १ नख। २ अगुली। ३ कर्ज। ऋण।

करजदार-*(न०)* ऋणी। देनदार। कर्जदार। करजायत।

करजदारी-*(ना०)* कर्जदारी। देनदारी। देना। ऋण।

करजायत-दे० करजदार।

करजो-*(न०)* कर्ज। ऋण।

करट-*(वि०)* १ काला। २ दुष्ट। ३ कुकर्मी। *(न०)* १ कौआ। २ कुकम। ३ कानों के कुडल।

करठ-दे० करट।

करठाळ-*(ना०)* १ भाला। २ तलवार।

करठाळग-दे० करठाळ।

करड-*(वि०)* दृढ। मजबूत। *(ना०)* १ एक घास। २ कमर। ३ एक प्रकार का सर्प।

करड-कावरो–*(वि०)* चितकबरा। दो या दो से अधिक रंग के धब्बों वाला।

करडाटो–*(न०)* १ कठोर वस्तु को दांतों से चबाने पर होने वाला शब्द। २ लकड़ी आदि किसी वस्तु के टूटने से होने वाला शब्द।

करडणो–*(क्रि०)* १ काटना (दांतों से)। २ चबाना। चावणो।

करडाई–*(ना०)* १ कड़ापन। २ गर्व। अभिमान। ३ नियम पालन में सख्ती। सख्ती।

करडाण–दे० करडावण।

करडापणो–*(न०)* कड़ापन। कठोरता। २ अभिमान। गर्व।

करडावण–*(न०)*१ बहादुरी का झूठा अभिमान। २ युवावस्था का गर्व। ३ गर्व। ४ कड़ापन। कठोरता। ५ ऐंठ। ऐंठन। मरोड़।

करडी–*(वि०)* १ कठोर। कड़ी। सख्त। २ कठिन। मुश्किल। ३ दृढ़। मजबूत।

करडी कन्या–*(ना०)* मूल नक्षत्र में उत्पन्न कन्या।

करडी रत–*(ना०)* ग्रीष्म ऋतु। ऊनाला। ऊनाळो।

करड–*(न०)* पकाये हुये या भिजाये हुए नाज में रह जाने वाला अपक्व या अभिद्य दाना।

करडो–*(वि०)* १ कठोर। सख्त। कड़ा। २ कठिन। मुश्किल। ३ मजबूत। दृढ़। काठो।

करडोधज–*(वि०)* १ अभिमानी। गर्विष्ठ। २ रुष्ट। अप्रसन्न। नाराज। ३ अकड़। ऐंठा हुआ। अकड़ा हुआ।

करडोनक्कड–*(वि०)* १ अकड़ा हुआ। ऐंठा हुआ। २ अभिमानी। करडोधज।

करण–*(न०)* १ व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करता है करण कारक। २ कुंती के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के पुत्र वसुषेण जो बाद में करण नाम से प्रसिद्ध हुए। यह प्रभावान नाम और महादानी थे। ३ अमरेली (सौराष्ट्र) के ठाकुर वजाजी का पुत्र करण सरवया, जिसको भक्त ईसरदासजी बारहठ ने सर्प दंश से हुई मृत्यु से जीवित किया था। ४ श्रवणेंद्रिय। कान। कर्ण। ५ करने योग्य काम। ६ करने की क्रिया या भाव। ७ साधन। *(वि०)* करने वाला।

करण कारण–*(न०)*१ करने कराने वाला। २ ईश्वर।

करण कमाव–*(न०)* १ आशीर्वाद। २ कृपा। प्रसाद। ३ कृपाभाव।

करण फूल–*(न०)* कान में पहिनने का स्त्रियों का एक गहना।

करण लंब–*(न०)* गदहा। लबकरण।

करण-सधार–*(वि०)* सहार करने वाला। *(न०)* प्रलयकारी रुद्र। शिव।

करणहार–*(वि०)* करने वाला। करणार। *(न०)* ईश्वर।

करणहारो–दे० करणहार।

करणाट–भारत में दक्षिण का एक प्रदेश। कर्णाट। करणाटक।

करणाटक–भारत में दक्षिण का एक प्रदेश। कर्नाटक।

करणाटी–*(वि०)* १ कर्णाट देश का। २ कर्णाट देश संबंधी। *(ना०)* १ कर्णाट देश की भाषा। २ कर्णाट देश की स्त्री। दे० करणावटी।

करणार–*(वि०)* करने वाला। करणहार। करणवाळो। करणारो।

करणारी–*(वि०)* करने वाली। करणहार। करणवाळी।

करणारो–*(वि०)* करने वाला। करणवाळो

करणाळी–दे० करणारी।

करणाळो–दे० करणारो ।

करणावटी–(ना०) बीकानेर जिले का एक प्रदेश ।

करणियो–(वि०) करने वाला । करणार ।

करणी–(ना०) १ राजगीर का एक औजार । थापी । करनी । २ आचरण । व्यवहार । ३ चारण जाति की एक देवी । करणी । आई ।

करणीगर–(न०) करने वाला । कर्त्ता । ईश्वर ।

करणेज–(न०) मृतक का श्राद्ध आदि क्रिया श्रम । २ मृतक भोज । औसर ।

करणेजप–(वि०) चुगलखोर ।

करणेल–(न०) १ कर्णिकार । कनक चपा । २ कनकचपे का तेल । ३ करन का तेल ।

करणो–(क्रि०) १ करना । बनाना । रचना । २ निबटाना । (न०) १ एक जाति का बडा नीबू । करना । २ करने वाला ।

करतब–(न०) १ हाथ की सफाई । जादू । करामात । २ हुनर । ३ छल । कपट । ४ कत्तव्य । ५ खोटा काम । अयुक्त काम ।

करतबी–(वि०) १ करामाती । २ हुनर वाला । ३ अयुक्त काम करन वाला । ४ कपटी ।

करतमकरता–(न०) १ नही किया जा सके उसको भी कर सकने म समथ । २ सर्वोपरि । सर्वाधिकारी । ३ विशेष क्षमता या योग्यता रखने वाला व्यक्ति । ४ घर या समाज में व्यवस्था देने वाला सर्वेसर्वा व्यक्ति । ५ जिसे किसी काय करने के सब अधिकार प्राप्त हो । सर्वे सर्वा । ६ घर का मालिक या सर्वेसेर्वा जिसकी आज्ञा स घर मे सब काम होत हो ।

करतल–(न०) हथली । हथाळो ।

करतल ध्वनि–(ना०) तालियों की आवाज ।

करतल भिक्षा–(ना०) हथेली में समावे उतनी भिक्षा लेने का व्रत ।

करतली–(ना०) हथेली ।

करता–(वि०) १ करने वाला । कर्ता । २ निर्माता । बनाने वाला । (न०) ईश्वर । कर्त्ता । सृष्टि कर्ता दे० कर्त्ता ।

करतार–(न०) ईश्वर । सिरजनहार । सृष्टि रचने वाला । कर्त्तार ।

करताळ–(न०)१ एक कांस्य वाद्य । झांझ । ताल । २ मजीरा । ३ तलवार ।

करताळी–(ना०) १ हाथ से बजाई जाने वाली ताली । २ हथेली ।

करता–(अव्य०) १ करते हुये । होते हुये । २ तुलना मे (वि०) काम करते हुये ।

करतूत–(ना०) १ काम । २ कला । ३ कौशल । ४ चरित्र । ५ समझ । ६ गुण । ७ निंद्य कम ।

करतूतियो–(वि०) १ निंद्य काम करने वाला । २ छली । कपटी ।

करद–(ना०) १ तलवार । २ कटारी । ३ कीचड । (वि०) १ कर देने वाला । २ हाथ का उत्तर देने वाला । दानी ।

करद वानी–(वि०) १ तलवार धारी । २ शस्त्रधारी । ३ सहायता करन वाला । ४ उपकारी ।

करधार–(ना०) १ तलवार । २ शस्त्र ।

करनळ–(न०) करणीदेवी का आत्मीय व स्नेह भावना का ऊनता सूचक नाम ।

करनाळ–(न०) १ एक प्रकार का बडा युद्ध ढोल जिसे चलती गाडी पर बजाया जाता था । २ एक प्रकार का फूंक वाद्य । भोंपू । ३ बदूक । ४ तोप ।

करनाळो–दे० कडनाळो ।

करपण–दे० कुरपण । दे० किरपण या कृपण ।

करपाण–(ना०) तलवार ।

करपाल–(ना०) १ तलवार । २ लाठी । डांग ।

करबो-(न०) एक पेय भोज्य पदार्थ। छाछ या दही मिश्रित पीने योग्य एक भोजन। करभ। (क्रि०) करना। कराना।

करभ-(न०)१ हाथी का बच्चा। २ हाथी। ३ हथेली। ४ ऊंट का बच्चा। ५ ऊंट।

करभक-(न०) ऊँट।

करम-(न०) १ कर्म। काम। २ धार्मिक कृत्य। ३ भाग्य। संचित कर्म। ४ मस्तिष्क। माथा। ५ कर्तव्य। ६ नित्य कर्म। दे० कर्म।

करमगत-(ना०) कर्मगति। भाग्य।

करमचंदियो-(न०) ओढ़ावणे और साथ में प्रयुक्त की जाने वाली सिर' और भाग्य की रेखा। कर्म। भाग्य।

करमठोर-(वि०) अभागा। भाग्यहीन। हतभाग्य।

करमण-(वि०) उद्यमी। कर्मण्य।

करमणा-(अव्य०) १ कर्म के द्वारा। कर्म से। कर्मणा। २ काम करते हुए।

करमन-दे० करमण।

करमप्रसाद-(वि०) १ भाग्यशाली। कर्म प्रसाद। २ उपकारी।

करम-रेख-(ना०) १ भाग्य रेखा। २ भाग्य का लेख।

करमसी सांखलो-(न०)एक हरिभक्त कवि। (यह पृथ्वीराज राठौड़ से भी पहले का कविकार है।)

करम हीण-(वि०) भाग्यहीन। कर्महीन। अभागा। कमठाक।

कर-माठो-(वि०) कंजूस। कृपण।

करमा बाई-(ना०) एक प्रसिद्ध भक्त स्त्री।

कर-मूकावणी-(ना०) वर वधु के पाणि ग्रहण को छुड़ाते समय दिया जाने वाला दान नेग आदि। पाणिग्रहण छोड़ने के समय दिये जाने वाले नेग दक्षिणा इनाम आदि।

करमेतीबाई-(ना०) एक भक्त स्त्री।

करळ-(ना०) १ मुट्ठी। मुष्टिका। २ तर्जनी अंगुली और अंगूठा दोनों के सिरों को मिलाने से बनने वाली गोलाकार जगह। २ करल में समा सकने वाली वस्तु। (वि०) कराल। भयंकर।

करळी-(स्त्री०) मुट्ठी में पकड़ा जा सके उतना (पुराल)। (ना०) पुराल। पयार।

करळो-(न०) हाथ द्वारा कांख में दबा कर ले जाया जा सके उतना पुराल घास आदि का मुट्ठा। बड़ा पूला।

करलो-(न०) ऊंट।

करवट-(ना०) १ बाजू (पसवाड़े) से लेटने की क्रिया। २ पार्श्व।

करवत-(ना०) आरी। करौत।

कर-वरमणो-(स्त्री०) रानी।

करवरो-(वि०) १ अल्प दुष्काल वाला। थोड़ी वर्षा वाला। २ कठिन। मुश्किल। दुष्ट। (न०) वह वर्ष जिसमें वर्षा कम होने के कारण फसल पूरी न हुई हो। छोटा दुष्काल। २ सामान्य फसल का वर्ष। साधारण। वर्ष। ३ दुष्काल। अकाल। ४ आफत। बला।

करवाण-दे० करवाळ।

करवाळ-(ना०) तलवार।

करवो-(न०) सकोरा। कसोरा।

करसण-(ना०) १ खेती। कृषि। २ कृषिकर्म।

करसणी-(न०) कृषक। किसान।

करसणो-(क्रि०) खींचना। तानना।

करसल-(ना०) १ फर्श में लगी पत्थर की चौकियां। टाइल वाला फर्श।

करसाख-(ना०) अंगुली।

करसाण-(न०) किसान।

करसो-(न०) कृषक। किसान।

करहली-(ना०) ऊंटनी। सांयड।

करहलो-(न०) ऊंट।

करहीरो-(वि०) ऊंटसवार। करभारोही।

करहेलियो–दे० करहलो ।
करहो–(ना०) ऊँटनी । साँयड़ ।
करहो–(न०) ऊँट ।
करक–(न०) १ हड्डी । २ अस्थि । ३ अस्थिपंजर ।
करडियो–(न०) पिटारा
करतो–(वि०) १ करने वाला । कर्ता । २ करता हुआ ।
कराई–(ना०) १ संग्रह रखने के लिये व्यवस्थित रूप से लगाई गई घास की शिखरनुमा बड़ी ढेरी । कदूडो । चारवाडो । २ करवाने की मजूरी । करवाई । पारिश्रमिक ।
कराकरी–(ना०) प्रयत्न । कोशिश ।
कराख–(ना०) काँख । बगल ।
कराखी–(ना०) अंगरखी का बगल में रहने वाला वस्त्र भाग ।
कराड–(ना०) १ सीमा । हद । २ मर्यादा, मान तथा गौरव की हद । (न०) १ नदी का किनारा । २ बनिया के लिये ओछा शब्द । ३ बनिया । ४ कलार ।
कराडणो–(क्रि०) करवाना ।
कराडा बार–(क्रिवि०) १ सीमा बाहिर । २ मर्यादा बाहिर । मर्यादा या गौरव के उपरांत । ३ किनारों से बाहर ।
करावीण–(ना०) चौड़ी नाल की एक छोटी बंदूक ।
करामत–दे० करामात ।
करामात–(ना०) १ करिश्मा । चमत्कार । २ युक्ति ।
करामाती–(वि०) १ सिद्ध । २ करामात वाला । ३ चालाक । होशियार ।
करामातीक–दे० करामाती ।
करार–(ना०) १ प्रतिज्ञा । २ शक्ति । बल । ३ धीरज । ४ निर्भयता । ५ वादा । कौल । इकरार ।
करारो–(वि०) १ सख्त । कठिन । २ जोरावर । बलवान । ३ तेज । ४ अधिक । ५ भयानक ।
कराळ–(वि०) भयंकर । कराल ।
कराळी–(ना०) घूल कचरा हटाकर जमीन साफ करने का घूपवा का एक लम्बे डंडे का कस्सीनुमा उपकरण । (वि०) भयंकर । डरावनी ।
कराळो–(वि०) भयंकर । कराल ।
करावणो–(क्रि०) करवाना ।
करा–(क्रिवि०) कब । कद । कद ।
कराही–(क्रिवि०) कभी का । कदरोहा ।
करि–(अव्य०) करण तथा अपादान कारक की विभक्ति 'से' । (न०) हाथ ।
करियो–(न०) जवान ऊंट । (क्रि०भ०) किया ।
करी–(क्रि०भू०) किया । कर दी । (न०) १ हाथी । २ पथ्य । (अव्य०) करण तथा अपादान कारक की विभक्ति 'से' ।
करीवर–(न०) १ श्रेष्ठ हाथी । २ हाथी ।
करीमाग–(ना०) उराता को आग ।
करुण रस–(न०) साहित्य के नौ रसों में से एक ।
करुणा–(ना०) दया । अनुकंपा ।
करूप–(वि०) कुरूप । कदरूपा ।
करूर–(वि०)१ क्रूर । निर्दय । २ भयंकर । भयानक ।
करू करणो–(क्रि०) १ ऊंट का बलबलाना । २ कौए का बोलना । (क्रिवि०) कभी का । कदरो, करूको ।
करेण–(अव्य०) १ हाथ से । कर द्वारा । २ हाथों द्वारा । हाथों से । (न०) हस्ती समूह । गजयूथ ।
करै–(क्रि वि०) कब । कद । कदै ।
करैक–(क्रिवि०) १ कभी-कभी । कदसीक । २ कब तक ।
करैही–(क्रिवि०) कभी । कब ।
करोड–(वि०) सौ लाख ।

करोड़पति-*(न०)* जिसके पास करोड़ रुपये हो वह व्यक्ति। करोड़ या करोड़ों की सम्पत्ति का स्वामी।

करोड़पसाव-दे० करोड़पसाव।

करोड़ी-*(न०)* बादशाही जमाने में कर उगाहने वाला व्यक्ति।

कर्क-*(न०)* १ एक राशि। २ केकड़ा

कर्कशा-दे० करकसा।

कर्ज-*(न०)* ऋण।

कर्जदार-*(वि०)* ऋणी।

कर्ण-*(न०)*१ कुंती के पुत्र महादानी कर्ण। अंगराज। २ श्रवणेंद्रिय। कान।

कर्णाटक-*(न०)* दक्षिण भारत का एक प्रांत।

कर्णेंद्रिय-*(ना०)* कान।

कर्त्तव्य-*(न०)* १ करने योग्य काम। २ धर्म।

कर्त्ता-*(वि०)* १ करने वाला। २ बनाने वाला। रचना करने वाला। *(न०)* १ व्याकरण में क्रिया के करने वाला बोधक कारक। प्रथम कारक। २ ईश्वर। विधाता। प्रभु। ३ अधिकारी।

कर्दम-*(न०)* १ कीचड़। २ पाप। ३ मांस।

कर्नल-*(न०)* सेना का एक अधिकारी या पद।

कर्पूर-*(न०)* कपूर।

कर्म-*(न०)* १ काम। कार्य। २ कर्त्तव्य। ३ धार्मिक कर्तव्य। ४ प्रेतकर्म। मृतक कर्म। ५ व्याकरण में वह जिस पर क्रिया का फल पड़े। दूसरा कारक।

कर्मकांड-*(न०)* धर्म क्रियाओं से सम्बंधित वेद का भाग। २ निश्चित विधियों और क्रियाओं से युक्त धार्मिक शास्त्र या कृत्य।

कर्मकांडी-*(वि०)* कर्मकांड का अनुसरण करने वाला।

कर्मगति-*(ना०)* कर्म की गति। प्रारब्ध। नसीब।

कर्मचारी-*(ना०)* १ कार्यकर्ता। २ मजदूर।

कर्मठ-*(वि०)* सतत काम करने वाला। कर्मनिष्ठ।

कर्मण्य-*(वि०)* काम करने में दक्ष। कर्मठ।

कर्मफळ-*(न०)* पूर्वजन्म के कर्मों का फल।

कल-*(न०)* १ आने वाला दिन। २ बीता हुआ दिन। पिछला दिन। *(ना०)* १ चैन। आराम। *(वि०)* सुंदर। मनोहर।

कळ-*(ना०)* १ यंत्र। मशीन। २ युक्ति। ३ बुद्धि। ४ युद्ध। ५ असुर। ६ तरकस। ७ कलह। ८ कलियुग। ९ वस्तु। १० जगत। ११ चैन। १२ शत्रु। १३ कपट। १४ काव्य की कला। १५ कला। १६ शक्ति। १७ समय। १८ बन्दूक का घोड़ा। *(वि०)* सुंदर। मनोहर।

कळकळणो-*(क्रि०)*१ खौलना। उबलना। २ गरम होना। ३ दुखी होना। ४ तड़पाना। ५ हाथ में उठाये हुए शस्त्रों की चमक दिखाई देना। शस्त्रों का चमकना।

कळकळाट-*(न०)* १ गृह कलह। २ दुख। संताप। रोना धोना। ३ कलह। भगड़ा। ४ खौलना। उबाल।

कळकंठ-*(ना०)* कोयल। कलकंठ। *(वि०)* मधुर कंठवाला।

कळकी-*(न०)* १ पानी का उबाल। २ गरम करने से पानी में आये हुये उबाल अथवा खौलने का शब्द।

कलखण-दे० कुलखण।

कलखणो-दे० कुलखणो।

कळखारो-*(वि०)* कलहप्रिय। झगड़ालू। (स्त्री० कळखारी।)

कळचाल-*(वि०)* १ रणकुशल। २ रणप्रिय। *(ना०)* रणकुशलता। *(न०)* १ युद्ध। २ उपद्रव।

कळचाळो-*(न०)* १ युद्ध। २ उपद्रव।

कळजुग-*(न०)* कलियुग।

कळजुग पोहरो–दे० कळजुगवारो ।
कळजुग वारो–(न०)१ कलियुग का समय । २ अधम का समय ।
कळभळ–(ना०) कलह ।
कळण–(ना०) १ भिगोकर छिलके उतारने के बाद पिसी हुई दाल । २ दलदल । कीचड । ३ वह गीली जमीन जिस पर चलने से पैर अन्दर धँस जायँ । ४ नाश । ५ मवाद नहीं निकलने के पहले फोडे मे होने वाला दर्द । व्रण की पीडा । पीड ।
कळणो–(क्रि०) १ कीचड मे फँसना । २ हैरान होना । परेशान होना । ३ दुख देना । ४ नाश करना । ५ युद्ध करना । ६ अनुमान करना । ७ दाल को भिगा कर छिलके दूर करने के बाद चक्की मे पीसना ।
कळत–(ना०) १ कीचड । २ कमर । ३ स्त्री । कलत्र ।
कळत्त–दे० कलत्र ।
कळनर–(ना०) १ व्रण की वेदना । २ शरीर मे होने वाली वेदना । पीडा ।
कलत्र–(न०) १ पत्नी । स्त्री । लुगाई ।
कळदार–(न०) १ मशीन द्वारा निर्मित चांदी का रुपया । २ ताला । (वि०) कलवाला । यत्रवाला ।
कलप–(न०) १ ब्रह्मा का एक दिन । कल्प । २ वेद के छ अगो मे से एक । ३ शरीर को निरोग और पुन युवा बनाने की एक वैद्यक युक्ति । कल्प । ४ खिजाब । ५ समय । काल ।
कळप–(न०)१ दुख । सताप । २ बेचैनी । ३ उत्कट इच्छा । ४ लाग । लगन ।
कळपणो–(क्रि०) १ दुख भुगतना । २ बिलखना । विलाप करना । ३ कल्पना करना । ४ किसी वस्तु को किसी के निमित्त करना ।
कळपतर–दे० कल्पतर ।
कळपावणो–(क्रि०)१ दुख देना । सताना । २ रुलाना । ३ विलाप करना । ४ दुखी होना ।
कळपीजणो–(क्रि०) १ दुखी होना । २ विलाप करना ।
कळबी–(न०) एक कृषक जाति । कणबी । कुणबी ।
कलम–(ना०) १ बही मे लिखी जाने वाली रुपयो की सख्या और उसके विवरण सहित किसी व्यक्ति के नाम की लिखावट दाखिला । रकम । पट्टी । २ दफा । धारा । सेक्शन । ३ बही खाते मे लिखा जाने वाला विषय या व्यक्तिपरक एक बार का ब्यौरा । आइटम । ४ लेखनी । कलम । ६ चित्रशली । ७ पेड की वह टहनी जो दूसरी जगह लगाने के लिये रोपी जाती है । ८ सिर के बालो का वह पतला भाग जो कान के आगे दाढी की ओर रखा जाता है । हजामत मे कनपटियो के बालो की काट । ९ मुसलमान ।
कळमत–(न०) युद्ध ।
कळमस–(न०)१ पाप । कल्मष । २ मैल । (वि०) १ काला । श्याम । २ मैला ।
कलमदान–(न०) एक लबी छोटी सदूकची जिसमे दवात और कलम रखी रहती हैं ।
कलम-हथो–(वि०) १ लेखक । २ कवि ।
कलमाण–(न०) मुसलमान अर्थ सूचक 'कलमा' शब्द का बहुवचन रूप । मुसलमान वर्ग ।
कलमी–(वि०) कलम लगाने से उत्पन्न । जसे कलमी आम । २ रवे या सींक के जसा । जसे—कलमीशोरा ।
कलमीसोरो–(न०) शोरा । कलमीशोरा ।
कळमूळ–(न०) १ सेना । २ सेनापति । ३ युद्ध ।
कळळ–(न०) १ पाप । २ अपराध । ३ दोष । ३ गर्भ का प्रारंभिक रूप । ४

मोर। ४ चीत्कार। चीख। ६ युद्ध का कोलाहल। ७ घायलों का आर्त स्वर।

कळळणो-(क्रि०) कोलाहल होना।

कळळ हूकळ-(न०) १ युद्ध का शोर। २ कोलाहल। शोरगुल।

कळळाटो-(न०)१ रुदन। जोर का रोना। २ समूह रुदन।

कळवाणी-(न०) मिश्रित पानी।

कळत्रग-दे० कल्पवृक्ष।

कळत्रछ-दे० कल्पवृक्ष।

कळस-(न०) १ कलश। घड़ा। २ मन्दिर के शिखर या गुंबद के सबसे ऊपर का कलशाकार और नुकीला भाग। ईडो। ३ कार्य का उपसंहार सूचक अन्तिम रूप। ४ कुंभ राशि। ५ डिंगल का एक छंद विशेष।

कळसियो-(न० पानी पीने का छोटा जल पात्र।

कळसी-(ना०) १ आठ मन का माप। २ बड़ा घड़ा। जल भरने का बड़ा पात्र।

कळसो-(न०) मेह का मुँह या पानी का बड़ा घड़ा। कळो।

कळह-(न०) १ युद्ध। २ झगड़ा।

कळहकारी-(वि०) १ युद्ध करने वाला। २ झगड़ालू। ३ कलहकारिणी।

कळहगुर-(वि०) युद्ध प्रवीण।

कळहण-(ना०) १ युद्ध। २ सेना।

कळहण कोट-(वि०) १ युद्ध से नहीं डरने वाला। २ युद्ध प्रिय। युद्ध रसिक। ३ (युद्ध में) रक्षा का स्थान।

कळहळ-(न०) १ युद्ध का शोर। २ कोलाहल। शोरगुल।

कळहवरीस-(न०) १ योद्धा। वीर पुरुष। २ युद्ध का आवाहन करने वाला।

कळहत-(न०) युद्ध।

कळहंस-(न०) राजहंस। कलहंस।

कलंक-(न०) १ लांछन। दाग। कलंक। २ दाग। तोहमत।

कलंकी-(वि०) १ लांछित। बदनाम। २ दागी। अपराधी। (न०) विष्णु का होने वाला अवतार। कल्कि अवतार। २ चन्द्रमा।

कलंगी-(न०) १ मोर अथवा मुर्गे आदि पक्षियों के सिर पर की चोटी या फुनगी। कलगी। २ पगड़ी टोपी आदि में लगाया जाने वाला फुनगा। ३ पगड़ी में लगाया जाने वाला एक विशेष शिरोभूषण। कलगी। ४ चौकोर पगड़ी में तुर्रे की भांति बांधी जाने वाली बादले की झूम।

कलंदर-(न०) १ एक प्रकार का मुसलमान फकीर। २ रीछ और बन्दर को नचाने का खेल दिखाने वाला व्यक्ति। मदारी। (वि०) १ मैला। गन्दा। २ घृणित।

कलंब-(न०) तीर। बाण।

कळा-(ना०)१ अंश। २ युक्ति। ३ कौशल। ४ गान बजाने की विद्या। ५ छलकपट। ६ धूर्तता। ७ बदमाशी। चालाकी। ८ ज्योति। ९ हुनर। १० चन्द्र मण्डल का सोलहवां भाग। ११ समय का एक मान। १२ नटों का कौशल। नट विद्या। १३ शोभा। १४ अद्‌भुत कार्य। १५ कौतुक। १६ सामर्थ्य। १७ पुरुषों के प्रतिभा सूचक ७२ प्रकार। १८ केलि संबंधी काम शास्त्र के ६४ प्रकार।

कला-दे० कळा।

कळाई-(ना०) (हाथ का) मणिबंध। गट्टा।

कळाकंद-(न०) मावे की एक मिठाई।

कळातरो-(न०) एक कीट। मकडी।

कळाधर-(न०) १ चन्द्रमा। २ शिव। (वि०) कलाओं का जानकार।

कळाधारी-(वि०) १ कलावान। २ युक्ति से काम करने वाला।

कळाप–(न०) १ समूह । २ रुदन । ३ दुःख । विलाप । ४ तरकश । तूणीर । ५ मोर की पाँखो का छत्र । ६ भौंरा ।

कळापाती–(वि०) १ कपटी । छली । २ चचल । उत्पाती ।

कळापी–(न०) १ मोर । २ कोयल ।

कलावातू–(न०) रेशम के धागे पर लपेटा हुआ सोने या चाँदी का बारीक तार । कलाबत्तू ।

कळायरण–(ना०) १ काली मेघ घटा । काठळ । २ वर्षा का एक लोक गीत ।

कलाळ–(न०) १ कलाल जाति का व्यक्ति । २ शराब बनाने या बेचने वाली जाति । कलवार ।

कलाळरण–(ना०) १ कलाल जाति की स्त्री । २ कलाल की स्त्री

कलाळी–(ना०) १ एक लोक गीत । २ कलाल जाति की स्त्री ।

कलावत–(न०) १ गायक । २ कलाकार । ३ नट । ४ एक संगीतज्ञ जाति । ५ इस जाति का व्यक्ति । ६ संगीतज्ञो की उपाधि ।

कळावान–(वि०) १ चतुर । प्रवीण । २ छली । कपटी । ३ धूर्त । ४ कला जानने वाला ।

कलावो–(न०) हाथी की गरदन । कलावा ।

कळाहीरण–(वि०) १ अज्ञ । मूर्ख । अबूझ । २ अशक्त । ३ कला रहित ।

कला–(वि०) १ अड़ा (गाव) ।

कळि–(न०) १ युद्ध । २ कलियुग । (अव्य०) लिये । हेतु ।

कळिकाळ–(न०) कलियुग का समय । अधम का समय ।

कळिचाळो–दे० कळचाळो ।

कळि पत्थ–(न०) कलियुगी अर्जुन । कलि पाथ ।

कळिपाथ–दे० कळि पत्थ ।

कळिभीम–(न०) कलियुगी भीम ।

कलिमन–(न०) कलि का मैल । पाप ।

कळिमूळ–दे० कळमूळ ।

कनियळ–(न०) १ क्रौंच पक्षी के बोलने का शब्द । कलरव ।

कळियार–दे० कळिमूळ ।

कलियुग–(न०) चार युगो में का अंतिम युग । अधम युग ।

कळियो–दे० कुळियो । दे० कलसियो ।

कळिहिवा–(अव्य०) युद्ध करने के लिए ।

कलिंग–(न०) १ एक प्राचीन जनपद का नाम । २ एक असुर का नाम । किलंग ।

कळी–(ना०) १ बिना खिला हुआ पुष्प । कलिका । २ कुर्ते आदि में काँख में लगने वाला तिकोना कपड़ा । ३ नीचे की ओर (तले में) शकु वाला (नुकीला) आम के आकार का हुक्के का जलपात्र । ४ कळी वाला जस्त का बना हुआ हुक्का । ५ कलई नाम की धातु । ६ कलई का मुलम्मा । ७ दीवाल में सफदी करने तथा पान में खाने आदि के काम में आने वाला ककड़ रहित चूने का बारीक चूर्ण । ८ शुरू में फूटने (आने) वाले मूछ-दाढ़ी के बाल । ६ दर्पण में एक ओर किया गया पारे आदि का लेप । १० नाक में से बाल निकालने का नाई का औजार । ११ घाघरे या जामे का पल्ला जो गाव दुम (ऊपर की ओर से सँकड़ा और नीचे की ओर क्रमश चौड़ा होता हुआ) होता है, जिससे घाघरे या जामे की बनावट नीचे से घेरदार बनती है (एक घाघरे या जामे में २० से १०० कलियाँ तक होती हैं ।) १२ तरह । प्रकार । (वि०) १ सुंदर । २ समान । (क्रि० वि०) तरह । भाँति ।

कळीजणो–(क्रि०) १ बीच में फँसना । २ घर गृहस्थी या सासारिक कार्मों में उल

भना। ३ मोहजाल म फँसना। ४ नष्ट होना।

कलुख-*(न०)* १ पाप। कलुष। २ दूषित भाव। ३ मलीनता। *(वि०)* १ मैला। २ बुरा।

कळू-*(न०)* कलियुग।

कळूकाळ-*(न०)* १ कलिकाल। कलियुग। २ बुरा समय।

कळेजी-*(न०)* १ कलेजे का मास।

कळेजो-*(न०)* कलेजा। काळजो।

कलेवो-*(न०)* नाश्ता। सिरावण।

कळेस-*(न०)* १ क्लेश। मनस्ताप। २ कलह। ३ दुख। वेदना।

कळेहवा-दे० कळिहिवा।

कळो-*(न०)* १ कलह। २ युद्ध। लडाई। ३ एक जल पात्र। कलसा। ४ एक सचा। एक यत्र या औजार।

कलोड-*(न०)* छोटा बल।

कळोधर-*(वि०)* १ कुल का उज्ज्वल करने वाला। २ कुल का उद्धार करने वाला। *(न०)* १ वशधर। वशज। २ पुत्र। ३ ३ पौत्र।

कल्प-दे० कलप।

कल्पतरु-*(न०)* मनवाछित देने वाला स्वग का एक वृक्ष।

कल्पसूत्र-*(न०)* १ वदिक कर्मों की विधियो का एक शास्त्र। २ एक वेदाग। ३ जैन साधुओ के लिए आचार वर्णन की एक धर्म पुस्तक।

कल्याण-*(न०)* १ मगल। कुशल। २ हित। ३ एक राग।

कल्याणमस्तु-*(अव्य०)* कल्याण हो ऐसा आशीर्वाद।

कल्लर-*(ना०)* १ सडी हुई राब का विशेषण। २ बासी या सडी हुई राब। ३ खार वाली जमीन। ४ मैदान। *(वि०)* १ बासी। २ वह जिसमे सडान पदा हो गई हो। खार वाली। कृषि के योग्य नही। (जमीन)

कव-*(न०)* १ पितरो को दी जाने वाली आहुति। कव्य। २ कवि। ३ फलो म पडने वाला एक कीडा या रोग। कवा।

कवखाण-दे० कुवखाण।

कवच-*(न०)* जिरह बख्तर।

कवचन-दे० कुवचन।

कवट-*(ना०)* १ छाती। वक्ष स्थल। २ वक्ष स्थल। कपाट। वक्ष कपाट। उर कपाट। ३ कपाट। ४ कुमार्ग। खोटा मार्ग। ५ दुर्दशा। अवदशा। दुर्गति।

कवटी-*(वि०)* १ कुमार्गी। कुमार्ग गामी। २ दुर्दशाग्रस्त।

कवडाळो-*(न०)* १ ऊट की गर्दन और पलान के दोनो म लटकाया जाने वाला, छेद की हुई कौडियो से बनाया हुआ झालरी नुमा एक शृगार उपकरण। कौडाळो।

कवडाळो-*(वि०)* वह जिसमे कौडिया जडी या लगी हुई हो। जसे कवडाळी ढढाणी।

कवडी-*(ना०)* कौडी। कपर्दिका। *(वि०)* कितना।

कवडो-*(वि०)* कितना। *(न०)* बडी कौडी।

कवण-*(सर्व०)* १ कौन। *(क्रि०वि०)* किस प्रकार। कसे।

कवत-*(न०)* १ काव्य। २ कवित्त।

कवरी मिरतु-दे० काची मौत।

कवयो-दे० कवयो।

कवर-*(न०)* कुँवर। कुमार।

कवराणी-*(ना०)* कुँवर की पत्नी।

कवरागुर-*(न०)* १ जालोर के इतिहास प्रसिद्ध वीर कान्हडदे सोनगरा के पुत्र वीर मदे का विरद। २ बडा कुँवर।

कवग-*(न०)* क ख ग घ ङ, इन पाँच कठ्य स्पर्शी अल्पप्राण अघोष व्यजनो का समूह।

कवल–(न०) १ कौल। वादा। २ कवा। ग्रास। कवो।
कवळ–(न०) १ सूग्रर। २ जगली सूग्रर। ३ कमल।
कवलपजो–(न०) कौलनामा। इकरार नामा।
कवळी–(ना०) १ हस्तलिखित पुस्तक को सुरक्षित रखने के लिये उसके आकार का हाथ से बनाया हुआ गत्ते, कूटे आदि का बना एक प्रकार का वेष्टन या डिब्बा। २ एक विशेष रंग की गाय। ३ गाय। ४ द्वार के आजू बाजू लगाई जाने वाली खड़े पत्थर की पट्टी। (वि०) कोमल। मुलायम।
कवळो–(न०) १ सूग्रर। २ द्वार का पार्श्वभाग। ३ द्वार। (वि०) १ नम। कोमल। २ केवल। मात्र। ३ बिना माता का बछड़ा।
कववाहण–(ना०) अग्नि। कव्य वाहन।
कवा–(ना०) १ ऋतु विरुद्ध हवा। २ ऋतु विरुद्ध हवा के चलने से फल या फसल आदि में उत्पन्न होने वाला रोग या जीव जन्तु।
कवाज–(ना०) १ कुचाल। बुरा आचरण। कुचमाद। २ दुष्टता।
कवारपाठो–(न०) क्वार पाठा। घीक्वार।
कवाली–(ना०) १ कव्वाली। २ गजल।
कवि–(न०) १ कविता रचने वाला। २ ब्रह्मा। ३ वाल्मीकि। ४ वेदव्यास। ५ भाट। ६ चारण।
कविइलोळ–(न०) डिंगल का एक गीत छंद।
कवित–(न०) एक छन्द। एक वर्णवृत। छप्पय। घनाक्षरी छंद।
कविता–(ना०) छन्दोबद्ध रसमय रचना। पद्य।
कविताई–(ना०) १ कविता। २ कविता करने का काम। कवि कर्म।
कवि-प्रसिद्धि–दे० कवि समय।
कवियण–(न०ब०व०) कविजन। कविलोग।
कविराजा–(न०)१ श्रेष्ठ कवि। २ कवि।
कविलास–(न०) कैलाश।
कवि-समय–(न०) प्रकृति शास्त्र और लोक विरोधी वे बातें जिनका कवि लोग परम्परा से वर्णन करते आ रहे हैं। उनके संबंध में यह नहीं विचारा जाता कि वस्तुत वे उस प्रकार होती हैं या नहीं। यथा हंस का मोती चुगना। स्वाति बूंद से केले में कपूर उत्पन्न होना इत्यादि। कवि प्रसिद्धि।
कवीश्वर–(न०) १ वाल्मीकि ऋषि। २ बड़ा कवि।। कवीसर।
कवीसर–(न०) कवीश्वर।
कवेयीमौत–दे० काची मौत।
कवेयो–(वि०) १ कुवयस। अल्पवयस्क। २ युवा। (कवल मौत का एक विशेषण।)
कवेळा–(ना०) १ कुसमय। २ सध्यासमय। साझ। ३ अमगल बेला।
कवेसर–दे० कवीसर।
कवत–दे० कुवत।
कवो–(न०) ग्रास। कौर।
कव्य–(न०) पितरों को आहुति रूप में दी जाने वाली भोजन सामग्री। कव।
कव्यद–(न०) कवींद्र। श्रेष्ठकवि।
कव्वाल–(न०) कव्वालियां का गाने वाला। कव्वाला गायक।
कश्मीर–(न०) भारत का ठेठ उत्तर में आया हुआ प्राकृतिक सौंदर्य का एक प्रसिद्ध प्रदेश या राज्य। काश्मीर।
कश्मीरी–(वि०) १ काश्मीर संबंधी। (न०) १ काश्मीर की भाषा। २ काश्मीर का निवासी।
कश्यप–(न०) एक प्रसिद्ध ऋषि।
कश्यपसुत–(न०) सूर्य।

कष्ट–(न०) १ दुख । सताप । २ श्रम । महनत ।
कष्टीजरणो–(क्रि०) प्रसव की पीडा होना । प्रसव वेदना हाना ।
कस–(प०) १ सार । तत्व । २ अरक । ३ सारभाग । ४ रस । ५ थूर । ६ सोने की परीक्षा क लिय उसको कसौटी पर घिस कर बनाई जान वाली रेखा । ७ पतले और ऊच बादल । कसवाड । ८ तृण । तिनका । ९ घास । १० अगरखी को बमन की डोरी । बद । तनी । ११ शक्ति । बल । १२ श्रय । प्रयोजन । मतलव । १३ लाभ । अथ । १४ चिलम हुक्के आदि क धुए को खीचने की क्रिया । १५ गव । अभिमान ।
कसण–(न०) १ बधन । बधना । बद । २ अग्नि । कृशानु ।
कसणो–(न०) कसन की डारी । तस्मा । (क्रि०) १ खीचकर बाधना । २ कसौटी पर कस लगाना ३ दवाना । ३ तयार हाना । ५ धनुष की डोरी चढाना । ६ मशीन म उसके पुरजे को कस कर बिठाना ।
कसतो–(वि०) १ तोल माप आदि म कुछ कम । २ मात्रा या परिमाण से कुछ थोडा । कम । आछो ।
कसदार–(वि०) सत्ववाला ।
कसनागर–(न०) अफीम ।
कसपाण–(न०) १ जो कस रहते हैं । जो पुरुष के हाथो से मदन किय जाते ह । २ जो हाथो स कसती है । स्त्री । ३ जो पुरुष के मन और शक्ति का कषण करती है । स्त्री । (वि०) शक्तिशाली भुजाओ वाला ।
कसब–(न०) १ कारीगरी । २ वेश्यावृत्ति । ३ धधा । पेशा ।
कसबो–(ना०) १ खुशबू । सुगध । २ बड़ा गाव । नगर । कस्बा ।
कसबो लोग–(न०) गाव क लोग । गवार ।
कसम–(ना०) सौगध ।
कसमसणो–(क्रि०) १ घबराना । २ हिचकना । कसमसाहट करना । ३ कुल बुलाना । ४ आगा पीछा करना । दुविधा म पडना । ५ चलायमान हाना । इधर उधर होना ।
कसमीर–(न०) काश्मीर दश ।
कसर–(ना०) १ कमी । खामी । नुकस । २ न्यूनता । कमी । ३ हानि नुकसान । ४ अपूर्णता । ५ मात्रा मान, मूल्य इत्यादि म कम । घट ।
कसरत–(ना०) १ व्यायाम । २ अभ्यास । ३ अधिकता । (वि०) अधिक । बहुत ।
कसरान–(ना०) १ त्रुटि । खामी । २ कसर का एवजाना । ३ कसर (त्रुटि) होने के कारण मूल्य म की जान वाली कमी ।
कसवाड–दे० कस स० ७
कससणो–(क्रि०) १ जोश म आना । २ आक्रमण करना । ३ जाश म आकर चलना ।
कसाई–(न०) १ बूचड । (वि०) निदय । क्रूर ।
कसायलो–(वि०) कषाय स्वाद वाला । कसैला ।
कसाला–(न०) १ पेट भर भोजन नही मिलना । २ दरिद्रता । निधनता । ३ अभाव । ४ कमी ।
कसाव–(न०) १ कसैलापन । २ परीक्षा । ३ खिचाव ।
कसावट–(ना०) १ कसने का काम । २ तपास । परीक्षा ।
कसी–(ना०) लबे डडे वाला फावडे जसा एक औजार । फावडी । कस्सी । (वि०) १ कसी । किस प्रकार की । २ कौनसी । कुणसी । किसी ।

कसीजणो-(क्रि०) १ कसैला होना। २ कसा जाना। बाँधा जाना। ३ कसौटी पर घिसा जाना।
कसीसणो-(क्रि०) १ कसना। खींचना। २ कसा जाना।
कसीदो-(न०) कपडे पर सूई और धागे से बनाया हुआ काम। कशीदा।
कसुग्राड-दे० कुसुवाड।
कसुवाड-दे० कुसुवाड।
कसूण-(न०) कुशकुन। अपशकुन।
कसूत-(वि०) १ जो सूत्र में नहीं। वक्र। टेढा। २ अव्यवस्थित। कुसूत। (न०) १ कुप्रबंध। कुसूत। २ अव्यवस्था।
कसूमल-(न०) १ लाल रंग। कसूबल। २ लाल रंग का एक कपडा। कसूबल।
कसूर-(न०) १ अपराध। अनुचित कार्य। दोष। २ गलती। भूल। ३ दोष। पाप।
कसूरवार-(वि०) १ अपराधी। दोषी। २ भूल करने वाला। भूलक। ३ पापी।
कसूबल-(न०) १ कुसुम के फूल से बना हुआ रंग। २ लाल रंग। ३ लाल रंग से रंगा हुआ एक कपडा। (वि०) लाल। लाल रंग का।
कसूबी-(वि०) लाल रंग का। लाल रंग से रंगा हुआ।
कसूबो-(न०) १ अधिक मादकतार्थ पानी में गाला हुआ अफीम। अहिफेन द्राव। २ कसूमल रंग। लाल रंग। ३ ढाक वृक्ष। टेसू।
कसो-(सर्व०) कौन। (वि०) कौनसा। कुणसो। किसो। (न०) कसना। फीता।
कसोटी-(ना०) १ काले पत्थर का एक चिकना टुकडा जिस पर घिस कर सोना परखा जाता है। कसौटी। २ परीक्षा। जाँच।
कसोटो-(न०) लंगोटा। पटली।
कस्ट-दे० कष्ट।
कस्टम-(न०) १ महसूल। २ आने वाले माल पर लगने वाली चुंगी। ३ रिवाज।
कस्टीजणो-दे० कष्टीजणो।
कस्तूरियो मिरध-(न०) १ कस्तूरी मृग। २ विलासिता की एक उपाधि। (वि०) १ सुगंध प्रिय। २ शौकीन।
कस्तूरी-(ना०) एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो हिमालय के कस्तूरी मृग की नाभि से प्राप्त होता है। मृगमद।
कस्तो-दे० कसतो।
कस्यो-(वि०) १ कसा। २ कौनसा।
कहकह-(न०) कोलाहल।
कहटो-(वि०) कसा। किस प्रकार का। किसडो। कडो।
कहण-(ना०) १ संदेश। २ वचन। कथन। ३ कहावत। ४ अपवाद। ५ लांछन। कलंक। ६ लोकापवाद। दोष।
कहणगत-(ना०) १ बदनामी। २ कलंक। ३ कहावत।
कहणार-(वि०) कहने वाला। कहणियो। २ उपालंभ देने वाला।
कहणावट-दे० कहणावत।
कहणावत-(ना०) १ कहावत। कहवत। २ किम्वदन्ती।
कहणियो-दे० कहणार।
कहणी-(ना०) १ कहावत। २ दोष। लोकापवाद। ३ कथनी।
कहणो-(क्रि०) १ कहना। बोलना। २ आज्ञा करना। ३ डाँटना। ४ समझाना। (न०) १ कथन। २ आज्ञा।
कहर-(न०) १ युद्ध। २ विपत्ति। दुख। ३ वज्रपात। ४ प्रलय। ५ अकाल। (वि०) १ भयंकर। २ उग्र। तेज।
कहवत-(ना०) १ कहावत। २ दृष्टान्त। ३ कथन।

कहवाडणो-*(क्रि०)* १ संदेश भेजना। २ कहवाना। कहलवाना। ३ सिफारिश करवाना।

कहवावणो-*दे०* कहवाडणो।

कहाडणो-*(क्रि०)* कहलाना।

कहाणी-*(ना०)* १ वार्ता। बात। कहानी। २ विगत। वृत्तान्त। ३ कल्पित बात। कहानी।

कहाव-*(न०)* १ संदेश। खबर। २ कथन। उक्ति।

कहावत-*दे०* कहवत।

कहिम-*(अव्य०)* १ यदि। अगर। २ अथवा। या। ३ चाह। जा।

कहिरा-*(वि०)* आधा। कोहिरो।

कही-*(ना०)* १ कथन। २ रचना। *(वि०)* कृत। रचित। बनाई हुई। कही हुई। जैसे- वेलि श्रीक्रिसन रुकमणी री राठौड प्रथीराज री कही।

कहूँवा-*दे०* कसूंबो।

कहूँभो-*दे०* कसूंबो।

कह्यो-*(न०)* १ आना। २ कथन। ३ रचना *(वि०)* कहा हुआ। बनाया हुआ। रचित। कृत। जैसे-गुण हरिरस बारहठ ईसरदास रा कह्यो।

कं-*(न०)* १ सुख। २ कामदेव। ३ सिर। ४ जल। पानी। ५ स्वर्ण। ६ कमल। ७ आग। ८ सेना।

कँइ-*(सर्व०)* एक प्रश्नवाचक शब्द। क्या। कांई।

कँइक-*(वि०)* १ थोडा। जरा। २ कुछ। थोडासा।

कँइठा-*(अव्य०)* १ क्या पता। २ न जाने। कजाणौं।

कंक-*(न०)* १ एक पक्षी जिसके पंख बाण में लगाये जाते हैं। २ चील पक्षी। ३ कौआ। ४ युद्ध। ५ नर कंकाल। ६ बाण। ७ शृगाल। ८ महादेव। शिव। ९ सूर्य।

कंकट-*(न०)* १ कवच। २ शत्रु। ३ राक्षस। *(वि०)* दुष्ट।

कंकणी-*(ना०)* १ स्त्रियों के पहुँचे में पहने जाने वाला एक गहना। २ गिद्धनी। गोधणी। गरजडी।

कंकपत्र-*(न०)* बाण। तीर।

कंकाडो-*(न०)* कांटा वाला एक जंगली वृक्ष। कंकेडो।

कंकाणी-*दे०* कंकणी।

कंकाळ-*(न०)* १ अस्थि पंजर। २ सिंह। ३ युद्ध।

कंकाळण-*(ना०)* १ कंकालिनी। कर्कशा स्त्री। २ काली देवी का एक नाम। कंकालिनी। कंकाली। *(वि०)* कलहप्रिया।

कंकाळणी-*दे०* कंकाळण।

कंकाळी-*(ना०)* १ एक देवी। दुर्गा का एक नाम। दुर्गा। २ झगडाखोर स्त्री। कलहप्रिय स्त्री।

कंकावटी-*(ना०)* १ बिन्दी लगाने के लिये कुमकुम रखने का एक पात्र। २ एक देश।

कंकू-*(न०)* कुंकुम। रोळी। रोरी।

कंकूपत्री-*(ना०)* विवाह, जनेऊ आदि मांगलिक अवसरों की आमंत्रण पत्रिका। कुंकुमपत्रिका। कूंगचडो। कंकोत्री।

कंकेडो-*दे०* कंकाडो।

कंकोडो-*(न०)* साग बनाने के काम में आने वाला एक छोटा लता फल। बरसाती लता का एक फल।

कंकोत्री-*दे०* कंकूपत्री।

कंकोळ *(न०)* १ शीतलचीनी का वृक्ष। २ शीतलचीनी।

कंग-*(न०)* कवच। बख्तर।

कंगर-*(न०)* कंगुरा।

कंगळ-*(न०)* कवच। बख्तर।

कंगलो-*(वि०)* १ झगडालू। २ कंगाल। दरिद्री।

कगवो–(न०) फसल का एक राग ।
कगस–(न०) कवच ।
कगाल–(वि०) गरीब । निधन ।
कघो–(न०) कघा । कांकियो ।
कचरा–(न०) सोना । कचन । सोनो ।
कचणी–(ना०) १ हल्दी । २ वेश्या । पातर । ३ नतकी । नाचण । (न०) १ नपुसक । नामर्द । २ नाजिर । नाजर ।
कचनी–दे० कचणी ।
कचुश्रो–(न०) कचुकी । अगिया । चोली । कांचळी ।
कचुवो–दे० कचुश्रो ।
कचू–दे० कचुश्रो ।
कचो–(न०) १ पतग । गुड्डी । वनकौवा । २ कचुकी ।
कज–(न०) १ कमल । २ ब्रह्मा । ३ अमृत । ४ सिर के बाल । ५ दोष । ६ महादेव ।
कजर–(न०) एक अस्पृश्य जाति । (वि०) झगडालू ।
कजरी–(ना०) १ कजर जाति की स्त्री । २ मुसलमान वेश्या । (वि०) झगडालू ।
कजार–(न०) सूर्य । सूरज ।
कजारी–(न०) चद्रमा ।
कजूस–(वि०) कृपण ।
कटक–(न०) १ काटा । २ दुश्मन । शत्रु । ३ असुर । राक्षस । (वि०) १ बाधक । विघ्नकर्त्ता । २ कष्टदायक । शल्यरूप । ३ हृदयहीन । ४ शठ । ५ मूख । ६ दुष्ट । दुरात्मा ।
कटक असरण–(न०) ऊँट ।
कटग–दे० कटक ।
कटाळो–(न०) १ ऊँट कटाला घास । २ ऊब । उद्वेग । उकताना । व्याकुलता । (वि०) कांटेदार । कांटोवाला । कटीला ।
कट्राट–दे० कार्ट्रेट ।
कट्राल–(न०) अकुश । बाढ़ ।
कठ–(न०) १ गला । २ गले के अदर का भाग । घाटा । गळो । ३ स्वर । आवाज । ४ स्मरण करने की क्रिया । ५ याद (वि०) कठस्थ । जबानी ।
कठत्राण–(न०) गले की रक्षा के लिए युद्ध मे पहिनी जाने वाली लोहे की एक जाली । कठकवच । गलत्राण । गले का कवच ।
कठ बठणो–(मुहा०) १ गला बठना । २ स्वर साफ नही निकलना ।
कठमाळ–(ना०)गले म माला की तरह अनक गुमडिया निकलने का रोग । गडमाला ।
कठमाळा–(ना०) १ गडमाला का एक रोग । २ गले का हार ।
कठळ–दे० काठळ ।
कठलो–(न०) गले का एक आभूषण ।
कठसरी–(ना०) कठी । कठसिरी । कठश्री । गले की माला ।
कठ सूखणो–(मुहा०) १ गला सूखना । २ मुसीबत म पडना ।
कठस्थ–(वि०) १ कठस्थित । कठगत । २ जबानी याद । कठाग्र ।
कठाळ–(न०) ऊट ।
कठाळो–(वि०) १ गान मे सुमधुर आवाज वाला । २ बलवान । शक्तिमान । ३ सिंह । (न०) ऊँट ।
कठी–(ना०) १ गले का एक आभूषण । २ छोटे गुरियों की माला । ३ साधु गुरु की ओर से शिष्य को दीक्षा के रूप म पहिनाई जाने वाली माला । ३ तुलसी की माला ।
कठीबध–(वि०) किसी सम्प्रदाय म दीक्षित होकर उसके चिह्न स्वरूप कठी गले म धारण करने वाला । अनुयायी ।
कठीर–(न०) सिंह ।
कठीरण–(ना०) सिहनी ।
कठीरणी–(ना०) सिहनी ।
कठीरल–(न०) सिंह ।

कठीरव-(न०) सिंह।
कठे करणो-(मुहा०) याद करना।
कठेसरी-(ना०) सोनारियों की कुलदेवी। कठेश्वरी।
कठे होणो-(मुहा०) कंठस्थ होना। जबानी होना।
कठो-(न०) १ गले का एक आभूषण। २ गला।
कन्-(वि०) १ मक्खीचूस। कंजूस। २ धूर्त। ३ कुटिल। ४ मैला कुचैला ५ दागी।
कडियो-दे० करडिया।
कडीर-(वि०) १ मता। गंदा। २ बहुत अधिक मान वाला। ३ बहुत मान वाला। पटु। खाऊ।
कडील-दे० कंदील।
कत-(न०) १ पति। कांत। २ ईश्वर।
कतर-(ना०) मान पीने आदि की वस्तुओं में मिली हुई रेत।
कता-(ना०) पत्नी। कान्ता।
कथ-(न०) १ पति। कांत।
कथकोट-(न०) योगी कंथडनाथ के नाम से जाम साड के द्वारा बनवाया हुआ सिंध के पारकर जिले का इतिहास प्रसिद्ध प्राचीन किला और नगर।
कथडनाथ-(न०) सिंध का इतिहास प्रसिद्ध एक सिद्ध योगी।
कथा-(ना०) १ संयासी का लम्बा चोला। २ गुदड़ी।
कथाधारी-(न०) १ संयासी। २ महादेव।
कथुओ-(न०) एक कीड़ा।
कथो-(न०) १ पति। कथ। कांत। २ संयासी के पहनने का लंबा चोला।
कद-(न०) १ वानस्पतिक गाठदार मूल-प्याज आलू सूरण इत्यादि। २ बिना रेशे की जड। मूली शकरकंद इत्यादि। ३ गूदेदार जड। ४ शुद्ध की हुई चीनी। चीनी बूरा। ५ बादल। ६ दुर्गंध। ७ समूह। ८ दुःख। (वि०) मूर्ख।
कदन-(न०) चढावा। चढरवो।
कद कादणो-समूल नष्ट करना।
कदचर-(न०) सूअर। शूकर।
कदमूळ-(न०) खाने योग्य वानस्पतिक जड़ें। कंदमूल।
कदर्प-(न०) १ प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध। श्रीकृष्ण का पौत्र। २ कामदेव। कंदर्प।
कदप-दे० कंदर्प।
कदळ-(न०) १ युद्ध। २ ताल। ध्वज। ३ शोरगुल। ४ कटा हुआ अंग। ५ टुकड़ा। ६ समूह। ७ स्वर्ण। सोना।
कदळी-(ना०) १ ध्वजा। २ एक प्रकार की शराब। ३ एक दिव वृक्ष। ४ युद्ध। संग्राम। ५ हरिण।
कदीजणो-(क्रि०) सड़ना।
कदीजियोडा-(वि०) सड़ा हुआ।
कदील-(ना०) १ बांस की तीलियों के बनाये गये ढांचे पर कागज या अभ्रक चिपका कर बनाया हुआ एक दीपक। २ लालटेन। लटेन।
कदूडी-(ना०) संग्रह हेतु चुन कर बनाया गया घास का ढेर। कराइ। कदूडो।
कदोई-(न०) मिठाई बनाने वाला। हलवाई। सुखडिया।
कदोरावध-(वि०) कंदोरा बांधने वाला (मनुष्य)। (न०) १ जन्म लेने के समय पुत्र शब्द के पर्याय रूप में प्रयोग किया जाने वाला शब्द। जैसे—फलांणचंद के कदोराबंध हुआ है। धिंगड। धैनड। ३ मात्र पुरुषों को निमंत्रित करने के लिये प्रयुक्त पुरुषवाची शब्द। जैसे—कदोरावध नतो है।
कदोरावध नैतो-(न०) भोजन के लिये मात्र पुरुषों को दिया जाने वाला निमंत्रण।
कदोरो-दे० कणदोरो।
कद्रप-(न०) १ कामदेव। कदप। २ पुरुषत्व।

कंध–(न०) १ कंधा। स्कंध। २ गर्दन।
कंध-चाप–(न०) धनुषाकार ग्रीवा वाला घोड़ा।
कंध-रूढ़ा–(ना०) स्कंध रूढ़ा देवी। सिंह वाहिनी।
कंधाळ–(न०) १ बैल। २ बैल के कंधे पर रखा जाने वाला जूआ। (वि०) वीर।
कंधाळजुर–(न०) बैल।
कंधो–(न०) कंधा।
कंप–(वि०) चंचल। अधीर। (न०) १ दोष। २ कंपकंपी। ३ भय।
कंपकंपी–(ना०) कंपनी। कंपन। थरथराहट।
कंपणी–(ना०) १ कंपकंपी। २ कम्पनी। व्यवसाय में भागीदारी।
कंपनी–(ना०) १ व्यापारिक मंडली या संस्था। २ साथी। ३ मंडली ४ भागीदारी।
कंपाउंडर–(न०) डाक्टर के कहने मुताबिक दवाओं का मिश्रण तैयार करने वाला।
कंपाण–(न०) तराजू। कांटो।
कंपास–(न०) १ दिशा सूचक यंत्र। २ वृत्त बनाने का औजार। परकार।
कंपी–(ना०) १ उड़ कर आई हुई बारीक धूल। गर्द। गर्दगुबार। २ कंपकंपी।
कंपू–(ना०) १ छावनी। कम्प। २ सेना।
कंपोजीटर–(न०) छापाखाना में टाइप जोड़ने वाला। मुद्राक्षर बिठाने वाला।
कंब–(ना०) छड़ी। काब।
कंबू–(न०) १ शंख। २ हाथी।
कंबोज–(न०) १ घोड़ा। २ एक देश।
कंभूठाण–(न०) हाथी को बांधने का स्थान। खभूठाण।
कँवर–(न०) १ पिता की जीवित अवस्था में पुत्र का सम्मान सूचक पर्याय। २ पिता की जीवित अवस्था में लड़के को किया जाने वाला संबोधन। ३ पुत्र। बेटा। ४ राजकुमार। (प्रत्य०) कुंवरि या कुमारी नाम का अपभ्रंश रूप जिसका पुत्री के नाम के अंत में प्रत्यय रूप में प्रयोग किया जाता है जैसे–रतनकुंवर। पाहपकुंवर।
कँवर कलेवो–(न०) पाणिग्रहण के पूर्व दुलह को ससुराल में कराया जाने वाला भोजन। कंवारा जीमन। इस अवसर पर गाया जाने वाला गीत।
कँवराणी–(ना०) १ राजकुमार की पत्नी। २ पुत्रवधू। जिसके ससुर जीवित हो।
कँवरी–(ना०) १ कन्या। पुत्री। २ कंवारी कन्या। ३ राजकन्या।
कँवळ–(न०) १ कमल। २ मस्तक। ३ सुअर।
कंवळ पूजा–दे० कमल पूजा।
कँवळा–(ना०) लक्ष्मी। कमला।
कँवळापणो–(न०) कोमलता। नरमाई।
कँवळापति–(न०) विष्णु। लक्ष्मीपति। कमलापति।
कँवळी–(ना०) १ दरवाजे की दीवाल के मुहरो पर चौखट की खड़ी लकड़ियों के पीछे चौखट की बराबर लंबाई का लगाया जाने वाला खड़ा चपटा पत्थर। २ सुअरनी। शूकरी। (वि०) १ कोमल। मुलायम।
कँवळो–(न०) दरवाजे में लगी दोनों कंवलियों के आसपास की भीत। २ सूअर। (वि०) १ कोमल। मुलायम। २ बिना मात्रा वाला अक्षर जैसे— कंवळो क।
कँवाड–दे० किवाड़।
कँवार मंग–(न०) कंवार मग। आकाश गंगा।
कँवार सूखड़ी–(ना०) एक कर विशेष जो राजा या जागीरदार के पुत्र के नाम से किसी पद या उसके जन्मदिन और विवाह

काकी–*(ना०)* चाची।
काकी-सासू–*(न०)* चचिया सास।
काकी-सुसरो–*(न०)* चचिया ससुर।
काको–*(न०)* १ चाचा। २ पिता।
काकोदर–*(न०)* सप। सांप।
काकोदरी–*(ना०)* सर्पिणी। सापणी।
काखविलाई–*(ना०)* बगल का फोडा। कँखौरी। काखोळाई।
काखोळाई–दे० काखविलाई।
काग–*(न०(* १ कौआ २ शीशी का ढक्कन। काक।
काग उडावणी–*(न०)* ग्रवगुणी ग्रौर भग डानू पुत्रवधु की ग्रोर से सासू के लिये कहा जाने वाला ग्रपमान जनक सांकेतिक नाम।
कागण–*(ना०)* बाजरी की फसल का एक रोग।
कागद–*(न०)* १ चिट्ठी। पत्र। पत्री। २ कागज।
कागदवाई–*(ना०)* पत्र व्यवहार। चिट्ठी पत्री का उत्तर प्रत्युत्तर।
कागदियो–*(न०)* १ छोटी चिट्ठी। पुरजा। २ कागज का टुकड़ा।
कागदी–*(वि०)* पतली छालवाला जसे–कागदी नींबू। कागदी बदाम। २ जो जल्दी टूट फूट जाय। ३ नाजुक। *(न०)* कागज बेचने वाला।
कागदी जवान–*(न०)* जवान उम्र का निबल व्यक्ति।
कागदी नींबू–*(न०)* पतली छाल का ग्रधिक रस वाला ऊँची जाति का नींबू।
कागदी बदाम–*(ना०)* पतले छिलके की ग्रौर ग्रधिक मीठी ऊँची जाति की बादाम।
कागभुसड–*(न०)* काकभुशुडि।
कागमुखो–*(न०)* कौए की चोच के समान पीछे से चौड़ा ग्रौर ग्राग से सँकरा (मकान)।
कागलियो–*(न०)* गले के भीतर की घटी। गले का कौग्रा। गलशुडी।
कागलो–*(न०)* कौग्रा। काग।
कागाखाटी–*(ना०)* एक घास।
कागारोळ–*(ना०)* १ रोना पीटना। २ शोर। कोलाहल।
कागोळ–*(ना०)* श्राद्ध कम में पितरो के निमित्त दी जाने वाली काकबलि। कागबलि।
कागोनट–*(ना०)* मेघ घटा के ग्राग ग्रागे चलने वाले सफेद बादल। कोरण।
काच–*(न०)* १ दपण। ग्राइना। २ काच। ३ एक नत्र रोग। मोतियाबिंद।
काचडकूटो–*(वि०)* चुगलखोर।
काचडो–*(न०)* १ निंदा। बुराई। २ चुगली।
काचर–*(न०)* ककडी। कचरी।
काचर-कूचर–*(न०)* १ खाने की फुटकर चीजें। २ हलका खाना। घटिया खाना। ३ चना चबेना। ग्रटरम पटरम।
काचरी–*(ना०)* सुपारी या नीबू के ग्राकार का छोटा कचरी फल। कचरी।
काचरो–*(न०)* १ ककडी। २ छोटी ग्रौर गोल ककडी।
काचा कानारो–*(मुहा०)* १ सुनी सुनाई बात को बिना विचारे सच्ची मान लेने वाला। कान का कच्चा। बहकावे म ग्राने वाला।
काची गार–*(ना०)* १ मिट्टी का गारा। २ कीचड।
काची मौत–*(ना०)* जवान की मृत्यु। युवा मृत्यु।
काचो–*(वि०)* १ कच्चा। बिना पका। ग्रपक्व। २ जिसके तयार होने में कसर हो। ३ बिना रस का। जिसमें रस उत्पन्न न हुग्रा हो। ४ जो ग्रांच पर पका न हो। ५ कच्ची मिट्टी का बना। ६ ग्रशक्त। कमजोर। ७ ग्रन ग्रभ्यस्त। ८ कायर। ९ ग्रसत्य। १० खराब।

बुरा। ११ ग्यथ। १२ अधूरा। *(न०)* बच्चापन। बचाई।

काचो कवैयो–*(वि०)* अल्पायु का। बच्चा और बुवपस्क।

काचो पाको–*(वि०)* १ कच्चा पक्का। अधदग्ध।

काचो पोचो–*(वि०)*१ डरपोक। २ साहस हीन। नाहिम्मत। ३ अनुभवहीन।

काचोमतो–*(न०)* १ ढिल मिल विचार। २ अस्थिर मन। ३ कायरता।

काछ–*(ना०)*१ जाघ। साथळ। २ लगोट। ३ लाग। *(न०)* १ कच्छ देश।

काछ जती–*(वि०)* लगोट का सच्चा। जितेन्द्रिय।

काछणो–*(क्रि०)* १ युद्ध करना। २ नाश करना। ३ कमर कसना। ४ लगोट लगाना। *(न०)* कछोटा। छोटी धोती।

काछदढो–*(वि०)* जितेन्द्रिय। *(न०)* ब्रह्मचारी।

काछ पचाळ–*(ना०)*१ एक लोक देवी। २ सगी देवी। ३ कच्छ की राज देवी।

काछवियो–*(न०)* १ लोकगीत का एक नायक। २ एक प्रसिद्ध लोकगीत। दे० काछवो।

काछवो–*(न०)* १ कछुआ। २ थरपारकर जिले के उमरकोट मे हुआ एक लोक प्रसिद्ध काछब नामक राजा। ३ एक लोकगीत का नायक। काछबियो। ४ काछवा से सबधित एक लोकगीत।

काछराय–*(ना०)*कच्छ देश की सगी देवी।

काछ-वाच निकळक–*(वि०)* जिसने ब्रह्मचर्य पालन करने मे और सत्य भाषण करने मे कलक नही लगने दिया हो।

काछियो–*(न०)* धोती अथवा लहगे के नीचे पहिनने का एक वस्त्र।

काछी–*(वि०)* १ कच्छ देश का। कच्छ निवासी। *(ना०)* कच्छ की भाषा। कच्छी भाषा। *(न०)*१ घोडा। २ कच्छी घोडा।

काछी जोट-रो–*(न०)* १ कच्छ का ऊट। २ ऊट।

काछेल–दे० काछराय।

काछेली दे० काछराय।

काछेलो–*(न०)* कच्छ का रहने वाला चारण। कच्छ देश का चारण। २ चारणो की अनेक शाखा।

काज–*(न०)* १ कार्य। काम। २ प्रयोजन। उद्देश्य। ३ व्यवसाय। ४ बटन फँसाने के लिये कोट कुरता आदि मे बनाया जाने वाला छेद। ५ मृत्यु भोज। मोसर। औसर। *(अव्य०)* लिये। कारण। निमित्त। वास्ते।

काज-किरियावर–*(न०)* औसर मौसर (मृत्यु भोज) भात भरना (माहेरा) दहेज बडे बडे दान यानि भोज ब्रह्मभोज और आर्थिक सहायता इत्यादि श्रेष्ठ कर्म। कीर्ति कर्म।

काज-किरियावरो–*(वि०)* औसर मौसर आदि महाभोज करने वाला। २ भात भरने वाला। माहेरा भरने वाला। ३ बडे बडे दान और आर्थिक सहायता करने वाला। महान् उदार। महादानी।

काजथभ–*(वि०)* १ प्रधान कार्यकर्त्ता। २ कार्य कुशल। *(न०)* १ पुण्य कार्य। धर्म कार्य। २ वीर मृत्यु। ३ मरणोत्सव ४ कीर्तिस्तम्भ। ५ स्मारक।

काजळ–*(न०)* १ कज्जल। दीपक का धुँआ। २ काजल से तैयार किया हुआ अजन।

काजळियो–*(न०)* १ काले रग से रगा हुआ ओढना। २ एक लोक गीत। ३ अजन।

काजळी–*(ना०)* १ धुँए की कालिख। कलौंछ। २ काजली तीज।

काजळी तीज–*(ना०)* १ कजली तीज। २ भादों वदि तीज को मनाया जाने

वाला स्त्रियां का एक त्योहार ।

काजी–(न०) मुसलमानों का धर्म गुरु एवं (शरा के अनुसार) न्यायाधिकारी ।

काजी री लाग–(ना०) काजी लोगों के गुजारे के लिये बादशाही वक्त में लिया जाने वाला एक कर ।

काजू–(न०) एक मेवा । (वि०) १ काम की । काम में आने वाली । उपयोगी । २ उत्तम ।

काजू कळिया–(न०) काजू मेवा ।

काट–(न०) १ जंग । मुरचा । २ क्रोध । ३ शत्रुता । वैर । ४ कलंक । दोष । ५ पाप । ६ मैल । खोट । ७ किसी कही हुई बात को गलत ठहराने का भाव । खंडन । ८ काटने का काम या ढंग । कटाई ।

काटकणो–(क्रि०) १ क्रोध करना । २ आक्रमण करना । ३ कड़कना ।

काट खूणियो–(न०) १ समकोण । २ नब्बे अंश का कोण । ३ समकोण नाप का राज बढ़इयों का एक औजार । गुनिया ।

काट खूणो–दे० काटखूणियो ।

काट-छाँट–(ना०) १ काटने छाँटने का काम । २ काट कर छाँटने का काम । ३ दुरुस्ती । संशोधन ।

काटण–(वि०) १ काटने वाला । २ नाश करने वाला ।(न०) १ काटने की क्रिया । २ कसाई ।

काटणो–(क्रि०) १ काटना । २ चीरना । ३ दाँत मारना या डसना । ४ लिखे हुये के ऊपर लकीर फेरना । रद्द करना । ५ डंक मारना । ६ कम करना ।

काटल–(वि०) १ जंग लगा हुआ । जंग वाला । २ लांछित । कलंकित । ३ बहिष्कृत । ४ काटा हुआ ।

काटा-कूटी–(न०) १ काट छाँट । दुरुस्ती । २ काट छाँट की अस्पष्टता । ३ कतरन । ४ कलह ।

काटो–(न०) १ माल की खरीद फरोख्त के मूल्य की अदायगी में बारदाना धर्मादा, दस्तूरी आदि के रूप में की जाने वाली कटौती । २ ऋण पत्र में ऋणी के नाम लिखे गये रुपयों में से काट कर दिये जाने वाले कम रुपये । ३ कर्जदार के नाम दस्तावेज में लिखी गई रकम में से (एक निश्चित परिणाम में) कम देने की शोषण वृत्ति का एक रिवाज । ४ शोषण वृत्ति का एक प्रकार ।

काठ–(न०) १ लकड़ी काष्ठ । २ ईंधन । ३ मुर्दे को जलाने की लकड़ियाँ ।

काठ-कबाड़–(न०) लकड़ी का सामान ।

काठ देणो–(मुहा०) १ मृतक की सहानुभूति में शव की रथी के साथ श्मसान तक जाना । २ चिता में लकड़ी रखने में योग देना ।

काठ-भखण–(ना०) १ अग्नि । काष्ठ भक्षण । २ वीर गति प्राप्त पति की चिता में सती का प्रवेश ।

काठ लेणो–दे० काठा चढणो ।

काठहड़ो–(न०) १ तख्त । सिंहासन । २ काठ का पिंजरा । कठघरा ।

काठा चढणो–(मुहा०) सती होना । वीर गति प्राप्त पति की चिता में पत्नी का जल मरना । सहगमन करना । २ शव का चिता में जलना ।

काठियावाड़–(न०) गुजरात का अग्र भाग सौराष्ट्र प्रदेश । सौराष्ट्र ।

काठियावाड़ी–(वि०) १ काठियावाड़ संबंधी । २ काठियावाड़ का रहने वाला । (ना०) काठियावाड़ी भाषा या बोली ।

काठियो–(वि०) १ दुष्कर्म करने वाला । २ मंदभागी । ३ काठ बेचने वाला ।

काठी–(ना०) १ घोड़े या ऊँट की पीठ पर रखी जाने वाली जीन । पलान । २

राजपूतों की एक उपजाति । ३ शरीर की गठन । *(वि०)* १ काठियावाड का । २ दृढ़ । मजबूत । ३ तंग । सँकरी ।

काठो–*(वि०)* १ तंग । सँकरा । २ सख्त । कड़ा । ३ कठोर । ४ मजबूत । दृढ़ । ५ कंजूस । कृपण । ६ मोटा । जाडा । *(न०)* एक प्रकार का कठोर फोड़ा । कारबंकल ।

काडो–*(न०)* १ एक गाली । २ एक अशिष्ट वाक संपुट ।

काढणो–*(क्रि०)* निकालना ।

काढा–*(न०)* क्वाथ । काढ़ा ।

काण–*(ना०)* १ सम्मान । प्रतिष्ठा । २ सम्मान की भावना । ३ लोक लाज । मर्यादा । ४ संकोच । ५ महत्व । ६ मृतक के घरवालों के शोक में संवेदना प्रकट करने को जाने की प्रथा । ७ तराजू के दोनों पलड़ों में समतुला का अभाव । डंडी और उसके एक पलड़े का एक ओर झुकाव । ८ तराजू के दोनों पलड़ों को समतुलित करने के लिए ऊँचे उठने वाले पलड़े में रखा जाने वाला वजन । पासग ।

काण कुरब–*(न०)* १ मान मर्यादा । २ प्रतिष्ठा ।

काणण राण–*(न०)* सिंह । काननराज ।

काणम–*(ना०)* १ तकड़ी की डंडी और पलड़े में रहने वाला झुकाव । २ दोनों पलड़ों को समतुलित करने के लिए ऊँचे उठने वाले पलड़े में रखा जाने वाला वजन । काण ।

काणजो–*(वि०)* काना । एकाक्ष । *(न०)* १ चिपडी । २ कचरा ।

काण-मुकाण–दे० काण ६ ।

काणस–*(ना०)* एक औजार जिसको किसी धातु पर रगड़ने से उसके बारीक कण कट कर गिरते हैं । रेता । अरगती । कानस ।

काणी–*(वि०)* एक आँख वाली । काणसी । कानी ।

काणी दिस–*(ना०)* १ अपने जनपद से भिन्न दूर का जनपद । अपने चौखले से बाहर का स्थान । २ दूर और एकान्त जगह । अटपटी जगह । ३ वह दिशा या स्थान जिसके साथ अपना कोई संबंध न हो ।

काणी दीवाळी–*(ना०)* दीपावली का पहिला दिन । इस दिन द्वार के एक तरफ ही दीपक रखा जाता है ।

काणठो–*(न०)* नुकीला दाँत । शूल दाँत । खूँटो ।

काणो–*(न०)* १ सुराख । छिद्र । *(वि०)* १ एक आँख वाला । काखाण । काना । २ दुर्बुद्धि । ३ जिस फल का कुछ अंश कीड़ा ने खा लिया हो । कीट भक्षित (फल साक आदि ।)

काणो गूँघटो–*(न०)* घूँघट में से देखने के लिये एक आँख के आगे दो अंगुलियों में आंचल को लपेट कर बनाया जाने वाला घूँघट का नेत्राकार छिद्र ।

कात–*(ना०)* बडी कतरनी । बडी कैंची ।

कातणो–*(क्रि०)* १ सूत कातना । ऊन या रूई का धागा बनाना । कातना । कताई करना । *(न०)* सूत कातने का काम । कताई ।

कातर–*(ना०)* बडी कतरनी । *(वि०)* १ कायर । २ व्याकुल ।

कातरियो–*(न०)* स्त्री के हाथ का एक गहना ।

कातरो–*(न०)* फसल को चौपट करने वाला एक कीड़ा ।

कातळी–*(ना०)* १ शरीर का ढाँचा । २ शरीर की शक्ति । ३ किसी चीज का लम्बा पतला और चपटा टुकड़ा । कतली ।

कातियो–*(न०)* जबड़ा । जबाड़ो ।

काती-(न०) १ कार्तिक मास। २ घास काटने का एक औजार। ३ एक शस्त्र।
कातीरो-दे० कातीसरा।
कातीसरो-(न०) कार्तिक की फसल। कातीरो।
का तो-(अव्य०) या तो। अथवा तो।
कात्यायनी-दे० कतियाणी।
काथ-(न०)१ ताकत। शक्ति। २ शरीर। ३ माया। धन। ४ कथा। ५ मिजाज। ६ चरित्र। ७ विनाश। ध्वंस। ८ काम। ९ रचना। निर्माण।
काथो-(न०) कत्था।
कादमी-(ना०) बुखार में होने वाला पसीना। २ भस। (संकेत शब्द)
कादंबरी-(ना०)१ सरस्वती। २ कोयल। ३ सारिका। मैना।
कादंबिनी-(ना०)१ मेघमाला। २ बिजली।
कादो-(न०) कीचड। कर्दम। कादा कीच। गारो।
कान-(न०) १ श्रवणेंद्रिय। कर्ण। कान। २ बंदूक का लोग।
कान कतरणा-(मुहा०) होशियारी में किसी को दाद नहीं देना। होशियारी में चढ़ा बढ़ा होना।
कान कापणा-दे० कान कतरणा।
कानखजूरो-(न०) कनखजूरा। कनसळायो।
कान खाणा-(मुहा०) बार बार कहना।
कान खुलणा-(मुहा०) सचेत होना।
कान खोलणा-(मुहा०) सचेत करना।
कानजी-(न०) श्रीकृष्ण।
कानजी आठम-(ना०) भादों कृष्ण पक्ष की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी। गोकळ आठम।
कान देणो-(मुहा०) ध्यान से सुनना।
कान धरणा-(मुहा०) ध्यान से सुनना।
कान पकडणो-(मुहा०) भूल स्वीकार करना।
कान पकडाणो-(मुहा०) भूल स्वीकार कराना।
कान फूटो-(वि०) बहरा।
कान भरणा-(मुहा०) बहकाना।
कान मांडणा-(मुहा०) ध्यान से सुनना।
कान वाढणा-दे० कान कतरणा।
कानवो-दे० कानव्हो।
कानव्हो-(न०) श्रीकृष्ण।
कानसळाई-(ना०) कनखजूरा।
कानसळायो-दे० कानसळाई।
काना करमत-(ना०) वर्ण के ऊपर और आगे लगाई जाने वाली मात्राएं। ओ की मात्रा। कानामात।
काना फाती-(ना०) कान के पास धीरे धीरे बात करना। काना-फूसी। काना बाती।
कानामात-(ना०) वर्ण के ऊपर और आगे लगाई जाने वाली मात्राएं। काना और मात्रा।
कानी-(क्रि०वि०)१ ओर। तरफ। (ना०) धोती आदि वस्त्र की किनारी।
कानी-कानी-(क्रि०वि०) इधर उधर। सभी जगह।
कानूंगो-(न०) १ बादशाही समय का एक कर्मचारी। २ कानूनगो। कानून जानने वाला व्यक्ति। ३ एक राज्य कर्मचारी।
कानैकान-(अव्य०) कानों-कान। एक कान से दूसरे कान। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति। व्यक्ति से व्यक्ति।
कानो-(न०) १ बरतन का किनारा। २ वर्ण के आगे आने वाली आ की मात्रा। खड़ी पाई। काना। ३ श्रीकृष्ण। (अव्य०) पृथक।
कानोकान-दे० कानै कान।
कानो देणो-(मुहा०) १ किनारा लेना। दूर रहना। किनारा देना। दूर करना। ३ वर्ण के आगे खड़ी पाई रूप 'आ' की मात्रा लगाना।
कानो लेणो-(मुहा०) किनारा लेना। दूर रहना। दूर होना।

काह्कुँवर-(न०) १ पुत्र। २ श्रीकृष्ण। बाल कृष्ण।
काह्ड-(न०) श्रीकृष्ण।
काह्डदे प्रबंध-(न०) मारवाड़ के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जालोर के वीर का हड़दे सोनगरा और सुलतान अलाउद्दीन के परस्पर जालोर में हुए युद्ध के वर्णन का जालोर के कवि पद्मनाभ के द्वारा रचा हुआ १५ वीं शताब्दि की राजस्थानी भाषा का प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रबंध ग्रंथ।
काह्वो-(न०) श्रीकृष्ण। काह्रो। काह्जो।
काह्डो-दे० काह्वो।
काह्रो-दे० काह्वो।
काप-(न०) १ काटना। कटाई। काट छाँट। २ कमी। ३ रचना।
कापकूप-(न०) कतर ब्योंत। २ काट छाँट। ३ बचत। किफायत। ४ कटे हुए टुकड़े।
कापड़-(न०) कपड़ा।
कापड़ी-(न०) १ याचक। २ साधु। ३ भाटों की एक शाखा।
कापड़ो-(न०) कपड़ा। वस्त्र।
कापणो-(क्रि०) १ काटना। २ मारना। ३ कम करना। घटाना। ४ हटाना। दूर करना। ५ ताश के खेल में तुरुप चाल चलना। काटना।
कापुर-(न०) १ छोटा गाँव। २ सुविधाओं से रहित बस्ती। कुगाँव। ३ ऊजड़ खेड़ा।
कापुरस-(वि०) कापुरुष। कायर।
कापो-(न०) चमड़े का टुकड़ा। साक फलादि का टुकड़ा।
काफर-(न०) १ भिन्न धर्मावलम्बी। २ ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाला। नास्तिक। (वि०) १ क्रूर। निर्दय। २ पश्चिमाभियाचा। पश्चिमाभिमुखी।
काफलो-(न०) काफिला। कारवाँ। पथिक समूह।
काबर-(ना०) एक पक्षी।
काबरियो-(वि०) चितकबरा। कबरा। (न०) कबरा कुत्ता। २ कुत्ते का बच्चा।
काबली-(वि०) १ काबुल का निवासी। २ काबुल से संबंधित। ३ जिसकी बोली समझ में न आवे। (न०) १ मुसलमान। २ हीन वचनों वाला पठान।
काबली चिणो-(न०) एक प्रकार का चना। बड़ा चना।
काबली दाड़म-(न०) लाल और मीठे दानों की एक दाड़िम। काबुली अनार।
काबली बदाम-(ना०) १ काबुल से आने वाली बादाम। २ अच्छी जाति की एक बादाम।
काबली हींग-(ना०) १ काबुल की हींग। पठानी हींग। २ अच्छी जाति की हींग।
काबू-(न०) १ बंद। पकड़। २ अधिकार। वश।
काबू करणो-(मुहा०) १ बाँधना। २ बंद में रखना। ३ अधिकार में लेना।
काबो-(न०) १ परमार क्षत्रियों की एक शाखा। २ इस शाखा का व्यक्ति। ३ लूट खसोट करने वाली जाति का व्यक्ति। ४ अरब देश के मक्का शहर में मुसलमानों की जियारत का एक स्थान।
काम-(न०) १ कार्य। कृत्य। २ व्यापार। ३ इच्छा। ४ कर्त्तव्य। ५ धंधा। व्यवसाय। ६ उपयोग। जरूरत। ७ प्रयोजन। मतलब। तात्पर्य। ८ सरोकार गरज। ९ रचना। १० रचना कौशल। १२ विषय सुख की इच्छा। १३ काम। रति। १४ कामदेव। १५ धर्मशास्त्रानुसार चार पदार्थों (धर्म अर्थ काम मोक्ष) में से एक। काम। पुरुषार्थ।
काम करणियो-(वि०) १ मेहनती। परिश्रमी। २ कर्त्तव्यनिष्ठ। कर्मठ।
कामकाज-(न०) १ काम धंधा। २ कारोबार।

कामगरो-*(वि०)* कामकाजी। उद्यमी। २ काम करने वाला। ३ काम में आने वाला। उपयोगी।

काम चलाऊ-*(वि०)*१ अस्थाई। २ सामान्यतया काम में लाया जा सकने योग्य।

कामचोर-*(वि०)* काम से जी चुराने वाला। आलसी।

कामड-दे० काँवड।

कामडियो-*(न०)* १ कामडी से टोकरी आदि बनाने वाली जाति का पुरुष। २ रामदेव का भक्त। ३ तंबूरे पर गाने का काम करने वाली याचक जाति।

कामडी-*(ना०)* बेंत। छड़ी।

कामण-*(न०)* १ स्त्री। कामिनी। २ वशीकरण। कामण। ३ वर्षागम के कारण कांसा तांबा आदि धातु पात्रों पर होने वाला रंग बदल। ४ विवाह का एक लोक गीत। कामण।

कामणगारी-*(वि०)* १ वशीकरण करने वाली। २ मोहित करने वाला। मोहिनी।

कामणगारो-*(वि०)* १ कामण करने वाला। वशीकरण करने वाला। जंत्र मंत्र द्वारा वश में करने वाला। २ जो वश में करले। मोहित करने वाला। मोहक।

कामणि-*(ना०)* कामिनी। स्त्री।

कामणी-दे० कामणि।

कामदार-*(न०)* १ कर्मचारी। २ जागीरदार का मुख्य पदाधिकारी। जागीरदार की जागीरी का प्रबंधक। कामेती। *(वि०)* जिस पर गोटा किनारी या बेल बूटा का काम किया हुआ हो।

कामदेव-*(न०)* काम वासना का देवता। मदन। मनोज।

कामधकाऊ-*(वि०)* १ काम में आने लायक। साधारणतया जिससे काम निकल सके। काम चलाऊ।

कामधंधो-*(न०)* १ कामधंधा। वनिज व्योपार। २ नौकरी। ३ मजदूरी। ४ शिल्प काम। शिल्पियों का कारोबार।

कामधेनु-*(ना०)* वांछित वस्तुएं को देने वाली एक गाय। सुर सुरभि।

कामना-*(ना०)*कामना। मनोरथ। इच्छा।

कामरु देस-दे० कामरूप।

कामरूप-*(न०)* भारत का आसाम देश।

कामल-*(वि०)* योग्य। काबिल।

कामळ-*(ना०)* १ कम्बल। २ गाय बैल की गरदन के नीचे लटकने वाली मांस चमड़ी। सास्ना।

काम विराम-*(न०)* स्तन। उरोज।

कामसर-*(अव्य०)* १ काम के लिये। २ काम हो तो।

कामख्या देवी-*(न०)* आसाम की कामाख्या देवी।

कामछा-*(ना०)* १ कामेच्छा २ कामाख्या।

कामागनी-*(न०)* कामाग्नि। कामज्वाला।

कामाग्नि-*(ना०)* कामज्वाला।

कामिणी-दे० कामणि।

कामू-*(वि०)* १ कामकाज वाला। २ उपयोग में आने वाला। काम में आने वाला।

कामेती-*(न०)* १ कामदार। प्रबंधक। २ जागीरदार की जागीरी का प्रबंधक।

कामेही-*(ना०)* गौडों की कुलदेवी।

काय-*(अव्य०)* १ या। २ या तो। अथवा। अथवा तो। ३ क्योंकि। *(वि०)* १ कौन। २ क्या। ३ कितना। ४ कुछ। ५ कुछ भी। *(क्रि०वि०)* १ क्यों। २ किसलिए। *(सव०)* १ क्या। २ कोई। *(ना०)* शरीर। काया।

कायज करणो-*(मुहा०)* १ जीन कसे हुये घोड़े की लगाम को जीन में ही अटका देना। २ लगाम जीन आदि डाल कर घोड़े को संपूर्ण रूप से सवारी के लिये तयार रखना।

कायथ-*(न०)* १ कायस्थ जाति। २ कायस्थ जाति का व्यक्ति। पचोली।

कायथण-(ना०) १ कायस्थ जाति की स्त्री। पचोलण। २ लाट गीतों की एक नायिका।

कायथाणी-(ना०)१ लाट गीत। २ विवाह के गीतों की एक नायिका। ३ कायस्थ जाति की स्त्री।

कायदो-(न०)१ मान। मर्यादा। प्रतिष्ठा। २ नियम। ३ दस्तूर। रिवाज। ३ कानून। विधान। ४ उर्दू भाषा सीखने की पहली पुस्तक।

कायव-(न०) काव्य। कविता।

कायव-कू ता-(वि०) काव्य की परीक्षा करने वाला। काव्यपरीक्षक। (न०) काव्य की परीक्षा का काम।

कायम-दे० काइम।

कायमो-दे० काइमो।

कायर-(वि०) १ बिना साहस वाला। बहिम्मत। डरपोक। डरपण। २ बुजदिल।

कायरो-(अ०न०) १ किस बात का। २ क्या। (वि०) भूरी आँखों वाला।

कायलाणो-(न०) १ शिकार का रक्षित स्थान। २ जल पक्षियों के शिकार का स्थान। ३ जोधपुर के निकट एक बड़ा तालाब जो एक समय राजाओं के जल पक्षियों का शिकार का स्थान था।

कायली-(ना०) १ ग्लानि। खेद। २ लज्जा। ३ थकावट। ४ सुस्ती। काहिली।

काया-(ना०) शरीर। देह।

कायाकळप-दे० कायाकल्प।

कायाकल्प-(न०) शरीर का जवान हो जाना।

कायाधाम-(न०) आत्मा।

कायापूत-(न०) औरस पुत्र।

काया भाडो-(न०) पट भराइ।

कायाराम-(न०) आत्मा।

कायो-(न०) लोहे का एक औजार जिसको गरम करके किसी बरतन आदि में दाग से छाला लगाया जाता है। (वि०) १ थका हुआ। थकान्त। २ उकताया हुआ। ३ हैरान। तंग।

कायो करणो-(मुहा०) १ थकाना। हैरान करना। २ विवश करना।

कायो हुणो-(मुहा०) १ थकना। २ हैरान होना। उकता जाना। ३ विवश होना। मजबूर होना।

कार-(न०) १ काम। अधिकार। २ नाता। फायदा। ३ असर। प्रभाव। ४ उपाय। (ना०) १ रेखा। लकीर। २ सीमा। ३ मर्यादा। ४ एक शब्द जो वर्णमाला के किसी अक्षर के साथ लग कर उसका स्वतंत्र बोध कराता है जैसे-अकार से 'अ' का। मकार से म का इत्यादि। ५ एक शब्द जो किसी शब्द के आगे लग कर उसके करने वाले का बोध कराता है जैसे-स्वर्णकार। स्वर्णकार इत्यादि। (वि०) करने वाला। बनाने वाला। ६ मोटर।

कार आवणो-(मुहा०) १ लाभप्रद होना। उपयोगी होना। (दवा का) २ काम में आना।

कारक-(न०) संज्ञा व सर्वनाम का वह रूप जिससे वाक्य में अन्य शब्द के साथ उसका संबंध प्रगट होता है। (व्या०)। (वि०) १ करने वाला। कर्ता। २ उपयोगी। लाभदायक।

कार करणो-(मुहा०) १ फायदा करना। २ फायदा होना। (औषधि से) ३ काम करना। धंधा व्यवसाय करना।

कार काढणो-(मुहा०) १ संबंध तोड़ना। २ संबंध तोड़ने की प्रतिज्ञा करना। ३ लकीर खींचना।

कारकूट-(न०) बेचान। विक्रय। बै। (जमीन का)।

कारकूट-लिखत-(न०) बैनामा। विक्री पत्र। (जमीन का)

कारकून-(न०) १ अहलकार। मुंशी। २ गुमास्ता। ३ कार्यकर्त्ता। ४ कारिंदा।

कारखानो-(न०) १ अधिक मात्रा में वस्तुएं तैयार करने का कार्यालय। कारखाना। २ बड़ा कारबार। ३ विभाग। खाता।

कारगर-(वि०) गुणकारी। प्रभावी। उपयोगी।

कारगुजार-(वि०) भली प्रकार काम करने वाला।

कारचोबी-(ना०) १ कपड़े पर जरी का काम। २ कसीदा।

कारज-(न०) १ काम। कार्य २ मृत्यु भोज। ३ मृत्यु से संबद्ध प्रसंग।

कारटियो-(न०) १ मृतक के एकादशे का क्रिया कर्म और श्राद्ध कराने वाला ब्राह्मण। २ महाब्राह्मण। कट्टहा।

कारण-(न०) १ हेतु। उद्देश्य। २ सबब। निमित्त। ३ लिये। वास्ते। ४ इश्वर। ५ प्रेम। ६ कृपा। ७ प्रभाव। ७ मान। प्रतिष्ठा। ९ लाभ। १० गौरव। ११ गम। हमल।

कारण-कै-(अव्य०) १ कारण यह कि। २ इसलिये कि। ३ क्योंकि।

कारणसर-(अव्य०) १ इस कारण २ के कारण। ३ कारण उत्पन्न होने पर।

कारणिये-(अव्य०) १ लिये। २ के लिये। के कारण।

कारण करण-(न०) सृष्टि उत्पत्ति का कारण। ईश्वर।

कारणीक-(वि०) १ प्रभावशाली। २ प्रामाणिक। ३ बुद्धिमान। समझदार। विवेकी। ४ प्रतिष्ठित। ५ योग्य। ६ अधिकारी। ७ ख्यातिप्राप्त। ख्यातनाम। ८ ज्ञाता। जानकार। ९ परोपकारी। १० दरमियानगिरि करने वाला। ११ करने योग्य। करणीय। १२ कारण से उत्पन्न। १३ कारण के रूप में होने वाला। १४ कारण संबंधी। कारणिक। १५ शुभ। मांगलिक। १६ श्रेष्ठ।

कारणै-(न०) १ कारण। २ निमित्त। प्रयोजन। हेतु। (अव्य०) १ कारण से। २ के कारण। के लिये।

कारतक-(न०) कार्तिक। कार्तिक मास।

कारतकसाम-(न०) स्वामीकार्तिक।

कार बार-(न०) १ काम काज। २ व्यापार। व्यवसाय।

कारमुख-(न०) धनुष।

कारमो-(वि०) १ नाशवान। २ न्यून। ओछा। ३ उतरता हुआ। हलका। निम्नश्रेणी का। ४ निकम्मा। ५ भयंकर। ६ अद्भुत। ७ असत्य। ८ अनुपयोगी। ९ उपयोगी १० सुंदर।

कारस-(ना०) कड़ो की महीन आग। कारा। २ कड़ो का चूरा। काराष।

कारसथानी-(ना०) चालाकी। चालबाजी। कारस्तानी। कारसाजी।

कारसाजी-दे० कारसथानी।

कारदो-(वि०) १ काम करने वाला। कारिन्दा। २ होशियार। चतुर। ३ प्रवीण। ४ मुख्य।

कारा-दे० कारस।

कारायण-(न०) १ बिजली। २ मेघघटा। काळायण। (वि०) करने वाला।

कारी-(ना०) १ फटे हुए वस्त्र या बरतन आदि की जोड़। पैबंद। २ इलाज। चिकित्सा। ३ उपाय। तरकीब। युक्ति। ४ आंख के ऊपर आये हुये जाल को हटाने का शल्य चिकित्सा। ५ एक प्रत्यय जो शब्द के आगे लग कर उसका कर्त्ता अर्थ प्रकट करता है जैसे-लाभकारी गुणकारी आदि।

कारीगर–*(वि०)* १ शिल्पी। दस्तकार। २ प्रवीण व्यक्ति। ३ किसी भी हुनर में दक्ष व्यक्ति।

कारीगरी–*(ना०)* १ कारीगर का काम। २ कलात्मक काम। रचना। ३ कला कौशल। ४ दक्षता। प्रवीणता। ५ चालाकी।

कारू–*(न०)* गाछा छीपा घांची तबोळी कुम्हार, कठियारा माली मोची मनिया और बुनकर ये दस जातियां। कहा०–नव नारू न दस कारू। मनुस्मृति में पांच कारू बताये हैं यथा—

तक्षा च तन्त्रवायश्च नापिता रजकस्तथा।
पंचमश्चर्मकारश्च कारवः शिल्पिनो मताः॥

कारू-नारू–*(ना०)* दस कारू और नौ नारू जातियां। दे० कारू और नारू।

कारो–*(न०)* १ कलह। झगड़ा। २ निंदा। ३ बढ़ा कर कही जाने वाली सच्ची झूठी बातें।

कार्यकुशल–*(वि०)* कार्य करने में निपुण।

कार्यवाही–*(ना०)* १ कार्य करने की प्रक्रिया। काररवाई। २ कार्य करने की तत्परता।

कार्यसिद्धि–*(ना०)* १ काम पार जाना। २ काम बन जाना।

कार्यालय–*(न०)* दफतर। आफिस।

काल–*(न०)* आने वाला या बीता हुआ दिन। कल।

काळ–*(न०)* १ समय। २ मौत। काल। ३ दुष्काल। ४ यम। ५ सांप। ६ सिंह। ७ विष। ८ दो ऋतु या चार मास का समय।

काळ आखरियो–*(न०)* १ मृत्यु-संदेश। ग्रामांतर के किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने का संदेश देने वाला पत्र।

काळकरमी–*(वि०)* काले कर्म (खोटे काम) करने वाली। व्यभिचारिणी। *(ना०)* एक गाली।

काळकरमो–*(वि०)* काले कर्म (खोटे काम) करने वाला। *(न०)* एक गाली।

काळका–*(ना०)* १ कालिका देवी। २ कुरूप स्त्री। ३ झगड़ालू स्त्री।

काळख–*(ना०)* १ कालापन। कालिमा। २ कोयले का चूर्ण। ३ तवा, कड़ाही आदि का धुंआ। कालिख। ४ कलंक। ५ पाप।

काळगनी–*(ना०)* १ योगियों का भस्मी लगाते समय पढ़ने का एक मंत्र। कालाग्नि मंत्र। २ भस्मी। ३ मृत्यु। ४ कालाग्नि।

काळ-चाळो–*(न०)* १ भयंकर युद्ध। २ काल रूप। कालस्वरूप। *(वि०)* काल स्वरूप। युद्ध में काल के समान। ३ मृत्यु को छेड़ने वाला (युद्ध)।

काळजवन–*(न०)* कालयवन।

काळजा-री कोर–*(वि०)* अत्यन्त प्रिय।

काळजिया–दे० काळजा।

काळजीभो–*(न०)* वह व्यक्ति जिसका कहा हुआ अशुभ वचन सिद्ध हो जाता है। कालजिह्वा। *(वि०)* अशुभ भाषी।

काळजो–*(न०)* १ कलेजा। २ हृदय। ३ जी। मन।

काळ झाप–*(ना०)* १ मृत्यु का झपट्टा। २ जीवन की समाप्ति। *(वि०)* १ मृत्यु से झपट करने वाला। काळनींपो। २ मरणासन्न।

काळ-झाळ–*(ना०)* १ काल ज्वाला। मृत्यु। २ वीर मृत्यु। ३ भयंकर युद्ध। ४ भयंकर क्रोध।

काळझाळो–*(वि०)* महान क्रोधी।

काळप–*(न०)* १ दुष्काल। *(ना०)* २ श्यामता। कालापन। ३ कलंक।

काळपी-मिसरी–*(ना०)* मिसरी का एक प्रकार। ऊँची जाति की मिसरी। **काळपी मवात।**

काळ-गू छियो-(वि०) १ अशुभ (व्यक्ति)। २ अशुभ कर्म।
काळरी-(वि०) १ काल रग की। काली। २ सड़ा हुआ (बाजरी, ज्वार आदि मोटा अनाज) (न०) खराब अन्न। बदन्न।
काळबूट-(न०) वह ढांचा जिस पर मढ़कर जूता तयार किया जाता है। कलबूत।
काळबेलियो-(न०)सँपेरा।
काळ भुजाळ-(न०) काल से भी युद्ध करने में समर्थ वीर।
काळमिस-(ना०) कालिमा।
काळमी-(ना०) १ लोक देवता पाबूजी की घोड़ी का नाम। २ काला घोड़ा।
काळर-(ना०) १ खेती के अयोग्य जमीन। २ घास के सग्रह के निमित्त व्यवस्थित रूप से लगाया जाने वाला शिखराकार ढेर। करारी।
काळ तर-(अव्य०) कालातर। समय बाद।
काळ तर-(अव्य०) १ कालातर में। २ समय पाकर।
कालाई-(ना०) १ पागलपन। २ मूर्खता। गहलाई।
काळाई-(ना०) कालापन। श्यामता। कालास।
काळाखरियो-दे० काळ आखरियो।
काळागर-(न०) अफीम।
काला गहिला-रो-दातोर-(वि०)१ पागल के समान दानी। अति उदार। २ असहाय व निबलो का पालन पोषण करने वाला।
काळा-धोळा-(न०) काली करतूतें। बदनामी। २ छल कपट। ३ उलटे काम। अनुचित काम। ४ बदचलनी।
कालापणो-दे० कालाई।
काळा पीळा-(न०) १ कार्य सपादन करने के लिये उचितानुचित का विचार नहीं करने की कार्य प्रणाली। २ कार्य सपादन के लिये उठाया गया कठिन परिश्रम। ३ काम सम्पादन के लिए किया गया गुनाह करने और भाग-दौड़ करने की कठिन और हैरानी की कार्यवाही। ४ उस कार्य किया जाने वाला गुजारा। ५ अनुचित कार्य।
कालावाला (न०) १ मानी मानता विनती। २ शुद्ध मन की प्रार्थना। ३ खुशामद। गिड़गिड़ाहट। आजिजी।
काळास-(न०) १ कालापन। कालिमा। २ साधारण कालापन ३ दुर्भावना। ४ पाप।
काळाहण-(ना०) काली घटा। काले बादलों की घटा।
काळातर-दे० काळ तर।
काळातरै-दे० काळ तर।
काळिज-(न०) कलजा।
काळियार-(न०) काला हरिण।
काळियो-(वि०) १ काले वर्ण का। (न) १ नाग। २ अफीम।
कालिगडो-(न०) सपूर्ण जाति का एक राग।
कालिंद्री-(ना०) यमुना नदी।
काली-(वि०) १ पगली। २ मूर्ख।
काळी-(वि०) काले रग की। काली। (ना०) काली देवी। कालिका।
काळी काठळ-(ना०) काली घटा। मेघ घटा। काळायण।
काळी छांग-दे० काळा थाट।
काळीजीरी-(ना०) एक पेड़ की पत्ती के बीज।
काळीथाट-(ना०) बकरियों का समूह। टाटा छांग। छांग।
काळी द्रह-(ना०)वृन्दावन के पास यमुना नदी का एक द्रह जिसमें कालिय नाग रहता था।
काळीधार-(ना०) १ काली द्रह। काली दह। २ भयकर आफत। भारी दुख।
काळी नाग-(न०) व्रज में यमुना नदी के काली दह में रहने वाला एक प्रसिद्ध जन

विषधर जिसको श्रीकृष्ण ने वहाँ से भगा कर पुनः समुद्र में रहने के लिए विवश किया था। कालिय नाग।

काळी पीळी-(वि०) १ काली और पीली। काले और पीले रंग की। २ भयंकर। (ना०) १ जीवन के उतार चढ़ाव। २ बड़ी बड़ी आपत्तें।

काळी पीळी (वि०) १ अत्यधिक। घोर। २ तेज। प्रचंड। ३ भयंकर। भयावनी। ४ भयंकर आंधी। ५ ग्रीष्म की तेज धूप और घोर अंधेरी रात का विशेषण शब्द।

काळी माता-(ना०) कालिका देवी।

काली रा कळस-(न०) १ पगली स्त्री के सिर पर उठाये हुए घड़े के अखंडित रहने की मनोभावना। (वीरों के जीवन पर आरोपण) २ युद्ध करने के लिए अपने निश्चय से नहीं हट कर मृत्यु का वरण करने वाले वीर का एक विशेषण। मरणोन्मत्त वीर का एक विशेषण। ३ पगली के सिर का घड़ा। ४ राजस्थानी लोक कथाओं का एक कथानक रूढ़ि। ५ वीर साहित्य का एक उपमा अलंकार। ६ एक कवि समय।

काळींगो-(न०) १ बरसाती तरबूज। २ तरबूज। मतीरो।

काळींदार-(न०) भयंकर विषैला काला सर्प।

काळूंडी-(न०) १ कलंक। लाञ्छन। २ बहुत बड़ा कलंक।

काळूंस-देo काठास। काळूंडी।

काले-(अव्य०) आने वाले या बीते दिन को।

काळै कोसां-(अव्य०) १ बहुत दूर। २ दुर्गम और दूर।

काळै नाग रो झाग-(न०) अफीम।

काला-(वि०) १ पागल। उन्मत्त। २ मूर्ख। ३ रणोन्मत्त। ४ मतवाला। मस्त।

काळो-(वि०) १ काले रंग का। काला। २ खोटा। ३ दुखी। ४ भयंक… (न०) १ सर्प। २ अफीम। ३ कनक…

काळो आखर-(न०) १ दुर्भाग्य। … मृत्यु। ३ मृत्यु संदेश। मृत्यु संदेश पत्र। ४ काली स्याही से लिखा अक्षर… यथा – काळा आखर भैंस बराबर।

काळो ऊन्हाळो-(न०) अत्यधिक गर्मी वा… ग्रीष्मकाल।

काळोकुट-(वि०) अत्यन्त काला।

काळो टीको-(न०) कलंक का टीका… कलंक। लाञ्छन।

काळो तारो-(न०) १ पिता की मा… वाले शत्रु का बदला नहीं लेने वाले… की कलंक रूप उपाधि। २ युद्ध में भ… जाने वाले व्यक्ति का कलंकारी नाम…

काळो तुतर-(वि०) बिलकुल पागल।

काळो पाणी-(न०) शराब। दारू।

काळो पाणी-(न०) १ काला पानी। … अंग्रेजों के शासन काल में अण्डमान द्वीप… भेज देने की सजा। ३ देश निकाल… ४ यातायात और पानी आदि… असुविधाओं वाला निकृष्ट स्थान।

काळा-पीळा-(वि०) १ क्रोधित। (न… काला और पीला।

काळो मूंडो-(न०) किसी नीच काम क… का कलंक। काला मुँह।

काळो मूंडो करणो-(मुहा०) १ कुप… या दुष्टजन का आँखों के आगे से… होना। आंखां अदीठ होणो। २ कलंकि… होने का काम करना।

काव-(ना०) १ मृत्यु। २ अवधि। मया… म्याद।

कावड़-(ना०) १ काँवर। बहँगी। … देवी देवता धर्मात्मा और भक्त आ… पुण्य पुरुषों के रंग बिरंगे चित्रों की अन… छोटे छोटे खानों वाली एक छोटी पट… ३ इन चित्रों को दिखाते समय कावड़ि…

द्वारा किया जाने वाला वर्णन। कावड वाचन।
कावतरा खोर-(वि०) चाल बाज। षडयन्त्र-कारी। छलिया। जाळसाज।
कावतरो-(न०)१ कारस्तानी। जाळसाजी। धोखा। दगो। २ प्रपच। कपटपूर्ण योजना। ३ साजिश। षडयन्त्र।
कावळ-(वि०) १ उलटा। विपरीत। २ खराब। बुरा। ३ अनुचित। बेठीक। सावळ का विपरीत शब्द।
कावळियार-(वि०) १ बदचलन। कुमार्गी। २ चालाक। ३ बेईमान।
कावो-(वि०) १ प्रभावित। २ उपकृत। आभारी। ३ छली। (न०) १ चक्र। वृत्त। २ युद्ध। ३ वाद विवाद। ४ शत्रु। ५ चोर। ६ छल। कपट ७ शत्रुता। दुश्मनी।
काव्य-(न०) १ कविता। काव्य। २ पद्य पुस्तक।
काशी-दे० कासी।
काशी करवत-(ना०) १ काशी का वह स्थान जहाँ मोक्ष की प्राप्ति के लिये लोग आरे से कटकर मर जाते थे। २ नये जन्म में इच्छित फल प्राप्ति के लिये काशी मे जाकर शरीर पर करौत चलवाने की क्रिया।
काशीनाथ-(न०) शिव।
काशीफल-(न०) कुम्हडा। कद्दू। कोळो।
काश्त-(ना०) १ खेती। २ खेती का काम। (वि०) जोता बोया हुआ।
काश्तकार-(न०) कृषक। किसान।
काश्तकारी-(ना०) १ खेती बाडी। २ कृषिकर्म। खेती।
काश्मीर-दे० कश्मीर।
काश्मीरी-दे० कश्मीरी।
काश्यप-(न०) १ एक प्रसिद्ध ऋषि। २ कणाद ऋषि।
काषाय-(वि०) गेरुए रंग का। भगवो।
काष्ठ-(न०) लकडी। काठ।
कासग-(सर्व०) १ किससे। किणसूं। २ किसकी। किणरी।
कासप-(न०) कश्यप ऋषि।
कासप उत-(न०) सूर्य। कश्यप सुत।
कासप तन-दे० कासप उत।
कासपमेर-(न०) कश्यपमेरु। काश्मीर।
कासपराव उत-दे० कासप उत।
कासपराव सुत-(न०) सूर्य।
कासप सुत-दे० कासप उत।
कासार-(न०) तालाब। पोखरा।
कासी-(ना०) गगाजी के तट पर बसा हुआ भारत का अति प्राचीन विद्या धाम व तीर्थ स्थान। प्रमुख और पावन सप्त पुरियो मे से एक। काशी। वाराणसी। शिवपुरी।
कासी करवत-(ना०) प्राचीन समय मे मुक्ति के लिये काशी मे जाकर शरीर को करवत से चिरवाकर मृत्यु प्राप्त करने की क्रिया। दे० काशी करवत।
कासी भवर-(न०) भरव। भरूजी।
कासीद-(न०) पत्रवाहक। कासिद।
कासू-(सर्व०) १ क्या। काऊ। कांई। २ कौनसा। (क्रि०वि०) १ कैसे। किस प्रकार। २ किस लिये। किणसारू। किणकाम।
काह-(सर्व०) १ क्या। कांई। कई। २ कौनसा। (क्रि०वि०) १ क्यों २ कहाँ से। (अव्य०) अथवा। या। (न०) रस। सार। तत्व।
काह काढणो-(मुहा०) हैरान करना। परेशान करना।
काहण-(सर्व०) किस। कौन। (क्रि०वि०) किसलिये। क्या।
काहणू-(क्रि० वि०) किसलिये। किणसारू।

काहरा-(क्रि०वि०) किस समय। कब। कद। करै।
काहळ-(न०) एक बडा ढोल जो युद्ध के समय बजाया जाता था।
काहली-(वि०) १ उद्विग्न। व्यग्र। २ पगला। भोली। ३ डरपोक। कायर। (ना०) १ काहिली। सुस्ती। २ थकान।
काहलो-(वि०) १ भोला। २ पागल।
काहुल-(न०) १ युद्ध का ढोल। २ बडा ढोल।
काहुलणो-(क्रि०) १ युद्ध करना। २ क्रोध करना। ३ युद्ध का ढोल बजाना।
कांई-(सव०) १ एक प्रश्न वाचक शब्द। क्या। कई। (क्रि०वि०) १ कुछ। २ क्यों। कैसे। ३ कसे।
कांकड-(ना०) १ सीमा। सरहद। २ किनारा। ३ जंगल।
कांकण-(न०) १ कंगन। कंकण। कडा। २ युद्ध। कांकळ।
कांकण-डोरडो-दे० कांकण डारो।
कांकण-डोरो-(न०) १ वर वधु के हाथों में बांधा जाने वाला मंगल सूत्र। विवाह सूत्र २ दृष्टि दोष से बचने के लिये वर वधु के हाथ पांवों में बांधा जाने वाला एक तांत्रिक सूत्र।
कांकणियो-(न०) स्त्रियों की वेणी को अधिक लम्बी करने के लिये उसमें गूंथा जाने वाली एक विशेष प्रकार की वेणी। आंठी।
कांकणी-(न०) स्त्रियों की कलाई में पहिने जाने वाला एक आभूषण।
कांकर-(क्रि०वि०) १ कैसे। किस प्रकार। कीकर। २ क्यों। क्युं। (न०) १ कंकर। २ कंकरीली भूमि।
कांकरी-(ना०) कंकड। ककरी।
कांकरो-दे० काकरा।
कांकरोली-(ना०) मेवाड़ में वल्लभ संप्रदाय का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।
कांकळ-(न०) युद्ध।
कांकियो-(न०) कंघा।
कांकी-(ना०) कंघी।
कांगरी-(ना०) १ छोटा कंगुरा। २ छोटा बुर्ज। बुर्जी।
कांगरो-(न०) १ कंगुरा। २ बुर्ज।
कांगलो-(न०) कंगला।
कांगसियो-(न०) कंघा।
कांगसी (ना०) कंघी।
कांगाई (ना०) १ झगडा। २ कंगाली। ३ कांगा की झगडा करने की रीति भांति।
कांगारोळ (ना०) १ लडाई झगडा। २ वाद विवाद। धुक्का फजीती। ३ कंगालों की लडाई। ४ कंगालों सा व्यवहार। ५ कंगलापन।
कांगीरासो-दे० गांगीरासो।
कांगो (न०) १ भीख मांगने वाली एक मुसलमान जाति। २ इस जाति का व्यक्ति। लडझगड कर भीख वसूल करने वाला। कंगला। (वि०) झगडा करने वाला।
कांचळियो पंथ (न०) एक वाम मार्ग। चोली पंथ।
कांचळी-(ना०) १ कंचुकी। २ सांप की कैंचुली। ३ विवाह आदि अवसरों पर लगने वाला पुत्री का नेग। पुत्री नेग। कन्या नेग। ४ भात। माहेरो। मामेरो। हाथ कांचळी।
कांचळी करणो-(मुहा०) माहेरा करना। भात भरना। हाथ कांचळी करणो।
कांचवो-(न०) कंचुकी। कांचळी।
कांचू-(न०) कंचुकी। कांचळी।
कांजी-(ना०) धान्याम्ल। एक खट्टा पेय।
कांभणो-(क्रि०) टट्टी फिरने के समय कब्जी के कारण जोर करना और जोर

करते समय मुँह से 'ऊं' आदि शब्द निकलना। कनसना। काँखना।

काँटारखी-(ना०) जूती। पगरखी।

काँटारखो-(न०) जूता। पगरखो।

काँटाळो-(वि०) १ काँटावाला। २ वीर। (न०) १ हिंसक पशु। २ सिंह। ३ एक घास।

काँटावाड-(ना०) बेरी की कँटीली डालियां से बनाया हुआ अहाता। काँटों का घेरा। बाड।

काँटियो-(न०) १ एक मुसलमान जाति। २ इस जाति का पुरुष। ३ हमिया।

काँटी-(ना०) १ तोलने का एक छोटा काँटा। २ एक घास।

काँटी-लाग-(न०) एक प्राचीन कर।

काँटदार-(वि०) वह जिसमे काँटे लगे हों। काँटो वाला। काँटाळो।

काँटो-(न०) १ काँटा। २ साँप बिच्छू आदि विषैले जतु। ३ बिच्छू आदि का डक। ४ डडी के बीचाबीच खडी नोक वाली तराजू। काटा। ५ स्त्रियो के नाक का एक गहना। काँटा। ६ समतोल के लिये तराजू की डडी के बीचोबीच लगी रहने वाली नोक। ७ घडी की सूई। ८ अवरोध। बाधा। ९ शका। वहम। (वि०) दुखदायी।

काँट्रेक्ट-(न०) ठीका। कट्राट।

काँट्रेक्टर-(न०) ठीका लेने वाला व्यक्ति। ठीकेदार।

काँठळ-(ना०) उठती हुई काली मेघ घटा। बादलो की घटा। कळायण।

काँठळियो-(न०) १ प्रति समय सेवा मे या पास रहने वाला व्यक्ति। २ राज्य के समीप रहने वाला। राज्य का पडौसी। ३ पडौसी देश की सीमा का जागीरदार। ४ नित्य पास मे रहकर सेवा करने वाला जागीरदार। ५ पहाड़ो मे रहने वाली जाति। ६ इस जाति का व्यक्ति। ७ सीमा रक्षक। ८ पडौसी राज्य का लुटेरा। ९ लूट खसोट करने वाला पहाडी लुटेरा।

काँठलो-(न०) १ गले मे पहनने का एक आभूषण। २ हार।

काँठायत-(वि०) १ राज्य की सीमा पर रहने वाला। २ सीमा रक्षक।

काठिया वरण-(न०) १ सरहद पर रहने वाले लोग। २ सरहद की रक्षा करने वाले लोग। ३ धनुष बाण आदि शस्त्र पास मे रखने वाली शिकारी जाति के लोग। भील, मीणा आदि।

काठीर-दे० कठोर।

काठ-(क्रि० वि०) १ निकट। पास। २ किनारे पर।

काठो-(न०) १ नदी आदि का किनारा। २ सीमा। किनारा।

काड-(न०) १ बाण। तीर। २ धनुष के बीच का भाग। ३ ग्रथ का एक भाग। प्रकरण। काण्ड। ४ दुर्घटना।

काडा-दे० काँडो।

काडी-(न०) १ तीर कमान। धनुष। २ तीर कमान से शिकार करने वाला व्यक्ति। ३ कौआ। कागलो।

काँडो-(न०) १ बुराई। निंदा। २ खोटी चर्चा। ३ बदनामी। अपकीर्ति। ४ झगडा टटा।

कादो-(न०) प्याज। काँदा।

काध-(ना०) १ कधा। २ जूए की रगड़ से बैल की गरदन पर होने वाला गड्डा। बैल के गरदन की चमडी का मोटा और सख्त होना। ३ लाश की अरथी को श्मशान ले जाते समय दिया जाने वाला कधा।

काधमल-(वि०) वीर।

काधाळ-(वि०) १ बडे कधो वाला। २ वीर। ३ बैल।

कांचियो-(वि०) १ शव की ठठरी को बचा देने वाला । २ चापलूस ।
कांजो-(न०) कच्चा । खवो ।
कांप-(ना०) १ नदी में बह कर आई हुई मिट्टी । (न०) सेना-शिविर । कम्प ।
कांपणी-(ना०) कंपन । थरथराहट । धूजणी ।
कांपणो-(क्रि०) १ कांपना । थरथराना । धूजना । २ भय खाना । डरना ।
कांब-(ना०) १ बेंत । छड़ी । २ लम्बी पतली टहनी । ३ सोने या चांदी को गाल कर रजे में ढालने से बनी लम्बी छड़ ।
कांबड़-(न०) १ रामसा पीर (रामदेव) के चमार जाति के भक्त । २ तंबूरे पर गान का काम करने वाली एक जाति । ३ चमार जाति का याचक ।
कांबड़ियो-दे० कांबड़ ।
कांबड़ी-(ना०) छड़ी । बेंत । कांब । तडी ।
कांबळ-(ना०) दे० कामठ ।
कांबळी-(ना०) कमली । कम्बल ।
कांबळो-(न०) कम्बल ।
कांबाटणा-(क्रि०) बेंत से मारना । बेंत से प्रहार करना ।
कांबी-(ना०) १ खुले पन्नों की हस्तलिखित पुस्तक को पढ़ते समय पुस्तक अंगुलियों के पसीने से मैली न हो इसलिये अंगूठे के नीचे रखी रखी जाने वाली एक काष्ठ पट्टिका । कम्बिका । २ पांव का एक गहना । ३ पतली छड़ी । ३ सोने या चांदी को पिघाल कर रजे में ढाली हुई लंबी पतली शलाका । डाल्की । ढाळी ।
कांवेटणो-दे० कांबाटणो ।
कांय-(क्रि०वि०) १ कुछ भी । २ किस लिये ।
कांयरो-(वि०) १ क्या । २ किस बात का । किण बात रो ।
कांवळी-(ना०) चील पक्षी ।
कांवळो-(न०) पीली चोंच और सफेद पांखों वाला गिद्ध जाति का एक पक्षी ।
कांस(न०) एक प्रकार की घास ।
कांसटियो-(न०) कँसारा । ठठेरा । २ कांसी के बरतन बेचने वाला व्यापारी ।
कांसाळ-(न०) १ झांझ । कँसताल । ताल । २ मंजीरा ।
कांसा रोग-(न०) १ गरीबी के कारण खाने को नहीं मिलने की स्थिति । भूखा मरने की हालत । २ गरीबी ।
कांसो-(न०) किसी व्यक्ति के लिये उसके घर पर थाल में परोस कर भेजा जाने वाला भोजन । २ परोसा हुआ भोजन । भोजन । ३ कांसे का बना थाल या थाली ।
काहटो-(न०) किवाड़ की सांकल । कुंडी । कूंटो ।
कि-(अव्य०) १ अथवा । या । २ मानो । गोया । ३ क्या । ४ कैसे ।
किओमडो-(न०) ब्राह्मण के लिये अपमान जनक शब्द । ब्राह्मण ।
किचरणो-(क्रि०)१ पीसना । २ दाबना । ३ कुचलना । रौंदना ।
किजातियो-(अव्य०)एक प्रश्न पद जिसका अर्थ-कौन सी जाति का । किस जाति का अथवा जाति से कौन हो होता है ।
किठा-(अव्य०)कौनसी जगह । किस जगह । कहाँ ।
किण-(सर्व०) १ किस । २ किसने । ३ किसके । (ना०) १ किसी वस्तु की निरंतर रगड़ से हथेली की चमड़ी का ऊपरी भाग का निर्जीव होकर मोटा हो जाना । आइठाण । आटण । २ घाव पर आने वाला मोटा चमड़ा । खरूट ।
किणणो-(क्रि०) १ कराहना । २ रोना । ३ खुशामद करना ।

किरण मात-(अव्य०) १ किस प्रकार। २ किस लिये।
किरणरी-(सर्व०) किसकी।
किरणरो (सव०) किसका।
किरणही-(सव०) किसी ने।
किरणाँरी-(सव०) किनकी।
किरिणपरि-(अव्य०) किसी भी प्रकार।
किरिणय-(अव्य०)१ किसी भी। २ किसी ने भी।
किरणी-(सव०) १ किसी। २ कौनसी।
किरणँ-(सव०) किसन।
कित-(क्रिoवि०) कहाँ। किधर। किस जगह।
कितरो-(वि०) कितना।
कितरोइक-(वि०) कितनाक।
किता-(वि०) कितन।
किताइक-(वि०) कितने ही।
कितावर-(न०) उपकार। किरियावर।
कितो-(वि०) कितना।
कितोक-(वि०)१ कितना सा। कितनाक। २ कितना। ३ कितना थोडा।
कितोसोक-(वि०) १ कितना सा। २ कितना थोडा। ३ थोडा सा।
कित्ति-(ना०) कीर्त्ति। यश।
कित्ती-(वि०) कितनी।
कित्तो-(वि०) कितना।
किथ-(सव०) १ कौन। २ कौनसा। (क्रि०वि०) कहाँ।
किथा-(क्रि०वि०) कहाँ। किस जगह।
किथिये-(क्रि०वि०) कहाँ। किस जगह।
किथै-(क्रि०वि०) कहाँ। किस जगह।
किन-(अव्य०)१ अथवा। या। २ मानो। गोया।
किनकी-(ना०) छोटा पतग। गुड्डी।
किनको-(न०) पतग। कनकौवा। गुड्डी।
किना-(अव्य०)१ अथवा। या। २ मानो। गोया।
किनार-दे० किनारी।
किनारी-(ना०) १ किनारा। छोर। २ गोटा किनारी। ३ कपडे के छोर का भाग जो भिन्न रग का होता है।
किनारैं-(क्रि०वि०) १ दूर। अलग। २ जुदा। अलग। भिन्न। ३ तट पर।
किनारो-(न०) १ किनारा। तट। कांठो। २ छोर। अतिम सिरा।
किनियाणी-(ना०) चारणो की किनिया शाखा म उत्पन्न करणी देवी का एक नाम।
किनो-द० किनको।
किम-(क्रि०वि०) १ क्यो। २ कस। किस प्रकार।
किमकर-(क्रि०वि०) १ कसे। २ किस उपाय से। कैसे करके।
किमाड-दे० किवाड।
किमाडियो-दे० किवाडियो।
किमाडी-दे० किवाडी।
कियो-(वि०) कौनसा। (सव०) कौन। (क्रि० भू०) किया। बनाया।
किर-(अव्य०) माना। जसे। गाया। (न०) निश्चय।
किरकांटियो-(न०) गिरगिट। काकीडो। किरडो।
किरकिर-(ना०) १ आटा आदि भोजन सामग्री मे मिली हुई रेती। २ अपयश। ३ लाछन।
किरकिरो-(न०) १ विघ्न। बाधा। २ बनते हुये उत्सव आदि कार्यों में पडने वाला विघ्न। कार्यावरोध।
किरच-(ना०) सीधी तलवार।
किरचो-(न०) १ टुकडा। २ सुपारी का टुकडा।
किरडो-(न०) १ छिपकली की जाति का विविध रग बदलन वाला एक जतु। गिरगिट। किरकांटियो। काकीडो।

किरण-(ना०) १ गोटा किनारी । तार किनारी । २ बादले की भालर । ३ प्रकाश की रेखा । रश्मि ।

किरणभाळ-(ना०) ज्वाला के समान तप्त किरणों वाला सूर्य । सूर्य । आदित्य ।

किरणाळ-(न०) १ सूर्य । २ चंद्र । ३ तेजवान पुरुष । ४ यशस्वी वीर पुरुष । (वि०) १ आभायुक्त । २ तेजस्वी ।

किरणाळो-(वि०) १ तेजस्वी । २ वीर । (न०) सूर्य ।

किरणियो-(न०) १ महंत श्रीपूज आचार्य और राजा लोगों की सवारी के साथ रहने वाला सोने या चांदी से निर्मित लंबे डंडे वाला गोल या पत्तेनुमा एक राजचिन्ह जिसकी एक ओर सूर्य और दूसरी ओर चंद्रमा किरणों सहित चित्रित किये हुये होते हैं । भान्ड । भामंडल । २ छाता ।

किरणी-(ना०)सहारा । आश्रय । आसरो ।

किरतव-दे० करतव ।

किरतबी-दे० करतबी ।

किरतार-दे० करतार ।

किरती-(ना०) १ कृत्तिका नक्षत्र । २ कृत्तिका नाम के छः तारों का समूह ।

किरपण-(वि०) १ कंजूस । कृपण । २ नीच ।

किरपा-(ना०) कृपा । मेहरबानी ।

किरपाण-(ना०) कृपाण । किरपान । तलवार खाडो ।

किरमजी-(वि०) किरमिजी । गहरा लाल ।

किरमर-(ना०) तलवार । तरवार ।

किरमर-भल-दे० किरमर हथो ।

किरमर-हथो-(वि०) १ खड़गधारी । २ मुंहता नणसी का एक विशेषण ।

किरमाळ-(ना०) १ तलवार । (न०) १ तेजस्वी पुरुष । २ वीर पुरुष । ३ सूर्य ।

किरमाळी-(वि०) खड़गधारी । (ना०) १ खड़ग । २ सूर्य । तलवार ।

किरमिर-(ना०) तलवार ।

किरळी-(ना०) तीव्र चिल्लाहट ।

किर वाणी-(ना०) तलवार ।

किरसाण-(न०) १ किसान । कृषक । २ खेती । कृषि ।

किरसाणी-(न०) कृषक । किसान ।

किरसाणी-(न०) खेती करने वाले लोग । कृषक जाति ।

किराड-(न०) १ किरडे (गिरगिट) के समान भाव चेष्टा और विचार आदि के रूप में विविध रंग बदलने वाली शोषक वृत्ति वाला व्यक्ति । २ किराडू नगर के नाम के ऊपर से प्रसिद्धि में आई हुई बनिया की एक सज्ञा । बनिया । ३ नदी का किनारा । ४ किनारा । ५ कलार ।

किराडू-(न०) १ मारवाड के मालाणी प्रान्त का खंडहर रूप एक प्रसिद्ध प्राचीन एतिहासिक नगर । किराटकूप । २ मारवाड के नौ बडे दुर्गों में से एक । ३ मारवाड के इतिहास प्रसिद्ध नगर और उसके किले का नाम ।

किराणो-दे० किरियाणो ।

किरात-(न०) १ एक जंगली जाति । २ भील ।

किरायतो-(न०) प्याज के बीज ।

किरायरो-दे० किरायतो ।

किरायो-(न०) किराया । भाडा । भाडो ।

किरासू-(सव०) किससे ।

किरि-(अव्य०) १ अथवा । किंवा । २ मानो । गोया । जैसे ।

किरिया (ना०) १ मृतक का अशौच निवारणार्थ किया जाने वाला बारह दिनों तक का क्रिया कर्म । २ मृतक का ग्यारहवें दिन का श्राद्ध आदि क्रिया कर्म । एकादशा । ३ व्यवहार । आचरण ।

किरियाणो-(न०) १ सोंठ पीपर पीपरा मूळ अजवायन चिरोंजी बादाम, इला

यची आदि पसारी के यहाँ मिलने वाली वस्तुएँ। पसारठ की वस्तुएँ। किराना। २ प्रसूता के लिये बनाये जान वाले पौष्टिक सधाने की वस्तुएँ।

किरियावर-(न०) १ श्रेष्ठ कम। दे० काज किरियावर और क्यावर २ उपकार।

किरियावरो-(वि०) १ किरियावर करने वाला। २ अहसान करने वाला। ३ श्रेष्ठ कामो को करने वाला। ४ कीर्त्तिमान। यशस्वी।

किरी-(ना०) १ पथ्य। परहज। २ तने के बीच का (काला और) सख्त भाग।

किरीट-(न०) मुकुट। मुगट।

किरीटी-(न०)१ कुक्कुट। मुर्गा। कूकडो। २ मोर। ३ इन्द्र। ४ श्रीकृष्ण। ५ किरीट धारण करने वाला।

किरै-(न०) १ हाहाकार। कुहराम। रोना पीटना। २ शोक। उदासी।

किरै-फूटणो-(मुहा०) हाहाकार मचना। रोना पीटना।

किरोडी-दे० करोडी।

किल-(अव्य०)१ या। अथवा। २ निश्चय।

किलकिला-(ना०) एक प्रकार की तोप। (न०) १ तोप का गोला। २ बडे वेग की उडान के साथ जल जतुओ को पकड कर खाने वाला एक पक्षी। ३ किल किल शब्द। किलकिलाहट।

किलकोळ-(ना०) १ कलोल। क्रीडा। केलि। २ हँसी मजाक।

किलच-(न०) १ मुसलमान। २ एक पक्षी।

किलम-(न०) मुसलमान। (ब व-किलमां किलमाण। किलमायण।

किलग-(न०) १ एक दस्य। २ कल्कि अवतार।

किलगी-दे० कलगी।

किलव-(न०) मुसलमान। (ब व-किलबा किलबाण किलबायण किलबाण किलबायण)।

किलो-(न०) किला। दुर्ग।

किलोडो-(न०) १ छोटे बछडे का बल। २ छोटी उमर का बल।

किलोळ-(ना०) १ कल्लोल। उमग। २ तरग। लहर। ३ आनद। मौज।

किवळो-(न०) १ सूअर। कवळो। २ विना मात्रा का वर्ण। कवळो।

किवाण-(ना०)कृपाण। तलवार। तरवार।

किसकध-(ना०) किष्किन्धा।

किसडी-(वि०) १ कसी। २ क्या। (सव०) कौनसी।

किसडो-(वि०) १ कसा। २ क्या। (सर्व०) कौनसा।

किसड-(सव०) कौनसा।

किसन-(न०) श्रीकृष्ण।

किसनाग-(न०) अफीम।

किसनागर-(न०) अफीम। अमल।

किसब-(न०)१ धधा। व्यवसाय। २ वश्य वृत्ति। ३ कला। हुनर।

किसबण-(ना०) वेश्या। पातर।

किसम-(ना०) १ किस्म। प्रकार। २ ढग। तर्ज।

किसमत-(ना०) भाग्य। तकदीर। किस्मत। तकदीर।

किसमिस-(ना०) छोटी दाख। किशमिश।

किसान-(न०) कृषक। खेतीखड। किरसाण।

किसी-(वि०) कौनसी।

किसू-(वि०) १ कौनसी। कौनसा। २ कसी। कसा। ३ क्या।

किसो-(वि०) १ कौनसा। २ कसा। (सव०) १ कौन। २ कैसा।

किसोर-(वि०) कैसा। स्त्री०-किसीक।

किसोदरि-(ना०) कृशोदरी। पतली कमर वाली।

किस्टो-(न०) जरदालू।

किस्त-(ना०) १ ऋण का थोडा-थोडा करके देने की क्रिया। २ पराजय। हार।

३ हानि। ४ शह (शतरंज में)। किस्त में दिया जाने वाला रुपया।
किस्सो-(न०) १ किस्सा। कहानी। २ झगड़ा। ३ विवाद।
किहड़ो-(वि०) १ कौनसा। २ कैसा।
किहड़ी-(वि०) कमी।
किहकि-(वि०) कुछ। थोड़ा। (सर्व०) कोई।
किहि-(सर्व०) १ किसी के। २ किस।
कि-(सर्व०) क्या।
किंगरी-सारंगी के समान एक ततुवाद्य।
किंजळक-(ना०) १ पराग। पुष्परज। २ केशर। केसर।
किंया-(क्रि०वि०) कैसे। किस प्रकार।
किंवाड़-(न०) १ दरवाजा। २ कपाट। किंवाड़। कमाड़।
किंवाड़ियो-(न०) १ छोटा किंवाड़। कमाड़ियो। २ रसोईघर में भोजनादि रखने का छोटा कोठा।
किंवाड़ी-(ना०) छोटा किंवाड़।
की-(क्रि०वि०) १ क्या। (सर्व०) कौनसा। (अव्य०) का विभक्ति का नारीजाति रूप। (क्रि०भू०) करणो क्रिया का भूतकालिक नारी जाति रूप।
कीकरण-दे० कीकर।
कीकर-(क्रि०वि०) १ किस प्रकार। कैसे। २ किसलिए।
कीकली-(ना०)छोटी बच्ची। कीकी। गीगी।
कीकला-दे० कीको।
कीकी-(ना०) १ छोटी बच्ची। २ आँख की पुतली। आँख का तारा।
कीको-(न०) बालक। छोटा बच्चा। गीगो।
कीच-(न०) १ कीचड़। कादो। २ सुहागा और दानामथी को उबाल कर बनाया हुआ एक लसदार लेप जिससे आभूषण तयार करते समय उसके गड्डों को चिपका कर उनमें मीनाकारी लगाई जाती है। झालन लगाने के पूर्व आभूषण के छोटे छोटे विविध भागों को चिपकाने का एक लेप। चीक।
कीचक मारण-(न०) भीमसेन।
कीचकरिप-(न०) भीम। कीचक-रिपु।
कीचड़-(न०) कदम। पंक। गारो। कादो।
कीचरड़ो-(न०) कीच।
कीट-(न०) १ मल। २ किट्ट। करदो। ३ तपाये हुए घी की तलछट। ४ कीड़ा मकोड़ा। कीड़ा। (वि०) महाकंजूस। अत्यंत लोभी।
कीटी-(ना०) मावा। खोया।
कीटो-(न०) घी तेल आदि में नीचे जम जाने वाला मैल। किट्ट। तलछट। करदो।
कीड़ी-(ना०) चीटी। चीउटी।
कीड़ी नगरो-(न०) १ चीटियों का बिल। २ हथेली और पगथली में होने वाला एक फोड़ा।
कीड़ी वेग-(क्रि०वि०) १ मंदगति। २ धीरे धीरे। (वि०) धीरे धीरे चलने वाला। मंदगति।
कीड़ो-(न०) कीड़ा।
कीणो-(न०) १ साग सब्जी खरीदने के लिये पैसा के ऐवज में दिया जाने वाला अनाज। २ अनाज।
कीत-(ना०) कीर्ति।
कीध-दे० कीधो।
कीधी-(भू०क्रि०) १ की 'करणो' वर्तमान क्रिया का नारीजाति भूतकाल रूप। करदी। बनादी। २ समाप्त कर दी। ३ वर्णन की।
कीधो-(भू०क्रि०) 'करणो' वर्तमान क्रिया का भूतकाल रूप। १ कर दिया। बनाया। निर्माण किया। २ वर्णन किया। ३ समाप्त किया।
कीधोड़ो-(भू०कृ०) (वि०) किया हुआ।
कीन-दे० कीधो।

कीरो-(वि०) बिमणा । किणरो ।

कु-(उप०) सज्ञा शब्द के पहिले लग कर उसमे दूषित भाव उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग । यथा-कुवेला कुठाम । कुकरम आदि । (ना०) पृथ्वी ।

कुअवसर-(न०) प्रतिकूल समय । कुसमय । कवेळा ।

कुओ-(न०) कुआँ ।

कुकडी-(ना०) सूत की लच्छी । अटी ।

कुकरम-(न०) कुकर्म । कुकृत्य । खोटा काम ।

कुकरमी-(वि०) १ कुकर्म करने वाला । २ व्यभिचारी ।

कुकरियो-(न०) कुत्ते का बच्चा । पिल्ला ।

कुकर्म-दे० कुकरम ।

कुकर्मी-दे० कुकरमी ।

कुकवि-(न०) १ अयोग्य तथा कुकर्मी पुरुषों की प्रशसा करने वाला कवि । २ काव्य के कर्म व मर्म को नहीं जानने वाला कवि । ३ ईश्वर तथा देश भक्ति से विमुख कवि । ४ अपढ कवि । अबूझ कवि ।

कुकस-(न०) १ इमली का बीज । कूको । २ बाजरी ज्वार आदि नाज का ऊखल में कूटने से निकला हुआ छिलका । कूको । ३ सडा गला नाज । ४ निस्सार अन्न । (वि०) १ सार रहित । निस्सार । २ कुसार ।

कुकाम-(न०) कुकृत्य । कुकर्म ।

कुकुदवान-(न०) बैल ।

कुखेत-(न०) १ खोटे आचरण वाली स्त्री । व्यभिचारिणी । २ बुरा स्थान । कुठौर । कुठौड ।

कुख्यात-(वि०) बदनाम ।

कुगति-(ना०) दुर्गति ।

कुच-(न०) स्तन । उरोज ।

कुचमाद-(ना०) १ बदमाशी । २ धूर्तता । ३ चालाकी ।

कुचमादी-(वि०) १ बदमाश । २ धूर्त । ३ चालाक ।

कुचरणी-(ना०) १ छेडछाड । २ किसी को तंग करने की क्रिया । ३ चर्चा । ४ निंदा ।

कुचरणो-(क्रि०) कुरेदना ।

कुचलणो-(क्रि०) कुचलना । रौंदना ।

कुचाल-(ना०) १ बदमाशी । २ दुष्टता ।

कुचाली-(वि०) १ कुचाल चलने वाला या करने वाला । बदमाश । २ दुष्ट ।

कुचाव-(ना०) बुरी इच्छा । खोटी चाह ।

कुचील-(वि०) मैला कुचेला ।

कुचीलणी-(वि०) गंदी । मली ।

कुछ-(वि०) थोडा । किंचित ।

कुछाप-(ना०) १ कलंक । २ बदनामी । ३ बुरा प्रभाव ।

कुछेक-(वि०) थोडासा ।

कुछोर-दे० कछोर ।

कुज-(सव०) कोई । (न०) मंगलग्रह ।

कुजकोई-(वि०) हरएक । प्रत्येक । (सव०) हरकोई ।

कुजस-(न०) कुयश । अपयश । निंदा । अपकीरत ।

कुजात-(न०) १ कुत्ता । २ नीच जाति । (वि०) १ नीच । अधम । पतित ।

कुजाव-(न०) १ बुरी बात । २ अवांछित उत्तर । ३ गाली ।

कुजोग-(न०) १ कुयोग । कुसग । २ अशुभ योग । बुरा समय ।

कुजोड-(ना०) अयोग्य जोडी ।

कुजोडी-दे० कुजोड ।

कुजोडो-दे० कुजोड ।

कुटको-(न०) टुकडा । कटको ।

कुटम-दे० कुटब ।

कुटम कबीलो-(न०) कुटुंब के समस्त स्त्री पुरुषों का समूह ।

कुटमजात्रा-दे० कुटबजात्रा ।

कुटम परिवार-दे० कुटम-कबीलो ।

कुटळ-(वि०) कुटिल । कपटी ।

कुटळाई-(ना०) कुटिलता।
कुटब-(न०) कुटुम्ब। परिवार।
कुटब-जात्रा-(ना०) १ संन्यास की दीक्षा लेने के बाद अपने कुटुम्ब मे प्रथम बार भिक्षा माँग कर लाने का विधान। २ प्रव्रज्या ग्रहण के बाद कुटुम्बीजनों से मिलने जाना। ३ प्रवासी का अपनी मातृभूमि और कुटुम्बीजनों से मिलने जाना।
कुटाई-(ना०) १ कूटने का काम। २ पिटाई। ठोकपीट।
कुटार-(न०) १ मडियल टट्टू। २ खराब आदत का पशु। ३ मरियल चौपाया। दुबल पशु।
कुटि-(ना०) कुटिया। झोपडी।
कुटिया-(ना०) कुटि। झोपडी।
कुटिल-(वि०) १ कपटी। २ टेढा।
कुटिलता-दे० कुटिलाई।
कुटिलाई-(ना०) १ टेढापन। २ कपट।
कुटी-दे० कुटि।
कुटीजणो-(क्रि०)१ मार खाना। पिटना। २ कूटा जाना। (औषध आदि का)।
कुटुंब-दे० कुटब।
कुटेव-(ना०) खराब आदत।
कुटम-(ना०)१ कुसमय। बुरावक्त। २ अनुपयुक्त समय।
कुठाम-(न०) दे० कुठौड।
कुठाँव-दे० कुठाम।
कुठौड-(ना०) १ बुरी जगह। कुठौर। २ गुप्तांग।
कुड-(न०) १ दीवाल। २ झोपडा। कड।
कुड-(ना०) १ शिकार के समय हरिण को फसाने का लोहे का बना एक घेरा। २ चरस के मुँह का गोल घेरा।
कुडछली-दे० करछली।
कुडकी-(ना०) देन अथवा दड आदि की वसूली के लिये माल या जायदाद की कीजाने वाली जब्ती। कुर्की। भासजन।
कुडछी-(ना०) करछी। कडछी।
कुडतो-(न०) कुरता। चोला।
कुड-दाँतळी-(ना०) एक चिडिया।
कुडापो-दे० कुटापो।
कुडियारो-(वि०) भूठा।
कुडोळ-(वि०) बेडौल। भद्दा।
कुढ-दे० कुढण।
कुढण-(ना०) १ मनस्ताप। २ क्षोभ। ३ रीस।
कुढणो-(क्रि०) भीतर ही भीतर संतप्त होना। मन ही मन में दुखी होना।
कुढव-(वि०) १ बेढब। २ कठिन। ३ बुरा। (न०) बुरी आदत।
कुढवो-(वि०) १ अव्यवस्थित। २ बेढगा। कुढगा। ३ विवेक रहित।
कुढग-(वि०) बेढगा। कुढगा। (न०) बुरा ढग।
कुढगी-(वि०) १ बेढगी। २ कुढगा। ३ उजड्ड।
कुढगो-(वि०) दे० कुढगी।
कुढापो-(न०) १ ईर्ष्यावश हृदय में जलन उत्पन्न करती हुई प्रतिपल बनी रहने वाली स्मृति। २ कुढन। जलन। ३ ईर्ष्या।
कुढाळो-(वि०) १ प्रतिकूल। २ नियम विरुद्ध। ३ रिवाज के खिलाफ।
कुण-(सर्व०) १ कौन। २ किसने।
कुण पाखै-(क्रिoवि०) १ किसलिये। क्यों। २ किस ओर।
कुणबो-(न०) कुटुम्ब। परिवार।
कुण्या-(सर्व०) १ किसने। २ कौन।
कुत-(ना०) १ वर्षा ऋतु मे होने वाला मच्छर जाति का एक सूक्ष्म जन्तु। २ एक घास।
कुतको-(न०) कुतका। सोटा। डंडा।
कुतबनुमा-दे० कुतुबनुमा।

कुतबसाही नाणो–(न०) कुतुबशाही रुपया।
कुतर–(ना०) द्वारा के चरने के लिये ज्वार बाजरी आदि के डठलों को फरसी से काट कर किये हुये महीन टुकड़े। भूसा।
कुतरणो–(क्रि०) चूहा द्वारा वस्त्र आदि का काटना। २ घास डठल आदि की कुतर करना।
कुतरियो–(न०) १ एक घास। २ कुत्ता।
कुतुब–(न०) ध्रुवतारा।
कुतुबनुमा–(न०) दिग्दर्शक यंत्र।
कुतुबमीनार–(न०) दिल्ली का एक प्रसिद्ध मीनार।
कुत्ताघीसी–(ना०) १ नीच काम। हलका काम। २ हीन वृत्ति।
कुत्ती–(ना०) १ कुतिया। २ कुत नाम की घास।
कुत्तो–(न०) कुत्ता।
कुथान–दे० कुठाम।
कुथाळ–(वि०) विपरीत। उलटा। (ना०) अन अपेक्षित स्थिति।
कुदरत–(ना०)१ ईश्वरीय शक्ति। २ प्रकृति।
कुदान–(न०) १ कुपात्र दान। २ दान में नहीं देने योग्य वस्तु का दान। निकम्मी वस्तु का दान। (ना०) कूदने की क्रिया।
कुधान–(न०) १ कुधान्य। सड़ा हुआ अनाज। २ रांधने में कच्चा या जला हुआ अनाज।
कुधारो–(न०) १ सुधारो का उलटा। कुरीति। २ बिगाड।
कुनण–दे० कुदण।
कुनाम–(न०) अपकीर्ति। बदनामी। (वि०) जिसकी लोग निन्दा करते हों। बदनाम।
कुनार–दे० कुभारजा।
कुनै–(क्रि०वि०) कहाँ। किधर। किस ओर।
कुपथ(न०) १ कुपथ्य। बदपरहेजी। २ खोटा मार्ग। ३ खोटा काम।
कुपथ–(न०) १ उबड़-खाबड मार्ग। ऊजड। कुमार्ग। २ निषिद्ध आचरण। कुमार्ग। ३ बुरा मत।
कुपातर(न०) अयोग्य व्यक्ति। कुपात्र। (वि०)१ अयोग्य। नालायक। २ निकम्मा। ३ बदचलन।
कुपाती–(वि०) १ उत्पाती। उपद्रवी। २ अयोग्य। नालायक। ३ निकम्मा।
कुपार–(न०) समुद्र। अकूपार।
कुपी–(ना०) घी, तेल भरने की चमड़े की छोटी कुप्पी। २ शीशी।
कुपीत–(ना०) १ बुरा हाल। २ तकलीफ। संकट।
कुफळ–(न०) बुरा परिणाम।
कुफायदो–(न०) हानि। नुकसान।
कुफार–(वि०) १ अश्लील। २ कुत्सित। (ना०) अश्लील गाली।
कुबध(ना०) १ कुबुद्धि। मूर्खता। २ चालाकी। धूर्तता। ४ बुरी सलाह।
कुबधमूळ–(न०) चोर।
कुबधी–(वि०) १ कुबुद्धि वाला। चालाक। धूर्त।
कुबाण–(ना०) १ बुरा स्वभाव। २ कुवचन।
कुब्जा–(ना०) कंस की एक दासी का नाम।
कुभारजा–(ना०)१ अकुलिनी। २ कुलटा। ३ झगड़ालू स्त्री। ४ कलहप्रिय स्त्री। ५ फूहड़ स्त्री। कुभार्या।
कुभाव–(न०) १ अप्रीति। २ तिरस्कार।
कुमकुम–(न०) १ केसर। २ कुंकुम। रोली।
कुमकुमो–(न०) १ गुलाब जल। २ गुलाब पुष्प। ३ अबीर गुलाल से भरा लाख का गोला।
कुमजा–(ना०)१ दुख। कष्ट। २ भाग्य। प्रारब्ध।
कुमणा–(ना०)१ विशेपना। २ अवकृपा। नाराजगी। ३ उदास। कुमनस। दुमनस। ४ बेमन। ५ कमी।

कुमत-*(ना०)* कुमति । बुद्धिहीनता ।
कुमया-*(ना०)* अवकृपा । नाराजगी ।
कुमळावणो-*(क्रि०)* कुम्हलाना ।
कुमळीजणो-दे० कुमळावणो ।
कुमत्र-*(न०)* खोटी सलाह । अनुचित परामश ।
कुमाई-दे० कमाई ।
कुमाणस-*(न०)* दुजन । नीच मनुष्य ।
कुमारग-*(न०)* १ खोटा माग । कुमाग । २ खाटा आचरण ।
कुमारमग-*(न०)* आकाशगगा ।
कुमी-*(ना०)* कमी । न्यूनता । मणा ।
कुमीट-*(ना०)* १ अवकृपा । नाराजगी । २ कुदृष्टि । ३ पापदृष्टि ।
कुमुहौ-*(वि०)* बदसूरत । कुरूपा ।
कुमुहो-*(वि०)* १ बदसूरत । कुरूप । २ जिसका मुह देखने से अमगल माना जाता है ।
कुमेत-*(न०)* १ घोडे का लाल रग । २ लाल रग का घोडा ।
कुमेळ-*(वि०)* बेमेल । बेजोड । *(न०)* १ वमनस्य । अनबन । २ दुश्मनी । शत्रुता ।
कुमौत-*(ना०)* बेमौत । इलाज और सेवा सुश्रुषा के अभाव में हुई मृत्यु । २ भूख प्यास से हुई मृत्यु । ३ दुघटना से हुई मृत्यु ।
कुरकी-दे० कुडकी ।
कुरगुरी-*(ना०)* १ पेट दर्द । २ दद ।
कुरखेत-*(न०)* कुरुक्षेत्र ।
कुरभ-*(ना०)* क्रौंच पक्षी ।
कुरटणो-*(क्रि०)* कुतरना । काटना ।
कुरड-*(ना०)* १ दत पंक्ति । २ घोडे की दत पंक्ति । ३ एक घास । ४ पीठ ।
कुरनस-*(न०)* झुक कर किया जाने वाला अभिवादन ।
कुरपण-*(ना०)* कपडे या चमडे आदि का कतरन ।
कुरब-*(ना०)* १ प्रणाम । २ विनय । ३ सत्कार । आदर ।
कुरब कायदो-*(न०)*१ नियमानुसार आदर सत्कार करने की भावना । २ मान । प्रतिष्ठा । ३ सत्कार ।
कुरळणो-*(क्रि०)* दहाड दहाड कर रोना । व्याकुल होकर रोना । कराहना ।
कुरळाट-*(न०)* रोना । चिल्लाना । रुदन ।
कुरळाटो-*(न०)* विलाप । रुदन ।
कुरलो-*(न०)* कुल्ला । गरारा ।
कुरसी-*(ना०)* एक प्रकार का आसन ।
कुरसीनामो-*(ना०)* वशवृक्ष ।
कुरग-*(न०)* १ हरिण । मृग । २ कुमेत रग का घोडा । ३ घोडा । *(वि०)* १ बदरग । खराब रग का । २ असुदर ।
कुरगाण-*(न०)* हिरणों का झुड । मृग समूह ।
कुरगी-*(वि०)* बदरगा । बदरग । *(न०)* हिरण । *(ना०)* हरिणी ।
कुरड-*(न०)* एक खनिज पदाथ ।
कुरद-*(न०)* दीनता । गरीबी ।
कुराण-*(न०)* मुसलमानों का धमग्रथ । कुरान ।
कुराणी-*(न०)* १ कुरान के अनुसार आच रण करने वाला । कुरानी । २ मुसल मान ।
कुरान दे० कुराण ।
कुरीत-*(ना०)*कुप्रथा । खोटीरीत । कुरीति ।
कुरुक्षेत्र-*(न०)* एक तीर्थ स्थान । २ महा भारत का युद्धस्थल ।
कुल-*(वि०)* समस्त । तमाम ।
कुळ-*(न०)* वश । कुटुम्ब ।
कुळकाण-*(ना०)* कुल की मर्यादा ।
कुळकाट-*(वि०)* कुल का कलक लगाने वाला ।
कुलखण-*(न०)* कुलक्षण । अवगुण ।
कुलखणी-*(वि०)* १ बुरे लक्षणों वाली । २ दुराचारिणी ।
कुलखणो-*(वि०)* १ बुरे लक्षणों वाला । औगुणी । २ दुराचारी ।

कुलछ-(न०) कुलक्षण। बुरा लक्षण। बद चलनी।

कुलटा-(ना०) व्यभिचारिणी स्त्री।

कुलडी-(ना०) मिट्टी की छोटी लुटिया। कुल्हिया।

कुलडी मुखो-(वि०) छोटी व भद्दी मुखाकृति वाला।

कुलटो-(न०) कुल्हड़। पुरवा।

कुळण-(ना०) १ व्रण पीड़ा। २ मरम घिस पीड़ा।

कुळणो-(क्रि०) व्रण में पीड़ा होना।

कुळतारक-दे० कुळतारण।

कुळतारण-(वि०) कुल को तारने वाला। कुल की कीर्ति बढ़ाने वाला।

कुळतारणी-(वि०) कुल को तारने वाली। कुल की कान्ति बढ़ाने वाली।

कुळदीवा-(न०)१ कुल दीपक। २ सुपुत्र। सपूत।

कुळदेवी-(ना०) वह देवी जिसकी पूजा इष्ट देव के रूप में कुल में परम्परा से होती आ रही हो। कुल की परम्परागत इष्ट देवी।

कुळदेवता-(न०)वह देवता जिसकी मान्यता कुल में परम्परा से होती आ रही है।

कुळधर-(न०) पुत्र।

कुलनाम-(न०) १ ऊँट। २ कुलक्षय।

कुळपाँति-(ना०) कुल परम्परा।

कुलफत-(न०) १ शत्रुता। २ द्वेष।

कुळबहू-(ना०) १ कुल वधू। कुलीन पुत्र वधू। कुलीन स्त्री।

कुळबाहिरो-(वि०)कुलहीन। कुल बाहिर। अकुलीन।

कुळ बिदरो-(वि०) १ जो वर्णसंकर कुल में उत्पन्न हुआ हो। २ वर्णसंकर।

कुलबे-(क्रि०वि०)छिपे रूप से। छिपे छिपे।

कुळभाण-(न०) १ कुल में सूर्य रूप। २ कुल में श्रेष्ठ। ३ पुत्र। सपूत।

कुळभूखण-(न०) कुल में भूषण रूप। कुल में तारा रूप।

कुळ-मंडण-(न०) १ कुल की शोभा।

कुळमेर (न०) सुमेरु सहित सातों पर्वत। सुमेरु पर्वत का कुल-समूह। सुमेरु कुल। ३ सभी पर्वत।

कुळमोड़-(न०) १ कुल की कीर्ति को बढ़ाने वाला। वंश का सिरमौर। २ कुलीन पुरुष। बडेरो। ३ सुपुत्र।

कुळ लजामणो-(वि०) १ कुल को लज्जित करने वाला। (न०) कुपुत्र।

कुळवाण-(ना०) कुल की मर्यादा।

कुळवंत-(वि०) कुलीन। खानदानी।

कुळवती-(ना०) उच्च कुल में उत्पन्न स्त्री।

कुळवट-दे० कुळवाट।

कुळवट्ट-दे० कुळवट।

कुळवाट-(ना०) १ कुल की उच्च मर्यादा। २ कुल का श्रेष्ठ भाग। ३ वंशपरंपरा।

कुळवान (वि०) कुलीन। कुलवान। सद्वंशज।

कुळसुध-(वि०) शुद्ध कुल का कुलीन।

कुळहीण-(वि०) १ कुलहीन। २ नीच कुल का।

कुळंग-(ना०) बदमाशी।

कुळंगार-(न०) कुल को कलंकित करने वाला। कुलांगार।

कुळंगी-(वि०) बदमाश।

कुळांच-(ना०) १ औंधे सिर गिरना। २ छलांग। कुलांच। कुलांच।

कुळातरो-(न०) मकड़ी।

कुलरू-(ना०) खेत में घास काटने (निदाने करने) की खुरपी।

कुळियो-(न०) बेर आदि फलों का बीज। ठळियो।

कुळी-(न०) भार ढोने वाला मजदूर। (वि०) कुलवान।

कुळी-(ना०) खरबूज तरबूज आदि फलों के बीज। मग्ज। गिरी। २ बीज। दाना।
कुलीण-(वि०) कुलीन। खानदानी।
कुवखाण-(न०) निंदा। बुराई। अपकीर्ति।
कुवचन-(न०) १ खोटा शब्द। २ गाली।
कुवट-(न०) कुमार्ग। कुपथ।
कुवत-(ना०) १ कुवाक्य। २ बुरी बात। ३ गाली। ४ कूवत। बुद्धि। ५ शक्ति। ताकत। कुव्वत।
कुवाडियो-(न०) कुल्हाड़ा।
कुवाडी-(ना०) कुल्हाड़ी।
कुवाण-(ना०) १ कुवाणी। कुवाक्य। २ कटुवचन। ३ गाली।
कुवादी-(न०) शत्रु।
कुविसन-(न०) कुव्यसन।
कुवेळा-(ना०) १ कुसमय। कवेळा। २ आपत्तिकाल। ३ सध्याकाल। साँझ।
कुवण-दे० कुवाण।
कुवत-(क्रि०वि०) १ बिना विचार। २ नाप तोल रहित।
कुशळ-दे० कुसळ।
कुशळलाभ-(न०) ढोला मारू रा दूहा ग्रंथ का सकलन कर्त्ता और कवि।
कुस-(ना०) १ कुश। दभ। २ एक घास। ३ हल की फाल। ४ जल। ५ श्रीराम का पुत्र। ६ एक द्वीप।
कुसनेही-(वि०) १ कृत्रिम स्नेह वाला। १ कपटी। छली। (न०) १ कपटी मित्र। २ शत्रु
कुसम बाण-(न०) १ कामदेव। २ कुसुमशर।
कुसळ-(ना०) १ क्षेम। मगल। कुशल। (वि०) प्रवीण। चतुर।
कुसळखेम-(ना०)१ कुशल क्षेम। खैरियत। (वि०) सुखी और तदुरुस्त।
कुसळात-(ना०) कुशल क्षेम। खरियत।
कुसळायत-दे० कुसळात।
कुसथळी-(न०) १ द्वारिका। २ प्राचीन द्वारका। कुशस्थली।
कुसग-(ना०) बुरी सगति।
कुसगत-(ना०) कुसग। कुसगति।
कुसगी-(वि०) बुरी सगति म रहने वाला।
कुसप-(न०)१ अनबन। फूट। २ लड़ाई। ३ विरोध।
कुसागडी-(न०) १ बलगाड़ी को चलाने वाला वह गाड़ीवान जो गाड़ी पर सवारियों को बिठाने या भार लादने म बलों की सुख सुविधा का ध्यान नहीं रखता हो। २ कुमार्ग दर्शक। जो गाड़ी को चलाना नहीं जानता।
कुसुआड-दे० कुसुवाड।
कुसुवाड-(ना०)१ गर्भ का समय के पहिले गिर जाना। २ प्रसव सम्बन्धी अनियमितता से होने वाली बीमारी। प्रसवरोग।
कुसूत-(वि०) १ अव्यवस्थित। २ अव्यवहारिक (न०) १ अवर। कुप्रबंध। २ अनाचार। असद्व्यवहार।
कुहकवाण-(न०)१ एक प्रकार की तोप। २ अग्निबाण।
कुहाडियो-(न०) कुल्हाड़ा।
कुहाडी-(ना०) कुल्हाड़ी।
कुहाल-(न०) बुरा हाल।
कुहीजणा-(क्रि०)१ सड़ना। २ बासना। ३ पकाय हुए अन्न का पड़े रहने से दुर्गंध देना।
कुँअर-(न०) १ कुमार। पुत्र। कुवर। २ राजकुमार।
कुँअरी-(ना०) १ कुमारी। पुत्री। २ राजकुमारी।
कुँआरमग-(ना०) आकाशगगा।
कुँआरी-(ना०) कुमारी। अविवाहिता। क्वारी।
कुँआरी घडा-(ना०) १ वह सेना जो कभी न हारी हो। २ वह सेना जिस पर कभी कोई विजय प्राप्त न कर सका हो। ३ वह सेना जो युद्ध के लिये तयार खड़ी हो।

कुँआरो-(वि०) अविवाहित। कुंवारा।
कुंकुम-(न०) १ केशर। २ रोली।
कुंकुमपत्रिका-दे० कंकूपत्री।
कुंज-(न०) १ लताच्छादित मंडप। २ क्रौंच पक्षी। कूंझ। कुरझ।
कुंज गळी-(ना०) १ बगीचे में लताओं से आच्छादित तंग गली। २ वृंदावन की एक गली।
कुंजड़ो-(न०)शाक तरकारी बेचने वाला। माली।
कुंजर-(न०) १ हाथी। २ बाल।
कुंजर-अमरण-(न०) पीपल वृक्ष।
कुंजविहारी-(न०) श्रीकृष्ण।
कुंजा करदार-(न०) पानी पिलाने वाला नौकर।
कुंजो-(न०) सुराही। कूजा।
कुंड-(न०) १ छोटा जलाशय। २ हवन के लिये बनाया हुआ गड्डा। ३ हवन पात्र। ४ यज्ञवेदी। ५ हौज।
कुंडळ-(न०) १ कान का एक गहना। २ संन्यासी के कान की मुद्रा।
कुंडळियो-(न०) एक डिंगल छंद।
कुंडळी-(ना०) १ साँप का गोलाकार में बैठने की एक मुद्रा। २ जन्मपत्री में ग्रहों की स्थिति सूचक बारह कोष्टकों वाला चक्र। ३ सर्प।
कुंडाळी-(ना०) १ छोटा गोल घेरा। २ प्रायः रोटी आदि खाद्य पदार्थ रखने का ढक्कन वाला एक पात्र।
कुंडाळो-(न०) १ वृत्त। गोलाकार। गोल घेरा। २ सूर्य और चंद्र के चारों ओर दिखने वाला वृत्त।
कुंत-(न०) भाला।
कुंतळ-(न०) १ बाल। २ भाला।
कुंतळमुखी-(ना०) कटारी।
कुंद-(न०) जूही की जाति का एक सफेद फूल। (वि०) कुंठित। मंद। २ मुस्त। ३ अस्वस्थ। ४ उदास। खिन्न।
कुंदण-(न०) आभूषण में रत्नों की जड़ाई करने के लिए ताप देकर बनाया हुआ शत प्रतिशत शुद्ध सोना। कुंदन। (वि०) कांतिमान।
कुंदी-(ना०) १ धुले या रंग हुए कपड़ों की तह करके मोगरी से कूटने और उसकी सिकुड़ मिटाने की क्रिया। २ खूब मारना। ३ ठुकाई। पिटाई।
कुंदीगर-(न०)कुंदी करने वाला कारीगर।
कुंदो-(न०) बंदूक का लकड़ी का बना हुआ पिछला भाग। कुंदा।
कुंभ-(न०) १ कलश। घड़ा। २ एक प्रसिद्ध पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष प्रयाग हरिद्वार उज्जैन और नासिक में मनाया जाता है। ३ एक राशि का नाम। ४ हाथी का कुंभस्थल। ५ हाथी का सिर। ६ शिवजी के एक गण का नाम। ७ रावण का भाई कुंभकरण।
कुंभकरण-(न०) १ रावण के भाई का नाम। २ रतनरासो के रचयिता का नाम।
कुंभगढ़-(न०) मेवाड़ के महाराणा कुंभा द्वारा बनवाया गया कुंभलमेर का दुर्ग।
कुंभटगढ़-(न०) मारवाड़ के सिवाने के किले का एक नाम। मरणखळो किलो।
कुंभाथळ-(न०) कुंभस्थल। हाथी का गंडस्थल।
कुंभार-(न०) कुम्हार।
कुंभारण-(ना०) १ कुम्हार की पत्नी। २ कुम्हार जाति की स्त्री।
कुंभीपाळक-(न०) महावत।
कुंभेण-(न०) १ कुंभकरण। २ कुंभज ऋषि। ३ हाथी।
कुँवर-(न०) १ कुमार। २ राजपुत्र। ३ पुत्र।
कुँवर-नजराणो-(न०) जागीरदार के पुत्र के नाम पर अथवा उसके विवाह

आदि के अवसर पर लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।
कुंवर-पछेवडो-दे० कुंवर नजराणो।
कुंवर-पावरी-(न०) पुत्री की ओढ़नी के नाम पर लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।
कुंवर-माणो-(न०) पुत्र के नाम पर लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।
कुंवर-सूखडी-(न०) कुवर के भोजन के निमित्त लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।
कुंवरी-(ना०) १ क्वारी कन्या। २ राज कुमारी। ३ बेटी। पुत्री।
कुंवारिका-(ना०) १ समुद्र में नहीं मिलने वाली नदी। सरस्वती। क्वारिका। २ अविवाहिता। कुमारी। क्वारिका।
कुंवारी-(ना०) १ क्वारी। क्वारिका। अविवाहिता।
कुंवारीघडा-दे० कुंआरीघड़ा।
कुंवारो-(वि०) क्वारा। अविवाहित।
कुंसड-क्रिओसड़ो का विकृत रूप। दे० क्रिओसडो।
कुंहिक-(क्रि०वि०) कुछेक। कुछ।
कुंही-(क्रि०वि०) कुछ भी।
कूक-(ना०) १ पुकार। २ हल्ला। शोर। ३ रुदन।
कूकड-१ कुक्कुट। मुर्गा। (ना०) २ मूख पीलू या लिसोड़े। कोकड।
कूकडकधो-(न०) घोडा।
कूकडला-(न०) १ जमाई के सम्मान या व्याज प्रशसा मे गाये जाने वाले लोक गीत।
कूकडलो-(न०) मुर्गा।
कूकडवाहणी-(ना०) बहुचरा देवी।
कूकडी-दे० कोकनी।
कूकणो-(क्रि०) १ शोर करना। २ पुकारना। ३ पुकार करना। ४ विलाप करना। रोना।
कूकर-(न०) कुत्ता। कूतरो।
कूकरियो-(न०) पिल्ला। कुत्ते का बच्चा। गुलरियो।
कूकवो-(न०) जोर की आवाज। चिल्लाहट।
कूकाऊ-(न०) १ पुकार करने वाला। कूकने वाला। २ अर्ज करने वाला।
कूकी-(ना०) बच्ची। कीकली। कोकी। गीगी। गीगली।
कूको-(न०) १ ऊखल म कूटने स बाजरी आदि अनाज का निकला हुआ छिलका। २ पुकार। ३ शोर। ४ बच्चा। गीगो। कीको। गीगलो।
कूख-(ना०) १ कोख। गर्भाशय। २ पेट। उदर।
कूचा-पाणी-(न०) वह वस्तु जो पानी में बराबर घुल मिल या पिघल गई न हो। जैसे बिना सीझी हुई दाल।
कूचो-(न०) १ फुजला। कूडा करकट। २ घास। भूसा। ३ घास फूस। कचरा।
कूजणो-(क्रि०) १ कोयल का बोलना। २ मधुर शब्द करना।
कूट-(न०) १ झूठ। कूड। छल। २ पर्वत। पर्वत की चोटी। ३ वह पद जिसका अर्थ जल्दी स्पष्ट न हो। ४ चिढ। खीज। ५ कूटने पीटने की क्रिया। (वि०) १ आततायी। अत्याचारी। २ कृत्रिम। नकली।
कूटणो-(क्रि०) १ पीटना। मारना। २ कूटना। (धान औषध आदि)।
कूटळो(लो)-(न०) कचरा। कूडाकरकट।
कूटियाँ-(ना०) १ किसी को चिढ़ाने के लिये उसके हाव भाव तथा बोलने आदि की कीजानेवाली नकल। चिढ़ाना। २ उपहास।
कूटो-(न०) १ पानी म सडा लेने के बाद कागज, चिथड़े आदि को कूटकर मुलतानी

मिट्टी के योग से बनाई हुई (बरतन आदि विविध पात्र बनाने की) लुगदी। २ चूरा। चूरण। ३ कचरा।
कूड-(न०) १ झूठ। असत्य। २ कपट। ठगाई।
कूड कपट-(न०) धोखा धड़ा। छल कपट।
कूडचा-(वि०) झूठा। झूठ बोलने वाला।
कूडणो-(क्रि०) १ डालना। गिरना। २ किसी वस्तु को एक पात्र में से दूसरे पात्र में डालना। उंडेलना।
कूडाबोली-(वि०) झूठ बोलने वाली। झूठ बोलने की आदत वाली।
कूडाबोला-(वि०) झूठ बोलने वाला। झूठ बोलने की आदत वाला।
कूडिया-(न०) १ ऊँट के चमड़े या लोहे का बना हुआ कुप्पा। कुप्पा। २ चरस द्वारा कुए में से पानी निकालने का एक उपकरण। (वि०) झूठ बोलने वाला। झूठा।
कूडो-(न०) १ कुँआ। २ घी या तेल भरने का चमड़े का एक पात्र। कुप्पा। मलवा। चोप। ३ कचरा। (वि०) १ कपटी। २ कुटिल। खोटा। ३ झूठा। ४ व्यर्थ।
कूडो-(न०) कचरे तुस आदि से साफ कर खलियान में लगाया हुआ अनाज का ढेर।
कूडणो-(क्रि०) डालना। उंडेलना।
कूण-(ना०) १ दिशा। २ कोना।
कूत-(ना०) १ कुत्ता घास। २ मच्छर की एक जाति। कुत।
कूतरी-(ना०) कुतिया। कुत्ती।
कूतरा-(न०) कुत्ता। श्वान।
कूतरो-(न०) कुत्ता। कुत्तान।
कूदणो-(क्रि०) १ कूदना। फाँदना।
कूपर-(न०) पगर।
कूपार-(न०) समुद्र। मकूपार।
कूबट-(ना०) पीठ का टेढ़ापन। कूबर।
कूबडो-(वि०) दे० कूबो।
कूबावत-(न०) महात्मा कूबाजी के नाम से प्रसिद्ध एक वैष्णव सम्प्रदाय।
कूबो-(वि०) १ टेढ़ी पीठ वाला। आगे की ओर झुकी हुई पीठ वाला। कूबा। कुबड़ा। ३ टेढ़ा। बाँका। (न०)हल।
कूमटिया-(न०ब०व०) १ कूमट वृक्ष के बीज। भटकणिया। कूमटियों का साग।
कूर-(न०) १ पकाया हुआ भोजन। २ मांस। ३ असत्य। कूड। झूठ।
कूरताण-(न०) १ पकाये हुये भोजन को रखने का पात्र। २ मांस पात्र।
कूरम-(न०) १ कूर्म। कछुआ। २ कछवाहा राजपूत।
कूरो-(न०)मक्की ज्वार आदि मोटा अनाज।
कूलर-(ना०) घी में भुनाये हुये आटे में शक्कर मिलाकर बनाया हुआ खाद्य।
कूलो-(न०) १ कूल्हा। २ चूतड। ३ पेडू के आस पास कमर में निकला हुआ हड्डी भाग। ४ चारण का निंदा सूचक नाम।
कूवा-(न०) १ हल। २ कुआ।
कूं-(प्रत्यय०)कर्म और सम्प्रदान का विभक्ति।
कूंकडी-(ना०) मुर्गी।
कूंकडो-(न०) मुर्गा। कुक्कुट।
कूंकर-(क्रि०वि०) कैसे। क्या कर।
कूंकावटी-(ना०) तिलक करने के निमित्त कुंकुम (रोली) रखने का पात्र।
कूंकू-(न०) कुंकुम। रोली।
कूंकूपत्री-(ना०) १ यज्ञ यज्ञोपवीत और विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर भेजी जाने वाली निमंत्रण पत्रिका। २ विवाह का निमंत्रण पत्रिका।
कूंगचडी-दे० कूंकूपत्री।
कूंगचो-(न०)दमना का बीज। कूंगो। कूंको।
कूंको-(न०) दमनो का बीज।
कूंगो-दे० कूंको।

कूंची-(ना०) १ चाबी। कुंजी। ताला। २ दीवार पोतने का मूंज का बना झाडू-नुमा एक उपकरण। ३ चित्र बनाने का टिटहरी के बालों की बनी कलम। ४ ऊट की पीठ पर कसा जाने वाला पलान। पलाण। चारजामा। ५ उपाय। ६ रहस्य जानने का साधन। कुंजी। ऊट की मूत्रेन्द्रिय।

कूंचीडढो-(न०) कूंचा के समान दाढ़ी वाला। मुसलमान।

कूंज-दे० कूंभ।

कूंजडी-(ना०) १ कुंजड़े की स्त्री। (वि०) झगड़ालू।

कूंजडा-(न०) साग सब्जी और फल बेचने वाली जाति का मनुष्य। कुंजडा। (वि०) झगडालू।

कूंभ-(ना०) क्रौंच पक्षी। कुरज।

कूंट-(ना०) १ दिशा। कोण। २ कोना। कोण। ३ ऊंट के पैर का बंधन। ४ सीमा। ५ छोर। किनारा।

कूंटाळ-(न०) १ सिंह। (वि०) १ दिशा वाला। २ अमुक दिशा में संबंधित।

कूंटणो-(क्रि०) ऊंट के एक पैर को मोड़ कर बांधना।

कूंठो-(न०) सांकल खटकाने का कोड़ा। कुंदा।

कूंडापथ-(न०) एक वाम मार्ग।

कूंडापथी-(न०) कूंडा पथ का अनुयायी।

कूंडी-(ना०) १ पत्थर सीमेंट आदि का बनाया जल पात्र। २ भोजन सामग्री रखने का एक पात्र।

कूंडो-(न०) चौड़े मुंह का एक पात्र।

कूंत-(ना०) १ समझ। बुद्धि। २ उपज। ३ उक्ति। ४ अनुमान। ५ कूंतने का काम। ६ योग्यता। ७ अनुभव। ८ यश। ९ प्रतिष्ठा। मान।

कूंतणी-(ना०) १ अनुमानित तौल पर लगाया जाने वाला मूल्य। २ परिमाण। ३ कूंतने का काम।

कूंतणो-(क्रि०) १ तोलना। २ तोल, माप करना। ३ किसी वस्तु के तोल, माप, परिमाण और मूल्य आदि का अनुमान करना। कूंतना।

कूंताई-(ना०) १ कूंतने की क्रिया या मजदूरी। २ अनुमानित परिमाण मूल्य आदि।

कूंतो-(न०)१ अनुमान से किसी वस्तु का निश्चय किया गया परिमाण या मूल्य। २ कूंतने का काम। ३ खड़ी फसल का अनुमानित परिमाण। (वि०) परखने वाला। परीक्षक।

कूंपळ-(ना०) १ नया और कोमल पत्ता। कोंपल। २ अंकुर।

कूंपळी-दे० कूंपळ।

कूंपली-(ना०) चांदी आदि का बनी काजल रखने की छोटी डिबिया। २ ठुड्डी। नाभि। ३ दोनों पसलियों के नीचे और पेट के ऊपर मध्यभाग का गड्ढा।

कूंपलो-(न०) कुंकुम, अरगजा, चोवा आदि रखने की डिबिया।

कूंपी(ना०) कुप्पी।

कूंळो-(वि०) कोमल। नरम। कच्चो।

कृत-(न०) १ मृत्यु भोज। कृत्य। २ मृतक संस्कार। मृतक का क्रिया कर्म। ३ काम। कृत्य। कर्म। (वि०) किया हुआ। संपादित। २ बनाया हुआ। रचित। ३ पूरा किया हुआ।

कृतघण-(वि०) कृतघ्न। अकृतज्ञ।

कृतघणी-दे० कृतघण।

कृतघ्न-दे० कृतघण।

कृतघ्नी-दे० कृतघण।

कृतज्ञ-(वि०) अहसानमंद।

कृतज्ञता-(ना०) अहसानमंदी।

कृतयुग-(न०) सतयुग।

कृतार्थ-(वि०) कृतकृत्य ।
कृतांत-(न०) १ मृत्यु । २ यम । ३ पाप ।
कृपण-(वि०) १ कंजूस । २ नीच ।
कृपा-(ना०) मेहरबानी । अनुग्रह ।
के-(वि०) १ कितने । २ कुछ । (क्रि०वि०) क्या । (प्रत्य०) संबंध कारक विभक्ति 'को' का एक बहुवचन रूप ।
केई-(सर्व०) १ किसी को । २ किसी । कोई । (वि०) १ कई एक । कतिपय । २ कई । कितने ही ।
केका-(ना०) मोर का शब्द ।
केकाण-(न०) घोड़ा ।
केकावळ-(न०) मोर ।
केकी-(न०) मोर ।
के के-(अव्य०) १ कई कई । २ क्या क्या । ३ कौन कौन ।
केजती-(न०) शत्रु ।
केजम-(न०) शत्रु ।
केठा-(अव्य०) क्या पता ?
केठी-(अव्य०) १ क्या पता ? २ कहाँ ?
केठीक-(अव्य०) क्या पता ?
केठ-(अव्य०) कहाँ ?
केड-(न०) १ वंश । खानदान । (ना०) १ कमर । कटि । २ शरीर का पीठ वाला भाग । पीछा । ३ पीछे जाने का भाव । पीछा ।
केडै-(क्रि०वि०) १ पीठ की ओर । २ पीछे । बाद में । (वि०) अनुगामी ।
केडो-(न०) १ पीछा । अनुगमन । २ सिरा । अंत ।
केण-(सर्व०) १ किस । किसने । २ कौन । (क्रि० वि०) किसलिये ।
केणतई-(अव्य०) किसलिए ।
केन-(न०) अनुग्रह । (ना०) १ पताका । ध्वजा । २ मृत्यु ।
केतरा-(वि०) कितना ।
केता-(वि०) १ कई । २ कितने ।

केताक-(क्रि०वि०) कितने ही ।
केता-(क्रि०वि०) कितनों का । (वि०) कितने ।
केतो-(वि०) कितना ।
केथ-(क्रि०वि०) कहाँ ? किधर ?
केदार-(न०) १ हिमालय का एक शिखर । २ एक यात्रा धाम । ३ खेत ।
केदारनाथ-(न०) १ हिमालय का एक तीर्थ स्थान । २ केदारेश्वर महादेव ।
केदार-रो-कांकण-(न०) १ शिवजी का कंकण । (मुहा०) २ बड़ी भारी विजय । ३ अति कठिन काम । ४ मंत्रसिद्ध कंकण । ५ कोई अद्भुत वस्तु या काम ।
केदारेश्वर-देo केदारनाथ ।
केदारो-(न०) १ एक राग ।
केन-(क्रि०वि०) कोई नहीं । (अव्य०) की तरफ से । पत्र लिखने या भेजने वाले की ओर से ।
केम-(क्रि०वि०) किस प्रकार ? कैसे ?
के मात्र-(अव्य०) १ क्या बिसात ? २ क्या इतना ही ?
केर-(प्रत्य०) संबंध कारक विभक्ति । का अथवा की । का या की 'केरो या केरी संबंध कारक विभक्ति का एक रूप ।
केरड़ी-(ना०) गाय की बछड़ी । टोगड़ी ।
केरड़ो-(न०) गाय का बछड़ा । टोगड़ो ।
केरी-(प्रत्य०) संबंध सूचक स्त्रीलिंग विभक्ति की ।
केरे-(प्रत्य०) संबंध सूचक [illegible] विभक्ति 'के' ।
केरो-(प्रत्य०) संबंध सूचक विभक्ति 'का' ।
केर-(ना०) १ [illegible] । २ [illegible] । ३ [illegible] । ४ [illegible] का पौधा । ५ [illegible] पौधा ।
[illegible]-(न०) [illegible] ।
[illegible] (ना०) [illegible] नदी ।
[illegible] (ना०) १ [illegible] । २ [illegible] ।

दार बनाना। ४ काम मे माने लायक बनाना।
केळो–दे० केला।
केवटणो–(क्रि०) १ निभाना। २ अधीनस्थ के अनुकूल होना या उसको प्रेम द्वारा अपने अनुकूल बनाना। ३ सुधारना। समारना। ४ इकठ्ठा करना। बटोरना। ५ मितव्ययिता करना। ६ सभालना। ७ पालन पोषण करना। ८ पशु को मार कर उसकी चमड़ी से मास दूर करना।
केवटियो–(न०) नाव खेने वाला। नाविक। केवट।
केवट–(न०) १ निभाने वाला। २ अधीनस्थ को प्रेम से अपने अनुकूल बनाना। ४ सुधारने वाला। ४ सभालने वाला। ५ पोषण करने वाला। ६ सग्रह करने वाला। ७ मितव्ययी। ८ नाविक।
केवटणहार–(वि०) केवटने वाला। (न०) केवटियो।
केवडो–(न०) केतकी। केवडा।
केवळ–(वि०) १ केवल। शुद्ध। २ मात्र। सिर्फ। (अव्य०) निपट। बिलकुल। (न०) १ शुद्ध ज्ञान। २ एक सप्रदाय। कैवल्य।
केवळ ज्ञानी–(न०) शुद्ध ज्ञान वाला।
केवळियो काथो–(न०) एक प्रकार का कत्था।
केवाण–(ना०) तलवार। कृपाण।
केवाय देवी–(ना०) दहिया चाच राना द्वारा बनवाये हुये किणसरिया गाँव के केवाय मदिर की देवी। दहिया राजपूतो की कुलदेवी।
केवाळिया–(न०ब०व०) खडिया मिट्टी की दवात (बोळखो) म डाला जाने वाला बालो का गुच्छा। केशावली।
केवी–(न०) १ शत्रु। दुश्मन। २ दुरात्मा। दुर्जन। (वि०) १ दूसरे। अन्य। २ कई। अनेक। (क्रि०वि०) किस प्रकार?
केवो–(न०) १ प्रतिशोध। वर का बदला। २ बुराई। ऐब। दाग। ३ निंदा। बुराई। ४ दोष दृष्टि। ५ वर। शत्रुता। ६ कमी। न्यूनता। ७ नुकस। खामी।
केशव–दे० कसव।
केस–(न०) बाल। केश।
केसर–(न०) १ केशर। जाफरान। २ फूल के बीच म होने वाली बाल के समान सींकें।
केसरियो–(न०) १ गोगाजी की भाँति नाग रूप माना जाने वाला एक लोक देवता। २ वैवाहिक लोकगीतों का एक नायक। ३ दुलहा। ४ घुला हुआ अफीम। (वि०) १ केशर से रगा हुआ। २ केशरी रग का।
केसव–(न०) १ केशव। श्रीकृष्ण। २ विष्णु।
केसवाळिया–दे० केवाळिया।
केसवाळी–(ना०) १ घोड़े की गर्दन की केश राजि। अयाल। २ सिंह की गर्दन के बाल। केसर। ३ घोडे की गर्दन पर शोभा के लिये पहनाई जाने वाली धागों से गुथी हुई एक जाली।
केसू–(न०) १ टेसू। पलाश का फूल। २ पलाश वृक्ष। केसूलो।
केसूलो–(न०) १ पलाश का फूल। टेसू का फूल। २ पलाश के फूल का रंग। ३ पलाश वृक्ष। केहूलो।
केहडो–(वि०) किस प्रकार का? कैसा?
केहर–(न०) सिंह।
केहरी–(न०) सिंह।
केहवो–(वि०) कौनसा? कसा?
केहूलो–दे० केसूलो।
केहो–(वि०) कसा? कौनसा?
कै–(अव्य०) १ एक सयोजक शब्द 'कि'। २ या। अथवा। किंवा। ३ या तो।

अथवा तो। ४ अर्थात्। यानि। (वि०) कितना?

कडो-(वि०) कैसा? किस तरह का?

कैद-(ना०) १ जेल। कारागार। २ बंधन। ३ रोक। अवरोध।

कैन-(सर्व०) किसको।

कैफ-(न०) १ नशा। २ मस्ती।

कफियत-(न०) १ विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में निवन्धपत्रों आदि पर स्टाम्प नहीं लगाने की राज्य की ओर से दी जाने वाली माफी। २ राज्य में या राजा को पेश किये जाने वाले निबन्ध पत्रों में स्टाम्प नहीं लगाने की माफी का एक पारिभाषिक शब्द (मारवाड़ राज्य का एक नियम) ३ विवरण। ४ विशेष सूचना या विवरण। रिमार्क। ५ हाल। समाचार।

कैमखानी-(न०)१ एक अर्द्ध मुसलिम जाति। क्यामखानी। २ इस जाति का व्यक्ति।

कया-(क्रि०वि०) कैसे? किस प्रकार?

कैर अखोळ-न० करबोट।

कैर-(न०) १ करीर वृक्ष। २ करीर फल। कर।

कर-ग्राटो-(न०) करील के कच्चे ताजे फल और फूल।

करखोळ-(न०) कैर कुमटिया सांगरी आदि में अमचूर मिला कर बनाया हुआ पचकूटे का साग।

करी-(ना०) कच्चा आम। अंबिया। (सर्व०) किसकी?

कैरो-(सर्व०) किसका?

कलाम-(न०) मानसरोवर के पास हिमालय का एक शिखर जहां शिव पार्वती का निवास स्थान माना जाता है।

कलासपुरी-(ना०) मेवाड़ का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान एकलिंगजी।

कैलू-(न०) खपरेल।

कलूडो-दे० कलू।

करी-(सर्व०) १ किसकी। २ किसी की।

को-(सर्व०) कौन। (वि०) कोई। (प्रत्य०) कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति।

काइक-(सर्व०) १ कोई कोई २ कोई एक।

कोठो-(न०) १ वह कुआं जिसका चरस के द्वारा पानी निकाला जाकर सिचाई की जाती है। कोसीटो। २ साग सब्जी की बाडी। बाड़ी।

कोटो-(न०) १ रहस्य। भेद। २ उत्पात। ३ झंझट। ४ भमेला। भभट।

कोइलो-(न०) कोयला।

कोई-(सर्व०) १ अनिश्चित। २ अनेक में से एक। ३ एक भी।

कोकट-(ना०) १ सूखे हुए पीलू फल। २ सूखे हुए लिसोड़े (गूंदिये) ३ गप्प।

कोकडी-(ना०) १ सूत की ऑटी। कुकड़ी। लच्छी। २ वस्त्र वर्तिका।

कोकडो-(न०) १ वस्त्र वर्तिका। कपड़े की बाती। २ बड़ी कुकड़ी। लच्छा।

कोकणो-(क्रि०) १ कच्ची सिलाई करना। २ छेदना।

कोकरू-(न०) कानों का एक आभूषण। गोखरू।

कोकळ-(ना०) १ बहुत बाल बच्चों का परिवार। २ बहुत अधिक संतान वाला अभावग्रस्त परिवार। (वि०) १ दीनता युक्त। २ दीन। ३ विनीत।

कोकलो-(न०) १ टिंडसी ककड़ी आदि का बड़ा खेलड़ा। २ मतीरे टिंडसी आदि की खाली खुपरी।

कोख-(ना०) १ कुक्षी। कुख। २ गर्भाशय। ३ पेट। उदर।

कोचर-(ना०) दाढ़ की जड़ में पड़ने वाला खड्डा। दांत का एक रोग। (न०)१ खड्डा। २ पेड़ की खोडर। कोटर।

कोचरी-(ना०) उल्लू जैसी उल्लू से छोटी एक चिड़िया। उल्लू की जाति का एक पक्षी। भरव धीवरी।

कोज–(सर्व०) कोई । (क्रि०वि०) नहीं ।
कोझो–(वि०) १ अनुचित । २ विपरीत । ३ कुरूप । बदसूरत । ४ बुरा । ५ खराब । बुरा ।
कोट–(न०) १ नगर की चार दीवारी । प्राचीर । परकोटा । २ दुर्ग । किला । ३ जागीरदार की कचरी । दरीखाना । ४ पहिनने का एक वस्त्र । ५ ताश के खेल में एक पक्ष का एक साथ सातों ही सर (हाथ) बना लेना और विपक्ष को एक भी नहीं बनाने देकर मात देना । ६ सौ लाख । करोड ।
कोटडी–(ना०) १ छोटा कमरा । कोठरी । २ छोटे जागीरदार की बैठक ।
कोटवाळ–(न०) १ गढ़ या नगर का बंदोबस्त करने वाला अधिकारी । २ कोट रक्षक । दुर्ग रक्षक । ३ पीजारा ।
कोटवाळी–(ना०) कोटवाळ की कचहरी । नगर रक्षक के काम करने का दफ्तर ।
कोट सलेम–दे० सलम कोट ।
कोठार–(ना०) अनाजघर । गोदाम । बखार ।
कोठारियो–(न०) १ छोटा कोठार । २ रसोईघर में बना एक कोठा जिसमें भोजन सामग्री रखी रहती है ।
कोठारी–(न०) १ भंडारी । कोठारी । २ एक अल्ल या जाति ।
कोठा सूझ–(ना०) १ अपने आप उपजने वाली कल्पना । कल्पना । २ खुद की बुद्धि । ३ मन की उपज ।
कोठी–(ना०) १ बंगला । २ अनाज रखने का कुठला । ३ बडी दुकान । ४ कुठिया के आकार की आतिशबाजी । ५ कोल्हू में तिलहन पीसने का खड्डा ।
कोठीवाळ–(न०) १ बडा व्यापारी २ कोठी वाला ।
कोठो–(न०) १ खाना । कोठा । कोष्ठक । २ माल सामान रखने या भरने का गोदाम । ३ पेट । उदर । ४ अनाज भरने का बखार । ५ पानी का हौज ।
कोड–(वि०) १ करोड । कोटि । २ छाता ।
कोड–(न०) १ उत्साह । २ अंतर की आशा । ३ प्यार । ४ मनाभाव । दुलार । चाव । ५ हूंस । ६ उमंग ।
कोडदान–दे० कोडपसाव ।
कोडपसाव–(न०) करोड रुपयों के मूल्य का पुरस्कार ।
कोड बरीस–(न०) करोड रुपया का दान देने वाला । कोड पसाव देने वाला ।
कोडड–(न०) धनुष ।
कोडडीम–(न०) बडा धनुष । कोदंड ।
कोडायतो–(वि०) १ हर्ष पूर्ण । २ उत्साह युक्त । (क्रि०वि०) उत्साह से । उमंग से ।
कोडायो–(वि०) कोड वाला । उमंग वाला ।
कोडाळी–(वि०) १ जिसमें अनेक कौड़ियाँ लगी हुई या गुथी हुई हों । २ कौड़ी के जैसी । कौड़ी के समान सफेद और बना । ३ उमंग वाली । ४ प्रेम वाली ।
कोडाळो–(वि०) १ कौडी या कौडा से युक्त । कौडा से गुथा हुआ । २ उमंग वाला । ३ प्रेमी । स्नेही । (न०) ऊंट के गले में पहिनाने का कौडियों या कौड़ों से गुथा हुआ एक आभूषण ।
कोडियो–(न०) मिट्टी का दीपक ।
कोडी–(ना०) १ बीस वस्तुओं का समूह । २ बीस की संख्या । २० ।
कोडीक–(वि०) एक करोड की कीमत का ।
कोडीडढढो–(न०) सूअर ।
कोडीधज (न०) १ करोडपति । २ एक उच्च जाति का घोडा ।
कोडी मोल–(वि०) करोड के मूल्य का ।
कोडीलो–(वि०) कोड वाला । उमंग वाला ।
कोढ–(न०) एक चर्म रोग । कोढ़ । कुष्ठ ।
कोढियो–(न०) कोढा । कुष्ठी । (वि०) कोढ रोग वाला ।

कोणप-(न०) राक्षस । कौणप ।
कोतक-(न०) १ कौतुक । विनोद । २ मजाक । ३ खेल तमाशा । ४ प्रपंच ।
कोतग-दे० कोतक ।
कोतरकाम-(न०) लकड़ी या पत्थर पर की गई नक्काशी । कोरणी ।
कोतरणी-(ना०) १ नक्काशी । कोरणी । खुदाई । २ नक्काशी का ढंग । ३ नक्काशी की उज्रत । ४ नक्काशी का औजार ।
कोतरणो-(क्रि०) लकड़ी या पत्थर पर चित्रकारी करना ।
कोतल-(न०) सोने चांदी के गहने, झूल और रेशम तथा मखमली जीन से सजाया हुआ जलूसी घोड़ा ।
कोताई-(ना०) १ कमी । त्रुटि । कोताही । २ निधनता । गरीबी । ३ कंजूसी ।
कोथमीर-(न०) हरा धनिया ।
कोथळी-(ना०) थैली । कोथली ।
कोथळी खालामणी-दे० ताळा खालामणी ।
कोथळो-(न०) बड़ा थैला । कोथला ।
कोदम-(न०) एक जंगली नाज ।
कोदमी-दे० कोदम ।
कोदाळो-(न०) कुदाला ।
कोनी-(क्रि०वि०) नहीं ।
कोन्या-दे० कोनी ।
कोप-(न०) क्रोध । रीस ।
कोपणो-(क्रि०) १ क्रोध करना । रीस करना । २ नाराज होना ।
कोपर-(ना०) १ खोपड़ा । २ कोहनी ।
कोपरियो-(न०) छोटा पत्थर । कंकड़ ।
कोपरो-(न०) नारियल की गिरी का आधा भाग ।
कोम-(न०) १ कूर्म । कछुआ । (ना०) १ जाति । कौम ।
कोमळ-(वि०) १ कोमल । मुलायम । २ सुकुमार । नाजुक । ३ दयार्द्र । ४ मधुर ।
कोमंड-(न०) कोदंड । धनुष ।
कोय-(सर्व०) १ कोई । २ किसी का ।
कोयण-(न०) १ नेत्र । आंख । २ आंख का कोना । ३ शत्रु ।
कोय नी-(क्रि०वि०) नहीं ।
कोयल-(ना०)१ कोकिल । कोयल । पिक । २ एक लता । ३ लम्बी डंडी का पोला छेद वाला एक लट्टू जिसे घुमाने पर कोयल की भांति शब्द निकलता है । कोयली ।
कोयलाराणी-(ना०) सोराष्ट्र में कोयल पर्वत पर की कोकिलारोहिणी देवी । हर्षद देवी । हरसिद्धि देवी । कोकिला रानी ।
कोयली-(ना०) १ पीठ में उठने वाली एक गांठ । २ एक प्रकार का लम्बा डंडी का लट्टू जो घुमाने पर कोयल की भांति शब्द करता है । ३ चरस की नाव के सिर पर बंधा रहने वाला लकड़ी का छोटा गट्टा ।
कोयलेक-(न०) कुत्ता ।
कोयो-(न०) १ आंख का डेला । २ सूत डोर आदि की अंटी । घुंडी । लच्छी ।
कोर-(ना०)१ गोटा किनारा । २ किनारा । सिरा । ३ सीमा । हद । ४ बुराई । दोष । त्रुटि ।
कोर-कसर-(ना०) १ कम खर्ची । किफायत । २ कमी । कसर । त्रुटि ।
कोर गोटो-(न०) गोटा किनारी । गोटा पट्टा ।
कोरज-दे० कोरपाए ।
कोरड-(ना०)१ एक घास । २ फली और पत्ता सहित उखाड़े हुये मोठों के पौधे ।
कोरडो-(न०) रस्सी या कपड़े को बट कर बनाया हुआ चाबुक । कोड़ा ।
कोरण-(ना०) काले बादलों की घटा के आगे की सफेद बादलों की घटा । कागोलड ।

कोरणावटी–(ना०) राजस्थान में जोधपुर जिले का एक प्रदेश। मारवाड़ का एक प्रदेश।

कोरणी–(ना०) १ पत्थर, काष्ठ आदि को कुरेद कर बनाये जाने वाला बेल बूटे का काम। तक्षण। नक्काशी। संगतराशी। २ कोरने का औजार। छेनी। ३ कोरने की कारीगरी। निपुणता। ४ कोरने का उच्चन।

कोरणी करणी–दे० कोरणो।

कोरणो–(क्रि०) १ चित्र बनाना। २ नक्काशी करना। तक्षण करना।

कोरपाण–(वि०) मांड लगा हुआ (वस्त्र)।

कोरम–(न०) १ कूर्म। कच्छप। २ सभा का काम शुरू करने के लिये आवश्यक मानी हुई सदस्य संख्या।

कोरमो–(न०) १ मूंग मोठ आदि द्विदल धान्य को दल करके उसमें का अलग किया हुआ महीन चूरा। दाल का चूरा। मिस्सा। खुद्दी। २ एक प्रकार का मांस भोजन।

कोरभ–(न०) १ कच्छप। कूर्म। कछुआ। २ कच्छपावतार।

कोराई–(ना०) १ पवित्रता। २ चतुराई। ३ आडम्बर। ४ रूखापन। ५ तक्षण काय। नक्काशी। ६ तक्षण की मजदूरी।

कोरी–(वि०) १ उपयोग में नहीं लाई हुई। नई। अछूती। २ सिर्फ। मात्र। ३ व्यर्थ की। बेमतलब की। थोथी। ४ खाली हाथ। असफल। ५ रूखी सूखी। ६ निखालिस। बेदाग। (ना०) कच्छ राज्य का सिक्का।

कोरो–(वि०) १ काम में नहीं लाया हुआ। न बरता हुआ। नया। अछूता। २ रूखा। सूखा। ३ सादा। कोरा (कागज आदि) ४ खाली हाथ। असफल। ५ सिर्फ। मात्र। ६ व्यर्थ का। बे मतलब का। ७ थोथा। फालतू। ८ बेदाग।

कोरो-कट–(वि०) बिलकुल नया। समूचा कोरा।

कोरो-मोरो–(मि०वि०) खाली। यों ही। बेमतलब। फालतू। खाली हाथ।

कोर्ट–(ना०) न्यायालय। कचहरी।

कोर्टफीस–(ना०) कोर्ट के केस के खर्च की सरकार में भरी जाने वाली रकम। रसम।

कोळ–(ना०) बड़ी जाति का एक चूहा। घूस।

कोलक–(ना०) मिर्च।

कोळण–(ना०) १ कोळी की स्त्री। २ कोळी जाति की स्त्री।

कोळामण–(ना०) दूर वर्षा के व बादल जो ठंडे पवन के साथ उड़ कर आते हैं।

कोलायत–(न०) बीकानेर से ५० किलो मीटर दूर उत्तर पश्चिम में कपिल मुनि का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।

कोनाळी–(न०) १ कुम्भकार। कुम्हार। २ ब्रह्मा। ३ उल्लू।

कोळी–(न०) १ एक जाति। २ इस जाति का मनुष्य। ३ धान्य आदि अंजली में रख कर देवता को अर्पण करने की क्रिया। ४ हाथ और कांख में उठाया जा सके जितना घास आदि का गट्ठा। पूळी। ५ कवल। ग्रास।

कोलेज–(न०) महाविद्यालय।

कोश–दे० कोस।

कोशकार–(न०) शब्द कोश बनाने वाला।

कोशल–दे० कोसळ।

कोशल-नंदन–दे० कोसळनंदण।

कोशला–दे० कोसळा।

कोशाध्यक्ष–(न०) खजानची।

कोस–(न०) १ दो मील की दूरी का माप। गाऊ। गव्यूत। २ दो मील की दूरी ३ खजाना। कोष। ४ वह ग्रन्थ जिसमें शब्द और उनके अर्थ दिये गये हों।

ग्रन्थ संग्रहावली। कोश। ५ कुएँ से बैलों द्वारा पानी निकालने का चमड़े का बना हुआ जलपात्र। चरस। मोट। ६ तलवार का म्यान। ७ अटा। ८ अडकोष।

कोसणो-(क्रि०) १ बुराई करना। निंदा करना। २ बुरा कहना। बुरा भला कहना।

कोसळ-(न०) अयोध्या नगरी। कोशल।

कोसळ-नंदण-(न०) श्रीराम।

कोसळा-(ना०) अयोध्या नगरी।

कोसीटो-(न०) वह कुआँ जिस पर खेत में सिंचाई करने के लिये चरस से पानी निकाला जाता है। कोइटो।

कोसीद-(न०) आलस्य।

कोह-(न०) १ क्रोध। रोस। २ मोट। चरस। ३ दो मील। गाऊ। ४ पवन। (ना०) धूलि। रज। धूड़।

कोहणो-(क्रि०) १ क्रोध करना। २ नाराज होना। दे० कुहीजणो।

कोहर-(न०) कुआ। कूप।

कोहर तनणो-(मुहा०) कुएँ में से बैलों द्वारा पानी निकालना।

कोहीटो-दे० कोइटो।

कोहीरो-(वि०) १ क्रोधी। २ मन में कुढ़ते रहने वाला।

कौकर-(क्रि०वि०) क्या कर। कैसे।

कौतक-(ना०) १ मजाक। हँसी। २ दुर्गति। कुगति। कौतुक। ४ हद से ज्यादा हँसी मजाक।

कौडियो-(न०) खंजरीट नामक पक्षी।

कौड़ी-(ना०) १ कौड़ी। कपर्दिका। २ कभी किसी समय कम मूल्य का एक सिक्का। (वि०) तुच्छ।

कौडो-(न०) बड़ी कौड़ी।

कौल-(न०) १ कौल। वचन। २ कथन।

क्यव-(न०) कवि।

क्यामखानी-दे० कमखानी।

क्यारो-(न०) सिंचाई के लिये खेत में बनाया जाने वाला पानी से घिरी जमीन का एक भाग। खोड़ो।

क्यावर-(न०) १ यश का काम। २ जीत का काम। ३ कुल को उज्वल और प्रख्यात करने वाला काम। ४ मौसरा। ५ मौसर। ६ उपकार। अहसान।

क्या-(क्रि०वि०) १ क्या? २ किस प्रकार? क्यों? (सव०) किस?

क्यान-(क्रि०वि०) १ किसलिये? (सव०) किसको?

क्यारी-(अव्य०) किसकी? काहेकी? २ किस बात का?

क्यारे-(अव्य०) किसके?

क्यारो-(अव्य०) किसका? काहे का? किस बात का?

क्यासू-(सव०अव्य०) किनसे?

क्यु-(वि०) १ कुछ। (क्रि०वि०) क्या?

क्युइ-(वि०) कुछ। कुछ भी।

क्युइक-(वि०) कुछ। कुछेक।

क्यु कर-क्रि० कैसे कर।

क्युक-(क्रि०वि०) क्योंकि।

क्यु ही-दे० क्युइ।

क्रग-(ना०) १ तलवार। २ हाथ। करग।

क्रगल-(न०) कवच।

क्रण-(न०) १ कुंती पुत्र महादानी कर्ण। २ कान।

क्रतकाळ-(वि०) नाश करने वाला। मारने वाला। (न०) यमराज।

क्रतगुणी-(वि०) कृतज्ञ। गुण करने वाला। उपकारी।

क्रतघण-(वि०) कृतघ्न।

क्रतविनद-(वि०) १ उदार। २ कार्य कुशल।

क्रनात-(न०) १ यम। कृतांत। ३ मृत्यु। ३ पाप।

क्रपण-(वि०) १ कृपण। कंजूस। २ नीच।

क्रपा-(ना०) कृपा। अनुग्रह।

क्रपाण–(ना०) तलवार। कृपाण।
क्रपाळ–(वि०) कृपालु। दयालु।
क्रपीट–(न०) पानी।
क्रपीठ–(न०) १ अग्नि। २ जल।
क्रम–(न०) १ पैर। २ कम। ३ लीला। ४ क्रम। सिलसिला। ५ पंक्ति। ६ नियमित व्यवस्था।
क्रम-काळा–(न०) १ दुर्भाग्य। २ दरिद्रता। ३ अनुचित काम। ४ कुकर्म। दुष्कर्म।
क्रमगत–(ना०) १ कर्मों की गति। २ प्रारब्ध।
क्रमरा–(अव्य०) क्रम से। क्रमशः। (न०) क्रम।
क्रमणो–(क्रि०) १ चलना। जाना। २ आक्रमण करना।
क्रमश–(अव्य०) क्रमवार।
क्रमसाखी–(न०) सूर्य।
क्रमाळी–(ना०) ऊँट की मादा। ऊँटनी। क्रमेलिका। साँयड।
क्रमिजा–(ना०) लाख। लाक्षा।
क्रमेळक–(न०) ऊँट। क्रमेलक।
क्रहकरणो–(क्रि०) किलकारी मारना।
क्रहूको–(न०) चिल्लाहट। बडबड़ाहट। बलबलाहट।
क्राभाळ–(वि०) १ महाक्रोधी। २ वीर। बहादुर।
क्रामत–(ना० १ करामात। २ क्रांति।
क्रामात–दे० क्रामत।
क्रात–(न०) छवि। कांति। शोभा। (वि०) १ भयभीत। २ आक्रांत।
क्रिगल–(न०) कवच।
क्रितारथ–(वि०) कृतार्थ। कृतकृत्य। संतुष्ठ।
क्रिपरा–(वि०) कृपरा। कंजूस।
क्रिपा–(ना०) दया। कृपा। महरबानी।
क्रिपाण–(ना०) कृपाण। तलवार।
क्रिपाळ–(वि०) कृपालु।
क्रिसरा–(न०) कृष्ण।
क्रिसन–(न०) कृष्ण।
क्रीत–(ना०) १ कीर्ति। २ गुण। (वि०) खरीदा हुआ।
क्रीळा–(ना०) १ क्रीडा। आमोद प्रमोद। लीला।
क्रोड–दे० करोड।
क्रोडदान–दे० करोडदान।
क्रोडपति–(न०) करोड पति।
क्रोडपसाव–दे० करोडपसाव।
क्रोडवरीस–दे० करोडवरीस।
क्रोडीधज–दे० करोडधज।
क्रोध–(न०) गुस्सा। कोप।
क्रोधणो–(क्रि०) क्रोध करना। रीस करना। (वि०) क्रोध करने वाला। क्रोधी।
क्रोधगी–(वि०) क्रोधी। क्रोधागी।
क्रोधी–(वि०) गुस्से वाला। रीसड़ियो।
क्रोधीलो–(वि०) १ क्रुद्ध। २ क्रोधी स्वभाव वाला।
क्लास–(ना०) वर्ग। श्रेणी।
क्लोक–(ना०) दीवाल घड़ी।
क्वाट–(न०) ऊट।
क्वारमग–दे० कँवारमग।
क्वाटर–(न०) कर्मचारियों के रहने का मकान।
क्षण–(न०) १ समय का सबसे छोटा मान। पल का चौथा भाग। २ काल। समय।
क्षण-भगुर–(वि०) क्षण भर में नष्ट होने वाला। २ अनित्य।
क्षरोक–(अव्य०) क्षणभर। थोड़ी देर।
क्षत्र–(न०) १ क्षत्रिय। २ बल। ३ शरीर। ४ राष्ट्र। ५ धन।
क्षत्रिय–दे० क्षत्री।
क्षत्री–(न०) क्षत्रिय। राजपूत।
क्षमता–(ना०) १ सामर्थ्य। शक्ति। २ धय। ३ काम करने की योग्यता।
क्षमा–(ना०) १ माफी। क्षमा। समा। २ सहनशक्ति। ३ पृथ्वी। ४ दुर्गा।
क्षय–(न०) १ ह्रास। २ नाश।

क्षर-*(वि०)* १ नष्ट होने वाला। *(न०)* १ जल। २ मेघ। ३ शरीर। ४ जीवात्मा। ५ अज्ञान।
क्षात्र-*(वि०)* क्षत्रिय संबंधी।
क्षार-*(न०)* १ खार। २ सुहागा। ३ शोरा। ४ राख।
क्षितिज-*(न०)* १ वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं। २ वृक्ष। ३ मंगल ग्रह।
क्षीण-*(वि०)* १ सूक्ष्म। २ जो कम हो गया हो। ३ दुबला पतला।
क्षीर-*(न०)* १ दूध। २ खीर। ३ पानी।
क्षीरसागर-*(न०)* १ एक समुद्र जो दूध का माना जाता है। २ मीठे पानी का समुद्र।
क्षुद्र-*(वि०)* १ नीच। २ कृपण। ३ छोटा। ४ थोड़ा। ५ दरिद्र।
क्षुधा-*(ना०)* भूख।
क्षुप-*(न०)* १ पौधा। २ झाड़ी।
क्षुर-*(न०)* १ पशु का खुर। २ उस्तरा।
क्षेत्र-*(न०)* १ खेत। २ भूमि का टुकड़ा। ३ तीर्थस्थान। ४ प्रदेश। ५ युद्धस्थल। ६ स्त्री।
क्षेत्रपाल-*(न०)* १ ग्राम रक्षक देवता। खेत्रपाल। २ भोमिया। भोमियोजी।
क्षेत्रफळ-*(न०)* रकबा। क्षेत्रफल।
क्षेपक-*(न०)* १ ग्रंथ में पीछे से मिलाया हुआ अंश जो उसके मूलकर्त्ता की रचना न हो। *(वि०)* १ बाद में मिलाया हुआ। फेंका हुआ।
क्षेम-*(न०)* १ कुशल मंगल। २ सुख। ३ सुरक्षा।
क्षेमकरी-*(ना०)* एक देवी।
क्षोणि-*(ना०)* पृथिवी।
क्षोभ-*(न०)* १ व्याकुलता। २ क्षुब्ध होने का भाव। ३ क्रोध। ४ शोक। ५ भय। डर।

ख

ख-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के 'कवर्ग का द्वितीय व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान कंठ है।
ख-*(न०)* १ शून्य स्थान। २ आकाश। ३ सूर्य। ४ छिद्र। ५ स्वर्ग। ६ किसी भी नक्षत्र से दसवां स्थान (ज्यो०)।
खई-*(ना०)* १ कँटीली टहनियों का इतना ढेर जो बेई द्वारा उठाया जा सके। मवारी। २ क्षय। ३ युद्ध।
खईस-दे० खवीस।
खकार-*(न०)* ख अक्षर। खक्खो।
खख-*(ना०)* १ खाख। राख। २ धूलि। रज। धूड़।
खखड़-*(वि०)* १ जोरावर। जबरदस्त। २ वृद्ध। बूढ़ो।
खखडधज-*(वि०)* १ अति बलवान। २ रोबदार। ३ चुस्त। फुरतीला। अक्खड़। ५ दृढ। मजबूत। ६ शौकीन। छैला। छलो।
खखपती-*(न०)* १ निर्धन व्यक्ति। २ देवालिया। देवाळियो। खूटोलो।
खखाटी-*(ना०)* १ खांसी। २ खाँसी की आवाज।
खखार-*(न०)* १ कफ। श्लेष्मा। बलगम। २ खाँसी की आवाज।
खखारणो-*(क्रि०)* खांसी करना। खाँसना। खासणो।
खखी-*(न०)* १ खाख रमाने वाला साधु। साधु। २ दीनजन। गरीब।

खगीदड़-(वि०) प्रति वृद्ध। (न०) भस्म सेवित सबी दाढ़ी वाला प्रति वृद्ध व्यक्ति। वृद्ध। साधु।

खग्गो-(न०) खड्ग। तलवार।

खग-(न०) १ पक्षी। २ सूर्य। ३ देवता। ४ गंधर्व। ५ बाण। ६ सूर्यचन्द्र आदि ग्रह। ७ तलवार। ८ सूअर की थूथन की दोनों ओर बाहर निकला हुआ लंबा व नुकीला दांत। ९ योद्धा।

खगखेत-(न०) युद्ध।

खगचाळो-(न०) युद्ध।

खगझलो-(वि०) १ खड्ग धारण करने वाला। २ वीर।

खगणो-(क्रि०) १ तलवार चलाना। प्रहार करना। २ नाश करना।

खगधर-दे० खगझलो।

खगनाथ-दे० खगपति।

खगपति-(न०) १ सूर्य। २ गरुड़।

खगपथ-(न०) आकाश।

खगमेळ (न०) युद्ध।

खगराज-(न०) गरुड़।

खगराव-(न०) गरुड़।

खगवाट-(न०) युद्ध।

खगवाळो-(न०) स्त्रियों के हाथ का एक गहना। (वि०) खडगधारी।

खगवाहो-(न०) १ शस्त्र चलाने में प्रवीण। २ वीर पुरुष। (वि०) शस्त्र प्रहार करने वाला।

खगाट-(न०) खड्ग। तलवार।

खगारण-(न०) १ गुरुड़। २ युद्ध।

खगाधीश-(न०) गरुड़।

खगांराज-(न०) गरुड़।

खगाव-(न०) गरुड़।

खगेत-(वि०) १ खडगधारी। २ वीर। (न०) सूअर।

खगेस-दे० खगेसर।

खगेसर-(न०) १ गरुड़। खगेश। २ सूर्य। भगवान।

खगेन्द्र-(न०) गरुड़।

खगोळ-(न०) १ आकाश मंडल। खगोल। २ खगोल विद्या।

खग्ग-(न०) खड्ग। तलवार।

खग्रास-(न०) सूर्य या चन्द्र का पूरा ग्रहण।

खच्चरी-(ना०) मादा खच्चर। खच्चरी।

खचाखच-(क्रि०वि०) ऊपराऊपर। ठसाठस। (वि०) खूब भरा हुआ।

खच्चर-(न०) गधे तथा घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु। खेसर। अश्वतर।

खज-(न०) १ खुराक। भोजन। खाद्य। २ शिकार।

खजमत-(ना०) हजामत।

खजानची-(न०) कोषाध्यक्ष।

खजानो-(न०) १ खजाना। भंडार। धनागार। कोश। २ धन। दौलत।

खजीनो-(न०) दे० खजानो।

खजूर-(ना०) १ एक वृक्ष और उसका फल। २ एक मिठाई।

खजूरिया-(वि०) खजूर के पत्तों से बना हुआ।

खट-(वि०) छ। षट। (न०) टूटने टकराने का शब्द। (क्रि० वि०) जल्दी। शीघ्र।

खटक-(ना०) १ खटका। २ आशंका। ३ तीव्र उत्कंठा। लगन। ४ दर्द। कष्ट। ५ दुश्मनी। ६ प्रहार।

खटकण-दे० खटकळ।

खटकणो-(क्रि०) १ सलना। खलना। २ अंदर से दुखी होना। ३ किरकिर की तरह खटकना। ४ खटखट शब्द होना। ५ झगड़ा होना। ६ प्रहार होना। ७ चुभना। ८ बुरा लगना। खोटो लागणो।

खट करम-(न०) १ ब्राह्मण के छः कर्म। षटकर्म। २ नित्य कर्म।

खटफळ-(न०) १ मोहरे या बाड़े का घास फूस से बना कच्चा फाटक। २ छोटा फाटक।
खटकाणो-दे० खटकावणो।
खटकावणो-(क्रि०) खट खट का शब्द उत्पन्न करना। खटकाना। खटखटाना।
खटको-(न०) १ टकराने या ठोकने पीटने से उत्पन्न होने वाला शब्द। खटका। खट खट शब्द। २ भय। डर। ३ अनिष्ट की संभावना। ४ खटका। आशंका। संदेह। ५ चिंता। खटका। ६ किवाड़ की सिटकनी। आगळ।
खटको होणो-(मुहा०) १ शब्द होना। २ संदेह होना। ३ डर लगना।
खटखट-(ना०) खटखट की आवाज। ठोकने पीटने का शब्द। २ झंझट। माथापच्ची।
खटचरण-दे० खटचरण।
खटचलण-(न०) भौंरा। भमरो।
खटणी-(ना०) सहनशक्ति।
खटणो-(क्रि०) १ निभना। २ परिश्रम करना। ३ उपार्जन करना। ४ प्राप्त करना। ५ सहन होना। ६ कमाना।
खट दरसण-(न०) १ न्याय वैशेषिक, सांख्य, मीमांसा उत्तर मीमांसा और योग—ये छः दर्शन। षटशास्त्र। २ संन्यासी। ३ ब्राह्मण संन्यासी, दरवेश (मुसलमान फकीर) जोगी जंगम और जती—इन छः पराश्रित जातियों का समाहार।
खटपट-(ना०) १ युक्ति से काम निकालने का प्रयत्न। २ योजना। व्यवस्था। ३ प्रपंच। ४ झगड़ा। वाग्जाल। ५ दुश्मनी। (क्रि०वि०) जल्दी। शीघ्र।
खटपटियो-(वि०) १ प्रपंची। चालबाज। २ झंझटी। ३ झगड़ालू। फजितखोर। ४ भाग-दौड़ करने वाला।
खटपटा-(न०) नैमित्तिक काम की झंझट। २ झंझट। ३ विवाहादि नैमित्तिक काम। ४ नित्य करने के काम। नित्य कर्म। ५ हाथ में लिया हुआ काम।
खटपद-(न०) भ्रमर। भौंरा। भमरो।
खटपदी-(ना०) १ जूं। २ षटपदी। छप्पय छंद।
खट भाखा-(ना०) १ छः दर्शन। छः शास्त्र। २ संस्कृत प्राकृत आदि छः भाषाएं।
खटमल-(न०) खाट में पड़ने वाला एक कीड़ा। माकड़। मतकुण।
खटमीठो-(वि०) खट्टा मीठा। खटमीठा।
खटमुख-(न०) स्वामी कार्तिकेय। षडानन।
खटरस-(न०) १ भोजन के छः प्रकार के रस—मधुर लवण तिक्त कटु कषाय और अम्ल। षड्रस। २ मनमुटाव। अनबन। ३ खट्टारस। खाटो रस।
खटराग-(ना०) १ छः राग। २ अनबन। खटरास। ३ घर गृहस्थी का जंजाल। ४ मायाजाल।
खटराम-(न०) मनोमालिन्य। अनबन। मनमुटाव। कड़ाकूट।
खट रितु-(ना०) छः ऋतुएँ। षट्ऋतु।
खट रिपु-(न०) काम क्रोधादि मनुष्य के छः विकार। षड्रिपु।
खटरुत-दे० खटरितु।
खटरो-दे० खाटरो।
खटली-(ना०) खटिया। मांचली। मचला।
खटवदन-दे० खटमुख।
खटवरण-(न०) १ छः याचक जातियाँ—जोगी जंगम सेवड़ा (जैन-साधु) संन्यासी दरवेश (मुसलमान फकीर) और ब्राह्मण। २ षट्वर्ण। ३ समस्त जातियाँ।
खटवाटी-(ना०) १ जिद। हठ। २ प्रतिज्ञा। ३ रुष्टता। खटपाटी। नाराजी।
खटव्रण-दे० खट वरण।

खटग्रण प्रागवड–*(वि०)* छहा वर्णों का घमरहाक। २ छ दरान (जातियो) का पालक।
खटाई–*(ना०)* १ खट्टापन। २ खट्टी चीज। ३ कपट। छल।
खटाऊ–*(वि०)* १ प्राप्त करने वाला। २ प्राप्त करने योग्य।
खटाखट–*(ना०)* १ तकरार। झगडा। *(क्रि०वि०)* तुरन्त।
खटाणो–दे० खटावणो।
खटायत–*(वि०)* १ योद्धा। २ सहन करने वाला। ३ प्राप्त करने वाला। ४ परिश्रमी। महनती।
खटारो–*(न०)* माल मोटर। भार मोटर। लारी।
खटाळो–*(न०)* टूटाफूटा सामान।
खटाव–*(न०)* १ धीरज। २ समाई। बिसात। औकात। ३ शक्ति। सामर्थ्य। हैसियत। ४ सहनशीलता। ५ निर्वाह।
खटावणो–*(क्रि०)* १ निर्वाह करना। २ परिश्रम करना। ३ निभाना। ४ धीरज रखना। ५ प्राप्त करना।
खटास–*(न०)* १ खट्टापन। खाटापणो। २ मनभेद। ३ वैमनस्य।
खटीक–*(न०)* १ चमडे या शराब का या पार करने वाली जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।
खटीकण–*(ना०)* खटीक जाति की स्त्री।
खटूमडो–*(वि०)* १ खट्टे स्वाद वाला। २ वह जिसमे खट्टा स्वाद भी हो। थोडा खट्टा (फलादि)।
खटूबडो–दे० खटूमडो।
खटेत–*(वि०)* १ वीर। बहादुर। २ परिश्रमी। मेहनती।
खटोलडी–*(ना०)* खटिया। मचली।
खटोली–दे० खटोलडी।
खटोलो–*(न०)* छोटा खाट।
खड–*(न०)* खड्डा। गड्ढा। खाडो।
खड–*(ना०)* घास। चारो।
खडक–*(ना०)* १ नदी का ऊचा किनारा। कांठी। कांठो। २ ढेर। ३ खटका। फिकर।
खडकणो–*(क्रि०)* १ ऊपरा ऊपरी रखना। एक के ऊपर एक रखना। २ खडक शब्द होना।
खड-काचर–*(न०)* १ कचरी। २ आप से आप होने वाली कचरी के बेल और उसका फल। काचरो।
खडकिया-पाघ–दे० खिडकियापाघ।
खडकी–*(ना०)* १ किवाड। २ झरोखा। ३ कुटुम्ब। घर। ४ दो या ज्यादा घरों की एक दरवाजे (पोल) वाली गली।
खडको–*(न०)* १ दरवाजा बद होने या खुलने का शब्द। २ किसी वस्तु के टकराने का शब्द।
खडखड–*(ना०)* १ खडखड की ध्वनि। २ खिलखिलाहट।
खडखडणो–*(क्रि०)* खडखड शब्द होना। खडखडना।
खडखडाट–*(न०)*१ खडखडाहट। २ खड खड शब्द। *(क्र०य०)* १ कहकहा लगा कर बोलना। २ एक साथ सबका (उठना या जाना)। *(न०)* ठड से होने वाली कपन।
खडखडावणो–*(क्रि०)* खटखटाना।
खडखडी–दे० खडखडा।
खडखडो–*(न०)* ठड से होने वाली कपन। धूजन। कपकपी। *(ना०)* खडखडी। धूजणी।
खडखोचरो–*(वि०)* १ ऊचानीचा। २ खड्डों वाला।
खडग–*(न०)* तलवार। खडग।
खडगधारणी–*(ना०)*१ दुर्गा। २ वीरांगना।
खडगधारी–*(वि०)* खडगधर। वीर।

खडगसिध-(वि०) खडग चलाने मे सिद्ध हस्त। वीर।
खडगहयौ-(वि०)१ योद्धा। २ खडगधारी।
खडचर-(न०) घास चरने वाला पशु। (वि०) घास चरने वाला।
खडचराई-(ना०) १ पशुओं को जगत मे चराने का कर। २ पशु रखने वाला से लिया जाने वाला कर। ३ चराने का काम।
खडणो-(क्रि०) १ खेत बोना। २ खेत मे हल चलाना। ३ बैलगाडी आदि को हाकना। ४ चलना। ५ चलाना।
खडतल-(वि०) १ दुख सहन करने वाला। २ परिश्रमी। महनती। ३ गठीले शरीर का। ४ उग्र। प्रचड। ५ दृढ। मजबूत। सठो।
खडताल-(ना०) घोडे की टाप मे लगने वाली नाल। २ जूते के नीचे लगने वाला नाल।
खडताळ-दे० खडताल।
खड्ब-(न०) सौ अरब की सख्या। खरब। खव।
खडबड-दे० खडबडाहट।
खडबड खोपो-(न०) अवगुणी और झगडालू पुत्र वधू की ओर से रखा जाने वाला ससुर का अपमानजनक सांकेतिक नाम। ससुर। (वि०) झगडालू।
खडबडणो-(क्रि०) १ लडना। २ उतावला होना। ३ घबराना।
खडबडाट-(ना०) १ तकरार। लडाइ। २ उतावल। ३ घबराहट। ४ खडबड शब्द।
खडबडी-(ना०)१ घबराहट। २ तकरार।
खडबूजो-(न०) खरबूजा।
खडयो-(न०) १ दही या दही जमी जमी हुई वस्तु की उपमा। २ ठसी हुइ या जमी हुई वस्तु। स्थिर हुआ द्रव पदार्थ।
खडभड-(ना०) खटखड आवाज। २ गडबड। शोर। ऊधम। ३ कहासुनी। बाद चाल। कजियो। ४ घबराहट।
खडभडणो-(क्रि०)१ खडबडाना। २ कहासुनी होना। झगडा होना। ३ घबराना।
खडभडाट-(ना०)१ खलबली। २ आवाज। दे० खडबडाट।
खडभरी-दे० खडेरी।
खडवा-(ना०) १ चलने का परिश्रम। चलना। २ चलने की दूरी। ३ चलने की क्रिया। चलाइ। गमन।
खडसल-(ना०) एक प्रकार का रथ।
खडहडणो-(क्रि०)१ लडना। युद्ध करना। २ नाश होना। ३ गिरना। गिरजाना। पडना। ४ लडखडाना।
खडहड-(न०) घोडा।
खड ग-(वि०) १ सीधा २ सीधा खडा। (न०) शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छद और ज्योतिष—वेद के ये छ अग। षडग।
खडजो-(न०) कच्ची इटो की चिनाइ।
खडाऊ-(ना०)पादुका। चाखडी।
खडाक-(न०) गिरने का शब्द। (वि०) सीधा। टटार। खड ग।
खडाखड-(अनु०) खडखड ध्वनि।
खडाखडी-(क्रि०वि०) १ अभी का अभी। खडे खडे।
खडाणो-दे० खडावणो।
खडाळ-(न०) जसलमेर जिले का एक प्रदेश।
खडावणो-(क्रि०) १ हँकवाना। चलवाना। २ खेत मे हल चलवाना।
खडियो-(न०) १ कधे की [illegible] काई जाने वाली [illegible] यली। झोली। [illegible]। २ कधे पर लटकाया जाने वाला दो या दो से अधिक खाना वाला एक थैला जिसमें

भिन्न भिन्न प्रान्त विविध अनाज वगैरा को अलग अलग गाने में डालता है। ३ दराज। ४ खड़िया मिट्टी की एक दवात जिसमें हरताल से लिखी हुई अक्षर जमाने की पाटी पर अक्षरों के ऊपर लिखने का अभ्यास किया जाता है। बोळको।

खडी–(ना०) घास का ढेर।

खडी–(न०) खड़िया मिट्टी। जिप्सम। चारोळी।

खडीण–(ना०) १ वह नीची भूमि (खेत) जिसमें वर्षा का पानी इकट्ठा होने से गहूं और चने की फसल ली जाती है। २ जसलमेर जिले का एक भाग।

खडी बोली–(ना०) हिन्दी भाषा।

खडेरी–(ना०) १ एक बलगाडी परिमाण का घास। २ घास की भरी बलगाडी। दे० खरेडी।

खण–(न०) १ क्षण। पल। २ किसी काय को सिद्ध करने के लिये उसकी पूर्ति पर्यन्त धारण किया जाने वाला प्रन। ३ काय सिद्धि तक किसी वस्तु के त्याग की प्रतिज्ञा। ४ किसी वस्तु के त्याग की प्रतिज्ञा। ५ अस्थाई प्रतिज्ञा। ६ मकान के ऊपर की मंजिल। खड। ७ अलमारी, आले आदि का घर। खड। दराज।

खणक–(न०) १ चूहा। २ ऊट। (वि०) नितान्त। बिलकुल।

खणका–(ना०) १ बिजली। (न०) भूठा रोना। पाखण्ड। नखरा।

खणखण–(ना०)१ लडाई करने की इच्छा। झगडने की इच्छा। २ लत। चसका। ३ बुरा इरादा। 'खनखन शब्द।

खणखणाट–(न०) १ खनखनाहट। खनकार। झनकार। दे० खणखण १ २।

खणणो–(क्रि०) १ खोदना। खनना। २ खुजलाना।

खत–(न०) १ दस्तावेज। लिखत। २ तमस्सुक। ऋणपत्र। ३ पत्र। चिट्ठी। ४ प्रतिष्ठा। इज्जत। मान। ५ जंग। मुरचा। काट। ६ घाव। क्षत। ७ दाढी। ८ पृथ्वी। ९ क्षत्रियत्व।

खतनो–(न०) खतना। मुसलमानी। सुन्नत।

खत बही–(ना०) लेन देन का काम करने वाले बोहरा की वह बही जिसमें खत (ऋणपत्र) लिखे हुए हो अथवा खतों की नकलें की हुई हो।

खतम–(वि०) खत्म। समाप्त। (न०) १ समाप्ति। संपूर्णता। २ नाश। ३ कमाल। निपुणता।

खतमेटण–(ना०) लाख। लाक्षा।

खतरण–(ना०) खतरी की स्त्री।

खतरनाक–(वि०) भयानक।

खतराणी–दे० खतरण।

खतरी–(न०) १ कपडे छापने। रंगने तथा छापने की लकडी की छापों (भांतों) को बनाने का काम करने वाली एक जाति। २ इस जाति का आदमी। ब्रह्म क्षत्री। ३ क्षत्री। राजपूत।

खतरो–(न०) १ भय। खतरा। २ खटका। अंदेशा। अंदेसो।

खतवणी–(ना०) रोकड बही में जमा खर्च की हुई रकमों को खाताबही के व्यक्तिवार खातों में लेने का काम। खतौनी।

खतहीणो–(वि०) १ दाढी मूंछ रहित। २ घाव रहित। क्षत रहित। अक्षत। ३ अप्रतिष्ठित।

खतग–(न०) १ घोडा। २ आकाश। ३ अग्निबाण। (वि०) १ वीर। २ निलज्ज। ३ निडर। ४ अणीदार। तीक्ष्ण। ५ जिसके पुत्र कलत्र न हो। ६ उद्दंड। ६ क्षतांग। घायल। ८ अभिमानी। ९ पराक्रमी।

खता–(ना०) १ अपराध। २ भूल। ३ धोखा। ४ हानि।

करवाना। जिवशाना। ४ मार दना। नाश कर देना। ५ र देना। भर मवा। सफा देना। ६ बिताना। समाप्त करना।

खपावठ-(ना०) १ मृत्यु। २ नाश करने की शक्ति। ३ आवश्यकता।

खपीड-(न०) हानि। नुकसान। (वि०) १ अति वृद्धावस्था के कारण मृत्यु के निकट आया हुआ। (तुच्छार्थक) २ वृद्ध। बुड्ढा। (तुच्छार्थक)।

खप्पर-(न०) भिक्षापात्र। खप्पर।

खफरखा-(वि०) दुष्ट। अत्याचारी। (न०) मुसलमान।

खफा-(वि०) १ क्रुद्ध। २ नाराज।

खबचो-(न०) १ नाज आदि किसी वस्तु को हथेली में भर कर देने का एक सम्पुट। अंगुलियों सहित बनाया जाने वाला हाथ का एक संपुट। अंजलि। २ टटा फिसाद। ३ दोषारोप। ४ आफत। ५ छोटा खड्डा।

खबर-(ना०) १ समाचार। २ संदेश। सूचना। ३ जानकारी। ४ निगरानी। देखभाल। ५ होश। सुधि।

खबरदार-(वि०) १ सावधान। सतर्क। चौकन्ना। २ खबर रखने वाला। संदेश वाहक। (अ व्य०) सतर्क रहो। होशियार हो जाओ। इस आशय का उद्‌गार।

खबरदारी-(ना०) १ सावधानी। होशियारी। २ निगरानी।

खबरनवीस-(वि०) संदेश वाहक।

खबरी-(वि०) संदेश वाहक।

खबसूरत-दे० खूबसूरत।

खबी-दे० खबीस।

खबीडणो-(क्रि०) १ मारना। पीटना। २ टक्कर मारना। धक्का देना।

खबीडो-(न०) १ धोखा। २ हानि। ३ चोट। ४ धक्का। टक्कर।

खबीस-दे० खवीस।

खबीसियो-दे० खावीसियो।

खबोडणो-(क्रि०) खूब खाना। सबोड़ना।

खम-(न०) १ टेकापन। बल। २ जोर।

खमण-(ना०) क्षमा।

खमणी-(वि०) सहन करने वाली। (ना०) सहनशीलता।

खमणो-(क्रि०) १ सहन करना। बरदाश्त करना। २ परिणाम भोगना। ३ प्रतीक्षा करना। ठहरना। ४ शांत रहना। ५ नुकसान उठाना। (वि०) सहन करने वाला।

खमत-खामणा-(न०) १ पर्यु षण पर्व की समाप्ति पर जनों में परस्पर क्षमा याचना की एक प्रथा। २ क्षमा याचना के लिये व्यवहृत शब्द।

खमता-(ना०) १ क्षमता। सहनशीलता। खिमता। २ शक्ति। सामर्थ्य। ३ योग्यता। ४ सहनशक्ति। ५ धय।

खमया-(ना०) १ एक देवी। २ पृथ्वी। ३ क्षमा। क्षमा। (वि०) १ क्षमा करने वाली। क्षमारूप।

खमा-(ना०) १ क्षमा। माफी। २ धीरज। ३ पृथ्वीक्षमा। थमा। धरता। ४ आदर सूचक हाँ शब्द का वाचक, जो गुरु, राजा संत आदि से बात करते हुये कहा जाता है। ५ गुरु राजा आदि के लिये 'जय' या अभिवादन सूचक शब्द। (अव्य०) क्षेम कुशल रहो। क्षमा वीर रहो। आप क्षमावान हैं। दुःख न हो। ईश्वर सहाय करे। चिरजीवी रहो—इत्यादि भावार्थों को सूचित करने वाला उद्‌गार।

खमा-अवतार-(न०) १ क्षमावतार। अत्यन्त क्षमावान पुरुष। २ गुरु। ३ राजा। ४ महात्मा।

खमाई-(ना०) १ क्षमा। २ क्षमा करने की शक्ति। ३ सहनशक्ति। क्षमाशीलता।

खमाघणी–*(अव्य०)* राजा महाराजा महंत आचार्य और गुरु आदि को किया जाने वाला एक अभिवादन।

खमाभुज–*(न०)* राजा। क्षमाभुज।

खमाणो–*(क्रि०)* १ क्षमा माँगना। २ क्षमा मँगवाना। ३ क्षमा करवाना। ४ ठहराना। रुकवाना। ५ प्रतीक्षा करवाना। ६ शांत करना।

खमीर–*(न०)* १ गुँधे हुए आटे का सड़ाव। २ जोश आवेश। ३ ताकत। बल।

खमीरदार–*(वि०)* १ जिसका खमीर उठाया हुआ हो। २ जिसमें खमीर मिला हुआ हो। ३ जोशवाला। खमीर वाला। ४ ताकत वाला। बलवान्।

खम्माच–दे० खमावती।

खम्या–दे० खमा १ २ ३

खय–*(न०)* १ क्षय। नाश। २ ह्रास। ३ क्षय रोग।

खयमान–*(वि०)* जिसका मान क्षय हो गया हो। अप्रतिष्ठित। मानक्षय।

खयकर–*(वि०)* १ नाश करने वाला। क्षयकर। २ नाश होने वाला।

खर–*(न०)* १ गदहा। गधो। *(वि०)* १ अशुभ। २ मूर्ख।

खरकूण–*(न०)* वायव्य और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा।

खरखर–*(ना०)* १ किसानों से लिया जाने वाला एक जागीरदारी लगान। २ झगड़ा करने की इच्छा। ३ गर्व। ४ पछतावा। ५ दुख।

खरखरणो–*(क्रि०)* १ चुभना। २ खटकना। ३ सलना।

खरखरावणो–*(क्रि०)* बड़ियाँ (मुंगोड़ी) आदि किसी सूखी वस्तु को तवे पर घी से भूनना।

खरखरो–*(न०)* १ पश्चाताप। पछतावा। २ शंका। आशंका। ३ संताप।

खरखोदरो–*(वि०)* खुरदरा।

खरगो–दे० खरगोस।

खरगोस–*(न०)* खरगोश। शशक।

खरच–*(न०)* १ खर्च। व्यय। २ लागत। खर्चा। ३ कमी। ४ औसर। मौसर। नुक्ती। मृतकभोज। ५ खूब पैसे खर्च करने का शुभाशुभ अवसर। *(वि०)* थोड़ा। कम।

खरच करणो–*(मुहा०)* औसर करना। मृतक भोज करना। *(क्रि०)* खर्च करना। खरचना।

खरचणो–*(क्रि०)* १ व्यय करना। २ व्यवहार में लाना। बरतना।

खरचाऊ–*(वि०)* जिसके करने या बनाने में अधिक खर्च हो। बहुत खर्च वाला। २ खर्चीला।

खरची–*(ना०)* १ निर्वाह खर्च। २ हाथ खर्च। ३ धन माल।

खरची खूट–*(वि०)* १ धनाभाव वाला। २ निर्धन। *(न०)* धनाभाव। दरिद्रता।

खरचीलो–*(वि०)* खर्चवाला। खर्चीला।

खरचो–*(न०)* १ खर्च। खर्चा। २ किसी अवधि तक का समग्र खर्च। ३ समग्र खर्च का योग।

खरज–दे० षडज।

खरट–*(ना०)* १ मिलावट वाली चाँदी को आग द्वारा शोधने पर भट्टी (खुडिया) में लगे रहने वाले रजतकण और उसका कीट। रौप्यकण संलग्न मिट्टी और कीट। २ अफीम की टिकिया पर लगा रहने वाला कचरा। अफीम युक्त पोस्त का चूरा। ३ जाजम निपाल आदि मंडप की सामग्री। ४ शस्त्र प्रहार की ध्वनि।

खरडक–*(ना०)* १ शस्त्र प्रहार की ध्वनि। २ रगड़।

खरडको–*(न०)* १ रगड़। २ ध्वनि विशेष।

खरडणो-(क्रि०) १ लेप करना। २ मैला लगाना। ३ गंदा करना। बिगाड़ना। कीचड़ आदि से गंदा करना।

खरडा-बही-(ना०) १ जमींदारी के भिन्न भिन्न करों की वसूली की आसामीवार हिसाब की बही। २ उधार दी हुई वस्तुओं की नाम बही।

खरड़ीजणो-(क्रि०) कीचड़ मैला आदि में गंदा होना। गंदा होना।

खरड़ो-(न०) १ गृह कर। मकान टक्स। २ उधार बही। ३ विवरण सहित हिसाब पत्र। ४ कर्जे का चुकता हिसाब। ५ मसौदा। मसौदा। ६ लंबी सूची।

खरणियो-(न०) किसी कटील वृक्ष की शाखा। बबूल खेजड़ी आदि की टहनियों वाली शाखा जिसका उपयोग (अनेक शाखाओं के रूप में) बाड़ की मजबूती के लिए किया जाता है। खरहणियो। खरसणियो।

खरणी-(ना०) केंद्रीय सरकार द्वारा राजा या जागीरदार से लिया जाने वाला एक कर। खिराज। खडीरेख। खिरणी।

खरणो-(क्रि०) वृक्ष के पत्तों आदि का गिरना। २ गिरना। ३ झड़ना। ४ मरना। (न०) वंश। कुल।

खरतर-(वि०) १ जोश वाला। तेज। २ कठिन। ३ खुरदरा।

खरतरगच्छ-(न०) जैन संप्रदाय के चौरासी गच्छों में का एक।

खरतरो-(न०) १ पश्चाताप। २ वहम। संदेह। (वि०) १ तेज स्वभाव का। २ खरतरगच्छ का।

खरदूख-(न०) खर और दूषण नाम के दैत्य।

खरदूखण-दे० खरदूख।

खरब-(न०) सौ अरब की संख्या।

खरळ-(ना०) औषधि आदि पीसने घोटने की पत्थर की कुंडी। खल। खरल।

खरळणो-(न०) १ ढोली। २ खारवाल। नमक बनाने वाला।

खरळी-(ना०) १ शीघ्रता से किया जाने वाला स्नान। उतावल में किया जाने वाला स्नान। २ कम पानी से किया जाने वाला स्नान। ३ स्नान। नहान।

खरळी खाणो-(मुहा०) १ झटपट नहाना। २ स्नान करना।

खर वाहणा-(ना०) शीतला देवी।

खरसण-(न०) १ घने तंतु वाला एक घास। २ दे० खरसणियो।

खरसणियो-दे० खरणियो।

खरहड-(न०) १ सेना। २ धौंस। ३ नाश। ४ चिंता।

खराई-(ना०) १ खरापन। २ स्पष्टता। ३ पक्की बात। ४ कौल। करार।

खराखर-(अव्य०) १ सचमुच। वास्तव में। २ अवश्य।

खराखरी-(ना०) १ खरापन। सच्चाई। २ संकट। ३ कठिनाई।

खराजात-(ना०) माल पर लगने वाला गोदाम भाड़ा मजदूरी आदि खर्च। माल की कीमत के अलावा उस पर लगने वाला खर्चा।

खराडो-दे० खुराडो।

खराणो-(क्रि०) खरा करना। बात को पक्का करना।

खराद-(ना०) एक यंत्र जिस पर चढ़ा कर धातु या लकड़ी की वस्तुएँ सुडौल चिकनी और चमकदार बनाई जाती हैं। खरल।

खरादणो-(क्रि०) किसी वस्तु को खराद पर चढ़ा कर सुडौल और चमकदार बनाना। खरादना।

खरादी-(न०) खराद का काम करने वाला। खरादी।

खरापण-दे० खरापणो।

खलक-मुलक-(ना०) भीड भाड । मानव समूह ।
खळाळ-(ना०) तलवार ।
खलकीनै-(अव्य०)१ दूसरों का । २ लोगों का । ३ लोगों ने । ४ दूसरों ने ।
खलवो-(ना०) १ छोटे बच्चे के पहिनने का ढीला वस्त्र । २ अंगरखा । ३ फकीर के पहिनने का एक लम्बा और ढीला वस्त्र । ४ शोर गोगा । हल्ला गुल्ला । ५ अत्याचार । ६ खेल । तमाशा । ७ मजाक । दिल्लगी ।
खळखळ-(ना०)पानी के बहने का एक शब्द ।
खळखळो (वि०) १ तौल माप आदि म बराबर स कुछ अधिक । तोल माप आदि म पूरा । २ उदार ।
खळखायक-(वि०) दुष्टों का नाश करने वाला । (ना०) तलवार ।
खळगट-दे० खळकट ।
खळचणो-(क्रि०) नाश करना ।
खळणो-(क्रि०) १ स्खलित होना । विचलित होना । २ बुरा लगना । ३ दुखना । पीडा होना । ४ नाश करना ।
खलणो-(क्रि०) १ खटकना । सलना । २ बुरा लगना । अप्रिय लगना । ३ अखरना ।
खळतो-(ना०) १ एक प्रकार का थैला । २ खलीता । ३ बडा बटुआ ।
खळदळ-(ना०) शत्रुदल । खलदल ।
खळभळ-(ना०)१ घबराहट । अशांति । २ हलचल । ३ शोर । हल्ला । ४ भगदड ।
खळभळणो-(क्रि०) १ खलबली मचाना । २ भयभीत होना ।
खळभळ ट-दे० खळभळ ।
खळभळी-(ना०) खलबली ।
खलल-(ना०) १ अडचन । विघ्न । बाधा । २ हानि । ३ कमी ।
खलल नांखणो-(मुहा०) अडचन डालना ।
खलल पाडणो-(मुहा०)नुकसान मे डालना ।
खळळ-(ना०) पानी के बहने का शब्द ।
खळवट-(ना०) १ युद्ध । २ नाश । संहार ।
खळ विखळ-(वि०) टूटा फूटा ।
खळहाल-(ना०) युद्ध ।
खळहळणो-(क्रि०)१ खळ खळ शब्द करते हुए पानी का बहना । २ खल खल शब्द होना ।
खळाक-(ना०) बिना कष्ट के सहसा एक दम से निकलने का शब्द या भाव ।
खळाखळा-(ना०) १ टुकडा । खंड । २ विनाश । (क्रि०वि०) टुकडे टुकडे । खंड खंड ।
खलास-(वि०) १ समाप्त । खतम । २ च्युत । ३ खाली ।
खलासी-(ना०) इंजन में कोयला झोंकने वाला । २ जहाज में काम करने वाला मजदूर ।
खळाहळ-(ना०) खळहळ शब्द ।
खळी-(ना०) १ खली । सीठी । २ ग्वार मोठ मूंग आदि का खलिहान ।
खलीची-(ना०) बुकची । खलेची ।
खलातो-(ना०) १ खरीता । २ खलता । थैला ।
खलीफो-(ना०)१ एक मुस्लिम अधिकारी । २ नाई । हज्जाम ।
खळीगणो-(क्रि०) १ उंडेलना । २ खाली करना ।
खलेची-(ना०) रस्सी से बांधी जाने वाला कपडे आदि रखने की एक थैला । बुकची । खलीची ।
खलेती-दे० खलेची ।
खळो-(ना०) १ खलिहान । २ युद्धक्षेत्र ।
खल्लो-(ना०) १ जूता । पगरखी । २ फटा हुआ जूता ।
खवाडणो-(क्रि०) खिलाना ।
खवाणो-(क्रि०) खिलाना ।
खवानी-(ना०) खान (खाँ) का बहुवचन । खान लोग । खवातीन ।

खवावणो-(क्रि०) खिलाना ।

खवास-(न०)१ नाई । २ सेवक । ३ एक जाति । (ना०) १ दासी । २ उपपत्नी । ३ रखेल स्त्री ।

खवासण-(ना०) खवास की स्त्री । खवासिन । नाइन । २ दासी । ३ रखेल ।

खवासवाळ-(ना०) खवास और उसकी संतान ।

खवासी-(ना०) १ सेवकाई । २ सेवा । चाकरी । ३ हाजरी ।

खवा खाच-(वि०) १ दोनों हाथों में ठेठ कंधा तक पहिना हुआ (चूड़ा) । दोनों हाथों में चूड़ा पहनी हुई । ३ सधवा । सुहागिन । (ना०) सधवापन । सुहाग । सौभाग्य ।

खवी-दे० खवीस ।

खवीस-(न०)१ दुष्ट तथा भयंकर व्यक्ति । खवीस । २ राक्षस । ३ बिना सिर का प्रेत ।

खवो-(न०) १ कंधा । कांधो । २ पार्श्व । बाजू ।

खस-(न०) गांडर नामक घास की सुगंधित जड़ । लंब ततुआ वाली गांडर की जड़ । उशीर ।

खसकणो-(क्रि०) १ खिसकना । हटना । सरकना । २ बिना सूचना चले जाना । ३ भाग जाना । चले जाना ।

खसकाणो-(क्रि०) हटाना । सरकाना । खिसकाना ।

खसखस-(न०) पोस्त का दाना । खसखस ।

खसखानो-(न०) गरमी के मौसम में रईसों के लिये बनाई जाने वाली खस की टट्टियों की कुटिया । खस गृह । गांडर घर । उशीरालय । टाटी घर ।

खसण-(न०) १ युद्ध । २ शत्रुता । ३ अनबन । झगड़ो ।

खसणो-(क्रि०) १ खिसकना । सरकना । २ चलना । ३ पीछे हटना । ४ भाग जाना । ५ लड़ना । ६ परिश्रम करना । ७ प्रयत्न करना ।

खसपोस-(ना०) १ खस का परदा । २ खस की टट्टी । टाटी ।

खसबो-दे० खसबोई ।

खसबोई-(ना०) सुगंध । खुशबू ।

खसम-(न०) पति । खाविंद । धणी ।

खसर-(ना०) १ छेड़खानी । २ युद्ध ।

खसग-(न०) पवन । वायु ।

खसाखस-(ना०) १ टंटा फिसाद । २ लड़ाई झगड़ा । ३ कहा सुनी । बोल चाल । ४ युद्ध । लड़ाई ।

खसाखूंद-(ना०) १ शत्रुता । २ द्वेष । ३ लड़ाई झगड़ा ।

खसियो-(वि०) खसिया । बधिया ।

खसोलणो-(क्रि०) १ घुसेड़ना । घुसाना ।

खहण-(न०)१ युद्ध । छेड़छाड़ । खसण । झगड़ो ।

खहणो-(क्रि०)१ मरना । २ युद्ध करना । ३ खिसकना । हटना । ४ चलना । ५ चले जाना । ६ गिरना पड़ना ।

खकाळ-(न०) दुर्भिक्ष । (वि०) खाली ।

खख-(ना०) बारीक धूल । वस्तुओं के ऊपर उड़कर जमने वाली महीन मिट्टी । (वि०) १ खाली । २ सार रहित । खोखला । ३ निर्धन ।

खखर-(वि०) जिसके पत्ते झड़ गये हों । बिना पत्तों वाला (वृक्ष) ।

खखाट-(ना०) १ ग्रीष्म ऋतु की तेज हवा । २ ग्रीष्म ऋतु की तेज हवा और उसकी आवाज ।

खखारो-दे० खंखारो ।

खखाळणो-(क्रि०)१ खंगालना । २ धोना ।

खखी-(न०) साधु । खाखी ।

खखेरणो–*(क्रि०)* १ गाली बक देना। २ भटकना। फटकारना। ३ भाड़ना।

खखोळणो–*(क्रि०)* १ किसी वस्तु को पानी में हिला कर धोना। २ हिला कर अंदर से धोना।

खखोळी–*(ना०)* स्नान। सिनान।

खखोळो–*(न०)* १ स्नान। २ शीघ्रता से की जाने वाली स्नान। सिनान।

खखोळो खाणो–*(मुहा०)* स्नान करना।

खग–*(न०)* १ पशु के अंग प्रत्यंगों के रंग या आकृति के द्वारा उसको पहिचानने के चिह्न। २ पशु की आकृति। ३ ऊँट की डाढ़ें। ४ तलवार। ५ ढेर।

खगवाळो–*(न०)* स्त्रियों के गले में पहनने की सोने या चाँदी की हँसली।

खगाळ–*(ना०)* १ स्नान। २ धोना। धुलाई। ३ नाश। ३ तीर।

खगाळणो–*(क्रि०)* १ खंगालना। हलका या कम धोना। धोना। २ नाश करना।

खच–*(ना०)* १ तंगी। कमी। २ घाटा। हानि। ३ खींचातानी। ४ शत्रुता। ५ मनुहार। ६ आकर्षण।

खचणो–*(क्रि०)* १ खिंचना। तनना। खींचा जाना।

खचा खची–*(ना०)* १ आर्थिक तंगी। २ खींचा खींची। ३ झगड़ा टंटा।

खजन–*(न०)* एक पक्षी।

खजर–*(न०)* १ एक शस्त्र। २ खंजन पक्षी। *(वि०)* लंगड़ा।

खजरी–*(ना०)* डफली।

खजरीट–*(न०)* खंजन पक्षी। खजरिंच। खडरिंच।

खटवाडो–*(वि०)* अन्नांश आदि लगने से साफ नहीं किया हुआ (रसोई का पात्र)। जिसमें खटा लगा हो। *(न०)* वह अन्नांश जो भोजन बनाते समय पात्र में लगा रह जाता है।

खटो–दे० खटवाडो।

खड–*(न०)* १ भाग। हिस्सा। २ दल। समूह। ३ अध्याय। प्रकरण। ४ मकान के ऊपर का भाग। ५ मकान का एक भाग। ६ देश। ७ गांड। चौना। ८ टुकड़ा।

खड काव्य–*(न०)* प्रबंध काव्य का एक प्रकार।

खडण–*(न०)* १ काट छाँट। छेदन। खंडन। २ किसी की बात या मत को गलत ठहराना। अशुद्ध प्रमाणित करना। खंडन। ३ गाडने या कूटने की क्रिया। ४ ध्वंस। नाश।

खडणी–*(ना०)* १ अधीन राज्य की ओर से प्रभु राज्य को दिया जाने वाला कर। खिराज। खंडिका। २ खिराज की किश्त। ३ मालगुजारी की किश्त। ३ ओखली। ५ पृथ्वी।

खडणो–*(क्रि०)* १ खंडित करना। तोड़ना। २ अलग करना। भिन्न करना। ३ खाँडना। कूटना। ४ मारना।

खडत–*(वि०)* १ टूटा हुआ। खण्डित। २ अपूर्ण।

खडन–दे० खडण।

खडबड–*(न०)* १ तोड़ा तोडी। तोडा फोडी। २ नाश। *(वि०)* १ अपूर्ण। २ टूटा हुआ।

खडर–*(न०)* १ खंडहर। २ वीरान। उजाड़। ३ नाश।

खडरणो–*(क्रि०)* १ नाश करना। संहार करना। २ काटना।

खडळ–*(न०)* १ टुकड़ा। २ भाग। हिस्सा।

खडवाळियो–*(न०)* खान में पत्थर तोड़ने वाला मजदूर।

खडापीरा–*(ना०)* मठरी।

खडावणो–*(क्रि०)* १ कुटवाना। खंडवाना। २ मरवाना।

खडाह्ळ–*(ना०)* १ तलवार। २ तलवारें।

खडित–दे० खडत ।

खडियो–(वि०) १ खिराज देने वाला । वह जो खडी भरता है । २ खडित ।

खडियो राजा–(न०) वह राजा जो केन्द्र सरकार को खडी भरता है । २ केन्द्र सरकार का मातहती राजा ।

खडी–(ना०) खिराज । खडिया । खरणी । रेख । खिरणी ।

खडीवन–दे० खाडव ।

खडीबागागार–(ना०) अग्नि ।

खडेलवाल–(न०) १ एक वैश्य जाति । २ एक ब्राह्मण जाति ।

खडो–(न०) १ दीवार की चुनाई में काम आने वाला पत्थर का चौकोर टुकडा । पत्थर की इंट । २ तलवार । खाडो ।

खत–(ना०) १ उत्सुकता । २ अभिलाषा । चाह । इच्छा । ३ सावधानी । होशियारी । ४ सावधानी के साथ काम में लगे रहने का गुण । ५ उमंग ।

खदक–(ना०) १ कोना । २ गड्ढा । ३ खाई ।

खदाखोळ–(ना०) १ ऊधम । २ शोर । ३ उद्दण्डता ।

खदी–दे० खधी ।

खदनी–(ना०) मिट्टी की खान ।

खध–(न०) वधा । नाश ।

खधार–(ना०) १ सेना । (न०) १ खधारी घाटा । २ खधार देश । ३ खधार शहर ।

खधी–(ना०) १ किश्त । प्रत्येक ऋण भाग । खण्डिका । २ खिराज । खरणी । खडिका ।

खधीवाळो–(वि०) किश्तों के रूप में वसूली की शर्त से रुपया उधार देने वाला । २ किश्तों के रूप में कर्ज चुकाने वाला । ३ किश्तों की उगाही करने वाला ।

खधेडो–दे० खदडो ।

खधो–(न०) कन्धा । स्कन्ध ।

खभ–(न०) १ स्तम्भ । खभा । थभा । २ कन्धा । ३ बाहुदण्ड ।

खभाइची–(ना०) १ विवाह के अवसर पर गाई जाने वाली एक रागिनी । २ खभावती । खम्माच रागिनी ।

खभावती–(ना०) मालकोस की एक रागिनी । खम्माच ।

खभूठाण–(न०) हाथी को बांधने का स्थल ।

खभो–(न०) खभा । थभा । थांबो ।

खम–(ना०) १ प्रयत्न । २ मस्ती । ३ युद्ध ।

खमणा–(क्रि०) १ प्रयत्न करना । २ मस्ती करना । ३ युद्ध करना । ४ खांसना ।

खाउस–दे० ख्वाहिश । (भ०क्रि०) १ खाऊंगा । २ खायेगा ।

खाई–(ना०) १ खदक । २ किले के चारों ओर रक्षार्थ खोदी हुई नहर ।

खाउकडो–दे० खाऊ ।

खाऊ–(वि०) १ अधिक खाने वाला । २ रिश्वतखोर ।

खाखो–दे० खाखा ।

खाख–(ना०) १ खाक । २ राख । ३ मिट्टी । ४ धूल । खाक । ५ कुश्ता । किसी धातु की भस्म । ६ नाश ।

खाख जिनाई–(ना०) कांख में उठने वाला व्रण । खाखोळाई ।

खाखरी–(ना०) तम्बाकू की सूखी पत्तियां ।

खाखरो–(न०) १ पलाश वृक्ष । २ चना मोठ आदि द्विदल की बनी पतली कुरकुरी रोटी । ३ होली का दूसरा दिन । धूरेली । ४ खूब सिकी हुई करारी रोटी । ५ सूखी रोटी । ६ मोयन डाल कर बनाई हुई बेसन या गेहूं के आटे की कुरकुरी पतली चपाती ।

खाखलो–(न०) गेहूं या जौ के डंठलों का चूरा । भूसा ।

खाखी–(न०) खाख रमाने वाला साधु । (वि०) खाकी रंग का । खाकी ।

खाखो-(न०) नक्शा या चित्र आदि का डौल। ढांचा। बनावट। खाका। आकृति। २ चित्र आकृति।
खाखोळाई दे० खाखविलाई।
खाखो विलखो-(वि०) १ दुखी। २ व्याकुल। उदास।
खाग-(ना०) १ तलवार। खड्ग। २ गेंडे का सींग। थोवडे के बाहर एक तरफ निकला हुआ सूअर का लम्बा दांत।
खागचाळो-(न०) युद्ध।
खाग-भळ-(ना०) १ खड्ग प्रहार रूपी ज्वाला। २ खड्ग प्रहार। ३ खड्ग प्रहार की वेदना।
खाग भल-(वि०) खड्गधारी
खागणो-(क्रि०) १ तलवार चलाना। २ मारना। नाश करना।
खाग-त्याग वीर-(न०) युद्धवीर और दान वीर।
खागरणी-(ना०) तलवार। (वि०) नाश करने वाली।
खागरणो-(क्रि०) मारना। नाश करना। (वि०) नाश करने वाला।
खागवळ-(ना०) १ तलवार। २ शस्त्रबल।
खागेल-(वि०) १ खड्गधारी। २ वीर। (न०) लम्बे दांत वाला सूअर। डाढाळो।
खाज-(ना०) खुजली।
खाजटणो-दे० खाजूटणो।
खाजरू-(न०) १ बकरे का बलिदान। २ बलिदान के लिये मारा जाने वाला बकरा। ३ बलि के बकरे का मास।
खाजापीर-(न०) अजमेर के ख्वाजा पीर मयुद्दीन चिश्ती की दरगाह।
खाजासरो-(न०) नवाबों के अंतःपुर का नपुंसक मुसलमान नौकर। ख्वाजासरा।
खाजूटणो-(क्रि०) खाना (तुच्छता के अर्थ में)। खाजटणो।
खाजो-(न०) मैदे की बनी खस्ता पूरी। खाजा।
खाट-(ना०) चारपाई। खटिया। मांचो।
खाटक-(वि०) १ प्राप्त करने वाला। २ कमाने वाला। उद्यमी। कार्तिग्यो। ३ जीतने वाला। विजयी। ४ वीर। बहादुर। ५ योद्धा।
खाटणियो-दे० खाटक।
खाटणो-(क्रि०) १ प्राप्त करना। २ अधिकार करना। ३ कमाना। अर्जित करना। ४ जीतना।
खाटरो-(वि०) नाटा। ठिगना। ठींगणो।
खाटी-(वि०) १ खट्टी। अम्ल। तुश। २ प्राप्त की हुई। ३ कमाई हुई। (ना०) कमाई। आमदनी।
खाटो-(वि०) खट्टा। तुश। (न०) १ छाछ। २ कढ़ी। २ तरकारी। तीवन। ३ राबड़ी। राब। ५ हाजमा बढ़ाने वाला एक चूर्ण। खट मीठा चूर्ण।
खाटो चू-(वि०) अत्यन्त खट्टा।
खाटो तूड-दे० खाटो चू।
खाटो-वडछ-दे० खाटो चू।
खाड-(ना०) १ खड्डा। गड्ढा। गर्त। खाडो। २ हानि। नुकसान।
खाडाबूच-दे० खाडाबूज।
खाडाबूज-(वि०) खड्डे में डाल कर मिट्टी से बराबर किया हुआ। जमींदोज।
खाडाल-(न०) जसलमेर प्रांत का एक भू भाग। (वि०) खड्डे वाला।
खाडाळी-(ना०) भैंस। (संकेत शब्द)।
खाडू-(न०) भसों का बाड़ा।
खाडेती-(न०) १ बैलगाड़ी को चलाने वाला व्यक्ति। गाडी। २ खेत खड़ने वाला व्यक्ति। हल चलाने वाला। हाळी।
खाडो-(न०) खड्डा। गड्ढा। २ घाटा। हानि। ३ कमी।
खाण-(ना०) १ खान। खदान। २ उत्पत्ति स्थान। ३ भोजन। खाद्य। ४

खानि । योनि । जीवयोनि ।

खाणवी-*(ना०)* १ रिश्वत । लाँच । २ भोजन खर्च ।

खाणखडो-दे० खावणखडो ।

खाण पाण-*(न०)* १ खाना और पीना । २ खाने पीने के शुद्धाशुद्ध का विचार । ३ खाने पीने का ढग । ४ अन्न पानी । ५ सामिल बैठ कर खाने पीने का व्यवहार ।

खाणो-*(न०)* १ भोजन । खाना । २ भोजन सामग्री । जीमण । *(क्रि०)* १ खाना । भोजन करना । २ सेवन करना । ३ हड़प जाना । ४ सहन करना । ५ डसना । काटना । ५ छाक उबासी आदि शरीर के ऊर्ध्व वेगों का मुँह द्वारा उभरना । ७ उडा लेना । ८ घूस लेना ।

खाणो दाणो-*(न०)* १ खाना । भोजन । जीमण । २ खाना पीना । ३ यात्रा में पडाव डाल कर किया जाने वाला विश्राम और खाना पीना ।

खाणो पीणो-*(न०)* खाना पीना । भोजन । भोजन सामग्री । जीमण । *(क्रि०)* १ खाना पीना । २ भोजन करना ।

खात-*(न०)* खेत जमीन की उपज बढाने के लिये उसमें डाला जाने वाला सड़ा गला कचरा । खाद । खातर ।

खातण-*(ना०)* खाती की स्त्री । खातिन । बणाकण ।

खातमा-*(न०)* १ खातमा । अंत । २ मृत्यु । मौत ।

खातर-*(न०)* १ खाद । खात । २ धूम । ३ आदर सत्कार । खातिर । *(अव्य०)* लिये । वास्ते ।

खातर जमा-*(ना०)* १ तसल्ली । २ भरोसा ।

खातरदारी-*(ना०)* आवभगत । आदर सत्कार । खातिरदारी ।

खातरी-*(ना०)* १ आदर । स्वागत । खातिर । २ देखभाल । ध्यान । ३ भरोसा । ४ जिसमें कोई संशय न हो । निश्चय । ५ प्रमाण । सबूत । *(अव्य०)* लिये । वास्ते ।

खातरीबंध-*(वि०)* विश्वास करने योग्य । भरोसावाळो ।

खातरोड-*(ना०)* खातियों के मोहल्ले की वह जगह या चौक जहां मोहल्ले के खाती अपना काम करते हैं । २ खातियों का मोहल्ला । खातोड ।

खातापाड-*(ना०)* खाता बही से उद्धृत किये हुए ग्रामांतर खाता की वह बही जिसमें उधारी निमित्त सफर की सहूलियत की दृष्टि से अलग अलग दिशाओं गाँवों तथा अलग अलग वस्तुओं के व्यवसाय मद के क्रम से खाता की प्रतिलिपि की गई होती है । लेखापाड ।

खातावही-*(ना०)* वह बही जिसमें व्यक्ति वार लेन देन का हिसाब व खाते लगे रहते हैं ।

खाती-*(न०)* बढ़ई । सुथार । बणाक ।

खाती चिड़ो-*(न०)* एक पक्षी ।

खातो-*(न०)* १ खाता । मद । विभाग । २ व्यक्ति परक लेन देन का हिसाब । रोकड बही के जमा खर्च का मद वार हिसाब । ३ खाता बही । ४ विषय । प्रकरण ।

खातो खलोणो-*(मुहा०)* १ काम काज का नया विभाग शुरू करना । २ बैंक या दुकानदार के यहां नया खाता खोलना । ३ नया व्यवहार करना । ४ ब्याज पर उधार लेना ।

खातो चूकतो करणो-*(मुहा०)* १ लेन देन बराबर करना । २ ऋण चुका देना ।

खातो पाडणो-*(मुहा०)* नाम का खाता लगाकर लेन देने की रकम खाते में लेना । लेने देने वाले के नाम का खाता लगाना ।

खातो-पीतो-*(वि०)*१ खान-पीने से सुखी। २ स्वस्थ। हृष्ट पुष्ट।

खातो सरभर करणो-*(मुहा०)* १ लेन दन बराबर करना। जमा उधार बराबर करना। २ हिसाब चुकता करना।

खाथाई-*(ना०)*शीघ्रता। त्वरा। उतावळ।

खाथो-*(क्रि०वि०)* शीघ्र। जल्दी। *(वि०)* उतावला। तज। उतावळो।

खाद-*(ना०)* १ हानि। नुकसान। टोटो। २ सोने चादी म मिली हुई विजातीय धातु। ३ खात। खातर।

खादन-*(न०)* दांत।

खादर- *(ना०)*तरी वाली जमीन। तराई।

खादरो-*(न०)* खड्डा। गड्ढा। खाडो।

खादी-*(ना०)* १ हाथ कता और हाथ बुना कपडा। खद्दर। २ मोटा सूती कपडा। रेजो।

खादीधारी-*(वि०)* खादी पहनने वाला।

खादोकडो-*(वि०)* १ अधिक खाने वाला। २ मिष्ठान्न प्रिय। चटोरा। चटोकडो।

खाध-*(ना०)* १ हानि। नुकसान। घाटो। टोटो। खाद। २ खुराक। ३ दोष। ऐब। नुक्स। ४ कमी। न्यूनता।

खान-*(न०)* १ मुसलमान। २ मुसलमान सरदार। ३ पठानो की एक उपाधि। ४ कुँए म पानी कम हो जाने पर उसमे स मिट्टी निकाल कर और गहरा करना। ५ खान। खदान।

खानगी-*(वि०)* १ गुप्त। व्यक्तिगत। स्वकीय। घरू। निजी।

खानदान-*(न०)* १ कुटुम्ब। परिवार। २ वश। कुल। ३ उच्च कुल। घराणो।

खानदानी-*(ना०)*कुलीनता। २ सज्जनता। *(वि०)* १ खानदान वाला। कुलीन। प्रतिष्ठित। घराणावाळो। २ कुटुम्ब वाला। ३ ऊँचे कुल का। ४ पतृक। वश परम्परागत।

खान-पान-*द०* खाण पाण।

खानसामो-*(न०)* खानसामां। रसोईया।

खानाजगी-*(ना०)* लडाई।

खानाजाद-*(वि०)* जन्म से पाला पोषा हुआ। (सेवक)। *(न०)* चाकर।

खानाजाद गुलाम-*(न०)* १ अपने स्वामी की हर प्रकार की और हर समय सेवा करने का सौभाग्य समझने वाला सेवक। २ वश परम्परा से सेवकाई म रहने वाला सेवक। ३ जन्म से पाला पोषा हुआ सेवक। ४ पालन पोषण के ऋण से उऋण होने की भावना से सेवा करने वाला व्यक्ति।

खानाण-*(ना०)* १ मुसलमान प्रदेश। २ मुसलमान। ३ मुसलमानो का समूह। ४ यवन सेना।

खानाबदोश-*(वि०)* घुमतू। यायावर।

खानाखाण-*(वि०)* १ शत्रुवश उच्छेदक। २ यवनो का नाश करने वाला।

खानेडी-*(ना०)* १ मिट्टी का खान। २ छोटी खान। खदेडी।

खानो-*(न०)*१ खड। २ खाना। कोष्टक। ३ सदूक, अलमारी आदि म बना विभाग। ४ मेज के नीचे लगा हुआ खाना। दराज।

खाप-*(न०)* १ बाहु। २ दपण। ३ तलवार। ४ म्यान। कोप। *(वि०)* दपण जसा स्वच्छ। साफ सुथरा।

खापगा-*(ना०)* गगा नदी।

खापटी-*(ना०)* १ बास की पतली पट्टी। खपची। २ तलवार के लिए ऊन वाचक शब्द। तलवार।

खापटो-*(न०)* पत्थर की पतली और चौरस शिला।

खापर-*(न०)*१ विरुद्ध धमवाला। काफिर। मुसलमान। २ धूत। ३ बबर। ठग।

खापरियो-(वि०)१ धूर्त्त। शठ। चालाक। २ ठग। वचक ३ चोर। ४ अनाज मे लगने वाला एक कीडा।
खापा नमावणो-(मुहा०) उद्दण्डा को झुकाना। उद्दण्डो को स रस्ते लाना।
खापा न मावणो-(मुहा०) १ उत्साहित होकर अथवा त्रोधित होकर अपने आप मे नही रहना। २ अति अभिमान करना।
खापी-(ना०) १ आवश्यकता। जरूरत। २ माग। चाह। खपत।
खाफरो-(न०) एक प्रसिद्ध चोर का नाम।
खाबक-(ना०) १ खार भाणा आदि से भरी हुइ अजलि या हथली। खाबचा। २ अफीम (कसूबे) से भरी हुई अजलि। ३ अजलि। ४ यश गायक। ५ भाट आदि याचक। याचक वग। ६ भोजन भट्ट।
खाबचा-(न०) हथेली का एक सपुट। खाबक। खाबचो।
खाबड-(न०) १ जसलमेर राज्य का एक भाग। २ इडर प्रदेश का एक भाग।
खाबालियो-(वि०) बाये हाथ से भी काम करने या लिखने का आदी वाला। खाबेडी। स यसाची।
खाबेडी-दे० खाबलिया।
खाबोचियो-(न०) छोटा गड्ढा। २ पानी का छोटा गड्ढा। डबरा।
खाबोचो-दे० खाबोचिया।
खाम-(न०)१ लिफाफा। २ सधि। जोड। ३ बरतन और उसके ढक्कन की सधि का गीली मिट्टी से बद करने का काम।
खामखाह-(क्रि०वि०) व्यर्थ। यों ही।
खामचाई-(ना०) हस्तकौशल। कारीगरी। चतुराई। निपुणता।
खामचा-(वि०) निपुण। प्रवीण। कुशल।
खामण-(न०) १ खाम करने का क्रिया। २ बद्ध गीला मसाला जिससे किसी पात्र के ढक्कन को साथ को बद किया जाता है। ३ अकमण्यता। निठल्लापन। ४ मौन। चुप।
खामणियो-(न०) खाम करने के बाद का बरतन। २ चूल्हे के आगड की पाली म हडिया रखने के लिये बनाया हुआ छोटा गोल खड्डा।
खामणी-दे० खामणियो।
खामणो-(क्रि०) १ गीली मिट्टी आदि से किसी पात्र के ढक्कन को चिपका कर बद करना। २ लिफाफे को (उसमे चिट्ठी डालकर) गोद से चिपका कर बद करना। (न०) १ शरीर की ऊँचाइ। कद। २ आकार। (वि०) ठिगना। बौना। ठींगणो।
खामी-(ना०) १ दोष। भूल। २ कमी। त्रुटि। न्यूनता। कसर। ३ घाटा। हानि। ४ दोष। कसूर। अपराध।
खामीदार-(वि०) १ कसूरवार। अपराधी। दोषी। २ त्रुटित। खडित। ३ भूलक।
खामेडो-दे० खाभीडो।
खामोश-(वि०) चुप। मौन।
खामोशी-(ना०) १ चुप्पी। मौन। २ नीरवता।
खायकी-(ना०) १ रिश्वत। घूस। २ खाने का खर्चा।
खार-(न०) १ क्रोध। गुस्सा। २ द्वेष। डाह। ३ दुश्मनी। ४ क्षार। ५ सज्जीखार। ६ सुहागा। सुहागाखार।
खारक-(ना०) छुहारा। खारक।
खारक-चोर-(वि०) १ मगलोभी। ग प्रिय। २ कामी। (न०) कामी पुरुष।
खारखद-(वि०) नाखवाना। शाखी।
खारच-(वि०) क्षार वाली (भूमि)।
खारचिया-(वि०) साधारण खार पानी का सिचाइ से उत्पन्न होने वाले (गेहू)।

खारज-*(वि०)* १ बिगडा हुआ । २ कोट द्वारा बेबुनियाद ठहराया गया (मुकदमा)। ३ बहिष्कृत । ४ रद्द किया हुआ ।

खारण-*(न०)* १ एक प्रकार का खट्टा गुड । खारी भूमि ।

खारभजणा-*(न०)*अफीम शराब आदि लेने के बाद मुँह का स्वाद सुधारने के लिए खाया जाने वाला सुपारी खारक, इला यची मिसरी, पापड आदि कोई खाद्य पदाथ ।

खारवाळ-*(न०)* नमक उत्पन्न करने वाली एक जाति या उस जाति का व्यक्ति ।

खारवाळण-*(ना०)* खारवाळ की स्त्री ।

खारवाळी-*(ना०)* १ खारवाळ की स्त्री । २ दे० खाराळी । *(वि०)*१ क्षारवाली । २ क्रोधवाली । क्रोधी ।

खारवाळा-*(वि०)*१ क्षारवाला । २ क्रोध वाला । क्रोधी ।

खाराखेरो-*(न०)* बचे खुचे सामान का चूरा । २ बचाखुचा सामान ।

खारामीठा-*(वि०)* नमकीन और मीठा । *(न०)* १ नमकीन और मीठी वस्तु । २ दुख सुख ।

खाराळी-*(ना०)* सोना चादी की भालन क छोटे छोटे टुकडो को उकाले हुए सुहाग के पानी के साथ रखन का एक छोटा प्रस्तर पात्र । सुहागा सहित टाका रखने का पात्र । क्षार वाली । *(वि०)* १ क्षार वाली । २ क्रोध वाली । क्रोधी ।

खारास-*(न०)* १ कुछ कुछ खारापन । २ खारापन ।

खारिज-दे० खारज ।

खारियो-*(न०)* १ बाजरी के सूखे डठल । २ सज्जी का पानी डाल कर बनाया जानेवाला म्राटे का खीच । ३ एक घास ।

खारी-*(वि०)* १ क्षारवाली । *(ना०)* मरु स्थल का एक प्रदेश । २ राजस्थान की एक नदी । ३ डलिया । छोडी ।

खारीलो-*(वि०)* १ क्रोधी । २ द्वेषी । ईर्ष्यालु ।

खारो-*(वि०)* १ क्रोधी । २ तेज । ३ जोशीला । ४ क्षार वाला । ५ नमकीन । ६ अप्रिय । *(न०)* १ एक क्षार । पापड मे डालने का खारा । २ लवण । नमक । ३ सुहागा ।

खारो-आक-*(वि०)* आक के समान कड़ुआ अत्यन्त कडुआ । २ अत्यन्त खारा ।

खारोळ-दे० खारवाळ ।

खाल-*(न०)* १ चमडा । २ धातु पात्र के गिरने से उसम पड जाने वाला खड्डा । मोच । ३ ढलाई । ढाल । ४ ढुलवाँ जगह ।

खाळ-*(न०)* १ पानी का नाला । २ पानी की छोटी नाली । खाळी । मोरी ।

खालडियो-*(न०)* १ चमडा रगने या कमाने वाला । २ चमडे का व्यापार करने वाला ।

खालडी-*(ना०)* चमडी त्वचा । चामडी ।

खालडो-*(न०)* चमडा । चामडो ।

खालणो-*(क्रि०)* १ धातु के पत्र या चद्दर के टुकडे म खाल डालकर कटोरीनुमा बनाना । २ मारना ।

खालसो-*(अव्य०)* १ मुफ्त मे । यो ही । २ बिना कारण ।

खालसा-*(न०)* राजाओं की उपपत्नियों का एक प्रकार । २ रखल । ३ दासी । ४ सिख सम्प्रदाय ।

खालसाई-*(वि०)* १ खालसे का । २ राज्य का । सरकारी ।

खालसो-*(न०)* १ राज्य सरकार । २ सब साधारण । *(वि०)* १ राज्य का । सरकारी । २ राज्य के अधिकार का ।

खालसा होणो-*(मुहा०)* जमीन गाँव देश आदि का जब्त होना । जागीरदार का कब्जा हटकर किसी जमीन, गाँव आदि का सरकारी कब्जे म ले लिया जाना ।

खालिक–*(न०)* सजनहारा । सृष्टिकर्ता ।

खाळिया करणो–*(मुहा०)* अन्याय के विरुद्ध धरना देकर अपने ही हाथ से अपना सिर काट कर बलिदान हो जाना । चांदी करणो ।

खालियो–*(न०)* घाव ।

खाळियो–*(न०)* पानी की नाली ।

खालिस–*(वि०)* निखालिस । शुद्ध ।

खाली–*(वि०)* १ रिक्त । खाली ठानी । २ निठल्ला । बेकार । ३ व्यर्थ । ४ निधन । *(क्रि०वि०)* १ मात्र । केवल । २ योंही । एसे ही ।

खाळी–*(ना०)* पानी की नाली । मोरी । नाळी ।

खालीखम–*(वि०)* बिलकुल खाली ।

खाळीदो–*(वि०)* निद्रावश ।

खालीपीली–*(अव्य०)* बिना कारण । व्यर्थ ।

खाळू–*(न०)* १ खेल का साथी । खेल में अपने अपने पक्ष का सहयोगी । २ कबड्डी का साथी खिलाडी । खेळू ।

खाळो–*(न०)* गंदे पानी का नाला । २ नाला । नाळो ।

खावणखंडो–दे० खावणसूरो ।

खावणसूरो–*(वि०)* बहुत खाने वाला । खाने में शूरवीर । खाऊ ।

खावणियो–*(वि०)* १ खाने वाला । २ उपभोग करने वाला । ३ सहन करने वाला ।

खावणो–*(क्रि०)* १ खाना । भोजन करना । २ सहनकरना । उदा०मार खावणो । ३ सेवन करना । उदा० हवा खावणो । ४ छींक दम उबासी आदि खाना । ५ हजम करना । हड़प करना ।

खावणो पीवणो–दे० खाणो पीणो ।

खावतो पीवतो–दे० खातो पातो ।

खाविंद–*(न०)* १ पति । खाविंद । २ मालिक । धणी ।

खावाळ–*(वि०)* खाने वाला ।

खावाळी–*(ना०)* खाने की इच्छा ।

खाविद–दे० खावद ।

खास–*(वि०)* १ स्वयं । मुख्य । विशेष । ३ निजका । अपना । आत्मीय । *(न०)* खांसी । कफ ।

खास करनै–*(अव्य०)* खासकर । विशेषत । प्रधानत ।

खासखेळी–*(अव्य०)* १ खास आदमियों की मंडली । अपनी मंडली । २ आनंद गोष्ठी ।

खासडो–*(न०)* १ जूता । २ फटा पुराना जूता ।

खास ड्योढी–*(ना०)* १ रानियों के रहने का स्थान । २ राजमहल का खास द्वार ।

खास नवीस–*(न०)* १ नवीसदा का ऊपरी । २ गुप्त बातों का लिखने वाला । ३ राजा का निजी लेखक ।

खासियत–*(ना०)* १ विशेषता । २ गुण ।

खासी–*(ना०)* रानी से संबंधित, यथा–खासी डावडी ।*(वि०)*१ बहुत । अधिक । खूब । २ बढिया । ३ बराबर ।

खासी डावडी–*(ना०)* [illegible] और विश्वासपात्र दासी ।

खासीताळ–*(अव्य०)* १ बहुत [illegible] । [illegible] विलम्ब । २ बहुत [illegible] ।

खासो–*(वि०)* १ [illegible] का विशेषण । [illegible] खासा घाड़ा, [illegible] खासा [illegible] ३ बहुत [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

खासो थाळ-(न०) राजा के लिए परोसा जाने वाला थाल। राजा का भोजन।

खासो नौकर-(न०) राजा के हरदम पास रहने वाला नौकर। २ राजा का निजी विश्वसनीय नौकर।

खाहडो-दे० खासडो।

खाहिस-दे० ख्वाहिश।

खा-(न०) १ मुसलमान। २ खान। पठान। (अव्य०) मुसलमानों के नामों के अंत में लगने वाला एक शब्द।

खांख-(ना०) कांख। बगल।

खांखळ-(ना०) आकाश में छाई हुई गर्द।

खाखळणो-(क्रि०) आकाश में धूल छा जाना।

खाखळियो-(वि०) धूल से आच्छादित। रजाच्छादित।

खागडो-(न०) राठौड़ राजपूत। (वि०) १ बांका वीर। २ उद्दण्ड। ३ टेढ़ा।

खागली-(वि०) टेढ़े सींगो वाली। (गाय)

खागी-(वि०) १ टेढ़ी। बांकी। २ टेढ़े सींगो वाली। ३ वारांगना।

खागीबंध-(न०) १ राठौड़ राजपूत। २ राठौड़ राजपूतों का एक विरद।

खागो-(वि०) १ टेढ़ा। बांका। वक्र। २ वीर। बहादुर।

खागो बांको-(वि०) टेढ़ा मेढ़ा।

खांच-(ना०) १ स्त्रियों के बाहु मूल से कोहनी तक का भाग जिसमें गावदुम हाथीदांत की चूड़ियों का सेट पहना जाता है। दे० खांच रो-चूडो। २ तंगी। संकीर्णता। ३ घाटा। हानि। ४ कोना। ५ मोड़। खांचा। ६ मनुहार। आग्रह।

खांचखूंच-(ना०) १ छोटी मोटी त्रुटि। कोर कसर। न्यूनता। २ बारीकी। गहराई।

खांचणो-(क्रि०) १ खींचना। घसीटना। २ म्यान में से शस्त्र बाहर निकालना। ३ भभके से अर्क शराब आदि बनाना। ४ रेखा बनाना।

खांच-रो-चूडो-(न०)खांच में पहिना जाने वाला हाथी दांत का गावदुम चूड़ियों का सेट।

खांचा-ताण-(ना०) १ किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिये एक दूसरे के विरुद्ध किया जाने वाला प्रयास। खींचाखींची। २ छीना झपटी। ३ मनुहार। ४ किसी शब्द अथवा वाक्य का जबरदस्ती से किया जाने वाला भिन्न अर्थ का प्रयास। काल्पनिक अभिप्राय निकालने का प्रयास।

खांचा ताणी-दे० खांचाताण।

खांचायत-(वि०) १ खींचने वाला। २ तंगी वाला। कमी वाला। ३ खींचा जाने वाला।

खांचो-(न०) १ मोड़। २ कटाव। ३ संकरा रास्ता। ४ नुक्कड़। ५ निकलता हुआ कोना। आगे निकला हुआ भाग।

खाट-(न०) भील मेणा आदि लूट खसोट व शिकार करने वाली जातियों का समूह। (वि०) १ लातें मारती दूध देने वाली। (गाय) २ दूध नहीं देने वाली। (गाय) ३ धूर्त। काइयां।

खाट गाय-(ना०) आसानी से दूध नहीं दुहाने वाली गाय।

खाट जात-दे० खाट। (न०)।

खांड-(ना०) १ शक्कर। २ चीनी।

खांडणियो-(न०) मूसल। साबीलो। (वि०) १ खांडने वाला। मूसल से कूटने वाला। २ नाश करने वाला।

खांडणी-(ना०) १ ओखली। ऊखळ। २ छोटा मूसल।

खांडणो-(क्रि०) १ धान्य या किसी वस्तु को ओखली में मूसल से या इमामदस्ते से कूटना। २ मारना ३ नाश करना। ४ भाले से मारना। ५ सवारी ऊंट का कूदते हुए चलना। (न०) मूसल। (वि०)

१ खांग्ने वाला। मूसल न टूटने वाला। २ कूदते हुए चलने या दौड़ने वाला (सवारी ऊंट)। ३ मारने वाला। नाश करने वाला।

खाड़ बारस–दे० गांडवारो।

खाड़बारो–(न०) बारहवें दिन किया जाने वाला मृत्यु भोज। श्रौसर। नुक्तो। मोसर।

खांडणो–(क्रि०) १ नाश करना। २ मारना। ३ टुकड़े करना।

खाडव–(न०)१ एक वन का नाम (पुराण)।

खाडाधर–(वि०) शस्त्रधारी।

खाडाळी–(वि०) टूटे हुए सींगों वाली। (गाय भैंस आदि)

खाडियो–(वि०) १ खंडित सींगों वाला। (ढोर) २ विकलांग। गाडा।

खाडाळो–(वि०) खड्गधारी।

खांडी–(वि०) खंडित। (ना०) १ एक तौल। २ एक माप।

खाडेराव–(वि०) १ तलवार चलाने में प्रवीण। २ खड्गधारी।

खाडैल–(वि०) खड्गधारी।

खाडो–(न०) १ तलवार। २ दुधारी तलवार। (वि०) १ खंडित। खाडा। टूटा हुआ। २ अपूर्ण।

खाडो खोचरा–(वि०) टूटा फूटा।

खात–(ना०) १ तीव्र इच्छा। २ लगन। ३ चतुरता। ४ रुचि। ५ विवेक बुद्धि। ६ उत्कंठा। ७ सावधानी। होशियारी। ८ सावधानी से काम करने का गुण। ९ देख रेख। निगहबानी। १० शौर। ११ उमंग।

खातीलो–(वि०) १ तीव्र उत्साह व इच्छा वाला। २ जानने वाला ३ जिज्ञासु। ४ रसिक। ५ बहुज्ञ। ६ चतुर। ७ खांत से काम करने वाला। (अव्य०) विवाह संबंधी लोकगीतों के नायक का एक विशेषण।

खादेडी–दे० गानडी।

खाध–(ना०) १ कंधा। २ पशु की गरदन। ३ अरथी को कंधे पर उठाने का भाव।

खाधिया–(न०) शव का रथी को कंधे पर उठा कर श्मशान ले जाने वाला। अरथी ढोने वाला। कंधा देने वाला।

खाधो–(न०) १ कंधा। २ बैल की गरदन।

खाधाळो–(न०) १ कंधा। २ जुए की लंबी लकड़ी के जूए (सिरो) के पास ऊपर की ओर उठा हुआ भाग।

खाप–(ना०) १ कुल शाखा। २ वंश। ३ गोत्र। ४ जाति। ५ फल की लंबी चीरी। ६ छील कर बनाया हुआ बांस का चिपटा टुकड़ा। खपची। चीप।

खापण–(न०) कफन।

खापा–(न०) १ टूटी हुई डाल के तने से लगा रहने वाला ठूंठ। गुल्य। २ ज्वार बाजरी आदि के डंठल का वह नीचे का भाग जो फसल काटने पर भी जमीन में लगा रहता है। घोचो। (वि०) १ झगड़ालू। चमकू। २ उजड्ड। गँवार।

खापो सरडो–दे० खापा खीलो।

खापा खीलो–(वि० खापा और कील के समान चुभने वाला। दुखदायी। दुष्ट। २ कलहप्रिय। झगड़ालू। खीलोखापो।

खाभ–(ना०) १ पर्वत का मोड़। २ दो पर्वतों के मध्य का भाग ३ पहाड़ी ढलाव। ४ पहाड़ का भीतर घुसा हुआ भाग। ५ तलहटी। ६ कुँए में से पानी निकाल जाने वाले चरस की लाव (रस्सी) की कीली।

खाभणो–(क्रि०) १ ठहराना। २ रोकना। ३ खड़ा करना। ४ मारना।

खाभियो–(न०)१ दे० खाभीन्दो। खामेडो। २ नट। (वि०) शव की रथी को कंधे पर उठाने वाला। खांधियो।

खांभी–दे० खांभीणो । २ स्मृति स्तम्भ । स्मारक ।

खांभीडो–(वि०) कुंए में से चरस निकालने के लिये बैलों को हांकने वाला व्यक्ति । पुरहा । २ चरस के द्वारा कुंए में से पानी निकालने की लाव की कीली निकालने वाला व्यक्ति । खांभी । कोलियो । खामेडो ।

खावचाई–दे० खामचाई ।

खासडो(न०) १ जूता । २ फटा पुराना जूता । खाहडो ।

खासणो–(क्रि०) खांसना ।

खांसी–(ना०) १ गले में अटके हुए कफ को बाहर निकालने की क्रिया । २ कास रोग । खांसी । धांसी ।

खिचडी–दे० खीचडी ।

खिचता–(ना०) क्षमा ।

खिजणो–दे० खीजणो ।

खिजमत–(ना०) १ हजामत । क्षौर । २ सेवा । चाकरी । खिदमत ।

खिजा–(ना०) पतझड । खिजां । पानखर । २ पतन । अवनति ।

खिजाणो–दे० खिजावणो ।

खिजावणो–(क्रि०) १ क्रोधित करना । २ चिढाना । खिजाना । तंग करना ।

खिजी–(न०) ऊंट ।

खिजूर–(ना०) खजूर ।

खिडक–(ना०) १ कंटक तृणों से बने हुये फलसे का अगल डंडा । २ खिडकी । द्वार । ३ व्यवस्थित ढेर । ४ ढेर । राशि । ५ वस्तु के अग्र या सीमा से बाहर निकला हुआ किनारा । बाहर की ओर झुका हुआ भाग । (वि०) अनकृत ।

खिडकणो–(क्रि०) १ चिनना । २ तरकीब से रखना । ३ ढेर लगाना ।

खिडकियापाघ–(ना०)मध्यकालीन राजाओं के आंगीजामा पहनते समय धारण की जाने वाली पगडी जिसका अग्र का भाग खिडक की तरह उठा रहता था जिसमें तुर्रा सेली, कलगी और सिरपेच आदि लगे रहते थे । खिडकदार पगडी । २ इसी प्रकार की दूल्हे की पगडी ।

खिडकी–(ना०) १ किंवाड । २ झरोखा । ३ द्वार । दरवाजा । ४ घर । ५ वंश ।

खिण–(न०) एक पल । समय का चौथा भाग । क्षण । (ना०) हठ करने की आदत ।

खिणक–(ना०) १ बिजली । २ क्षण । (अव्य०) क्षण भर में । क्षण में ।

खिणका–(ना०) १ बिजली । २ झूठी रुलाई ।

खिणणो–(क्रि०) १ नाश करना । मारना । २ खुजाना । ३ खोदना ।

खिणदा–(ना०) रात ।

खिणवाणो–(क्रि०) १ खुदवाना । २ हटवाना । ३ तुडवाना ।

खिणतरि–(अव्य०) क्षण भर के बाद । थोडी देर के बाद । क्षणान्तर ।

खिणाणो–दे० खिणावणो ।

खिणावणो–(क्रि०) १ खुदवाना । २ हटवाना । ३ तुडवाना ।

खिणेक–(क्रि०वि०) क्षणेक । क्षण भर । थोडी देर ।

खित–(ना०) १ पृथ्वी । क्षिति । २ क्षत्र । ३ घन ।

खितज–(न०) १ क्षितिज । २ वृक्ष ।

खितजा–(ना०) क्षितिजा । सीता ।

खितधर–(न०) पर्वत । क्षितिधर ।

खितप–(न०) राजा ।

खितपाळ–(न०) १ क्षेत्रपाल । २ राजा ।

खितपुड–(न०) पृथ्वीतल ।

खितवो–(न०) १ पद । ओहदा । रुतबा । २ प्रतिष्ठा । ३ प्रशंसा ।

खितरू–(न०) क्षितिरुह । वृक्ष ।

खिताव-(न०) उपाधि। पदवी।
खिति-दे० खित।
खितिज-(न०) वह दृश्य जहां धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं। क्षितिज। २ वृक्ष।
खिदमत-(ना०) सेवा। चाकरी। टहल।
खिदमतगार-(न०) सेवक। नौकर।
खिनाणो-(क्रि०) १ भेजना। २ भिजवाना। ३ उठवाना। ४ उचवाना।
खिनावणो-दे० खिनाणो।
खिपा-(ना०) रात। क्षिपा।
खिमण-दे० खिवण।
खिमणा-दे० खमणो।
खिमता-दे० खमता।
खिमा-दे० खमा।
खिमावत-(वि०) १ क्षमावत। दयालु। २ क्षमा करने वाला। ३ शांत प्रकृति। ४ गंभीर। धीर।
खिमिया-(ना०) १ क्षमा। २ देवी। शक्ति। ३ पृथ्वी।
खिमियावान-(वि०) १ क्षमा करने वाला। क्षमावान। २ शांत प्रकृति। गंभीर। धीर। ४ दयालु।
खिमियावाळो-दे० खिमियावान।
खिरणियो-(न०) बाड करने के काम में ली जाने वाली शमी आदि कँटीले वृक्षों की काटी हुई शाखा। खरणियो।
खिरणी-(ना०) एक वृक्ष और उसका फल। रायण। खिरनी। दे० खरणी।
खिरणो-(क्रि०) वृक्ष से पत्ते फूल आदि का नीचे गिरना। २ गिरना। भड़ना।
खिराज-(ना०) १ राजस्व। खड़ी।
खिल-(ना०) १ खेत में पहली खेडन। २ विकसित होती हुई खेती। यांत्र कृषि। ३ बिना जुती भूमि।
खिलअत-दे० खिलत।
खिलकत-(ना०) सृष्टि। संसार।
खिलको-(न०) १ अनुचित हँसी मजाक। २ तमाशा। हँसी। खेल। ३ तमाशबीनों की भीड़। ४ वातावरण। ५ अव्यवस्था।
खिलणो-(क्रि०) १ विकसित होना। खिलना। फूलना। २ फबना। शोभा देना।
खिलदार-(वि०) १ खिलाड़ी। २ ख्याल रचने वाला। ३ ख्याल अभिनय करने वाला।
खिलवत-(ना०) १ आमोद प्रमोद। हँसी खुशी। २ आमोद प्रमोद की गोष्ठी। ३ एकांत स्थान। खिलवन। ४ खेल तमाशा।
खिलवाड-(ना०) १ खेल। तमाशा। कौतुक। २ जिसको करने में कोई तकलीफ का अनुभव न हो ऐसा साधारण काम।
खिलहरी-दे० खिलोरी।
खिलाट-दे० खेलाड।
खिलाटी-दे० खेलाड़ी।
खिलाणो-(क्रि०) १ खिलाना। भोजन कराना। २ खेलने देना। ३ विकसित करना।
खिलाफ-(वि०) विरुद्ध। प्रतिकूल।
खिलाफत-(ना०) विरुद्धता। प्रतिकूलता।
खिलियार-(वि०) १ खिलाड़ी। २ रण रसिक। युद्ध कुशल। युद्ध का खिलाड़ी।
खिलोणो-(न०) खिलौना। रमकडो। रामतियो।
खिलोरी-(न०) १ जंगली मनुष्य। २ असभ्य व्यक्ति। ३ भेड़ बकरी चराने वाला व्यक्ति। गडरिया। रबारी।
खिल्लत-(ना०) वे वस्त्रादि जो बादशाह की ओर से किसी राजा आदि को उसके सम्मानार्थ उपहार में दिये जाते हैं। खिलअत।
खिल्ली-(ना०) हँसी। मजाक। दिल्लगी।

खिल्लो खिल्ल-*(न०)* १ एक का दूसरे में समा जाने से उत्पन्न एक रूपता। समान रूप। एक रूप। २ अभिन्नता। ३ गाढ मिलन।
खिवण-*(ना०)* बिजली। चपला। विद्युत।
खिवणो-*(क्रि०)* १ बिजली का चमकना। २ आक्रमण करना। ३ झपटना। ४ क्रोध करना।
खिसकणो-दे० खसकणो।
खिसकाणो-दे० खसकाणो।
खिसकावणो-दे० खसकाणो।
खिसण-दे० खसण।
खिसणो-दे० खसणो।
खिसाणो-*(वि०)* १ लज्जित। शर्मिन्दा। *(क्रि०)* १ लज्जित करना। २ खिसकना। पीछे हटना। *(क्रि०भू०)* लज्जित हुआ।
खिहाणो-दे० खिसाणो।
खिंचणो १ तनना। २ आकर्षित होना। ३ घसीटा जाना। ४ अंकित होना। ५ अंकित करना।
खिंचाई-*(ना०)* १ खींचने की क्रिया या भाव। खींचने की मजदूरी।
खिंचाव-*(न०)* १ तनाव। २ मतभेद। ३ शत्रुता। ४ खींचने का काम या भाव।
खिंडणो-*(क्रि०)* १ चलना। जाना। २ मरना। ३ तहस नहस होना। ४ छितराना। बिखरना। तितर बितर होना। ५ ले जाना। ६ उठाना। ७ बिखरना।
खिंडाणो-*(क्रि०)*१ बिखराना। छितराना। तितर बितर करना। २ तहस-नहस करना। ३ उठवाना। ४ ले जाना।
खिंदाणो-दे० खिंडाणो।
खिंवण-*(ना०)* बिजली।
खिंवणो-*(क्रि०)* १ बिजली का चमकना। २ क्रोध करना।
खीच-*(न०)* छडे हुए बाजरी या गेहूं को दाल के साथ पका कर बनाया हुआ खिचड़ी जैसा एक खाद्यान्न। २ बाजरी की खिचडी।
खीच खरोड-*(वि०)* १ खूब खीच खाने वाला। २ अधिक खाने वाला।
खीचड खोटो *(न०)*१ ओखली में मूसल से खीच कूटने वाला। २ मूसल। सांबेलो।
खीचड वार-*(न०)* माघ मास की संक्रांति, जिस दिन सूर्य पूजा के निमित्त सात धान्यों का खीच और गुडराब बनाई जाती है। मकरसंक्रांति। सकरायत। खीच खाने का दिन। खीच परव। खीचवार। खिचडवार।
खीचडी-*(ना०)* दाल और चावल शामिल पका कर बनाया जाने वाला एक खाद्यान्न। खिचडी।
खीचडी नाग-*(न०)* जागीरदार का एक कर।
खीचडो-दे० खीच।
खीच परव-दे० खीचड्वार।
खीचवार-दे० खीचडवार।
खीचियो-*(न०)* गेहूं ज्वार आदि के आटे को सज्जी के पानी में पका कर बना हुआ एक प्रकार का पापड।
खीची-*(ना०)* १ चौहान राजपूतों की एक शाखा। *(न०)* २ खीची राजपूत।
खीचीवाडो-*(न०)* खीची राजपूतों की जागीरी का प्रदेश।
खीज-*(ना०)* १ क्रोध। गुस्सा। रीस। २ चिढ। झुंझलाहट। ३ शीतकाल में ऊंट को आने वाली मस्ती। ऊंट की गर्जन।
खीजणो-*(क्रि०)* १ क्रोध करना। रीसणो। रीस करणो। २ खीजना। झुंझलाना। चिडणो। ३ पश्चाताप करना। ४ ऊंट का मस्ती में आना।
खीजाणो-*(क्रि०)* १ क्रोधित होना। २ क्रोधित करना। चिडाणो।
खीजाळ-*(वि०)* क्रोध करने वाला। खीजने वाला। *(न०)* ऊंट।

भिन्न मय करना । ३ आग्रह । ४ दुरा ग्रह ।

खींचा-ताणी–दे० खींचाताण ।

खींचीजणो (क्रि०) १ खींचा जाना । २ घसीटा जाना ।

खीजो–(न०) जेब ।

खींटणो–(क्रि०) १ तोड़ना । २ नाश करना ।

खीडणो (क्रि०) बिगरना । पनाना । दे० खिडणो ।

खीप (न०) लम्बी और पतली सीकों तथा बिना पत्ता वाला एक क्षुप ।

खीपडो–दे० खीप ।

खीपोली–(ना०) खीप की फली ।

खीवर–(वि०) शूरवीर । बहादुर ।

खीवळ–(न०) एक आभूषण ।

खु़ा–(ना०) १ पानी पीने की अधिक इच्छा । अधिक प्यास । २ गरमी या या बुखार के कारण गल में उत्पन्न होने वाली खुश्की और प्यास । ३ खुश्की ।

खुस–दे० खुक ।

खुजळी–(ना०) खुजली । खाज ।

खुजाळ (ना०) १ खुजली । २ कामेच्छा । ३ किसी अनुचित काम की प्रवृत्ति ।

खुजाळणो–(क्रि०) खुजलाना । खिणणो ।

खुटणो–(क्रि०) १ कम होना । घट जाना । २ समाप्त होना । ३ पूरा नहीं होना । कम पड जाना ।

खुटहड–(वि०)१ जबरदस्त । २ नालायक ।

खुटाडणो–(क्रि०) १ कम करवा देना । घटवा देना । खुटवा देना । २ समाप्त करवाना । ३ समाप्त करना । ४ कम करना ।

खुटाणो–दे० खुटाडणो ।

खुटावणो–दे० खुटाडणो ।

खुड–(ना०) अध पथरीली (और ऊँची नीची) भूमि म बनी हुई गुफा । खोह । खुहो ।

खुडकणो–(क्रि०) बजना । शब्द करना । खुड़का होना ।

खुडको–(न०) आवाज । शब्द ।

खुडखोज–दे० खुरखोज ।

खुडताल–दे० खडताल ।

खुडताळ–दे० खडताल ।

खुडद–(न०)१ संहार । नाश । २ टुकड़ा । ३ छोटा । खुद ।

खुडद खाणोर–(न०) एक हिंगल छन्द ।

खुडदा-खुडदा–(अव्य०) १ टुकड़े टुकड़े । २ जुडे हुए भागों का अलग होना ।

खुडदियो–(वि०) परचूनिया ।

खुडदो–(न०) १ चूरा । टुकडा । २ सुर्गी । रजगारी । खुदरा ।

खुडदो करणो–(मुहा०) १ घन उडा कर खतम करना । २ तोडना । ३ नाश करना ।

खुडपगी–दे० खुरडपगी ।

खुडपगो–दे० खुरडपगो ।

खुडाणो–(क्रि०) लगडाना ।

खुडावणो–दे० खुडाणो ।

खुडी–(ना०) १ छोटा घर । २ थेपडियों (उपलों) को खडा करके सोने चाँदी को गलाने के लिये बनाया जाने वाला एक विवराकार ।

खुडीबिगाड–(वि०) १ सभा में विघ्न उत्पन्न करने वाला । सभा बिगाड । २ घर घालक । घर बिगाड़ ।

खुड्डी–(ना०) छोटी छोटी कोटरियों वाला घर । छोटा घर । खुडिया ।

खुड्डो–(न०) १ पक्की मिट्टी का टीबा । २ ऐसे टीबे को खोद कर बनाया हुआ घर या गुफा । ३ अध पथरीली भूमि में बनी हुई गुफा । खोह । ४ कबूतर और मुर्गा मुर्गी को रखने का घर । माना । दरबा ।

खुरसोज-(ना०) १ शोध। पता। २ जाँच। पूछताछ। ३ परिश्रम। गम।

खुरचण-(ना०) १ कड़ाही हाँडी आदि में से खुरच कर निकाला गया खाद्यान्न। खुरचन। २ गरम किये हुये दूध के पात्र में से खुरच कर निकाला हुआ अंश। ३ कड़ाह में रखा जाने वाला आई का भाज्य अंग। पकाये गये पक्वान्न या कड़ाह में रखा जाने वाला जाद के अंग का शेष भाग।

खुरचणियो-(न०) छोटा खुरपा। खुरपी। पलटा।

खुरचणो-दे० खुरचणियो। (क्रि०) किसी जमी हुई वस्तु को छील कर अलग करना। खुरचना। छुड़ाना।

खुरजी-(ना०) एक प्रकार का थैला।

खुरडपगी-(ना०) वह स्त्री जिसके आने से-निवास करने से अनिष्ट और हानि होती हो।

खुरडपगो-(न०) वह पुरुष जिसके पगफेरा से तथा आकर रहने से अमंगल और हानि होती हो।

खुरद-(वि०) छोटा। क्षुद्र। खुर्द।

खुरदम-(न०) गदहा।

खुरदरो-(वि०) जो चिकना न हो। खुरदरा।

खुरपियो-(न०) लोहे या पीतल की चपटी कलछी। लोहे या पीतल की खुरची। छोटा पलटा। खुरचणियो।

खुरपी-(ना०) १ घास छीलने काटने का एक उपकरण। २ चमार का एक औजार।

खुरपो-(न०) खुरपा। क्षुरप्र। बड़ा पलटा। खुरचना।

खुरवाणी-दे० खुमाणी।

खुरमो-(न०) एक मिष्ठान्न। खुरमा।

खुररो-(न०) १ पशुओं के बालों में से मैल निकालने का एक उपकरण। २ ईंटों पत्थरों से बँधा हुआ ढलुवाँ भाग। खुर्रा।

खुरसाटो-दे० खुराडो।

खुरसाण-(ना०) १ शाण। सान। सा गार। २ धार। ३ सेना। ४ तलवार ५ बादशाह। ६ मुसलमान। ७ खुर सान।

खुरसाणी-(वि०) खुरासान का। (न० मुसलमान।

खुरसी-(ना०) १ कुरसी। २ ओहदा पद।

खुरंट-(न०) घाव के ऊपर की सूखी पपड़ी

खुराक-(ना०) १ भोजन। २ भोजन परिमाण। ३ औषधि मात्रा।

खुराकी-(ना०) १ भोजन व्यय। खुराक का नकद एवजाना। खुराक के लिए दिया जाने वाला नकद दाम। २ खुराक के एवजाने में की जाने वाली मजदूरी। ३ पारिश्रमिक एवजाना। ४ दैनिक वेतन। दैनिकी। दैनगी। (वि०) अधिक खाने वाला।

खुराडो-(न०) पशुओं के खुरों में होने वाला एक रोग।

खुराडो मुराडो-(न०) पशुओं के खुरों और मुँह में होने वाला एक रोग।

खुरापाती-(वि०) १ उपद्रवी। झगड़ा करने वाला। २ इधर उधर की लगा कर झगड़ा कराने वाला।

खुरासाण-(न०) १ फारस का एक प्रांत। खुरासान। २ फारस का एक नगर। ३ मुसलमान। ४ बादशाह। ५ घोड़े की एक जाति।

खुरासाणी-(वि०) १ खुरासान का रहने वाला। खुरासानी। २ खुरासान से संबंधित यथा-खुरासाणी अजमो। खुरासाणी घोड़ो। (न०) मुसलमान।

खुरासाणी अजमो-(न०) एक प्रकार का बढ़िया अजवाइन।

खुर्राट-(वि०) १ वृद्ध। बूढा। खुर्राट। २ अनुभवी। पुर्राट। ३ होशियार। चालाक।
खुरियो-(न०) १ पैर। २ सद्यजात पशु के बच्चे का खुर। ३ पशु का पर।
खुरिया करणो-(मुहा०) सद्यजात बछडे के नरम खुरों को तोड कर छोटा करना।
खुरी-(ना०) १ पशु का खुर। सुम। २ घोडा। ३ खुर वाला पशु। ४ घोडे को फिराने की एक अभ्यास क्रिया। ५ आनंद। सुख। मौज। ६ पशुओं का खुर से भूमि खोदने या पग पटकने की क्रिया। ७ चुराए गये पशु को प्राप्त करने के लिये चारों को दिया जाने वाला धन।
खुरो-(न०) दे० खुररो १ २। ३ सिर में मल की पपडी जमने का एक रोग।
खुलखुलियो-(न०) बच्चों को होने वाला सूखी खांसी का एक रोग। कुकुर खाँसी। धाँसी।
खुलणो-(क्रि०) १ आवरण हटना। खुलना। २ बंधन छूटना। ३ ताले में चाबी लगना। ४ शोभित होना। ५ आरंभ होना। ६ प्रचलित होना।
खुळणो-(क्रि०) १ खौलना। गरम पानी का खौलना। २ गले से खाँसी के कफ का उखडना।
खुलावणो-(क्रि०) खुलवाना।
खुलास-(वि०) १ स्पष्ट। साफ-साफ। १ कुशादा। चौडा। विस्तृत (मकान)। ३ हवादार (मकान)।
खुलासावार-(अव्य०) विवरण सहित। स्पष्टीकरण के साथ।
खुलासो-(न०) १ स्पष्टीकरण। खुलासा। २ सार। निचोड। साराश। (वि०) १ खुला हुआ। २ साफ-साफ। स्पष्ट।
खुलो-(वि०) १ जो बँधा न हो। खुला हुआ। २ जो ढका न हो। खुला ३ साफ साफ। स्पष्ट।
खुल्लमखुल्ला-(अव्य०) १ सबके सामने। खुले में। २ बिलकुल स्पष्ट।
खुवाणो-(क्रि०) खिलाना।
खुवार-(वि०) १ नष्ट। बरबाद। ख्वार। २ खराब।
खुवारी-(ना०) ख्वारी। बरबादी।
खुश-दे० खुस।
खुशखबरी-दे० खुसखबरी।
खुशनसीब-(वि०) भाग्यशाली।
खुशनसीबी-(ना०) सौभाग्य।
खुशनुमा-(वि०) मनोहर। सुंदर।
खुशबू-(ना०) सुगंध।
खुशबूदार-(वि०) सुगंधित।
खुशवरती-दे० खुसभगती।
खुशमिजाज-(वि०) हमेशा प्रसन्न रहने वाला।
खुशहाल-दे० खुस्याल।
खुशहाली-दे० खुस्याली।
खुशामद-दे० खुसामद।
खुशी-दे० खुसी।
खुश्क-दे० खुस्क।
खुश्की-दे० खुस्की।
खुस-(वि०) १ प्रसन्न। राजी। खुश। २ तंदुरुस्त। स्वस्थ।
खुस करणो-(मुहा०) १ पसंद करना। चाहना। २ प्रसन्न करना। राजी करना। संतोष कराना।
खुसकी-(ना०) १ खुश्की। स्थल भाग। २ पैदल चलना। ३ शुष्कता। खुश्की।
खुसखबरी-(ना०) आनंद समाचार।
खुसणो-(क्रि०) चुभना। धँसना।
खुसबो-(ना०) खुशबू। सुगंध।
खुसबोदार-(वि०) खुशबूदार। सुगंधित।
खुसभगती-(ना०) खुशवख्ती। सद्भाग्य। २ वख्शिश। ३ अति प्रसन्नता।

खुसामद-(*ना०*) १ चापलूसी। खुशामद। २ झूठी प्रशसा।

खुसामदियो-(*वि०*) खुशामदी। चापलूस।

खुसामदी-(*वि०*) खुशामद करने वाला। चापलूस। २ झूठी प्रशसा करने वाला। (*न०*) खुशामद। चापलूसी।

खुसी-(*ना०*) १ खुशी। प्रसन्नता। २ इच्छा। मरजी (*वि०*) राजी। खुश।

खुस्क-(*वि०*) १ शुष्क। सूखा। २ रूखा।

खुस्की-दे० खुसकी।

खुस्याल-(*वि०*) १ प्रसन्न। २ सब प्रकार से सुखी। खुशहाल। सम्पन्न। ३ तदुरुस्त।

खुस्याली-(*ना०*) १ प्रसन्नता। खुशी। २ खुशहाली। ३ सुख। ४ सम्पन्नता। समृद्धि।

खु दालम-दे० खू दालम।

खु भी-(*ना०*) १ थभे के नीचे का भाग। थभे के नीचे की चौकी। थभे का आधार। २ वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला सर्वांग में कोमल सफेद क्षुद्र छतरी जैसा एक उद्भिद्। कुकुरमुत्ता। धरती का फूल। साप की टोपी। खुमी। ढिगरी। ३ कान का एक गहना।

खू-(*न०*) १ दुष्काल। अकाळ। (उ०पाचा आठो दस पनरो खू पडिया) २ पीडा। दुख। ३ क्रदन। विलाप।

खूटणो-दे० खुटणो।

खूटल-दे० खूटोलो।

खूटोडो-दे० खूटोलो।

खूटोलो-(*वि०*) १ निधन। गरीब। दीन। २ दीनहीन। ३ मूर्ख। बेवकूफ। ४ अप्रामाणिक। झूठ बोलने वाला। ५ निकम्मा। ६ समाप्त। ७ हानिवाला। ८ कमीवाला। खूटोडो। ९ भूलवाला। १० निर्लज्ज।

खूणियो-(*न०*) कोना। खूणो।

खूणी-(*ना०*) कोहनी।

खूणै खोचरै-(*अव्य०*) किसी कोने में। कोने मे। इधर उधर।

खूणो-(*न०*) १ कोना। २ पति के मरने के बाद कुछ काल तक विधवा को कोने में बैठने का रिवाज। ३ ऐसी विधवा के बैठने का स्थान।

खूणो खोचरो-(*न०*) १ कोना खाँचा। २ काम में नहीं आनेवाला तथा काम मे नही लिया जाने वाला घर का भाग। ३ एकान्त स्थान। (*अव्य०*) किसी कोने मे। कोने में।

खून-(*न०*) १ रक्त। लहू। लोही। २ हत्या। कत्ल। ३ अपराध। ४ बिगाड़। ५ रक्त सबध। वश।

खून करणो-(*मुहा०*) हत्या करना।

खूनी-(*वि०*) १ खून करने वाला। घातक। हत्यारा। २ दोषी। अपराधी। ३ अत्याचारी। ४ खून से सबधित। ५ खून से रगा हुआ। रक्त रजित।

खूब-(*वि०*)१ बहुत। अधिक। २ बढिया। ३ कमाल।

खूबसूरत-(*वि०*) रूपवान। सुदर।

खूबसूरती-(*ना०*) सुन्दरता।

खूबाणी-(*ना०*) जूबानी। जरदालू। खुरबाणी।

खूबी-(*ना०*) १ विशेषता। विलक्षणता। २ गुण। खूबी। ३ चतुराई। निपुणता। ४ श्रेष्ठापन। ५ मौज। मजा।

खूम-(*न०*) १ मुसलमान। २ कृपक। ३ वस्त्र। ४ निम्न जाति या उस जाति का व्यक्ति।

खूमचो-(*न०*) एक बडा थाल जिसमे मिठाई आदि खाने का सामान रख कर फेरी वाले बेचते हैं। खोंचा।

खूमपोस-(*न०*) परोसे हुये भोजन के थाल को ढकने का वस्त्र।

खूमाणो-(*न०*) रावल खुमान का वशज शिशोदिया राजपूत।

सेचल-(ना०) १ कष्ट। दुख। २ रोग। ३ परेशानी। हैरानी। ४ छेड़ छाड़। छेड़खानी।

सेजडी-(ना०) शमी वृक्ष। खेजड़ी। जांट।

सेजडो-दे० सेजडी।

सेट-(ना०)१ युद्ध। २ धाड़ा। ३ ढाल। फलक। ४ शिकार। आखेट। ५ गाँव।

सेटक-(ना०) १ ढाल। २ शिकार। आखेट। (वि०) ३ शिकारी। आखेटक। वीर। बहादुर।

सेटर-(न०) १ फटा पुराना सूखा जूता। ठठर। २ जूता।

सेटो-(न०) १ युद्ध। २ शत्रुता। ३ धक्का। ४ भिड़त। मुठभेड। ५ सरोकार। वास्ता। ६ जान पहचान। परिचय। फेटो।

खेड-(न०) १ गाँव। खेडा। २ खडहर। ३ हल चला कर निकाली हुई रेखा। ओळ। ४ लडाई। ५ आक्रमण। ६ औसर मौसर आदि बडे भोज समारोह मे प्रमुक गाँवो को निमन्त्रित करने की निश्चित मर्यादा। ७ मारवाड का एक इतिहास प्रसिद्ध नगर जहाँ राठोडो ने (राव सीहा और उसके पुत्र आसथान ने) कन्नोज से आकर सब प्रथम अपने राज्य की नीव डाली थी। (आज यह नगर खडहर रूप म है। इसके प्राचीन नाम 'खेडपाटण' या क्षीरपुर कहे जाते हैं। यह नगर बालोतरा से ५ मील पश्चिम मे स्थित है।)

खेडकरणो-(मुहा०)१ खेत म हल चलाना। खेत जोतना। २ पदल मुसाफिरी करना। चलना। ३ मनुष्यो को आक्रमण के लिये इकट्ठा करना। ४ आक्रमण करना। ५ किसी बडे काय को सफलता पूवक पार लगाना।

खेडखरच-(न०) १ पराजित शत्रु से लिया जाने वाला सेना खच। २ सेना का मार्गव्यय। ३ शत्रु से लिया जाने वाला आक्रमण खच। ४ रन को लडने में होने वाला खच।

खेडणो-(क्रि०) १ खेत म हल चलाना। २ चलाना। हाँकना।

खेडपति-(न०) १ खड नगर का स्वामी। २ राठौड क्षत्री।

खेडादेवत-(न०) १ ग्राम देवता। २ क्षेत्रपाल।

खेडायत-(न०) १ एक गाँव का धनी। एक गाँव की जागीरीवाला जागीरदार। २ जमीन जोत कर गुजरान करने वाला व्यक्ति।

खेडा-री-वाघण-(ना०) शिकार का एक प्रकार।

खेडी-(ना०) इस्पात। पक्का लोह।

खेडेचो-(न०) १ खेड म सवप्रथम राज्य स्थापित करने और वहाँ से अन्य स्थानों मे फलने के कारण राठोड राजपूतो का प्रचलित नाम। २ राठोड राजपूतो की एक शाखा।

खेडो-(न०) गाँव। खेडा।

खेढी-(न०) शत्रु। खेधी। वरी।

खेत-(न०) १ वह भूमिखड जिसे अन्न उत्पन्न करने क लिये जोतते बोते हैं। खेतर। २ रणक्षेत्र। रणखेत। युद्ध स्थल। ३ खानदान। कुळ। वश। ४ उत्पत्ति स्थान। ५ श्मशान भूमि।

खेतपाळ-(न०)एक लोक देवता। क्षेत्रपाल। एक ग्राम रक्षक देवता। खेत्रपाळ।

खेतर-दे० खेत १।

खेतरपाळ-दे० खेतपाळ।

खेत रहणो-(मुहा०) युद्ध मे मरना।

खेतरी-दे० खेती।

खेतल-(न०) १ क्षेत्रपाल। क्षेत्र या गाँव का देवता। २ मरव। ३ खेतसिंह

खेरू–(वि०) १ बरबाद। नाश। २ बिगाड। क्षति। ३ व्यय।

खेरो–(न०) १ चूरा। चूरो। २ छोटा टुकड़ा। ३ बची हुई सूखी लपसी हलुग्रा मिठाई ग्रादि। ४ इन वस्तुग्रों का मिश्रण। ५ इन वस्तुग्रों का बचा हुग्रा बासी चूरा। ६ किसी वस्तु या वस्तुग्रों का ग्रवशिष्ट कण समूह।

खेल–(न०) १ नाटक। २ तमाशा। रमत। ३ हँसी। रमत। ४ क्रीडा। ५ खेलकूद। ६ करतब। ७ साधारण बात।

खेळ–(ना०) १ पशुग्रों के पानी पीने के लिये बनाया हुग्रा लबोतरा कुंड। खेळी। २ कुल। ३ कुलभेद।

खेलडो–(न०) ककडी टींडसी ग्रादि की सूखी फाँक। (वि०) दुबला पतला। कृश।

खेलणो–(क्रि०) १ खेलना। रमणो। २ क्रीडा करना। ३ युद्ध करना। ४ सट्टे का व्यापार करना। ५ जुग्रा खेलना।

खेलाड–दे० खेलार।

खेलाडी–(वि०) १ खेल खेलने वाला। खिलाडी। खेलाडी। रमाक। रमाकू। २ ग्रभिनय करने वाला। ३ सट्टेबाज। ४ चतुर। चालाक। ५ मुत्सद्दी। (न०) १ नट। २ कीर्तनिया।

खेलार–(वि०)१ ग्रभिनय करने वाला। २ खेलने वाला। खिलाडी। ३ चतुर। होशियार। चालाक। ४ सट्टेबाज।

खेळी–(ना०) १ युवती। २ मोजी स्त्री। ग्रानंद प्रकृति वाली। ३ पशुग्रों के पानी पान के लिये बनाया गया ग्रायताकार होज। ४ स्त्री के लिये (बात करते समय का) एक संपुट। (वि०) १ हँसमुखी। २ मोजी।

खेळू–(न०)१ खेल का मुखिया। २ पथ में खेलने वाला साथी। खेल का सहयोगी। खाळू।

खेळो–(न०) १ सैनिक। २ बच्चा। ३ पुरुष। ४ व्यक्ति। ५ तीसरे पुरुष का एक विशेषण। ६ बात करते समय का एक संपुट (तीसरे व्यक्ति के लिए)। (वि०) १ जवान। युवा। २ मस्त। ३ मूर्ख। ४ मजाकी। ५ ग्रानंदी।

खेलो–(न०) १ सट्टा। खेला। २ दाँव। ३ खेल।

खेव–(ना०) १ विलंब। देर। २ क्षण। पल। ३ ग्रादत। टेव।

खेवट–(न०) १ केवट। मल्लाह। (ना०) १ ध्यान। लगन। २ ग्रभ्यास। ३ उत्कंठा।

खेवटियो–(न०)१ केवट। माझी। खेवट। २ ग्रगुग्रा। ग्रग्रणी।

खेवणा–(ना०) १ चिन्ता। परवाह। २ देख रेख। निगरानी।

खेवणी–(ना०) १ नाव चलाने का डाँड। २ छोटा खेवणा। खेवणो।

खेवणो–(न०) नथ के मध्य का जड़ा हुग्रा एक रत्न जिसके ग्राजू बाजू मोती पिराये हुए रहते हैं। (क्रि०) १ देवता के ग्रागे धूप या ग्रगरबत्ती जलाना। धूप खेना। २ नाव चलाना। नाव खेना।

खेवो–(न०) ग्रभ्यास। ग्रादत।

खेस–(न०) १ दुपट्टा। उपरना। २ मोटे सूत की चद्दर। खेसलो।

खेसणो–(क्रि०) १ हटाना। दूर भगाना। २ मारना।

खेसलो–(न०) १ खेस। दुपट्टा। २ मोटे सूत की बुनी चद्दर।

खेह–(ना०)१ उड़ती हुई धूलि। २ धूलि। रज। ३ रोटों (बाटी) को पकाने के

लिये जलाई हुई कण्डो की निधूम अग्नि। ४ राख।

खेहटियो विनायक-(न०) १ विवाहादि मांगलिक कार्यों के प्रारम्भ में अस्थाई रूप से स्थापित की जाने वाली विनायक की मूर्ति। किसी मांगलिक कार्य के पूर्व मिट्टी से बना कर स्थापित की जानेवाली गणेश की मूर्ति जो कार्य की समाप्ति के पश्चात् नदी आदि किसी तीर्थ या स्थानीय जलाशय में विधिपूर्वक विसर्जित कर दी जाती है।

खेहरोटो-(न०)खेह में पकाया हुआ रोटा। बाटी।

खेहाडवर-दे० खेहारव।

खेहारव-(ना०) आकाश में छाई हुई गर्द।

खेहारवरण-दे० खेहारव।

खेसाट-२ ग्रीष्म की तेज हवा। २ ग्रीष्म की तेज हवा की आवाज। खू खाट। खवाड।

खेखार-(न०) १ कफ। श्लेष्म। बलगम। दे० खेंखारा।

खेंखारा-(न०) १ गले में से कफ छूटने का शब्द। खांसी होने का शब्द। २ घर में प्रवेश के समय सूचना के रूप में गुरुजनों के द्वारा की जाने वाली कृत्रिम खांसी जिससे स्त्री आदि कुटुम्बीजन उनके प्रति शिष्टाचार का पालन करने के लिये सतर्क हो जायँ। अंतःपुर आदि खानगी स्थानों में प्रवेश के समय पूर्व सूचना के रूप में किया जाने वाला कृत्रिम खांसी का शब्द।

खग-(न०) १ घोड़ा। २ तलवार। ३ पशु के अंग प्रत्यंग के रंग या आकृति द्वारा उसको पहिचानने का चिह्न। खग ४ पशु की आकृति। ५ नाश।

खेंगारणो-(क्रि०) १ नाश करना। संहार करना। २ धन को दुर्व्यसन में खर्च करते रहना। धन का दुरुपयोग करना।

खंगाळ-(न०) नाश। संहार।

खच-दे० खीच।

खेचणो-दे० खीचणो।

खचाखच-दे० खीचाखीच।

खचाखची-दे० खेंचाखच।

खेचाताण-दे० खीचाताण।

खैं-(न०) क्षय। नाश। खय।

खैकार-(न०) नाश। संहार।

खकारी-(वि०) क्षयकारी। संहारक।

खकाळ-(न०) १ नाश। २ युद्ध।

खैंगरणो-(क्रि०) नाश करना।

खैंगाळ-दे० खकाळ।

खडी-दे० खडी।

खडो-(न०) १ गाँव। २ गाँव का बाहरी प्रदेश। ३ वर आदि का छत्ता। ४ पूरे गाँव को कराया जाने वाला भोजन। समस्त गांव का न्योता। खेडा न्यात। खेडा जीमण।

खैण-(न०)१ नाश। २ क्षय रोग। तपेदिक।

खैर-(न०) १ एक वृक्ष जिसकी छाल से कत्था बनाया जाता है। २ कुशल। क्षेम। खैर। (अव्य०) १ कुछ चिंता नहीं। २ अस्तु। अच्छा।

खैरसार-(न०) कत्था।

खैराइत-दे० खैरात।

खैरात-(ना०) दान। पुण्य।

खैरादी-(न०) खराद पर काम करने वाला व्यक्ति। खरादने का काम करने वाला। खरादी।

खैरायत-दे० खैरात।

खैरियत-(ना०) कुशल।

खैरी गूंद-(न०) खैर वृक्ष का गोंद। खडी गूंद।

खैरोग-(न०) क्षय रोग। तपेदिक।

खैसर-(न०) कुंवर।

खैसाट-(न०) ग्रीष्म की तेज हवा और उससे उत्पन्न डरावनी ध्वनि।

खँखार–दे० खँखार ।
खँखारो–दे० खँखारो ।
खँखारा करणो–खाँसना ।
खँग–दे० खेंग ।
खगरू–(न०) घोड़ा ।
खँगाळ–दे० खेंगाळ ।
खगाळो–दे० खगाळ ।
खँच–दे० खेंच ।
खँचणो–दे० खेंचणो ।
खँचाखेंच–दे० खेंचाखेंच ।
खँचाताण–दे० खेंचाताण ।
खो–(न०) १ क्रोध । २ गर्व । ३ द्वेष । ४ शत्रुता । ५ आदत । ६ होश । ७ खाई । ८ वश । कुल । ९ मूल । १० उद्भव । ११ आरंभ ।
खोम्रो–दे० खावो ।
खोखळो–(वि०) खोखला । पोला । पोलो ।
खोखो–(न०) १ शमी (खेजडी) वृक्ष की सूखी फली । सिंबी । २ किसी वस्तु के पैकिंग की खाली पेटी । सामान भरने या भर कर कहीं भेजने की हलकी पेटी । ३ वह कागज जिस पर हुंडी लिखी गई हो । हुंडी । ४ सिकरी हुई हुंडी । अदा की हुई हुंडी । ५ जिसका सारतत्व निकाल लिया गया हो ऐसी वस्तु । ६ एक खेल ।
खोगाळ–(ना०) १ गुफा कंदरा । २ खोखलापन । पोलापण । ३ नाश । खगाळ ।
खोगीर–(न०) १ घोड़े की जीन के नीचे दिया जाने वाला एक ऊनी कपड़ा । घोड़े या ऊंट पर काठी रखने के समय उसके नीचे दिया जाने वाला मोटा कपड़ा । नमदा । गुदीर २ चारजामा । जीन ।
खोज–(न०) १ पता । २ तलाश । अनुसंधान । ३ पद चिन्ह । खाज ।
खोज जाणो–(मुहा०) निवंश होना ।
खोजणो–(क्रि०) १ तलाश करना । ढूंढना । खोजना । २ तपासना ।
खोज लागणो–(मुहा०) पता लगना ।
खोजी–(वि०) पाँवों के चिन्ह देख कर चोर की तलाश करने वाला । पागी । २ खोजक । खोजू । खोजने वाला ।
खोजू–दे० खोजी ।
खोजो–(न०) १ नाजिर । नपुंसक । अंतःपुर में पहरा देने वाला नौकर । ३ नपुंसक सेवक । ४ एक मुसलमान जाति । खोजा ।
खोट–(ना०) १ भूल । गलती । २ कमी । अभाव । ३ हानि । ४ दोष । ५ पाप । ६ कलंक । ७ झूठ । असत्य । ८ काम से जी चुराना । ९ किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट पदार्थ का मिश्रण ।
खोट करमी–(वि०) १ पापिनी । २ कपटा । ३ व्यभिचारिणी ।
खोट करमो–(वि०) १ खोटे कम करने वाला । कुकर्मी । २ कपटी । ३ पापी ।
खोट काढणो–(मुहा०) १ लिखे हुए में भूल निकालना । २ भूल का पता लगाना । ३ दोष बताना ।
खोटखणो–दे० खोट करमो ।
खोट खवाड–(ना०) १ गलती । भूल । २ मिलावट । मिश्रण । ३ त्रुटि ।
खोटखाणा–(मुहा०) नुकसान उठाना ।
खोट चूक–(ना०) भूलचूक ।
खोट नाखणो–(मुहा०) १ भूल डालना । २ घाटा डालना । ३ अच्छी वस्तु में खराब वस्तु मिलाना ।
खोट निकाळणो–दे० खोट काढणो ।
खोट पसा–दे० खोट पारखो ।
खोट पड़णो–(मुहा०) १ कमी होना । (व्यक्ति की) । २ हानि होना ।
खोट पारखो–(न०) [illegible] पन । २ [illegible] दृष्टिकोण [illegible] दूषित

खोट पियाणो-(न०) कन्यापक्ष की ओर से ज्योनार खतम होने के बाद दूल्हे के पिता की ओर से बारातियों को दी जाने वाली ज्योनार। २ बारात की विदाई के पूर्व वरपक्ष की ओर से ज्योनार करने की एक प्रथा।

खोट पीणो-दे० खोट पियाणो।

खोट पूरी करणी-(मुहा०) कमी को पूरी करना। २ धन हानि की पूर्ति करना।

खोटमाळो-दे० खाट बाळो।

खोट मेळणी-(मुहा०) शुद्ध वस्तु में हलकी या विजातीय वस्तु को मिलाना।

खोट-रसो-(वि०) १ जानबूझ कर गलती करने वाला। २ नालायक। ३ धूर्त्त।

खोट राखणी-(मुहा०) १ कपट रखना। २ भूल रखना। ३ भूल करना।

खोटवाळो-(वि०) १ वह वस्तु जिसकी वस्त्र आदि में कुछ नुकस पैदा हो गया हो। २ गलती वाला। ३ बिगड़ा हुआ।

खोटमो-(न०) १ गुदाभाग के बालों को साफ करने का काम। २ शौचादि की निवृत्ति। ३ दे० खोट पियाणो।

खोटवा-दे० खोटमो।

खोटहड-(न०) कु डली बनाकर बैठा रहने वाला सर्प। (वि०) निकम्मा।

खोटगा-(वि०) १ वह जिसका स्वभाव खोटे काम करने का पड गया हो। २ मन में खोट रखने वाला। मन में एव रखने वाला।

खोटाई-(ना०) १ दोष। बुराई। २ झूठापन। ३ आलसीपन। ४ दुष्टता। ५ छल। कपट।

खोटा घडणो-(मुहा०) १ अनुचित काम करना। २ कुकर्म करना। ३ कुविचार करना।

खोटा लखणो-(वि०) १ बुरे लक्षणों वाला। बदचलन। १ दुर्गुणी।

खोटी-(ना०) १ प्रतीक्षा। २ देरी। (वि०) १ जिसमें खोट हो। २ वह जो असली न हो। नकली। ३ बुरी। खराब। ४ विश्वास घातिन। ५ निकम्मी। ६ गलत। ७ असत्य। ८ कपटी।

खोटीरथ-(ना०) १ झूठ। २ झूठी बात। ३ बुरी बात। ४ बुरी खबर।

खोटी करणो-(मुहा०) १ प्रतीक्षा कर वाना। २ रोक रखना। ३ हैरान करना।

खोटीपो-(न०) १ देरी। विलंब। २ काम में देर होना। काम में होने वाली देरी। ३ बिना काम से होने वाली रुकावट। अनावश्यक रुकावट।

खोटी होणो-(मुहा०) १ प्रतीक्षा करना। २ रुके रहना। ३ हैरान होना।

खोटीगो-दे० खोटगा।

खोट खरण रो-(वि०) नीच कुल का। अकुलीन।

खोटो-(वि०)१ जो असली न हो। कृत्रिम। नकली। २ कपटी। छली। ३ अधर्मी। ४ विश्वासघाती। ५ बुरा। खराब। ६ निकम्मा। ७ गलत। ८ असत्य। झूठा।

खोटो खरणो-(न०) १ कलंकित कुटुंब। दूषित वंश। २ निकृष्ट कुल। नीच कुल।

खोटोडो-(वि०)१ खोट वाला। २ नकली। ३ निकम्मा। गयो बीतो।

खोड-(न०) १ कलंक। लाछन। २ कसर। कमी। ३ लंगडापन। ४ लत। कुटेव। ५ दोष। एब। ६ धूर्त्तता। ७ जगन। ८ शत्रु। ९ बराबरी। तुलना।

खोडकी-(वि०) लंगडी। खोडी। (ना०) बच्चों का एक खेल।

खोड खवाड-(ना०) खामी। दोष। त्रुटि।

खोड खुडावणो-(मुहा०) किसी की बरा बरी करना।

खोडलो–दे० खोडीलो। (वि०) लगडा।
खोडाणो–दे० खोडावणो।
खोडा मे देणो–(मुहा०) कैदी के पांवा को खोडा म डालना।
खोडावणो–(क्रि०) लगडाना।
खोडियो–(वि०) लँगडा। खोडो।
खोडियो–(न०) १ छोटा क्यारा। २ हजामत बनान का एक उपकरण। सेफ्टी रेजर।
खोडी–(ना०) १ खेत मे ग्रान जाने के लिये दो बाजू (बाँहीं) वाला गाडा हुग्रा एक खूटा जिससे जानवर खेत म नहीं जा सके। २ ऊँट के ग्रगले पैर को मोडकर दिया जाने वाला बधन। (वि०) लगडी।
खोडीलाई–(ना०)१ बदमाशी। २ चालाकी। ३ शरारत। ४ नुक्ताचीनी। ५ हैरान गति।
खोडीलो–(वि०) १ एबी। दोष देखने वाला। दाप देखने वाला। २ ग्रशुभ। ३ ग्रमगलकारी। ४ बदमाश। ५ चालाक। ६ हैरान करन वाला। ७ नुक्ता चीनी करन वाला। ८ व्यथ नुकशान करन वाला। (स्त्री० खोडीली)
खोडो (न०) १ क्यारा। २ कैदी के पावो को कस कर रखन का एक बडा ग्रौर भारी काष्ठ यत्र। २ डाढी के बीच मे ठुड्डी पर (हजामत म) बनवाई जाने वाली पतली रेखा।
खोडो–(वि०) १ लगडा। २ वीर। ३ स्वर रहित। हलत। (ग्रक्षर) (न०) १ हनुमान। २ भाटा क्षत्री।
खोण–(ना०) १ क्षोणी। पृथ्वी। २ ग्रक्षौहिणी सेना।
खोणी–दे० खोण।
खोणा–(क्रि०)१ गँवाना। २ नष्ट करना। बिताना।
खोन–(न०) १ मुसलमान। २ मुस्लिम सेना।
खोतरणी–(ना०) १ दाँत कुरेदने की सलाई। तिनका। २ नक्काशी करने का ग्रौजार। टाँकी। ३ छेड छाड। कुचरणी।
खोतरणो–(क्रि०) १ खोदना। २ जड से उखाडना। ३ कुरदना।
खोदणियो–(वि०) खोदन वाला।
खोदणो–(क्रि०) १ खोदना। २ नक्काशी करना।
खोदाई–(ना०) १ खोदने का काम। २ खोदने की उजरत। ३ ऊधम। पाजीपन। शतानी।
खोदियो–(न०) १ गदहे का बच्चा। दे० खोदो।
खोदो–(न०) १ साँड। २ छोटा साड। ३ बल।
खोध–(न०) क्रोध।
खोपडी–(ना०) सिर की की खुपरी।
खोपणो–(क्रि०) १ खोना। २ नष्ट करना। ३ गाडना। ४ रोपना।
खोपरी–(ना०) १ सिर की हड्डी। कपाल। २ सिर। ३ गूदा निकला हुग्रा तरबूज का टुकडा। खुपरी।
खोपरेल–(न०) नारियल का तेल।
खोपरा–(न०) सूखे नारियल का ग्राधा भाग।
खोपी–(ना०) १ गाय का तुच्छार्थक नाम। २ बूढी गाय।
खोपो–(न०) १ बैल का तुच्छार्थक नाम। २ बूढा बैल। (वि०) ग्रनावश्यक हस्तक्षेप करने वाला। बिन जरूरी दखल करने वाला।
खोबो–(न०) १ करतल का सपुट। ग्रजली। खबचो। २ ग्रजली भर वस्तु। ३ मोटी रोटी म ग्रगुली से दबाकर बनाया हुग्रा खड्डा।
खोम–(ना०) बुज।

खोयण–(ना०) १ पृथ्वी। २ अक्षौहिणी सेना।
खोरडी–(ना०) १ झोपडी। २ कोठरी। ३ बुढिया। (वि०) बुड्ढी।
खोरडो–(ना०) १ झोपडा। मिट्टी का बना घर। २ कोठरी। (वि०) बुड्ढा।
खोरो–(न०) १ सिर की चमडी का एक रोग। २ अधिक दिनों की खाद्य वस्तु में पैदा होने वाला बेस्वादपना। (वि०) अधिक दिनों के कारण बेस्वाद बना हुआ (खाद्य पदार्थ)।
खोळ–(ना०) १ गिलाफ। २ केंचुली। ३ आवरण। ४ शरीर। ५ गोद। ६ सिंह की गुफा। ७ विवाह की एक प्रथा जिसमें वर और वधु के दुपट्टे और ओढ़ने के छोर में गुड मेवा आदि भरा जाता है।
खोलडो–(न०) १ घर। २ झोपडा। ३ शरीर।
खोळणो–(क्रि०) धाना।
खोलणो–(क्रि०) १ बंधी हुई वस्तु को छोड़ देना। २ ढके हुए पात्र के ढक्कन को हटाना। ३ समटी हुई वस्तु को फैलाना। ४ बंध किये हुए विवाह आदि की रुकावट को हटा देना।
खोळ भरणी–(मुहा०) वर वधू की खोळ में गुड मेवा आदि भरना।
खोळायत–(वि०) दत्तक। गोद लिया हुआ। (न०) दत्तक पुत्र।
खोलावणो–(क्रि०) खुलवाना।
खोळियो–(न०) शरीर।
खोळी–(ना०) १ गिलाफ। २ आवरण।
खोळो–(न०) १ गोद। अंक। २ अंचल। ३ अंचल से बनाई हुई झोली। ४ धोती के अगले भाग को ऊंचा खसोटने से बना हुआ झोला।

खोवणियो–(वि०) खोने वाला।
खोवणो–(क्रि०) देo खोणो।
खोवा खूंदो–(न०) १ लूट-खसोट। २ छीना झपटी।
खोवो–(न०) खोआ। मावा। कीटी। मावो।
खोसणियो–(वि०) १ खोसने वाला। लूटने वाला। २ छीनने वाला।
खोसणो–(क्रि०) १ खोसना। लूटना। २ छीनना। झपटना। ३ लटकाना। टांगना। ४ अटकाना। फँसाना। खोसना।
खोसरो–(न०) वेश्या का दूत या दलाल।
खोसा खूंदो (न०) १ लूट खसोट। २ २ छीना झपटी।
खोह (ना०) गुफा।
खोहण–(ना०) १ अक्षौहिणी सेना। २ पृथ्वी। भूमि।
खौडी–(ना०) घास फूस एकत्रित करने का लकडी के दांतों वाला हाथ का एक उपकरण।
खौळा–(वि०) जो तंग न हो। ढीला। शिथिल।
ख्यात–(ना०) १ इतिहास। २ इतिहास ग्रंथ। ३ मध्यकाल में लिखे गये राजस्थानी भाषा के इतिहास ग्रंथों की संज्ञा। ४ यश। ५ प्रसिद्धि। (वि०) प्रसिद्ध।
ख्याती–(ना०)१ ख्याति। प्रसिद्धि। २ यश। कीर्ति।
ख्याल–(न०) १ ध्यान। २ विचार। ३ नाटक का एक प्रकार। लोक नाटक। तमाशा। ४ एक रागिनी। ५ खेल।
ख्यालक (न०) १ ख्याल खेलने वाला। ख्याली। २ बाजीगर।
ख्याली–(वि०) १ ख्याल खेलने वाला। खिलाडी। २ मजाकी। मजाक पसंद। ३ कल्पित। मनगढंत।
ख्यालीडो–दे० ख्याली।

गच्छर–दे० गच्छर ।

गच्छनी–(ना०) १ भाग जाने का भाव। चपत होना। २ गमन करने का भाव। गमन।

गच्छणो–(क्रि०) १ चलना। २ भागना। ३ चले जाना।

गच्छै–(ना०) गच्छपति।

गच्छन–दे० गच्छती।

गज–(न०) १ हाथी। २ तीन फुट का एक माप। ३ बंदूक भरने की छड़। ४ सारंगी बजाने की कमान। (वि०) १ मुख्य। प्रधान। जैसे–गज दंता। २ श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे–गजगिरि। ३ बड़ा। जैसे–गजमानी। गजपीपर।

गजक–(ना०) तिल पपडी।

गजगत–(न०) १ जमीन का गजा से किया हुआ माप। २ हाथी के समान मतवाली चाल। गजगति।

गजगामणी–(वि०) हाथी के समान मस्त चाल से चलने वाली। गजगामिनी।

गजगामिनी–दे० गजगामणी।

गजगाव–दे० गजगाह।

गजगाह–(न०) १ हाथी। २ हाथियों का झुंड। ३ हाथी की झूल। ४ शृंगारी घोड़ा के इधर उधर लटकाने वाले चमर। ५ घोड़े की झूल। ६ घाघरा। लहँगा। ७ गजगति। हाथी के समान चाल। ८ युद्ध। गजग्राह। ९ संहार। नाश। (वि०) शूरवीर।

गजगोहर–(न०) गजमोती।

गजग्राह–(न०) युद्ध।

गजघडा–(न०) हस्ती सेना।

गजठेल–(वि०) हाथियों को पछाड़ने वाला। महाशक्तिशाली।

गजडबर–(न०) गज समूह।

गजढाल–(न०) हाथियों का समूह। गज थाट। २ युद्ध में हाथियों की रक्षा करने वाला वीर योद्धा। ३ शरणागत रक्षक। ४ रक्षा करने में अग्रणी। (ना०) १ हाथी के कुंभस्थल पर बाँधी जाने वाली ढाल। २ बड़ी ढाल।

गजथाट–(न०) हस्ति सेना।

गजदंत–(न०) हाथी का दाँत।

गजधर–(न०) १ भवन निर्माण करने वाला शिल्पी। मिस्त्री। २ दरजी बढ़ई सिलावट आदि जिनके काम में गज की आवश्यकता रहती है। ३ दरजी।

गजनाळ–(ना०) बड़ी तोप।

गजब–(न०) १ विचित्र बात। २ आश्चर्य। अचंभा। ३ जुल्म। अन्याय। ४ आपत्ति। आफत। ५ कोप। रोष। (वि०) १ भयंकर। २ विचित्र। ३ अतिशय। खूब।

गजबगा–(वि०) १ गजब करने वाली। २ नखरे वाली। नखराळी।

गजबंध–(न०) जिसके यहाँ सवारी के लिये हाथी बँधे रहते हों। राजा।

गजबंधी–दे० गजबंध।

गजबाग–(न०) हाथी को चलाने या वश में करने का अंकुश। गजबांक।

गजबांक–दे० गजबाग।

गजबी–(वि०) १ गजब करने वाला। २ कुशल। प्रवीण। चतुर।

गजबोह–(न०) १ चमत्कार। २ विचित्रता। ३ गजब की बात। ४ शौर्य। वीरता। ५ हस्तीदंत।

गजमुख–(न०) १ गणेश। २ हस्तीमुख।

गजमोती–(न०) १ एक प्रकार का मोती जो हाथी के मस्तक से निकलता है। गजमुक्ता। २ बड़ा मोती। गजमोती।

गजर–(ना०) १ घंटा बजने का शब्द। २ प्रातःकाल बजने वाला घंटा। ३ चार छः आठ दस और बारह सम संख्या के घंटों के बजने पर उतनी ही

बार जल्दी जल्दी बजने वाले घटा की झनकार (शब्द) या बजाने की क्रिया। ४ दुग पर से बजने वाला भोर का नगाड़ा। ५ एक प्रकार की बदूक। ६ एक तोप। ७ गजर के अनुसार तोप का छोड़ा जाना। ८ मजाक। दिल्लगी। ९ शोर। हल्ला। १० उत्पात।

गजराज-*(न०)* बडा हाथी।

गजरो-*(न०)* १ हाथ मे पहिनने का एक गहना। २ फूलो का गजरा।

गजल-*(ना०)* १ उदू फारसी की एक रागिनी। २ इस राग का शृगारिक काव्य। ३ उदू फारसी का एक गायन प्रकार। ४ रखता। ५ वह गजल काव्य जो सूफियो द्वारा जीव और आत्मा के प्रतीक रूप तुर्रा और कलगी अथवा प्रिय और प्रियतमा (आशिक और माशूक) के दो प्रतिद्वन्द्वी समुदायो मे आमने सामने बैठ कर परस्पर एक दूसरे की श्रेष्ठता या महत्व के रूप मे गाया जाता है।

गजवदन-*(न०)* गणेश।

गजवाग-दे० गजराग।

गजविभाड-*(वि०)* हाथी को पछाड देने वाला। जबरदस्त। वीर।

गजवेल-*(न०)* फौलाद। इस्पात। वानिसार।

गजशाही-*(न०)* जोधपुर और बीकानेर के दोनो राजाओ द्वारा प्रवर्तित रुपया।

गजसिंघजी-रो-रूपक-*(न०)* बीकानेर नरेश गजसिंह की प्रशस्ति का सिंढायच फतहराम का एक डिंगल काव्य।

गजद-दे० गयद।

गजा-*(ना०)* १ ताकत। २ सामर्थ्य। शक्ति। हैसियत।

गजाणण-*(न०)* गजानन। गणेश।

गजानन-*(न०)* गणेश।

गजानद-*(न०)* गजानन। गणेश।

गजारूढ-*(वि०)* हाथी पर सवार।

गजियाणी-*(ना०)* १ एक रेशमी कपडा। २ एक गज पनहे का रेशमी कपडा।

गजी-*(ना०)* १ हस्तिनी। १ एक मोटा कपडा। खद्दर।

गजेन्द्र-*(न०)* १ बडा हाथी। २ ऐरावत।

गजो-*(न०)* १ सामर्थ्य। शक्ति। २ सामर्थ्य। विसात। बूता।

गज्जूह-*(न०)* गजयूथ। हाथियो का झुड।

गज्र-*(ना०)* तोप।

गट-*(न०)* गले म कोई वस्तु उतारने का शब्द।

गटकाणो-दे० गटकावणो।

गटकावणो-*(क्रि०)* १ उदरस्थ करना। गटकाना। पीना। निगल जाना। २ हडपना।

गटकूडो-*(न०)* १ कबूतर। २ सुदर रग रूप का छोटा बच्चा।

गटपट-*(ना०)* १ परस्पर की गुप्त बात। २ घनिष्टता।

गटरमाळा-*(ना०)* बडे दानो की माला।

गटो-दे० गट्टा स० ३

गट्टी-*(ना०)* लपेटे हुए धागे की दडी।

गट्टो-*(न०)* मुसाफिरी मे सेवा पूजा और दर्शनार्थ साथ मे रखने योग्य राम, कृष्ण आदि की ढक्कनदार गोल छवि। २ हुक्के की तबाकू रखने का एक विशेष प्रकार का गोल डिब्बा। ३ कलाई और पाँव की नली के नीचे की जोड की उभरी हुई हड्डी। टखना। गट्टा। ४ देसन की लोई। ५ हुक्के का एक भाग। ६ लपेटे हुये धागे का बडा गोल दडा।

गठजोडो-*(न०)* १ विवाह मे पाणिग्रहण के समय वर वधू के उत्तरीय के छोरो को परस्पर बाँधने की एक प्रथा। २ गठबधन। छेडाछेडी।

गठडी-*(ना०)*१ कपडे मे बधा हुआ सामान। गठरी। पोटली।

गठबधण-दे० गठजोडो ।

गठियो-(न०) १ गाँठ काटने वाला । जेब काटने वाला । जेब कतरा । २ लुच्चा । ३ घुटने आदि अंग की जोडो मे होने वाला वायु रोग । वायु रोग से जोडो मे होने वाली पीडा ।

गड-(न०) फोडा । गाँठ ।

गडगड-खाड-दे० कडकड खाड ।

गडगडाट-(न०) गर्जन ।

गडगडी-(ना०) कुएँ से डोल की रस्सी खीचने का एक चक्राधार । फिरकी । २ घिरनी । चरखी । गराडी ।

गड गूमड-(न०) फोडा फुन्सी ।

गडडणो-(क्रि०) १ बादलो का गर्जना । २ गडगड की ध्वनि होना । ३ नगाडा बजना । ४ जोर से बाजा बजना ।

गडणो-(क्रि०) १ गडना । दफन होना । २ धँसना । ३ चुभना ।

गडत-(ना०)१ बीमारी की तन्द्रा । बीमारी की बेहोशी । २ हल्की बेहोशी । ३ हलकी नींद ।

गडदन-दे० गरदन ।

गडदानी-(ना०) गरदन । गरेबान ।

गडदान-(न०) १ एक वाद्य । २ ढोल । ३ एक तोप ।

गडदानो-(न०) बाजा । ढोल ।

गडबड-(ना०) १ कोलाहल । शोरगुल । २ अव्यवस्था । गोलमाल । ३ अनमन । ४ दगा । बलवा । ५ खडबडी । बखेडा ।

गडवी-(ना०) लोटे के आकार की छोटी लुटिया । लोटे के ऊपर रखी जानेवाली छोटा लुटिया जिससे लोटे मे से लेकर पानी पिया जाता है । कळसियो । (न०) चारण । गढवी ।

गडवो-(न०) १ लोटा । २ कलसा । घडा । ३ चारण । गढवी ।

गडाखू-(ना०) गुड या खमीर मिला हुआ तम्बाकू ।

गडागड साज- १ वाद्य सामग्री । बाजे । २ वाद्य-ध्वनि ।

गडामध-(न०) सीमा । हद । (क्रि पास । निकट ।

गडी-(ना०) १ कपडे की तह । २ के समेटने पर बनने वाला उस भाग या मोड । ३ जहाँ के पन्नो हुए सल । ४ उलझन । गाठ । ५ के थान थैले आदि की एक समान की श्रेणीबद्ध की हुई चुनाई । ६ से रखी हुई वस्तुओ का समूह ।

गड्थळ-दे० गडोथळ ।

गडो-दे० गिडो ।

गडोथळ-(न०) १ छलाग । कु कलाबाजी । २ शर्मिन्दगी । ३ ह ४ हतकीर्ति ।

गढ-(न०) किला । दुर्ग ।

गढपति-(न०) १ राजा । २ दुर्गपति

गढरोहो-(न०)१ किले का घेरा । २ पर से किया जाने वाला शत्रुओ का रोध । ३ गढ की आड़ मे किया जाने अवरोध । ४ गढ पर किया जाने आक्रमण ।

गढवई-दे० गढपति ।

गढवाडो-(न०)चारणो का गाँव या ब

गढवार-(वि०) दृढ । मजबूत (क लिये) ।

गढवी-(न०) १ चारण । (ना०) २ पीने का लोटे के आकार का छोटा कळसियो ।

गढव-दे० गढपति ।

गढवो-(न०) चारण ।

गढी-(ना०) १ छोटा गढ । २ ग चारो ओर का बाड भीत आदि का हुआ अहाता ।

गढीस-(न०) गढपति ।

गढोई-(न०) गढपति ।

गण-(न०) १ शिव का पारिषद । पा प्रमथ । २ झुड । समूह । ३ श्रे

वग । ४ छंद शास्त्र के अनुसार तीन वर्णों का समूह । जैसे-यागण मागण आदि ।

गणकारणी-दे० गिणकारणी ।

गणगोर-(ना०) १ पार्वती । गौरी । २ चैत्र मास में मनाया जाने वाला राजस्थान का एक प्रसिद्ध गौरी पूजन का उत्सव ।

गणगणणो-(क्रि०) १ तोप में गोला छूटने का शब्द । २ प्रतिध्वनि होना । ३ बीत जाना । निकल जाना ।

गरराटो-(न०) १ गोल चक्कर खाने की क्रिया या भाव । २ सिर घूमना । चक्कर । ३ भिनभिनाहट । ४ रोने जैसी सूरत बनाकर भीं-भीं करने का भाव । गम्राटो । टम्राटो । गुनगुनाहट ।

गणणो-(क्रि०) १ गिनना । गिनती करना । २ हिसाब लगाना । ३ समझना । ४ किसी को कुछ महत्व का समझना । महत्व देना ।

गणतरी-(ना०) १ गिनती । २ अनुमान । अंदाज । ३ पूछ । आदर । मान । सम्मान ।

गणधर-(न०) तीर्थकरों के उपदेशों का प्रचार करने वाले जैनाचार्य ।

गणनायक-(न०) गणेश ।

गणपति-(न०) गणेश ।

गणव-(न०) गणपति ।

गणवै-(न०) गणपति ।

गणिका-(ना०) गनिका । वेश्या ।

गणित-(न०) १ गिनती, मात्रा संख्या इत्यादि के हिसाब का शास्त्र । २ हिसाब ।

गणेश-दे० गणेसजी ।

गणेसजी-(न०) ज्ञान और मंगल कार्यों के देवता । सर्वप्रथम पूजनीय देव । गणेश । गजानन ।

गत-(ना०) १ गति । २ मोक्ष । ३ विधि । गति । ४ दशा । हालत । ५ ढंग । ६ गति । चाल । ७ ईश्वरीय लीला । ८ वादन की क्रिया विशेष । वाद्य बजाने की कोई रीति । ९ तालभेद । १० मजाक । ११ चालाकी । १२ मनुष्य पशु आदि के बोलने (बोलियों) की नकल । (वि०) १ भूतकाल का । बीता हुआ । अतीत । व्यतीत । २ गया हुआ । ३ नष्ट । हत । ४ रहित । हीन । ५ मरा हुआ ।

गत-पचमी-(ना०) १ पंचत्व । २ मोक्ष । ३ पंचम गति । श्रेष्ठ गति । ४ वीर गति । ५ वीर लोक । ६ स्वर्ग ।

गतराटो-(न०) हिजड़ा । गतड़ ।

गतड-दे० गतराटो ।

गतागत-(वि०) गया और आया हुआ । (न०) गमनागमन ।

गतागम-(ना०) १ समझ । २ विचार । ध्यान । ३ सूझ । ४ आना जाना । आवागमन । (वि०) गया और आया । गया और आया हुआ ।

गतावोळ (न०) १ वंशोच्छेदन । २ नाम शेष । नष्ट । (वि०)पानी में समाविष्ट । डूबा हुआ । २ नष्ट ।

गति-(ना०) १ चाल । गति । गमन । २ स्पंदन । हरकत । ३ गम्यस्थान । ४ प्रकार । ढंग । रीति । ५ दशा । हालत । अवस्था । ६ मरने के बाद की स्थिति । ७ मुक्ति । मोक्ष । ८ लीला । माया ।

गतू-(न०) किसी वस्तु पर से छोड़ा हुआ अपना अधिकार । २ बेचान । जैसे— मकान गतू कर दियो । (अव्य०) १ बिल्कुल भी । २ कुछ भी । ३ पूर्णतया । (वि०) १ मस्त २ पूर्ण । संपूर्ण ।

गथराटो-(न०) १ हिजड़ा । २ नपुंसक ।

गथियो-दे० गथराटो ।

गदफड़-(न०) एक पीला चोंचवाला मांसा हारी पक्षी । (वि०) १ मोटा । २ फूला हुआ ।

गदरो-(न०) गद्दा । गादी ।
गदा-(ना०) एक अस्त्र ।
गदियाणो-(न०) आधे ताले का एक तोल । गद्याणक ।
गदियो-(न०) एक पुराने सिक्के का नाम । गधैयो ।
गद्य-(न०) वह रचना जो पद्यबंध न हो । पद्य का उलटा । सादी लिखावट । २ लेखनशैली । ३ लेखशैली ।
गधामस्ती-(ना०) १ शरारत । ऊधम । २ धक्कमधक्का ।
गधेटी-(ना०) गधी ।
गधेडो-(न०) गदहा । गधो ।
गधो-दे० गधेडो । (ना०) गधी ।
गनायत-(न०) स्वगोत्री के अतिरिक्त वह सजातीय व्यक्ति जिसके घर बेटी लेने देने का सम्बंध हो सकता हो । रिश्तेदार । सम्बंधी । गिनायत ।
गनीम-(न०) १ शत्रु । २ डाकू । लुटेरा ।
गनीमाण-(न०)१ शत्रुदल । २ डाकूदल ।
गनो-(न०) सम्बन्ध । रिश्ता । गिनो ।
गप-(ना०) १ उड़ती बात । अफवाह । २ झूठी बात । डींग ।
गपाड़ो-(न०) गप । डींग ।
गपी-(वि०) गप हाँकने वाला या वाली । गप्पी ।
गपोड-(वि०) गप हाँकने वाला । गप्पी ।
गपोडबाज-(वि०) गप हाँकने वाला । गप्पी ।
गपोडो-(न०) गप्प ।
गप्पी-दे० गपी ।
गप्पीदास-(वि०) गप हाँकने का आदी ।
गफलत-(ना०) १ असावधानी । २ भूल ।
गबकावणो-(क्रि०) धमकाना । डाँटना ।
गबडकावणो-(क्रि०)धमकाना। दुत्कारना। फटकारना । फटकारणो ।
गबरू-(वि०)१ मूर्ख । २ सीधा । भोला । ३ असावधान ।
गबीडो-(न०) १ हानि । घाटा । २ किसी दुर्घटना का समाचार । ३ चोट । ४ धोखा ।
गबोळो-(न०)१ विघ्न । रुकावट । बाधा । २ खयानत । ३ गबन । ४ गोटाला । गोटाळो ।
गभ-(न०) गर्भ ।
गम-(न०) १ सूझ । २ ज्ञान । ३ गति । ४ सहनशीलता । ५ विचारशक्ति । ६ जानकारी । ७ क्षोभ । दुख । गम । ८ सब्र । ९ प्रतिष्ठा । साख ।
गमण-(न०) १ गमन । प्रस्थान । २ संभोग । मैथुन । ३ पाव । ४ नाश ।
गमणो-(क्रि०) १ खो जाना । २ मरना । ३ नाश होना । ४ गमन करना । ५ बीतना । ६ बिताना । ७ मन लगना । ८ फबना । अच्छा लगना ।
गमत-(ना०) १ विनोद । गम्मत । २ आनंद । मजा ।
गमती-(वि०) १ विनोदी । गम्मती । २ मजाकपसंद । हँसोड ।
गमर-(ना०) १ तुलना । बराबरी । २ घमंड । गुमर ।
गमलो-(न०) मिट्टी का एक पात्र जिसमें फूलपत्ती के पौधे लगाये जाते हैं । गमला ।
गयोगीतो-(वि०) निकम्मा । गया गुजरा ।
गमागम-(क्रि०वि०) १ चारों ओर । २ इधर उधर । यहाँ वहाँ । ३ जहाँ तहाँ । ४ निरन्तर ।
गमाडणो-दे० गमावणो ।
गमार-दे० गँवार ।
गमावणो-(क्रि०) १ खोना । २ नाश करना । ३ खो देना । ४ व्यतीत करना ।
गमाँगमाँ-(क्रि०वि०) १ चारों ओर से । २ चारों ओर को । चारों तरफ ।

गमी-*(ना०)* १ शोक। २ दिलगीरी। ३ मृत्यु।
गमीजरणो-*(क्रि०)* खो जाना।
गमे-*(क्रिवि०)* १ ओर। तरफ। *(अव्य)* अथवा। वा। या।
गमे गमे-*(क्रिवि०)* १ चारों ओर से। २ चारों ओर। ३ इधर उधर। इधर उधर को।
गय-*(न०)* १ गज। हाथी। २ ऊँट।
गयगमरणी-*(वि०)* गजगामिनी।
गयरण-*(न०)* आकाश। गगन। अकास। आभो।
गयरणमिरण-*(न०)* गगनमणि। सूर्य।
गयरणग-*(न०)* आकाश। आभो।
गयरणाग-*(न०)* आकाश। आभो।
गयरणागरण-*(न०)* आकाश। आभो।
गयदंतो-*(न०)* हाथी के समान बड़े दाँत वाला सूअर।
गयनाळ-दे० गजनाळ।
गयंद-*(न०)* गजेन्द्र। हाथी।
गयाजी-*(न०)* बिहार में फल्गु नदी के तट पर स्थित एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थस्थान। यहाँ पितरों को पिंडदान करने का महात्म्य माना जाता है। गया।
गयो-*(क्रि०भू०)* 'जाणो' या 'जावणो' का भूतकाल रूप। १ चला गया। २ मर गया। ३ खो गया।
गयोडो-*(भू०का०कृ०)* १ गया हुआ। २ खोया हुआ।
गयो-बीतो-*(वि०)* बुद्धिहीन। बेअक्ल।
गरक-*(वि०)* १ डूबा हुआ। सना हुआ। गरक। २ लीन। तन्मय। ३ खूब।
गरकाब-*(वि०)* १ मग्न। २ अंतरस्थ। डूबा हुआ। ३ समाहित। ४ गायब। लुप्त। गीला। शराबोर।
गरगडी-दे० गडगडी।
गरज-*(ना०)* १ स्वार्थ। २ प्रयोजन। ३ आवश्यकता। ४ इच्छा। ५ हाथी का मद। ६ मेघ गर्जन। गाज। ७ दहाड़।
गरजणो-*(क्रि०)*१ गरजना। २ दहाड़ना। गर्जन होना। ३ भड़क कर बोलना। तड़कना।
गरजाऊ-*(वि०)* १ गरज वाला। जरूरत वाला। २ स्वार्थी।
गरट-दे० गरठ।
गरठ-*(न०)* १ सेना। २ समूह। झुंड। ३ पाताल। *(वि०)* १ गरिष्ठ। भारी। २ अधिक। ३ कठिन। ४ अभेद्य।
गरढी-*(वि०)* वृद्धा। बुड्ढी। डोकरी। डगती।
गरढो-*(वि०)* बूढा। वृद्ध। बूढो। डोकरो। डग।
गररण-*(ना०)* १ कराह। २ ग्रहण। ३ पकड़।
गररणाटो-*(ना०)*१ कराह। गरण। २ बक वक। ३ सिर घूमना। चक्कर।
गररणावरणो-*(क्रि०)* १ गरण करना। कराहना। २ चक्कर खाना। सिर घूमना। ३ भिनभिनाना।
गररणो-*(न०)* छन्ना। गळणो। जळ छाणणो।
गरथ-*(न०)* १ रुपया पैसा। धनमाल। २ माल असबाब। ३ घर। ४ गृहस्थ। ५ गाँठ।
गरथार-*(ना०)* घर।
गरद-*(ना०)* १ गद। धूल। धूड़। २ नाश। ३ झुंड। *(वि०)* गद छाई हुई।
गरदन-*(ना०)*१ गला। ग्रीवा। २ बोतल या कुप्पे का ऊपर का सकरा भाग।
गरदभ-*(न०)* गधा। गधो।
गरदी-*(ना०)* १ भीड़। जनसमूह। २ गर्द। धूल।
गरनाळ-*(ना०)* चौड़े मुँह की तोप।
गरव-*(न०)* गर्व। अभिमान।

गरव गहेलो-*(वि०)* गर्वो मत्त ।
गरवणो-*(क्रि०)* गर्वित होना । गर्व करना ।
गरबीजणो-*(क्रि०)* गर्वित होना । अभिमान में आना । अभिमान होना । अभिमान करना ।
गरबीलो-*(वि०)*१ अभिमानी । २ गर्वीला ।
गरभ-*(न०)* १ हमल । गर्भ । भ्रूण । २ गर्भाशय । ३ गूदा । ४ किसी वस्तु का मध्य भाग । *(अव्य०)* बीच में । भीतर में ।
गरभ जगत-*(न०)* जगत का कारण । जगत गर्भ । परब्रह्म ।
गरभणी-*(वि०)* गर्भिणी । गर्भवती । हामिला ।
गरभवती-दे० गर्भवती ।
गरभवास-दे० गर्भवास ।
गरभीजणो-*(क्रि०)* गर्भधारण करना ।
गरम-*(वि०)* १ उष्ण । तप्त । गरम । २ क्रुद्ध । उत्तेजित । ३ उग्र । तीव्र । ४ गरमी पैदा करने वाला ।
गरमागरम-*(वि०)* गरम गरम ।
गरमास-*(ना०)* १ गरमी । उष्णता । २ गरम वातावरण ।
गरमी-*(ना०)* १ उष्णता । ताप । २ विचार विमर्श में आने वाली तेजी । गरम वातावरण । ३ क्रोध । ४ उपदंश । ५ आतशक रोग ।
गरळ-*(न०)* विष । जहर ।
गरळस-*(न०)* १ सर्प । २ बिच्छू ।
गरळाणो-दे० गरळावणो ।
गरळावणो-*(क्रि०)* १ रोना । २ घिघियाना ।
गरवाई-*(ना०)*१ गंभीरता । २ अभिमान । ३ महिमा । ४ गरूआई ।
गरवीजणो-*(क्रि०)* गर्व करना । घमंड करणो ।
गरवो-*(वि०)* १ गौरव वाला । गरूआ । २ गंभीर । धीरजवान । ४ गर्ववाला । घमंडी ।
गरहण-*(ना०)* १ घृणा । २ निंदा । ३ उपालम्भ ।
गराळ-*(वि०)* विषभरा । विषाक्त । जहरीला *(न०)* विषतुल्य शत्रु । भयंकर शत्रु ।
गरास-दे० ग्रास ।
गरासियो-दे० ग्रासियो ।
गरीठ-*(वि०)* १ गरिष्ठ । भारी । २ पराक्रमी । ३ जबरदस्त । ४ अजेय वीर । *(न०)* १ भीषण युद्ध । २ हाथी ।
गरीब-*(वि०)* १ निर्धन । २ अनाथ । ३ दीन हीन । बापुरा । ४ सीधा । सरल । *(न०)* भिखारी । मँगता । २ गलित कुष्ट वाला रोगी । कोढी ।
गरीब-गुरबो-*(न०)* कंगाल । भिखारी ।
गरीबणी-*(वि०)* निर्धना । २ सीधी । सरल । *(ना०)* भिखारन । मँगती ।
गरीब नवाज-*(वि०)* दयालु ।
गरीब परवर-*(वि०)* गरीब का पालन करने वाला । दीन प्रतिपालक ।
गरीबाई-*(ना०)* गरीबी । कंगाली ।
गरीबी-दे० गरीबाई ।
गरुड-*(न०)* गरुड पक्षी । विष्णु का वाहन ।
गरुडगामी-*(न०)* विष्णु भगवान ।
गरुडध्वज-*(न०)* विष्णु ।
गरूठ-*(वि०)* १ गरिष्ठ । भारी । २ जोरदार । जबरदस्त । ३ भयंकर । ४ बडा । ५ गर्व वाला ।
गरूर-*(न०)* गर्व । अभिमान ।
गरो-*(न०)* १ बल । शक्ति । २ पकड । ग्रहण । पकडने की शक्ति । ३ समूह । ४ ढेर । राशि । ५ झडबेरी की पतली शाखाओं का ढेर ।
गरोळी-*(ना०)* छिपकली ।
गर्दभ-*(न०)* गधा ।
गर्भ-दे० गरभ ।

गळाई-(क्रिवि०) १ ज्यों। जिस प्रकार। २ जिस ढंग से। जैसे। ३ प्रकार। तरह समान। (ना०) १ गलाने का काम। १ गलाने की मजदूरी। ३ गालने की मजदूरी। ४ गालने का काम।

गळाडार-(वि०) गला डूब इतना (पानी)।

गळाणो-(क्रि०) १ गलवाना। गलाना। पिघलाना। २ नष्ट करना।

गळामणो-(न०) १ पशुओं के गले में बाँधने की डोरी। २ लंबी माला की तरह गले में बंधी हुई कपड़े की पट्टी जिसमें चोट लगने या फोड़ा आदि होने से हाथ रखा रहता है।

गनार-(ना०) १ मौज। मजा। २ गायन। ३ भेड़ बकरी आदि पशु तथा गिद्ध आदि पक्षियों की तृप्ति या मौज में किया जाने वाला शब्द। ४ पशु पक्षियों की मस्ती या मौज।

गळावणो-(क्रि०) गलाना। (न०) दे० गळामणो।

गळिआगो-(न०)१ ब्राह्मण। २ निवरण। द्विज। ३ जनेऊ।

गळियार-(न०) १ सँकड़ी गली। (वि०) १ गली गली में चक्कर लगाते रहने वाला। आवारा। २ रसिक।

गळियारो-(न०) १ सँकड़ी छोटी और बड़ी गली। २ सकड़ा गली। ३ सकड़ा मार्ग।

गळिया गुळमरो-(न०) अफिम मादकनाय गला करनयार किया हुआ अफीम द्राव।

गळी-(ना०) १ गली। कूचा। सेरी। २ छेद। ३ उपाय।

गळी-कू चळी-दे० गळी कूंची।

गळी कूंची-(ना०) १ रहस्य। भेद। २ प्रत्येक गली। गली गली। ३ उपाय।

गलीचो-(न०) गालीचा। कालीन।

गळूडो-(न०) दे० गळमूंडो।

गळेटो-(न०) १ तीवन घाट आदि रबज रांधते समय बेसन दलिया आदि में पड़ने वाली गांठ। २ गुठली। कुलाच।

गलेफ-(ना०) खांड की परत। गांड की चासनी की परत।

गलेफणो-(क्रि०) मिठाई पर खांड की चासनी की परत चढ़ाना।

गळै-(क्रिवि०) पास। निकट। कने। (अव्य०) गले में।

गळै उतरणो-(मुहा०) दिल में बैठना। उचित जान पड़ना। जँचना। २ समझ में आना।

गळै-टू पो आवणो-(मुहा०) संकट में पड़ना।

गळै-पडणो-(मुहा०) १ दोष मँढ़ना। २ जवाबदारी डालना। ३ खुशामद की जबरदस्ती करना।

गळै हाथदेणो-(मुहा०) सौगंध खाना।

गळो-(न०) १ गला। गर्दन। कंठ। २ कंठ। स्वर। ३ बर्तन आदि का ऊपरी पतला भाग। ३ अंगरखी, कुरते आदि का वह भाग जो गले के आजू बाजू रहता है।

गळो पडणो-(मुहा०) बालक के गले में गरमी से होने वाला एक रोग।

गल्प-(ना०) १ कीर्ति। यश। २ शुभ कामों की कीर्ति गाथा। ३ बात। ४ उड़ती बात। ५ डींग। गप्प।

गल्लटी-(ना०) १ शुभ कामों की यश गाथा। २ बात। ३ उड़ती बात।

गल्लो-(न०) १ ऊन की कताई हुई जाभ। २ बिक्री का रुपया पैसा रखने की पेटी। ३ अन्न राशि।

गवड-(न०) गौड़ (राजपूत या ब्राह्मण)।

गवड़ावणो-(क्रि०) गीत गवाना। गान में साथ देना। गवाना।

गवीइजणो-(क्रि०) १ गाया जाना। २ बदनाम होना।

गवर-(ना०) १ गौरी। पार्वती। २ गणगौर के उत्सव पर प्रदर्शित की जाने वाली गौरी की काष्ठ-प्रतिमा।

गवरजा-(ना०) गौरी। पार्वती।

गवरल-(ना०) १ गौरी। पार्वती। २ गणगौर उत्सव पर गाया जाने वाला एक लोकगीत।

गवरादे-(ना०) गौरीदेवी। गौरी। पार्वती।

गवरी-(ना०) गौरी। पार्वती।

गवरीपुत्र-(न०) गणेशजी।

गवळ-(न०) १ गौवंश। गाय बैल आदि। २ ग्वाला।

गवा-(ना०) गवाह। साक्षी।

गवाड-(ना०) १ मोहल्ला। गली। २ वाडा।

गवाडणो-दे० गवडावणो।

गवाडी-(ना०) १ छोटी गली। गृहावली। २ एक कुटुम्ब के पाँच सात घरों की बंद गली। २ घर। वंश। बाडी।

गवार-(न०) १ ग्वार का क्षुप। २ ग्वार का बीज। ग्वार।

गवारणी-(ना०) गवारिया की स्त्री।

गवारफळी-(ना०) ग्वारफली।

गवारियो-(न०) प्रायः कथा बनाने और बेचने वाली एक खानाबदोश जाति का मनुष्य।

गवाळ-(न०) ग्वाल।

गवाळण-(ना०) ग्वालिनी।

गवाळणी-दे० गवाळण।

गवाळियो-(न०) ग्वाला।

गवावणो-दे० गवडावणो।

गवाह-दे० गवा।

गवाही-(ना०) साक्षी। गवाही।

गवीजणो-(क्रि०) १ कुरूपात होना। बदनाम होना। २ चर्चा का पात्र होना। ३ गाया जाना।

गवेसो-(न०) १ निंदा चर्चा। २ चर्चा। व्यंग की बातें। गप्पें। ३ बकवाद। ४ बातचीत। ५ खोज-पता।

गवैयो-(न०) गान वाला। गवैया। गायक।

गस-(ना०) १ चक्कर। २ बेहोशी।

गह-(न०) १ गर्व। घमंड। २ आनंद। मौज। ३ मस्ती। ४ प्रतिष्ठा। मान। ५ घर। गृह। ६ घर का कोई भाग। ७ घर का ऊपरी भाग। ऊपर की मंजिल। (वि०) १ गंभीर। ऊंचा। २ मस्त। ३ जबरदस्त वीर।

गहक-(न०) १ नखरा। २ गर्व। घमंड। ३ कृत्रिमता।

गहकणो-(क्रि०) १ प्रसन्न होना। खुश होना। २ खुश होकर गर्जना। ३ नखरे से बोलना। ४ नखरे करना। ५ गर्व से बोलना। ६ पक्षियों का कलरव करना। ७ ढोल या नगाडे का बजना।

गहको-(न०) १ बोलने का बनावटी और व्यंग्य पूर्ण ढंग। २ मिजाज। घमंड। ३ नखरा। ४ कृत्रिमता। ५ ढंग। तरीका।

गहगट-(न०) १ आनंद। हर्ष। खुशी। २ हर्षातिरेक। ३ उत्सव। ४ खूबी। विशेषता। ५ अधिकता। ६ हर्ष की अधिकता। बादलों का छा जाना। घटा। ८ युद्ध। घमासान।

गहगहणो-(क्रि०) १ उत्साहित होना। २ प्रसन्न होना ३ उत्सव होना। ४ अच्छा लगना। ५ महकना। ६ विशेषता युक्त होना। ७ फलना फूलना।

गहगाट-(वि०) प्रकाशमान। रौबवाला।

गहड-(वि०) १ वीर। २ जबरदस्त। ३ गंभीर। (न०) गर्व। घमंड।

गहडबर-(न०) १ घटा। २ धूप, अतर आदि की सुगंधि से भरपूर बना हुआ

वातावरण। (वि०) १ बादला स छाया हुआ। २ वस्त्राभूषणा स सज्जित। ३ घना। ४ खूब।

गहण-(न०) १ ग्रहण (सूय, चद्र का)। २ युद्ध। ३ भीड। (वि०) गहरा। गभीर।

गहणो-(क्रि०) १ पकडना। २ धारण करना। लना। (न०) गहना। आभूषण।

गहणो गाँठो-(न०) गहना व अन्य सम्पत्ति। धन माल।

गहनग (न०) नश म मरत।

गहपूर-(वि०) पूण गवित। (न०) सिर।

गहभरियो-(वि०) १ गवित। घमडी। २ गभीर। ३ मस्त। मौज।

गहमह-(न०) १ शोभा की जगमगाहट। २ धूमधाम। उत्सव। ३ भीड।

गहमहणो-(क्रि०) १ शोभा का चमकना। २ शोभा होना। ३ धूमधाम होना। ४ जाश म आना। ५ गव करना। ६ भीड करना। ७ भीड होना।

गहमहर-(वि०) १ गभीर। २ वीर। योद्धा। (न०) उत्सव। धामधूम।

गहमातो-(वि०) पूण गवित। गर्वो मत।

गहर-(न०) १ गव। घमड। २ शोभा। (वि०) १ घना। गहरा। २ अथाह। ३ गभीर।

गहराई-(ना०) १ गहरापन। ऊँचाई। २ गभीरता।

गहरो-(वि०) १ घनिष्ट। २ घना। अधिक। ३ गभीर। ऊँचा।

गहल-(ना०) १ नशा। २ चक्कर। सिर घूमना। ३ भोजन का नशा या सुस्ती। ३ हलकी नींद।

गहलाई-(ना०) पागलपन।

गहलो-(वि०) पागल। मत्त। (न०) १ अणहिलपुर पाटण के शासक कण की मूखता का एक विरुद। २ कण गहलो।

गहवइ-(न०) गृहपति।

गहवर-(न०) १ सघनता। २ अभिमान। (वि०) १ गह्वर। दुगम। २ घना। ३ अभिमानी।

गहवरणो-(क्रि०) १ अभिमान करना। २ वृक्ष का पुराने पत्ता आदि से छा जाना। ३ मस्ती से झूमना।

गहवरियो (वि०) १ गभीर। २ निडर। ३ गवित। ४ मस्त।

गहवत-(वि०) १ घमडी। अभिमानी। २ गभीर।

गहीजणो-(क्रि०) १ घिर जाना। २ हानि उठाना। ३ दूसर के वश म हानि उठाना।

गहीर-(वि०) गभीर। गहरा।

गहू आळ-(ना०) गहू के खेता का समूह। गहू के खेता की पक्ति।

गहू-(न०) गेहू।

गग-(ना०) गगा। जाह्नवी। भागारथी। (न०) १ जाधपुर नगर के स्थापक राव जोधा के वशज राव गागा का काव्य नाम। २ चहुवाण का पौत्र और चाह का पुत्र राणा घणसूर (द्वापर द्रोणपुर के माहल का वडेरा) का विरुद। ३ ३ अकबर कालीन एक कवि।

गग रो जडाग-(न०) भीष्म पितामह।

गगा-(ना०) भारत के उत्तर भाग की एक प्रसिद्ध और अति पवित्र नदी, जो हिमालय म गगोत्री से निकल कर बगाल की खाडी म गिरती है। भागारथी।

गगाजळ-(न०) गगा का जल।

गगाजळी-(ना०) १ टोटी वाला छोटा जलपात्र। २ गगा की यात्रा करके गगा जल भर कर लाने का पात्र। ३ पीतल और तांबे की चद्दर जोड कर बनाया हुआ छोटा कलश।

गवीडजणो-*(क्रि०)* १ गाया जाना । २ वदनाम होना ।
गवर-*(ना०)* १ गौरी । पावती । २ गणगोर के उत्सव पर प्रदर्शित की जाने वाली गौरी की काष्ठ प्रतिमा ।
गवरजा-*(ना०)* गौरी । पावती ।
गवरल-*(ना०)* १ गौरी । पावती । २ गणगोर उत्सव पर गाया जान वाला एक लोकगीत ।
गवरादे-*(ना०)* गौरीदेवी । गौरी । पावती ।
गवरी-*(ना०)* गौरी । पावती ।
गवरीपुत्र-*(न०)* गणेशजी ।
गवळ-*(न०)* १ गोवश । गाय बल आदि । २ ग्वाला ।
गवा-*(ना०)* गवाह । साक्षी ।
गवाड-*(ना०)* १ मोहल्ला । गली । २ बाडा ।
गवाडणो-दे० गवडावणो ।
गवाडी-*(ना०)* १ छोटी गली । गृहावली । २ एक कुटुम्ब के पाँच सात घरो की बद गली । २ घर । वश । बाडी ।
गवार-*(न०)* १ ग्वार का क्षुप । २ ग्वार का बीज । ग्वार ।
गवारणी-*(ना०)* गवारिया की स्त्री ।
गवारफळी-*(ना०)* ग्वारफली ।
गवारियो-*(न०)* प्राय कघा बनाने और बेचने वाली एक खानाबदोश जाति का मनुष्य ।
गवाळ-*(न०)* ग्वाल ।
गवाळण-*(ना०)* ग्वालिनी ।
गवाळणी-दे० गवाळण ।
गवाळियो-*(न०)* ग्वाला ।
गवावणो-दे० गवडावणो ।
गवाह-दे० गवा ।
गवाही-*(ना०)* साक्षी । गवाही ।
गवीजणो-*(क्रि०)* १ कुख्यात होना । वदनाम होना । २ चर्चा का पात्र होना । ३ गाया जाना ।
गवेसो-*(न०)* १ निंदा चर्चा । २ चर्चा । व्यथ की बातें । गप्पें । ३ बकवाद । ४ बातचीत । ५ खोज पता ।
गवयो-*(न०)* गाने वाला । गवया । गायक ।
गस-*(ना०)* १ चक्कर । २ बेहोशी ।
गह-*(न०)* १ गव । घमड । २ आनद । मौज । ३ मस्ती । ४ प्रतिष्ठा । मान । ५ घर । गृह । ६ घर का कोई भाग । ७ घर का ऊपरी भाग । ऊपर की मजिल । *(वि०)* १ गभीर । ऊँचा । २ मस्त । ३ जबरदस्त वीर ।
गहक-*(न०)* १ नखरा । २ गव । घमड । ३ कृत्रिमता ।
गहकणो-*(क्रि०)* १ प्रसन्न होना । खुश होना । २ खुश होकर गजना । ३ नखरे से बोलना । ४ नखरे करना । ५ गव से बोलना । ६ पक्षियो का कलरव करना । ७ ढोल या नगाडे का बजना ।
गहको-*(न०)* १ बोलने का बनावटी और व्यग्य पूण ढग । २ मिजाज । घमड । ३ नखरा । ४ कृत्रिमता । ५ ढग । तरीका ।
गहगट-*(न०)* १ आनद । हप । खुशी । २ हर्षातिरेक । ३ उत्सव । ४ खूबी । विशेषता । ५ अधिकता । ६ हप की अधिकता । बादलो का छा जाना । घटा । ८ युद्ध । घमासान ।
गहगहणो-*(क्रि०)* १ उत्साहित होना । २ प्रसन्न होना ३ उत्सव होना । ४ अच्छा लगना । ५ महकना । ६ विशेषता युक्त होना । ७ फलना फूलना ।
गहगाट-*(वि०)* प्रकाशमान । रौबवाला ।
गहड-*(वि०)* १ वीर । २ जबरदस्त । ३ गभीर । *(न०)* गव । घमड ।
गहडवर-*(न०)* १ घटा । २ धूप अतर आदि की सुगधि से भरपूर बना हुआ

वातावरण। (वि०) १ बादलो से छाया हुआ। २ वस्त्राभूषणो से अलकृत। ३ घना। ४ खूब।

गहण-(न०) १ ग्रहण (सूय, चद्र का)। २ युद्ध। ३ भीड। (वि०) गहा। गभीर।

गहणो-(क्रि०) १ पकडना। २ धारण करना। लना। (न०) गहना। आभूषण।

गहणो गाठो-(न०)गहना व अन्य सम्पत्ति। धन माल।

गहनग-(न०) नशे म मस्त।

गहपूर-(वि०) पूण गवित। (न०) सिह।

गहभरियो-(वि०) १ गवित। घमडी। २ गभीर। ३ मस्त। मौज।

गहमह-(न०) १ दीपको की जगमगाहट। २ धूमधाम। उत्सव। ३ भीड।

गहमहणो-(क्रि०) १ दीपको का चमकना। २ शोभा देना। ३ धूमधाम होना। ४ जोश म आना। ५ गव करना। ६ भीड करना। ७ भीड होना।

गहमहर-(वि०) १ गभीर। २ वीर। योद्धा। (न०) उत्सव। धामधूम।

गहमातो-(वि०) पूण गवित। गर्वो मत।

गहर-(न०) १ गव। घमड। २ शोभा। (वि०) १ घना। गहरा। २ अथाह। ३ गभीर।

गहराई-(ना०) १ गहरापन। ऊडाई। २ गभीरता।

गहरो-(वि०) १ घनिष्ट। २ घना। अधिक। ३ गभीर। ऊडा।

गहल-(ना०) १ नशा। २ चक्कर। सिर घूमना। ३ भोजन का नशा या सुस्ती। ४ हलकी नींद।

गहलाई-(ना०) पागलपन।

गहलो-(वि०) पागल। मत्त। (न०) १ अणहिलपुर पाटण के शासक कण की मूखता का एक विरुद। २ कण गहलो।

गहवइ-(न०) गृहपति।

गहवर-(न०) १ सघनता। २ अभिमान। (वि०) १ गह्वर। दुगम। २ घना। ३ अभिमानी।

गहवरणो-(क्रि०) १ अभिमान करना। २ वृक्ष का पुष्पो पत्तो आदि से छा जाना। ३ मस्ती से झूमना।

गहवरियो-(वि०) १ गभीर। २ निडर। ३ गवित। ४ मस्त।

गहवत-(वि०) १ घमडी। अभिमानी। २ गभीर।

गहीजणो-(क्रि०) १ घिस जाना। २ हानि उठाना। ३ दूसर क बदल म हानि उठाना।

गहीर-(वि०) गभीर। गहरा।

गहु आळ-(ना०) गहू के खेतो का समूह। गेहू क खतो की पक्ति।

गहू-(न०) गेहू।

गग-(ना०) गगा। जाह्नवी। भागीरथी। (न०) १ जाधपुर नगर के स्थापक राव जोधा के वशज राव गागा का काय नाम। २ चहुवाण का पौत्र और चाहड का पुत्र राणा घणसूर (छापर द्रोणपुर के माहल का बडेरा) का विरुद। ३ ३ अकबर कालीन एक कवि।

गग रो जडाग-(न०) भीष्म पितामह।

गगा-(ना०) भारत क उत्तर भाग की एक प्रसिद्ध और अति पवित्र नदी जा हिमालय म गगोत्री स निकल कर बगाल की खाडी मे गिरती है। भागीरथी।

गगाजळ-(न०) गगा का जल।

गगाजळी-(ना०) १ टोटा वाला छोटा जलपात्र। २ गगा की यात्रा करके गगा जल भर कर लाने का पात्र। ३ पीतल और ताबे की चद्दर जाड कर बनाया हुआ छोटा कलश।

गवीडजणो-*(क्रि०)* १ गाया जाना। २ बदनाम होना।

गवर-*(ना०)* १ गौरी। पार्वती। २ गणगौर के उत्सव पर प्रदर्शित की जाने वाली गौरी की काष्ठ प्रतिमा।

गवरजा-*(ना०)* गौरी। पार्वती।

गवरल-*(ना०)* १ गौरी। पार्वती। २ गणगौर उत्सव पर गाया जाने वाला एक लोकगीत।

गवरादे-*(ना०)* गौरीदेवी। गौरी। पार्वती।

गवरी-*(ना०)* गौरी। पार्वती।

गवरीपुत्र-*(न०)* गणेशजी।

गवळ-*(न०)* १ गौवंश। गाय बैल आदि। २ ग्वाला।

गवा-*(ना०)* गवाह। साक्षी।

गवाड-*(ना०)* १ मोहल्ला। गली। २ बाड़ा।

गवाडणो-दे० गवडावणो।

गवाडी-*(ना०)* १ छोटी गली। गृहावली। २ एक कुटुम्ब के पांच सात घरों की बंद गली। ३ घर। वंश। बाड़ी।

गवार-*(न०)* १ ग्वार का क्षुप। २ ग्वार का बीज। ग्वार।

गवारणी-*(ना०)* गवारिया की स्त्री।

गवारफळी-*(ना०)* ग्वारफली।

गवारियो-*(न०)* प्रायः कंघा बनाने और बेचने वाली एक खानाबदोश जाति का मनुष्य।

गवाळ-*(न०)* ग्वाल।

गवाळण-*(ना०)* ग्वालिनी।

गवाळणी-दे० गवाळण।

गवाळियो-*(न०)* ग्वाला।

गवावणो-दे० गवडावणो।

गवाह-दे० गवा।

गवाही-*(ना०)* साक्षी। गवाही।

गवीजणो-*(क्रि०)* १ कुख्यात होना। बदनाम होना। २ चर्चा का पात्र होना। ३ गाया जाना।

गवेसो-*(न०)* १ निंद्य चर्चा। २ चर्चा। व्यर्थ की बातें। गप्पें। ३ बकवाद। ४ बातचीत। ५ खोज पता।

गवयो-*(न०)* गान वाला। गवया। गायक।

गम-*(ना०)* १ चक्कर। २ बेहोशी।

गह-*(न०)* १ गर्व। घमंड। २ आनंद। मौज। ३ मस्ती। ४ प्रतिष्ठा। मान। ५ घर। गृह। ६ घर का कोई भाग। ७ घर का ऊपरी भाग। ऊपर की मंजिल। *(वि०)* १ गंभीर। ऊंडा। २ मस्त। ३ जबरदस्त वीर।

गहक-*(न०)* १ नखरा। २ गर्व। घमंड। ३ कृत्रिमता।

गहकणो-*(क्रि०)* १ प्रसन्न होना। खुश होना। २ खुश होकर गर्जना। ३ नखरे से बोलना। ४ नखरे करना। ५ गर्व से बोलना। ६ पक्षियों का कलरव करना। ७ ढोल या नगाडे का बजना।

गहको-*(न०)* १ बोलने का बनावटी और व्यंग्य पूर्ण ढंग। २ मिजाज। घमंड। ३ नखरा। ४ कृत्रिमता। ५ ढंग। तरीका।

गहगट-*(न०)* १ आनंद। हर्ष। खुशी। २ हर्षातिरेक। ३ उत्सव। ४ खूबी। विशेषता। ५ अधिकता। ६ हर्ष की अधिकता। बादलों का छा जाना। घटा। ८ युद्ध। घमासान।

गहगहणो-*(क्रि०)* १ उत्साहित होना। २ प्रसन्न होना ३ उत्सव होना। ४ अच्छा लगना। ५ महकना। ६ विशेषता युक्त होना। ७ फलना फूलना।

गहगाट-*(वि०)* प्रकाशमान। रौबवाला।

गहड-*(वि०)* १ वीर। २ जबरदस्त। ३ गंभीर। *(न०)* गर्व। घमंड।

गहडवर-*(न०)* १ घटा। २ धूप अत्तर आदि की सुगंधि से भरपूर बना हुआ

करण। (वि०) १ वादलो स छाया। २ वस्त्राभूपणा से अलकृत।
ना। ४ नूव।
(न०) १ ग्रहण (सूय, चद्र का)।
युद्ध। ३ भीड। (वि०) गहा।
र।
-(क्रि०) १ पकडना। २ धारण
ा। लना। (न०) गहना। आभूपण।
गाठो-(न०) गहना व अन्य सम्पत्ति।
माल।
-(न०) नश मे मस्त।
-(वि०) पूण गवित। (न०) सिह।
रयो-(वि०) १ गर्वित। घमडी।
गभीर। ३ मस्त। मौज।
-(न०) १ दीपको की जगमगाहट।
धूमधाम। उत्सव। ३ भीड।
णो-(क्रि०) १ दीपको का चमकना।
शोभा दना। ३ धूमधाम होना।
जाश म आना। ५ गव करना। ६
ड करना। ७ भाड होना।
हुर-(वि०) १ गभीर। २ वीर।
डा। (न०) उत्सव। धामधूम।
ातो-(वि०) पूण गवित। गर्वो मत।
-(न०) १ गव। घमड। २ शोभा।
वि०) १ घना। गहरा। २ अथाह।
गभीर।
ाई-(ना०) १ गहरापन। ऊडाई।
२ गभीरता।
ी-(वि०) १ घनिष्ट। २ घना।
अधिक। ३ गभीर। ऊडा।
ठ-(ना०) १ नशा। २ चक्कर। सिर
घूमना। ३ भोजन का नशा या सुस्ती।
३ हलकी नींद।
लाई-(ना०) पागलपन।
लो-(वि०) पागल। मत्त। (न०) १
अणहिलपुर पाटण के शासक कण की
मूखता का एक विरुद। २ कण गहलो।

गहवइ-(न०) गृहपति।
गहवर-(न०) १ सघनता। २ अभिमान। (वि०) १ गह्वर। दुगम। २ घना।
३ अभिमानी।
गहवरणो-(क्रि०) १ अभिमान करना।
२ वृक्ष का पुष्प, पत्ता आदि से छा जाना। ३ मस्ती से झूमना।
गहवरियो-(वि०) १ गभीर। २ निडर।
३ गवित। ४ मस्त।
गहवत-(वि०) १ घमडी। अभिमानी।
२ गभीर।
गहीजणो-(क्रि०) १ घिस जाना। २ हानि उठाना। ३ दूसरे के बदले म हानि उठाना।
गहीर-(वि०) गभोर। गहरा।
गहु आळ-(ना०) गहू के खेतो का समूह। गहू के खेतो की पक्ति।
गहू-(न०) गेहू।
गग-(ना०) गगा। जाह्नवी। भागीरथी।
(न०) १, जोधपुर नगर के स्थापक राव जोधा क वशज राव गागा का काव्य नाम। २ चहुवाण का पौत्र और चाह का पुत्र राणा घणसूर (छापर द्रोणपुर क माहल का वडेरा) का विरुद। ३
३ अकवर कालीन एक कवि।
गग-रो जडाग-(न०) भीष्म पितामह।
गगा-(ना०) भारत क उत्तर भाग की एक प्रसिद्ध और अति पवित्र नदी जो हिमालय म गगोत्री स निकल कर बगाल की खाडी म गिरती है। भागीरथी।
गगाजळ-(न०) गगा का जल।
गगाजळी-(ना०) १ टोटी वाला छोटा जलपात्र। २ गगा की यात्रा करके गगा जल भर कर लाने का पात्र। ३ पीतल और तावे की चद्दर जोड कर बनाया हुआ छोटा कलश।

गगा न्हावणो–(मुहा०) १ पाप, झझट और उत्तरदायित्व से बरी होना। २ गगा मे स्नान करना।
गगा-परसादी–(ना०) गगा यात्रा की प्रसादी और गगाजल बाटने के निमित्त किया जाने वाला भोजन समारोह।
गगा-सागर–(न०) वह तीर्थ स्थान जहाँ गगा सागर मे मिलती है। २ टोटी वाला लोटा।
गगा-स्वरूप–(वि०) १ गगा के समान निर्मल स्वभाव वाला। २ शात प्रकृति के धर्माचारी व्यक्तियो के नाम के पहिले आदरार्थ प्रयुक्त होने वाला एक विशेषण। ३ विधवा स्त्रियो के नाम के पूर्व लिखा जाने वाला आदर सूचक ग० स्व० विशेषण का पूरा नाम।
गगेरण–(ना०) १ एक वृक्ष। २ इस वृक्ष की लकडी।
गगेव–(न०) गागेय। भीष्म पितामह।
गगोज–(न०) दे० गगा परसादी।
गगोतरी–(ना०) वह तीर्थ स्थान जहा से गगा निकलती है। गगोत्री। रुद्र हिमालय।
गज–(न०)१ ढेर। राशि। २ एक के ऊपर एक रखी हुई एकसी चीजो का ढेर। ३ सिर की चमडी का एक रोग। खरवाट। ४ एक ही वस्तु के क्रय विक्रय का बाजार। मडी।
गजणहार–(वि०) १ शत्रुओ का नाश करने वाला। २ वीर। ३ जीतने वाला।
गजणो–(वि०) शत्रुओ का नाश करने वाला। (क्रि०) १ नाश करना। गजना २ पराजित करना।
गजीजणो–(क्रि०) १ नाश होना। मरना। २ हारना।
गजीफो–(न०) १ ताश की गड्डी। ताश का खेल।
गजेडी–(वि०) गाजा पीने वाला। नशाबाज।
गजो–(न०) गज रोग वाला।
गठ–(ना०) १ गाठ। २ उलझन। ३ माया रूपी गाठ। अविद्या। अज्ञान।
गठियो–(न०) १ सधिवात का एक रोग। गठिया रोग। २ गँठकटा। गिरहकटा। ३ ठग। धूर्त। ४ एक घास।
गठीजणो–(क्रि०) बँध जाना।
गठो–(न०) १ ऊट पर दाना और लदी हुई जलाने की लकडिया (ईधन) की लाद। २ कस कर बाधी हुई गठरी। ३ पानी मे ऊपर से सीधी मारी जाने वाली छलाँग।
गडक–(न०) १ कुत्ता। कूतरो। २ ग्राम शूकर।
गडकडी–(ना०) १ कुत्ती। कुतिया। कूतरी। २ ग्राम शूकरी।
गडकडो–दे० गडक।
गडकी–(ना०) १ एक नदी का नाम। २ कुतिया। कुत्ती।
गडसूर–(न०) ग्राम शूकर।
गडसूरो–दे० गडसूर।
गडूरो–दे० गडसूर।
गडो–(न०) १ अकुश। २ एक शस्त्र। ३ तावीज। गडा।
गदगी–(ना०) १ मैलापन। २ अस्वच्छता। अशुद्धता। ३ मला। मल।
गदळ–(ना०) मूली, गाजर आदि के पत्ता के बीच मे उत्पन्न होने वाला एक कोमल डठल वाला पत्ता।
गदवाड–(ना०) १ गन्दगी। २ अस्वच्छता। ३ गदीवाडो।
गदियो–(न०) १ एक तीक्ष्ण गन्ध वाला घास। २ एक कीडा।
गदीवाडो–(न०) १ दुर्गंध वाले कचरे का ढेर। २ वह स्थान जहाँ ऐसा गदा कचरा पडा हो। ३ गदगी।

गदो–*(न०)* जट की दरी। *(वि०)* मैला। गदा। अस्वच्छ।

गध–*(ना०)* १ सुगध। २ दुाघ। ३ लेशमात्र स्पश। ४ लशमात्र निकटता।

गधक–*(न०)* गत्रक।

गधजाण–*(न०)* नासिका।

गधमद–दे० मदगध।

गधरप–*(न०)* १ गधव। २ ग्रक।

गधव–*(न०)* १ गान बजान वाले देवताग्रो का एक वग। गान बजान वाली एक जाति।

गधवनगरी–*(ना०)* १ आकाश मण्डल म दिखने वाला एक प्रतिबिम्ब। २ काल्प निक नगर। मिथ्या ज्ञान।

गध-वह–*(न०)* १ नाक। नासिका। २ २ पवन। वायु। ३ चदन। *(वि०)* सुगधित।

गध वहरण–दे० गधवह।

गधवाह–दे० गधवह।

गधसार–*(न०)* चदन।

गधहर–*(न०)* नाक।

गधावणो–*(क्रि०)* गधना। वदबू मारना। बू मारना।

गधी–दे० गाधी।

गधीलो–*(वि०)* १ मैला। वदबूदार। गधवाला।

गध्रव–*(न०)* गधव।

गभीर–*(वि०)* १ उदार। २ प्रौढ। ३ गहरा। ४ विकट। ५ शात। ६ धीर। *(न०)* एक विपला व्रण।

गभीरी–*(ना०)* मेवाड की एक नदी।

गँवार–*(वि०)* १ ग्रामीण। दहाती। २ मूख। नासमझ। २ ग्रमभ्य।

गा–*(ना०)* १ गाय। २ पृथ्वी। *(वि०)* गरीब। विचारा।

गाएठा–*(न०)* पराल म से अनाज को अलग करन का काम।

गाऊ–*(न०)* दूरी का एक नाप जो दो मील का होता है। गव्यूत। कोस।

गागड़दो–*(न०)* राव क जैसी गाढी छनी हुई भाग। २ अधिक गाढा द्रव।

गाघ–*(न०)* १ गहरा घाव। २ सडा हुआ घाव। *(वि०)* १ चालाक। होशियार। घाघ। २ चतुर। दक्ष।

गाघरणो–*(क्रि०)* विवाहित पति को छोडकर या विधवा होने पर स्त्री का दूसरे पुरुष क घर मे पत्नी रूप से रहना।

गाज–*(न०)* १ बादल का गजन। २ सिंह की दहाड। ३ तोप क छूटन का शब्द। ४ बिजली। वज्र। ५ एक वस्त्र। ६ बटन का काज।

गाजणो–*(क्रि०)* १ बादलो का गजना। २ सिंह का दहाडना। *(वि०)* गाजने वाला।

गाजा माता–*(ना०)* बनजारो की कुल देवी।

गाजर–*(ना०)* १ मूली के जसा एक कद। गाजर। २ एक प्रकार की आतिश बाजी।

गाज-वीज–*(न०)* बादलो का गजन और बिजली की चमक।

गाठणो–*(क्रि०)* घिसना। घिसजाना।

गाठीजणो–*(क्रि०)* घिसजाना।

गाडणो–*(क्रि०)* १ गाडना। दफनाना। २ खभे आदि के कुछ भाग को गाड कर खडा करना।

गाडर–*(ना०)* भेड।

गाडियोडो–*(वि०)* १ गाडा हुआ।

गाडी–*(ना०)* १ सामान या मनुष्यों को एक स्थान स दूसरे स्थान पर पहुँचाने वाला यान। रेलगाडी घोडागाडी, बैलगाडी आदि।

गाडीखड–*(वि०)* गाडी चलाने वाला। गाडीवान। गाडीवाळो। सागडी।

गाडीवान–दे० गाडीखड।

गाडेती–(वि०) गाडीवान । गाडीवाळो ।

गाडो–(न०) १ छकडा । २ बलगाडी । ३ घास से भरी हुई बलगाडी ।

गाडो धकावणो–(मुहा०) १ जैसे तसे गुजारा करना । २ अपना व्यवहार विवेक से चलाना ।

गाडो चलावणो–दे० गाडा धकावणो ।

गाडोलियो–(न०) १ बलगाडी पर घर-सामान रख कर एक गाव से दूसरे गाँव धधे के निमित्त फिरती रहने वाली खाना बदोश लुहार जाति का व्यक्ति । २ चलना सीखने की बच्चों की एक प्रकार की छोटी गाडी ।

गाडालो–(ना०) १ दे० गाडालियो । २ हाथ से चलाया जाने वाला ठेला ।

गाढ–(न०) १ शक्ति । २ धैर्य ३ गर्व । घमड । ४ आग्रह । ५ दृढ़ता । ६ निरोगता । ६ सम्मान । मान सनमान । (वि०) १ गहरा २ पक्का । ३ घना । ३ दृढ । ५ अधिक ।

गाढम–(वि०) १ गर्वीला । २ गँभीर । ३ वीर । (न०) १ वीरता । २ बल । ३ गभीरता । ४ प्रतिष्ठा ।

गाढमल–(न०) १ गर्वीला वीर । २ वीर पुरुष । (वि०) स्वाभिमानी । २ अभिमानी ।

गाढ रो कोट–(न०) शक्ति का भडार । (वि०) १ अजेय शक्तिशाली । जबरदस्त ताकतवर । २ स्वाभिमाना ।

गाढवान–दे० गाढवाळ ।

गाढवाळ–(वि०) १ शक्तिमान । २ धीरज वान । ३ दृढ ।

गाढवाळो–(वि०) १ बलवान । २ धय वान । ३ गभीर । ४ सहनशील ।

गाढा-मारू–(न०) १ गर्वीला पुरुष । स्वाभिमानी व्यक्ति । २ रसिक पुरुष । ३ जमाई । दामाद । ४ दूल्हा । ५ जमाई । विवाह के लावगीतो का । ६ एक नायक । ७ एक लोक गीत ।

गाढो–(वि०) १ अच्छा । २ खूब । अधिक । बहुत । ३ जो अधिक पतला न हो । काठो । ४ धनिष्ट । घना । ५ धयवान । धीरजवाळो । ६ दृढ़ । ७ गर्वीला ।

गाणो–(न०) गाना । गायन । गीत । (नि०) गाना । गीत गाना । लय के साथ अलापना ।

गात–(न०) शरीर । देह ।

गातटी–(ना०) दे० गाती ।

गातर–(न०) १ गात्र । अग । २ शरीर का कोई भाग । ३ दे० गातरो ।

गातर ढीला पडणो (मुहा०) श्रम या डर के मारे शिथिल पड जाना ।

गातरो–(न०) १ अनेक आडे डडा वाली निसेनी का एक डडा । २ किवाड म लगने वाली आडी लकडी का एक टुकडा ।

गाती–(ना०)१ शरीर पर कपडा लपेट कर बांधने का एक ढँग । २ छाती और पीठ पर लपट कर बांधा जाने वाला कपडा ।

गातो–दे० गातरो ।

गात्र–(न०) १ शरीर । देह । २ शरीर का कोई भाग । अग । गातर ।

गाथ–(ना०) १ धन । २ घर । ३ गाथा । कथा । वृत्तात । ४ कीर्ति । यश ।

गाथा–(ना०) १ कथा । वृत्तात । २ कीर्ति । यश । ३ छदबद्ध वार्ता । ४ वर्णन । बयान । चित्रण । ५ एक छद ।

गाद–(ना०) १ तरल पदार्थ के नीचे जम जाने वाली गाढी चीज । तलछट । कीट । कीचड । २ पशुओ के चूतड के ऊपर का भाग । पुट्ठा । ३ गध । ४ दुर्गध । ५ मला । विष्ठा । मल ।

गादडो–(न०) गीदड ।

गादरणो–(क्रि०) १ अकुरित होना । २ प्रफुल्लित होना । खिलना । प्रसन्न होना ।

गादह–(न०) गदहा । गधो ।

गादहो–दे० गादह।

गादी–(ना०) १ राज्य सिंहासन। २ राजा, महंत साधु आदि के बैठने का आसन तथा पद। ३ किसी व्यवसायी के बैठने का स्थान। पेढ़ी। दुकान। ४ गद्दी। आसन।

गादीधर–(ना०) १ महंत। २ राजा। ३ उत्तराधिकारी।

गादी नशीन–(वि०) १ गद्दी नशीन। गद्दी पर बैठा हुआ। सिंहासनारूढ़। २ पदारूढ़।

गादेपत–दे० गाधोतरो।

गादोतरो–दे० गाधोतरो।

गाधोनरै-गाळ–(अव्य०) गधे से सम्बन्ध की जाने वाली शपथ या गाली। जैसे–मारा रुपिया हमार रा हमार नहीं देवैला तो थनै गादोतर गाळ है।

गाधोनरो–(ना०) १ पुन नहीं लौट आने के लिये गौवध के पाप लगने की प्रतिज्ञा करके किसी गाँव से किया हुआ सामूहिक निष्कासन। गौवधोत्तर। २ ऐसी दुर्घटना के समय छोड़े हुए स्थान पर खड़ा किया जाने वाला गौ मूर्ति के साथ अंकित शिलालेख। ३ इसी प्रकार किया जाने वाला निष्कासन जिसमें वापिस नहीं लौट आने के लिए माता, पुत्री, बहिन और पत्नी के साथ गदहे से सभोग कराने की शपथ ली हुई हो। ४ गदहे से सभोग कराती हुई स्त्री की मूर्ति के साथ अंकित उक्त आशय का शिलालेख। गदभोतर।

गानगर–(ना०) गायक।

गाफल–(वि०) गाफिल। बेसुध।

गाबड–(ना०) गरदन। ग्रीवा।

गाभ–(ना०) १ हमल। भ्रूण। गर्भ। प्राय इस शब्द का अर्थ गाय भैंस आदि मादा पशुओं के गर्भ से ही लिया जाता है। ३ किसी वस्तु का मध्य भाग। ४ किसी वस्तु का भीतरी भाग।

गाभणी–(ना०) गर्भवती। (प्राय गाय भैंस आदि के लिये)।

गाभलो–(ना०) चूड़ा चीरने के बाद रहा हुआ हाथी दांत का वह बीच का भाग जो चूड़ी चीरने के योग्य नहीं रहता। (वि०) १ भोला। सीधा। २ मूर्ख। गोमू।

गाभो–(ना०) १ वस्त्र। कपड़ा। २ रद्दी कपड़ा। ३ बड़ा टट्टा आदि पोले आमू-षणों के अंदर की नीचे की पतली छड़ (गरिया)।

गाम–(ना०) १ ग्राम। गाँव। २ निवास स्थान।

गाम गोठ–(ना०) १ प्रवास। यात्रा। २ गाँव गोष्ठी। ३ ठाम ठिकाना। पता ठिकाना।

गामठी–(वि०) १ गाँव से संबंधित। २ गाँव संबंधी। ३ गाँव का रहने वाला। गँवार। ४ विदेश में बनी हुई के मुका-बिले देश में बनी हुई (वस्तु)। देश में गृह उद्योग द्वारा निर्मित।

गामठी-चांदी–(ना०) १ जवर आदि मिलावटी चांदी को घर शोधन प्रक्रिया से तयार की गई शुद्ध चांदी। २ टकसाल में शुद्ध नहीं की हुई अथवा टकसाल में टंच नहीं निकलवाई हुई चांदी।

गामडियो–(ना०) छोटा गाँव। (वि०) गाँव का। गाव का रहने वाला।

गामतरो–(ना०) १ अपने गाँव से की जाने वाली दूसरे गाव की यात्रा। २ एक गाँव से दूसरे गाँव को जाने की क्रिया। ग्रामा-तर होना। ग्रामान्तरण।

गामधणी–(ना०)गाव का स्वामी। जागीरदार।

गामधर–(ना०) गाव का स्वामी।

गाम भाभी–(ना०) सरकारी या जागीरी के काम के लिये आसामियों को बुलाने के

लिये नियुक्त किया गया भाँभी जाति का व्यक्ति।

गाम-सारणी–(ना०) सारे गाँव को दिया जाने वाला भोजन। किसी एक व्यक्ति की ओर से समस्त गाँव के लिये किया जाने वाला भोजन समारोह। बृहत् गाँव भोज।

गामसिंघ–(न०) कुत्ता। ग्रामसिंह।

गामाऊ–(वि०) गाव सबघी। गाव का।

गामेती–(वि०) १ गाव का निवासी। गँवार। ग्रामीण। २ गाव का अगुआ।

गामोगाम–(न०) गाव गाव। प्रत्येक गाव। प्रति गाँव।

गाय–(ना०) धेनु। गाय। गौ।

गायक–(न०) गवया।

गायकवाड–(न०) वडोदरा राज्य के शासक की जाति या विरुद।

गायटो–(न०) खलिहान म भूसे से अनाज को जुदा करने की क्रिया।

गायडमल–दे० गाहडमल।

गायड-रो-गाडो–दे० गाहड रो-गाडो।

गायणी–(ना०) १ गाने वाली। गायिनी। पेशेवर गायिका। २ वेश्या।

गायत्री–(ना०) १ एक अत्यत पवित्र वदिक मत्र। गायत्री। २ एक वदिक छद।

गायवी–(न०) गायक।

गार–(ना०) लीपने के लिये बनाया हुआ गोबर और मिट्टी का गारा। २ कीचड।

गारडी–(न०) मपेरा।

गारत–(वि०) नष्ट बरबाद।

गारवो–(न०) १ गव। घमड।

गारो–(न०) १ कीचड। कादो। २ चुनाई के लिये गालो हुई मिट्टी। गारा। ग्रालेडो।

गाल–(न०) कपोल। गाल।

गाळ–(ना०) १ गाली। अपशब्द। २ कलक। लाछन। ३ विवाह म स्त्रियो द्वारा सबधियो को सबोधन करके गाये जाने वाले परिहास गीत। (न०) १ माल पुआ, जलेबी आदि बनाने के लिये बनाया जाने वाला आटे का घोल। २ माग। ३ पहाड का तग माग। ४ दो पहाडो के बीच का सँकडा माग। ५ पवत की घाटी। ६ सहार। नाश।

गाळणो–(क्रि०) १ पिघलाना। गलाना। २ निचोडना। ३ पानी आदि किसी तरल पदाथ को छानना। ४ मजबूर करना। मनाना। ५ प्रभाव डालना। ६ नष्ट करना।

गाळमो–(न०) गला हुआ अफीम। कसूबो। (वि०) गला हुआ। पिघला हुआ।

गाळा–(ना०) १ उपाय। रास्ता। २ गाठ। ग्रथि। ३ टोटी लौंग आदि कर्णाभूषणो का वह पिछला भाग जो (लोलक) कण छेद म डाला हुआ रहता है। ४ गाली। दुवचन।

गाळो–(न०) १ अतर। फक। २ समयातर। ३ स्थलान्तर। ४ किसी वस्तु के मूल्य मे एक दूसरे स्थान म परस्पर रहने वाला अतर। ५ सरकाई जा सकने वाली रस्सी की गाँठ। फाँसा। सरकी पासो। ७ चक्की का मुँह। ८ चूडी आदि गोल वस्तु का घेरा। व्यास। ९ चक्की के गाले (मुँह) मे पीसने के लिये डाले जाने वाले मुट्ठी भर अनाज का परिमाण। १० चक्की के मुँह में डाला जाने वाला मुट्ठी भर अनाज।

गावडियो–(न०) १ बैल साँढ बछडा आदि गोवश। २ बैल। ३ साँढ।

गावडी–(ना०) गाय। गौ।

गावणियो–(वि०) गाने वाला। गवयो।

गावणो–दे० गाणो।

गाव तकियो–(न०) १ छोटा गोल तकिया जो सोते समय गाल के नीचे रखा रहता

है। २ गादी पर रखा रहने वाला लंबा तकिया। मसनद। पीठ के सहारे का बडा तकिया।
गावदू–(वि०) गावदी। नासमझ।
गावी छाछ–(ना०) गाय का छाछ। गोतक्र।
गावो–(वि०) गाय का। गाय से संबंधित। (ना०) गाय।
गावो घी–(न०) गाय का घी। गोघृत।
गावो-दूध–(न०) गाय का दूध। गो दुग्ध।
गास–(न०) ग्रास। कौर। निवाला। कवो।
गासियो–दे० गास।
गाह–(न०) १ पव। २ नाति। ३ कथा। ४ हानि। नुकसान। ५ नाश।
गाहटणो–(क्रि०) दे० गाहणो।
गाहटो–दे० गायटो।
गाहड–(न०)१ अभिमान। २ स्वाभिमान। ३ शक्ति। बल।
गाहडणो–(क्रि०) अभिमान करना।
गाहडमल–(वि०) १ गर्वीला। २ स्वाभिमानी। ३ शौकीन। (न०) १ दूल्हा। वींद। २ स्वाभिमान और वीरता सूचक दूल्हे का पर्याय। ३ दूल्हे का एक विशेषण। ४ विवाह के गीतों का एक नायक।
गाहड रो गाडो–(न०) १ समर स्वाभिमानी। २ स्वाभिमानी पुरुष। ३ वीर पुरुष।
गाहण–(न०) १ नाश। २ युद्ध। (वि०) नाश करने वाला।
गाहणो–(न०) १ धान, गेहूं आदि दाने निकालने के लिये डंठलों के ढेर पर बैलों आदि को फिराने की क्रिया। दे० गायटो। (क्रि०) १ नाश करना। २ पकडना। ग्रहण करना। ३ ठगना। ४ पहुँचना। ५ घिस जाना। ६ घिसना। घिसा जाना।
गाहा–दे० गाथा।
गांगडी–(ना०) १ एक क्षुप। २ इस क्षुप का फल।
गांगरत–(ना०) १ व्यर्थ की बातें। बकवाद। २ बात की रगड। रटन।
गांगरो–दे० गागरत।
गांगीरागो–(न०) १ व्यर्थ की लम्बी बातें। बकवास। २ बार बार वही बातें। बात की रगड।
गांगेय–(न०) भीष्म पितामह।
गांघेलो–(न०) बरतन में से टूट कर जुदा हो गया टुकडा पर बरतन आदि का मुंह।
गांघो–(न०) दे० गांघेलो।
गांछ–(ना०) १ गांछे का काम। २ गांठ। ३ समूह। टोळी।
गांछण–(ना०)१ गांछे की पत्नी। २ गांछा जाति की स्त्री।
गांछो–(ना०) १ बांस की टोकरियां बनाने वाली जाति का व्यक्ति।
गांजणो–(क्रि०) १ नष्ट करना। नाश करना। गंजन करना। २ हराना।
गाजर–(न०) चरस। मोट। कोस।
गांजो–(न०) १ गांजा। २ भांग की जाति का एक नशीला पौधा जिसकी कलियां को चिलम में तमाकू की तरह पीते हैं।
गांठ–(ना०) १ बंध। २ ग्रंथि। गांठ। ३ जड की गुत्थी। ४ गोल कंद। ५ बांस का पोर। ६ गठरी। ७ फोडा। व्रण।
गांठडी–(ना०) गठरी। गठडी।
गांठणो–(क्रि०)१ जूता की मरम्मत करना। २ फंसाना। बनाना। ३ गाँठ देना। बाँधना।
गांठ-रो–(वि०) अपना। निज का।
गांठाळो–(वि०) गाँठों वाला।
गांठियो–(न०) सोंठ हल्दी आदि की गाँठदार जड। गाँठ के आकार की जड।
गांठे–(क्रि०वि०)१ पास में। २ अधिकार में।
गांड–(ना०) १ गुदा। मलद्वार। २ पेंदा। तला।

गांयणो-(क्रि०) १ किसी को अपने पक्ष में कर लेना। २ बांधना। दो पशुओं को गले से एक साथ बांधना।
गांये घालणो-(मुहा०) १ अपनाना। अपना करना। २ अपने पक्ष में करना। ३ आश्रय देना। ४ किसी को अपने कब्जे में लेना। ५ किसी को दूसरे के आश्रय में कर देना। ६ दो पशुओं को गले से एक साथ बांधना।
गांधण-(ना०) गांधी की स्त्री।
गांधी-(ना०)१ अत्तर बेचने वाला। अत्तार। २ पंसारी। ३ एक वैश्य जाति।
गांव-(ना०) दे० गाम।
गांव लेडो-(ना०) १ गांव के आसपास की जमीन। बस्ती के अतिरिक्त गांव की वह जमीन जो वहां की पचायत या म्युनिसी पैलिटी के अधिकार में हो। गांव की सीमा। २ गांव।
गांवडियो-दे० गामडियो।
गांवतरो-दे० गामतरा।
गांवधणी-दे० गामधणी।
गांवधर-दे० गामधर।
गांवभोमी दे० गामभोमी।
गांव मारणी-दे० गामसारणी।
गांवसिघ-दे० गामसिघ।
गांवाऊ-दे० गामाऊ।
गिगन-(ना०) गगन। आकाश।
गिगनार-(ना०) १ आकाश। २ गिरनार पर्वत।
गिचरको-दे० गचरको।
गिजा-(ना०) १ भोजन। २ ताकत देने वाली खुराक। ३ संकट। आफत।
गिटकणो-(क्रि०) गिटना। निगलना।
गिटणो-(क्रि०) १ निगलना। २ समाप्त करना।
गिड (ना०) सूअर। (वि०) बड़ा। दे० गिडो।
गिडकध-(वि०) १ दृढस्कंध। २ दृढस्कंध वाला। बलवान। (ना०) १ सूअर। २ ऊंट।
गिडगिडी-(ना०) कुंएं पर लगा हुआ पहिया जिस पर डोल रख कर खींचा जाता है। चरखी। फिरकी।
गिडदो-दे० गिरदो।
गिडराज-(ना०) १ बड़ा सूअर। सूअर। २ ऊंट।
गिडग-(ना०) ऊंट।
गिडो-(ना०) १ मोटा। २ बड़ा गोल पत्थर।
गिणका-(ना०) गणिका। वेश्या।
गिणकारणो-(क्रि०) १ सम्मान करना। २ आदर देना। ३ किसी बात पर ध्यान देना। बात का मानना। स्वीकार करना। ४ लक्ष्य में लेना। ५ अपनाये रखना।
गिणगोर-(ना०) दे० गणगोर।
गिणणो-(क्रि०) १ गिनना। गिनती करना। गणना करना। २ हिसाब लगाना। ३ मानना। ४ ध्यान देना। ५ किसी बात को कुछ महत्व की समझना। ६ किसी को कुछ महत्व का समझना। ७ महत्व देना।
गिणत-(ना०) १ चिंता। खटक। परवाह। २ विचार। ध्यान। ३ सोच विचार। ४ गणना। ५ महत्व। (वि०) गिना जाने वाला। माना जाने वाला। सम्मान वाला। गिनती में आने वाला।
गिणती-(ना०) १ गिनती। गणना। २ महत्व। ३ संख्या।
गिणाणो-(क्रि०) गिनाना।
गिणावणो-(क्रि०) गिनवाना। गिणाणो।
गियळ-(वि०) १ गंदा। २ पागल। (ना०) हिजड़ा।
गिनर-(ना०) १ परवाह। चिंता। २ ध्यान। ख्याल।

गिनरत-(ना०) १ गिनती । गणना । २ ख्याल । विचार । ध्यान । ३ पूछ । बूझ ।

गिनान-दे० ग्यान ।

गिनान-विसभ-(न०) ज्ञान का आधार रूप । ज्ञान विश्र भ । (वि०) तत्वज्ञान म दृढ ।

गिनायत-दे० गनायत ।

गिनारणो-(क्रि०)१ ध्यान देना । सोचना । २ परवाह करना । ३ समझना । विचार करना ।

गिनारो-(न०) परवाह । ध्यान । ख्याल । गिनती ।

गिनो-दे० गनो ।

गिर-(न०)१ गिरि । पहाड । २ तरबूज आदि फलों के अंदर का गूदा । ३ दसनामी संन्यासियों का एक भेद । गिरि ।

गिर-अडार-(न०) १ आबू पवत । २ समस्त पवत ।

गिर-उद्धर-(न०) गिरिधारी । श्रीकृष्ण ।

गिरगट-दे० गाकीडो ।

गिरजा-(ना०) १ गिरिजा । पावती । २ ईसाइयों का प्रार्थना मन्दिर । गिरजा घर ।

गिरझ-(न०) १ गिद्ध । (ना०) गिद्धनी ।

गिरझडो-(न०) गिद्ध ।

गिरण-(न०) १ सूय चंद्र का ग्रहण । २ पीडा के कारण मुँह से निकलने वाला एक अव्यक्त शब्द । पीडा सूचक शब्द । कराह ।

गिरण-गहलो-(वि०) अति विक्षिप्त । पूरा पागल ।

गिरणो-(क्रि०) १ गिरना । २ पतन होना । अवनति होना । ३ लुढकना । ४ सूय चंद्र का ग्रहण होना । ग्रहण लगना ।

गिरद-(क्रिवि०) १ चारों ओर । गिर्द । २ आजू बाजू । इद गिर्द । (ना०) रज । धूलि । गर्द ।

गिरदवाय-(न०) १ विस्तार । २ घेरा । चारों ओर का विस्तार ।

गिरदाव-(क्रिवि०) चारों ओर । (न०) घेरा । चक्कर ।

गिरदावर-(न०) महकमा मालगुजारी का एक कायकर्ता । फिर करके जाँच पडताल करने वाला । गिर्दावर ।

गिरदी-(ना०) १ भीड । २ धूलि । गर्द ।

गिरधर-(न०) श्रीकृष्ण । गिरिधर ।

गिरधारी-(न०) गिरिधारी । श्रीकृष्ण ।

गिरनार-(न०) सौराष्ट्र म जूनागढ के पास का पवत और तीथस्थान ।

गिरपुर-(न०)१ राजस्थान के डूगरपुर नगर का काव्योक्त नाम । २ पहाड और नगर ।

गिरफतार-(वि०)पकडा हुआ । गिरिफ्तार ।

गिरफतारी-(ना०) कैद । बंधन ।

गिरमिट-(न०) १ भारत के बाहर मजदूरी के लिये ले जाये जाने वाले मजदूरों से कराया जाने वाला इकरार नामा । एग्रीमेन्ट । २ छेद करने का एक औजार । गिम्लेट ।

गिरमिटियो-(न०) गिरमिट (एग्रीमेन्ट) मे बंधा हुआ मजदूर ।

गिरमेर-(न०) सुमेरु पवत । मेरुगिरि ।

गिरराज-(न०) १ गोवद्धन पवत । गिरिराज । २ हिमालय । ३ आबू पवत ।

गिरराजधरण-(न०) गिरिराजधरण । श्रीकृष्ण ।

गिरवाण-(ना०) १ लकडी की बनी ऊट की नकेल । (न०) देवता । गीर्वाण ।

गिरवाणपत-(न०) इन्द्र । गीर्वाणपति ।

गिरवाणी-(ना०) देवी । सरस्वती । गीर्देवी ।

गिरवी-(ना०) रेहन । बंधक ।

गिरवै-(न०) गिरिराज । दे० गिरवी ।

गिरसोन-(न०) जालोर का स्वर्णगिरि पवत । सोनगिरि ।

गिरस्थ–दे० गृहस्थ ।
गिरस्थी–दे० गृहस्थी ।
गिरता–(अव्य०) ऋणदाता की ओर से ऋणी से लिखाये जाने वाले दस्तावेज में 'ग्रहीता' अर्थ का बोधक एक पारिभाषिक शब्द । उदा० के लिये देखिये 'धनिक नाम' शब्द ।
गिरद–(न०) बड़ा पहाड़ ।
गिरा–(ना०) १ सरस्वती । २ विद्या । ३ वाणी । वचन । ४ आज्ञा ।
गिराग–(न०) ग्राहक । गाहक ।
गिराज–(ना०) १ समझ । विचार । २ उपाय ।
गिराणो–(क्रि०) १ गिराना । २ घटाना । ३ पतन करना ।
गिराळ–(न०) १ पर्वतश्रेणी । २ बड़ा पर्वत ।
गिरावट–(ना०) १ गिरने की क्रिया (भाव अथवा ढंग) । २ पतन । ३ वस्तुओं के मूल्य अथवा भाव घटने की क्रिया । मंदी ।
गिरावणो–(क्रि०) दे० गिराणो ।
गिरासियो–(न०) दे० ग्रासियो ।
गिरि–(न०) १ पर्वत । २ दसनामी संन्यासियों का एक भेद । ३ इस वर्ग के सन्यासियों के नाम के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय ।
गिरिजा–(ना०) पार्वती ।
गिरिजापति–(न०) महादेव ।
गिरिधर–(न०) श्रीकृष्ण । गिरधर ।
गिरिधारी–दे० गिरिधर ।
गिरिंद–(न०) १ गिरीन्द्र । बड़ा पर्वत । २ सुमेरु पर्वत । ३ हिमालय ।
गिरियांडोब–(वि०) टखना डूबे जितना (पानी) । टखने तक ।
गिरियो–(न०) एडी के ऊपर बाहर निकली हुई गाँठ जैसी हड्डी । गुल्फ ।
गिरिराज–(न०) गोवर्धन पर्वत ।
गिरिराज धरण(न०) श्रीकृष्ण ।
गिरिंद–दे० गिरियंद ।
गिरी–(ना०) नारियल के अंदर (जमे हुए पानी) के गूदे का टुकड़ा । चटक ।
गिरै–(ना०)१ ग्रह । २ संकट । ३ आपत्ति ।
गिलगिली–(ना०) गुदगुदी । कांख आदि में किसी के हाथ के स्पर्श से होने वाली सुरसुराहट ।
गिलट–(न०) १ किसी धातु पर सोने चाँदी का चढ़ाया जाने वाला झोल । २ कथीर । कलई ।
गिळणो–(क्रि०) १ निगलना । २ नाश करना । ३ अधिकार में करना ।
गिलम–(न०) १ मोटा गद्दा । २ बड़ा गोल तकिया । ३ कालीन ।
गिला–(ना०) १ निंदा । गिला । बदनामी । २ झगड़ा । टंटा । ३ शिकायत । उलहना ।
गिलानी–(ना०) १ ग्लानि । घृणा । नफरत । सूग । २ शिथिलता । थकावट । ३ खेद । पश्चाताप ।
गिलास–(ना०) पानी पीने का एक जलपात्र । ग्लास ।
गिलो–(न०) १ झगड़ा टंटा । २ निंदा । गिला । ३ गिलोय ।
गिलोवणो–(क्रि०) गीला करना ।
गिंदणो–(क्रि०) १ दुर्गंध देना । २ सड़ांध उत्पन्न होना । ३ निंदा करना । बुराई करना ।
गिंदवो–(न०) तकिया । गिंदुक ।
गिंदियो–(न०) एक बदबूदार घास । २ एक बदबूदार कीड़ा । (वि०) गंदा । मैला ।
गीगली–दे० गीगी ।
गीगलो–दे० गीगो ।
गीगी–(ना०) बच्ची । कीकी ।
गीगो–(न०) बालक । बच्चा । कीको ।
गीजड–दे० गीड ।

गीत-(न०) १ गायन। २ डिंगल साहित्य का एक छंद विधान।
गीतण-(वि०) गीत गाने वाली।
गीतणी-दे० गीतण।
गीत भेदा-(वि०) १ काव्य (डिंगल) के भेदों को जानने वाला। २ गायन तथा राग रागिनियों का जानकार।
गीता-(ना०) १ एक विश्वविख्यात धर्म पुस्तक। श्रीमद्भगवद्गीता। २ कितनेक धार्मिक पद्यग्रंथों के रखे हुए नाम। जैसे-रामगीता। शिवगीता आदि।
गीताजी-(ना०) श्रीमद्भगवद्गीता।
गीतेरण-दे० गीतण।
गीदड-(न०) सियार। (वि०) डरपोक।
गीध-(न०) गिद्ध।
गीधण-दे० गीधाणी।
गीधाण-(न०) गिद्ध समूह।
गीधाणी-(ना०) गिद्धनी।
गीरबो-दे० गारबो।
गीरवाण-(न०) गीर्वाण। देवता।
गीरवाणी-(ना०) १ सरस्वती। २ दत्ती। ३ संस्कृत भाषा। गीर्वाणी। ४ वेद वाणी।
गीलो-(वि०) १ गीला। भीगा हुआ। तर। २ जो गाढा न हो। पतला। ढीला। ३ सुस्त। ढीला।
गीगणी-(ना०) पीला आवाज वाली एक चिड़िया।
गीड-(न०) आँख का मैल। चीपड।
गीडोळा-(न०) १ वर्षा ऋतु में पैदा होने वाला काले रंग का एक कीड़ा। (वि०) १ मैला। कुचेला। गंदा। २ आलसी। अकर्मण्य।
गीदड-(ना०) १ शेखावाटी का होली का नृत्योत्सव। २ राग। ३ गेहर।
गीदवो-(न०) तकिया।
गीदोळो-(न०) एक मिठाई।
गुआड-दे० गवाड।
गुआडी-दे० गवाडी।
गुआर-दे० गवार।
गुआरतरी-(ना०)१ ग्वारफली। २ बीज निकली हुई ग्वारफली का भूसा।
गुआरपाठो-(ना०) १ ग्वारपाठा। घीकुआर।
गुआरफळी-(ना०) ग्वार की फली।
गुआळ-(न०) ग्वाला।
गुआळियो-(न०) ग्वाला।
गुगाळो-(न०) ग्वाला।
गुआजणी-(ना०) पलक पर होने वाली फुंसी। गुहाजनी।
गुचळकियो-दे० गळचियो।
गुचळको-(न०) १ पानी में गोता खाने की क्रिया। डूबने का भाव। डुबकी। २ अधिक भोजन करने से डकार के साथ आने वाला अन्नांश।
गुचळी-(ना०) कोई बात कह कर उससे फिर जाने का भाव, मुकरने का भाव मुकरनी।
गुजर-(न०) १ गुजरान। निर्वाह। २ निकाल। निकास। ३ प्रवेश।
गुजरणो-(क्रि०)१ बीतना। व्यतीत होना। २ किसी जगह से आना या जाना। ३ निभना। निभाव होना। निर्वाह होना। ४ मरना। फौत होना।
गुजरान-(न०) गुजरान। निवाह।
गुजरात-(न०) राजस्थान के दक्षिण में अरब समुद्र के किनारे आया हुआ भारत का एक प्रांत। गुजर देश।
गुजरातण-(ना०) १ गुजरात की स्त्री। २ गुजरात की तंबाकू। ३ तमाखू।
गुजराती-(न०)१ गुजरात का रहन वाला। गुजरात का निवासी। २ मूंझारो (निमोनिया रोग)। (ना०) गुजरात की भाषा। गुजराती। (वि०) गुजरात का। गुजरात संबंधी।

गुजारणो-(क्रि०) १ गुजारना। बिताना। २ निगमन करना। ३ पश करना। दाद मांगना।
गुजारिश-(ना०) निवेदन।
गुजारो-(न०) निर्वाह। गुजर। गुजरान।
गुज्ज-(वि०) गुह्य।
गुटकी-(ना०) १ जन्मघुट्टी। २ पानी आदि प्रवाही की घूट।
गुटको-(न०) १ पानी की घूट। २ छोट आकार की मोटी पुस्तक। ३ बीच मे सिले हुये पत्रों की हस्तलिखित पुस्तक।
गुठली-(ना०) ऐसे फल का बीज, जिसम एक ही कडा बीज होता है। अष्टि। गुठली।
गुड-(न०) १ हाथी का कवच। २ कवच। ३ गुड। गुळ।
गुडकणो-(क्रि०) १ गिरना। २ चलना। ३ लुढकना। लुडकना। ४ मरना।
गुडवो-(न०) १ लुढकने की क्रिया। २ धक्का। ३ बात को आगे की चर्चा के लिये मुल्तवी करने की क्रिया। ४ किसी बात की चर्चा या टटे झगडे के निपटान के लिए नियत किये गय समय को आगे बढाना।
गुडणो-(क्रि०) १ लुढकना। २ गिरना गिर पडना। ३ मरना। ४ पाखर (कवच) पहिनना।
गुड पाखर-(वि०) कवचधारी। (न०) १ कवच। २ हाथी या घोडे का कवच।
गुडळ-(न०) १ अस्थियुक्त पकाया हुआ मास। २ घुटना।
गुडळणो-(क्रि०) पानी का मैला होना।
गुडळो-(वि०) १ मैला। गँदला। २ गाढ़ा। ३ घना।
गुडाणो-दे० गुडावणो।
गुडाळियाँ-(क्रि० वि०) घुटनों के द्वारा (चलना)।
गुडावणो-(क्रि०) १ गिराना। २ लुढकाना।
गुडियो-(वि०) कवच धारण किया हुआ। (हाथी)। पाखरित।
गुडी-(ना०) १ पतग। २ ध्वजा। धजा। ३ छोटी धजा। ३ वदनमाला। बदनवार। वदणमाळा। ५ उत्सव। ६ गुलाल। ७ चग। डफ। ८ कागज की बनी चिडिया। ९ रहस्य। १० गाँठ। ११ कपोल। गाल। १२ कवच।
गुडी (न०) १ ऊट। २ कवच। ३ एक गाली।
गुडी उछळणो-(मुहा०) १ उत्सव होना। २ पतग उडना।
गुडीजणो-(क्रि०) १ आना। २ जाना। (दोनो अर्थ लुच्छकार म)
गुडी पडणो-(मुहा०) १ गाँठ पडना। २ मनोमालिन्य होना। ३ शत्रुता होना।
गुडी-पडवो-(न०) चत्र शुक्ल प्रतिपदा।
गुडी मेळो-(न०) पतगोत्सव। पतग उडाने और काटने की स्पर्धा का उत्सव।
गुढियो-(न०) १ किसी अक की एक से दस तक के गुणनफलो की क्रमागत सारिणी। पहाडा। २ छोटा घड़ा।
गुढो-(न०) रक्षास्थान।
गुण-(न०)१ जाति स्वभाव। २ लक्षण। ३ धम। ४ निपुणता। चतुराई। ५ ज्ञान। ६ विद्या। ७ कीर्ति। ८ उपकार। अहसान। ९ प्रभाव। असर। १० लाभ। ११ प्रकृति के सत्व, रज और तम ये तीन गुण। १२ कला। १३ कारण। १४ काव्य। १५ स्तुति काव्य। विरद काव्य। १६ डिंगल के प्रशस्ति काव्यो की एक सज्ञा। १७ डिंगल का भक्ति काव्य। १८ सुमिरन। १९ विशेषता। २० तीन की सख्या।

(ना०) १ रस्सी । २ धनुष की डोरी। प्रत्यचा ।

गुण-अतीत-(न०) गुणातीत । निगुण परमेश्वर । परब्रह्म ।

गुण-आगम-(न०)१ परब्रह्म महिमा । २ भक्त ईसरदास बारहठ द्वारा रचित एक भक्ति ग्रन्थ । (गुण आपण, गुण निंदा स्तुति इत्यादि इनके रचे हुए गुण सज्ञक आठ ग्रन्थ प्राप्त है जो इनके अन्य काव्य ग्रन्थो के अतिरिक्त हैं) ।

गुणकारी-(वि०) लाभकारी ।

गुण गरवो-(वि०)गम्भीर । धीर । शात । २ गुणो मे गरुआ । धीर । गुणी । ३ गौरवशाली ।

गुणगान-(न०) स्तुति । प्रशसा ।

गुणग्राम-(न०) गुण समूह ।

गुण ग्राहग-(न०) १ गुणो का ग्राहक । २ काव्यरसिक ।

गुणचाळी-(वि०) तीस और नौ । उनचालीस । उनतालीस । (न०) तीस और नौ की सख्या ३६ ।

गुणचाळीस-दे० गुणचाळी ।

गुणचास-(वि०) चालीस और नौ । उनचास । उनपचास । गुणपचास । (न०) चालीस और नौ की सख्या ४६ ।

गुणचोर-(वि०) १ कृतघ्न । २ खल । दुष्ट ।

गुणणी-(ना०) पाठशाला मे पढ़े हुए और पढाए जाने वाले पाठो(पट्टी पहाड़ आदि) की विद्यार्थियो द्वारा सामूहिक रूप से की जानेवाली आवृत्ति । गणना । गणना वृत्ति ।

गुणणो-(क्रि०) गुणा करना । दे० गणणो तथा गिणणो ।

गुणताळीस-दे० गुणचाळीस ।

गुणती-दे० गुणतीस ।

गुणतीस-(वि०) बीस और नौ । उनतीस । (न०) उनतीस की सख्या । २६

गुणपचा-दे० गुणचास ।

गुणपचास-दे० गुणचास ।

गुण-पाड-(न०) आभार । उपकार ।

गुण-बाहिरो-(वि०) १ गुणहीन । २ प्रभावहीन । महिमा रहित । ३ अवगुणी । दोषी । ४ खोटो । खोटा ।

गुणमोती-(न०) बढिया और बडा मोती ।

गुणाव-(न०)१ स्तुति । प्रार्थना । २ भक्ति । ३ गुणानुवाद । गुणावली । गुणराशि । ४ प्रशसा ।

गुणवत्ता-(ना०) १ गुणयुक्तता । २ उत्तमता । श्रेष्ठता ।

गुणवत-दे० गुणवान ।

गुणवती-(वि०) गुणवाली । सुलक्षणा । गुणशालिनी ।

गुणवाचक-(वि०)१ जो गुण को बतलावे । २ विशेषण । (व्या०)३ प्रशसक ।

गुणवान-(वि०) १ गुणवत । २ विद्वान ।

गुण-वृद्धिविधान-दे० वर्ण वाधक्य विधान।

गुणसठ-(वि०) १ पचास और नौ । (न०) पचास और नौ की सख्या ५६ । उनसठ ।

गुणसाठ-दे० गुणसठ ।

गुणहीण-(वि०)१ गुणहीन । गुणरहित । २ उपकार को नही मानने वाला । कृतघ्न ।

गुणतर-(वि०) साठ और नौ । (न०) साठ और नौ की सख्या ६६ । उनहत्तर ।

गुणा-(न०) १ एक सख्या को दूसरी सख्या से उतनी ही बार बढाने की अकगणित की एक प्रक्रिया । २ बार । बेर ।

गुणाकार-(न०) गुणा । गुणन । (वि०) गुण करने वाला । लाभदायक ।

गुणानुवाद-(न०) प्रशसा । स्तुति ।

गुणावळी-(ना०) १ यशोगान । गुणगान । २ माला ।

गुणियण-(न०) १ गुणीजन । गुणवान लोग । २ पडित जन । ३ गवया । ४ कवि । ५ यशगायक ।

गुजारणो-*(क्रि०)* १ गुजारना। बिताना। २ निगमन करना। ३ पेश करना। दाद मांगना।

गुजारिश-*(ना०)* निवेदन।

गुजारो-*(न०)* निर्वाह। गुजर। गुजरान।

गुज्ज-*(वि०)* गुह्य।

गुटकी-*(ना०)* १ जन्मघुट्टी। २ पानी आदि प्रवाही की घूंट।

गुटको-*(न०)* १ पानी की घूंट। २ छोटे आकार की मोटी पुस्तक। ३ बीच से सिले हुये पत्रों की हस्तलिखित पुस्तक।

गुठली-*(ना०)* ऐसे फल का बीज, जिसमें एक ही बड़ा बीज होता है। अष्टि। गुठ्ली।

गुड-*(न०)* १ हाथी का कवच। २ कवच। ३ गुड़। गुळ।

गुडकणो-*(क्रि०)* १ गिरना। २ चलना। ३ लुढकना। लुडकना। ४ मरना।

गुडको-*(न०)* १ लुढकने की क्रिया। २ धक्का। ३ बात को आगे की चर्चा के लिये मुल्तवी करने की क्रिया। ४ किसी बात की चर्चा या टंटे झगडे के निपटाने के लिए नियत किये गये समय को आगे बढाना।

गुडणो-*(क्रि०)* १ लुढकना। २ गिरना गिर पडना। ३ मरना। ४ पाखर (कवच) पहिनना।

गुड पाखर-*(वि०)* कवचधारी। *(न०)* १ कवच। २ हाथी या घोडे का कवच।

गुडळ-*(न०)* १ अस्थियुक्त पकाया हुआ मांस। २ घुटना।

गुडळणो-*(क्रि०)* पानी का मैला होना।

गुडळो-*(वि०)* १ मैला। गँदला। २ गाढ़ा। ३ घना।

गुडाणो-*दे०* गुडावणो।

गुडाळिया-*(क्रि० वि०)* घुटनों के द्वारा (चलना)।

गुडावणो-*(क्रि०)* १ गिराना। २ लुढ़काना।

गुडियो-*(वि०)* कवच धारण किया हुआ। (हाथी)। पाखरित।

गुडी-*(ना०)* १ पतंग। २ ध्वजा। धजा। ३ छोटी धजा। ३ वन्दनमाला। वन्दनवार। वदणमाळा। ५ उत्सव। ६ गुलाल। ७ चंग। डफ। ८ बाज की बनी चिड़िया। ९ रहस्य। १० गाँठ। ११ कपाल। गाल। १२ कवच।

गुडी *(न०)* १ ऊन। २ कवच। ३ एक गाली।

गुडी उछळणो-*(मुहा०)* १ उत्सव होना। २ पतंग उडना।

गुडीजणो-*(क्रि०)* १ आना। २ जाना। (दोनों अर्थ तुच्छकार में)

गुडी पडणो-*(मुहा०)* १ गाँठ पडना। २ मनोमालिन्य होना। ३ शत्रुता होना।

गुडी-पडवो-*(न०)* चैत्र शुक्ल प्रतिपदा।

गुडी मेळो-*(न०)* पतंगोत्सव। पतंग उड़ाने और काटने की स्पर्धा का उत्सव।

गुढियो-*(न०)* १ किसी अंक की एक से दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सारिणी। पहाड़ा। २ छोटा घड़ा।

गुढो-*(न०)* रक्षास्थान।

गुण-*(न०)*१ जाति स्वभाव। २ लक्षण। ३ धर्म। ४ निपुणता। चतुराई। ५ ज्ञान। ६ विद्या। ७ कीर्ति। ८ उपकार। अहसान। ९ प्रभाव। असर। १० लाभ। ११ प्रकृति के सत्व रज और तम ये तीन गुण। १२ कला। १३ कारण। १४ काव्य। १५ स्तुति काव्य। विरद काव्य। १६ डिंगल के प्रशस्ति काव्यों की एक संज्ञा। १७ डिंगल का भक्ति काव्य। १८ सुमिरन। १९ विशेषता। २० तीन की संख्या।

(ना०) १ रस्सी। २ धनुष की डोरी। प्रत्यंचा।

गुण अतीन-(न०) गुणातीत। निर्गुण परमेश्वर। परब्रह्म।

गुण आगम-(न०)१ परब्रह्म महिमा। २ भक्त ईसरदास-बारहठ द्वारा रचित एक भक्ति ग्रंथ। (गुण आपण, गुण निंदा स्तुति इत्यादि इनके रचे हुए 'गुण' संज्ञक आठ ग्रंथ प्राप्त हैं जो इनके अन्य काव्य ग्रंथों के अतिरिक्त हैं)।

गुणकारी-(वि०) लाभकारी।

गुण गरवा-(वि०)गम्भीर। धीर। शांत। २ गुणों में गरवा। धीर। गुणी। ३ गौरवशाली।

गुणगान-(न०) स्तुति। प्रशंसा।

गुणग्राम-(न०) गुण समूह।

गुण ग्राहग-(न०) १ गुणों का ग्राहक। २ काव्यरसिक।

गुणचाळी-(वि०) तीस और नौ। उनचालीस। उनतालीस। (न०) तीस और नौ की संख्या ३९।

गुणचाळीस-दे० गुणचाळी।

गुणचास-(वि०) चालीस और नौ। उनचास। उनपचास। गुणपचास। (न०) चालीस और नौ की संख्या ४९।

गुणचोर-(वि०) १ कृतघ्न। २ खल। दुष्ट।

गुणणी-(ना०) पाठशाला में पढ़े हुए और पढ़ाए जाने वाले पाठों (पहाड़ा आदि) का विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक रूप से [illegible] जानेवाला आवृत्ति। [illegible]। [illegible] वृत्ति।

गुणणो-(क्रि०) गुणा करना। [illegible] तथा निराना।

गुणताळीस-दे० गुणताळीस।

गुणता-दे० गुणगान।

गुणतीस-(वि०) बीस और नौ। उनतीस। (न०) उनतीस की संख्या। २९

गुणपचा-दे० गुणचास।

गुणपचास-दे० गुणचास।

गुण-पाड-(न०) आभार। उपकार।

गुण बाहिरो-(वि०) १ गुणहीन। २ प्रभावहीन। महिमा रहित। ३ अवगुणी। दोषी। ४ खोटो। खोटा।

गुणमोती-(न०) बढ़िया और बड़ा मोती।

गुणव-(न०)१ स्तुति। प्रार्थना। २ भक्ति। ३ गुणानुवाद। गुणावली। गुणराशि। ४ प्रशंसा।

गुणवत्ता-(ना०) १ गुणयुक्तता। २ उत्तमता। श्रेष्ठता।

गुणवत-दे० गुणवान।

गुणवती-(वि०) गुणवाली। सुलक्षणा। गुणशालिनी।

गुणवाचक-(वि०)१ जो गुण को बतलावे। २ विशेषण। (व्या०)३ प्रशंसक।

गुणवान-(वि०) १ गुणवंत। २ विद्वान।

गुण-वृद्धिविधान-दे० वरा वाक्य विधान।

गुणसठ-(वि०) १ पचास और नौ। (न०) पचास और नौ की संख्या '५९। उनसठ।

गुणसाठ-दे० गुणसठ।

गुणहीण-(वि०)१ [illegible]। [illegible]। २ उपकार को नहीं मानने वाला। कृतघ्न।

[illegible]

गुणियासी–(वि०) अस्सी और नौ । उनासी । (न०) उनासी की संख्या '७९' ।

गुणियो–(न०) बढ़ई आदि शिल्पियों का एक उपकरण जिससे किसी वस्तु के कोण की सीध देखी जाती है । गुनिया गज । कोण गज । कोण माप ।

गुणी–(न०) १ कवि । २. कला कोविद । ३ विद्वान । पंडित । ४ गवया । ५ जंतर मंतर जानने वाला । ६ रस्सी । (वि०) १ गुणवान । सद्गुणी । २ अनुभवी । ३ चतुर । होशियार । दक्ष ।

गुणीजण–दे० गुणियण ।

गुणीजणो–(क्रि०) १ गिनती में आना । २ हिसाब में लिया जाना । ३ बड़े आदमियों की गिनती में आना । ४ धनवानों में गिना जाना । ५ शिष्ट पुरुषों में गिना जाना ।

गुदड़ी–दे० गूदड़ी ।

गुदरणो–(क्रि०) १ निभना । गुजरान करना । निभाव होना । २ परवरिश पाना ।

गुदराण–(न०) निर्वाह । गुजरान ।

गुदरावणो–(क्रि०) १ अर्ज करना । गुजारिश करना । (१) अर्ज पहुंचाना । ३ पेश करना । गुजारना ।

गुदाळक–(वि०) मांसाहारी ।

गुद्दी–(ना०) गरदन का पिछला भाग ।

गुधळक–दे० गुधळकियो ।

गुधळकियो–(वि०) गोधूलिक । गोधूलि समय का । संध्या समय का ।

गुधळकियो लगन–(न०) गोधूलिक समय का पाणिग्रहण लग्न । संध्या समय का विवाह मुहूर्त ।

गुनैगार–(वि०) गुनहगार । अपराधी । कसूरवार ।

गुनगारी–(ना०) १ दंड । जुरमानो । जरीबानो । २ अपराध । गुनहगारी । कसूर ।

गुनो–(न०) गुनाह । जुर्म । अपराध । कसूर ।

गुपचुप–(अव्य०) चुपचाप ।

गुपती–(ना०) एक शस्त्र ।

गुफा–(ना०)गुफा । कंदरा । खोह ।

गुम–(वि०) १ लापता । गायब । २ खोया हुआ । ३ अप्रसिद्ध ।

गुमकरणो–(मुहा०) १ छिपा देना । २ उठा ले जाना । उडा देना ।

गुमधाम–दे० गुमसुम ।

गुमणो–(क्रि०) खोना । खोजाना ।

गुमनाम–(वि०) १ अज्ञात । २ जिस (पत्र) में भेजने वाले का नाम न हो ।

गुमर–(न०) १ अभिमान । मिजाज । २ युद्ध ।

गुमसुम–(अव्य०) १ स्तब्ध । २ मंद । उदास । ३ चुपचाप ।

गुमहोणो–(मुहा०) १ खोजाना । २ छिप जाना ।

गुमाणो–दे० गुमावणो ।

गुमान–(न०) गर्व । घमंड ।

गुमानण–(ना०) १ गुमानवाली । गर्वीली । २ लोक गीतों की एक नायिका ।

गुमानी–(वि०) १ गर्वीला । अभिमानी । गुमानवाला । २ स्वाभिमानी ।

गुमावणो–(क्रि०) १ गुमाना । खोना । २ नष्ट करना । ३ गायब करना । उडा लेना ।

गुमासतो–(न०) १ व्यापारी की ओर से खरीद फरोख्त करने वाला मनुष्य । गुमाश्ता । एजेण्ट । २ दुकानदार का नौकर । ३ मुनीम ।

गुमेज–(न०) १ अभिमान । गर्व । २ हैसियत ।

गुर–(न०)१ गणित की एक सहज प्रणाली । ऊपर भाग । ऊपरवाड़ो । २ रहस्य । ३ गुड़ ।

गुरज-(न०) एक शस्त्र। गदा। मुद्गर। गुज।
गुरजदार-(न०) गदाधारी। गुजबरदार।
गुरजबरदार-दे० गुरजदार।
गुरड-(न०) गरुड़। पक्षीराज। विष्णु का वाहन।
गुरडधजगामी-(न०) विष्णु।
गुरडो-(न०) १ भांभी जाति का गुरु। चमारों का पुरोहित। २ गुरु की अपमान सूचक सज्ञा।
गुर-सदात।रा-(वि०) दान दाताओं का गुरु। महादानी।
गुरड-(न०) अंग्रेज।
गुराणी-(ना०) १ गुरुपत्नी। गुरुआनी। २ पुरोहितानी। ३ स्त्री शिक्षक। शिक्षिका। ४ रसोई बनाने का धंधा करने वाली ब्राह्मणी। बामणी। रसोई दारणी।
गुराब-(ना०) एक प्रकार की तोप।
गुरा-(न०) १ देशी पाठशाला का शिक्षक। मारजा। २ जन जती। जती।
गुरामा-दे० गुरा।
गुरु-(वि०) १ बड़ा। २ भारी। वजनी। ३ श्रेष्ठ। (न०) १ आचार्य। शिक्षक। २ किसी धर्म व मत का उपदेष्टा। आचार्य। ३ देवताओं के गुरु बृहस्पति। ४ एक नक्षत्र। ५ भांभी जाति (चमारों) का गुरु। ६ सात वारों म से एक वार। बृहस्पतिवार। ७ दो मात्राओं वाला दीर्घाक्षर।
गुरकूची-(ना०) १ गुरु के द्वारा प्राप्त मार्ग। २ रहस्य। भेद। ३ किसी भी परिस्थिति म कारगर होने वाली युक्ति साधन उपाय आदि। ४ अनेक तालो म लगने वाली चाबी। ५ वह दूसरी चाबी जिसके लगाये बिना ताला नहीं खुलता। ६ गुप्त चाबी। ७ सरल उपाय। ८ परिश्रम के बाद प्राप्त सफलता का सरल उपाय।
गुरगम-(ना०) १ गुरु के द्वारा बतलाया हुआ ज्ञान या मार्ग। २ गुरु द्वारा समझा हुआ रहस्य। ३ गुरुज्ञान।
गुरुजन-(न०) माता, पिता, शिक्षक इत्यादि बड़ील वर्ग।
गुरुद्वारो-(न०) १ गुरु का निवास स्थान। २ वह सम्प्रदाय जिसमे गुरुदीक्षा ली हो। ३ सिक्खों का धर्म स्थान।
गुरभाई-(न०) एक ही गुरु के शिष्य होने के नाते अन्य शिष्य की भाई सज्ञा। अपने गुरु का दूसरा शिष्य। गुरुभाई।
गुरुमुखी-(ना०) पजाब की एक लिपि एव भाषा।
गुरुवार-(न०) बुधवार के बाद का दिन। बृहस्पतिवार।
गुजर-(न०) १ गुजरात। २ गूजर जाति। (वि०) गुजरात का रहने वाला।
गुजरी-(ना०) १ गुजराती भाषा। २ गुजरात की स्त्री। गुजरातिन। ३ ग्वालिन। रबारण। गूजरी।
गुल-(न०) १ फूल। २ चिलम का कीट। ३ चिलम म जली हुई तम्बाकू। ४ दिये की बत्ती का जल कर फूला हुआ सिरा। ५ दीपक के बुझने या बुझाने का भाव। बुझाना। ६ रोगोपचार। डाम। ७ पशुओं के पुट्ठे पर गरम शलाका से बनाया हुआ चिह्न। दाग।
गुळ-(न०) गुड़।
गुल करणो-(मुहा०) दीये का बुझाना।
गुल क्यारी-(ना०) १ अनेक भांति के पुष्प। २ पुष्पों की क्यारी। गुलक्यारी।
गुळगचियो-(न०) १ छोटा गोल पत्थर। २ एक कँटीले पौधे का गोल बीज।
गुलगुलो-(न०) मीठा पकौड़ा। गुड़ का बड़ा।

गुळचियो-(न०) १ तरना नही जानने के कारण डूबने की क्रिया । निराश्रय होकर डूबने की हालत । २ डुबकी । गोता ।

गुलजार-(वि०) १ रौनक वाला । शोभा वाला । २ हराभरा । ३ पुष्पावृत । (न०) वाटिका । बगीचा ।

गुळराव-दे० गळवाणी ।

गुललजा-(ना०) १ कामिनी । सुंदरी । सदा बनी ठनी रहने वाली । छैली । २ सुन्दर रमणी । ३ एक लोक गीत ।

गुललजो-(वि०) सदा बना ठना रहने वाला । छैला । शौकीन । २ रसिक । ३ अति सुन्दर । (न०) लोकगीतो का एक नायक ।

गुळ लपेटी-(वि०) १ गुड से लपेटी हुई । ऊपर से मीठी और अदर से कड़वी । २ कपट भरी । अतर मे कपट और बाहर प्रीतियुक्त (बात) ।

गुळलाग-(ना०) जन्म, विवाह आदि शुभ अवसरो पर गुड के रूप मे लिया जाने वाला एक जागीरी लाग ।

गुळवाड-(न०) १ ईख की खेती । २ ईख का वन । ३ ईख । गन्ना ।

गुलहजा-(वि०) १ हँस के समान गति वाली । २ हस के समान कोमलागी । ३ सुदर । ४ रसिक ।

गुल होणो-(मुहा०) १ दीये का बुझना । २ मरना ।

गुलाब-(न०) १ एक पुष्प । गुलाब । २ गुलाब का पौधा ।

गुलाबजळ-(न०) गुलाब के फूलों का चुआया हुआ अर्क । गुलाब जल ।

गुलाब जांबु-(न०) एक मिठाई । गुलाब जामुन ।

गुलाबी-(वि०) गुलाब के रंग का । गुलाब सबंधी ।

गुलाम-(न०) १ खरीदा हुआ दास । २ परवश मनुष्य ।

गुलामी-(ना०) १ दासता । गुलामपना । २ बहुत हलकी तावेदरी । ३ पराधीनता ।

गुलाल-(ना०) उत्सव के समय लोगो पर डाली जाने वाली लाल रग की एक बुकनी ।

गुलाच-(ना०) १ जमीन पर उलटा गिर पडना । लुढ़कन । २ कुलाँच । छलांग ।

गुळी(ना०) नील का रग । नील । सालबुज ।

गुळचो-(न०) १ डुबकी । गुलांच । २ कुलांच ।

गुळटो-(न०) जमीन पर उलटा गिर पड़ने की क्रिया । लुढकन ।

गुवाड-दे० गवाड ।

गुवाडी-दे० गवाडी ।

गुवार-दे० गुआर ।

गुवारफळी-दे० गुआरफळी ।

गुवाळ-दे० गुआळ ।

गुवाळियो-दे० गुआळियो ।

गुसट-(ना०) १ छिपी बातचीत । काना फूसी । २ परामर्श । सलाह । गोष्ठी । ३ बातचीत ।

गुसळ-(न०) स्नान । गुस्ल ।

गुसळखानो-(न०) स्नानघर ।

गुसाई-(न०) गोस्वामी । गोसाँई ।

गुस्ताखी-(ना०) १ उद्दडता । धृष्टता । २ अशिष्टता । ३ छेड़ छाड ।

गुस्सेल-(वि०) क्रोधी ।

गुस्सो-(न०) क्रोध । गुस्सा ।

गुहराज-(न०) शृगवेरपुर निवासी रामभक्त निषादराज गुह ।

गुहिर-(वि०) गभीर । गहरा ।

गुहिर दुरग-(न०) जसलमेर के किले का नाम ।

गुहो-दे० गूहो ।

गुंजार-(ना०) १ गूंज । गुंजन । २ अव्यक्त मधुर ध्वनि । कलकल ध्वनि । ३ भौंरो की आवाज । ४ भनभनाहट । गूंज । ५ साहस । ६ शक्ति ।

गु जारव-*(ना०)* १ भौरा का शब्द । भ्रमर ध्वनि । गु जार । २ भनभनाहट ।

गु जास-*(ना०)* १ गु जाइश । सुभीता । २ खटाव । सामर्थ्य । हैसियत । ३ खाली जगह । ४ अवकाश । समाई ।

गु जाहळ-*(न०)* गु जाफल । चिरमटी । घु घची । चिरमी

गु डो-*(वि०)* बदमाश । दुराचारी । कुमारगी । *(न०)* दुराचारी यक्ति ।

गु भारियो-दे० गु भारो ।

गु भारो-*(न०)* १ गुफा । कदरा । २ भूमिगृह । तलघर । तहखाना ।

गू-*(न०)* मल । विष्टा । भिस्टो ।

गूगीडो-दे० गोगीडो या जू जळो ।

गूगरी-दे० गूघरी ।

गूगळ-*(न०)* एक पहाडी वृक्ष । २ गूगल का सूखा रस । गूगल का सुगधि वाला गोद । गुग्गुल ।

गूगळी-*(ना०)* छोटी जाति का गूगल का पेड । *(वि०)* १ मैली । २ धु धला । ३ गाढी । ४ मटमली ।

गूगळो-*(वि०)* १ धु धला । २ मैला । ३ मटमैला ।

गूघरमाळ-दे० घूघरमाळ ।

गूघरी-*(ना०)* १ धातु की बनी गुरिया जो हिलने पर बजती है । छोटा घु घरू । २ उबाले हुए गहू । ३ अनाज के रूप में लिया जाने वाला लगान । गूघरी लाग ।

गूघरी लाग-*(ना०)* खेत मालिक या मार से खेत जोतने वाले से लिया जाने वाला अनाज के रूप में एक लगान । खेत या कुएँ को किराये के रूप में जोतने वाले से लिया जाने वाला धान्यकर ।

गूघरो-*(न०)* घु घुरू ।

गूघी-*(ना०)* जमा हुआ ऊनी कपडा । नमदा । घुघी । घूघी ।

गूघू-*(न०)* उल्लू । घुग्घू । घुघूराजा ।

गूजर-*(न०)* १ गूजर जाति । २ गूजर जाति का व्यक्ति । घोसी । ३ ग्वाला । *(ना०)* तीसरी पत्नी ।

गूजर-खड-*(न०)* गुजरात ।

गूजरधरा-*(ना०)* गुजरात ।

गूजरवै-*(न०)* गूजरपति । गुजरात का स्वामी ।

गूजरी-*(ना०)* १ गूजर जाति की स्त्री । २ ग्वालिन । ३ स्त्रियो की कलाई में पहिनने का एक गहना ।

गूजी-*(ना०)* १ गरम की हुई छाछ । २ मिला हुआ गेहू और जौ । गोजई ।

गूझ-*(ना०)* गुह्य । रहस्य ।

गूडण-*(ना०)* एक गाली *(वि०)* गिराने वाला ।

गूडळ-*(न०)* १ बल का अडकोश । २ हड्डी में लगा हुआ मास जो चूस करके या दातो से तोडकर खाया जाता है । ३ घुटना । ४ अडकाश ।

गूडळणो-*(क्रि०)* १ छा जाना । आच्छन्न होना । २ गदला होना । ३ धूल से आच्छादित होना ।

गूडळियो-*(वि०)* गँदला ।

गूढ-*(वि०)* १ जिसमें कोई विशेष अभिप्राय छिपा हो । २ जिसका अभिप्राय स [illegible]ना कठिन हो । ३ रहस्यमय । ४ गहन । ५ गुह्य । छिपा हुआ । ६ दुगम । *(न०)* पहेली ।

गूढचर-*(न०)* चोर ।

गूढपद-*(न०)* १ सांप । सप । २ मन । ३ गूढ अर्थ वाला पद ।

गूढा-*(ना०)* पहेली ।

गूण-*(ना०)* १ गूनी । बोरा । बोरी । २ बल या ऊट पर अनाज भरने और लादने का दोनो ओर लटकने वाला दोहरा थला । गुरजी । गोन । छाटी ।

गूणती-दे० गूण ।

गूणियो-(न०) १ छोटा कलश । २ दूध दुहने का पात्र । दूणियो । दूहणियो ।
गूणो-(न०) ग्वार मूग माठ आदि के सूखे हुए पौधो की कूटी हुई टहनियाँ पत्तिया आदि का भूसा ।
गूतो-(न०) १ गाय या भैस के प्रसव के बाद पहली वार दोहा हुआ और गरम किया हुआ दूध । २ पहली वार दोहा हुआ दूध ।
गूद-(न०) मांस ।
गूदडती-दे० गूदडी ।
गूदडी-(ना०) चिथडो से बनी हुई बिछाने व ओढने का गुदडी । गोदडी । राली ।
गूदडो-(न०) चिथडो से बना हुआ बिछावन ।
गूमडो-(न०) व्रण । गाँठ । फाडा ।
गू मूतर-(न०) मल मूत्र । मैला ।
गूलरियो-(न०) कुत्ते का बच्चा । पिल्ला । कूकरियो ।
गूहो-(न०) उपस्थकच राशि ।
गू ग-(ना०) १ गू गापन । मूकपन । २ आपे से बाहर होने का भाव । ना समझी । सनक । ३ पागलपन । उन्मत्तता ।
गू गला-(वि०) १ गू गा । मूक । (न०) १ एक बरसाती कीडा । २ मस्त ऊंट ।
गू गी-(ना०) ठड तथा बरसात मे ओढा जाने वाला जमाई हुई सफेद ऊन का एक वस्त्र । (वि०) १ जिसमे बोलने की शक्ति न हो । मूक । गू गी । २ आपे से वाहर । नासमझ (स्त्री) । ३ पागल (स्त्री) ।
[ू]गा-(न०) नाक का सूखा मैल । सूखा रेंट । (वि०) १ जिसमे बोलने की शक्ति न हो । मूक । गू गा । २ आप से बाहर । ना समझ । ३ पागल । उन्मत्त ।
[ू]घट-(न०) १ घू घट । मुखावरण । २ आवरण । ३ लज्जा ।
गू घटो-दे० गू घट ।
गू च-(ना०) १ गुत्थी । २ उलझन । कठिनाई ।
गू चवाडो-(न०) १ उलझन । गुत्थी । २ असमजस । दुविधा । ३ कठिनाई ।
गू छळी-(ना०)१ लच्छी । अटी । २ उलझन । मुश्किली । ३ डोरे आदि मे पडने वाली गाँठ, गू ची । उलझन ।
गू छळो-(न०) बडी गू छळी ।
गू ज-(ना०) १ गु जार । २ प्रतिध्वनि । ३ कान की बालिया मे लपेटा हुआ पतला तार ४ गुप्त मत्रणा ।
गू जणो-(क्रि०) १ गुर्राना । २ गरजना । ३ प्रतिध्वनि होना । गू जना । ४ भौंरे का गु जार करना । ५ जोर से बोलना ।
गू जार-(न०) कोठार ।
गू जियो-(न०) जेब । खीसो ।
गू जी-(ना०) घर वालो से छिपा कर रखा हुआ धन ।
गू जो-(न०) १ जेब । २ एक मिठाई ।
गू थणो-(क्रि०) १ गू थना । २ पिरोना । ३ रचना करना । ग्रथित करना ।
गू थाणो-दे० गू थावणो ।
गू थावणो-(क्रि०) गुथवाना ।
गू द-(ना०) १ गोंद । २ मास । ३ मरा हुआ पशु ।
गू दणो-(क्रि०) गू धना । माडना ।
गू दपाक-(न०) गोंद से बनने वाली एक मिठाई ।
गू दर-(क्रि० वि०) निकट । पास । (प्राय गाव के)
गू दवटो-(न०) एक मिठाई ।
गू दरो-(न०) १ गाँव के फलसे की बाहर का मैदान । २ कनिष्ठिका के नीचे से कलाई तक हथेली का भाग ।
गू दियो-(न०) १ छोटे लिसोडे वाली गू दी का फल । लिसोडा । २ गोदपाक ।

गू दी–(ना०) एक वृक्ष जिसके फल लगभग चने जितने बडे, मीठे और लसदार होते है। गोदी। छोटे लिसोडा वाला वृक्ष। छोटा लसोडा। लभेरा।
गू दो–(न०) १ बडे लसोडा का वृक्ष। २ बडा लसोडा फल। गूदो।
गू वडो–(न०) दे० गूमडो।
गृह–(न०) घर। मकान।
गृहस्थ–(न०) १ ब्रह्मचर्य के बाद विवाह करके घर मे रहने वाला पुरुष। २ घर ससार। ३ गृहराज्य। ४ उच्च कुलो त्पन्न पुरुष। ५ कुटुम्ब। परिवार।
गृहस्थाश्रम–(न०) भारतीय जीवन के चार आश्रमो मे से दूसरा आश्रम। ब्रह्मचर्य के बाद का आश्रम।
गृहस्थी–(ना०) १ घर की व्यवस्था। २ गृहस्थ का काम काज। ३ कुटुम्ब। परिवार।
गृहिणी–(ना०) १ गृहस्थ की स्त्री। २ गृहस्वामिनी। घर मालकिन। ३ पत्नी।
गघरो–(न०) १ कच्चा व हरा चना। क्षाप सहित हरा चना। २ चने का पौधा। ३ चने की फसल। ४ ज्वार की बाल।
गडिया–(न०) १ मुडे हुए हत्थेवाला मोटा डडा। २ छडी।
गेडी–(ना०) १ छडी। २ लाठी। ३ मुडे हुए हत्थे वाली छडी।
गेडा–(न०) १ बैलगाडी आदि वाहन द्वारा माल ले जाने लाने का चक्कर। २ चक्कर। फेरा। परिभ्रमण। ३ माल या सामान को इधर से उधर ले जाने की क्रिया।
गेडी–(ना०) १ स्त्रियो के सिर मे बोर (रखडी) की जडाऊ नली। एक सिरा भूषण। २ सूत, ऊन आदि की गेंडुरी। ३ बैलगाडी के पहिये की धुरी मे लगाया जाने वाला सुराख वाला चमडे का गोल टुकडा।
गेढी डोरो–(न०) स्त्रियो के सिर के बोर (रखडी) के साथ लगने वाली सोने की जडाऊ गावदुम नली और उसके साथ लगाई जाने वाली इधर उधर दो सोने की पतली सकले। (जजीरें)।
गेम–(न०) १ देशद्रोह। २ पाप। दुष्कर्म। ३ शत्रुता।
गेमार–(वि०) १ गवार। असभ्य। २ मूर्ख।
गेमी–(वि०) १ देशद्रोही। २ पापी। दुष्कर्मी।
गेरणियो–(न०) बडी चलनी। चालना।
गरणी–(ना०) चलनी। चालनी।
गेरणो–(न०) बडी चलनी। चालना। (क्रि०) गिराना। डालना। पटकना।
गेरू–(न०) एक लाल मिट्टी।
गेह–(न०) घर। गृह।
गेहणी–(ना०) १ गृहिणी। २ पत्नी।
गेहर–(ना०) १ होलिका उत्सव का एक लोक नृत्य। डडिया गेहर। वासतिक रास क्रीडा। २ चग के साथ गान बजाने और नाचने का एक वासतिक उत्सव। ३ डोलचियो द्वारा एक दूसरे पर पानी डाल कर खेलने का एक वासतिक जल क्रीडा।
गेहरियो–(न०) गेहर खेलने वाला। गेहर मे नाचने वाला व्यक्ति।
गेहू–(न०) एक प्रसिद्ध अनाज। गहू। गोधूम। गदुम।
गेती–(ना०) कुदाली। कोशाळी।
गेद–(ना०) दडी। गेंद।
गै–(न०) १ हाथी। गज। २ आकाश। (ना०) गति। चाल।
गैगमणी–दे० गयगमणी।
गैगहण–(वि०) १ अपने बाहुबल से आकाश को थामने वाला। अत्यन्त

बलशाली। २ हाथियों को पकड़ने या पछाड़ने वाला।

गैगाह्–दे० गजगाह।

गैघट–(न०) १ आनंदोल्लास। २ महोत्सव। ३ भोगविलास। ४ आनन्द के साधनों की उत्पत्ति। सब सम्पन्नता। ५ गैघट (गैघट्ट) नाम का राजस्थानी दूहा साहित्य। ६ गजघंट। हस्तीदल।

गैघटा–(ना०) १ हाथियों की घटा। हाथियों का झुंड। २ हाथियों की सेना। हस्ती सेना।

गैघूमणो–(क्रि०) १ घने बादलों का उमड़ना। घटा का उमड़ना। २ छा जाना। मंडराना।

गैजूह–(न०) हस्ती दल।

गै-डसण–(न०) १ गजदंत। गजदशन। २ गजदशन। सिंह। ३ झाला (सौराष्ट्र) के ठाकुर जसाजी जाडेजा का विरुद। ४ सूअर। (वि०) सिंह के समान बली। वीर।

गैडवर–(न०) १ घटा। घनघटा। २ पश्चिम की ओर से उठने वाले बादलों की घटा। लोरों की घटा।

गण–(न०) आकाश। गगन।

गैणाग–(न०) १ गगन। आकाश। २ गगनाग्नि। ३ हाथी।

गतूल–(न०) १ वातचक्र। बवंडर। २ आकाश में छाई हुई गर्द। ३ आंधी। तूफान। ४ हस्ती सेना। ५ सेना। ६ समूह। ७ पवन।

गदंत–(न०) हाथी दांत।

गैव–(वि०) १ जो सम्मुख न हो। जो अज्ञात हो। परोक्ष। २ जो नहीं देखा जा सके। अदृश्य।

गैवाऊ–(क्रि०वि०) १ गुप्त रीति से। २ अचानक। ३ सामान्य प्रकार से। (वि०) सामान्य।

गैवो–(वि०) १ गुप्त। छिपा हुआ। २ अदृश्य। ३ अज्ञात। ४ पानी (क्रि०वि०) अचानक।

गमर–(न०) हाथी।

गैर–(अव्य०) निषेध, अभाव, गलत इत्यादि अर्थ सूचक एक उपसर्ग। (वि०) १ दूसरा। अन्य। २ अपरिचित। ३ अनुचित।

गर इनसाफ–(न०) अन्याय।

गैर कायदे–(वि०) कायदा विरुद्ध।

गैर चलण (न०) १ जो राज्य से अमान्य हो। जो राज्य द्वारा संचालित न हो जैसे खोटा रुपया। नकली रुपया। २ जो व्यवहार विरुद्ध हो जैसे–खोटी हुंडी जाली हुंडी। ३ गैर चाल। कुमार्ग।

गैर चाल–(न०) कुमार्ग। बदचलनी (वि०) बदचलन।

गर-मुनासिब–(वि०) गैर वाजिबी। अनुचित।

गर रस्तो–(न०) १ बेकायदा। २ खोटा मार्ग। ३ कुरीति।

गर वदळे–दे० गर वल्ले।

गर वल्ले–(अव्य०) १ चिट्ठी पत्री आदि का यथा पते पर नहीं पहुँचना। गैर बदले। गर बदले हो जाने का भाव। २ खो जाने का भाव। गुम हो जाने का भाव।

गर वाजबी–(वि०) १ अनुचित। २ अयोग्य।

गर-हाजर–(वि०) अनुपस्थित। गैर हाजिर।

गैर-हाजरी–(ना०) अनुपस्थिति। गैर हाजिरी।

गल–(ना०) १ पीछा। २ रास्ता। मार्ग। (अव्य०) प्रति। हर। (क्रि०वि०) पीछे।

गैल छोडणो–(मुहा०) १ (किसी से संबंधित) छेड़ी हुई चर्चा को बंद करना। घर रखना। पीछा छोडना। २ पीछा नहीं करना।

गैलापणो-*(न०)* पागलपन ।
गैली-*(वि०)* पगली ।
गैलो-*(न०)* १ मार्ग । रास्ता । २ परम्परा । सिलसिला । *(वि०)* १ पागल । गहलो । २ नासमझ ।
गैवर-*(न०)* १ हाथी । २ श्रेष्ठ हाथी । गजवर ।
गैंडो-*(न०)* भैंसे की तरह का एक जंगली जानवर ।
गो-*(ना०)* १ गाय । गौ । २ इन्द्रिय । ३ वाणी । ४ पृथ्वी । ५ आकाश ।
गोआळ-*(न०)* ग्वाल ।
गोआळिया-दे० गोआळ ।
गोउडो-*(वि०)* गाय का (चमडा) ।
गोउडो साज-*(न०)* गाय का चमडा । गोचर्म ।
गोओ-*(न०)* शीतकाल में मस्ती में आये हुए ऊंट की गलसुई के समान फूल कर मुँह से बाहर निकली हुई जीभ ।
गो करण गहण-*(न०)* पृथ्वी को उत्पन्न व धारण करने वाला परमेश्वर ।
गो करण-*(न०)* १ टोडा (राजस्थान) के पास बनास नदी के तट पर आया हुआ शिव का एक प्रसिद्ध तीर्थ । २ दक्षिण में आया हुआ एक प्रसिद्ध शिव तीर्थ । ३ गाय का कान । ४ खच्चर । ५ सर्प ।
गोकळ-*(न०)* गोकुल । गोकुळ ।
गोकळ आठम-दे० कानजी आठम ।
गोकळिया गुसांई-*(न०)* वल्लभ सम्प्रदाय के गुसांईजी ।
गोकुळ-*(न०)* १ ब्रज में मथुरा के पास का एक गाँव जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अपना बाल्यकाल बिताया था । नंद यशोदा और श्रीकृष्ण का निवास भूमि २ गौओं का समूह । ३ गो वृषभ आदि ।
गोकुळनाथ-*(न०)* श्रीकृष्ण ।
गोकुळवाळ-*(न०)* गोकुलवाला । श्रीकृष्ण ।
गोगुळीनाथ-*(न०)* १ जालोर के इतिहास प्रसिद्ध शासक वीर कान्हड़दे सोनगरा का एक विरद । २ श्रीकृष्ण ।
गोख-*(न०)* १ गवाक्ष । झरोखा । झरोखो । २ कान का बाहरी पर्दा व भाग । ३ आंख और कान के आगू वागू का भाग । ४ कर्ण विवर । ५ कनपटी । कनपटो ।
गोखडो-*(न०)* १ गवाक्ष । वातायन । झरोखा । २ एक प्रकार का ताक जो साल के प्रवेश द्वार (की दोनों ओर दीवाल के आमारों) में बना हुआ होता है ।
गोखरू-*(न०)* १ एक वनस्पति और उसका बीज । २ स्त्रियों के हाथ में पहिनने का एक गहना । ३ पुरुषों के कान में पहिनने का एक गहना । ४ जरतार । (कोरगोटा) का एक प्रकार का फीता ।
गोखो-*(न०)* १ गवाक्ष । गोखडो । २ डिंगल का एक छंद ।
गोगादे-*(न०)* १ एक लोक देवता । २ गोगादे चौहान । ३ राठौड राव वीरम का पुत्र ।
गोगानम-*(ना०)* भादवी सुदी नौम । सर्प पूजा का दिन । नाग नवमी ।
गोगीडो-दे० कूजळो ।
गोगो-*(न०)* १ एक लोक गीत । २ एक लोक देवता । ३ गोगादे चौहान । ४ गोगादे राठौड ।
गोघ-*(न०)* फेन । झाग ।
गोघी-दे० गूघी ।
गोघोख-*(न०)* गौशाला ।
गोचर-*(न०)* १ चरागाह । *(वि०)* इन्द्रिय गम्य ।
गोचरी-*(ना०)* १ भिक्षा । २ भिक्षा वृत्ति । (जैन साधुओं की) । ३ अपने ही घर में की जाने वाली चोरी । ४ नारी से घर वालों से छिपाकर इकट्ठा किया हुआ धन ।

गोजदण-(न०) गायीचन्दन । (ना०) एक प्रकार की गाह । चन्दनगोह ।

गोट-(ना०) १ मगजी । २ चौपड की गोटी । ३ मु भाहट । ४ धुएँ की घटा । ५ धूलि की घटा । गद । ६ आवेग । मन की तरग ।

गोटको-(न०)जिल्द बधी हुई छोटी पुस्तक । गुटका । २ बिना पकाई हुई ईंट ।

गोटाळो-(न०) १ अव्यवस्था । २ पसा के मामले म गोलमाल ।

गोटावाळ-(वि०) कत्त व्य भावना से रहित होकर किया हुआ (काम) । २ फूहडपन । से किया हुआ । ३ जसा तैसा किया हुआ ।

गोटी-(ना०) चौपड की सारी । चौपड या सतरज का मोहरा । २ गाली । टिकिया ।

गोटीजणो-(क्रि०) १ मुँभाना । २ दम घुटना । ३ धुआँ, धूल आदि से भर जाना ।

गोटो-(न०) १ नारियल । २ गोटा किनारी । ३ मुँभाहट । ४ मन की तरग आवेग । ५ घुटन । ६ धुएँ का बादल या घटा ।

गोठ-(ना०)१ मित्रमडली का भोजनोत्सव । दावत । गोठ । २ समूह भोज । ३ गोष्ठी । ४ दावणी । ५ छोटा गाँव ।

गोठ-गूघरी-(ना०) किसी प्रसन्नता या उत्सव क समय किया जाने वाला मित्र मडली का भोजन समारोह । महफिल और दावत । प्रीति भोज ।

गोठण-(ना०) १ साथिन । स्त्रीमित्र । २ सखी । सहेली ।

गोठियो-(न०) १ मित्र । २ बालमित्र ।

गोठी-(न०) १ बालमित्र । २ मित्र । दोस्त ।

गोड-(ना०) (हाथी की) मस्ती ।

गोडणो-(क्रि०)१ खुरपी लगाना । २ खेत थाग आदि म कसी फावडे इत्यादि से मिट्टी उलट पुलट करना ।

गोड-(ना०) १ भीड । २ समूह । झुड । ३ नाश । सहार ।

गोडणो-(क्रि०) १ नाश करना । सहार करना । २ हाथी का चिघाडना ।

गोडणो-(क्रि०) १ मारना । नाश करना । २ गिराना ।

गोडवाड-न० गोडवाड ।

गोडाटी-(ना०) मारवाड के नागौर जिले का भाग ।

गोडा देणो-(मुहा०) १ हानि पहुचाना । २ किसी प्रिय की मृत्यु होना ।

गोडालकडी-(ना०) एक कठोर शारीरिक दड ।

गोडाळियाँ-(क्रि०वि०) बच्चे का घुटनो और हाथो के बल चलने की क्रिया ।

गोडियो-(न०) १ इद्रजालिक । जादूगर । २ मदारी ।

गोडी-(ना०)१ घुटना । २ घुटने को मोड कर रस्सी से पैर को बाँधने की क्रिया ।

गोडी करणो-(मुहा०)१ ऊँट के एक पाँव को घुटने म से ऊपर को मोड कर रस्सी के द्वारा घुटने से बाँध देना जिससे वह भाग नही सके । २ विवश करना । मजबूर करना । ३ विश्राम करना ।

गोडी ढाळणो-(मुहा०) १ थक जाना । २ थक कर बठ जाना । ३ बठ जाना । ४ मृतक के घर उसके घर वालों को सम्वेदना प्रकट करने को जाना ।

गोडी देणो-(मुहा०) ऊट के अगले पर को घुटने से मोडकर रस्सी से बाँधना ।

गोडीख (न०)१ समुद्र । २ समुद्र मे उठने वाली लहरो की ध्वनि ।

गोडो-(न०) घुटना ।

गोडा वळावणो-(मुहा०)मुहकाण कराना । मृतक के यहाँ उसके घर वालो को सान्त्वना देने व सवेदना प्रकट करने को जाना ।

गोडो वाळणो-(मुहा०)दे० गोडोवळावणो।
गोट-(न०) १ वृक्ष का तना। धड़। २ मूला। मूली। ३ जड़। मूल।
गोढलो-(वि०)निकट का। पास का।
गोडवाड-(न०) मारवाड़ के पाली जिले का दक्षिण पूर्वी प्रदेश।
गोढवाडी-(वि०) १ गोडवाड़ प्रदेश का रहने वाला। २ गोडवाड़ का। गोडवाड़ सम्बन्धी।
गोटाण-दे० गोढवाड़।
गोढा-दे० गोड।
गोढ-(क्रि०वि०) पास। निकट। कने।
गोण-(न०) १ आगमान। २ गमन। जाना।
गोणो-(न०) गौना। द्विरागमन। आणो।
गोत-(ना०) १ गोत्र। २ वंश। कुल। ३ डुबकी। ४ बहाना। ५ तलाश। खोज।
गोतकदम-(ना०) गोत्र हत्या। कुल हत्या।
गोत खाणो-(मुहा०) नट जाना। मुकर जाना।
गोतणो-(क्रि०) तलाश करना। ढूंढना।
गोतभाई-(न०) एक ही गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।
गोतर-दे० गोत्र।
गोतियो-(न०) १ गाय भैंस आदि के लिये बाजरी ग्वार खल और कुतर आदि के मिश्रण (बाटे) को पकाने का चूल्हा व पात्र (हाडा)। (वि०)समान गोत्र वाला। गोत्रज।
गोती-(वि०)१ गोत्रवाला। २ स्वगोत्री।
गोतीत-(वि०) इंद्रियातीत।
गोतो-(न०) १ पथ का चक्कर। फेरा। आंटो। २ मार्ग भूलकर इधर उधर फिरते रहने की क्रिया। चक्कर। ३ डुबकी। गोता।
गोत्र-(ना०) १ किसी ऋषि के नाम से पहिचाने जानेवाला कुल। कुल के मूल पुरुष के नाम के अनुसार उस कुल की संज्ञा। २ वंश। कुल। ३ संतान।
गोत्र-कदम-दे० गोतकदम।
गोत्रजा-(ना०) पडिहारों की कुलदेवी।
गोत्रात-(ना०) गोत्रिणी नाम का स्त्रियों का व्रत जो भादों शुक्ल पक्ष की सप्तमी, अष्टमी और नौमी को किया जाता है। गोत्रिरात्रि।
गोथणी-(ना०) १ बैलगाड़ी के जुए में लगने वाली लकड़ी की कील जो बैल की गरदन को अंदर की ओर जाने से रोकती है। २ द्राक्षा। बड़ी दाख।
गोथणो-(न०) जुआ (धूंसरी) को बंद करने की लकड़ी की एक कील। गोथणी। (क्रि०) गोथणी से बंद करना।
गोथळी-(ना०) थैली। कोथली।
गोद-(ना०) १ क्रोड। उत्संग। अंचल। खोळो। २ आंगन का वस्त्र भाग। ३ दत्तक प्रणाली। ४ दत्तक।
गोदडी-(ना०) गुदड़ी। गूदडा।
गोदडो-(न०) फटे पुराने चिथड़ों का बिछौना। गुदड़ा। गादडा।
गोद लेणा-(मुहा०)नि संतान होने की दशा में अपने किसी गोत्री के पुत्र को शास्त्र विधि अनुसार अपना पुत्र स्वीकार करना। खोळ लेणो। २ बच्चे को कमर में उठाना। तेड़णो।
गोदान-(न०) गाय का दान।
गोदाम-(न०) माल रखने का बखार। गोडाउन। गादाम।
गोदावरी-(ना०) दक्षिण भारत की एक पवित्र नदी।
गोदी-(ना०) १ क्रोड। उत्संग। २ गोदाम। भखार। बखार।
गोधण-(न०) गायों का समूह। गोधन।
गोधन-(न०) १ गायें रूपी धन दौलत। २ गोवृंद।
गोधम-(न०) १ होहल्ला। २ झगडा टंटा। ३ कलह। ४ गृह कलह।

गोधळियो-*(न०)* १ छोटा सांड। २ येनराल का सांड। ३ छोटा बैल।
गोधुळक-*(ना०)* संध्या समय। गोधूलि समय। *(वि०)* गोधूलि समय का (पाणि ग्रहण)।
गोधुळक-लगन-*(न०)* १ गोधूलिक लग्न। २ गोधूलिक समय का विवाह। गोधूलिक पाणिग्रहण।
गोधुळकिया फेरा-*(न०)* संध्याकालीन मुहूर्त में होने वाला पाणिग्रहण।
गोधुळकियो साहो-दे० गोधुळकिया फेरा।
गोधूलि-*(ना०)* गायों के चलने से उड़ने वाली धूलि। २ गायों के जंगल में से वापिस लौटने का समय। संध्या समय।
गोधो-*(न०)*१ सांड। २ खस्सी नहीं किया हुआ बैल।
गोप-*(न०)* १ गले का एक आभूषण। २ व्रज की एक अहीर जाति। ३ ग्वाला। ४ गौ। गाय।
गोपकाव्य-*(न०)* ग्राम्य जीवन वर्णन करने वाला काव्य।
गोपाळ-*(न०)* १ श्री कृष्ण। २ ग्वाला।
गोपी-*(ना०)* १ गोप पत्नी। ग्वालिन। २ वृन्दावन की श्रीकृष्ण भक्त गोप स्त्री।
गोपीचंदण-*(न०)* तिलक करने की एक सफेद व पीली मिट्टी। गोपीचंदन।
गोपीवर-*(ना०)* श्रीकृष्ण।
गोफण-*(न०)* पत्थर या ढेला फेंकने का जाता (यंत्र) के जैसा एक साधन। गोफन। फिर्नी। ढेलवांस।
गोफणियो-*(न०)* १ गोफन से फेंका जाने वाला ढेला या पत्थर। २ गोफन। ढेलवांस।
गोबर-*(न०)* गाय या भैंस का मल।
गो-भरतार-*(न०)* १ पृथ्वीपति। २ इन्द्रियों का अधिपति। ३ श्रीकृष्ण।
गोभी-*(ना०)* शाक में प्रयोग आने वाला एक फूल या पत्तों की एक गांठ। कोबी।
गोभू-*(वि०)* डरपोक।
गोम-*(न०)* १ पृथ्वी। २ आकाश। ३ नगाड़ा। ४ गर्जन। *(वि०)* गुप्त।
गोमगह-*(न०)* १ आकाश। २ मेघगर्जन।
गोमतसर-*(न०)* मारवाड़ के इतिहास प्रसिद्ध भीनमाल नगर का एक प्राचीन नाम। गौतमसर।
गोमती-*(ना०)*१ द्वारका की सामुद्र नदी। २ गंगा में मिलने वाली एक नदी।
गोमय-दे० गोबर।
गोमुख-*(न०)* १ गाय का मुँह। २ एक प्राचीन तीर्थ।
गोमुखी-*(ना०)* १ माला जपने की गाय के मुख के आकार की कपड़े की कोथली। २ गंगोत्री तीर्थ। गंगोतरी।
गोमूत-*(न०)* गोमूत्र।
गोय-*(क्रि०वि०)* छिपा करके।
गोयणी-दे० गोरणी।
गोयरो-*(न०)*१ गाँव के निकट का भाग। गुंदरो। २ गोह।
गोरखधंधो-*(न०)* १ गोरखपंथी साधुओं का बहुत कड़ियां वाला एक डंडा। २ गोरख पंथियों का एक यंत्र। ३ अनेक कड़ियों वाली एक अंगूठी। ४ एक ही काम की निरर्थक पुनरावृत्ति। ५ निकम्मा धंधा। खोटो धंधो। ६ बहुत झंझट वाला काम। ७ उलझन। झंझट।
गोरखनाथ-*(न०)* एक प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा गोरखनाथ।
गोरखपंथ-*(न०)* गोरखनाथ द्वारा चलाया हुआ पंथ।
गोरखपंथी-*(वि०)* गोरखपंथ के अनुयायी।
गोरज-*(ना०)* गायों के चलने से उड़नेवाली रज।
गोरटियो-*(वि०)* गोरे रंग वाला। गौर वर्ण।

गोरण-*(ना०)* प्रथम मिलन। सुहागरात।
गोरणी-*(ना०)* १ गौरी व्रत उद्यापन की सौभाग्यवती स्त्रियों को दी जाने वाली लहाण (सौगात) गौरिणी। २ व्रत उद्यापन के दिन भोजन के लिये निमंत्रित सौभाग्यवती स्त्री। ३ सौभाग्यवती स्त्री के गौरी व्रत के उद्यापन का भोज।
गोरधन-दे० गोवधन।
गोरबंध-*(न०)* १ ऊंट का शृंगार करने के लिए उसे पहिनाया जाने वाला फुंदना और लूमा वाला अलंकार। २ इस संबंध का एक बहुत प्रसिद्ध लोक-गीत। 'गोरबंध नखराळो' नामक लोक गीत।
गोरमो-*(न०)* १ बरात का उसके गोरमे में पहुंच जाने पर कन्यापक्ष की ओर से दिया जाने वाला एक स्वागत भोज। २ गांव के बाहर का मैदान। ३ गांव के निकट का भाग। ४ गांव का वह स्थान या मैदान जहां गांव की गायें जंगल में चरने को जाने के लिये इकट्ठी होती हैं।
गोरल-दे० गणगोर।
गोरवो-दे० गोरमो।
गोरस-(न०) दूध दही छाछ मक्खन आदि गाय के द्वारा प्राप्त होने वाली वस्तुएं।
गोरहर(न०) जसलमेर किले का नाम।
गोरंग-*(वि०)* गौर वर्ण का। *(न०)* १ अंगरेज। २ यूरोपियन।
गोरंगी-*(वि०)* गौर वर्ण वाली। सुन्दर। *(ना०)* अंगरेज स्त्री।
गोरावो-*(न०)* एक जाति का सांप।
गोरांगी-दे० गोरंगी।
गोरांदे-*(ना०)* १ गौरी। पार्वती। २ पत्नी। ३ गौर वर्णवाली स्त्री।
गोरी-*(वि०)* १ गौर वर्ण की। सुन्दर। *(न०)*१ मुसलमान। २ ग्वाला। *(ना०)* गौर वर्ण की स्त्री।
गोरीराय-*(न०)* बादशाह।
गोरू-*(ना०)* गाय। *(न०)* गोवंश। *(वि०)* कायर। डरपोक।
गोरो-*(वि०)* गौर वर्ण का। *(न०)* १ यूरोप का निवासी। २ अंग्रेज। फिरंगी। ३ गोरा भैरव।
गोरोचन-*(न०)* गाय के पित्ताशय से प्राप्त होने वाला एक सुगंधित द्रव्य।
गोरो निछोर-*(वि०)* खूब गोरा। सुन्दर वर्ण का।
गोळ-*(न०)*१ वृत्ताकार। वृत्त। २ समूह। झुंड। ३ सेना। फौज। ४ शक। संदेह। ५ अंतर। फर्क। ६ षडयंत्र। चाल। ७ एक शस्त्र। ८ घेरा। *(वि०)* १ वृत या चक्र की तरह का। घेरे वाला। २ गेंद या गोले की तरह का। गोन।
गोल-*(न०)* १ सेना का मध्य भाग। २ गोला। वर्णसंकर। ३ गोलों का मुहल्ला। ४ दास। सेवक।
गोलक-*(न०)* १ रुपया पैसा रखने की पेटी। गल्ला। २ वर्णसंकर। गोलो।
गोळ गूंथणो-*(मुहा०)* षडयंत्र रचना।
गोलण-(ना०) गोले की स्त्री। गोली। २ दासी।
गोलणो-*(न०)* १ वर्णसंकर। गोलो। २ दास। नौकर।
गोळ मटोळ-*(वि०)* १ बिल्कुल गोल। २ अस्पष्ट (बात)।
गोळमाळ-*(न०)* १ गोलमाल। २ अव्यवस्था। ३ घपला। घोटाला। ४ मिलावट।
गोळमोळ-*(वि०)* १ गोल गोल। बिल्कुल गोल। २ अस्पष्ट।
गोळवो-*(न०)* गहूं के आटे का दडी के जैसा गोल बनाये जाने वाला एक भोज्य पदार्थ। रोडक। रोटो। बाटी।

गौरवान्वित-*(वि०)* गौरवमय। महिमा मय।
गौरी-*(ना०)* १ पार्वती। २ गोरे रग की स्त्री। ३ आठ वर्ष की कन्या।
गौरी शकर-*(न०)* १ महादेव। २ गौरी और शकर। ३ हिमालय की एक चोटी का नाम।
गौह्ग-*(न०)* मोती।
ग्याति-*(ना०)* १ जाति। २ ख्याति।
ग्यान-*(न०)*१ ज्ञान। तत्वज्ञान। ब्रह्मज्ञान। २ चेतनता। ३ बोध। जानकारी। ४ बुद्धि। समझ। ५ प्रतीति। भान।
ग्यान गहीर-*(वि०)* ज्ञान गभीर।
ग्यानण-*(वि०)* ज्ञान वाली।
ग्यान पचमी-*(ना०)* कार्तिक शुक्ल पचमी।
ग्यान भडार-*(न०)* पुस्तकालय। ज्ञान भडार।
ग्यान स्पेल-*(न०)* ज्ञान स्वरूप।
ग्यान रूप-*(न०)* ज्ञान स्वरूप।
ग्यानवान-*(वि०)* १ ज्ञानी। २ विद्वान।
ग्यान विसभ-दे० गिनान विसभ।
ग्यानी-*(वि०)* १ ज्ञानवान। ज्ञानी। २ विद्वान। पडित। *(न०)* आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।
ग्याभ-*(न०)* गर्भ (मादा पशु का)। गाभ।
ग्याभण-*(वि०)* गर्भवती (मादा पशु)। गाभण।
ग्याभणी-दे० ग्याभण।
ग्यारस-*(ना०)* एकादशी। पक्ष का ग्यारहवाँ दिन।
ग्यारसियो-(वि०) वह, जो एकादशी का व्रत रखे हुए हो।
ग्रगाचार-*(न०)* गर्गाचार्य ऋषि।
ग्रज-दे० गरज।
ग्रजणो-दे० गरजणो।
ग्रब-*(न०)* गर्व। घमड।
ग्रभ-*(न०)* २ गर्भ। हमल।

ग्रभवास-*(न०)* गर्भवास।
ग्रह-*(न०)* १ नक्षत्र। २ नौ की सख्या। १ नौ प्रसिद्ध तारे जो सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।
ग्रहण-*(न०)* १ सूर्य या चन्द्र पर क्रमश चद्र या पृथ्वी की छाया पडने की स्थिति। सूर्य या चद्र का पूरा या किसी अश मे पृथ्वी वासियो को दिखाई नही देना। २ पकडना। पकड। ३ स्वीकार। मजूर।
ग्रहणगध-*(न०)* नाक। नासिका।
ग्रहणी-*(ना०)* गृहिणी। पत्नी।
ग्रहणो-*(क्रि०)* १ लेना। पकडना। २ ग्रहण लगना। *(न०)* गहना। आभूषण।
ग्रहदशा-दे० ग्रहदसा।
ग्रहदसा-*(ना०)* ग्रहो की स्थिति के अनुसार किसी व्यक्ति की अच्छी या बुरी दशा। ग्रहदशा। २ गोचर ग्रहो की स्थिति। ३ दुर्भाग्य। अभाग्य।
ग्रहमिण-*(ना०)* दीपक। गृहमणि।
ग्रहम्रग-*(न०)* कुत्ता। गृहमृग।
ग्रह्स्थ-दे० गृहस्थ।
ग्रहस्थास्रम-दे० गृहस्थाश्रम।
ग्रहस्थी-दे० गृहस्थी।
ग्रहावणो-*(क्रि०)* १ पकडवाना। २ प्राप्त कराना।
ग्रथ-*(न०)* पुस्तक। पोथी। किताब।
ग्रथसाहब-*(न०)* सिक्खो का धर्म ग्रथ।
ग्रथाण-*(न०)* १ शास्त्र। २ ग्रथ राशि। ग्रथसमूह।
ग्रथी-*(न०)* १ ग्रथ साहब का पाठ करने वाला। २ ग्रन्थि। गाँठ। ३ बधन।
ग्राम-*(न०)* १ गाँव। २ बस्ती। ३ राशि। ढेर। ४ शिव। ५ सप्तक (सगीत) ६ तौल की दशाश पद्धति की एक इकाई।
ग्रामदेवता-*(न०)* गाँव का रक्षक-देवता। खेतरपाळ।

ग्राममृग-(न०) कुत्ता। स्यार।
ग्रामसिंह-(न०) कुत्ता। कूतरो।
ग्रामसीह-(न०) कुत्ता। ग्रामसिंह।
ग्रामांतर-(न०) दूसरा गाँव। गाँवतरो।
ग्रामीण-(वि०) गाँव का रहने वाला। देहाती। गँवार। गमार। गिवार।
ग्राव-(न०) पत्थर।
ग्रास-(न०) १ राजाओं की ओर से अपने छुटभाइयों को आजीविका के लिये दी हुई भूमि। २ कौर। कवो। गुस्सा। ३ खुराक। भोजन। ४ लूटखसोट। ५ हिस्सा।
ग्रासवेध-(न०) १ लूटखसोट। २ लूटमार। ३ लड़ाई। ४ दूसरे की जमीन या जागीरी पर किया जाने वाला बलात् अधिकार। बलात् वसूल किया जाने वाला भूमिकर।
ग्रासियो- १ ग्रास में प्राप्त भूमि का जागीरदार। गुजारे के लिए दी हुई जागीरी का जागीरदार। २ जागीरदार। ३ पहाड़ों में रहने वाली लुटेरी जाति का व्यक्ति। ४ लूट खसोट करने वाला व्यक्ति। ५ विद्रोही। बागी।
ग्राह-(न०) मगरमच्छ।
ग्रिध-(न०) गिद्धपक्षी।
ग्रीखम-(न०) ग्रीष्म ऋतु। गरमी का मौसम। ऊनाळो।
ग्रीधण-(ना०) गिद्धनी।
ग्रीठ-दे० गरीठ।
ग्रीधण-दे० ग्रीधण।
ग्रीधाण-(ना०) गिद्धनियाँ। (न०) गिद्धों का झुंड।
ग्रीधाणी-दे० ग्रीधण।
ग्वाड-दे० गवाड।
ग्वाडी-दे० गवाडी।
ग्वार-दे० गवार।
ग्वारतरी-दे० गुआरतरी।
ग्वारपाठो-दे० गुआरपाठो।
ग्वारफळी-दे० गुआरफळी।
ग्वाळ-(न०) ग्वाला। अहीर। गुआळो। ग्वाळो।
ग्वाळियो-दे० गोआळ। ग्वाळ।
ग्वाळेरी-(ना०) ग्वालियर की भाषा या बोली। (वि०) ग्वालियर का।
ग्वाळो-दे० गोआळ।

घ

घ-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का चौथा कंठ्य व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान कंठ है।
घकार-(न०) वर्णमाला का चौथा व्यंजन वर्ण। 'घ' वर्ण। घघ्घो।
घघ-(न०) ऊंट। (ना०) खजूर (खारक) का बीज। कुळियो।
घघडो-(न०) १ बेर का बीज। कुळियो। २ ग्रंथि। गुठली।
घघ्घो-(न०) घकार। वर्णमाला का चौथा व्यंजन वर्ण। 'घ' वर्ण।
घचरो-दे० घसरो।
घचोळणो-(क्रि०) १ धमकाना। डराना। २ मारना। पीटना ३ विघ्न डालना।
घट-(न०) १ घड़ा। २ शरीर। ३ हृदय। ४ कमी। (वि०) कम। थोड़ा।
घटकार-(न०) कुम्हार। परजापत। कुंभकार।
घटणो(क्रि०) १ कम होना। छीजना। २ होना। घटना। वाका होना। ३

उचित लगना । ४ उचित होना । ५ लागू होना ।

घटना-*(ना०)* १ रचना । बनावट । २ माजरा । वारदात ।

घटमाळ-*(ना०)* १ रहँट की घडियो की माला । २ क्रम । प्रणाली । ३ आवा गमन । जन्म मरण ।

घट-वध-*(ना०)*१ कमीबेशी । न्यूनाधिकता । २ अवनति उन्नति । ३ मंदी तेजी । (व्यापारिक वस्तुओं की) ।

घटा-*(ना०)* १ बादलों का उमडना । मेघमाला । २ वृक्ष समूह । ३ समूह । झुंड ।

घटाटोप-*(न०)* बादलों या रज के उडने से हुई छाया या अंधेरा । २ आकाश में छाई हुई बादलों की घटा । घनघोर घटा । ३ ओहार । छाजन । आच्छादन ।

घटाडणो-*(क्रि०)* १ घटाना । कम करना । २ शेष करना । बाकी निकालना । ३ उचित ठहराना । ४ लागू करना ।

घटाणो-दे० घटाडणो ।

घटावणो-दे० घटाडणो ।

घटिया-*(वि०)* १ अपेक्षाकृत निम्न कोटि का । उतरता । हलका । २ तुच्छ । नीच । कमसल ।

घटियो-दे० घटालिया ।

घटूलिया-दे० घटालिया ।

घटालियो-*(न०)* छोटी चकरी ।

घट्टी-*(ना०)* आटा पीसने की चक्की । घरटी ।

घड-*(ना०)* १ सेना । २ शरीर । ३ समूह । ४ घटा । ५ घटा । ६ परत । तह । *(क्रि०वि०)* १ यथास्थिति । ठिकाने सर । २ समुचित रूप में ।

घडघडाट-*(न०)* गर्जन । गाडी चलने आदि से होने वाला शब्द ।

घडणो-*(क्रि०)* १ घडना । बनाना । आकार देना । २ शिक्षित बनाना । योग्य बनाना । ३ माल बेच कर पैसा बनाना ।

घडत-दे० घडतर ।

घडतर-*(ना०)* १ बनावट । गठन । २ कारीगरी । ३ शिल्प ।

घड बैठणो-*(मुहा०)* १ समुचित रूप से तय होना । २ किसी काम का यथा स्थिति, यथास्वरूप पार पडजाना ।

घडभजरण-*(ना०)* १ निर्माण और नाश । २ उथल-पुथल । ३ विचारों का उठना और समा जाना । विचारों की उथल पुथल । उधेडबुन । *(वि०)* सेना का नाश करने वाला । वीर ।

घडमोड-*(वि०)* शत्रु की सेना को पीछे हटाने वाला । २ शूरवीर ।

घडली-*(ना०)* १ रहँट की माल में बँधी रहने वाली घडिया । घेड । २ कागज, कपडे आदि की परत । घडी ।

घडवै-*(न०)* सेनापति ।

घडा-*(ना०)* १ सेना । फौज । २ समूह । झुंड ।

घडाई-*(ना०)* १ घडने का काम । २ घडने का पारिश्रमिक ।

घडाणो-दे० घडावणो ।

घडामण-दे० घडाई ।

घडामणी-दे० घडामण ।

घडामाड-दे० घडमोड ।

घडाळ-*(वि०)* १ सेना वाला । २ शूरवीर ।

घडावणो-*(क्रि०)* घडाना । गढाना । बनवाना ।

घडा विभाड-*(वि०)* शत्रु सेना का नाश करने वाला ।

घडियक-*(क्रि०वि०)* घडी भर के लिये । एक घडी भर ।

घडियाल-*(ना०)* १ घडी । २ घंटा । टकोरा । *(न०)* मगरमच्छ । ग्राह ।

घडियो-*(न०)* १ किसी अंक के एक से १० तक गुणनफलों की क्रमिक सारणी ।

पहाडा । गुडियो । पट्टी पहाडा । २ सुवर्णकार। ३ छोटा घडा ।

घडी-(ना०) १ चौबीस मिनट का समय परिमाण । २ समय । ३ अवसर । ४ एक समय सूचक यंत्र । घड़ियाल । ५ रहट की माल मे लगी हुई कुलिया । घड़ली । ६ कपडे, कागज आदि की परत ।

घडी-घडी-(क्रि०वि०) बार बार ।

घडीभर-(अव्य०) थोडी देर । थोडी देर के लिये ।

घड़्लो-(न०) छोटा घडा ।

घडो-(न०) घडा । कलसा ।

घडोटिया-(न०ब०व०) एकादशा की शुद्धि क्रिया के उपरान्त मृतक के बारहवें दिन की एक विशेष अशौच निवारण क्रिया जिसमे बारह पिण्डा के अतिरिक्त (घट-स्वरूप) पानी भर बारह घडे, बारह जल छानने और उनके ऊपर बारह थालियो म उस दिन का बनाया हुआ मिष्टान्न भर करके शुद्ध किये हुए तपण स्थान म रग दिये जाते है और फिर तपण करके मिष्टान्न सहित वे घडे सबधी और कुटुबी जनो मे अशौच निवारण की सूचना रूप म दिये जाते हैं और पिंड गाय को दे दिये जाते हैं। बारहवें दिन का श्राद्ध । द्वादशा । बारियो ।

घडोटियो-(न०) छोटा घडा ।

घण-(न०) १ बडा हथौडा । २ बादल । मेघ । ३ द्विदल अनाज म पडने वाला एक कीडा । घुन । ४ समूह । झुड । ५ लोहा । (वि०) १ बहुत । अधिक । २ ठोस । दृढ ।

घणकरो-(वि०) १ बहुत सा । (क्रि०वि०) प्राय । बहुत करके । अक्सर ।

घणखाऊ-(वि०) अधिक खाने वाला ।

घणघणा-(वि०) बहुत अधिक ।

घणघट्ट-(वि०) अत्यन्त ।

घणघोर-(न०) मेघ गजन । (वि०) १ घनघोर । भयकर । २ बहुत । ३ गहरा । घना ।

घणचक-(न०) १ भीड । भीडभाड । २ मेला । ३ युद्ध । ४ बडा आयोजन ।

घणजाण-(वि०) १ बहुज्ञ । २ बुद्धिमान । पडित । ३ कलाविद । ४ होशियार । चतुर ।

घणजाणग-दे० घणजाण ।

घणदाता-(वि०) अधिक दान देने वाला । औढर दानी । घणदेवाळ ।

घणदीहो-(वि०) १ वृद्ध । बुड्ढा । २ बहुत दिनों का । पुराना । ३ बासी ।

घण देवजी रोटा-(न०ब०व०) १ देवी देवता के निमित्त बनाय जाने वाले घी गुड मिश्रित बाटी (रोटो) के चूरम के लड्डू । २ विशेष प्रकार से बनाया हुआ देवता के निमित्त का रोटा भोज । ३ हनुमानजी के लिये बनाया हुआ मोटी रोटियो के चूरमे का भोज । रोट । ४ बडी बाटी । गोल आकार के बडे रोटे । गोळवा ।

घणदेवाळ-(वि०) दातार । घणदाता ।

घणनामी-(वि०) असख्य नामो वाला । (वि०) ईश्वर । परमेश्वर ।

घणमड-(न०) मेघ घटा ।

घणमोली-(वि०) बहुमूल्य । महगी ।

घणमोलो-(वि०) १ अमूल्य । बहुमूल्य । २ महँगा । ३ प्रिय ।

घणरूप-(वि०) अनेक रूपो वाला । (न०) ईश्वर ।

घणसहवाळ-दे० घणसहो ।

घणसहो-(वि०) सहनशील । भरखमो । भारीखमो ।

घणसार-(न०) १ कपूर । २ चदन । ३ पारा । ४ धुंआँ । ५ वर्षा । ६ पानी ।

घणस्याम-(न०) १ घनश्याम। श्रीकृष्ण। २ काला बादल। (वि०) अधिक श्याम। बहुत काला।
घणहर-(ना०) घटा।
घणाक-(वि०) बहुत से। ज्यादातर।
घणाघणी-(ना०) १ आश्चर्यजनक बात। २ बहुत अधिक होशियारी की बात या काम। ३ चालबाजी।
घणाजीवो-(अ०) चिरायु हो। दीर्घजीवी हो। आशीर्वाद।
घणारंग-(अव्य०) १ बहुत आभार। २ धन्य। धन्यवाद। शाबास। ३ वाह वाह।
घणीखमा-(अव्य०)१ गुरुजन आदि अत्यंत सम्मानित पुरुषों को किया जाने वाला अभिवादन। २ बहुत क्षमावान हैं आप। ३ गुरुजनों की बात का स्वीकृति सूचक शब्द। 'हाँ' शब्द का एक शिष्ट पर्याय।
घणीवाल-(वि०) १ अनेक गुणों से अलंकृत। २ महिमावंत। ३ आदरणीय।
घणीवार-(क्रि०वि०)१ कई बार २ प्रायः। ३ कभी २। ४ बहुत देर।
घणू-दे० घणो।
घणेरो-(वि०) बहुतेरा। बहुत। बहुत सारा।
घणो-(वि०) अधिक। बहुत। पुष्कल।
घणोखरो-दे० घणकरो।
घतावणो-दे० घलावणो।
घन-(वि०) १ ठोस। २ घना। गाढ़ा। ३ बहुत। अधिक। (न०) बादल। मेघ।
घनघोर-दे० घणघोर।
घनमंड-दे० घणमंड।
घनरूप-(वि०) मेघ के समान श्याम रूप। श्यामवर्ण।
घनवान-(वि०) मेघ के समान वर्णवाला। मेघवान। श्यामवर्ण।
घनश्याम-(न०) श्रीकृष्ण।
घनसार-दे० घणसार।
घबराट-(ना०) १ घबराहट। हड़बड़ी। २ व्याकुलता।
घबराणो-दे० घबरावणो।
घबरावणो-(क्रि०) १ घबराना। हड़बड़ाना। २ व्याकुल होना।
घबरीजणो-(क्रि०) १ घबरा जाना। हड़बड़ा जाना। २ व्याकुल होना।
घमक-(न०) १ भाले के प्रहार का शब्द। २ अधिक जोर की वर्षा का शब्द। ३ मेहमानों को भोजन के समय बार बार अधिक से अधिक घी परोसने की मनुहारें। जैसे-घी री घमक उड़ रही है। ४ लूहर और घूमर नामक नृत्यों में एक नृत्य ताल। ५ अनेक पाँवों के घुंघरुओं का एक साथ होने वाला तालबद्ध शब्द।
घमकणो-(क्रि०) १ नाचना। २ घटा का उमड़ना। ३ अचानक आ पड़ना।
घमको-(न०) १ नाच में घुंघरुओं को लगने वाला झटका। २ एक नृत्य ताल।
घमचाळ-(ना०) १ युद्ध। २ प्रहार। ३ सेना। फौज। घमचाळ।
घमड़घमड़-(अनु०) चक्की का तेजी से चलने का शब्द।
घमरोळ-(ना०) १ ऊधम। २ उत्पात। ३ युद्ध। ४ खलबली। ५ प्रहार।
घमसाण-(वि०) भयंकर। प्रचण्ड। (न०) १ भयंकर युद्ध। २ सेना। ३ समूह। ४ भीड़। ५ शोर। ६ नाश।
घमंड-(न०) अहंकार। गर्व।
घमंडी-(वि०) अभिमानी।
घमोड़णो-(क्रि०) १ ठोकना। पीटना। २ धमकाना। डराना। ३ मारना। नाश करना। ४ बहुत खाना। ५ बिछौना करना।
घय-(ना०) १ चोट। जखम। २ ढोल या नगाड़े का शब्द। आई।

घर-*(न०)* १ मनुष्य का रहने का स्थान। मकान। घर। गृह। आवास। २ किसी वस्तु का नाप। आवरण। ३ कुल। वंश। ४ वस्तु रखने का कोठा। खाना। ५ चौपड़ शतरंज आदि का खाना। ६ कोठरी। ७ जन्म स्थान। ८ जन्म कुंडली में ग्रह विशेष का स्थान। ९ मूल कारण। जैसे-रोग रो घर खाँसी।'

घर-आँगणो-*(न०)* १ घर का आँगन। २ अति परिचित और निकट का स्थान। ३ बार बार आते जाते रहने का स्थान।

घरकोलियो-*(न०)* १ छोटा और कच्चा घर। २ अवदशा को प्राप्त हुआ घर। ३ पाँव के पंजे पर गीली मिट्टी थपथपा कर बच्चों द्वारा बनाया हुआ विवर।

घर-खरच-*(न०)* १ घर वालों का निर्वाह करने में होने वाला खर्च। २ घर में या घर के संबंध में होने वाला खर्च। घरखर्च।

घरगतु-*(वि०)* १ जो घर के उपयोग के लिये बना हो। २ जो बेचने के लिये नहीं बनाया गया हो। ३ खानगी।

घर गरणो-*(न०)* विधवा का पुनर्लग्न। नातो। नातरो।

घर-घर-*(अ य०)* प्रतिघर।

घर जमाई-*(न०)* १ वह व्यक्ति जो ससुर का आश्रित होकर ससुराल में ही रहे। २ वह व्यक्ति जो अपनी प्रथा के अनुसार विवाह संबंध के निमित्त अपनी ससुराल में रहने के लिये बाधित होता है।

घरजाम-*(वि०)* घर में जन्म लिया हुआ (गोद आया हुआ नहीं।) २ विवाहिता पत्नी से उत्पन्न। औरस।

घरट-*(न०)* भैंसे द्वारा चलाई जाने वाली चूना पीसने की बड़ी चक्की। घट्टा। घरट्ट। २ घेरा। ३ समूह। *(वि०)* बहुत अधिक।

घरटियो-दे० घटोलियो।

घरटी-*(ना०)* आटा पीसने की चक्की। घट्टी।

घरणी-*(ना०)* १ गृहिणी। पत्नी। २ स्त्री। लुगाई।

घर दीवो-*(न०)* वंश का दीपक। वंश को प्रकाशित करने वाला। पुत्र।

घर-धण-*(ना०)* १ स्वपत्नी। २ घर की स्वामिनी।

घर-धणियाणी-*(ना०)* १ पत्नी। २ घर की मालकिन।

घर-धणी-*(न०)* १ पति। २ गृहस्वामी। ३ मकान का मालिक।

घरनार-*(ना०)* पत्नी। लुगाई।

घरनाळो-*(न०)* मिट्टी का पकाया हुआ नल जैसा फुट डेढ़ फुट का एक टुकड़ा। परनाळो। घरनाला।

घरबार-*(न०)* १ बाल बच्चे वगैरह। घर गिरस्ती। २ घर की चीज वस्तु। माल मिल्कीयत।

घरबारी-*(वि०)* १ घर वाला। २ संसारी। गृहस्थी।

घरबीती-*(वि०)* खुद में बीती हुई। *(ना०)* निजी तथा घर के सुख दुख की बात। पर बीती का उलटा।

घर बूडो-*(वि०)* घर को नष्ट करने वाला। घर घालक।

घर भेदू-*(वि०)* १ घर का भेद जानने वाला। २ घर का भेद जानकर चोरी करने वाला। ३ घर का भेद खोल कर दगा देने वाला।

घरमंड-*(न०)* १ धन। सम्पत्ति। २ घर का स्वामी। गृहपति। ३ पति। ४ कुल की शोभा।

घरमंडण-*(न०)* १ स्वामी। पति। २ घर की शोभा। ३ पुत्र। ४ कुल

परम्परा कायम रहने का साधन। पत्नी की प्राप्ति। विवाह। ५ पत्नी।

घरमेडी-(न०) १ गृहस्थ। गृहमेधी। २ घर का मुखिया।

घर रो घर-(न०) १ अपना घर। २ घर के सभी लोग। ३ संपूर्ण घर। पूरा मकान।

घर रा धणी-(न०) १ पति। २ घर का मालिक। मकान मालिक।

घरलाचू-(वि०) १ आमदनी की सीमा में रहकर विवेक से घर का काम चलाने वाला। २ घर की व्यवस्था को सुचारु रूप से बनाये रखने वाली।

घरवट-(ना०) १ घर की व्यवस्था। २ गृहस्थ जीवन। ३ घर की परंपरा। मर्यादा। घर की पारंपरिक मर्यादा। ४ वंश का गुण। ५ वंश।

घरवाळी-(ना०) १ घर की मालकिन। घरधणियाणी। २ पत्नी।

घरवाळो-(न०) १ घर का मालिक। घरधणी। २ पति।

घरवास-(न०)१ अन्य पुरुष के घर में पत्नी रूप से किया जाने वाला निवास। २ पर स्त्री का पत्नी रूप में ग्रहण। ३ गृहस्थ। गृहस्थाश्रम।

घरवासो-(न०) १ पर पुरुष के साथ पत्नी रूप का सम्बंध। पत्नी रूप में पर पुरुष के घर में रहना। २ गृहस्थावस्था। ३ गृहस्थ-जीवन।

घरविकरी-(ना०)घर का सामान। गृहस्थी का सामान।

घरविध-(वि०) १ निजी। आपसी। व्यक्तिगत। २ गुप्त। ३ घर संबंधी। ४ घर की तरह। (ना०) १ मित्रता। प्रेम संबंध। २ प्रेम। स्नेह। (क्रि०वि०) परस्पर। आपस में।

घरहाण-(ना०)१ निर्बल स्थिति का घर। गरीब घर(सगाई करते समय विचारणीय) २ घर की हानि। गृह की हानि।

घराऊ-(वि०) १ घर संबंधी। घर का। २ निज का। अपना। ३ आपस का। परस्पर का।

घराघरू-(वि०) निजी। अपना। अपना ही।

घराणो-(न०) कुल। वंश। घराना।

घरिया-(न०) आभूषण का कोठा जिसमें नग जड़ा जाता है।

घरू-(वि०) १ घर से संबंधित। घर का। २ निज का। अपना। निजी। खानगी।

घरूपणो-(न०) घर वालों के जैसा व्यवहार। अपणायत।

घरेचो-(न०)पुनर्विवाह। धारेचो। नातो। नातरो।

घरोघर-(अ०न०)१ प्रतिघर। प्रत्येक घर। २ घर प्रति घर। एक घर के बाद दूसरा घर। ३ सभी घरों में। घर घर।

घरोट-दे० घरवट।

घरोपो-(न०) बहुत अच्छा सम्बन्ध। घर का सा संबंध। अपणायत।

घलावणो-(क्रि०)डलवाना। प्रवेश कराना। पसाडणो।

घसक-(ना०) १ ढंग। गप्प। २ तौर तरीका। रंग ढंग। ३ सूरत-शक्ल। ४ बनावट। रचना। ५ ठसक।

घसकाळ-(वि०) घसक मारने वाला। गप्पी। २ ठसक वाला। ठसकाळ।

घसको-दे० घसक।

घसडको-(न०) १ खरोंच। रगड़। २ रेखा। चिह्न। ३ खंचा। ४ भारी। खंच का परिणाम। ५ बिना मन का काम। इच्छा के विरुद्ध करने या करवाने का भाव। बेगार। वेठ।

घसडणो-दे० ढमडणो।

घसड पसड-(ना०) अव्यवस्था

सण–*(ना०)*१ युद्ध । लडाई । २ सेना । फौज । ३ भाग ।

सणो–*(क्रि०)* घिसना । रगडना ।

सरको–*(न०)* १ खरोच । २ दूसरे के लिये उठाई जाने वाली हानि और कष्ट । ३ बेगार । बेठ । दे० घसारो ।

सरो–*(न०)* १ बिना मतलब का काम । व्यर्थ का काम । २ बिना पारिश्रमिक के किया जाने वाला काम । ३ हैरानी का काम । ४ प्रासगिक काम । ५ मन को नही रुचने वाला काम । ६ काम पर काम । काम की अधिकता । एक साथ अनेक काम ।

साणो–दे० घसावणो ।

सारो–*(न०)* १ विवशता अथवा लिहाज से किसी का मुफ्त मे किया जानेवाला काम । २ दूसरे के लिये उठायी जाने वाली हानि । ३ बगार । ४ हानि । नुक्सान । ५ घिसाई । ६ घिसा जाना । छीजन । घटाव ।

ावणो–*(क्रि०)* घिसाना ।

सियारो–*(न०)* घासवाला । घसियारा ।

ीट–*(ना०)* १ घसीटन की क्रिया या भाव । २ जल्दी की लिखावट । शीघ्र लिखावट ।

ीटणो–*(क्रि०)* १ रगडते हुए खीचना । १ जल्दी जल्दी मे लिखना । जैसा तसा लिखना ।

–*(न०)* १ बडी घटी । घटो । २ कठ । *(वि०)* उस्ताद ।चालाक ।

ारव–*(न०)* घट बजने की ध्वनि ।

ाळ–*(वि०)* जिसके गले मे घट बँधा हुआ हो ।

ाळी–*(ना०)* घटिका देवी ।

ट्याल–*(न०)* फोग के छोट छोटे दानो *(फोगला)* क पक जाने की सज्ञा । पका हुआ फोगला । फोग मजरी ।

घटी–*(ना०)* छोटा घटा ।

घटो–*(न०)* १ साठ मिनिट का समय । दिन रात का चौबीसवाँ भाग । २ धातु का एक बाजा जो केवल ध्वनि उत्पन्न करता है । घट । बाजा । लिंगेंद्रिय । (गाली के रूप म)

घटो देखावणो–*(मुहा०)* अगूठा दिखाना । इनकार करना ।

घस–*(न०)* १ भाग । २ बडा भाग । ३ सेना का भाग । ४ युद्ध । ५ सेना । ६ सहार । ध्वस । ७ समूह ।

घसार–*(न०)* १ भाग । २ नाश । ३ सेना । फौज । ४ युद्ध । *(वि०)* १ युद्ध करने वाला । नाश करने वाला । ३ पीछा करने वाला ।

घा–*(न०)* १ घाव । २ घास । चारा । ३ नाश ।

घाई–*(ना०)* ढोल नगाडे आदि बडे वाद्यो का (दूसर वाद्यो के साथ) तालबद्ध वादन । दो वाद्यो के बजने का मिलान । तान । २ ढाल नगाडे आदि का शब्द । ३ अजस्र वादन । बजाते जाना । ४ किसी वस्तु या बात के लिये लगाया जाने वाली रटन । अजस्रता । अविच्छिन्नता । जसे—कैंई धाई लगा दी है चुप रह । ५ उतावल । दौडधूप ।

घाउ–*(न०)* १ घाव । २ नाश । *(वि०)* घाव करन वाला । प्रहार करने वाला ।

घाघ–*(वि०)* १ बहुत चालाक । २ अनुभवी । *(न०)* एक अनुभवी व्यक्ति जिसके नाम की वर्षा व कृषि सम्बन्धी कहावतें प्रसिद्ध हैं ।

घाघडदो–*(वि०)* गहरी । गाढी ।

घाघरी–*(ना०)* छोटा लहँगा । घघरी ।

घाघरो–*(न०)* लहगा । घाघरा ।

घाघस्याण–*(न०)* ब्राह्मणो का एक भेद ।

घाचघू च–*(ना०)* १ अव्यवस्थित बनावट। २ मोच। खड्डा(बरतन में)। ३ बखेड़ा। *(वि०)* आड़ा-टेढ़ा।

घाट–*(न०)* १ जलाशय का बँधा हुआ किनारा। २ नदी, तालाब आदि का तट। तीर। ३ मार्ग। रास्ता। ४ पर्वत का तंग व दुर्गम मार्ग। घाटी। ५ आभूषण। गहना। ६ बनावट। शिल्प। दस्तकारी। कारीगरी। ७ स्थान। ८ दशा। अवस्था। ९ ढंग। तरीका। १० व्यवस्था। ११ रूप। १२ प्रकार। भाँति। १३ शरीर। १४ षडयंत्र। *(ना०)* दली हुई मक्की या बाजरी का छाछ में पका कर बनाया हुआ एक खाद्य। एक रबेज। २ मृत्यु। *(वि०)* कम। थोड़ा।

घाटघड़-*(ना०)* १ सोच विचार। चिंता। उधेड़ बुन। *(वि०)* विचार मग्न।

घाटघड़ो लुहार–*(न०)* वह लुहार जो चाँदी के जेवर बनाने का काम करता हो।

घाट जराड़-*(ना०)*१ घाट पर स्नान करने का कर। २ पहाड़ी की घाटी में रक्षार्थ लगने वाला यात्रा कर।

घाटादारी–*(ना०)* घाटी में होकर जाने का कर।

घाटारोह–*(न०)* १ पर्वत की घाटी से प्रसार नहीं होने देने के लिये किया जाने वाला बंदोबस्त। घाटावरोध।

घाटावळ–*(न०)* १ विकट पहाड़ी मार्ग। २ पर्वत लाँघने का एक मात्र मार्ग।

घाटी–*(ना०)* १ दो पहाड़ों के बीच का भाग। २ दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता। ३ पहाड़ी ढलाई। ४ संकट। आपत्ति।

घाटू–*(वि०)* कम। थोड़ा।

घाटो–*(न०)* १ हानि। नुकसान। २ कमी। न्यूनता। ३ पहाड़ की बड़ी घाटी। ४ दुर्गम पहाड़ी मार्ग।

घाटो पड़णो–*(मुहा०)* नुकसान होना।

घाण–*(न०)* १ राशि में की उतनी वस्तु जो एक बार में कोल्हू में पेली जाय या भट्टी पर पकाई जाय। घान। संपूर्ण राशि का उतना एकम जो एक बार में तला पीसा पेला या पकाया जाय। २ नाश। ३ युद्ध। ४ हैरान। व्यग्र। ५ कोल्हू। ६ सुगंध। ७ समूह। *(वि०)* तरबतर। सराबोर।

घाण काढणो–*(मुहा०)* १ नाश करना। २ हैरान करना।

घाण मथाण–*(न०)* किसी बात पर लंबा विवाद। २ संहार। नाश। ३ कलह।

घाण मथाण करणो *(मुहा०)* १ विवाद करना। २ बहुत सोच विचार करना।

घाणी–*(ना०)* कोल्हू।

घाणो–*(न०)* उतनी वस्तु या अंश जितनी एक बार में पेली या पकायी जाय। २ नाश। संहार। ३ समूह।

घात–*(ना०)* आपत्ति। विपत्ति। २ कष्ट। दुख। ३ अहित। हानि। ४ धोखा। छल। ५ हत्या। वध। नाश। ६ दुर्दिन। ७ ताक। अवसर की प्रतीक्षा। ८ चोट। घाव। प्रहार। ९ दाँव। पेंच। १० पानी में डूबने या अकस्मात होने वाली मृत्यु। ११ निंदा। बुराई।

घात करणी–*(मुहा०)* धोखा देना।

घातक–*(वि०)*१ घात करने वाला। मारने वाला। घातक। २ शत्रु।

घातकियो-दे० घातक।

घा तकियो–*(न०)*एक विशेष घास का बना तकिया। सूखी घास से भरा तकिया।

घातकी–दे० घातक।

घातणो–दे० घालणो।

घातियो–दे० घातक।

घाती–दे० घातक।

घावाजरियो–*(न०)* घाव पर लगाने की एक वनस्पति।

घायल-*(वि०)* जख्मी। आहत। घायल।

घायो–*(वि०)* आहत। जख्मी।

घारड़ो–*(न०)* तवे पर बनाया जाने वाला मालपुए की तरह का एक पकवान। चीलड़ो। उलटा।

घालणो-(क्रि०) १ डालना। रखना। छोडना। २ अंदर रखना। ३ घुसाना। प्रवेश कराना। ४ मिलाना। ५ बिगाडना। ६ मारना। नाश करना।

घालमेल (ना०) १ हस्तक्षेप। दखल। दस्तंदाजी। २ उखाड पछाड। ३ किसी बात पर आवश्यकता से अधिक विचार विनिमय। ४ प्रपंच। बखेडा। ५ निकालने और डालने का काम। इधर उधर करना। ६ फेरफार करना। हेरा-फेरी। ७ व्यर्थ का काम। ८ चुगली चाँटी। इधर उधर लगाने का काम।

घालामेलो-(न०) १ भोज के अवसर पर कमीन कारू आदि नेग वाला को काँसा (जीमन) परोसने का काम। २ निमंत्रित व्यक्तियों के नहीं आ सकने पर उनके लिए थाल परोसकर भेजने का काम। दे० घालमेल १, २ ४ और ५।

घाव-(न०) १ क्षत। जख्म। २ आघात। चोट। प्रहार।

घाव करियो-(वि०) घाव करने वाला। मारने वाला।

घावडियो (वि०) १ घाव करने की ताक में रहने वाला। २ मारने वाला। घातक। ३ अवसर का लाभ उठाने वाला। ३ होशियार। चालाक। (न०) हानि पहुँचाने या मारने की ताक में रहने वाला या पीछा करने वाला व्यक्ति। २ जासूस।

घावणो-(क्रि०) १ घाव करना। प्रहार करना। २ मारना। सहार करना।

घाव भरीजणो-(मुहा०) घाव का दुरुस्त होना।

घा वेकरियो-(न०) घाव के खून को बंद करने वाला एक घास।

घास-(न०) तृण। चारा। खड़।

घास चराई-(ना०) पशुओं को घास चराने का कर।

घासतेल-(न०) मिट्टी का तेल। घासलेट।

घासफूस-(न०) कूडा करकट।

घास वराड-दे० घास चराई।

घासमारी-(ना०) मवेशी रखने वालों से लिया जाने वाला कर।

घासलेट-(न०) मिट्टी का तेल। घासतेल।

घासियो-(न०) १ मोटा गद्दा। २ ऊंट के पलान पर बिछाया जाने वाला गद्दा।

घासियो कसणो-(मुहा०)१ रवाना होना। २ ऊँट पर घासिया रखना।

घासो-(न०) १ औषध को पानी में घिस कर देने का प्रकार। इस प्रकार घिसकर दी जाने वाली औषधि। ३ पानी में घिसी हुई औषधि का द्रावण। ४ दूसरे के बदले में उठायी जाने वाली हानि।

घासो खाणो-(मुहा०) दूसरे के बदले में हानि उठाना।

घाह-(ना०) लहँगे, घाघरे, पायजामे इत्यादि में नाडा डालने की जगह। नेफा।

घाचण-(ना०) १ घाँची की स्त्री। २ घाँची जाति की स्त्री।

घाची-(न०)१ कोल्हू चलाने वाली जाति का व्यक्ति। २ तिलहन पेलने वाली जाति।

घाँटकी-दे० घाटी।

घाटकी दावणी-दे० घाँटो दाबणो।

घाटी-(ना०) १ कंठ। २ गरदन। ३ गले की वह हड्डी जो आगे की ओर निकली रहती है। टेंटुआ।

घाटो-(न०) १ कंठ। २ गरदन। ३ गला।

घाटो टूंप-(न०) १ गले में टूंपा आये जैसी दशा। २ गला घोट।

घाटो दावणो-(मुहा०)१ गला दबाचना। २ मजबूर करना।

घाँतरडो-(न०) गला। कंठ।

घाँदो-(न०) १ बाधा। अड़चन। २ विघ्न।

घासाड–दे० घांसाहर ।
घासाटो–(वि०) वीर । बहादुर । (न०) १ सेनापति । २ योद्धा ।
घागाहर–(ना०) १ सेना । फौज । २ समूह । ३ वीर । ४ सिंह । ५ युद्ध ।
घासाहरो–(न०) १ सेनापति । २ योद्धा ।
घिनडो–(न०) १ घास लकडी बेचने वाली जाति का व्यक्ति । २ गंदा रहने वाला व्यक्ति ।
घिरणो–(क्रि०) १ लौटना । फिरना । २ गई हुई या खोई हुई वस्तु का प्राप्त होना । ३ घिर जाना । आवृत्त होना । ३ एकत्रित होना ।
घिरत–(न०) घृत । घी ।
घिरोळो–(न०) डर के कारण मन में उठने वाला वेग । २ चक्कर । ३ बेहोशी ।
घिलोडी–दे० घीलोडी ।
घिसणो–(क्रि०) १ घिसना । रगड़ना ।
घिसाणो–क्रि० घिसावणो ।
घिसारो–दे० घसारो ।
घिसावणो–(क्रि०) घिसाना । घिसवाना ।
घिस्सो–(न०) झांसा । जुल । धोखा ।
घी–(न०) घृत । घी । तूप ।
घी खीचडो–(ना०) १ समान संबंध । २ प्रेम संबंध । ३ लाभ ।
घी खीचडी रो मेळ–(मुहा०) १ लाभ । २ प्रेम सम्बन्ध । ३ समान सम्बन्ध । ४ मृतक के पीछे किये जाने वाले अनेक टनो के ज्याति भोज (मौसर) का घी और खिचडी का पहला भोज ।
घी घालणो–(मुहा०) १ हानि पहुँचाना । २ विघ्न डालना ।
घी चोपडणो–(मुहा०) १ फुसलाना । २ धोखा देना ।
घी देणो–(मुहा०) अग्नि संस्कार के समय कपाल तोडकर के उसमें घी डालना । कपाल क्रिया की विधि करना ।
घीनड–(न०) शेखावाटी में होली त्यौहार के दिनों में पुरुषों द्वारा खेला जाने वाला एक डंडिया नृत्य । गींदड रास ।
घीनरो–(न०) फटा पुराना और मैला कपडा ।
घी पीणो–(मुहा०) किसी काम को सुगम समझना ।
घी रा दीवा बळणा–(मुहा०) १ अत्यन्त वैभवशाली बनना । २ वैभव का उपभोग करना ।
घी री नाळ देणी–(मुहा०) मोटे बाँस की नली को घी से भर कर गाय भैंस ऊंट आदि के मुँह में डालकर पिलाना ।
घी री मास्ती–(वि०) १ घृणित । २ उपेक्षित ।
घीलोडी–(ना०)घृतपात्र । घी की लुटिया ।
घीसणो–दे० घीसणो ।
घीचणो–(क्रि०)१ खींचना । २ घसीटना ।
घीचीजणो–(क्रि०) १ खींचा जाना । २ घसीटा जाना ।
घीसणो–(क्रि०) घसीटना ।
घीसार–(न०) १ मार्ग । २ विकट जगह में बनाया हुआ मार्ग ।
घीसाळी–(ना०) १ हल को आडा रख कर के (घर से खेत और खेत से घर तक बैलों द्वारा) ले जाने का लकडी का बनाया हुआ साधन । २ क्यारों में पानी पहुँचाने वाली नाली में पानी नहीं सोखने देने के लिये नाली में चिकनी मिट्टी लेप करने की क्रिया ।
घुचरियो–(न०) पिल्ला । कूकरियो । गूलरियो ।
घुटणो–(क्रि०) भंग ठंडाई आदि का पिसना । २ दम घुटना । ३ मन ही मन दुखी होना । कुढना । (न०) घुटना । गोडो ।
घुटाई–(ना०) घोटने का काम अथवा उसकी मजदूरी ।

घुटाणो–(क्रि०) घुटवाना ।
घुटीजणो–(क्रि०) १ घोटा जाना । २ क्रोधित होना । ३ दम घुटना । ४ क्रोध से अंदर ही अंदर घुटना ।
घुडकाणो–(क्रि०) धमकाना । डांटना ।
घुडकी–(ना०) धमकी । डांट ।
घुडचढी–(ना०) विवाह की एक प्रथा ।
घुडचराई–दे० घोडा चारण ।
घुडनाळ–दे० असनाळ ।
घुडलो–(न०) १ चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से सप्तमी तक मनाया जाने वाला कन्याओं का एक प्रसिद्ध त्योहार । २ अनेक छिद्रों वाला एक छोटा मिट्टी का घडा जिसमें दीपक जला रहता है। कन्याएं इसे सिर पर उठा कर दुष्टों द्वारा सतीत्व रक्षा करने और सतीत्व महिमा के गीत गाती हैं । ३ इस संबंध का एक लोकगीत ।
घुडसाळ–(ना०) घुडशाला । पायगा । तबेलो ।
घुण–(न०) मूंग, मोठ आदि द्विदल अन्न व लकडी में उत्पन्न होने वाला और उसी को खाने वाला कीडा । घुन ।
घुण पडणा–(मुहा०) नाज में घुन पैदा होना ।
घुण लागणो–(मुहा०) १ नाज में घुन पैदा होना । २ नहीं मिटने वाली बीमारी का लगना । ३ लंबी बीमारी के कारण दुबल होते जाना ।
घुमट–(न०) गुंबज । हर्म्य शिखर ।
घुमटी–(ना०) छोटा गुंबज । हर्म्य शिखर ।
घुमड़णो–(क्रि०) बादलों का उमडना । घटा का उठना ।
घुमाणो–दे० घुमावणो ।
घुमाव–(न०) १ मोड । २ चक्कर । फेरा
घुमावणो–(क्रि०) १ घुमाना । फिराना । २ चक्कर देना । ३ मोडना । मोडणो ।
घुरकणो–(क्रि०) १ घूरना । २ टकटकी लगा कर देखना ।
घुरकाणो–(क्रि०) धमकाना । डांटना । घुडकाणो ।
घुरकावणो–दे० घुरकाणो ।
घुरकी–(ना०) १ डांट । धमकी । २ गुर्राहट ।
घुरडका-रो-दान–(न०) १ मृत्यु के समय दिया जाने वाला दान । २ निकृष्ट दान ।
घुरडको–(न०) १ मृत्यु के समय कफ उठ जाने से कंठ में होने वाली घरघराहट । २ अंतिम सांस के समय दिया जाने वाला दान ।
घुरडणो–(क्रि०) १ रगडना । २ खरोचना ।
घुरणो–(क्रि०) १ नगारे ढोल आदि का बजना । २ बादलों का गरजना । ३ कुत्ते आदि पशुओं का गुर्राहट करना । गुर्राना । ४ एक टक देखना ।
घुरस–(ना०) घोडे का गरदन झुका कर पर पटकने की क्रिया ।
घुरस खाणो–(मुहा०) घोडे का पर पटक कर गरदन झुकाना ।
घुरसाळी–(ना०) कुतिया, लोमडी आदि के रहने का खड्डा । घुरिया ।
घुरसाळो–(न०) घोसला ।
घुरावणो–(क्रि०) १ ढोल बाजा आदि बजाना । २ बजवाना । ३ गरजना । ४ निद्रावस्था में जोर से खुर्राटों की आवाज करना ।
घुरी–(ना०) कुत्ते सियार आदि द्वारा अपने रहने बैठने के लिये बनाया हुआ खड्डा ।
घुळगांठ–(ना०) वह गांठ जो आसानी से नहीं खुल सके ।
घुळणो–(क्रि०) १ घुलना । २ पिघलना । ३ रोग चिंता आदि से क्षीण होना । ४ धागे आदि में लगी गांठ का दृढ होना । ५ (समय का) बीतना । व्यतीत होना ।

घुळवी गांठ–*दे०* घुळगांठ ।
घुसणो–*(क्रि०)* घुसना । प्रवेश करना ।
घुसाणो–*(क्रि०)* घुसाना । अंदर घुसेड़ना ।
घुमाळ–*(ना०)* १ घोसला । २ घुड़साना ।
घुमाळी–*(ना०)* कुत्ती और उसके छोटे बच्चों के रहने का खड्डा ।
घुसेडणो–*दे०* घुसाणो ।
घुआळो–*(न०)* घोसला ।
घुडी–*(ना०)* १ बटन । २ गांठ ।
घूक–*(न०)* उल्लू ।
घूकारि–*(न०)* कौआ ।
घूघ–*(ना०)* लोहे का टोप । शिरस्त्राण ।
घूघर–*(न०)* १ घुंघरू । २ एक शस्त्र ।
घूघरमाळ–*(ना०)* बैलों आदि के गले में बांधी जाने वाली घुंघरुओं की माला ।
घूघरी–*दे०* घूघरी ।
घूघरो–*(न०)* घुंघरू ।
घूघो–*(ना०)* ऊन को जमा कर बनाया हुआ एक वस्त्र ।
घूघू–*(न०)* उल्लू ।
घून–*(ना०)* बरतन आदि के गिरने या टक्कर लगने से उसमें पड़ा हुआ खड्डा । सोच ।
घूम–*दे०* घूब ।
घूमघुमाळो–*(वि०)* बड़े घेर वाला । घेरदार (घाघरा) ।
घूमणो–*(क्रि०)* १ घूमना । लहराना । झूमना । २ चक्कर काटना । फिरना । ३ गोलाकार में घूमना । ४ किसी लोकदेवता का आवेश आना । आवेश आने पर घूमना । ५ ...
घूमर–*(ना०)* १ समूह । २ झुंड । ३ स्त्रियों का एक गोलाकार नृत्य । ४ घूमर का एक लोक गीत । ५ छत में लटकाया जाने वाला कांच की झोर हंडिया का एक फानूस । झूमर ।
घूमर घालणो–*(मुहा०)* १ गोलाकार फिरना । २ बार बार आना । ३ घूमर नृत्य करना ।
घूमरो–*(न०)* १ समूह । झुंड । झूमरो । २ घेरा ।
घूरणो–*(क्रि०)* १ अपलक देखना । बिना आंख झपकाये देखते रहना । २ आंखें फाड़ फाड़कर देखना ।
घूस–*(ना०)* १ रिश्वत । २ एक बड़ा चूहा । कोळ । घूस ।
घूस खावणियो–*दे०* घूसखोर ।
घूसखोर–*(वि०)* रिश्वत खाने वाला । रिश्वत लेने वाला ।
घूगो–*(न०)* १ घास । २ तंतु । छूछा । ३ मुक्का । ४ गुप्तेंद्रिय के बाल । झांट ।
घूंहो–*(न०)* गुप्तस्थान के बाल । झांट । उपस्थ कच ।
घूंघटो–*(न०)* घूंघट ।
घूंच–*(ना०)* १ टेढ़ापन । मोड़ । २ मोच । ३ दुविधा । अड़चन । ४ उलझन ।
घूंच पडणो–*(मुहा०)* १ मोच पड़ना । २ डोरी या धागे का उलझना । गांठ पड़ना । ३ मेल मिलाप में गांठ पड़ना ।
घूंट–*(ना०)* १ द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में गले के नीचे उतारा जा सके । २ चुस्की ।
घूंटी–*(ना०)* १ मृगी की बीमारी । २ जन्म होने के बाद बच्चे को पिलाई जाने वाली औषधि । घुट्टी । जन्मघुट्टी ।
घूंसो–*(न०)* १ मुक्का । २ मुष्टिका प्रहार ।
घृणा–*(ना०)* नफरत । घिन । ग्लानि ।
घृत–*(न०)* घी । घिरत ।
घेघूचणो–*(क्रि०)* १ एक हो जाना । २ आलिंगन करना । ३ छा जाना ।
घेघूमणो–*(क्रि०)* १ मंडराना । घेरा डालना । २ छा जाना । ३ भिड़ना । लगना । ४ घटा छाना ।
घेच–*(ना०)* १ सेना । २ पलटन ।

घेचणो–*(क्रि०)* घसीटना । खींचना । लजाना ।
घेटियो–*(न०)* भेड का बच्चा । मेमना ।
घेटो–*(न०)* नर भेड । मेढा ।
घेट्यो–दे० घेटो ।
घेड–दे० घडली ।
घेर–*(न०)* १ घाघरा जामा आदि का गोल विस्तार । घेराव । २ घेरा । परिधि । ३ समूह । टोली ।
घेरणो–*(क्रि०)* १ घेरना । मोडना । २ चारो ओर फल जाना । ३ घेरा डालना ।
घेरदार–*(वि०)* घेरवाला ।
घेरो–*(न०)* १ परिधि । २ सेना का किसी दुग आदि के चारो ओर किया हुआ घेराव । ३ घेरा हुआ स्थान । ४ गोन चक्र । घेरा ।
घेरो खाणो–*(मुहा०)* चक्कर खाना ।
घेरो देणो–*(मुहा०)* १ घेरा डालना । २ चक्कर खाना । ३ चक्कर देना ।
घेवर–*(न०)* एक मिठाई । घेवर ।
घैघू वणो–दे० घेघूमणो ।
घैसाहर–दे० घांसाहर ।
घोई–*(ना०)* १ चक्कर । मोड । टेढापन । (भाग का) २ बार । दफा । समय । मरतबा । ३ देर । वेर । विलम्ब ।
घोई खाणो–*(मुहा०)* चक्कर खाना । आंटे मारना ।
घोख–*(न०)* १ गजन । गरज । घोप । २ नाद । शब्द । ३ नारा । ४ गायो का वाडा । गौशाला ।
घोखणो–*(क्रि०)* १ रटना । २ बराबर पढना । ३ मनन करना । चिंतन करना ।
घोघ–*(न०)* १ झाग । फेन । २ नदी के पानी का बढता हुआ वेग ।
घोघड मिंतो–*(न०)* १ बडे सिर वाला जगली बिल्ला । वनबिलाव । २ बच्चो को डराने का हाऊ । हौवा ।
घोचो–*(न०)* १ लकडी का छोटा टुकडा । २ तृण । तिनका ।
घोचो लागणो–*(मुहा०)* घोचा चुभना ।
घोट–दे० घोटो ।
घोट उपडणो–*(मुहा०)* लट्ठिया से लडाई होना ।
घोटणो–*(क्रि०)* १ घिसना । २ पीसना । ३ रगडना ।
घोटमघोट–*(वि०)* १ दृढ । २ मोटा । (मनुष्य) ।
घोटाई–*(ना०)* १ घोटने का काम । २ घोटने की मजदूरी ।
घोटो–*(न०)* डडा । सोंटा । घोटा ।
घोडचढी–दे० घुडचढी ।
घोटची–*(न०)* घुडसवार ।
घोड पलाण–*(न०)* घोडे की जीन ।
घोडलो–*(न०)* १ घोडा । २ द्वार (चौखट) मे ऊपर की ओर दोनो बाजू बनाई जाने वाली लकडी या पत्थर की अश्वमुखा कृति । ३ मकान की शाल के द्वार पर दोनो ओर आमने-सामने बनाया जाने वाला एक प्रकार का गवाक्ष । गोखडो ।
घोडागाठ–*(ना०)* १ रस्सी मे लगाई जाने वाली सरकने वाली गाठ । सरकीफासो । खूटा गाँठ ।
घोडागाडी–*(ना०)* १ घोडे से चलाई जाने वाली गाडी । इक्का । तागा । २ बग्गी ।
घोडा चारण–*(न०)* घोडो को जगल मे चराने का कर ।
घोडा नस–*(ना०)* १ बडी नस । रक्त वाहिनी । २ एडी के पीछे की नस ।
घोडा ले–*(अव्य०)* आश्चय सूचक एक अव्यय पद ।
घोडावेग–*(क्रि०वि०)* १ अति शीघ्रता से । तुरत । एकदम । एकाएक । २ तेज गति से ।
घोडियो–*(न०)* पालना । झूलना । गहवारा ।

घोडी–*(ना०)* १ घोड़े की मादा । अश्वा । अश्विनी । २ पालना । कपडे की झोली का झूलना । गहवारा । ३ सेवइया बनाने की मशीन को खड़ा करने का ढांचा । ४ ऊंट की काठी को दो कोठों में विभाजित करने वाला बीच का उठा हुआ भाग । ५ लंगडे के सहारे की लाठी । ६ विवाह का एक लोक गीत । ७ बच्चों का एक खेल । ८ एक ऊंची तिपाई । ९ ताने को मांड देने के लिये उसे फैलाने का जुलाहों का एक उपकरण ।

घोडो–*(न०)* १ घोड़ा । अश्व । २ सीमा चिह्न । हदबंधी का निशान । ३ बंदूक दागने का खटका । ४ शतरंज का एक मोहरा ।

घोणी–*(न०)* सूअर ।

घोदो–*(न०)* १ लकडी व हाथ की हलकी चोट । २ तीक्ष्ण वस्तु के चुभने की क्रिया । ३ रोक । अड़चन ।

घोनी–*(ना०)* बकरी ।

घोनो–*(न०)* १ बकरा । २ बकरी । *(वि०)* बहरा ।

घोबो–*(न०)* १ नेत्र की नस में होने वाला शूल । २ रह रह कर होने वाला शिर शूल । सिर दर्द । ३ रह रह कर होने वाला दर्द । ४ अंगुली आदि से आंख में लगने वाली चोट । ५ खेत में काटी हुई फसल के खड़े डंठल । खापा ।

घोबो चालणो–दे० घोबो हालणो ।

घोबो लागणो–*(मुहा०)* लकडी चुभना । तिनका चुभना ।

घोबो हालणो–*(मुहा०)* १ कनपटी या सिर में असह्य दर्द होना । २ आंख में दर्द होना । ३ आंख की नस में दर्द होना ।

घोर–*(वि०)* १ भयंकर । भयानक । २ विकराल । ३ सघन । घना । ४ अत्यधिक । ५ विकट । दुर्गम । ६ गंभीर । *(ना०)* १ मुर्दे को दफनाने का स्थान या गड्ढा । कब्र । २ नींद में होने वाला श्वास शब्द । ३ गूंज । गुंजार । ४ ढोल या नगाड़े की गंभीर ध्वनि ।

घोरणो–*(क्रि०)* १ ढोल बजाना । २ ठोकना । पीटना । ३ नींद में सांस लेने की आवाज होना । खर्राटे खींचना ।

घोरधार–*(न०)* १ प्रसिद्ध लोक देवता पाबूजी के प्रतिघाती कोळू के स्वामी धर्म की लोक निंदित उपाधि । २ घोर अंधेरा ।

घोरावणो–*(क्रि०)* १ नींद की अवस्था में जोर से खर्राटे खींचना । २ जोर से ढोल या नगाड़ा बजाना ।

घोरारव–*(न०)* १ भयसूचक आवाज । २ बहुत जोर की आवाज । घोर ध्वनि ।

घोळ–*(न०)* १ न्योछावर । उत्सर्ग । उतारा । वारीफेरी । १ न्योछावर की गई वस्तु । ३ वह पानी जिसमें कोई वस्तु हल की गई हो । पानी में मिला हुआ कोई घुलनशील पदार्थ ।

घोळ करणो–*(मुहा०)* न्योछावर करना । उतारा करना । वारीफेरी करना । उवारणो ।

घोळणो–*(क्रि०)* किसी घुलनशील पदार्थ को पानी में मिलाना । घोलना । मिश्रण करना । २ न्योछावर करना । वारना । वारणो । उवारणो ।

घोळियो–*(न०)* मट्ठा । गाढ़ी छाछ । दे० घोळचो ।

घोळीजणो–*(मुहा०)* १ पिघलना । २ न्योछावर होना । दुखी होना । मन में घुटना । मनस्ताप होना । घुटीजणो ।

घोळी जाणो–*(मुहा०)* १ न्योछावर होना । बलि होना । बलि जाना । २ बलैया लेना ।

घोळपो–*(न०)* एक तकिया कलाम । एक सखुन तकिया । बातचीत के बीच में

प्राय कई मनुष्यो द्वारा स्वभावत बोला जाने वाला एक सम्पुट। (अव्य०) १ अस्तु। अच्छु। अच्छा। भला। खैर। २ न्योछावर होता हू। वारी जाऊ। उत्सग करता हू। ३ उत्सग होता हू। बलि जाता हू। ४ उत्सग हुआ। निछावर हो गया।

घोमण-(ना०) १ घोसी की स्त्री। २ घोसी जाति की स्त्री।

घोसी-(न०) १ गायें रखने वाला। घोषिन्। २ गूजर। ३ गायें रख कर उनके दूध का बचने का धधा करने वाली एक मुसलमान जाति। ४ इस जाति का व्यक्ति।

घोघाट-(न०) कान म होने वाला घा घो का शब्द।

घ्रणा-(ना०) घृणा। ग्लानि। नफरत।

घ्रत-(न०) घृत। घी।

घ्रोणी-(न०) शूकर। सूअर।

ङ

ङ-सस्कृत परिवार की राजस्थानी वण माला के क वग का पाचवा व्यजन वण। इसका उच्चारण स्थान कठ और नासिका है। महाजनी म इसका उच्चारण 'ड' होता है। पोमाळ (पाठशाला) की बालभाषा में इसे 'रन्यो ऊमणो दूमणो' कहते हैं। 'ङ' या ङ का श द के आदि म प्रयोग नही होता।

च

च-सस्कृत परिवार की राजस्थानी वण माला के चवग का तालुस्थानीय पहला व्यजन।

च-(अव्य०) १ और। अन्य। २ एक पद पूर्णाथक वण। (न०) १ मुख। २ चन्द्रमा। ३ अग्नि।

चइ-(अव्य०) चे विभक्ति का एक रूप। के।

चइलो-दे० चोलो।

चउ-(ना०)हल का एक उपकरण। (अव्य०) सबध सूचक (षष्ठी) विभक्ति का एक चिह्न। राजस्थानी की चो और हिन्दी की का विभक्ति का अपभ्रश रूप।

चउक-दे० चोक।

चउगणउ-दे० चौगुणो।

चउथ-दे० चौथ।

चउद-(वि०) चौदह। '१४

चउपई-दे० चौपाई।

चउहट्ट-दे० चोहटो।

चऊ-(ना०) हल का एक उपकरण।

चक-(न०) १ एक अस्त्र। चक्र। २ पहिया। ३ चकवा पक्षी। ४ जमीन का बडा टुकडा। ५ दिशा। (वि०)चकित। अचभित। (ना०) ओर। तरफ।

चकचक-(ना०) १ निंदा। चर्चा। २ लोकापवाद। ३ बकवाद। ४ पक्षियों की चहचहाट।

चकचाळो-(न०) १ युद्ध। २ उत्पात। उपद्रव।

चकचूर-(न०) १ नाश। चकनाचूर।

चकित-(वि०) दग। चकित। विस्मित।
चकू-दे० चवकू।
चकोतरो-(न०) एक प्रकार का नींबू। चकोतरा।
चकोर-(न०)१ एक पक्षी। (वि०)१ साव धान। होशियार। सतर्क। २ चालाक।
चक्क (न०) १ चक्र। २ पहिया। चक्का। ३ दिशा। ४ चकवा। ५ ओर। तरफ। (वि०) चकित।
चक्कर-(न०) १ गोलाकार वस्तु। २ घेरा। ३ पहिया। चक्का। ४ फेरा। ५ हैरानी। ६ सिर घूमना। गश। चक्कर।
चक्कर आणो-(मुहा०) माथा फिरना।
चक्कर खाणो-(मुहा०)फेरा खाना। आटा मारना।
चक्कवै-दे० चक्व।
चक्की-(ना०) १ आटा पीसने का एक यंत्र। घरटी। घट्टी। २ मिठाई का थक्का। चाशनी में तैयार की हुई एक मिठाई जिसको थाली में ढालकर थक्के काट दिये जाते हैं।
चक्की फेरणो-(मुहा०) चक्की चलाना। घट्टी फेरना।
चक्कू-(न०) चाकू। छुरी।
चक्को-(न०) १ पहिया। चक्का। २ धक्का। ३ पिंड।
चक्ख-(ना०) चक्षु। आंख। नेत्र।
चक्खेव-(अव्य०) आंखों से।
चक्र-(न०) १ एक शस्त्र। चक्र। २ सुदर्शन चक्र। ३ चक्राक। ४ गोल आकृति। गोलाकार। ५ पहिया। चक्का। ६ कुम्हार की चाक। ७ पानी का भँवर। ८ सेना। ९ अंगुली के ऊपर के पोर पर बनी हुई चक्राकार रेखा। १० वातचक्र। ११ चक्कर। १२ फेरा। दौर।
चक्रधर-(न०) विष्णु भगवान।
चक्रपाणि-(न०) १ विष्णु भगवान। २ श्रीकृष्ण।
चक्रवर्ती (वि०) एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक राज्य करने वाला। सार्वभौम।
चक्रवाक-(न०) चकवा।
चक्र सुदर्शन-दे० सुदर्शन चक्र।
चक्राकार-(न०) गोलाकार।
चक्रायुध-(न०) सुदर्शन चक्र।
चक्रांकित-(न०) एक वैष्णव सम्प्रदाय। (वि०) जिसके बाहु मूल पर सुदर्शन चक्र का चिह्न अंकित हो।
चक्रित-(वि०) चकित। विस्मित।
चक्रेश्वरी-(ना०) एक देवी।
चख-(ना०) १ नेत्र। चक्षु। आंख। २ युद्ध। ३ अग्नि।
चख-अलाव-(न०) क्रोध पूर्ण नेत्र। क्रोध से जलते हुए नेत्र। क्रोध पूर्ण लाल नेत्र।
चखएक-(न०) दैत्यगुरु शुक्राचार्य। (वि०) एकाक्ष। काना। काणो।
चखचू धियो-(न०) चकाचौंध।
चखचू धी-(ना०) चकाचौंध।
चखचू धो-(वि०) छोटी आंख वाला।
चखचोळ-(न०) क्रोधाविष्ट रक्त नेत्र। क्रोधपूर्ण लाल नेत्र। रक्त वर्ण नेत्र। (वि०) १ लाल आंखों वाला। २ क्रुद्ध।
चखण-दे० चखणी।
चखणी-(ना०) १ चखने की क्रिया। २ चखने की वस्तु।
चखणो-दे० चाखणो।
चखस्रुव-(न०) सर्प। सांप।
चखाडणो-(क्रि०) चखाना।
चखाणो-दे० चखाडणो।
चखावणो-दे० चखाडणो।
चग-(न०) खींप नाम का एक जंगली क्षुप। खींपडो।
चगडोळ-दे० चकडोळ।

चगणो-(क्रि०)१ चग स भाव से की जाना। २ घाव से खून बहना।
चगतो-(न०) मुगलमान।
चगदायळ-(वि०) १ कुचला हुआ। २ घायल।
चगदो-(न०) १ घाव। क्षत। २ कुचल कर बनाया हुआ चरा।
चगाणो-दे० चिगाणो।
चगावणो-दे० चिगाणो।
चच्चो-(न०) च वर्ण। चकार।
चज-(न०) १ ढंग। रपट। २ बुरा चरित्र। ३ कपटपूर्ण आचरण। चरित्तर। ४ नखर बाजी। ५ चमत्कार की बात।
चट-(न०) लकड़ी के टूटने का शब्द। (क्रि० वि०) शीघ्र। तुरत। झट।
चटक-(ना०) १ शोभा। २ फुर्ती। शीघ्रता। ३ चमक दमक। ४ चमक। कान्ति। ५ नखरा। ६ गर्व। घमंड। ७ नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा। चिटक।
चटकणी-(ना०) सिटकनी।
चटकणो-(क्रि०) १ चट चट शब्द होना। २ उछलना। ३ टूटना। ४ चुभना।
चटक-मटक-(ना०) १ नखरा। बनाव। चटकालापन। २ रसिकता।
चटकाणो-दे० चटकावणो।
चटकावणो-(क्रि०) डंक मारना।
चटकीलो-(वि०) १ सुंदर। मनोहर। २ नखरे वाला। रंगीला।
चटको-(न०) १ बिच्छू मच्छर आदि का दंश। २ काटने या डंक मारने की क्रिया। दंशन। ३ चुभन। चटक। ४ मनोभाव।
चटको-भरणो-(मुहा०) १ किसी कीड़े या जानवर का डंक मारना या दांत से काटना। २ चुभती बात कहना।
चटको मटको-(न०) नखरा।
चटको मारणो-दे० चटको भरणो।
चटको लागणो-(मुहा०) १ डंक लगना या चुभना। २ बात चुभना।
चटणी-(ना०) १ पुदीना अदरख धनिया आदि को पीस कर बनाया हुआ व्यंजन। चटनी। २ चाटने की चीज। अवलेह।
चटपटी-(वि०)१ स्वादिष्ट। जायकादार। २ मसालेदार। (ना०) १ घबराहट। संताप। २ उतावल। शीघ्रता।
चटाई-(ना०) १ चाटने की क्रिया या भाव। २ तृण सींक, ताड़ के पत्ता आदि का बना बिछावन। सादड़ी। साथरी।
चटाणो-दे० चटावणो।
चटावणो-(क्रि०) चटाना।
चटां नटां-(ना०)लत्योरत्य। गुत्थमगुत्था। भिड़ंत।
चटियो-(न०) ढक्की। चिटियो।
चटु-दे० चिटुकी।
चटुकी-दे० चिटुकी।
चटोकड़ो-(वि०) स्वाद लोलुप। चटोरा। चटू।
चट्टान-(ना०) पर्वत का समतल भाग। विशाल पाषाण-खंड।
चट्टो-दे० चोटला।
चटभड़-(ना०) १ कलह। टंटा। २ वक वाद।
चडभड़णो-(क्रि०) १ गुस्से होना। २ ऊंचानीचा होना। ३ टूट पड़ना। भग ड़ना।
चडवो-(न०) रंगरेज। रंगारो।
चडस-(न०) १ चिलम में पीने का एक मादक पदार्थ। चरस। २ मोट। चरसा। कोस। चडो।
चडसियो-(न०) चरसा को खाली करने वाला व्यक्ति।
चडसो-दे० चडो।
चडो-(न०) चडस। मोट। कोस

चढ-उतार-*(वि०)* १ गावदुम। २ चढाई उतराई। ३ उंचाई और ढलाई।
चढण-सितवारण-*(न०)* इन्द्र।
चढणो-*(क्रि०)* १ नीचे से ऊपर को जाना। चढना। २ प्रस्थान करना। ३ हमला करना। ४ उन्नति करना। ५ सवार होना। ६ कर्ज होना। कर्ज बढना। ७ नदी, तालाब आदि के पानी का बढ़ना। ८ सेवन किये हुए मादक पदार्थ का नशा होना। ९ पदवृद्धि होना। १० अर्पित होना। किसी देवता को किसी वस्तु का भेंट धरा जाना। ११ पकाने के लिए पात्र का चूल्हे पर रखा जाना। १२ मोल बढ़ना। भाव बढना। १३ जोश में आना। १४ लेप, रंग मुलम्मा आदि का आवरण होना।
चढती-*(ना०)* १ उन्नति। उत्थान। २ बढोतरी।
चढती पडती-*(ना०)* उन्नति अवनति। उत्थान पतन।
चढतो-*(वि०)* १ तुलना में बढा हुआ। २ बढा चढा हुआ। ३ उदीयमान। ४ अधिक। ज्यादा।
चढतो आंक-*(न०)* संख्या का अगला अंक शून्य में अशुभ समझा जाता है इसलिये उसमें जोडी जाने वाली १ की संख्या। जैसे ५००) के स्थान पर ५०१) इसी प्रकार सभी शून्यांत संख्याओं में। लीलो आंक।
चढाई-*(ना०)* १ हमला। आक्रमण। २ पर्वत या भूमि का वह भाग जो क्रमशः ऊंचा हो। ऊंचाई की ओर जाने वाली भूमि। ३ ऊंचाई। ४ चढने की क्रिया।
चढाऊ-*(वि०)* १ सवारी योग्य। २ तुलना में चढता हुआ। ३ क्रमशः ऊंची होती हुई भूमि। ४ चढने वाला।
चढाक-*(वि०)* ऊंट, घोडे आदि सवारी में कुशल। चढाकू।
चढाकू-दे० चढाक। २ सवारी करने के लायक उम्र का (ऊंट, घोडा) सवारी योग्य। चढाऊ।
चढाचढी-*(ना०)* प्रतिस्पर्धा। होड।
चढाण-*(ना०)* १ चढाई। २ ऊंचाई।
चढाणो-*(क्रि०)* १ नीचे से ऊपर की ओर ले जाना। चढवाना। २ चढने में प्रवृत्त करना। ३ देवताओं को अर्पण करना। ४ सवारी कराना। ५ मंगेतर को वस्त्र और आभूषण पहिनाने की प्रथा को मनाना। ६ हंडिया, तवा आदि पात्र को चूल्हे पर रखना। ७ बही या रजिस्टर में दर्ज करना। ८ लेप, रंग मुलम्मा आदि का आवरण करना। चढावणो।
चढापा-दे० चढावो।
चढाव-*(न०)* १ पर्वत या भूमि के किसी भाग की उत्तरोत्तर ऊंचाई। चढाई। २ समुद्र के जल का बढ़ाव। ज्वार। ३ नदी आदि के पानी का बढ़ाव।
चढावणो-दे० चढाणो।
चढावो-*(न०)* १ देवता को अर्पण किया हुआ रुपया पैसा, गहना, वस्त्र इत्यादि सामग्री। २ देवता को अर्पण किया हुआ नैवेद्य। प्रसाद। ३ व्यापारी द्वारा वस्तु पर उसके वास्तविक मूल्य से अधिक मूल्य अंकित करने अथवा मूल्य के आगे और फालतू अंक बना देने का संकेत। ४ बढावा। उत्साह। ५ बहकावा।
चढी-रो पलाण-*(न०)* ऊंट पर कसी जाने वाली सवारी की काठी। सवारी का पलान।
चणक-दे० चिणक।
चणखार-*(न०)* चने के क्षुप को जला कर निकाला हुआ क्षार। चनक्षार।
चणणाट-*(न०)* १ तमाचा बेंत आदि के लगने से होने वाला दर्द। २ एक ध्वनि। ३ नाश।

चणणावणो-(नि०)१ भय, क्रोध, करुणा हर्ष शीत, आवेश इत्यादि से शरीर की रोमावली का तन कर खडा होना। २ आवेश में आना। तनतनाना। ३ 'चणण' शब्द करना। ४ जोश में आना।
चणपण-(ना०) १ शारीरिक अशांति। अस्वस्थता। २ वेदना। व्यथा। क्लेश। ३ मानसिक अशांति।
चणाई-दे० चिणाई।
चणायको-दे० चिणायको।
चणारी-दे० चिणाई।
चणोबोर-(न०) छोटा बेर। झड़बेरी का बेर।
चणो-(न०) चना। चणक।
चण्णाटिया-(न०) नाश।
चतडा-चौथ-(ना०) भादों मास की गणेश चतुर्थी।
चतरग्राह-दे० चत्रग्राह।
चतराई-दे० चतुराई।
चतुर-(वि०) १ होशियार। चतुर। २ बुद्धिमान। ३ दक्ष। निपुण। ४ व्यवहार कुशल। ५ चालाक। ६ चार। चतुर। (समास में पूर्व पद)।
चतुरता-दे० चतुराई।
चतुरपणो-दे० चतुराई।
चतुरभुज-(वि०) चार भुजाओं वाला। चत्रभुज। (न०) विष्णु भगवान।
चतुरंग-(ना०)१ शतरंज। २ चतुरंगिणी।
चतुरंगणी सेना-(ना०) हाथी घोड़े रथ और पैदल का चार अंगों वाली सेना। चतुरंगिणी।
चतुरंगिणी-दे० चतुरंगणी सेना।
चतुराई-(न०) १ पटिमा। २ चतुरपना। चतुरता। ३ चालाकी। ४ होशियारी। सावधानी।
चतुराणण-(न०) चतुरानन। ब्रह्मा। (वि०) चार मुख वाला।
चतुरानन-दे० चतुराणण।
चतुराश्रम-(न०) चार आश्रम। (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास)।
चतुर्थ-(वि०) चौथा। चौथो।
चतुर्थाश्रम-(न०) चौथा आश्रम। संन्यस्ताश्रम।
चतुर्थांश-(न०) चौथा भाग।
चतुर्थी-(ना०) १ चौथ तिथि। २ चौथी विभक्ति।
चतुर्दश-(वि०) चौदह। चवद।
चतुर्दशी-(ना०) पक्ष का चौदहवां दिन। चौदश। चवदस।
चतुर्दिश-(अव्य०) चौतरफ। चारों ओर। चारूंकानी।
चतुर्दिशा(ना०) चारों दिशाएँ। चारूंकूट।
चतुर्धाम-(न०) द्वारका, रामेश्वर जगन्नाथ पुरी और बदरिकाश्रम-ये मुख्य तीर्थ या धाम।
चतुर्भुज-(वि०) १ चार हाथ वाला। २ चार कोण वाला। (न०) १ चार कोण वाली आकृति। २ विष्णु भगवान।
चतुर्मास-(न०) आषाढ शुक्ला एकादशी से कार्तिक शुक्ला एकादशी तक की अवधि। चातुर्मास। चौमासो।
चतुर्युग-(न०) सत्य त्रेता, द्वापर और कलि-ये चार युग।
चतुर्वर्ण-(न०) ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र—ये चार वर्ण।
चतुर्वेद-(न०) ऋक् यजुर, साम और अथर्व-ये चारों वेद।
चतुर्वेदी-(न०) ब्राह्मणों का एक गोत्र।
चतुस्तन-(न०) गाय भैंस आदि चार स्तन वाला मादा पशु।
चत्र-(वि०) १ चार। २ चतुर। दक्ष। ३ धूर्त। छली। छळियो।
चत्रकोट-दे० चत्रगढ।
चत्रगढ-(न०) चित्तौड़गढ़।

चत्रधा-(वि०) चार प्रकार का। (न०) चारों ओर।
चत्रबाह-(न०) १ श्रीकृष्ण। २ चार भुजा धारी श्री विष्णु। (वि०) चार हाथो वाला। चतुभुज। चत्रभुज। चतुरबाह।
चत्रभुज-दे० चत्रबाह।
चत्रभुज वाहण-(न०) गरुड।
चत्रमास-(न०) चातुर्मास। चौमासा। चौमासो।
चत्रवाणी-(ना०)१ चारो वेद। २ ब्रह्मा।
चत्वार दिस-(न०ब०व०) चारो दिशाएँ। चारू खूट।
चदरो-(न०) चादर। चद्दर।
चनण-(न०) चदन। चदण।
चनण गोह-दे० चदण गाह।
चनण चौक-दे० चम्रणचौक।
चनरमा-(न०) चद्रमा। चाँद।
चन्नण-दे० चनण।
चन्नणगोह-(ना०) चदन के समान रग वाली एक गोह। चनणगोह।
चनणचौक-(न०) १ चदन से सुवासित चौक। २ वह चौक जिसके द्वार आदि चदन क बने हुए हो। ३ श्रीखड मडित बडा मडप। ४ सभी प्रकार से सजा हुआ आलोकित चौक।
चपक-(न०) सेना का बाया भाग।
चपको-दे० डाम।
चपटो-(वि०) जो छितराया हुआ और पतला हो। चपटा।
चपडास-(ना०) चपरास।
चपडासी-(न०) १ अरदली। २ चौकीदार। ३ नौकर। सेवक। ४ चपरासी।
चपडी-दे० चिपडी।
चपडो-(न०) १ चीनी की चाशनी को थाली म बिछाकर बनाई हुई पतली परत। २ चीनी की चाशनी से बनाई हुई पतली भिल्ली। बिडक। चिपडो। ३ साफ की हुई लाख की पतली परत। चिपडी। चपडो।
चपत-(ना०) थप्पड। तमाचा। थाप।
चपळ-(वि०) १ स्थिर नही रहने वाला। चपल। चचल। २ होशियार। चालाक। ३ फुर्तीला। उतावला। उतावळो।
चपळता-(ना०) १ चचलता। चपलता। २ होशियारी। चालाकी। ३ उतावल। फुर्ती। उतावळ।
चपळा-(ना०) १ बिजली। चपला। २ लक्ष्मी। ३ चपला स्त्री।
चपेट-(ना०) १ तमाचा। थप्पड। २ चगुल।
चपेटणो-(क्रि०)१ तमाचा मारना। ठोकना। २ भगाना।
चप्पल-(न०) खुली एडी का एक प्रकार का जूता।
चबको-(न०) १ घाव या व्रण का दद। २ रह रह कर होने वाला दद। चबक। ३ व्रण आदि को गरम शलाका से दागने की क्रिया। डभ क्रिया। डाम। ४ मम वचन। ताना। महणो। ५ मम प्रहार।
चबाणो-(क्रि०) दाँतो से कुचलना या काटना। चबाना। चबावणो।
चबावणो-दे० चबाणो।
चबीणो-(न०) चबैना। चवण। चना चबना। मू गफली सेव, चना आदि चबा कर खान की चीज।
चबूतरी-(ना०) छोटा चबूतरा। चौतरी।
चबूतरो-(न०) चबूतरा। चौतरा।
चमक-(ना०) १ प्रकाश। २ आभा। काति। ३ चौंक। झिझक। ४ भ्रम। सदेह। ५ सदेहगत भय।
चमक चूडी-(ना०) एक प्रकार का सोने या चाँदी का कगन। गोल मागरो वाली चूडी।

चमकणो-(क्रि०) १ चमकना। प्रकाशित होना। २ प्रतिभा का प्रकाश में आना। ३ ऐश्वर्य बढ़ना। ४ कीर्ति पाना। ५ चौंकना। ६ डरना। ७ सदेह करना। ८ सदेह होना।

चमकदार-(वि०) चमकीला।

चमकाणो-दे० चमकावणो।

चमकारो-(न०) १ चमक। प्रकाश। २ चमत्कार।

चमकावणो-(क्रि०) १ चमकाना। चमचमाना। २ उज्वल करना। ३ चौंकाना। ४ डराना। ५ कीर्ति फैलाना।

चमकीलो-(वि०) चमक वाला। प्रकाश वाला।

चमगादड-(ना०) चूहे से मिलती सूरत का उडने वाला एक जंतु जिसे दिन में नहीं दिखने से पेरों के बल औंधा टंगा रहता है और रात में उडता है। चमचेड।

चमचम-(ना०) जलन। चमचमाहट। चरचराट। (न०) एक मिठाई। खोए की एक बीकानेरी मिठाई। (वि०) तेज युक्त।

चमचाटक-दे० चमगादड।

चमची-(ना०) छोटा चम्मच।

चमचेड-दे० चमगादड।

चमचो-(न०) चम्मच।

चम-जू-(ना०) १ उपस्थ के बालों में उत्पन्न होकर चमडे से चिपटी हुई रहने वाली एक प्रकार की जू। चम यूका। २ पशुओं के बालों में होने वाली जू।

चमटपोस-(न०) वह हुक्का जिसका जल पात्र चमडे का होता है।

चमटी-(ना०) चमडी। त्वचा। चामडी।

चमडो-(न०) चमडा। खाल। चामडो।

चमतकार-(न०) १ करामात। चमत्कार। २ विस्मय। आश्चर्य। ३ अलौकिक क्रिया।

चमतकारी-(वि०) १ चमत्कार दिखाने वाला। चमत्कारी। २ जिसमें कोई चमत्कार हो। ३ उन्नति करने वाला। भाग्यशाली। ४ सिद्धिवान।

चमत्कार-दे० चमतकार।

चमत्कारिक-दे० चमतकारी।

चमन-(न०) १ फुलवाडी। २ बगीचा। ३ मौज।

चमर-दे० चँवर।

चमरख-(न०) सुराख वाले मोटे चमडे की एक चकती जिसमें होकर चरखे का तकला फिरता रहता है। चमरखो।

चमरखो-दे० चमरख।

चमर ढोळणो-(मुहा०) किसी देवता पर चमर फिराना।

चमरबद-(न०) १ राजा। २ शूरवीर।

चमराळो-(न०) मुसलमान। (वि०) १ वह जिसके ऊपर चँवर ढुलता हो। चँवरबद। २ चवर फिराने वाला।

चमरी-दे० चँवरी।

चमार-(न०) १ जूता बनाने वाला व्यक्ति। मोची। २ जूता गाठने वाली जाति का व्यक्ति। चमकार।

चमारण-दे० चमारी।

चमारी-(ना०) चमार जाति की स्त्री। मोचण।

चमाळियो-दे० चँवाळिया।

चमाळीस-(वि०) चालीस और चार। चवालीस। (न०) चँवालीस की संख्या। ४४।

चमाळीसो-(न०) चँवालीसवा सम्वत्।

चमीकर-(न०) सुवर्ण। सोना। चामीकर। सोनो।

चमीरळ-(न०) सोना। सुवर्ण। (वि०) सुवर्ण निर्मित।

चमू-(ना०) सेना।

चमूपत-(न०) चमूपति। सेनापति।

चमेली-(ना०) छोटे सफेद सुगंधित फूलों वाली एक लता।

चमोटो-(न०) १ चमड़े का एक टुकड़ा जिस पर उस्तरे की तेज की हुई धार को सँवारा जाता है। २ सान को घुमाने की चमड़े की लम्बी पट्टी।

चम्मड-(न०) चमड़ा। (वि०) १ चमड़े जैसा मजबूत। २ कंजूस।

चम्मडपोस दे० चमड़पोस।

चय-(न०) ढेर। राशि।

चर-(न०) १ दूत। २ दास। सेवक। ३ घास। चारा। (वि०) चलने वाला।

चरक-(न०) वैद्यक के एक आचार्य। २ चरक ऋषि का रचा हुआ चरक संहिता ग्रंथ।

चरकणो-(क्रि०) पक्षी या बच्चों का हगना।

चरकीन-(न०) टट्टी। विष्टा।

चरको-(वि०)१ जिसमें अधिक मिर्चें हों। २ चरपरा। तीखा। ३ तेज। ४ क्रोधी।

चरको फरको-(न०) मिर्च मसाला युक्त व्यंजन। तीखा फीका व्यंजन। (वि०) १ जो मीठा न हो। २ फीके स्वाद वाला। ३ मिर्च मसाले वाला।

चरख-(न०) १ तोप। २ बंदूक। ३ तोप गाड़ी।

चरखी-(ना०) १ तोप खींचने वाली गाड़ी। तोप गाड़ी। २ तोप। ३ कपास ओटने का चरखा। ४ कुएँ में से डोल खींचने की गड़ारी। घिरनी। ५ चक्कर खाने वाली एक आतिशबाजी। ६ रस्सी बटने का एक यंत्र। ७ सांड़ियों में मस्ती में आने के समय ऊँट के दांत पीसने की क्रिया या शब्द।

चरखो-(न०) १ हाथ से सूत कातने का यंत्र। चरखा। अरटियो। २ कपास लोढ़ने का एक सांचा।

चरचणो-(क्रि०) १ चरचना। लेप करना। २ चर्चा करना।

चरचरणो-(क्रि०) जलन होना।

चरचराट-(ना०) १ जलन। २ चरचर ध्वनि।

चरचराणो-क्रि० चरचरणो।

चरचरो-(वि०) चरपरा। तीखा।

चरचा-(ना०) १ चर्चा। बातचीत। २ जिक्र। वर्णन।

चरज-(न०) १ चरित्र। ढोंग। २ धोखा। ३ एक पक्षी।

चरजणो-(क्रि०) काटना। चीरना।

चरजा-(ना०) १ विशेष रागिनी जिसमें देवी की स्तुति गाई जाती है। २ देवी की स्तुति।

चरजाळी-(वि०ना०) १ ढोंगी। २ धूर्ता। ३ नखरों वाली। नखराळी।

चरजाळो-(वि०) १ ढोंगी। पाखंडी। २ धूर्त।

चरड-(अव्य०) चीरने या फाड़ने का शब्द।

चरण-(न०) १ पांव। पग। २ कविता या गायन का एक पाद। तुक। कड़ी।

चरण कमळ-(न०) कमल के समान कोमल और सुंदर चरण।

चरण कमळायनें-(अव्य०) चरण कमलों में (गुरुजनों को पत्र में लिखा जाने वाला एक पद)।

चरणरज-(ना०) चरणों की धूलि।

चरणामृत-(न०) देव मूर्ति या किसी पूज्य व्यक्ति के पांवों की धोवन। पादोदक। चरणोदक।

चरणारविंद-दे० चरण कमल।

चरणो-(क्रि०)१ पशुओं का घास चरना। घास खाना। (न०) १ एक रेशमी वस्त्र। २ जूता निकालने और पहिनाने वाला सेवक।

चरणोई-(ना०) १ चरने की जगह। २ घास। ३ विविध प्रकार की घास।

चरताळो-(वि०) १ चरित करने वाला। धूर्त। पाखंडी। चरजाळो।

चरपराट-*(न०)* १ गव । तरमराट । २ स्वाद म तीखापन । ३ घाव की जलन ।
चरपराणो-*(क्रि०)*१ जलन होना । २ तीखा लगना । चरबरणो ।
चरपरो-*(वि०)* १ तीखे स्वाद वाला । चरपरा । चरचरो । २ बहुत बालने वाला ।
चरबण-*(न०)* चबना । चबीणो ।
चरबी-*(ना०)* मद । वसा । चर्बी ।
चरभर-*(न०)* एक खल । सरभर नाम का खेल ।
चरम-*(वि०)*१ अतिम । २ पराकाष्ठा का । दे० चम ।
चरमराट-*(ना०)* १ जलन । २ अकड़ ।
चरम समाध-*(ना०)* गभोग ।
चरमी-दे० चिरमी ।
चरवरणो-*(क्रि०)* घाव का जलना । जलन होना ।
चरवादार-दे० चरवदार ।
चरवी-*(ना०)* पीतल का एक जल पात्र ।
चरवैदार-*(न०)* घोडो की देखभाल करने वाला या जगल म जानवर चराने फिराने वाला नौकर । सईस । चरवादार ।
चरवो-*(न०)* ताबे या पीतल का एक बडा जलपात्र । चरू । देग ।
चरस-*(ना०)* १ तीव्र इच्छा । उत्कट चाह । २ परम्परा । अनुक्रम । ३ उत्साह । उमग । *(न०)* १ एक मादक पदार्थ जो तबाकू की तरह चिलम म रख कर धुए के रूप म पिया जाता है । गाँजे का गोद । २ मोट । चरसा । कोश । *(वि०)* बढ़िया । अच्छा ।
चराई-*(ना०)* १ चराने की मजदूरी । २ चराने का काम ।
चराग *(न०)* चिराग । दीपक ।
चराचर-*(वि०)* स्थावर और जगम । जड और चेतन । चर अचर । *(न०)* जगत ।
चराणो-*(क्रि०)* चराना । घास खिलाना । चरावणो ।
चरावणो-दे० चराणो ।
चरित-*(न०)* १ आचरण । वर्तन । व्यवहार । २ चरित्र । ३ रीति नीति । ४ वृत्तान्त । हाल । ५ जीवनी । ६ पाखंड । ढोंग । ७ करनी । करतूत । ८ कपट ।
चरिताळी-दे० चिरताळी ।
चरिताळो-दे० चिरताळो ।
चरित्र-दे० चरित ।
चरित्रवान-*(वि०)* उत्तम चरित्र वाला । सदाचारी ।
चरी-*(ना०)*१ घास । चारा । २ हरी ज्वार आदि का चारा । ३ चरने की क्रिया । ४ घास वाली जगह । चरागाह । ५ एक जळ पात्र । चरवी ।
चरू-*(न०)* चौड़े मुँह का एक बरतन । देग । देगडो ।
चरू-मुगाळ-*(न०)* १ अधिक अतिथियो के आवागमन के कारण वह स्थिति जिसमे हर समय भोजन बनाना चालू ही रहता है । २ वह नियम जिसमे आने वाला कोई भी व्यक्ति भूखा नही जा सके । ३ किसी भी समय किसी भी अतिथि या अनाथ के आ जाने पर भोजन किये बिना नही जाने देने की उदारता । ४ अतिथि सेवा की वह व्यवस्था जिसमे किसी भी समय कोई भी आये भोजन किये बिना नही जा सकेगा ।
चर्चरी-*(ना०)* १ आनद । २ उत्सव । ३ होली पर नाच गान के साथ गाई जाने वाली फाग रागिनी ।
चर्चा-दे० चरचा ।
चर्म-*(न०)* चमड़ा । त्वचा । चामडो । खालडो ।
चर्मकार-*(न०)* १ चमार । २ मोची ।

चमचिड़ी-(ना०) चमगादड़।
चमवाद्य-(न०) ढोल नगाडा आदि चमड़े से मँढा हुआ बाजा।
चळ-(वि०) अस्थिर। चल। (ना०) खाज। खुजली। (न०) युद्ध।
चल-(वि०) अस्थिर। चलायमान। चलता हुआ। (न०) १ रिवाज। २ व्यवहार। उपयोग।
चळक-(ना०) १ चमक। चिनक। २ कांति। आभा। ३ वस्तुओं के भाव मे आने वाली तजी। तेजी। सुर्खी।
चळकणो-(न०) १ प्रकाश। चमक। २ प्रतिबिम्ब। चमक। (वि०) १ चमकने वाला। चमकीला। २ प्रकाश देने वाला। (क्रि०) चमकना। प्रकाश दना।
चनकण-(न०) घोडा।
चळकाणो-(क्रि०) चमकाना। चळकावणो।
चळकी-(ना०) चमक।
चळको-(न०) १ प्रकाश। २ प्रतिबिम्ब।
चळगत-(ना०) १ स्वभाव। २ चाल चलन। ३ रहन सहन।
चलचाल-(ना०) १ धधा। व्यापार। काम धधो। कामधधा। २ बिक्री। ३ रहन सहन।
चळचूक-(ना०) १ जान बूझ कर की हुई गलती। २ गलती। भूल। ३ धाखा। छल।
चलण-(न०) १ पाँव। चरण। पग। २ व्यवहार। ३ उपयाग। ४ स्वत्व। हक। ५ अधिकार। सत्ता। ६ प्रचार। रिवाज। व्यवहार। ७ प्रथा। रीति रिवाज। चलन। ८ रुपया पैसा आदि। सिक्का। ६ प्रचलित सिक्का। प्रचलित नाणो।
चलणसार-(वि०) १ प्रचलित। २ काम मे आने योग्य। काम चलाऊ।
चलणी-(वि०) १ जिसका चलन हो। चलनसार। चलता (सिक्का) यथा-चलणी नोट। (ना०) १ चलने की क्रिया। २ आटा छानने की चलनी। चालणी।
चलणो-(क्रि०) १ चलना। प्रस्थान करना। २ हिलना। ३ बहना। ४ जारी रहना। ५ निभना। ६ अनुसरण करना। ७ उपयोग मे लेना। ८ उपयोग मे आना। ६ आरंभ होना। शुरू होना। १० मरना।
चळणो-(क्रि०) १ विकृत होना। २ पथ भ्रष्ट होना। चलित होना। विचलित होना। ३ डिगना। डिगणो। पतित होना।
चळदळ-(न०) १ पीपल वृक्ष। २ पीपल का पत्ता।
चळपत्र-(न०) १ पीपल वृक्ष। अश्वत्थ। २ पीपल का पत्ता।
चळवळणो-(क्रि०) १ घबराना। घबरावणो। २ विचलित होना।
चळवळाट-(न०) १ घबराहट। २ तनमनाट।
चळविचळ-(वि०) १ चलायमान। डाँवा डोल। अस्थिर। २ अस्त व्यस्त। ३ घबराया हुआ।
चळस-दे० फशन।
चळा-(ना०) १ लक्ष्मी। २ बिजली। ३ पृथ्वी। ४ स्त्री।
चलाऊ-(वि०) १ साधारण। २ साधारण उपयोग की। ३ व्यवहार मे आने योग्य।
चलाक-(वि०) १ चालाक। धूर्त। चाल बाज। २ होशियार।
चलाकी-(ना०) १ चालाकी। धूर्तता। चालबाजी। २ होशियारी।
चलाचली-(ना०) १ जन्म मरण। आवा गमन। २ व्यग्रता। घबराहट। ३ चलने की तैयारी।

चलाण-*(न०)* १ पुलिस द्वारा अपराधी को पकड़ कर न्यायालय में उपस्थित करने का काम। २ माल को एक स्थान में से दूसरे स्थान पर भेज जाने का काम। ३ रेलवे से बाहर भेजे जाने वाले माल की गिनती तोल आदि की नोंध का भरा जाने वाला फार्म। चलान। रवन्ना। ४ बाहर से आये हुए माल की रेलवे की रसीद।

चलाणो-देo चलावणो।

चलावणो-*(क्रि०)*१ चलाना। २ हिलाना। ३ हाँकना। ४ बहाना। ५ निभाना। ६ काम में लेना। ७ जारी रखना। ८ गतिमान करना। ९ प्रचलित करना। १० प्रहार करना।

चलायमान-*(वि०)* १ विचलित। २ चलने वाला। ३ चलता हुआ। ४ चपल।

चळीजणो-*(क्रि०)* पतन होना। पथभ्रष्ट होना।

चळुअळ-देo चळूळ।

चळुवो-*(न०)* १ रक्त। २ चुल्लू। अंजली।

चळू-*(न०)* १ भोजन के बाद का आचमन। चुल्लू। २ अंजली। चळुवो। ३ भोजन के बाद हाथ मुँह धोने की क्रिया

चलू करणो-*(मुहा०)* चालू करना। शुरू करना। आरंभणो।

चळू करणो-*(मुहा०)* भोजन करके हाथ मुँह धोना। चुल्लू करना।

चळूळ-*(न०)* १ रक्त। खून। २ मुसलमान। ३ युद्ध।

चळेवो-*(न०)* १ मृतक का क्रिया कर्म। २ मृतक भोज।

चळो-*(न०)* घोड़े गधे आदि उन पशुओं का मूत्र जिनके खुर फटे हुए नहीं होते हैं।

चव-*(न०)* १ मोतियों को तोलने का एक तोल। मोती आदि रत्नों को तोलने का बहुत छोटा एक तोल। २ कथन। बात। ३ खबर। संदेश। *(वि०)* चार।

चवडै-देo चौड़े।

चवडो-देo चौड़ो।

चवणो-*(क्रि०)* १ कहना। २ चूना। टपकना। झरणो। चूवणो।

चवत्थो-*(वि०)* चौथा। चौथो।

चवथ-*(वि०)* चौथा। चतुर्थ।

चवदमो *(वि०)* चौदहवा।

चवदस-*(ना०)* पक्ष का चौदहवाँ दिन। चतुर्दशी। चौदस।

चवदत-*(न०)* प्रकट। *(अव्य०)* प्रत्यक्ष रूप में।

चवदे-*(वि०)* दस और चार। १४। *(न०)* चौदह की संख्या। १४।

चवदोतर सो-*(न०)* पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ चौदह (११४) की संख्या।

चवदोतरो-(न०) चौदहवाँ वर्ष।

चवरासियो-*(न०)* चौरासी गाँवों का जागीरदार। बड़ा ठाकुर। २ लोकगीतों का एक नायक। ३ चौरासीवाँ वर्ष।

चवरासी-देo चोरासी।

चवरी-*(ना०)* चौरी। विवाह-वेदी।

चवग-*(न०)* च छ ज झ, ञ-इन पाँच तालुस्थानी व्यंजनों का वर्ग। 'च' समाम्नाय। च समाम्नाय के पाँच वर्ण।

चवळेरी-देo चँवळेरी।

चवळो-देo चँवळो।

चवाण-*(न०)* १ चौहान राजपूत। २ किसी जाति की अल्ल या अटक।

चश्म-*(ना०)* आंख।

चश्मदीद-*(वि०)* प्रत्यक्षदर्शी। आंखों से देखा हुआ।

चश्मो-*(न०)* १ ऐनक। २ स्रोत। सोता।

चसक-*(ना०)* रह रह कर होने वाला दर्द। चबको।

चसकणो-*(क्रि०)* रह रह कर दर्द होना। चबचणो।

चसको-*(न०)* १ चसका। लत। २ व्यसन। ३ भटका देकर उठने वाली पीड़ा। ४ रह रह कर उठने वाला दर्द। चबको।

चसणो-*(क्रि०)* १ दीपक जलना। दीपक का प्रकाशित होना। २ दीपक का प्रकाश होना। ३ प्रकाशित होना। ४ बंदूक का छूटना।

चसम-*(ना०)* आँख। चश्म। नेत्र।

चसमाण-*(ना०ब०व०)* आँखें। चक्षुद्वय।

चसमो-*(न०)* १ चश्मा। ऐनक। २ झरना। स्रोत। झरणो।

चसळक-दे० चसळको।

चसळको-*(न०)* १ बैलगाड़ी के चलने पर उसके पहिये में अथवा कुएँ पर मोट निकालते समय भमण में होने वाला शब्द। २ मस्ती में आये हुए ऊँट के दाँत पीसने से होने वाला शब्द। चसळक। ३ दर्द। पीड़ा। पीड़।

चसवाणो-दे० चसावणो।

चसाणो-दे० चसावणो।

चसावणो-*(क्रि०)* १ दीपक जलाना। दीपक से प्रकाश करना। २ बंदूक छोड़ना। ३ आग जलाना।

चह-*(ना०)*१ चिंता। आरोगी। २ इच्छा। चाह। *(वि०)* गुप्त।

चहक-*(ना०)*१ पक्षियों का शब्द। २ दर्द। पीड़ा।

चहकणो-*(क्रि०)* १ उमंग में बोलना। २ पक्षियों का कलरव करना। ३ दर्द होना। दर्द उठना।

चहचद-*(न०)* १ आनंद। २ उत्सव। उच्छव।

चहटणो-*(क्रि०)* चिपटना। चिपकना। चटणो।

चहन-*(न०)* १ रोने का ढाग। ढकला। २ शिशु के आने आप हँसने, अव्यक्त शब्द बोलने आदि के प्रति लक्षण। ३ चिह्न।

चहवचो-*(न०)* पानी का हौद। कुंड। बड़ बच्चा।

चहर-*(ना०)*१ निंदा। बदनामी। २ खेल। तमाशा। ३ बाजीगर। मदारी। ४ ठाट बाट। आनंदोत्सव। चहल। ५ पक्षियों का कलरव। ६ भाँति २ के पक्षियों का समूह। पक्षी समूह। ७ कलह। ८ व्यंग्य। *(वि०)* श्रेष्ठ।

चहरो-*(न०)* १ चहरा। सूरत। शक्ल। २ मुख। मुँह। ३ मुँह पर पहनने की कोई मुखाकृति। मुखौटा। ४ निंदा। अपकीर्ति।

चहल-*(न०)* १ आनंद। मौज। २ पक्षियों का कलरव। ३ सीमा। *(अव्य०)* आनंद से। मौज में। *(क्रि०वि०)* इधर उधर।

चहल पहल-*(ना०)* १ आनंदोत्सव की सजीवता। २ उत्सवीय वातावरण। ३ रौनक। चमक दमक।

चहळाकणो-*(क्रि०)* १ बिजली का चमकना। २ चमकना।

चहळावळ-*(ना०)* चमक। प्रकाश।

चहाव-*(ना०)* १ इच्छा। अभिलाषा। २ उत्साह। उमंग।

चहावणो-*(क्रि०)* चाहना। इच्छा करना।

चहीजणो-*(क्रि०)* १ आवश्यकता होना। २ चाहिये।

चहीजै-*(अव्य०)* १ चाहिये। २ उचित है। ३ आवश्यकता है।

चहुँ-*(वि०)* १ चारों। चारोंही। २ चार।

चहुँगमाँ-*(अव्य०)* चारों ओर।

चहुँवक-*(अव्य०)* १ चारों दिशाएं। २ चारों दिशाओं में। ३ चारों ओर।

चहुँदिस-(अव्य०) चारों दिशाएँ। सब ओर।

चहुँवा-दे० चहुँगमा।

चहुँवळ-दे० चहुँगमा।

चहुँव-(अव्य०)१ चारों ओर। २ चारों ही।

चहुँवप्रमा-दे० चहुँगमा।

चहुँवचर्ना-दे० चहुँगमा।

चहुँवळी-दे० चहुँगमा।

चग-(न०) १ एक प्रकार का उग। यग इग। २ पतग। ३ पतग की पूछ।

चगारा-(न०) गामूत्र। चौंगास।

चगामणो-(वि०) गाय का मूता। चौंगासणो।

चगी-(वि०) १ उत्तम। २ स्वस्थ। ३ सुदर।

चगुन-(न०) १ पजा। २ पत्र।

चगो-(वि०) १ अच्छा। उत्तम। २ स्वस्थ। तदुरस्त। ३ सुदर। ४ मजबूत। ५ पवित्र। (स्त्री० चगी)।

चच-(ना०) चाच। चचु।

चचरी-(ना०) भौंरी। भमरी।

चचरीक-(न०) भौंरा। भमरो।

चचळ-(वि०) १ चुलबुला। चपल। २ चलायमान। गतिशील। अस्थिर। ३ चालाक। होशियार। ४ तेज। फुर्तीला। ५ क्षणिक। फानी। (न०) १ घोड़ा। २ मन। ३ पारा। ४ पवन। (ना०) १ बिजली। २ मछली। ३ माया।

चचळता-(ना०) १ चपलता। चुलबुलापन। २ गतिशीलता। अस्थिरता। ३ तेजी। फुर्ती। चचळाई।

चचळा-(ना०) १ बिजली। २ लक्ष्मी। ३ माया। ४ मछली। ५ घोडी। ६ चचल स्त्री। (वि०) अस्थिर। चलायमान।

चचळाई-(ना०) चचलता। अस्थिरता।

चचाणी-(ना०)१ चील पक्षी। २ गिद्धनी। ३ मासाहारी पक्षी।

चगाट-(न०) १ घोडा। २ घोडे का समूह। अश्व समूह। ३ पत्नी। ४ हाथी।

चगाळी-दे० पचाणी।

चगु-(ना०) चाच। चूच।

चट-दे० चट।

चटेल-दे० चटेल।

चड-(ना०)१ चडिका देवी। चडी। (वि०) १ विकट। भयकर। २ बलवान। ३ उग्र। ४ क्रोधी। ५ उद्धत।

चडका-दे० चडिका।

चड-डाक-(ना०)१ युद्ध चडिका का वाद्य। २ भय या युद्ध की चेतावनी देने वाला बाजा।

चडा-(ना०) उग्र स्वभाव की स्त्री। कर्कशा। कलहसा।

चडाई-(ना०) १ उग्रता। २ प्रबलता। ३ नानागरी। ४ बेईमानी। ५ बदमाशपना। ६ अत्याचार। ७ ऊधम। ८ शीघ्रता।

चडातक-(न०) लहँगा।

चडाळ-(वि०) १ चाण्डाल। क्रूर। २ निर्दय घातक। ३ पापी। ४ जल्लाद। ५ पतित। ६ उग्र क्रोधी। (न०) एक अन्त्यज जाति। चाण्डाल। डोम। २ जल्लाद।

चडाळ-चौकडी-(ना०) १ कुकर्म करने वालों की टोली। २ षडयन्त्रकारियों की मडली। गुण्डाटोली।

चडाळण-(ना०) १ चाण्डाल जाति की स्त्री। २ चाडाल स्त्री। (वि०) क्रूर स्वभाव वाली।

चडाळणी-दे० चडाळण।

चडाळी-(ना०) १ क्रोध। २ उग्र क्रोध।

चडावळ-दे० चन्दावळ।

चडिका-दे० चडी।

चडी-(ना०) १ चडिका देवी। दुर्गा। २ कर्कशा स्त्री। (वि०) कर्कशा।

चडीश–*(न०)* महादेव । शिव ।
चडू–*(न०)* अफीम का किवाम जो तवाकू की तरह नशा करने के लिये चिलम मे पिया जाता है ।
चडूखानो–*(न०)* चडू पीने का नशाबाजो का स्थान ।
चडूल–*(ना०)* एक चिडिया ।
चडोळ–*(ना०)* एक प्रकार की पालकी ।
चद–*(न०)* १ चद्रमा । चांद । *(ना०)* एक रागिनी । *(वि०)* कुछ । थोडे । थोडे से । २ कई एक ।
चदगी–*(ना०)* १ रुपया-पैसा । २ बहुत थोडा पसा ।
चदण–*(न०)* चदन । श्रीखड । सदल । चनण ।
चदणगिर–*(न०)* चदनगिरि । मलयाचल । मलयगिरि ।
चदणगोह–*(ना०)* एक प्रकार की गोह । चदनगोह ।
चदणहार–*(न०)* १ चदनहार । २ चन्द्र हार ।
चदणिया–*(वि०)*चदन के समान रगवाला । चदनी । चदनिया ।
चदन–दे० चदण ।
चदनाम–दे० चदनामो ।
चदनामो–*(न०)* यावच्चन्द्र प्राप्त की हुई ख्याति । यावच्चन्द्र बनी रहने वाली कीर्ति । २ ऐसा काम जिसकी ख्याति यावच्चद्र बनी रहे । ३ कीर्ति । यश ।
चदप्रहास–दे० चद्रप्रहास ।
चदमुखी–*(वि०)* चन्द्रमा के समान मुख वाली । चद्रमुखी । चद्राननी ।
चदरमा–*(न०)* चद्रमा ।
चदरवो–*(न०)* चदोवा ।
चन्दळाई–दे० चदळेवो ।
चदळियो–दे० चदळेवो ।
चदळेवो–*(न०)* चौलाई । चदळियो ।
चद वदनी–दे० चदमुखी ।
चद वरदाई–*(न०)*डिंगल महाकाव्य पृथ्वी राज रासो का रचयिता प्रसिद्ध महाकवि चदवरदायी ।
चदवो–दे० चदरवो ।
चदाणणी–*(वि०)* चन्द्रवदनी । चद्राननी ।
चदावदनी–दे० चदाणणी ।
चदावळ–*(ना०)* सेना का पीछे का भाग । २ चाद्रायण व्रत ।
चदो–*(न०)* १ किसी काय की सहायता के लिये कई व्यक्तियो से उगहाया हुआ धन । चदा । २ पत्र पत्रिकाओ का वार्षिक मूल्य । ३ सदस्य शुल्क । ४ चद्रमा ।
चदोल–*(न०)* १ सेना का पिछला भाग । चदावळ । २ एक प्रकार की पालकी ।
चदोवो–*(न०)* चदोवा । चदरवो ।
चद्र–*(न०)* १ चन्द्रमा । चाद । २ मोर पाँख का चन्द्राकार चिन्ह या भाग । चद्रक । ३ एक की सख्या । ४ शकुन तथा योग के अनुसार बाएँ नासाछिद्र से चलने वाला श्वासोच्छ्वास । चद्रस्वर ।
चद्रकळा–*(ना०)* चद्रिका । चाँदनी । चानणी ।
चद्रग्रहण–*(न०)* चद्रमा का ग्रहण ।
चद्रदुरग–*(न०)* चितौडगढ का एक नाम । चद्रदुग ।
चद्रप्रहास–*(ना०)* तलवार ।
चद्रबिंदु–*(न०)* सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगने वाला अर्ध चन्द्राकार और बिन्दु । 'ँ' ऐसा चिन्ह । अर्धबिन्दु ।
चद्रमा–*(न०)* चद्र । इदु । शशि । । चाँद ।
चद्रमुखी–दे० चदमुखी ।
चद्रमौलि–*(न०)* महादेव ।
चद्रवार–*(न०)* सोमवार ।
चद्रवो–दे० चदरवो ।
चद्रशेखर–*(न०)* महादेव ।
चद्रहार–*(न०)*१ रत्नहार । २ एक प्रकार का हार ।

हास–*(ना०)* १ तलवार। २ रावण की तलवार का नाम। ३ एक भक्त का नाम।

हास–*(न०)* चद्रहार। हार।

एणी–दे० चदाणणी।

ायणो–*(न०)* एक छद।

ुवो–दे० चदोवो।

ोदय–*(न०)* १ चद्रमा का उदय। २ एक रसौषधि।

क–*(न०)* चपा का वृक्ष अथवा पुष्प।

कळी–*(ना०)*१ गल का एक आभूषण। २ चप के फूल की कली।

कवरणी–दे० चपावरणी।

णो–*(क्रि०)*१ दबाना। २ पर चापना। ३ पकडना। ४ हराना। ५ लज्जित होना। ६ लज्जित करना। ७ छिपना।

पत–*(वि०)* लुप्त। गायब।

पाई–*(वि०)* चपा के रग के समान।

पा वरणी–*(वि०)* १ चपा के फूल के समान वर्ण वाली। गौर वर्ण वाली।

पी–*(ना०)* पाव दबाने का काम।

पू–*(न०)*गद्य पद्य मय का य। वह साहित्य कृति जिसम गद्य पद्य दोनो हो।

पेल–*(न०)* १ चप का तेल। २ चमली का तेल।

पेनी– *(ना०)* चमली।

पो–*(न०)* चम्पे का वृक्ष या फूल। चपा। चपक।

बळ–*(ना०)* कोटा के पास होकर बहने वाली राजस्थान की एक नदी जो विध्याचल पर्वत से निकलती है और यमुना म मिल जाती है। चमण्यवती। चम्बल।

बु–सुराही। भुडको।

वर–*(न०)* चमर। चामर।

चवरगाय–*(ना०)* वह गाय जिसके पूछ के बालो से चमर बनता है।

चँवरी–*(ना०)* १ लग्न मण्डप। विवाह वेदी। २ घोडो क पूछ के बालो की बनाई हुई चमरी। चमरी।

चँवरीदापो–*(न०)*१ विवाह का एक नेग। २ विवाह का एक राज कर।

चँवरीलाग–दे० चँवरी दापो।

चँवळेरी–*(ना०)* चौले की फली।

चँवळो–*(न०)* चौला। चवळो।

चँवाळियो–*(न०)* मकान के छत की पत्थर की पट्टियो तथा भारी पत्थर को उठाकर ऊपर रखने वाला मजदूर।

चा–*(प्रत्य०)* प्राय का य म प्रयुक्त छठी विभक्ति का बहुवचन रूप। के।

चाउडा–*(ना०)* चामुडा।

चाऊ–*(वि०)* १ मिष्ठान्न खाने की आदत वाला। २ खूब खाने वाला। ३ रिश्वत लेने वाला।

चाक–*(ना०)* १ बागा (जामा) का घेरवाला नीचे का भाग। २ कुम्हार का बरतन बनाने का चक्र। ३ बडी चक्की। ४ चक्र। ५ पहिया। ६ बोड पर लिखने की खडिया मिट्टी की पेन। *(वि०)* १ स्वस्थ। चगा। २ मस्त। मदोमत्त। ३ सावधान। सचेत। सतर्क। ४ तृप्त। ५ ठीक। दुरस्त। ६ सज्जित। ७ प्रसन्न। कुशल। राजी खुशी।

चाकर–*(न०)*१ नौकर। सेवक। २ दास। ३ गोला। ४ एक जाति। गोला जाति।

चाकराणी–*(ना०)* १ चाकरनी। नौकरानी। २ दासी। ३ गोली।

चाकरी–*(ना०)* १ सेवा। २ नौकरी।

चाकली–*(ना०)* चक्की।

चाकी–*(ना०)* १ चक्की। घट्टी। २ टिकिया।

चाकू–*(ना०)* चक्कू। छुरी। छरी।

चाख–*(ना०)* १ नजर। दृष्टि दोष। दीठ। २ आँख। *(वि०)* प्रसन्न। *(अव्य०)* राजी

खुशी। कुशल क्षेम। मजे में। प्रसन्न हो। (कुशल समाचार)

चागडी-(ना०) १ खड़ाऊ। पांवड़ी। २ पखरी के गीत (कील) के ऊपर रहने वाला लकड़ी का टुकड़ा जो पखरी के ऊपर के पाट के सुराख में लगा रहता है। मांकड़ी। ३ बांस की पट्टी जो टूटी हुए अंग पर बांधी जाती है।

चाखणो-(क्रि०) १ चखना। स्वाद लेना। २ अनुभव करना। ३ फल भुगतना।

चागर-(ना०) १ प्रेम। लाड। २ वार्ता लाप। ३ प्रेम मिलन।

चाच-(न०) १ सिर। २ मुँह।

चाचर-(ना०) १ करतल ध्वनि के साथ गाते हुए किया जाने वाला समूह-नृत्य। ताली के साथ ताल मिलाते हुए किया जाने वाला समूह-नृत्य और गायन। २ ताली के साथ स्त्रियों का समूह नृत्य और गायन। ३ नृत्य। नाच। ४ संगीत। ५ खेल तमाशा। ६ वसंत ऋतु की एक राग। होली-गीत। ७ चाचर खेलने का चौक। ८ मंदिर के आगे का चौक। ९ होली का हुड़दंग। १० हो हल्ला। ११ बड़ा ढोल। १२ बड़ा डफ। चंग। १३ शिखर। १४ मस्तक। १५ युद्ध भूमि। रणक्षेत्र। १६ श्मशान भूमि।

चाचरो-(न०) १ सिर। २ सिर का अग्र भाग। ३ कपाल। खोपड़ी। ४ भग। योनि।

चाची-(ना०) चाचा की पत्नी। काकी।

चाचो-(न०) बाप का छोटा भाई। काको।

चाट-(न०)१ व्यसन। २ लत। ३ चाटने की वस्तु। ४ चटपटी वस्तु। ५ प्रबल इच्छा। ६ लालुपता।

चाटण-(ना०) चाटी जाने वाली वस्तु। चटनी।

चाटणो-(क्रि०) १ चाटना। २ स्वाद लेना। ३ खा जाना। ४ पोंछ कर खा लेना। ५ गाय आदि का बछड़ा बछड़े को जीभ से चाटना। प्यार से जीभ फेरना।

चाटाळ-(वि०) १ चाटने खाने बिना दुहाने नहीं देने वाली (गाय या भैंस)। २ रिश्वतखोर।

चाटू-(वि०)१ चापलूस। २ चाटने वाला। चटोकड़ो।

चाटो-(न०) गाय, भैंस के लिए घास की कुतर (महीन टुकड़ा) के साथ बाजरी, ग्वार, गुड़ आदि मिश्रण का रखा हुआ एक खाद्य। बांटो।

चाठ-(ना०) १ पहाड़ का समतल भाग। २ पहाड़ पर चढ़ाई का चिपटा समतल भाग। पहाड़ का ढलवां समतल भाग। चौठ। ३ लंबा चौड़ा चिपटा पत्थर।

चाठो-(न०) १ चोट व्रण आदि का निशान। २ चकत्ता। दाग। ३ ददोरा। चपटी सूजन। ४ चिह्न। निशान।

चाड-(ना०) १ पुकार। २ सहायता। रक्षा। ३ रक्षार्थ पीछे दौड़ना। वाहर। ४ युद्ध। ५ चुगली। ६ धोखा। दगा। ७ इच्छा। चाह। ८ कुएँ में से पानी खींचने के लिये मुंडेर के सहारे खड़े रहने का स्थान।

चाडकी-(ना०) छोटी मटकी। चाडी।

चाडवो-देo चाडो।

चाडव-(न०) १ कवि। २ चारण।

चाडियो-(न०) मिट्टी का छोटा जल पात्र। (वि०) चुगलखोर।

चाडी-(ना०)१ चौड़े मुँह की छोटी मटकी। २ चुगली। ३ शिकायत। ४ सहायता।

चाडीखोर-(वि०) चुगली करने वाला।

चाडो-(न०) चौड़े मुंह का मटका। चौड़े मुंह का बड़ा घड़ा। मिट्टी का बड़ा

घडा । २ चौड़े मुँह का दही बिलोने का मटका ।

चाढ-(ना०) १ आक्रमण । २ सहायता । मदद । मदत । ३ सहायता की माग । ४ अभिलाषा । इच्छा । अभळाखा ।

चाढणा-जळ-(वि०) १ कीर्ति प्राप्त करने वाला । २ वश की कीर्ति को बढ़ाने वाला ।

चाढणो-दे० चढाणो ।

चाणक-(ना०) चाणक्य । कौटिल्य । (क्रि० वि०) अचानक । सहसा ।

चाणचक-(क्रि०वि०) अचानक । एकदम ।

चातक-(न०) पपीहा । सारग ।

चातर-(वि०) चतुर ।

चाती-(ना०) फोड़े फुन्सी पर चिपकाई जाने वाली मरहम की थिगली । पट्टा ।

चातुर-दे० चातर ।

चातुमास-(न०) चौमासा । वर्षा के चार मास । चौमासो ।

चातक(वि०) चतुर । होशियार । (न०) चातक ।

चातग-दे० चातक ।

चात्रण-(न०) नाश । सहार ।

चात्रणो-(क्रि०) १ नाश करना । २ हराना । हराणो ।

चादर-(ना०) १ तालाब नदी आदि में फैले हुये पानी की सतह । २ ऊपर से गिरने वाली पानी की चौड़ी धारा । ३ ओढ़ने या बिछाने का कपड़ा । दुपट्टा । चद्दर । ४ धातु का पत्रा । ५ मुकाम । डेरा ।

चादरो-(न०) ओढ़ने तथा खाट पर बिछान का वस्त्र ।

चानणी-दे० चाँदणी ।

चानणा-(न०)प्रकाश । चाँदना । उजाला ।

चानणोपख-(न०)१ शुक्लपक्ष । सुदपख । २ अनुकूल समय या वातावरण ।

चाप-(ना०)१ आहट । खुड़को । पदचाप । २ दीवाल की चुनाई में लगाया जाने वाला चपटा पत्थर । (न०) धनुष ।

चापट-(ना०) १ चपेट । तमाचा । थप्पड़ । २ चापड़ । धूलो । ३ भाग दौड़ ।

चापटणो-(क्रि०) १ भागना । २ थप्पड़ मारना ।

चापटो दे० चपटो ।

चापड़-(न०) १ गढ़े के गारे का चोकर । धूलो । चापट । २ दौड़ने की क्रिया । दौड़ । ३ युद्ध ।

चापड़णो-(क्रि०) १ भागना । २ युद्ध करना । लड़ना । ३ भयभीत होना । डरना । बीहणो ।

चापड़ो-दे० चाड़ो ।

चापधारी-(न०)धनुषधारी श्री रामचद्र ।

चापर (ना०) शीघ्रता ।

चापर करणो-(मुहा०) १ जल्दी करना । २ उतावल करना ।

चापळी-(ना०) १ बिजली । २ लक्ष्मी ।

चापलूस-(वि०) खुशामदी । खुसामदियो ।

चापलूसी(ना०) खुशामद ।

चाबखो-(न०)१ चाबुक । कोड़ा । कोरड़ो । २ मार्मिक वचन । ३ तीव्र प्रेरणा ।

चाबणो-(क्रि०)दाँतों से कुचलना । चबाना ।

चाबी-(ना०) १ कुजी । कूँची । ताली । २ घड़ी चालू करने का एक पुर्जा ।

चाबुक-(ना०) कोड़ा । कोरड़ो ।

चाम-(न०) १ चमड़ा । त्वचा । खाल । २ खेत में हल चलाकर निकाली हुई रेखा । हल चलाने से हल की फाल से बनी हुई रेखा या नाली । सीता । कूड । ओळ । ३ खेत के किनारों की आड़ी निकाली हुई हल की रेखाएँ । आडी ओळा ।

चामकस-(न०) १ एक घास । २ बहुत फलियों वाला एक पौष्टिक वनस्पति का छत्ता । बहुफळी । बोफळी ।

चामचोर-*(वि०)* व्यभिचारी ।

चामचोरी-*(ना०)* व्यभिचार । पर स्त्री गमन ।

चामजू -*दे०* चमजू ।

चामडियाळ-*(न०)* मुसलमान ।

चामडियो-*(न०)* चमड़े या काम करने वाला । चमार । चमकार । खालडियो ।

चामडी-*(ना०)* चमडी ।

चामडो-*(न०)* १ चमडा । खाल । २ त्वचा । चमटी । ३ मरे हुए पशु का चमडा । खालडो ।

चामण-*(ना०)* आँख ।

चामणी-*दे०* चामण ।

चामर-*दे०* चवर ।

चामरस-*(न०)* सभोग सुख ।

चामसुख-*दे०* चामरस ।

चामरियाळ-*(न०)* १ मुसलमान । २ घोडा ।

चामरी-*(न०)* घोडा ।

चामळ-*(ना०)* चम्बल नदी ।

चामीकर-*(न०)* सोना । सुवर्ण ।

चामीर-*दे०* चामीकर ।

चामुडा-*(ना०)* चामुडा देवी । दुर्गा का एक स्वरूप ।

चामोटो-*दे०* चमोटो ।

चाय-*(ना०)* १ एक पौधा तथा उसकी पत्तियाँ । २ इस पौधे की सूखी पत्तियो को गरम पानी मे डालकर बनाया जाने वाला गरम पेय ।

चायना-*(ना०)* १ चाहना । इच्छा । २ आवश्यकता ।

चायलवाडो-*(न०)*बीकानेर जिले का चायल जाति के जाटो का प्रदेश ।

चार-*(वि०)* तीन और एक । *(न०)* चार की सख्या । '४ *(ना०)* घास । चारो । चड ।

चारखाणी-*(ना०)* जरायुज, उद्भिज अड... और स्वेदज प्राणियो के उत्पन्न होने ... ये चार प्रकार ।

चारखूट-*(ना०)* १ चारों दिशाएँ । ... चौखूट ।

चार चाँद लागणो-*(मुहा०)*प्रतिष्ठा शोभ... इत्यादि म वृद्धि होना ।

चार-छांतो-*(न०)*घास कडबी आदि पशुओं... के चरने की सामग्री । चार डोको ... चारो ।

चारजामो-*(न०)* घोड़े या ऊट की पीठ प... कसा जाने वाला सवार के लिए आसन ...

चारटोरो-*(न०)* अन्न व अतिरिक्त कृ... द्वारा प्राप्त होने वाला पशुओ के लिये... घास चारा आदि । खेती से उत्पन्न होने... वाले नाज का अतिरिक्त भाग । कडबी... कडब चार छांतो ।

चारण-*(न०)* १ क्षत्रियो का यशोगान... करने वाली एक जाति । २ इस जाति का... मनुष्य ।

चारणिया बट-*(न०)*जागीरी की वह प्रथा... जिसम (पाटवी और थाटवी) सभी भाइयो... म जागीरी व भूमि का समान बटवारा... किया जाता है । सभी भाइयो मे गाँव... और जमीन के समान बँटवारे की प्रथा ।

चारणी-*(ना०)* १ चारण की स्त्री । २ ... चालनी । *(वि०)* चारण सबधी ।

चारणो-*(क्रि०)* चराना । घास खिलाना । *(न०)* चालना । बडी चलनी ।

चार धाम-*(न०)* भारत की चार दिशाओं... मे चार बडे तीर्थ—पूर्व मे जगन्नाथपुरी... दक्षिण म रामेश्वर पश्चिम म द्वारका... और उत्तर मे बदरीनाथ ।

चारपाई-*(ना०)* खाट । माँचो ।

चारभुजा-*(न०)* राजस्थान का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान । वल्लभ सप्रदाय का एक तीर्थ स्थान ।२ चारभुजा भगवान ।

चार-बीसी-(वि०) बीस का चार गुना। अस्सी। ८०

चारासी-(ना०) चार आना का सिक्का। चवन्नी।

चारु-(वि०) सुन्दर। सुडौल।

चारू-(वि०) चारों। चारु ही। चार के चार।

चारू तरफी (क्रि०वि०) चारों ओर।

चारू मेर-(क्रि०वि०) चारों ओर। चौतरफ। चारूकानी।

चारो-(ना०) १ घास। चारा। २ किसी एक बात के विषय में भिन्न प्रकार विधियों का मिलान। विकल्प। ३ उपाय। चारा। तदबीर। ४ बस। अधिकार।

चारोतरसो-(ना०) पहा० में बोला जाने वाला एक सौ चार (१०४) की संख्या।

चारोळी-(ना०) १ एक प्रकार का बढ़िया पकवान जिसका पत्ते पर टहाम पाकर [illegible] जाते हैं। (पीव री) लड्डू। २ नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा। ३ चिरौंजी।

चार्वाक-(ना०) १ एक प्राचीन नास्तिक तत्व विचारक। एक नास्तिक तार्किक। २ नास्तिक दर्शन।

चाल-(ना०) १ रिवाज। प्रथा। २ गति। रफ्तार। ३ चलने का ढंग। चाव। ४ विधि। [illegible] ५ छल। कपट। ६ शतरंज आदि के खेल में दांव चलने की बारी। ७ अनुकरण। नकल।

चाळ-(ना०) १ अंगरखा आदि का दामन का निचला भाग। २ कमर बांधने का कपड़ा। ३ वस्त्र का छोर। अंचल। दामन। ४ [illegible] ५ युद्ध। ६ [illegible] ७ प्रांत। परगना। ८ स्वर्ग पातालादि लोक। ९ कमर।

चालक-(वि०) चलाने वाला।

चाळक-(ना०) १ देवी। २ चावण्ड नाम की देवी। ३ देवी का वाहन। सिंह।

चाळकाण-दे० चाळकाणो।

चाळकनेची-(ना०) चावण्डा।

चाल करणो-(मुहा०) धावा करना।

चाळकाय-दे० चाळकाणी।

चालचलगत-(ना०) १ चालचलन आचरण। २ चरित्र।

चालचलण-(ना०) आचरण। व्यवहार। चरित्र। चालचलन।

चाल चलणी-(मुहा०) धोखा देना।

चालढाल-(ना०) १ चालचलन। २ रंग ढंग। तौर तरीका।

चाळणी-(ना०) चलनी। छलनी।

चालणी-दे० चलणी।

चाळणो-(क्रि०) १ चालना। बड़ी चलनी (क्रि०) छानना। चालना। २ भड़काना। उकसाना। ३ छेड़ना।

चाळनेची-(ना०) चावण्डेवी।

चालबाज-(वि०) चालाक। धूर्त।

चालबाजी-(ना०) चालाकी। धूर्तता।

चाळराय-(ना०) चावड्यो।

चाळा-(ना०बहु०) १ मजाक करने के लिये किसी के बोलने चालने आदि किया जाने वाला अनुकरण। २ हाव भाव। नखरा। अंगचेष्टा। ३ छेड़छा[illegible]

चालाक-(वि०) १ होशियार। २ धूर्त

चालाकी (ना०) १ होशियारी। २ धूर्त[illegible]

चाळागरो-(वि०) १ युद्धोत्साही। २ युद्धो मुखी। ३ लड़ाई खोर। झगड़ाखोर। ४ पाखंडी। ढोंगी। ५ वीर

चालाण-दे० चलाण।

चालो-(ना०) १ चलने का ढंग। २ चालचलन। आचरण।

चाळी-(वि०) चालीस। (ना०) चालीस संख्या।

चाळीस-(वि०) बीस और बीस। (ना०) चालीस की संख्या। '४०'।

चाळीसमो-(वि०) जो क्रम में उनतालीस के बाद आता हो। चालीसवाँ।

चाळीसवो-दे० चाळीसमो।

चाळीसो-(न०) १ चालीस पद्यों का ग्रंथ या काव्य। यथा-हनुमान चालीसो। २ चालीसवाँ वर्ष। ३ मुसलमानों में मृतक के पीछे चालीसवें दिन किया जाने वाला खाना।

चालू-(वि०) १ वर्तमान। प्रचलित। २ गतिमान। ३ प्रारम्भ। शुरु।

चालेवो-(न०) १ प्रस्थान। गमन। २ चिरप्रस्थान। मृत्यु।

चाळो-(न०) १ क्रीड़ा। २ चेष्टा। ३ नखरा। मटका। ४ लक्षण। चिह्न। ५ कुतूहल। कौतुक। ६ मनोरंजन। दिल बहलाव। ७ रचना। बनाव। उठाव। ८ वृद्धि। ९ वातावरण। प्रवाह। फैलाव। १० चलन। रिवाज। ११ सिलसिला। १२ दबाव। १३ हरकत। १४ ढाग। १५ भूत प्रेत आदि का प्रकोप। १६ छलछद्म। १७ छेड़छाड़। १८ हैरानी। १९ दुख। कष्ट। २० निकम्मापन की क्रियाएँ। २१ कोप। २२ युद्ध। २३ रोग। २४ रोग का सर्वदेशीय उपद्रव। महामारी। २५ भेद। २६ उपद्रव।

चाव-(न०) १ चाह। अभिलाषा। २ उत्साह। उमंग। ३ उत्कंठा। ४ दान। ५ उत्सव। ६ हर्ष। ७ शौक। ८ रस। मजा।

चावणो-(क्रि०) चबाना। चाबना।

चावना-(ना०) चाहना। इच्छा। इच्छा।

चावर-(ना०) जोते हुये खेत की जमीन को समतल करने के लिये उस पर पाटा फिराने की क्रिया। सावर।

चावळ-(न०) १ चावल। तंदुल। २ रत्ती के आठवें भाग का तोल।

चामंडा-दे० चामुंडा।

चाय-अ० चाहीजे। दे० चाहै।

चावो-(न०) १ पुत्र। छावो। (वि०) १ प्रसिद्ध। प्रख्यात। २ प्रगट।

चास-(ना०) १ पृथ्वी। २ ज्योति। प्रकाश। ३ जोत। तलाश। ४ खबर। पता। ५ चाह। इच्छा। ६ कृषक। ७ नीलकंठ पक्षी। ८ हल चलाने से बनने वाली रेखा। चाम।

चासणी (ना०) १ चाशनी। शीरा। २ परीक्षा करने के लिये गलाया हुआ सोने का टुकड़ा। ३ परीक्षा।

चासणी करणी-(मुहा०) १ जाँच करना। २ चाशनी बनाना।

चासणो-(क्रि०) जलाना। दीपक जलाना।

चासो-(न०) १ प्रकाश। २ खेत में हल चलाने से बनी रेखा। ३ कृषक।

चाह-(ना०) १ इच्छा। २ जरूरत। चाहिजवाण।

चाहड-(ना०) पैरों में पहिनने का एक आभूषण।

चाहणो-(क्रि०) १ चाहना। इच्छा करना। २ प्रेम करना।

चाहना-(ना०) चाह। इच्छा। चावना।

चाहिजवाण-(ना०) आवश्यकता। जरूरत।

चाही-(वि०) १ सिंचाई के योग्य (जमीन)। जरखेज उपजाऊ। २ चाही हुई। इच्छित। (ना०) सिंचाई योग्य कृषि भूमि।

चाहीजै-(अव्य०) १ आवश्यकता है। चाहिये। २ उचित है। उपयुक्त है।

चाहू-(वि०) १ चाहने वाला। २ हित चिंतक।

चाहै-(अव्य०) १ यदि इच्छा हो। २ जैसी इच्छा हो। जो मर्जी हो।

चाह्यो-(वि०) इच्छित। मन चाहा। चाहा हुआ।

चांच-(ना०) १ चाच । चंचु । २ चांच के जैसी नोकदार चीज । ३ बहुत लंबी लकड़ी जिसमें कुएँ से पानी निकालने का ढेंकली बँधी रहती है । ४ कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र । ढेंकली । ५ बैलगाड़ी के आगे का नोकदार भाग ।

चांचड-(न०) १ पिस्सू । २ खेत में लगने वाला फसल ।

चांचदार-(वि०) नोकवाला ।

चांचाळी-(ना०) गिद्धनी । (वि०) चांच वाली ।

चांचाळो-(वि०) चांच वाला ।

चांचियो-(न०) १ चोर । २ उचक्का । ३ डाकू ।

चांटी-(ना०) १ दौड़ । २ सहायता । ३ बेगार । ४ सेवा । ५ दासी । चेटी ।

चांडाळ-दे० चंडाळ ।

चांतरी-(ना०) चबूतरी । चूतरी ।

चांतरो-(न०) चबूतरा । चूतरो ।

चांद-(न०) १ चंद्रमा । चंद्र । २ स्त्रियों के सिर का एक आभूषण । ३ मोर पंख के शीर्ष के चौड़े भाग के बीच की चंद्रिका । ४ निशान मारने का लक्ष्य ।

चांदडलो-(न०) चांद । चंद्रमा ।

चांदणी-(न०) १ चंद्रमा का प्रकाश । चांदनी । ज्योत्स्ना । २ वस्त्र के ऊपर ओढ़ने का परदानशीन औरतों का एक विशेष वस्त्र । ३ चंदवा । ४ हाथ से रंगे छपे मोटे कपड़े का एक बिछावन । मोटे कपड़े की दरी । जाजम । ५ छत के ऊपर मंडी के आगे का छपरे वाला खुला भाग । ६ बिछावन या खाट पर बिछाई जाने वाली चादर ।

चांदणीरात-(ना०) चंद्र के प्रकाश वाली रात ।

चांदणो-दे० चानणो ।

चांदणो पख-(न०) शुक्ल पक्ष ।

चांदमारी-(ना०) १ कपड़े तख्ते आदि पर बने चंद्र चिह्न पर गोली मारने का अभ्यास । २ चांदमारी का मैदान ।

चांदसूरज-(न०) १ स्त्रियों का एक सिरो भूषण । २ चंद्र और सूर्य ।

चांदी-(ना०) १ रौप्य । रूपो । रजत । २ व्रण । छाला । छालो । ३ व्रण से उत्पन्न चट्टा । व्रण का सफेद निशान । ४ घाव । जख्म । ५ माल । धन । रुपया पैसा ।

चांदी करणी-(मुहा०) अन्याय के विरुद्ध धरना देकर शस्त्र के प्रहार से आत्मघात करना या खून निकालना । दे० सांठिया करणा ।

चांदी पडणी-(मुहा०) घाव पड़जाना ।

चांदी वरसणी-(मुहा०) खूब आमदनी होना ।

चांदो-(न०) १ चांद । २ एक लोक गीत ।

चांदोडी रुपियो-(न०) एक प्राचीन मेवाड़ी सिक्का ।

चांद्रायण-(न०) चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार कम ज्यादा कौर खाने का एक कठोर मासिक व्रत तप या अनुष्ठान ।

चांप-(ना०) १ किसी यंत्र को चलाने या बंद करने की कल । कमान । २ दबाव । ३ ध्यान । खयाल । ४ उतावल । शीघ्रता ।

चांपण-(ना०) १ किसी समतल वस्तु या वस्तु के समतल भाग को बिलकुल सपाट करने का एक औजार । २ दबाने का औजार या कल । ३ खुशामद ।

चांपणो-(क्रि०) १ हाथ पैरों की चंपी करना । २ दाबना । दबाना । ३ खुशामद करना । राजी करना । ४ अधिकार करना । कब्जा करना । ५ डराना । भय दिखाना ।

चांपो-(न०) १ गो समूह । गायों का झुंड । गोहर । २ चंपा का वृक्ष ।

चाँब–दे० चाम, स० ३ ।
चाँबळ–(ना०) चम्बल नदी ।
चि०–(अव्य०) १ चिरजाव' का सक्षिप्त रूप ।
चिक–(ना०) बाँस की तीलियो का परदा। चिलमन ।
चिकटाई–दे० चिकणाई ।
चिकटो–दे० चीगटो ।
चिकणाई–(ना०) चिकनाई । चिकनापन । स्निग्धता ।
चिकणाट–दे० चिकणाई ।
चिकणो–दे० चीकणो ।
चिकार–(वि०) १ भरपूर । ठसाठस । खूब भरा हुआ ।
चिकारो–(ना०) एक ततु वाद्य ।
चिकास–(न०) चिकनाई । स्निग्धता ।
चिकिछा–(ना०) चिकित्सा । औषधोपचार । इलाज ।
चिकित्सा–दे० चिकिछा ।
चिकुर–(न०) सिर के बाल ।
चिग–(ना०) बाँस की पतली सीखो का धागो से गूथकर बनाया हुआ दरवाजे का परदा । चिक ।
चिगथ–(न०) मुसलमान ।
चिगथो–(न०) मुसलमान ।
चिगदणो–(क्रि०) १ चिगदना । पीसना । २ मसलना । कुचलना ।
चिगदो–(न०) घाव । जख्म ।
चिगनिया–(न०ब०व०) बहुत छोटे छोटे लिये जाने वाले ग्रास ।
चिगनिया करणो–(मुहा०) पेट भर जाने पर थाली म बची हुई भोजन सामग्री के बहुत छोटे छोटे कौर लेना ।
चिगाणो–दे० चिगावणो ।
चिगाळी–(ना०) किसी की बोली या आकृति की की जाने वाली उपहासजनक नकल । चिढ । कुट्टी ।
चिगावणो–(क्रि०) १ भुलावा देना । फुसलाना । २ ललचाना । लालायित करना । ३ चिढाना । खिजाना । ४ तरसाना ।
चिगिया–दे० चिगाळी ।
चिगी–दे० चिगाळी ।
चिट–(ना०) कागज का छोटा टुकडा ।
चिटक–(ना०) १ नारियल की गिरी का छोटा टुकडा । चारोली । २ आभा । काति । चटक । ३ उमग । ४ परत । पपडी ।
चिटकणी–(ना०) सिटकनी । चिटकनी ।
चिटको–दे० चटको ।
चिटियो–(न०) छडी । चटियो ।
चिटु आँगळी–(ना०) सबस छोटी अगुली । कनिष्ठिका ।
चिटुडी–(ना०) हाथ (या पाव) की सबसे छोटी अगुली । कनिष्ठिका ।
चिट्टो–(न०) किसी लबी वस्तु के शुरू या अत का भाग । सिरा ।
चिठटी–(ना०) पत्र । पत्री । खत ।
चिठ्टीपत्री–(ना०) १ पत्र । चिठ्टी । २ ग्रामा तर से आने वाला या ग्रामातर को लिखा जाने वाला पत्र सदेश । ३ पत्र व्यवहार ।
चिड–(ना०) १ चिढ । कुढन । २ झुझलाहट । ३ खीज । ४ घृणा । नफरत ।
चिडकली–(ना०) चिडिया । चिडी ।
चिडकलो–(न०) नर चिडिया । चिडा । चिडो ।
चिडकोली–(ना०) चिडिया । चिडी ।
चिडचिडो–(वि०) चिडचिडे स्वभाव वाला । तुनक मिजाज ।
चिडणो–(क्रि०) १ नाराज होना । २ क्रोध करना । ३ खिजाना । ४ झुझलाना । कुढना । चिढना ।
चिडपडो–(वि०) १ वर्षा की कमी वाला । (वर्ष) । २ थोडा थोडा (बरसना) । थोडी थोडी (वर्षा) ।

चितराण-(न०) चित्तौड का महराना' का संक्षिप्त रूप। चित्तौड़ाधिपति।
चितराम-(न०) १ चित्र। छवि। चित्राम। २ आश्चर्य व घबराहट से चित्र जैसी निष्प्राण स्थिति। ३ भीति चित्र।
चितवण-(ना०) १ देखने का एक प्रकार। चितवन। २ दृष्टि। ३ याद।
चितवन-दे० चितवण।
चिता-(ना०) श्मशान में शव को जलाने के लिये चुना जाने वाला लकड़ियों का ढेर। आरोगी। चेह। चह।
चितानळ-(ना०) चिता की अग्नि।
चितारणी-(ना०) १ विवाह त्योहार आदि पर स्नेही संबंधियों के यहां भेजी जाने वाली पक्वान्नादि की भेंट। हांथो। २ भेंट। उपहार। ३ याददास्त।
चितारणो-(क्रि०) १ याद करना। २ चित्र बनाना।
चितारो-(न०) चित्रकार। चितेरो।
चिताळ-(ना०) बड़ा और चिपटा पत्थर।
चितेरो-दे० चितारो।
चित्त-दे० चित।
चित्तौड-(न०) १ मेवाड़ का इतिहास प्रसिद्ध नगर और किला। २ मेवाड़ की प्राचीन राजधानी। चित्तौड़गढ़।
चित्तौडगढ़-(न०)चित्तौड़गढ़। दे० चितौड़।
चित्तौडी-(न०) मेवाड़ राज्य का एक प्राचीन सिक्का। चित्तौड़ी रुपया। (वि०) चित्तौड़ संबंधी।
चित्र-(न०) १ छवि। तसवीर। चितराम। चित्राम। २ दृश्य।
चित्रकला-(ना०) चित्र बनाने की कला या विद्या।
चित्रकार-(न०) चितारो। चित्र बनाने वाला।
चित्रकारी-(ना०) चित्रकार का काम। चित्र निर्माण। चित्रकला।
चित्रकूट-(न०) १ प्रसिद्ध चित्तौड़ नगर का साहित्यिक और संस्कृत नाम। २ प्रयाग के निकट का एक पर्वत जिस पर वनवास के समय राम सीता और लक्ष्मण रहे थे। एक तीर्थ स्थान।
चित्रकोट-दे० चित्रकूट।
चित्रगुप्त-(न०) १ प्राणियों के पाप पुण्य का लेखा रखने वाले एक यम। २ कायस्थ जाति के आदि पुरुष।
चित्रणो-दे० चितरणो।
चित्राम-(न०) १ चित्र। चितराम। २ भीति चित्र।
चित्रामणी-(ना०) १ चित्रकारी। २ नक्काशी। ३ नक्काशी करने का पारिश्रमिक।
चित्रारो-(न०) चित्रकार। चितेरो। चितारो।
चिदाकाश-(न०) आकाश के समान निर्लिप्त और व्यापक परब्रह्म।
चिदाणंद-(न०) चेतन और आनंद। चिदानंद। परब्रह्म।
चिदात्मा-(न०) चैतन्य स्वरूप परमात्मा। परब्रह्म।
चिदानंद-दे० चिदाणंद।
चिदाभास-(न०) १ जीवात्मा। २ चैतन्य स्वरूप परब्रह्म का प्रतिबिंब जो मनुष्य के अंतःकरण पर पड़ता है। ३ ज्ञान का प्रकाश। ४ ज्ञान।
चिनगारी-(ना०) अग्निकण। स्फुलिंग।
चिनियो-(वि०) थोड़ा। किंचित्।
चिनेक-(अ०य०) १ क्षणभर। २ थोड़ी देर। (वि०) १ थोड़ा। किंचित्। २ थोड़ा सा।
चिन्मय-(न०) पूर्ण विशुद्ध ज्ञानमय ईश्वर।
चिन्ह-(न०) चिह्न। निशान।
चिपकणो-(क्रि०)१ चिपकना। चिमटना। चिपटना। २ लिपटना।

चिपटणो–दे० चिपकणो ।
चिपटी–(वि०) चपटी । दबी हुई । (ना०) १ चुटकी । २ चगुल । दे० चिबटी ।
चिपटो–(वि०) जिसका सतह उभरी हुई न हो । चिपटा ।
चिपटी–(ना०) युद्ध की हुई लाल की चिपटी चिकिया या परत ।
चिपडो–दे० चपडो ।
चिपणो–(क्रि०) चिपकना ।
चिबटी–(ना०) १ मध्यम अगुली और अगूठ का चटकाने से उत्पन्न शब्द । २ पाचो अगुलियो के अगल पोरो को मिलाने से बनने वाला सपुट । पाचो अगुलियो को इकट्ठा करने म जितना समा सके वह माप । चुटकी । चुगल । ३ पांचो अगुलियो का इकट्ठा करने से बनने वाला सपुट । चुटका । ४ इस सम्पुट म समा सकने वाला पदार्थ ।
चिमगादड–दे० चमगादड ।
चिमटी–(ना०) १ किसी वस्तु आदि को पकडने का दो अगुलियो का एक सपुट । २ छोटी वस्तु को पकडने के लिये चिमटे के जमा एक छोटा औजार । चिमटी चिमतडी । सवाणी ।
चिमटो–(न०) चिमटा । चौंपियो ।
चिमनी–(ना०) १ मिट्टी के तेल से जलने वाला कुप्पी जसा एक दीपक । २ कारखानो का वह लंबा भूगल जिसम होकर धुआं निकलता है । ३ रसोई घर की छत पर बना धुआंकश ।
चिमतर–(वि०)सत्तर और चार । चोहत्तर । (न०) चौहत्तर की संख्या । ७४
चिरखुटो–दे० चीथडो ।
चिरजीवी–दे० चिरजीवी ।
चिरटियो–(वि०) चिडचिडे स्वभाव वाला ।
चिरणाट–(न०) नाश ।
चिरणाटियो–दे० चिरणाट ।
चिरत–(न०) पाखड । ढोग । चरित । ढूग ।
चिरताळी–(वि०) १ धूर्ता । ठगिनी । २ पाखड करने वाली । चरित करने वाला । दुराचारिणी । व्यभिचारिणी ।
चिरताळो–(वि०) १ अनेक प्रकार के चरित करने वाला । ढूगी । २ कपटी । छली । ३ पाखडी । धूत । ठग ।
चिरनिद्रा–(ना०) मृत्यु । मौत ।
चिरमटी–दे० चिरमी ।
चिरमी–(ना०) गुजा । घुघची । चिरमी ।
चिरमेंहो–(न०) गदहा । गधो ।
चिरळी–(ना०)चिल्लाहट । चीख । चीत्कार ।
चिर शाति–(ना०) १ मृत्यु । २ मोक्ष ।
चिर समाधि–(ना०) मृत्यु । मौत । मिरतु ।
चिरजी–(वि०) चिरजीव । चिरायु । दीर्घायु । (न०) आशीर्वाद का शब्द । (अव्य०) चिरजीव रहो । दीर्घायु हो ।
चिरजीव–दे० चिरजी ।
चिराक–(न०) चिराग । दीपक । दीवो ।
चिराग–दे० चिराक ।
चिराट–(ना०) १ दरार । शिगाफ । २ चीरो । ३ चिल्लाहट ।
चिराडो–(न०) १ शिगाफ । बडी दरार । २ चीरो । ३ चिल्लाहट ।
चिरायतो–(न०) एक कडवा वानस्पतिक औषधि ।
चिरायु–(वि०) बडी उमर वाला । (ना०) बडी आयु ।
चिराळ–दे० चिराड ।
चिरावणो–(क्रि०) १ चिरवाना । चीरने का काम करवाना । २ हाथीदात करेला आदि की चूडी खराद पर उतरवाना ।
चिरु–(वि०) 'चिरजीव' का सक्षिप्त ।
चिरू जी–(ना०) एक मवा । चिरोजी
चिळक–दे० चिळको ।

चिळकणो–(क्रि०) चमकना। (न०) १ प्रकाश। चमक। २ प्रतिबिम्ब। प्रतिप्रभा। झलक (वि०) चमकने वाला।
चिळाकी–(ना०) १ चमक। आभा। २ पालिश।
चिळको–(न०) १ चमक। २ प्रकाश। ३ प्रतिबिंब।
चिलगोजो–(न०) चीड़ वृक्ष का फल। एक मेवा। नेवज। नौजा। नेजो।
चिलड़ो–दे० चीलड़ो।
चिलम–(ना०) १ तमाकू पीने का लकड़ी या मिट्टी का बना एक उपकरण। गुलफी। २ हुक्के का वह मिट्टी का पात्र जिसम तमाकू और आग रखी रहती है।
चिलम पीणो–(मुहा०) चिलम मे रखी हुई तमाखू के धुएँ को मुँह से खींचना।
चिलमपोस–(न०) चिलम का ढक्कन।
चिलम भरणो–(मुहा०) पीने के लिये चिलम मे तबाकू और आग रखना।
चिलमियो–(न०) १ चिलम या हुक्के म तबाकू भरने उस पर आग रखने और पीने आदि की क्रियाएँ। २ चिलम की नली म रखा जाने वाला कंकड़। घुगल। ३ चिलम म आग रखने की क्रिया।
ल्लो–(न०) १ धनुष की डोरी। चिल्ला। प्रत्यंचा। २ मुसलमानो का चालीस दिनो का एक व्रत। चिल्ला।
ल्लाणो–(क्रि०) १ चीखना। चिल्लाना। जोर जोर से बोलना।
न–(न०) १ चिन्ह। निशान। २ ात। हाल।
ाणो–(न०) पश्चाताप। पछतावो।) पछताना। पछतावा करना। ावणो।
–(न०) पश्चाताप। पछतावा।
०) १ सर के केश। चिकुर।
।

चिहुँए वळो–(
चिहुँवें–(वि०)
चिमो–(न०) ह
कूणो।
चिगण–दे० चींपण
चिपाड़–(ना०) हा
चिल्लाहट।
चिघाड़णो–(क्रि०)
चिघाड़ना।
चित–(ना०) १ चिंता
२ याद। ३ विचार
चितक–(वि०)चिंतन या
चितण–दे० चिंतन।
चितणो–दे० चितवणो।
चितन–(न०) १ ध्यान।
मनन। ३ विवेचना।
चितवण–दे० चितवन।
चितवणो–(क्रि०) १ मनन
निश्चय करना। ३ याद
चिंता करना। ५ सोचना
करना। ६ विचार करना।
चितवन–(न०) चिंतन।
चितवियोडो–(वि०) १ निश्च
हुआ। २ सोचा हुआ। विचारा
चिंता–(ना०) १ चिंता। फिक्र
विचार। सोच।
चिंताजनक–(वि०) चिंता उत्पन्न
वाला।
चिंतामणि–(ना०) अभिलाषाओं को
करने वाला एक काल्पनिक रत्न।
चिंत्या–दे० चिंता।
चिंदी–दे० चींधी। चीदी।
ची–(प्रत्य०) चो विभक्ति का नारी जाति रूप। छठी विभक्ति। की।
चीक–(न०) स्वर्णकारी

मै से निकलते वाला चिकना पानी ग्रथवा दूध । ३ कीचड । कीच ।
चीकट–दे० चीगट ।
चीक्टो–दे० चीगटो ।
चीकणा क्रम–(न०) ग्रशुभ कम । पापकम ।
चीकणी सोपारी–(ना०) एक प्रकार की उबली सुपारी ।
चीकणो–(वि०) १ चिकना । २ चिपचिपा । ३ कजूस ।
चीकणो घडो–(न०) जिस पर किसी बात का ग्रसर न हो ।
चीकास–दे० चीकट ।
चीकू–(न०) एक वृक्ष ग्रौर उसका फल ।
चीख–(ना०) चिल्लाहट । चीत्कार ।
चीखणो–(क्रि०) १ चिल्लाना । चीत्कार करना । २ रोना । ३ बकवक करना । जोर से बडबडाना ।
चीखल–(न०) कीचड । चीखलो । कादो ।
चीखलो–(न०) कीचड । कादो ।
चीगट–दे० चीगट ।
चीगटो–दे० चीगटो ।
चीज–(ना०) १ वस्तु । पदार्थ । २ महत्व की बात । ३ गीत । गायन । ४ ग्राभूषण । गहना ।
चीज वस्तु–(ना०) १ समस्त वस्तुएँ । २ सामान । सामग्री । सर सामान ।
चीटलो–दे० चीटलो ।
चीटो–(वि०) १ चिकना । चिपटा । २ कजूस । (न०) १ मक्खन तपाने से नीचे बठने वाला मैल । घृतमड । किट्ट । कीटो । २ स्निग्ध पदार्थों का मैल । चीटो । कीटो ।
चीठ–(ना०) १ पहाड का समतल ढलवाँ भाग । चाठ । २ चिलम की नली का कीट । गुल ।
चीठापणो–(न०) १ कजूसी । कृपणता । २ कडाई । कडापन ।३ दृढता ।
चीठी–दे० चिट्ठी ।
चीठो–(न०) १ तेल या घी का कीटा । २ कजूस । कृपण । ३ कडा । कठिन । दृढ ।
चीड–(ना०) १ काँच का छोटा मनका पात । २ एक वृक्ष ग्रौर उसकी लकडी ।
चीड–(न०) ऊट का मूत्र ।
चीडणो–(क्रि०) ऊट का मूतना ।
चीडा–(वि०) १ कजूस । कृपण । २ लचीला ग्रौर मजबूत ।
चीण–(ना०) १ मकान की छत छाने की पत्थर की पट्टी । २ पायजामे या घाघरे के सिर की वह जगह जिसमे नाडा डाला जाता है । नफा । ३ चीन देश ।
चीणाई-चादी–दे० चीनाई चाँदी ।
चीणी–(ना०) १ चीनी । खाँड । शक्कर । २ चीनी भाषा । ३ छेनी । टाँकी । (वि०) १ चीन देश सबधी । २ चीनी । चीन देश का ।
चीणीखाड–(ना०) खाँड । शक्कर ।
चीणीमाटी–(ना०)एक सफेद चिकनी मिट्टी जिसके बरतन बनते हैं । चीनी मिट्टी ।
चीणीरेत–(ना०) बारीक दानेदार रेती जिसमे मिट्टी नही होती है । धोरा री रेत । वेकळू । बालू । रेणुका । रेत ।
चीणोटियो–दे० चिणोटियो ।
चीत–(ना०) १ विचार । २ चिंतन । विवेचन । ३ परामर्श । मत्रणा । ४ स्मरण । याद । ५ चित्त । मन । ६ चिंता ।
चीतगढ–(न०) चित्तौडगढ ।
चीतणो–(क्रि०) १ विचार करना । २ निश्चय करना । ३ याद करना । चिंता करना ।
चीतरणो–(क्रि०) १ चित्र बनाना । २ चित्रकारी करना । ३ नक्काशी करना ।

चीतरी-(ना०) छितरे हुए पतले और छोटे बादल। तीतर के पख जसे बादल।
चीतरो-(न०) एक हिंसक पशु। चीता।
चीतळ (न०) एक प्रकार का साप। २ अजगर। ३ एक जाति का हिरण।
चीतवणो-(क्रि०) १ सोचना। विचारना। २ निश्चय करना। ३ इरादा करना। विचार करना। ४ सकल्प करना। किसी को कुछ देने का विचार करना।
चीता-(ना०)१ याद। स्मरण। २ स्मृति।
चीतारणी-(ना०)१ मिठाई पक्वान आदि की भेंट। बींदडो। सभाळ। २ सौगात। भेट। ३ यादगारी।
चीतारणो-(क्रि०) १ सुमिरन करना। रटना। २ याद करना। किसी के प्रति कुछ सोचना। ३ सोचना। विचारना।
चीनाळ-(ना०) १ छत या छान के लिये काम मे आने वाली पत्थर की लबी पट्टी २ चपटा बडा पत्थर।
चीतानकी-(वि०) चीते के समान पतली कमर वाली। सोहलकी।
चीतो-दे० चीतरो।
चीतोडी-दे० चित्तौडी।
चीतोडो-(न०) बापा रावल का वशज चित्तौडाधिपति। मेवाड का राना।
चीत्र-दे० चित्र।
चीत्रणो-दे० चित्रणो।
चीत्रारो-दे० चित्रारो।
चीन-(न०) १ एक देश। (ना०) २ पहचान। ओळखाण।
चीनाई-(वि०) चीन देश का।
चीनाई चादी-(ना०) चीन देश की चांदी। बढ़िया चांदी।
चीनणो-(क्रि०)१ देखना। २ पहचानना। ओळखणो।
चीनी-(ना०) १ खांड। २ चीनी मिट्टी। ३ चीन देश की भाषा। (वि०) १ चीन देश का। चीन से सबधित। २ चीनी मिट्टी का बना हुआ।
चीप-(ना०) १ बास की चिपटी और लबी पट्टी। २ ढोल चग आदि बजाने की लबी और पतली खपची। ३ चूडी पर जडने की सोने या चादी की लम्बी पत्ती। पातो। ४ घी भरने का चमडे का कुप्पा। मलसा। कूडो। ५ पत्थर का छोटा चिपटा टुकडा।
चीपटी-(ना०) १ बास की लबी चिपटी पट्टी। २ ज्वार और बाजरी के डठल।
चीपड-(न०) आख का मैल। गींड।
चीबरी-(ना०) उल्लू की जाति का एक छोटा पक्षी। कोचरी।
चीबो-(न०) १ मुसलमान। २ मुसलमानो का एक भेद।
चीमटो-(न०) चिमटा। चींपियो।
चीमडियो-दे० चीभडियो।
चीर-(ना०) १ फाड। टुकडा। (न०) १ चीरा। दरार। ३ स्त्रियो के ओढने का वस्त्र। ४ एक रेशमी वस्त्र। ५ वस्त्र।
चीरडो-(न०) १ चिथडा। चींथरो। २ दे० चीलडो।
चीरणो-(न०) १ चीरना। काटना। फाडना। २ भीड को आर पार करना। ३ हाथी दात को चूडियो के आकार मे खरीदना।
चीर-फाड-(ना०)१ डाक्टर द्वारा की जाने वाली शल्य चिकित्सा। २ चीरना और फाडना।
चीरवियो-(वि०) हाथी दात और नरेली आदि को चीर कर चूडियाँ बनाने वाला व्यक्ति। चूडीगर।
चीरहरण-(न०)१ श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के वस्त्र चुराने की लीला। २ कौरवों द्वारा द्रौपदी का वस्त्र हरण।
चीराळी-(ना०) १ चीरा। चिराड। २ किसी वस्तु का चीरा हुआ भाग। ३ टुकडा। खड।

चीरी-(ना०) १ छोटी पतली चीर । वस्त्र या पत्र आदि का फाटा हुआ लंबा टुकड़ा । २ चिट्ठी पत्री । पत्र ।

चीरो-(न०) १ चिर जाने से बना घाव । २ चीर फाड़ । डाक्टरी शस्त्र क्रिया । आपरेशन । ३ पगड़ी । ४ लीरा । लीरो । ५ टुकड़ा । ६ किसी राज की सहायता के लिए बहुत आदमियों से थोड़ा थोड़ा मांगकर इकट्ठा किया हुआ धन । ७ रियासती या जागीरी जमीन का एक लगान ।

चील (ना०) १ चील पक्षी । २ बथुए की जाति की एक भाजी । ३ सांप । ४ एक देवी । ५ तँवर क्षत्रियों की देवी ।

चीलख-(ना०) १ चील पक्षी । २ एक भाजी ।

चीलड़ा-(न०) तवे पर घी में तली हुई आटे या बेसन के घोल की एक प्रकार की पूरी । उलटा । चिलड़ा । चीला । घारसो ।

चीलर-(न०) १ थोड़े पानी का छोटा तालाब । नाडो । पावरा । पावरी । २ रेजगी । रेजगारी । ३ सूअर का बच्चा ।

चीलराज-(न०) शेषनाग ।

चीलरो-(न०) १ सूअर का बच्चा । २ दे० चीलड़ो ।

चीलो-(न०) बलगाड़ी के चलने से बनने वाले पहिये का लंबा चिन्ह । गाडीवाट । २ रेत की पटरी । ३ रिवाज । चाल । परम्परा । ५ मार्ग ।

चीवट-(ना०) १ तत्परता । मुस्तैदी । २ लगन । लीनता । तन्मयता ।

चीवर-(न०) वस्त्र ।

चीस-(ना०) १ पीड़ा । दर्द । २ कराह ।

चीसणो-(क्रि०) पीड़ा से कराहना । चीखना ।

चीग्रो-(न०) दमड़ी का चीर । चूको । चूणो ।

चीगट-(न०) १ चिकनाई । स्निग्धता । २ घी तेल आदि चिकने पदार्थ । (वि०) १ चिकना । चीकट । २ तेल घी आदि लगा हुआ ।

चीगटा-(वि०) जिस पर चिकनाई लगी हुई हो । चिकनाई वाला । स्निग्ध । चिकना ।

चीगस-दे० चीणस ।

चीगाग दे० चगाग ।

चीगागणो-दे० चगाससो ।

चीगों-(न०) घाड़ा ।

चीघण-(ना०) १ निर्धूम अग्नि का ढेर । चिता की अग्नि में शव को इधर उधर करने की लंबी लकड़ी । ३ चिता की अग्नि । श्मशान की अग्नि । ४ श्मशान की राख । भस्मी । ५ मातम दिशा ।

चीचड़-(न०) पशुओं की चमड़ी से चिपका रहकर खून पीने वाला एक कीड़ा । किलनी । चिचड़ा ।

चीचड़ो-दे० चाचड़ ।

चीचाटणो-(क्रि०) रुलाना ।

चीचाणो-(क्रि०) १ रुलाना । २ रोना । चिल्लाना ।

चीटलो-(न०) साँप का बच्चा ।

चीटी-(ना०) चिउँटी । कीड़ी ।

चीत-(ना०) १ चिंता । फिक्र । २ याद । स्मरण ।

चीतणो-(क्रि०) १ चिंता करना । २ विचार करना । ३ याद करना ।

चीतवणो-दे० चीतणो ।

चीथड़ियो-(वि०) १ चिथड़ा का व्यवसाय करने वाला । २ फटे पुराने चिथड़े पहिनने वाला । ३ मैला कुचेला । गंदा । (न०) चिथड़ा ।

चीथणो-(क्रि०) १ रौंदना । कुचलना । २ दबाना ।

चींथरियो–दे० चीथडियो ।
चीथरी–(ना०) १ छोटा चिथडा । २ धज्जी ।
चीथरो–(न०) १ मलिन तथा जीर्ण वस्त्र खड । चिथडा । २ धज्जी । ३ गूदड ।
चीथीजणो–(क्रि०) रौंदा जाना । कुचला जाना ।
चीदी–(ना०) १ चिथडे की पतली पट्टी । २ चिंदी । धज्जी । चींधी । ३ छोटा लबा टुकडा ।
चीध–(ना०) १ ध्वजा । पताका । धजा । २ चिथडा । ३ वस्त्र की लबी लीरी ।
चीधड–(न०) १ अधिक अफीम खाने वाला व्यक्ति । २ बहुत अफीम खाने के कारण सुध बुध रहित और गदा रहने वाला व्यक्ति । ३ एक राजपूत जाति । ४ चुना हुआ वीर पुरुष । ५ वीराग्रणी योद्धा । ६ कुलीन घर का भिखारी । ७ वह भिखारी जो अपनी जाति के सिवाय दूसरी जाति की भीख नही लेता है । जाति का भिखारी । ८ वश्य जाति का भिखारी । बनिया जाति का मगता । ९ वरदीधारी सनिक । (वि०) १ वीर । बहादुर । योद्धा । २ कजूस । ३ दरिद्री । ४ गदा ।
चीधणो–(क्रि०) देखना ।
चीधाळो–(वि०) धजावाला । ध्वजधारी ।
चीवी–(ना०) १ वस्त्र या कागज की लबी पट्टी । धज्जी ।लीरी । २ चिथडा ।
चीधी देणो–(मुहा०)पति की ओर से पत्नी का त्याग करना । पति की ओर से पत्नी का सबध विच्छेद करना । तलाक देना ।
चीप–(ना०)१ घी भरने का ऊट के चमडे का बडा कुप्पा । मलमा । २ झिरीदार चूडी के ऊपर लगाई जाने वाली सोने या चाँदी की पत्ती । ३ ढोल चग आदि बजाने की बाँस की पतली खपची ।
चीपटी–दे० चीपटी ।
चीपटो–दे० चीपियो ।
चीपड–(न०)आँख का मैल । गींड । चीपड ।
चीपियो–(न०) चिमटा ।
चीभडियो–(न०) चिमटा । ककडी ।
चीयो–(न०) इमली का बीज ।
चुअणो–(क्रि०) टपकाना । चूना ।
चुआणो–(क्रि०) चुआना । टपकाना ।
चुआवणो–दे० चुआणो ।
चुकणो–(क्रि०) १ चुकना । समाप्त होना । २ बेबाक होना ।
चुकलियो–(न०) मिट्टी का छोटा घडा ।
चुकल्यो–दे० चुकलिया ।
चुकदर–(न०) लाल रग का एक कद ।
चुकाई–(ना०) चुक्ता करने की क्रिया या भाव ।
चुजाणो–दे० चुकावणो ।
चुकादो–(न०) १ चुकता होने का भाव । चुकाई । २ फैसला ।
चुकारो-दे० चुकादो ।
चुकावणो–(क्रि०) हिसाब चुक्ता करके पैसे देना । चुकाना । २ निबटाना । ३ भुनाना । भुलावे मे डालना । भ्रम मे डालना । भूल मे डालना । ४ किसी को किसी काम के करने से रोकना । ५ मौका खोआ देना । ६ रुकावट डालना ।
चुख–(न) १ टुकडा । खड । २ रूई का छोटा पहल । फाहा । चू खो ।
चुग–(न०) पक्षियो को चुगने के लिये डाला जाने वाला नाज । चुग्गा । दाना ।
चुगणो–(क्रि०) १ चुगना । बीनना । २ पक्षियों का चोच से दाना उठाकर खाना ।
चुगथ–(न०) १ मुगल । २ मुसलमान ।
चुगथाळ–(न०बहु०व०) १ यवन समूह । मुसलमान देश ।
चुगल–(वि०) १ चुगलखोर । निंदक । (न०) १ चिलम के छेद मे रखा जाने

वाला गोल वक्ड। गिट्टक। गिट्टी। २ मुसलमान।
चुगलखोर-*(वि०)* चुगली खाने वाला। चुगल।
चुगळणो-*(क्रि०)* मुह में इधर उधर करते हुए किसी वस्तु को चूसते रहना। चूसना।
चुगलाळ-*(न०बहु०व०)* मुसलमान लोग। *(वि०)* चुगलखोर।
चुगलियो-दे० चुगल।
चुगली-*(ना०)* १ शिकायत। २ पीठ पीछे की जाने वाली शिकायत।
चुगलीखाणो-*(मुहा०)* १ शिकायत करना। २ किसी की झूठी बात कहना। ३ अनुपस्थिति में निंदा करना।
चुगलीखोर- दे० चुगलखोर।
चुगाणो-*(क्रि०)* पक्षियों को दाना डालना। चुगाना।
चुगावणो-दे० चुगाणो।
चुगी-दे० चुग।
चुगो-*(न०)* चिडियों का दाना। चुग।
चुग्गो-दे० चुगो।
चुटक्लो-*(न०)* १ विनोदपूर्ण छोटी बात। २ विनोदपूर्ण उक्ति। चुटकला। ३ दवा का गुणकारी नुसखा। फकीरी नुसखा।
चुटकी-*(वि०)* चुटकी भर। थोडा। *(ना०)* १ अंगूठे और अंगुली को चिटकना। २ चिटकाने का शब्द।
चुट्टो-*(न०)* स्त्री के बालों की चोटी। चोटलो।
चुडलाळी-*(ना०)* १ सधवा। सुहागिन। सौभाग्यवती स्त्री। २ पत्नी। *(वि०)* चूडा पहनी हुई। चूडेवाली।
चुडलो-दे० चूडो।
चुडेल-*(ना०)* १ पिशाचिनी। भूतनी। डाकण। २ क्रूर स्त्री। चुडल। ३ दुष्टा। *(वि०)* चूडा पहनी हुई। चुडल।
चुणणो-*(क्रि०)* १ चुनना। २ क्रम से रखना। ३ इंट या पत्थर को एक के ऊपर एक रखकर दीवाल उठाना। ४ चुगना। बीनना।
चुणाई-*(ना०)* १ चुनने का काम। २ चुनने की मजदूरी।
चुणाणो-दे० चुणावणो।
चुणाव-*(न०)* चुनने का काम। चुनाव। २ पसंदगी।
चुणावणो-*(क्रि०)* चुनवाना। २ चुगवाना।
चुनडी-दे० चूनडी।
चुनाळ-*(न०)* मुसलमान।
चुनियो-दे० चुरणियो।
चुनोती-*(ना०)* १ ललकार। २ उत्तेजना। ३ चेतावनी।
चुप-*(वि०)* खामोश। मौन। शांत।
चुपकै-*(क्रि०वि०)* १ चुपचाप। चुप रहकर। २ धीरे धीरे। ३ छिपे छिप। गुप्त रूप से।
चुपको-*(वि०)* शांत। मौन।
चुपचाप-दे० चुपकै।
चुपडणो-दे० चोपडणो।
चुपडाणो-*(क्रि०)* किसी वस्तु को घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ से तर करवाना।
चुपडावणो-दे० चुपडाणो।
चुबकी-*(ना०)* डुबकी। गोता। चुभकी।
चुबकी मारणो-*(मुहा०)* डुबकी लगाना।
चुबी-दे० चुबकी।
चुबी मारणो-दे० चुबकी मारणो।
चुभणो-*(क्रि०)* १ चुभना। धँसना। २ खटकना। अखरना। ३ दिल में खटकना। व्यथा उत्पन्न करना।
चुभाणो-*(क्रि०)* १ चुभाना। धँसाना। २ दिल में खटक उत्पन्न करवाना।
चुभावणो-दे० चुभाणो।
चुरडो-दे० चुल्लो।
चुरणियो-*(न०)* मानव विष्ठा में उत्पन्न होने वाला एक बारीक कीडा। मल कीट। विष्ठा कीट। चुनियो।

चीथरियो–दे० चींथड़ियो।

चीथरी–(ना०) १ छोटा चिथड़ा। २ धज्जी।

चीथरो–(न०) १ मलिन तथा जीर्ण वस्त्र खंड। चिथड़ा। २ धज्जी। ३ गूदड़।

चीथीजणो–(क्रि०) रौंदा जाना। कुचला जाना।

चीदी–(ना०) १ चिथड़े की पतली पट्टी। २ चिंदी। धज्जी। चींथो। ३ छोटा लंबा टुकड़ा।

चीध–(ना०) १ ध्वजा। पताका। धजा। २ चिथड़ा। ३ वस्त्र की लंबी लीरी।

चीधड़–(न०) १ अधिक अफीम खाने वाला व्यक्ति। २ बहुत अफीम खाने के कारण सुध बुध रहित और गंदा रहने वाला व्यक्ति। ३ एक राजपूत जाति। ४ चुना हुआ वीर पुरुष। ५ वीराग्रणी योद्धा। ६ कुलीन घर का भिखारी। ७ वह भिखारी जो अपनी जाति के सिवाय दूसरी जाति की भीख नहीं लेता है। जाति का भिखारी। ८ वश्य जाति का भिखारी। बनिया जाति का मंगता। ९ वरदीधारी सैनिक। (वि०) १ वीर। बहादुर। योद्धा। २ कंजूस। ३ दरिद्री। ४ गंदा।

चीधणो–(क्रि०) देखना।

चीधाळो–(वि०) धजावाला। ध्वजधारी।

चीधी–(ना०) १ वस्त्र या कागज की लंबी पट्टी। धज्जी। लीरी। २ चिथड़ा।

चीधी देणो–(मुहा०) पति की ओर से पत्नी का त्याग करना। पति की ओर से पत्नी का संबंध विच्छेद करना। तलाक देना।

चीप–(ना०) १ घी भरने का ऊंट के चमड़े का बड़ा कुप्पा। मलमा। २ झगीदार चूड़ी के ऊपर लगाई जाने वाली सोने या चांदी की पत्ती। ३ ...

चीपटी–दे० चीपटी ...

चीपटो–दे० चीपियो ...

चीपड़–(न०) आंख का ...

चीपियो–(न०) चिमटा ...

चीभड़ियो–(न०) चिम...

चीयो–(न०) इमली का ...

चुअणो–(क्रि०) टपकना ...

चुआणो–(क्रि०) चुआना ...

चुआवणो–दे० चुआणो।

चुकणो–(क्रि०) १ चुकना ... २ बेबाक होना।

चुकलियो–(न०) मिट्टी का ...

चुकल्यो–दे० चुकलियो।

चुकंदर–(न०) लाल रंग का ...

चुकाई–(ना०) चुकता करने ... भाव।

चुकाणो–दे० चुकावणो।

चुकादो–(न०) १ चुकता होने ... चुकाई। २ फैसला।

चुकारो–दे० चुकादो।

चुकावणो–(क्रि०) हिसाब चुक... पैसे देना। चुकाना। २ निबटा... भुलाना। भुलावे में डालना। ... डालना। भूल में डालना। ४ कि... किसी काम के करने से रोकना ... मौका खोआ देना। ६ रुकावट डा...

चुख–(न) १ टुकड़ा। खंड। २ ... छोटा पहल। फाहा। चूखो।

चुग–(न०) पक्षियों को चुगने के लिये डा... जाने वाला नाज। चुग्गा। दाना। ...

चुगणो–(क्रि०) १ चुगना। बीनना। ... पक्षियों का चोंच से दाना उठाकर खाना ...

चुगथ–(न०) १ मुगल। २ मुसलमान। ...

चुगथाट–(न०बहु०व०) १ यवन समूह। ...

वाला गोल मकड । गिट्टक । गिट्टी ।
२ मुसलमान ।

चुगलखोर–*(वि०)* चुगली खाने वाला । चुगल ।

चुगळणो–*(क्रि०)* मुह म इधर उधर करते हुए किसी वस्तु को चूगते रहना । चूमना ।

चुगलाळ–*(न०बहु०व०)* मुसलमान लोग । *(वि०)* चुगलखोर ।

चुगलियो–दे० चुगल ।

चुगली–*(ना०)* १ शिकायत । २ पीठ पीछे की जाने वाली शिकायत ।

चुगलीखाणो–*(मुहा०)* १ शिकायत करना । २ किसी की झूठी बात कहना । ३ अनुपस्थिति म निंदा करना ।

चुगलीखोर– दे० चुगलखोर ।

चुगाणो–*(क्रि०)* पक्षियों को दाना डालना । चुगाना ।

चुगावणो–दे० चुगाणो ।

चुगी–दे० चुग ।

चुगो–*(न०)* चिड़िया का दाना । चुग ।

चुग्गो–दे० चुगो ।

चुटकलो–*(न०)* १ विनोदपूर्ण छोटी बात । २ विनोदपूर्ण उक्ति । चुटकला । ३ दवा का गुणकारी नुसखा । फकीरी नुसखा ।

चुटकी–*(वि०)* चुटकी भर । थोड़ा । *(ना०)* १ अगूठे और अगुली को चिटकना । २ चिटकाने का शब्द ।

चुट्टो–*(न०)* स्त्री के बालों की चोटी । चोटलो ।

चुडलाळी–*(ना०)* १ सधवा । सुहागिन । सौभाग्यवती स्त्री । २ पत्नी । *(वि०)* चूड़ा पहनी हुई । चूड़ेवाली ।

चुडलो–दे० चूड़ो ।

चुडेल–*(ना०)* १ पिशाचिनी । भूतनी । डाकण । २ क्रूर स्त्री । चुड़ल । ३ दुष्टा । *(वि०)* चूड़ा पहनी हुई । चुड़ैल ।

चुणणो–*(क्रि०)* १ चुनना । २ क्रम से रखना । ३ ईंट या पत्थर को एक के ऊपर एक रखकर दीवाल उठाना । ४ चुगना । बीनना ।

चुणाई–*(ना०)* १ चुनने का काम । २ चुनने की मजदूरी ।

चुणाणो–दे० चुणावणो ।

चुणाव–*(न०)* चुनने का काम । चुनाव । २ पसंदगी ।

चुणावणो–*(क्रि०)* चुनवाना । २ चुगवाना ।

चुनड़ी–दे० चूनड़ी ।

चुनाळ–*(न०)* मुसलमान ।

चुनियो–दे० चुरणियो ।

चुनौती *(ना०)* १ ललकार । २ उत्तेजना । ३ चेतावनी ।

चुप–*(वि०)* खामोश । मौन । शांत ।

चुपकै–*(क्रि०वि०)* १ चुपचाप । चुप रहकर । २ धीरे धीरे । ३ छिपे छिपे । गुप्त रूप से ।

चुपको–*(वि०)* शांत । मौन ।

चुपचाप–दे० चुपकै ।

चुपडणो–दे० चोपडणो ।

चुपडाणो–*(क्रि०)* किसी वस्तु को घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ से तर करवाना ।

चुपडावणो–दे० चुपडाणो ।

चुबकी–*(ना०)* डुबकी । गोता । घुभकी ।

चुबकी मारणो–*(मुहा०)* डुबकी लगाना ।

चुबी–दे० चुबकी ।

चुबी मारणो–दे० चुबकी मारणो ।

चुभणो–*(क्रि०)* १ चुभना । धँसना । २ खटकना । अखरना । ३ दिल में खटकना । व्यथा उत्पन्न करना ।

चुभाणो–*(क्रि०)* १ चुभाना । धँसाना । २ दिल म खटक उत्पन्न करवाना ।

चुभावणो–दे० चुभाणो ।

चुरडो–दे० चुल्लो ।

चुरणियो–*(न०)* मानव विष्ठा में उत्पन्न होने वाला एक बारीक कीड़ा । मल कीट । विष्ठा कीट । चुनियो ।

चुरळो–दे० चुल्लो ।
चुरस–(वि०) १ श्रेष्ठ । २ सुंदर ।
चुराणो–(क्रि०)चोरी करना । चुराना ।
चुळ–(ना०) १ खुजली । २ कामेच्छा । ३ अवांछनीय काम करने की प्रवृत्ति । ४ इस प्रकार का काम करना जिससे पिटाई होने की नौबत आये ।
चुळणो–(क्रि०) १ शरीर का ढीला पडना । शिथिल हो जाना । २ अधिक समय तक पडे रहने के कारण हलवे खिचडी आदि का बदबू देकर पानी छोड देना । ३ हिलना । खिसकना । ४ खुजली चलना । ५ पतन होना । अवनत होना । ६ सन्मार्ग से हटना । कुमार्ग की ओर प्रवृत्त होना । पथभ्रष्ट होना ।
चुळबुळ–(ना०) चचलता ।
चुळबुळो–(वि०) चचल ।
चुळवळ–(क्रि वि०) १ चुल्लू से । २ चुल्लू मे रक्त भर कर क । (न०)१ चुल्लू । २ रक्त । खून ।
...ळतो–दे० चुल्लो ।
...ळियोडी–(वि०) १ जिसकी जवानी ढल गई हो । २ जिसका शरीर शिथिल हो गया हो (स्त्री) । ३ पथ भ्रष्ट । ४ डावांडोल ।
...ळयोडो–(वि०) १ पथ भ्रष्ट । २ विच...लित । ३ शिथिल ।
...ो–(न०) चुल्लू । चुळवो ।
...णो–(क्रि०) १ चुभना । टपकना । ...सना । २ बूंद बूंद गिरना ।
...ी–(ना०) १ सुडक कर पीने को ...या । २ घूट । ३ मद्यपात्र । चुसकी ।
...(वि०) १ फुरतीला । २ मजबूत ।
...–(न०) १ शरीर के किसी पीड़ित ... को गरम शलाका द्वारा दाग करने ... क्रिया । डमन क्रिया । डाम । ...स प्रकार जलाने से बनने वाला ...न । डाम । डाहो ।
...(न०) पंजा । चगुल ।

चुंगी–दे० चूगी ।
चुंघावणो–दे० चूंघावणो ।
चुंबक–(न०) वह पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर खीचती है । (वि०) चुंबन करने वाला ।
चुंबन–(न०) बोसा । वाल्हो ।
चुंहटियो–(न०) चुटकी । चूंटियो । चूंग टियो ।
चूक–(ना०) १ भूल । गलती । त्रुटि । दोष । ऐब । ३ कसूर । अपराध । दोष ४ कपटपूर्ण आयोजन । षड्यत्र । ५ धोखा । छल । ६ छिप कर मारना । घात । ६ असावधानी । ८ न्यूनता । कमी ।
चूकणो–(क्रि०)१ चूकना । २ भूल जाना । ३ भूल होना । ४ काम को समय पर नही कर सकना । अवसर खोना । ५ वचित रहना । ६ पथ भ्रष्ट होना । ७ निपटना । तै होना । छुटकारा होना । ८ कसर रखना । कमी रखना ।
चूको–(न०) १ एक घास । २ एक भाजी । शाक । ३ तबाकू का पत्ता । जरदो । सूको ।
चूंची–(ना०) स्तन की घुडी । चूचुक । कुचाग्र । बीटणी ।
चूजो–(न०) मुर्गी का बच्चा । चूजा ।
चूड–(ना०) १ स्त्री के हाथ का एक गहना । २ कलाई की चूडियों के आकार का विधवा के हाथ का एक गहना ।
चूडाळी–(वि०) १ चूडा पहनी हुई । २ चूडा वाली । सौभाग्यवती । सधवा । सुहागण । चुडलाळी ।
चूडाळो–(न०) प्रसिद्ध वीर विजयराव भाटी का विरुद ।
चूडी–(ना०) १ स्त्रियों के हाथ में पहिनने का सोने या चाँदी का एक गहना । २ सौभाग्य सूचक कंकण । ३ हाथी दाँत

कांच आदि की चूडी । ४ कोई वृत्ताकार पदार्थ । ४ ग्रामोफोन का रेकार्ड । ५ किसी कील पेच या ढक्कन आदि में बनाने के लिये बनी हुई घुमावदार गहरी रेखाएं।

चूडी उतार-(वि०) एक दूसरे से छोटा । गावदुम । (न०) एक दूसरे से क्रम में छोटा होने का भाव । चूडियों की तरह एक का दूसरी से छोटी होने का क्रम । ढाळ उतार ।

चूडीगर-(न०) हाथी दांत की चूडियां बनाने और बेचने वाला व्यक्ति । चुडिहार । दांती । चीरवियो ।

चूडी वधणी-दे० चूडी वधरणी ।

चूडी वधरणी-(मुहा०) चूडी का टूटना (टूटना कहना अशुभ माना जाता है इस लिये चूडी वधणी या चूडी वधरणी कहा जाता है ।)

चूडो-(न०) १ सौभाग्यवती स्त्रियों के हाथों में पहिनने का हाथी दांत की चूडियों का एक गावदुम सेट । स्त्रियों का सौभाग्य सूचक एक भूषण । २ सगी ।

चूडो फूटणो-(मुहा०) १ पति का मरण होने पर स्त्री के हाथ की सौभाग्यसूचक चूडियां का तोडा जाना । २ विधवा होना । सुहाग खण्डित होना ।

चूडो फोडणो-(मुहा०) पति का मरण होने पर स्त्री के हाथ का सौभाग्य सूचक चूडा तोडना ।

चूण-(न०) १ आटा । चून । २ खुराक । ३ चण । ४ पक्षी भोजन । चुगो ।

चूत-(ना०) योनि । भग ।

चूतियो-(वि०) बेवकूफ । मूर्ख ।

चून-दे० चूण ।

चूनगर-(न०) १ चूना बनाने वाला या चूने का काम करने वाला व्यक्ति । २ एक जाति ।

चूनडियाळ-(ना०) १ चुनरी ओढने वाली सधवा स्त्री । सधवा । सुहागवती । सुहागण । २ पत्नी । ३ देवी । शक्ति । (वि०) १ सौभाग्यवती । २ चुनरी ओढी हुई ।

चूनडी-दे० चूनडी ।

चूनडी मगळ-(न०) कन्या की जन्म कुंडली में एक अशुभ योग । (कन्या की जन्म कुंडली में दूसरे चौथे आठवें या बारहवें घर में पडा हुआ मगल) ।

चूनाळ-(न०) १ मुसलमान । २ वीर । ३ सिंह ।

चूनी-(ना०) १ माणिक का छोटा दाना । लाल रत्न कण । लाल । चुन्नी । २ रत्न कण । बहुत छोटा नग ।

चूनो (न०) चूना ।

चूनो लगाणो-(मुहा०) १ नीचा दिखाना । २ ठगना । ३ कलंकित करना ।

चूनो लागणो-(मुहा०) १ बदनाम होना । कलंकित होना ।

चूप-(ना०) १ प्रसन्नता । २ उमंग । ३ उत्साह । दे० चूंप ।

चूमणो-(क्रि०) चुम्बन करना । बोसा लेना । म्हालो देणो ।

चूर-(न०) १ चूण । चूर चूर । टुकडा । २ ध्वंस । नाश । (वि०) १ बेसुध । बेहोश । २ शिथिल ।

चूरण-(न०) १ चूर्ण । बुकनी । २ औषधियों का बारीक सफूफ । चूर्ण । २ चूरा । भूको ।

चूरणो-(क्रि०) १ रोटी को घी गुड आदि में चूर कर चूरमा बनाना । २ बारीक चूरा करना ३ भींचना । दाबना । ४ नाश करना । ५ टुकडे करना ।

चूरमो-(न०) १ घी गुड या चीनी के साथ रोटी आदि को चूर करके बनाया हुआ भोज्य पदार्थ । मधुरान्न । चूरमा । २ बेसन की एक मिठाई ।

चूरी-(ना०) १ नमक, मिर्च और घी मिला हुआ पापड़ का चूर्ण। २ बारीक चूरा। भूकी।
चूरी भाटो-(न०) शीघ्र पिस जाने वाला एक मुलायम पत्थर। घीया पत्थर। सगेजराहत। मालणियो भाटो। घीयो।
चूरो-(न०) चूर्ण। चूरा। बुरादा। भूको।
चूर्ण-दे० चूरण।
चूर्णी-(ना०) १ पाणिनि के सूत्रों का पतंजलि द्वारा किया हुआ महाभाष्य। २ कठिन पदों की व्याख्या बताने वाली पुस्तक। चूर्णिका। ३ कविता का गद्य में लिखा हुआ सार। ४ कठिन पदों की व्याख्या।
चूळ-(ना०) १ कील। २ कूल्हे की हड्डी।
चूलड़ी-(ना०) १ लोहे का बना छोटा चूल्हा। २ अंगीठी। बोरसी। गोरसी।
चूला लाग-(न०) प्रति चूल्हे के हिसाब से लिया जाने वाला एक कर। धुंआवराड।
चूलावराड-दे० चूला लाग।
चूळियो-(न०) १. बिना कब्जों वाले किंवाड़ के ऊपर नीचे लगने वाला लोहे का एक नोकदार भाग। नीचे का भाग एक लोहे की ऊखली में और ऊपर का भाग एक लोहे के कड़े में लगा रहता है। किंवाड़ के वे नकूसे जिनके सहारे किंवाड़ खड़ा रहता है खुलता है तथा बंद होता है। २ कूल्हा।
चूळियो उतरणो-(मुहा०) १ कूल्हे की हड्डी का खिसक जाना। २ ऊखली में से किंवाड़ के चूलिये का निकल जाना।
चूले में जाणो-(मुहा०) नष्ट भ्रष्ट होना।
चूले में पड़णो-(मुहा०) नष्ट भ्रष्ट होना।
चूलो-(न०) मिट्टी ईटें आदि का बना एक उपकरण जिसमें लकड़ियाँ और कंडे जलाकर उस पर भोजन पकाया जाता है। चूल्हा।
चूलो वळणो-(मुहा०) भोजन बनना।
चूवणो-(क्रि०) टपकना। चूना। रिसना।
चूसणो-(क्रि०) १ किसी वस्तु के रस को मुँह से गुडक-गुडक कर खींच लेना। चूसना। २ अनुचित रूप से किसी का धीरे धीरे माल मत्ता हड़प कर जाना।
चूहो-(न०) चूहा। मूषक। ऊंदरो।
चूं-(न०) १ चिड़िया या चूहे के बोलने का शब्द। २ बहुत धीमा शब्द। 'चूं' शब्द। चूंकारो।
चूंक-(ना०) १ कील। २ स्त्रियों के दाँतों का एक आभूषण। ३ पेट का तीव्र दर्द। पेट की ऐंठन। मरोड़।
चूंकलो-(न०) १ शस्त्र की नोक। २ नोक का प्रहार।
चूंकारो-(न०) 'चूं' शब्द। बहुत धीमा शब्द।
चूंखो-(न०) १ रूई ऊन आदि का छोटा पहल। २ छितराये हुए बादलों में का छोटा बादल। ३ निर्मल आकाश में छोटा बादल।
चूंगटियो-(न०) चुटकी से चमड़े को ऐंठने की क्रिया। चूंटियो।
चूंगणो-दे० चूंघणो।
चूंगथणा-(न०ब०व०) १ स्तन। बोबा।
चूंगथणो-(न०) दुधमुंहा बच्चा।
चूंगी-(ना०) १ नगर में आने वाले माल पर लगने वाला महसूल। आयात कर। २ कर।
चूंघणो-(क्रि०) स्तनपान करना। बोबो धावणो।
चूंघाणो-दे० चूंघावणो।
चूंघावणो-(क्रि०) स्तनपान करवाना। बोबो धवाणो।
चूंच-(वि०) १ नाराज। अप्रसन्न। २ क्रोधित। ३ जोशपूर्ण। (ना०) १ चूंचदार पगड़ी की चूंच। २ चोंच। चांच। ३ जोश। आवेश। ४ गर्व।

चूचक-*(न०)* प्रथम प्रसव के बाद पुत्री को ससुराल भेजने समय दिये जाने वाले वस्त्र, आभूषण आदि। हुलाणो। (ऐसा रिवाज है कि पुत्री का प्रथम जापा प्रायः पीहर में कराया जाता है)।

चूचाडी-*(ना०)* जलती हुई लकड़ी को गोलाकार घुमा कर चक्र बनाने का भाव या क्रिया।

चूचाणो-*(क्रि०)* १ टपकना। पीटना। २ हिलाना। ३ मैथुन करना।

चूचो-*(ना०)* १ आग। २ जलती हुई पतली टहनी। २ स्तन का अग्र भाग। चूचुक। विटनी। बीटणी।

चूंटणो-*(क्रि०)* १ अंगुली से तोड़ना (फूल आदि।) २ नोचना। उखाड़ना। ३ सुधारना। ठीक करना। (साग पात आदि।) ३ शाक आदि की पत्तियाँ तोड़ना। चूंटना। ५ चुनना। पसंद करना।

चूंटावणो-*(क्रि०)* १ चुंटवाना। २ चुना जाना।

चूंटियो-*(न०)* १ मक्खन। २ चूंगटियो। चुहटियो। चुटकी। ३ एक मिठाई।

चूंटियो चूरमो-*(न०)* बेसन से बनाई जाने वाली एक मिठाई।

चूंटियो भरणो-*(मुहा०)* १ चुटकी से चमड़ी को पकड़ कर खींचना या एंठना। २ चमड़ी को ऐंठ कर दर्द पहुँचाना।

चूंटो-*(न०)* १ मक्खन का लौंदा। २ किसी लंबी वस्तु का शुरु या अंत का भाग। सिरा। ३ फल शाक आदि का डंठल।

चूंतरी-*(ना०)* चबूतरी। चौतरी।

चूंतरो-*(न०)* चबूतरा। चौतरा। चौतरो।

चूंथ-*(न०)* १ मर्दन। २ लूट। ३ नाश।

चूंथणो-*(क्रि०)* १ कूथना। रौंदना। २ लूटना। ३ मर्दन करना। मसळणो।

चूंथीजणो-*(क्रि०)* १ लूटा जाना। ... जणो। २ मर्दन होना। ३ म... जाना। ४ रौंदा जाना।

चूंथो-*(न०)* १ गड़बड़। अव्यवस्था। २ बिगाड़। ३ झंझट। *(वि०)* ... मर्दित। चूंथा हुआ। २ अव्यवस्थित। ३ झंझटवाला।

चूंदड़ी-*(ना०)* स्त्रियों की लाल रं... तथा बेल बूटेदार सुंदर और ... ओढ़नी। चुनरी।

चूंधळो-*(वि०)* छोटी और कमजोर ... वाला। २ जिसकी दृष्टि मंद ... चुंधा। चूंधियो। चूंधो।

चूंधियो-दे० चूंधो।

चूंधो-दे० चूंधळो।

चूंप-*(ना०)* १ स्त्रियों के दाँतों का ... गहना। चूंप। २ स्त्रियों के हा... चूड़ी की मेख। ३ उत्साह। उ... ४ चाव। ५ यत्न। ६ ध्यान। ... रेख। ख्याल। ७ शरीर की सजा... शौकीनी। ८ निपुणता। कुशलता... शुद्धता। स्वच्छता।

चूंप आळो-दे० चूंपाळो।

चूंप वाळो-दे० चूंपाळो।

चूंप हाळो-दे० चूंपाळो।

चूंपाळो-*(वि०)* १ चतुर। दक्ष... सुघड़। ३ उत्साही। ४ शौकीन।

चे-*(अव्य०)* संबंध सूचक 'चा' विभक्ति... बहु वचन रूप। के।

चेचक-*(ना०)* शीतला या माता ... एक संक्रामक रोग।

चेजारो-*(न०)* मकान बनाने वाला का... राज। राजगीर। मेमार। कडियो...

चेजो-*(न०)* १ चेजारे का काम। चु... २ दाना। चुग्गा।

चेट-*(न०)* १ पति। स्वामी। २ ... सेवक। ३ भांड। विदूषक। ४ भड़...

चेटक-(न०) महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम। २ सेवक। दास। ३ दूत।
चेटल-(न०) सिंह का छोटा बच्चा।
चेटी-(ना०) १ दासी। सेविका। चरी। २ दूती।
चेड-(न०) मृत्यु भोज। औसर।
चेडो-(न०) १ झंझट। बखेडा। आफत। २ हल्लत। दोष। ३ भूत प्रेत का आवेश। प्रेतबाधा।
चेडणो-(क्रि०) चिपकाना। चेपणो।
चेढी-(ना०) १ पांच सौ साठ गांवों का समूह। ५६० गांवों का प्रदेश। २ पांच सौ साठ गांवों की जागीरी।
चेढीमणो-(न०) १ चेढी का मालिक। दे० वेढीमणो।
चेत-(न०) १ सावधानी। होश। २ चेतनता। चेतना। ३ बोध। ज्ञान। ४ सुध बुध। ५ सुधि। स्मृति।
चेतणो-(क्रि०) १ चेतना। सावधान होना। २ अग्नि लगना। प्रज्वलित होना। ३ (लडाई) छिड़ना।
चेतन-(न०) १ जीवधारी। प्राणी। २ जीवात्मा। ३ मनुष्य। आदमी। ४ होश। सुध। (वि०) १ चेतना वाला। २ सजीव।
चेतना-(ना०) १ बुद्धि। समझ। २ ज्ञान। ३ चेतनता। ४ ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। ५ जीवन शक्ति। ६ समझ शक्ति। ७ होश।
चेतवणो-(क्रि०) १ चेताना। सावधान करना। २ याद कराना। ३ सुलगाना।
चेताचूक-(वि०) १ बेहोश। बेसुध। २ व्याकुल। विकल। ३ चेतना रहित। ४ अस्थिर बुद्धि वाला।
चेताणो-दे० चेतावणो।
चेतावणी-(ना०) १ चेतावनी। सतर्क होने की सूचना। २ संतों की शिक्षा या उपदेश के वाक्य या एक अंग। संतवाणी का अंग जैसे-जीवदया रो अंग। चेतावणी रो अंग इत्यादि।
चेतावणो-दे० चेतवणो।
चेतावनी-(ना०) १ सावधान करने के लिये कही गई बात। चेतावणी। २ आज्ञा का पालन न करने पर की जाने वाली कार्यवाही की सूचना।
चेतियोडो-(वि०) १ सावधान। सचेत। २ प्रज्वलित।
चेतो-(न०) १ होश। चेतना। सत्ता। २ समझ। बोध। ३ सतर्कता। ४ याद। स्मृति।
चेन-(न०) १ चिन्ह। लक्षण। २ हाव भाव। ३ आराम। सुख। चैन। (ना०) लड। चेन। सांकळ।
चेप-(न०) १ पीव। मवाद। रसी। २ दूसरे के रोग का असर। छूत। ३ चिपचिपा रस। लसदार रस। ४ बात, झगड़े आदि का सिलसिला। ५ प्रभाव। असर।
चेपणो-(क्रि०) १ चिपकाना। २ दबाना। ३ तमाचा मारना।
चेपाचापो-(न०) १ मुश्किल से होने वाला गुजारा। २ गुजारा।
चेपियोडो-(भू०कृ०) चिपकाया हुआ।
चेपी-(वि०) १ चेपवाला। ३ चेप लगने वाला। छूत वाला। २ चिपकने वाला। ४ चिकना।
चेपो-(न०) १ प्रतिबंध या किसी सूचना के रूप में दीवाल मकान आदि पर चिपकाया जाने वाला कोई सरकारी आज्ञा पत्र। २ गुजारा। निर्वाह। चेपाचापो।
चेरी-(ना०) दासी।
चेरो-(न०) दास। चाकर।
चेळ-(न०) १ वस्त्र। कपड़ा। २ प्रस्वेद। पसीना। परसेवो।

चेलकाई-*(ना०)* शिष्यता । चेलापना । सेवकाई ।

चेलकी-दे० चेली ।

चेलको-दे० चेलो ।

चेला चाटी-*(ना०)* दास दासी ।

चेली-*(ना०)* १ चेली । शिष्या । २ दासी ।

चेलो-*(न०)* १ शिष्य । चेला । २ सेवक । दास ।

चेळो-*(न०)* १ तराजू का पलडा । तुला पट । पल्ला । २ पक्ष ।

चेष्टा-*(ना०)* १ मन का भाव बताने वाली अंगों की गति । भावभंगी । २ परिश्रम । ३ प्रयत्न ।

चेह-*(न०)* १ चिता । २ चिता की अग्नि । ३ श्मशान । मरघट ।

चेहरो-*(न०)* १ मुख मंडल । मुख । मुखडो । २ मुखौटा । मुखोटो ।

चेहरो माहरो-*(न०)* सूरत शक्ल । हुलिया ।

चैत-*(न०)* चैत्र मास । चैतर ।

चैंतर-दे० चैत ।

चैतरी-*(वि०)* चैत्र मास का । चैत्र मास संबंधी ।

चैतरी मेळो-*(न०)* महेवा और खेड (मारवाड के अधिपति और प्रसिद्ध सिद्ध रावल मल्लिनाथ और उनकी रानी रूपांदे के नाम से तिलवाडा और थान गाँव के बीच लूणी नदी के पाट में चैत्र वदी ११ से चैत्र सुदी ११ तक भरा जाने वाला एक भारत प्रसिद्ध व्यापारिक मेला । चैत्री मेला । मलीनाथजी रो मेळो ।

चैत्य-*(न०)* १ सीमा चिन्ह । सीमा पत्थर । २ देवालय । ३ बौद्ध मंदिर ४ स्मरण स्तंभ । स्मारक । यादगार ।

चैत्र-*(न०)* चैत्र मास । चैत । चैतर ।

चैत्री-दे० चैतरी ।

चैन-*(न०)* १ शांति । २ सुख । आराम । ३ स्वास्थ्य लाभ ।

चैर-*(न०)* १ खींप नामक एक क्षुप । खींप । खींपडो । २ चरका । चीरो ।

चैरको-*(न०)*१ चीरने का घाव । चरका । चीरो । चीरण । २ मन को चुभने वाली बात ।

चैरणो-*(क्रि०)* १ चीरना । काटना । २ निंदा करना । ३ कटाक्ष करना । आक्षेप करना ।

चैल-*(न०)* कपडा । वस्त्र ।

चैळ-*(ना०)* १ चहल । चहल पहल । आनंदोत्सव ।

चैंच-*(ना०)*चिड़ियों की चहचहाट । कलरव । २ बकवाद ।

चैठ-*(ना०)* १ चिपकने का भाव । चिपकाव । चहट । २ प्रयत्न । कोशिश । लगन । ३ मनुहार । आग्रह । अनुरोध । ४ एक उदर रोग ।

चैठणो-*(क्रि०)* १ चिपकना । २ गले पडना । ३ क्रोधित होकर उत्तर देना या बात करना । चहटणो ।

चो-*(प्रत्य०)* छठी विभक्ति । संबंध कारक विभक्ति । का । (प्राय काव्य में प्रयुक्त होने वाली इस विभक्ति के चा, चे बहुवचन और ची नारी जाति रूप है ।)

चोईस-*(वि०)* बीस और चार । *(न०)* चौबीस की संख्या २४ ।

चोईसो-*(न०)* १ संवत का चौबीसवां वर्ष । २ २४०० की संख्या । *(वि०)* दो हजार चार सौ । चौबीसौ ।

चोओ-दे० चोवो ।

चोकठ-*(ना०)* चौखट ।

चोकठा-*(न०)* चौखटा ।

चोकर-दे० भूसो ।

चोख-*(न०)* १ तपास । २ तलाश । ३ जानकारी । ४ ठाट । तयारी । ५ ढंग । युक्ति । ६ सलीका । तहजीब । ७ चतुराई ।

चोख करणो-*(मुहा०)* जाँच करना ।

चोखतीख-(ना०) १ विशेषता । २ प्रतिष्ठा ।
चोखवट-दे० चोख ।
चोखा-(न०) चावल । तंदुल ।
चोखाई-(ना०) १ पवित्रता । २ शुद्धता । स्वच्छता । चोखापन । ३ सुंदरता । ४ असलियत । ५ आडंबर । ढोंग । ६ चतुराई । ७ युक्ति । ढंग । प्रकार । ८ गुदा प्रक्षालन । ९ शौचनिवृत्ति ।
चोखामो-(वि०) उज्वल वर्ण का । त्रिवर्ण मे का । (न०) १ उच्च वर्ण । २ उज्वल जाति ।
चोखी-(वि०) १ अच्छी । २ असली । विशुद्ध । ३ सुंदर । ४ पवित्र । ५ ऋतुस्नाता ।
चोखो-(वि०) १ अच्छा । २ सुंदर । ३ पवित्र । ४ असल । असली । विशुद्ध । (अव्य०) १ अस्तु । अच्छा । खैर । २ ठीक है ।
चोगान-(न०) मैदान । चौगान ।
चोघणो-(क्रि०) १ खूब बारीकी से जाँच करना । तलाश करना । खोजना । २ धूर्तता दिखाना । चालाकी बताना । होशियारी बताना ।
चाघो-(वि०) १ खूब बारीकी से जाँच करने वाला । २ अति कुशल । निष्णात । निपुण । चतुर । ३ धूर्त । चालाक । होशियार ।
चोचळा-(न०) १ नखरा । २ ढोंग ।
चोचळी-(वि०) १ नखरे करने वाली । नखराळी । २ ढोंगी ।
चोचळो-(वि०) १ ढोंगी । २ नखरे बाज । नखराळो । धूर्त ।
चोचा-(न०ब०व०) १ छल । कपट । धूर्तता । २ ढोंग की रचाई । रान का ढोंग । ३ निन्दा । ४ कलह ।
चोचाळी-दे० चावळी ।
चोचाळो-(वि०) १ धूर्त । कपटी । २ ढोंगी ।
चोज-(ना०) १ शौक । २ मौज । ३ मनोरंजन । ४ उत्साह । ५ मजाक । दिल्लगी । ६ हँसाने वाली चमत्कारपूर्ण उक्ति । ७ व्यंगपूर्ण उपहास । ८ तर्क । दलील । ९ बुद्धि की सूक्ष्मता । १० छिपाव । ११ भेद । रहस्य । १२ हँसी । हास । १३ सुंदरता । १४ कांति । आभा ।
चोजाळी-(वि०) हँसी दिल्लगी वाली । चोजवाली ।
चोजाळू-(वि०) १ मौजी । २ मजाकी । हँसी मजाक करने वाला । चोजवाला । ३ व्यंग्य तथा परिहास से चित्त को प्रसन्न करने वाला ।
चोजाळो-दे० चोजाळू ।
चोजीलो-दे० चोजाळू ।
चोजो-(न०) १ नखरा । २ छल । कपट ।
चोट-(ना०) १ प्रहार । आघात । २ घाव । जख्म । ३ मानसिक व्यथा । ४ यातना । कष्ट । ५ दाँव पेंच । ६ विश्वासघात । ७ आक्रमण । वार । ८ एक प्रकार का तांत्रिक अभिचार । मूठ । मारण ।
चोट खाणो-(मुहा०) १ नुकसान लगना । २ प्रहार सहना ।
चोट मारणो-(मुहा०) मारण अभिचार करना । मूठ मारणो ।
चोट लागणो-(मुहा०) १ प्रियजन की मृत्यु होना । २ नुकसान होना । ३ चोट लगना ।
चोटली-दे० चोटी ।
चोटला-(न०) १ जूड़ा । २ सिर के घने और लंबे बाल । ३ बालों की चोटी ।
चोटियाळ-दे० चोटियाळी ।
चोटियाळी-(ना०) १ योगिनी । २ रण

पिगाचनी । *(वि०)* १ खुले केशो वाली । २ चोटीवाला ।

चोटियो–*(न०)* १ राजस्थानी दोहे का एक प्रकार । २ एक डिंगल गीत । ३ मुरट घास की ढेरी ।

चोटी–*(ना०)* १ चोटी । शिखा । २ वेणी । ३ पर्वत शिखर । ४ नारियल के ऊपर का तंतु-समूह । नारियल की जटा । ५ मोर मुर्गे आदि पक्षियों के सिर की कलगी ।

चोटी वढियो–*(न०)* वह व्यक्ति जो अपनी चोटी कटवा कर जागीरदार का वशवर्ती और विश्वासु कर मुक्त (लाग लगान रहित) प्रजाजन बनता था । २ मुसलमान । *(वि०)* चोटी कटा हुआ । चुटिया रहित ।

चोटीवाळो–*(वि०)* जिसके चोटी हो । *(न०)* हिन्दू ।

चोटीवाळो तारो–*(न०)* धूमकेतु । पुच्छल तारा । पूछल तारो ।

चोटी हाथ में होणा–*(मुहा०)* वश में होना ।

चोडाळ–*(न०)* १ हाथी । २ पालकी ।

चोप–*(ना०)* १ सेवा । भक्ति । २ श्रद्धा । ३ चाव । उमंग । ४ इच्छा । *(क्रि०वि०)* श्रद्धा पूर्वक ।

चोपई–दे० चोपाई ।

चोपड–*(न०)* १ घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ । २ घी । घृत ।

चोपडणो–*(क्रि०)* १ चपाती के ऊपर घी फैलाना । चुपड़ना । २ किसी वस्तु के ऊपर घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थ को फैलाना । ३ पोतना । लीपना । चुपड़ना ।

चोपटो–*(न०)* १ कुंकुम चंदन अक्षत आदि मांगलिक वस्तुएँ रखने का एक पात्र ।

चोपाई–*(ना०)* चार पंक्तियों (चरणों) का एक छंद जिसकी प्रत्येक पंक्ति में १६ मात्राएँ होती हैं । चौपाई । चउपई ।

चोपाळ–*(ना०)* गाँव के लोगों के पंचायत करने को बैठने की खुली जगह ।

चोफेर–*(अव्य०)* चारों ओर । चारू मेर । चौतरफ ।

चोफाड–*(वि०)* चार भागों में चीरा हुआ ।

चोफाडो–दे० चोफाड ।

चोफूली–*(ना०)* १ एक आभूषण । २ आक के फूल के अंदर का भाग ।

चोफेर–दे० चोफेरे ।

चोफेरी–*(ना०)* राजपूतों में सुहाग रात को मनाया जाने वाला उत्सव *(अव्य०)* चारों ओर ।

चोब–*(ना०)* १ तंबू या शामियाने के बीच का काष्ठ का बड़ा खंभा । तंबू को खड़ा करने का खंभा । २ ढोल या नगाड़े को बजाने का डंडा । ३ सोने चाँदी से मँढ़ा हुआ एक डंड जिसे चोबदार राजा या महात्माओं के आगे लेकर चलता है । आसा । आसो । ४ शाक सब्जी के पौधे को उखाड़ कर दूसरी जगह लगाने की क्रिया । रोप ।

चोबचीणी–*(ना०)* एक काष्ठौषधि । चोबचीनी ।

चोबणो–*(क्रि०)* पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना । रोपणो । २ डाम देना ।

चोबदार–*(न०)* १ छड़ी दार । आसाबरदार । २ नकीब । ३ दरबान । द्वारपाल ।

चोभणो–*(क्रि०)* १ रोपना । रोतना । २ शाक सब्जी के पौधों को उखाड़ कर दूसरी जगह ले जाना । ३ तेल में रुई भिगोकर गरम गरम सेंकना । ४ चुभाना ।

चोर–*(न०)* १ चोरी करने वाला । तस्कर । २ एक प्रकार की तरमक्खी जो मक्खियों की शत्रु होती है । *(वि०)* आंतरिक भाव को छिपाने वाला ।

चोर नगार-(न०) चार उकार आदि।

चोरटाई-(ना०) १ चोरी। चोट्टाई। २ चोरों के लक्षण। ३ चोरों की रीति। चोट्टाई।

चोरटो-(न०) चोर। चोट्टा। (स्त्री० चोरटी)।

चोरणो(क्रि०) चुराना। चोरना। चोरी करना।

चोर नट-(न०) नटों की एक जाति।

चोरा-चूटी-(न०) १ बेईमानी। २ छिपकर चोरी। ३ लूटपाट। ४ ठगाई। ठगी।

चोरी-(ना०) १ चोर का काम। छिपकर किसी की वस्तु का लेना। चुराने की क्रिया। २ अपहरण।

चोरी चकारी-(ना०) चोरी लूट खसोट आदि।

चोरी जारी-(ना०) १ चोरी और व्यभिचार। २ दुष्कर्म।

चोळ-(न०) १ लाल रंग का एक वस्त्र। २ लाल रंग। ३ मजीठ। ४ आमोद प्रमोद। केलि। क्रीडा। ५ कामक्रीडा। ६ रक्त। लहू। (वि०) १ लाल। २ संलग्न। सबद्ध।

चोलण-(ना०) परेशानी। हैरानी। तंग करना। खोडीलाई।

चोलण करणो-दे० चालणो।

चोलणो-(क्रि०) हैरान करना। सताना। परेशान करना। खोडीलाई करणी।

चोळणो-(क्रि०) १ मसलना। रगडना। २ बार बार वही बात कहना। (न०) एक वस्त्र। कुरता। चोळो।

चोळ-बोळ-(वि०) १ अत्यंत आधित। २ अत्यन्त लाल। ३ अत्यन्त आनंदित। खूब खुश।

चोळास-(ना०) ऊंट पर एक साथ की जाने वाली चार जनों की सवारी।

चोळी-(ना०) चोली। अंगिया। कांचळी।

चौगीरद-(न०) चारभाग। चारोंओ[...]

चाठा-(न०) १ चुरग। २ शरीर। दे[...] ३ गायुधा के पहला का सबा चोना [...]

चाया-(न०) १ लकड़ी या तारेलों क जन[...] से उगम स निकला बाना रस। चोषा[...] २ एक सुगंधित द्रव्य। चोषा। अरगजा[...]

चाट-(ना०) पाँव म चाट लगने स उत्प[...] ललाई।

चाच-(ना०) १ चोंच। चञ्चु। चोंच। कुँए म से पानी निकालने का एक यंत्र। ढेंकली।

चातरी-(ना०) चबूतरी।

चोतरो-(न०) चबूतरा।

चौ-(वि०) समास म० म 'चार' अर्थ का सूचक पूर्वग। चार। यथा—चौकना, चौमासा इत्यादि।

चौइस-(वि०) बीस और चार। चौबीस। (न०) चौबीस की संख्या। २४

चौइसो-(न०) १ चौबीसवां संवत्। २ २४०० की संख्या। (वि०) दो हजार चार सौ।

चौक-(न०) १ घर के भीतर चौकोनी खुली जगह। २ गली बाजार की बड़ी खुली जगह। ३ चौराहा। चौहट्टा ४ पृष्ठ भाग। पीठ। ५ मैदान।

चौक-चांदणी-(ना०) शेखावाटी का गणेश चौथ (भादो शु० ४) के उपलक्ष्य मे मनाया जाने वाला एक प्रावृटोत्सव।

चौकठ-(ना०) चार लकडियो का एक ढाँचा जिसमे किवाड के पल्ले जडे रहते हैं। बारसोत। बारोक।

चौकठो-(न०) चौकोर ढांचा। चौकोना ढांचा। चार लकडियों का चौकोर ढांचा। चौकठ।

चौकडा-लगाम-(ना०) घोड़े की एक प्रकार की लगाम।

चौकड़ी-*(ना०)* १ ✕ एसा चिह्न । २ चार आदमियों की मंडली । ३ चार युगों का समूह या समय । ४ रसोई में बनी हुई मेंडदार चौकोनी जगह जहाँ बैठ कर भोजन किया जाता है । चौका । ५ हरिए की छलांग ।

चौकड़ो-*(न०)* १ लगाम की घोड़े के मुंह के अंदर रहने वाली लोहे की कड़ियाँ या डंडा । २ एक प्रकार की लगाम । ३ कान का एक आभूषण ।

चौकनी-*(ना०)* लंबे डंडे वाला एक कृषि उपकरण जिसके आगे सींगों के समान चार नुकील डंड लगे रहते हैं । चौसींगी ।

चौक पूरणो-*(मुहा०)* आंगन में मांगलिक रंगों चित्रों को चित्रित करना । साथियो (साखियो) बणाणो ।

चौकरणो-*दे०* चौतीणो ।

चौकस-*(ना०)* १ सावधानी । सतर्कता । २ खबर । पता । ३ तलाश । खोज । *(वि०)* सतर्क । सावधान । *(क्रि०वि०)* अवश्य । निश्चय ।

चौकसाई-*(ना०)* १ सावधानी । खबरदारी । २ रखवाली । निगरानी । ३ तपास । परीक्षा ।

चौकसी-*(न०)* सोने चांदी का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति । सराफ । २ सराफी धंधे के कारण किसी जाति को पड़ी हुई अटक या अल्ल । दे० चौकसाई ।

चौका उतरने-*(न०)* रसोई बन जाने के बाद उतरने माज कर चौका लीपने का काम । सजेरो ।

चौकी-*(ना०)* १ चबूतरो । २ पहरा । ३ चौखूंटी चबूतरी । ४ जगात चौकी । चुंगी चौकी । ५ थाना । ६ ताबीज । गंडा । ६ गले में पहिनने का एक आभूषण ।

चौकीदार-*(न०)* पहरेदार ।

चौकीदारी-*(ना०)* पहरा । रखवाली ।

चौकूंट-*(न०)* चारों दिशाएँ ।

चौको-*(न०)* १ चार की संख्या । चार '४' । चौगो । २ अगले चार दांत । सामने के चार दांतों का समूह । ३ भोजन बनाने के लिये गोबर मिट्टी से लिपा हुआ घर का एक भाग । ४ रसोईघर में बनाई हुई मेंडदार चौकोनी जगह जहाँ बैठ कर भोजन किया जाता है । ५ रसोई घर । ६ मरणासन्न व्यक्ति को लिटाने के लिए गोबर से लीप कर तैयार की हुई जगह । ७ चौथा संवत् ।

चौखट-*दे०* चौकठ ।

चौखटो-*दे०* चौकठो ।

चौखळो-*(न०)* १ आस पास के मिलते जुलते सांस्कृतिक संबंधों के कुछ गांवों का समूह । २ आठ, बा । (के गांवों का समूह । परगनो । ३ मृत्यु भोज का एक सीमा प्रकार जिसमें आठ बाजू की निश्चित सीमा के गांवों की अपनी जाति वालों को निमंत्रित किया जाता है ।

चौखूंटो-*(वि०)* १ चौकोना । २ चार मंजिल वाला । चौ... । *(न०)* चार खंड या मंजिल वाला मकान । चौमंजिला मकान ।

चौखूणो-*(वि०)* १ जिसके चारों कोने बराबर हों । सम चौरस । २ चौकोना । चौखूंटो ।

चौखूंट-*(ना०)*१ चारों दिशाएँ । २ चारों कोन । *(वि०)* चार कोनों वाला । *(क्रि०वि०)* चारों दिशाओं में ।

चौखूंटो-*(वि०)* १ चौकोना । चार कोना वाला । २ समचौरस । चौखूणो ।

चौगट-*दे०* चौरठ ।

चौगड़द-*(क्रि०वि०)* चारों ओर ।

चौगडदाई-*(ना०)* चारों ओर का फैलाव ।

चौगणो-*(वि०)* चौगुना। चौगुणो।
चौगद-दे० चागद्द।
चौगान-*(न०)* मैदान। चौक।
चौगुणो-*(वि०)* चार गुना। चौगुना। चौगणो।
चौगो-*(न०)* चार की संख्या। चौको।
चौघड-*(ना०)* दाढ़। चौभर।
चौघडियो-*(न०)* १ चतुर्घटिका। चार घड़ी का समय। २ वासर गणना के अनुसार चार चार घडी म बदलने वाला मुहूर्त्त।
चौड-*(न०)* विनाश। संहार।
चौडाई-*(ना०)* लंबाई से भिन्न दिशा। चौडाई। अरज।
चौडे-*(क्रि०वि०)* प्रत्यक्ष। दिन दहाडे। प्रकट रूप मे।
चौडे चौगान-*(अव्य०)*१ खुले आम। सब साधारण म। सबके सामने। २ चौगान म।
चौडे धाडे-*(अव्य०)* १ सबके सामने धाडा डाल कर। २ सबके सामने। खुले आम। ३ दिन दहाडे। दिन म।
चौडे घूंपट-दे० चौडे धाडे।
चौडो-*(वि०)* चौडा।
चौडोल-*(न०)* १ पालकी। २ हाथी।
चौतरफ-*(क्रि०वि०)* चारो ओर।
चौतरी-दे० चांतरी।
चौतरो-दे० चांतरो।
चौताळो-*(वि०)* चार ताल वाला। *(न०)* १ मृदंग आदि का ताल विशेष। २ संगीत का एक ताल। दे० चौतळो।
चौतीणो-*(न०)* वह कुंआं जिस पर चार चरसो द्वारा एक साथ पानी निकाला जाता हो। चौलावा। चौकरणो।
चौतीस-*(वि०)* तीस और चार। *(ना०)* चौतीस की संख्या। ३४।
चौतीसो-*(न०)* १ चौतीसवां सम्वत्। २ ३४०० की संख्या। *(वि०)* तीन हजार चार सौ।
चौथ-*(ना०)* १ पक्ष का चौथा दिन। पखवाडे की चौथी तिथि। चतुर्थी। २ आमदनी का चौथा भाग जो मराठे कर के रूप म लिया करते थे। ३ नके में चौथे भाग का राजस्व। ४ चतुर्थांश।
चौथाई-*(ना०)* चौथा हिस्सा। चतुर्थांश।
चौथापो-*(न०)* वृद्धावस्था।
चौथो-*(वि०)* २ चार की संख्या वाला। तीसरे के बाद का। चतुर्थ।
चौदस-दे० चवदस।
चौदह-दे० चवद।
चौदत-*(क्रि०वि०)* सन्मुख। आमने-सामने। मुकाबले। *(वि०)* वह पशु जिसके चार दांत निकल आये हो। चार दांतो वाला।
चौदत हुणो-*(मुहा०)* १ आमने-सामने होना। २ मुकाबला होना। ३ मिलना। ४ भिडना।
चौधर-*(ना०)* चौधरी का पद। २ चौधरी का काम। मुखियापन। ३ चौधरी को उसके काम के बदल मे मिलने वाला एवजाना। चौधराई।
चाधरण-*(ना०)* १ चौधरी की पत्नी। २ जाटनी। जाट स्त्री।
चौधराई-दे० चौधर।
चौधरी-*(न०)* १ एक कृषक जाति। पटेल। पिटल। २ जाट। ३ पंच। ४ किसी जाति या समाज का मुखिया।
चौधाडे-दे० चौडे धाडे।
चौपगो-*(वि०)* चार पांव वाला। *(न०)* पशु। जानवर। चौपाया।
चौपट-*(न०)* ध्वंस। नाश। बरबादी। *(वि०)* १ नष्ट। भ्रष्ट। बरबाद। २ चार परत वाला। दे० चौपड।
चौपड-*(ना०)* १ चौराहा। २ चौसर का खेल। ३ बिसात। चौसर। *(वि०)* चार परत वाला।

चौपडो-*(न०)* १ हिसाब वही । २ भाटा की वशावलियाँ लिखने और पढने की बही । ३ कुकुम चावल आदि मागलिक वस्तुएँ रखने का एक पात्र ।

चौपन-*(वि०)* पचास और चार । चौवन । *(न०)* पचास और चार की सख्या । '५४ ।

चौपनियो-*(न०)* १ छोटी वही । वहीनुमा नोट बुक । *(वि०)* चार पन्ना वाला ।

चौपाई-दे० चोपाई ।

चौपानियो-दे० चौपनियो ।

चौपायो-*(न०)* पशु । चतुष्पाद । चौपगो ।

चौपाळ-दे० चोपाळ ।

चौफ्केर-दे० चौफेर ।

चौफाड-*(ना०)* १ चीर कर बनाये हुए चार भाग । २ किसी वस्तु के किये हुए चार भाग । *(वि०)* चीर कर जिसके चार भाग दिखाये गये हो । जसे-अचार वाला नीबू ।

चौफाडियो-*(वि०)* चौफाड किया हुआ ।

चौफाडो-दे० चौफाडियो ।

चौफूली-*(ना०)* १ चार पत्तियो वाला फूल या और कोई उपकरण । २ एक आभूषण ।

चौफेर-*(अव्य०)* चारो ओर ।

चौफेरी-*(क्रि०वि०)* चारो ओर । *(ना०)* (कुछ जातियो मे) वर वधु के प्रथम मिलन की रात्रि का नाम ।

चौबार-*(अव्य०)* १ खुले मे । २ खुले आम । सवसाधारण के सामने ।

चौबारो-*(न०)* १ चार खिडकियो वाला झरोखा । २ अटारी । ३ खुली बठक । ४ मकान की छत पर बना हुआ हवा दार कमरा । ५ चार द्वार वाला कमरा ।

चौबीस-*(वि०)* बीस और चार । *(न०)* चौबीस की सख्या । २४ ।

चौबो-*(न०)* ब्रजभूमि का चतुर्वेदी ब्राह्मण । चौबा । चौबे ।

चौबोलो-*(न०)* एक मात्रिक छद ।

चौमजलो-*(वि०)* चार मजिल वाला । चोखडो ।

चौमठ-*(वि०)* चारो ओर से बाँधी जाने वाली । जो (गठरी) चारो ओर से बाँधी जा सके । *(ना०)* पुराने ढग का एक सदूक ।

चौमाळ-*(न०)* एक ब्राह्मण जाति । *(वि०)* चार मजिल वाला ।

चौमासो-*(न०)* १ वर्षा ऋतु । २ वर्षा ऋतु के चार मास । चतुर्मास ।

चौमासो उतरणो-दे० चौमासो ऊठणो ।

चौमासो ऊठणो-*(मुहा०)* चातुर्मास का समाप्त होना । २ साधु सन्यासियो का चौमास मे एक जगह स्थाई रूप से रहने की अवधि का समाप्त होना ।

चौमासो करणो-*(मुहा०)* साधु सन्यासियों का चौमासे मे किसी एक स्थान पर स्थाई रूप से रहना ।

चौमासो बैठणो-दे० चौमासो लागणो ।

चौमासो लागणो-*(मुहा०)* चातुर्मास का प्रारभ होना । आसाढ शु० ११ से कार्तिक शु० ११ तक वर्षा ऋतु के चार मास का प्रारभ होना ।

चौमासो बीतणो-*(मुहा०)* वर्षा ऋतु का समाप्त होना । दे० चौमासो ऊठणो ।

चौमुखो-*(वि०)* १ चार मुँह वाला । २ चार द्वारो वाला । *(क्रि० वि०)* चारो ओर ।

चौमेर-*(क्रि०वि०)* चारो ओर । चौफेर ।

चौमेळो-*(न०)* १ आकस्मिक मिलन । २ मिलन ।

चौरस-*(न०)* चतुष्कोण । समकोण । चतुर्भुज आकृति । *(वि०)* १ समतल । २ चौपहल ।

चौरग-*(न०)* १ वस्त्र विशेष । २ चतुरगिनी सेना । ३ युद्ध । ४ चार रग ।

४ चार अंग। (वि०) कटे हुए हाथ पांवों वाला। चौरंगा।

चौरंगो-(वि०) १ कटे हुए हाथ पांवों वाला। चौरंगा। २ चार रंगों वाला।

चौराणुमो-(न०) चौराणवां वरस।

चौराणू-(न०) चौराणवे की संख्या। ९४। (वि०) नब्बे और चार।

चौरासिया ठाकर-(न०)१ चौरासी गांवों का जागीरदार। २ बड़ा जागीरदार।

चौरासियो-(न०) गमी का चौरासीवां वर्ष।

चौरासी-(वि०) १ अस्सी और चार। (न०) १ चौरासी की संख्या। ८४ २ चौरासी लाख योनियां। ३ चौरासी गांवों की जागीरी। ४ चौरासी गांवों का समूह।

चौरासी सिद्ध-(न०) चौरासी प्रकार के सिद्ध महात्मा।

चौरिसिया-(न०) ब्राह्मणों की एक अल्ल।

चौलड़ो (वि०) १ चार लड़ियों वाला। २ चार तहों वाला।

चौलावो-दे० चौतीणो।

चौवटियो-(न०) १ चौहट्टे का कर वसूल करने वाला। २ चौहट्टे का पंच। ३ गांव का पंच। ४ चौहट्टा।

चौवटो-(न०) १ चौहट्टा। चौराहा। २ बाजार।

चौवडो-(वि०) १ चौहरा। चौगुना। २ चार परत वाला।

चौविहार-(न०) सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करने का जैन धर्म का एक नियम।

चौवीस-दे० चौबीस।

चौवीसो-दे० चौईसो।

चौसठ-(वि०) साठ और चार। (न०) चौसठ की संख्या। '६४'

चौसठ जोगणी-(ना०) १ योगिनियों के चौसठ प्रकार। २ चौसठ जाति की योगिनियां। ३ चौसठ योगिनियों का समूह।

चौसठो-(न०) मनुष्य का चौसठवां वर्ष।

चौसर-(ना०)१ चतुर्दिक। चारों दिशाएं। २ चौपड़। ३ चौपड़ की बिसात। ४ गोल दाढ़ी मूछें। (वि०) चार लड़ वाला। (क्रि०वि०) चारों ओर।

चौसर माला-(ना०) एक छंद।

चौसरा-(न०)१ दाढ़ी मूछ के सफेद बाल। वृद्धावस्था के सफेद बाल। २ आंसू।

चौसरो-(न०) १ फूलों का हार। २ चार लड़ी का हार। ३ चौरड़ा। ४ लहर। ५ आंसू। अश्रुधारा।

चौसारो-(न०) चार कटोरों वाला साग परोसने का पात्र।

चौसी-दे० चौसीरी।

चौसीरी-(ना०) १ चार भाइयों की हिस्सेदारी। २ चार हिस्से। (वि०) १ चार हिस्सों का। २ चार हिस्सेदारों का।

चौसीरो-दे० चौसीरी।

चौसीगी-दे० चौरंगी।

चौहटो-(न०) चौहट्टा।

चौहत्तर-(वि०) सत्तर और चार। (न०) चौहत्तर की संख्या। ७४'

चौहाण-(न०) क्षत्रियों की एक शाखा। चौहान क्षत्री।

च्यवन ऋषि-(न०) एक प्राचीन ऋषि।

च्यार-(वि०) चार।

च्हावणो-(क्रि०) चाहना।

च्हावना-(ना०) इच्छा। चाहना।

छ

छ-(न०) संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला ग च वर्ग का तालु स्थानीय दूसरा (व्यंजन) वर्ण।
छ-(वि०) गिनती में पाँच से एक अधिक। छ। (न०) छ की संख्या। ६
छइ-दे० छै। (वि०) छट्टा। छट्टी।
छक-(वि०) १ तृप्त। २ आपूर्ण। ३ पूर्ण। भरा हुआ। ४ मस्त। (न०) १ शोभा। २ उत्सव। ३ समारोह। ४ सजावट। तैयारी। ५ ठाट। वैभव। ६ भीड़भाड़। ७ दल। ८ पक्ष। ९ तृप्ति। १० गर्व। ११ खुमारी। १२ जोश। १३ कवच। १४ भाला। १५ छ का समूह। पटक। (पहाड़ा के अर्थो में) यथा-एक छक छक। बेछक बारे, तीन छक अठार इत्यादि। (क्रि०वि०) चकित। विस्मित।
छकड-(न०) १ एक पुराना सिक्का। २ छकड़ा।
छकडाळ-(न०) कवच। (वि०) १ वीर। २ जोशीला। ३ कवचधारी। ४ भालाधारी।
छकडाळो-(वि०)१ कवचधारी। २ भाला धारी। ३ वीर। बहादुर।
छकडो-(न०)१ एक बल की गाडी। छकड़ा। सग्गड। २ भार गाडी। ३ कवच।
छकणो-(क्रि०) १ तृप्त होना। २ घमंड करना। ३ नशा चढना। ४ बहकना। ५ पूर्ण होना। भर जाना।
छकपूर-(न०) १ गर्व। २ नशा।
छकवाळ-(वि०) रक्त पूर्ण घावों से छका हुआ।
छकाणो-(क्रि०) १ खिला पिला कर तृप्त करना। छकाना। २ मद्य भाँग आदि पिला कर उन्मत्त बनाना। ३ ठगना। ४ धोखा देना। ५ भुलावे में डालना। भुलाना। ६ अचंभे में डालना। ७ हैरान करना। तंग करना। ८ किसी को व्यंग्य द्वारा मूर्ख बनाना।
छकाय-(न०) जैन मतानुसार (पृथ्वीकाय अपकाय तजकाय, वायुकाय, वनस्पति काय और त्रसकाय) छ जाति के जीव।
छकार-(न०) १ छ वर्ण। छछो। २ हरिण। मृग। चौंकियो।
छकारो-(न०) १ हरिण। मृग। २ चौंकियो हिरण।
छकावणो-दे० छकाणो।
छकिआर-(न०) सबल। पाथेय। भातो।
छकिआरी-(ना०) खेत में काम करनेवालों के लिये भाता ले जाने वाली। भतवारी।
छकिआरो-दे० भतवारो।
छकीली-(वि०) छकी हुई। मस्तानी। मदमस्त।
छकीलो-(वि०) छका हुआ। मदमस्त।
छको-दे० छक्को।
छक्को-(न०) १ छ का आंक '६'। २ छ बूंटियों वाला ताश का पत्ता। ३ पासे का वह बल जिसमें छ बिंदियाँ हों। ४ छठा वर्ष (वि०स०का०)।
छग-(न०) बकरा। छाग।
छगडी-(ना०) बकरी।
छगडो-(न०) १ बकरा। २ छ का अंक।
छगण-छगण' का विपर्यय। दे० छणग।
छगन-मगन-(न०) १ सुंदर बच्चों की जोडी। २ छोटे छोटे प्यारे बच्चे।
छगळ-(न०) १ बकरा। २ छोटा मशक। चंगेरी। दीवडी। छागळ। छागळी।

छाडी दे० छण्डी।
छग्गी (ना०) छ बूटियों वाला ताश का पत्ता।
छग्गो-दे० छक्का।
छछूंदर-(ना०) चूहे के आकार का जंतु।
छछोरापन-(ना०) १ ओछापन। २ बचपन।
छछोर-(क्रि०वि०) शीघ्र गति से। अति शीघ्रता से। (वि०) १ फुर्तीवाला। २ तेजस्वी। ३ सुन्दर। (ना०)१ फव्वारा। २ जलकण।
छछोरो-(वि०) १ चंचल। २ तेज। ३ वेगवान। शीघ्रगामी। ४ तेजस्वी। ५ प्रचंड। उग्र। ६ ढीला। शिथिल। (ना०) १ जलकण। बूंद। २ फव्वारा। ३ दुधर्ष योद्धा। (क्रि०वि०) १ अत्यन्त तेज गति से। २ अति शीघ्रता से।
छछ छो-(ना०) छ वर्ण। छकार।
छज-(ना०) १ भोंटे या कच्चे मकान की छाजन। छान। २ ढक्कन। ३ विवेक। ४ बुद्धि। ५ छात। छत।
छजवाळ-(ना०) १ छज्जा। २ छज्जों की पंक्ति। ३ गवाक्ष। झरोखा। गोखो। (वि०) १ बुद्धिमान। २ विवेकी।
छजेडी-(ना०) अकेली खडी दीवाल की छाजन। (वि०) छाई हुई।
छजेडो-(वि०) छाया हुआ।
छज्जो-दे० छाजो।
छटकणो-(क्रि०)१ बंधन से निकल जाना। २ पकडी हुई वस्तु का भार या धक्के से छूट जाना। वेग के साथ दूर जाना।
छटपटणो-(क्रि०) तडपना। छटपटाना।
छटपटाणो-(क्रि०) १ तडफना। छटपटाना। २ तरसाना।
छटपटी-(ना०) १ अधीरता। व्यग्रता। २ उतावली।
छटा-(ना०) १ शोभा। कांति। २ शान। खूबी। ३ चमक। ४ प्रभा

छटादार-(वि०) छटा...।
छटार-(वि०) १ ... २ वेर। ...।
छटापन-दे० छटार।
छटांक-(ना०) १ सेर के ... तोल। २ सेर का ...।
छटूंद-(ना०) मकान में ... जाने वाला वृषि का ...।
छटेल-दे० छटेल।
छट्ठी-(ना०)नवा छ ... ।
छठ-(ना०)पक्ष का छठा दिन। छठी। षष्ठी।
छठी-(ना०) १ प्रसव के बाद ... रात्रि। २ जन्म की छठी ... उत्सव जिस रात्रि को विधाता ... भाग्य का निर्माण करता है। ३ ... तिथि। ४ मृत्यु। ५ युद्ध। ... छठवीं। छट्ठी।
छठो-(वि०) छठवां। छठा।
छड-(ना०) १ भाला। २ छोटी बर्छी। ३ भाले का डंडा।
छडकणो-(क्रि०) पानी छींटना।
छडकाव-(ना०) पानी छींटने की क्रिया।
छडछबीलो-(ना०) धूप औषधि आदि में काम आने वाली एक जलीय सुगंधित वनस्पति। छरीला।
छडणो-(क्रि०) १ कूटना। ठोकना। २ भाले से प्रहार करना। ३ ओखली में डाल कर नाज को मूसळ से कूटना। ४ ओखली में कूट कर नाज को साफ करना। ५ छाज में फटक कर नाज को साफ करना।
छडग (वि०) अकेला।
छडाणो-(ना०) १ छोड़ना। त्यागना। २ छुड़ाना।
... रणो-(मुहा०) ... कर चले

छडाळ–*(न०)* भाला । *(वि०)* भाले वाला । भालाधारी ।

छडाळो–दे० छडाळ ।

छडियाळ–दे० छडाळ ।

छडी–*(ना०)* १ हाथ मे रखने की लकडी । बेंत । २ देवमंदिर राजदरबार महंत और धर्माचार्यों के चोबदार के पास रहने वाला सोने या चांदी से मंढा हुआ एक लम्बा डंड । [illegible] । [illegible] झंझट । विवाद ।

छडीभरदार–दे० छडीदार ।

छडीभाल–दे० छडीदार ।

छडीदार–*(न०)* छडी रखने वाला । छडी बरदार । चोबदार ।

छडी बरदार–दे० छडीदार ।

छडीहयो–दे० छडीदार ।

छडीदो–*(वि०)* १ अकेला । एकाकी । २ खाली हाथ । सामान या बोझा के बिना । छडीलो । (यात्री) ।

छडो–*(न०)* १ पांव का एक गहना । २ मोतियों का झुमका । *(वि०)* अकेला ।

छडूणो–दे० छडणो ।

छण–दे० क्षण ।

छणक–*(न०)* छन छन का शब्द । झनक । छनछनाट ।

छणको–दे० छणक ।

छणण–*(न०)* उपला । कंडा । छाणो ।

छणणो–*(क्रि०)* छनना ।

छणदा–*(ना०)* रात्रि । रात । क्षणदा ।

छणाई–*(ना०)* १ छानने का काम । २ छानने की मजदूरी ।

छणारी–दे० छाणेरी ।

छणावट–*(ना०)* १ तलाश । जाँच । २ छानने की क्रिया ।

छणावणो–*(क्रि०)* छनवाना ।

छणियारो–दे० छाणेरो ।

छत–*(न०)* १ देवी देवता के ऊपर रहने वाला छत्र । २ राज्य । ३ राजा । ४ छात । पाटन । ५ होने का भाव । अस्ति का भाव । सत्ता । ६ वृद्धि । ७ बहुतायत । अधिकता । ८ घाव । क्षत । ६ दुःख । दर्द ।

छतर–*(न०)* मंदिर में देवता के ऊपर टंगा रहने वाला सोने या चांदी का छत्र ।

छतरडी *(ना०)* १ छोटा छाता । २ छाता ।

छतरडो–*(न०)* छाता ।

छतरधारी–*(न०)* छत्रधारी । राजा ।

छतरी–*(ना०)* १ जुंझार और राजा की चिता पर एवं साधु महात्मा की समाधि पर बनाया जाने वाला एक प्रकार का स्मारक भवन । गुमटी । २ छाता । ३ कुकुरमुत्ता ।

छतां–*(अव्य०)* १ फिर भी । तो भी । २ ऐसा होने पर भी । ३ इसके उपरान्त । ४ होते हुए ।

छती–*(ना०)* पृथ्वी ।

छतीस–*(वि०)* तीस और छः । *(न०)* छतीस की संख्या । ३६ ।

छतीस पवन–*(न०)* चारों वर्ण और उनके अन्तर्गत आने वाली समस्त जातियाँ । २ समस्त मानव समाज ।

छतीसी–*(ना०)* छत्तीस छंदों का काव्य ।

छतीसो–छतीसवाँ सम्वत् ।

छतै–*(अव्य०)* १ होते हुये । होतां थकां । २ रहते हुये । रहतां थकां । ३ मौजूदगी में ।

छतो–*(वि०)* १ प्रत्यक्ष । प्रकट । २ प्रसिद्ध । *(अव्य०)* १ फिर भी । तो भी । २ होता हुआ । ३ ही ।

छत्त–*(ना०)* दुराग्रह । हठ । दे० छत ।

छत्ती–*(ना०)* छाती ।

छत्तीस–दे० छतीस ।

छत्तीसो–दे० छतीसो ।

छत्र–*(न०)* १ देव मूर्तियों के ऊपर टंगा रहने वाला सोने या चांदी का बना छाते

छोटा उपकरण। छत्र। २
ह के रूप म राजाओ के ऊपर
 वाला छाता। ३ राजा।
। ४ छाता। छत्री। (वि०)
। २ ऊचा।
(ना०) शरण। रक्षा। आसरो।
०) राजा।
न०) राजा।
ा०) मरहटों का राज्य स्थापित
ले वीरवर शिवाजी का विरद
की उपाधि। २ राजा।
ा०) राजा।
ा०) १ ज्योतिप का एक योग
जा का नाश होता है। राजा
। २ माता पिता आदि गुरुजन
का योग। माता पिता की मृत्यु।
की मृत्यु। वैधव्य।
(न०) राजा।
०) राजा। छत्रधारी।
न०) १ राजा। २ जैसलमेर के
 विरद। छात्राळो।
) १ छाता। २ महात्मा राजा
वे पुरुषो के अग्निदाह के स्थान
ई जाने वाली गुमटी। ३ स्मा
 क्षत्री। क्षत्रिय।
-(न०) क्षत्रियत्व।
० छतीस।
० छतीसो।
) १ पत्ता। पत्र। २ कागज।
र। ४ आच्छादन। आवरण। ५
 छल। छद।
 छद।
 छदम।
(वि०) मतवाला। अलमस्त।
-(न०) षड्दशन। सांख्य योग
वैशेषिक मीमासा तथा वेदात—
ास्त्र।

छदाम-(ना०) १ पैसे का चौथा भाग। रुपये का २५६ वाँ भाग। २ पैसे के चौथे भाग का सिक्का। (प्राचीन)

छदामभर-(अव्य०) कुछ भी नहीं। (वि०) बहुत हलका।

छद्म-(न०) छल कपट।

छनाछन-(न०) पसे की अधिकता। धन की रेलमपेल।

छनीछर-(न०) शनीश्चर। शनश्चर। थावर।

छपगो-(न०) षटपद। भौंरा।

छपणो-(क्रि०) १ छपना। मुद्रित होना। २ अकित होना।

छपनियो-दे० छपनियो काळ।

छपनियो काळ-(न०) वि० स० १९५६ का प्रसिद्ध भयकर दुष्काल।

छपनो-(न०) सदी का छप्पनवाँ वष। २ वि०स० १९५६ का प्रसिद्ध दुष्काल वष।

छपरियो-(न०) १ छप्पर। २ झोपडा।

छपरो- (न०) छप्पर।

छपा-(ना०) रात। क्षपा।

छपाई-(ना०) १ छापने का काम। २ छापने का पारिश्रमिक।

छपाको-(न०) एक चम रोग।

छपाणो-(क्रि०) छपवाना। छपावणो।

छपाव-(न०) छिपाव। दुराव।

छपावणो-(क्रि०) छपवाना। छपाणो।

छप्पन-(वि०) १ पचास और छ। २ बहुत। अधिक। अनेक। (५६ देश, ५६ भाषाएँ और ५६ सस्कृत के कोश ग्रथ इस मान्यता के आधार पर) जसे-थार सिरीसा छप्पन देखिया है। (न०) छप्पन की सख्या। ५६

छप्पनगिर-(न०) १ सिवाणा (मारवाड) के निकट की एक इतिहास प्रसिद्ध पवत श्रेणी। छप्पन रा पहाड। हलदेश्वर रो पहाड। २ मेवाड की एक पवत श्रेणी।

छप्पन भोग-*(न०)* १ ठाकुरजी को चढ़ाई जाने वाली छप्पन प्रकार की भोजन सामग्री। २ दुनिया के समस्त भोग विलास।

छप्पय-*(न०)* छ चरणों का एक मात्रिक छंद।

छप्पर-*(न०)* १ झोपड़ा। २ छान। छाजन।

छप्पर खाट-*(न०)* वह पलंग जिसमें मच्छर दानी लगी हो। मसेरीखाट।

छब-*(ना०)* १ छवि। तसवीर। तसवीर। २ शोभा।

छबकाळो-*(वि०)* रंग बिरंगा।

छबडी-*(ना०)* डलिया। टोकरी। छाब। छाबडी।

छबणो-*(न०)* दरवाजे की चौखट के ऊपर का पत्थर।

छबरा छबरा-*(क्रि० वि०)* खूब जोर से (रोना)।

छबलियो-*(न०)* छोटी टोकरी। छबोलियो। छाबडी।

छबी-*(ना०)* १ तसवीर। छवि। चित्र। २ दृश्य। ३ सौंदर्य। शोभा। ४ रूप।

छबीलो-*(वि०)* छबीला। सुन्दर। सजीला।

छबोलियो-दे० छबलियो।

छभा-*(ना०)* १ सभा। २ परिषद्। ३ समिति।

छमक-दे० छमको। दे० छमछम।

छमक छमक दे० छमछम।

छमकणो-*(क्रि०)* छौंकना। बघारना। बघारणो।

छमको-*(न०)* छौंका। बघार। बघार।

छमच्छर-*(न०)* सम्वतसर। संवत्।

छमछम-*(ना०)* नूपुर पायल, घुंघरू आदि बजने का शब्द।

छमछमाट-*(न०)* १ छमछम आवाज। २ गर्व। ३ तौर।

छमछमिया-*(न०)* मंजीरों की जोडी। झांझ जोडी।

छमछरी-*(ना०)* १ संवत्सरी। संवत का व्यवहार। २ वार्षिक व्रत या उत्सव। ३ जैनों का एक व्रतोत्सव। पर्युषण पर्व का अंतिम दिन। ४ मृत्यु दिवस का (वार्षिक) श्राद्ध।

छमछर-*(न०)* सम्वत्सर।

छमा-*(ना०)* क्षमा।

छमासी-*(ना०)* १ मृत्यु के छ महीने बाद होने वाला श्राद्ध तथा भोजन। छठे मास में होने वाला मृतक का श्राद्ध। *(वि०)* १ छ मास से संबंधित। छ मास का। २ जो छ महीनों में हो गया है।

छमासी री छाट-*(ना०)* मृतक का षाण मासिक श्राद्धिक लोकाचार।

छमाही-दे० छमासी।

छय-*(न०)* क्षय। नाश। खय। ख।

छर-*(न०)* १ हाथ। २ भुजा। ३ सिंह का पंजा। हत्थल। ४ प्रहार। ५ भाला।

छरड-दे० चडस। (चडस का विकृत रूप।)

छरा-*(ना०)* कलंक। लांछन। लछण। दूसण।

छराळो-*(न०)* १ वीर पुरुष। २ सिंह। *(वि०)* १ शस्त्रधारी। २ भालेवाला।

छरी-दे० छुरी।

छरो-*(न०)* १ हाथ। २ भुजा। ३ सिंह का पंजा। हत्थल। ४ भाला। ५ तलवार। ६ छर्रा। ७ कलंक। लांछन।

छर्रो-*(न०)* एक प्रकार की बंदूक की गोली। बहुत छोटी गोली।

छळ-*(अव्य०)* १ लिये। निमित्त। वास्ते। २ युद्ध में। *(न०)* १ छल। कपट। धोखा। २ कीर्त्ति। ३ प्रतिष्ठा। ४ युद्ध विजय की कीर्त्ति। ५ युद्ध। ६ अवसर। ७ भेंट। ८ क्रोध।

छळक-(ना०) छलकता हो इस तरह। छलकन।
छळकणो-(क्रि०) १ छलकना। २ उमड़ना। ३ उभरना।
छळ-कपट-(न०) १ झांसा पट्टी। छल कपट। २ धोखाधड़ी।
छळकाणो-(क्रि०) छलकाना। उभराना।
छळकावणो-दे० छळकाणो।
छळछद-(न०) धूर्त ता। कपट का व्यवहार।
छळछदी-(वि०) धूर्त। छल कपट करने वाला। कपटी।
छळछिद्र-दे० छळछद।
छळछिद्री-दे० छळछदी।
छळ जाग-(ना०) १ युद्ध रूपी यज्ञ। २ युद्ध भूमि।
छळणो-(क्रि०) छलना। धोखा देना। ठगना। ठगणो।
छळभोम-(ना०) १ युद्धभूमि। रणक्षेत्र। २ रणकुशलता।
छळावो-(न०) छल। धोखा।
छळां-(अव्य०) लिये। वास्ते।
छलांग-(ना०) कुदान। उछाल। फलांग।
छळां-नायक-(न०) युद्धनायक। सेनापति।
छळि-(अव्य०) सप्रदान विभक्ति। लिये। वास्ते। हेतु।
छळियो-(वि०)१ छली। धोखेबाज। कपटी। २ योद्धा। जोधो।
छळी-(वि०) छल करने वाला। छलिया। कपटी।
छलीमरदो-(न०) ऊंट के पलान का एक उपकरण।
छलेणी-(वि०) १ छलांग मारने वाली। २ छलने वाली। ठगनी।
छळो-(न०) १ घोड़े या गधे का मूत्र। २ बकरा।
छलो-(न०) छल्ला।
छलोछल-(वि०) लबालब। पूरा भरा हुआ।
छल्लो-(न०) १ छल्ला। अगूठी। २ स्त्रियों की एक ऐसी अगूठी जो दो अगुलियों में पहनी जाती है।
छव-(न०) छ की सख्या। '६' (वि०) छ। पट।
छवाई-(ना०) १ छाने की मजदूरी। २ छाने का काम। ३ एक शस्त्र।
छवी-दे० छवीस।
छवीस-(वि०) १ एक सौ बीस। २ छब्बीस।
छवीसी-(वि०) एक सौ बीस।
छग-दे० छांग।
छगणो-दे० छांगणो।
छगास-दे० चगास।
छछाळ-(न०) १ हाथी। २ घोड़ा। ३ सिंह। ४ फव्वारा। ५ वायु का झोंका (वि०) १ पागल। २ मदांध।
छछेड़णो-(क्रि०) १ छेड़ना। २ हिलाना ३ सताना। ४ लगाना। सुलगाना ५ चिढ़ाना।
छट-(ना०) १ बूद। छांट। २ दुगध। (वि०) छांटा हुआ। छटैल। चालाक।
छटणी (ना०) १ नौकरी से दूर करने के लिये छांटने का काम। छंटनी। २ छंटाई।
छटणो-(क्रि०) १ छंट कर अलग होना। साथ छूटना। पृथक होना। २ छंटा जाना। चुना जाना।
छटाई-(ना०) १ छांटने की क्रिया। २ छिड़काव।
छटाणो-(क्रि०) छटवाना।
छटाव-(ना०) १ छांटने की क्रिया। २ अलग होने या करने का काम। ३ छिड़काव।
छटावणो-दे० छटाणो।
छटैल-(वि०) १ छांटा हुआ। २ बदमाश। ३ धूर्त। चालाक।

छडणो–*(क्रि०)* १ छोडना। मुक्त करना। २ छूटना। मुक्त होना।

छद–*(न०)* १ अक्षर और मात्राओं की नियमबद्ध गणना के अनुसार संगठित की हुई साथ पदों की विराम युक्त पंक्तियों का एक समाहार। कविता विधान। पद्य। २ छल। कपट। धोखा। ३ अक्षरों की गणना के अनुसार वेदों के वाक्यों का भेद। ४ वेद। उत्स। ५ डिंगल काव्य की एक सज्ञा। ६ स्वच्छाचार। ७ चाल। ८ रंग ढंग। ९ युक्ति। १० एकांत। ११ पत्ता। १२ ढक्कन। १३ अभिप्राय। १४ विष। १५ समूह।

छदगारी–दे० छदगारी।

छदगारो–दे० छदगारो।

छदशास्त्र–*(न०)* छदों के रूप लक्षण बताने वाला शास्त्र।

छदागारी–*(वि०)* १ छल कपट करने वाली। कुटिला। २ नखरे वाली। नखराली। नखराळ। ३ ऊपर का प्रेम दिखाने वाला। ४ आज्ञाकारिणी। ५ उद्यमी।

छदागारो–*(वि०)* १ नखराबाज। चोचला बाज। २ कपटी। धोखाबाज। ३ झूठा। ४ दुराव रखने वाला। ५ उद्यमी।

छदो–*(न०)* १ नखरा। चोचला। नाज। २ दिखावटी प्रेम। ३ छल। कपट। ४ छिपाव। दुराव। ५ उपकार सेवा, सहायता आदि।

छदोबद्ध–*(वि०)* जो छद या पद्य के रूप में हो। पद्यात्मक।

छदोभग–*(न०)* छद की लय या गति में त्रुटि। दोषपूर्ण छद रचना।

छदगो–दे० भमरो।

छा–*(भू०क्रि०)* होणो क्रिया का भूतकालिक बहुवचन रूप। छो का बहुवचन रूप। थे। जैसे-माया छा। (माये थे)।

छाई–*(ना०)* राख। छारो। दे० छाईस।

छाईजणो–*(क्रि०)* छाया जाना।

छाईस–*(वि०)* बीस और छ। *(न०)* छ बीस की संख्या। २६।

छाक–*(ना०)* १ मस्ती। उन्मत्तता। २ नशा। ३ मिजाज। अहकार। ४ तृप्ति। ५ शराब पीने का प्याला। ६ प्याला भर शराब। ७ रक्त का प्याला जो देवी को अर्पण किया जाता है। ८ शक्ति। ९ खेत में काम करने वाले के लिये पहुंचाया जाने वाला भोजन। भातो। *(वि०)* १ मस्त। २ भरा हुआ। पूर्ण। छक।

छाकटाई–*(ना०)* बदमाशी। लुच्चाई।

छाकटो–*(वि०)*बदमाश। लुच्चा। छाटको का वर्ण व्यतिक्रम।

छाकणो–*(क्रि०)* १ छक जाना। पूर्ण होना। अघाना। २ मस्त होना। ३ गर्व करना। फूलना।

छाकियो थको–*(अव्य०)* १ छका हुआ। नशा लिया हुआ। २ नशे में। ३ नशा लिये हुए की हालत में। ४ नशा लिया हुआ होने पर।

छाग–*(न०)* बकरा।

छागड–*(न०)* बकरा।

छागण–दे० छाणग।

छागर–*(न०)* १ बकरी। २ बकरा।

छागरथ–*(न०)* अग्नि।

छागळ–*(न०)* बकरा। *(ना०)* बकरी के बच्चे के चमड़े से बना जल पात्र। चगेरी। छोटी मशक। दीवड़ी।

छागळियो–दे० छागळ।

छागळी–*(ना०)* १ बकरी। २ बकरी के बच्चे के चमड़े से बना जल पात्र। छोटी मशक। दीवडी।

छागळो–दे० छागळ।

छागी–*(ना०)* बकरी।

छाछ–*(ना०)* तक्र । छाँछ । छा ।
छाज–*(न०)* १ सूप । छाज । सूपडो । छाजळो । २ छज्जा । छाजो ।
छाजणो–*(क्रि०)* १ शोभा देना । २ योग्य होना । ३ छा देना । ४ ढक देना । ५ छाजाना ।
छाजळी–*(ना०)* छोटा छाज । सूपडी ।
छाजळो–दे० छाज ।
छाजाळो–*(वि०)* छज्जे वाला ।
छाजिया–*(न०)* १ मृतक के पीछे स्त्रियो द्वारा छाती कूट कर रोने की क्रिया । २ वृद्ध मृतक के पीछे गाया जाने वाला रुदन-गीत । पार । सियापो । छेडा । पल्लो ।
छाजो–*(न०)* छज्जा ।
छाट–*(ना०)* सकट । दुख ।
छाटकाई–*(ना०)* बदमाशी । धूर्तता । लुच्चाई । छाटकापणो ।
छाटकापणो–दे० छाटकाई ।
छाटको–*(वि०)* बदमाश । लुच्चा । धूर्त । छाकटो ।
छाटी–*(ना०)* जट का बना हुआ ऊट बल आदि पर नाज भर कर के लादा जाने वाला दो भागो वाला एक बडा थला । जट का दुपल्ला बोरा । गूण । गूणती ।
छाड–*(ना०)* वमन । कै । उलटी ।
छाडणो–*(क्रि०)* १ कै करना । वमन करना । २ छोडना । छोडणो ।
छाण–*(ना०)* १ जांच परताल । छानबीन । २ निचोड । नतीजा । ३ गोवर । ४ कडा । उपला । ५ कडो का चूरा । ६ कचरा । करदा ।
छाणग–दे० छाणण । छाणाग ।
छाणणो–*(क्रि०)* आटा, पानी आदि को चलनी या कपडे में से निकालना । छानना ।
छाणत–*(वि०)* १ अप्रिय । अरुचिकर । २ असह्य । *(ना०)* १ छानन से निकला हुआ करदा । छानन । २ तरल पदार्थ के नीचे जमा हुआ करदा । कीटो । ३ कचरा । कूडा करकट । ४ कलक । लाछन । ५ अव्यावहारिक या असामाजिक काम । ६ अपकीर्ति ।
छाणबीण–*(ना०)* १ जाँच परताल । २ देखभाल । तलाश । छानबीन ।
छाणस–*(न०)* १ कचरा । कडो का चूरा । २ कडा । गोवरी । उपला । ४ चोकर । छानस । भूलो ।
छाणाग–*(ना०)* कडो की आग ।
छाणारी–दे० छाणेरी ।
छाणेरी–*(ना०)* १ रसोईघर का वह भाग जहा जलान के कडे रखे रहते हैं । २ उपलो का चुनकर बनाया हुआ व्यवस्थित ढेर ।
छाणेरो–दे० छाणेरी ।
छाणो–*(न०)* १ कडा । २ उपला । *(क्रि०)* १ छा जाना । २ छा देना । ३ ढक देना । ४ ढक जाना । ५ फैल जाना । ६ शोभा पाना । ७ रहना । निवास करना ।
छात–*(न०)* १ छत्र । २ छाता । ३ राजा । ४ रक्षक । ५ मुकुट । *(ना०)* छत । पाटन ।
छातथभ *(न०)* छात का थभा । दे० राजथभ ।
छातरणो–*(क्रि०)* १ डूबना । २ फैलना । ३ डुबाना । ४ फैलाना ।
छाती–*(ना०)* १ वक्षस्थल । सीना । उराट २ स्तन । कुच । ३ हृदय । उर । ४ हिम्मत । साहस । हीयो ।
छातीकूटो–*(न०)* १ अधिक परिश्रम और लाभ कम । २ व्यर्थ का परिश्रम । मग्जमारी । ३ लडाई झगडा । कलह । ४ गृह-कलह । ५ काम का बोझा ।
छातीछोलो–*(वि०)* दुखदायी । *(न०)* दुख । कष्ट ।

पर बठ कर जलूस के साथ जाने की जाति विशेष की एक प्रथा।

छिछई-(वि०) असती। कुलटा। छिनाळ।

छिछलो-(वि०) १ कम गहरा। उथला। छिछला। २ तुच्छ।

छिछोरापणो-(न०) ओछापन। क्षुद्रता।

छिछोरो-(वि०) १ ओछा। क्षुद्र। तुच्छ। २ छोटा।

छिटकणो-(क्रि०) १ छितराना। २ दूर होना। ३ बिछुड जाना। साथ छूटना। ४ हाथ से छूट जाना। ५ हाथ से निकल जाना। वश में नहीं रहना।

छिटकाणो-(क्रि०) दे० छिटकावणो।

छिटकावणो-(क्रि०) १ छितराना। २ दूर कर देना। ३ साथ छोड देना। ४ हाथ से छोड देना। ५ वश में नहीं रखना। हाथ से निकाल देना।

छिटपुट-दे० छुटपुट।

छिडकणो-(क्रि०) पानी छाटना। छिडकना। छाटणो।

छिडकाई-(ना०) दे० छिडकाव।

छिडकाव-(न०) पानी छिडकने का काम। छडकाव।

छिडकावणो-(क्रि०) पानी छटवाना। छिडकवाना।

छिडको-दे० छिडकाव।

छिडणो-(क्रि०) आरंभ होना। शुरू होना। (युद्ध, झगडा, विवाद) आदि।

छिण-(ना०) क्षण। छिन।

छिणगारो-दे० छणगारो।

छिणगो-(न०) साफे का सिरा। छोगो।

छिन-(ना०) धरती। पृथ्वी। क्षिति। जमी।

छिनरणो-(क्रि०) बिखरना। फलना।

छिनरुह-(न०) वृक्ष। क्षितिरुह।

छिद्र-(न०) १ छेद। सुराख। ढोंडो। २ दोष। ऐब। ३ कलंक।

छिन-दे० छिण।

छिनाळ-(वि०) १ कुलटा। छिनाल। २ व्यभिचारिणी।

छिनाळो-(न०) १ व्यभिचार। २ बद चाल। दुराचार।

छिन्न-(वि०) कटा हुआ। खंडित।

छिन्न भिन्न-(वि०) १ नष्ट भ्रष्ट। २ तितर बितर। ३ कटा हुआ।

छिनू-(वि०) नब्बे और छह। (न०) छियानबे की संख्या। ९६।

छिपकली-(ना०) गगली। छिपकली। बिसतुइया। बिसूदरी।

छिपणो-(क्रि०) १ छिपना। २ अदृश्य होना।

छिपलो-(न०) १ हटने या मुकरने का भाव। नटाई। २ मुँह छिपाने या उपस्थित नहीं होने का भाव। ३ दुराव। छिपाव।

छिपा-(ना०) रात्रि। क्षपा। रात।

छिपाणो-दे० छिपावणो।

छिपाव-(न०) दुराव। छिपाव।

छिपावणो-(क्रि०) छिपाना। अदृश्य करना। चुराणो।

छिब-(ना०) १ शोभा। २ तसवीर। छवि।

छिबणो-(क्रि०) १ स्पर्श होना। २ छूना।

छिबरो-(न०) फल आदि के ऊपर का आवरण। छिलका। फोतो। फोतरको।

छिलणो-(क्रि०) १ बहकना। २ ऊपर होकर बहना। उफनना। ३ पूरा भर जाना। उभरना। छितना। ४ मस्त करना। ५ मरोड लगना। छिल जाना। ६ ऊफनना। ७ उन्मत्त होना।

छिछ-(न०) १ फवारा। फुहारा। २ बूंद। छींटा। ३ फुहार। भींसी। ४ ऊपर उठती हुई तेज धारा।

छिंदाळ-दे० छिनाळ।

छिंदाळो-दे० छिनाळो।

छारण-(ना०) १ राख। २ कचरा।
छारडी-(ना०) १ होली का दूसरा दिन। धुलडी। धुरेली। २ रग, गुलाल अबीर आदि से मला जाने वाला होली का त्योहार।
छारी-(ना०) किसी वस्तु पर जमने वाली परत या पपडी। २ फफूंदी। ३ चहर पर छा जाने वाली श्यामता। ४ किसी धातु को गलाने पर उसके ऊपर आने वाली मैल आदि की पपडी। ५ आंख पर जमने वाली पपडी। ६ नेत्र ज्योति को कम करने वाला एक रोग। पडल।
छाराळी-नारियल की गिरी। चारोळी। दे० छारडी।
छाल-(ना०) १ पेड की शाखा का छिलका। वल्कल। २ चमडी। त्वचा।
छाळ-(ना०) बकरियो का झुड। अजा समूह। एवड। छौंग।
छाळी-(ना०) बकरी।
छाळी-नाहर-(न०) एक हिंसक पशु।
छाळो-(न०) १ व्रण। फाडा। छाला। २ फफाला। ३ बकरा।
छावडा-(न०) १ पुत्र। २ बच्चा।
छावण-(न०) १ तबू। २ झापडा।
छावणी-(ना०) १ सेना का पडाव। २ सेना के रहने का स्थान। छावनी।
छावणो-(क्रि०) १ छा देना। २ ढकना। ३ छाना। ४ ढक जाना। ५ फैल जाना। व्याप्त होना। ६ शोभा पाना। ७ रहना। निवास करना।
छावळी-(ना०) किसी वीर की कीर्ति को चिरस्थायी रखने का लोकगीत। २ राजस्थानी लोकगीत की एक तर्ज। ३ छोटा चग वाद्य। बडी खजरी।
छावो-(न०) १ बेटा। पुत्र। चावो। २ बच्चा। (वि०) १ प्रख्यात। प्रसिद्ध। (क्रि० वि०) प्रकट। जाहिर। प्रत्यक्ष रूप मे।
छासट-(न०) छासठ की सख्या। '६६'। (वि०) साठ और छ।
छा-(क्रि०) प्रथम पुरुष वर्तमान क्रिया छू' का बहुवचन रूप। हां। हैं।
छाग-(ना०) १ गाय, बकरी तथा भेडा का झुड। एवड। २ वृक्ष की टहनियों को काटने की क्रिया। ३ कटी हुई टहनियां।
छागणो-(क्रि०) १ वृक्ष की बढ़ी हुई शाखाग्रो को काट कर छोटा करना। छांगना। २ काटना। ३ मारना।
छाट-(ना०) १ बूद। २ फुहार। ३ छींटन काटने की क्रिया। ४ कतरन।
छाटणा-(ना०) १ विवाहादि मगल अवसरो पर सबधियो पर डाला जाने वाला रग या रग के छीटे। २ छीटे। छिडकाव।
छाटणो-(वि०) १ छाटना। छिड़काव करना। छीटे फेंकना। २ अलग करना। ३ चुनना। ४ हटाना। ५ साफ करना।
छाटा छडको-(न०) साधारण वर्षा। थोडी बरसात। बौछार।
छाटो-(न०) १ चलू मे भर कर उछाला हुआ पानी। २ बूद। छीटा।
छाडणो-(क्रि०) छोडना। त्यागना।
छांदस-(वि०) वेद पढ़ा हुआ।
छाव-दे० छाया।
छाह-दे० छाया।
छाहडी-दे० छाया।
छि-(अव्य०) घृणा सूचक शब्द।
छिअतर-(वि०) सत्तर और छ। (न०) छिहत्तर की सख्या। ७६।
छिकणो-(क्रि०) १ लिखते समय कागज पर स्याही का फूटना या फैलना। २ काटा या मिटाया जाना।
छिक्की-(ना०) विवाह के पूर्व वर का वधू के घर और वधू का वर के घर भाई

छारण-(ना०) १ राख। २ कचरा।
छारडी-(ना०) १ होली का दूसरा दिन। धुलडी। धुरेली। २ रंग, गुलाल, अबीर आदि से खेला जाने वाला होली का त्यौहार।
छारी-(ना०) किसी वस्तु पर जमने वाली परत या पपड़ी। २ फफूंदी। ३ चहरे पर छा जाने वाली श्यामता। ४ किसी धातु को गलाने पर उसके ऊपर आने वाली मल आदि की पपड़ी। ५ आंख पर जमने वाली पपड़ी। ६ नेत्र ज्योति को कम करने वाला एक रोग। पडल।
छाराळी-नारियल की गिरी। चारोळी। दे० छारडी।
छाल-(ना०) १ पेड की शाखा का छिलका। वल्कल। २ चमड़ी। त्वचा।
छाळ-(ना०) बकरियों का झुंड। अजा समूह। एवड। छाँग।
छाळी-(ना०) बकरी।
छाळी-नाहर-(न०) एक हिंसक पशु।
छाळो-(न०) १ व्रण। फाडा। छाला। २ फफोला। ३ बकरा।
छावडो-(न०) १ पुत्र। २ बच्चा।
छावण-(न०) १ तंबू। २ झोंपड़ा।
छावणी-(ना०) १ सेना का पड़ाव। २ सेना के रहने का स्थान। छावनी।
छावणो-(क्रि०) १ छा देना। २ ढक देना। ३ छाना। ४ ढक जाना। ५ फैल जाना। व्याप्त होना। ६ शोभा पाना। ७ रहना। निवास करना।
छावळी-(ना०) किसी वीर की कीर्ति को चिरस्थायी रखने का लोकगीत। २ राजस्थानी लोकगीत की एक तर्ज। ३ छोटा चंग वाद्य। छोटी खंजरी।
छावो-(न०) १ बेटा। पुत्र। चावो। २ बच्चा। (वि०) १ प्रख्यात। प्रसिद्ध। (क्रि० वि०) प्रकट। जाहिर। प्रत्यक्ष रूप में।

छिं...
छि...
छिद्र...
छिद...
छिनणो...
पर ...
काटा ...
छिननी-(ना०...
के घर और

छीकणो-(क्रि०) छींक होना । छीकना ।

छीकली-(ना०) छीकलो हरिण की मादा । छींकलो । हरिणी ।

छीकलो-(न०) एक जाति का हरिण जो प्राय छीकता रहता है ।

छीकी-(ना०) ऊंट के मुंह पर बांधी जाने वाली एक जाली ।

छीको-(न०) १ छीका । सिकहर । सीका । २ ऊंट आदि पशुओं के मुंह पर बांधी जाने वाली जाली ।

छीट-(ना०) १ एक प्रकार का रंगा और छपा हुआ कपडा । बेल बूटीदार रंगा हुआ कपडा । २ टुकडा । ३ बिगराव ।

छीटणो-(क्रि०) १ टट्टी जाना । हँगना । २ पतला दस्त लगना ।

छीपण-(ना०)१ छीपा की स्त्री । २ छीपा जाति की स्त्री ।

छीपो-(न०) १ वस्त्र रंगने व छापने वाली जाति का व्यक्ति । कपडे पर बेल बूटा छापने वाला ।

छीया-(ना०) छाया ।

छुआछूत-(ना०) १ अस्पृश्यता । २ अस्पृश्यता का सिद्धांत या आचरण । ३ अमुक को छुआने न छुआने का विचार ।

छुछम-(वि०) सूक्ष्म । थोडा । सुछम ।

छुआरो-(न०) छुहारा । खारिक । खारक ।

छुट (वि०) छोटा ।

छुटकारो-(न०) १ किसी कार्य भार से मिलने वाली मुक्ति । २ मुक्ति । रिहाई । ३ अंत । छुरको ।

छुटपुट-(वि०) १ छोटे छोटे टुकडों में बटा या फैला हुआ । २ छोटे छोटे पैमाने पर होने वाला । ३ इक्का दुक्का ।

छुटभाई-(न०) १ राजा या जागीरदार के वंश का वह अधीनस्थ व्यक्ति जो छोटी जागीरी को लेकर अलग हो गया हो । २ राजा या जागीरदार का वह वंशधर जिसे (आयु में छोटा होने अथवा अयोग्य होने आदि से) राज्य या जागीर की गद्दी नशीनी का परम्परागत अधिकार न मिल सका हो । ३ पद और मान मर्यादा में कम का छोटा व्यक्ति । ४ छोटा भाई । अनुज ।

छुट्टी-(ना०) १ कार्यालय की ओर से नियत अवकाश दिन । तातील । २ अवकाश । ३ अनुमति । ४ छुटकारा । रिहाई । मुक्ति । ५ चलने या जाने की अनुमति ।

छुडाणो-(क्रि०) १ बंधन या उलझन से मुक्त कराना । छुड़वाना । छोड़ावणो । २ दूसरे के अधिकार से अलग करना । ३ किसी प्रवृत्ति या अभ्यास से दूर कराना ।

छुडवाणो-क्रि० छुडाणो ।

छुद्र-(वि०) १ क्षुद्र । नीच । २ कम । थोडा ।

छुधा-(ना०) क्षुधा । भूख ।

छुपणो-(क्रि०) १ छिपना । लुकना । २ लुप्त होना । छिपणो । लुकणो ।

छुपाणो-(क्रि०) छिपाना । छुपावणो ।

छुपावणो-क्रि० छुपाणो ।

छुरी-(ना०) चाकू । चक्कू । छरी ।

छुरो-(न०) १ छुरा । बडी छुरी । २ उस्तरा । पाछणो ।

छुळकणो-(क्रि०) रुक रुक कर पिशाब करना । थोडा थोडा मूतना ।

छुळकी-(ना०) १ थोडा थोडा पिशाब करने की क्रिया । २ ऊंट द्वारा रुक रुक कर पिशाब करने की क्रिया ।

छुलणो-(क्रि०) चमडी या छिलके का अपने अंग से छूट कर अलग होना । छिलना ।

छुवाणो-(क्रि०) छुआना । स्पर्श कराना । अडाना ।

छुहारो-(न०) खारक । खुरमा । छुहारा ।

छिंया-दे० छींया।

छिंया-तावडो-(न०) १ एक खेल। २ छाया और धूप। ३ सुख-दुख।

छिंयाळीस-(वि०) चालीस और छ। (न०) छयालीस की संख्या '४६'।

छिंयासी-(वि०) अस्सी और छ। (न०) छयासी की संख्या। ८६।

छी-(ना०) १ टट्टी (बच्चे की) (अव्य०) घृणा सूचक उद्‌गार। (क्रिभू०) होणो की भूतकालिक नारी जाति क्रिया। 'छो' का नारी जाति रूप। थी।

छीकणी-दे० छींकणी।

छीछालेदार-(ना०) छीछालेदर। दुर्दशा।

छीछी-(अव्य०) १ घृणा सूचक उद्‌गार। (ना०) टट्टी। मैला। गू।

छीज-दे० छीजत।

छीजणो-(क्रि०) १ क्षीण होना। मिटना। कम होना। २ दुखी होना। ३ कमजोर होना। अशक्त होना।

छीजत-(ना०) १ किसी वस्तु के उपयोग में लाने से होने वाली कमी। क्षति। २ कमी का एवजाना। क्षतिपूर्ति। ३ घाटा। हानि। ४ घटती। घटत। कमी।

छीड-(ना०) १ भीड का कम होना। भीड में कमी। भीड की छँटाई। मनुष्य समूह की कमी। २ मेले का बिखराव। ३ ३ 'भीड' का विपरीतार्थक शब्द। भीड का उलटा।

छीण-(वि०) क्षीण। दुबल। (ना०) छत को छाने की पत्थर की लंबी पट्टी। चीण।

छीणी-(ना०) छैनी। टाँकी।

छीतर-(ना०) १ छोटी पहाड़ी। २ पथरीली भूमि।

छीतरी-(ना०) १ छोटे छोटे लहरदार बादल।

छीतरी छाछ-(ना०) अधिक पानी मिली छाछ। बहुत पतली छाछ।

छीदरी-(वि०) १ फटी हुई। २ वह (छाछ) जिसमें पानी अधिक हो। ३ जो कुछ कुछ दूरी पर हो।

छीदरो-(वि०)१ फटा हुआ। २.छिदरा। ३ वह (वस्त्र) जिसके धागे दूर दूर हों। दूर दूर तंतु वाला। छीदो। ४ जो कुछ कुछ दूरी पर हो। ५ जिसमें अधिक पानी हो। पतला। ६ चौड़ा।

छीदो-(वि०) १ फटा हुआ। छीदरो। पसरा हुआ। २ चौड़ा। ३ लंबा चौड़ा। ४ अलग अलग। ५ जिसकी बुनावट घनी न हो। ६ जो घना न हो।

छीनझी-दे० छिनाळ।

छीना झपटी-(ना०) १ किसी वस्तु को छीन कर लेने की क्रिया या भाव। २ खींचातानी।

छीनणो-(क्रि०) बलपूर्वक लेना। छीनना।

छीनो-(वि०) दुखी। खिन्न।

छीप-दे० सीप।

छीपो-दे० छीपो।

छीरप-(न०) छोटा बच्चा। धावणियो। छोरप।

छीलण-(ना०) १ छीलने से निकले छोटे पतले छिलके या टुकड़े। छीलन। २ छीलने की क्रिया या भाव।

छीलणो-(क्रि०) १ छीलना। छिलका या छाल दूर करना। छोलणो। २ काटना। ३ खुरचना।

छीलर-(न०) १ छिछले पानी की तलैया। खाबोचियो। २ रेजगारी। रेजगी।

छीव-(वि०) मतवाला।

छीं-(अव्य०) छींकने का शब्द।

छींआ-दे० छींया।

छींक-(ना०) वेग सहित नाक से निकलने वाली हवा का एक झटका। छिक्का।

छींकणी-(ना०) सूँघने की तमाखू। सूँघनी। नास। छींकनी। नाहका।

छीवणो-(क्रि०) छीर होना। छीवना।

छीवली-(ना०) छीवलो हरिण की मादा। छींकली। हरिणी।

छीवलो-(न०) एक जाति का हरिण जो प्राय छीवता रहता है।

छीकी-(ना०) ऊँट के मुँह पर बाँधी जाने वाली एक जाली।

छींकी-(न०) १ छींका। सिरहर। सीका। २ ऊट आदि पशुओं के मुँह पर बाँधी जाने वाली जाली।

छीट-(ना०) १ एक प्रकार का रगा और छपा हुआ कपडा। बेल बूटेदार रगा हुआ कपडा। २ टुकडा। ३ बिलराव।

छीटणो-(क्रि०) १ टट्टी जाना। हगना। २ पतला दस्त लगना।

छीपण-(ना०)१ छीपा की स्त्री। २ छीपा जाति की स्त्री।

छीपो-(न०) १ वस्त्र रगने व छापने वाली जाति का व्यक्ति। कपडे पर बेल बूटा छापने वाला।

छीया-(ना०) छाया।

छुआछूत-(ना०) १ अस्पृश्यता। २ अस्पृश्यता का सिद्धान्त या आचरण। ३ अमुक को छुआने न छुआने का विचार।

छुछम-(वि०) सूक्ष्म। थोडा। सुछम।

छुआरो-(न०) छुहारा। खारिक। खारक।

छूट (वि०) छोटा।

छुटकारो-(न०) १ किसी कार्य भार से मिलने वाली मुक्ति। २ मुक्ति। रिहाई। ३ अंत। छुटको।

छुटपुट-(वि०) १ छोटे छोटे टुकडों में बटा या फटा हुआ। २ छोटे छोटे पमाने पर होने वाला। ३ इक्का दुक्का।

छुटभाई-(न०) १ राजा या जागीरदार के वंश का वह अधीनस्थ व्यक्ति जो छोटी जागीरी को लेकर अलग हो गया हो। २ राजा या जागीरदार का वह वंशधर जिसे (आयु में छोटा होने अथवा अयोग्य होने आदि से) राज्य या जागीर की गद्दी पानी का परम्परागत अधिकार न मिल सका हो। ३ पद और मान मर्यादा में कम या छोटा व्यक्ति। ४ छोटा भाई। अनुज।

छुट्टी-(ना०) १ कार्यालय की ओर से नियत अवकाश दिन। तातील। २ अवकाश। ३ अनुमति। ४ छुटकारा। रिहाई। मुक्ति। ५ चलने या जाने की अनुमति।

छुडाणो-(क्रि०) १ बधन या उलझन से मुक्त कराना। छुडवाना। छोडावणो। २ दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३ किसी प्रवृत्ति या अभ्यास से दूर कराना।

छुडवाणो-क्रि० छुडाणो।

छुद्र-(वि०) १ क्षुद्र। नीच। २ कम। थोडा।

छुधा-(ना०) क्षुधा। भूख।

छुपणो-(क्रि०) १ छिपना। लुकना। २ लुप्त होना। छिपणो। लुकणो।

छुपाणो-(क्रि०) छिपाना। छुपावणो।

छुपावणो-क्रि० छुपाणो।

छुरी-(ना०) चाकू। चक्कू। छरी।

छुरो-(न०) १ छुरा। बडी छुरी। २ उस्तरा। पाछणो।

छुळकणो-(क्रि०) रुक रुक कर पिशाब करना। थोडा थोडा मूतना।

छुळकी-(ना०) १ थोडा थोडा पिशाब करने की क्रिया। २ ऊँट द्वारा रुक रुक कर पिशाब करने की क्रिया।

छुलणो-(क्रि०) चमडी या छिलके का अपने अंग से छूट कर अलग होना। छिलना।

छुवाणो-(क्रि०) छुआना। स्पर्श कराना। अडाना।

छुहारो-(न०) खारक। गुरमा। छुहारा।

छू-(अव्य) १ मंत्र पढ़ कर फूंक मारने का शब्द । २ गायब ।

छूट-(ना०) १ रियायत । नरमी । २ बधारा । ३ ऋण की माफी । ४ शून्य । ५ स्वतंत्रता । ६ तलाक । ७ अनुमति । ८ रिहाई । छुटकारा । ९ फुरादगी । १० लगान सरकार अथवा मालिक का अभाव ।

छूटा-(वि०) १ अलग अलग २ फुटकर । खुल्ला । ३ धार बंद नहीं ।

छूटको-(न०)१ मुक्ति । छुटकारा । रिहाई । २ लंबी बीमारी की तकलीफ का (मृत्यु हो जाने से मिलने वाला) छुटकारा । मृत । छुटकारो ।

छूटछाट-(ना०) १ रियायत । नरमी । २ कमीशन, दलाली आदि के रूप में दी जाने वाली माफी ।

छूटणो-(क्रि०) १ छूटना । मुक्त होना । २ हाथ में से किसी वस्तु का गिरना । ३ बंधन दूर होना । गांठ का खुलना । ४ चिपकी हुई चीज का अलग होना । खुलना । ५ अलग होना । ६ बचना । त्राण पाना । ७ नौकरी से अलग हो जाना । ८ गोली तीर आदि अस्त्रों का चलना । ९ शेष रहना । १० इजाजत मिलना । ११ प्रसव होना ।

छूट पल्लो-दे० छूटा छेड़ा ।

छूटा छेड़ा-(न०) कायदे के अनुसार पति पत्नी का सदा का त्याग । विवाह विच्छेद । तलाक ।

छूटो-(वि०)१ बंधन रहित । मुक्त । खुला । २ अलग । जुदा ।

छूणो-(क्रि०) १ छूना । स्पर्श करना । सटाना । २ स्पर्श होना ।

छूत-(ना०) १ रोग संचारक वस्तु का स्पर्श । छोत । २ संसर्ग । छूने का भाव । (वि०) संसर्ग से उत्पन्न ।

छूछात-दे० छुआछूत ।

छूनीवाड़ा-(न०) १ अशौच । २ सूतक ।

छूमंतर-(न०) १ जादू । टोनटा । २ जंत्र मंत्र का प्रयोग । ३ हाथ सफाई से वस्तु को गायब कर देने की क्रिया ।

छू होणो-(मुहा०) गायब होना । अदृश्य होना ।

छू-(क्रि०) वर्तमान कालिक 'छै' (हिंदी 'है') क्रिया का उत्तम पुरुष एकवचन रूप । हूं । जैसे—म्हूं आयो छू ।

छूछ-(ना०) उमंग । उत्साह ।

छूछो-(न०) फल का तंतु । फल के गूदे का निस्सार भाग । (वि०) १ निःसार । निःसत्व । २ खाली । रिक्त । ३ निर्धन ।

छूतको-दे० छूतरको ।

छूतरको (न०) छिलका । फोतरको । फोतरो ।

छूतरा-(न०) छिलका । फोतरको । फोतरा । फोतो ।

छूंदो-(न०) किसी फल की कतलियां बना कर या कुचल कर चीनी की चाशनी में बनाया जाने वाला एक प्रकार का अचार । कचूमर । कचुंबर ।

छेक-(न०) १ चाकू या किसी शस्त्र की धार की रगड़ से बना घाव या दरार । चीरने का घाव । चीरा । चीरो । २ छेद । सुराख । ३ अंत । सीमा । ४ रद्द ।

छेकड़-(अव्य०)अंत में । आखिर में । (न०) दरार । सुराख ।

छेकड़ो-(न०) सुराख । दरार ।

छेकणो-(क्रि०)१ काटना । चीरा लगाना । २ लिखा हुआ ठीक नहीं है ऐसा समझने के लिये उसके ऊपर लकीरें खींचना । लिखे हुए को रद्द करना । ३ सुराख करना । छेदना । ४ छलांग मारना । ५ भागना ।

छेद–(न०) १ सुराख । छिद्र । फांडो । २ विवर । बिल । ३ नाश । ४ दोष ।
छेदणो–(क्रि०) १ छेदना । छेद करना । २ नाश करना । मारना । ३ काटना । ४ घाव करना ।
छेदो–(न०) १ छल । कपट । २ धोखा ।
छेलछेलो–(वि०) सबसे अंतिम ।
छेलमछेलो–दे० छेलछेलो ।
छेलो–(वि०) अंतिम ।
छेवट–(न०)अंत । अखीर । सेवट । (अव्य०) अंतत । आखिरकार । आखिर म ।
छेवटी–(ना०) १ घोडे की जीन । २ पलान । काठी । पलाण ।
छेवाडो–(न०) १ अंत । २ सीमा । ३ किनारा । छोर ।
छेह–(न०) १ दगा । विश्वासघात । २ अंत । समाप्ति । ३ किनारा । ४ थाह । गहराई । ५ हानि । ६ ओर । तरफ ।
छेहडळो–दे० छेहलो ।
छेहडै–(अव्य०) १ एक तरफ । २ किनारे पर ।
छेहडो–दे० छेडो ।
छेहलो (वि०) अंतिम । आखिरी । छेलो ।
छै–(क्रि०) वतमान कालिक क्रिया 'हुणो, 'होणो अथवा 'होवणो (हिंदी होना) का अन्य पुरुष म एक वचन और बहु वचन रूप है' तथा हैं । जसे—राम आयो छै । राम न लछमण आया छै ।
छैल–(न०) १ छैला । रगीला पुरुष । २ पति । प्रीतम । ३ वह जिसका प्रपिता मह (परदादा) जीवित हो । भँवर । (वि०) १ प्यारा । २ रगीला । रसिक । छला ।
छैलकडी–(ना०) कान के बीच मे पहनी जाने वाली एक प्रकार की बाली ।
छैलकडो–(न०) पाँव म पहनने का साने या चाँदी का एक प्रकार का कडा ।
छैलछबीलो–(वि०) १ शौकीन । रसिक । सजा धजा ।
छैलण–दे० छैली ।
छैलभँवर–(न०) रसिक पुरुष । रगीला व्यक्ति ।
छैली–(वि०) १ बनी ठनी । सजीली । २ शौकीन । ३ नखराली । छलण ।
छैलो–(वि०) १ बना ठना । सजीला । शौकीन । २ प्यारा । ३ नखराबाज ।
छो–(भू०क्रि०)सत्तार्थक क्रिया 'हुवणो होणो और होवणो के उत्तम मध्यम और अन्य तीनों पुरुषो मे सभाव्य (वतमान या भूत) काल के दोनो वचनो का रूप । हो । था । जसे हू आयो छो । थू आयो छो । ३ वो आयो छो । (अव्य०)१ भले । अस्तु । भला । खैर । अच्छु । २ कोई बात नही । २ वाह । खूब ।
छोकणो–(क्रि०) १ मस्त होना । २ नशे म बेहोश होना । ३ तृप्त होना । छक जाना ।
छोकरडी–दे० छोकरी । (तिरस्कार शब्द)
छोकरडो–दे० छोकरो । (तिरस्कार शब्द)
छोकर बुद्धि–(वि०) बालक जसी अल्प बुद्धि वाला । नासमझ । (ना०) १ ना समझी । लडकपन ।
छोकर मत दे० छोकर बुद्धि ।
छोकरवाद–(न०) लडकपन ।
छोकरियो–दे० छोकरडो ।
छोकरी (ना०) १ बच्ची । २ लडकी । कन्या । छोरी । ३ दासी ।
छोकरो–(न०)१ बालक । छोरो । बच्चा । २ पुत्र । ३ सतान ।
छोगाळो–(वि०) १ कलगी वाला । २ पगडी या साफे म फुदने (तुर्रे) वाला । छोगे वाला । ३ शौकीन । रसिक । ४ वीर । बहादुर ।

छोगो-(न०)१ कलगी। २ पगडी या साफे में उठा हुआ तुर्रे के समान छोर। ३ साफा के पीछे की ओर लटकने वाला छोर। ४ तुर्रे के समान बना गोशवार। सिरपेच।

छोटक्यो-(वि०) छोटा। नैनो। (न०) छोटा पुत्र। छोटोडो।

छोटमन-(वि०) कंजूस।

छोटाई-(ना०) १ छोटापन। लघुता। २ क्षुद्रता। ओछापन। ३ नीचता।

छोटो-(वि०) १ जो अवस्था कद विस्तार पद और परिमाण आदि में कम हो। छोटा। नैनो। २ ओछा। क्षुद्र। ३ न्यून। कम। थोडा।

छोटो मोटो-(वि०) १ साधारण। २ छोटा सा। ३ तुच्छ।

छोड-(ना०) १ भ्रूण के स्थान गर्भाशय में उत्पन्न होने वाला मांसपिंड। २ पौधा।

छोडणो-(क्रि०) १ छोडना। मुक्त करना। २ अपराध क्षमा करना। माफ करना। ३ अपने अधिकार या प्रभुत्व को हटा लेना। ४ त्यागना। त्याग करना। ५ पद कार्य अथवा अधिकार से अलग होना। ६ साथ न देना। पीछे रहने देना। ७ किसी कार्य को भूल वश न करना। भूल जाना। ८ अभियोग से मुक्त करना। ९ बंदूक की गोली या तीर का चलाना। १० गिराना।

छोडाणो-दे० छुडाणो।

छोडावणो-दे० छुडाणो।

छोडो-दे० छौडो।

छोण-(न०) बछडा।

छोणी-(ना०) पृथ्वी। धरती। क्षोणि।

छोत-(ना०) १ संसर्ग दोष। २ अपवित्र। वस्तु को छूने का दोष। ३ अपवित्रता। ४ अस्पृश्य को छूने का अशौच। ५ अस्पृश्यता। ६ छिलका।

छोतरको-दे० छोती।

छोतरो-(न०) छिलका। फोती। फोतरो।

छोती-(न०) छिलका। फोती।

छोतो-(न०)१ घास। चारा। चार छोतो। २ भूस। ३ तिनका।

छो नी-(अव्य०)भले ही। भले। भलां ही।

छोर-(न०)१ किनारा। २ सिरा। नोक। ३ अंतिम सीमा।

छोरा-रोळ-(ना०)१ नासमझी। नादानी। मूर्खता। २ बच्चा का सा मेल।

छोरी-(ना०) १ लड़की। छोकरी। २ पुत्री। बेटी। ३ दासी।

छोरू-(न०) १ संतान। पुत्र पुत्री आदि। २ पुत्र। ३ छोरा। बालक। ३ सेवक। (वि०) चिरंजीव।

छोरो-(न०)१ लडका। बच्चा। छोकरो। २ पुत्र। बेटो।

छोल-(न०) १ छिलका। २ छाल। ३ चमडी। ४ छीलन। खरोंच। ५ छौडो।

छोळ-(ना०) १ लहर। तरंग। २ तेज लहर। लहर का झपट्टा। ३ प्रवाह का वेग। ४ अतिवेग से बरसने वाली वर्षा। ५ बौछार। ६ उदारता। ७ उमंग। मौज। ८ प्रसन्नता। आनंद। ९ हँसी। ठट्ठा। मजाक।

छोळणो-(क्रि०) १ छीलना। छिलका उतारना। २ खुरचना। ३ खरादना।

छोलदारी-(ना०) छोटा खेमा या तम्बू।

छोला-(न०) चना।

छोह-(न०) १ क्रोध। २ रोष। क्षोभ। ३ उत्साह। ४ जोश। ५ अनुग्रह। दया। ६ स्नेह। प्रेम। ७ वियोग।

छोकर-(ना०) शमीवृक्ष। खेजडी। जांट।

छौतरो-(न०)छिलका। छोतरो। फोतरो।

छौती-दे० छोती।

छौ-दे० छो।

छौडो-(न०) १ वृक्ष की छाल। २ छाल का टुकड़ा। ३ लाडी का छोटा टुकड़ा। कुल्हाडी या बँसाले से उतारा हुआ (काटा हुआ) लकड़ी का चपटा टुकड़ा।
छ़ाळ-दे० छोळ।
छौळ-वौळ-(वि०) अत्यधिक। (ना०) १ अधिकता। २ मौज मजा। ३ हँसी मजाक। ४ प्रसन्न। खुश।
छौळीलो-(वि०) १ मौजी। लहरी २ हँसोड। मसखरा।
छयासट-दे० छासट।
छयासी-दे० छियासी।

ज

ज-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु है।
ज-(अव्य०) १ जोर, प्रभाव और निश्चय सूचक एक शब्द। ही। २ काव्य तथा गीता में एक पाद पूरक अक्षर। (प्रत्य०) किसी शब्द के अंत में संयुक्त होने पर उत्पत्ति अर्थ का वाचक नर जाति प्रत्यय। जैसे—जल+ज= जलज। (सर्व०) १ जिस। २ उस।
जइ-(क्रि०वि०) १ यदा। जब। २ यहाँ। (अव्य०) यदि। जो। अगर।
जइया-(सर्व०) १ जिसका। (क्रि वि०) यहाँ।
जई-(क्रि०वि०) तब। (ना०) १ जौ। यव। २ छः राई की तौल। ३ लंबे डंडे में लगी लकड़ी की दो नोकों वाला नौकीली भाड़ी या घास आदि उठाने का कृषक का एक उपकरण। बेई। (वि०) जीतने वाला। जयी।
जईमरग-(न०) मयमार्ग। मदार। मस्तक।
जउ-(ना०)१ चैन। शांति। २ आराम। विश्राम।
जक-(ना०) १ वचन। २ शर्त। ३ हठ कर पकड़ने का जीवन का भाव।
जकटणो-(क्रि०) १ मजबूती से पकड़ना। २ मजबूती से बांधना। कस कर बांधना।
जकड़ी-(ना०) १ गीत भजन लावनी या ख्याल आदि के अंतरा के बीच में बजने वाली राग या लय। २ लावनी। ३ एक छंद। ४ संगीत का एक ताल।
जकडीजणो-(क्रि०)१ बंधन में आना। फंस जाना। २ बँध जाना(बातचीत में)। ३ ठंड चोट आदि लगने से शरीर का अकड़ जाना।
जकण-(सर्व०) जिस। जिरण। जिके।
जकणो-(क्रि०) १ नींद में बात करना। २ बक करना। ३ चौंकना। भौंचक्का होना। ४ चैन पड़ना। आराम मिलना।
जका-(सर्व०)१ स्त्री वाचक एक सर्वनाम। जो। २ सो। ३ वह। ४ उस।
जकात-(ना०) १ चुंगी। आयात कर। महसूल। २ खैरात।
जकात माफी-(ना०) कर मुक्ति। महसूल माफी।
जकार-(ना०) 'ज' वर्ण।
जकांर-(सर्व०)जिनके। जिकेर। जिणांर।
जकांरो-(सर्व०) जिनका। जिकांरो। जिणांरो। (ना०) चर्चा।
जकी-दे० जका।

जकै-(सर्व०) १ एक बहुवचन सम्बंध सूचक सर्वनाम। जो। २ वे। ३ उन। ४ जिन।
जको-(सर्व०) १ जो। २ सो। ३ उस। ४ वह।
जकोई-(सर्व०) जिसका जिक्र या उल्लेख हुआ हो। पूर्वोक्त। वही। वह ही।
जको ज-दे० जकोई।
जको ही-दे० जकोई।
जक्ख-(न०) यक्ष।
जक्ष-(न०) यक्ष।
जख-(न०) यक्ष।
जख कादम-(न०) १ एक प्रकार का अंग लेप, जिसका लेप यक्ष अपने अंगों पर करते हैं। यक्ष कदम। २ कपूर कस्तूरी अगर कक्कोल इत्यादि सुगंधित पदार्थों से बनाया जाने वाला एक अंग लेप।
जखणी-(ना०) यक्षिणी।
जखणो-(क्रि०)१ व्यर्थ बकना। २ अधिक बुखार में असंगत और व्यर्थ बकना।
जखम-(न०) १ जख्म। घाव। क्षत। २ फोड़ा।
जखमायल-(वि०) जख्मी। घायल।
जखमी-(वि०) जख्मी। घायल।
जखराज-(न०) यक्षराज। कुबेर।
जखराट-(न०) कुबेर। यक्षराज।
जखर्जै-(न०) यक्षपति। कुबेर।
जखाधीस-(न०) यक्षाधीश। कुबेर।
जखांराज-(न०) कुबेर। यक्षराज।
जखीरो-दे० जखेरो।
जखेरो-(न०) १ ढेर। राशि। जखीरा। २ कोष।
जखेस-(न०) १ महादेव। शंकर। यक्षेश। २ कुबेर। यक्षेश।
जखेसर-दे० जखेस।
जग-(न०) १ संसार। जगत। २ यज्ञ।
जगकर्त्ता-(न०) जगत को रचने वाला ईश्वर।
जगचख-(न०) १ सूर्य। जगचक्षु।
जगचावो-(वि०) जग प्रसिद्ध। विश्व विख्यात।
जग जणणी-(ना०)जगदंबा। जग जननी।
जग जणियार (न०) जगत्पिता।
जग जाड-(ना०) जगत की जड़ता। मन्दता।
जगजामी-(न०) जगत्पिता।
जगजिवास-(न०) १ जगत का जीवन। २ परमेश्वर। ३ पवन। वायु।
जगजेठ-(वि०) जगत में बड़ा। (न०) १ प्रख्यात वीर। २ ईश्वर। ३ संसार के बड़ों में से बड़ा।
जगजेठी-दे० जगजेठ।
जगजोत-(न०) १ सूर्य। जगज्योति। जगचख। २ ईश्वर।
जगढाल-(न०) जगत का रक्षक।
जगण-(न०)१ छंद शास्त्र में दो लघु और इनके बीच में एक गुरु ऐसे तीन अक्षरों का एक गण। २ यज्ञ। ३ अग्नि।
जगणो-(क्रि०) जागना। जागणो।
जगत-(न०) संसार। विश्व। दुनिया।
जगतजेठ-दे० जगजेठ।
जगतण-(ना०) वेश्या।
जगतप्राण-(न०) १ पवन। वायु। २ ईश्वर।
जगतसेठ-(न०) अत्यंत धनी व दानी व्यक्ति को सरकार की ओर से दी जाने वाली एक उपाधि।
जगतंबा-दे० जगदंबा।
जगति-(ना०) द्वारिका नगरी।
जगती-(ना०) १ संसार। २ पृथ्वी। ३ मंदिर का तल। सतह। आँगन। प्लिथ।

जगत्र-(न०) १ जगत। ससार। २ जग त्रय। त्रिलोक। ३ यज्ञ। ४ यज्ञमडप।
जगदंबा-(ना०) १ जगज्जननी। जगत की माता। २ महामाया। ३ दुर्गा।
जगदाधार-(न०) ईश्वर।
जग-दिवलो-(न०) सूर्य।
जगदीश-(न०) ईश्वर।
जगदीश्वर-(न०) परमात्मा। परमेश्वर।
जगदीश्वरी-(ना०) १ महामाया। जग दीश्वरी। २ दुर्गा।
जगदीस-(न०) जगदीश। ईश्वर।
जगदीसर-दे० जगदीस।
जगदीसरी-(ना०) जगदीश्वरी। दुर्गा। महामाया।
जगदुग्राळ-(न०) १ जगडवाल। व्यर्थ का आडम्बर। २ माया। ससार का प्रपच।
जगधणी-दे० जगदीस।
जगन-(न०) १ यज्ञ। २ महाभोज। ब्रह्म भोज। ३ बडा काम। कीर्त्ति काम।
जगनाथ-(न०) १ जगन्नाथ। परमेश्वर। २ उडीसा की जगन्नाथपुरी का श्रीकृष्ण का अपूर्ण दारु विग्रह। श्री जगन्नाथपुरी की श्रीकृष्ण (सुभद्रा और बलभद्र के साथ) की अपूर्ण (असपूर्ण) काष्ठमूर्ति। ३ चार दिशाओं के चार धामो म पूर्व दिशा का जगनाथ धाम। जगदाशपुरी।
जगनाथी-(ना०) १ एक वस्त्र। २ एक जलपात्र।
जगनामो-(न०) १ सत्कर्मों द्वारा ससार म रह जाने वाला अमर नाम। २ जग-यश। जगकीर्ति। ३ जगप्रसिद्धि। विश्वख्याति।
जगनैण-(न०) सूर्य।
जगन्नाथ-दे० जगनाथ।
जगपुड-(न०) १ पृथ्वीतल। जगतीतल। २ पृथ्वी। जमीन।
जगप्राण-दे० जगतप्राण।
जगभाळण-(ना०) १ आँख। नेत्र। २ सूर्य।
जगमग-(न०) प्रकाश। चमक। (वि०) प्रकाशमान। चमकीला।
जगमगणो-(क्रि०) चमकना। जगमगना।
जगमगाट-(ना०) चमक। जगमगाहट।
जगमिण-(न०) जग,मणि। सूर्य।
जगमोहन-(न०) १ ईश्वर। २ देवमदिर म गर्भगृह के सामने का स्थान।
जगर-(न०) १ कवच। २ अधिकार। वश।
जगर आवणो-(मुहा०) घोडी का ऋतु में आना। घोडी को कामेच्छा होना। जाग मे आणो।
जगरो-(न०) १ शीघ्र जल उठने वाली पतली टहनियो और घास आदि की छोटी राशि। शीत मिटाने के उद्देश्य से जलाने के निमित्त इस प्रकार का इकट्ठा किया हुआ कचरा। तृणपुज। २ घोडी का ऋतु समय। घोडी की कामेच्छा। जाग।
जगवंद-(न०)१ जगवदनीय।२ परमात्मा।
जगवदण-दे० जगवद।
जगवासग-(न०) १ जगत को बसाने वाला व पोषण करने वाला ईश्वर। २ जो जगत म व्यापक है वह। ३ जिसके अदर जगत बसा हुआ है वह। परमात्मा। परब्रह्म।
जगवै-(न०) जगपति। ईश्वर।
जगसाखी-(न०) सूर्य। जगत्साक्षी।
जगहथ-(न०) समस्त जगत को विजय कर अपने हाथ (अधिकार) म करने का काम। जगद्विजय। दिग्विजय।
जगा-(ना०) १ स्थान। स्थल। जगह। २ खाली स्थान। ३ मकान। ४ नौकरी। ५ पद। ओहदा।

जगाजोत-*(ना०)* १ अनेक दीपकों का प्रकाश। जगमगाहट। २ अनेक दीपक। दीपक माल।

जगाणो-*(क्रि०)* १ जगाना। नींद छुड़ाना। २ प्रज्वलित करना। ३ सावधान करना।

जगात-दे० जकात।

जगाती-*(वि०)* जकात वसूल करने वाला। *(ना०)* जकात वसूल करने वाला व्यक्ति।

जगावणो-दे० जगाणो।

जगीस-*(ना०)* १ युद्ध। २ [illegible] यज्ञ। ३ जगदीश। *(ना०)* १ इच्छा। अभिलाषा। २ कीर्ति। यश।

जग्गार दे० जागर।

जग्य-*(ना०)* यज्ञ।

जग्योपवीत-*(ना०)* यज्ञोपवीत। जनेऊ। जनोई।

जचणो-*(क्रि०)* १ उचित लगना। हृदय में जमना। जँचना। २ स्वीकार होना। ३ स्थिर होना। कायम होना। ४ फबना। सुंदर लगना। ५ किसी वस्तु का अन्य वस्तु से मेल खाना।

जचाणो-दे० जचावणो।

जचावणो-*(क्रि०)* १ जँचवाना। जाँच करवाना। २ तोल करवाना। ३ परीक्षा करवाना। ४ किसी वस्तु का किसी अन्य वस्तु से मेल बिठवाना। ५ प्रतीति करवाना। ६ यथावत् मनाना।

जच्चा-*(ना०)* प्रसूता स्त्री।

जच्चा राणी-*(ना०)* १ पुत्र प्रसूता का महिमामय नाम। २ पुत्र प्रसव के समय गाया जाने वाला एक लोकगीत। ३ जच्चा।

जच्छ-*(ना०)* यक्ष।

जज-*(ना०)* उच्च या उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश।

जजण-*(ना०)* १ यजन। यज्ञ। २ याग करण। ३ पूजा। ४ यज्ञ करने का स्थान।

जजमान-*(ना०)* १ यजमान। २ [illegible] पुरोहित से दीक्षित। यजमान। ३ [illegible]। ४ दक्षिणा (पारिश्रमिक) देकर ब्राह्मण से धार्मिक क्रिया कराने वाला। ५ ब्राह्मण को दान देने वाला।

जजमानी-*(ना०)* १ यजमान वृत्ति। पुरोहिताई। २ किसी ब्राह्मण का किसी घर [illegible] विवाह आदि कार्य सम्पन्न कराने [illegible] वृत्ति। विरत।

जजर-*(ना०)* १ यमराज। २ [illegible]। ३ वज्र। ४ [illegible]। *(वि०)* १ जर्जरित। जीर्ण। २ बुड्ढा। वृद्ध। ३ शिथिल। ४ [illegible]।

जजरग-*(ना०)* १ यमराज। २ सिंह। ३ वज्र।

जजराग *(ना०)* १ वज्र। २ वज्राग्नि। ३ यम। [illegible]। ४ सिंह। ५ [illegible]।

जजराट-*(ना०)* यमराज।

जजायळ-*(ना०)* ऊँट पर रख कर चलाई जाने वाली तोप बंदूक। शुतुरनाल।

जजायळची-*(ना०)* जजायळ बंदूक चलाने वाला उष्ट्रारोही। शुतुरनाल को चलाने वाला।

जजियो-*(ना०)* १ ज वर्ण। २ एक कर जो मुसलमानी शासन काल में प्रत्येक हिन्दू से लिया जाता था। जजिया। जेजियो।

जजेसर-*(ना०)* दे० ज्जेसर।

जज्जो-*(ना०)* 'ज' वर्ण। जकार।

जज्र-*(ना०)*१ यमराज। २ वज्र। ३ ताप।

जज्रमाथ-*(ना०)*१ यमराज। जम। २ बड़ी तोप।

जज्राट-*(ना०)* यमराज। जमराज।

जट-*(ना०)* १ ऊट व बकरी के बाल। ऊट या बकरी के काटे हुए बाल। २ जटा।

जटधर-*(न०)* महादेव।

जटवाड-*(ना०)* १ जाटो का मोहल्ला। जाटो की बस्ती। २ जाट समूह। ३ जाटो की सेना।

जटा-*(ना०)* १ सिर के बडे बाल। २ बड, पीपल आदि वृक्षो की जड के समान लटकती हुई शाखाओ के सिरो पर का महीन गुच्छा। ३ नारियल के ऊपर का ततु समूह। नारियल के ऊपर जमा हुआ रेशा।

जटाजूट-*(न०)* १ बहुत बडी जटा। २ जटा का बँधा हुआ बहुत बडा जूडा।

जटाधर-*(न०)* महादेव। शिव।

जटाधारी-*(वि०)* सिर पर जटा रखने वाला। *(न०)* १ योगी। तपस्वी। २ शिव। महादेव।

जटाय-*(न०)* जटायु।

जटायु-*(न०)* रामायण मे वर्णित एक प्रसिद्ध गिद्ध।

जटाळ-*(न०)* महादेव।

जटाळो-*(न०)* १ बडी जटा वाला साधु। २ महादेव। *(वि०)* जटावाला।

जटाशकरी-*(ना०)* गगा। भागीरथी।

जटियो-*(न०)* चमडा साफ करने व रगने वाली जाति का व्यक्ति।

जटियो कुभार-*(न०)* कुम्हार जाति का व्यक्ति जो जट बुनने का काम करता है।

जटियो मेघवाळ-*(न०)* चमडे को साफ करने या रगने वाली एक जाति या उस जाति का व्यक्ति।

जटीघू-*(न०)* धूजटि। महादेव। धूजटी।

जटेत-*(वि०)* १ युद्ध करने वाला। लडाकू। *(न०)* १ शिव। महादेव। २ सिंह।

जठर-*(न०)* १ पेट। उदर। २ पेट का भीतरी भाग।

जठा-*(क्रिoवि०)* जिधर। जहाँ।

जठा ताँई-दे० जठालग।

जठा तागी-दे० जठालग।

जठातीरै-दे० जठापछै।

जठापछै-*(क्रिoवि०)* जिसके बाद। तत्पश्चात्।

जठामहोर-*(क्रिoवि०)* १ जिसके पहिले। २ इसके पूर्व।

जठालग-*(क्रिoवि०)* जहाँ तक।

जठी-*(क्रिoवि०)* जिधर। जहाँ।

जठ-*(क्रिoवि०)* जहाँ। जिधर।

जड-*(वि०)* १ अचेतन। चेतना रहित। २ मूर्ख। *(न०)* १ वृक्ष लता आदि का वह भाग जो भूमि मे रहता है। जड। मूल। २ नीव। ३ आधार। आश्रय। ४ कारण। ५ स्रोत।

जड-*(न०)* नाई। हज्जाम। (सकेत शब्द)।

जडणो-*(क्रि०)* १ जडाई करना। आभूषणो के खानो या कोठो मे रत्न को कुदन की गोट लगा कर बिठाना। २ मारना। पीटना। ३ दृढ करना। ४ ताला लगाना। ५ बद करना। ६ स्थिर करना। ७ अकडना। ८ मिलना। प्राप्त होना। ९ एक वस्तु मे दूसरी वस्तु बिठाना। १० जूते मारना।

जडत-*(ना०)* कुदन की गोट लगा कर किया जाने वाला आभूषणो मे रत्नो की जडाई का काम। जडाई। *(वि०)* जिसमे जडाई हुई हो।

जडतर-दे० जडत।

जडधर-*(ना०)* कटारी।

जडबातोड-*(वि०)* मुँहतोड। सचोट।

जडबो-*(न०)* मुह के ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमे दाँत लगे रहते हैं। जबडा। जबाडो।

जडमूळ-दे० जडामूळ।

जडलग-(न०) १ तलवार। २ कटार।
जड़ाई-(ना०) १ जड़ने का काम। २ जड़ने की मजदूरी। ३ जड़त का काम। जड़त।
जडाऊ-(वि०) वह जेवर आदि जिसमें नग (रत्न) जड़े हों। जड़ाव वाला। जड़ा हुआ। जड़तवाला।
जडाग-(न०) १ रत्न। मणि। २ आभूषण। ३ पुत्र। ४ घोड़ा। ५ युद्ध। (वि०) १ महाबलशाली वीर। २ श्रेष्ठ।
जडाणा-(क्रि०) १ आभूषणों में रत्नों की जड़ाई करवाना। २ खिड़की या किवाड़ बंद करवाना। ३ ताला लगवाना। ४ प्रहार करके घाव निकलवाना। ५ प्राप्त करवाना। ६ तलाश करवाना। ६ जूते मरवाना या लगवाना। ८ पिटाई करवाना। पिटाना।
जडामूळ-(न०) १ मूल का मुख्य साधन। जड़मूल। २ मुख्य मूल। ३ मुख्य आश्रय। ४ समस्त साधन। ५ आदि। शुरू। प्रारंभ। ६ वंश। ७ वंश परम्परा।
जटायुज-(न०) घोड़ा।
जडाळ-(ना०) कटारी।
जडाली-(ना०) कटारी।
जडाव-(वि०) रत्न जड़ित। (न०) १ मणि माणिक्य। २ जड़ाई का काम।
जडावणा-दे० जडाणा।
जडियो-(न०) जड़ाई का काम करने वाला। आभूषणों में रत्नों को जड़ने वाला। २ जड़ाई का काम करने वाली जाति का व्यक्ति। जड़िया।
जडी-(ना०) १ जड़ी बूटी। वनौषधि। २ औषधि के रूप में काम आने वाली वनस्पति की जड़। ३ बहुत पतली मूली।
जडीबूटी-(ना०) वनौषधि।
जडूलिया-दे० झडूलिया।
जडूलियो-दे० झडूलिया।
जडो-(वि०) १ जब्बर। मूढ़। ... असभ्य। अशिष्ट। ३ अशिक्षित। ... वह ऊंट आदि वह पशु जिसको सवारी की चाल नहीं सिखाई गई हो। जि... ढंग की चाल वाला। अकेरियो।
जण-(न०) १ व्यक्ति। जन। पुरुष। जणो। २ जन। लोक। ३ भक्त। ४ सज्जन। ५ लोग। समूह। (सर्व०) जिसने। जिस।
जणण-(न०) १ उत्पत्ति। जन्म। ... संतान। ३ प्रसव।
जणणी-(ना०) माता। जननी।
जणणो-(क्रि०) बच्चे को जन्म देना। जनना।
जणन-दे० जिणन।
जणसू-दे० जिणसू।
जणणो-दे० जणावणो।
जणा दीठ-(अव्य०)१ प्रति व्यक्ति। व्य... वार।
जणारजण-(न०) जनार्दन। विष्णु।
जणाव-(न०) जानकारी।
जणावणो-(क्रि०) १ जानने को प्रेरि... करना। जतलाना। बताना। २ प्र... काय करना। जनमाना। ३ प्रगट करना।
जणा-(क्रि०वि०) जब। जिस समय। ... जरां। जद। जद। (न०ब०व०) ... समूह। (अव्य०) जनों ने। लोगों ने।
जणियारी-(ना०) जन्मदातृ। माता।
जणियो-(न०) पुत्र। (क्रि०भू०) जन्म दि... जन्मा।
जणी-(ना०) १ स्त्री। नारी। जते... व्यक्ति। २ माता। ३ पुत्री। (सर्व०) १ जिस। २ उस। (क्रि०वि०) जब।
जणीक दीठ-(अव्य०) १ एक व्यक्ति का। २ एक एक व्यक्ति का। प्रत्येक व्य... का। प्रतिव्यक्ति। ३ व्यक्ति की दृष्टि से।
जणीकै वार-दे० जणीक दीठ।

जणीतो-(सव०) १ उस। २ उसका। (न०) पिता। बाप। (अव्य०) एक व्यक्ति। कोई व्यक्ति।

जणीरा जणीतो-(सव०) १ जिस जिस। २ उस उस। (अव्य०) १ एक एक व्यक्ति। २ प्रत्येक व्यक्ति।

जणीनी-(ना०) माता। जनीता। जनाता।

जणीता-(न०) पिता। जनक। बाप।

जणीरा-(सव०) उसका। उणरो।

जणता-दे० जणाता।

जण-(क्रि०वि०) जब। जिस समय। जद। जर।

जणा-(न०) १ व्यक्ति। पुरुष। जन। जण। २ पिता।

जत-(ना०) १ जन्म। २ ब्रह्मचर्य। ३ प्रतिष्ठा। ४ जता। ५ यति। ६ यतिधर्म। ७ एक मुसलमान जाति। (वि०) जितना।

जतधार-(न०) हनुमान।

जतन-(न०) १ रक्षण। २ यत्न। ३ प्रबंध। व्यवस्था। ४ उपाय। ५ नजर न लगने के लिये किया जाने वाला टोटका। ६ लाडकोड। लाडचाव। लाड करने का उत्साह। ७ प्रमाण। ८ सत्कार। ९ प्रतिष्ठा।

जतना-(अव्य०) १ लिये। निमित्त। २ सम्हाल करके। ३ लाडकोड से।

जतरै-(क्रि०वि०) १ जब तक। २ जितने में।

जतरो-(वि०) जितना। जितरो।।जित्तो।

जताणा-(क्रि०) १ सूचित करना। चताना। २ प्रभाव दिखाना। ३ प्रभाव होना। ४ ज्ञात करवाना। बतलाना।

जताव-(न०) १ जनाने का काम। २ प्रभाव। असर। ३ जानकारी।

जतावणा-दे० जताणा।

जतावा-दे० जताव।

जती-(न०) १ यति। २ ब्रह्मचारी। ३ परमपद प्राप्त करने के लिये यत्न करने वाला संन्यासी। ४ श्री पूज शिष्य जैन साधु।

जत्थो-दे० जथ्या।

जत्र-(क्रि०वि०) जहाँ। जहाँ पर।

जथा (ना०) १ एक प्रकार। २ डिंगल गीत रचना का एक नियम। (अव्य०) जैसे। यथा। जिस प्रकार कि। उदाहरण स्वरूप। (वि०) जैसा। जिस प्रकार का।

जथा करतव्र-(अव्य०) कर्त्तव्य के अनुसार। यथा कर्त्तव्य।

जथा क्रम-(अव्य०) १ क्रम के अनुसार। यथा क्रम। २ कम के अनुसार। यथा कम।

जथा जात-(वि०) मूर्ख। यथा जाति।

जथा जाग-(अव्य०) १ जैसा जिस योग्य। उपयुक्त। २ जो जिस योग्य। यथा योग्य।

जथा तथ-(अव्य०) यथा तथ्य। ज्यों का त्यों।

जथावदी-दे० जथ्यावदी।

जथाबंध-दे० जथ्या बंध।

जथामती-(अव्य०) यथामति। समझ के अनुसार।

जथारथ-(वि०) १ यथार्थ। २ ठीक। उचित। योग्य। (अव्य०) जैसा उचित हो।

जथारीत-(अव्य०) चालू रीति के अनुसार। यथा रीति।

जथा रुचि-(अव्य०) इच्छानुसार। यथा रुचि।

जथावत-(अव्य०) जैसा था वैसा ही। यथावत।

जथाविध-(अव्य०) विधिपूर्वक। यथाविधि।

जथाशक्ति-(अव्य०) शक्ति के अनुसार। यथाशक्ति।

जथा सक्ती-दे० जथा शक्ति।

जथा सगत-दे० यथा शक्ति।

जथास्थान-(ग्र-य०) ठीक स्थान पर। यथा स्थान।
जथो-(न०)१ समूह। झुंड। यूथ। जत्था। २ राशि। ढर। ३ पक्ष। सहायकों या सवर्गों का दल। ४ साथियों या मित्रों का दल। ५ पूंजी। धन।
जथोचित-(ग्र-य०) जैसा या जितना उचित हो। यथोचित।
जथ्थावदी-(ना०) दलबदी।
जथ्थाबंध-(ग्र-य०) १ छूटक नहीं किंतु बडी राशि के रूप में। (न०) १ वडा जत्था। बडी राशि। २ क्रय विक्रय की थोक वस्तु।
जथ्थो-दे० जथो।
जद-(नि०वि०) जिस समय। जब। जरां। जरै।
जदन-(ग्र-य०) उस दिन।
जदपि-(ग्रव्य) यदि ऐसा है ही। यद्यपि। ग्रगरचे।
जदि-(ग्र य०) जो। यदि। ग्रगर।
जदी-दे० जद।
जदुकुळ-(न०) यदुकुल। यदुवश।
जदुनदरण-(न०) यदुनदन। श्रीकृष्ण।
जदुराज-(न०) यदुराज। श्रीकृष्ण।
जदुवसी-(न०) यदुवशी।
जदूरणो-(वि०) उस समय का। जब का। (क्रि वि०) उस समय से। तब से। (स्त्री० जदूणी)
जदे-दे० जद।
जन-(न०) एक वचन समास रूप में प्रयुक्त, जैसे—वण्णवजन। प्रजाजन इत्यादि। दे० जरण (न०)।
जनक-(न०) १ भगवान राम के ससुर विदेह जनक। भगवती सीता के पिता। मिथिलापुरी के महाराज जनक। २ पिता।
जनकजा-(ना०) सीता। जानकी।
जनकपुरी-(ना०) महाराज जनक की नगरी।
जनखो-(न०) हिजडा। जनखा। हींजडो।
जनता-(ना०) १ प्रजा। २ सर्वसाधारण लोग।
जननी-दे० जरणी।
जनपद-(न०) १ भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की प्रादेशिक जीवन के रूप में विकसित संस्कृति—प्राचीन काल के इन तीन तत्वों की एक भौगोलिक तथा राजनैतिक इकाई। गणराज्य। २ बस्ती। ग्राबादी।
जनम-(न०)१ जन्म। उत्पत्ति। २ जीवन। जिंदगी।
जनम ग्राठम-(ना०) जन्माष्टमी। भादों कृ० ८। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी।
जनम कुंडळी-(ना०) जन्म समय के ग्रह योगों की काल गणना के ग्रनुसार बनाया जाने वाला बारह राशियों का कोठा। दे० जन्म कुंडली।
जनम गांठ-(ना०) १ साल गिरह। बर्ष गाँठ। जन्म दिन। २ जन्म दिन का उत्सव। बरस गांठ।
जनम घूंटी-(ना०) जन्मघुट्टी।
जनमणो-(क्रि०) जन्म लेना।
जनम दिन-(न०) जन्म तिथि। जन्म दिन। बरस गांठ।
जनमपत्री-दे० जन्म पत्री।
जनम भोम-(ना०) १ जन्मभूमि। २ मातृभूमि। मातभोम।
जनम मरण-(न०) जनमना और मरना। जन्म मरण।
जनम हारणो-(मुहा०) जन्म का व्यर्थ जाना। जीवन व्यर्थ गँवाना।
जनमाठम-दे० जनम ग्राठम।
जनमारो-दे० जमारो।
जनमातर-(न०) जन्मांतर। दूसरा जन्म।
जनमाजनम-(ग्र-य०) जन्म जन्म में। २ प्रति जन्म।

जनवरी-(ना०) इसवी सन् का पहला महीना। जानुआरी।
जनवासो-दे० जानीवासो।
जनस-दे० जिनस।
जनाजो-(न०) मुसलमानों में मुर्दे या शव में गाडने को ले जाने की खटिया। मृतक की ग्ररथी। ग्ररथी। टिक्ची। सीढी।
जनादी-(ना०) बहुत कम मूल्य के एक पुराने सिक्के का नाम।
जनान खानो-(न०) ग्रन्तपुर। रनिवास। रणवास।
जनानी डोढी-(ना०) रनिवास। ग्रतपुर। जनानखाना।
जनानो-(न०) १ परदे में रहने वाला स्त्री समुदाय। हरम। ग्रतपुर। २ स्त्री। ग्रौरत। ३ पत्नी। जोरू। ४ नामर्द। नपुंसक।
जनाब-(न०) श्रीमान्। महाशय।
जनारजन-(न०) १ जनार्दन। विष्णु। २ श्रीकृष्ण।
जनार्दन-(न०) १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।
जनावर-(न०) १ जानवर। पशु। जिनावर। २ गदहा। ३ जीवधारी। प्राणी। (वि०) मूर्ख।
जनाँ हुदा-(वि०) जिनका।
जनि-(ग्रव्य०) नहीं। मत।
जनेऊ-दे० जनोई।
जनेत-(ना०) जनता। (न०) बराता।
जनेता-(न०) माता। जनित्रि। जनीता। जणोती।
जनेती-(न०) बराती। जानियो।
जनव-(ना०) १ तलवार। २ तलवार का वह प्रहार जो कंधे पर पड़ कर तिरछे बल कमर तक काट कर। जनऊ की तरह तिरछा प्रहार। जनेवा।
जनोई-(ना०) १ यज्ञोपवीत। जनेऊ। २ जामे के ऊपर पहनने की एक प्रकार की लंबी कंठी। बंबी। ३ सोने का लंबी कंठी।
जनोईवढ-(न०) तलवार का ऐसा प्रहार जो धड़ को जनऊ की तरह टेढ़ा काट दे। जनेव। जनवा। लेखणवढ।
जन्नत-(न०) स्वर्ग।
जन्म-दे० जनम।
जन्मकुंडली-(ना०) जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति की फल ज्योतिष के ग्रनुसार बनाई हुई सारिणी। दे० जनमकुंडळी।
जन्मपत्री-(ना०) वह पत्रिका जिसमें किसी के जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति, दशायें ग्रौर ग्रतर्दशायें इत्यादि लिखी हुई रहती हैं। जन्म के बाद उत्तरोत्तर (भविष्य में) बनने वाले बनावों तथा लाभ हानि को बताने वाली जन्मकुंडली के ग्राधार से (ज्योतिषी के द्वारा) बनाई हुई पत्रिका। जन्मपत्रिका।
जन्मभूमि-(ना०) किसी के जन्म या देश का स्थान। जहाँ जन्म हुग्रा है वह देश या स्थान। मातृभूमि।
जन्माष्टमी-दे० जनमग्राठम।
जन्माध-(वि०) जो जन्म से ग्रंधा हो। ग्रखम।
जप-(न०) किसी नाम या मंत्र का रटना। एक ही नाम को बार बार दोहराते रहने की क्रिया। रटन। जाप।
जपजाप-दे० जप।
जपणी-(ना०) १ जपमाला। माला। २ गोमुखी।
जपणो-(क्रि०)१ जप करना। जपना। २ कहना। ३ बोलना। उच्चारण करना। ४ शांत होना। बकवाद बंद करना।
जपत-(दे०) जब्त।
जप तप-(न०) जप ग्रौर तप। तपस्या ग्रौर ईश्वर के नाम का जपन।
जपती-(ना०) १ जब्ती। २ कुर्की।

जपमाळा-(ना०) मंत्रजाप गिनने की माला। जप करने या गिनने की माला। माळा। सुमिरनी। तसबीह्। मुमरणी।
जपियो-(वि०) १ जप करने वाला। (पु०) दक्षिणा या पारिश्रमिक लेकर यजमान के कल्याणार्थ किसी मंत्र का जप करने वाला। २ ब्राह्मण।
जबक-(ना०) प्रहार। चोट। जरब।
जबर-(वि०) १ जबरदस्त। २ साहसी। ३ पक्का। दृढ़।
जबरजस्त-दे० जबरो।
जबरजस्ती-(ना०) जबरदस्ती बलात्कार। ज्यादती। (क्रिवि०) बलपूर्वक। बलात्।
जबरजंग-दे० जबरो।
जबरदस्त-दे० जबरो।
जबरदस्ती-दे० जबरदस्ती।
जबराई-(ना०)१ जबरदस्ती। २ ज्यादती। ३ बल प्रयोग। ४ अत्याचार।
जबरायत-(वि०) जबरदस्त। पराक्रमी।
जबरी-(ना०) १ अनूठापन। विलक्षणता। २ खूबी। ३ ज्यादती। अधिकता। ४ अत्याचार। ५ जबरदस्ती। (वि०) १ बलवती। २ भयावनी। ३ बड़ी। प्रचंडिका। ४ चालाक। ५ जबरदस्त। (क्रिवि०) जबरदस्ती से।
जबरेळ-(वि०) जबरदस्त। पराक्रमी।
जबरो-(वि०) १ जबरदस्त। २ बलवान। ३ होशियार। ४ चालाक। ५ बड़ा। प्रचंड। ६ भयावना। ७ दृढ़। मजबूत। ८ अच्छा। खूब।
जबाडो-(न०) जबाडा। जबड़ा। चौड़ा।
जबाद-(ना०) कस्तूरी।
जबादि जळहर-(न०) १ जलक्रीडा का केशर कस्तूरी आदि से सुरभित जलाशय। २ ऐसे जल से किया जाने वाला स्नान। ३ सुरभित जलागार में की जाने वाली जलक्रीडा। स्नानक्रीडा।
जबान-(ना०) १ जीभ। जिह्वा। २ वाणी। ३ वादा। प्रतिज्ञा। ४ भाषा।
जबानी-(वि०) १ कंठस्थ। कंठाग्र। २ मौखिक। ३ जो कहा गया हो पर लिखित न हो।
जबाब-(न०) १ उत्तर। जवाब। २ मुकाबला। सामना। ३ बदला। प्रतिकार।
जबाबदार-(वि०) १ जिम्मेदार। २ जवाब देने वाला।
जबाबदारी (ना०) जिम्मेदारी। उत्तर दायित्व।
जबाबदावो-(पु०) मुद्दायले की ओर से मुद्दई के अर्जी दावे का अदालत में दिया जाने वाला जवाब।
जबाब-सवाल (न०) १ विवाद। २ सवाल और जवाब। प्रश्नोत्तर। ३ काम काज का दी जाने वाली जबानी विगत। जबानी दिया जाने वाला। वृत्तांत। रिपोर्ट।
जबाबी-(वि०) १ जिसका जवाब मांगा गया हो। २ जिसके जवाब के पैसे भर दिये हों। ३ जवाब में प्राप्त (जवाबी हमला आदि)।
जब्त-(न०)१ काबू। २ नियंत्रण। (वि०) जब्त किया हुआ।
जम-(न०) १ यम। यमराज। २ ऊंट। दे० यम।
जम उच्छब-(पु०) यमद्वितीया का उत्सव।
जमक-(ना०) एक शब्दालंकार जिसमें एक शब्द उसी रूप और उसी क्रम से अलग अलग अर्थों के साथ पुनः पुनः आता है। यमक अलंकार।
जम-कातर-(ना०) १ यम की कैंची। यम का एक शस्त्र। २ मृत्यु।
जमघट-(न०)जनसमूह। भीड़। जमावड़ो।
जमजाळ-(न०) १ यमपाश। २ यमयातना। ३ एक छोटी तोप। (वि०) यमराज के समान जाज्वल्यमान।
जमडाढ-(ना०) १ तलवार। २ कटार। ३ यमदंष्ट्रा। ४ मृत्यु।

जमडाडाळ-(वि०) १ यम के समान भयावना। २ प्रचंड शक्तिशाली।

जमडाण-(ना०)१ मृत्यु। काल। २ यम दण्ड।

जमडाणी-(न०) १ यमदूत। २ यम।

जमडो-(न०) १ यम। यमराज। २ यम द्वितीया। ३ यम द्वितीया के दिन बनाये जाने वाले तेल पक्वान्न। ४ यम द्वितीया के दिन तेल पक्वान्न बनाने की प्रथा। ५ तेल पात्र या दीपक में लगा तेल किट्ट।

जमडोबाळणो-(क्रि०) १ यम द्वितीया के दिन तेल किट्ट लगे पात्रों को अग्नि ताप देकर साफ करना। २ यम द्वितीया को तेल में तल कर विविध प्रकार के व्यंजन (खाजा साकळी आदि) बनाना।

जमण-(न०) जन्म। (ना०) यमुना नदी।

जमणिका-(ना०) परदा। यवनिका। कनात।

जमणो-(क्रि०) १ जमना। यथावत् स्थिति में हो जाना। २ स्थिर होना। कायम होना। ३ किसी तरल पदार्थ का गाढा होना। ४ एकत्र होना। ५ दृढता पूर्वक बैठना। ६ किसी कार्य का अच्छी प्रकार चलने की स्थिति में हो जाना। ७ पूरा अभ्यास होना। ८ किसी वस्तु का अपने स्थान पर फिट बैठना। ९ निशाना बैठना।

जमदग्नि-(न०) महर्षि यमदग्नि।

जमदढ-दे० जमडाढ।

जमदाढ-दे० जमडाढ।

जमदूत-(न०) यमदूत। मृत्यु का दूत।

जमधर-(ना०) कटारी। जमडाढ।

जमना-(ना०) यमुना नदी।

जमनोतरी-(ना०) हिमालय में बंदरपुच्छ शृंखला में एक पवित्र स्थान जहाँ यमुना नदी निकलती है। यमुनोत्तरी।

जमपुरी-(ना०) यमपुरी। यमलोक। यमालय।

जमभगनी-(ना०) यमुना। यमभगिनी।

जमराज-(न०) यमराज। यम।

जमराण-दे० जमराज।

जमराणापुर-(न०) यमलोक। यमपुर।

जमराणो-(न०) यमराज।

जमरूक-(न०)१ युद्ध। २ यम का शस्त्र। ३ तलवार। ४ मृत्यु।

जमलोक-(न०) १ यमलोक। यमपुरी। २ नरक।

जमवारो-(न०) १ जीवन। जिंदगी। २ जन्म। ३ यम का द्वार। ४ सर्व काल। मरणकाल।

जमवाहण-(न०) यम वाहन। भैंसा।

जमहर-दे० जौंहर।

जमा-(ना०) १ आय। आमदनी। २ बही में आय की मद में लिखी हुई रकम। ३ बही में वह भाग जहाँ प्राप्ति या आमदनी लिखी जाती है। ४ धन। सम्पत्ति। पूंजी। ५ जोड़। योग। (वि०)इकट्ठा। एकत्र। २ इकट्ठा किया गया। ३ बही में आय पक्ष में लिखा हुआ।

जमाई-(न०) दामाद। जँवाई।

जमाखरच-(न०) १ आय और खर्च। जमा खर्च। २ आमदनी और खर्च का हिसाब। ३ बही में जमा और खर्च के दो भाग।

जमाणो-दे० जमावणो।

जमात-(ना०) १ वर्ग। श्रेणी। कक्षा। २ मनुष्यों का समुदाय। जत्था। ३ नागा साधुओं । साधुओं की मंडली।

-(न०)

जमानन-(ना०) जामिनगिरी। जामिनी।

जमानो-(न०) १ समय। काल। २ अवसर। मौका। ३ बहुत अधिक समय। मुद्दत। ४ वर्ष। साल। ५ वर्षाकाल। ६ वर्षा कृषि, और घास चारा आदि की दृष्टि से वर्ष की स्थिति। ७ देशकाल और आचार विचार आदि की अमुक स्थिति। ८ आचार विचार आदि का अमुक काल। ९ संसार। दुनिया।

जमाबंदी-(ना०)१ पूंजी। धन। २ जमा की हुई पूंजी। ३ वह स्थिति जिसमें ब्याज पर रुपये उधार लेकर व्यापार किया जाता है। ४ उधार ली हुई रकम। ५ आसामियों का लगान सबंधी हिसाब। ६ सरकारी बंदोबस्त खाता।

जमाराई-(वि०) १ जमाने के मुताबिक। समयानुसार। २ जमाना साज। ३ साधारण। ४ निश्छल।

जमारा-(न०)१ जन्म। २ जन्म से मरण तक का समय। जीवन काल। जिंदगी। ३ आयु।

जमाल-(न०) १ नीति और शृंगार के दोहों का रचयिता एक मुसलमान कवि। २ प्रकाश। ३ सुन्दरता। सौन्दर्य।

जमालगोटा-(न०) एक पौधा जिसके बीज अत्यंत रेचक होते हैं। अजयपाळियो।

जमाव-(न०)१ जमने या जमाने का भाव। २ टिकाव। स्थिति। स्थिर। ठहराव। ३ एकत्र। इकट्ठा। ४ भीड़। समूह। ५ पड़ाव। डेरा। ६ विश्राम। ७ प्रारम्भ। शुरुआत। ८ शुरु करने का भाव। ९ मल-संचय का उदर विकार।

जमावट-(ना०) १ जमाने का काम। २ जमने या ठहरने की स्थिति। ३ जमने की क्रिया या भाव।

जमावड़ा-(न०) १ बहुत से लोगों का भीड़। जमघट। २ मिलन।

जमावणो-(क्रि०) १ जमाना। यथावत् स्थिति में लाना। २ स्थित करना। कायम करना। स्थापित करना। ३ किसी तरल पदार्थ को गाढ़ा बनाना। ४ दूध में जामन डाल कर दही बनाना। ५ किसी कार्य को अच्छे प्रकार से चलने की स्थिति में लाना। ६ पूरा अभ्यास करा देना। ७ किसी वस्तु को यथास्थान बिठा देना। ८ निशाना बिठाना।

जमी-(ना०) १ पृथ्वी। सृष्टि। २ भूमि। जमीन। पृथ्वी। ३ खेती के योग्य जमीन का टुकड़ा। ४ किसी वस्तु की ऊपरी सतह। ५ नक्शे में समुद्र से पृथ्वी की भिन्नता दिखाने वाला पृष्ठ का रंग या चिह्न। ६ तसवीर के मूल चित्र के अतिरिक्त वाली जगह। वह तल जिस पर चित्र बना हो। चित्रतल।

जमीर-(न०) ऊंट।

जमी करवत (न०) ऊंट।

जमीकंद-(न०) १ सूरन। २ आलू मूली, अरबी, सकरकंदी आदि बिना रेशों का जड़ वाले कंद। कन्दमूल। भक्ष्यकंद।

जमीदार-(न०) १ जमीन का मालिक। भूस्वामी। जमींदार। २ जमींदारी का पद।

जमीदारी-(ना०)१ जमीदार की जमीन। २ जमीन के लगान की व्यवस्था। ३ जमीन का लगान। भूमिकर। ४ खेती का लगान। कृषि कर।

जमीत-दे० जमीयत।

जमीदोज-(वि०) १ जमीन के अंदर रखा या रखा हुआ। धराशायी। २ तोड़ फोड़ कर जमीन के बराबर किया हुआ। ३ जमीन के भीतर का।

जमीन-दे० जमी।

जमीयत-(ना०)१ थाना। २ रक्षा निमित्त घोड़ा या ऊंटों के रखे हुए आदमियों का चौकी। जमायत। ३ जत्था। ४ सेना।

जमीरत-(ना०) १ जागारी। २ सना। ३ अधिकार। कब्जा। दे० जमीयत।

जमो-(न०) किसी लोक देवता के निमित्त भजन कीर्तन करने का किया जाने वाला सामूहिक रात्रि जागरण। रात्रि जागरण के लिये जमा होना। रात्रि-गायन का जमाव।

जय-(ना०) १ जीत। विजय। २ देवता, गुरु या राजा आदि के अभिवादन स्वरूप उनके नाम के साथ किया जाने वाला घोष शब्द। जसे- सियावर रामचंद्र री जय। ३ परस्पर अभिवादन के समय किसी देवता के नाम के साथ कहा जाने वाला शब्द। जैसे- जय रामजी री सा। 'जय माताजी री सा' इत्यादि।

जय गोपालजी री-(प्र०) एक अभिवादन अव्यय तथा पद।

जय जयकार-दे० ज जै कार।

जय जयन्ती-(ना०) एक रागिनी।

जय जगळधर-(प्र०) बीकानेर के राठौड राजाओं की उपाधि या विरुद। २ बीकानेर राज्य का मुद्रा लेख।

जयजीव-(न०) जय हो और दीर्घायु हो इस अर्थ का अभिवादन।

जयणा-(ना०) यत्न। सम्हाल। जतन।

जयतखभ-दे० जतगम।

जयति-(अ०य०) जय हो।

जयपुर-(न०) राजस्थान की राजधानी के शहर का नाम। जयपुर नगर। महाराजा जयसिंह द्वारा बसाया हुआ भारत का सुन्दरतम नगर।

जय मगळ-(न०) १ राजा के बठने के हाथी। २ श्रेष्ठ हाथी। ३ एक विशेष धान्य।

जय माताजी री-(अव्य०) शक्ति उपासकों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन।

जयमाळ-दे० जैमाळ।

जय रामजी री-दे० जय श्री

जयवारा-दे० जवारो।

जय श्रीकृष्ण-(प्र०) 'जय ... कर किया जाने वाला अ...

जय श्री रामजी-री-(प्र... या गत मिलकर ... प्रणाम। भेंट या प्रस्थ... प्रराति। श्री राम... कर किया जाने वाल...

जय ममद-(न०) मे... भीत।

जयती-(ना०) १ ... तिथि। २ ज... उत्सव।

जया-(ना०)१ दुग...

जयानर-(न०) ... रचयिता पुष्प...

जर-(ना०) १ ... ज्वर। ४ ... धानन का। एक पात्र।

जरक-(ना०) ...

जरकणो-(... २ चोट पीटना ...

जरकसी-... किया ...

जर...

जरखीजणो-(क्रि०) १ गिरना। पडना। २ गिरने से हड्डी म दद होना। ३ गिरने से हड्डियां का ढीला पड कर दद करना।

जरखो-(न०) १ धक्का। २ चोट। आघात। जरब। ३ कक्श बोल। वाणी की चोट। ४ मन को चुभने वाली कक्श वाणी। ५ धमकी। डाट। (वि०) वीर। बहादुर।

जरख-(न०) एक हिंसक पशु। नवटवाघा। घोरखोदो।

जरखणी-(ना०) जरख की मादा। (वि०) झगडने वाली। झगडालू।

जरख वाहणी-(ना०) डाकिनी। डाकण।

जरजोजण-दे० जुरजाण।

जरझरी-(ना०) जस्ता आदि धातु की बनी सुराही। जस्त की बना नली वाला एक जल पात्र।

जरठ-(वि०) १ वृद्ध। बुड्ढा। २ जीर्ण। पुराना।

जरडो-(वि०) वृद्ध। बुड्ढा।

जरणा-(ना०)१ क्षमा। २ सहनशीलता। शाप को मारने की शक्ति।

जरणारजा-दे० जनादन।

जरणो-(क्रि०) १ पचना। हजम होना। २ सहन होना। ३ धन का वास्तविक रूप म खच होना। सम्पत्ति का सदुपयोग होना।

जरतार-(वि०) जरी का काम किया हुआ। (न०) जरी के तार। सोने के तार।

जरतास-(न०) जरी और ताश से बुना कपडा। जरवफ्त।

जरतो-(क्रि०वि०) १ अनुमान सर। २ सब की रुचि अनुसार। (वि०) थोडा। कम। मस्तो।

जरद-(वि०) पीला। जद। (न०) १ कवच। २ घोडा।

जरत्पोस-(वि०) कवचधारी। (न०) कवचधारी योद्धा।

जरदाळ-(न०) कवच। (वि०) कवचधारी।

जरदाळू-(न०) एक मेवा। खूबानी। खिरदा।

जरदाळो-(वि०) कवचधारी।

जरदेत-(वि०) कवचधारी।

जरदो-(न०) १ तम्बाकू। जरदा। २ तम्बाकू का पत्ता या चूरा। ३ चावलों म बना एक व्यंजन। जरदा।

जरवाफ-दे० जरीबाफ।

जरबो-(न०) १ जूता। २ भारी वजनी जूती। किसानी जूती।

१ जरद-(न०) चाबुक। २ मजबूत और भारी जूता। ३ चाबुक या जूते की मार। ४ सख्त मार। कड़ी पिटाई।

जरा-(वि०) थोडा। कम। (ना०) १ जरायुज। पिंडज। २ वृद्धत्व। वृद्धावस्था। बुढापा।

जराक-(वि०) थोडा सा। जरासा। (न०) १ भय। २ चोट। जरब।

जरापण-(अव्य०) थोडा भी। (न०) बुढापा।

जरापणो-(न०) बुढापा।

जरायत-(वि०) वर्षा के पानी से होने वाला (खेती काम)। बागायत से अलग।

जरासंध-(न०) मगध देश का राजा। कंस का ससुर।

जरासीक-दे० जराक।

जरासो-दे० जराक।

जरा-(क्रि०वि०) जरा। जर। जद।

जरियो-(न०) १ साधन। जरिया। २ मार्ग। तरीका। ३ लगाव। संबंध। जरिया। ४ कारण। हेतु।

जरी-(न०) १ कारचोबी। कलाबत्तू। २ कपडे म सुनहले तारों का बेलबूटा आदि का काम।

जरीक-दे० जराक।

जमीरत-(ना०) १ जागीरी । २ सेना । ३ अधिकार । कब्जा । दे० जमीयत ।
जमो-(न०) किसी लोक देवता के निमित्त भजन कीतन करने को किया जाने वाला सामूहिक रात्रि जागरण । रात्रि जागरण के लिये जमा होना । रात्रि गायन का जमाव ।
जय-(ना०) १ जीत । विजय । २ देवता, गुरु या राजा आदि के अभिवादन स्वरूप उनके नाम के साथ किया जाने वाला घोष शब्द । जैसे- सियावर रामचद्र री जय' । ३ परस्पर अभिवादन के समय किसी देवता के नाम के साथ कहा जाने वाला शब्द । जस- जय रामजी री सा । 'जय माताजी री सा इत्यादि ।
जय गोपालजी री-(पद०) एक अभिवादन अव्यय तथा पद ।
जय जयकार-दे० ज ज कार ।
जय जयवती-(ना०) एक रागिनी ।
जय जगळधर-(पद०) बीकानेर के राठौड राजाओं की उपाधि या विरुद । २ बीकानेर राज्य का मुद्रा लेख ।
जयजीव-(न०) 'जय हो और दीर्घायु हो' इस अर्थ का अभिवादन ।
जयणा-(ना०) यत्न । सम्हाल । जतन ।
जयतखभ-दे० जतम्भ ।
जयति-(अ०य०) जय हो ।
जयपुर-(न०) राजस्थान की राजधानी के शहर का नाम । जयपुर नगर । महाराजा जयसिंह द्वारा बसाया हुआ भारत का सुन्दरतम नगर ।
जय मगळ-(न०) १ राजा के बैठने के हाथी । २ श्रेष्ठ हाथी । ३ एक विशेष घोडा ।
जय माताजी री-(अव्य०) शक्ति उपासकों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन ।
जयमाळ-दे० जैमाळ ।
जय रामजी री-दे० जय श्री रामजी री ।
जयवारो-दे० जवारो ।
जय श्रीकृष्ण-(पद०) जय श्रीकृष्ण' बोल कर किया जाने वाला अभिवादन ।
जय श्री रामजी-री-(पद०) हाथ जोडकर या गले मिलकर किया जाने वाला प्रणाम । भेंट या प्रस्थान का अभिवादन । प्रणति । श्री रामजी की जय' उद्गार कर किया जाने वाला अभिवादन ।
जय समद-(न०) मेवाड की एक विशाल झील ।
जयती-(ना०) १ किसी महापुरुष की जन्म तिथि । २ जन्म दिन को होने वाला उत्सव ।
जया-(ना०)१ दुर्गा । २ पार्वती । ३ दूर्वा ।
जयानक-(न०) पृथ्वीराज विजय' का रचयिता पुष्कर निवासी एक कवि ।
जर-(ना०) १ धनमाल । २ सोना । ३ ज्वर । ४ बुढापा । ५ तरल पदार्थ को छानने का अनेक छिद्रों वाला कटोरीनुमा एक पात्र । झरनो । झर ।
जरक-(ना०) चोट । आघात । जरब ।
जरकणो-(क्रि०) १ भय खाना । डरना । २ चोट लगना । ३ चोट लगाना । ४ पीटना । मारना । ५ गिरना ।
जरकसी-(वि०) जिस पर जरी का काम किया हुआ हो । जरी वाला । जरीदार ।
जरकाणो-(क्रि०) खूब अधिक पिटाई करना । बहुत अधिक मार मारना ।
जरका-वालो-(वि०) १ कर्कश वाला । कर्कश बोलने वाला । कठोर शब्दों का उच्चार करने वाला । २ मन को आघात पहुँचाने वाले शब्दों द्वारा बात करने की आदत वाला । (ना० जरका वाली ।)
जरकावणो-दे० जरकाणो ।

जरकीजणो–(क्रि०) १ गिरना । पडना । २ गिरने से हड्डी म दद होना ३ गिरने से हड्डिया का ढीला पड कर दर्द करना ।

जरको–(न०) १ धक्का । २ चोट । आघात । जरब । ३ कडा बोल । वाणी की चोट । ४ मन को चुभने वाली कठोर वाणी । ५ धमकी । डाट । (वि०)वीर । बहादुर ।

जरख–(न०)एक हिंसक पशु । लकडबग्घा । घोरखोदो ।

जरखणी–(ना०) जरख की मादा । (वि०) झाडन वाली । झाडातू ।

जरख वाहणी (ना०) डाकिनी । डाकण ।

जरजोजणा–दे० जुगजाणा ।

जरझरी–(ना०) जस्ता आदि धातु की बनी सुराही । जस्ते का बना नली वाला एक जल पात्र ।

जरठ–(वि०) १ वृद्ध । बुड्ढा । २ जीर्ण । पुराना ।

जरठो–(वि०) वृद्ध । बुड्ढा ।

जरणा–(ना०)१ क्षमा । २ सहनशीलता । क्रोध को मारने की शक्ति ।

जरणारजन–दे० जनार्दन ।

जरणो–(क्रि०) १ पचना । हजम होना । २ सहन होना । ३ धन का वास्तविक रूप म खर्च होना । सम्पत्ति का सदुपयोग होना ।

जरतार–(वि०) जरी का काम किया हुआ । (न०) जरी के तार । सोने के तार ।

जरतास–(न०) जरी और ताश से बुना कपडा । जरवफ्त ।

जरतो–(क्रि०वि०) १ अनुमान सर । २ मन की रुचि अनुसार । (वि०) थोडा । कम । जरतो ।

जरद–(वि०) पीला । जर्द । (न०) १ कवच । २ घोडा ।

जरदपोस–(वि०) कवचधारी । (न०) कवचधारी योद्धा ।

जरदाळ–(न०) कवच । (वि०)कवचधारी ।

जरदाळू–(न०) एक मेवा । खूबानी । क्रिस्टो ।

जरदाळो (वि०) कवचधारी ।

जरदेत–(वि०) कवचधारी ।

जरदो–(न०) १ तम्बाकू । जरदा । २ तम्बाकू का पत्ता या चूरा । ३ चावलो से बना एक व्यजन । जरदा ।

जरवाफ–दे० जरीवाफ ।

जरबो–(न०) १ [illegible]ना । २ भारी [illegible]नी [illegible]ती । [illegible]मानी [illegible]नी ।

१ जरड– न०) चाबुक । २ मजबूत और भारी [illegible]ना । चाबुक या [illegible]त की मार । ४ सख्त मार । बडा पिटाई ।

जरा–(वि०) थोडा । कम । (ना०) १ जरायुज । पिंडज । २ वृद्धत्व । वृद्धावस्था । बुढापा ।

जराक–(वि०) थोडा सा । जरासा । (न०) १ भय । २ चोट । जरब ।

जरापण–(अ[illegible]०)थोडा भी । (न०)बुढापा ।

जरापणो–(न०) बुढापा ।

जरायत–(वि०)वर्षा के पानी से होने वाली (खेती काम)। बारायत से उलटा ।

जरासंध–(न०) मगध देश का राजा । कस का ससुर ।

जरासीक–दे० जराक ।

जरासो–दे० जराक ।

जरां–(क्रि०वि०) जब । जर । जद ।

जरियो–(न०) १ साधन । जरिया । २ मार्ग । तरीका । ३ लगाव । सबध । जरिया । ४ कारण । हेतु ।

जरी–(न०) १ कारचोबी । कलाबत्तू । २ कपडे म सुनहले तारों का बेलबूटे आदि का काम ।

जरीक–दे० जराक ।

जरीबानो–(न०) जुरमाना। अपदण्ड। दड।

जरीवाफ–(न०)जरी के काम का एक रेशमी कपड़ा। जरफ्त। जरवाफ। वाफ्तो।

जरीमानो–दे० जरीबानो।

जरीद–दे० जरद।

जरू–(न०) १ दृढबंधन। २ वश। काबू। ३ धावा। आक्रमण। (वि०) १ जबर दस्त। २ दृढ। मजबूत। ३ चिरस्थाई। ४ ऐसे बाबू ना हिन वुन न सर। (क्रि०वि०) १ जरूर। २ खूब कस करके।

जरू करणो–(मुहा०) १ खूब कस करके बाँधना। २ ठोककर खूब गहरा बिठाना। ३ दृढ करना। ४ वश में करना।

जरूर–(क्रि०वि०) अवश्य। निस्सन्देह।

जरूरत–(ना०) १ आवश्यकता। २ प्रयोजन।

जरूरी–(वि०) आवश्यक।

जरूको–(क्रि० वि०) जरा सा। जदको। जदूण।

जरे–(क्रि०वि०) जब। जदी। तद।

जळउत–(न०) जलसुत। कमल।

जळकूंडो–(न०) सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर दिखाई देने वाला वर्षा सूचक प्रभा मंडल।

जळग्रभ–(न०) बादल। मेघ। जलगर्भ।

जळचर–(न०)जल में रहने वाले जीवजंतु। जलचर।

जळज–(न०) १ कमल। २ मोती। ३ शंख। ४ मछली।

जळजळो–(वि०) १ अश्रुपूर्ण। डबडबाया हुआ। २ गद्‌गद्। गळगळो।

जळजात–(न०) १ कमल। २ जोंक। ३ मछली। ४ शंख। ५ मोती।

जळजाळ–(न०) १ जलधारा। २ घन घटा। मेघमाला। ३ समुद्र।

जळजोखो–(न०) १ जिम्मेवारी। २ जर जोखिम। जर जोखो।

जळजोग–(न०) वर्षायोग।

जळजोर–(न०) समुद्र का चढ़ाव। ज्वार।

जळझूलणी-इग्यारस–(ना०)भाद्रपद शुक्ला एकादशी। उस दिन देव मूर्ति को जल झीलाने के लिये रिवाड़ी में बिठा कर बड़े जलूस और भजन कीर्तन के साथ जलाशय पर ले जाया जाता है।

जळण–(ना०) १ अग्नि। २ इंधन। ३ जलन। दाह। ४ ताप। उष्णता। ५ ईर्ष्या। डाह। ६ मानसिक कष्ट। ७ क्रोध।

जळणो–(क्रि०) १ जलना। सुलगना। दग्ध होना। २ झुलसना। ३ ईर्ष्या करना। ४ कुढ़ना। ५ क्रोध करना।

जळनवाई–(ना०) १ तेलपात्र के ऊपर जमने वाला मैल। तेल का मैल। तेल किट्ट। चीकट। (वि०) १ बड़ा कंजूस। महा कृपण। २ मैले स्वभाव का। कुटिल।

जळनो बळनो–(वि०) क्रोधपूर्ण। क्रोधित।

जळतोरू–(ना०) जलतोरू। मछली।

जळभखा–(ना०)१ जलजंतु। २ मछली। ३ तृषा।

जळद–(न०) १ जलद। बादल। मेघ। २ कपूर।

जळदाग–(न०) १ शव को जलाने के बदले पानी में बहा देने की क्रिया। जल संस्कार। २ अधिक वर्षा से फसल के गल जाने की स्थिति।

जळदावो–(न०) अधिक वर्षा से फसल का गल जाना। अधिक वर्षा से होने वाली हानि।

जलदी–(क्रि०वि०)शीघ्र। जल्दी। झटपट। (ना०) शीघ्रता।

जळधर–(न०)१ बादल। मेघ। २ समुद्र।

जळधरण-(न०) बादल। मेघ।
जळधि-(न०) समुद्र।
जळनिधि-(न०) समुद्र।
जळपती-(न०) जलपति। समुद्र।
जळपछी-(न०) बतक हंस आदि। जल पक्षी।
जळपान-(न०) १ नाश्ता। कलेवा। भारी। सीरावण। २ साधारण हलका भोजन।
जळपू-(न०) जलपोस। अभ्रक। भोडल।
जळपोस-दे० जळपू।
जळप्रलय-(न०) १ अतिवृष्टि। २ बाढ। ३ सर्वत्र पानी का फिर जाना। जलाकार। जलप्रलय।
जळबाला-(ना०) बिजली।
जळबाक-(न०) १ कुश्ती का एक दांव। २ पानी में लडने का एक दाँव।
जळबोळ-दे० जळाबोळ।
जलम-(न०) जन्म। उत्पत्ति।
जलमणो-(क्रि०) जन्म लेना। जनमना। जनमणो।
जळरुह-(न०) कमल।
जळळ-(ना०) १ क्रोध। २ क्रोधाग्नि। ३ भगन्दर। ४ आतुरता। वंसभ्रो। ५ जलन। ६ दुख। ७ युद्ध। ८ भय करता। (वि०) १ भयंकर। २ क्रोधी।
जळवट-(न०) १ जल प्रदेश। समुद्र। 'थलवट' का विपरीतार्थक। २ जलमार्ग। (अव्य०) समुद्री मार्ग द्वारा। जहाज के द्वारा।
जळवळ-(वि०) जाज्वल्यमान। तेजस्वी।
जळवा-(ना०) नवप्रसूता का जलाशय पर जल पूजन को जाने का उत्सव।
जळवाह-(न०) १ बादल। २ दे० जळवा।
जळसमाधि-(ना०) जल में डूब कर प्राण त्याग करना।
जळसुत-(न०) कमल।
जळसो-(न०) १ जलसा। सभागेह। २ उत्सव। ३ बैठक। मीटिंग।
जळहर-(न०) १ इन्द्र। २ जलधर। बादल। ३ वर्षा। ४ जलाशय।
जळहरी-(ना०) १ चन्द्रमा के चारों तरफ दिखाई देने वाला गोलाकार चन्द्रमंडल। चन्द्रमा का प्रभा मण्डल। २ पाषाणादि जिसके मध्य में शिवलिंग स्थापित किया जाता है। शिवलिंग वेदी। तीर्थ वेदी। ३ शिवलिंग के ऊपर जलधारा टपकाने वाला पात्र।
जळबुंद (न०) १ मोती। मुक्ता। २ बुदबुदा।
जलद्रीपाव-(न०)जालद्रपाद। जलधरनाथ। जळ धर-(न०) १ जलंधर राग। २ प्रसिद्ध योगी जलधर नाथ। जालंधर नाम का एक असुर। ४ मारवाड के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जालोर का एक काव्य प्रयुक्त नाम।
जळ धरनाथ-(न०)राजा गोपीचन्द के गुरु। एक प्रसिद्ध सिद्ध योगी।
जळा-(ना०) १ जल का असीम फैलाव। चारों ओर फैला हुआ पानी। जलाकार। २ सेना। फौज। ३ नाश। विनाश। ४ आफत। आपत्ति। संकट। ५ ज्वाला।
जळाकार-(न०) जल ही जल। सब तरफ जल ही जल। जल प्रलय। जळा।
जळाणो-(क्रि०) १ जलाना। प्रज्वलित करना। सुलगाना। २ ईर्ष्या उत्पन्न करना।
जलाद-(न०)१ जल्लाद। २ क्रूर व्यक्ति।
जळाधार-(न०) समुद्र।
जळाधारी-(ना०) शिवलिंग के ऊपर अजस्र धारा प्रवाहित करने के लिये नीचे छिद्र वाला छात में लटकाया जाने वाला ताम्र घट। जळहरी। जळ री।

जळापो-(न०) ईर्ष्या की जलन। डाह। दाह। बळापो। बळण।

जळाबोळ-(न०) १ सवत्र पानी ही पानी। २ जल प्रलय। ३ असह्य संताप। ४ असीम संताप। ५ बुरा समय। (वि०) १ जल म डूबा हुआ। जलबोड। २ जलाप्लावित। ३ बहुत गहरा। ४ विकट। भयकर। ५ क्रोधपूर्ण। ६ डूबा हुआ। जल प्लावित। ७ रग से तरबतर। ८ नशे म चूर। ९ सघन। १० अपार।

जलाल-(न०) १ जलाल गाहाणी नाम का एक रसिक, उदार और इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति। २ जलाल और बूबना नाम से प्रसिद्ध गीतों का नायक। ३ प्रियतम। (वि०) १ रसिक। २ प्रिय। प्यारा। ३ सुंदर। मनोहर। ४ प्रताप मान। ५ उदार। ६ तेजस्वी। बलवान।

जळावणो-दे० जळाणो।

जळाहळ-(वि०) प्रकाशमान। देदीप्यमान। (न०) १ अग्नि। २ क्रोध। ३ चमक। प्रकाश।

जलूस-(न०) १ शोभायात्रा २ जनयात्रा।

जलूसाई-(ना०) १ जलूस की तैयारी। २ सजावट। ३ तडक भडक। ४ शान शौकत। (वि०) जलूस सबधी। जलूस का। जलूसी।

जलूसात-दे० जलूसाई।

जलेब-(ना०) १ सेवा। टहल। हाजरी। तैनाती। २ पाडोस। आसपास। ३ पक्ष। लगाव। तरफदारी। सहानुभूति। (वि०) १ सवारी के साथ पदल चलने वाला। जलेबदार। २ नियुक्त। तैनात।

जलेबरानो-(न०) १ सवारी के इद गिर्द रहने वाले सेवकों का घेरा। २ सेवक गण। ३ जलेबदारों के रहने का स्थान।

जलेबदार-(वि०) १ राजा, गुरुजन आदि की सवारी के समय मातहती म रहने वाला। २ पक्षपाती। ३ सहायक। (न०) सेवक। हाजरियो।

जलेबी-(ना०) एक मिठाई।

जळेरी-दे० जळहरी।

जलो-(न०) १ एक लोक गीत। २ एक प्रेम गीत का कथा नायक। ३ 'जलाल गाहणी' नाम के एक रसिक व्यक्ति का लोक गीतों मे प्रयुक्त नाम।

जळो-(ना०) जार। जळोक।

जळोक-(ना०) जोक।

जलोमात-दे० जलूसाई।

जल्दी दे० जलदी।

जव-(न०) १ जौ। यव। यवान्न। २ अगुल के छठे या आठवें भाग का माप। ३ एक जौ परिमाण का तौल। ४ अगुली के ऊपरि पोर म रेखाओं द्वारा बना यवाकार चिन्ह। यव चिन्ह।

जवखार-(न०) जव का क्षार। यवक्षार।

जवडो-(वि०) जैसा। समान। जडो। जिसो।

जवन-(न०) यवन। मुसलमान।

जवनाणा-(न०) यवन समूह। मुसलमानों का दल।

जवनाणो-(न०) १ मुसलमानी व्यवहार। यवन रीति। यवनाचार। २ यवनत्व। यवनपना।

जवनायण-(ना०)१ यवनसमूह। २ यवन सेना। ३ यवन प्रदेश।

जवनेस-(न०) यवनेश। बादशाह। मुसलमान बादशाह।

जवमाळ-(ना०) १ विवाह के प्रथम पाटोत्सव मुहूर्त्त और पाणिग्रहण के समय वर और कन्या को पहनाई जाने वाली जव लौंग छुहारा मोती इत्यादि की माला। जौ माला। यवमाला। जवारी।

जवानी। जवाळी। २ जौ के समान सोने के छोटे मनकों की माला। जवाळी।
जवरी– दे० जवरी।
जवलियो–(न०) १ एक गहना। २ जव के आकार का सोने का घुंघरू।
जव-हरडे–(ना०) जौहर्रे। यवहरीतिका। छोटी हर्रे। हींमज। हरड।
जवाई–(ना०) १ प्रस्थान। गमन। २ मारवाड़ की एक नदी। (वि०) १ जौ के जैसे रंग का। २ जौ जैसे रंग में रंगा हुआ।
जवाकंठी–(ना०) एक कंठाभूषण।
जवाखार–(न०) जौ के पौधे का क्षार। यवक्षार। जवखार।
जवाद–(न०) १ ऊंट। २ घोड़ा। ३ कस्तूरी। ४ एक प्रकार का सुगंध द्रव्य। जुवाद।
जवादि जळहर–दे० जवादि जळहर।
जवान–(न०) १ युवक। तरुण पुरुष। मोटियार। २ योद्धा। ३ सनिक। सिपाही। (वि०) युवा। तरुण।
जवानी–(ना०) युवावस्था। तरुणाई। मोटियारपणो।
जवानदानो–(न०) दे० जवावदावो।
जवार–(ना०) ज्वार धान्य।
जवारा–(न०) मांगलिक पर्व पर गमले में गेहूं या जौ के उगाये हुये अंकुर। जरई। जेंवारा।
जवाळी–दे० जवमाळ।
जवेरात–दे० जवाहरात।
जवाहर–(न०) हीरा माणिक मोती आदि रत्न।
जवाहरात–(न०) जवाहर का बहुवचन।
जवांमर्द–(वि०) बहादुर।
जवो–(न०) १ पशुओं के चमड़े में लगा रहने वाला एक कीड़ा। २ स्त्रियों की नाक का एक गहना। लौंग।
जस–(न०) यश। कीर्ति। (क्रि०वि०) जैसा।
जसघाटा–(वि०)१ कीर्तिमान। यशस्वी। २ यश प्राप्त करने वाला।
जसघाटू–दे० जसघाटक।
जसगाथा–(ना०) यशगाथा। यश वर्णन।
जसजोगी–(न०) १ कवि। २ गुणग्राही कवि। यश गान करने वाला कवि। (वि०) यश प्राप्त।
जसढोल–(न०) १ विवाह की एक रीति जिसमें सब कार्य सविधि और प्रसन्नता पूर्वक समाप्त हो जाने पर बरात की विदाई के समय दोनों ओर से यशप्राप्ति के उल्लास में ढोल का बजाया जाना। यशवाद्य। २ कीर्तिमान। ३ वाहवाही।
जसद–(ना०) जस्ता नामक धातु। जसोद। जसत।
जसधर–(वि०) यशधारी। जसधारी।
जसनामी–(वि०) कीर्तिमान। यशधारी।
जसनामा–(न०) १ ऐसा कार्य जिसका यश सदा बना रहे। २ पुण्य कार्यों द्वारा प्राप्त की हुई ख्याति। ३ ख्यातनाम। ४ यश नाम। ५ यशस्वी पुरुषों में लिया जाने वाला नाम। ६ वीरगति पाये हुए यशधारियों में प्रसिद्ध नाम। ७ नामवरी। ख्याति।
जसरथ–(न०)श्री राम के पिता। दशरथ।
जसलुब्ध–(वि०) यशलुब्ध। यशलोभी।
जसवंत–(वि०) यशधारी। यशवंत।
जसवास–(ना०)यश सौरभ।
जसाई–(ना०)१ यश वाद्य। २ यशगीत। ३ मांगलिक गीत और वाद्य।
जसी–(वि०) यशस्वी।
जसोद–दे० जसद।
जसोदा–(ना०) श्रीकृष्ण की माता। यशोदा।
जस्यो–(वि०) जसा। जिसो। जडो।
जहडो–(वि०) जसा। जडो। जिसो।

जहर-(न०) विष। गरल।
जहरजर-(न०) महादेव।
जहराळ-(न०) विषधर। सप। (वि०) जहरीला। विषाक्त।
जहरी-(वि०) जहर वाला। विषाक्त। जहरीला।
जहरीलो-(वि०) १ जहरवाला। जहरी। २ प्रतिक्रोधी।
जहवो-न० जहरी।
जहाज-(न०) बडा जलपोत। जहाज।
जहान-(न०) ममार।
जहानवी-(ना०) जाह्नवी। गगा।
जहूर-(न०) १ प्रदशन। २ प्रकाश। ३ कांति। (वि०) १ प्रकाशमान। २ विकसित।
जहेच्छ-(वि०) यथेच्छ। इच्छानुसार।
जखेरो-(न०) १ तेज तज वायु। आंधी। २ आंधी का झोका। ३ तज वायु क कारण उड कर आया हुआ धूल और कचरा। ४ कूडा-कचरा। ५ ढेर। राशि (कचरादि)।
जग-(न०) १ युद्ध। लडाई। २ मुच्छ। काट।
जगजूट-(न०) शूरवीर। योद्धा।
जगम-(न०) १ घोडा। २ एक स्थान पर नही टिकने वाला साधु। सन्यासी। ३ चल सपत्ति। माकूला। जायदाद। (वि०) चलता फिरता।
जगम-पमम-(न०) घोडे व शरीर की केश राजि।
जगळ-(न०) जगल। वन। अरण्य।
जगळजनी-(न०) ऊट।
जगळ जाणो-(मुहा०) पाखाने जाना। टट्टी जाना।
जगळधरा-(न०) बीकानेर प्रदेश। जागलू देश।
जगळराय-(ना०) १ करणी देवी का एक नाम। २ बीकानेर का राजा।
जगळवै-(न०) जागलू देश का राजा। बीकानेर का राजा।
जगळायत-(न०)१ जगल रक्षा का सरकारी महकमा। २ सरकार द्वारा रक्षित जगल।
जगळियो-(न०) शौच का जलपात्र।
जगळी-(वि०) १ जगल का। जगल सबधी। २ जगल म रहने वाला। ३ बिना लगाय अपने आप उगने वाला। ४ मूख। ५ असभ्य। (न०) घोडा।
जगळो-(न०) लोहे की छडों वाला दरवाजा या खिडकी।
जगाल-(न०)१ दो कडों वाला बडा तसला। २ तांबे के जग जसा एक रग। ३ तांबे के जग का रग। तांबे का काट या जग। ४ तूतिया। जगार। ५ नगाडा। ६ सेना का दाहिना भाग।
जगावर (न०) वीर पुरुष। योद्धा।
जगावळ-(ना०) १ युद्ध। २ सेना का घेरा।
जगी-(वि०) १ जबरदस्त। २ बडा। ३ दीर्घकाय। ४ युद्ध सबधी। ५ युद्ध से सबध रखने वाला।
जगेव-(वि०) युद्धोत्मक। (न०) जग। युद्ध।
जघा-(ना०) जांघ। साथळ। रान।
जजर-(न०) ताला। (ना०) एक छोटी तोप। (वि०) पुराना और कमजोर। जर्जर।
जजाळ-(न०)१ स्वप्न। २ प्रपच। माया। ३ उपाधि। आफत। झझट। ४ दुख। ५ एक प्रकार की तोप।
जजाळी-(वि०) प्रपची। बखेडा बाज। जजालवाला।
जजीर-(ना०) १ जजीर। साकल। साकळ। २ रुड। माला। ३ बेडी।
जभर-(ना०) जजीर। साकल।
जभेरणो-(क्रि०) झकझोरना।

जंत-(न०) १ यंत्र । २ जंतु । ३ बैलगाड़ी का एक उपकरण । ४ तंबूरा सारंगी आदि तार वाद्य । (वि०) जबरदस्त ।

जंतर-दे० जंत्र ।

जंतरड़ी-दे० जंतरी ।

जंतरणो-(क्रि०) १ मारना । २ पीसना । ३ भूत प्रेत आदि को किसी तांत्रिक यंत्र द्वारा वश में करना ।

जंतराण-(वि०) अत्यन्त तेज । बहुत मजबूत । (न०) गावद जूता । भारी जूता ।

जंतर-मंतर-(न०) १ जादू टोना । जादू । २ वेधशाला । ३ यंत्र और मंत्र ।

जंतराणो-दे० जंतरणो ।

जंतरावणो-(क्रि०) दे० जंतरणो ।

जंतरी-(ना०) गोपुच्छ की भांति क्रम से छोटे होते हुए सुराखों वाली एक लोह पट्टी । (इसके उत्तरोत्तर छोटे बने हुए सुराखों में होकर सोना चांदी आदि के तार को निकाल कर पतला बनाया जाता है तथा लंबाया जाता है) जंती । जंतरड़ी । तारकशी । २ पंचांग । पत्रा ।

जंती-दे० जंतरी ।

जंतु-(न०) १ जीव । प्राणी । २ कीड़ा । छोटा जीव । जीवड़ो ।

जंतो-(न०) तारकशों और सुनारों का एक औजार जिस से सोना चांदी के तार पतले किये जाते हैं । एक के बाद एक क्रम से छोटे बने हुए छेदों वाली एक लोह पट्टी जिसके छेदों में से तार को खींच कर पतला और लंबा बनाया जाता है । जंता । जंतरो । जंतो ।

जंत्र-(न०) १ तांत्रिक आकार या कोष्ठ । तांत्रिक आकृति । यंत्र । २ ऐसी आकृति या आकारों वाला कागज या पतरा । ताबीज । ३ जादू । ४ तोप । ५ बंदूक । ६ बाजा । तारवाद्य । वीणा । ७ कल । यंत्र ।

जंत्र-मंत्र-दे० जंतर मंतर ।

जंद-(न०) १ पारसियों का धर्म ग्रंथ । २ वह भाषा जिसमें पारसियों का यह धर्म ग्रंथ लिखा हुआ है दे० जिंद ।

जंप-(न०) चैन । शांति । कल । निरांत ।

जंपणो-(क्रि०) १ कहना । बखान करना । २ जपना । ३ शांत होना । शांतचित्त होना । ४ नींद आना ।

जंबु-(न०) १ जामुन । २ जामुन का पेड़ ।

जंबुक-(न०) १ सियार । गीदड़ । जंबूक । २ जामुन ।

जंबुखंड (न०) १ पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक । जंबु द्वीप । २ भारतवर्ष ।

जंबुदीप-दे० जंबुखंड ।

जंबूर-(ना०) १ एक प्रकार की छोटी तोप । २ तोपगाड़ी । ३ एक औजार । पकड़ । जंबूरा ।

जंबूरी-(ना०) १ किसी वस्तु को मजबूती से पकड़ कर खींचने या काटने का एक औजार । एक प्रकार की बिना चोंच वाली सांडसी । पकड़ । २ एक नश्तर ।

जंबूरो-(न०) १ एक औजार । जंबूरा । पकड़ । २ [illegible] का [illegible] तख्ता । ३ ऊँट पर लादी जाने वाली एक तोप ।

जंभ-(न०) १ दाढ़ । २ कटारी ।

जंभियो-(न०) एक प्रकार की टेढ़ी कटारी ।

जँवर (न०) १ शत्रु की विजय निश्चित हो जाने पर पराजित राजपूतों की स्त्रियों का चिता में जल जाने की मध्यकालीन एक प्रथा । जौहर । सगतमृत्यु । २ शस्त्र पर दिया जाने वाला लहरदार पानी । शस्त्र की रंगीन और लहरदार आब । ३ रत्न । जवाहिर । ४ अग्नि । ५ कोप । ६ तलवार ।

जँवरी-(न०) १ रत्नों का व्यापारी । जौहरी । २ रत्न परीक्षक । ३ गुणों का पहचानने वाला । ४ गुणग्राहक ।

जँवाई-दे० जमाई ।

जँवाईराज-*(न०)* १ ससुराल में जमाई के लिये सम्मानसूचक संबोधन । २ जमाई । दामाद । ३ एक लोकगीत ।

जँवारा-दे० जवारा ।

जा-*(प्रत्य०)* किसी शब्द के अंत में प्रयुक्त होने पर उत्पत्ति अर्थ का वाचक नारी जाति प्रत्यय । यथा—आत्म + जा = आत्मजा (पुत्री) गिरि + जा = गिरिजा (पार्वती) इत्यादि । *(ना०)* १ पुत्री । २ जननी । माता । *(सर्व०)* १ जिस । २ उस । *(वि०)* उचित । मुनासिब । *(अव्य०)* १ जाने का आज्ञासूचक ओछा शब्द । २ जाने की आज्ञा । *(क्रि०)* जाने के भाव की आज्ञार्थक क्रिया ।

जाइ-*(वि०)* १ जितना । २ जिस प्रकार का । *(सर्व०)* जिस ।

जाइगा-दे० जायगा ।

जाइदो-*(वि०)* १ लाइन्दो (दत्तक) से उलटा । गोद लाया हुआ नहीं । स्व कुलोत्पन्न । स्ववंशज । २ उत्पन्न । जाया हुआ । जायोड़ा । ३ औरस ।

जाई-*(ना०)* १ पुत्री । बेटी । २ स्त्री ।

जाऊ-*(वि०)* जाने वाला । *(अव्य०)* जाने की तैयारी में ।

जाऊंगी-*(भ०क्रि०)* जाऊंगी ।

जाऊंला-*(भ०क्रि०)*१ जाऊंगा । २ जाऊंगी ।

जाऊंलो-*(भ०क्रि०)* जाऊंगा ।

जाकळ-*(वि०)* वीर ।

जाखोडो-*(न०)* १ ऊंट । २ सवारी के लिये सजा हुआ ऊंट ।

जाग *(न०)* १ एक वेदोक्त कर्म । यज्ञ । याग । २ धर्मयुद्ध । ३ विवाह आदि मांगलिक उत्सव । ४ महाभोज । ५ ब्रह्मभोज । ६ जगते रहने का भाव । जाग्रति । ७ जाग्रतावस्था । ८ स्थान । जगह । ९ घोडी की मूत्रेन्द्री । भगवा योनि । १० घोडी की संभोगेच्छा । तुरंगी की कामेच्छा । जगरो ।

जागण-दे० जागरण ।

जागणो-*(क्रि०)* १ जागना, जगना । नींद को त्यागना । सोकर उठना । २ चेतन होना । सावधान होना । सजग होना । ३ उत्पन्न होना । ४ उत्तेजना होना ।

जागती-*(वि०)* १ जगी हुई । जाग्रत । २ प्रज्वलित ।

जागतीजोत-*(ना०)* १ देवी चमत्कार । २ किसी देवी देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार । ३ प्रज्वलित ज्योति ।

जागतो-*(वि०)* १ जगता हुआ । जाग्रत । २ प्रज्वलित ।

जाग में आणो-*(मुहा०)* १ घोडी को कामेच्छा होना । २ घोडी को गर्भधारण की इच्छा होना । जगर आणो ।

जागर-*(न०)* १ युद्ध । २ कुत्ता ।

जागरण-*(न०)* १ किसी उत्सव पर्व आदि पर सारी रात जागते रह कर किया जाने वाला भजन गायन । रतजगा । २ रात में (नींद नहीं लेकर) जागते रहने का भाव *(ना०)* जागरी की स्त्री ।

जागरी *(न०)* १ वेश्या पुत्र । २ भडुवा । ३ जागरी जाति ।

जागवणो-*(क्रि०)* १ उत्पन्न करना । २ सृष्टि उत्पन्न करना । ३ जगाना ।

जागा-*(ना०)* १ जगह । स्थान । २ मकान । घर । ३ मठ । स्थल । अस्थल । ४ ओहदा । पद ।

जागा जमी-*(ना०)* मकान और जमीन ।

जागा-मीटा-*(न०)* १ अर्द्ध जाग्रतावस्था । अर्द्ध निद्रावस्था । थोडी नींद थोडी जाग्रतावस्था । २ वह समय या स्थिति जिसमें कोई सो रहा हो और कोई जग रहा हो ।

जागीपो-दे० जाग न० ६ ७

जागीर-*(ना०)* सरकार की ओर से (इनाम या स्वत्वाधिकार के रूप में) प्राप्त भूमि या प्रदेश ।

जागीरदार-*(न०)* जागीर का मालिक। जागीरी प्राप्त व्यक्ति।
जागीरदारी-दे० जागीरी।
जागीरवक्षी *(न०)* मध्यकाल में एक राजकीय पद।
जागीरी-*(ना०)* १ जागीरदार के कब्जे के गाव जमीन। जागीर। २ जागीरदार होने का भाव। ३ रईसी। ४ हैसियत। बिसात। सामर्थ्य। *(वि०)* जागीर से संबंधित। जागीर का।
जागाडी-*(वि०)* १ जगा हुई। २ सचेत।
जागोडो-*(वि०)* १ जगा हुआ। जाग्रत। २ सचेत। सावधान।
जाच-*(ना०)* १ याचना। २ जाँच। तपास। २ वजन करने का भाव। तौल।
जाचक-*(न०)* १ याचक। २ भिखारी।
जाचण-*(वि०)* याचन वाली।
जाचणी-दे० जाच।
जाचणो-*(क्रि०)* १ जाचना। मागना। याचना करना। २ जाँचना। तपासना। ३ तौल करना।
जाचिग-दे० जाचक।
जाचू-*(वि०)* जाचने वाला।
जाचेल-*(न०)* १ तिल्ली का तेल। तिल्ली के तेल पर बनाया हुआ सिर में डालने का एक सुगंधित तेल।
जाज-*(न०)*१ मैला रंग। २ मैल। *(वि०)* १ बदरंग। २ थोडा।
जाजम-*(ना०)* बेलबूटा से छपे हुए मोटे कपडे की बडी दरी। जाजिम।
जाजमाठ-*(वि०)* १ यथामात्र। मात्रा के अनुसार। मात्रा से अधिक नहीं। २ यथावश्यक। जरूरत मुताबिक। ३ कम। थोडा। ४ यत्किंचित। थोडासा। कुछ। ५ बहुत कम।
जाजर-*(वि०)* १ जजर। जीर्ण। २ दृढ। *(न०)* १ सहनशीलता। २ सहार।
जाजरणो-*(क्रि०)* १ सहन करना। २ सहार करना। मारना।
जाजरू-*(न०)* १ शौचागार। २ पाखाना। टट्टी।
जाजळ-*(वि०)* १ तेजस्वी। २ जबरदस्त।
जाजळामान-*(वि०)* १ जाज्वल्यमान। तेजस्वी। २ उपद्रवी। उत्पाती। नटखट। ऊधमी। शरारती।
जाजळी-दे० जाजळ या जाजळो।
जाजळो-दे० जाजळामान।
जाजुळ-*(वि०)* १ जबरदस्त। २ जाज्वल्यमान। ३ क्रोधी। ४ उपद्रवी।
जाजुळमान-दे० जाजळामान।
जाजुळी-दे० जाजुळ।
जाज्वल्यमान-*(वि०)* तेजपूर्ण। तेजपुंज।
जाझी-*(वि०)* १ अधिक। खूब। २ दृढ। ३ तेज।
जाझेरो-*(वि०)* १ अधिक। बहुत। २ बहुतसा। बहुतसारा।
जाझो-*(वि०)* १ अधिक। पुष्कल। २ तेज। ३ दृढ।
जाट *(न०)* १ एक जाति। २ जाट जाति का व्यक्ति।
जाटणी-*(ना०)* जाट जाति की स्त्री।
जाटव-*(न०)* एक चमार जाति। जाटो-भाभी।
जाटू-*(वि०)* १ जाट जाति से संबंधित। २ जंगली। *(ना०)* हरियाणा की बोली।
जाटो भाभी-*(न०)* १ एक चमार जाति। २ इस जाति का व्यक्ति। जाटव।
जाड-*(न०)* १ पाप। २ अज्ञानता। मूर्खता। जडता। ३ दल। समूह। *(वि०)* १ अधिक। २ मोटा। जाडो।
जाडउ-दे० जाडो।
जाडाई-*(ना०)* १ मोटापन। मोटाई। २ स्थूलता।
जाडायत-*(वि०)* १ जबरदस्त। २ बडे कुटुम्ब वाला।

जाडायती-(क्रि०वि०) जबरदस्ती से।
जाडा-(वि०) अधिक। (क्रि०वि०)जबरदस्ती से।
जाडियो-(न०) दाढी के बालों को ऊंचा जमाये रखने के लिये उन पर बांधी जाने वाली एक वस्त्र पट्टी। बकानो। (वि०) १ मोटा। २ घना।
जाडी-(वि०) १ मोटी। सैंठी। २ घनी। ३ अत्यधिक। ४ दलदार। (ना०)मूंछ को जमाये रखने के लिये उस पर बांधने की कपड़े की पट्टी। मूंछपट्टी। मूंछी। मूंछिया।
जाडीकीरत-दे० जाडाजस।
जाडी जीभ-(ना०) १ मृत्यु के समय जीभ का मोटा हो जाना। २ बोला नहीं जाना।
जाडो-(वि०) १ मोटा। २ स्थूल। ३ पुष्ट। सैंठो। ४ दलदार। ५ अत्यधिक। ६ घना। ७ प्रबल। जोरावर।
जाडो-(न०) १ शीतकाल। सियाळो। २ शीत। जाडा। सरदी। ठं । सी। ३ जत्था। समूह। ४ पक्ष।
जाडो जस-(न०) बहुत बड़ा ख्याति। बड़ी प्रशंसा। जाडी कीरत।
जाण (ना०) १ जानकारी। २ पहिचान। ३ समझ। ज्ञान। ४ बुद्धि। अक्ल। (अव्य०)१ मानो। जानो। २ जैसे।
जाण अजाण-(अव्य०) १ जान बूझ या अज्ञान में। २ बिना इरादे।
जाणा-(अव्य०)मानो। माना कि। जैसे। मानो। मानो। मानो कि। जाणो कि। (वि०)१ जानने वाला। ज्ञाता। २ बहुश्रुत। जाणग।
जाणकार-(वि०) १ जानकारी रखने वाला। जानकार। जानने या जानने वाला। जाणणारो। २ मर्म
जाणकारी-(ना०) जानकारी २ परिचय। ३ निपुणता।
जाणग-(वि०) १ जानने वा जाणणारो। २ बहुश्रुत।
जाणगर-(वि०) १ ज्ञाता जाणग। २ विशषज्ञ। ३
जाणणारो-दे० जाणकार
जाणणो-(क्रि०)१ जानना ३ पता लगना। ४ न ५ पहचानना। ६ खब पाना।
जाणपण-दे० जाण।
जाणपणो-दे० जाण।
जाण पिछाण-(ना०) परिचय।
जाणभेद्-(वि०) भे भेदिया। भेद्व। भे
जाण-म-जाण-(अ २ जानो या नहीं
जाणवीण-(ना०) कार।
जाणाऊ-(न०) चतुर। विन।
जाणि-(अव्य०)
जाणी-प्राणी-(हानि लाभ।
जाणीक ार-दे०
जाणीता-(वि हुआ। ओ २ प्रसिद्ध। कार। भि
जाणी-(अव्य ज ज

जाणो-प्राणो–*(न०)* १ जाना आना । आवागमन । २ हानि लाभ । *(क्रि०)* जाना और आना ।

जात–*(ना०)*१ जाति । समाज । २ गुण । धर्म आदि की दृष्टि से पदार्थों का विभाग । वर्ग । कोटि । ३ आकृति, प्रकृति आदि की दृष्टि से जीव जंतुओं का विभाग । ४ किस्म । प्रकार । ५ गुण । ६ किसी कामना से की जाने वाली देव दर्शन यात्रा । ७ विवाहोपरांत वर वधू का देव पूजार्थ देव स्थानों में जाना । ८ गोत्र । ९ जन्म । १० पुत्र । *(वि०)* १ जन्मा हुआ । उत्पन्न । २ प्रकट ।

जातक–*(न०)* १ बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ । २ बच्चा ।

जातणी–*(ना०)* स्त्री यात्री । यात्रिणी ।

जातना–*(ना०)* यातना । कष्ट । पीड़ा ।

जातपात–*(ना०)* १ जाति पाति । बिरादरी । २ एक पंक्ति में बैठ कर भोजन करने वाली जातियों का मेल ।

जात बार–दे० जाती बाहर ।

जातरी–दे० जात्री ।

जातरू–*(न०)* बलगाड़ी के मार्ग में लदे किये जाने वाले डंड । २ तीर्थ यात्री ।

जातरूप–*(न०)* स्वर्ण । सोना ।

जातवान–*(वि०)* १ अच्छी नस्ल का । २ ऊंचे खानदान का । कुलीन । ३ असली । खरा । सच्चा । ४ विशुद्ध ।

जातवेद–*(न०)* अग्नि ।

जातसुभाव–*(न०)* १ वंश परम्परा का स्वभाव । कुल स्वभाव । २ जाति स्वभाव ।

जातांकरणी–*(मुहा०)* यात्राएं करना ।

जाता जुगां–*(अव्य०)* युगों के बीत जाने पर भी ।

जातांपाण–*(अव्य०)* जाते ही । पहुँचते ही ।

जाति–*(ना०)* १ कर्मानुसार (अब जन्मानुसार) हिन्दू जाति में किया गया ब्राह्मण क्षत्री आदि के रूप में मानव समाज का विभाग । हिंदू समाज । जाति । वर्ण । २ देश परम्परा या धर्म की दृष्टि से किया गया मानव समाज का विभाग । यथा—हिन्दू पारसी मुसलमान आदि । ३ गुण धर्म आकृति आदि की दृष्टि से तथा योनि भेद से पदार्थों अथवा जीव जंतुओं का बना हुआ विभाग जैसे मनुष्य पशु स्त्री पुरुष घोड़ा सांप आदि ।

जातिधर्म–*(न०)*१ जाति या वर्ण का धर्म । २ जातियों के अलग-अलग कर्त्तव्य ।

जाति-पाति–*(ना०)*१ एक पंक्ति में भोजन करने वाला समाज । २ बिरादरी ।

जातिभाई–*(न०)* एक ही जाति का होने से माना जाने वाला भाई ।

जातिभेद–*(न०)* जातियों में परस्पर रहने वाला अंतर ।

जातिभ्रष्ट–*(वि०)* जाति से बहिष्कृत ।

जातिमद–*(न०)* जाति का अभिमान ।

जातिवाचक–*(वि०)* जाति के गुण इत्यादि बताने वाला ।

जातिवाचक संज्ञा–*(ना०)* १ जाति की प्रत्येक इकाई या वस्तु की वाचक संज्ञा । (व्या०) २ सामान्य नाम ।

जातिवार–*(अव्य०)* प्रत्येक जाति के हिसाब से ।

जाति वैर–*(न०)* १ स्वाभाविक शत्रुता । सहज वैर । २ जातियों में परस्पर वैर भाव ।

जाति व्यवहार–*(न०)* जातियों में परस्पर भोजन व्यवहार ।

जाति स्वभाव–*(न०)* १ जाति का विशेष गुण या स्वभाव । २ एक अलंकार ।

जातिहीन–*(वि०)* १ जातिच्युत । २ हीन जाति का ।

जाती–दे० जाति ।

जाडायती-(क्रि०वि०) जबरदस्ती से।

जाडा-(वि०) अधिक। (क्रि०वि०) जबरदस्ती से।

जाडियो-(न०) दाढ़ा के बालों को ऊंचा जमाये रखने के लिये उन पर बांधी जाने वाली एक वस्त्र पट्टी। बकानो। (वि०) १ मोटा। २ घना।

जाडी-(वि०) १ मोटी। सेंठी। २ घना। ३ अत्यधिक। ४ दलदार। (ना०) मूंछ को जमाये रखने के लिये उस पर बांधने की कपड़े की पट्टी। मूंछपट्टी। मूंछी। मूंछियो।

जाडीकीरत-दे० जाडाजस।

जाडी जीभ-(ना०) १ मृत्यु के समय जीभ का मोटा हो जाना। २ बोला नहीं जाना।

जाडो-(वि०) १ मोटा। २ स्थूल। ३ पुष्ट। सेंठो। ४ दलदार। ५ अत्यधिक ६ घना। ७ प्रबल। जोरावर।

जाडो-(न०) १ शीतकाल। सियाळो। २ शीत। जाडा। सरदी। ठंड। सी। ३ जत्था। समूह। ४ पक्ष।

जाडो जस-(न०) बहुत बड़ी ख्याति। बड़ी प्रशंसा। जाडी कीरत।

जाण (ना०) १ जानकारी। २ पहिचान। ३ समझ। ज्ञान। ४ बुद्धि। अक्ल। (अव्य०) १ मानो। जानो। २ जानकि।

जाण-अजाण-(अव्य०) १ जानते हुए या अज्ञान में। २ बिना इरादे।

जाणक-(अव्य०) मानो। मानो कि। जैसे। मानो। गोया। गोया कि। जाणो के। (वि०) १ जानने वाला। ज्ञाता। २ बहुश्रुत। जाणग।

जाणकार-(वि०) १ जानकारी रखने वाला। जानकार। जानने वाला। जाणग। जाणणारो। २ समझदार। विज्ञ। ३ चतुर।

जाणकारी-(ना०) जानकारी। विज्ञता। २ परिचय। ३ निपुणता।

जाणग-(वि०) १ जानने वाला। ज्ञाता। जाणणारो। २ बहुश्रुत।

जाणगर-(वि०) १ ज्ञाता। जानकार। जाणग। २ विशेषज्ञ। ३ समझने वाला।

जाणगारो-दे० जाणकार।

जाणणो-(क्रि०) १ जानना। २ समझना। ३ पता लगना। ४ ज्ञान प्राप्त करना। ५ पहचानना। ६ खबर रखना। सूचना पाना।

जाणपण-दे० जाण।

जाणपणो-दे० जाण।

जाण पिछाण-(ना०) जान पहिचान। परिचय।

जाणभेद-(वि०) भेद जानने वाला। भेदिया। भेदू। भेदियो।

जाण-म जाण-(अव्य०) १ जान अनजान। २ जानो या नहीं जानो।

जाणवीण-(ना०) जानकारी। (वि०) जानकार।

जाणाऊ-(न०) भेदिया। गुप्तचर। (वि०) चतुर। विज्ञ।

जाणि-(अव्य०) मानो। गोया।

जाणी आणी-(ना०) १ जाना आना। २ हानि लाभ।

जाणीकार-दे० जाणकर।

जाणीतो-(वि०) १ जाना हुआ। पहचाना हुआ। ओळखाण वाळो। ओळखीतो। २ प्रसिद्ध। मशहूर। छावो। ३ जानकार। भिज्ञ। जाणकर।

जाणै-(अव्य०) मानो। गोया। जैसे कि। जनों। जाणि।

जाणो-(क्रि०) १ जाना। गमन करना। २ अलग होना। ३ अधिकार से निकलना। हाथ से निकलना। ४ बहना। (अव्य०) मानो। गोया। जैसे। जाणि। जाणै।

जाणो-आणो-(न०) १ जाना माना । आवागमन । २ हानि लाभ । (क्रि०) जाना और आना ।

जात-(ना०)१ जाति । समाज । २ गुण । धर्म आदि की दृष्टि से पदार्थों का विभाग । वर्ग । कोटि । ३ आकृति प्रकृति आदि की दृष्टि से जीव जंतुओं का विभाग । ४ किस्म । प्रकार । ५ गुण । ६ किसी कामना से की जाने वाली देव दर्शन यात्रा । ७ विवाहोपरांत वर वधू का देवपूजार्थ देव स्थानों मे जाना । ८ गोत्र । ६ जन्म । १० पुत्र । (वि०) १ जन्मा हुआ । उत्पन्न । २ प्रकट ।

जातक-(न०) १ बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ । २ बच्चा ।

जातणी-(ना०) स्त्री यात्री । यात्रिणी ।

जातना-(ना०) यातना । कष्ट । पीड़ा ।

जातपात-(ना०) १ जाति पाति । बिरादरी । २ एक पंक्ति में बैठ कर भोजन करने वाली जातियों का मेल ।

जात बारै-क्रि० जाती बाहर ।

जातरी-दे० जात्री ।

जातरू-(न०) बलिदान के लिए मार्ग में छोड़े दिये जाने वाले डंडे । २ तीर्थ यात्री ।

जातरूप-(न०) स्वर्ण । सोना ।

जातवान-(वि०) १ अच्छी नस्ल का । २ ऊँचे खानदान का । कुलीन । ३ असली । खरा । सच्चा । ४ विशुद्ध ।

जातवेद-(न०) अग्नि ।

जातसुभाव-(न०) १ वंश परम्परा का स्वभाव । कुल स्वभाव । २ जाति स्वभाव ।

जाताकरणी-(मुहा०) यात्राएँ करना ।

जाता-जुगा-(अव्य०) युगों के बीत जाने पर भी ।

जातांपाण-(अव्य०) जाते ही । पहुँचते ही ।

जाति-(ना०) १ कर्मानुसार (अब जन्मानुसार) हिंदू जाति में किया गया ब्राह्मण क्षत्री आदि के रूप में मानव समाज का विभाग । हिंदू समाज । जाति । वर्ण । २ देश परम्परा या धर्म की दृष्टि से किया गया मानव समाज का विभाग । यथा—हिंदू पारसी मुसलमान आदि । ३ गुण धर्म आकृति आदि की दृष्टि से तथा योनि भेद से पदार्थों अथवा जीव जंतुओं का बना हुआ विभाग जैसे मनुष्य पशु स्त्री पुरुष घोड़ा सांप आदि ।

जातिधर्म-(न०)१ जाति या वर्ण का धर्म । २ जातियों के अलग-अलग कर्त्तव्य ।

जाति पाति-(ना०)१ एक पंक्ति में भोजन करने वाला समाज । २ बिरादरी ।

जातिभाई-(न०) एक ही जाति का होने से माना जाने वाला भाई ।

जातिभेद-(न०) जातियों में परस्पर रहने वाला अंतर ।

जातिभ्रष्ट-(वि०) जाति से बहिष्कृत ।

जातिमद-(न०) जाति का अभिमान ।

जातिवाचक-(वि०) जाति के गुण इत्यादि बताने वाला ।

जातिवाचक संज्ञा-(ना०) १ जाति की प्रत्येक इकाई या वस्तु की वाचक संज्ञा । (व्या०) २ सामान्य नाम ।

जातिवार-(अव्य०) प्रत्येक जाति के हिसाब से ।

जाति वैर-(न०) १ स्वाभाविक शत्रुता । सहज वैर । २ जातियों में परस्पर वैर भाव ।

जाति व्यवहार-(न०) जातियों में परस्पर भोजन व्यवहार ।

जाति स्वभाव-(न०) १ जाति का विशेष गुण या स्वभाव । २ एक अलंकार ।

जातिहीन-(वि०) १ जातिच्युत । २ हीन जाति का ।

जाती-क्रि० जाति ।

जाती बाहर-(वि०)जाति स निकाला हुआ। जातिच्युत। जाति बहिष्कृत।

जाती-रा-पग-(ग्रव्य०)ग्रध पतन के चिह्न।

जातीवैर-(न०) जाति शत्रुता। सहज वर। स्वाभाविक शत्रुता। जैसे बिल्ली और चूहे म।

जाती सुभाव-(न०) १ जाति स्वभाव। जाति का गुण। २ वश गुण। कुल का स्वभाव।

जातू-(न०) बलगाडी के मांकडे म खडा किया जाने वाला डडा।

जातो ग्रातो-(वि०) जाता ग्राता। जाता ग्राता हुग्रा।

जात्रा-(ना०) १ यात्रा। तीर्थाटन। २ देशाटन। भ्रमण।

जात्राळू-(वि०) तीर्थाटन करने वाला। यात्रा करने वाला। यात्री।

जात्री-(न०) यात्री।

जादम-दे० जादव।

जादरियो-(न०) गहू का ऊबी म से निकाले हुए हरे गहू या हरे चने या हरी ज्वार को पीस कर बनाया जाने वाला हलवा।

जादव-(न०) १ यादव। २ श्रीकृष्ण। ३ भाटी क्षत्री।

जादवपति-(न०) यादवपति श्रीकृष्ण।

जादवराय-(न०) श्रीकृष्ण।

जादवेस-(न०) श्रीकृष्ण।

जादवो-(न०) श्रीकृष्ण।

जादा-(वि०) ज्यादा। ग्रधिक। घणो।

जादुराय-दे० जादवराय।

जादू-(न०) १ इद्रजाल। २ टोटको। टोना। ३ यादव। जादव।

जादूगर-(न०) जादू करने या जाननेवाला। इद्रजालिक।

जादूमतर-(न०) जादू का मत्र। जादूमत्र।

जान-(ना०)१ बरात। जनत। २ प्राण। ३ शक्ति। ४ जानकारी। ज्ञान। ५ ग्रनुमान। ख्याल।

जानकी-(ना०) श्रीराम की पत्नी। सीता।

जानकीनाथ-(न०) श्रीराम।

जानणी-(ना०) बरातिन। जनेतिन।

जानराय-(न०)१ श्रीराम। २ विष्णु।

जानवर-दे० जनावर।

जानियो-(न०) जनेती। बराती।

जानी-(ना०) बराती। जनती। जानियो। (वि०) प्यारा।

जानीवासो-(न०) बरातियो के ठहरने का मकान। जनवासा। डेरो।

जानेत-दे० जानेती।

जानेतण-(ना०) जनतिन। बरातिन। जानणी।

जानेती-(न०) बराती। जनेती। जानियो। जानी।

जान्हवी-(ना०) गगा नदी। जाह्नवी।

जाप-(न०) जप।

जापक-(वि०) जप करने वाला। जपियो।

जापजप-दे० जपजाप।

जापताई-दे० जाबताई।

जापताप-दे० जपतप।

जापतो-दे० जाबतो।

जापान-(न०) एक देश।

जापानी-(ना०) १ जापान की भाषा। २ जापान का निवासी। (वि०) जापान का। जापान सबधी।

जापायती-(वि०) प्रसूता। जच्चा।

जापो-(न०) १ सौरी। सूतिकाग्रह। २ सूति। प्रसव। जन्म।

जाफ-(ना०) बेहोशी। मूर्च्छा।

जाफरान-(ना०) केशर।

जाफरी-(ना०) बरडे बारी ग्रादि के ग्रागे लगाई जाने वाली बाँस या लोहे की पट्टियो की बद जाली।

जाब-(न०) जवाब। उत्तर। जबाब।

जावक-(वि०) समस्त। सब। (क्रि०वि०) सवत्र। सब जगह। (ग्रव्य०) १ सबका

सब। ऊपर से नीचे तक। आदि से अंत तक। २ सवथा। बिलकुल।

जाब करणो–(मुहा०) १ उत्तर दना। २ प्रश्न करना।

जाबडो–(न०) जबाडा। अबाडो।

जाबताई–(ना०) हिफाजत से रहन की व्यवस्था। दे० जाबतो।

जाबतो–(न०) १ पक्का बदोबस्त। जाब्ता। २ सम्हाल। सावधानी। ३ रक्षा। निगरानी। ४ रक्षा का प्रबध।

जाब पूछणो–(मुहा०) उत्तर मागना।

जाम–(न०) १ रात। २ क्षण। पलक। ३ प्रहर। ४ पिता। ५ पुत्र। ६ पुत्री। जाया। ७ सौराष्ट्र के नवानगर (जाम नगर) क जाडेजा शासक की उपाधि। ८ प्याला। (वि०) १ दाहिना। २ दाना। ३ रुका हुआ। ४ अटका हुआ। फँसा हुआ।

जामगरी–दे० जामगी।

जामगी–(ना०) बदूक या ताप दाग। का पलीता। जामगरी। पलीतो।

जामण–(ना०) १ माता। जननी। २ सतान। (न०) १ जन्म। २ मन। मिलान। ३ दूध को जमान के लिय उसमे डाली जाने वाली छाछ या दही। जामन।

जामणजाई–(ना०) बहिन। भगिनी।

जामणजायी–दे० जामणजाइ।

जामणजायो–(न०) भाइ।

जामण मरण–(न०) जन्म मरण। ज मना और मरना।

जामणी–(ना०) १ दही जमान का पात्र। आवणी। २ रात। रात्रि। यामिनी।

जामणो–(क्रि०) १ जमना। स्थिर होना। २ जन्म लेना। ३ हाना। ४ फनना।

जामदानी–(ना०)१ एक प्रकार का सदूक। २ बुगचा। ३ बुगचा बनान का काम दार कपडा। ४ एक प्रकार का फूल कढा हुआ कपडा। ५ चमडे की थेली।

जामनेमी–(न०) इद्र।

जामफळ–(न०) अमरूद।

जामळ–(न०) १ जन्म। २ स्त्री पुरुष। नर नारी। यामल। ३ जोडा। युग्म। यमल। यामल। ४ सग। साथ।

जामळणो–(क्रि०) १ मिलना। सम्मिलित होना। २ एकमत होना। सहमत होना।

जामात–(न०) जमाई। दामाद।

जामा-वरदार–(न०) राजा, बादशाह क चलन क समय उनक भारी जामा को बाजू स पकड कर चलन वाला सेवक।

जामिन–(न०)जमानत दने वाला। जामिन। प्रतिभू।

जामी–(न०) १ पिता। २ यम नियमो का पालन करन वाला तपस्वी। यमी। ३ योगी।

जामो–(न०) १ जन्म। उत्पत्ति। २ जीवन। जिंदगी। ३ पुत्र। ४ सहारा। आधार। ५ घाघर की तरह घेरेदार (अगरखी के साथ जुडा हुआ) पुरुषो क पहनन का बागा। बागो। आंगी।

जामोत–(न०) जमाई। दामाद।

जमोरत्त–(वि०) १ आधार प्राप्त। सहारा प्राप्त। २ (जीवन के लिय) आधार प्राप्त करने वाला। ३ जन्मा हुआ। (भू०क्रि०) १ जन्मा। २ जीवन निर्वाह किया।

जाय–(न०) पुत्र। (ना०) १ पुत्री। २ स्त्री। ३ चमेली। ४ जूही।

जायकटचो–(अ॰य०) एक गाली।

जायगा–(ना०) १ जगह। स्थान। २ मकान। घर। ३ जमीन।

जायदाद–(ना०) सपत्ति। माल मिलकत।

जायदाद गर मनकूला–(ना०) अचल सपत्ति।

जायदाद मनकूला-(ना०) चल संपत्ति ।
जायपीट्टो-(अव्य०) एक गाली ।
जायफळ-(ना०) जायफल ।
जाया-(ना०) १ पुत्री । २ स्त्री ।
जायापीट्या-(अव्य०) एक गाली ।
जायी-(ना०) १ पुत्री । जाई । (वि०) जन्मी हुई ।
जायो-(न०)१ पुत्र । बेटा । (वि०) जनमा हुआ । जात ।
जायाडी-(वि०) जन्मी हुई ।
जायाडो-(वि०) जन्मा हुआ ।
जायापीट्या-(अव्य०) एक गाली ।
जार-(न०) पराई स्त्री से अनुचित संबंध रखने वाला व्यक्ति । व्यभिचारी ।
जारकरम-(न०) व्यभिचार । जारी ।
जारण-(ना०) १ अग्नि । २ बळीतो । ईंधन । इंधणो । ३ जलाने का भाव या क्रिया ।
जारणी-(ना०) १ अन्य पुरुष से अनुचित संबंध रखने वाली स्त्री । दुश्चरित्रा । जारिणी । व्यभिचारिणी । कुलटा । २ ईंधन । ईंधन की लकड़ी । इंधणो ।
जारणो-(क्रि०) १ पचाना । हजम करना । २ सहना । ३ जलाना । ४ मारना ।
जारत-(ना०) १ यात्रा । २ तीर्थ यात्रा । तीर्थाटन । जियारत । ३ दर्शन । तीर्थ दर्शन ।
जारात-(ना०) जाहिरात । प्रसिद्धि । (वि०) प्रसिद्ध । छावो ।
जारी-(ना०) व्यभिचार । पर स्त्री गमन । २ पर पुरुष गमन । जारकर्म । (वि०) प्रचलित । चालू ।
जाळ-(ना०) जाल । पीलू वृक्ष । (न०) १ फंदा । जाल । २ धोखा । षड्यंत्र । ३ समूह । ४ जाला (मकड़ी का) । ५ माया का बंधन । माया जाल । ६ कर्म बंधन । ७ किसी वस्तु के ऊपर छाई हुई झिल्ली। परत । ८ आँख की पुतली के ऊपर छाने वाली झिल्ली । जाळो ।
जाळउर-(न०) जालोर नगर ।
जाळण-(ना०) १ अग्नि । २ ईंधन । ईंधणी । ईंधणी । बळीतो ।
जालम-(वि०) जालिम । अत्याचारी । जुल्म करने वाला ।
जाळवण-(ना०) १ अग्नि । २ ईंधन । ३ जाल वृक्ष । पीलू वृक्ष । जाळ । ४ जाल वृक्ष का लकड़ा । ५ हिफाजत । निगरानी । सभाळ । (वि०) जलाने वाला ।
जाळवणी-(ना०) १ देखभाल । सम्हाल । २ सुरक्षा । ३ अग्नि । ४ ईंधन ।
जाळवणो-(क्रि०) १ सम्हालना । सुरक्षित रखना । देखभाल करना । २ सुरक्षित रहना । सम्हल कर रहना । ३ जलाना ।
जाळसाज-(वि०) जालसाजी करने वाला । धोखेबाज । दगाबाज ।
जाळसाजी-(ना०) धोखाबाजी । दगाबाजी ।
जाळंधर-(न०) १ जालोर नगर का एक नाम । २ नाथ सम्प्रदाय के एक सिद्ध योगी । जलंधर नाथ ।
जाळानळ-(ना०) १ अग्नि । आग । २ अग्नि की ज्वाला । झाळ ।
जालिम-दे० जालम ।
जाळिया-(न०) जाल वृक्ष का फल । पीलू ।
जाळी-(वि०) १ जालसाज । २ बनावटी । जाली । —(ना०) १ छिद्रवाली बाई परत । जाली । २ झिल्ली । ३ लट्टू फिराने की डोरी । ४ काटने वाले ऊँट के मुँह पर बाँधने की रस्सी से बनी हुई जालीदार टोपी । ५ एक प्रकार का कवच । ६ छिद्रों [illegible] एक कपड़ा । ७ झरोखा । [illegible]
जाळीचो-(अव्य [illegible] [illegible] के ।

वाला व्यक्ति। ३ जग म वीरता की प्रशस्तियाँ गाकर वीरों को प्रोत्साहन देने वाला गायक। ४ ढाली। ५ ढाढी। ६ योद्धा। *(वि०)* वीर। बहादुर।

जाँगडियो–*दे० जाँगड।*

जागडो–*(न०)* डिंगल का एक छद। दे० जाँगड।

जागळू–*(न०)* राजस्थान म बीकानेर जिले का एक प्रदेश।

जाँगी–*(न०)* १ नगारा। २ बडा ढाल। ३ रण वाद्य। ४ छोटी हरे की एक किस्म। ५ छोटी किस्म की हरें।

जाँगी हरडै–*(ना०)* एक प्रकार की छोटी हरें। होमज।

जाघ–*(ना०)* जघा। साथळ।

जाघियो–*(न०)* १ तग मोहरी का घुटनो तक का एक पजामा। कच्छा। जाघिया। २ पजामा।

जाच–*(ना०)* १ देखभाल। निरीक्षण। २ परख। परीक्षा। ३ खोज।

जाचणो–*(क्रि०)* १ जाँचना। उपासना। २ परखना। परीक्षा करना।

जाभर–*(न०)* स्त्रियो के परो म पहनने का बारीक घू घरुदार एक गहना। भाभर।

जाभरकै–*(अ य०)* प्रात काल मे। प्रभात वेला म।

जाभरका–*(न०)* प्रात काल। प्रभात। उषाकाल।

जाँभरिया–*(न०ब०व०)* बच्चे के पाँवों म पहनने की छोटी जाभर जोडी।

जाँट–*(ना०)* शमीवृक्ष। खेजडी।

जाँतरो–*(न०)* तार को खीच कर पतला बनाने का एक यत्र। तार पट्टी।

जादा–*(न०ब०व०)* १ कष्ट। तकलीफ। २ वियोग। जुदाई। ३ दूरी। भेद। अतर। ४ लालसा। ५ अभिलाषा। तीव्र इच्छा।

जाँदा पडणो–*(मुहा०)* १ मन की मन म ही रहना। मन की पूरी न होना। २ कष्ट भुगतना। तकलीफ उठाना। ३ वियोग पडना। ४ इच्छा पूरी नहीं होना। ५ कमी होना।

जावाज–*(वि०)* १ आत्मबली। २ जवाँ मद।

जाँबाजी–*(ना०)* जान की बाजी। आत्म बलिदान। २ जवाँ मर्दी।

जावू–*(न०)* १ सौराष्ट्र का लीबडी प्रदेश। २ जबूफल। जामुन।

जाबो–*दे० जाभो।*

जाँभेल–*(न०)* तारामीरा का तेल। जाँबो तेल।

जाँभो–*(न०)* सरसो की जाति का पर सरसो से अधिक तीखा और कडआ तिलहन। तारामीरा।

जाभाजी–*(न०)* पीपासर (राजस्थान) म ज मे विसनोई (जाति) सप्रदाय के प्रवतक एक सिद्ध पुरुष।

जाभो तेल–*(न०)* तारामीरा का तेल। जाभेल।

जावण–*(न०)* जामन। जावन। जामण।

जाँवळणो–*दे० जामळणो।*

जिकण–*(सव०)* जिको का वह रूप जो उस विभक्ति लगने के पहिले प्राप्त होता है। जिस। *(वि०)* जिस।

जिकर–*(न०)* १ जिक्र। चर्चा। बातचीत। झिकर। २ कथन।

जिका–*(सव०)* वह।

जिका–*(सव०ब०व०)* १ जिन्हें। २ जिन्होंने। ३ जिन। ४ उन।

जिकाँरै–*(सव०ब०व०)* जिनके। जिणाँर।

जिकारो–*(वि०ब०व०)* जिनका।

जिकी–*(सव०)* वह। *(वि०)* जो।

जिके–*(सव०)* १ जिस। २ उस। ३ जो।

जिको–*(सव०)* वह। *(वि०)* जो।

जिग–*(न०)* यज्ञ।

जिगन-(न०) यज्ञ।
जिगर-(न०) १ कलेजा। २ दिल। मन। ३ साहस। हिम्मत।
जिगरी-(वि०) प्यारा। प्रिय।
जिडो-(वि०) जितना। जित्तो। जितरो।
जिद-(ना०) जिद्द। हठ।
जिढी-(वि०) जिद्दी। हठी।
जिण-(सव०) १ जिसने। २ जिस। ३ जिसक।
जिणगी-(क्रि०वि०) जिस ओर। (वि०) जिसकी।
जिणथी-(सव०) जिस (व्यक्ति) से। जिससे।
जिणनै-(सव०) जिसको।
जिण परि-(अव्य०) १ जिससे। २ जिस प्रकार। ३ जिस पर। ४ जिसके बाद।
जिणरी-(सव०) जिसकी।
जिणरो-(सव०) जिसका।
जिणसू -दे० जिणथी।
जिणद-(न०) जिनेन्द्र। तीर्थंकर।
जिणि-(सव०) जिस।
जिणियारी-(ना०) माता।
जिणो-दे० जणो।
जितणो-(वि०) जितना। जितरो।
जित तित-(क्रि०वि०) जहां तहां। जठ तठ।
जितर-(क्रि०वि०) १ जब तक। २ जितने में।
जितरो-(वि०) जितना। जित्तो।
जितै-(क्रि०वि०) १ जितने में। २ जब तक। जठ ताई।
जित्ता-(वि०ब०व०) जितने। जितरा।
जितो-(वि०) जितना। जितरो।
जित्तो-(वि०) जितना। जितरो।
जिद-(ना०) हठ। दुराग्रह।
जिद्दी-(वि०) जिद्दी। हठी। दुराग्रही।
जिन-(न०) १ विष्णु। २ बुद्ध। ३ सूर्य। ४ तीर्थंकर। ५ मुसलमान भूत।
जिनगानी-दे० जिंदगानी।
जिनगी-(ना०) जिंदगी।
जिनडी-दे० जिनगी।
जिनमत-(न०) जैन धर्म।
जिनमंदिर-(न०) जैन मंदिर।
जिनवर-(न०) तीर्थंकर।
जिनस-(ना०) १ चीज। वस्तु। जिंस। २ मदद। नग। ३ प्रकार। भाँति। ४ साँचा। ढाँचा।
जिनहा-(सव०ब०व०) १ जिन्हान। २ जिनके। ३ जिन।
जिनहा हंदिया-(वि०ब०व०) १ जिनका। २ जिनकी।
जिना-(न०) व्यभिचार।
जिनाकारी-(ना०) व्यभिचार।
जिनात-(ना०) सामर्थ्य। हैसियत। ताकत।
जिनावर-दे० जनावर
जिना-दे० जिनहा।
जिना हंदा-दे० जिनहा हंदियाँ।
जिना हंदिया-दे० जिनहा हंदिया।
जिभ-(न०) पशु काट कर प्राण लेने की क्रिया। जबह। जिबह।
जिभ्या-(ना०) जिह्वा। जीभ।
जिम-(क्रि०वि०) १ जिस तरह। जिस प्रकार। (अव्य०) ज्यों। जैसे। जैसे कि। ज्यू। ज्यूं क।
जिमकड़-(वि०) खूब खाने वाला।
जिम-तिम-(क्रि०वि०) जैसे तैसे। जिस किसी प्रकार। ज्यू त्यू।
जिमावणो-(क्रि०) खिलाना। भोजन कराना। खवावणो।
जिम्मेवार-(न०) उत्तरदायी।
जिम्मेवारी-(ना०) उत्तरदायित्व।
जिय-(न०) जीव।
जियान-(क्रि०वि०) जिस प्रकार। जैसे। ज्यू।
जियारत-(ना०)१ तीर्थ यात्रा। २ मुसलमानों की मक्के, मदीने की यात्रा।

जियारी-दे० जीवारी।

जियाँ-(सर्व०अ०व०)१ जिनका। २ जिनको। ३ जिन्होंने। जिणां। (अव्य०) जैसे कि।

जियाँकळो-(वि०) १ जिस प्रकार का। जैसा। जैड़ो। जिसो। २ उस प्रकार का। वैसा। अैड़ो। वैड़ो। विसो। ३ जितना। जितरो। जित्तो।

जिरह (ना०) कवच। बख्तर। (ना०) १ ऐसी पूछताछ जो सच्ची बात का पता लगाने के लिए की जाय। २ प्रश्न जो प्रतिपक्षी या दूसरा वकील बयान की सच्चाई जाँचने के लिए करे। ३ हुज्जत।

जिराफ (न०) लंबी गरदन का एक अफ्रीकी पशु।

जिलै-(ना०) ओप। चमक। जिला।

जिला-(न०) सूबे का वह भाग जो कलेक्टर के अधीन हो। जिला।

जिल्द-(ना०) १ पुस्तक की एक प्रति। २ पुस्तक का एक भाग। खंड। ३ पुस्तक की रक्षा के लिये ऊपर नीचे चढ़ाई हुई दफ्ती। पूठा।

जिल्दसाज-(न०) पुस्तकों की जिल्दें बाँधने वाला।

जिवड़ो-(न०) जीव। जी। (वि०) १ जैसा। २ जितना।

जिव्रावणो-दे० जिवावणो।

जिसड़ो-दे० जिसो।

जिसन-(न०) १ इंद्र। जिष्णु। २ अर्जुन। जिष्णु। ३ सूर्य। ४ श्रीकृष्ण।

जिसम-(न०) शरीर। जिस्म। डील।

जिसी-(वि०)जैसी। जड़ी।

जिसो-(वि०) १ जैसा। जड़ो। २ समान।

जिस्यान-(क्रि०वि०) जिस प्रकार। जैसे। (वि०) जैसा।

जिस्यो-दे० जिसो।

जिंआ-(अव्य०) जिस तरह। जैसे। ज्यु के।

जिंद-(न०) १ भूत। २ मुसलमान भूत।

जिंदगाणी-(ना०) जिंदगी। जीवन। जिंदगानी। जिनगानी।

जिंदगी-(ना०) १ जीवन। २ जीवन काल। आयु।

जिंदो-(वि०) जीवित। जीवतो।

जी-(अव्य०) १ सम्मान सूचक एक शब्द। २ आदर सूचक प्रत्युत्तर का एक शब्द। ३ गुरुजनों के प्रति उच्चारण किया जाने वाला स्वीकृति व समर्थन आदि का सूचक शब्द। ४ पिता, पितामह मातामह आदि गुरुजनों के लिये सम्मान सूचक शब्द। जी। जीसा। आपजी। ५ व्यक्ति के नाम के अंत में लगने वाला आदर वाचक शब्द। जी। यथा—किसनजी, रामदेवजी पाबूजी। (न०) १ जीव। प्राण। २ आदर सूचक प्रत्युत्तर। ३ मन। दिल। ४ पिता। जीसा। आपजी। ५ माता।

जीकारो-(न०) १ जी शब्द का बोधक पद। २ किसी के नाम के अंत में लगाया जाने वाला सम्मान सूचक जी शब्द का भाव। जैसे रामचन्द्रजी।

जीखा-(न०) वर्षा की बारीक बूंदें। (ना०) पकाई हुई ईंट को घिस कर बनाया हुआ बारीक चूर्ण या बुरादा।

जीखेम-(न०) १ शिव वाहन। नंदी। २ बल। वृषभ।

जीजाजी-(न०) बड़ी बहन का पति। बहनोई।

जीजी-(ना०) बड़ी बहिन।

जी जोड़-(अव्य०) जी जान से। पूरी शक्ति से।

जीण-(ना०) १ एक प्रकार की विशेष बुनावट का मोटा वस्त्र। २ घोड़े की काठी। पलाण। चारजामा। जीन। दे० जीणमाता।

जीणगर–(न०) १ घोड़े की जीन बनाने वाला कारीगर। जीनसाज। जीनगर। २ मोची।
जीणपोस–(न०) जीन के ऊपर डाला जाने वाला कपड़ा। जीनपोश।
जीणमाता–(ना०) शेखावाटी की एक प्रसिद्ध लोकदेवी।
जीणमाळ–(न०) जीमाल। वस्त्र।
जीत–(ना०) विजय। जय। फतह।
जीतणियो–(वि०) जीतने वाला।
जीतणो–(क्रि०) विजय पाना। जीतना। फतह होना।
जीतव–(न०) १ जीवन। जिन्दगी। २ जीवन स्थिति। ३ जीवन यात्रा।
जीतवा–(न०) १ जीव। २ जीवात्मा।
जीती–(ना०) १ जीवन व्यापार। गफ्त जीवन। २ विजय। जीत।
जीप–(ना०) १ जीत। विजय। २ एक जाति की मोटर गाड़ी।
जीपणो–(क्रि०) जीतना। विजयी होना।
जीभ–(ना०) १ जिह्वा। जीभ। रसना। २ वाणी। जबान। ३ कलम की नोक। ३ बूट पहिनने में प्रयुक्त एक जाने वाली पट्टी।
जीभ जाडी पड़णो–(मुहा०) मृत्यु के समय जीभ का मोटा हो जाना। मरणासन्न होना।
जीभाळ–(न०) राक्षस। (वि०) १ बड़ी जीभ वाला। २ बकवादी। जीभोटो।
जीभी–(ना०) जीभ का मैल उतारने का एक उपकरण।
जीभोटा–(न० ब० व०) व्यर्थ की बातें। बकवाद।
जीभोटो–(वि०) १ व्यर्थ बकने वाला। बकवादी। २ लबार। गप्पी। असभ्य। ३ जबान करने वाला। जबानदराज। वाचाल।
जीमण–(न०) १ भोजन। खाना। आहार। २ भोज। जीमन। पाळ। बांटो।
जीमणवार–(न०) ज्योनार। भोज।
जीमणियार–(वि०) १ निमंत्रण पर भोजन करने को आया हुआ। २ बहुत खाने वाला। दे० जीमणियाळ।
जीमणियाळ–(वि०) बलगर्भी में दाहिनी ओर जीता जाने वाला (बल)।
जीमणी (वि०) दाहिनी।
जीमणो (वि०) दाहिनी ओर का। दाहिना। (क्रि०) भोजन करना। जीमना। खाना।
जीमाड (वि०) बहुत खाने वाला। खाऊ।
जीमाड़णो–(क्रि०) खिलाना। भोजन कराना।
जीमावणो–दे० जीमाड़णो।
जीमूत (न०) १ बादल। मेघ। २ पर्वत। ३ सूर्य।
जीरणा–(वि०) जीर्ण। पुराना। (ना०) ज्वार। जुआर नामक।
जीरणा–दे० जीरवणा।
जीरवणो–(क्रि०) १ सहन करना। बरदाश्त करना। हजम करना। पचाना। २ धीरज रखना। ३ पचा जाना। हजम करना।
जीराण–(न०) श्मशान। मसाण।
जीरो–(न०) जीरा। जिरक।
जीलोई–(ना०) स्त्री।
जीव–(न०) १ प्राण। शरीर का चेतन तत्त्व। जीव। २ प्राणी। जीव। जीव धारी। ३ मन। दिल। जी। ४ प्रेम। ५ मोह। ६ चित्त। ध्यान। ७ खाट की एक बुनाई जिसका मध्य भाग जीव सदृश होता है। ८ कीड़ा। कीट।
जीव उकाळो–(न०) १ क्लेश। दुख। २ कुढ़न। ३ मनस्ताप।
जीव जड़ी–(ना०) १ जीवनमूरि। जीवन की जड़ी। २ जीवन का आधार। ३ प्रेमी। ४ पति।

जीव-जत-(न०) कीडा मकोडा। जीव जतु।
जीव-जतु-दे० जीव जत।
जीवडो-(न०) १ जीव। २ आत्मा। ३ जी। मन। ४ कीडा मकोडा। छोटा कीडा। ५ जतु। जीव जतु।
जीवण-(न०) १ जीवन। २ आयुष्य। उम्र। ३ प्राण। जीवन।
जीवणधन-(न०) १ ईश्वर। परमात्मा। २ स्वामी। पति। जीवन धन।
जीवणमृत-(वि०) १ जो जीवित ही मृत समान हो। जीवन्मृत। २ जिसका जीवन सार्थक न हो। (न०) जीवन और मृत्यु।
जीवण-साथण-(ना०) जीवन सगिनी। पत्नी।
जीवणो-(क्रि०) १ जीना। साँस चलना। २ जीवित रहना। ३ जीवन गुजारना
जीवत ओसर-दे० जीवत खरच।
जीवत खरच-(न०)जीवित अवस्था मे किया जाने वाला अपना ही मृतक भोज। वह मृत्यु भोज जो अपनी मृत्यु होने के पहले (जीवितावस्था) मे स्वय के द्वारा कर लिया जाता है।
जीवतदान-(न०) १ मारे जाने या मरने वाले की कीजाने वाली प्राण रक्षा। प्राणदान। जीवनदान। २ जीवित रहने का साधन। ३ वह दान या सहायता जो किसी के जीवन भर का सहारा बन सके।
जीवत-मृत-(वि०) १ (साधक) मृत्यु को जीवन से श्रेष्ठ समझने वाला। २ जीवित ही मृत समान। (न०) जीवन और मृत्यु।
जीवतसभ-(न०) १ वीर गति प्राप्त करने पर्य त रुद्र रूप से लडते रहने वाला वीर योद्धा। २ जीवित (प्राण) रहने तक रुद्र के समान शत्रु सहार करते रहने वाला वीर पुरुष। ३ जीवित ही रुद्र गति को प्राप्त होने वाला वीर योद्धा। (वि०) १ विजयी। २ वीर गति प्राप्त।
जीवती-(वि०) १ जीवित। २ सजीव।
जीवतेजीव-(अव्य०) १ जीवित रहते हुए। जीवतावस्था मे। जिंदगी मे। २ जिंदगी है जब तक।
जीवतो-(वि०)१ जीता। जिंदा। जीवित। २ जीव वाला। सजीव। ३ परिमाण (तौल नाप आदि) से कुछ अधिक।
जीवतोड-(वि०) अत्यधिक कठिन (परिश्रम) जीतोड।
जीवन-दे० जीवण
जीवन चरित-(न०)१ किसी के जीवन का वृत्तान्त। जीवन चरित्र। २ वह पुस्तक जिसमे किसी के जीवन का वृत्तान्त लिखा हुआ हो। ३ एक साहित्यिक विधा।
जीवन चरित्र-दे० जीवन चरित
जीवनी दे० जीवन चरित
जीवरखो-(न०) १ किला। दुर्ग। २ किले मे बुज पक्ति के बीच मे उठा हुआ स्थान जिसमे युद्ध का सामान रहता है और योद्धा लोग रहते हैं। ३ शरणागतो को किले मे छिपा रखने का स्थान। सरक्षण स्थान। ४ विद्रोही व शत्रु राजा सरदार आदि को किले मे कैद रखने का स्थान। ५ गुफा। ६ घर। ७ चोर डाकू आक्रमणकारी इत्यादि से बचने के लिए सुरक्षित स्थान। ८ जीवन रक्षा। ९ शरीर।
जीवहिंसा-(ना०) १ जान अनजान मे होने वाली प्राणी हिंसा। २ प्राणियो का वध। हत्या।
जीवाजूण-(ना०) १ जीवयोनि। २ जीव जतु। प्राणीमात्र। मनुष्य पशु पक्षी इत्यादि प्राणी।
जीवाडणो-(क्रि०) १ जीवित करना। २ मृत्यु से बचाना। ३ सकट से बचाना।
जीवाणो-दे० जीवाडणो।

जीवाणी-(न०)१ पानी वाले जीव। सूक्ष्म जल जीव। २ पानी को छानने पर छन्ने में रह गये जीव। ३ जीवों वाला पानी।
जीवाणु-(न०) १ जीवयुक्त अणु। २ अणु के समान सूक्ष्म जीव।। ३ जीवाणी। पानी वाले जीव। ४ जीव वाला पानी।
जीवात-(ना०) १ सूक्ष्म जंतु या कीटों का समूह। २ अनाज में पड़ने वाले जंतु। ३ जीवात्मा। जीव।
जीवारी-(ना०) १ जीवन का साधन। २ भूख प्यास आदि के (प्राणहरण जैसे) संकट से उद्धार। प्राण जाने की स्थिति का निवारण। भरण-पोषण। निर्वाह। जीविका। ४ जीव। प्राण। ५ जीवन। जिंदगी। ६ आश्रय। ७ परस्पर के संबंधों की मधुरता।
जीवाड़णो-दे० जीवाडणो।
जीवाह्न-(न०) इन्द्र। जीमूतवाह्न।
जी सा-(अ०य०) १ पिता या पितामह आदि गुरुजनों के लिये आदर सूचक संबोधन। (न०) पिता।
जीह-(ना०) जिह्वा। जीभ।
जीहा-दे० जीह।
जी-(वि०) जिस। जिण। -(सर्व०) जिसने। जिण।
जीसा-दे० जीग्रा।
जीगण-(न०) जुगनू। खद्योत। आगियो।
जीजणियाळ (ना०) जीजणी और बेरी वृक्ष की ओरण (रक्षित वन क्षेत्र) में रहने वाली देवी। २ करणी देवी।
जीजणियाळी-दे० जीजणियाळ।
जीजणी-(ना०) एक क्षुप। २ कंटीली झाड़ी।
जीजा-(न०ब०व०) झांझ ताल या मंजीरों की जोड़ी।
जीझणियाळी-दे० जीजणियाळ।
जीन-(सर्व०) जिससे।
जीवणी कानी-(अव्य०) दाहिनी ओर।
जीवणी दिस-(अ०य०) दाहिनी ओर।
जीवणो-(वि०) दाहिना। जीमणो।
जीसू-(सर्व०) जिससे।
जु-(अ०य०) एक पादपूरक अव्यय। २ एक संयोजक अव्यय। कि। ३ यदि। जो। अगर। -(सर्व०) १ जो। २ वह।
जुग्रळ-(न०) युगल। जोडा। युग्म।
जुगाजुगा-(वि०) जुदा जुदा। अलग अलग। भिन्न भिन्न।
जुआ जुई-(ना०) विवाह के अवसर पर वर-वधू के परस्पर जुआ खेलने की एक प्रथा।
जुग्राडो-(न०) बैलगाड़ी के आगे लगा रहने वाला एक काष्ठ उपकरण जो बैल गाड़ी को खींचने के लिए बैलों के कंधों पर रखा जाता है। जुआ। जुआठो।
जुग्रार-(ना०) एक बरछट अनाज। ज्वार। जवार।
जुआरी-(न०) जुआ खेलने वाला। द्यूतकार। द्यूतविद।
जुई-(वि०) जुदी। अलग।
जुग्रो-(वि०) जुदा। अलग। (न०) जुआ। द्यूत।
जुखाम-(न०) सरदी से होने वाला एक रोग जिसमें नाक तथा मुँह से कफ निकलता है। जुकाम। श्लेष्म। सळेखम। ठाढ। सरदी।
जुग-(न०) १ युग। बारह वर्ष का काल। २ जमाना। जुग। काल। ३ शास्त्रानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण जो सतयुग त्रेता द्वापर और कलियुग के नाम से विभाजित है। ४ जोड़ा। युग्म।
जुग-जमारो-(न०) लंबा समय। वर्षों के वर्ष। (अ०य०) बहुत वर्ष पहले।
जुगजुगा-(अ०य०) अनेक युगों तक।
जुगजुगी-(ना०) गले का एक आभूषण। धुगधुगी।

जुगत–(ना०) १ युक्ति। प्रकार। रीति। २ युक्ति। तर्क। दलील। ३ उपाय। तदबीर। ४ करामात। ५ कौशल। निपुणता। ६ व्यवस्था। तयारी। बना-वट। ७ रमणीयता। ८ समानता। मल।
जुगती–दे० जुगत।
जुगतो– (वि०) योग्य।
जुगनू–(न०) एक उडने वाला चमकीला कीड़ा। खद्योत। जींगण। आगियो।
जुगम–(वि०) १ युग्म। जोडा। युगल। २ दो।
जुगराज–(न०) युवराज।
जुगल–(वि०) १ दो। २ दोनों। (न०) जोड़ा। युगल।
जुगलकिशोर–(न०)युगलकिशोर। श्रीकृष्ण। २ राधाकृष्ण।
जुगलजोड़ी–(ना०) १ जोडी। जोड़ा। युगल। २ मित्रद्वय। ३ पति पत्नी। दम्पति।
जुगळी–(ना०) १ साथ रहने वाले व्यक्ति। २ जोड़ा। ३ मित्रमंडली।
जुगवर–(न०)युग का श्रेष्ठ पुरुष। युगपुरुष
जुगाड़–(ना०) १ आर्थिक सामर्थ्य। २ हैसियत। सामर्थ्य। ३ व्यवस्था। ४ प्रबन्ध।
जुगाद–(अव्य) युग का आदि। युगादि। (वि०) प्राचीन। पुराना (क्रिवि०) प्राचीन समय से। युग के आदि से।
जुगाळी–दे० ओगाळ।
जुगोजग–(अव्य०) युग प्रति युग। युग युग। प्रतियुग। प्रतियुग में।
जुज–(न०) १ युद्ध। २ अंग। अंश। (वि०) थोड़ा।
जुजठळ–(न०) युधिष्ठिर। (काव्योक्त नाम)
जुजदान–(ना०) १ शृंगारपेटी। २ चित्र पोथी। एल्बम।
जुजरवो–(न०) ऊंट पर रखी जाने वाली एक छोटी तोप।
जुजवळ–(ना०)खुलेपत्रों के हस्तलिखित ग्रंथों में लखन के दाहिने बांयें दोनों ओर के उपान्त (बार्डर) की दोहरी लाल लकीरें खींचने की लोहे या पीतल की दोनों ओर (ऊपर नीचे) दो नोक वाली एक कलम।
जुजाण–(न०) युद्ध।
जुजीठळ–दे० जुजठळ।
जुझ–(न०) युद्ध।
जुझाऊ–(वि०) १ युद्ध सम्बन्धी। २ युद्ध करने वाला। जूझने वाला। वीर। जूझार।
जुझार–दे० जूझार।
जुझ्झ–(न०) युद्ध।
जुट–(ना०) १ गुट। दल। २ थोक। लाट। ३ परस्पर मिली हुई वस्तुएँ। ४ मिलान। ५ दिक्कत। परेशानी। जुठ।
जुटणो–(क्रि०) १ युद्ध में प्रवृत्त होना। २ युद्ध करना। ३ मिलना। ४ जुटना। जुड़ना। संलग्न होना। ५ लगना। चिपटना। ६ किसी काम में सम्मिलित होना। ७ एकत्र होना।
जुटाणो–(क्रि०)१ संलग्न करना। जोड़ना। २ मिलाना। ३ किसी को किसी काम में लगाना। ४ एकत्रित करना।
जुटाळ–(न०) सिंह। (वि०) १ वीर। बहादुर। २ जुटाने वाला।
जुटावणो–दे० जुटाणो।
जुठ–(ना०) दिक्कत। परेशानी। तकलीफ।
जुड़णो–(क्रि०) १ कविता का बन पडना। २ जुड जाना। जुडना। ३ युद्ध में शामिल होना। ४ भिड़ना। लडना। ५ प्राप्त होना। मिलना। ६ इकट्ठा होना। जमा होना। शामिल होना।
जुड़वाई–(ना०) १ जोड़ने का काम। २ जोड़ने की मजदूरी।
जुड़मो–(वि०) जुड़ा हुआ।
जुड़वा–दे० जुड़मो।

जुडाई–दे० जोडाई ।

जुग–(ग्रव्य०) १ ऊँट को बिठाने के समय उच्चार किया जाने वाला शब्द । जुग । (न०) ऊट । जूग ।

जुत–(वि०) युक्त । युत ।

जुतणो–(क्रि०) १ किसी काम मे प्रवत होना । २ बैल घाडे ग्रादि का गाडी ग्रादि को खीचने के लिए उसमे जुडना । ३ काम मे साथ देना ।

जुदाई–(ना०) ग्रलग होने का भाव । पृथकता । वियाग । जुदापन । ग्रळगापणो । जुदापणो ।

जुदो–(वि०) १ ग्रलग । जुदा । २ ग्रतिरिक्त । ग्रलावा । सिवाय । ३ ग्रनोखा ।

जुध–(न०) युद्ध । लडाई ।

जुध ग्रघायो–(वि०) १ युद्ध मे तृप्त । २ युद्ध मे जिसके घाव नही लगे हो । ३ जो शक्ति भर लडा हो । ३ घावो से पूर्ण । ५ युद्ध से ग्रतृप्त ।

जुध जूट–(वि०) वह जिसका जीवन युद्धो से ही जुटा रहता है । युद्ध जुटा ।

जुधठळ–(न०) १ युधिष्ठिर । २ युद्ध स्थल ।

जुधणो–(क्रि०) युद्ध करना । लडना ।

जुधथभ–(न०) युद्ध मे स्तम्भ रूप से खडा रह कर लडने वाला वीर । युद्ध मे पीछे पाँव नही देने वाला ग्रडिग वीर ।

जुधथिर–(न०) युधिष्ठिर । (वि०) युद्ध मे स्थिर रहने वाला ।

जुधव्रध–(न०) १ व्यूह रचना । २ व्यूह । ३ योद्धा ।

जुध मादळ–(न०) १ युद्ध का ढोल । २ युद्ध का हाथी ।

जुध रीझल–(वि०) १ युद्ध रसिक । २ युद्धप्रिय ।

जुधाण–(न०) १ जुध का बहुवचन रूप । ग्रनेक युद्ध । २ जोधपुर नगर का एक काव्यगत नाम ।

जुधाणनाथ–(न०) जोधपुर का राजा । जोधपुर नरेश ।

जुन्हाई–(ना०) १ ज्योत्सना । चाँदनी । २ प्रकाश । रोशनी ।

जुपणो–(क्रि०) १ जुतना । २ प्रज्वलित होना । लगना । सुलगणो ।

जुमलै–(न०) १ योग । कुल योग । (वि०) सब । कुल ।

जुमलो–(न०) १ वाक्य । जुमला । २ भीड । (वि०) सब । जुमला ।

जुमे–(क्रि०वि०) जिम्मा मे । जिम्मेदारी मे । दखरेख मे । सुपुर्दगी मे ।

जुमो–(न०) जवाबदारी । जाबमदारी । जिम्मा ।

जुयळ–(वि०) १ ग्रलग । पृथक । २ दोनो । ३ दो । (न०) १ जोडा । युगल । २ नाचो पाव या हाथ ।

जुर–(ना०) १ कटारी के ग्राकार की डडी दार द्रव पदार्थ छानने की चलनी । २ हलका ज्वर । ३ ज्वर । ताप ।

जुरजोजन–(न०) दुर्योधन ।

जुरजोण–(न०) दुर्योधन ।

जुरजोधण–(न०) दुर्योधन ।

जुरडो–(न०) १ छेद । विवर । २ कोंग की वाड मे किया हुग्रा ग्रविध माग । ऊपरवाडो । सेरो । २ वृद्ध पुरुष । जरडो ।

जुरा–(ना०) जरा । वृद्धावस्था ।

जुरत–(ना०) जरूरत । ग्रावश्यकता । जोइजवाण ।

जुररो–दे० जुरो ।

जुरामध–(न०) कस का ससुर मगध देश का राजा जरासध ।

जुरासँधखय–(न०) जरासघ का नाश करने वाला भीम ।

जुरो–(न०) द्रव पदार्थ छानने या भारने का सुराखो ग्रौर डडा वाला

का गर पात्र। पूरी पकोड़ा आदि तली जाने वाली वस्तुआ को कड़ाही म से निकालने का लबी ह ने याला छिद्रना चालना। झारो।

जुर्म-(न०) अपराध।

जुळ-(क्रि०वि०) एकत्रित। इकट्ठा।

जुळणो-(क्रि०) १ इकट्ठा होना। २ उत्पन्न होना। ३ होना। ४ मिलना। प्राप्त होना। जुड़णो।

जुलफ-(ना०) सिर के बालों की कान के आगे निकली हुई लटिया। जुल्फ। कुल्ली।

जुलम-(न०) १ अत्याचार। जुल्म। २ जबरदस्ती। ३ बलात्कार। ४ अन्याय। ५ अपराध।

जुलमी-(वि०) १ जुलम करने वाला। अत्याचारी। २ प्रजापीडक। ३ अन्यायी। ४ जबरदस्ती करने वाला। ५ अपराधी।

जुलाई-(ना०) ईसवी सन् का सातवाँ महीना।

जुलाब-(न०) १ रेचन। २ दस्त लगाने वाली औषधि।

जुलावो-(न०) जुलाहा। ततुवाय।

जुव-(वि०) १ दो। २ दोनों।

जुवक-(न०) युवक। युवापुरुष।

जुवती-(ना०) जवान स्त्री। युवती।

जुवराज-(न०) युवराज।

जुवळ-(न०) १ पाँव। पर। २ युग्म। जोड़ा। (वि०) १ दोनों। २ दो। युगल।

जुवाडो-दे० जुआडो।

जुवार-दे० जुआर।

जुवारी-(वि०) जुआ खेलने वाळा। जुआरी। द्यूतकार।

जुवो-दे० जुओ।

जुहार-(न०) १ नमस्कार। प्रणाम। २ कार्य सिद्ध हो जाने पर अमुक देवता को की जाने वाली मनौती। ३ जुहार के रूप म देवता को चढ़ाया जाने वाला नैवेद्य।

जुहारडा-(न०) नमस्कार प्रथ 'जुहार' सूचक का ब० व० रूप।

जुहारणो-(क्रि०) १ अभिवादन करना। प्रणाम करना। जुहारना। २ देवस्थान म देवता को भेंट पूजा करने को जाना।

जुहारी-(ना०) १ विवाह की एक प्रथा जिसम पाणिग्रहण विधि समाप्त होने के बाद दूल्हा का पहिले अपने बड़ीलो को और फिर सबधियो के यहाँ जुहार (प्रणाम) करने को जाना। २ जुहारी मे प्राप्त हुई भेंट। ३ पाणि ग्रहण के बाद वर-वधू का गठजोड सहित गाजे बाजे के साथ देवस्थानो मे जाकर भेंट पूजा चढाना।

जूग-(न०) १ ऊट। २ ऊट को बिठाते समय बोला जाने वाला एक शब्द। जुण।

जूभलाणो-दे० झुभळावणो।

जूभलावणी-(ना०) १ अकुलान। ऊब। जूभलाहट। २ क्रोध।

जूभळावणो-(क्रि०) १ ऊबना। अकुलाना। जूभलाना। २ क्रोध करना।

जूहर-दे० जौहर।

जूओ-(न०) जुआ। द्यूत। (वि०) जुदा। अलग।

जूजवो-(वि०) जुदा जुदा।

जूजुओ दे० जूजवो।

जूझ-(न०) युद्ध। सग्राम।

जूझ-झळ-(ना०)१ युद्धाग्नि। युद्ध ज्वाला। भयकर सग्राम। २ युद्ध करने की तीव्र इच्छा।

जूझणो-(क्रि०) १ युद्ध करना। २ सिर कट जाने के बाद धड से लडना।

जूझाऊ-(वि०) १ युद्ध से सबध रखने वाला। युद्ध सबधी। युद्ध का। २ युद्ध करने वाला।

जूभार-*(न०)* १ शूरवीर। २ वह वीर जो सिर कटने पर भी लडता रहता है।
जूभारजी-*(न०)* लोक देवता की भांति पूजा जाने वाला जूभार वीर। *(अव्य०)* व्यंग्य उपालंभ या वाक्युद्ध आदि प्रसंगों में प्रयुक्त असामर्थ्यसूचक एक अव्यय। जैसे-वरलाज थारी बहादरी। दया निधान जूभारजी न।
जूट-*(वि०)* १ जुटा हुआ। २ दो। *(न०)* १ जोडा। २ सन। पटसन।
जूटणो-*(क्रि०)* १ युद्ध में प्रवृत होना। २ युद्ध करना। ३ संलग्न होना। जुडना। ४ भिडना। टकराना।
जूडी-*(ना०)* १ पूली। जूरी। मुट्ठा। २ तमाकू के पत्तों की जूरी।
जूडो-*(न०)* बालों को माथे पर लपट कर बनाई हुई गुत्थी। अम्बोडो।
जूठो-*(वि०)* १ चतुर। चालाक। होशियार। २ कपटी। छली। २ उच्छिष्ट। एठा। जूठा।
जूण-*(ना०)* १ योनि। जन्म। २ जीवन। जिंदगी।
जूत-*(न०)* जूता। पगरखो। पान्नाण। जूता।
जूती-*(ना०)* पगरखी।
जूतो-*(न०)* जूता। पगरखो। जोडो।
जूथ-*(न०)* १ समूह। यूथ। २ सेना।
जूथार-*(न०)* हाथी।
जून-*(न०)* इसवी सन् का छठा महीना।
जूनाळी-*(ना०)* एक तोप। *(वि०)* जूनी। पुरानी।
जूनी-*(वि०)* १ पुरानी। प्राचीन। २ जीर्ण। जर्जरित।
जूनो-*(वि०)* १ पुराना। प्राचीन। २ जर्जरित। जीर्ण।
जूपणो-*(क्रि०)* १ जुतना। संलग्न होना। २ प्रज्वलित होना। लगना।
जूवटो-*(न०)* जुआ। द्यूत।
जूसण-*(न०)* कवच।
जूह-*(न०)* १ झुंड। यूथ। समूह। २ सेना। ३ युद्ध। ४ हाथी। *(वि०)* बहुत बडा।
जूं-*(ना०)* १ बालों का एक कीडा। जूं।
जूंअरो-दे० जुआडो।
जूंग-*(न०)* १ ऊंट। २ ऊंट को बिठाने के लिये बोला जाने वाला शब्द। झुण।
जूंगी-*(ना०)* ऊंटनी। सांयड।
जूंजळो-*(न०)* लाल रंग का कीडा जो प्रायः विष्टा की गोली बना कर पांवों से लुढ़काता और उलटा चलता हुआ बरसात में दिखाई देता है। गोगीडो। गूकीडो।
जूंभणो-दे० जूभणो।
जूंभळ-*(ना०)* झुंभलाहट। चिढ।
जूंभळाट-दे० जूंभळ।
जूंभार-दे० जूभार।
जूंभारजी-दे० जूभारजी।
जूंट-*(ना०)* १ जुडी हुई दो चीजें। दो जुडी हुई चीजों से बनी एक वस्तु। २ जोडी। ३ दो दो की एक पंक्ति। ४ झुंड।
जूंटो-*(न०)* १ जोडी। जोडा। २ हाथ बुनी चद्दर का एक जोडा।
जूंठो-दे० जूंवो।
जूंवो-*(न०)* बाजरी आदि के एक दाने में से निकले हुए अनेक पौधे। एक जड में से फूटे हुए नाज के अनेक पौधों का समूह।
जूंमर-दे० जुआडो।
जूंसरो-दे० जुआडो।
जूंसहरी-दे० जुआडो।
जे-*(अव्य०)* १ यदि। २ जो। *(सर्व०)* १ जिस। २ जिसने। जिण। ३ जो। ४ वह।
जेई-दे० जळी।
जेखळ-*(न०)* सूअर।
जेज-*(ना०)* १ देर। विलंब। २ समय। जेस। मौको।

जेजिया–(न०) मुसलमानी शासन काल का एक यात्रा कर जो हिंदुग्रो पर लगता था। जजिया।
जेझ–दे० जेज।
जेट–(ना०) १ समूह। २ एक के ऊपर एक इस प्रकार बरतना आदि की लगी हुई तह। ३ चपातियो की तह। रोटियो की तह। ४ एक ही प्रकार की वस्तुग्रो का क्रमबद्ध ढर। ५ राशि। ढर।
जेठ (न०) १ पति का बडा भाई। भसुर। २ वशाख ग्रौर ग्रापाढ के बीच का महीना ज्येष्ठ मास। विक्रम सवत का तीसरा महीना। (वि०) बडा। ग्रग्रज।
जेठळ–(न०) १ बडा भाई। २ जेठ। भसुर। ३ युधिष्ठिर।
जेठवै रा सोरठा–(न०) ऊजली चारणी की ग्रोर से कहा गया जठवै क प्रति विरहाद्गार काव्य।
जेठाणी–(ना०) पति के बड भाई की पत्नी। जेठ की पत्नी। जेठानी।
जेठी–(वि०) बडी। (न०) बडा भाई।
जेठीपाय–दे० जेठी पाराय।
जेठी पाराथ–(न०) १ भीम। २ युधिष्ठिर।
जेठीवाहु–(वि०) ग्राजानु बाहु।
जेठूतरो–(न०) जेठ का लडका। जठौता।
जेठूती–(ना०) जठ की लडकी।
जेठूता–दे० जेठूतरा।
जेठो–(वि०) बडा। (न०) बडा भाई।
जेण–(सव०)१ जिस। जिसन। २ जिससे।
जेणि–दे० जेण।
जेतलो–(वि०) जितना।
जेती–(वि०) जितना।
जेता–(वि०) जीतने वाला। विजेता। (नि०व०व०) जितने।
जतो–(वि०)१ जितना। २ जीतन वाला। विजता।
जेथ–(क्रि०वि०) १ जहाँ। जिस जगह। २ वहाँ। उस जगह।
जेथी–(क्रि०वि०)१ जिससे। जिस कारण। २ जिसके लिये।
जेदी–(ग्रव्य०) जिस दिन। उस दिन।
जेव–(ना०) जेब। खीसा। खूजियो। गूजियो।
जेम–(क्रि०वि०) १ जिस प्रकार। जसे। यथा। जिसभाँत। २ ज्यों। ज्यु।
जेर–(ना०) गभगत बालक के ऊपर की झिल्ली। जरी। ग्राँवळ। (वि०) १ परास्त। पराजित। २ जिसे बहुत हैरान किया जाये। (क्रि०वि०) वश मे। ग्रधिकार मे। ताव।
जेर करणो–(मुहा०) १ पराजित करना। हराना। २ हैरान करना। ३ ग्रधिकार मे करना।
जरणो–(क्रि०) १ वश म करना। बधन म डालना। २ नष्ट करना। ३ परास्त करना।
जेरवद–(न०) १ घाडे की बाग को तग के साथ जोडन वाला चमडे का तसमा। २ चमडे का कोडा। चाबुक। ३ रस्सी की भाँति काम म ग्रान वाली चमडे की लबी पट्टी। तसमा।
जर वार–(वि०) १ जिसको बहुत हानि उठानी पडी हो। हानिग्रस्त। २ जिसे किसी विपत्ति क कारण बहुत सहन करना पडा हो। ग्रापत्तिग्रस्त। विपत्तिग्रस्त।
जेरी–द० जेठो।
जेळ–(ना०) १ बदीगृह। कद। कदखाना। २ रोक। रुकावट। ३ बधन। ४ कद खाने की सजा। कैद।
जेळखानो–(न०) कारागृह। जलखाना। बदीगृह।
जेळी–(न०) लकडी के दो तीक्ष्ण लबे फल या नोको वाला कृषको का एक लबा

डडा, जिससे कँटीली भाड़ियाँ हटाई जाती है। बेई। जेरी।
जेवड-(ना०) रस्सा। रज्जु।
जेवडी-(वि०) जसी। (ना०) रस्सी। डोरा।
जेवडो-(न०) डोर। रस्सा। (वि०) जैसा। जिस प्रकार का।
जेवर-(न०) गहना। आभूषण।
जेवरलो-(वि०) १ विरल। थोडा। २ कोई कोई। बहुत में से कोई। (क्रि०वि०) कही कही।
जेवला-दे० जळो।
जेमळ-(ना०) जेसल नामक प्रसिद्ध भाटी राजा जिसने वि० स० १२१२ सावन शु० १२ को जसलमेर नगर और उसके पास की पहाडी पर किले का निर्माण करवाया।
जेसळगिर-(न०) जसलमेर का पहाड और उस पर बना हुआ किला। २ जसलमेर नगर।
जेसळमेर-दे० जसलमेर।
जेसाण-(न०) १ जसलमेर नगर। २ जसलमेर राज्य।
जेसाणो-दे० जसाण।
जेह (ना०) १ किनारा। अंतिम सिरा। किसी वस्तु का अंतिम भाग। २ दीवार की चुनाई में ईंटों की एक ऐसी तह जो दीवाल के औसार से कुछ बाहर निकली हुई होती है। ३ दीवाल के ऊपरी भाग में सामान रखने के लिये लगाया जाने वाला पत्थर। टोंड। ताक। ४ डोरी। रस्सी। ५ प्रत्यचा। (क्रि०वि०) जसा। जडो।
जेहडी-(वि०) जसी। जिस प्रकार की। जडी। जिसी।
जेहडो-(वि०) जसा। जिस प्रकार का। जडो। जिसो।
जेहर-(ना०) पैर का एक गहना। पाजेब।
जेहवी-(वि०) जसी। जिस प्रकार की। जडी।
जेहवो-(वि०) जसा। जिस प्रकार का। जडो। जिसो।
जेहि-(सर्व०) जिस। (क्रि०वि०) जसे। ज्यो। ज्यु।
जेही-(वि०) जसी। जडी।
जेहो-(वि०) जैसा। जिस प्रकार का। जडो। जिसो।
जै-दे० जय।
जैकार-(न०) जय घोष। जयकार। जय जय कार।
जै गोपालजी री-दे० जै रामजी री।
जै जकार-(अव्य०) १ जय जयकार। २ जय जय शब्द का उच्चारण। विजय ध्वनि। जयघोष। ३ विजय की प्रसन्नता का घोष।
जैडै-(क्रि०वि०) १ जब तक। जठा ताई। २ तब तक। जठ ताई।
जैडो-(वि०) जसा। जिसो।
जैत-(ना०)जीत। विजय। (वि०)विजयी।
जैतखभ-(न०) १ विजय स्तम्भ। जय-स्तम्भ। २ विजय प्राप्त करने वाला मे प्रमुख वीर। ३ युद्ध विजयी वीर पुरुष।
जैतवादी-(वि०) १ सदा विजय प्राप्त करने वाला। २ युद्ध विजयी।
जैतवार-(वि०) विजयी। जीतने वाला। (ना०) १ लडाई। २ लाभ। ३ लाभ का काम। जीत का काम। ४ विजयोत्सव। ५ विजयवेला। ६ विजय।
जैतहथ-(वि०) विजयी।
जैताई-(वि०) जीतने वाला। विजयी।
जैत्र-(ना०) विजय। जीत।
जैत्राई-दे० जताई।
जैन-(न०) १ जैन धर्म। २ जिन का उपासक। ३ जनधर्म का पालन करने वाला। श्रावक।

जैनी-(न०) जैन मतावलम्बी। श्रावक।

जैमाळ-(ना०) जयमाला। विजयमाला।

जै-रामजी-री-(अव्य०) १ परस्पर मुलाकात के समय, भुजबाथ लेते समय तथा बिछुड़ते समय उच्चारण किया जानेवाला एवं पत्राचार करते समय लिखा जाने वाला एक अभिवादन पद। २ नमस्कार करने एक वैष्णव उद्गार। (इसी अभिप्राय के जै श्रीकृष्ण जै-गोपालजी री जै इकलिंगजी री, जै माताजी री, राम राम सा, जै रामजी री सा इत्यादि इष्ट पद उच्चारण करने तथा पत्राचार में लिखने की प्रथा भी व्यवहृत है।)

जैवार-(ना०) १ आनंद की कला। सुखमय। २ विजयोत्सव। विजयानंद। ३ वृद्धि। लाभ।

जैवारो-(न०) १ लाभ या प्रसन्नता की कोई बात। जयवार। २ किसी वस्तु में वृद्धि। बरकत। ३ बचत। ४ बचत की भावना। ५ कमाई। ६ सफलता। ७ मुनाफा। लाभ। वृद्धि। ८ तथ्य। ९ सार (तत्व)। १० सुजीवन।

जैसळ-दे० जसळ।

जैसळगिर-दे० जसळगिर।

जैसळमेर-दे० जसळमेर।

जैसाण-दे० जेसाण।

जैरो-(वि०) १ जिसका। जिणरो। २ जिसका। जिणारो।

जो-(अव्य०) १ यदि। अगर। २ तो के साथ प्रयुक्त होने वाला संशय शर्त तथा तुलना का सूचक शब्द। (सव०) कहे गये सर्वनाम या संज्ञा का एक संबंध वाचक सर्वनाम जिसके संबंध में और कुछ कहने का है।

जोइजणो-(क्रि०) १ आवश्यक होना। जरूरी होना। २ जरूरत पड़ना। ३ देखा जाना।

जोइजतो-(वि०) १ चाहिये उतना। जितने की आवश्यकता हो। २ आवश्यक। जरूरी।

जोइजवाण-(ना०) आवश्यकता। जरूरत।

जोइजै-(अव्य०) १ चाहिये। २ आवश्यकता है। ३ उचित है। उपयुक्त है। ४ देखा जाय। ५ देखिये। देखो। ६ देखना चाहिये।

जोइसी-(न०) ज्योतिषी।

जोईसर-(न०) योगेश्वर।

जो कै-(अव्य०) जो कि। यद्यपि। अगरचे।

जोख-(न०) १ जोखने का बाट। तौल। २ तौल। जोख। वजन। ३ जोखने का काम या भाव। ४ जोखने की रीति। ५ आनंद। मौज। ६ अभिलाषा। ७ दान। ८ वैभव। ऐश्वर्य।

जोखणी-(ना०) १ तकड़ी। २ जोखने का काम।

जोखणो-(क्रि०) १ तोलना। वजन करना। २ परीक्षा करना। देखना। ३ आनंद करना। मौज करना।

जोखता (ना०) योषिता। स्त्री।

जोखम-(ना०) १ विपत्ति की आशंका। २ भविष्य में होने वाले नुकसान की दहशत। ३ हानि। जोखम। ४ अनिष्ट। अवांछित। ५ अमंगल। ६ संकट। विपत्ति। ७ साहस। ८ उत्तरदायित्व। जिम्मेदारी। जोखिम। ९ आभूषण, धनमाल आदि। जोखिम। १० बीमा। आगोप। इन्स्युरेन्स।

जोखमणो-(क्रि०) १ नाश करना। बरबाद करना। २ चोट लगाना। ३ तोड़ना फोड़ना। ४ बेकार बनाना। ५ विकृत करना। ६ नाश होना। बरबाद होना। ७ चोट लगना।

जोखमी-(वि०) जोखमवाली।

जोखमीजणो-(क्रि०) १ नुकसान पहुँचना। २ चोट लगना। ३ हड्डी टूटना। ४ विकृत होना। ५ मकान वस्तु आदि का कोई भाग खंडित हो जाना।

जोखाई-(ना०)१ तौलने जोखने का काम। २ तोलने जोखने की मजदूरी। पारिश्रमिक। ३ मौज। आनंद।

जोखामणी-(ना०) १ तौलने का काम। तुलाई। २ तौलने का पारिश्रमिक।

जोखो-(न०) १ नुकसान। हानि। २ खतरा। जोखम। भय। ३ उत्तरदायित्व। ४ अमानत। ५ धनमाल।

जोग-(न०)१ संयोग। २ फकीरी। ३ योग साधना। ४ ज्योतिष का योग। ५ प्रारब्ध। ६ हार राजा के लोकगीता की संज्ञा। ७ संबंध। ८ फलित। (वि०)१ योग्य। लायक। २ उचित। (अव्य०)१ की ओर का। के लिये। जैसे—नाम जोग हुंडी। साहू जोग हुंडी चलण का दीजो। २ के प्रति। जैसे—अमुकचंदजी जोग।

जोग अधीस-(न०) १ महादेव। २ योगेश्वर। योगाधीश।

जोगटो-(न०) १ बनावटी जोगी। पाखंडी योगी। २ योगी के प्रति तुच्छार्थ शब्द।

जोगण-(ना०) १ योगिनी। साधुनी। संन्यासिनी। साधाणी। २ रणचंडी। ३ शक्ति। ४ जोगी की पत्नी। ५ जोगी जाति की स्त्री। ६ ज्वार बाजरी की फसल का एक रोग।

जोगणपीठ-(न०) १ दिल्ली। २ योगिनी पीठ।

जोगणपुर-(न०)दिल्लीनगर। योगिनीपुर।

जोगणपुरा-(न०)बादशाह। (वि०) दिल्ली का निवासी।

जोगणी-(ना०) १ योगिनी। तपस्विनी। २ रण की देवी। रणपिशाचिनी। ३ दुर्गा की एक सहचरी। ४ ज्योतिषानुसार योग्य प्रकरण में दिशाओं में स्थित रहने वाली योगिनी। ५ वर्षागम से पहले के बादल। ६ मेघ घटा। ७ ज्वार की फसल का एक रोग।

जोगणी पीठ-दे० जोगण पीठ।

जोगणीपुर-(न०) दिल्ली।

जोगतो-(वि०) १ योग्य। लायक। २ मुनासिब उचित। ठीक। (स्त्री०जोगती)

जोगमाया-(ना०) १ योगमाया। महाशक्ति। २ सृष्टि को उत्पन्न करने वाली ईश्वर की शक्ति। ३ ईश्वर की माया। माया। ४ दुर्गा।

जोगवाई-(ना०) १ योग्यता। लायकी। २ स्थिति। दशा ३ व्यवस्था। प्रबंध। ४ सम्पत्ति। धन माल। ५ सम्पन्नावस्था। ६ सामर्थ्य। ७ मौका। अवसर।

जोग साधना-(ना०) योग की साधना।

जोगाजोग-(न०) अनुकूल और प्रतिकूल संयोग।

जोगाट-(वि०)योग्य। लायक। दे० जुगाड़।

जोगाणंद-(न०) महादेव। शंकर।

जोगानजोग-(अव्य०) १ संयोगवशात्। योगानुयोग। २ बनने का समय हो जाने से। जोग आने पर। ३ अवसर आ जाने पर।

जोगाभ्यास-(न०) योग का अभ्यास।

जोगिणपुर-(न०) दिल्ली नगर।

जोगियो-(न०) १ योगी। २ श्रीकृष्ण।

जोगिंदर-(न०) योगींद्र।

जोगी-(न०) १ योग साधना करने वाला। तपस्वी। योगी। २ पूंगी वादक सँपेरा। ३ एक जाति।

जोगीराज-(न०) योगियों में श्रेष्ठ। महायोगी।

जोगीसर-(न०) योगीश्वर। बड़ा योगी।

जोगेसर-दे० जोगीसर।

जोगा-(वि०) १ योग्य। लायक। २ उपयुक्त। उचित। ३ अधिकारी।
जोजन-(न०) चार कोस की दूरी। योजन। जोयण।
जोजर-(वि०) १ जीर्ण शीर्ण। २ वृद्ध। बूढो।
जोजरो-(वि०) १ टूटा फूटा। २ दरार पड़ा हुआ। ३ खोखला। ४ खाली। ५ पोला। ६ शिथिल। ढीला। ७ बहुत मार खाया हुआ। ८ धन संपत्ति खोया हुआ। खूंगेला।
जोट-(ना०) जोडी।
जोटो-(न०) १ एक सी दो चीजों की जोड। जोडा। युग्म।
जोड-(ना०) १ योग। जोड। २ योगफल। ३ संधिस्थान। ४ जोडने की क्रिया। ५ जोडा। ६ प्रतियोगिता में समान उतरने वाली दूसरी चीज। ७ स्त्रियों के परों का एक गहना। ८ काव्य रचना। ९ बराबरी। समानता। (वि०) समान। बराबर।
जोड-(न०) १ वह तराई वाला स्थान जो घास के लिये सुरक्षित हो। घास का रक्षित वन भाग। २ कच्चा तालाब। जोहड।
जोड कळा-(ना०) १ काव्य कला। २ कविता। काव्यरचना।
जोडको-(न०) १ एक साथ जन्मे हुए दो बालक। २ एक दूसरी के साथ जुडी हुई एक जैसी दो वस्तुएं।
जोडग-(न०) १ कवि। २ संग्राहक।
जोडणी-(ना०)१ शब्द में आये हुए अक्षरों को मात्राओं सहित लिखना या कहना। शब्द लिखने के लिये अक्षरों के जोडने की रीति। वतनी। जोडनी। हिज्जे। वर्ण योजना। २ जोडने का काम या रीति। जोडाई। ३ जोडने की कला।
जोडणो-(क्रि०)१ बैल, घोड़े आदि को गाडी, हल आदि से युक्त करना। जोते से पशुओं जुआठे आदि के साथ बांधना। जोतना। जोडना। २ वाहन या सवारी तैयार करना। ३ दो वस्तुओं को सी कर चिपका कर झालन देकर या अन्य उपाय द्वारा मिला कर एक करना। ४ टूटे हुए पदार्थों को मिला कर एक करना। ५ जुदी वस्तुओं का संबंध करना। ६ इकट्ठा करना। संग्रह करना। ७ संख्याओं का योगफल निकालना। जोड लगाना। ८ काव्य रचना करना। ९ पदों की योजना करना।
जोड तोड-(ना०) १ काव्य रचना। २ पैरोडी रचना। ३ विचारों की घड भंजन। ४ तजवीज। प्रबन्ध। ५ सामान जुटाने की हलचल। ६ तैयारी। ७ दांव पेच। छल कपट।
जोडाई-(ना०) १ जोडने का काम। २ जोडने की उजरत।
जोडाखर-(न०)संयुक्ताक्षर। मिलित वर्ण। जोडाक्षर।
जोडाजोड-(अव्य०)१ बिल्कुल पास। पास पास। अडोअड। २ पडोस में।
जोडाण-(न०) १ मिलन। मिलान। २ संधान। सांधा। सांधो।
जोडायत-(ना०) पत्नी। (वि०) बराबरी का।
जोडियाळ-(वि०) १ जोडा का। बराबरी का। २ समवयस्क। ३ जोडे के रूप में साथ रहने वाला। (न०) मित्र। साथी।
जोडी (ना०) १ युग्म। जोडी। २ जूती का जोडा।
जोडीदार-(वि०) १ जोड का। बराबरी का। २ समवयस्क। (न०)मित्र। दोस्त। साथी।
जोडीवाल-(न०) १ मित्र। साथी। २ पति। ३ पत्नी। ४ वे जिनकी समान

जोडी हो । *(वि०)* १ भागीदार । २ साथ काम करने वाला ।

जोडॅ-*(वि०)* सदृश । तुलना । बराबर । *(क्रिoवि०)* १ निकट । नजदीक । २ साथ मे *(न०)* १ तुलना । सादृश्य । समता । २ साथ । संग ।

जोडो-*(न०)* १ छोटा कच्चा तालाब । नाडो । पावरा । २ बगर बधा हुआ कच्चा कुंआ । द्रह दहड । वड ।

जोडो-*(न०)* दो एक सी वस्तुए । एक आकार प्रकार के दो पदाथ । २ नर और मादा का युग्म । ३ स्त्री और पुरुष का युग्म । पति और पत्नी । दपति । ४ समानता । बराबरी । मुकाबला । ५ दोनो पांवो के जूते । जूती जोडा । पगरखा । खासडा । खाहडा । *(वि०)* वह जो बराबर हो ।

जोढ-दे० जोध ।

जोणो-*(क्रि०)* १ देखना । ताकना । २ ढूंढना । तलाश करना ३ प्रतीक्षा करना । राह देखना ।

जोत-*(न०)* १ वह तसमा जिससे बलगाडी का जूआ बल की गरदन पर रख कर बांधा जाता है । *(ना०)* २ परब्रह्म । ज्योति स्वरूप । ३ ज्योति । रोशनी । ४ घी का दीपक जो देवी देवता के आगे जलाया जाता है । देव दीपक । देवमदिर का दीपक । ५ दृष्टि । नजर । ६ दीया । दीपक । ७ दीये की लौ । ८ आग । नग्न । ९ प्राण ।

जोतख-दे० ज्योतिष ।

जोतखी-दे० जोतसी ।

जोतणो-*(क्रि०)* १ बल घोडे आदि को गाडी हल आदि से सलग्न करना । जोतना, २ वाहन या सवारी तयार करना । ३ काम में लगाना । ४ बगार मे लगाना ।

जोतबळ-दे० जोतवळ ।

जोतर- *(न०)* बलो को गाडी आदि मे जोतने के लिये गले में डाला जाने वाला चमडे का पट्टा । जुआठ से बंधी हुई रस्सी या तसमा जिससे बल की गरदन को जुआठे से बांधा जाता है । जोतो । जोत । २ जुताई । ३ आसामी को जोतने के लिये दी गई भूमि ।

जोतरणो-दे० जोतणो ।

जोतलिंग-*(न०)* १ ज्योतिर्लिंग । २ शिव के मुख्य बारह लिंग । द्वादश ज्योतिर्लिंग । शिव ।

जोतवत-*(वि०)* ज्योतिवाला । *(न०)* घी । घृत ।

जोतवान-*(वि०)* ज्योतिवाला ।

जोतसरूप-*(न०)* ज्योति स्वरूप । परब्रह्म । परमात्मा ।

जोतसिखा-*(ना०)* १ दीपक । २ ज्योति शिखा ।

जोतसी-*(न०)* ज्योतिषी ।

जोतवळ-*(न०)* पानी । जल ।

जोताई-*(ना०)* १ जोतने का काम । २ जोतने की मजदूरी ।

जोतिस-*(न०)* ज्योतिष ।

जोतिसरूप-*(न०)* ज्योतिस्वरूप । परब्रह्म । परमात्मा ।

जोती-दे० जोत २ से ८

जोतीगर-*(न०)* १ ज्योतिकर । सूर्य । २ चन्द्रमा ।

जोध-*(न०)* १ पुत्र । २ योद्धा । शूरवीर । *(वि०)* युवा । जवान ।

जोध जडाग-*(वि०)* अत्यधिक जोरावर ।

जोध जवान-*(वि०)* १ पूर्ण यौवनशाली । पूर्ण युवक । २ मजबूत । दृढ । कद्दावर । ३ बलशाली । शक्तिशाली ।

जोधपुर-*(न०)* स्वतन्त्र भारत के राजस्थान राज्य के अन्तगत भूतपूर्व मारवाड राज्य की राजधानी का नगर । इसे राव जोधा ने वि स १५१५ की जेठ सुदि ११ शनिवार को बसाया था ।

जोधहरो–(न०)१ जोधपुर को बसाने वाले राव जोधा का वंशज। २ योद्धा। वीर।
जोधाण–(न०) जोधपुर शहर का काव्योक्त नाम। जोधपुर।
जोधाणनाथ–(न०) जोधपुर का राजा।
जोधाणो–दे० जोधाण।
जोधार–(न०) १ पुत्र। २ योद्धा। (वि०) जबरदस्त।
जोधो–(न०) १ वीर पुरुष। योद्धा। २ जोधपुर नगर को बसाने वाले राव जोधा का वंशज।
जोनग्रपीट–(ना०) आग। अग्नि। वासदेव।
जोनल–(ना०) ज्वार धान्य।
जोनी–(ना०) १ योनि। भग। २ योनि। जन्म। ३ जीवन। जिंदगी। ४ प्राणियों की जाति।
जोप–(ना०) युवावस्था। मोटियार पणो।
जोपणो–(क्रि०) १ पूर्ण युवावस्था को प्राप्त होना। २ विकास होना। ३ युवावस्था के जोश में आना। ४ शोभा देना। ४ बलवान बनना। दृढ़ होना।
जोम–(न०) १ शक्ति। बल। २ नशा। मस्ती। ३ उत्साह। उमंग। ४ क्रोध। ५ गर्व। घमंड। ६ आवेश। जोश। ७ बल का गर्व।
जोमरद–(न०) जवान और बहादुर। जवाँमर्द। साहसी। मोटियार।
जोमग–(वि०) १ शूरवीर। २ जोशीला। जोमवाळो।
जोमड–दे० जोमग।
जोय–(ना०) १ स्त्री। २ पत्नी। बहू। लुगाई।
जोयण–(ना०)१ आँख। नेत्र। २ योजन। जोजन।
जोयसी–(न०) ज्योतिषी।
जोर–(न०) १ शक्ति। बल। २ वश। काबू। अधिकार। ३ उन्नति। बढ़ती। ४ प्रबलता। तेजी। ५ वेग। प्रवाह। ६ भरोसा। ७ दबाव। प्रभाव। ८ महनत। श्रम।
जोर-जबराई–(ना०) १ जबरदस्ती। २ जुल्म।
जोर जुलम–(न०) १ अत्याचार। जुल्म। २ बलात्कार।
जोरदार–(वि०) १ प्रबल। शक्तिशाली। जोर वाला। २ अच्छा। श्रेष्ठ।
जोराई–(ना०) जबरदस्ती।
जोराजोरी–(ना०) जबरदस्ती। बलपूर्वक।
जोरामरदी–दे० जोराजोरी।
जोरावर–(वि०) १ जोर वाला। शक्तिवान। २ बहादुर। शूर वीर। ३ साहसी। ४ उत्साही।
जोरावरी (ना०) १ जबरदस्ती। बलात्। २ बहादुरी। वीरता। शूरता। ३ अत्याचार। ४ उत्साह।
जोरिगण–(न०) जुगनू।
जोरू–(ना०) पत्नी। लुगाई।
जोवणियो–(वि०) १ देखने वाला। २ तलाश करने वाला। ३ तपास करने वाला। खबर लेने वाला। सम्हालने वाला।
जोवणो–(क्रि०) १ देखना। २ तलाश करना। खोजना। ३ ध्यान देना। समझना। ४ आजमाना। अनुभव करना। ५ बाट देखना। राह देखना। प्रतीक्षा करना।
जोवन–(न०) यौवन। तारुण्य। जोबन।
जोवती–(ना०) यौवनवती। युवती। (वि०) १ देखने वाली। २ देखती हुई।
जोवा जोग–(वि०) १ देखने योग्य। २ सुंदर। मनोहर। ३ विचारने लायक।
जोवाडणो–(क्रि०)१ दिखाना। दिखलाना। बतलाना। २ ढुंढवाना। तलाश करवाना।
जोवावणो–दे० जोवाडणो।

जोश–दे० जोस ।
जोशी–जोसी ।
जोस–(न०) १ जोश । आवेग । २ उत्तेजना । सरगर्मी । ३ उफान । उबाल । ४ उमंग । उत्साह । ५ मनोवेग ।
जोसण–(ना०) जोशी की स्त्री । जोशिन । (न०) १ कवच । जूसण । २ एक आभूषण ।
जोसणियो–(वि०) १ कवचावृत्त । कवचधारी । २ जूसणकर । कवच बनाने वाला । (न०) कवच । जूसण ।
जोसी–(न०) १ ज्योतिषी । जोशी ।
जोसीलो–(वि०) जोश वाला । जोशीला ।
जोसेल दे० जोसीलो ।
जोहड–(न०) छोटा और कच्चा तालाब । नाडो । नाडको ।
जोहडो–(न०) जोहड । कच्चा तालाब । नाडो ।
जो हुकम–(न०)१ जुल्म । धाड़ । (अव्य०) १ गुरुजनों से बातचीत करते समय स्वीकारोक्ति के रूप में उनके सम्मान हित बोला जाने वाला 'हाँ' अर्थ सूचक एक अव्यय । २ हुक्म के मुताबिक । जो आज्ञा । जैसी आज्ञा दें । हाँ ।
जोंक–(ना०) पानी में रहने वाला एक कीड़ा ।
जौहर–दे० जँवर ।
जौहरी–दे० जँवरी ।
ज्ञ–(न०) ज+ञ का संयुक्ताक्षर । ग्य तथा ग्न का उच्चार वाला संयुक्ताक्षर । वैदिक भाषा में 'ज्न' उच्चारण किया जाता है । (वि०) समास के अंत में जानकार अर्थ को बतलाने वाला ।
ज्ञान–(न०)१ बोध । समझ । २ जानकारी । ३ तत्वज्ञान । ब्रह्मज्ञान । ४ भान । प्रतीति । ५ समझने की वस्तु ।
ज्ञान पांचम–(ना०) कार्तिक शुक्ल पंचमी ।
ज्ञानवान–(वि०) १ ज्ञानी । २ समझदार । बुद्धिमान । ३ विवेकी ।
ज्ञानी–(वि०) ज्ञानवान । जानकार । (न०) आत्मज्ञानी । ब्रह्मज्ञानी ।
ज्याग–(न०) यज्ञ । जाग ।
ज्यादा–(वि०) अधिक । बहुत । घणो ।
ज्यान–(ना०) १ हानि । नुकसान । २ आफत । बला । ३ प्राण । जान । जीव । (अव्य०) जैसे । उसी प्रकार ।
ज्यान–(सर्व०) जिनको ।
ज्यार–(क्रि०वि०) जब । जिस समय ।
ज्यार–दे० ज्यार ।
ज्यास–(ना०) १ संतोष । २ धीरज । ढाढ़स । ३ शांति । ४ भरोसा । विश्वास ।
ज्यां–(अव्य०) उदाहरण स्वरूप । जैसे । (सर्व०) १ जिनके । २ जिनको । ३ जिन्हों । (क्रि०वि०) १ जहाँ । जिस जगह । २ जब तक ।
ज्यांरो–(सर्व०) जिनका ।
ज्यांलग–(क्रि०वि०) १ जब तक । २ जहाँ तक ।
ज्यां सूधी–(क्रि०वि०) जब तक ।
ज्याहूं–दे० ज्यां ।
ज्यु–(अव्य०) ज्यों । जैसे । जिस प्रकार ।
ज्योतगी–(न०) ज्योतिषी ।
ज्योति–दे० जोती ।
ज्योतिलिंग–दे० जोतलिंग ।
ज्योतिष–दे० जोतिस ।
ज्योनार–(ना०) १ दावत । २ भोज । जीमणवार ।
ज्वर–(न०) बुखार । ताप । ताव ।
ज्वान–(न०) १ जवान । युवक । २ सिपाही । सैनिक ।
ज्वार–(ना०) १ एक मोटा नाज । जुआर । २ समुद्र का चढ़ाव ।
ज्वार बाजरी–(ना०) गुजारा । भरण पोषण । (ला०)
ज्वारी–(न०) जुआरी ।

ज्याळ-(ना०) १ ज्वाला। २ आफत। संकट।
ज्वाळमुख-(न०) १ तोप। २ बंदूक।
ज्वाळनळ-दे० ज्वाळानळ।
ज्वाळा-(ना०) ज्वाला। अग्निशिखा।
ज्वाळा देवी-(ना०) १ एक प्रसिद्ध देवी जिसका स्थान वागड़ा जिले में है। २ कोहकाफ पर्वत की एक देवी।
ज्वाळानळ-(न०) अग्नि।
ज्वाळामुखी-(वि०) जिसके मुख में से (जिसके अंदर से) अग्नि निकलती है। (न०) १ वह पर्वत जिसके भीतर से अग्नि धुंआ और पिघला हुआ पत्थर निकलता है। (ना०) १ एक देवी। ज्वालादेवी। २ ज्वालामुखी तीर्थ।
ज्वांई-(न०) जमाई। दामाद।

झ

झ-(न०) संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का चौथा व्यंजन।
झक-(ना०)१ मछली। २ सनक। खब्त। ३ जिद। हठ। (वि०) उज्वल। चमकीला।
झककेतु-(न०) कामदेव। झषकेतु।
झकझक-(ना०) १ व्यर्थ की बकवाद। कहा सुनी। २ हुज्जत। तकरार।
झक झोरणो-१ जोर से हिलाना। २ झटका मारना।
झक मारणो-(मुहा०) १ व्यर्थ समय नष्ट करना। २ अपनी बरबादी करना। ३ सनकी बातें करना। ४ अव्यवहारी बातें करना। ५ छलकपट की बातें करना। ६ झूठा और व्यर्थ आचरण करना।
झकर-दे० भिकर।
झकळ-झकळ-(अनु०) पानी को थपथपाने का शब्द।
झकळवाणी-(न०) वह द्रव व्यंजन (साग सब्जी तीवन आदि) जिसमें जरूरत से ज्यादा पानी पड़ गया हो।
झकळवाणो-दे० झकळवाणी।
झक वेधक-दे० झकवेधण।
झक-वेधण-(न०) अर्जुन
झकाझक-(वि०) १ साफ और चमकीला। २ ताजा। बढ़िया। सुंदर।
झकाळ-(ना०) व्यर्थ की बातें। बकवाद।
झकाळियो-(वि०) व्यर्थ की बातें करने वाला।
झकाळी-दे० झकाळियो।
झकी-(वि०) १ हठी। जिद्दी। २ व्यर्थ की बातें करने वाला।
झकुंड-(न०) मस्तक। मुकुट।
झकोळणो-(क्रि०) १ पानी तेल आदि किसी तरल पदार्थ में किसी वस्तु को डुबा कर बाहर निकालना। २ पानी को इधर उधर हिलाना। ३ पानी आदि में किसी वस्तु को बार बार डुबाना निकालना। ४ धोना। प्रक्षालन करना। ५ डुबाना। ६ नहाना। ७ नहलाना।
झकोळियो-(न०) आवश्यकता से अधिक पानी पड़ गया हो वह साग तीवन आदि।
झकोळो-(न०) १ स्नान। २ कम पानी का स्नान। ३ प्रक्षालन। ४ डुबकी। ५ पानी का धक्का। ६ साग तीवन आदि वह वस्तु जिसमें आवश्यकता से अधिक पानी पड़ गया हो।

ज्याळ-(ना०) १ ज्वाला। २ आपत्त। संकट।

ज्याळजन्त्र-(न०) १ तोप। २ बंदूक।

ज्याळनळ-दे० ज्वाळानळ।

ज्वाळा-(ना०) ज्वाला। अग्निशिखा।

ज्वाळा देवी-(ना०) १ एक प्रसिद्ध देवी जिसका स्थान कांगड़ा जिले में है। २ कोहकाफ पर्वत की एक देवी।

ज्वाळानळ-(न०) अग्नि।

ज्वाळामुखी-(वि०) जिसके मुख में से (जिसके अंदर से) अग्नि निकलती है। (न०) १ वह पर्वत जिसके भीतर से अग्नि, धुंआ और पिघला हुआ पत्थर निकलता है। (ना०) १ एक देवी। ज्वालादेवी। २ ज्वालामुखी तीर्थ।

ज्वांई-(न०) जमाई। दामाद।

झ

झ-(न०) संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला में चवर्ग का चौथा व्यंजन।

झक-(ना०)१ मछली। २ सनक। लकन। ३ जिद। हठ। (वि०) उज्वल। चमकीला।

झककेतु-(न०) कामदेव। भषकेतु।

झकझक-(ना०) १ व्यर्थ की बकवाद। कहासुनी। २ हुज्जत। तकरार।

झक झोरणो-१ जोर से हिलाना। २ झटका मारना।

झक मारणो-(मुहा०) १ व्यर्थ समय नष्ट करना। २ अपनी बरबादी करना। ३ सनकी बातें करना। ४ अव्यवहारी बातें करना। ५ छलकपट की बातें करना। ६ भूठा और व्यर्थ आचरण करना।

झकर-दे० भिक्कर।

झकळ झकळ-(अनु०) पानी को थपथपाने का शब्द।

झकळवाणी-(न०) वह द्रव व्यंजन (साग सब्जी तीवन आदि) जिसमे जरूरत से ज्यादा पानी पड गया हो।

झकळवाणो-दे० भकळवाणी।

झक वेधक-दे० झकवेधण।

झक-वेधण-(न०) अर्जुन

झकाझक-(वि०) १ साफ और चमकीला। २ ताजा। बढ़िया। सुंदर।

झकाळ-(ना०) व्यर्थ की बातें। बकवाद।

झकाळियो-(वि०) व्यर्थ की बातें करने वाला।

झकाळी-दे० भकाळियो।

झकी-(वि०) १ हठी। जिद्दी। २ व्यर्थ की बातें करने वाला।

झकुंड-(न०) मस्तक। भ्रकुट।

झकोळणो-(क्रि०) १ पानी तेल आदि किसी तरल पदार्थ में किसी वस्तु को डुबा कर बाहर निकालना। २ पानी को इधर उधर हिलाना। ३ पानी आदि में किसी वस्तु को बार बार डुबाना निकालना। ४ धोना। प्रक्षालन करना। ५ डुबाना। ६ नहाना। ७ नहलाना।

झकोळियो-(न०) आवश्यकता से अधिक पानी पड गया हो वह साग तीवन आदि।

झकोळो-(न०) १ स्नान। २ कम पानी का स्नान। ३ प्रक्षालन। ४ डुबकी। ५ पानी का धक्का। ६ साग तीवन आदि वह वस्तु जिसमें आवश्यकता से अधिक पानी पड गया हो।

झड़ाझड़-(अनु०) प्रहार पर प्रहार करने का शब्द। (क्रि०वि०) लगातार। जल्दी।

झड़ी-(ना०) १ लंबे समय तक होने वाली वर्षा। जोर की वर्षा। २ लगी धार [illegible]। बात का तांता [illegible]। ३ किसी काम या बात का बिना रुके लगातार होते रहना।

झडूला-(न०ब०व०) १ बच्चे के सिर पर के गर्भ के बाल। बच्चे के सिर पर के वे बाल जो जन्म के बाद मुंडाये नहीं गये हों। २ बच्चे के जन्म के बाद के वे बाल जो अमुक अवधि के बाद किसी देवता के सम्मुख मुंडवाने की मानता से रखे गए हों। मानता के बाल। झडोलिया।

झडूलियो-(न०)गर्भ के बालों वाला बच्चा। वह बच्चा जिसका मुंडन संस्कार नहीं हुआ हो। झडोलियो।

झडूलो-दे० झडूलिया।

झडोलिया-दे० झडूला।

झडोलिया-उतारणो-(मुहा०) बच्चे के जन्म के बालों को उतरवाने और शिखा रखने का संस्कार करना। चूड़ाकर्म संस्कार का सम्पादन करना।

झडोलियो-दे० झडूलिया।

झणकार-(न०) झांझर आदि का झन झन शब्द। झालर टकोरे आदि का शब्द। झनकार।

झणकारो-दे० झणकार।

झणझणाट-(ना०) १ झनझनाट। झनकार। २ हाथ पाँव आदि किसी अंग के दबे रहने से होने वाली सनसनाहट। झुनझुनी। ३ रह रह कर होने वाली पीड़ा। ४ पीड़ा की सनसनाहट। ५ जलन।

झणझणी-(ना०) १ क्रोध। रोस। २ झुनझुनी। सनसनाहट।

झणण-झणण-दे० झणझणाट।

झनकार-दे० झणकार।

झनन-झनन-दे० झणण झणण।

झन्नाटो-(न०) सहसा होने वाला झनझन शब्द।

झपकी-(ना०) १ हलकी नींद। थोड़े समय की नींद। २ बैठे बैठे आ जाने वाली नींद। झोंक।

झपट-(ना०) १ झपटने की क्रिया। २ वेग। ३ चपेट ४ टक्कर। ५ भूतादि [illegible] आना। [illegible]। ६ [illegible] का [illegible]।

झपटणो (क्रि०) १ किसी वस्तु को लेने पकड़ने या किसी पर प्रहार करने के लिये वेग से उसकी ओर बढ़ना। झपटना। २ [illegible]। ३ खोसना। छीनना। झपटना। ४ हमला करना। ५ झपाटे से हमला करना।

झपताळ-(न०) संगीत में पाँच मात्राओं का एक ताल। झपताल।

झपाक-(क्रि०वि०) शीघ्रता से।

झपाझप (ना०)१ झड़पा झड़पी। २ मारा मारी। मारकाट। ३ प्रहार पर प्रहार। (क्रि०वि०) जल्दी।

झपाझपी-(ना०)१ हाथापाई। मारामारी। भिड़ंत। २ हड़बड़ी। ३ शीघ्रता। ४ भागदौड़।

झपाटो-(न०) १ झपाटा। वेग। फर्राटा। २ हवा का धक्का। झपटा। ३ चपेट। टक्कर। ४ जोर से किया हुआ प्रहार। ५ शीघ्रता।

झपीट-(ना०) जोर की थप्पड़। तमाचा। झापड़।

झपटो-दे० झपाटो।

झपोझप-(न०) १ झपाटा। (क्रि०वि०) झटपट। जल्दी।

झबक-दे० झबको।

झबकणो-(क्रि०)१ कुछ कुछ दिखाई देना। २ प्रकाश की रेखा दिखना। ३ आभास होना। झलकना। झळकणो। ४ प्रकाश

भटपग-(न०) गरुड़।
भटमार-(न०) तलवार।
भटाक-(क्रिवि०) १ एक दम। अचानक। २ त्वरा से। फुर्ती से। ३ तत्काल। तत्क्षण। तुरत।
भटाभट-(क्रिवि०) भटपट। जल्दी जल्दी। (न०) १ शीघ्र शीघ्र शस्त्रों के प्रहार। २ शस्त्रों की झड़ी।
झटायत-(वि०) १ प्रहार करने वाला। २ प्रहार करने में निपुण। ३ वीर।
झटोभट-(क्रिवि०) जल्दी जल्दी। भटपट।
झड़-(ना०) १ छंद की पंक्ति। २ अनवरत होने वाली वर्षा। सतत वृष्टि। अविच्छिन्न वर्षा। ३ अवरोध रहित कथन। धारा प्रवाह बोलते ही रहना। ४ प्रहार।
झड़-उथल-(ना०) छंद रचना की एक पद्धति जिसमें एक झड़ की पुनरावृत्ति होती है।
झड़-उलट-दे० झड़ उथल।
झड़ ओझड़-(वि०) १ क्षत विक्षत। (क्रिवि०) प्रहारों को सहन करता हुआ। (न०) १ प्रहारों पर प्रहार। २ अजस्र प्रहार।
झड़कणो-(क्रि०) १ झटकना। फटकारना। २ झिड़कना। डाटना। फटकारना। धमकाना।
झड़कावणो-(क्रि०) झटकना।
झड़णो-(क्रि०) १ कटकर गिरना। टूट कर गिरना। २ वृक्ष से फलों का टूट कर गिरना। ३ ढह पड़ना। ४ प्रहार होना। ५ शस्त्रों से कट कर मरना। ६ साफ होना। ७ कम होना। ८ बीमारी के कारण दुबला होना।
झड़ती-(ना०) १ तलाशी। २ पुलिस द्वारा तलाशी।
झड़प-(ना०) १ छत में लगाया जाने वाला कपड़े का बड़ा पंखा। २ कपड़े को झपट कर डाली जाने वाली हवा और वह कपड़ा। ३ झपटने की क्रिया। ४ त्वरा। शीघ्रता। ५ वेग। ६ टक्कर। ७ कपड़े से लगने वाली झपट। ८ मुठभेड़। मुकाबिला। ९ बोलचाल। वाग्युद्ध।
झड़पड़ती वेळा-(ना०) १ संध्या समय। २ राहगीरों को लूटने खोसने का संध्या समय जिससे तुरत कोई पीछा नहीं कर सके।
झड़पणो-(क्रि०) १ खोसना। छीनना। २ कपड़े से हवा डालना। ३ भड़पना। झपटना। ४ किसी काम को वेग देना। काम को द्रुतगति से करना। ५ आक्रमण करना। टूट पड़ना।
झड़पा-झड़पी-(ना०) १ खोसा-खोसी। छीना झपटी। २ हाथापाई। भिड़ंत।
झड़बाण-(न०) १ बाणों की वर्षा। २ एक साथ अनेक बाण छोड़ने का एक अस्त्र।
झड़बोर-(न०) झड़बेरी का फल। छोटा बेर।
झड़बोरड़ी-(ना०) झड़बेरी का वृक्ष। झड़बेरी।
झड़ मंडण-(न०) लगातार होने वाली वर्षा।
झड़-मंडणो-(मुहा०) बहुत समय तक वर्षा का होते रहना। लंबे समय तक बरसते रहना।
झड़ा ओझड़ी-दे० झड़ ओझड़।
झड़ाक-(क्रिवि०) एक दम। भटपट। भट से। जल्दी से।
झड़ाको-(न०) १ वाग्युद्ध। वाक् कलह। कहासुनी। २ आरोप प्रत्यारोप। ३ कटाक्ष। व्यंग्य। ४ लड़ाई। भिड़ंत। मुठभेड़। टक्कर।

देना। ५ मद प्रकाश देना। ६ बिजली का चमकना। ७ रह रह कर प्रकाश फैलना। ८ चमकना।

झबकारो-दे० झबको।

झबको-(न०) १ मद प्रकाश। २ अंधेरे मे क्षणिक प्रकाश। ३ आभास। झलक। ४ प्रकाश। ५ प्रकाश की चमक। कौंध।

झबझब-(ना०)थोडा थोडा चमकना। झब झबाट।

झबझबाट-दे० झबझब।

झबझबी-(ना०) स्त्रियो के पहिनने का एक गहना।

झबरक-(वि०)खूब प्रकाशमान। तेज प्रकाश देने वाला।

झबरकणो-(क्रि०)१ फहराना। २ दिखना। ३ चमकना। प्रकाश देना।

झबळकणो-(क्रि०) १ घडे आदि बरतन के हिलने से उसके अदर के पानी का हिलना। २ इस प्रकार हिलने से शब्द का होना। ३ उछलना। फुदकना।

झबूकडो-(न०) बिजली की चमक। कौंध।

झबूकणो-(क्रि०) १ चमकना। प्रकासना। २ बिजली का चमकना। कौंधना। भबूकना। ३ दिखाई देना।

झबोळणो-(क्रि०) १ वस्त्रादि को पानी मे डुबाना। २ पानी मे डुबा कर निकालना। ३ किसी तरल पदार्थ मे किसी वस्तु को डुबाकर तरबतर करना।

झबोळो-(न०) पानी आदि तरल पदार्थों में डुबाने या डूबने की क्रिया। डुबकी। डोब।

झमक-(ना०)१ एक शब्दालकार। यमक। २ नाच की एक गति। तीव्र गति का नाच। ३ नखरा। ४ पाजेब या घुघरू का शब्द। झनकार। ५ नखरे की चाल। ठमक। ६ चमक। प्रकाश। ७ बिजली। ८ एक वर्णवृत्त।

झमझमाट-(न०) १ झमझमाहट। छम छमाहट। २ हलकी जलन। थोडी जलन।

झमरी-(ना०) लकडी की डंडी मे घोडे की पूछ के बालो का गुच्छा या कपडे को बाँध कर बनाया हुआ मक्खियाँ आदि उडाने का एक उपकरण। चमरी।

झमरो-(न०) पत्तो सहित वृक्ष की पतली टहनी (प्राय नीमकी)।

झमाळ-(न०) १ एक डिंगल छद। २ स्वनाम सनक डिंगल काव्य।

झमेलो-(न०) १ टटा। बखेडा। झझट। २ दिक्कत। अडचन। ३ समझ मे नहीं आने जसी बात। ४ पचीदा काम।

झरझरकथो-(न०) जीर्ण और फटा हुआ वस्त्र। बहुत पुराना वस्त्र।

झरझरी-(ना०) जस्त की बनी सुराही।

झरट-(ना०) १ कपडा फाडते समय होने वाली आवाज। २ खरोच।

झरडको-(न०) १ खरोच। २ किसी के झटके की आवाज। ३ कपडा फाडते समय होने वाली आवाज।

झरडो-(न०) १ खरोच। २ एक लोक देवता। बांडो झरडो।

झरडोजी-(न०) एक लोक देवता। बांडो झरड़ो।

झरणाटो-(न०) १ सहसा झनझन होने वाला शब्द। झन्नाटा।

झरणो-(न०)प्रपात। झरना। सोता (क्रि०) झरना। टपकना। स्रवित होना।

झरमर-(न०) १ वर्षा की फुहार। बूंदा बूंदी। २ वर्षा की ध्वनि। ३ जमन सिलवर नामक धातु।

झरोखो-दे० झरोखो।

झरो-(न०)छेदो वाला बडा छिछला कलछा जिससे कडाही मे से तली जाने वाली पूरियाँ सेवें आदि निकाली जाती हैं।

झरोखा-(न०) १ गवाक्ष। २ गोखड़ो। ३ बारजा। बरामदा। ४ अटारी।

झळ-(ना०)१ ज्वाला। २ दाह। जलन। ३ क्रोध। गुस्सा। ४ तीव्र खुजली। ५ ईर्ष्या। ६ उग्र कामना। ७ पूर्व दिशा। ८ अग्नि।

झलक-(ना०) १ ढंग। तौर तरीका। २ स्वरूप। बनावट। ३ चमक। आभा। ४ प्रतिबिम्ब।

झळक-(ना०) १ झलक। चमक। ओप। २ संकेत। आभास। झलक।

झळकणो-(क्रि०) १ चमकाना। प्रकाशित होना। २ छलकना। ३ मद दिखना। ४ जोश म आना। आवेश म आना। ५ क्रोध करना। ६ आपे मे नही रहना। धीरज नही रख सकना।

झनकी-दे० झालकी।

झळकी-(ना०) झलक। मद चमक।

झनको-(न०) घास का एक परिमाण।

झळको-(न०) १ चमक। २ प्रतिबिंब। ३ परछाई।

झळजीहा-(ना०) अग्नि। वासदे।

झळझळाट-(न०) १ चमक। २ गहरा प्रकाश। दृप्ति।

झनणो-(क्रि०) १ पकड़ा जाना। पकड़ मे आना। २ वश मे आना। ३ किसी अंग का अकड़ जाना। ४ प्रारम्भ होना। ५ शोभा देना। फिलना।

झळणो-(क्रि०) धातु की टूटी हुई वस्तु म टाँके से झालन लगना। टाँके से जुड़ना।

झळपट-(ना०) १ लम्बी और तेज ज्वाला। २ हवा के तेज झोके से किसी अंग पर लायी हुई आँच की जलन।

झळमाळा-(ना०) अग्नि। वासदे।

झळळाट-(न०) प्रकाश। चमक।

झळ-लूआं-(ना०) खूब गरम लूएँ। लू की ज्वालाएँ।

झळहळ-(ना०) १ अग्नि। २ प्रकाश। (वि०) जाज्वल्यमान।

झळहळणो-(क्रि०) १ खूब प्रकाश देना। २ चमकना। ३ चमचमाना।

झळा-दे० झळ।

झळाबोळ-(वि०) १ अत्यधिक। बहुत। २ जाज्वल्यमान। तेजस्वी। ३ उग्र। तेज। ४ तप्त। तपा हुआ। ५ विपत्ति ग्रस्त। ६ प्रज्वलित। ज्वालाबोड। (न०) १ सङ्कटापन्न स्थिति। २ अग्नि प्रकोप। ३ विपत्ति। संकट।

झळामळ-(न०) बिजली का प्रकाश।

झनावणियो-(वि०) पकड़वाने वाला।

झनावणो-(क्रि०) पकड़ाना। थमाना।

झळावणो-(क्रि०) किसी धातु की वस्तु को टाँके से जुड़वाना।

झळिंग-दे० झळीगो।

झळियां-(ना०) ज्वालाएँ।

झळीगो-(न०) घास या तेल जैसे पदार्थों मे एकाएक प्रज्वलित होने वाली अग्नि की बड़ी ज्वाला।

झलू-दे० झेलू।

झलोझल-(वि०) १ मध्यगत। बीच का। मध्य का। २ पूर्ण। बराबर। ठीक। ३ संपूर्ण वैभव युक्त। वैभवशाली।

झल्लरी-(ना०) १ एक बाद्य। झालर। २ घुंघरुओं की माला। ३ शोभा के लिये लगायी जाने वाली जालीदार किनारी। झालरी।

झंक-(ना०) १ दरार। २ गुंजन। ३ झंकार।

झकार-(न०) १ झनझनाहट। झनकार। २ झींगुर, भौंरे आदि की गुंजन।

झकारी-(न०) भ्रमर। भौंरा। भमरो।

झखर-(न०) १ पुष्प-पत्र विहीन वृक्ष। झड़े हुये पत्तों वाला वृक्ष। झंखाड़। २ पतझड़। (वि०) पत्ररहित। अपत्र।

झखाड़-(न०) १ वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गये हो। २ काँटे वाले वृक्ष पौधा की झाड़ी। ३ शून्य प्रदेश।
झगर-(न०) १ गहन वन। झाड़ी। २ जंगल। वन।
झगी-(ना०) झाड़ी। बीहड़।
झगो-(न०) छाछ।
झझट-(ना०) बखेड़ा। झमेला। पचड़ा।
झझेड़णो-(क्रि०)१ हिलाना। झकझोरना। झटका देना। २ हैरान करना।
झझोड़णो-दे० झझेड़णो।
झड़ाळो-(वि०) १ जिस पर झंडा लगा हो। झंडे वाला। २ जो झंडा लेकर चलता हो। झंडेवाला।
झडी-(ना०) १ छोटा झंडा। झंडी। २ रेलगाड़ी को चलाने के संकेत की हरी झंडी और रोकने के संकेत की लाल झंडी।
झडो-(न०) ध्वज। निशान। पताका।
झपताळ-(न०) एक मात्रिक छंद।
झपूरियो-(वि०) १ लंबे और घने बालों वाला। २ बिखरे बालो वाला।
झपो-(न०) पत्तो सहित टहनी। टहनी सहित पत्तो का गुच्छा। झब्बा।
झब-दे० झपो।
झबाझोळ-(वि०)१ पसीने से तर। २ तर बतर।
झँवरो-दे० भमरो।
झाउडो-(न०) दे० झाऊ।
झाऊ-(न०) पत्तो की जगह पतली सींको वाला एक वृक्ष। पिचुल वृक्ष। झाऊ। झाउडो।
झाग्रोलियो-(न०) १ दही जमाने की मिट्टी की कठौत। २ दही से भरी हुई मिट्टी की परात या कठौत।
झाकझमाळ-(ना०) १ सजावट। तैयारी। २ शोभा। ३ शृंगार। ४ उत्सव। ५ प्रकाश।
झाकर-झूरर-(न०) किसी वस्तु का छोटे टुकड़ो या कणो के रूप में बचा भाग।
झाकळ-(ना०) १ ओस। शबनम। २ कुहरा।
झाग-(न०) फेन।
झागड-झोटो-(वि०) १ बिना शऊर वाला। अशिष्ट। २ मूर्ख। ३ गंदा। ४ लड़ाई करने में मजबूत। ५ पहल वान।
झागड़ू-(वि०)१ मुकदमा बाज। २ झगड़ने वाला। झगड़ालू। ३ कलहप्रिय।
झागूड-(न०) झाग। फेन।
झागोटा-(न०) फेन समूह। झाग ही झाग।
झाझो-दे० जाझो।
झाट-(ना०) १ प्रहार। २ हवा का जोर का धक्का। ३ युद्ध। ४ छपाटा। ५ झपट। ६ भय। ७ बीमारी की अशांति। ८ टक्कर। ९ मुकाबला। १० सर्प के फन का प्रहार। डसना। डसणो।
झाटक-(न०) एक शस्त्र। (ना०) प्रहार। चोट। (वि०) १ प्रहार करने वाला। २ साहसी। ३ योद्धा।
झाटकणो-(क्रि०) १ झटकना। फटकना। २ कपड़े आदि से गर्द को झटकना। ३ झटका देना। ४ सूप से साफ करना। ५ प्रहार करना। तलवार चलाना। ६ डाँटना। उलटी सीधी सुनाना। फट कारना।
झाटको-(न०) १ झटका। प्रहार। २ कपड़े आदि से झटक कर की जाने वाली सफाई।
झाटभड-(ना०) १ शस्त्रो के प्रहार पर प्रहार। अनवरत प्रहार। २ शस्त्रों के प्रहारो की ध्वनि।
झाट लेणो-(मुहा०) टक्कर लेना। टक्कर झेलना।

झामळो-(न०) ग्रांख का एक रोग। दृष्टि मांध।

झामो-(न०) दे० झावा।

झारणो-(क्रि०) १ जल आदि को झरने देना। २ थोड़े २ पानी की धार देना। ३ गरम पानी की धार से धोना या सेक करना।

झारा झूरो-दे० खारा खेरो।

झारिया-(न०) घोट-छान कर तैयार की हुई पेय भंग। छनी हुई भांग। पीसी हुई भाग का द्रव रूप। विजयाद्रावण।

झारिया जमावणो-(मुहा०) भंग पीना।

झारी-(ना०) एक टोंटीदार जलपात्र। झरझरी।

झारो-(न०) १ नाश्ता। कलेवा २ तांबे पीतल आदि का टोंटीदार एक जलपात्र। ३ पानी आदि झारने की क्रिया। ४ छेदों वाला बड़ा छिछला कलछा जिससे कड़ाही में तली हुई पूरियाँ, सेवें आदि निकाली जाती हैं। ४ सेवें छांटने का छेदों वाला कलछा। झावा।

झाळ ग-(न०) १ अग्नि। २ ज्वाला सहित अग्नि। ज्वालाग्नि। ३ अग्नि के समान जाज्वल्यमान। ४ घासफूस के जलने से होने वाली बड़ी ज्वाला।

झाळ-(ना०) १ बैलगाड़ी में ऊंचे तक घास कुतर आदि भरने के लिये उसके नीचे बिछाने तथा उसे ढकने का मोटा जट का बुना कपड़ा। २ झाल में जितना घास आदि समा सके या बैलगाड़ी में जितना भरा जा सके उतना परिमाण। ३ बैलगाड़ी में भरा जा सके उतना नाज आदि। ४ स्त्री के कान का एक आभूषण।

झाळ-(ना०) १ ज्वाला। २ क्रोध। ३ क्रोध का आवेश। झल्लाहट। ४ झालन। झाळण।

झालवी-(न०) १ झाल में जितना घास आदि समा सके या बैलगाड़ी में जितना भरा जा सके उतना परिमाण। २ बैलगाड़ी में (झाल, वष्टित होकर) भरा जा सके उतना नाज, घास आदि। ३ पाला, कड़ब आदि घास से भरी हुई बैलगाड़ी।

झालड़ी-दे० झालकी।

झाळण-(न०) १ किसी, धातु की वस्तु में टांके (धातु जोड़ने का साधन) से की गई जुड़ाई। झालन। २ छेद संधि आदि को टांके से जोड़ने की क्रिया। ३ जोड़। टांका।

झालण-(न०) १ सूत का बना हुआ मोटा और बड़ा कपड़ा जो बैलगाड़ी में नाज ढोने के लिये बिछाया जाता है तथा छाया करने के लिये बांधा जाता है। २ घास आदि भरने के लिये घेरे के रूप में लगाया जाने वाला जट का बुना हुआ, लंबा चौड़ा पाल।

झालणो-(क्रि०) १ पकड़ना। ग्रहण करना। २ थामना। ३ सहन करना। ४ उत्तर दायित्व लेना।

झाळणो-(क्रि०) धातु की बनी हुई वस्तु को टांके से जोड़ना। झालना। झालन लगाना।

झ ळ पूळो-(वि०) १ ज्वाला के समान विकराल। २ अत्यन्त क्रोधी।

झाळ ज्वाळ-(वि०) १ अग्नि के समान तेजस्वी। २ महाक्रोधी। (ना०) महाग्नि।

झालर-(ना०) १ टकोरा। घड़ियाल। घंटा। २ शोभा के लिये कपड़े आदि में लगाई जाने वाली गोट या किनारी। ३ जालीदार किनारी। ४ पत्तों वाला एक शाक। ५ एक जल पात्र। ६ हाथी के कान का एक आभूषण।

झालर बाव-(न०) १ चारों ओर सीढ़ियों वाली बावली। चौतरफ पांड्यों वाली बापी या कुआं। झालरो।

झालरियो-(क्रि०) झल्लरी वाला। (ना०) १ कंठा। हार। झालरी। २ झालर वावी।

झालरी-(ना०) १ किसी वस्तु के किनार पर शोभावृद्धि के लिये लगाया जाने वाला उपांग। हाशिया। झल्लरी। २ चमड़े के परस में जोड़ के रूप में लगाया जाने वाला चमड़े का टुकड़ा। ३ एक वाद्य।

झालरो-(ना०) १ स्त्रियों के गले में पहिनने का एक आभूषण। कंठा। २ कूप के समान एक जलाशय जिसमें चारों ओर चौकोर पंक्तियाँ बनी होती हैं। झालर वापी। झालर वाव।

झालावाटी-(ना०) झाला राजपूतों का प्रदेश। २ भूतपूर्व झालावाड रियासत।

झालावाड-(ना०) १ राजस्थान का एक नगर। २ भूतपूर्व झालावाड राज्य।

झाली राणी-(ना०) १ विवाह का एक लोक गीत। २ विवाह के गीतों की लोक नायिका। ३ झाला क्षत्रिय वंश की राजा की पत्नी।

झाळी-(वि०) ज्वाली। (ना०) ज्वाला।

झालो-(ना०) १ संकेत। इशारा। २ हाथ का संकेत। हाथ हिला कर किया हुआ संकेत। ३ झाला क्षत्रिय।

झाळोझाळ-(ना०) १ प्रचंड अग्नि प्रकोप। २ अग्नि ज्वालाओं का विस्तार। ३ विस्तृत रूप से प्रज्वलित अग्नि। ४ उग्र क्रोध। क्रोधाग्नि।

झावो-(ना०) १ हाथों पाँवों पर रगड़ कर मैल छुड़ाने का मिट्टी का एक उपकरण। झाँवाँ। २ एक छिछला पात्र।

झावालियो-दे० झाग्रोलियो।

झाई-(ना०)१ मंद प्रकाश। २ प्रतिबिम्ब। परछाई। ३ भ्रम। ४ चमड़ी में पड़ने वाला कालापन।

झांक-(ना०) झांकने की क्रिया या भाव।

झांकणो-(क्रि०) १ झुककर देखना। २ ओट में छिपकर कुछ देखना।

झांकी-(ना०) १ दर्शन। २ अवलोकन। ३ देव मंदिर में समय समय पर थोड़े समय के लिये कराया जाने वाला दर्शन। ४ व्यवसायी ब्राह्मण या साधुओं द्वारा प्रतिदिन नई नई देव लीलाओं की मिट्टी से बना कर और शृंगार करके रात्रि के समय दिखायी जाने वाली लीलाओं के दृश्य। ५ भनक। आभास। ६ दृश्य। ७ झांकने की जगह। बारी। ८ भरोसा।

झांखो-(ना०) १ मंददृष्टि। २ मंदप्रकाश। (वि०) १ मंद रंग वाला। २ मंद। धुंधला। तेजहीन। ३ मलिन।

झांख-(ना०) आँख का एक रोग। दृष्टि-मांद्य।

झांखर-(ना०) भखाड़।

झांखरो-(ना०)१ झड़े हुए पत्तों वाला वृक्ष। २ पतझड़।

झांखाणो (क्रि०) १ कुम्हलाना। २ दिखाई पड़ना। दिखलाई देना। (वि०) १ कुम्हलाया हुआ। २ उदासीन। म्लान। ३ लज्जित। संकुचित। खिसोहा। (क्रिभू०) कुम्हला गया।

झांखो-दे० झांकी।

झांग-(ना०)१ ज्वाला। २ दीप ज्वाला। ३ पतली टहनियों व घूस का ढेर।

झांगर बेड-(ना०) १ स्त्री और उसके बच्चे। २ फूहड़ स्त्री और उसके मैले कुचेले बच्चे। ३ एक ही व्यक्ति के बहुतेरे बच्चे बच्चियों का झुंड।

झांगरी-(ना०) मरुप्रदेश का वह सजल भाग जहाँ कुँए वृक्ष खेती आदि हरियाली और कुछ बस्ती हो। मरुस्थल में

छाटी उपजाऊ भूमि । शाद्वल । मरुति स्तान । मरुद्वीप ।

भांभ-(ना०) बड़े मजीरा की जोड़ी । ताल । करताल ।

भांभर-(ना०) चलने के समय मधुर ध्वनि करने वाला स्त्रियों के पाँवों का एक गहना । पाजेब । पैंजनी ।

भांभरको-दे० जांभरको ।

भांभरिया-(न०ब०व०) बच्चे के भाभर । छोटे भाभर ।

भांट-(न०) १ उपस्थ के । गुह्येंद्रिय के बाल । घुसो घुहो । (वि०) तुच्छ ।

भांटो-(न०) १ कलह । २ झगड़ा ।

भांटोलियो-(वि०) अत्यंत तुच्छ । निकम्मा । हलका ।

भांप-(ना०)१ कुदान । छलांग । २ झपट । ३ खोमन की क्रिया या भाव ।

भाप लेणी-(मुहा०) छलांग मारना ।

भापो-(न०) १ झोंपड़ा । २ घर । ३ झोंपड़े या बाड़े का द्वार । ४ द्वार । दरवाजा । ५ फाटक ।

भाया देणी-(मुहा०) चिल्लाकर बोलना । नाक से बोलना ।

भांवळा-(न०) आँखों से कम दिखने का एक रोग । यदा कदा रंग बिरंगी लहरें दिखने का एक रोग ।

भाग-(ना०) भाड़ी ।

भांमा-(न०) धावा । भासा ।

भिकर-(ना०) १ जिक्र । कथा । बातचीत । चर्चा । २ व्यर्थ की बातचीत ।

भिकाळ-(ना०) व्यर्थ या अधिक बोलने या बातचीत करते रहने का भाव । बकवाद । झकाळ ।

भिकाळियो-(वि०) बहुत बोलने वाला । बकवादी । वाचाल ।

भिकाळी-दे० भिकाळियो ।

भिकणो-(क्रि०) १ चमकाना । २ शोभना ।

भिझक-(ना०) १ भय । हिचक । २ लज्जाजनित संकोच । ३ लज्जा । ४ भय । ५ भव ।

भिडकणो-(क्रि०)१ डांटना । फटकारना । २ तिरस्कारपूर्वक बात करना ।

भिडकी-(ना०) डांट । फटकार ।

भिण-(ना०) छाछ । छाछ ।

भिरमटियो-(न०) १ बालिकाओं का एक नृत्यमय खेल । २ बालिकाओं का एक लोक गीत ।

भिरमिट-दे० भिरमटियो ।

भिरी-(ना०) १ लकड़ी पत्थर आदि की बनी हुई किसी सपाट वस्तु के किनारे पर कुरेदी हुई लंबी लकीर । २ दरज । दरार । ३ किनारी । हाशिया । ४ एक रोग । ५ भट्टी ।

भिलणो-(क्रि०) १ प्रकाशित होना । २ शोभा देना । फबना । ३ प्रकाश देना । ४ समृद्ध होना । ५ भर जाना । पूर्ण होना । ६ ग्रहण लगना ।

भिलम-(ना०) १ कवच के ऊपर गले और कंधों को ढक रहने वाली लोहे की कड़ियों की जालीदार जाली । २ युद्ध के समय गरदन मुख और कंधों पर बाँधा की लोहे की जाली ।

भिलम टोप-(न०) भिलमयुक्त टोप । वह शिरस्त्राण जिसके नीचे गरदन और कंधों की रक्षा करने वाली जाली लगी रहती है । भिलम और टोप ।

भिलमिल-(न०) १ हिलता हुआ प्रकाश । अस्थिर प्रकाश । २ शोभा यात्रा का एक लवाजमा ।

भिल्ली-(ना०) १ अति सूक्ष्म चमड़ा । पतला चमड़ा । २ ऐसी पतली चमड़ी या तह जिसमें होकर दूसरी ओर की वस्तु दिखाई पड़े ।

भिगोर-*(न०)* मार का शब्द ।
भिझोटी-*(ना०)* राग विशेष ।
भी-*(न०)* घी । घृत ।
भीक-*(ना०)* १ शस्त्रों के प्रहार का शब्द । २ शस्त्र प्रहार । ३ अविरल शस्त्र प्रहार । ४ खूब जोर की वर्षा । ५ वर्षा की अजस्रता । ६ मौसर मौसर आदि भोज प्रसंगों पर भोज्य सामग्री की मुक्त हस्त छूट । ऊपरा ऊपरी परोसगारी । रौठ । ७ बिना कंजूसी के उदारतापूर्वक किया जाने वाला खर्च । ८ सतम सितारा का काम । ६ कार चोबी । १० बारीक मिनारी ।
भीक उडणी-*(मुहा०)*१ बहुतसी तलवारों का एक साथ प्रहार होना । २ शस्त्र प्रहारों का शब्द होना । ३ विशेष भोजन आदि अवसरों पर वस्तुओं का लूट से उदारतापूर्वक व्यवहार या खर्च होना ।
भीभळियो-*(न०)* १ सवारी का ऊंट । २ एक लोकगीत । जमाई के सवारी के ऊंट का एक लोकगीत । ३ ऊंट ।
भीणो-*(वि०)* १ बारीक । पतला । महीन । २ तीक्ष्ण । पैना । ३ सुरीला । मधुर स्वर वाला । ४ जो स्थूल न हो । पतला । कृश । *(न०)* १ ऊंट की एक जाति । २ बहुत तेज चलने वाला ऊंट ।
भीणोडो-दे० भीणो ।
भीणो मोरियो- *(न०)* एक लोक गीत ।
भीण्ण-*(वि०)* फटा पुराना । जीर्ण । *(न०)* फटा पुराना वस्त्र । जीर्ण वस्त्र । चिथडा ।
भीरा भीरा-*(न०)* १ वस्त्र पत्र आदि के फाड चीर कर किये हुये टुकडे । २ जीर्ण वस्त्र में बनी अनेक दरारें और फटन ।
भीरो-*(ना०)* १ वस्त्र कागज या चद्दर आदि की लंबी पट्टी । २ वस्त्र कागज या चद्दर आदि का काट छांट करने से बची हुई रद्दी कतरन (पु० भारा)
भीरोहर-*(ना०)*१ निछरावल । निछावर । उत्सर्ग । २ भीर भीर । ३ टुकडे टुकडे ।
भील-*(ना०)* बहुत बडा प्राकृतिक जलाशय । कुदरती सरोवर । २ एक जंगली क्षुप । ३ वज्रदन्ती क्षुप ।
भीलणो-*(क्रि०)* स्नान करना । नहाना । सपाडो करणो ।
भीलावणो-*(क्रि०)* नहलाना । स्नान कर वाना । सपडावणो ।
भीरणा-*(क्रि०)* १ रोना । २ व्यर्थ में समय बरबाद करना । ३ काम को बिगाडना । ४ सुस्ती से काम करना । धीरे धीरे करना । ५ दुखडा रोना । रोना रोना । ६ कुढना । खीजना । ७ पश्चाताप करना । ८ तरसना ।
भींग-*(ना०)* छोटी मछली । भींगी ।
भींगर-*(ना०)* १ भींगुर । भिल्ला । तिमरी । २ मछुआ । धीवर । ३ मच्छी ।
भींगी-*(ना०)* छोटी मछली । झींगा ।
भींट-*(ना०)* चौकोर कपडे के एक और के कोने गिरा कर दूसरे कोने म बावकर और दूसरे दोनों सिरों को हाथ में पकड कर बनाया हुआ नाज भरने का साधन ।
भींटा-*(न०ब०व०)* १ बकरे के बाल । २ सिर के लंबे बाल । (व्यंग्यार्थी) ३ सिर के बिखरे हुए बाल । लंबे केश (बिना सवारे हुए) ।
भींटिया-*(न०)* सिर के अव्यवस्थित खुले बाल । बिखरे हुये सिर के लंबे बाल । जटा ।
भींटोळियो-*(न०)*१ लंबे बालों वाला भूत । २ वह जिसके सिर पर लंबे व घने बाल हों । ३ गंदा व्यक्ति । *(वि०)* नीच । तुच्छ ।
भुकणो-*(क्रि०)* १ झुकना । नवना । नमणो । २ नीचे की ओर प्रवृत्त होना ।

उतार पर होना । ढलना । ३ किसी पदार्थ का किसी ओर मुड़ना । लचकना । ४ प्रणाम करना । ५ हार मानना । ६ बरसना । ७ बनना । निर्माण होना ।
भुकाणो-दे० भुकावणो ।
भुकाव-(न०)१ भुकने की क्रिया या भाव । भुकाई । २ प्रवृत्ति । बहाव । ३ चाह । इच्छा ।
भुकावणो-(क्रि०) १ भुकाना । नवाना । २ मजबूर करना । विवश करना । ३ प्रवृत्त करना । ४ नीचा दिखाना । ५ हराना । ६ बनवाना । निर्माण कराना ।
भुरट-(ना०) १ नख की रगड़ या खरोंच । नखक्षत । २ रगड़ । खरोंच ।
भुरडणो-(क्रि०) १ खरोंचना । २ तोड़ना । ३ मार मारना । पिटाई करना । बेंत या लकड़ी से मारना ।
भुरणो-(क्रि०) १ बरसना । टपकना । २ रोना । रुदन करना । ३ किसी के वियोग में रोना । ४ दुख या चिंता से क्षीण होना । ५ कलपना । विकल होना ।
भुरमट-(न०) १ किसी स्थान को ढका हुआ भाड़ों का समूह । २ भाड़ क्षुप और घास आदि का समूह । अति अधिक घास पेड़ पौधे आदि का भुंड ।
भुरारो-दे० भरारो ।
भुरावो-दे० भेरावो ।
भुलाणो-दे० भुलावणो ।
भुलावणो-(क्रि०) १ बच्चे को भूले में सुलाकर उसे हिलाना । भुलाना । २ टालते रहना । अटकाये रखना । आजकल करते रहना । ३ भरासे में रखना । ४ ४ स्नान कराना ।
भुंड-(न०) समूह । समुदाय । भुंड । टोला । टोळो ।
भूझ-(न०) युद्ध । जुद्ध । बजियो ।
भूठ-(न०) भूठ । असत्य । मिथ्या । कूड़ ।
भूठमूठ-(क्रि०वि०) बिना किसी वास्तविक आधार के । भूठमूठ । व्यर्थ । यों ही । कूड़साच ।
भूठो-(वि०) असत्य । मिथ्या । भूठा । कूड़ । २ भूठ बोलने वाला । भूठा । कूड़ो । ३ बनावटी । नकली ।
भूडणो-(क्रि०)१ डंडे से पीटना । ठोकना । २ जोर की पिटाई करना । ३ भक भोरना । भटकारना । ४ मारना । काटना ।
भूमको-(न०)१ एक ही प्रकार की वस्तुओं का गुच्छा । २ फुंदना । ३ एक गहना । ४ स्त्रियों का भुंड । भूलरो ।
भूमणो-(क्रि०) १ मस्ती में इधर उधर भूलना । लहराना । २ लिपटना । ३ लटकना । ४ हाथापाई करना । ५ लड़ना । ६ ताकना । ७ भुकना । (न०) कान का एक गहना ।
भूमर-(न०) १ स्त्रियों के कानों का एक गहना । भूमरो । २ स्त्रियों का लोक नृत्य । घूमर । ३ एक लोक गीत । ४ छत में लटकाने का अनेक बत्तियों वाला कांच का एक बड़ा फानूस । भाड़ फानूस । ५ बड़ा हथौड़ा । भूमरो ।
भूमर दछीट-(ना०) रंगी और छपी हुई घाघरे की छींट का एक प्रकार ।
भूमरी-(ना०) कान का छोटा भूमर । भूमरी ।
भूमरो-(न०) १ स्त्रियों के कान का एक गहना । २ बड़ा हथौड़ा ।
भूर-(न०) १ कचरा । कूड़ा । २ भाड़न । ३ भाड़ आदि की पतली-सूखी टहनियों का ढेर । ४ एक व्यक्ति के बहुतेरे छोटे मोटे बच्चे बच्चियों का समूह । ५ भुंड । समूह ।
भूरणो-दे० भूड़णो । भुरणो ।

झूरी-(न०) १ किसी वस्तु के छोटे छोटे टुकड़ों की राशि। २ झाड़ आदि की पतली सूखी टहनियों की राशि। ३ कचरा। कूड़ा।

झूल-(ना०) १ हाथी, घोड़े आदि की पीठ पर सुंदरता के लिये डाला जाने वाला वस्त्र विशेष। २ कवच। ३ हाथी या घोड़े का कवच। पाखर। ४ झुंड।

झूळ-(ना०) १ झुंड। समूह। २ सेना। ३ विश्राम के समय सैनिकों के अस्त्र शस्त्रों को अपने अपने वर्ग में खड़ा करके रखने का एक ढंग। ४ काटे हुए नाज के पूलों को सुखाने के लिये पंक्तिबद्ध रखने का एक ढंग।

झूलणा-(न०)स्वनाम सनक डिंगल-काव्य। जैसे—गजसिंघजी रा झूलणा। राव अमरसिंहजी रा झूलणा।

झूलणा-इग्यारस-(ना०) १ भाद्रपद शुक्ल एकादशी। २ देव मन्दिर से देवमूर्ति को शोभायात्रा के रूप में जलाशय पर ले जाकर स्नान कराने का इस दिन मनाया जाने वाला एक महोत्सव।

झूलणी ग्यारस-दे० झूलणा इग्यारस।

झूलणो-(क्रि०) १ झूले पर बैठ कर पेंगना। झूलना। २ लटकना। ३ हिलना। (न०) १ झूलना नामक एक छंद। २ झूलान। हिंडोला।

झूलर-(न०) समूह। झुंड।

झूलरियो (न०) १ झुंड। २ माहेरा भरने को जाने वालों का समूह। ३ माहेरा का एक लोकगीत। भात भरने के समय गाया जाने वाला एक लोकगीत। ४ पलने में झूलने वाला बच्चा। छोटा बच्चा।

झूलरा-(न०) १ स्त्रियों का झुंड। [illegible] संगठित स्त्री समूह। [illegible]

झूलाळ-(न०) हाथी। (वि०) १ झूलने वाला। २ झूलता हुआ। ३ जिसके ऊपर झूल पड़ा हो। ४ कवचधारी।

झूलाळो-दे० झूलाळ।

झूलो-(न०) हिंडोला। पलना।

झूम-दे० जूसण।

झूसण-दे० जूसण।

झूसणियो-(वि०) कवचधारी। (न०) कवच।

झूंगो-(न०) कुएँ पर बना हुआ वह कुंड जिसमें होकर मोट से निकला हुआ पानी बहता रहता है।

झूंटणो-(न०) स्त्रियों के कानों का एक गहना। (क्रि०) खोसना। छीनना।

झूंपडी-(ना०) छोटा झोंपड़ा। झोंपड़ी।

झूंपडो-(न०) झोंपड़ा।

झूंपी (ना०) १ जागीरी समय का प्रति घर से लिया जाने वाला एक टैक्स। २ झोंपड़ी।

झूंपी लाग-(ना०) घर या झोंपड़े पर लगने वाला एक कर। गृह कर। हाउस टैक्स।

झूंपो-(न०) १ झोंपड़ा। २ ढेर। ३ घास का ढेर।

झूंबक-(न०) एक स्त्री आभूषण। झूमरो।

झूंबणो-(क्रि०) १ लिपटना। गले लगना। २ लटकना। ३ [illegible] करना। ४ [illegible] करना। जुथणो। ५ [illegible]

झूंवो-दे० जूवो।

झूमर-(न०) जुआ। जुआरा। जुआरी।

झेडर-(न०) एक लोक गीत।

झेर-(ना०) १ [illegible] २ [illegible] गीत। ३ [illegible]

झेरणियो-(न०) [illegible]

[illegible] २ [illegible]

उतार पर होना। ढलना। ३ किसी पदार्थ का किसी ओर मुडना। लचकना। ४ प्रणाम करना। ५ हार मानना। ६ बरसना। ७ बनना। निर्माण होना।

झुकाणो-दे० झुकावणो।

झुकाव-(न०)१ झुकने की क्रिया या भाव। झुकाई। २ प्रवृत्ति। बहाव। ३ चाह। इच्छा।

झुकावणो-(क्रि०) १ झुकाना। नवाना। २ मजबूर करना। विवश करना। ३ प्रवृत्त करना। ४ नीचा दिखाना। ५ हराना। ६ बनवाना। निर्माण कराना।

झुरट-(ना०) १ नख की रगड या खरोंच। नखक्षत। २ रगड। खरोंच।

झुरडणो-(क्रि०) १ खरोंचना। २ तोडना। ३ मार मारना। पिटाई करना। बेंत या लकडी से मारना।

झुरणो-(क्रि०) १ बरसना। टपकना। २ रोना। रुदन करना। ३ किसी के वियोग में रोना। ४ दुख या चिंता से क्षीण होना। ५ कलपना। विकल होना।

झुरमट-(न०) १ किसी स्थान को ढका हुआ झाडों का समूह। २ झाड झुप और घास आदि का समूह। अति अधिक घास पेड पौधे आदि का झुंड।

झुराणो-दे० झुराणो।

झुरावो-दे० झेरावो।

झुलाणो-दे० झुलावणो।

झुलावणो-(क्रि०) १ बच्चे को झूले में सुलाकर उसे हिलाना। झुलाना। २ टालते रहना। अटकाये रखना। आजकल करते रहना। ३ भरोसे में रखना। ४ ४ स्नान कराना।

झुंड-(न०) समूह। समुदाय। गुट। टोला। टोळो।

झूझ-(न०) युद्ध। जुद्ध। कजियो।

झूठ-(न०) झूठ। असत्य। मिथ्या। कूड।

झूमझूट-
आधार
कूडसा
झूटो-(
कूड।
कूडो।
झूणो-
२ जा
झोरन
काटन
झूमको-
का गु
४ कि
झूमणो
झूमन
लटक
लड
वान
झूमर-
गह
नृत्य
४
वा
फ
झूम
घ
झूम
झू
झू
झू

ज्वाला। ३ बैठे ठे को आने वाली नींद। हलकी नींद। ४ हवा का धक्का। ५ नशे का भोंका। ६ पग दिनर।

भौटिंग–(न०) समस्त शरीर पर बड़े बड़े बाल वाला एक भूत। (वि०) १ बड़े बाल वाला। २ जटाधारी।

झोटी–(ना०) जवान भैंस। भोसर। टनाटी।

भाटो–(न०) १ भोटा। पग। हिलोर। २ जवान भैंसा। पाडो।

भोल–(न०) १ किसी पर स धी हुई किसी लंबी चौडी वस्तु के बीच वाले भाग मे होने वाला झुकाव। २ चारो कोना स बंधे हुए कपडे सायबान आदि के बीच मे रहने वाला झुकाव। ३ ढीला कपडे का वह अश जो ढीला होने से नीचे लटक जाय। ३ ढिलाई। ढीलापन।

भोळ–(न०) १ झोंका। रसा। तान। २ मुलम्मा। ३ भुल। समूह।

भोळणो–(न०) १ यात्रा मे साथ रखा जाने वाला एक थैला। २ छोटे बच्चे के लिए बनाया हुआ कपडे का झूलना। झोळी।

भोळदार–(वि०) १ रसदार। जिसमें रस हो। २ जिस पर मुलम्मा किया हुआ हो।

भोळियो–(न०) १ दही मे पानी के साथ चीनी या नमक जीरा को मथ कर बनाया हुआ एक पेय। मट्ठा। लस्सी। २ पतला दही। ३ बच्चे को सुलाने के लिये कपडे की बनाई हुई भोली। ४ ढीला खाट।

भोळी–(ना०) १ भोली। थैली। २ भिक्षा न डालने की साधु की भोली। ३ बच्चे के सोने की भोली। भोळणो।

भोलो–(न०)१ अत्यन्त उष्ण अथवा शीतल वायु, जिसके लगने से फसल और वृक्ष एक बारगी मुरझा जाते है। २ फसल को हानि करने वाला विपरीत दिशा का पवन। ३ वायु का झपट। ४ आघात। ५ मस्ती। ६ हिलना। हिलना। ७ रति क्रीडा। ८ मन की लहर। ९ एक वात रोग। १० इशारा। ११ भोका। १२ सकट। १३ विक्षेप।

झोळो–(न०) १ कपडे का थैला। २ गिलाफ। खोली। खोळी।

झोड–(न०) १ वाग्युद्ध। बोलचाल। विवाद। २ माथापच्ची। ३ हठ। जिद। हठवादिता। ४ बखेडा। प्रपंच। ५ झगडा टटा। लडाई।

झौड झपाड–(ना०)१ बकवाद। २ बोल चाल। टटा फसाद।

झोडायत–(वि०) १ झोड करने वाला। बकवादी। २ लडने वाला।

झौडियो–(वि०) झोड करने वाला।

झौडीली–(वि०) झौड करने वाली।

झौडीलो–(वि०) झौड करने वाला।

ञ

ञ–सस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का दसवाँ व्यजन वर्ण। चवर्ग का पाँचवा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है। वाणीकी पाठ शाला मे इसे 'नियो खोडा चदरमा' कहा जाता है।

टहा या हिला कर पत्ते फलादि गिराना। परणो। ३ बिलाप करना। ४ प्रहार करना। घाट करना।

भैरापो-(न०) १ प्रेमी का वियोग जनित हृदय वेधक स्मृति। २ वियोग जनित स्वर। ३ प्रेमी के वियोग में गाया जाने वाला लोक गीत। भुरापो। ४ वियोग जनित प्रताप।

भेलणो-(क्रि०) १ पकड़ना। थामना। हाथ में लेना। भजना। २ गिरफ्तार करना। पकड़ना। ३ सहारा देना। ४ सहन करना।

भैला-(न०ब०व०) रा।। रा एक आभूषण।

भेना-भेनी-(ना०) १ बच्चा का एक खेल। २ भजन या पकड़ का क्रिया। ३ गोपालता। ४ पकड़ा पकड़ी।

भेनावणिया-(वि०) दे० भनावणिया।

भेनावणो-(क्रि०) दे० भनावणा।

भेनु-(वि०) जिम्मेवार। उत्तरदायी।

भ-(अ०य०) ऊट को बिठाने के लिये बोला जाने वाला शब्द।

भकणो-(क्रि०) ऊट का बिठाना।

भकाणो-दे० भकावणा।

भकावणो-(क्रि०) ऊट का बिठलाना।

भपणो-(क्रि०) भेलना।

भोक-(न०) १ शाबासी। वाहवाही। २ ऊटनी का प्रसव। ३ ऊ। का बाड़ा। ४ आक्रमण। ५ झुकाव। झुकने का भाव। ६ चिरक। ७ बठे बठे आने वाले नींद झपकी। ८ ढग। तौर। तरीका। ९ सुन्दरता। शोभा। १० चाल चलन। ११ ऊँट। (अ०य) एक प्रशंसा सूचक शब्द। धन्य। वाह।

भोकणियो-(वि०) १ भट्टी में झोका देने वाला। २ युद्ध में प्रवर्त करने वाला। ३ सकट में डालने वाला।

भोकणी-(न०) ऊटनी।

भोकणो-(क्रि०) १ युद्ध में प्रवृत होना। २ युद्ध में प्रवत करना। ३ किसी वस्तु को जलाने के लिये आग में फेंकना। ४ किसी काम में अनाव में मग्न करना। ५ किसी को सकट या स्थिति में डाल देना। ६ कठिन काम में लगा देना। ७ धन्यवाद देना। ८ ऊटनी का प्रसव होना।

भोक देणो-(मुहा०) १ ऊटनी का प्रसव होना। ऊटनी का बच्चा देना। २ धन्य वाद देना। शाबासी देना।

भोकाई-(वि०) १ सेना को युद्ध में झोकने वाला। २ आक्रमणकारी। ३ वीर। बहादुर। पराक्रमी। ४ लुटेरा। ५ साहसी। हिम्मत वाला। ६ भोका देने वाला।

भोकाऊ-दे० भोकाई।

भोका खाणो-(मुहा०) १ नींद या नशे में (बैठे हुए का) गरदन झुकाना। बैठे बैठे नींद लेना। २ इधर उधर हिलना।

भोकाणो-(न०) १ व्यवस्था। २ दशा। अवस्था। ३ किसी वस्तु या घर आदि का अच्छा या बुरा रहन सहन का ढग। ४ ऐसे रहन सहन या ढंग का दृश्य। ५ तौर तरीका। रूप रग। ६ चाल चलन।

भोका देणो-(मुहा०) अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिये (भड़भूजे या रगने का काम करने वाला की) भट्टी में डठल या घुरमुट डालते रहना।

भोकायत-(न०) १ आक्रमणकारी। २ लुटेरा। (वि०) १ वीर। २ साहसी।

भोका लेणो-(मुहा०) बैठे बैठे नींद लेना। बैठे बैठे झुकझुक कर नींद लेना।

भोको-(न०) १ अधिक ज्वाला प्रज्वलित करने के लिये भट्टी या भाड़ में डाला जाने वाला तृण समूह। २ तृणसमूह से भट्टी या भाड़ में उत्पन्न होने वाली तेज

ट

ट-संस्कृत भाषा परिवार की राजस्थानी वर्णमाला की तीसरी व्यंजन आम्नाय के टवर्ग का मूर्धास्थानीय प्रथम वर्ण।

टक-(ना०) बिना पलक गिराये एक ही ओर देखते रहने का भाव। २ स्थिर दृष्टि। यथा—एक टक देखणो। ३ टकराने का शब्द। दे० टक स० ३ से ६।

टकटक-(अव्य०) घड़ी आदि के चलने का शब्द।

टकटकी-(ना०) स्थिर दृष्टि। निर्निमेष दृष्टि।

टकणैत-(वि०) पाँव पीछे नहीं देने वाला वीर। बहादुर। (ना०) वीर पुरुष।

टकणो-दे० टिकणो।

टकरणो-(क्रि०) टकराना। टकरा जाना।

टकरागो-(क्रि०) १ टक्कर लगना। जोर से भिड़ना। २ ठोकर लग जाना। ३ सामने से आने वाले का मिलाप होना। अकस्मात रास्ते में मिल जाना। ४ हिसाब या लेन-देन का परस्पर मिलान करना। ५ मारे मारे फिरना।

टकराव-(ना०) टकराने या भिड़ने की स्थिति।

टकरावणो-(क्रि०) टकराणो।

टकरीजणो-(क्रि०) १ जोर से भिड़ना। टकराना। २ ठोकर लग जाना। ३ मार्ग में सामने से मिलाप हो जाना। अकस्मात मार्ग में मिल जाना।

टकसाळ-(ना०) सिक्के के ढलने या मुद्रित होने का स्थान। टकसाल। टकसाल।

टकसाळी-(वि०) १ प्रामाणिक। खरा। २ टकसाल में बना हुआ।

टकसाळी खबर-(ना०) पक्के समाचार। पक्की खबर।

टकसाळी वर्ण-(वि०) ठीक और पक्का। खरा।

टकसाळी-बात-(ना०) १ पक्की बात। २ सच्ची बात।

टकसाळी-बोली-(ना०) १ शिष्टभाषा। २ व्याकरण सम्मत भाषा। साहित्य की भाषा। ३ शिष्ट समाज की भाषा। ४ सर्व सम्मत भाषा।

टकसाळी-भाषा-दे० टकसाळी बोली।

टका-(ना०)धन सम्पत्ति। रुपया-पैसा।

टकाऊ-दे० टिकाऊ।

टका भर-दे० टके भर।

टकार-(ना०) ट वर्ण। ट्टो।

टकाव-दे० टिकाव।

टके भर-(अव्य०) बहुत थोड़ा।

टको-(ना०) १ टका। पैसा। २ दो पैसे। ३ दो पैसों का एक सिक्का। अधन्ना। ४ रुपया पैसा। नाणो। ५ कर। महसूल।

टकोर-(ना०) १ व्यंग्यपूर्ण बात। व्यंग्य। ताना। २ वक्रोक्ति। ३ आघात। चोट। ४ टकोरे का शब्द। झंकार।

टकोरो-(ना०) १ टकोरा। घड़ियाळ। घंटा। झल्लरी। झालर। २ टकोरे की झंकार।

टक्कर-(ना०) १ मुकाबला। २ भिड़ंत। ३ धक्का। ४ ठोकर। ५ चोट। प्रहार। ६ हानि। घाटा।

टक्कर खाणो-(मुहा०) मुकाबला होना।

टक्कर लेणो-(मुहा०) मुकाबला करना।

टखणो-(ना०) एड़ी के ऊपर की उभरी हुई हड्डी। टखना।

टग-(ना०) १ अटकन। रोक। २ सहारा। ३ हठ। दुराग्रह। जिद। ४ किनारा। ५ घड़ी।

टगण-(न०) छ मात्राओं का एक गण (छन्द)।

टगमग टगटग-(ना०)हिलने की एक क्रिया।

टगी-(ना०) १ हठ। जिद। दुराग्रह। अड। २ सहारा। (वि०) हठी। दुराग्रही। अडियल।

टच-(न०) १ शुद्धाशुद्ध सोने चांदी का टकसाल द्वारा निकाला हुआ प्रकाशित आंक। २ दे० टचकारो।

टचकारी-दे० टिचकारो।

टचकारो-दे० टिचकारो।

टचली आंगळी-(ना०)सबसे छोटी उंगली।

टचूकडो-(वि०) बहुत छोटा।

टटपूंजियो-(वि०) १ जिसके पास थोड़ी पूंजी हो। टुटपूंजिया। २ गया बीता। निकम्मा। ३ दीन। गरीब। ४ हीन। तुच्छ। ५ ओछा।

टटोळणो-दे० टटोळणो।

टट्टी-(ना०) १ विष्टा। शौच। पाखाना। दिसा। २ शौचालय। पाखाना। संडास। ३ चिक। परदा।

टट्टी जाणो-(मुहा०) पाखाना करना। दिसा जाणो।

टट्टू-(न०) १ छोटे कद का घोड़ा। २ हाथ पांव आदि कर्मेंद्रियां। यथा—मन चाल पण टट्टू नहीं चालै।

टट्टो-(न०) 'ट' अक्षर। टकार।

टड्डो-(न०) स्त्रियों की कोहनी के ऊपर पहनने का एक कड़ा। बाहु में पहिनने का एक गहना। टडिया।

टणकाई-(ना०) जोरावरी। जबरदस्ती।

टणकाचदजा-(न०) बलवान व्यक्ति। (व्यंग्य)।

टणकापणो-(न०)१ जोर। शक्ति। बल। २ पौरुष। ३ जबरदस्ती। टणकाई।

टणकार-(ना०) टणणण ध्वनि। टकार। (वि०) दृढ़। मजबूत।

टणकारवद-(वि०) दृढ। मजबूत।

टणकां री टग-(न०) बलवानों को भी नचाने की सामर्थ्य रखने वाला व्यक्ति। सामर्थ्यवान। (वि०) समर्थ। सबल।

टणको-(वि०) १ जबरदस्त। बलवान। २ बडा। विशाल। विस्तृत। (न०) स्त्रियों के पांव का एक गहना। पांव का एक कड़ा।

टणटण-दे० टनटन।

टणटणाट-(न०) बकवाद। वाग्युद्ध। २ बार बार कहते रहना। ३ कलह। टंटा। ४ टनटन शब्द।

टणटणाटो-दे० टणटणाट।

टणटणाणो-(क्रि०) १ टनटन बजना या बजाना। २ घंटा बजना या बजाना ३ बकवाद करते रहना। बोलते रहना।

टणटणावणो-दे० टणटणाणो।

टणणण-(ना०) घंटा बजाने की ध्वनि।

टणमण टणमण-(ना०) छोटी घंटी के बजने की ध्वनि।

टन-(न०) लगभग साढ़े सत्ताईस मन का एक अंग्रेजी तोल।

टनटन-(अव्य०) १ घंटी की आवाज। २ टंकार की आवाज। ३ हर समय बोलते रहना व हुक्म निकालते रहने का भाव।

टप-(न०) १ बूंद या किसी वस्तु के गिरने का शब्द। २ गाड़ी के ऊपर की छत या आच्छादन।

टपकणो-(क्रि०) १ टपकना। चूना। २ मुग्ध होना। ३ झलकना। आभास होना। संकेत होना। ४ अचानक जा पहुँचना।

टपकाणो-दे० टपकावणो।

टपकावणो-(क्रि०) टपकाना।

टपकी-(ना०) १ छोटी बूंद। २ बिंदी। टीकी।

टपको-(न०) बूंद। छींटा। छींट।

टरकायोडो-(भू०का०कृ०) टरकाया हुआ।
टरकावणो-(क्रि०) बहाना बनाना। टरकाना। टालना।
टरकियोडो-(भू०का०कृ०) टरका हुआ।
टरराणो-(क्रि०) मेंढक का बोलना।
टरड-(ना०) घमड। अभिमान।
टरडको-(न०) १ नाराजी। २ अधोवायु का शब्द।
टरडपच-दे० अडबड पच।
टरणाटो-(न०) १ व्यर्थ बोलते रहना। बकझक। २ किसी वस्तु की बार बार मांग करते रहना। बार बार की जाने वाली मांग।
टरणो-दे० टिरणो।
टळटळणो-(क्रि०) १ धूजना। कांपना। २ हिलना।
टळणो-(क्रि०) १ टलना। दूर होना। २ अ यथा होना। ३ किसी वस्तु का स्थानान्तर होना। खिसकना। हटना। ४ समय बीतना। ५ पंक्ति व समाज से बहिष्कृत होना। ६ गाय भैंस आदि का दूध देना बंद होना। ७ फिर जाना। मुकरना। ८ बचना। उबरना। ९ अतिक्रमण होना। उल्लंघन होना। १० स्थगित होना।
टळतर-(वि०)१ टला हुआ। पंक्ति बाहर। बहिष्कृत। २ बिना काम का। जो छाँट कर अलग कर दिया गया हो। ३ बिना चलन का। खोटा।
टळवळणो-(क्रि०) १ बीमारी या पीड़ा के कारण मौन हुये इधर उधर होना। २ पीडा से तडफडाना। छटपटाना। तडफना। ३ नींद में करवटें बदलना। ४ लालायित होना। खाने को ललचाना। ५ मक्खी जू आदि का बदन पर चलना व रेंगना। ६ धीरे धीरे हिलना। ७ हिलना डुलना।
टळवळाट-(ना०) १ बीमारी की घबराहट। २ हिलने डुलने व इधर उधर होने की क्रिया। ३ हलन चलन। रेंगना।
टळावणो (क्रि०) १ चुनवाना। २ अलग करवाना। छाट छाट कर अलग करवाना। ३ पंक्ति से बाहर करवाना।
टळियोडी-(वि०) १ बहिष्कृत। जाति च्युत। टली हुई। २ ऋतुमती। ३ दूध देना बंद की हुइ (गाय भैंस आदि)। ४ दूरस्थित। ५ खिसकी हुइ। हटी हुई। ६ बची हुई।
टळियोडो-(वि०) १ बहिष्कृत। जाति च्युत। टला हुआ। २ दूरस्थित। ३ खिसका हुआ। हटा हुआ। ४ बचा हुआ।
टल्लो-(न०) १ धक्का। टक्कर। टिल्लो। टिल्लो। २ आघात। चोट।
टवकार-न० टोंकार।
टवणो-(क्रि०) प्रहार करना।
टवग-(न०) ट ठ ड ढ ण—राजस्थानी भाषा के इन पाच व्यजन वर्णों का वर्ग।
टसक-(ना०) १ टीस। २ अकड। ३ अभिमान।
टसकणो (क्रि०)१ चमकना। टीस मारना। टसकना। कराहना। २ खिसकना। सरकना।
टसाई-दे० टसक।
टसको-(न०)१ रोग की चमक। २ टीस। कसक। ३ गर्व। ऐंठ। ४ सूखी खासी।
टसर-(न०) एक प्रकार का सूत या उससे बुना हुआ कपडा।
टसरियो-(न०) १ अफीम रखने की एक छोटी जबी डिबिया। डबियो। २ एक औजार।
टहकारो-(न०) दर्द या पीड़ा की आवाज। टकारो।
टहको-दे० टहकारो।
टहटहणो-(क्रि०) वाद्य का बजना।

टहरको-(न०) १ नखरा। नाज। २ बनावटी चेष्टा। ३ व्यंगपूर्ण बात। ताना। व्यंग्य। ४ गर्वपूर्ण बनावटी कोमल चेष्टा। ५ अभिमान। गर्व। ६ नाराजी। नाराजगी। ७ रोस। क्रोध।

टहल-(ना०) १ चाकरी। सेवा। २ भ्रमण। विहार।

टहलणो-(क्रि०) भ्रमण करना। फिरना। घूमना। चहल कदमी करना।

टहल-बदगी-(ना०) सेवा। चाकरी।

टहलियो-(न०) सेवक। हाजरियो। टहल करने वाला।

टहलुओ-दे० टहलियो।

टहूकणो-(क्रि०) १ मोर या कोयल का बोलना। २ दूरस्थ व्यक्ति को बुलाने के लिये तेज व तीखी आवाज से पुकारना।

टहूको-(न०) १ मोर या कोयल की आवाज। २ केका। ३ दूरस्थ को बुलाने के लिये की जाने वाली लंबी ऊंची आवाज।

टंक-(न०) १ समय। २ वार। दफा। ३ भोजन का समय। ४ एक बार का भोजन। ५ एक वार के भोजन की सज्ञा। ६ विवाह मौसर आदि मे दिया जाने वाला एक बार का भोजन। ६ चार माशे का एक तौल।

टंक अढार-दे० अठार टकी।

टंकण-(न०) १ सुहागा। टकन। टंकण क्षार। २ चाँदी, ताँबे आदि धातु-खंडो पर यत्र या ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने का काय। ३ टाइप राइटिंग।

टंकणगार-(न०) सुनारा।

टंकण यत्र-(न०) एक आधुनिक लेखन यत्र। टाइप राइटर।

टंकसाळ-दे० टकसाळ।

टंकसाळी-दे० टकसाळी।

टंकाई (ना०) १ टाँकने की मजदूरी। २ टाँकने की क्रिया या भाव।

टंकाउळि-दे० टकावळ।

टंकार-(न०) १ टन टन (टंट) शब्द। २ धनुष की प्रत्यंचा की ध्वनि।

टंकारणो-(क्रि०) १ धनुष की डोरी को खीच कर छोडने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। ३ टंट शब्द करना।

टंकारव-(ना०) १ धनुष की प्रत्यंचा की ध्वनि। धनुष की डोरी खीचने से उत्पन्न शब्द। २ टंकार। टंकार ध्वनि।

टंकारा-दे० टंकार।

टंकावळ-(वि०)१ बहुत लड़िया (श्रेणियो) वाला (टणका + अवली) और कीमती। २ चार लडियो वाला। (टंक + अवली) (न०)१ बडा और बहुमूल्य कंठाभरण। २ एक प्रकार का हार।

टंकावळहार-(न०)१ चार लडो का हार। २ बहुमूल्य कंठाभरण।

टंकी-(ना०)१ पानी, तेल इत्यादि भरने का बरतन या कुंड। कुंडी। २ भारी धनुष।

टंकेत-(वि०) १ टंक वाला। २ चिह्नित। ३ जबरदस्त।

टंकोटंक-(अव्य०) १ नियत समय पर। २ योग्य समय। समय पर। ३ प्रत्येक टंक पर।

टंकोर-(ना०) ध्वनि। आवाज।

टंकोरो-(न०) टकोरा। घंटा। घडियाल। झालर।

टंग-दे० टाँग।

टंगडी-दे० टाँगडी।

टँगणो-(क्रि०) १ टंगना। लटकना। २ टँगा जाना।

टंगावणो-(क्रि०) १ लटकाना। टंगवाना।

टंगियोडो-(भू०का०कृ०) टँगा हुआ। लटका हुआ।

टच-(वि०) १ बढ़िया किस्म का। पक्का। २ कंजूस। ३ तैयार। ४ कसौटी पर जाचा हुआ। ५ चट। धूर्त। दे० टच स० १।

टचणो-दे० टाचणो।

टचावणो-(क्रि०) १ टाँचे लगवाना। २ चक्की को टँचवाना। ३ टच निकलवाना (सोने चाँदी का)।

टट-दे० टटो।

टटाखोर-(वि०) झगड़ालू। फसादी। उपद्रवी। टटाळू।

टटाळू-दे० टटाखोर।

टटो-(न०) १ टटा। झगड़ा। कजियो। तकरार। २ व्यय की झंझट। ३ उत्पात।

टटो झगडो-दे० टटा फिसाद।

टटो फिसाद-(न०) टटा फसाद। लड़ाई झगड़ा।

टटोळणो-(क्रि०) टटोलना। खोजना। ढूँढना।

टडेरा-(न०) १ घर गृहस्थी। २ सामान।

टडो-दे० टांडो।

टाइम-(न०) समय। वक्त।

टाइम टबल-(न०) समय पत्रक। समय सारिणी।

टाउन हॉल-(न०) नगर का सार्वजनिक सभा इत्यादि करने का मकान।

टाक्र-(ना०)१ घाव। चोट। २ टक्कर। ३ ठोकर। ठासा। ४ चोट की मार में पड़ने वाला घाव। ठाग।

टाकी-(ना०) १ घाव। जख्म। क्षत। २ ककड़ी मतीरे आदि की बच्चपक्के की परीक्षा के लिये उसमें चाकू से काट कर बनाया गया कटोर। इगली।

टाचकणो-(क्रि०) १ टकराना। २ दो वस्तुओं का परस्पर टकराना। ३ उछलना। कूदना। ४ किसी वस्तु का टकर दूर जा पड़ना। ५ उछलकर आई हुई वस्तु का टकराना या टकराने से चोट लगना। ६ मारा मारा फिरना। इस घर से उस घर को जाना। ७ बेइज्जत करना। ८ डाँटना। फटकारना।

टाचकियोडी-(वि०) १ अनादृता। अपमानेतण।

टाचकियोडो-(वि०) १ टकराया हुआ। २ अप्रतिष्ठित।

टाचको-(न०) १ डाँट। फटकार। २ बेइज्जती। ३ टक्कर। ४ चोट। आघात।

टाट-(ना०)१ बकरी। २ गज। गलवाट। ३ सन की डोरियों का मोटा कपड़ा। ४ खोपड़ी। कपाल। (वि०) १ बकवादी। २ मूर्ख।

टाटियो-(वि०)टाट वाला। गजरोग वाला। गलवाटी।

टाटी-(ना०) १ बाँस आदि की पट्टियों से बनाई हुई आड़। पल्ला। टट्टर। टट्टी। २ पतली (मात्र एक ईंट लंबी की) दीवाल।

टाटू-दे० टाटियो।

टाटो-(न०) १ गरमियों में ठंडक के लिये लगाया जाने वाला खस आदि का पल्ला। टट्टी। २ बकरियों का झुंड। ३ बकरी।

टाण-दे० टांट।

टाणो-(न०) १ समय। २ अवसर। शुभाशुभ प्रसंग। ३ शुभ प्रसंग। ४ मौका। ५ उत्सव। ६ जीमन। भोज। ७ मृत्यु भोज। ८ मायरा।

टाणो-टामचो-(न०) १ विशेष अवसर। खास मौका। वार त्यौहार। २ शुभ अवसर।

टाप-(ना०) १ घोड़े के चलने का शब्द। घोड़े के पाँवों का जमीन पर पड़ने का

करन। २ घोड़े के पैर का वह भाग जो ज़मीन पर पड़ता है। सुम। खुर।

टापटीप–(ना०) १ सजावट। शृंगार। २ शोभा। ३ मरम्मत। दुरस्ती। ४ व्यवस्था। सुघड़ता। सफाई। ५ ठाट बाट। टीपटाप। मिलगार।

टापर–(ना०) १ घोड़े आदि पशुओं को ओढ़ाने का मोटा कपड़ा। टप्पर। २ घास की बनी ढक कर रहने वाला झोंपड़ा।

टापरियो–(न०) १ झोंपड़ा। २ घर।

टापरी–दे० टापरो।

टापरो–(न०)१ घर। २ साधारण कच्चा घर। झोंपड़ा। ३ सिर। माथा।

टापी–(ना०) झोंपड़ी। टापरी। टपरी।

टापू–(न०) चारों ओर पानी (समुद्र) से घिरा हुआ भू भाग। द्वीप।

टापो–(न०) १ कहीं जाने पर काम सिद्ध न होने का भाव। टाला। चक्कर। फेरा। खाली हाथ लौटना। २ भाड़ा। टापरो।

टाबर (न०) बालक। बच्चा।

टाबर-टीगर–दे० टाबर टोळी।

टाबर-टोळी–(ना०) बाल बच्चे। बाल समूह। बालकवृंद।

टाबरदार–(वि०) बाल बच्चों वाला।

टाबरपणो–(न०)१ बालक जैसा बर्ताव। बालक जैसी हरकत। २ बचपन। बाल्यावस्था।

टाबरियो–दे० टाबर।

टामक–(न०) १ बड़ा नगारा। २ बड़ा ढोल। (वि०) मूर्ख।

टामकी–(ना०) १ ढोलक। २ डुगडुगी। ३ आकाश दीप।

टामचो–(न०) अवसर। मौका। दे० टागो टामचो।

टामण टूमण–(न०) १ जादू टोना। २ वशी करण। कामण। टूमणटामण।

टामर–दे० टामर।

टार–(उ०) दे० 'टारसी' और 'टारड़ा'।

टारड़ी–(ना०) १ छोटे कद की दुबली पतली घोड़ी। टार। २ घटिया नसल की घोड़ी।

टारडो–(न०)१ छोटे कद का दुबला-पतला घोड़ा। टार। २ घटिया नसल का घोड़ा।

टाल–(ना०) १ बाल भरा हुआ सा वह सिर का भाग। गलवाट। २ सिर के बालों को दो भागों में करने से बनी रेखा। माँग। ३ लकड़ी भूसे आदि की दुकान।

टाळ–(अव्य०) १ बगैर। बिना। रहित। २ अतिरिक्त। सिवाय। ३ निवारण।

टाळवा–(वि०) १ चुना हुआ। चुनिंदा। छँटा हुआ। २ अच्छा। बढ़िया। ३ चुन कर या छाँट कर निकाला हुआ। छँटुआ। ४ बदमाश। छलिया। धूर्त। टाळवाँ। टाळमो।

टाळणो–(क्रि०)१ अलग करना। टालना। पृथक करना। २ चुनना। छाँटना। ३ अमान्य करना। ४ ग्रहण न करना। छोड़ना। ५ अच्छा ले लेना और खराब को छोड़ देना। ६ जवाबदारी नहीं लेना। बहाना करना। ७ बहिष्कार करना। टाळको।

टाळमटूळ–(ना०) बहाना। मिस।

टाळमा–दे० टाळको।

टाळवो–दे० टाळको।

टाळाटाळी–दे० टाळाटूळी।

टाळाटूळी–(ना०) १ बहाना। मिस। २ छाँटने का काम। छटाई।

टाळियोडो (वि०) १ अलग किया हुआ। बहिष्कृत। २ चुना हुआ। छाँटा हुआ। ३ अमान्य। ४ अग्राह्य।

टाली–(ना०) १ लकड़ी भूसा आदि की दुकान। २ बूढ़ी गाय। ३ गिलहरी। (वि०) अर्द्ध। आधा। (स भा)

टांडा-रो नायक-(ना०) १ दलपति । २ बालद का स्वामी । मुख्य बनजारा । ३ भात भरन (माहरे) का एक लोक गीत । ४ भात भरने (माहरा करने) को ग्राम पासे दल का मुखिया । दुल्हे या दुल्हिन का मामा ।

टांडाळो-(वि०) जिसके पास माल लाने या ले जाने के लिए बैलों का समूह हो । टांडे वाला । टांडाधारी ।

टांडो-(न०) १ समूह । २ गांव । ३ बन जारे के बैल, मनुष्यादि का समूह । पोठ । बाळद । ४ मरे हुए पशुओं का चमडा उतारने का स्थान ।

टांपो-(न०) १ किसी काम के लिये कहीं जाने पर खाली हाथ लौटना । २ फेरा । चक्कर । श्रांटो । फेरो ।

टांस-(न०) एक पक्षी । लीलटास ।

टिक्ट-दे० टिगट ।

टिक्डी-(ना०) टिकिया ।

टिकरणो-(क्रि०) १ सहारे पर रहना । टिकना । २ निभना । ३ रहना । ४ एक स्थल पर ज्यादा समय तक ठहरना । ५ बैठना । ६ जमना ।

टिकली-(ना०) गोलाकार छोटी चिपटी वस्तु ।

टिक्लो-(न०) गोलाकार चिपटी वस्तु । बडी टिकली ।

टिकाऊ-(वि०) १ स्थाई । कायम । पाय दार । स्थितिमान । २ मजबूत । दृढ ।

टिकाणो-(क्रि०) १ टिकने में सहायक होना । २ आधार से खडा या स्थित करना । ३ टिकाना । ठहराना ।

टिकाव-(न०) १ टिकाऊपन । मजबूती । २ विश्राम । पडाव । ३ ठहराव । स्थायित्व । ४ धीरज । सब्र ।

टिकावणो-दे० टिकाणो ।

टिकिया-(ना०) १ छोटी किन्तु मोटी रोटी । टिक्कड । २ चपटी गोलाकार छोटी वस्तु । टिक्डी ।

टिकाड-(न०) मोटी रोटी ।

टिकी-(ना०) १ सिफारिश । लागवग । २ सफलता । कामयाबी । ३ तजवीज ।

टिगट-(ना०) १ विशिष्ट काम, यात्रा, प्रवेश, डाक इत्यादि के लिये खरीदा जाने वाला कागज का बना मूल्य पत्र या अधिकार पत्र । २ डाक, रेल, बस या सिनेमा का टिकट । टिकट । टिकेट ।

टिगटघर-(न०) टिकट बेचने का खरीदने आधिकारिक स्थान ।

टिगणो-दे० टिकणो ।

टिच-(ना०) १ वाद विवाद । झगडा । बोलचाल । दे० टिचकारो ।

टिचकारणो-(क्रि०) टिच टिच के अव्यक्त शब्द का उच्चारण करना । टिटकारना ।

टिचकारी-दे० टिचकारो ।

टिचकारो-(न०) १ वधूवर्ग की स्त्रियों का बडे बूढों से सम्भाषण नहीं करने और घूंघट रखने के कारण उनके प्रति किये जाने वाले संबोधन अथवा उनकी किसी बात के लिये दिये जाने वाले नकारात्मक उत्तर का एक अव्यक्त शब्द । टिच जैसा एक अनुकरण शब्द । २ घास खाने वाले पशुओं को हांकने का टिच टिच जैसा एक अव्यक्त शब्द ।

टिचन-(वि०) १ तयार । प्रस्तुत । २ जिसमें कोई त्रुटि न हो । दुरुस्त । अच्छा । ठीक । ३ पक्का । खरा ।

टिचनवद-दे० टिचन ।

टिटकारणो-दे० टिचकारणो ।

टिटकारो-दे० टिचकारो ।

टिपकी-दे० टपकी ।

टिपको-दे० टपको ।

टिपली-दे० टपला ।

टिपलो-(न०) माथा । खोपडी ।

टिपस-(ना०) १ युक्ति । उपाय । टिप्पस । २ सिफारिश । टिक्की । ३ अभिप्राय साधन की युक्ति । टिप्पस । ४ नियुक्ति । ५ किसी धंधे का हीला मिल जाना । धंधे में लगन का भाव ।

टिपाणो-दे० टिपावणो ।

टिपावणो-(क्रि०) १ चोट लगाना । प्रहार करना । पीटना । २ घड़ना । ३ लिखना । ४ पिटवाना । प्रहार करवाना । ५ घड़वाना । ६ लिखवाना ।

टिप्पण-(न०) १ गूढ वाक्य का विस्तृत अर्थ । २ व्याख्या । ३ टीका । ४ किसी घटना या बात पर किया जानेवाला विचार । आलोचन । ५ स्मरणार्थ लेख । नोंध । नोट । ६ वह छोटा लेख जिसके द्वारा गूढ़ वाक्य का अर्थ बताया जाय ।

टिप्पणी-दे० टिप्पण ।

टिप्पस-(ना०)१ मतलब साधन का उपाय । २ बड़प्पन की बातें करना । टपस ।

टिप्पो-(न०) १ नोंध । नोट । नूंध । २ ताना । आक्षेप । महणो । तानो । ३ सहज धक्का ।

टिक्की-(ना०) बिंदी । टीकी ।

टिमची-(ना०) तिपाई ।

टिमटिमाणो-(क्रि०) १ मंद प्रकाश देना । २ रह रहकर धीमे धीमे चमकना ।

टिमरियो-(वि०) छोटा । ठिगना ।

टिरणो-(क्रि०) लटकना ।

टिल्लो-(न०)१ धक्का । टिल्ला । टल्ला । २ चोट । आघात ।

टिंच-दे० टंच ।

टीक-(ना०) स्त्रियों के सिर का एक आभूषण । टीको ।

टीकम-(न०) १ त्रिविक्रम । टाकम । २ श्रीकृष्ण ।

टीकनी-कमेडी-(ना०) प्रतिष्ठित, बुद्धिमान, चतुर, धनवान, प्रमुख इत्यादि । (व्यंग्यार्थ में)

टीकलो-(वि०)१ टीके वाला । २ तिलकधारी ।

टीका-(ना०) १ अर्थ । २ व्याख्या । ३ पद तथा वाक्य का बोलचाल की सरल भाषा में किया हुआ स्पष्टीकरण । ४ गुण दोष की समालोचना । ५ निंदा ।

टीकाकार-(न०) ग्रंथ की व्याख्या करने वाला ।

टीका टबका-दे० टीका टिमका ।

टीका टिप्पणी-(ना०) गुण दोषों की आलोचना ।

टीका-टिमका-(न०ब०व०)१ तिलकछापा । २ ऊपरी दिखावा । ढोंग । ३ नखरा ।

टीकायत-(न०) १ पाटवी कुँवर । राज्य का उत्तराधिकारी राजकुमार । टीलायत । २ गुरु या मठाधीश का उत्तराधिकारी शिष्य । पट्ट शिष्य । तिलकायत । ३ बड़ा लड़का । ४ टीके वाला । तिलकधारी । ५ प्रधान मुखिया ।

टीकी-(ना०) बिंदी । बिंदुली ।

टीकी-भळको-दे० टीली भळका ।

टीको-(न०)१ तिलक । २ राज्य तिलक । ३ सगाई की एक रीति जिसमें कन्या का पिता लड़के को या लड़के के पिता को कुछ धन देता है । ४ राजाओं में सगाई संबंध करने की एक रीति जिसमें कन्या का पिता पुरोहित के हाथ किसी अन्य राजा के यहाँ सगाई स्वीकार करने के निमित्त कुंकुम नारियल और मुद्रा आदि की भेंट भेजता है । ५ स्त्रियों का एक शिरोभूषण । ६ पशु की ललाट में भिन्न रंग के बालों का चिह्न । ७ संक्रामक रोगों की एक प्रतिरोधात्मक चिकित्सा, जिसमें छेदन प्रक्रिया द्वारा

औषध विशेष या रक्त में प्रविष्ट किया जाता है। टीका। ७ बारहवें में मृत्यु भोज की एक रीति जिसमें मृतक के संबंधी उसके यहाँ उस दिन कुछ राकड़ या कपड़े देते हैं।

टीसळ-(ना०) १ झंझट। दलत। २ मसखरी। मजाक। दिल्लगी। ३ एक व्यक्ति के अनेक बच्चा बच्ची। बहु संतान। ४ रूप, स्वभाव, गुण इत्यादि से रहित संतान। ५ रूप, स्वभाव, गुण इत्यादि से रहित संतान (कुटुम्ब के व्यक्ति) के कारण होने वाला मनस्ताप।

टीसळियो-(वि०) टीसळ करने वाला।

टीटोडी-(ना०) १ एक पक्षी। टिटहरी। २ गिलहरी। टीलोडी।

टीड-दे० टीड।

टीडी-भळको-(न०) स्त्रियों का एक शिरो भूषण।

टीडीलो-पीडीलो-(न०) एक खेल।

टीण-दे० टीन।

टीन-(न०) १ लोहे की चद्दर। २ चद्दर का डिब्बा।

टीप-(ना०) १ गाने की अलाप। तान। ऊँचा स्वर। २ तार या फूँक वाद्य का एक विशेष स्वर। ३ संक्षिप्त उद्धरण। ४ किसी सार्वजनिक काम के लिये कई व्यक्तियों से इकट्ठा किया जाने वाला रुपया पैसा। चन्दा। उगाया हुआ धन। ५ दीवार की चुनाई में ईंटों की संधि में रह गई खाली जगह में चूने आदि का लेप लगा कर पक्का करना। ६ सूची। फेहरिश्त। ७ वर्षा की ठंडी बूंद या ओला। ८ याददास्त के लिये नोट करना। (वि०) बहुत ठंडा।

टीपटाप-(ना०) १ सँवारने का काम। २ मरम्मत। ३ आडम्बर। बनावट। ४ सजधज। ५ तड़कभड़क। बनाव सिंगार। सिणगार। टापटीप।

टीपणी-(ना०) १ किसी सार्वजनिक काम के लिये अनेक व्यक्तियों से इकट्ठा किया जाने वाला धन। चंदा। २ चंदे की सूची।

टीपणो-(न०) पतड़ा। पचांग। (ज्यो) (क्रि०) १ लिखना। नोट करना। २ टीपना। पीटना। ठोकना। ३ मारना। पीटना।

टीपरियो-(न०) घी वालोडी तिलाडी में से घी या तेल निकालने की छोटी टीपरी।

टीपरी-(ना०) छोटा टीपरा।

टीपरो-(न०) १ ऊँचाई की ओर (खडी) लंबी डंडी लगा हुआ द्रव पदार्थ को लेने या मापने का कटोरीनुमा एक पात्र।

टीपा-(ना० ब० व०) चूडी के ऊपर की पत्तियाँ।

टीपो-(न०) बूंद। छांट।

टीबो-(न०) मिट्टी या रेती का उभरा हुआ भाग। रेत का टीला। रेती की पहाडी। टावा। धोरो।

टीमटाम-(ना०) १ बनावट। ठाठ बाट। २ शृंगार।

टीलायत-दे० टीकायत।

टीलो-दे० टीको।

टीली भळको-(न०) स्त्रियों का एक शिरो भूषण।

टीलो-(ना०)१ तिलक। २ एक आभूषण। ३ टीबा। धोरो।

टीलोडी-(ना०) गिलहरी।

टीस-(ना०) रह रह कर उठने वाली पीडा। कसक। चसक।

टीसी-(ना०) १ टहनी के ऊपर का कोमल भाग। टहनी का अग्र भाग। २ टहनी। शाखा। ३ नाक का अग्रभाग।

टीगर–*(न०)*१ बाल बच्चे। बच्चे बच्चियाँ। २ एक ही जाति के अनेक बच्चे बच्चियाँ। ३ बच्चा।

टीगरियो–*(न०)* बच्चा। (व्यंग में)। टाबर।

टींगाटोळी–*(ना०)* दो या चार जनों के द्वारा हाथ पाँव को पकड़ कर बलात् उठाकर ले जाने की क्रिया।

टींच–*(ना०)* १ वाद विवाद। २ बोला चाली। वाग्युद्ध। २ लड़ाई। झगड़ा। टिच।

टीचको–दे० टीचियो।

टीचा टीच–*(ना०)* दो जनों के परस्पर का वाग्युद्ध। वाद्‌विवाद। बोलचाल।

टीचियो–*(न०)* १ व्यंग्यपूर्ण चुभने वाली बात। ताना। २ चोट। ३ शरीर या किसी पात्र में चोट लगने से बनने वाला चिह्न। चोट का चिह्न।

टीट–*(ना०)* पक्षी की विष्टा। बींट।

टीटोडी–दे० टीटाडी।

टीड–*(न०)* टिड्डी। तीड। टीड।

टीडसी–*(ना०)* टिडसी। टिंडा।

टुकडाखोर–दे० टुकडेल।

टुकडी–*(ना०)* १ एक मोटा देशी कपड़ा। रेजी। २ दुपट्टा। ३ छोटा दल। टुकडी।

टुकडेल–*(वि०)*१ टुकड़े टुकड़े के लिये रोता फिरने वाला। २ माँगने वाला। भिखारी। ३ कंजूस। कृपण। ४ रिश्वत लेने वाला। घूसखोर।

टुकडो–*(न०)* १ टुकड़ा। छिन्न अंश। २ भाग। खंड। ३ रोटी का टूटा हुआ अंश।

टुकिया–*(न०व०व०)* कांचली का वह उभरा हुआ भाग जो कुचों के ऊपर रहता है।

टुक्कड–*(न०)* १ मोटा रोटी। २ रोटी का टुकड़ा। ३ टुकड़ा। *(वि०)* टुकडेल।

टुक्कडखोर–*(न०)* १ मंगता। भिखारी। २ रिश्वतखोर। *(वि०)*१ कंजूस। २ नीच।

टुग टुग–*(क्रि०वि०)* आँख पलकाये बिना देखते रहने का भाव।

टुचकलो–*(न०)*१ छोटी कहानी। चुटकला। २ हंसी की बात या कहानी। *(वि०)* छोटा। तुच्छ। क्षुद्र।

टुच्ची–*(वि०)* १ छोटी। २ ओछी। ३ धूर्ता। ४ दुष्टा।

टुच्चो–*(वि०)* १ छोटा। क्षुद्र। २ ओछा। छिछोरा। हलका। ३ धूर्त। कपटी। ४ दुष्ट।

टुणटुणाटो–दे० टणणाटो टणटणाटो।

टुरणो–*(क्रि०)* चलना। खिसकना। जाना। रवाना होना।

टुरान–*(न०)* अगाड़ा।

टूक–*(न०)* टुकड़ा। खंड।

टूटणो–*(क्रि०)* १ टुकड़े होना। भागणो। २ किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३ अचानक धावा करना। हमला करना। ४ संबंध छूटना। संबंध भंग होना। ५ शरीर में ऐंठन या तनाव के कारण पीड़ा होना। ६ धनमाल समाप्त हो जाना। दरिद्र होना। ७ पक्ष की किसी तिथि का न होना। क्षय होना। ८ सिलसिला बंद हो जाना। क्रम नहीं रहना।

टूट फूट–*(ना०)* किसी वस्तु के नष्ट होने की क्रिया या भाव। ध्वंस। खंडन।

टूटोडो *(भू०का०कृ०)* टूटा हुआ। खंडित।

टूटा फूटो–*(वि०)* टूटा फूटा। खंडित।

टूणो–टोना। जादू।

टूम–*(ना०)*१ बहुमूल्य और बढ़िया गहना। २ कोई विशिष्ट वस्तु। ३ भेंट में दी जाने वाली कोई कीमती व नफीस वस्तु। ४ चुटकल।

टूमण–दे० टूमण टामण [टामण का द्विर्भाव, टामण टूमण]।

टूमरण-टामरण-(न०) जादू टोना। टामरण टूमरण।

टूमो-(न०) १ अगुली की गांठ। २ अगुली के बीच की जोड का (उभरा हुआ) उपरि भाग।

टूर-(वि०) १ अधिक नशा करने वाला। २ अफीमची। (न०) १ अधिक नशा। २ प्रवास। मुसाफिरी।

टूल-(न०) एक प्रकार का लाल कपडा।

टू क-(ना०) १ वृक्ष, पहाड आदि की सबसे ऊची चोटी। २ शिखर। (वि०) १ थोडा। २ ओछा। कम। ३ संक्षिप्त।

टू कणो-(क्रि०) कम करना।

टू कारण-(न०) सक्षेप। सार रूप। (क्रि०वि०) थोडा मे। सक्षेप मे।

टू काणो-(क्रि०) कम करवाना।

टू कावणो-दे० टू काणो।

टू कियो-(न०) १ किलकारी। २ ऊची जगह। चोटी। ३ किसी ऊचे स्थान या पहाडी पर बठ कर आने जाने वाला की निगाह रखने वाला व्यक्ति। जगल म नियत किया जाने वाला वह चौकीदार या गुप्तचर जो किसी शत्रु या अवाछनीय व्यक्ति के आने पर साकेतिक भाषा मे दूसरे टू किये को (आगे से आगे) सूचना देता रहता है।

टू को-(वि०) १ कम। थोडा। २ ओछा। ३ संक्षिप्त। ४ विस्तार मे कम। सकीर्ण। तग।

टू कोटच-(वि०) १ कम लबा। बहुत छोटा। २ संक्षिप्त। (अव्य०) बस। काफी। समाप्त।

टू गणो-(क्रि०) १ भोजन करने वाले की थाली के भोज्य पदार्थों को खाने की इच्छा से एक टक ताकते रहना। खाने की लालसा से भोज्य सामग्री के आसपास फिरना तथा ताकना। २ लालायित होना।

टू च-(ना०) १ चोंच। २ नोक। ३ शिखर।

टू चको-(न०) १ किसी वस्तु का अग्रभाग। सबसे ऊपर का छोटा पतला हिस्सा। २ पत्तें, फल आदि का वह छोटा डठल (पतला सिरा या नोक) जो टहनी से जुडा रहता है।

टू चणो-(क्रि०)चोच मारना। दे० टू चको।

टू चो-दे० टूको।

टू ट-(ना०) चाट या बात रोग से हाथ अथवा अगुलियो म होने वाला टेढापन।

टू टियो-(वि०) १ टू टी हुई अगुली वाला। जिसके हाथ की अगुली कम हो। २ टेढी अगुलियो वाला। (न०) एक प्रकार का बुखार। इनफ्लुएन्जा।

टू टी-(ना०) नल म से पानी निकालने की टोटी।

टू टो-(वि०) कटे हुए या मुडे हुए हाथ या अगुली वाला।

टू टयो-दे० टूटियो।

टू ड-(ना०) सूअर का मु ह। थुथना। तु ड।

टू डाड-(न०) १ व्यग्य या क्रोध मे मुँह के लिये किया जाने वाला तुच्छार्थक श द। २ बिगाडा हुआ मुँह। नाराजगी की मुखाकृति। ३ क्रोधावश की मुखाकृति। ४ गुदा। ५ शूकरमुख। ६ सूअर। शूकर।

टू डाळ-(न०) सूअर। शूकर।

टू डो-(न०) पेंदा। तल। तू डो।

टू प-द० टू पियो।

टू पणो-(क्रि०) गला दबाना। टू पा दना। टू पो देणो।

टू पलो-दे० टू पियो।

टू पियो-(न०) गले का एक गहना।

टू पीजणो-(क्रि०) १ टू पा लगना। गला घुटना। २ आर्थिक कष्ट भुगतना। तगी भुगतना।

टूपा–(न०) १ गला। २ गला दबाने का काम। गला दबाने जाने की क्रिया। फांसा।
टूप्यो–दे० टूपियो।
टेक–(ना०) १ प्रतिज्ञा। २ लाज। ३ हठ। दुराग्रह। जिद। ४ मर्यादा। ग्रान। ५ लिहाज। पक्ष। ६ भजन की पहली कड़ी। भजन या पद की स्थायी कड़ी। टेक। टेर। ६ ध्रुव पद। ध्रुपद।
टेकणो–(क्रि०) १ सहारा लेना। २ प्रवेश कराना। ३ प्रवेश करना। ४ लगाना। छूना। ५ टिकाना। सहारा देना। ६ ठहराना। रखना। थामना।
टेकरी–(ना०) १ पहाड़ी। २ छोटा टेकरा। छोटा टीबा।
टेकरो–(न०) बड़ी टेकरी।
टेकलो–(वि०) १ टेक वाला। हठी। २ प्रणधारी।
टेको–(न०) १ सहारा। ग्राधार। टेक। २ ग्राधार की वस्तु। टेकनी। ३ ग्रनुमोदन। ४ जोड़। सिलाई। टांका। ५ पवद। थिगली। ६ बंधन।
टेगड़ो–(न०) १ कुत्ता। २ एक वर्णसंकर हिंसक पशु। ग्रधबेगड़ो। बेगड़ो। ३ भेड़िया।
टेटो–(वि०) कच्चा। ग्रपक्व। (फल ग्रादि)
टेडो–दे० टेढ़ो।
टेढ–(ना०) १ व्यंग्य। २ गर्व। मिजाज। ३ बांकापन। टेढापन।
टेढाई–(ना०) १ बांकापन। टेढापन। तिरछापन। २ वक्रता। उद्दंडता। ३ मिजाज।
टेढापण–दे० टेढापणो।
टेढापणो–दे० टेढाई।
टेढो–(वि०) १ तिरछा। बांका। वक्र। २ कठिन। मुश्किल। ३ कुटिल। वक्र।
टेभो–(न०) १ सूग्रर का बच्चा। २ ग्रध बगड़ा। दे० टाभो।
टेर–(ना०) १ गायन की पहली कड़ी। ध्रुवपद। टेक। २ राग का प्रकार। ३ गाने में ऊँचा स्वर। तान। ग्रालाप। ४ पुकार। प्रार्थना। ५ ग्रावाज।
टेरणो–(क्रि०) १ टांगना। लटकाना। २ गाना शुरू करना। ३ तान लगाना। ग्रालापना। ४ पुकारना। ग्रावाज देना।
टेर्योड़ो–(भू०का०कृ०) टांगा हुग्रा। लटकाया हुग्रा।
टेरो–(न०) १ ग्रांसू रेंट ग्रादि के बहने का निशान। २ ग्रांसू लार रेंट ग्रथवा किसी पात्र में से पानी तेल ग्रादि की मंदगति से होने वाली रिसन या टपकन। रेलो।
टेव–(ना०) ग्रादत। टेव। बान। स्वभाव।
टेवकी–(ना०) १ सहारा। ग्रासरा। २ सहारा देने की वस्तु। लकड़ी।
टेवको–(न०) सहारा।
टेव टाळणी–(मुहा०) शौचादि से निवृत्त होना।
टेवटा लेणो–(मुहा०) टेव टाळणी का एक ग्रन्य रूप।
टेवटियो–दे० टेवटो।
टेवटो–(न०) स्त्रियों का एक कंठा भूषण। निमळियो। तवटो।
टेवो–(न०)१ जन्मकुंडली के साथ जन्म की तिथि वार ग्रौर समयादि का टिप्पण। जन्मपत्र। जन्माक्षर। २ जन्मकुंडली।
टेसण–(ना०) मुसाफिरों के बैठने उतरने के लिये रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान। स्टेशन। ठेसण।
टेसू–(न०) पलाश वृक्ष का फूल। केसूलो।
टैक्स–(न०) कर। महसूल।

टग-(न०) टीप की जालीदार चद्दर। जालीदार पतरा।
टम-(ना०) टाइम। समय।
टमो-टम-(अव्य०) यथा समय। ठीक समय पर। अविलम्ब।
टँवणो-दे० टहरना।
टँल-दे० टहल।
टलणी-दे० टहल।
टँलणो-दे० टहलणा।
टँल नदगी दे० टहल-नदगी।
टँलियो-दे० टहलियो।
टँलुभा-दे० टहलियो।
टल्यो-दे० टहलियो।
टँवारो-दे० टहकारो।
टरी-(न०) १ सिलाई। सावन। टाका। २ थिगली। कारी। पैबद।
टँगार-(न०) १ छोटे या दुर्बल की बड़ो के प्रति नाराजगी। २ बच्चे की नाराजगी। ३ नाराजगी। अप्रसन्नता। ४ गर्व। घमड।
टगारिया-(वि०)बात बात मे शीघ्र नाराज होने वाला। टगारी।
टगारी-दे० टगारियो।
टँट-(ना०) १ गर्व। घमड। २ अकड।
टँहको-(न०) १ बीमारी मे दर्द या अशक्ति से होने वाला शब्द। २ नखरा।
टोक-(ना०) एतराज। मनाई।
टोकणो-(क्रि०) १ ऐतराज करना। उज्र करना। आपत्ति उठाना। २ मना करना। टोकना। (न०) एक बरतन। हांडा। टोकना।
टोक—(न०) १ बड़ा घटा। घटा। २ घट का लोलक। ३ बड़ा लटकन।
टोकरचद-(न०) बड़प्पन का गर्व करने वाले व्यक्ति का व्यग्य पूर्ण नाम।
टोकरियो-(न०) १ (आरती उतारने के समय पुजारी द्वारा बजाई जाने वाली) छोटा घटी। २ घटा। ३ घूघरू। ४ गले के भीतर का लटकन। कौआ। काकलियो।
टोकरी-(ना०) १ घटी। २ डलिया। झोली। ३ स्त्रियों के कान का आभूषण।
टोकरा-(न०) बड़ा घटा। दे० टोकरियो। २ बड़ा घूघरू। ३ टोकरा। बड़ी टोकरी। भावा। झोली।
टोकळचद-दे० टोकरचद।
टोकळो-(न०) बड़ी जू। (वि०) मूर्ख।
टोकार-(ना०) १ टोकने का भाव। एतराज। २ दृष्टि का बुरा प्रभाव। दृष्टि दोष। नजर। ३ किसी सुन्दर वस्तु की की जाने वाली ऐसी या इतनी प्रशसा जिससे उस पर उलटा प्रभाव पड़े।
टोकारणो-(क्रि०) १ टोकना। एतराज करना। २ दृष्टि का बुरा प्रभाव डालना। नजर लगाना। ३ किसी सुन्दर वस्तु से आकर्षित होकर इतनी अधिक प्रशसा करना जिससे उस पर उलटा बुरा प्रभाव पड़े।
टोगडियो-(न०)गाय का बछड़ा। टोगडो।
टोगडी-(ना०) गाय की बछिया।
टोगडो-दे० टोगडियो।
टोटको-(न०) १ जादू टोना। २ आधि व्याधि को दूर करने के लिये किया जाने वाला तत्र मत्र प्रयोग। ३ सरल प्रयोग। सादा उपचार। ग्रामीण उपचार। ४ कार्य साधक युक्ति। कीमिया। ५ आसानी से अधिक धन मिले ऐसा इल्म।
टोटल-(न०)१ योग। जोड़। २ सब मदों की जोड़। सरवाळो। (वि०) सब।
टोटायत-(वि०) १ टूटा हुआ। गरीबी मे आया हुआ। २ हानि उठाया हुआ। ३ गरीब। निर्धन। ४ दूषा।
टोटी-(ना०) [illegible] का एक [illegible]

टोटी झूमर-*(न०)* स्त्रियों के कान का एक आभूषण जो टोटी और उससे घू घुरुदार लटकन वाला होता है।

टोटी भैना-*(न०)* स्त्रियों के कान और सिर का एक संयुक्त आभूषण।

टोटी साकळी-*(ना०)* स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

टोटो-*(न०)* १ हानि। घाटा। घाटो। २ न्यूनता। कमी।

टोड-*(न०)* १ जवान ऊंट। २ जवान ऊंटनी।

टोडड-*(न०)* ऊंट का बच्चा।

टोडडी-*(ना०)* ऊंट का मादा बच्चा।

टोडर-*(न०)* एक गहना।

टोडरमल-*(न०)* एक लोक गीत।

टोडरो-*(न०)* पाव का एक गहना।

टोडारू-*(न०)* १ ऊंट और ऊंटनियों आदि का समूह। २ ऊंट जाति। ३ ऊंट।

टोडियो-*(न०)* ऊंट का बच्चा।

टोडी-*(ना०)* १ एक रागिनी। २ छोटा टोडा।

टोडो-*(न०)* पटछती (टांड) या छज्जे आदि को ठहराने के लिये दीवाल की चुनाई से बाहर निकला हुआ एक विशेष पत्थर।

टोप-*(न०)*१ पेंदे में मुंह के समान गोलाई के ऊंचे किनारा वाला एक पात्र। कूंडा। पतीला। बड़ा पतीली। भाबा। २ युद्ध के समय पहिनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। ३ एक प्रकार की छज्जेवाली बड़ी टोपी।

टोपरो-दे० कोपरो।

टोपम-*(न०)* स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

टोपसी-दे० टोपाळी।

टोपाळी-*(ना०)* १ नारियल के गोलाकार गिरी भाग के ऊपर का आधा कठोर आवरण। नारियल की आधी खोपड़ी। २ गिरी भाग के कठोर आवरण का कटोरीनुमा आधा भाग। नारेली। नारियली। टोपसी।

टोपियो-*(न०)* पतीला। भाबा। तसला। कूंडो।

टोपी-*(ना०)* १ सिर का एक पहनावा। टोपी। २ अनाज के दाने का आवरण। दाने के ऊपर का छिलका। ३ एक टोपीनुमा साधन जिसको बंदूक के लौंग के ऊपर रख कर बंदूक दागी जाती है। ४ विदेशी शासन। म्लेच्छ शासन।

टोपो-*(न०)* १ बड़ी टोपी। टोपा। २ बूंद। छींट।

टोभा-*(न०)* १ ऊंची जगह। २ पहाड़ के किनारे की ऊंचाई। ३ पहाड़ पर की छोटी बस्ती। ४ रक्षा निरीक्षण आदि के लिये उस ऊंचाई पर बना हुआ स्थान। ५ छोटा तालाब। ६ बड़ा कुंआ।

टोयो-*(न०)* रहंट या बतगाडी का एक उपकरण।

टोरडो-*(न०)* १ जवान ऊंट। २ ऊंट का बच्चा। टोरियो।

टोरणो-*(क्रि०)*१ तलाश करना। ढूंढना। दगना। २ हांकना। चलाना (पशु को)।

टोरी-*(न०)* १ डींग। गप्प। २ धक्का। ठोकर। टक्कर।

टोळ-*(न०)* १ अनघड़ पत्थर। बड़ा पत्थर। २ समूह। ३ मसखरी। ठिठोली। *(वि०)* मूर्ख।

टोळणो-*(क्रि०)* १ पशुओं के समूह को हांकना। २ ढूंढना।

टोळा टाळ-*(वि०)* १ समूह व समाज से टला हुआ। २ भ्रष्ट। च्युत। ३ टाला हुआ। निष्कृत।

टोळी-*(ना०)* १ समुदाय। झुंड। २ संगठन। ३ मंडली। ४ दुर्वृत्त मनुष्यों का संगठित समूह।

टौलो-(न०) १ अगुली मे बीच मे जोड का मोड कर (उसके द्वारा) सिर मे मारी जाने वाली चोट । ठाग । २ उपालभ । उलाहना । ३ चुभने वाली बात । ताना ।

टौळो-(न०) १ समूह । झुड । २ पशुओ का झुड ।

टौम-(न०) स्त्रियो के कान का एक आभूषण ।

टौह-(ना०) १ खोज । पता । २ जानकारी । ३ छिपी बात की जानकारी का प्रयत्न ।

ट्रेन-(ना०) रेलगाडी ।

ठ

ठ-राजस्थानी वर्णमाला के ट वर्ग का मूर्द्ध स्थानीय दूसरा व्यजन वर्ण ।

ठक-(न०) १ सतोष । तृप्ति । दे० ठिक । २ ठोकने का शब्द ।

ठक-ठक-(ना०) ठोकने का शब्द ।

ठकराई-(ना०) १ ठकुराई । प्रभुत्व । २ बडाई । बडप्पन । रोब । मोटाई । ३ हुकूमत । शासन । (ना०) ठाकुर ।

ठकराणी-(ना०) ठाकुर की स्त्री । ठकुराइन । ठकुरानी ।

ठकरात-(ना०) १ ठकुरायत । ठकुराई । २ आधिपत्य । प्रभुत्व ।

ठकरायत-दे० ठकरात ।

ठकराळो-(न०) ठाकुर । जागीरदार ।

ठकाणो-दे० ठिकाणो ।

ठकार-(न०) 'ठ' अक्षर ।

ठकुराई-दे० ठकराई ।

ठकुरात-दे० ठकरात ।

ठकुरायत-दे० ठकरात ।

ठकुराळो-दे० ठकराळो ।

ठग-(न०) १ छली । धूर्त । २ धोखा देकर उल्लू बनाने वाला और धन इत्यादि मार लेने वाला । ३ अधिक दाम वसूल करने वाला । ३ नकली और खोटा माल बेचने वाला ।

ठगण-(न०) पाँच मात्राओ का एक गण (छद) ।

ठगणी-(वि०) १ मोहनी । मोहकारिणी । मोहित करने वाली । २ मायाकारिणी । मायाविनी । मायिनी । ३ ठगने वाली । धोखा देने वाली । (ना०) १ ठग की स्त्री । ठगिनी । २ कुटनी । ३ धूर्तस्त्री । चालाक स्त्री । ४ ठग विद्या । ५ ठगाइ । धूर्तता ।

ठगणो (क्रि०) १ ठगना । छलना । छल करना । २ सौदा बेचने मे बेईमानी करना । रद्दी माल देकर बहुत ज्यादा कीमत लेना । ३ स्वार्थ सिद्ध करने के लिये उल्लू बनाना । ४ धोखे से किसी की सपत्ति हथिया लेना ।

ठगपणो-(न०) १ ठगने का काम । २ धूर्तता । छल ।

ठगबाज-(न०) ठगने वाला । ठग ।

ठगबाजी-(ना०) ठगाई । प्रपच ।

ठगविद्या-(ना०) १ ठगने की हिकमत । धोखा देने का हुनर । २ धूर्तता । चालाकी ।

ठगइजणो-दे० ठगीजणो ।

ठगाई-(ना०) ठगी । धोखे बाजी । ठगने की क्रिया ।

ठगाण-(ना०) १ ठगाई । ठगी । २ ठगा जाने का भाव ।

ठगाणो-दे० ठगावणो ।

ठगारो-(वि०) १ ठगने वाला । २ धोखे बाज । ३ मायावी । छलिया । धूर्त ।

ठगावणो–दे० ठगीजणो ।
ठगी–(ना०) दे० ठगाई ।
ठगीजणो–(क्रि०)ठगा जाना । धोखा खाना ।
ठगोकडी–दे० ठगोरी ।
ठगोरी–(वि०) ठगने वाली । (ना०) ठगी ।
ठगोरो–दे० ठगारो ।
ठट–(न०) १ अधिक भीड । जमाव । ठठ । २ झुंड । ३ बहुत सी वस्तुओं का समूह ।
ठटणो–(क्रि०) १ स्थिर होना । २ इकट्ठा होना । ३ खड़ा होना । ४ डटे रहना । ५ उपस्थित होना ।
ठटोठट–(अव्य०) १ पूर्ण । पूरा भरा हुआ । २ बहुत अधिक ।
ठठकारणो–(क्रि०) १ दुत्कारना । २ धिक्कारना ।
ठठकारियो–(वि०) १ दुत्कारा हुआ । २ अपमानित । तिरस्कृत । ३ लांछित । कलंकित । ठिठकारियो ।
ठठाई–(ना०) १ स्त्रियों का कत्थई रंग का ओढ़ना । २ गमी में ओढ़ने की कत्थई रंग की ओढनी ।
ठठाणो–(क्रि०)१ धारण करना । पहिनना । (व्यंग में) २ जमाना । स्थिर करना । ३ एकत्रित करना । ४ यथावत् करना । ५ पीटना । मारना । ६ किसी काम को उत्तमता से करना ।
ठठारणो–(क्रि०) ठाठ करना । सजाना । २ धारण करना ।
ठठारी–(ना०) ठठेरे की स्त्री । ठठेरी । कसारी । कसारण । ठठेरण ।
ठठारो–(न०) १ ठठेरा । कसारो । २ युक्ति । बनाव । ३ ठाट बाठ । सजधज । ४ आडंबर ।
ठठावणो–दे० ठठाणो ।
ठठेरण–दे० ठठारी ।
ठठेरी–दे० ठठारी ।
ठठेरो–दे० ठठारो सं० १ ।
ठठोळी–(ना०) १ ठठोली । हँसी । मसखरी । २ ठट्ठा । दिल्लगी ।
ठट्ठा मसखरी–(ना०) हँसी मजाक । ठट्ठा दिल्लगी ।
ठट्ठो–(न०) १ मजाक । हँसी । मसखरी । ठट्ठा । २ ठठ्ठ अम्बार । ठठार ।
ठणक–दे० ठनक ।
ठणकणो–(क्रि०)१ ठण ठण शब्द होना । २ झनकार शब्द होना । ३ धीरे धीरे चलना ।
ठणकारो–(न०) ठणक आवाज ।
ठणको–(न०) १ ठनक । नृत्य की ध्वनि । २ चलन का ढंग । ठमक । ठुमक । ३ पाँव की आहट । चलन की आहट । ४ रोब । दबदबा । ५ गर्व ।
ठण ठण–(न०) खाली बर्तन की आवाज ।
ठणठण गोपाळ–(न०)१ ठन ठन गोपाल । साधन हीन मनुष्य । २ बुद्धिहीन मनुष्य । ३ निःसार वस्तु । (वि०)१ साधनहीन । निर्धन । २ बुद्धिहीन । मूर्ख ।
ठणठणपाळ–दे० ठण ठण गोपाळ ।
ठणठणाट–(न०) ठणठण शब्द ।
ठणणो–(क्रि०) १ मन में स्थिर होना । जमना । २ तत्परता से आरंभ करना । ३ आरंभ होना । छिड़ना । ठनना । ४ उद्यत होना । तनना ।
ठनक–(ना०) १ नृत्य की एक ध्वनि । २ झांझर की एक ध्वनि । ३ चलने का ढंग । गति । ४ ठनठन शब्द ।
ठप–(वि०) बंद । रुका हुआ । (न०) ठप शब्द ।
ठपकारणो–(क्रि०) १ साँचे में बिठाना । ठबकारणो । २ उलाहना देना ।
ठपको–(न०) १ उलाहना । उपालंभ । ओळभो । २ टक्कर । धक्का । ३ लांछन । कलंक ।

ठप्पो-(न०) सांचा । ठप्पा । सचो ।
ठबराकणो-दे० ठबराणो ।
ठबरो-दे० ठबको ।
ठमर-(ना०) १ घास की घास । २ घासों की ढेर । उजाड़ भरी घास । ३ घास की ठमर । ठुमर ।
ठमरा-(न०) १ ठमर ठमर चलने की क्रिया । २ चलते समय होने वाली चीज की आहट । पदचाप । ३ ठसक । ४ ठमक ।
ठमठोर-(वि०)१ समस्त । सभी । संपूर्ण । कुल । (मानव समूह) । २ संपूर्ण भरा हुआ । खूब भरा हुआ । ठमठोर ।
ठमठोरणो-दे० ठठोरणो ।
ठमणो-(क्रि०) ठहरना । रुकना । थमना ।
ठयो-(अव्य०) १ अस्तु । अच्छा । खैर । २ कोई बात नहीं । जो हो गया सो ठीक ।
ठरक-(ना०) १ दृष्टि दोष । २ टक्कर । धक्का । ३ हानि या आघात । ४ उपेक्षा ।
ठरकावणो-(क्रि०) १ डांटना । २ अपमानित करना । ३ धक्का मारना । ४ मार पीट करना ।
ठरकियोडो-दे० ठरकेल ।
ठरकेत-(वि०)ठरके वाला । हैसियत वाला ।
ठरकेल-(वि०)१ उपेक्षित । २ अपमानित । तिरस्कृत । ३ फटकारा हुआ । ४ ठरकाया हुआ । धक्का मारा हुआ । ५ निलज्ज । ६ नालायक ।
ठरको (न०) १ प्रहार । चोट । झटका । २ धक्का । टक्कर । ३ हैसियत । बिसात । सामर्थ्य । ४ गर्व । अभिमान । ५ प्रतिष्ठा ।
ठरडणो-(क्रि०) १ पाँवों को जमीन से रगडते चलना । २ खींचना । घीचना । घसीटना । घींचणो । ३ दौडाना ।
ठरडो-(न०) मारवाड में पोकरण और उसके आस-पास का प्रदेश ।
ठरणो-(क्रि०) १ ठंडा होना । २ सर्दी लगना । ३ ठंड से गाढ़ा या ठोस होना । ४ जलती हुई चीज का ठंडा होना । गरम चीज का ठंडा होना । ५ संतोष होना । शांति होना । ६ शाप मिटना । ७ निभना । ८ मरना ।
ठठियो-(न०) बर की गुम्मा । २ घर का सार चीज । कुठियो ।
ठळोरटी-(ना०) १ छेड़छाड़ । छेड़खानी । २ व्यंग्य । ताना । ३ मजाक । हँसी ।
ठल्लो-दे० ठालो ।
ठव-(ना०) १ ठौड़ । स्थान । २ आहट ।
ठवट-दे० ठौड़ ।
ठवणी-(ना०) पुस्तक को पढ़ते समय उसे रखने का एक उपकरण । रळ ।
ठवति-(ना०) स्तुति । (वि०) स्थापित ।
ठवणो-(क्रि०) १ रखना । २ स्थापित होना । ३ चलना ।
ठस-(वि०) १ ठम । ठोस । ठसकर भरा हुआ । जो भीतर से खाली न हो । २ सख्त । ३ जमा हुआ । ४ जो गफ बुना हुआ हो । ५ सुस्त । (क्रिवि०) परिपूर्ण । ठसाठस ।
ठसक-(ना०) १ रोब । शान । ठस्सा । २ अभिमान पूर्ण भाव । ३ लटका । ठमक । नखरा । ४ ऐंठ । मरोड़ । अकड़ । ५ धाक । ६ ठोकर ।
ठसकदार-(वि०) १ शानदार । ठस्सादार । २ अभिमानी । ३ नखर वाला । ४ अक्कडवाला । अक्खड़ ।
ठसकीलो-दे० ठसकदार ।
ठसको-दे० ठसक ।
ठसणो-(क्रि०) १ तरल पदार्थ का ठोस रूप होना । जमना । गाढा होना । २

हृदय मे जमना। मन में बैठ जाना। ३ समझ मे आ जाना। ४ ठहरना। रुकना।

ठसाठस-(अव्य०) ठसो ठस। ठूस-ठूस कर। (वि०) पूरा भरा हुआ।

ठसाणो-दे० ठसावणो।

ठसावणो-(क्रि०) १ जमाना। ठसाना। गाढा करना। २ मन म बिठवा देना। समझ म बिठा देना। ३ ठहराना।

ठसो-(न०) १ प्रभाव। २ सिक्का। ३ गर्व। ४ साँचा।

ठसोठस-दे० ठसाठस।

ठस्सो-दे० ठसो।

ठहकणो-(क्रि०)१ बोलना। शब्द करना। २ घमड म बात करना। ३ घमड करना। ४ टक्कर लगना। ५ बजना। ध्वनि होना।

ठहको-(न०) १ शब्द। आवाज। २ मिजाज। घमड। ३ व्यग्य। ताना। ४ साधारण धक्का। हलकी टक्कर। ५ ठसका।

ठहणो-(क्रि०) १ बनना। तयार होना। २ निश्चित होना। तय होना। ३ सज्जित होना। तयार होना। ४ अच्छा लगना। शोभित होना।

ठहरणो-(क्रि०) १ ठहरना। रुकना। २ खडे रहना। स्थिर रहना। ३ विश्राम करना। पडाव डालना। मुकाम करना। टिकना। ४ स्थाई रहना। ५ साथ देना। काम आना। ६ निश्चित होना। तय होना। ७ बद होना। रुकना। ८ समाप्त होना।

ठहराई-(ना०) १ ठहराने का काम। २ निश्चय।

ठहराणो-(क्रि०) १ ठहराना। रोकना। २ रुकवाना। ठहराना। ३ खडा रखना। स्थिर करना। ४ निश्चित करना। तय करना। ५ टिकाना। विश्राम करना। पडाव डलवाना। ६ स्थाई बनाना। पक्का बनाना। ७ बद करना। रोकना। ८ रुकवाना। समाप्त करवाना।

ठहराव-(न०) १ विश्राम। मुकाम। २ प्रस्ताव। प्रसग। बात। ३ निश्चय। निर्णय।

ठहरावणो-दे० ठहराणो।

ठहाणो-दे० ठहावणो।

ठहावणो-(क्रि०)१ बनाना। तयार करना। निर्माण करना। २ सहारा देना। ३ व्यवस्थित करना। जमाना। ४ मरम्मत करना। दुरस्त करना। ५ निश्चय करना। ६ सजाना। तयार करना। अलकृत करना। ७ स्थापित करना।

ठठ-(वि०) १ कडा। सख्त। २ सूखा। ३ रीता। खाली। ४ कुछ कम (तोल म) (न०) १ ठूठा। २ अकडन। ऐंठन।

ठठणपाळ-दे० ठणठण गोपाल।

ठठाणो-दे० ठठावणो।

ठठारी-दे० ठठारो।

ठठारो-(न०) ठठेरा।

ठठावणो-(क्रि०) १ धारण करना। पहनना। (व्यग म) २ भरने के लिये पात्र को हिलाना। ३ खूब भरना। हिला हिला कर भरना।

ठठो-(वि०) १ तोल म कुछ कम। तोल मे बराबर नही। २ तोल म अधिक नही। ३ तोल मे न ज्यादा न कम।

ठठोर-(वि०) १ पूर्ण भरा हुआ। २ बर तन को हिला हिला कर खाली जगह भरने का भाव।

ठठोरणो-(क्रि०)१ हिला हिला कर भरना। २ पूरा भरने के लिये बरतन को हिलाना। ३ हिलाना। ४ पीटना। ठोकना। ५ बरतन घडते समय हथाडे की हलकी चोटें मारना। मठारणो।

ठड-(ना०) १ ठड। सर्दी। २ शीतलता। ३ सर्दी।जुकाम।

ठडक-*(ना०)* १ शीतलता। ठड्क। २ शांति। तृप्ति। ठड्क।

ठडाई-*(ना०)* १ बादाम पिस्ता गुलाब के फूल, काली मिर्च, इलायची आदि को पाट और पानी या दूध मे छान कर बनाया जाने वाला एक शीतल पेय। २ शीतलता।

ठडास-*(न०)* १ ठडापन। शीतलता। २ सुस्ती। मदता।

ठडी-*(ना०)*१ शीत। सर्दी। २ शीतलता। *(वि०)* शीत। सद। ठडी।

ठडो-*(वि०)* १ ठडा। शीतल। २ बहुत पहले पका कर रखा हुआ। बासी। ३ मद। सुस्त। धीमा। ४ स्वस्थमना। ५ शान्त।

ठडोगार-*(वि०)* खूब ठडा। बर्फ सा ठडा।

ठडो टीप-*दे० ठडोगार।*

ठडो ठरियो-*(वि०)* बहुत समय पहले पकाया हुआ। ताजा नही। बासी। ठाडो ठरियो।

ठडो वासी-*दे० ठडा ठरियो।*

ठा-*(न०)* १ मालूम। पता। खबर। २ ज्ञात। जानकारी। ठाह।

ठाइ-*(ना०)* १ जगह। स्थान। २ स्थिर। *(वि०)* स्थिर रहने वाला।

ठाउ-*(न०)* १ जगह। स्थान। ठाम। २ बरतन। वासण। ठाम।

ठाए-*दे० ठाहे।*

ठाग्रा-*(न०)* स्थान। *(क्रि०वि०)* ठिकाने सर। ठिकाने पर। यथास्थान। ठीक जगह पर। ठायो।

ठाम्राठा-*दे० ठाम्रोठाम।*

ठाम्रोठाम-*(क्रि०वि०)* यथास्थान। ठीक जगह पर। ठामोठाम।

ठाक ठोर-*(ना०)* १ मारपीट। ठोकना। पीटना। पिटाई। २ बोहनी की गाहकी म किसी गाहक को ठगने की क्रिया। ३ बोहनी में गाहक को ठगने का शकुन ठगने की भावना।

ठाकरणो-*(क्रि०)* १ पत्थर को घडना। पत्थर को दूसरी तीसरी बार घड सुडौल बनाना। आकार देना।

ठाकर-*(न०)* १ जागीरदार। ठाकुर। क्षत्री के लिये आदर सूचक शब्द। शासक।

ठाकराई-*दे० ठकराई।*

ठाकरा *(अव्य०)* सामान्य क्षत्री के लि आदर सूचक सबोधन।

ठाकरियो-*(वि०)* छोटा। *(न०)* १ ठाकु (अपमानक सूचक) २ छोटा ठाकुर

ठाकरियो वीछू-*(न०)* छोटी जाति क अत्यत विषैला बिच्छू।

ठाकरी-*(ना०)*१ ठकुराई। २ ओहदा। प ३ धनमाल।

ठाकुर-*दे० ठाकर।*

ठाकुरजी-*(न०)* श्रीकृष्ण या विष्णु की प्रतिमा।

ठाकुरद्वारो-*(न०)* विष्णु या विष्णु के अवतार श्रीराम या श्रीकृष्ण का मदिर। २ वैष्णवों का मदिर।

ठागो-*(न०)*१ ठगाई। छल। २ आडम्बर। ढोंग। दिखावा।

ठाट-*(न०)*१ धनमाल आदि से सभी प्रकार का सुख। आराम। २ सजावट। शोभा। ३ भीड। मजमा। जमघट। ४ शान। शान शौकत। ठाट। ५ भपका। आडम्बर। ६ ढग। शैली। ७ समारभ। ८ धन। माल। ९ अधिकता। बहुतायत। १० झुड। ११ सेना।

ठाटदार-*(वि०)* १ शानदार। ठाटदार। ठाट वाला। २ शोभावाला। ३ सजावट वाला। ४ आडबर वाला।

ठाट-बाट-*(न०)* १ वैभव। सम्पन्नता। २ सजधज। तडक भडक।

ठाठ–दे० ठाट।

ठाठियो–(न०) १ 'ठाट' का तुच्छता सूचक शब्द। २ कूटे का बनाया हुआ छोटा बरतन। ३ ठाठा ठाठिया आदि कूटे के बरतन, खिलौने बनाने वाला व्यक्ति।

ठाठी–(ना०) आड। रोक। विघ्न।

ठाठो–(न०) १ ढाचा। २ कूटे का बनाया हुआ एक बरतन। ३ शरीर। ४ शव। लाश। ५ हड्डियो का ढाचा। पंजर। ६ बाणो को रखने का ऊट के चमडे से बना एक थैला। चोगा। तरकश।

ठाड–(ना०) ठड। शीत।

ठाडक–(ना०) १ ठडक। २ शांति।

ठाडी–(ना०) १ राख। भस्म। २ सर्दी। जाडा। शीत। ३ ठडी। शीतलता। (वि०) १ सुस्त। २ ठडी। शीतल। ३ बासी।

ठाडो–(वि०) १ ठडा। शीतल। २ ताजा नही। बासी। ३ मद। सुस्त। धीमा। (न०) १ व्रण अथवा किसी दर्द के स्थान का गरम शलाका द्वारा दागने की क्रिया। २ दागने का निशान। दाग। डाम। चुहियो। ३ शीतला देवी को भेंट धरने के लिये एक दिन पहिले बनाया हुआ बासी भोजन। ४ (भू०कृ०) खडा। स्थिर।

ठाडोगार दे० ठडागार।

ठाडो टीप–(वि०) अत्यन्त ठडा।

ठाडो ठरियो–दे० ठडो ठरियो।

ठाडो पहोर–(न०) गरमी की मौसम मे दिन का वह समय जब सूर्य तपा न हो। अथवा अस्त होने जा रहा हो। प्रात काल या ढलते दिन का समय।

ठाडो पेट–(न०) १ बडी बूढी स्त्रियो द्वारा सौभाग्यवती स्त्रियो को दिया जाने वाला पुत्रवती होने का आशीर्वाद। २ स्वास्थ्य की दृष्टि से पेट का ठडा रहना।

ठाडो बासी–दे० ठडो बासो।

ठाडोळ–(ना०) ठडक। शीतलता।

ठाडोळाई–दे० ठाडोळ।

ठाढ–दे० ठाड।

ठाढो–दे० ठाडो।

ठाण–(ना०) १ मवेशी को घास डालने का स्थान। २ मवेशी को बाँधने का स्थान। ३ तबेला। ४ स्थान। जगह। ५ वश। कुल। ६ घोडी की प्रसव दशा। ७ घोडी का प्रसव।

ठाणणो–(क्रि०)१ विचार करना। निश्चय करना। २ रचना। रचना करना। ३ किसी काम को करने का दृढ निश्चय करना। ४ तत्परता से आरभ करना।

ठाण देणो–(मुहा०) घोडी का प्रसवना। घोडी का बच्चा देना।

ठाणपूर–(वि०) १ अपने पद, कुल और व्यक्तित्व इत्यादि की परम्परागत प्रतिष्ठा को निभाने वाला तथा इनकी कीर्ति को बढाने वाला। वश वर्धन। २ अपने स्थान पर शोभा देने वाला। ३ उच्च कुल मे उत्पन्न। कुलवान। खानदानी। ४ प्रतिष्ठित। ५ रोबदार। ६ अपने पद या स्थान की मान मर्यादा रखने वाला।

ठाण मिणगार–(वि०) १ एक जगह पडा रहने वाला। २ किसी के काम नही आने वाला। निकम्मा। निठल्ला।

ठाणा–(न०ब०व०) जनधर्म के तेरहपथी या बाईस टोले के साधुओ की सख्या का नाम। सख्या। गिनती।

ठाणाग–(न०) जन धर्म का स्थानागसूत्र ग्रथ।

ठाणियो–(न०) १ तनेवे का नौकर। साहणी। २ मवेशी के लिये कुतर ग्वार बाजरी आदि का मिश्रण पकाने का स्थान व पात्र। दे० दहूठियो। ३ दे० ठाण स० १ और २।

ठाणो–(न०) जन साधु। (क्रि०)१ स्थापित करना। २ ठानना। निश्चित करना।

ठाम-(न०) १ स्थान। जगह। २ घर। ३ मकान के विभिन्न भाग—कोठा, कमरा आदि। ४ बरतन। पात्र।

ठाम ठिकाणो-(न०) १ घर और उसका पता। अता पता। नामठाम। २ घर बार।

ठाम ठीकरा-(न०ब०व०)१ घर का सामान। घर विकरी। २ बरतन वगैरा।

ठामणो (क्रि०) १ रोकना। ठहराना। २ सहारा देना। थामना। ३ आश्रय देना। सहारा देना। मदद देना।

ठामोठाम-(अव्य०) १ यथास्थान। अपनी अपनी जगह। २ प्रत्येक स्थान। ३ प्रत्येक स्थान पर। जगह जगह। ४ ठीक स्थान पर।

ठायो-(न०) १ बातचीत करने का स्थान। उठने बैठने का स्थान। आने जाने की जगह। २ मिलने का स्थान। गुप्त स्थान। ३ निश्चित स्थान। लक्ष्य स्थान। ४ ठहरने का स्थान। ५ ठिकाना। पता। ६ घर। निवास। ठाँव। ७ निशान। खोज। ८ स्थान। जगह।

ठार-(ना०) १ नमी। गीलापन। २ ठंड। शीत। ३ ओस। झाकळ। ४ ठंडापन। ५ मृत्यु।

ठारणो-(क्रि०) १ ठंडा करना। शीतल करना। २ जमाना। ३ समाप्त करना। मारना। ४ बुझाना। शांत करना। शीतल करना।

ठारी-(ना०) १ हलकी ठंड। २ प्रातःकाल की ठंडी। ३ आश्विन कार्तिक की ठंडी। ४ शबनम। ओस। झाकळ।

ठाळ-(ना०)१ कुनान। छनाग। २ तलाश।

ठालणो-(क्रि०) १ खाली करना। २ गिराना। पटकना। ३ एकत्र करना। ढेर लगाना। ४ ढूंढना। खोजना। ५ छाँटना। चुनना। ६ उंडेलना।

ठालप-(ना०) बेकारी।

ठालवणो-(क्रि०) दे० ठालणो।

ठाळियो-दे० ठळियो।

ठाली-(वि०)१ खाली। रीता। २ बेकाम। बेकार। ठाला। ३ गाभिन न हो। (गाय, भैंस आदि मवेशी)। (अव्य०) १ अकारण। बेमतलब। २ सिर्फ। केवल। मात्र।

ठालीठम-(वि०) बिलकुल खाली।

ठालेड-(वि०) १ बिना सूझ बूझ का। नासमझ। मंदबुद्धि। २ निकम्मा। आलसी। निरर्थक। ३ लबाड। गप्पी।

ठालेडाई-(ना०)१ ठालेड व्यक्ति के काम। नासमझी। २ लबाडपन।

ठालो-(वि०)१ रीता। खाली। २ जिसके पास कोई काम न हो। ठाला। बेकार। (अव्य०) १ अकारण। बेमतलब। २ मात्र। केवल। सिर्फ।

ठालो ठाकर-(न०) १ नाम का ठाकुर। २ भूखा ठाकुर। दरिद्री जागीरदार।

ठालो भूलो-(वि०)१ असमर्थ और निर्धन। २ भाग्यहीन। अभागा। बदनसीब। ३ निकम्मा। नालायक।

ठावकाई-(ना०) १ गंभीरता। सजीदगी। २ प्रामाणिकता। ३ योग्यता। ४ विवेक। ५ बडप्पन। ६ लुच्चाई। ७ बडप्पन की डींग।

ठावकी-(वि०) १ रूपवान। सुंदर। २ अच्छी। ३ व्यवस्थित। ४ चालाक। ५ लुच्ची।

ठावको-(वि०) १ प्रामाणिक। २ योग्य। ३ विश्वासपात्र। ४ विवेकी। ५ मुख्य व्यक्ति। ६ गंभीर। सजीदा। ७ लुच्चा। ८ डींग हाँकने वाला। ९ चालाक। १० खानदानी।

ठावणो-दे० ठहावणो।

ठावो-(न०) १ निश्चित स्थान। २ यथा स्थान। ३ निश्चय। ४ वसूली। (वि०)

१ विश्वसनीय। २ प्रतिष्ठित। ३ प्रसिद्ध। ४ नित्य। शाश्वत। ५ युक्ति स्थान। बदनाम। ६ लुच्चा। (क्रि०वि०) ठिकानसर। पतवार।

ठाह्–(ना०)१ पता। ठिकाना। २ खबर। खोज। पता। ३ सूचना। खबर। ४ स्थान। जगह्। ठा।

ठाहणो (क्रि०)१ बनाना। सम्पादन करना। तयार करना। २ सजाना। ३ जमाना। यथास्थान स्थिर करना। ४ स्थापित करना।

ठाहर–(ना०) जगह्। स्थान।

ठाहियो–दे० ठायो।

ठाहै–(भ्र्य०) ठिकान पर।

ठाहो–दे० ठायो।

ठा–(ना०) १ जगह्। स्थान। २ ठिकाना। पता। ३ बहुत छूने का शब्द।

ठाठी–(वि०) जो ब्याती न हो। बाझ (मादा पशु)।

ठाठो–दे० ठठो।

ठामणो–दे० ठामणो।

ठायचो–दे० ठायो।

ठाव–दे० ठाम।

ठासण (न०) घुटना। गोडो।

ठासणो–दे० ठूसणा।

ठासमो–(न०) बुनाई का गाढापन। (वि०) १ गाढा बुना हुआ। पास पास धागा से सघन व ठास बुना हुआ। घट्ट बुना हुआ। २ दबा दबा कर भरा हुआ। ठुंसा हुआ। डट कर भरा हुआ। ३ डट कर खाया हुआ।

ठिक–(न०) १ भोजन की तृप्ति। २ सन्तोष। तृप्ति। ३ स्थिरता। ४ यथा स्थान। सुस्थान।

ठिकाणो–(न०) १ स्थान। जगह्। २ ठिकाना। पता। ३ जागीरी। ४ जागीरदार का घर। ५ घराना। वंश। प्रतिष्ठित घर। जीविका का स्थान। ७ जीविका का ढंग। ८ स्थिति। ९ स्थिरता। १० निश्चय। ११ व्यवस्था। ढंग।

ठिकारणो दे० ठकारणो।

ठिकारियो–दे० ठकारियो।

ठिणगणणो–(क्रि०) बच्चों के समान रोना। ठुनकना। ठुनकना।

ठिरडणो–दे० ठरडणो।

ठीक–(ना०) १ खबर। पता। सूचना। २ ज्ञान। जान। जानकारी। ३ ग्रसंदिग्ध बात। स्थिर बात। ४ स्थिर प्रबंध। पक्का आयोजन। (वि०) १ अच्छा। भला। २ शुद्ध। सही। ३ जैसा हो वैसा। यथार्थ। ४ उचित। उपयुक्त। ५ चाहिये जैसा। बराबर। ६ न अच्छा न बुरा। सामान्य। ७ निश्चित। ८ यथा परिणाम। (ग्रव्य०) ग्रस्तु। खैर। अच्छा। भले।

ठीकठाक–(ग्रव्य०) व्यवस्थित रीति से रखा या सजाया गया हो ऐसा। ठीकठाक। (वि०) १ प्रमाण ग्रथवा तुलना मे अच्छा। २ अच्छा। दुरुस्त। ३ व्यवस्थित। ४ साधारण। कामलायक।

ठीक पडणो–(मुहा०) १ समझ मे आना। जान पडना। २ पता लगना। मालूम होना।

ठीकरी–(ना०) मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ खंड। ठिकरी।

ठीकरो–(न०) १ मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ टुकडा। ठीकरा। २ मिट्टी का बरतन। ३ भिक्षा पात्र। ४ बरतन के लिये यूरनासूचक शब्द। बरतन। ५ निकम्मी चीज। (वि०) व्यर्थ। निकम्मा।

ठीकाठीक–(वि०) १ साधारण। मामूली। २ जैसा-तैसा। ३ काम चलाऊ। जैसे तैसे निभे वैसा।

ठीणणो–(क्रि०) १ निंदा करना । हलका दिखाना । २ अप्रतिष्ठित करना । ३ उपालंभ देना । बुरा भला कहना । ४ तुच्छ समझना । हलका समझना ।

ठीब–(न०) टूटे हुये मिट्टी के घड़े हंडिया आदि के नीचे का भाग ।

ठीबडी–(ना०) १ टूटा हुआ मिट्टी का बरतन । २ टूटे हुये मिट्टी के घड़े आदि के नीचे का भाग का बड़ा टुकड़ा ।

ठीबडा–(न०) १ फूटा हुआ मिट्टी का बरतन । २ बड़ी ठीब ।

ठीमर–(वि०) १ गंभीर । २ शांत । धीर । धैर्यवान । ३ आवश्यकता से अधिक नहीं बोलने वाला ।

ठीमरपणो–(ना०) १ गंभीरता । २ धैर्य । धीरज ।

ठीमराई–दे० ठीमरपणो ।

ठीयणो–(क्रि०) १ होना । २ बनना । थियणो ।

ठीया–(न०ब०व०) १ वे दो पत्थर जिन पर पाँव रख कर पाखाना फिरने को उकड़ू (पाँवों को टिका कर) बैठा जाता है । २ अस्थाई तौर से बनाये हुये चूल्हे के तीन पत्थर ।

ठीगणो–(वि०) प्रमाण में कम ऊँचाई । ठिगना । बौना ।

ठीगो–(वि०) १ जबरदस्त । २ ठिगना ।

ठीडो–(न०) सुराख । छेद ।

ठुमरी–(ना०)एक प्रकार का गाना या राग ।

ठुठी–(ना०) बारीक छोटा काँटा । काँटिया । फाँस ।

ठुठियो–दे० ठठियो ।

ठुसी–(ना०) स्त्रियों के गले का एक गहना ।

ठूकलणा–(क्रि०) १ किसी के काम में दोष निकालना । ऐब देखना । २ डाँटना । फटकारना ।

ठूग–दे० ठूगार ।

ठूगार–(न०) अफीम, भंग आदि लेने के बाद किया जाने वाला नाश्ता । नशा लेने के बाद किया जाने वाला जलपान ।

ठूगो–(न०) १ कागज की थैली । २ अफीम, शराब आदि नशीली चीजें खाने पीने के बाद लिया जाने वाला नाश्ता । ठूगार ।

ठूठ–(न०) १ सूखा हुआ वृक्ष या लकड़ा । पेड़ का सूखा तना । ठूठ । २ वह लाश (शरीर) जिसका दम निकले हुये बहुत समय होने के कारण अकड़ गई हो ।

ठूठो–दे० ठूठ ।

ठूसणो–(क्रि०) १ दबा दबा कर भरना । बलपूर्वक घुसाना । २ पेट भर जाने पर भी खाते रहना । डट कर खाना ।

ठूसियो–(न०) १ गले का एक गहना । २ ऊँट को खाँसी होने का एक रोग ।

ठेक–दे० ठेका ।

ठेकडी–दे० ठेका ।

ठेका देणो–(मुहा०) भाग जाना ।

ठेकी–(ना०) १ हँसी । मजाक । ठठोला । २ ताना । व्यंग्य । ३ कुदान । चौकड़ी ।

ठेकेदार–(न०) ठीकेदार ।

ठेकेदारी–(ना०) १ ठेकेदार का काम । ठीकेदारी ।

ठेको–(न०) १ अनुमान । भाव । २ पक्का यत्न । करार । ३ घोड़ी की एक चाप । ४ ठेका । ठीका । इजारा । ५ तबला या ढोलक बजाने की एक रीति । ताल ।

ठेकरी–(ना०) उपहास । दिल्लगी । निंदा सूचक हास । मखौल । ठेसरी ।

ठेट–(न०) १ शुरू । प्रारंभ । २ अंत । पार । ३ दूर । फासला । ४ सदय । (०वि०) प[illegible] । अंतर पर ।

अव्य० [illegible] । २ सम्य

ठेट ताणी–दे० ठेट तक ।
ठेट ताई–दे० ठेट तक ।
ठेट थी–(श्रव्य०) शुरू से । ठेठ से । प्रारभ से ।
ठेट सू–दे० ठेट थी ।
ठेट सूधो–दे० ठेट तक ।
ठेटा ताणी–दे० ठेट तक ।
ठेटा ताई–दे० ठेट तक ।
ठेटा लग–दे० ठेट तक ।
ठेटा लगी–दे० ठेट तक ।
ठेटी–(ना०) कान का मैल । ठेंठी । ठेपी ।
ठेठ–दे० ठेट ।
ठेठर–(न०) १ थियेटर । थ्येटर । २ नगे पांवों चलते रहने से बन जाने वाला पगथली का मोटा चमड़ा । ३ गोबर मिट्टी आदि से भरा हुआ गवारू जूता । ४ पुराना और फटा सूखा जूता । ५ परिमाण और आवश्यकता से अधिक भारी वस्तु ।
ठेठी–दे० ठेटी ।
ठेव–दे० ठस ।
ठेव खाणो–(मुहा०) १ उलझना । छलकना । २ उछलना । ३ उमडना । ४ धक्के खाना । ५ भटकना ।
ठेवा देणो–(मुहा०) १ उमडना । २ उछलना । । ३ छलकना ।
ठेवो–(न०) १ बढाव । उमड । २ उछाळ । उछल । छलकन ।
ठेलणो–(क्रि०) १ भगाना । २ धकेलना । ३ धक्का देना । ४ धक्का देकर आगे बढ़ना । ठेलना । ५ ठोकर मारना । ६ दूर करना । ७ अस्वीकार करना । ८ भरना । ९ उडेलना । ढालना । १० लौटाना । ११ भाग जाना । १२ चलना । १३ चलाना । १४ छोडना ।
ठेलमठेल–(न०) १ ऊपरा ऊपरी धकेलने का काम । २ धक्कम धक्का । ठेला पेल । (वि०) १ बहुत । अधिक । २ पूर्ण ।
ठेलमो–(वि०)१ खूब अधिक । २ प्रपूरित । ३ भरपेट ।
ठेलो–(न०) १ हाथ पर चलाई जाने वाली गाड़ी । ठेला । २ धक्का ।
ठेळो–(न०) १ चुटकला । २ व्यंग्य ।
ठेस–(ना०)१ मानसिक चोट । २ मजाक । हँसी । ३ चोट । ४ ठोकर । ५ धक्का । टक्कर । ६ हानि ।
ठेसण–(न०) रलवे स्टेशन । टेसण ।
ठेसरी–(ना०) १ ताना । व्यंग्य । मजाक । दिल्लगी । मखौल । ठेवरी ।
ठेहण–दे० ठसण ।
ठै–दे० ठ ।
ठरणो–दे० ठहरणो ।
ठ–(न०) १ गिरने का शब्द । २ बंदूक छूटने की आवाज । ३ शान्ति । शिथिलता । ४ मृत्यु ।
ठो–(न०) संख्या । अदद । नग ।
ठोक–(ना०) १ ठोक । मार । प्रहार । २ उलाहना । ताना । ३ हानि । घाटा ।
ठोकणो–(क्रि०) १ मारना । पीटना । ठोकना । २ खूंटी । कील आदि गाडने, फासने के लिये चोटमारना । ३ हडप करना । ४ गप हांकना । ५ हजम करना । खाजाना । ६ आवेश में कोई निश्चय करना । आवेश की बात करना ।
ठोकर–(न०) १ ठोकर । ठेस । २ पैर से मारी जाने वाली टक्कर । ३ जोर का धक्का । ४ जूते का अगला भाग । ५ घाटा । खोट । हानि ।
ठोकरीजणो–(क्रि०) ठोकर खाना ।
ठोकाक–(वि०) १ अनुचित रूप से लेने वाला । हजम करने वाला । हडपने वाला । २ हड़पने की इच्छा रखनेवाला ।

इच्छुक। ३ अधिक खान वाला। ४ ठुकवाने वाला।

ठोठ-(वि०) १ अपढ। ठोठियो। २ मूख। जड। बुद्धू।

ठोठियो-दे० ठोठ।

ठोठी-दे० ठोठ।

ठोडी-(ना०) १ ठोडी। चिबुक। २ साप का मुंह।

ठोर-(न०) १ एक मिठाई। माठ। दही वडो। २ रोब। धाक। ३ प्रहार। ४ स्वरल। हक। (वि०) स्वस्थ। नीरोग। चंगा। राजी खुशी।

ठोर-ठोरां-दे० ठोरमठोर।

ठोरणो-(क्रि०) १ ठोंक कर भरना। २ मारना। पीटना। ३ प्रहार करना।

ठोर-पाखर-(वि०) १ दृढ। मजबूत। २ स्वस्थ। नीरोग।

ठोरमठोर-(वि०) १ स्वस्थ। नीरोग। २ दृढ। मजबूत। हृष्ट पुष्ट।

ठोलो-दे० टोलो।

ठोस-(वि०)१ जो भीतर से खाली व पोला न हो। २ पक्का। ३ निश्चित। ४ प्रामाणिक। ४ मजबूत।

ठोसो-(न०) १ मुक्का। घूंसा। २ ताना। व्यंग्य। ३ दे० टोलो।

ठौड-(ना०)१ स्थान। जगह। २ स्थान। पद। ओहदा।

ठौड-ठौड-(क्रि०वि०) हरेक जगह। प्रत्येक स्थान पर।

ठौड-बिगाड-(वि०)दुराचरण तथा प्रतिकूल बातो से वातावरण को विरुद्ध व दूषित बनाने वाला।

ठौडो-ठौड-(क्रि०वि०) यथास्थान पर। यथा स्थान।

ड

ड-संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्णमाला की तीसरी व्यंजन आम्नाय व ट वर्ग का मूर्ध स्थानीय तीसरा वर्ण।

डक-(न०)१ एक बाजा। नगाडा। ढक्का। २ ढक्के का शब्द। ३ एक कपडा।

डकचूक-(वि०) १ सुध बुध रहित। २ घबराया हुआ। डाफाचूक।

डकडक-(न०) १ ऊपर से पानी पीने से होने वाली गले की ध्वनि। २ हँसने की ध्वनि। ३ सुराही आदि सकडे मुँह के पात्र मे पानी निकालते समय होने वाला शब्द।

डकणो-(क्रि०) १ कूदना। लांघना। २ कूदा जाना। लांघा जाना।

डकर-(ना०) १ जोश। २ आतंक। ३ दहाड। वीर ध्वनि। ४ अभिमान।

डकरणो-(क्रि०) १ दहाडना। २ अभिमान करना। ३ डकार लेना।

डकरियाडो-(वि०) १ गर्वित। २ गर्वाय। ३ मस्त।

डकरैल-दे० डकरियोडो।

डकळ-डकळ-दे० डखळ डखळ।

डकार-(ना०) १ मुख से निकलने वाला वायु का उद्गार। पेट की वायु का मुँह से सशब्द निकलने की क्रिया। २ उक्त शब्द। उद्गार। (न०) ड वर्ण। डडो।

डकारणो-(क्रि०) १ पेट की वायु को मुख से निकालना। डकार लेना। २ किसी की चीज वस्तु या रुपया पैसा लेकर वापिस नहीं देना। हजम करना। हडप लेना। ३ खा जाना। पचा जाना।

डकावणो-(क्रि०) कुदवाना। छलांग भरवाना।
डकेन-(न०) डाकू। लुटरा।
डको-(न०) एक चम वाद्य।
डकोळी-दे० ढकोळी।
डखळ डखळ-(न०) मुँह म ऊपर स धार उँडेलकर पानी पीने से गल म होने वाला शब्द। २ जल्दी जल्दी पानी पीते समय गले से निकलने वाला शब्द।
डखोळणो-(क्रि०) घँधारना। गदला करना।
डग-(न०) १ कदम। फाल। फलाग। २ पाँव। पैर। ३ एक डग से दूसरे डग की दूरी।
डगण-(न०) काव्य म चार मात्राओं का एक गण।
डगणो-दे० डिगणो।
डगवेडी-(ना०)हाथी को बाँधने की सांकल।
डगमग-(वि०) १ विचलित। निश्चय म ढचुपचु। २ आशंकित। ३ हिलता हुआ। (ना०) १ वहम। संशय। २ आशंका। ३ अस्थिरता। चंचलता। ४ अनिश्चितता।
डगमगणो-(क्रि०) १ निश्चय से विचलित होना। डाँवाडोल होना। २ संशय होना। ३ आशंका होना। ४ हिलना। डगमगाना।
डगमगाट-(न०) १ हलन चलन। डग मगाहट। २ घबराहट। थर्राहट। ३ धमाका। खटका। ४ लडखडाहट।
डगमगाणो-(क्रि०)१ इधर उधर हिलना। डगमगाना। २ निश्चय से विचलित होना। ३ विचलित करना। ४ आशंकित होना।
डगर-(न०)१ मार्ग। रास्ता। २ पत्थर।
डगरो-(न०) ऊँट।
डगळ-(वि०) निर्जन। शून्य। (न०) ढेला। पत्थर।
डगली-(ना०) रुईदार सदरी।
डगळी-(ना०) १ किसी फल म उसका स्वाद रंग आदि विशेषताएँ देखने के लिये लगाई जाने वाली चक्ती। थिगली। फल की टाकी। टांकी। २ समझ शक्ति। ३ समझ। बुद्धि।
डगळी खसणी-(मुहा०) १ भान नहीं रहना। २ बिना समझ की बात करना। ३ पागल हो जाना।
डगलो-(न०) १ एक प्रकार का अंगरखा। २ पाव। कदम। डग।
डगवर-दे० डिगवर।
डगाणो-दे० डिगाणो।
डगावणो-दे० डिगावणो।
डगुमगु-(वि०) अस्थिर।
डचको-(न०) मुँह से बाहर निकला हुआ गाढ़े कफ का अंश। बलगम।
डटण-(वि०)१ गडा हुआ। २ गाडा हुआ दाटा हुआ। (न०) गडे हुये के ऊपर का ढक्कन।
डटणो-(क्रि०) १ खडे रहना। २ जमकर खडा होना। अडना। ३ गडना। दफन होना। ४ भिडना। ५ दत्तचित्त होकर काम मे लग जाना।
डटाणो-दे० डटावणो।
डटावणो-(क्रि०) १ दफनाना। गाडना। २ दफनाना। गडवाना। ३ सटाना। ४ भिडाना। दबाना।
डटियोडो-(वि०) १ गडा हुआ। दफन किया हुआ। २ दबा हुआ। भिडा हुआ। ३ डटा हुआ। टिका हुआ।
डट्टो-(न०) १ किवाड को बंद होने से रोकने वाला लकडी का डट्टा। २ छोट छापने का डट्टा। भांत। ठप्पो। ३ मुँह या छेद बंद करने वाली वस्तु। काग।
ड्ढो-(न०) ट वर्ग का तीसरा वर्ण। डकार। 'ड' वर्ण। इसके दो उच्चारण

ओर दो रूप होते हैं। प्रयोग शब्द में प्रथम प्रकार का रूप नहीं होता। शब्द के मध्य में या अन्त में होता है।

टढ-(वि०) दृढ़। मजबूत। जिद्द।

डपट-(ना०) १ डांट। डपट। झिड़की। २ दौड़। ३ वातावरण में फैली हुई तेज सुगंध। दूर से आने वाली तेज सुगंध। (वि०) १ परिपूर्ण। यथेष्ट। २ बहुत अधिक।

डपटणो-(क्रि०) १ डांटना। फटकारना। २ तेज दौड़ना। ३ सभी ओर से वस्त्र द्वारा ढक देना।

डफ-(न०) १ एक बाजा। चंग। (वि०) बेसमझ। बेवकूफ।

डफलाणो-दे० डफळावणो।

डफळावणो (क्रि०) १ घबरा देना। २ झमेले में फँसना। ३ भुलाना। भटकना। ४ हैरान करना।

डफली-(ना०) १ छोटा डफ। २ खजरी।

डफळीजणो-(क्रि०) १ घबराना। घबरा जाना। २ भूल जाना। भटक जाना। ३ झमेले में फँसना। ४ हैरान होना।

डफाण-(ना०) १ शेखी। गप्प। डींग। दभान। २ ढोंग। पाखंड। दंभ।

डफाणो-(क्रि०) १ डांटना। फटकारना। २ भुला देना। ३ घबराहट में डाल देना। ४ भौचक्का बना देना।

डफावणो-दे० डफाणो।

डफीड-दे० डफीडो।

डफीडो-(न०) चक्कर। आटा। गोतो।

डफो-दे० डफीडो। (न०) १ संकट। २ संताप।

डफोळ-(वि०)ढपोर। मूर्ख। जड़। डोफो।

डफोळमख-(न०) १ जो कह बहुत पर कर कुछ भी नहीं। डींग हाकने वाला। गप्पी। ढपोर शंख। २ जड़ मनुष्य। (वि०) जड़। मूर्ख।

डफोळाई-(ना०) मूर्खता।

डफोळियो-दे० डफोळ।

डबको-(न०)१ आकस्मिक भय। आतंक। २ निराशा। ३ पानी में डूबने या गिरने का शब्द।

डबगर-(न०) १ नगाड़, ढोल, आदि पर चमड़ा मढ़ने वाली या चमड़े के कुप्पे बनाने वाली जाति। दफगर। २ डबगर जाति का व्यक्ति।

डबडब-(ना०) गड़बड़। पोल। बदइंतजामी। (वि०)डबाडब। डबडब। (आँसू भरे नयन) डबडबाते हुए। डबडौंहीं।

डबडबाणो-(क्रि०) १ अश्रुपूर्ण होना। आँखों में आँसू आना। २ घबराना।

डबरो-(न०) एक छिछला पात्र।

डबल-(वि०) १ दुगना। दोवडो। २ दुहरा।

डबलरोटी-मोटी खमीर उठी रोटी।

डबली दे० डिबी।

डबियो-(न०) डिब्बा।

डबी-दे० डिबी।

डबो-(न०) १ रेलगाडी का मुसाफिर बैठने का या माल भरने का डिब्बा। २ धातु का एक ढक्कन दार बरतन। डिब्बा। कटोरदान। ३ बड़ीडिबिया। डिब्बा। ४ बच्चों को होने वाला निमोनिया रोग।

डबोणो-(क्रि०) १ डुबाना। डुबोना। २ नष्ट करना। डुबोना।

डबोळणो-(क्रि०) १ डुबाना। २ पानी में डुबा कर या भिगो कर बाहर निकालना।

डबोवणो दे० डबोणो।

डब्बो-दे० डबो।

डमर-दे० डबर।

डमरू-(न०) १ एक वाद्य। डमरू। २ घुटने में होने वाला एक वात रोग।

डर-(न०)१ भय । गौर । बीह । भौ । २ धमकी । ३ आशंका ।
डरकण-(वि०) १ डरपोक । भीरू । २ कायर । बीकण ।
डरडो-(न०) वृक्ष ऊंट । २ गड्डा । गड्ढा । वरडो ।
डरणियो-(वि०) डरने वाला । डरपोक । डरकण । बीकण ।
डरणा-(क्रि०) १ डरना । भय खाना । भयभीत होना । बीहणो । २ आशंका करना । अनिष्ट की संभावना करना ।
डरपण-दे० डरकण ।
डरपणो-दे० डरणो ।
डरपेडो-(वि०) डरा हुआ । डरियोडो ।
डरपोक-(वि०) कायर । भीरू । डरकण । डरणियो । बीकण ।
डरामणी-(ना०) धमकी । (वि०) १ डर लगे ऐसी । डरावनी । भयाविनी । २ डर उत्पन्न करने वाली । भयाविनी ।
डरामणो-(वि०) डरावना । भयानक ।
डरावणी-दे० डरामणी ।
डरावणो-(क्रि०) डराना । डर दिखाना । (वि०) १ डरावना । भयानक । २ डर से अभिभूत । भयाक्रांत ।
डरियोडो-(वि०) डरा हुआ । भयाक्रान्त । डरपेडो ।
डरू डरू-(न०)मेंढक के बोलने का शब्द । (वि०) घबराया हुआ ।
डरू फरू-(वि०) घबराया हुआ । भयाक्रांत ।
डळी-(ना०) १ घोड़े का पीठ पर जीन के नीचे रखी जाने वाली ऊन की एक गद्दी । नमदा । अरकगीर । २ टुकड़ा । ३ छोटा टुकड़ा । ४ किसी वस्तु में से लिया हुआ तोड़ा हुआ अथवा काटा हुआ छोटा भाग ।
डळो-(न०) किसी वस्तु का अलग किया हुआ कुछ अंश । टुकड़ा । खंड । डला ।
डस-(ना०) ताले के भीतर का वह भाग जिससे ताला बंध होता है । ताले की जीभ । २ किसी लंबी पतली वस्तु का बाहर निकला हुआ भाग । ३ तोलने के समय पकड़ी जाने वाली तराजू की डंडी के बीच के सुराख में डाला हुआ रस्सी का टुकड़ा । तणियां । ४ बैर का बदला लेने का भाव । दंश । ५ डाह । ईर्ष्या । ६ दे० डसी सं २
डसण-(न०) दांत । दशन ।
डसणी-(वि०) १ डसने वाली । काटने वाली । २ नाश करने वाली । ३ बड़े दांतों वाली । (ना०) १ तलवार । २ कटारी ।
डसणेस-(न०) १ गजानन । गणेश । २ हाथी । ३ गणेशजी का दांत । ४ हाथी का दांत । ५ दांत । दशन ।
डसणो-(क्रि०)१ दांत से काटना । दशना । २ सांप का काटना ।
डसी-(ना०)१ वस्त्र का छोटा लंबा टुकड़ा । धज्जी । लीरो । चींधी । २ किसी लोक देवता को कष्ट निवारणार्थ अर्पण की जाने वाली कपड़े की धज्जी ।
डसूको-(न०) रोने की सिसकन । डसूका ।
डहक-(ना०) १ नगाड़े का शब्द । २ प्रसन्नता । खुशी । ३ गर्व । घमंड ।
डहकणो-(क्रि०) १ अंकुरित होना । अँखुआ निकलना । २ डहडहाना । हरा भरा होना । ३ प्रसन्न होना । ४ प्रफुल्लित होना । खिलना । ५ घमंड करना । ६ घबराना । ७ छला जाना । धोखा खाना । ८ नगाड़ा बजने का शब्द होना । ९ डमरू का बजना ।
डहणो-(क्रि०) १ धारण करना । २ शोभित होना । ३ घबराना । ४ भयभीत होना । ५ रखना । ६ सजना । तैयार करना ।७ दुखी होना ।

डहर-(न०) १ छापर। २ समतल मैदान। ३ चारो ग्रोर कुछ ऊचा उठा हुग्रा नीची भूमि का मैदान। ४ नीची जमीन वाला। (जिसमे वर्षा का पानी भर जाता हो) खेत। डवरा।

डहरी-(ना०) १ डाकिनी। २ दे० डैरी।

डहरू-दे० डमरू।

डहरो-दे० डैरो।

डहोळणो-(क्रि०) पानी को गदला करना।

डहोळो-(वि०) गदला। (न०) १ डर। भय। २ खलभली।

डक-(न०) १ मधुमक्खी ग्रौर भिड के पिछले भाग मे तथा बिच्छू की पूछ म लगा रहने वाला एक जहरीला काँटा जिनको धँसा कर वे जीवों के शरीर मे जहर पहुँचाते हैं। डक। जहरी काँटा। २ डक का चुभना। दश। चटको। ३ क्षत। ४ नाज के दाने म घुन लगने से उसमे होने वाला छेद। ५ शत्रुता। वैर। ६ कोई चुभने वाली बात। ६ नगाडा। ८ नगाडा ढोल बजाने का डडा। ६ प्रकृति के ग्रनेक रूप ग्रौर उनके व्यापार के ग्राधार पर वर्षा विज्ञान के सिद्धान्तो को निश्चित करने वाले एक ज्योतिषी का नाम।

डक चूडी-(ना०) स्त्रियो के हाथ की एक प्रकार की चूडी।

डकणो-(क्रि०) १ डक मारना। २ मन मे खटकना। चुभना।

डकदार-(वि०) डक वाला।

डक मारणो-(मुहा०) डक चुभाना।

डक लागणो-(मुहा०) १ धान्य के दानो मे छिद्र होना। नाज मे कीडा लगना। सुळणो। २ किसी विषैल जतु का डक चुभना। ३ मन म खटकना।

डकी-(वि०) १ जिसके डक हो। डक वाला। २ डक चुभाने वाला। (न०) डक वाला कीडा।

डको-(न०) १ ढोल नगाडे की ग्रावाज। २ ढोल नगाडे बजान का डडा। चोब। ३ नगाडा। ४ जीत। विजय। ५ जीत का बाजा। विजय वाद्य।

डको देणो-(मुहा०) १ नगाडा या ढोल बजाना। २ उत्साह से किसी काय को करने के लिये प्रस्थान करना।

डको वाजणो-(मुहा०) १ कीर्ति होना। २ प्रसिद्धि होना। ३ रोब जमना। धाक जमना।

डको होणो-(मुहा०) १ नगाडा या ढोल बजना। २ सवारी (शोभा यात्रा) निकलना या प्रस्थान करना। ३ विजय होना।

डकोळी-(ना०) ज्वार बाजरी ग्रादि पौधो का छिलका उतारा हुग्रा सूखा डठल। डकोळो।

डखणो-(क्रि०) १ उत्तेजित होना। २ ग्राक्रमण करना। ३ खटकना। खटकणो।

डगर-दे० डागर।

डठळ-(न०) १ छोटे पौधो की पत्ती ग्रौर शाखा।

डड-(न०) १ दड। सजा। जुरमाना। २ एक कसरत। ३ डडा। सोटा।

डड-कमडळ-(न०) १ माल ग्रसबाब। सामान। २ सन्यासी का दड ग्रौर कमडल। ३ सन्यासी का सामान।

डडकारण-(न०) दडकारण्य।

डडणो-(क्रि०) १ दड करना। जुर्माना करना। दड लेना। २ बलात् धन वसूल करना। ३ सजा करना। दड देना।

डडा-बेडी-(ना०) डडे वाली बेडी। दड निगड।

डडाळ-(न०) १ नगाडा। दुदुभी। २ भाला। (वि०) १ नगाडा बजाने वाला।

२ डडियो से गेहर (खेलने) रमने वाला। ३ रण रसिक।

डडाळो-(वि०) डडे वाला। डडाधारी।

डडाहड-(न०) १ डडियो की गेहर। २ डडा राम। ३ नगाडा।

डडिया गेहर-(ना०) तिडक्रिया या नृत्य प्रकार पाग म तुर्रा कलगी जामा सभी प्रकार के आभूषण और पोवा म घूघरू आदि राजाशाही वेशभूषा म सज्ज होकर समूह रूप म ढोल नौबत आदि वाद्यो की ताल पर पतली डडियो (छडियो) से खेला जाने वाला एक वासतिक (होलिकोत्सव) नृत्य। रास। रास नृत्य।

डडी-(न०) १ सन्यासी। २ राजा। ३ यमराज। ४ द्वारपाल। ५ तराजू की आडी लकडी। ६ कलछी की लबा सिरा। ७ छाते की छडी। (वि०) जिसे दड मिला हो। दडित। सजायाफ्ता।

डडो-(न०) डडा। साटा। दे० डाडो।

डडूळ-(न०) वातचक्र। भभूळो।

डडाको-(न०) डडा। सोटा।

डडोत-(ना०) दडवत। उलटा सोकर किया किया जाने वाला प्रणाम। साष्टाग प्रणाम। साष्टाग दडवत।

डडोळा-(न०) नगाडा।

डफर-(ना०) १ आडम्बर। २ धौस। रोब। ३ तेज हवा।

डफाण-(ना०)१ लबी चौडी बात। शेखी। गप्प। २ दभ। पाखड। धूर्तता। ३ झूठा रोब।

डबर-(न०)१ आडबर। ढाग। २ प्रकाश। ३ प्रताप। महिमा। ४ ऐश्वर्य। वैभव। ५ बादल। मेघ घटा। ६ एक प्रकार का बडा चदोवा। ७ विस्तार। [illegible] ८ गुलाल या धूल का आ [illegible] वरण। ९ आडम्ब [illegible] बना अधेरा। १० भीड। जमाव। समूह। दल। ११ जोश। उमग। १२ महिमा। १३ सुगध। (वि०) १ गहरा। घना। खूब। २ भरपूर। ३ आच्छादित। ४ विस्तृत।

डभ-दे० डाभ।

डभाण-(ना०) दभ। पाखड।

डस-(न०) १ दश। दांत। २ डास। मच्छर। (ना०) ईर्ष्या। डाह।

डसणो-दे० डसणो।

डाइण-(वि०) १ वृद्ध। २ वृद्धा। (ना०) १ डाकिनी। डायन। २ भूतनी। चुडैल। ३ डरावने रूप वाली स्त्री। ४ जादूगर स्त्री।

डाई-(ना०) १ खेल म हारने वाले के ऊपर आने वाली पारी। (प्राय बालको के खेल म) २ धातु का सिक्का, फूलपत्ती इत्यादि काटने का साचा।

डाईजणो-(क्रि०) १ घोडी का कामेच्छा होना। २ घोडी को गर्भ धारण की इच्छा होना। घोडी का जाग म आना।

डाक-(ना०) १ एक पड से दूसरे पड या अतर। डग। कदम। २ छलाग। कुदान। ३ निरतर आने जाने की क्रिया। नित्य का आवन जावन। ४ [illegible] सख्या मे आवन जावन। ५ प्राचीन [illegible] की ऊट सवार, घुड सवार [illegible] राज्यो की परपरा। [illegible] पहुँचाना। [illegible]

[illegible]

में अप्सराओं का नाच (कवि कल्पना) १५ भूत प्रेतों का नाच। १६ भूत प्रेत या भूतनियों का समूह।

डाक खर्च–(ना०) डाक द्वारा भेजी जाने वाली चीजों का खर्च। डाक का खर्च।

डाकखानो–(न०) डाकघर। पोस्ट आफिस।

डाकगाडी–(ना०) डाक ले जाने वाली तेज रफ्तार की मुसाफिर रेल गाडी। मेल ट्रेन।

डाक घर–दे० डाकखानो।

डाक टिकट–(ना०) डाक महसूल के लिये चिट्ठी पत्री आदि पर लगाया जाने वाला एक प्रकार का कागज का छोटा टुकडा। (भिन्न भिन्न मूल्य के कागज के इन टुकडों (टिकटों) पर सरकार द्वारा निश्चित चिन्हांकन होते हैं।)

डाकण–(ना०) १ डाकिनी। चुडैल। डाकिन। २ भूत विद्या जानने वाली स्त्री। ३ जिसकी नजर लगे ऐसी स्त्री।

डाकण-स्यारी–दे० डाकण।

डाकणी–दे० डाकण।

डाकणो–(क्रि०)१ फांदना। छलांग भरना। कूदना। २ लांघना।

डाकदर–(न०) १ चिकित्सक। वैद्य। डाक्टर। २ साहित्य का पंडित। दे० डाक्टर।

डाक महसूल–(न०) डाक द्वारा भेजी जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाला खर्च।

डाकर–(ना०) १ डाँट। रोब। २ खौफ। डर। ३ दहाड।

डाकरणो–(क्रि०)१ दहाडना। २ डाँटना। ३ रोब दिखाना।

डाका पाचम–(ना०) फाल्गुन बदी पाँचम जिस दिन वसंतोत्सव के होली पर्व की ढोल नौबत वाद्यों के साथ डंडियों की गेहर शुरू होती है। डंडियों की गेहर का ढोल पर डाका (डंका) पडना शुरू होने वाली पाँचम।

डाकियो–(न०) १ चिट्ठी-पत्र आदि का घर घर पर जाकर बाँटने वाला। डाक बाँटने वाला। पोस्टमैन। २ डाक ले जाने वाला।

डाकी–(वि०) १ जबरदस्त। २ शूरवीर। ३ दुष्ट। ४ सबल। प्रचंड। ५ बहुत खाने वाला। ६ डरावना। भयावना। (न०) दैत्य।

डाकू–(न०) डाका डालने वाला। डकैत। लुटेरा। (वि०) १ जबरदस्त। २ डरावना। भयानक।

डाको–(न०) १ ढोल नगाडा आदि बजाने का लकडी का डंडा। २ ढोल नगाडे पर दी जाने वाली चोट। डंको। ३ धनमाल लूटने के लिये किया जाने वाला धावा। धाड। लूट। डाका।

डाकोत–दे० थावरियो।

डाकोर–(न०) गुजरात में आणंद के पास एक प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ स्थान। छोटी द्वारका।

डाक्टर–(न०) १ एलोपैथी का चिकित्सक। डाकदर। २ किसी विषय से संबंधित शोधपूर्ण महानिबंध पर विश्वविद्यालय से दी जाने वाली पी एच डी अथवा डी लिट आदि की डिगरी। ३ ऐसी डिगरी (पदवी) प्राप्त करने वाला महा निबंध लेखक। साहित्य संशोधक पंडित।

डाक्टरणी–(ना०)स्त्री डाक्टर। डाक्टराणी।

डाक्टरी–(ना०) १ डाक्टर का काम। २ डाक्टर की पदवी।

डागळ–(वि०) बडा। चौडा। (न०) छत। डागळो।

डागळी–(ना०)१ छोटी छत। २ बलगाडी के आगे का वह भाग जहाँ बैलों को हाँकने वाला बैठता है। ३ दिमाग। समझ शक्ति।

डागळी दासणो–दे० डगळी दासणो।
डागळो–(न०) १ छत। २ बैलगाड़ी का वह बड़ा समतल भाग जिस पर सवारियाँ बैठती है या माल लादा जाता है।
डागी–(ना०) ऊँटनी। साँवड़।
डागो–(न०) ऊँट।
डाच–(न०) १ दाँत। २ मुँह।
डाचको–(न०) उबकाई। मतली।
डाचो–(न०) १ मुँह। २ दाँत से काटने की क्रिया। दशन। ३ दाँत से काटा हुआ स्थान। दंश। दशन। ४ दतक्षत। बचको।
डाचो भरणो–(मुहा०) दाँतों से काटना। बचको भरणो।
डाट–(न०) १ छेद बंद करने की वस्तु। डट्टा। २ बोतल शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। काग। कार्क। ३ मेहराब को रोके रखने के लिए खम्ज (खड़ी ईंटों) की जुड़ाई। मेहराब की खड़जे की चुनाई। (ना०) १ महाविनाश। तबाही। २ धमकी। डाँट। फटकार। ३ रोक। ४ बारूद की सुरंग।
डाटणो–(क्रि०) १ धमकाना। डाँटना। २ दाटना। दफनाना। गाड़ना। ३ दबाना। ४ छिपाना। ५ अधिकार में रखना। वश में रखना।
डाट डपट–दे० डाट फटकार।
डाट-फटकार–(ना०) डाँट फटकार। डाँट डपट। डाँट।
डाटी–(ना०) १ धमकी। डाँट। २ भय। डर।
डाटो–दे० डूचो।
डाडर–(ना०)१ छाती। वक्षस्थल। सीना। २ पीठ।
डाडाणो–दे० दादाणो।
डाढ–(ना०) १ दाढ़। २ चौघड़।
डाढणो–दे० दाढणो।
डाढाळ–(न०) सूअर। (ना०) करणी देवी। (वि०) १ बड़े दाढ़ दाँतों वाला। २ दाढ़ी वाला।
डाढाळी–(ना०) १ करणी देवी। २ वह स्त्री जिसकी ठोडी पर दाढ़ी निकल आई हो। ३ सूअरी। ४ कटारी। (वि०) १ दाढ़ी वाली। २ बड़े दाढ़ दाँतों वाली।
डाढाळो–(न०) १ सूअर। शूकर। २ पुरुष। मर्द। ३ घना दाढ़ी। (वि०) १ बड़े दाढ़ दाँतों वाला। २ बड़ी दाढ़ी वाला। डाढ़ाळ।
डाढी–(ना०) १ ठुड्डी के बाल। दाढ़ी।
डाढीर–(वि०) गम्भीर। समझदार।
डाढी मूँडी–(ना०) १ मृतक के बारहवें दिन अशौच निवृत्ति के निमित्त कराई जाने वाली हजामत। २ अशौच निवृत्ति के रूप में मृतक के बारहवें दिन कराई जाने वाली हजामत की प्रथा।
डाढो–(वि०) १ अच्छा। २ स्वस्थ। चंगा। ३ खुश। प्रसन्न। ४ वृद्ध। ५ वीर। ६ बुद्धिमान। ७ बहुत। अधिक। (न०) डाढ़ी (पग में)।
डाढो भलो–(वि०)१ खूब अच्छा। २ खूब खुश। अत्यन्त प्रसन्न।
डाण–(न०) १ कदम। पैंड। २ छलाँग। कुदान। ३ हाथी की गरदन से झरने वाला मद। ४ गव। ५ युद्ध। ६ राज देय। चुंगी। कर। ७ दंड। ८ दान। ९ साहस। १० सेना। ११ समूह। १२ चाल। १३ दाव। दाण। १४ अव सर। मौका। दाण। १५ पारी। बारी। १६ तीतर। १७ भाँति। तरह। प्रकार।
डाणाक–दे० डील डाणाक।
डाणी–(न०) १ राजदेय प्राप्त करने वाला व्यक्ति। कर वसूल करने वाला व्यक्ति। २ आयात माल पर चुंगी लेने वाला

व्यक्ति। दाणी। ३ बालद (पोठ), बैलगाडी आदि में भरकर लाये हुये नाज आदि को तोलने का धंधा करने वाला व्यक्ति। तोलावट। ४ नाज बचने या खरीदने वाले से धरमादे खाते की चुंगी लेने वाला व्यक्ति। ५ कुशल क्षेम। राजी खुशी। (अव्य०) अतिथि के आगमन पर परस्पर पूछा जाने वाला कुशल समाचार। आनंद में हो। मजे में हो। राजी खुशी हो—इत्यादि का वाचक शब्द।

डाफाडोळ–(वि०) घबराया हुआ।

डाफाडोळ होणो–(मुहा०) घबराना।

डाफो–(न०) व्यर्थ का आना जाना। चक्कर। आटा। आंटो।

डाबडी–(ना०) डिब्बी। डिबिया। डाबी।

डाबडो–(न०) १ कटोरदान। २ टोकरा। छाबडा। छबडा। ३ डिब्बा। डाबो।

डाबर–(वि०) बडा (नयन) (न०) छोटा जलाशय। तलैया। पोखरी।

डाबर नैणी–(वि०) १ बडे नेत्रों वाली। २ सुंदर नेत्रों वाली। सुनयनी।

डाबळी–दे० डाबडी।

डाबळो–दे० डाबडो।

डाबी–(ना०) डिब्बी।

डाबो–(न०) डिब्बा। कटोरदान। डब्बो।

डाभ–(ना०) १ दर्भ। दूर्वा। २ कुश।

डाभी–(न०) एक क्षत्रिय जाति।

डाम–(न०) १ शरीर के रुग्ण भाग को तप्त शलाका से दाग दिया हुआ स्थान का चिह्न। दाग। चरको। गुल। २ लाञ्छन। धब्बा।

डामणो–(क्रि०) १ तपाई हुई धातु शलाका से शरीर पर दाग देना। दागना। गुल देना। चरका देना। २ दंडित करना। ३ कलंकित करना।

डाम डाळ–(वि०) विचलित। अस्थिर। डाँवाडोल। २ चंचल। ३ अपवित्र।

४ हिलता हुआ।

डायजो–दे० दायजो।

डायण–(ना०)१ डायन। भूतनी। चुडैल। २ डरावनी स्त्री।

डायरी–(ना०) दैनिक कार्य विवरण लिखने की पुस्तिका। दैनन्दिनी।

डायो–(वि०) १ सीधा। भला। भोला भाला। २ सयाना। समझदार।

डार–(न०) १ पशुओं का झुंड। २ सूकर समूह। ३ पंक्ति। श्रेणी। कतार।

डारण–(वि०) १ दारुण। भयंकर। २ जबरदस्त। ३ चीरने वाला। दारण।

डारणो–(वि०) डराने वाला। डरावना। भयानक।

डारपत–(न०) सूअर।

डाल–(ना०) १ छिछली टोकरी। डलिया। २ कुट्टी नापने की डलिया। कुतर की हुई घास को नापने की ओडी। ३ डलिया भर घास का नाप या परिमाण। ओडी।

डाळ–(ना०) १ डाल। शाखा। डाली। २ स्त्री बाहु। ३ स्त्री बाहु के उपरि भाग (कोहनी के ऊपर) की चूडियों के नीचे की चूनी। ४ इस जगह पहिना जाने वाला सोने या चाँदी का एक प्रकार का कडा। ५ शस्त्र विशेष। ६ तलवार की नोक।

डाळकी–(ना०) छोटी शाखा। डाळी।

डालको–दे० डाल।

डाळको–(न०)वृक्ष की बड़ी शाखा। डाळो।

डाला-मत्थो–दे० डालामथो।

डाला मथो–(न०) १ सिंह। २ बडा मत्था। (वि०) बडे मस्तक वाला।

डाळी–(ना०) वृक्ष की शाखा। डाल। छोटी शाखा।

डाली–(ना०) १ (छोटी) घास नापने की छोटी डलिया। ओडी। २ फल फूल मेवे और नकदी आदि की वह सौगात जो

डलिया मे सजाकर गुरु, राजा आदि को उनके सम्मानार्थ भेंट की जाती है। भेंट।

ाळो-(न०) पेड की मोटी शाखा। तने की शाखा। डाल।

ालो-(न०) १ टोकरा। ओडो। २ कुट्टी (घास) नापने का एक बडा टोकरा। कुतर नापने का ओडा। ३ डाला भर कुट्टी कुतर) का नाप। डाला भर कुट्टी का परिमाण।

डाव-(ना०)१ दाँव। बाजी। २ अवसर। मौका।

डावडी-(ना०) १ पुत्री। २ लडकी। ३ दासी।

डावडो (न०) १ पुत्र। बेटा। २ लडका। बच्चा।

डावलिया-(वि०) दाहिने हाथ की बजाय बायें हाथ से अधिक काम लेने की आदत वाला। खाबलियो। खावडो।

डावियाळ-(वि०) १ बलगाडी में बायी ओर से जुत कर बोझ खीचने मे सक्षम। २ जो बायी ओर जुतने का आदि हो। ३ एक से दूसरा अधिक सक्षम। ४ तुलना मे अधिक उपयुक्त। ५ साथ मे रह कर काम करने वाला। जो किसी का बायां हाथ हो। सहायक। ६ अपने से अधिक सक्षम और उपयुक्त। ७ हर दम साथ रहने वाला।

डावी पाघ-(ना०) राठौड क्षत्रियो की पगडी। २ राठौड क्षत्री। ३ बाए पेच की पगडी।

डावो-(वि०) १ बायां। वाम। २ बाइ ओर का। ३ विरुद्ध। प्रतिकूल।

डास-(ना०) १ निराई करने योग्य खेत की घास। २ जड़ सहित उन्मूलन की जाने वाली खेत की घास। ३ खेत का बिना निराई किया हुआ भाग।

डाह-(ना०) १ ईर्ष्या। जलन। २ द्वेष।

डाहपण-(ना०) समझदारी।

डाहळ-(न०) एक वाद्य।

डाहळी-दे० डाळी।

डाही-(वि०ना०) १ चतुर। २ सीधी। ३ समझदार। सयानी।

डाहो-दे० डायो।

डाह्यो-दे० डायो।

डाक-(न०) आभूषण में जडे जाने वाले नगीने की चमक बढाने के लिये उसके नीचे दिया जाने वाला चमकीला पत्तर।

डाखणो- क्रि०) १ प्रहार करना। शस्त्र उठाना। २ हाथ मे शस्त्र उठाये रखना। ३ क्रोधित होना। ४ अचानक आक्रमण करना। ५ एकाएक जा खडा होना।

डाखळी-(ना०) डाली मे से फूटी हुई छोटी डाली। टहनी।

डाखळो-(न०) १ शाखा मे से निकली हुई पतली डाली। २ तिनका। घोचो। ३ स्त्री के हाथ मे पहनी हुई टूटी फूटी हाथी दांत की चूडी।

डाखियो-(वि०) १ भूखा। २ क्रोधित। (क्रि०वि०) १ भूखे मरता हुआ। २ भागता हुआ। (न०) भूखा सिंह।

डाग-(ना०) लाठी। बडा डडा।

डागडी-दे० डांग।

डागर-(न०) गाय भैंस आदि पशु। चौपाया। ढोर। (वि०)नासमझ। बेवकूफ।

डागरजन-(न०) १ एक प्रकार की तोप। २ बाण।

डागरो (वि०)नासमझ। बेवकूफ। (न०)पशु।

डाचो-(न०) ऊंचे पायो वाला बडा खाट।

डाट-(ना०) १ फटकार। डपट। २ दबाव।

डाटणो-(क्रि०) शब्दो की मार देना। झिडकना। डाटना। डपटना।

डाड-(न०) १ लबा डडा। डाँड। २ नाव खेने का बल्ला। (वि०) १ डडे के समान

व्यक्ति। कांटो। ३ बालद (पोठ), बैलगाड़ी आदि में भरकर लाए हुए नाज आदि को तोलने का धंधा करने वाला व्यक्ति। तोलावट। ४ नाज बेचने या खरीदने वाले से धरमादे खाते की चुंगी लेने वाला व्यक्ति। ५ कुशल क्षेम। राजी खुशी। (अव्य०) अतिथि के आगमन पर परस्पर पूछा जाने वाला कुशल समाचार। आनंद में हो। मजे में हो। राजी खुशी हो—इत्यादि का वाचक शब्द।

डाफाडोळ-(वि०) घबराया हुआ।

डाफाडोळ होणौ-(मुहा०) घबराना।

डाफो-(न०) व्यर्थ का आना जाना। चक्कर। आंटा। आंटो।

डाबड़ी-(ना०) डिब्बी। टिबिया। डाबी।

डाबड़ो-(न०) १ कटोरदान। २ टोकरा। छाबड़ा। छबड़ा। ३ डिब्बा। डाबो।

डाबर-(वि०) बड़ा (नयन) (न०) छोटा जलाशय। तळैया। पोखरी।

डाबर नैणी-(वि०) १ बड़े नेत्रों वाली। २ सुंदर नेत्रों वाली। सुनयनी।

डाबळी-दे० डाबड़ी।

डाबळो-दे० डाबड़ो।

डाबी-(ना०) डिब्बी।

डाबो-(न०) डिब्बा। कटोरदान। डब्बो।

डाभ-(ना०) १ दभ। दूर्वा। २ कुश।

डाभी-(न०) एक क्षत्रिय जाति।

डाम-(न०) १ शरीर के रुग्ण भाग को तप्त शलाका से दाग किया हुआ स्थान का चिह्न। दाग। चरको। गुल। २ लाछन। धब्बा।

डामणौ-(क्रि०) १ तपाई हुई धातु शलाका से शरीर पर दाग देना। दागना। गुल देना। चरका देना। २ दंडित करना। ३ कलंकित करना।

डाम डाळ-(वि०) विचलित। अस्थिर। डाँवाडोल। २ चकित। ३ भ्रमित।

४ हिलता हुआ।

डायजो-दे० दायजो।

डायण-(ना०) १ डायन। भूतनी। चुड़ैल। २ डरावनी स्त्री।

डायरी-(ना०) दैनिक कार्य विवरण लिखने की पुस्तिका। दैनन्दिनी।

डायो-(वि०) १ सीधा। भला। भोला भाला। २ सयाना। समझदार।

डार-(न०) १ पशुओं का झुंड। २ शूकर समूह। ३ पंक्ति। श्रेणी। कतार।

डारण-(वि०) १ दारुण। भयंकर। २ जबरदस्त। ३ चीरने वाला। दारण।

डारणौ-(वि०) डराने वाला। डरावना। भयानक।

डारपत-(न०) सूअर।

डाल-(ना०) १ छिछली टोकरी। डलिया। २ कुट्टी नापने की डलिया। कुतर की हुई घास को नापने की ओडी। ३ डलिया भर घास का नाप या परिमाण। ओडी।

डाळ-(ना०) १ डाल। शाखा। डाली। २ स्त्री बाहु। ३ स्त्री बाहु के उपरि भाग (कोहनी के ऊपर) की चूड़ियों के नीचे का चूड़ा। ४ इस जगह पहिना जाने वाला सोने या चाँदी का एक प्रकार का कड़ा। ५ शस्त्र विशेष। ६ तलवार की नोक।

डाळकी-(ना०) छोटी शाखा। डाळी।

डालकी-दे० डाल।

डाळको-(न०)वृक्ष की बड़ी शाखा। डाळो।

डाला मत्थो-दे० डालामथो।

डाला मथो-(न०) १ सिंह। २ बड़ा मत्था। (वि०) बड़े मस्तक वाला।

डाळी-(ना०) वृक्ष की शाखा। डाल। छोटी शाखा।

डालो-(ना०) १ (कुट्टी) घास नापने की छोटी डलिया। ओडी। २ फल फूल, मेवे और नकदी आदि की वह सोगात जो

:म-(न०) एक वाद्य।

-(ना०)१ राजस्थान की मध्ययुगीन ्रित्यिक काव्य भाषा। २ चारण भाटो ्या उनकी शैली का काव्य। ३ अपभ्रंश की राजस्थानी की एक काव्य शली। ऊचे स्वर से सुनाया जाने वाला प्रेरक य। जीवन काय। [डीगी(-ऊची) + गल(-वात आवाज)। ५ ल। बारवाणी। (वि०) वीर।

ऊयो-(वि०) १ डिगल काव्य की ना करने वाला। २ डिगल काव्य को समझन वाला। (न०) १ डिगल कवि। २ भाट चारण। ३ वीर पुरुष।

डिभ-(न०) १ बच्चा। २ युद्ध।

डीकरी-(ना०) १ पुत्री। बेटी। २ लडकी। कन्या।

डीकरो-(न०) १ पुत्र। बेटा। २ लडका।

डीघी-दे० डीगी १, २, ३

डीघो-दे० डीगो।

डोठ-(न०) १ दृष्टि। नजर। २ देखने की शक्ति। ३ सूझ। ज्ञान। ४ दृष्टि का बुरा प्रभाव। नजर। (अव्य०) प्रत्येक। हर एक। प्रति।

डीबो-(न०) १ पेट म वायु रुकने का एक रोग। २ पेट म होने वाली वायु की गाठ। ३ कलेजे म होन वाला एक दद। ४ मनस्ताप। ५ छाती भर जाना।

डीर-(न०) १ वृक्ष की टहनियाँ फूल पत्ते आदि। २ बौर। मजरी।

डील-(न०) १ शरीर। देह। २ शरीर का विस्तार। कद। ३ कुटुम्बीजन। ४ स्त्री का गुप्तांग। योनि।

डील करणा-(मुहा०) अवयवों का विकसित होना। शरीर का बढ़ना।

डील डाणाळ-दे० डीलाळो।

डीलायतो-दे० डीलायतो।

डीलायतो-(वि०) १ बड़े कद वाला। ऊचा और हृष्ट पुष्ट। दीघकाय। २ बडे कुटुम्ब वाला।

डीलाळो-(वि०) १ दृढ़ और मोटे शरीर वाला। पुष्ट शरीर वाला। २ व्यक्तित्व वला।

डीलोडील-(न०)१ समस्त अग। २ अगो पाग। (अव्य०) १ स्वय। खुद। २ आपखुद। खुदोखुद। ३ डील के अनुसार। ५ शरीर मे बराबर।

डीग-(ना०)१ लबी चौडी बात। २ गप्प। शेखी। ३ आत्म प्रशसा।

डीगरी-(न०) गाय, भस आदि पशुओ के गले मे बाँधा जाने वाला एक मोटा और लवा डडा जिससे वे भाग न सकें।

डीगाळो-(वि०)१ जो तुलना मे ऊचा हो। मुकाबले म डीगा। २ डोंगो। ऊचा। लबा।

डीगी-(वि०) १ ऊची। २ लबी। ३ लबी ऊची। ४ डींग हाँकने वाला। गप्पी।

डीगो-(वि०) १ जो कद म ऊचा हो तथा लबा हो। २ लबा। ३ ऊचा।

डीडू-(न०) १ जल सप। पानी का साँप। २ विष रहित साँप। डुडुभ।

डीभू-(न०) भिड। ततया। बर। भमरो। भौंरो।

डुक-(न०) घूसा। मुक्का।

डुक्कर-(न०) शूकर। सुअर।

डुखलियो-(न०) बिना तना हुआ टूटा फूटा खाट। जीर्ण खटिया। डुखलो।

डुखलो-दे० डुखलियो।

डुगडुगी-(ना०) एक छोटा बाजा। डुग्गी।

डुग्गी-दे० डुगडुगी।

डुपटी (ना०) १ कधे पर रखने की एक चादर। दुपट्टी। २ दुपट्टी। चादर। दोपट्टी वाली चद्दर।

डुपटो-(न०)१ ओढ़ने की चादर। दुपट्टा। २ जरी के काम वाला स्त्रियो का एक

डिमडिम–*(न०)* एक वाद्य ।

डिंगळ–*(ना०)*१ राजस्थान की मध्ययुगीन साहित्यिक काव्य भाषा। २ चारण भाटो का तथा उनकी शैली का काव्य। ३ अपभ्रंश रूप की राजस्थानी की एक काव्य शली। ४ ऊंचे स्वर से सुनाया जाने वाला प्रेरक काव्य। जीवन काव्य। [डीगी(=ऊंची दीघ)+गल(=बात आवाज)। ५ डींगल। वीरवाणी। *(वि०)* वीर।

डिंगळियो–*(वि०)* १ डिंगल काव्य की रचना करने वाला। २ डिंगल काव्य को समझने वाला। *(न०)* १ डिंगल कवि। २ भाट चारण। ३ वीर पुरुष।

डिंभ–*(न०)* १ बच्चा। २ युद्ध।

डीकरी–*(ना०)* १ पुत्री। बेटी। २ लड़की। कन्या।

डीकरो–*(न०)* १ पुत्र। बेटा। २ लड़का।

डीघी–दे० डीगी १, २, ३

डीघो–दे० डीगो।

डीठ–*(न०)* १ दृष्टि। नजर। २ देखने की शक्ति। ३ सूझ। ज्ञान। ४ दृष्टि का बुरा प्रभाव। नजर। *(अव्य०)* प्रत्येक। हर एक। प्रति।

डीगो–*(न०)* १ पेट मे वायु रुकने का एक रोग। २ पेट म होने वाली वायु की गांठ। ३ कलेजे म होने वाला एक दर्द। ४ मनस्ताप। ५ छाती भर जाना।

डीर–*(न०)* १ वृक्ष की टहनियां फूल पत्ते आदि। २ बौर। मंजरी।

डील–*(न०)* १ शरीर। देह। २ शरीर का विस्तार। कद। ३ कुटुम्बीजन। ४ स्त्री का गुप्तांग। योनि।

डील करणो–*(मुहा०)* अवयवों का विकसित होना। शरीर का बढ़ना।

डील-डाणाक–दे० डीलाळो।

डीलायतो–दे० डीलायतो।

डीलायतो–*(वि०)* १ बड़े कद वाला। ऊंचा और हृष्ट पुष्ट। दीर्घकाय। २ बड़े कुटुम्ब वाला।

डीलाळो–*(वि०)* १ दृढ और मोटे शरीर वाला। पुष्ट शरीर वाला। २ व्यक्तित्व वाला।

डीलोडील–*(न०)*१ समस्त भाग। २ अंगोपांग। *(अव्य०)* १ स्वयं। खुद। २ आपखुद। खुदोखुद। ३ डील के अनुसार। ४ शरीर म बराबर।

डींग–*(ना०)*१ लंबी चौड़ी बात। २ गप्प। शेखी। ३ आत्म प्रशंसा।

डीगरो–*(न०)* गाय, भैंस आदि पशुओ के गले म बांधा जाने वाला एक मोटा और लंबा डंडा जिससे वे भाग न सकें।

डीगाळो–*(वि०)*१ जो तुलना मे ऊंचा हो। मुकाबले म डीगा। २ डींगो। ऊंचा। लंबा।

डीगी–*(वि०)* १ ऊंची। २ लंबी। ३ लंबी ऊंची। ४ डींग हांकने वाला। गप्पी।

डीगो–*(वि०)* १ जो कद मे ऊंचा हो तथा लंबा हो। २ लंबा। ३ ऊंचा।

डीडू–*(न०)* १ जल सर्प। पानी का सांप। २ विष रहित सांप। डुंडुभ।

डीभू–*(न०)* भिड। ततैया। बर। भमरी। भौंरी।

डुक–*(न०)* घूंसा। मुक्का।

डुक्कर–*(न०)* शूकर। सुअर।

डुखलियो–*(न०)* बिना तना हुआ टूटा फूटा खाट। जीर्ण खटिया। डुखलो।

डुखलो–दे० डुखलियो।

डुगडुगी–*(ना०)* एक छोटा बाजा। डुग्गी।

डुग्गी–दे० डुगडुगी।

डुपटी *(ना०)* १ कंधे पर रखने की एक चादर। दुपट्टी। २ दुपट्टी। चादर। दोपट्टी वाली चद्दर।

डुपटो–*(न०)*१ ओढ़ने की चादर। दुपट्टा। २ जरी के काम वाला स्त्रियो का एक

डिमडिम-(न०) एक वाद्य ।

डिंगळ-(ना०)१ राजस्थान की मध्ययुगीन साहित्यिक काव्य भाषा। २ चारण भाटो का तथा उनकी शली का काव्य। ३ अपभ्र श रूप की राजस्थानी की एक काव्य शली। ४ ऊचे स्वर से सुनाया जाने वाला प्रेरक काव्य। जीवन काव्य। [डींगी(= ऊची, दीघ) + गल(= बात, आवाज)। ५ डींगल। वीरवाणी। (वि०) वीर।

डिंगळियो-(वि०) १ डिंगल काव्य की रचना करने वाला। २ डिंगल काव्य को समझने वाला। (न०) १ डिंगल कवि। २ भाट चारण। ३ वीर पुरुष।

डिंभ-(न०) १ बच्चा। २ युद्ध।

डीकरी-(ना०) १ पुत्री। बेटी। २ लडकी। कन्या।

डीकरो-(न०) १ पुत्र। बेटा। २ लडका।

डीघी-दे० डीगी १, २ ३

डीघो-दे० डीगो।

डीठ-(न०) १ दृष्टि। नजर। २ देखने की शक्ति। ३ सूझ। ज्ञान। ४ दृष्टि का बुरा प्रभाव। नजर। (अव्य०) प्रत्येक। हर एक। प्रति।

डीबो-(न०) १ पेट म वायु रुकने का एक रोग। २ पेट म होने वाली वायु की गाँठ। ३ कलेजे मे होने वाला एक दद। ४ मनस्ताप। ५ छाती भर जाना।

डीर-(न०) १ वृक्ष की टहनियाँ, फूल पत्ते आदि। २ बौर। मजरी।

डील-(न०) १ शरीर। देह। २ शरीर का विस्तार। कद। ३ कुटुम्बीजन। ४ स्त्री का गुप्ताग। योनि।

डील करणो-(मुहा०)अवयवो का विकसित होना। शरीर का बढना।

डील डाणाक-दे० डीलाळो।

डीलायतो-दे० डीलायतो।

डीलायतो-(वि०) १ बड़े कद वाला। ऊचा और हृष्ट पुष्ट। दीघकाय। २ बडे कुटुम्ब वाला।

डीलाळो-(वि०) १ दृढ और मोटे शरीर वाला। पुष्ट शरीर वाला। २ व्यक्तित्व वला।

डीलोडील-(न०)१ समस्त अग। २ अगो पाग। (अव्य०) १ स्वय। खुद। २ आपखुद। खुदोखुद। ३ डील के अनुसार। ५ शरीर मे बराबर।

डींग-(ना०)१ लबी चौडी बात। २ गप्प। शेखी। ३ आत्म प्रशसा।

डींगरो-(न०) गाय भैंस आदि पशुओ के गले म बाधा जाने वाला एक मोटा और लबा डडा जिससे वे भाग न सकें।

डींगाळो-(वि०)१ जो तुलना मे ऊचा हो। मुकाबले म डींगा। २ डींगो। ऊचा। लबा।

डींगी-(वि०) १ ऊची। २ लबी। ३ लबी ऊची। ४ डींग हांकने वाला। गप्पी।

डींगो-(वि०) १ जो कद मे ऊचा हो तथा लबा हो। २ लबा। ३ ऊचा।

डींडू-(न०) १ जल सप। पानी का साँप। २ विष रहित साँप। डुडुभ।

डींभू-(न०) भिड। ततया। बर। भमरी। भौंरी।

डुक-(न०) घूसा। मुक्का।

डुक्कर-(न०) शूकर। सुअर।

डुखलियो-(न०) बिना तना हुआ टूटा फूटा खाट। जीर्ण खटिया। डुखलो।

डुखलो-दे० डुखलियो।

डुगडुगी-(ना०) एक छोटा बाजा। डुग्गी।

डुग्गी-दे० डुगडुगी।

डुपटी (ना०) १ कधे पर रखने की एक चादर। दुपट्टी। २ दुपट्टी। चादर। दोपट्टी वाली चद्दर।

डुपटो-(न०)१ ओढ़ने की चादर। दुपट्टा। २ जरी के काम वाला स्त्रियो का एक

डिमडिम-(न०) एक वाद्य ।

डिंगळ-(ना०)१ राजस्थान की मध्ययुगीन साहित्यिक काव्य भाषा। २ चारण भाटों का तथा उनकी शैली का काव्य। ३ अपभ्रंश रूप की राजस्थानी की एक काव्य शैली। ४ ऊँचे स्वर से सुनाया जाने वाला प्रेरक काव्य। जीवन काव्य। [डींगो(=ऊंचो दीघ)+गल(=बात, आवाज)। ५ डींगल। वीरवाणी। (वि०) वीर।

डिंगळियो-(वि०) १ डिंगल काव्य की रचना करने वाला। २ डिंगल काव्य को समझने वाला। (न०) १ डिंगल कवि। २ भाट चारण। ३ वीर पुरुष।

डिंभ-(न०) १ बच्चा। २ युद्ध।

डीकरी-(ना०) १ पुत्री। बेटी। २ लडकी। कन्या।

डीकरो-(न०) १ पुत्र। बेटा। २ लडका।

डीघी-दे० डीगी १, २ ३

डीघो-दे० डीगो।

डीठ-(न०) १ दृष्टि। नजर। २ देखने की शक्ति। ३ सूझ। ज्ञान। ४ दृष्टि का बुरा प्रभाव। नजर। (अव्य०) प्रत्येक। हर एक। प्रति।

डीबो-(न०) १ पेट में वायु रुकने का एक रोग। २ पेट में होने वाली वायु की गाँठ। ३ कलेजे में होने वाला एक दर्द। ४ मनस्ताप। ५ छाती भर जाना।

डीर-(न०) १ वृक्ष की टहनियाँ, फूल, पत्ते आदि। २ बौर। मंजरी।

डील-(न०) १ शरीर। देह। २ शरीर का विस्तार। कद। ३ कुटुम्बीजन। ४ स्त्री का गुप्तांग। योनि।

डील करणो-(मुहा०)अवयवों का विकसित होना। शरीर का बनना।

डील-डाणाक-दे० डीलाळो।

डीलायतो-दे० डीलायतो।

डीलायतो-(वि०) १ बड़े कद वाला। ऊंचा और हृष्ट पुष्ट। दीर्घकाय। बड़े कुटुम्ब वाला।

डीलाळो-(वि०) १ दृढ और मोटे शरीर वाला। पुष्ट शरीर वाला। २ व्यक्तित्व वाला।

डीलोडील-(न०)१ समस्त अंग। २ अंग प्रत्यंग। (अव्य०) १ स्वयं। खुद। आपखुद। खुदोखुद। ३ डील के अनुसार। ४ शरीर में बराबर।

डींग-(ना०)१ लंबी चौड़ी बात। २ गप्प। शेखी। ३ आत्म प्रशंसा।

डींगरो-(न०) गाय, भैंस आदि पशुओं के गले में बाँधा जाने वाला एक मोटा और लंबा डंडा जिससे वे भाग न सकें।

डींगाळो-(वि०)१ जो तुलना में ऊंचा हो। मुकाबले में डींगा। २ डींगो। ऊंचा लंबा।

डींगी-(वि०) १ ऊंची। २ लंबी। ३ लंबी ऊंची। ४ डींग हाँकने वाला गप्पी।

डींगो-(वि०) १ जो कद में ऊंचा हो तथा लंबा हो। २ लंबा। ३ ऊंचा।

डीडू-(न०) १ जल सर्प। पानी का साँप। २ विष रहित साँप। डुंडुभ।

डीभू-(न०) भिड। ततया। बर। भमरी। भौंरी।

डुक-(न०) घूंसा। मुक्का।

डुक्कर-(न०) शूकर। सुअर।

डुखलिया-(न०) बिना तना हुआ टूटा फूटा खाट। जीर्ण खटिया। डुखलो।

डुखलो-दे० डुखलियो।

डुगडुगी-(ना०) एक छोटा बाजा। डुग्गी।

डुग्गी-दे० डुगडुगी।

डुपटो (ना०) १ कंधे पर रखने की एक चादर। दुपट्टी। २ दुपट्टी। चादर। दोपट्टी वाला चद्दर।

डुपटो-(न०)१ ओढ़ने की चादर। दुपट्टा। २ जरी के काम वाला स्त्रियों का एक

लबा । २ बिना बालबच्चे वाला । ३ विधुर । ४ बेशम ।

डाँडिया रास–(न०) १ छोटे डडे से खेला जाने वाला रास । एक रास नृत्य । २ होलिकोत्सव के दिनो मे डडियो के ताल के साथ खेला जाने वाला एक वासतिक नृत्य । गेहर । गींदड ।

डाँडियो–(न०) जीएा हुई धोती को बीच म से फाड कर उसके दोनो सिरों को जोडने के लिए की जाने वाली मिलाई । दो कपडो की चौडाई की ओर से की गई सिलाई । २ डडा ।

डाँडी–(ना०) १ पगडडी । २ लीक । चीला । मर्यादा । ३ पखी की डडी । ४ छोटी पतली लकडी । ५ लबा पतला हत्था या दस्ता ।

डाडो–(न०) १ हत्था । मूठ । दस्ता । हाथो । २ होलिका दहन के एक मास पूव (माघी पूनम को) होलिकोत्सव के प्रारभ हो जाने के रूप मे गाँव के नियत स्थान पर खडा किया जाने वाला (प्राय खेजडी का) एक लबा टहना, जो होली जलने तक रखा रहता है ।

डाँफर–(ना०) १ खूब तेज ठडी हवा । शीतकाल की ठडी ग्रांधी । २ धौंस । रोब ।

डाँभ–दे० डाम ।

डाँभणो–दे० डामणो ।

डाँवाँडोळ–(वि०) १ हिलता डुलता हुआ । अस्थिर । २ भ्रमित । विचलित । ३ घबराया हुआ । ४ प्रतिकूल ।

डाँस–(न०)१ एक प्रकार का बडा मच्छर । २ बडा मच्छर ।

डाँसर–दे० डाँस ।

डाँह–दे० डाँस ।

डिगणो–(क्रि०) १ डिगना । हिलना । लुढकना । २ टलना । खिसकना । ३ किसी बात पर स्थिर नहीं रहना । ४ विचलित होना । पथभ्रष्ट होना । ५ भ्रष्ट होना । च्युत होना ।

डिगमिग–दे० डगमग ।

डिगर–(न०) चाकर ।

डिगरी–(ना०)१ विश्वविद्यालय की परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की पदवी । २ ग्रश । कला । ३ दीवानी ग्रदालत का दावागर के पक्ष मे दिया गया निर्णय । डिग्री ।

डिगरीदार–(वि०)वह जिसके पक्ष म डिग्री हुई हो ।

डिगरो–दे० डिगर ।

डिगबर–(न०) १ शिव । महादेव । २ एक नागा सम्प्रदाय । ३ नगा साधु । ४ दिगम्बर सम्प्रदाय का नगा रहने वाला जन साधु । क्षपणक । (वि०) वस्त्र रहित । नगा । विवस्त्र ।

डिगाणो–(क्रि०) १ डिगाना । हटाना । २ खिसकाना । टालना । ३ विचलित । करना । पथभ्रष्ट करना । ४ स्थिर नही होने देना ।

डिगावणो–दे० डिगाणो ।

डिठोणो–(न०) दृष्टि दोष से बचाने के लिये सुदर वस्तु पर बनाया जाने वाला अशुभ चिह्न । २ बालक को नजर से बचाने के लिये उसके मुख पर लगाई जाने वाली काजल की बिंदी ।

डिढ–(वि०) दृढ । मजबूत ।

डिढाणो–(क्रि०) १ भूल न जाय इसलिये दुबारा या बार बार कहना । मान्जिलाना । २ दृढ करना । मजबूत करना । ३ मन म पक्का निश्चय करना ।

डिढावणो–दे० डिढाणो ।

डिबो–दे० डबा ।

डिबी–(ना०) डिबिया । छोटी डिब्बी ।

डिब्बी–दे० डिबी ।

डिब्बो–दे० डबो ।

डिमडिम-(न०) एक वाद्य।
डिंगळ-(ना०)१ राजस्थान की मध्ययुगीन साहित्यिक काव्य भाषा। २ चारण भाटों का तथा उनकी शैली का काव्य। ३ अपभ्रंश रूप की राजस्थानी की एक काव्य शैली। ४ ऊँचे स्वर से सुनाया जाने वाला प्रेरक काव्य। जीवन काव्य। [डीगी(=ऊंची दीघ)+गल(=बात, आवाज)। ५ डींगल। वीरवाणी। (वि०) वीर।
डिंगळियो-(वि०) १ डिंगल काव्य की रचना करने वाला। २ डिंगल काव्य को समझने वाला। (न०) १ डिंगल कवि। २ भाट चारण। ३ वीर पुरुष।
डिंभ-(न०) १ बच्चा। २ युद्ध।
डीकरी-(ना०) १ पुत्री। बेटी। २ लड़की। कन्या।
डीकरो-(न०) १ पुत्र। बेटा। २ लड़का।
डीघो-दे० डींगो १ २, ३
डीघो-दे० डीगो।
डीठ-(न०) १ दृष्टि। नजर। २ देखने की शक्ति। ३ सूझ। ज्ञान। ४ दृष्टि का बुरा प्रभाव। नजर। (अव्य०) प्रत्येक। हर एक। प्रति।
डीबो-(न०) १ पेट मे वायु रुकने का एक रोग। २ पेट म होने वाली वायु की गाँठ। ३ कलेजे मे होने वाला एक दर्द। ४ मनस्ताप। ५ छाती भर जाना।
डीर-(न०) १ वृक्ष की टहनियाँ, फूल, पत्ते आदि। २ बौर। मजरी।
डील-(न०) १ शरीर। देह। २ शरीर का विस्तार। कद। ३ कुटुम्बीजन। ४ स्त्री का गुप्तांग। योनि।
डील करणो-(मुहा०)अवयवों का विकसित होना। शरीर का बढ़ना।
डील-डाणाक-दे० डीलाळो।
डीलायतो-दे० डीलायतो।
डीलायतो-(वि०) १ बड़े कद वाला। ऊंचा और हृष्ट पुष्ट। दीर्घकाय। २ बड़े कुटुम्ब वाला।
डीलाळो-(वि०) १ दृढ और मोटे शरीर वाला। पुष्ट शरीर वाला। २ व्यक्तित्व वाला।
डीलोडील-(न०)१ समस्त अंग। २ अंगोपांग। (अ०य०) १ स्वयं। खुद। २ आपखुद। खुदोखुद। ३ डील के अनुसार। ४ शरीर म बराबर।
डींग-(ना०)१ लंबी चौडी बात। २ गप्प। शेखी। ३ आत्म प्रशंसा।
डींगरो-(न०) गाय भैंस आदि पशुओं के गले म बांधा जाने वाला एक मोटा और लंबा डंडा जिससे वे भाग न सकें।
डींगाळो-(वि०)१ जो तुलना मे ऊंचा हो। मुकाबले म डींगा। २ डींगो। ऊंचा। लंबा।
डींगी-(वि०) १ ऊंची। २ लंबी। ३ लंबी ऊंची। ४ डींग हांकने वाला। गप्पी।
डींगो-(वि०) १ जो कद मे ऊंचा हो तथा लंबा हो। २ लंबा। ३ ऊंचा।
डीडू-(न०) १ जल सर्प। पानी का सांप। २ विष रहित सांप। डुंडुभ।
डीभू-(न०) भिड। ततया। बर। भमरी। भौंरी।
डुक-(न०) घूंसा। मुक्का।
डुक्कर-(न०) शूकर। सुअर।
डुखलियो-(न०) बिना तना हुआ टूटा फूटा खाट। जीर्ण खटिया। डुखलो।
डुखलो-दे० डुखलियो।
डुगडुगी-(ना०) एक छोटा बाजा। डुग्गी।
डुग्गी-दे० डुगडुगी।
डुपटी (ना०) १ कंधे पर रखने की एक चादर। दुपट्टी। २ दुपट्टी। चादर। दोपट्टी वाला चद्दर।
डुपटो-(न०)१ ओढने की चादर। दुपट्टा। २ जरी के काम वाला स्त्रियों का एक

डैणती–(ना०)१ वृद्धा । बुढिया । डोकरी । २ भूतनी । डाइन । (वि०) दुखदाई । दुखदायिनी ।

डैर–(न०) पानी के भराव वाली जगल या खेत की जमीन । डहर । डबरा ।

डैरी–(ना०) छोटा डरा ।

डैरू–(न०)१ घुटने का वात रोग । गठिया । डँवरुग्रा । २ डमरू वाद्य ।

डैरो–(न०) कडाह मे से हलुग्रा, लापसी ग्रादि निकालने का डडा लगा एक छिछला पात्र ।

डैलाण–(न०) घर के द्वार के ऊपर बना हुग्रा कमरा । मकान के ऊपरि भाग मे सम्मुख का कमरा । माळियो ।

डैली–(ना०) वह कमरा जिसमे घर का मुख्य द्वार हो । देहली ।

डैलो–(न०) दरवाजे के पास का घर का बडा भाग ।

डैश–(न०) दो पदा या वाक्यो के बीच विराम सूचक लबी ग्राडी रेखा'—' ।

डोइलो–(ना०) काठ का चम्मच । लकडी की कलछी । छोटा डोइला ।

डोइलो–(न०) लकडी का कलछा । डोग्रा । बडी डोई । कडुग्रा । कलछा । काठ का लबी डडी वाला बड़ा चम्मच ।

डोई–दे० डोइली ।

डोकरडी–दे० डोकरी ।

डोकरडो–दे० डोकरो ।

डोकरियो–दे० डोकरो ।

डोकरी–(ना०)बूढीग्रौरत । वृद्धा । बुढ़िया ।

डोकरो–(वि०)१ वयोवृद्ध । २ मघावान । । ३ उत्तिवान । ४ प्रतिभाशाली । ५ प्रौढ़ । ६ वृद्ध । बूढ़ो । (न०) वृद्ध पुरुष ।

डोकी–(ना०) १ बाजरी या जुग्रार का सूखा डठल । २ छिलका उतरा हुग्रा सूखा डठल ।

डोको–(न०) १ ज्वार बाजरी ग्रादि का सूखा डठल । कडब । खारियो । २ घास । घास चारा । ३ पतली लकडी का टुकडा । तिनका । घोचो ।

डोचलो–(न०) १ माथा । सिर । २ ऊपर का भाग । ३ गूदा निकाली हुई तरबूज की ग्राधी खोपडी ।

डोट–(ना०) पुर जोर की दौड । (न०) १ नदी या नाले मे ग्रौर वेग से ग्राने वाला जल का प्रवाह । ३ पानी का धक्का ।

डोट देणो–(मुहा०) भागना । दौडना ।

डोटी (ना०) १ चिथडा की दडी । दडी । २ ग्रोढने का एक वस्त्र । दुपटी । डोवटो ।

डोटो–(न०) बडी डोटी । दडो ।

डोटो मारणो–(मुहा०) १ दडी या दड़े को बल्ले से फटकारना । २ नट जाना । मुकरना । ३ भाग जाना ।

डोठा पुडी–(ना०) १ एक मिठाई । २ एक पकवान । ३ एक प्रकार की खस्ता पूरी ।

डोठो–(न०) १ एक मिठाई । २ एक पक्वान ।

डोड–(वि०) मूख । जड । (न०) १ बड़ा कौग्रा । डोडकागलो ।

डोड कागलो–(न०) एक जाति का बडा कौग्रा । डोमकौग्रा । द्रोणकाक ।

डोडळ–(ना०) ग्राँख या चहरे की सूजन ।

डोडो–(ना०) १ एक ग्राभूषण । २ छोटा डोडा ।

डोडो–(न०) १ कपास, सेमल इलायची ग्रौर पोस्त ग्रादि का बीज-कोश । डोडा । २ जुग्रार ग्रादि की बाली । पूख । ३ डोडे सूमरे का एक लोक गीत ।

डोढ–(वि०)१ एक ग्रौर ग्राधा । डेढ़ ।(न०) १ डेढ़ की सख्या '१॥' । २ बीस, सौ

हजार, लाख इत्यादि संख्याओं के साथ उनकी आधी संख्या का योग।

डोढ आनो–(न०) १ ब्रिटिश राज्य के एक रुपये के १६ आने अथवा ६४ पैसा के हिसाब से छ पैसे। २ डेढ आने का चिह्न। '–)॥'

डोढ करोड–(वि०) १ एक करोड और पचास लाख। (न०) डेढ करोड की संख्या। १५००००००'

डोढ डायो–(वि०) जरूरत से ज्यादा होशियार या अक्लमंद (व्यंग)। २ लाल बुझक्कड। ३ मूर्ख। बेसमझ।

डोढ लाख–(वि०) १ एक लाख पचास हजार। (न०) डेढ लाख की संख्या। १५००००'

डोढवणो–(क्रि०) १ डेढ गुना करना। २ ड्योढा करना। २ आधा और मिलाना।

डोढवाड कूंतो–(न०) फसल को डेढी अनुमानित कर लिया जाने वाला जागीरदार का छठा भाग।

डोढ बीसी–(वि०) तीस। बीस का ड्योढा। (न०) डाढवीसी की संख्या।

डोढ सौ–(वि०) एक सौ पचास। २ एक सौ पचास की संख्या। १५०

डाढ़त्थी–दे० डोढ हत्थी।

डोढ हत्थी–(ना०) तलवार। डेढ़ हत्थी।

डोढा–(न०) डेढ़ का पहाड़ा।

डोढा करणो–(मुहा०)१ काम बंद करना। २ काम बंद करके सामान औजार आदि को यथा स्थान रखना। ३ घर या मकान के किंवाड बंद करना। ४ संध्या समय दुकान बंद करना। ५ डेढ गुना करना।

डोढाळणो–(क्रि०) १ किंवाड बंद करना। ओढाळणो। २ काम बंद करना।

डोढी करणी–(मुहा०) दुकान बंद करना (प्राय संध्या समय में)।

डोढियो–(न०) १ लगभग एक पैसे की कीमत का पुराना सिक्का। २ पैसा। कायडियो। ३ एक वस्त्र।

डोढी–(ना०) १ ड्योढ़ी। पौरी। (वि०) १ डेढ़गुनी। २ डेढ़गुनी से अधिक।

डोढीदार–(न०)ड्योढी पर पहरा देने वाला सिपाही। २ द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।

डोढो–(वि०) १ डेढ़ गुना। ड्योढा। २ डेढ़ गुना अधिक। (न०) ड्योढ़े का पहाड़ा।

डोढो रावण–दे० दाढो रावण।

डोफाई–(ना०) मूर्खता।

डोफी–(वि०-ना०) मूर्खा।

डोफो–(वि०) मूर्ख। ना समझ। डफोळ।

डोब–(न०)१ कपड़े को(रंगने के समय)रंग के पानी में डुबाने की क्रिया। २ डूबने की क्रिया या भाव। डुबकी। ३ पानी की गहराई का माप या अनुमान।

डोबरो–(न०) फूटे हुये मिट्टी के पात्र के टकोर मारने से होने वाला शब्द। (वि०) फूटा हुआ।

डोबी–(ना०) १ भैंस। २ बुड्ढी भैंस। (वि०) १ मूर्खा। मंद बुद्धि वाली। २ आलसी। सुस्त।

डोबो–(न०) बूढ़ी भैंस। (वि०) मंद बुद्धि वाला। मूर्ख।

डोम–दे० डूम।

डोम कागलो–दे० डोड कागलो।

डोयली–(ना०) छोटा डोयला। डोई।

डोयलो–(न०) कलछा। काठ का चम्मच। डोआ। डोइलो। डोयो।

डोयो–दे० डोयला।

डोर–(ना०) १ डोरी। रस्सी। २ पतंग की डोरी। ३ लगाम।

डोरडो–(न०) १ विवाह सूत्र। २ मंगल सूत्र। काकण डोरडो। ३ एक राग। ४ विवाह का एक लोक गीत। ५ रस्सा।

ढगली–दे० ढिगली।

ढगलो–(न०)ढेर। पुंज। राशि। ढिगलो।

ढचरका–(न०ब०व०) १ ढोंग। पाखंड। ढकोसले। २ नखरा।

ढचरो–(न०) पाखंड। ढोंग। (वि०) वृद्ध। बुड्ढा।

ढचूपचू–(वि०) १ डावांडोल। डिगमिग। २ अनिश्चित।

ढड्डो–(न०) १ 'ढ' अक्षर। ढकार। २ जड़ मनुष्य। सवथा अज्ञान मनुष्य।

ढपला–(न०ब०व०) १ ढोंग। पाखंड। २ कृत्रिम रोना। चरित्र।

ढब–(ना०) १ ढंग। युक्ति। रीति। २ रचना। बनावट। ३ तदबीर। उपाय। ४ पसंद। ५ वश। अधिकार। ६ अवसर। मौका। ७ सुविधा। सहूलियत।

ढबणो–(क्रि०) १ निभना। निर्वाह होना। २ ठहरना। रुकना।

ढबदार–(वि०) १ ढबवाला। २ वशवाला। ३ पसंद वाला। ४ छटादार।

ढबू–दे० ढब्बू।

ढब्बू–(वि०) मूर्ख। जड़। (न०) १ दो पसों का मोटा और पुराना तांबे का एक सिक्का। २ टका। दो पैसे। ३ पौने दो तोले का एक तोल।

ढमक–दे० ढमको।

ढमक-ढमक–(न०) ढोल के बजने की आवाज।

ढमकणो–(क्रि०) ढोल का बजना।

ढमकाणो–(क्रि०) ढोल बजाना।

ढमकावणो–दे० ढमकाणो।

ढमको–(न०) ढोल बजने का शब्द।

ढमढम–दे० ढमक ढमक।

ढमक–दे० ढमक।

ढमकणो–दे० ढमकणो।

ढमाक–दे० ढमको।

ढमाढम–(न०) १ ढोल बजने की आवाज। ढोल का शब्द। २ ढोल का एक ताल।

ढरडो–(न०) १ पुराने रिवाज का अनुसरण। ढर्रा। २ खोटे रिवाज का अनुसरण। अंधानुकरण। ३ दृष्टानुसरण। देखादेखी। ४ स्वभाव। आदत (अनुचित) ५ शैली। ढंग। ढर्रा। ६ कुप्रथा। खोटा रिवाज। ढर्रो।

ढर्रो–दे० ढरडो।

ढळ–(न०) १ अस्त होने की क्रिया या भाव। २ ढेला। ३ पहाड़ के पास की रक्षित भूमि।

ढळकणो–(क्रि०) १ गिर कर बहना। २ आंसू ढरकना। आंसू बहना। ३ किसी वस्तु का हिलते हुए दिखना। ४ लोलक की भांति हिलना।

ढळकावणो–(क्रि०) १ हिलाना। २ गिराना। ३ लुढ़काना। ४ बहाना। (आंसू)। आंसू ढरकाना।

ढळको–(न०) आंख से पानी गिरते रहने का एक रोग। ढलका।

ढळणो–(क्रि०) १ नक्षत्रों का मध्याकाश में आकर पश्चिम की ओर जाना। अस्त होने के निकट या स्थिति में आना। ग्रहों का अस्ताचल की ओर जाना। २ पात्र में से पानी तेल आदि प्रवाही पदार्थ का गिरना बहना या बाहर निकलना। ३ घोड़े ऊंट आदि का जंगल में चरने जाना। ४ चलना। रवाना। जाना। ५ पलंग, जाजम आदि का सोने बैठने की स्थिति में होना या बिछाया जाना। ६ पिघली हुई धातु का सांचे में ढाला जाना। ७ ठहरना। विश्राम करना। ८ अचेत होकर गिर पड़ना। ९ बीतना। १० मरना। ११ एक ओर झुकना। १२ अमुक वृत्ति की ओर झुकना। १३ देवता के ऊपर चमर का फिराया जाना।

ढळती ऊमर-(ना०) बुढ़ापा।

ढळती छाया-(ना०) १ फिरते दिन। २ दुर्भाग्य के दिन। ३ दुर्भाग्य। ४ सौभाग्य के दिन। ५ सुदिन।

ढळती छीया-दे० ढळती छाया।

ढळती रात-(ना०) पिछली रात।

ढळती वेळ-दे० ढळती ऊमर।

ढलता दिन-(न०) वृद्धावस्था।

ढळतो दिन-(न०) १ मध्याह्न के बाद का दिन। दुपहर के बाद का समय। २ दिन का चौथा पहर।

ढळमो-(न०) १ सांचे में ढला हुआ। २ जो एक ओर नीचा हो। ढलुआ। ढालू।

ढळाई-(ना०) १ चढ़ाई से उलटा। उतार। नीचाई। ढलाई। २ किसी धातु आदि को गला कर सांचे में ढालने का काम। ३ ढालने की मजदूरी।

ढळाण-दे० ढळांख।

ढळामण-(ना०) ढालने की मजदूरी। ढलाई।

ढळाव-(न०) उतार। नीचाई। चढ़ाई का उलटा।

ढळावणो-(क्रि०) १ सांचे में ढलवाना। २ किसी वस्तु को कोई आकार देना। ३ पानी आदि प्रवाही पदार्थ को गिरवा देना। ढुलवाना।

ढळांख-(ना०) १ ढाल। ढालू जगह। २ नीचे की ओर। चढ़ाई से उलटा। ढलाई। उतार। ढळाव।

ढळात-दे० ढळांख।

ढळो-(न०) १ मिट्टी का ढेला। (वि०) १ मूर्ख। मंद। २ आलसी। सुस्त।

ढलो करणो-(मुहा०) १ छोड़ना। २ काम करना छोड़ना। ३ हाथ में लिये हुए काम या बात को अधूरा छोड़ना।

ढल्लीस-(न०) दिल्लीश। दिल्ली का बादशाह।

ढसड़णो-(क्रि०) जमीन पर रगड़ते हु[ए] घीसना। घसीटना।

ढहणो-(क्रि०) १ गिरना। पड़ना। [२] मरना। नष्ट होना। ३ किसी उभ[री] उठी हुई या उठाई हुई वस्तु का [गि]र जाना। जैसे—दीवार आदि।

ढहाणो-(क्रि०) १ गिराना। २ ध्व[स्त] करना। नाश करना। ३ गिरवाना। ध्वस्त करवाना। नाश करवाना।

ढहावणो-दे० ढहाणो।

ढक (न०) १ ढक्कन। २ कौपा। ढोल। ढक।

ढकणी-(ना०) ढकनी। ढाकणी।

ढकणो-(क्रि०) १ ढक जाना। २ ढ[क] देना। ढकना। (न०) ढक्कन। ढाकणो।

ढग-(न०) १ तरीका। ढंग। रीति। चालढाल। बर्ताव। ३ प्रकार[।] लक्षण। रंगढंग। ४ प्रकार। तरह। ५ दशा। हाल।

ढगढाळो-(न०) १ रहन सहन। बरता[व।] आचरण। २ बनावट। आकार। ढंग[।] ३ रंग ढंग। लक्षण। ४ व्यवस्था[।] प्रबंध। ५ हालत। दशा।

ढगसर-(क्रि०वि०) १ अच्छी प्रकार से[।] सुचारू रूप से। २ तरकीब से। क्रमश[ः]

ढगी-(वि०) १ ढंग वाला। ढंग से र[हने] वाला। २ काम व परिश्रम में प्र[वृत्त] नहीं ध्यान वाला। पीछे रहने वाला[।] जिसकी गणना काम करने (की क्षम[ता] वालों) में पश्चाद्वर्ती रहती हो। बिना ढंग वाला।

ढचो-(न०) १ साढ़े चार का पहाड़ा[।] ढोंचा। २ साढ़े चार का अंक। ४ (वि०) साढ़े चार।

ढढ-(न०) १ पानी का नेस। २ मिट्टी भरा हुआ पुराना तालाब। ३ ढा[ंढा] पशु। ढांढो। (वि०)१ पोला। खोखल[ा।] २ ना समझ। मूर्ख।

ढाळी–दे० ढाळकी।

ढालू–(न०) कैर (करील) का पका हुआ फल। पका हुआ लाल करफल। ढेलू। पींचू।

ढाळ–(ना०) चढाई से उलटा। ढलाई। उतार। नीचाई। (वि०) ढलुवाँ। २ ढलाइ की ओर का।

ढाळो–(न०)१ रिवाज। पद्धति। तरीका। २ रहन सहन। चाल चलन। ३ यात्रा के बीच मे किया जाने वाला विश्राम। विश्रांति। पड़ाव।

ढाळोढाळ–(क्रि०वि०) १ क्रमानुसार। सिलसिले वार। २ ढाल उतार। ३ ढलाई की ओर। ४ क्रम से उतरता हुआ। (वि०) एक के बाद एक दूसरा। (न०) छोटी मोटी वस्तुओ का क्रम।

ढावो–दे० ढाहो।

ढाहणहार–(वि०) गिराने वाला। नाश करने वाला।

ढाहणो–(क्रि०) १ मारना। नष्ट करना। २ गिराना। ढाहना।

ढाहो–(न०) १ नदी का ऊचा किनारा। ढाहा। ढावो। २ किनारा।

ढाँक–(न०) १ ढक्कन। २ कलक।

ढाँकण–दे० ढाकण।

ढाँकणी–दे० ढाकणी।

ढाकणो–दे० ढाकणो।

ढागी–(वि०) दे० ढागो।

ढाँगो–(वि०) १ छितरी या बिखरी हुई बस्ती वाला (गाँव)। घटता आबादी वाला। २ निर्जन। ३ भद्दा। कुरूप। असुदर। ४ ढग रहित। (स्त्री० ढाँगी)

ढाचो–(न०) १ किसी वस्तु का तैयार करने के पूर्व बनाया जाने वाला उसका पूर्व रूप। खाका। ढौल। २ पशुओ की पीठ पर कसा जाने वाला भार भरने का ढाँचा। भारभरा। भार सदा। ३ बनावट। गढ़न। ४ प्रकार। भाँति।

ढाँडो–दे० ढाँढो।

ढाँढी–(न०) १ मरा हुआ पशु। २ बूढ़ा पशु। ३ बूढ़ी गाय।

ढाँढो–(न०) १ पशु। २ मरा हुआ पशु। (वि०) मूर्ख। गँवार।

ढाँपणो–(क्रि०) ढकना। (न०) ढक्कन। ढकणो।

ढिग–(न०) १ राशि। पुज। ढेर। ढिगलो। (क्रि०वि०) १ निकट। पास। कने। २ ओर। तरफ।

ढिगल–(न०) ढेर। राशि। ढगलो।

ढिगला वध–दे० ढगला बध।

ढिगली–(ना०) छोटा ढेर। ढेरी। ढगली।

ढिगलो–(न०)१ ढेर। राशि। २ कटाळो। कचरा।

ढिरगो–(न०) १ टीबा। २ रेत या मिट्टी का ढेर। धूबो। ३ ढेर। ढिगलो।

ढिब्बो–दे० ढिगो।

ढिलडी–(ना०) १ दिल्ली का एक काव्यानुमोदित नाम। २ मयूरी। मोरणी। ढेलडी।

ढिलाई–(ना०) १ ढीला होने का भाव। २ सुस्ती। शिथिलता। ३ विलब। देरी।

ढिल्ली–(ना०) दिल्ली शहर।

ढिल्लीपत्त–दे० ढिल्लीवै।

ढिल्लीवै–(न०)१ दिल्लीपति। २ सम्राट। बादशाह।

ढिल्लीस–दे० ढल्लीस या ढिल्लीवै।

ढी–(ना०) १ गौ। गाय। २ गाय को पानी पिलाने के समय उच्चार किया जाने वाला एक शब्द। ३ गाय की बछिया। टोगडी।

ढीओ–गाय का बछड़ा। टोगडो। दे० ढी स० २

ढीक–दे० ढीक।

ढीफड़-(वि०) प्रमुख । पक्का ।
ढीफडसिंघ-(न०) १ प्रमुखसिंह । प्रमुख व्यक्ति । २ बहादुर आदमी (व्यंग में)
ढीफड़ो-(वि०) प्रमुख । पक्का । जिमर । फन्नाखो ।
ढीफली (ना०) एक प्रकार का तोप । छोटी तोप ।
ढीट-(वि०) धृष्ट । निर्लज्ज । ढीठ । ढीट । ढीटो ।
ढीटो-दे० ढीट ।
ढीठ-दे० ढीट ।
ढीम-(न०) व्रण । छालो ।
ढीमको-(वि०) प्रमुख । पक्का । जिमरा । फन्नाखो । ढीफड़ो ।
ढीमड़ो-(न०) १ कुँआ । २ कुँएँ से पानी निकालने का एक यंत्र । ढेंकली । ३ कुँए पर लगी ढेंकली वाला गन । ४ व्रण । गाँठ । छालो ।
ढीमो-(न०) उत्तर गुजरात के प्राचीन एवं प्रसिद्ध धरणीधर (वाराहपुरी) तीर्थ स्थान का आधुनिक नाम । ढेमो । धरणीधर ।
ढीमोळी-ढीगाळा ।
ढीरो-(न०) अनेक कांटों वाली वाली बड़ी टहनी । कांटों वाली टहनी ।
ढील-(ना०)१ छूट । स्वतंत्रता । अवकाश । २ देरी । विलंब । ३ सुस्ती । ४ तनाव का अभाव । ५ उपेक्षा । लापरवाही ।
ढीलढाळो-(न०) हाथी । (वि०) सुस्त । ढीलो ।
ढीलगो-(वि०) आलसी । सुस्त ।
ढीलाई-दे० ढिलाई ।
ढीलापणो-(न०) ढीलापन । शिथिलता ।
ढीलो-(वि०) १ ढीला । मंद । काहिल । २ सुस्त । ३ पस्तहिम्मत । ४ कमजोर । ५ शांत । ६ नरम । ७ जो कसा न हो । ८ जो खींचाई में शिथिल हो । ९ जो तंग न हो । १० जो पहनने में तंग न हो । ११ जो सख्त न हो । ढीला । १२ जो बहुत गाढ़ा न हो ।
ढीलोढम-(वि०) १ बिलकुल ढीला । २ बहुत सुस्त । आलसी ।
ढीलोढाळा-(वि०) सुस्त ।
ढींक-(न०) १ मांसाहारी पक्षी विशेष । २ गिद्ध पक्षी । गाध ।
ढींकण-दे० ढींकड़ ।
ढींकली-(ना०) १ कुँए से पानी निकालने का साधन । चींच । ढीमड़ो । ढेंकलो । २ एक छोटी तोप ।
ढींकेन-(न०) रहट का एक उपकरण ।
ढींग-दे० धींग ।
ढींगाळी-(ना०) १ स्त्रियों का एक व्रत जिसमें बालमुकुन्द से नहा धोकर और पूजा करके भोजन कर लिया जाता है और दिन भर उपवास रखा जाता है । धींगोळी ।
ढींच-(न०) १ हाथी । २ एक बड़ा पक्षी ।
ढींचण-(न०) घुटना । गोडो ।
ढींचाळ-(न०) हाथी ।
ढुंई-(ना०)१ बाजरी जुवार के डंठलों आदि का महीन चारा । चारे की कुट्टी । कुतर । २ रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं । त्रिक । ३ कमर । कड़तू ।
ढुंग्रो-(न०) १ रीढ़ के नीचे का भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं । पीठ के नीचे का भाग । ढूहो । २ संगठन । ३ दल । झुंड ।
ढुकाणो-दे० ढुकावणो ।
ढुकाव-(न०) १ उपस्थिति । आगमन । २ विश्राम । ३ बरात का आगमन । ४ बरात आगमन का संदेश । ५ बरात की शोभा यात्रा । ६ बरात का स्वागतोत्सव । सामेळो ।

ढुकावणो-(क्रि०) १ काम मे लगाना। २ काम शुरू करवाना। ३ काम पर लगवाना। संपादन करवाना। काम को पार लगवाने मे सहायता करना। तज-बीज करना। ४ काम बनाना। ५ मन मे जँचाना। ६ निकट ले जाना। ७ माप के अनुसार बिठा देना।

ढुगली-दे० ढिगली।

ढुगलो-दे० ढिगलो।

ढुळणो-(क्रि०) १ ऊपर-नीचे या इधर उधर होना फिरना। २ वारा जाना। (चँवर का)। चँवर का ढोला जाना। ३ मोहित होना। ४ न्योछावर होना। ५ गिरना। फलना। (पानी का) ६ गिर कर बहना। बरतन मे से पानी आदि द्रव पदार्थ का गिरना। ७ प्रस्थान करना। ८ मेहरबानी करना।

ढुही-दे० ढूही।

ढुओ-ढुओ।

ढुंढ-दे० ढूंढ।

ढुंढराव-(न०) सिंह। शेर।

ढुंढा-(ना०) हिरण्यकशिपु की बहिन।

ढुंढाड-दे० ढूंढाड।

ढुंढाहड़-दे० ढूंढाड।

ढुंढिराज-(न०) श्रीगणेश।

ढुंढो दे० ढूंढो।

ढूई-दे० ढूही।

ढूकडो-(क्रि०वि०) नजदीक पास। निकट। नडो। कन। नजीक।

ढूकणो-(क्रि०) १ बनना। सम्पन्न होना। काम होना। २ लगना। प्रवृत होना। ३ पहुँचना। ४ प्रारंभ होना। ५ प्रारम्भ करना। ६ सगाई करना। साथ करना। ७ साथ होना। ८ जँचना। उचित लगना। ९ निकट आना। संपर्क मे आना। १० किसी वस्तु का माप के अनुसार बन जाना। ११ काम पर लगना।

ढूब (ना०) पीठ का टेढापन। कूबड।

ढूबी-(वि०) कुबडी।

ढूबो-(वि०) कुबडा।

ढूल-(न०) १ पक्षियों का झुंड। पक्षी समूह। २ दल। समूह।

ढूळ-(न०) समूह। झुंड।

ढूळडी-दे० ढूली।

ढूलियो-(न०) चवेणा बेचने वालो का एक माप पात्र। मायलो।

ढूली-(ना०) १ गुड़िया। २ दिल्ली। ढिल्ली।

ढूलीपत-दे० ढिल्लीपत।

ढूलो-(वि०) १ भयभीत। डरा हुआ। २ डरपोक। ३ गावदी। नासमझ। ४ आलसी। ५ स्त्रीजित। स्त्रैण। ५ नामर्द। (न०) ढूली का नर। गुड्डा।

ढूसरी-दे० ढूसी।

ढूसी-(ना०) जुआर बाजरी आदि के डठलो का महीन चारा। घास की कुट्टी। कुतर। ढूही।

ढूही-दे० ढूसी।

ढूहो-(न०) १ ऊंची जमीन। २ टीला। ३ चूतड। नितंब। ४ किसी वस्तु का उठा हुआ भाग।

ढूंग-(न०) १ ढोंग। दंभ। २ नितंब।

ढूंगरी-(ना०) घास की ढेरी। घास को चुन कर लगाई हुई ढेरी।

ढूंगारणो-दे० धूंगारणो।

ढूंगी-(वि०) १ छद्मवेशी। २ ढोंगी। दंभी।

ढूंगो-(न०) चूतड। नितंब। ढेको।

ढूंढ-(ना०) १ प्रथम होलिका दहन के समय (रात को) गाँव के मुखिया और पुरोहितों द्वारा नवजात शिशु को उसके घर जाकर एक लोक काव्य द्वारा दिया जाने

वाला आर्शीवचन । २ बच्चे के जन्म के पश्चात् की प्रथम होली पर होलिका दहन के बाद (धुल हटी के प्रात) ढूढा से किये जाने वाले बच्चे के विवाह का उत्सव । ३ तलाश । खोज । निगे । ४ घर । ५ भोपडा ।

ढूढणो-*(क्रि०)*१ तलाश करना । खोजना । निगे करणी । २ होलिका दहन के बाद बच्चे की ढूढ करना ।

ढूटाड-*(न०)* १ जयपुर के पास का एक प्रदेश । जयपुर राज्यान्तर्गत एक प्रदेश । २ जयपुर राज्य का नाम ।

ढूढाडी-*(ना०)* १ ढूढाड प्रदेश की बोली । *(वि०)* १ ढूढाड से सबधित । २ ढूढाड प्रदेश का रहने वाला ।

ढूढिया-*(न०)* होलिका । दहन के पश्चात् नवजात शिशु के घर जाकर ढूढ कराने वालो का दल ।

ढूढिया पथ-*(न०)* जनधम का एक पथ ।

ढूढियो-*(न०)* १ जैनधम के ढूढिया पथ का साधु । २ जैनधम के ढूढिया पथ का अनुयायी । बाईस टोला जैन सप्रदाय का अनुयायी । ३ घर । ढूढो ।

ढूढो-*(न०)* १ पुराना घर । २ घर । मकान । ३ खण्डहर । ४ कच्चा मकान ।

ढूसो-*(न०)* १ ओढने का मोटे रेशम का एक कपड़ा । धुस्सा । मोटे रेशम की सफेद चादर । धूसो । २ ऊनी चादर । लोई । लोवडी ।

टेको-*(न०)* चूतड । नितब । ढूगो ।

ढेटाई-*(ना०)* धृष्टता । ढिठाई । घेटाई ।

टेटी-*(वि०)* १ निलज्ज । निलजी । घेटी । २ कुटिला ।

ढेटो-*(वि०)* १ धृष्ट । निलज्ज । ढीठ । घेटो । निलजो । २ कुटिल ।

टेड-*(न०)* १ इस नाम की अत्यज जाति का मनुष्य । ढेढ । २ मरे हुये पशुओ का चमडा उतारने का काम करने वाली जाति ।

ढेडणी-*(ना०)* १ ढेढ की पत्नी । २ ढेढ जाति की स्त्री ।

टेडणी-दे० ढेडण ।

ढेडवाडो-*(न०)* १ ढेढो का मोहल्ला । २ गन्दी बस्ती ।

ढेढ-दे० ढेड ।

ढेडण-दे० ढेडण ।

ढेढणी-दे० ढेडणी ।

ढेढियो- *(न०)* १ एक रग । २ ढेढ ।

टेठो-*(ना०)* १ बिना मजदूरी (पारिश्रमिक) का काम । बगार । २ ढेढ का काम । ३ नित्य प्रपच । नित्य की झझट ।

ढेरा-*(न०)* १ जमी हुई गाढी वस्तु की मोटी तह या दल । २ गली हुई वस्तु का (ठडा हो जाने से) जमा हुआ टुकडा । थक्का । चक्का । ३ मिट्टी मिला हुआ कडा । ढेबरा ।

ढेबरी-*(ना०)* १ किवाड की चूल के नीचे रहने वाली लोहे की ढबरी जिस पर किवाड घूमता है । ऊखळी । २ खूटी या कील लगाने के लिये दीवाल मे लगाया जाने वाला काठ का टुकडा । ४ तरबूज ककडी आदि फल मे उसकी परीक्षा के लिये बनाया हुआ चक्ता । डगळी ।

ढेबरो-दे० सोगरा ।

ढेमो-दे० ढीमा ।

ढेर-*(न०)* राशि । ढिगलो । *(वि०)* बहुत । अधिक । घणो ।

ढेरणो-दे० ढरवणो ।

ढेरवणा-*(क्रि०)* १ वाहन पशु को रोकने के लिये उसकी लगाम को खीचना । २ रोकना । ३ ध्यान देना । बात ऊपर विचार करना । ४ कान लगाना । ५ ढरे (रस्सी बटने का उपकरण) को फिराना ।

ढेरियो–दे० ढेरो।
ढेरी–(ना०) ढेर। राशि। ढगलो। ढिगली। (वि०) मूर्खा।
ढेरो–(वि०) १ मूर्ख। २ आलसी। (न०) एक उपकरण जिससे रस्सी बटी जाती है। फिरकी।
ढेल–(ना०) मोरनी। मयूरी। ढेलड़ी।
ढेलडी–(ना०)१ दिल्ली नगर २ मोरनी। मयूरी।
ढेलडीपत–(न०) १ दिल्लीपति। २ बादशाह।
ढेलणी–दे० ढलडी।
ढेलू–दे० ढालू।
ढेलो–(न०) मिट्टी पत्थर आदि का टुकड़ा। ढेला।
ढेमो–दे० ढेपो।
ढैणो–दे० ढहणो।
ढैवणो–दे० ढहणो।
ढँकणो–(क्रि०) १ गाय आदि पशुओं का खामना। २ रंभाना।
ढचाळ–(न०) हाथी।
ढोई (ना०) १ आश्रय। २ सहारा।
ढोओ–(न०)१ आक्रमण। ढोवो। २ लूट। ३ वजन। भार।
ढोकळी–(ना०) १ ढोकले का छोटा रूप। २ एक व्यंजन। (वि०) १ मूर्खा। २ स्थूल व कुरूप (स्त्री)।
ढोकळो–(न०) भाप से पकाई हुई एक प्रकार की बाटी। बाफलो। (वि०) १ मूर्ख। २ कुरूप। ३ मोटा। नाटा।
ढोणो–दे० ढोवणो।
ढोर–(न०)गाय भैंस आदि चौपाया। ढोर। पशु। डंगर। (वि०) १ मूर्ख। २ गँवार।
ढोरचराई (ना०) पशुओं को जंगल में चराने का काम। २ पशुओं को जंगल में चराने का कर।
ढोरडांगर–(न०) पशु। मवेशी।
ढोल–(न०) १ दोनों ओर चमड़ा मँढा हुआ एक बड़ा बाजा। २ पानी आदि भरने का ढोल के समान लोहे आदि का बड़ा पात्र।
ढोलक दे० ढालकी।
ढोलकी–(ना०) लकड़ी के गोल खोखले घेरे के दोनों ओर चमड़े से मँढा हुआ एक वाद्य जो ढोल से छोटा होता है।
ढोनडी–(ना०) छोटी चारपाई। खटिया।
ढोलण–(ना०) १ ढोली की स्त्री। २ ढोली जाति की स्त्री।
ढोलणो–(ना०) स्त्रियों के गले का एक गहना।
ढोळणो–(क्रि०)१ किसी बरतन में से पानी आदि द्रव पदार्थ को गिराना। उँडेलना। २ चँवर को ऊपर हिलाना। चँवर डालना। ३ हवा डालना। (पंखे से)। (पंखा) झलना।
ढोल रो डमको–(न०) १ ढोल बजने का शब्द। २ ढोल पर नाचने का ताल।
ढोळा–(न०ब०व०) १ खुशामद। चापलूसी। २ झूठी हाँ या स्वीकृति। ३ झूठा आश्वासन। ४ व्यर्थ महमानगिरी।
ढोळा देणा–(क्रि०) १ हां में हाँ मिलाना। झूठी हाँ भरना। २ बिना काम महमानगिरी करना।
ढोळा फोडो–(न०) ढोलने फोड़ने का काम।
ढोलारव–(न०) ढोल का शब्द।
ढोळावणो–(क्रि०) ढुलवाना।
ढोळिया–दे० ढोला।
ढोलियो–(न०) पलंग।
ढोली–(न०) १ गाने बजाने वाली एक जाति। २ ढोल बजाने वाला।
ढोळं बठणो–(मुहा०)१ पशु का मन में नहीं होने के रोग से ग्रसित होना। २ कमजोर हो जाना। ३ स्थिति का बिगड़ना।

ढोलो-(न०) नरवर का एक प्रसिद्ध राजकुमार जिसका मालवणी और मारवणी के साथ विवाह हुआ था। २ राजस्थानी लोकगीतों का नायक। ३ ढोला। पति। ४ दूल्हा। ५ भूर्ख व्यक्ति।

ढोळो-(न०) पड़े नहीं हो सकने का पशुओं का एक रोग।

ढोल्यो-दे० ढालियो।

ढोवणा-(क्रि०) १ चलाना। २ दौड़ाना। ३ युद्ध में भोंकना। ४ बोझा उठाना। ५ बोझा उठाकर ले जाना। उठाकर ले जाना। ६ धारण करना। ७ उठाना। ८ ले जाना। ९ सम्हालना।

ढोवाई-(ना०) १ ढोने का काम। २ ढोने की मजदूरी। ढुलाई।

ढोसा-(न०) १ धक्का। २ टूट। ३ भार। वजन।

ढोहणा-(क्रि०) गिराना।

ढोग-दे० ढूंग।

ढोगी-दे० ढूंगी।

ण

ण-राजस्थानी में ट वर्गीय मूर्द्धस्थानी अनुनासिक व्यंजन। राजस्थानी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन वर्ण। इस अक्षर से प्रारंभ होने वाला शब्द भाषा में नहीं है। बाणी की पाठशाला में इसका मनारंजन नाम राणो ताणो कहते (राणो नाणो सब है) पढ़ाया जाता है।

णगण-(न०) दो मात्राओं का एक मात्रिक गण।

त

त-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का सोलहवाँ और तवर्ग का प्रथम स्पर्श व्यंजन वर्ण। (अव्य०) १ पाद पूर्णार्थ अव्यय। २ तो। तब। उस स्थिति में ३ ही। ४ भी। (सर्व०) उस। उण। उ।

तइ-(अव्य०) तब। उस समय। (सर्व०) उस। उण।

तइयो-दे० तियो सं० २ ३।

तइ-(सर्व०) १ तू। २ तन। ३ तर। ४ उस। (अव्य०) करण और अपादान कारक की विभक्ति। से।

तई-दे० तवी। (वि०) १ आततायी। अत्याचारी। २ दुष्ट। ३ शत्रु। (क्रि० वि०) तब। उस समय। (सर्व०) उस।

तउ-(अव्य०) १ तो। २ तो भी। (सर्व०) तू।

तक-(न०) गुड़ खांड नाज आदि के भरे हुए बोरों को (भारी वस्तुओं को) तोलने का कांटा। तगारू। भारकांटो। २ मौका। अवसर। उपयुक्त समय। ३ आचरण। व्यवहार। ४ ताक। तलाश। ५ लक्षण। आकार। ६ प्रकार। तरह। रंग। (अव्य०) किसी वस्तु या काम की सीमा या अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति। पर्यंत।

तवड–(न०) एक परिमाण। (ना०) १ शीघ्रता। जल्दी। २ शक्ति। पहुँच। ३ निगाह। सम्हाल। ४ डाँट। डपट। ५ तकाजा।
तवडियो–(न०) छोटी तराजू।
तवडी–(ना०) तराजू। ताकडी। (वि०) दृढ। मजबूत।
तवडो–(वि०) दृढ। मजबूत।
तवणो–(क्रि०) १ ताकना। तकना। ताक में रहना। २ देखना। ३ निशाना साधना। साँधना।
तकदीर–(ना०) प्रारब्ध। भाग्य।
तक मेळू–(वि०) अवसर वादी।
तकरार–(ना०) १ शीघ्रता। २ काम जल्दी निपटाने की सूचना या चेतावनी। ३ झगडा। बोलचाल। ४ बहस। विवाद। ५ टट्टी की हाजत। शौच वेग।
तकनीणो–(वि०) सुलभता से प्राप्त होने वाला।
तकलीदो–(वि०) १ अशक्त। कमजोर। २ नाजुक। कोमल। ३ थोडे से आघात से टूट जाने वाला। तकलीदी।
तकलीदो–दे० तक्लीन।
तकलीफ–(ना०) कष्ट। दुख।
तका–(सव०) १ वह। २ उस।
तकान–(अव्य०) १ भी। ही। २ तक। लो। पर्यत।
तकादा–(ना०) तकाजा।
तकार–(न०) त वर्ण। तत्तो।
तकावी–(ना०) सरकार की ओर से किसान को दिया जाने वाला ऋण। तकावी।
तका–(सव०) १ उन। तिकां। २ व।
तकियो–(न०) तकिया। उपधान। ओसीसो। २ कब्रिस्तान में बना हुआ मुसलमान फकीर के रहने का मकान। ३ छज्जे आदि पर लगाई जाने वाली पत्थर की एक पटिया।
तके–(सर्व०) १ 'तको' का बहुवचन। वे। २ उन।
तको–(सव०) १ वह। २ उस।
तक्षशिला– न०) दाशरथि भरत के पुत्र तक्ष द्वारा स्थापित एक प्राचीन नगर जो रावलपिंडी के निकट था। यह नगर गाधार देश की राजधानी और प्रसिद्ध विद्यापीठ था।
तखत–(न०) तख्त। सिंहासन।
तखतियाँ रो काठलो–(न०) स्त्रियों के गले का एक आभूषण।
तखती–(ना०) १ पाटी। पट्टी। २ पट्टा। चौकी।
तखतो–(न०) १ पट्टा। चौकोर लकडी के पट्टे का बठका। २ दर्पण।
तखग–(न०) तक्षक नाग।
तगड–(ना०) १ कष्ट। २ दौडधूप। ३ कठिन परिश्रम। ४ शीघ्रता। उतावल। ५ काम की भागा दौड। काम ऊपर काम।
तगडणो–(क्रि०) १ दौडाना। भगाना। २ हाँकना। चलाना। ३ परेशान करना। हैरान करना। ४ एक काम करके आते ही दूसरे काम के लिये भेजना या दौडाना।
तगडो–(वि०) हृष्टपुष्ट। बलवान। तगडा।
तगण–(न०) दो गुरु और उसके बाद एक लघु मात्रा वाला गण।
तगणो–(वि०) तिगुना।
तगतगाणो–(क्रि०) १ भगाना। दौडाना। २ निराश लौटाना।
तगदीर–दे० तक्दीर।
तगरो–(न०) १ पशु पक्षियों को पानी पिलाने का मिट्टी का बरतन। २ छिछला जल पात्र। ३ तगारी।
तगस–(न०) १ तक्षक सर्प। २ आग। ३ गरम।

तगाई-(ना०) १ जबरदस्ती। बलात्। २ नीचता। ३ दुष्टता। नागाई।
तगादो-(न०) १ तकाजा। तगादो। उघराणो। उघाई।
तगार-(वि०) तडाग का वर्ण व्यतिक्रम। (तगाड तगार)पानी या तल आदि प्रवाही पदार्थों की निमलता का सूचक एक विशेषण। निमल। बहुत साफ।
तगारी-(ना०) १ लोह पीतल का एक छिछला बरतन। २ चूना या गारा ढोने का तसला।
तगारो-(न०) बड़ी तगारी।
तगो-(वि०) १ जबरदस्त। बलवान। २ दुष्ट। २ नीच।
तचा-(ना०) त्वचा। चमडी।
तछाई-(ना०) १ (सलाई से छील कर के) आभूषण पर नक्काशी का काम। २ जडाइ के काम म कुदन को जमा करके उसम चमक देने के लिय ऊपर से छीलने का काम। ३ कुरदनी। कटाई।
तछेरी-(ना०) तरह। प्रकार।
तज-(न०) १ पोस्त का दाना। खसखस। २ किसी धातु को रेती (ग्ररगती) के द्वारा घिसने से बने चूर्ण का बारीक दाना। ३ रज म छाण दना। ४ दार चीनी। ५ दारचीनी की जाति का गरम मसाला। ६ तेजपात।
तजणो-(क्रि०) १ तजना। त्यागना। छोड़ना। २ क्षीण होना। कृश होना। ३ क्षीण करना। पतला करना।
तजबीज-(ना०) १ तजबीज। बन्दोबस्त। २ अनुकूलता। सगवड। जोगवाई।
तजा-दे० तवा।
तजा गरमी (ना०) एक चर्म रोग।
तजियाणा-(वि०) १ कृश। दुबला। २ रोग म पिसा हुआ (पात्र)। घिसोमिसोड़ा। ३ जंग लगा हुआ। सड़ा हुआ। गला हुआ। खवीजियोड़ो। ४ त्यागा हुआ।
तट-(न०) १ कूल। किनारा। २ सीमा। हद। (क्रि०वि०) पास। निकट।
तटणी-(ना०) नदी। तटिनी।
तठाथी-(ग्रव्य०) वहा से। उठ सू।
तठा पछ-(ग्रव्य०) जिसके बाद। जिणपछ।
तठा पहला-(ग्रव्य०) १ इसस पूव। २ इसके पहले। जिण पहला।
तठ-(क्रि०वि०) वहाँ। उधर। उठ। वठ।
तठी-(क्रि०वि०) वहा। उधर।
तड-(ना०) १ पक्ष। दल। २ समूह। सगठन। गुट। ३ जाति का उपविभाग। ४ बत। छडी। ५ सामने का पक्ष। मुकाबले का दल। शत्रु।
तडक-(न०) टूटने का शब्द।
तडकणो-(क्रि०) १ टूटना। २ फटना। ३ जोर का शब्द करना। ४ झुझलाना। बिगडना। ५ गुस्स होना।
तडक-भडक-(ना०) चमक दमक।
तडकाउ-(न०) १ प्रात काल के समय। सवेरा होने के समय। सवेर। २ सवेरा। प्रात काल। (क्रि०वि०) तडक म। सवेरे।
तडक-(न०) १ ग्रान वाल कल का सवेरा। २ आने वाला कल। (ग्रव्य०) १ सवेरे। २ झटपट। शीघ्र।
तडको-(न०) १ सवेरा। प्रात काल। २ छींटा। बूद। ३ तेजी। ४ धूप। ५ गरमी। ६ क्रोध। ७ छौंक। बघार। (वि०) थोड़ा।
तडछ-(न०)१ टुकडा। २ टूटने का शब्द। ३ तडफडाट। ४ नाश। ५ मूर्च्छा।
तडछणो-(क्रि०) १ टुकडे होना। २ दुखी होना। व्याकुल होना। ३ छटपटाना। तडफना। ४ काटना। तोडना। ५ नाश या सहार करना। ६ मूच्छित होना।
तडजोड-(ना०) १ प्रबंध। व्यवस्था। २ दोनो दलो की समानता। ३ बराबरी।

समानना। ४ किसी बात या काम का यथारूप या यथानुकूल विठान का प्रयत्न। ५ समाधान। निवेडो।

तडतडाणो–*(क्रि०)* १ तल या घी का खूब गरम होना। २ तेल या घी म तला जाना। ३ कष्ट पहुँचाना।

तडफडणो–*(क्रि०)* १ तडफना। छटपटाना। २ कठिन परिश्रम करना। तडफना।

तडफडाट–*(न०)* १ छटपटाट। २ व्यर्थ प्रयत्न। फांफो। ३ बकवाद।

तडफणो–*(क्रि०)* १ दुख म हाथ पैर मारना। तडफडाना। छटपटाना। २ कठिन परिश्रम करना। तडफना। ३ व्यर्थ प्रयत्न करना।

तडबो–*(न०)* १ बासी और विकृत राब आदि। २ पतला गोबर।

तडंग–*(वि०)*१ नंगा। २ तड़ंग। ३ लंबी।

तडाक–*(न०)*१ टटने का शब्द। *(क्रि०वि०)* तुरत। जल्दी।

तडाको–*(न०)* १ झूठी बात। गप। २ तडाक ध्वनि।

तडाग–*(ना०)* सरोवर। तडाग। तालाब।

तडाछ–*(ना०)* मूर्छा। बेहोशी।

तडातड–*(क्रि०वि०)* १ झटपट। लगातार। २ तड तड शब्द सहित।

तडातडी–*(ना०)* १ उतावली। भागदौड। धमाचौकडी। ३ कहासुनी। ४ मार-पीट।

तडापीटो–*(न०)* मारपीट। मारामारी।

तडामार–*(क्रि०वि०)* १ शीघ्र। जल्दी। २ अतिशीघ्र। ऊपरा ऊपरी। ३ तेजी से। जोरो से। *(ना०)* १ दौडधूप। २ मारामार। ३ जल्दी।

तडाल–*(ना०)* बिजली। तडित।

तडियाळ–*(ना०)* बिजली। तडित।

तडी–*(ना०)* १ बेंत। छडी। २ पतली शाखा। ३ लकडी।

तटो–*(न०)*१ लंबा बाँस। २ वृक्ष की कटी हुई लंबी शाखा। ३ लोहपत्र का वह चौकोर टुकडा जिस पर रख कर किसी चीज को गरम किया जाता है।

तढमल–*(वि०)* १ जबरदस्त। दृढ। २ वीर।

तण–*(न०)* १ शरीर। तन। २ पुत्र। तनय। *(प्रत्य०)* सबंधकारक विभक्ति, का की के। *(सर्व०)* उस। तिण।

तणई–दे० 'तण' प्रत्यय अर्थ।

तणउ–दे० 'तणो' प्रत्यय अर्थ।

तणकणा–*(क्रि०)* १ तनना। खिचना। २ ऐंठना। अकडना।

तणकाई–*(ना०)*१ जोरावरी। जबरदस्ती। टणकाई। २ खिचाव। खींचने का भाव।

तणका–*(वि०)* १ जोरावर। टणको। २ तना हुआ। खिचा हुआ। *(न०)* १ अकड। २ अभिमान। ३ हैसियत।

तणखलो–*(न०)* तिनका। तृण।

तणखो–*(न०)* १ तिनका। तृण। २ नाक म पहिनने की छोटी सिंकी।

तणणो–*(क्रि०)* १ खिचना। २ ताना जाना। खिचा जाना। ३ रुष्ट होना। ४ घमंड करना।

तणमणाट–*(ना०)*१ अकड। ऐंठ। २ गर्व। घमंड। ३ गुस्सा। ४ आवेश। ५ अधर्य।

तणय–*(न०)* पुत्र। तनय।

तणया–*(ना०)* पुत्री। तनया।

तणाव–*(न०)* १ खिचाव। २ रचना। बनाव। ३ शत्रुता। दुश्मनी। वमनस्य। ४ खींचातानी। ५ लडाई। टंटा झगडा। ६ ऊंची का गर्व।

तणावणो–*(क्रि०)* १ खिचवाना। तनाना। २ व्यर्थ खर्च म पडना।

तणियो–*(न०)* तराजू की डंडी के बीच के सुराख म डाला हुआ रस्सी का वह टुकडा

तथापि-(अव्य०) १ तो भी। तब भी। तो ही। २ यद्यपि। जो।
तथास्तु-(अव्य०)१ ऐसा ही हो। एवमस्तु। २ और अच्छा।
तद-(क्रिoविo) १ तब। उस समय। २ इसके बाद। उसके बाद। तर।
तदबीर-(ना०) युक्ति। उपाय। तरकीब।
तदरो-(क्रिoविo) १ तबसे। उस समय से। २ तब का।
तदा-(अव्य०) तब। उस समय। (सर्व०) १ वह। २ उस।
तदाकार-(वि०) उसके आकार का।
तदी-(क्रिoविo) १ उसके बाद। २ उस समय। तब।
तद्धित-(न०) १ व्याकरण मे वह प्रत्यय जो संज्ञा शब्द के अंत में लग कर भाव वाचक संज्ञा तथा विशेषण बनाता है। जैसे मित्रता का 'ता'। २ वह शब्द जो इस प्रकार प्रत्यय लगा कर बनाया जाय।
तद्भव-(न०) भाषा मे प्रयुक्त होने वाला संस्कृत का वह शब्द, जिसका रूप विकृत होगया हो। २ दूसरी भाषा से विकृत होकर आया हुआ शब्द।
तन-(न०) १ शरीर। देह। २ पुत्र। ३ वंशज। ४ गाढा संबंध। ५ संबंधी। रिश्तेदार। गिनायत।
तनखा-(ना०) तनख्वाह। वेतन। पगार।
तनढावरण-(न०) वस्त्र। कपड़ा। गाभो।
तन तोड-(वि०) खूब। अधिक। भारी (परिश्रम)।
तनत्राण-(न०) कवच। बख्तर।
तन दीवाण-(न०) अंगत मंत्री। निजी मंत्री। प्राइवेट सेक्रेटरी।
तनपात-(न०) मृत्यु।
तनमध-(ना०) कमर। कटि।
तनमन-(न०) १ तन और मन। २ आतुरता। (अव्य०) खूब आतुरता से।
तन मन धन-(अव्य०) १ सर्वस्व। २ समस्त शक्ति साधनादि।
तनमात-(न०) पंच भूतों का मूलस्वरूप। तंमात्र।
तनराग-(न०) तनुराग। उबटन। पीठी।
तनवी-देo तन्वी।
तनसार-(न०) १ कामदेव। २ वीर्य। ३ घृत। घी।
तन सिणगार-(न०) १ पहनने के वस्त्र। २ वस्त्राभूषण।
तनाजान-(वि०) १ नष्ट। बरबाद। २ अकेला।
तनाजो-(न०) १ तनाजा। झगडा। २ शत्रुता। वैर।
तनारसी-(न०) धनुष।
तनां-(सर्व०) तुझको। थने।
तनु-(न०) पुत्र। बेटा। दीकरो।
तनुजा-(ना०) १ बेटी। पुत्री। दीकरी। २ यमुना नदी।
तनू-(न०) १ वह समधी जिसके यहाँ पुत्र पुत्री का वाग्दान या विवाह संबंध हुआ हो। २ नजदीक का रिश्तेदार। ३ अतिप्रिय समधी। ४ कुटुम्बी।
तनू गिनायत-देo तनू। सं० १, २, ३।
तनै-(सर्व०) तुझको। तुझे। थने। (न०) तनय। पुत्र।
तन्मात्र-(वि०) १ मात्र वही। २ शुद्ध। (न०) पंचमहाभूतों का शुद्ध सूक्ष्म रूप।
तन्वी-(वि०) कामलांगी। (ना०) पतली सुकुमार स्त्री। तन्वंगी।
तप-(न०) १ तपस्या। २ कठिन व्रत। ३ ताप। गरमी। ४ अग्नि। ५ ठंड मिटाने के लिये सुलगाई जाने वाली अग्नि। ६ अलाव। कऊ। ७ तेज। प्रताप।
तपण-(न०)१ सूर्य। २ अग्नि। ३ ताप। गरमी।

तपणी-(*ना०*) ठंड में तपने के लिए आग रखने का पात्र। अंगीठी। तापणी।

तपणा-(*क्रि०*) १ धूप आंच आदि से गरम होना। २ ठंड मिटाने को अग्नि से गरमी प्राप्त करना। तपना। ३ गरमी लगना। ग्रीष्म ऋतु का उष्णता का प्रतीत होना। ४ सूर्य का प्रखर होना। ५ तपस्या करना। ६ क्रोध करना। ७ दुखी होना। ८ प्रभुता का आतंक जमना। तपना।

तपत-(*ना०*) १ ग्रीष्मकाल की गरमी। ताप। उष्म। २ उष्णता। जलन।

तपधारी-(*वि०*) १ ऐश्वर्यवान। २ तप करने वाला। (*न०*) तपस्वी।

तपन-(*न०*) १ सूर्य। २ धूप। ३ गरमी। उष्णता। ४ जलन।

तपसा-(*ना०*) तपस्या।

तपसी-(*न०*) तपस्वी।

तपसील-(*ना०*) विस्तारपूर्वक वर्णन। ब्यौरेवार वर्णन। ब्यौरा। तफसील।

तपाणो-देखो तपावणो।

तपावणो-(*क्रि०*)१ तपाना। गरम करना। २ दुख देना।

तपावस-(*ना०*) १ तपास। खोज। २ निगरानी। सम्हाल। देखभाल। ३ जांच पड़ताल। परीक्षा। ४ सहशयन। घरवास।

तपास-(*ना०*)१ शोध। खोज। २ परीक्षा। जांच ३ तहकीकात। तफतीश। ४ निगरानी। देखभाल।

तपासणो-(*क्रि०*) १ खोजना। ढूंढना। २ जांच करना। परीक्षा करना। ३ चौकसी करना। निगरानी करना। सम्हाल करना। संभालना।

तपी-(*न०*) तपस्वी।

तपनी-(*ना०*) बटुआ। कड़ाई। पतीला।

तपलो-(*न०*) बड़ा पतीला। बटुला।

तपसरी-(*न०*) तपस्वी।

तपोधन-(*न०*) १ जिसका तपस्या ही धन है। २ शिव की पूजा करने वाली एक गृहस्थ संन्यासी जाति जो शिव का निर्माल्य ग्रहण करती है। ३ इस जाति का मनुष्य। ४ शिव का पुजारी।

तपोबळी-(*वि०*) १ तपस्या का बल रखने वाला। २ ऐश्वर्यवान। वैभव शाली। ३ महंत। ४ राजा।

तपोवन-(*न०*) तपस्या करने का वन प्रदेश। तपस्या करने के योग्य वन प्रदेश।

तप्पड़-(*न०*) १ ऊंट पर का भार बरदारी या सवारी का पलान आदि सामान। २ टाट का बिछावन।

तफतीश-(*ना०*) १ तलाश। खोज। अनुसंधान।

तफावत-(*न०*) फर्क। अंतर।

तफावार-(*अव्य०*) १ विभागानुसार। तफा मुजब। २ परगनावार।

तफ-(*न०*) १ ताल्लुका। २ आधिपत्य। प्रभुत्व। ३ स्वत्व। (*अव्य०*) ताल्लुका में। परगने में।

तफो-(*न०*)१ ताल्लुका। परगना। परगनो। २ विभाग। ३ जत्था। ४ कलंक।

तबक-(*न०*) १ लोक। २ तल। ३ तह। परत। ४ सोने या चाँदी का वरक। बरक। ५ परात। बड़ा थाल। ६ एक वाद्य। ७ एक व्यंजन। एक खाद्य पदार्थ।

तबडक-(*ना०*) कूदते हुए दौड़ने की क्रिया।

तबडकाणो-(*क्रि०*) १ दौड़ाना। २ लानत देना।

तबर-(*ना०*) १ कुल्हाड़ी। २ फरसा। परशु।

तबर बंध-(*वि०*)१ फरसाधारी। २ शस्त्रधारी।

तबरो-(*न०*) ऊंचे किनारों का बड़ा तसला।

तबल-(ना०)१ बड़ा ढाल। २ बड़ा नगाड़ा। ३ ऊंचे किनारे की बड़ी थाली। थाल। तबरा। ४ कुल्हाड़ी जैसा एक शस्त्र। तबर।
तबलची-(न०) तबला बजाने वाला।
तबलबंध-(वि०) १ सवारी के समय नगाड़े बजवाने का अधिकारी। अपनी सवारी के आगे नगाड़ा बजवाने का अधिकार प्राप्त। ३ ढाल या नगाड़ा बजाने वाला। तबलियो।
तबलो-(न०) ताल देने का चमड़े से मढा एक प्रसिद्ध बाजा। तबला।
तबलियो-(न०) तबलची।
तबाक-दे० तबक।
तबाह-(वि०) बरबाद। नष्ट।
तबियत-(ना०) १ शरीर की रोगाराग स्थिति। २ स्वास्थ्य। ३ मन। जी। चित्त।
तबीडो-(न०) डंक आदि नुकीली वस्तु के चुभने की क्रिया। २ व्रण में रह रह कर होने वाली पीड़ा।
तबेलो-(न०) घुड़साला। पायगा।
तम-(न०) १ अंधेरा। २ तमोगुण। ३ क्रोध।
तमक-(ना०) १ क्रोध। रीस। २ जोश। आवेश। ३ उतावल।
तमकणो-(क्रि०) क्रोधित होना। तमकना।
तमजाळ-(न०) १ अज्ञान। २ अंधेरा।
तमणियो-(न०) स्त्रियों के गले का एक आभूषण। तिमणियो।
तमनास-(न०) १ दीपक। २ सूर्य। ३ प्रकाश।
तमना-(ना०) १ लालसा। २ इच्छा।
तमबीज-(न०) पाप।
तमर-(न०)१ गर्व। अभिमान। २ अंधेरा। तिमिर।
तमरार-(न०) सूर्य। तमारि। तिमिरारि।
तमरिपु-(न०) १ सूर्य। २ प्रकाश।
तमस-दे० तामस। (न०) अंधेरा।
तमस्सुक-(न०) १ दस्तावेज। २ ऋण पत्र। लिखत।
तमचो-(न०) पिस्तौल।
तमा-(ना०) रात। निशा।
तमाखू-(ना०) तमाखू। तंबाकू।
तमाम-(वि०) १ सब। कुल। (न०) समाप्त। खतम।
तमासो-(न०)१ मनोरंजक दृश्य। तमाशा। २ खेल। ३ नाचगान का खुले मंच का नाटक। ख्याल। ४ भेद। फजीहत।
तमास्ती-(सर्व०) तुम। थे।
तमियो-(न०) एक पात्र।
तमी-(ना०) रात।
तमीचर-(न०) १ चंद्र। २ निशाचर।
तमीणो-दे० तुमीणो।
तमोगुण-(न०) प्रकृति के तीन गुणों में से एक। मोह, क्रोधादि को उत्पन्न करने वाला गुण।
तमोगुणी-(वि०) १ क्रोधी। तमोगुण वाला। २ अहंकारी।
तम्मर-(न०) १ गर्व। घमंड। २ आंखों के आगे अंधेरा छाना। चक्कर आना।
तयार-(वि०) १ उद्यत। सन्नद्ध। तत्पर। तैयार। २ प्रस्तुत। ३ जो बन कर बिलकुल ठीक हो गया हो।
तयारी-(ना०) १ तैयारी। तत्परता। २ सजावट। ३ प्रबंध। ४ भोजन की विविध प्रकार की सामग्री। ५ धूमधाम।
तय्यार-दे० तयार।
तर-(ना०) १ ऊंट की पूंछ के बालों को बंट कर बनाई हुई बाली (छल्ला) जो मद में आये हुए शरारती ऊंट के नाक में डाल कर उससे मुहरी बांध दी जाती है। २ वृक्ष। तरु। ३ घी में सना हुआ पकवान। ४ तान। ५ बेंत। (वि०) १ भीगा हुआ। २ अधिक गीला। ३ जिसमें अधिक घृत मिला हुआ हो। घी

म गना हुआ (परवान) । घृ घृग । ४ कुछितापर । ५ मातबार । मरान । ६ अधिक गहरा (रग आदि का रग) । ७ ठण्डा । शीतल । (प्रत्य०) १ गुणा धिक्य प्रगट करने वाला एक प्रत्यय । जसे—श्रेष्ठतर । निम्नतर आदि । २ प्राय । अक्सर । यथा—अधिकतर । ज्यादातर आदि । ३ ना । यथा—न तर । ४ शीघ्र ।

तरक–(ना०) १ तर्क । कल्पना । अनुमान । २ हेतुपूर्ण युक्ति । न्याय । नर । ३ चमत्कारपूर्ण युक्ति । ४ व्यग्य । ताना । ५ त्याग । हक ।

तरकस–(न०) तीर रखने का थाला । तूणीर । तरगस । भाथो ।

तरकारी–(ना०) १ साग सब्जी । साग भाजी । २ भोजन के लिये पकाये हुए सब्जी के पत्ते फल फली आदि ।

तरकीब–(ना०) युक्ति । तरवीब । उपाय ।

तरगस–दे० तरकस ।

तरज–(ना०) १ रीति । तर्ज । शली । ढग । २ बनावट । ३ तर्ज । ४ स्वर ताल और लय युक्त गान । राग । ५ गान का एक ढग ।

तरजमा–(ना०) १ तरजुमा । उल्था । अनुवाद । भाषान्तर ।

तरझगर–(न०) १ वृक्ष समूह । २ कँटील वृक्ष । भाडभखाड ।

तरडणो–(क्रि०) १ पतला मल निकलना । २ दस्त लगना । ३ टट्टी फिरना ।

तरडा–(न०) १ पतला मल । २ अधिक तरल पतुमल । गाय भस आदि का पतला गोबर । अधिक तरल गोबर ।

तरण–(वि०) तरुण । युवा । मोटियार । (न०) तरने की क्रिया ।

तरण तारण–(न०) भवसागर से पार करने वाला । ईश्वर । (वि०) उद्धार करने वाला ।

तरणापणो–(क्रि०) १ उभार आना । २ यौवन में आना । ३ उफान उठना । ४ निखरना ।

तरणि–(न०) १ तरुणी । युवती । २ नौका । नाव । ३ सूर्य ।

तरणापणो–(न०) तरुणावस्था ।

तरणो–(न०) १ तिनका । तृण । तिणको । २ घास । घास । (क्रि०) १ तैरना । परना । तिरणो । २ पार करना । लांघना । ३ उद्धार होना ।

तरत–दे० तुरत ।

तरतर–(क्रि०वि०) १ ज्यों ज्यों । २ यों त्यों ।

तरतीब–(ना०) सिलसिला । क्रम ।

तरदात–(न०) १ इलाज । चिकित्सा । २ उपाय ।

तरदोज–(न०) १ कतरा । २ अगला । ३ चिन्ता । भार । ४ धागा । छन ।

तरपण–(न०) एक कर्मकांड जिसमें देवता और पितरों को तृप्त करने के लिये जल दान दिया जाता है । तर्पण ।

तरपणी–(ना०) १ गगा नदी । २ जैन साधुओं का एक पात्र ।

तरफ–(ना०) १ ओर । तरफ । बाजू । २ पक्ष । ३ दिशा । (अव्य०) दिशा में । तरफ ।

तरफदारी–(ना०) १ पक्षपात । २ हिमायत ।

तरबतर–(वि०) पूर्ण (जल से) । सराबोर ।

तरबूज–(न०) तरबूज । मतीरा । एक फल ।

तरबोळ–(वि०) सराबोर । तराबोर ।

तरभाणी–(ना०) सन्ध्या पूजा आदि धर्म विधि में काम आने वाली तांबे की तासक । ताम्रभाड । त्रिभाणी ।

तरम–(ना०) शोथ । सूजन । सोजो ।

तरमर-तरमर–(अव्य०) आपे से बाहर होने का भाव । क्रोध में बड़बड़ाना । अटसट बोलना ।

तरमराट-*(ना०)* १ क्रोध से बाहर होने का भाव। २ नाराज होना। बिगड़ जाना।
तरमराटो-दे० तरमराट।
तरमाळो *(ना०)* नगाड़ा। त्रबाल।
तरमीम-*(ना०)* १ संशोधन। २ हेरफेर।
तरमेवो-*(ना०)*१ गीला मेवा। ताजा मेवा। २ फल।
तरळ-*(वि०)* १ बहने वाला। द्रव। २ गीला। ३ चंचल। तरल। ४ कोमल।
तरलग-*(ना०)* घोड़ा।
तरळो-*(वि०)*१ चंचल। २ तरल। पतला। ३ गीला। द्रव। ४ हिलता हुआ। *(ना०)* १ पतला मिश्रण। बहने वाला मिश्रण। २ गाय भैंस आदि का अधिक तरल गोबर। तरड़ो।
तरवर-*(ना०)* १ बड़ा वृक्ष। तरुवर। २ वृक्ष। पेड़।
तरवाड़ी-*(ना०)* १ ब्राह्मणों की एक अटक। एक अल्ल। त्रिवाड़ी। त्रिपाठी।
तरवार-*(ना०)* तलवार। खड्ग। वाढ़ाळी। रूक।
तरवारियो-*(वि०)*१ तलवार रखने वाला। वाढाळो। रूकहथो। २ तलवार चलाने वाला।
तरवाळो-दे० तिरवाळो।
तरवेणी-*(ना०)* १ गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियाँ। त्रिवेणी। २ इन तीनों का जहाँ संगम होता है वह स्थान। त्रिवेणी। प्रयागराज। प्रयाग का त्रिवेणी संगम तीर्थ।
तरस-*(ना०)* १ तृषा। प्यास। तिरस। २ दया। रहम। करुणा। अनुकंपा। ३ उत्कट इच्छा। लालसा।
तरसणो-*(क्रि०)* तरसना। ललचाना।
तरसग-*(ना०)* पक्षी। तरुमगी। दे० त्रसींग।
तरसाणो-*(क्रि०)* १ जी ललचाना। तरसाना। २ अभाव का दुख होना। ३ ललचाने को विवश करना।
तरसींग दे० त्रसींग।
तरसो-*(वि०)* तृषित। प्यासा। तृषातुर। तिरसो। तिसायो।
तरस्यो-दे० तरसो।
तरह-*(ना०)* १ प्रकार। भाँति। २ ढंग। स्थिति। ३ बनावट। ४ चाल। व्यवहार (व्यंग में)।
तरहदार-*(वि०)* १ चतुर। २ धूर्त। चालाक। ३ नखराबाज। ४ शौकीन।
तरंग-*(ना०)* १ लहर। २ कल्पना। ३ विचार। ४ मौज। उमंग। ५ पागलपन। ६ नशा। ७ नशे की लहर। ८ ग्रंथ का अध्याय।
तरंगणी-*(ना०)* नदी। तरंगिणी। *(वि०)* १ तरंग वाली। मौजी। २ सनक वाली। सनकी।
तरंगाळी-*(ना०)* १ नदी। तरंगिणी। २ सनक वाली। सनकी। ३ मौजी।
तरंगियो-*(वि०)*१ अस्थिर विचारों वाला। २ पागल। सनकी। ३ कल्पनाएँ करने वाला। ४ मौजी। तरंगी। ५ बेपरवाह।
तरंगी-दे० तरंगियो।
तरंज-*(वि०)* १ साफ। स्वच्छ। २ सही। सच्चा। *(ना०)*१ सही और सुंदर काम। २ सुंदर व्यवस्था।
तराछणो-*(क्रि०)* १ छीलना। छिलका उतारना। २ खुरचना। ३ टेढ़ा काटना।
तराज-*(ना०)* १ तरह। प्रकार। भाँति। २ ढंग। प्रकार। ३ सामान। बराबर। ४ तराजू। तकड़ी।
तराजवो-*(ना०)* तराजू। तकड़ी। ताकड़ी।
तराजू-*(ना०)* तकड़ी। ताकड़ी।
तराजे-*(वि०)* समान। बराबर। *(ना०)* तरह। प्रकार।
तराणू-*(वि०)* नब्बे और तीन। *(ना०)* ९३ की संख्या।

तरावट–*(न०)* १ घी से तरवतर भोजन। स्निग्ध भाजन। २ तृप्तिकारक वस्तु। ३ गीलापन। नमी। ४ शीतलता। *(वि०)* १ नकदी वाला। रोकड धन वाला। २ सम्पन्न।

तरासणो–*(क्रि०)* १ तराशना। छीलना। २ काटना। चीरना। ३ खुरचना। कुचरना।

तरा–*(क्रि०वि०)* १ उस समय। तब। २ इस कारण।

तरी–*(ना०)* १ स्त्री। २ नाव। नौका। ३ गीलापन। नमी। ४ शीतलता। ५ तरावट।

तरीको–*(न०)* १ रीति। ढग। तरीका। २ उपाय। युक्ति। तरीका। ३ व्यवहार।

तरुग्रर–*(न०)* १ वृक्ष। तरुवर। २ आम्र वृक्ष। ३ कल्पवृक्ष।

तरुग्रार–*(ना०)* तलवार।

तरुण–*(वि०)* युवा। मोटियार।

तरुणाई–*(ना०)* युवावस्था। मोटियारपणो।

तरुणी–*(ना०)* १ स्त्री। २ युवास्त्री। युवती। मोट्यारण।

तरेस–*(न०)* तरह। भांति।

तरेसा–दे० तरेस।

तरै–*(क्रि०वि०)* १ उस समय। तब। २ इस कारण। ३ ज्यो। जसा।

तरोवर–*(न०)* १ वृक्ष। तरुवर। २ कल्प वृक्ष।

तज–दे० तरज।

तपण–दे० तरपण।

तळ–*(न०)*१ नीच का भाग। पेंदा। तळियो। २ जलाशय के नीचे की भूमि। ३ पर का तलवा। ४ सात पाताला म स प्रथम। तल। ५ मातहती। अधीनता।

तळक–*(ना०)* १ तलहटी। २ ऊट के दौडा स होने वाला शब्द। ३ लालमा।

तलक–*(क्रि०वि०)* तक। पर्यन्त। लग। तांई। *(न०)* तिलक।

तळगट–*(ना०)* द्वार की चौखट का नीचे वाला भाग। चौखट की नीचे की लकडी। तलकठ। ऊमरो।

तळघर–*(न०)* तलगृह। तहखाना। भूहरो।

तळछणो–दे० तडछणो।

तळछियो–*(वि०)* १ घायल। २ सहार किया हुआ। *(क्रि भू०)* सहार कर दिया। मार दिया।

तळण–*(ना०)* १ हैरानी। परेशानी। २ तलने की क्रिया।

तळणो–*(क्रि०)* १ तलना। २ हैरान करना। सताना।

तळतळो–*(न०)* १ कलह। झगडा। २ सकट।

तळनळाटो–दे० तळनळो।

तळताळियो–दे० तळनळो।

तलप–*(ना०)* १ उत्कट इच्छा (व्यसन की) वायड। २ पलग। ३ शय्या। सज। ४ स्त्री।

तळपट–*(न०)* १ आय और व्यय का सक्षिप्त पत्रक। तारवणी। २ पाते बाकी। ३ बरबादी।

तळब–*(ना०)* १ सरकारी बुलावा। तलब। २ बार बार आने वाला बुलावा। ३ माग। आवश्यकता। ४ उत्कट इच्छा। चाह। ५ तलाश। खोज। ६ शौचादि का वेग। हाजत। तनख।

तळबाणो–*(न०)* वह खर्चा जो गवाह को बुलाने के लिये अदालत म जमा कराया जाता है। तलबाना।

तळबियो–*(न०)* १ तकाजा करने वाला व्यक्ति। २ सरकारी रकम वसूल करने वाला नौकर। ३ ग्रासामियो को बुला कर लाने वाला नौकर।

तळमी-(वि०) घी या तेल म तली हुई। तळिशेडी।

तळमी वाटी दे० तळमी रोटी।

तळमी रोटी-(ना०) तवे पर घी मे तली हुई मोयनदार खस्ता रोटी। फोणारोटी। तवापुडी। तळमी बाटी।

तळमो-(वि०) घी या तेल मे तला हुआ। तलवां। तळिवोडो।

तळवो-(न०) तलुआ। पाद तल।

तळसीम-(ना०) प्रणाम। तसलीम। तसलीम' का वर्ण व्यतिक्रम।

तळसीर-(ना०) १ जमीन के भीतर बहने वाली जलधारा। २ जलस्रोत। सोता।

तळहटी-(ना०) पवत के नीचे की भूमि। तलहटी।

तळ गियो-(न०) चिनगारी। अग्निकण। विणग।

तळाई-(ना०) छोटा तालाब। तलया। नाडो। तळावडी।

तलाक-(ना०) १ शपथ। सौगध। २ प्रतिज्ञा। ३ त्याग। ४ सबध त्याग। ५ विवाह सबध का विच्छेद। पती पत्नी का सबध त्याग।

तलाकणो-(क्रि०) १ प्रतिज्ञा या शपथ के साथ किसी वस्तु का त्याग करना। त्यागना। तलाक देना। २ तलाक लेना। शपथ खाना ३ पति पत्नी का परस्पर सबध त्याग करना।

तळातळ-(न०) सात पाताला म से एक। तलातल।

तलार-(न०) कोटवाल। नगर रक्षक।

तळाव (न०) तालाब।

तळावडी-(ना०) तलया। तळाई। नाडो।

तलाव-पाणी-रो मीर-(अव्य०) लेन दन की पारस्परी (कज अदाई की रसीद) का एक पद जिसका भावार्थ है कि उधार लेन के पेटे जो लेनदेन होती रही है वह आज समग्रत कज चुकाकर बेबाक करता हू। अब लेनदेन है तो मात्र इश्वर प्रदत्त तालाब के पानी का जिसमे ऋणी और ऋणदाता दोनो का समान भाग है।

तलाश-दे० तलास।

तलाशी-दे० तलासी।

तलास-(ना०) खोज। जाँच। तलाश।

तळासणो-(क्रि०) १ धीरे धीरे पाव दबाना। २ चाँपना। दबाना। चपी करना। पग चपी करना। ३ आतुर होना। बेचन होना। तरसना। ४ लात मारना। ५ दुत्कारना।

तलासी-(ना०) छिपाई हुई वस्तु की तलाश। तलाशी।

तळिया भाटक-(अव्य०) १ बिलकुल खाली। २ सवथा नष्ट। नेस्त नाबूद।

तळियाझाड-दे० तळिया भाटक।

तळिया तोरण-(न०) विवाहादि मागलिक अवसरो पर गणपति इष्टदेवता आदि का पूजन करके विविध प्रकार की प्रथम भोजन सामग्री को मजा पिरो कर ऋद्धि वृद्धि के रूप म घर क चौक के चारो कोनों मे बाँधी जाने वाली एक रस्सी। तणिया तोरण। २ एक बहुमूल्य मणि मडित तोरण जो मागलिक अवसरो पर घर के भीतरी भाग म बाधा जाता था। ३ एक विशेष प्रकार का बन्दनवार।

तळियो-(न०) १ एक मकान बनने योग्य भू भाग। प्लॉट। थाळो। २ बनाये जाने जाने वाले मकान की जमीन। ३ किसी वस्तु का तल भाग। पेंदा। तला। ४ पैंताहर।

तळियोडो-(वि०) तला हुआ। तळमो।

तळी-(ना०) १ पैंदी। २ तल म नीचे का समतल। ३ पैर का तलुआ। ४ हथेली।

तळीगण-(न०) चूल्हे के धुएँ से बचाने के लिये बरतन के पेंदे में किया जाने वाला मिट्टी का लेप।
तळेटी-(ना०) तलहटी।
तळै-(क्रिवि०) नीचे। हेठ।
तळो-(न०) एक मकान बनाने योग्य जमीन का टुकड़ा। भूभाग। थाळो। २ कुँआं। कूप। बेरो। ३ छोटा गाँव। ४ किसी वस्तु का तलभाग। पैंदा। तला। ५ जूते के नीचे का चमड़ा। तल का चमड़ा।
तलो-वलो-(न०) १ संबंध। रिश्ता। २ व्यवहार। लेन देन।
तल्लो-(न०) मकान का खंड। मंजिल। तल्ला।
तल्लो मल्लो-दे० तलो वलो।
तवणो-(क्रि०) १ प्रार्थना करना। स्तुति करना। २ कहना।
तवन-(न०) १ स्तवन। स्तुति। २ गीत। गायन। पद।
तवग (न०) त थ द ध न—राजस्थानी भाषा के इन पाँच वर्णों का वर्ग या समाम्नाय।
तवंगर-(वि०) धनवान। मालदार। ऐश्वर्यवान।
तवा-दे० तव।
तवारीख-(ना०) इतिहास।
तवी-(ना०) १ मालपूआ और जलेबी बनाने का एक छिछला पात्र। २ छोटा तवा।
तवै-(न०) १ तबाह। २ हैरान। परेशान।
तवो-(न०) १ चूल्हे पर रख कर रोटी सेंकने का एक गोल छिछला पात्र। तवा। २ कवच का छाती पर का भाग। ३ हाथी के गंडस्थल का ढक्कन। गजढाल।
तसकर-(न०) चोर।
तसदी-(ना०) १ कष्ट। दुख। क्लेश। २ मेहनत। तसदीह।
तसतूरो-(न०) एक बड़ा पत्र। दस्तावेज। तूंबड़ो।
तसदी-दे० तसती।
तसफियो-(न०) फैसला। निर्णय।
तसवीर-(ना०) चित्र। छवि। तसवीर।
तसलीम-(ना०) १ प्रणाम। सलाम। तसलीम। २ किसी की ओर से प्राप्त होने वाली वस्तु को स्वीकार करने के पूर्व दाता को प्रणाम करके स्वीकार करने का भाव। सम्मान सहित स्वीकार।
तसल्ली-(ना०) १ धैर्य। विश्वास।
तसियो-(न०) १ दुख। कष्ट। २ अंत। छेह। ३ त्रास। ४ माथापच्ची। माथा फोड़।
तसीम-(न०) हाथ।
तसु-(न०) एक माप जो लगभग एक इंच के बराबर होता है। एक पोर से दूसरे पोर तक का माप। तसू। २ पोर। ३ इंच का चौथाई (०।) माप।
तह-(ना०) १ चावल। भात। २ परत। तह। ३ थाह। तल। गहराई। ४ पदा। तल।
तहकीकात-(ना०) किसी घटना की जाँच। जाँच पड़ताल।
तहखानो-(न०) तलघर। भूमिगृह। भूंहरो। भोंयरो।
तहड कूण-(ना०) उत्तर और वायव्य दिशा के बीच की दिशा। रोनहड़ि दिशा।
तहताज-(ना०) १ पगड़ी। उष्णीष। २ मुकुट।
तहताय-(न०) धीरज। आश्वासन।
तहनाळ-(न०) १ तलवार के म्यान पर नोक के भाग में लगाई जाने वाली किसी धातु की कड़ी। म्यान के मूंठ वाले भाग पर लगा हुआ बंधन। २ धूलि। रज।
तहनाळ उडणो-(मुहा०) १ स्थिति अच्छी नहीं होना। गरीबी हालत होना। २ फाकाकसी की स्थिति होना।

तहमल-(ना०) १ बिना लांग की धोती। तहमत। लूंगी। २ धीरज।

तह्री-दे० तारी।

तहरीर-(ना०) १ लेख। लिखा हुआ। मजमून। २ लिखावट।

तहवार-(न०) १ पर्व दिन। त्यौहार। २ आनंद उत्सव का दिन।

तहवारी-(ना०) पर्व के दिन को नगिया को दिया जाने वाला इनाम भोजन आदि। दे० तैवारी।

तहस-नहस-(न०) विनाश।

तही-(ना०) आयु। उमर। अवस्था। (वि०) समवयस्क। हमउम्र।

तँई-दे० तांई।

तग-(वि०) १ कसा हुआ। तग। २ परेशान। हैरान। दिक। ३ तगदस्त। ४ विस्तार में कम। सकीर्ण। सकड़ा। ५ तना हुआ। अकड़ा हुआ। ६ कम। ७ अभाव वाला। (न०) १ घोड़े की जीन कसने का पट्टा। तग। २ अग का वह भाग जहां तग कसा जाता है।

तगडी-(ना०) १ पाजामा। सुथनी। २ जांघियो। ३ धोती।

तगाई-(ना०) १ तगी। कमी। अभाव। २ गरीबी। निर्धनता। ३ सँकड़ापन। सकीर्णता। ४ परेशानी।

तगास-दे० तगाई।

तगी-दे० तगाई।

तगोटी-(ना०) छोटा तबू। छोलदारी।

तजीव-(ना०) एक महीन कपड़ा।

तड-(न०) १ गजन। दहाड। २ पक्ष। तड। ३ ताडव। ४ ओर। तरफ।

तडणो-(क्रि०) १ गजना। दहाडना। २ रभाना। ताडना। ३ ताडव नृत्य करना। ४ नाचना। ५ मथन करना। मथना।

तडल-(न०) १ नाश। सहार। २ छिन्न अग। (वि०) छिनांग।

तडव-(न०) १ ताडव नृत्य। २ नाच। ३ दहाड। गजन।

तडीर-(न०) तरकस। तूणीर।

तत-(न०) १ शक्ति। बल। २ तत्व। ३ तार। तत। ४ ततु। ५ ततुवाद्य। ६ मौका। अवसर। ७ भेद। रहस्य।

तत वाहरो-(वि०) १ तत्वहीन। तत्व बहिर। २ बिना काम का। अयोग्य। ३ बिना समझ का। अबुद्ध। ४ अशक्त। ५ निस्तेज।

ततर-दे० तत्र।

तति-(ना०) तार का बाजा। ततुवाद्य।

ततिसर-(न०) वीणा सितार आदि तार वाद्यो का स्वर। ततुस्वर। तत्री स्वर।

तती-(ना०) १ सितार आदि तार वाद्य। ततुवाद्य। २ तत्री।

ततु-(न०) १ लतासूत्र। तानो। २ लता। बेल। वेल। ३ धागा। डोरो।

ततुवाण-दे० ततुवाय।

ततुवाय-(न०) १ जुलाहा। बुनकर। २ मकडी।

तत्र-(न०) १ झाडने फूकने का सिद्धान्त। मत्र तत्र। जादू टोना। २ उपासना सबधी शास्त्र। ३ निश्चित सिद्धात। ४ राज्य प्रबध। ५ ततु। तात। ६ सूत। धागा।

तत्री-(ना०) १ तत्र वाद्य। तार वाद्य। तत्री। २ ततु वाद्य का तार। तत्री। ३ धनुष की डोरी। पनच। ४ रस्सी। डोरी।

तदुल-(न०) १ चावल। २ सिर।

तदूर-(न०) मिट्टी का एक प्रकार का बडा भट्टीनुमा चूल्हा जिसमे रोटिया पकाई जाती हैं।

तदूरो-(न०) तबूरा। तानपुरा।

तपा-दे० तबा।

तब-(न०) १ बैल। २ अभिमान।

तबा-(ना०) गाय। तम्बिका।

तबाळ–दे० भ्रबाळ।
तबीरण–दे० तररण।
तबू–(न०) खेमा। पटगृह। वस्त्रकुटि।
तबूरो–दे० तदूरो।
तबेडा–(न०) तावे का घडा। तांबेडो। ताम्रघट।
तबेरण–(न०) हाथी।
तबेरव–(न०) हाथी। तबेरण।
तबोळ–(न०) १ नागर वेल का पान। २ विवाह गीत का एक प्रकार। ३ पुष्करणो में गाया जाने वाला विवाह का एक गीत। ४ फेन। झाग।
तबोळण–(ना०) तबोली की स्त्री। तबोलिन।
तबोळी–(न०) पान बेचने वाला। तबोली।
तँवर–(न०)१ वह बालक या व्यक्ति जिसके पिता पितामह और प्रपितामह तीनों बडेरे जीवित हों। भवँर का पुत्र (कँवर का पुत्र भवर और भवर का पुत्र तँवर कहलाता है। बाप के जीवित होने पर उसका पुत्र कंवर, दादा के जीवित होने पर भँवर और परदादा सहित तीनों के जीवित होने पर तवर कहलाता है)। २ एक क्षत्री जाति या वश।
तँवराटी–(ना०) जयपुर जिले का एक भाग जहाँ पहले तँवरो का शासन था। तोरावटी। तँवरावाटी।
तँवरावाटी–दे० तँवराटी।
ता–(सर्व०) १ उस। २ इस।
ताइ–(प्र०व०) बिल्कुल। सर्वथा। (सर्व०) १ उस। २ उसरा। ३ उसकी। ४ उसके। (ब०व०) ५ उन। ६ उनका। ७ उनकी। ८ उनके। ९ वह। (क्रि० वि०) १ इससे। २ इतने। ३ उससे। ४ उनसे।
ताई–(ना०)१ पिता के बड़े भाई की पत्नी। पिता की भाभी। २ मातु। ३ माताताई।
ताईत–(न०) ताबीज।
ताईद–(ना०) समर्थन।
ताऊ–(न०)पिता का बड़ा भाई। बड़ा बाप। (वि०) १ उग्र प्रकृति वाला। क्रोधी। २ उतावला। ३ तप्त।
ताऊस–(न०) मोर।
ताक–(ना०) १ मौके की टोह। अवसर की प्रतीक्षा। २ घात। उपयुक्त अवसर की खोज। ४ ताकने की क्रिया। अवलोकन। ५ निशाना। ६ स्थिर दृष्टि। टकटकी। ७ खोज। तलाश। ८ आला। ताखा।
ताकड–(ना०) ताकीद। जल्दी। शीघ्रता।
ताकडियो–(न०) छोटी तकडी।
ताकडी–(ना०) तकडी। तराजू। (वि०) उतावली।
ताकडो–(वि०) १ उद्धत। २ जोरावर। ३ जल्दबाज। उतावला। ४ तेज। जोशीला। ५ क्रोधपूर्ण।
ताकणो–(क्रि०)१ घूर कर देखना। स्थिर दृष्टि से देखना। २ छिप कर देखना। ३ तकना। देखना। ताकना। ४ मौका देखना। अवसर की प्रतीक्षा करना।
ताकत–(ना०)१ शक्ति। बल। तागत। २ सामर्थ्य। हैसियत।
ताकतवर (वि०)१ बलवान। शक्तिशाली। २ सामर्थ्यवान। हैसियत वाला।
ताकळो–(न०) तकला। तकुआ। टकुआ।
ताकव–(न०) १ चारण। २ चारण कवि।
ताका–(न०अ०व०) इधर उधर झाँकने का भाव।
ताका-झकिया–(न०ब०व०) १ इधर उधर ताकने झाँकने का भाव। २ विचार।
ताकीद–(ना०) १ उतावल। शीघ्रता। २ चेतावनी। धमकी। ३ शीघ्र तयार करने की आवश्यकता।
ताकीदी–(न०) दे० ताकीद।

ताखो-(न०)१ कपड़े का थान। २ तार। आळो। तागा। ३ मौका। अवसर।
ताखडो-(वि०) १ उतावला। २ तज।
ताखो-(न०) १ तक्षक सर्प। २ कपड़े का थान। (वि०) १ बहादुर। वीर। जबरदस्त। २ उत्साही।
ताग-(न०) १ धागा। डोरा। २ थाग। थाह।
तागउधिन-(न०) १ ऐश। केलि। भोग विलास।। २ मौज शौक। ३ नाच गान। गाना बजाना। रंग राग।
तागडधिन्ना-दे० तागडधिन।
तागडी-(ना०)करधनी।कटिसूत्र। कंदोरो।
तागत-दे० ताकत।
तागावरण-(न०) १ यज्ञोपवीत की अधिकारी जातियाँ। द्विज। २ ब्राह्मण।
तागावाळ-(न०) १ ब्राह्मण। २ द्विज। ३ हिंदू। ४ धरना देकर अनशन करने वाला (सेवग, चारण या भाट आदि)।
तागीर-(न०) १ किसी के अधिकार की, भूमि गाँव आदि पर राज्य द्वारा किया हुआ कब्जा। २ इनायत की हुई जागीर को वापिस ले लेना या खालसे कर देना। जप्त।
तागीरी-(ना०) जब्ती।
तागो-(न०)१ जनऊ। २ डोरा। धागा। ३ धरना। ४ नाराजी। ५ अनशन। ६ अपने कंठ में अपने हाथ से कटारी मार कर मरना। ७ गुस्सा। ८ स्त्रियों का एक गहना।
ताचकरणा-दे० टाचकणो।
ताछ-(ना०) १ धातु का छीलन। २ सोने चाँदी के आभूषणों पर नक्काशी करते समय उतरने वाला छीलन। ३ कमी। ४ किसी बीमारी के बार बार होने का प्रभाव। ५ किसी बीमारी का बार बार होते रहना। किसी बीमारी का पुन पुन दौरा। रोगावृत्ति। ६ कष्ट। पीड़ा। ७ मृत्यु।
ताछटणो-(क्रि०) १ पछाड़ना। गिराना। २ झटकना। ३ मारना। पीटना। ४ आक्रमण करना। वार करना।
ताछणो-(क्रि०) १ काटना। २ छीलना। ३ सोने चाँदी के आभूषणों पर खुदाई का काम करना। ४ काटना।
ताछ्या-(न०) १ कमी। अभाव। त्रासो। २ अप्राप्ति। ३ कष्ट। तकलीफ।
तज-(ना०) १ राज मुकुट। मुकुट। २ आगरे का ताज महल। (ना०) श्री कृष्ण भक्त एक मुसलमान महिला।
ताजण-(ना०)घोड़ी। (वि०) नखरेवाली। मखराळी।
ताजणो-(न०) चाबुक। कोड़ा। कोरड़ो।
ताजदार-(न०) बादशाह। मुकुटधारी।
ताजपोमी-(ना०) ताजपोशी। राज्यारोहण। राज्याभिषेक।
ताजियो-(न०) ताबूत। ताजिया।
ताजा-(न०) घाड़ा। (वि०) तुरन्त की। नवीन। नई।
ताजीम(ना०) १ बादशाही सम्मान। २ बादशाह या राजा की ओर से किसी को दी जाने वाली विशेष सम्मान सूचक उपाधि। ३ सम्मान करने की एक रीति। ४ विवेक। अदब।
ताजीमदार-(वि०) ताजीमवाला।
ताजीमी सरदार-(न०) वह सरदार जिसे ताजीम मिली हुई हो।
ताजीरात-(न०) दंड संबंधी कानूनों का संग्रह।
ताजो-(वि०)१ तुरत का। नया। ताजा। २ थकान दूर होकर स्फूर्ति में आया हुआ। ३ हृष्ट पुष्ट। ४ सम्पन्न।
ताटकणो-(क्रि०) १ आक्रमण करना। २ बहुत जोर से बरसना। ३ बहुत जोर से बादल का गरजना।

ताटक-(न०) १ कर्णफूल। २ एक छंद।
ताटी-दे० टाटी।
ताड-(न०)१ एक वृक्ष। ताड। २ मार। प्रहार। आघात। ३ लताड।
ताडका-(ना०) एक राक्षसी।
ताडणो-(क्रि०)१ भागना। २ भगा देना। ३ मारना। ४ ताडना। ताडना देना। डाँटना। धमकाना। लताडना। ५ भाँपना। समझ लेना।
ताडपत्र-(न०) ताड वृक्ष का पत्ता।
ताडी-(ना०) १ छाते को ताना हुआ रखने के लिये लगाये जाने वाले लोहे के तारो मे से एक तार। २ ताड वृक्ष का रस।
ताडूकणो-(क्रि०) साँड का गजना।
ताढ-दे० ठाड।
ताढो-दे० ठाडो।
ताण-(ना०)१ खिंचाव। तनाव। २ अन बन। ३ विवाद। ४ अभिमान। घमड। ५ हठ। ६ एक रोग जिसमे शरीर मे तनाव व ऐंठन हो जाती है। नसो का तनाव। ७ मिरगी रोग। ८ पानी के बहाव का जोर। ९ दीवाल मे लगाव की चिनाई। १० कमी। अभाव।
ताणणो-(वि०) १ खींचना। तानना। २ घसीटना। ३ लबाई मे फैलाना। ४ तरफदारी करना। पक्ष लेना।
ताणी-(अव्य०) १ सप्रदान कारक का एक चिह्न। लिए। वास्ते। २ तक। तई।
ताणीजणो-(क्रि०) १ खींचा जाना। ताना जाना। २ हठ करना।
ताणो-(न०) बुनने के लिए लबाई मे तन फैलाया हुआ सूत। कपडे की बुनावट मे लबाई की ओर के धागे। ताना। बाणा का उलटा। दे० तावणो।
ताणो बाणो-(न०) १ वस्त्र की बुनावट मे लबाई और चौडाई के सूत तंतु। ताना बाना। २ तजवीज। युक्ति। ३ जजाल। मायाजाल।
तात-(न०) १ पिता। बाप। २ पति। ३ गुरु। ४ ईश्वर। ५ पूज्य व्यक्ति। ६ प्यार का एक सबोधन।
तातपरज-(न०) तात्पर्य। मतलब। अभिप्राय। मतलब।
तानाथई-(ना०) नाच का एक बोल। नृत्य का एक ताल।
ताताळ-(वि०) १ उतावला। २ शीघ्रगामी। तजरफ्तार।
तातील-(ना०) छुट्टी का दिन।
तातो-(वि०) १ वेगवान। तेज। २ तेज रफ्तार। शीघ्रगामी। ३ गरम। उष्ण। ४ उतावला। चचल। ५ क्रोधी। ६ कठोर स्वभाव का। तेज। ७ जवान।
तादाद-(ना०) सख्या। गिनती।
तान-(ना०) १ सगीत की लय। आलाप। २ स्वर सधान। ३ स्वर। सुर। तान। ४ प्रीति। प्रेम। ५ तयार। उद्यत। ६ प्रस्तुत। मौजूद। हाजर। ७ मौका। अवसर।
तानपुरो-(न०) एक प्रकार का तार वाद्य।
तानसेन-(न०) सगीताचार्य हरिदास के शिष्य और अकबर की सभा के नौ रत्नो मे से एक। विश्वविख्यात गायनाचार्य।
तानो-(न०) १ व्यग्यपूर्ण चुटीली बात। ताना। २ उपालभ। ३ अवसर। मौका। ४ सयोग। मिलान। मेल। ५ उपलब्धि व प्राप्ति। ६ सम्पन्नता। [illegible]
ताप-(न०) १ सूर्य का प्रकाश। २ सूर्य की गरमी। धूप। [illegible] अग्नि। [illegible] [illegible]। ५ [illegible]। [illegible]। [illegible] ७ [illegible]। ८ [illegible]। ९ [illegible] [illegible] ११ अग्नि के द्वारा [illegible] करने की [illegible]।
तापड-(न०) [illegible]

तापड़णो-(क्रि०) १ ऊंट को तेज भगाना। २ ऊंट का तेज भागना। ३ भगाना। ४ भागना। दौड़ना।
तापडधिन-(न०)१ ढोलक मृदंग या तबले पर थापी मारने से उत्पन्न शब्द या बोल। २ ढोलक तबले पर थापी लगने की क्रिया। ३ गाना बजाना। रंग राग। गान बजान और नाचने आदि की धूम धाम।
तापड़ा-तोड़णो-(मुहा०)१ खुशामद करके हैरान होना। २ किसी से काम बनवाने में असफल होना। असफल होना।
तापडियो-(न०)सन का बना मोटा कपड़ा। टाट।
तापड़ो-(न०)१ एक मोटा कपड़ा। २ जूट या सन का बना मोटा कपड़ा। टाट। ३ मृतक की शोक रस्म।
तापणी-दे० तपणी।
तापणो-(क्रि०) अग्नि या ताप से शरीर गरम करना।
तापती-(ना०) भारत की एक नदी। ताप्ती।
ताप देणो-(मुहा०) १ दुख देना। कष्ट पहुँचाना। २ अग्नि द्वारा सोने को शुद्ध करने की क्रिया का सम्पादन करना।
तापस-(न०) तपस्वी।
तापी-(ना०) १ ताप्ती नदी। २ तपस्वी। ३ जोधपुर की एक प्रसिद्ध सात खंडी और सात पोलों वाली बावड़ी। तापी बावड़ी। (वि०) दुखदायी। कष्टदायी।
तापो-(न०) १ लट्ठे, बाँस और पट्टा व टट्टर के नीचे पीपे या उलटे घड़ों को बाँध कर बनाई हुई नाव। बेड़ा। २ ऊंट की लात।
ताबड़ तोड़-दे० ताबड़ दौड़।
ताबड़ दौड़-(ना०) उतावल। शीघ्रता।
ताबा-तीबो(न०) १ छोटे मोटे जेवर। २ कम कीमत के गहने।
ताबीन-(वि०) १ अधीन। मातहत। २ आश्रित। ३ आज्ञाकारी। वशीभूत।
ताबीनदार-(न०)नौकर। (वि०) अधीन। मातहत। ताबेदार।
ताबीन रो लोक-(न०) प्रजा। अधीन प्रजा।
ताबीनी-(ना०) १ सेवा। चाकरी। २ हाजरी। ३ आश्रय। सहारा।
ताबूत-(न०) १ ताजिया। २ शव पेटी। ३ जनाजा।
ताबै-(वि०) १ अधीन। वशवर्ती। २ आज्ञावर्ती। (न०) अधिकार। वश। (अव्य०) लिये। वास्ते।
ताबैदार-(न०)नौकर। (वि०) आज्ञाकारी।
ताबेदारी (ना०) सेवा। नौकरी।
ताम-(सर्व०) १ उस। २ तुम। आप। (सर्व०ब०व०) १ उन। २ उन्हें। (क्रि वि०)१ उस समय। २ तब। ३ वहाँ। तहाँ। ४ इस कारण। (वि०) १ अधिक। २ सब। (न०) गर्व। घमंड।
तामजाम-(ना०) एक प्रकार की पालकी।
तामड़ी-दे० ताँबड़ी।
तामड़ो-दे० ताँबड़ो।
तामणियो-(न०) छोटी तामणी।
तामणी-(ना०) साग तरकारी आदि बनाने का मिट्टी की कलौंद जमा पात्र।
तामस-(ना०) १ तमोगुण। तामस। तमस। २ क्रोध।
तामसी-(वि०) तामस प्रकृति वाला। तमोगुणी।
तामीर (न०) भवन निर्माण का काम।
तामील-(ना०) १ आज्ञा का पालन। २ सूचना आदि का अभीष्ट स्थान पर पहुँचाया जाना।
ताम्र-(न०) ताँबा।

ताम्रपत्र-(न०) १ वह ताम्र का पत्तर जिस पर दान आदि खुदी हुई हो।

ताय-(ना०) १ कष्ट। पीड़ा। २ ताप। संताप। (सर्व०) १ वह। २ उस। ३ उसका। ४ उधर। ५ जिस। ६ जिसका। (वि०) १ तरह। भाँति। तुल्य। (क्रि०वि०) १ तब। २ लिए। वास्ते। ३ जैसे। ज्यों। ४ यह। ५ शीघ्र। जल्दी। ६ बिल्कुल। सर्वथा।

तायर-(न०) १ शत्रु। दुश्मन। २ वीर पुरुष। योद्धा। (वि०) संहार करने वाला। (सर्व०) तेरा। तुम्हारा।

तायजादो-(न०) पुत्र।

तायफो-(न०) १ वेश्या। २ वेश्या और उसकी गाने बजाने वाली मंडली। तायफा।

तायल-(न०) १ शत्रु। दुश्मन। २ आततायी। (वि०) १ क्रोध में तप्त। २ तप्त। तपा हुआ। ३ क्रोधित। उग्र। ४ शक्तिशाली। बलवान। ५ तेज। ६ चंचल।

तायलो-(सर्व०) तेरा। तुम्हारा। (वि०) १ तप्त। २ क्रोधित। तप्त। उग्र।

तायो-(वि०) १ तप्त। गरम। २ उता-वला। ३ व्यग्र। परेशान। ४ तपा हुआ। गरम किया हुआ।

तायोडो-(वि०) १ गरम किया हुआ। २ तप्त। गरम। ३ संतप्त। दुखी।

तार-(न०) १ धातु को मशीन या जंत्री द्वारा खींच कर बनाया हुआ धागा। तांत। २ लोहे या तांबे आदि का तार, जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार भेजा जाता है। टेलीग्राफ। ३ इस प्रणाली द्वारा वर्ण संकेतों में भेजा गया या आया हुआ समाचार। टेलीग्राम। ४ चांदी। ५ मोती। ६ धागा। डोरा। सूत। ७ क्रम। ८ संगीत का एक सप्तक। ९ तारा। १० नश। ११ नशे की लहर। १२ तमाशा। १३ पानी में ऊपर हाथ उठाये हुये गये आदमी की गहराई। १४ प्रीति। प्रेम। मेल। १५ यौवन। १६ चासनी का जानने के समय बनने वाले तंतु। १७ संयोग। (वि०) १ साफ। निर्मल। २ लेश मात्र। थोड़ा सा। थोड़ा भी।

तारक-(न०) १ तारा। नक्षत्र। २ ईश्वर। कर्णधार। ४ तारक मंत्र। ५ आँख। ६ आँख की पुतली। ७ चांदी। रौप्य। ८ तारकासुर राक्षस। ९ मृतक कर्म कराने वाला। मृतक कर्म का दान लेने वाला। तारकियो। कारटियो। महाब्राह्मण। १० घोड़ा। (वि०) १ तारने वाला। पार करने वाला। २ भवसागर से पार करने वाला।

तारक मंत्र-(न०) श्री राम का षड अक्षर मंत्र (ॐ रामायनम)।

तारकस-(न०) १ तार खींचने वाला। तारकश। २ कार गोटे और कलाबत्तू का काम करने वाला।

तारकासुर-(न०) एक असुर का नाम।

तारख-(न०) १ गरुड। तार्क्ष्य। २ घोड़ा।

तारखी-दे० तारख।

तारघर-(न०) टेलीग्राफ आफिस।

तारजंत्र-(न०) सितार वीणा आदि तार वाद्य।

तारण-(न०) १ नतीजा। परिणाम। २ खोज। जाँच। अनुसंधान। ३ भावार्थ। सार। ४ उद्धार। निस्तार। (वि०) तारने वाला। उद्धारक।

तारण तरण-(न०) उद्धार करने वाला। ईश्वर।

तारणियो-(वि०) तारने वाला।

तारणो-(क्रि०) १ उद्धार करना। २ पानी से बाहर निकालना। डूबने से बचाना। ३ तिराना।

तारत-(न०) शौचघर । शौचालय । संडास ।
तारतखानो-दे० तारत ।
तार-तार-(वि०) जिसके तार धागे और धज्जियाँ अलग २ हो गई हों ।
तारवणी-(न०) १ जाच । पडताल । २ परिणाम । ३ निस्तार । ४ आय-व्यय का हिसाब । तळपट ।
तारवणी-(क्रि०) १ जाच करना । परताल करना । २ परिणाम निकालना ।
तारकठी-(ना०) स्त्रियों के गले का एक आभूषण ।
तारागढ-(न०) चौहान अजयपाल द्वारा अजमेर के बीटली पर्वत पर बनाया हुआ प्रसिद्ध दुर्ग ।
तारानामी-(ना०) एक आभूषण ।
तारामडळ-(न०) १ तारक समूह । २ एक आतिशबाजी ।
तारायण-(न०) १ तारक समूह । तारा का समूह । २ आकाश । (वि०) तारने वाला ।
तारापत-(न०) चद्रमा । तारापति ।
ताराँसाई-(वि०) १ तारों वाला । तारा मडल से सुशोभित । २ मघाच्छन्न रहित (रात्रि)। बिना बादलों का (रात्याकाश) । (ना०) रात । रात्रि ।
तारी-(ना०) चना की दाल, गेहूँ और चावल आदि के मेल से बना एक बढ़िया घृतपूर्ण व्यजन, जिसमे बादाम चिरौंजी पिस्ता किशमिश आदि मेवा और मसाले मिले रहते हैं । एक मसालेदार बढ़िया खिचडी । तहरी ।
तारीख-(ना०) १ ईस्वी या मुसलमानी महीने का पूरा दिन । महीने के दिनों का क्रमिक अंक । २ तिथि । दिन । दिनाक । ३ निश्चित तिथि ।
तारीफ-(ना०) १ प्रशसा । २ परिचय । ३ परिभाषा । ४ वर्णन । ५ मुख्य गुण । विशेषता ।
तारो-(न०) १ तारा । नक्षत्र । २ आ... का पुतली । ३ भाग्य । ४ सोने, चा... गिलट आदि की चमकदार या रंग बिर... एक छोटा चकरिया जो तिलक आदि बन... के काम आती है । ५ एक आतिशबाजी...
तारोतार-(न०) १ तार दर तार । प्रत्ये... तार । २ छूटा हुआ प्रत्यक ततु । ... यथास्थिति । (वि०) छिन्न भिन्न । अलग अलग ।
ताल-(न०) १ सगीत मे वाद्य का एक ठेका । २ नृत्य का एक प्रकार । ३ सगीत मे नियत मात्राओं पर बजाई जाने वाली ताली । ४ लय ५ क्षण । समय । ६ बार । दर । ७ दफा । मरतबा ८ बडा मैदान । ९ तालाब । १० भाँझ । ताल । करताल ।
ताळ-(न०) १ ताड का वृक्ष । २ तालाब । ३ भाँझ । करताल । ४ विलब । देरी । ५ समय । वेळा ।
तालके-(क्रिवि०) १ अधिकार मे । कब्जे मे । २ देख रेख मे ।
तालखानो-(न०) अतपुर ।
तालमेळ-(न०) ताल और स्वरों का मेल । तालमेल । २ तजवीज । प्रबध । ३ उपयुक्त अवसर । तालमेल ।
तालर-(न०) १ पक्की जमीन का बडा मैदान । २ नमक उत्पन्न करने वाली जमीन का मैदान ।
ताळ विमाळ-(वि०) १ डरा हुआ । घब रा़या हुआ । भयभीत । कष्ट । बरबाद ।
ताळवो-(न०) मुह के भीतर का ऊपरी भाग । तालू ।
ताला-(न०) १ भाग्य । प्रारब्ध । २ ढग । ३ अवसर । मौका ।
तालाजिलद-(वि०) भाग्यशाली ।
तालाबुलद-(वि०) भाग्यशाली ।

तालाबन्दी-(ना०) ताला मली ।
तालामेली-(ना०) १ तजवीज । तालमेल । २ जल्दबाजी । ३ व्याकुलता ।
तालावर-(वि०) भागनाती ।
ताळी-(ना०) १ हथेलियों का परस्पर आघात । करतल ध्वनि । २ कुंजी । कूंची । ३ तल्लीनता । ४ समाधि ।
तानी-(ना०) १ मूचा । तालिका । २ कुंजी । कूंची । ताली । ३ खलिहान में साफ करके लगाया हुआ अनाज का ढेर ।
तालीका-(न०) १ जागीर का पट्टा । सनद । २ परम्परानुसार नगियों का नग ल्यि जाने की क्रिया । ३ नग ।
ताळी लागणी (मुहा०) १ किसी बात में मन का रम जाना । रम लग जाना । २ ध्यान लगना । ३ सफलता मिलना ।
ताळू-न० ताळवो ।
तालूको-(न०) १ तालुका । तहसील । २ सबंध । ३ जान पहिचान । परिचय ।
ताळो-(न०) ताला । कुलफ ।
ताळोकूंची-(न०) १ ताला और उसकी चाबी । २ पक्का कब्जा ।
ताळो खोलामणी-(मुहा०) आसामी (ऋण ग्राही) को रुपये कर्ज देने समय ताला खोलने के नाम पर लिया जाने वाला धनिक (बोहरा/ऋणदाता) का लाग । कोथली खोळामणी ।
ताव-(न०) १ बुखार । ज्वर । २ आंच । ३ रोष । क्रोध । ४ अहंकार । ५ अहंकार की झोंक (मूंछों पर) ६ दुःख । पीडा । आफत । ७ आतंक । भय । ८ सोने चांदी आदि धातु का गुल्ली का आंच देने के बाद हथौड़े से ठोक कर बढ़ाने की क्रिया ।
ताव आवणो-(मुहा०) बुखार होना ।
ताव उतरणो-(मुहा०) बुखार नहीं रहना । बुखार उतर जाना ।
ताव खाणो-(मुहा० क्रोध करना ।
ताव चढ़णो-(मुहा०) बुखार हो जाना ।
तावडो-(न०) १ सूर्य का प्रकाश । धूप । २ सूर्य की गरमी । सूर्यताप । घाम ।
तावणी-(ना०) १ मक्खन को गरम करके घी बनाने का काम । २ मक्खन बनाने या किसी वस्तु को गरम करने की क्रिया । ३ तावणी का पात्र । बासण । ४ जांच पड़ताल ।
तावणो-(क्रि०) १ सताना । दुःख देना । २ तपाना । गरम करना । ३ घी बनाने के लिये मक्खन को गरम करना । मक्खन को गरम करके उसे घी रूप देना ।
ताव तप-(न०) १ मौसमी बुखार । २ बीमारी ।
तावदान-(न०) १ द्वार या बारी पर बनाया हुआ आला । रोशन दान । द्वार के ऊपर का ताख, आला या ताड के लिये लगाई जाने वाली पत्थर या लकड़ी की पट्टी । ३ ताख । ताक । आला । ४ बारी । रोशनदान ।
तावळ-(क्रि०वि०) उतावल । जल्दी । शीघ्र ।
तावळी-(वि०ना०) उतावली । उतावळी ।
तावली-(वि०) ज्वर पीडिता । बुखार वाली ।
तावळो-(वि०) उतावला । उतावळो ।
तावलो-(वि०) जिसे बुखार चढ़ा हो । ज्वरपीडित ।
तावो-(ना०) १ बड़ा तवा । तई । २ छोटा तवा । ३ कवच । ४ शत्रु ।
तास-(ना०) १ मोटे कागज के बावन पत्तों का एक खेल । २ मोटे कागज के चौकोर टुकड़ों पर चार रंग की बूटियों और तसवीरों वाला बावन पत्तों का एक सैट । ३ तासीर । गुण । असर । ४ किसी काम का यथावत तथा यथारूप बन

जाना। (सव०) १ उसका। २ यह। (क्रिवि०) प्रकार। तरह।

तासक-(ना०) तश्तरी। रकाबी। तासळी।

तासणो-(क्रि०)१ डराना। २ कष्ट देना। ३ डरना।

तासळी-(ना०)१ छोटी थाली। २ तश्तरी। रकाबी। ३ कांसी की छिछली कटोरी। ताहळी। ४ परोसा। पारेसा।

तासळो-(न०) १ भोजन करने की ऊंचे किनारा की थाली। २ कांसी का बडा कटोरा। ताहळो।

तासीर-(ना०) १ किसी वस्तु की गुण सूचक प्रकृति। २ प्रभाव। असर।

तासो-(न०) १ एक वाद्य। तासा। २ कमी। अभाव। ताछो। ताछा। ३ अप्राप्ति। कष्ट। तकलीफ।

ताहरइ-दे० ताहरै।

ताहरा-(क्रिवि०) तब।

ताहरै-(क्रिवि०) तदुपरांत। तब। (सव०) तेरे।

ताहरो-(सव०) तेरा।

ताहळी-दे० तासळी।

ताहळो-दे० तासळो।

तां-(सव०) उन। (क्रिवि०) तब।

तांई-(अव्य०) १ तक। पर्यन्त। २ लिये। वास्ते। ३ पास। निकट।

तांगड-(न०) १ हाथी को बांधने का मोटा और लंबा रस्सा। २ एक पांव से चलन-दौड़न का एक खेल।

तांगी-(ना०) १ लडखड़ाहट। २ बेहोशी। मूर्च्छा। ३ चक्कर।

तांगो-(न०) एक घोडे वाली सवारी गाडी। इक्का। एको।

तांडणो-(क्रि०) १ सांड का शब्द करना। दहाडना। २ गर्जन करना। ३ तांडव नृत्य करना।

तांडव-(न०) १ शिव नृत्य। २ प्रलय नृत्य।

तांडीस-(न०) १ शंकर। शिव। २ नृत्य। ३ तांडव नृत्य।

तांडो-दे० टांडो।

तांत-(ना०) १ तार। २ तंतु। ३ आंत को बटकर बनाई हुई डोरी। ४ इकतारा वाद्य। ५ जुलाहे का एक औजार। (वि०) दुबला। पतला।

तांतण-(न०) १ धागा। डोरा। २ तार। ३ गले का एक गहना। ४ लंबी बात चीत। ५ बात की लंबाई।

तांतणो-दे० तांतण।

तांतरस-(न०) १ सितार, वीणा आदि तंतुवाद्य के बजाने का शौक। २ तंतु वाद्य बजाने का व्यसन।

तांतवो-(न०) मगरमच्छ।

तांतियो-(न०) एक तंतु घास।

तांती-(ना०) १ तंतुवाद्य। २ तार वाद्य। ३ एक पांव में पहनी जाने वाली सोने या चांदी की तार जैसी एक पतली कडी। ४ किसी रोग या दोष निवारण के निमित्त किसी देवता की मान्यता का संकल्प करके पांव में पहनी जाने वाली तांत या पतली कडी। ५ पशुओं के गले में या पांठ के पडाव डालने पर बैल आदि पशुओं को एक कतार में बांधना। पशुओं का पंक्तिबद्ध बंधन। एक लंबी रस्सी से अनेकों को बांधने की क्रिया। ६ कतार। पंक्ति।

तांतू-दे० तांतवो।

तांतो-(न०) १ तंतु। २ डोरा। धागा। ३ आंत का बनाई हुई डोरी। ४ लता बेल। ५ बात का लंबा सिलसिला। ६ बकवास। ७ श्रेणी। पंक्ति। ८ संबंध। रिश्ता। ९ वंश परम्परा। १० बंधन।

तिगम-(न०) १ गूथ। २ वज्र।

तिगार-(वि०) निमर। स्वच्छ। (द्रव पदार्थ)।

तिगारी-(ना०) लोहे का एक छिछला पात्र।

तिगारा-(न०) बड़ी तिगारी।

तिगुणा-(वि०) तिगुना।

तिगूमिगू-१ प्राय ग्रस्त होने वाला (गूथ) २ थोड़ा सा (दिन)।

तिघड़ियो-(न०) १ कलह। झगड़ा। २ तीन घड़ी का समय। (वि०) १ तीन घड़ी में बनने या होने वाला। २ तीन घड़ी का।

तिजड़-(ना०) १ खड्ग। तलवार। २ कटार।

तिजड़हथ-(वि०) खड्गधारी।

तिजाब-(न०) किसी क्षार पदार्थ का अम्ल सार जो ज्वलन शक्ति वाले पानी रूप में होता है। एसिड। अम्ल। तेजाब।

तिजारो-(न०) १ खसखस। २ अफीम का पौधा। पोस्त। ३ पोस्त (खस खस और उसका डोडा) को उबाल कर तयार किया हुआ रस। पोस्त का कसूंबा। ४ तीन बार निकाला हुआ शराब। तिबारा। ५ तीसरे दिन आने वाला बुखार।

तिजोरी-(ना०) रुपये और मूल्यवान गहने आदि रखने की लोहे की एक मजबूत आलमारी। तिजोरी।

तिड-(ना०) १ क्रोध। २ टूटने की क्रिया या भाव। ३ टूटने का चिह्न या रेखा। तेड़। दे० घड़ा।

तिड़कणो-(क्रि०)१ फटना। दरार पड़ना। २ पक जाने या सूख जाने पर फली आदि का फटना। ३ चूड़ी, घड़े आदि का टूटना। ५ क्रोध में जोर से बोलना या उत्तर देना।

तिड़णो-(क्रि०)१ टूटना। २ बरतन आदि में टूटने की रेखा बनना।

तिड़ावणो-(क्रि०) निर्लज्जता से हँस कर दाँत दिखाना। २ बुलवाना। तेडा वणो।

तिड़ियोड़ो-(वि०) १ टूटा हुआ। टूटा हुआ। २ वह जिसमें दरार पड़ गई हो। चटका हुआ।

तिण-(सव०) उस। (न०) घास। तृण।

तिणकणो-(क्रि०) क्रुद्ध होना। तुनकना। तजीजणो।

तिणकलो-(न०) तृण। तिनका। तिणखो।

तिणखलो-दे० तिणकलो।

तिणको-दे० तिणखो।

तिणखो-(न०) १ तृण। २ वृक्ष या घास की सींक। सींक। तिनका। ३ नाक में पहनने की छोटी सिली। फूलो। सिळो। लूंग।

तिणगियो-दे० तिळ गियो।

तिण मात-(वि०) १ तिनके के समान। बहुत छोटा या हलका। २ तृण मात्र। बहुत थोड़ा। चिनियो सो।

तिणरो-(सव०) उसका।

तिणसू-(अव्य०) १ उससे। २ इसलिये।

तिणग-दे० तिळ गियो।

तिणगियो-दे० तिळ गियो।

तिणि-(सर्व०)१ उसने। उण। २ उससे। उणसू। ३ उसको। उणने। ४ वह। ५ उस। (अव्य०) इस कारण। इससे। इणसू।

तिणि किय-(अव्य०)इसलिये। इस कारण। इण वास्ते।

तिणै-(सर्व०)१ जिसने। २ उसने। उण।

तिणो-(न०) तृण। घास। खड़।

तित-(क्रि०वि०) उस जगह। वहाँ। उठै। ओथ। थठ।

तितर-बितर-(अव्य०) अस्त व्यस्त। इधर उधर। (वि०) बिखरा हुआ। अव्यवस्थित।

तिगम–(न०) १ मूय। २ वज्र।
तिगार–(वि०) निमल। स्वच्छ। (द्रव पदाथ)।
तिगारी–(ना०) लाहे का एक छिछला पात्र।
तिगारा–(न०) बडी तिगारी।
तिगुणा–(वि०) तिगुना।
तिगूमिगू–१ प्राय अस्त होने वाला (सूय) २ थोडा सा (दिन)।
तिघडियो–(न०) १ कलह। झगडा। २ तीन घडी का समय। (वि०) १ तीन घडी म बाने या होने वाला। २ तीन घडी का।
तिजड–(ना०) १ खड्ग। तलवार। २ कटारा।
तिजडहथ–(वि०) खड्गधारी।
तिजाव–(न०) किसी क्षार पदाथ का अम्ल सार जो ज्वलन शक्ति वाले पानी रूप म होता है। एसिड। अम्ल। तेजाब।
तिजारो–(न०) १ खसखस। २ अफीम का पौधा। पोस्त। ३ पोस्त (खस खस और उसका डाडा) को उबाल कर त्यार किया हुआ रस। पोस्त का कसू बा। ४ तीन बार निकाला हुआ शराब। तिबारा। ५ तीसरे दिन आने वाला बुखार।
तिजोरी–(ना०) रुपये और मूल्यवान गहने आदि रखने की लाहे की एक मजबूत आलमारी। तिजोरी।
तिड–(ना०) १ क्रोध। २ टूटने की क्रिया या भाव। ३ टूटन का चिह्न या रेखा। तेड। दे० घडो।
तिडकणो–(क्रि०) १ फटना। दरार पडना। २ पक जाने या सूख जाने पर फली आदि का फटना। ३ चूडी घडे आदि का टूटना। ४ क्रोध में जोर से बोलना या उत्तर देना।
तिडणो–(क्रि०) १ टूटना। २ वरतन आदि म टूटने की रेखा बनना।
तिडावणो–(क्रि०) निलज्जता से हस कर दात दिखाना। २ बुलवाना। तडावणो।
तिडियोडा–(वि०) १ टूटा हुआ। फूटा हुआ। २ वह जिसमे दरार पड गई हो। चटका हुआ।
तिण–(सव०) उस। (न०) घास। तृण।
तिणकणो–(क्रि०) क्रुद्ध होना। तुनकना। तजीजणो।
तिणकलो–(न०) तृण। तिनका। तिणखो।
तिणखलो–दे० तिणकलो।
तिणको–दे० तिणखो।
तिणखो–(न०) १ तृण। २ वृक्ष या घास की सीक। सींक। तिनका। ३ नाक म पहनने की छोटी सिली। फूली। सिळी। लूग।
तिणगियो–दे० तिळ गियो।
तिण मात–(वि०) १ तिनके के समान। बहुत छोटा या हलका। २ तृण मात्र। बहुत थोडा। चिनियो सो।
तिणारो–(सव०) उसका।
तिणसू–(अव्य०) १ उसस। २ इसलिये।
तिणग–दे० तिळ गियो।
तिणगियो–दे० तिळ गियो।
तिणि–(सर्व०) १ उसने। उण। २ उसमे। उणमू। ३ उसका। उणन। ४ वह। ५ उस। (अव्य०) इस कारण। इससे। इणसू।
तिणि किय–(अव्य०) इसलिये। इस कारण। इण वास्ते।
तिणा–(सर्व०) १ जिसने। २ उसने। उण।
तिणो–(न०) तृण। घास। लड़।
तित–(क्रि०वि०) उस जगह। वहाँ। उठ। ओथ। यठ।
तितर बितर–(अव्य०) अस्त व्यस्त। इधर उधर। (वि०) बिखरा हुआ। अव्यव स्थित।

तिरभाणी-(ना०)सन्ध्या पूजा आदि धार्मिक क्रिया म काम म आने वाली ताँबे की एक तश्तरी । ताम्र भाजन ।

तिरफळ-(न०) एक गाली का शब्द ।

तिरफळा-दे० त्रिफला ।

तिरभाँड-(वि०) १ सबसे लाञ्छित । हर जगह बदनाम । निभाड । २ कुख्यात । बदनाम ।

तिरभेटो-दे० त्रिभेटो ।

तिरमची-(ना०) लकडी या लोहे की बनी घडा आदि रखने की तिपाई ।

तिरलोक-दे० त्रिलोक ।

तिरवाडी-दे० त्रिवाडी ।

तिरवाळी-(ना०) १ पानी क ऊपर तैरने वाली घी तेल आदि स्निग्ध पदार्थों की थिरकन । तिरमिरा । २ चकाचौंध । ३ सिर घूमना । चक्कर । ४ मूर्च्छा ।

तिरवाळो-दे० तिरवाळा ।

तिरवेणी-दे० त्रिवेणी ।

तिरस-(ना०) तृष्णा । प्यास । तिरखा ।

तिरस्कार-(न०) १ तिरस्कार । अनादर । २ धिक्कार ।

तिरसाँ मरतो-(वि०)१ प्यास से व्याकुल । २ इच्छावान ।

तिरसो-(वि०)प्यासा । तृषावंत । तिसियो ।

तिरिया-(ना०) १ त्रिया । स्त्री । नारी । २ पत्नी

तिरी-(ना०) तीन बूटी वाला ताश का पत्ता ।

तिल-(न०) १ एक धान्य जिसको पर कर तेल निकाला जाता है । दव धान्य । तिल । २ शरीर पर तिल जितना काला चिन्ह । काले रंग का छोटा दाग ।

तिलक-(न०) १ केसर चन्दन आदि से ललाट पर अंकित किया जाने वाला साम्प्रदायिक चिन्ह । टीका । तिलक । २ स्त्रियों क माथे का एक गहना । ३ राज्याभिषेक । (वि०) श्रेष्ठ । उत्तम । ४ मुसलमान स्त्रियों के पहिनने का एक लहँगा ।

तिलकायत-(न०)१ टीकायत । २ वल्लभ सम्प्रदाय के पीठाधीश ।

तिलकूटो-(न०) कूट हुए तिल और चीनी मिला हुआ एक खाद्य ।

तिलडी-(ना०) १ स्त्रियों का एक आभूषण । २ तीन लडियों वाला हार ।

तिल पापड (वि०) दुखी ।

तिल-पापडी-(ना०) गुड का पैथ या खांड की चाशनी म तिलों को पगा कर बनाई हुई पपडी । तिलपट्टी । तिलपपडी । तिलवट ।

तिलमात-(वि०) १ तिलमात्र । तिलभर । २ अत्यन्त थोडा ।

तिलमात्र-दे० तिलमात ।

तिलमिलाणो-(क्रि०) पीडा के कारण विकल होना । तिलमिलाना । छटपटाना ।

तिलवट-(न०) नाश । दे० तिलपापडी ।

तिलवटी-दे० तिलपापडी ।

तिलवटो-(न०) तिल और शक्कर को कूट कर बनाया हुआ एक खाद्य । तिलौटा । सलाणी ।

तिलवडी-(ना०)१ एक प्रकार की मुंगोडी जिसम तिल मिलाये जाते हैं । २ एक वृक्ष ।

तिल सकरात-(ना०) तिल खाने और दान करने का मकर संक्रांति पर्व । मकर संक्रान्ति ।

तिल सांकळी-(ना०) एक खस्ता पूरी जो गुड के पानी म तिल और आटा गूंथ कर बनाई जाती है । साकळी ।

तिळ गियो-(न०) चिनगारी । आगियो ।

तिलगी- (ना०) तलगू भाषा ।

तिलगो-(वि०) तलंग प्रदेश का ।

तिलिया लाडू-(न०) तिल क लड्डू । तिलवा ।

तिलियो-(वि०) १ तिला का। २ तिला से सम्बंधित।

तिनियो तल-(न०) तिला का तेल। मीठा तल।

तिलेक-(वि०) तिल के जितना। बहुत थोडा।

तिलो-(न०) नपुंसकता नष्ट करने वाला तल। तिल।

तिलोक-दे० त्रिलोक।

तिलोकी-दे० त्रिलोकी।

तिलोचरण-(न०) १ एक सानी भक्त। २ एक वश्य भक्त। ३ शिव। महादेव। त्रिलोचन।

तिलोटो-दे० तिलकुटो।

तिवार-दे० तिवार।

तिलोडी-(न०) नित्य काम में लिया जाने तल का छोटा पात्र। नित्य पयोग का तल पात्र। दीपक मे तेल डालने का एक पात्र। तैलोडी।

तिलोर-(ना०) एक पक्षी।

तिल्ली-(ना०) १ पट के भीतर की एक गाठ। प्लीहा। २ तिल।

तिवाडी-(न०) ब्राह्मणो की एक उपजाति। तिवारी। त्रिपाठी।

तिस-(ना०)तृषा। प्यास। तिरस। (सव०) उस। उण। विण।

तिसटणो-(क्रि०) फलीभूत होना। फलप्रद होना। दे० तिस्ठणो।

तिसडी-(वि०) वसी। तसी। वडा।

तिसउ-(क्रि०वि०) १ तब। २ त्योंही।

तिसडो-(वि०) वसा। तसा। वडो।

तिसाया-दे० तिसियो।

तिसमळणो-(क्रि०) फिसलना।

तिसाळू-(वि०) तृषावत। प्यासा।

तिसियो-(वि०) तृषित। प्यासा। तिरसो।

तिसा-(वि०) वसा। वडो। ऊडा। श्रोटो।

तिस्ठणो-(क्रि०) १ लाभकारी होना। फलीभूत होना। २ भविष्य म शुभकारी होना। ३ स्थिर रहना। टिकना। ठहरना।

तिहत्तर-(वि०) सत्तर और तीन। (न०) तिहत्तर की सख्या। ७३

तिहाई-(ना०) तृतीयाश। तीसरा भाग। तिहाव।

तिहाग-(न०) ऊट पर तीन व्यक्तियो की सवारी। तेठा।

तिहाळ-दे० तियाळ।

तिहाळो-(सव०) तेरा। थारो।

तिहाव-दे० तिहाइ।

तिहावनो-(न०) १ रुपय का तीसरा हिस्सा। २ तीसरा हिस्सा।

तिहा-(क्रि०वि०)वहाँ। उठ। घठ। (सव०) उनक। उणॉर।

तिहि-(सव०) उसको।

तिहुअण-(न०) त्रिभुवन।

तिहु-(वि०) तीनो।

तिहु भुवण-(न०) त्रिभुवन।

तिहोतर-दे० तिहत्तर।

तिहोतरो-(न०) तिहत्तरवा सम्वत्

तियाळी-दे० तियाळीस।

तियाळीस-(वि०) चालीस और तीन। (न०) ४३ की सख्या।

तियासी-(वि०) अस्सी और तीन। (न०) ८३ की सख्या।

तिवरी-(ना०) झीगुर।

तिवार-दे० तवार। (अ०य०) उस समय।

तिवारी-दे० तवारी।

तिवाळी-(ना०) १ बहोशी। मूर्च्छा। २ सिर घूमना। चक्कर।

तिवाळा-(न०) १ बहोशी का चक्कर। २ बहोशी। मूर्च्छा।

ती-(ना०) १ स्त्री। २ पत्नी। तिया। (वि०) १ तीन। २ तीसरा।

तीक्षण-(वि०) १ तीखा । तेज धार वाला । २ तेज नोक वाला । ३ तीखे स्वाद वाला । ४ प्रखर । तेज । ५ उग्र । प्रचंड ।

तीख-(वि०) १ श्रेष्ठ । उच्च । ऊपर । २ अग्र । ३ तीखा । तीखो । (ना०) १ श्रेष्ठता । विशेषता । २ अग्रता । ३ प्रतिष्ठा । मान । ४ ऊँचाई । बड़प्पन । ५ तीखापन । तीक्ष्णता । ६ ईर्ष्या ।

तीख-चोख-(ना०)१ श्रेष्ठता । विशेषता । २ जाँच । परख । परीक्षा । ३ प्रतिष्ठा । मान ।

तीखट-(वि०) तीक्ष्ण ।

तीखड़ी बोर-(न०)एक प्रकार के बड़े और गोल वाले स्वादिष्ट बेर ।

तीखरा-(न०) नोहा । दे० तीक्ष्ण ।

तीखास-(न०) तीखापन । तीखापणो ।

तीखूणो-दे० तिखूणो ।

तीखो-(वि०) १ तीक्ष्ण । तेज नोक या धार वाला । २ चरपरे स्वाद वाला । ३ उग्र । ४ अधिक । ५ मंहगा । चढ़तो ।

तीखो ग्राक-दे० चरतो ग्रांक ।

तीखोली-(ना०)१ पवन शृंग । पहाड़ की चोटी । २ वृक्ष की चोटी । वृक्ष की सबसे ऊँची चोटी ।

तीग-(ना०) दृष्टि । नजर ।

तीगणो-(वि०) न्यारा । जावणो ।

तीछेर-(न०) एक छोटा भाला ।

तीज-(ना०)१ पक्ष का तीसरा दिन । चान्द्र मास के दोनों पक्षों का तीसरा दिन । २ श्रावण शुक्ल पक्ष और भादों कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथियों को मनाया जाने वाला महिलाओं के वर्षा कालीन राग रंग का उत्सव । ३ तीज के लोक गीत ।

तीजण-दे० तीजणी ।

तीजणी-(ना०) चैत्र सुदी ३ श्रावण सु ३ और भादों कृ ३ के त्योहारों को म[illegible] वाली कन्या व सौभाग्यवती स्त्री ।

तीज-तिवार-दे० तीज तवार ।

तीज-तेंवार-(न०) १ चैत्र, सावन [illegible] की तीजें और हिन्दुओं के अन्य त्यो[illegible] २ त्योहार ।

तीजवर-(न०) तीसरी बार विवाह क[illegible] करने वाला या किया हुआ पुरुष ।

तीजिग्रांत-(वि०) वह (गाय, भैंस आदि) जिसने तीसरा बछड़ा दिया हो ।

तीजी-(वि०) तीसरी ।

तीजीताळ-(क्रि०वि०) १ अतिशीघ्र । उ[illegible] समय । २ तीसरी ताली बजाते ही ।

तीजीताळी-दे० तीजीताळ ।

तीजो-(वि०) १ तीसरा । तृतीय । २ [illegible] अन्य । पराया ।

तीजोड़ी-(वि०) तीसरी ।

तीजोड़ो-(वि०) तीसरा ।

तीजो पोहर-(न०) १ तीसरा पहर । २ सायंकाल के पहले का समय । ढळतो दिन ।

तीठ-(ना०) १ संकट । २ कष्ट । (उ० तोडण मामा तीठ आया दोम उगतो ।)

तीण-(न०) १ चरस । मोट । २ बैलों द्वारा चरस को खिंचवाकर सिंचाई के लिए पानी निकाला जाने वाला कुआँ । ३ बैलों द्वारा चरस खिंचवाया जाकर कुएँ में से पानी निकालने की क्रिया । ४ पंक्ति । कतार । लाण ।

तीणो-(न०) १ बारीक सुराख । २ छेद । सुराख । ठींडो ।

तीत-(न०) छोटा बच्चा । (वि०) बीता हुआ । अतीत ।

तीतर-(न०) एक पक्षी ।

तीदर-(न०) तीसरी धरती । विदेश । परदेश । (क्रि०वि०) कहीं । किधर भी ।

तीन-(वि०) दो और एक। (न०) तीन की संख्या। ३

तीन-पांच-(ना०) १ शेखी। २ मिजाज।

तीन बीसी-(वि०) साठ। उनसठ और एक। पचास और दस।

तीय-(ना०) १ एक गहना। २ चूड़ियां का पत्तियों की जोड़ का एक गहना। ३ फटे हुए वस्त्र के दिये जाने वाला टांका। ४ सिलाई। ५ जान। ६ टांका।

तीयणो-(क्रि०) वस्त्र में टांका लगाना।

तीव्र-(वि०) १ बहुत तेज। ताम्र। २ तीक्ष्ण। ३ असह्य। ४ उग्र। ५ जोरदार।

तीव्रबुद्धि-(वि०) मेधावी। तेज बुद्धिवाला।

तीमो-(ना०) १ स्त्री। औरत। तीवई। २ पत्नी। लुगाई।

तीयो-दे० तियो।

तीर-(न०) १ नदी तालाब आदि का किनारा। २ बाण। शर।

तीरकस-(न०) १ मकान या परकोटे की दीवाल में बने वे छेद जिनमें से तीर या बंदूक की गोली चलाई जाती है। २ बाणों का भाथा।

तीरकारी-(ना०) १ तीरों का युद्ध। बाण युद्ध। २ तीर चलाने की क्रिया।

तीरगर-(न०) बाण बनाने वाला।

तीरथ-(न०) १ तीर्थ। पुण्य स्थान। २ किसी पवित्र नदी (गंगा यमुना आदि) के किनारे बना धर्मस्थान। ३ दसनामी संन्यासियों का एक नामाभिभेद। ४ सन्यासियों की एक उपाधि।

तीरथ उटकूंनिया-दे० तीरथ व्रत।

तीरथराज-(न०) प्रयाग। तीर्थराज।

तीरथ वरतोनिया-दे० तीरथ व्रत।

तीरथ व्रत-(न०) १ तीर्थ और व्रत। २ तीर्थ यात्रा के धार्मिक नियम व्रत। ३ तीर्थ यात्रा के समय किये जाने वाले व्रत उपवास आदि।

तीरन्दाजी-दे० तीरंदाजी।

तीरवारी-(ना०न०ना०) १ दुर्ग के परकोट और बुर्ज में बनी वह छिद्र पंक्ति जिनमें होकर दुर्ग को घेरे हुए शत्रु दल पर तीर अथवा बंदूक की गोलियां चलाई जाती है। तीरकस। २ तीरों का चलना। तीर चलने की क्रिया।

तीरवा-(ना०)बाण छोड़ने पर वह जितना दूर जा गिरे उतना अन्तर। तीर वाह।

तीरवाह-दे० तीरवा।

तीरदाज-(वि०) १ तीर छोड़ने में कुशल। २ निशाना बाज।

तीरन्दाज-दे० तीरंदाज।

तीरे-(क्रि०वि०) १ किनारे। २ पास। निकट। बाद। पीछे।

तीर्थ-दे० तीरथ।

तीर्थस्थान-(न०) तीर्थयात्रा करने योग्य पवित्र धार्मिक स्थान। यात्राधाम।

तीर्थरूप-(वि०) १ पूज्य। २ पवित्र। (अव्य०) पिता आदि गुरुजनों के लिये (पत्रादि में) प्रयुक्त किया जाने वाला आदर सूचक शब्द।

तीन-(ना०) १ अंगिया। कंचुकी। २ एक गहना।

तीवट-(न०) वाद्य और संगीत का एक ताल। त्रिवट। त्रिताल।

तीवण-(न०) १ दाल कढ़ी आदि साग। रसेदार तरकारी। २ व्यंजन। नमकीन भोज्य पदार्थ।

तीस-(वि०) बीस और दस। (न०) तीस की संख्या। ३०

तीसमार-दे० तीसमारखां।

तीसमारको-तीसमारखां।

तीसमारखां-(वि०)१ अपने आपको बहादुर समझने वाला। २ शेखी मारने वाला।

तीमरो-(वि०)१ तीसरा । तृतीय । तीजो । २ जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई प्रत्यक्ष संबंध न हो । दूर का । ३ परोक्ष । अप्रत्यक्ष । (न०) १ मृतक का तीसरा दिन । २ मृतक का तीसरे दिन किया जाने वाला क्रिया कर्म ।

तीमूं-(अव्य०) १ इसलिये । २ इससे ।

तीसों ही दिन-(वि०) तीस ही दिन । मास के तीस दिन में कभी त्रुटि नहीं । अंतर रहित । निरंतर । लगातार ।

तींड-(न०) टिड्डी । टींड ।

तीरो-(सर्व०) १ जिसका । उसका ।

तु-(सर्व०) १ तेरा । २ मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम । तू (अशिष्ट)

तुअ-(सर्व०) तेरा । तुव ।

तुअर-(न०) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल बनती है । अरहर ।

तुआळो-(सर्व०) तेरा । थारा ।

तुइजणो-(क्रि०) गाय भैंस आदि का गर्भपात होना ।

तुक-(ना०) १ कविता पद या गीत की एक कड़ी । २ पद्य के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों (वर्णों) की मात्राओं का परस्पर मेल । ३ दो बातों या कामों का पारस्परिक सामंजस्य । ४ विषय । बात । ५ मतलब । ६ मत । विचार । ७ युक्ति । तजवीज । तरकीब ।

तुकबंदी-(ना०) केवल तुक मिलाकर रचाई जाने वाली कविता । काव्यगुण से रहित कविता । तुकबंदी । भद्दी कविता ।

तुकमो-(न०) तमगा । पदक ।

तुकांत-(न०) अन्त्यानुप्रास । काफिया ।

तुकी-(ना०) तजवीज । व्यवस्था । युक्ति ।

तुक्को-(न०) १ बिना फल का बाण । २ भाथा तीर । ३ बाण । तीर । ४ होना । वमीला । ५ बिना वसील या बिना विचार प्रयत्न के काम का बन जाना । ६ लतीफा । चुटकला । ७ मन की तरंग । ८ गप्प ।

तुखम-(न०) १ बीज । तुखम । २ वीर्य । ३ वंश । कुल ।

तुखम तासीर-(न०) १ बीज का प्रभाव । २ कुल का प्रभाव । तुख्मे तासीर ।

तुखार-(न०) हिमकण । पाला । तुषार ।

तुग-देο तुक सं० ६ ७ ।

तुगल-(ना०) कान की बाली । बाळी ।

तुगिणा-(ना०ब०व०)१ दाढ़ी मूंछ के बाल । २ दाढ़ी मूंछ के छितरे हुए (घने नहीं) बाल ।

तुचा-(ना०) त्वचा । चमड़ी । चामडी ।

तुच्छ-(वि०) १ थोड़ा । अल्प । २ निकृष्ट । क्षुद्र । ओछा ।

तुझ-देο तुभ ।

तुजीह-(ना०) १ धनुष की डोरी । प्रत्यंचा । २ धनुष ।

तुझ-(सर्व०) तू का विभक्ति पूर्व का रूप ।

तुडिताग-(वि०) १ रक्षक । उद्धारक । त्रुटित्राण । २ प्रतापी । तेजस्वी । ३ शक्तिशाली । ४ त्वरित त्राण । (न०) १ वगत्र । २ श्रेष्ठ वीर । जबरदस्त वीर । (क्रि०वि०) शीघ्र । त्वरित । झट ।

तुणारो-देο तिणारो ।

तुणणो-(क्रि०) फटे वस्त्र में तुनाई करना । रफू करना ।

तुणाई-(ना०) रफू करने का काम या उसकी उजरत ।

तुणारो-(न०) तुनने का काम करने वाला । रफूगर ।

तुणावणो-(क्रि०) तुणाई करवाना । रफू करवाना ।

तुना-(सर्व०) १ तुझे । तेरे को । धन । २ तेरा । थारो ।

तुपक-(ना०) १ एक प्रकार की तोप । तुफंग । २ छोटी तोप । ३ बंदूक ।

तुवड्छ-(न०) टुकड़ा।
तुम-(सर्व०) तू' का ग्रादरार्थी रूप।
तुमग-(ना०) रीस। क्रोध।
तुमत-(ना०) दोषारोपण। तोहमत।
तुमर-दे० तुवर।
तुमार-(न०) अनुमान। ग्रटकळ।
तुमा-(सर्व०) तुम।
तुमीणो-(सर्व०) तुम्हारा। थारो। थांरो।
तुमुन-(न०) घोर ध्वनि। (वि०) तीव्र। प्रचंड। घोर।
तुम्मर-दे० तुंबर।
तुरक-(न०) १ मुसलमान। २ तुर्क।
तुरकणी-(ना०) १ मुसलमान स्त्री। २ तुर्क स्त्री।
तुरकाणी-(ना०) १ तुर्कों का राज्य। मुसलमानी सत्ता। २ तुर्क स्त्री। तुरकणी।
तुरकाणो-(न०) १ मुसलमान संस्कृति। तुर्कों का राज्य।
तुरकी-(वि०) १ तुर्क देश का। २ तुर्कों से संबंधित। (ना०) तुर्की भाषा।
तुरग-(न०) १ घोड़ा। तुरंग। (वि०) शीघ्रगामी।
तुरगाळ-(न०) १ अश्वदळ। २ घास।
तुरगी-(ना०) घोड़ी।
तुरत-(प्रत्य०) जल्दी। तुरंत। भट।
तुरत बुद्धि-(न०) प्रत्युत्पन्नमति।
तुरतरियो-(न०) पकवान। वड़ा।
तुरप-ताश के खेल में सबसे प्रधान मान लिया जाने वाला रंग। तुरुप।
तुरपणो-(क्रि०) हाथ की सिलाई करना। तुरपाई करना।
तुरपाई-(ना०)१ हाथ से की जाने वाली एक प्रकार की सिलाई। हाथ से की जाने वाली बारीक सिलाई। २ बखिया सिलाई।
तुरम-(न०) एक वाद्य।
तुररी-(ना०) १ एक फूंक वाद्य। तुरी। २ छोटा तुर्रा।
तुर्रो-(न०) १ जरतारी (के सलमें तार समूह) का गोलाकार एक गुच्छा जो राजा या दूल्हे की पगड़ी में लगाया जाता है। तुर्रा।
तुरल-(न०) १ वातचक्र। बवंडर। २ आंधी।
तुरस-(वि०) खट्टा। (ना०) १ खटाई। २ दही।
तुरसघट-(न०) दधिघट। दही की मटकी।
तुरसाई-(ना०) १ खटाई। तुर्शी। २ बुस्वाद।
तुरही-(ना०) फूंक कर बजाने का एक बाजा।
तुरंग-दे० तुरग।
तुरंग वदन-(न०) किन्नर।
तुरंगाळ-दे० तुरगाळ।
तुरंगी-दे० तुरगी।
तुरंत-दे० तुरत।
तुराट-(न०ब०व०) १ घोड़े। अश्वसमूह। २ घोड़ा।
तुरियद-(न०) घोड़ा। अश्व।
तुरिया-(वि०) चौथा। चतुर्थ। तुरीय। (ना०) १ अज्ञानता में प्राप्त चेतनता का आधार। २ जीव की एक अवस्था। चौथी अवस्था। तुरीय अवस्था। अंतिम अवस्था। ३ आत्मा या प्राणी की ब्रह्म में लीन अवस्था। ४ वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुख में आकर उच्चरित होती है। वाणी का मुंह से उच्चरित रूप। वैखरी। ५ घोड़ी। (न०) निर्गुण ब्रह्म। ब्रह्म।
तुरी-(न०) १ घोड़ा। २ तुरही नामक वाद्य। तुरही। ३ छोटा तुर्रा। ४ जर तारी का तार। जरतार। ५ मोतियों की लड़ियों का फूंदा। ६ फूंदा का गुच्छा।
तुरीय-(ना०)१ वाणी का मुँह से उच्चरित रूप। वैखरी। २ आत्मा या प्राणी की ब्रह्म

म लीन अवस्था । समाधि अवस्था । ३ घोड़ा । अश्व । तुरी ।
तुर्क-(न०) १ तुर्किस्तान का वासी । २ मुसलमान । तुरक ।
तुलछाँ-(ना०) तुलसी । तुलसी का पौधा ।
तुळछा तेला-(ना०व०) कार्तिक शुक्ल ११ से होने वाला स्त्रियों का त्रिदिवसीय तुलसीव्रत ।
तुळछी-दे० तुळसी ।
तुळछी तेला-दे० तुळछाँ तेला ।
तुळछी बीडो-(न०) तुलसी का पौधा ।
तुळजा-(वि०) वृद्धा । (ना०) १ माता । २ दुर्गा । शक्ति । देवी ।
तुलणा-(ना०) तुलना । समानता । बराबरी । सरखामणी ।
तुलणो-(क्रि०) १ तुलना । तोला जाना । २ जच जाना । समझ में बैठ जाना । ३ निश्चय होना । ४ समझ में आना ।
तुलवाई-(ना०) १ तोलने की क्रिया । २ तोलने की मजदूरी ।
तुळसा-दे० तुळसी ।
तुळसी-(ना०) एक सुगन्धीदार पौधा जो पवित्र माना जाता है । तुलसी ।
तुलसी माळा-(ना०) गले का एक आभूषण ।
तुला-(ना०) १ तकड़ी । कांटो । २ सातवीं राशि ।
तुलाई-दे० तुलवाई ।
तुलाणो-(क्रि०) तोल करवाना । तुलवाना ।
तुळादान-(न०) दान विशेष जिसमें किसी मनुष्य के तोल के बराबर धन या पदार्थ का दान किया जाता है । तुलादान ।
तुलावट-(ना०) १ नाज आदि तोलने का काम । २ तोलने की मजदूरी । तुलाई । ३ मंडी में बिकने को आये हुये कृषक के नाज को तोलने वाले से लिया जाने वाला एक कर । (वि०) तोलने वाला ।
तुलावणो-दे० तुलाणो ।
तुव-(सर्व०) १ तेरा । २ तू । ३ तुम । ४ तुझे । तुझको ।
तुवाळो-दे० तुम्हाळो ।
तुस-(न०) १ अनाज दाने के ऊपर का छिलका, भूसी । तुष । २ घास । चारो । ३ कटा हुआ या फटा हुआ बहुत बारीक टुकड़ा । ४ सोने या चाँदी का बारीक टुकड़ा ।
तुसर-(सर्व०) १ तू । २ तेरा । (न०) तुष । तुस । तृण ।
तुसाडो-(सर्व०) तेरा । थारो ।
तुस्ट-(वि०) १ खुश । प्रसन्न । राजी । २ संतुष्ट ।
तुस्टणो-(क्रि०) १ खुश होना । प्रसन्न होना । २ संतुष्ट होना । ३ संतुष्ट करना ।
तुस्टमान-(वि०) १ प्रसन्न । राजी । तुष्टमान । २ अनुकूल ।
तुहाळी दे० तुहाळी ।
तुहारो-(सर्व०) तेरा । थारो ।
तुहाळी-(सर्व०) तेरी । तेरे वाली । थारी ।
तुहाळो-(सर्व०) तेरा । तेरे वाला । थारो ।
तुहा-(सर्व०) १ तेरा । २ तेरे ।
तुहा थिय-(सर्व०) तेरे से । थारे सू ।
तुहा थी-(सर्व०) तेरे से । थासू । थारसू ।
तुहिम-(सर्व०) तुम्हारा ।
तुं अ-(सर्व०) तू । तू । थू ।
तुंग-(वि०) १ ऊँचा । उन्नत । २ मुख्य । ३ प्रचण्ड । ४ बलवान । (न०) १ धरती । २ स्वर्ग । ३ पुत्र । ४ शिखर । ५ पर्वत । ६ मदिरा भर कर रखने का एक बड़ा पात्र । ७ सेना । ८ सेना का अग्र भाग । ९ समूह । झुंड । टोळो ।
तुंड-(न०) १ शिर । मस्तक । २ मुंह । ३ चोंच । ४ सूअर की थूथन । ५ सूंड । ६ शिव । महादेव ।

तुडी-(न०) १ गणपति । गजानन । २ हाथी । (ना०) नाभि । टुंडी । सूंटी ।
तुदिक-दे० तुंदी ।
तुदिम-दे० तुंदी ।
तुदी-(वि०) तोंदवाला ।
तुंबण-(ना०) तूंब की बेल ।
तुंबर-(न०) १ एक वाद्य । २ इकतारा । तम्बूरा । ३ किन्नर । ४ गंधर्व । तुंबुरु । ५ देवता ।
तूकारो-दे० तूंकारा ।
तूजी-दे० तुजीह ।
तूझ-(सव०) १ तेरा । थारो । २ तू ही । थू हिज ।
तूटक-(वि०) १ खंडित । त्रुटित । २ अपूर्ण । अधूरो । ३ पृथक । अलग अलग । ४ बिछुड़ा हुआ । बिखरा हुआ । अलग होगया हुआ ।
तूटणो-दे० टूटणो ।
तूटफूट-दे० टूटफूट ।
तूठणो-(क्रि०)१ प्रसन्न होना । खुश होना । २ तुष्टमान होना । ३ अनुकूल होना ।
तूण-(न०) १ तीर रखने का भाता । २ रफू । तुनना ।
तूणणो-(क्रि०) रफू करना । तुनना ।
तूणारो-(न०) कपड़ा को रफू करने वाला रफूगर ।
तूणीर-(न०) तीर रखने का चोगा । भाता । तरकश । निषंग ।
तू-तडाका-(न०) १ बोलचाल । वाग्युद्ध । बोलायाली । चडभड । २ मारामारी । ३ लडाई झगडा ।
तूतरियो-(वि०) नीच । ओछो । (न०) कुत्ता ।
तूती-(ना०) १ मुंह से बजाया जाने वाला एक बाजा । २ एक चिड़िया । ३ पानी आदि की पतली धार । तूंती । ४ तू तू मैं मैं । झगडा ।
तूत्-(अव्य०) कुत्ते को बुलाने का उद्गार । (न०) कुत्ता (बालभाषा में ।
तू-तू मैं मैं-(अव्य०)१ बोलचाल । वाग्युद्ध । २ मारामारी ।
तूना-(सर्व०) १ तेरे को । २ तेरे से ।
तूप-(न०) घी । घृत ।
तूर-(न०) १ एक फूंक वाद्य । तुरही । शहनाई । २ एक द्विदल नाज । तूअर । अरहर ।
तूल-(वि०) तुल्य । समान । (ना०) रूई ।
तूळी-(ना०) दियासलाई । तीली ।
तूस-(न०) १ इंद्रायण का फल । २ समझ । बुद्धि । ३ प्रसन्नता ।
तूसडो-दे० तसतूवो ।
तूसणो-(क्रि०) १ गाय भैंस आदि का दूध देना बंद कर देना । २ गाय भैंस आदि का गर्भस्राव होना । ३ प्रसन्न होना । तुइजणो तूहणो ।
तूहडो-दे० तमतूवो । तूम स० १ ।
तूहणो-दे० तूसणो ।
तूं-(सव०) तू ।
तूंकारो-(न०) १ किसी को 'तूं' कह कर के संबोधन करने का शब्द । तू संबोधन । २ अपमानजनक संबोधन । अशिष्ट संबोधन । ३ 'तूं' कह कर के बतलाने का भाव ।
तूंग-(ना०) १ मदिरा पात्र । १ अग्नि कण । आग की चिनगारी ।
तूंगियो-(न०) अग्निकण । चिनगारी ।
तूंगा-(न०) १ सेना का एक भाग । सेना की एक टुकडी । २ यात्रा में साथ वालों का अलग अलग हो जाने से बनने वाली एक एक भाग की इकाई ।
तूंडो-दे० टूंडो ।
तूंतडी-(ना०) मुंह से बजाया जाने वाला एक धीमी आवाज का वाद्य ।

तू-तणी-*(सर्व०)* तेरी ।

तू तणी-*(ना०)* मूत्रनलिका । शिश्न । व्यंग्य में) ।

तू-तणै-*(सर्व०)* तेरे ।

तू-तणो-*(सर्व०)* तेरा ।

तू तणो-दे० ताताणो ।

तू ती-*(ना०)* १ मुँह से बजाया जाने वाला एक वाद्य । २ पानी की पतली धार । ३ मूत्रधारा ।

तू-थी ज-*(अव्य०)* तेरे से ही । तेरे द्वारा ही ।

तू बडी-*(ना०)* तुंबी । कमंडल ।

तू बी-*(ना०)* तूंबी बेल का फल । लउआ । २ सूखा लउआ फल, जिसका साधु लोग जलपात्र बनाते हैं । तुमडी । तुंबिया । कमंडल ।

तू बो-*(न०)* १ तूंबा । २ तूंबा फल को खोखला कर के बनाया हुआ जल पात्र । ३ लउआ या लौका का सूखा फल जो हलका होता है और पानी में तरने के समय पास रखा जाता है ।

तृण-*(न०)* १ तिनका । २ घास ।

तृतीय *(वि०)* तीसरा ।

तृतीया-*(ना०)* पक्ष की तीसरी तिथि । तीज ।

तृप्त-*(वि०)* १ संतुष्ट । २ प्रसन्न ।

तृप्ति-*(ना०)* १ इच्छा पूर्ति । संतोष । २ प्रसन्नता ।

तृषा-*(ना०)* १ प्यास । २ इच्छा । ३ लोभ ।

तृषावंत-*(वि०)* प्यासा ।

तृष्णा-*(ना०)* १ प्यास । २ लोभ । ३ किसी वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा ।

ते-*(सर्व०)* १ वह । २ वे । ३ उसको । उसे । ४ उसके । ५ जिस । ६ उस । *(अव्य०)* १ इससे । २ अत । इसलिये ।

तेईस-*(न०)* '२३' की संख्या । *(वि०)* बीस और तीन ।

तेउ-*(सर्व०)* १ उस । २ उसका । ३ वह ।

तेख-*(न०)* १ अभिमान । मजाज । २ रीस । क्रोध । ३ रूठना । रुष्टता । नाराजी ।

तेगड-*(ना०)* तीन जनों साथ । तीन की टोली ।

तेखणो-*(क्रि०)* १ नाराज होना । २ गुस्सा करना । रीस करणी । ३ देखना । पेखना । देखणो ।

तेखळ-*(न०)* १ तीन जनों का साथ । तीन की टोली । २ असगुन समझी जाने वाली तीन वस्तुओं का समूह । ३ घोडा ऊँट आदि के परों को बांधने की मोटी सांकळ या रस्सी । ४ घोडा, ऊँट आदि के तीन परों को बांधने की क्रिया या भाव ।

तेखीलो-*(वि०)* १ जल्दी जल्दी नाराज हो जाने वाला । रीसदियो । २ साधारण बात के लिये नाराज हो जाने का आदत वाला ।

तेग-*(ना०)* तलवार ।

तेगाळ-*(वि०)* खड्गधारी । योद्धा । *(ना०)* तेग । तलवार ।

तेगिया तिलक-*(न०)* १ शूरवीरों में श्रेष्ठ शूरवीर । २ शस्त्र धारण करने वालों में श्रेष्ठ वीर पुरुष ।

तेगी-*(वि०)* १ तीक्ष्ण धार वाली(तलवार)। २ क्रोधी । ३ तलवारधारी ।

तेगो-*(न०)* १ तेग । तलवार । २ बांकापन । टेढापन । ३ भाटी राजपूत । *(वि०)* १ जोशीला । तेज । उग्र । २ शूरवीर । बहादुर ।

तेघड-*(ना०)* पर का एक गहना ।

तेज-*(न०)* १ प्रकाश । २ आतंक । ३ प्रभाव । सामर्थ्य । ४ पराक्रम । ५ तीक्ष्णता । ६ वीर्य । ७ स्वर्ण । सोना ।

८ पच महाभूतो म अग्नि तत्त्व। तज। ९ अग्नि। (वि०) १ तीक्ष्ण धारवाला। २ द्रुतगामी। ३ महान। ४ गरम मिजाज। उग्र। ५ फुरतीला। ६ चपल। चचल। ७ चमकीला। ८ शीघ्र प्रभाव डालने वाला।

तेज अबार-(न०) १ तजपुज। २ सूय। ३ ईश्वर।

तेजण-(ना०) घोडी। अश्वा। अश्विनी। (वि०) नखरेवाली। नखराळी।

तेजरो-(न०)तीसरे दिन आने वाला बुखार। तेजरो ताव।

तेजळ-दे० तजण।

तेजवत-(वि०) तजस्वी।

तेजवान-दे० तजवत।

तेजस-(न०) १ सूय। २ रुद्र। महादव। ३ वायु। (वि०) तेजस्वी।

तेजसी-(वि०) तेजस्वी। प्रतिभावान। कांतिवान।

तेजस्वी-दे० तेजसी।

तेजागळ-(वि०)तेज गति वाला। तज गति से दौडने वाला। (न०) घाडा।

तेजाब-दे० तिजाब।

तेजाबी-(वि०) १ तजाब से सम्बन्धित। २ तेजाब द्वारा शोधित (सोना चाँदी आदि)।

तजाळ-(वि०) १ तेजवाला। तजस्वी। २ तेज गति वाला। ३ उग्र। क्रोधी। (न०) १ सूय। २ घाडा।

तजो-(ना०)१ भावो का बढना। महँगाई। महँगी। मुर्खी। २ शीघ्रता। तीव्रगति। ३ स्फूर्ति। उत्साह। हौसला। ४ उग्रता। ५ क्रोध। ६ गरमी। उष्णता। (न०) घोडा। अश्व।

तेजो-(न०) नागोर जिले के खडनाळ म हुआ एक प्रसिद्ध जूझार जाट वीर। २ तजा की सत्यनिष्ठा परोपकार परायणता और वीरता का एक लोक गान।

तड-(ना०) १ दरार। फटन। फटाव। रा। २ रेखा। ३ भग। योनि। (लक्षणा व्यग्य। ४ निमत्रण। तडो।

तडणो-(क्रि०) १ बच्चे का कमर पर उठाना। २ बुलाना। निमत्रण दना। योतना।

तडागर-(वि०)१ निमत्रण देने वाला। २ जिसको निमत्रण दिया गया है। ३ जो निमत्रण देने से आया है। निमंत्रित। ४ बालक को कधे या पीठ पर उठाने वाला।

तडावणो-(क्रि०) १ बुलवाना। निमन्त्रित करना। २ कमर म उठावना (बच्चे को)।

तेडियो-(न०) स्त्रियो के गले म पहिनने का एक आभूषण। तिमणियो। मूठ।

तेडो-(न०) निमत्रण। न्योता। बुलावा। नतो।

तण-(सव०) १ उस। २ उसी। उस ही। ३ उसे। उसका। (क्रि०वि०) अत अत एव। इसलिये। इससे। इणसू।

तणि-दे० तेण।

ततलो-(वि०) उतना।

तता-(वि०)उतने। उतरा। उत्ता। वतरा। दे० श्रेता।

तेतीस-(वि०) तीस और तीन। (न०) '३३ की सख्या।

तेते-(वि०) उतने। तेता। उतरा। उत्ता।

तेतो-(वि०) उतना। उतरो। उत्तो। वतरो।

तेथ-(क्रि०वि०) वहा। उठ। वठै। थोप।

तेथी-(क्रि०वि०) १ जिससे। २ उगरा। ठणसू।

ते दी-(अव्य०) उस दिन।

तेदीह-दे० ते दी।

तेपन-(वि०)पचास और तीन। (न०) ५३ की सख्या।

तेम-(अव्य०) १ तैस। उसी प्रकार।

तेमडाराय-(ना०) चारणों री आवड़जी। आवड देवी का एक नाम।

तेयो-(न०) मृतक का तीसरा। मृतक के तीसरे दिन की क्रिया। तीयो। तीसरो।

तेरस-(ना०)पक्ष का तरहवाँ दिन। तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।

तेरह-(वि०) दस और तीन। (न०) तरह की संख्या। १३

तेरह ताळी-(ना०)१ एक ही व्यक्ति के द्वारा तेरह मजीरे एक साथ बजाने की कला। २ एक नृत्य।

तेरह पथ-दे० तरा पथ।

तेरह पथी-दे० तरापथी।

तेरह वीसी-(वि०) तरह बार बीस। दोयसो साठ।

तेराक-दे० तेरू।

तेरापथ-(न०) बाईस टोला (स्थानकवासी) जैन सम्प्रदाय से अलग होकर तरह साधुओं के द्वारा प्रवर्तित एक श्वेताम्बर जन सम्प्रदाय। तेरहपथ। इसके प्रथम आचाय भिक्खुगणि थ।

तेरापथी-(वि०) तेरहपथ सप्रदाय का अनुयायी। तेरह पथी।

तेरायल-(वि०) १ वर्णसकर। दोगला। २ महानालायक। ३ दुराचारी। व्यभिचारी। (न०) एक गाली।

तेराळ-(वि०) १ कुलटा। व्यभिचारिणी। दुराचारिणी। २ दुराचारी। दे० तेरायल।

तेरी-दे० थारी।

तेरीख-(ना०) १ ब्याज की दर। २ ब्याज गिनने का दिन। ब्याज लगाने का दिन। ३ ब्याज के दिनों का नाम। ४ तारीख। मिती।

तेरू-(वि०) तरने वाला। तिरने वाला। तराक। कुशल तैराक।

तेरंडो-(न०) १ मकर सक्रांति को तरह कन्याओं को एक ही प्रकार की वस्तु भेंट देकर मनाया जाने वाला स्त्रियों का एक उद्यापन पव। २ तेरूडे में दी जाने वाली वस्तु। ३ तरूंडे का भाजन।

तेरो-(सव०) तेरा। थारो। थाको।

तेल-(न०) १ तिल, सरसों आदि तिलहन को पेर कर निकाला जाने वाला स्निग्ध तरल पदार्थ। वह स्निग्ध पदार्थ जो बीजों में से निकाला जाता है। २ जलाने के काम आने वाला एक खनिज पदार्थ। घासलेट। करोसीन।

तेल चटणो-(मुहा०) विवाह की एक प्रथा जिसमें पाणिग्रहण के कुछ दिन पूर्व वर और कन्या के हलदी मिला तेल चढ़ाया जाता है।

तेल चढ़ियो-(वि०) तेल चढ़ा हुआ (वर)।

तेल चढ़ी-(ना०) वर या कन्या के तेल चढ़ाने का उत्सव। (वि०) तेल चढ़ी हुई (कन्या)।

तेल चढ्यो-दे० तेल चढ़ियो।

तेलड़ी-(वि०) १ तीन लड़ियों वाली। २ तीन परतों वाली। (ना०) १ दीपक में तेल डालने का तेल पात्र। तिलोड़ी। २ स्त्रियों का एक आभूषण।

तेलड़ो-(वि०) १ तीन लड़ियों वाला। २ तीन परतों वाला।

तेलण-(ना०) १ तेली की स्त्री। २ तेली जाति की स्त्री।

तेल फुलेल-(न०) सुगंधित तेल और इत्र।

तेळा-(न०ब०व०) १ ऊँट के ऊपर की जाने वाली तीन जनों की सवारी। २ तीन दिन का उपवास।

तेळायो-(वि०) जिस पर तीन जनों की सवारी की गई हो (ऊंट)।

तेळास-(ना०) ऊंट के ऊपर एक साथ की जाने वाली तीन जनों की सवारी।

तेलियो-(वि०) १ तेल के रंग का। चाल रंग का (ऊँट)। २ तेल वाला। तेल से बना चिकना। ३ तेल में भिगा हुआ। तेल से तर।

तेली-(न०) तेल पेरने और बेचने वाला। घाँची। २ तेली जाति का मनुष्य।

तेलो-(न०) १ त्रिरात्र व्रत। २ तीन दिन का उपवास।

तेलोडी-(ना०) वह तेल पात्र, जिससे दीपक में तेल डाला जाता है। तिलोडी।

तेवटियो-(न०) १ स्त्रियों के गले का एक गहना। २ लंबाई में जिसके तीन पट्टियाँ जुड़ी हुई हों ऐसा ओढ़ने का या धोती की जगह काम में लिया जाने वाला पुरुष का एक वस्त्र।

तेवटो-दे० तेवटियो।

तेवड-(ना०) १ हैसियत। सामर्थ्य। २ मितव्ययिता। किफायत। ३ तजवीज। व्यवस्था। ४ प्रबंध। बंदोबस्त। ५ तैयारी। ६ तत्परता। ७ सजावट। ८ सार सम्हाल। देखरेख। ९ धजन। १० तीन परत। त्रिपट। (वि०)१ तीन परत वाला। २ तिगुना।

तेवडणो-(क्रि०) १ व्यवस्था करना। २ मितव्ययता से खर्च करना। ३ फालतू खर्च नहीं करना। ४ सावधानी से गृहस्थी चलाना। ५ इरादा करना। विचार करना। ६ निश्चय करना।

तेवडो-(वि०) १ तिगुना। २ तिहरा। तीन परतों वाला।

तेवणो-(क्रि०) कुँए में से चरस द्वारा पानी निकालना।

तेवर-(ना०) १ ललाट के तीन बल या सिलवट। त्योरी। २ भ्रूभंग। भृकुटी। तवरी।

तेवाहण-(न०) १ नारी पाग और रथ वाला वाहन। त्रिवाहन। २ ऊंट। ३ पागल में ज़ोर वा ऊमर का सवारी का ऊंट। ४ चिंता। सोच फिकर। ५ सोच विचार।

तवीस-दे० तईस।

तेसठ-(वि०) साठ और तीन। (न०) त्रेसठ की संख्या। ६३

तेह-(न०)१ सौष्ठव। सुडौलपन। सौंदर्य। सुंदरता। ३ तल। थाह। तह। ४ क्रोध। रोस। ५ घमंड। ६ वर्षा से भूमि के भीतर तक गीला होने का अंगुली परिमाण। वर्षा परिमाण। ७ वर्षा के जल का जमीन में गहरा पहुँचना।

तेहडो-(वि०) वैसा।

तेहवो-(वि०) वैसा।

तेहो-(वि०)१ तैसा। २ आधा। (क्रि०वि०) उसी प्रकार।

तै-(न०) १ तय। निश्चय। २ निर्णय। फैसला। (वि०) १ पूरा किया हुआ। समाप्त। २ निश्चित। ठहराया हुआ। ३ निबटाया हुआ। निर्णीत।

तैखाना-दे० तहखाना।

तैडो-(वि०) वैसी। तैसी।

तैडो-(वि०) तैसो। वैसो।

तैनात-(वि०) १ नियुक्त। मुकर्रर। २ तैयार। तत्पर। ३ हाजर।

तैनाती-(ना०) १ हाजरी। २ नियुक्ति।

तैनाळ-दे० तहनाळ।

तैपरार-(न०) गत दो वर्षों के पहिले का वर्ष।

तै पलै दिन-(न०) गत चौथा दिन। २ आने वाला चौथा दिन।

तैयार-दे० तयार।

तैयारी-दे० तयारी।

तैयो-(न०) १ मृतक का तीसरा दिन। २ मृतक के तीसरे दिन किया जाने वाला क्रिया कर्म। तीयो। तीसरो।

तैराई-(ना०) १ तैरने की क्रिया। २ तैरने में सहारा देकर नदी आदि से पार करने की मजदूरी।

तैराक-(वि०) १ तैरने वाला। २ तैरने में कुशल। तैरू।
तैरायळ-दे० तरायल।
तैरी-(ना०) ममालदार एक बढिया घृत पूर्ण खिचडी जिसमें बादाम पिस्ता आदि मेवा मिला रहता है। तहरी।
तैरीख-दे० तेरीख। तारीख।
तैवार-(न०) त्योहार। पर्व।
तैवारी-(ना०) वह पदार्थ जो त्योहार के उपलक्ष में पीनियों व नौकरों आदि को दिया जाता है। त्योहार के दिन कारू नारू जातियों को दिया जाने वाला नेग।
तैंम-(ना०) १ क्रोध। गुस्सा। २ आवेश। ३ चक्कर।
तैंसू-(सव०) उससे।
तैस्सितोरी-(न०) हिंदू संस्कृति कला और मारवाडी भाषा का एक अनन्य प्रेमी इटालियन विद्वान। इनका पूरा नाम लुइजि पिओ तस्सितोरी (Luigi Pio Tessitori)। ३२ वर्ष की अवस्था में बीकानेर में सन् १९१४ में इनकी मृत्यु हुई।
तैं-(सव०) मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम। तूने। (अशिष्ट)।
तो-(अव्य०) १ प्रायः 'जो' से संबंध हुए वाक्य में प्रयोग होने वाला अव्यय। तब। उस स्थिति में। २ ही। भी। ३ पीछे। ४ भले। अस्तु। (सर्व०) १ तेरा। २ तुझको।
तोइचो-(न०) १ एक रास नृत्य। २ ढोल का एक ताल जिस पर तोइचो रास-नृत्य नाचा जाता है। तोइचो ताल।
तोइज-(अव्य०) १ तभी तो। २ तब ही। ३ ऐसा होने पर ही। तो हीज। तो हिज।
तोक-(न०) कवच। २ लोह का एक भारी छल्ला, जो पुराने जमाने में अपराधी के गले में सजा के रूप में पहिनाया जाता था। तौक। मडेरा। २ झुंड।
तोकज-(अव्य०) तेरे लिये।
तोकणो-(क्रि०) १ शस्त्र उठाना। २ प्रहार करना। ३ पकड़ना। ४ प्रतीक्षा करना। ५ उठाना। सम्हालना।
तोकायत-(वि०) १ शस्त्र उठाने वाला। २ शस्त्र उठाया हुआ। ३ वीर।
तोखणो-(क्रि०) राजी करना। संतुष्ट करना। संतोखणो।
तोखार-(न०) घोडा। अश्व।
तोग-(न०) १ मुगल साम्राज्य का एक ध्वज जिस पर सुरा गाय के बाल लगे रहते थे। २ एक शस्त्र।
तोगो-(न०) १ गुस्सा। क्रोध। २ हठ धर्मी। ३ एक प्रसिद्ध राठौड़ वीर। युवक।
तोछ-(वि०) १ थोडा। कम। २ तुच्छ। (ना०) न्यूनता।
तोछडाई-(ना०) १ ओछापन। तुच्छता। ओछापणो। २ असभ्यता। गुस्ताखी। बेअदबी।
तोछडो-(वि०) १ ओछा बोलने वाला। २ झिड़कने वाला। ३ ओछो। हलका। ४ असभ्य। ५ गुस्ताख। ६ न्यून।
तोछो-दे० तोछडो।
तो ज-(अव्य०) तबही। तो हो।
तोजो-(ना०) १ तजवीज। २ सुराग। पता। टोह।
तोटायत-दे० टागयत।
तोटी-(ना०) स्त्रियों के कान का एक गहना। टोटी।
तोटो-दे० टोटो।
तोड-(न०) १ तोड़ने की क्रिया या भाव। २ चौपड़ के खेल में प्रतिस्पर्धी की गोट जिस घर में पड़ी हुई हो, उसी घर में सहखिलाडी की गोट का दाँव लग जाने से, प्रतिस्पर्द्धी के गोट के मर जाने की

क्रिया या भाव। ३ नदी के पानी के तेज बहाव के कारण किनारे की भूमि के टूटने की क्रिया। ४ किसी प्रभाव आदि को नष्ट करने वाला पदार्थ बात या काम। ५ दही का पानी। ६ निराकरण। मुकाबला। ७ वार। दफा। ८ फसला। ९ प्रतिकार। १० संगीत का वह तान जो गायन की समाप्ति पर बजाया जाता है। तार अलंकार। मान उतार। मान। उतार। (संगीत ताल)। ११ प्रथम समागम। प्रथम संयोग।

तोड़-दे० टोड।

तोड़रा-दे० तोड़।

तोड़ जोड़-(न०)१ समाधान। षड़यंत्र। २ समझौता। ३ दांवपेंच। ४ चाल। ५ युक्ति। ६ परिश्रम।

तोड़ण-(ना०) वायु से निकली में होने वाली असहनीय दुखन।

तोड़णो-(क्रि०)१ तोड़ना। खंडित करना। २ अलग करना। उतारना (फूल)। ३ किसी नियम को रद्द करना। ४ नियम का उल्लंघन करना। ५ संबंध विच्छेद करना। ६ बात पर कायम न रहना। ७ सेंध लगाना। ८ खतम करना। मिटाना। ९ किसी के धन का हरण कर के उसे निधन बनाना।

तोड़ फोड़-(न०) १ तोड़ना और फोड़ना। तोड़फोड़। ध्वंसन।

तोड़र-(न०) स्त्रियों के पांव का एक गहना। टोडर।

तोडाक-दे० तोडायत।

तोडाण-दे० तोड़ण।

तोडाणो-दे० तोडावणो।

तोडादार बंदूक-(ना०) तोडा से दागी जाने वाली बंदूक। पलीता से छोड़ी जाने वाली बंदूक।

तोड़ा फोड़ी-(ना०) तोड़ फोड़ करने की क्रिया या भाव।

तोड़ायत (वि०) १ मर्दाना। २ कमाने वाला। ३ दिवालिया। ४ व्यापार आदि में हानि से टूटा फिरा। टूटेड़ो। ५ टूटा। ६ शत्रु। ७ नफरत वाला।

तोड़ावणो (क्रि०) तुड़वाना।

तोड़ायाळ दे० तोड़ायत।

तोड़ानाळो-दे० तोड़ायत।

तोड़ियोड़ो-(भू०का०) तोड़ा हुआ।

तोड़ी (ना०) स्त्रियों के पांव का एक गहना।

तोड़ो-(न०) १ अभाव। कमी। न्यूनता। २ हानि। नुकसान। घाटो। ३ मांग। जरूरत। ४ एक प्रकार की सिर पेच। ५ जरी के अनेक तारों से बनाई हुई एक डोरी जो कि कचार और निकमिया पाग के ऊपर बांधी जाती है। ६ पांव का एक गहना। तोड़ा। सांकळो। लंगर। ७ पलीतेदार बंदूक के बंधा रहने वाली जलती हुई रस्सी। जामगी। पलीता। ८ छोटा तमंचा। ९ हाथी के पांव में बंधी रहने वाला साकल। १० सुतली रस्सी आदि का छोटा टुकड़ा। ११ कंठ। १२ एक हजार रुपये नकद समा जायें उतने मान की थैली और उसमें भरे हुए एक हजार रुपये। रोकड़ हजार रुपयों की थैली। १३ वीणा आदि तार वाद्यों में बजाया जाने वाला या गाया जाने वाला अलंकार रूप स्वर समूह। १४ एक नृत्य प्रकार। १५ गायन में राग पलट। १६ जकड़ी (संगीत)।

ताड़ो-दे० टोडा।

तोत-(न०) १ पाखंड। ढोंग। २ कपट। छल। ३ आडंबर। तड़कभड़क। ४ झूठ। असत्य। ५ समूह। ढर। (अव्य०) तो। तब।

तोरणियो-(ना०) १ विशाखा नक्षत्र । २ एक दिशा । तोरणि । स्पाराग ।

तोरावाटी-(ना०) जयपुर व पास का एक प्रदेश जहाँ पहले तोमरों का राज्य था । तवरावटी ।

तोरू-(ना०) एक बेल और तरकारी बनाने के काम में आने वाला उसका लंबा फल । तुरई ।

तोल-(ना०) १ वजन । जोख । तौल । २ तौलने के काम में आने वाला साधन । बाट । ३ महिमा । महत्त्व । ४ प्रतिष्ठा । ५ वातावरण । ६ रहस्य । मर्म । ७ अनुमान । तुमार । ८ वजन । भार । बोझ । ९ समानता । बराबरी । १० जाँच । परीक्षा । ११ निश्चित धारणा । १२ बाट । बटखरा । १३ ढंग । तरीका । (वि०) समान । बराबर ।

तोल जोख-(ना०) १ तौल और मूल्यांकन । २ तौर तरीका । ढंग ।

तोलडी-(ना०) मिट्टी की हाँडी । हंडिया । हाँडा । तामलो ।

तोलणो-(क्रि०) १ तौलना । जाँचना । वजन करना । जोखणो । २ उठाना । ३ शस्त्र उठाना । ४ तुलना करना । ५ अनुमान लगाना । अन्दाजणो ।

तोल-तुमार(ना०) १ ढंग । २ मन की बात । ३ व्यवस्था । ४ वातावरण । परिस्थिति ।

तोना-(ना०ब०व०) छोटे मोटे (कम ज्यादा) सभी प्रकार के बटखरे । छोटे मोटे बाट ।

तोनाई-(ना०) १ तौलने का काम । २ तौलने का पारिश्रमिक । तुलाई ।

तोला छपाई-(ना०) १ पुराने बटखरों को यथा समय जाँच कराने का सरकारी नियम । २ पुराने (घिस जाने से) बटखरों की जाँच करवा कर यथा परिमाण करा के छाप लगवाने के पारिश्रमिक रूप में लिया जाने वाला सरकारी टक्स । तालों की जाँच करवाने का कर ।

तोळाट-(वि०) तौलने का काम करने वाला । तोलन वाला ।

तोलाण-(ना०) तौलने का काम । तोलन की क्रिया । तुलाई ।

तोळावट-दे० तुलावट ।

तोलावणो-(क्रि०) तोल करवाना । तुलवाना ।

तोलै-(अ०प०) तुलना में । समानता में । बराबरी में । (वि०) तुल्य । समान । बराबर ।

तोला-(ना०) बाट । तोल ।

तोळो-(ना०)१ बारह माशा का तौल । एक कलदार रुपया भर वजन । तोला । २ बारह माशा का एक बाट ।

तोस-(ना०) १ संतोष । सब्र । सबर । २ सत्कार ।

तोसक-(ना०) रुईदार मोटा गद्दा । तोशक ।

तोसणो-(क्रि०) १ संतोष कराना । सब्र कराना । संतोखणो । २ आदर सत्कार आदि से खुश करना ।

तोसदान-(ना०) दारू गोली आदि रखने की सिपाहियों का थैली ।

तोसाखानो-(ना०) अमीरों के वस्त्राभूषण रखने का भंडार ।

तो सारू-(क्रि०वि०) १ तेरे लिये । थारे सारू । २ तेरे से । ३ तेरे समान ।

तो सू-(सव०) तेरे से । थासू । थारसू ।

तोसो-(ना०) संबल । भातो ।

तोहमत-(ना०) १ झूठा कलंक । २ झूठा अभियोग । अपयश आरोप । आरोप ।

तो हिज-(अ०प०) तबही ।

तो ही-(अ०प०) १ तो भी । २ फिर भी ।

तो हूत-(सव०) तेरे से । थासू । थारसू ।

तोक-(ना०) अपराधी के गले में पहनाने की लोहे की भारी हंसली ।

तोतर-दे० तोत (न०)।
तोतडो-दे० तोतरो।
तोतरो-दे० तोतळो।
तोतळो-(वि०) जो तुतला कर बोलता हो। तुतला। तोतला।
तोतो-(वि०) तुतला। (न०) तोता। सुआ। सुग्गा।
तो थी-दे० तो सू।
तो नू-(सर्व०) तुझे। तेर को।
तोप-(ना०) एक बड़ा आग्नेयास्त्र। तोप।
तोपखानो-(न०) वह मकान जहाँ तोपें रखी रहती हैं। तोपखाना।
तोपची-(न०) तोप दागने वाला।
तो-पण-(अव्य०) १ फिर भी। तथापि। २ ऐसा होने पर भी। ३ ऐसा करते हुए भी।
तोफान-(न०) १ उपद्रव। उत्पात। हलचल। २ दंगा। फसाद। ३ झगड़ा। लड़ाई। ४ वायु वेग। आँधी। ५ तूफान। बाढ़।
तोफानी-(वि०) १ उत्पाती। उपद्रवी। २ तोफानवाला। तोफान से संबंधित।
तोब-(न०) १ शब्द। आवाज। २ तोबा। ३ तोबड़ा।
तोबड़ो-(न०) १ चमड़े या टाट का एक थैला जिसमें दाना भर कर घोड़े को खिलाने के लिये उसके मुँह पर बाँध देते हैं। तोबड़ा। २ क्रोध से बिगड़ा हुआ मुँह। रीस के मारे फूला हुआ मुँह।
तोबर-(वि०) १ वीर। २ मजबूत। (न०) तोबड़ा।
तोबराळ-(न०) घोड़ा।
तोबा-(न०) १ प्रायश्चित सूचक शब्द। पश्चाताप। २ भविष्य में अनुचित काम न करने की प्रतिज्ञा। ३ हैरानी। परेशानी।
तोम-(न०) १ यश। नाम। २ प्रार्थना। ३ स्तुति।
तोमर-(न०) १ एक शस्त्र। २ एक छंद। ३ क्षत्रियों की एक उपजाति।
तोय-(न०) पानी। (अव्य०) तब भी। फिर भी। तथापि।
तोयचो-दे० तोइचो।
तोयद-(न०) १ बादल। २ घृत।
तोरडो-दे० टोरडो।
तोरण-(न०) १ द्वार। २ महराबदार द्वार। ३ किसी उत्सव पर अस्थायी रूप से बनाया हुआ द्वार। ४ परिकर। मूर्ति के आजू बाजू की विशेष प्रकार की महराब जिसमें उस मूर्ति से संबंधित छोटी छोटी मूर्तियाँ आदि अंकित की हुई होती हैं। ५ लाल रंग से रंगा हुआ लकड़ी का एक मेहराबदार विशिष्ट प्रकार का छोटा तोरण, जो विवाह के समय मुख्य द्वार पर लगाया जाता है, जिसको वंदन आदि विधियों का संपादन करके दूल्हा पाणिग्रहण के लिये घर में प्रवेश करने पाता है। द्वार तथा तोरण का प्रतीक। ६ वंदनवार।
तोरण घोडो-(न०) १ दूल्हे का घोड़े पर चढ़ कर तोरण वंदन करने का एक जागीरी लाग। २ घोड़े सवार दूल्हे का तोरण वंदन करने की एक प्रथा। ३ तोरण वंदन का एक नेग।
तोरण वांदणो-(मुहा०) दूल्हे का पाणिग्रहण करने के लिये ससुर के घर में प्रवेश करने के पूर्व द्वार पर लगे तोरण वंदन की प्रथा का संपादन करना।
तोरणि-(न०) आग्नेय (आग्नेयी) और दक्षिण (नैऋत) दिशा के बीच की रूपान्तर दिशा का एक पर्याय। सोलह दिशाओं में की एक दिशा। कुआरास।

तारणियो-(न०) १ विशाखा नक्षत्र। २ एक दिशा। तोरणि। स्पाराग।

तारावाटी-(ना०) जयपुर का एक प्रदेश जहाँ पहले तामरों का राज्य था। तवरावटी।

तोरू-(ना०) एक बल और तरकारी बनाने के काम में आने वाला उसका लंबा फल। तुरई।

तोल-(न०) १ वजन। जोख। तौल। २ तौलने के काम में आने वाला साधन। बाट। ३ महिमा। महत्त्व। ४ प्रतिष्ठा। ५ वातावरण। ६ रहस्य। मर्म। ७ अनुमान। तुमार। ८ वजन। भार। बोझ। ९ समानता। बराबरी। १० जाँच। परीक्षा। ११ निश्चित धारणा। १२ बाट। बटखरा। १३ ढंग। तरीका। (वि०) समान। बराबर।

तोल जोख-(न०) १ तौल और मुलाहिजा। २ तौर तरीका। ढंग।

तोलड़ी-(न०) मिट्टी की हाँडी। हँड़िया। हाडो। तामलो।

तोलणो-(क्रि०) १ तौलना। जाँचना। वजन करना। जोखणो। २ उठाना। ३ शस्त्र उठाना। ४ तुलना करना। ५ अनुमान लगाना। अंदाजणो।

तोल-तुमार(न०) १ ढंग। २ मन की बात। ३ व्यवस्था। ४ वातावरण। परिस्थिति।

तोला-(न०ब०व०) छोटे मोटे (कम ज्यादा) सभी प्रकार के बटखरे। छोटे मोटे बाट।

तोलाई-(ना०) १ तौलने का काम। २ तौलने का पारिश्रमिक। तुलाई।

तोला छराई-(ना०) १ पुराने बटखरों को यथा समय जाँच कराने का सरकारी नियम। २ पुराने (घिस जाने से) बटखरों की जाँच करवा कर यथा परिमाण करा के छाप लगवाने के पारिश्रमिक रूप में लिया जाने वाला सरकारी टैक्स। तोला की जाँच करवाने का कर।

तोलाट-(वि०) तौलने का काम करने वाला। तोलने वाला।

तोलाण-(न०) तौलने का काम। तौलने की क्रिया। तुलाई।

तोलावट-न० तुलावट।

तोलावणो-(क्रि०) तौल करवाना। तुलवाना।

तोले-(अ०य०) तुलना में। समानता में। बराबरी में। (वि०) तुल्य। समान। बराबर।

तोलो-(न०) बाट। तोल।

तोळो-(न०)१ बारह माशा का तौल। एक कलदार रुपया भर वजन। तोला। २ बारह माशा का एक बाट।

तोस-(न०) १ संतोष। सब्र। सबर। २ सत्कार।

तोसक-(न०) रुईदार मोटा गद्दा। तोशक।

तोसणो-(क्रि०) १ संतोष कराना। सब्र कराना। सतोखणो। २ आदर सत्कार आदि से खुश करना।

तोसदान-(न०) दारू गोली आदि रखने की सिपाहियों की थैली।

तोसाखानो-(न०) अमीरों के वस्त्राभूषण रखने का भंडार।

तो सारू-(क्रि०वि०) १ तेरे लिये। थारै सारू। २ तेरे से। ३ तेरे समान।

तोसू-(सर्व०) तेरे से। थासूं। थारसूं।

तोसो-(न०) संबल। भातो।

तोहमत-(ना०) १ झूठा कलंक। २ झूठा अभियोग। असत्य आरोप। आरोप।

तो हिज-(अ०य०) तब ही।

तो ही-(अ०य०) १ तो भी। २ फिर भी।

तो हूंत-(सर्व०) तेरे से। थासूं। थारसूं।

तौक-(ना०) अपराधी के गले में पहनाने की लोहे की भारी हँसली।

तौकीर-दे० तौर ।

तौर-(न०)१ अहंकार । मिजाज । २ मान । प्रतिष्ठा । ३ आतंक । प्रभाव । ४ तेज । ५ ढंग । चाल चाल ढाल । ६ प्रकार । भांति ।

त्याग-(न०) १ सन्यास । २ उत्सर्ग । दान । ३ कुरबानी । आत्मत्याग । ४ विरक्ति । ५ विवाह मौसर आदि क्रियावरों के अवसर पर नेगियों को दिया जाने वाला नेग । ६ नेग में दी जाने वाली वस्तु ।

त्यागणो-(क्रि०) १ छोड़ना । तजना । त्यागना ।

त्याग करणो-(मुहा०) १ छोड़ना । २ दान देना ।

त्याग चुकाणो-(मुहा०) १ नेग चुकाना । याचक जाति का दापा देना । २ दान करना ।

त्यागपत्र-(न०) १ इस्तीफा । २ दानपत्र ।

त्यागवीर-(वि०) १ बड़ा दानी । दानवीर । २ त्यागी ।

त्यागिया तिलक-(न०) दानियों में श्रेष्ठ दानी । दानियों में शिरोमणि । बहुत बड़ा दानी ।

त्यागी-(वि०) १ स्वार्थ अथवा सांसारिक सुखों को छोड़ने वाला । विरक्त । त्यागी । २ दानी । दातार ।

त्यार-(वि०) तय्यार ।

त्यारा-(क्रि०वि०) तब । तर ।

त्यारी-दे० तयारी ।

त्याव-(न०) तीसरा भाग । तिहाव । तिहाई ।

त्यावली-(ना०) १ रुपये और आनों को लिखने के संकेत रूप में उनके आगे लगाई जाने वाली खड़ी अर्द्ध चन्द्राकार रेखा । रुपयों आनों का दर्शाने वाला रेखा । ')' । २ चौथा भाग ।

त्यावलो-(न०) एक तृतीयांश । तृतीयांश । तीसरा भाग । एक पाव ।

त्या-(क्रि०वि०) १ वहां । त्युं । ज्यु । २ वहां । उठे । (सव०) १ उन । २ उनका । ३ उनके । ४ उनको । ५ उन्होंने । ६ जिनको । तिनको ।

त्यांरी-(सव०) उनकी । उणांरी । वांरी ।

त्यांरै-(सव०) उनके । उणांरै । वांरै ।

त्यांरो-(सव०) उनका । उणांरो । वांरो ।

त्यां लग-(अव्य०) तब तक । जठ तांई ।

त्यां सूं-(सव०) उनसे । उणांसूं । वांसूं ।

त्याह्-दे० त्या ।

त्रइ-(वि०) तीन ।

त्रई-(वि०) १ तीन प्रकार का । २ तीन । (ना०) १ तीन का समाहार । २ त्रिपुटी ।

त्रट-(ना०) १ प्यास । २ लोभ ।

त्रण-(वि०) तीन । (न०) तृण । घास । चारो ।

त्रणकाळ-(न०) जिस वर्ष में घास की पैदावार कम हो । घास के अभाव का वर्ष । घास का दुष्काल ।

त्रणदीठ-(न०) महादेव । शिव । त्रिनेत्र ।

त्रणनण-(न०) महादेव ।

त्रदस-(वि०) १ तेरह । २ तीस ।

त्रपा-(ना०) शरम । लाज ।

त्रबंक-(वि०) १ तीन बल (टेढ़ापन) वाला । त्रिवंक । त्रिवक्र । २ बलवान । जबर दस्त । (न०) वीरश्रेष्ठ । वीराधिवीर । २ तीनबांक । त्रिवक्र । ३ एक डिंगल छंद ।

त्रबंकड़ो-(न०) डिंगल का एक छंद ।

त्रबाक-(न०) १ ऊंचे किनारों की बड़ी थाली । भोजन करने की ऊंचे किनारों की बड़ी थाली । थाल । २ नगाड़ा । त्रबाळ । त्रबक ।

त्रभाग-*(न०)* भाला । भालो ।
त्रभागो-*(न०)* भाला ।
त्रमभड-*(ना०)* वर्षा की खूब झडी । जोर की वर्षा ।
त्रमागळ-दे० त्रबागळ ।
त्रमाट-*(न०)* नगाडा ।
त्रमाळ-दे० त्रबागळ ।
त्रय-*(वि०)* तीन । *(न०)* तीन का समूह ।
त्रयलोचरण-*(न०)* त्र्यबक । महादेव ।
त्रसरणो-*(क्रि०)* १ भयभीत होना । डरना ।
त्रसकाय-*(न०)* जैन मतानुसार छ जाति के जीवो मे से एक ।
त्रसणा-*(ना०)* १ तृष्णा । तिसणा । २ प्यास । तिरस ।
त्रसरेणु-*(न०)* चमकता हुआ वह सूक्ष्म कण जो छेद मे से आती हुई धूप मे दिखाई देता है ।
त्रसळ-दे० तिसळ ।
त्रसीग-*(वि०)* जबरदस्त । बहादुर । *(न०)* सिंह ।
त्रस्त-*(वि०)* १ भयभीत । डरा हुआ । २ सताया हुआ । श्रमित ।
त्रह-दे० त्रहक ।
त्रहक-*(ना०)* ढोल नगाडा आदि के बजने की ध्वनि ।
त्रहकणो *(क्रि०)* ढोल, नगाडा आदि का बजना ।
त्रहणो-*(क्रि०)* १ नगाडा बजना । २ डरना ।
त्रहाव-दे० त्रहव ।
त्रहु-*(वि०)* १ तीनो ही । तीन ।
त्रंबक-*(न०)* १ ढोल । २ नगाडा । ३ महादेव । शिव । त्र्यम्बक ।
त्रंबका*(ना०)* १ पार्वती । २ दुर्गा ।
त्रंबा-*(ना०)* १ गाय । २ पानी ।
त्रंबागळ-*(न०)* १ नगाडा । २ ढोल । ३ युद्ध वाद्य । युद्ध मगल ।
त्रंबाट-*(न०)* नगाडा ।
त्रंबाळ-*(न०)*नगाडा । *(वि०)*ताम्र सबधी ।
त्रंबाळवो-*(न०)* १ ढोल । २ नगाडा । ३ ताम्र सबधी ।
त्रंबाळो-*(न०)* नगाडा । *(वि०)* ताम्रवत् । ताबे का ।
त्राक-दे० त्राग ।
त्राकडी-दे० ताकडी ।
त्राकळो-दे० ताकळा ।
त्राग-*(न०)* १ धागा । डोरा । तांतण । २ यज्ञोपवीत । जनोई ।
त्रागो-*(न०)*१ धागा । डोरा । २ जनऊ । यज्ञोपवीत । जनोई । ३ अनशन । ४ धरना । ५ नाराजी ।
त्राछटणो-दे० ताछटणा ।
त्राछणो-*(क्रि०)* १ मारना । काटना । २ छालना ।
त्राजवो-दे० त्राजुओ ।
त्राजुओ-*(न०)* तराजू । तकडी । ताकडी ।
त्राजो-दे० त्राजुआ ।
त्राट-*(न०)* १ टाट । खोपडी । २ गर्जन । ३ वर्षा की झडी । जोर की वर्षा । ४ आक्रमण । ५ शस्त्र का प्रहार । ६ प्रहार पर प्रहार । झडी ।
त्राटक-*(न०)*१ हठ योग मे बिन्दु पर दृष्टि जमाने की एक यौगिक क्रिया । २ वर्षा की झडी । ३ शस्त्रो के प्रहारो की झडी ।
त्राटकणो-*(क्रि०)* १ आक्रमण करना । २ अचानक आक्रमण करना । ३ गुस्सा करना । खीजना । ४ बादल का जोर से गरजना । ५ मूसलाधार वर्षा होना । ६ सिंह का आक्रमण के साथ गरजना ।
त्राटकी-*(न०)* आक्रमण । २ आपत्ति वाला अचानक सकट । ३ अचानक दुखदायी शोक समाचार । ४ एक डिंगल छद ।

त्राटणो-*(क्रि०)* १ आक्रमण करना। २ क्रोध में जोर से बोलना। ३ जोर से गरजना।

त्राटी-*दे०* टाटी।

त्राठणो-*(क्रि०)* १ भागना। दौड़ना। २ विलय होना।

त्राड-*(ना०)*१ जोर से रोना। रुदन। २ गर्जना। ३ भय। डर।

त्राडणो-*(क्रि०)* १ गर्जन करना। २ उत्साहित होना। ३ उत्साहित करना। ४ ताड़ना। ५ धिक्कार देना। ६ मारना। ७ काटना। तोड़ना। ८ जोर से रोना चिल्लाना। ९ डराना। १० धमकाना।

त्राड़कणो-*दे०* ताड़कणो।

त्राण-*(न०)*१ कवच। २ ढाल। फलक। ३ रक्षा। रक्षण। बचाव। भय से छुटकारा। ४ शरण।

त्राणो-*(वि०)* त्राण करने वाला। रक्षक।

त्रात-*दे०* त्राता।

त्राता-*(वि०)* १ रक्षक। २ उद्धार करने वाला।

त्राप *(न०)* १ ऊँट की लात। २ कुदान। छलांग। ३ तेज दौड़। ४ तमाचा। थप्पड़। ५ दुख। कष्ट। ताप। ६ भय। डर। आतंक।

त्रापड-*(ना०)* १ छलांग। कुदान। २ ऊँट की लात। ३ ऊँट की तेज दौड़। ४ जमीन पर बिछाने का मोटा कपड़ा। ५ मृतक की शोक सूचक बैठक।

त्रापड़णो-*(क्रि०)* १ कूदना। छलांग मारना। २ ऊँट का लात मारना। ३ ऊँट का तेज भागना।

त्रापो-*दे०* तापो।

त्रास-*(न०)* १ डर। भय। २ धाक। ३ दुख। कष्ट। सताप। ४ जुल्म। त्रास। ५ परेशानी। हैरानी।

त्रासणो-*(क्रि०)*१ डराना। त्रास दिखाना। २ मारना ३ तराशना। ४ हैरान करना। ५ हैरान होना। ६ डरना।

त्रासियो-*(वि०)* १ तृषित। २ पीड़ित।

त्रासो-*(वि०)* १ प्यासा। २ डरा हुआ। *दे०* तासो।

त्राहि-*(अव्य०)* रक्षा करो। बचाओ।

त्राहिमाम-*(अव्य०)* मेरी रक्षा करो।

त्रांबको-*दे०* त्र्यांबको।

त्रांबागळ-*दे०* त्रांबाळ।

त्रांबाट-*(न०)* नगाड़ा।

त्रांबाटणो-*दे०* तांबाडणो।

त्रांबाडो-*दे०* तांबाडो।

त्रांबाळ-*(न०)* १ तांबे के कूंडे (टोप) पर मढ़ा हुआ बड़ा नगाड़ा। २ तांबे के घेरे पर मढ़ा हुआ बड़ा ढोल। *(वि०)* १ तांबा से संबंधित। २ तांबा का बना हुआ। ताम्रनिर्मित।

त्रांबाळो-*दे०* त्रांबाळ।

त्रांस-*(ना०)* १ वह सीध जो लक्ष्य से इधर उधर हो। २ टेढ़ाई। टेढ़ापन। वक्रता। बांक।

त्रांसो-*(वि०)* १ जिसकी सीध लक्ष्य पर न हो। २ टेढ़ा। वक्र। बांको। बांकों।

त्रि-*(वि०)* तीन।

त्रिक-*(न०)* तीन का समुदाय।

त्रिकळ-*(न०)* १ तीन मात्राओं का शब्द। दोहे का एक भेद।

त्रिकळस-*(न०)* १ शिखर के किले में नौ चौकियों का ऐतिहासिक गवाक्ष। २ श्रेष्ठ कारीगरी का गवाक्ष जिसके ऊपर स्वर्ण के तीन कलश चढ़े हुए होते हैं और चित्रकारी की हुई होती है।

त्रिकाळ-*(न०)* १ भूत भविष्य और वर्तमान तीनों काल। २ प्रातः मध्याह्न और सायं-तीनों समय। ३ संध्या। सांझ। *(वि०)* १ तीनों ही अवस्था में (जीवन

भर) पागल का जीवन जीने वाला । २ बिलकुल पागल । ३ महामूर्ख । गहलो ।
त्रिकालज्ञ–दे० त्रिकालदर्शी ।
त्रिकालदर्शी–(वि०) १ तीन काल की जानने वाला । त्रिकालज्ञ । २ तीनों कालों का देखने वाला ।
त्रिकाल सन्ध्या–(ना०) १ प्रात, मध्याह्न और साय का समय । २ प्रात, मध्याह्न और साय–इन तीनों समयों मे किये जाने वाले सन्ध्या तर्पण आदि दैनिक धार्मिक कर्मकाण्ड । ३ ठीक सन्ध्या का समय । ऐन सन्ध्या । ४ तीनों सन्ध्याओं का समाप्ति विधान ।
त्रिकुट–दे० त्रिकुट गढ ।
त्रिकुटगढ–(न०) १ लंका । २ लंका का गढ । ३ लंका का त्रिकुटाचल पर्वत ।
त्रिकुटाचल–दे० त्रिकुट गढ ।
त्रिकुटो–(न०) सोठ मिर्च और पीपर का मिश्रित चूर्ण ।
त्रिकुटबंध–(न०) पिंगल का एक छन्द ।
त्रिकोण–(न०) तीन कोनों वाली आकृति । तीन कोनों वाली कोई वस्तु । त्रिभुजक्षेत्र ।
त्रिकोणगढ–दे० त्रिकुट गढ ।
त्रिकोणियो–(वि०) तीन कोनों वाला । तिकोणियो ।
त्रिखा–(ना०) १ प्यास । तृषा । तिरस । २ तृष्णा ।
त्रिखावंत–(वि०) तृषावान् । प्यासा । तिरसो ।
त्रिगूणियो–दे० तिगूणियो ।
त्रिगुण–(न०) १ सत्व रज और तम ये तीन गुण । (वि०) तिगुना । तीन गुना । तिगणो ।
त्रिगुणनाथ–(न०) त्रिगुणपति । परमेश्वर ।
त्रिचख–(न०) महादेव । त्र्यम्बक । त्रिचखु ।
त्रिजटा–(ना०) रावण की बहिन का नाम । अशोक वाग में सीता की चौकी करने वाली राक्षसी ।
त्रिजड–(न०) १ तलवार । खड्ग । २ कटारी । ३ कोई शस्त्र ।
त्रिजडहथ–(वि०) तलवार धारी । शस्त्र धारी । खडगहथो ।
त्रिजडी–(ना०) १ तलवार । तरवार । २ कटारी ।
त्रिजात–(वि०) तीसरी जाति से उत्पन्न । व्यभिचार से उत्पन्न । (न०) जातिसंकर ।
त्रिजात रो मूत–(न०) १ वर्णसंकर । २ एक गाली ।
त्रिजामा–(ना०) रात । रात्रि ।
त्रिणकाळ–(न०) वह वर्ष जिसमें घास की उपज कम अथवा बिल्कुल नहीं हुई हो । घास के अभाव वाला वर्ष । तृण दुष्काल ।
त्रिण–(न०) १ तृण । घास । २ तिनका । सींक । (वि०) तीन ।
त्रिणमात्र–दे० तिणमात ।
त्रिणि–दे० त्रिण ।
त्रिणेव–(अव्य०) तीनों ही । तीन ही ।
त्रिणो–(न०) १ तृण । तिनका । २ घास । चारा ।
त्रिण्ह–(न०) तीन की संख्या । (वि०) तीन ।
त्रिताल–(न०) वाद्य का एक ताल । तिताला ।
त्रितीया–(ना०) मास के पक्ष का तीसरा दिन । तृतीया तिथि ।
त्रिदस–(न०) १ देवता । २ त्रिदश । शिव । (वि०) तरह ।
त्रिदेव–(न०) ब्रह्मा विष्णु और महादेव ।
त्रिदोष–(न०) वात् पित्त और कफ–शरीर के ये तीन दोष ।
त्रिधा–(अव्य०) १ तीन प्रकार से । २ तीन ओर से । ३ तीन तरफ से ।
त्रिधार–(न०) १ भाला विशेष । २ तिधारा । ३ तीन धाराएँ ।
त्रिधारी–(न०) तीन धारों वाली रति । अरगती । तिधारी ।
त्रिधारो–(न०) एक प्रकार का भाला । (वि०) तीन धाराओं वाला ।

त्रिनेत्र-*(न०)* महादेव । शिव ।

त्रिपट-*(वि०)* १ तिगुना । २ तीन परतो वाला । ३ दुष्ट । ४ कष्टदायी ।

त्रिपत-*(वि०)* तृप्त । सतुष्ट ।

त्रिपथ-*(न०)* १ जहाँ तीन मार्ग मिले वह स्थान । २ स्वर्ग, पाताल और मृत्युलोक ।

त्रिपथगा-*(ना०)* गगा ।

त्रिपथा-*(ना०)* गगा । त्रिपथगा ।

त्रिपरो-*(न०)* डिगल का एक छद ।

त्रिपाठी-*(न०)* ब्राह्मणो की एक अल्ल । *(वि०)* तीन वेदो का पठन करने वाला । त्रिवेदी ।

त्रिपिटक-*(न०)* सुत्त विनय और अभिधाम इन तीनो प्रकार के बौद्ध ग्रथो का समूह ।

त्रिपुरार*(न०)* त्रिपुरारि । महादेव ।

त्रिपुड्र-*(न०)* तीन रेखाओ वाला शव तिलक । त्रिपुण्ड ।

त्रिपोळियो-दे० तिपोळियो ।

त्रिफला-*(न०)* हरे बहेडा और आँवला-इन तीनो का सामाहार या चूर्ण ।

त्रिबक-*(न०)*१ डिंगल का एक गीत छद । २ नगाडा ।

त्रिभग-*(न०)* भाला ।

त्रिभग-*(वि०)* १ जो पाँव कमर और गरदन इन तीनो जगहो से टेढ़ा हो । *(न०)* इस प्रकार की टेढ़ाइयो से खडे होने की स्थिति ।

त्रिभगी-*(न०)* १ एक छद । २ एक राग । ३ एक ताल । दे० त्रिभग ।

त्रिभाग-दे० त्रिभागो ।

त्रिभागो-*(न०)* १ भाला । २ तीन धार वाला शस्त्र ।

त्रिभाड दे० त्रिरमोड ।

वह स्थान
साथ ।

त्रिमासिक-(
त्रिया-*(ना०)*
त्रिलोक-*(न०*
मृत्यु और
त्रिलोकी-*(न*
का ।
त्रिलोकीनाथ
त्रिभुवनपति
त्रिलोचण-(
त्रिलोचन ।
त्रिलोचन-दे०
त्रिलोयण-*(न*
महादेव ।
त्रिवट-दे० तीव
त्रिवलि-*(न०)*
ऊपर पडने व
त्रिवाडी-*(न०)*
त्रिपाठी । ति
त्रिविक्रम-*(न०,*
त्रिविष्टप-*(न०,*
त्रिवणी-*(ना०)*
सरस्वती । २
सगम होता है
और सुषुम्ना-
त्रिवेदी-*(न०)* ती
२ ब्राह्मणो की
त्रिशक्ति-दे० त्रिश
त्रिशूल-*(न०)*तीन
त्रिशूर । त्रिशा
त्रिस-*(न०)* तृषा
(ना०)
तीन

सिलसिलेवार जमा कर रखी हुई (प्रायः एक जसी) वस्तुओं की राशि। (भू०कि०) १ हो गई। २ बनी। बन गई। रची।
थक-(न०) १ ढेर। राशि। थप्पी। २ समूह। झुंड। ३ थकान। थकावट।
थकइ-(श्रव्य०) १ से। २ थक। ३ होने से। होते। होने पर। थकां।
थकणो (क्रि०) १ परिश्रम से थकावट होना। क्लांत होना। थाकणो। २ दुर्बल होना। अशक्त होना। ३ कृश होना। दुबला होना। ४ ऊब जाना।
थका-दे० थकां।
थकाई-दे० थकाण। दे० थकांई।
थकाण-(ना०) थकान। थकावट। श्रान्ति। थाकेलो।
थकाणो-(क्रि०) १ श्रान्त करना। शिथिल करना। थकावणो। २ अधिक परिश्रम करवाना। ३ हैरान करना। ४ हराना।
थकार-(न०) थ अक्षर। थध्यो।
थकाव-दे० थकावट।
थकावट-दे० थकाण।
थकावणो-दे० थकाणो।
थकां-(श्रव्य०) १ होते हुए। रहते हुए। २ होने पर भी। रहने पर भी। ३ हुए भी। रह भी। ४ स्थिति में। होकर। ५ से।
थकांई-(श्रव्य०)१ हुए भी। होते हुए भी। २ रहते हुए भी। ३ से ही। से भी। थकेई।
थकित-(वि०) १ स्थगित। २ चकित। दिग्मूढ़। ३ थका हुआ। थाकोड़ो।
थकियोड़ो-(भू०कृ०) थका हुआ। श्रांत।
थकी-(श्रव्य०) १ लिए। वास्ते। २ रहती हुई। होती हुई। ३ के कारण। के द्वारा। से (प्रत्य०) १ से। २ में से।
थकीजणो-(क्रि०) १ थकने को मजबूर होना। २ थकना।
थके-दे० थका।
थकेई-दे० थकांई।
थकेड़ो-दे० थकियोड़ो।
थकेल-दे० थकेड़ो।
थकेलो-दे० थकेड़ो।
थको-(श्रव्य०) १ लगाया हुआ। किया हुआ। हुआ। २ होता हुआ। रहता हुआ। ३ होते हुए। रहते हुए। ४ के लिए। ५ के कारण। के द्वारा। ६ समान।
थकोड़ो-दे० थाकोड़ो। (स्त्री० थाकोड़ी)
थकोणो-(क्रि०)१ थका देना। २ हरा देना।
थकोवणो-दे० थकोणो।
थग-(न०) १ ढर। राशि। ढिगलो। २ थाह। ३ अंत। छेह। पार।
थग आवणो-(मुहा०) पार आना। समाप्त होना।
थग लागणो-(मुहा०) ढर लगना। ढिगलो होणो।
थघ-दे० थग।
थट-(न०)१ सेना। २ भीड़। ३ राशि। ढेर।
थट जमणो-(मुहा०) खूब भीड़ होना।
थटणो-(क्रि०) १ इकट्ठा होना। भीड़ करना। २ समूह रूप में प्रगट होना। ३ समूह के साथ प्रवेश करना। ४ डटे रहना। डट जाना। ५ शोभित होना। ६ सज्जित होना। ७ खदेड़ना। हटाना।
थट लागणो (मुहा०) १ भीड़ होना। २ ढेर लगना।
थटप-(न०) सेनापति।
थट्टू-दे० थट।
थट्टो-(न०) राजस्थान के पश्चिम में एक मरुस्थल। थड़ा। २ एक नगर। ३ समूह। थाट।
थड-(न०) १ धड़। २ तना। गोढ।

थडणो-*(क्रि०)* १ इकट्ठा होना । २ सामने आकर खडा होना । ३ प्रगट होना ।

थडवड-*(ना०)* १ लडाई । झगडा । खड़बड । २ लडखडाहट ।

थडवडणो-*(क्रि०)* १ लडना । झगडना । खड़बड़ना । २ युद्ध करना । ३ लट-सडाट ।

थडवडाट-*(ना०)* १ लडाई । हाथापाई । २ बोल चाल । खडखडाहट । ३ लड खडाना ।

थडी-*(ना०)*१ शिशु का बिना सहारे (पाँवो पर) खडे होने की स्थिति व क्रिया । यह । २ थप्पी । ढेर । गज ढग ।

थडो-*(न०)* १ मृतक के दाह स्थान पर उसके स्मरणार्थ बनाया गया देवल । देवळी । छतरी । २ श्मशान । ३ ऊट के पलान के नीचे लगी रहने वाली गद्दी ।

थण-*(न०)* १ गाय भैंस आदि का स्तन । थन । २ स्तन ।

थणक्ढ-*(वि०)* १ थन से निकला । तुरत का । ताजा (दूध) । २ धारोष्ण (दूध) । सेडक्ढ ।

थण चू घणी-*(अव्य०)* पाणिग्रहण को जाते समय दूल्हे का और युद्ध म जाते समय वीर का माता का स्तनपान करने की एक मध्यकालीन प्रथा । (माता अपने दूध की शक्ति और वंश की उज्वलता की स्तनपान करवा कर याद दिलाती है कि वह उसके दूध को लजायेगा नही और विजय करके ही लौटेगा) ।

थणाणी-*(ना०)*१ स्तना वाली । २ स्त्री ।

थणियाळो-*(ना०)* गाय भैंस आदि थन वाला मादा पशु । *(वि०)* स्तना वाली ।

थणी-*(ना०)* १ स्त्री । २ स्तनो वाली

थत-*दे०* थित ।

थत वायरो-*दे०* थत वाहरो ।

थत वाहरो-*(वि०)* १ अस्थिर स्वभाव वाला । स्थिति रहित । मतिहीन । २ अविश्वसनीय । ३ निधन ।

थतवाळो-*(वि०)* सम्पन्न ।

थतहीणो-*(वि०)* निधन ।

थतियो-*(क्रि०वि०)* निरतर । स्थायी रूप से । रोजीना । थितिया ।

थत-*(अव्य०)* होते हुए ।

थतो-*(अव्य०)* होता हुआ । बनता हुआ ।

थत्ती-*(ना०)* किसी वस्तु का करीने से लगाया हुआ ढेर । चिन कर रखी हुई नाज आदि से भरे हुए थैलो की राशि ।

थथेडणो-*(क्रि०)* मोटा लेप करना ।

थथोबो-*(न०)*१ दम दिलासा । तत्तोथेबो । तत्तोथबो । २ झाँसा । झूठा आश्वासन । ३ झूठा भरोसा ।

थ था-*(न०)* थ वर्ण । थकार ।

थन *दे०* थण ।

थनक-*(न०)* नाचने का शब्द । थनक-थनक ।

थनथन-*(अव्य०)* नाचने की आवाज ।

थप उथप-*दे०* थाप उथाप ।

थपकणो-*(क्रि०)* १ शरीर पर हलके हाथ से ठोकना । धीरे धीरे ठोकना । २ पुच कारना ।

थपकियो-*(न०)* कुम्हार का वह थपना जिससे मिट्टी के गीले बरतनो को ठोक ठोक कर सँवारता है । थपियो । टपलो ।

थपकी-*(ना०)* हथेली का हलका आघात । थापी ।

थपणो-*(क्रि०)* १ स्थापित होना । २ स्थापित करना । ३ निश्चित होना । ४ थपथपाना ।

थपथपियो-*(न०)* कुम्हार ।

थपथपी-*(ना०)* थपकी ।

थपाणो-*(क्रि०)* स्थापित करना ।

थपियो-*दे०* थपकियो । टपलो ।

थपेडणो-*(क्रि०)* १ थपाना । थपथपाना ।

थप्पड़-(ना०) चांटा। तमाचा। भापड़। थप्पड़। थाप। थापड़ी।
थप्पणो-(क्रि०) १ स्थापित करना। थापणो। २ स्थापित होना। थपणो।
थप्पी-(ना०) १ एक के ऊपर एक रख कर बनाया हुआ गंज। करीने से रखी हुई वस्तुओं का ढेर। व्यवस्थित राशि। २ एक समान वस्तुओं की रखी की हुई श्रेणी। थत्ती।
थबोळो-(न०) १ पानी का धक्का। जोर की लहर। हिलोरा। हबोळो। हिलोळो। २ लहर। तरंग।
थम-(न०) १ स्तंभ। थंभा। २ रोक। रुकावट।
थमणो-(क्रि०) १ ठहरना। २ रुकना। ३ प्रतीक्षा करना।
थया-(भू०क्रि०) थयो का बहुवचन रूप। हुए। होगये।
थयो-(भू०क्रि०) होणो' अथवा 'होवणो' (हिंदी में होना) क्रिया का भूतकालिक रूप हुओ (हिंदी में हुआ' या 'होगया अर्थसूचक पर्याय।) हुआ। होगया।
थर-(ना०) मलाई। साढ़ी। बालाई। थरकण। (न०) १ तह। परत। स्तर (कपड़े आदि की) २ दीवार की चिनाई में ईंटों या पत्थर की एक तह। ३ चढ़ती उतरती (बड़ी छोटी) चूड़ियों का सैट (जत्था) ४ एक के ऊपर एक की ऊँची चुनाई। थप्पी। ५ मैल आदि की जमी हुई परत। पपड़ी। ६ राशि। ढेर।
थरक-(न०) १ आश्चर्य। विस्मय। अचरज। २ डर। भय।
थरकण-(ना०)१ मलाई। साढ़ी। बालाई। थर। २ कंपन। धूजणी।
थरकणो-(क्रि०)१ थिरकना। २ कांपना। धजणो।
थरकमान-(वि०) आश्चर्यान्वित। चकित थकित।
थरथर-(ना०) कंपन। धूजणी।
थरथरणो-(क्रि०) कांपना। थर्राना। धूजना। धूजणो।
थरथराट-(न०) थरथराहट। कंपन। धूजणी।
थरथराटी-(ना०) कँपकँपी। कंपन। धूजन। थरथराहट।
थरथराणो-(क्रि०) १ भय या ठंडी से कांपना। २ कांपना।
थरपणा-(ना०) स्थापना। थापना।
थरपणो-(क्रि०) स्थापित करना। स्थापना करना। थापणो।
थरमो-(न०) एक प्रकार का कपड़ा। धुलमा। धुरमो। थिरमो।
थरहरणो-(क्रि०) कांपना। धूजना।
थळ-(न०) १ मरुस्थल। २ स्थान। स्थल। ३ टीबा। धोरो। ४ भूमि।
थळचट-(वि०) १ थालीभर खाने वाला। बहुत खाने वाला। थाली चट्टू। २ पराया धन हजम करने वाला।
थळचर-(न०) पृथ्वी पर रहने वाले जीव।
थळणो-(क्रि०) १ तैयार करना। २ सँवारना। दुरस्त करना। (न०) तैयार किये जारहे आभूषण को सवारने या सही करने का एक औजार। थलिया।
थळपति-(न०) राजा।
थळवट-(न०) १ थल प्रदेश। थळ। थळी। २ स्थलभाग। जमीन भाग। थळवाट। ३ जमीन।
थळवाट-दे० थळवट।
थळियो-(वि०) १ थल प्रदेश का निवासी। २ गँवार। मोथो। (न०) सुनार, ठठेरो का एक औजार। थलना। थळणो।
थळी-(ना०) १ मारवाड़ का एक भाग। २ राजस्थान का एक प्रदेश। ३ रेगीस्तान। मरुभूमि। थल प्रदेश।

थळीदेस-(न०) १ राजस्थान का रेगीस्तानी भाग। २ मरुप्रदेश। मारवाड़।
थळेचर-दे० थळचर।
थवरणा-(क्रि०) होना।
थह-(ना०) १ गुफा। कन्दरा। २ स्थान। जगह। ३ सुरक्षित स्थान। ४ किला। गढ़। ५ गहराई का अंत। थाह।
थहणा-(क्रि०) होना।
थही-दे० थई।
थड-(न०) १ समूह। २ सेना। ३ ढेर।
थडणो-(क्रि०) १ भगाना। खदडना। २ ढेर लगाना। ३ भरना। पूरना। ४ इकट्ठा होना।
थडो-(न०) १ सेना। २ समूह। ३ ठठ्ठा।
थब-दे० थभ।
थभ-(न०) १ स्तम्भ। थंभा। थाभा। थांभलो। २ रोक। रुकावट। ३ तोरण।
थभण-(न०) स्तम्भन। रुकावट।
थभणो-(क्रि०) रुकना। ठहरना। रुकणो।
थभावण-(वि०) स्थिर रखने वाला। थामने वाला।
थभावणो-(क्रि०)१ रुकवाना। २ रोकना। ३ स्थिर रखवाना। ४ ठहराना।
थभो-(न०) थंभा। खंभा। थाभो। थाभलो।
था-(क्रि०भू०) भूतकाल एक वचन क्रिया थो' का बहुवचन रूप। 'होणो' क्रिया का भूतकालिक बहुवचन रूप। थे। (प्रत्य०) अपादान कारक की विभक्ति। से। (सर्व०) तुम। तरे।
थाई-(वि०) स्थायी।
थाक-(ना०) १ थकावट। थकान। थाकेलो। २ श्रम।
थाकरणा-(न०ब०व०) विवाह आदि मांगलिक अवसरों की निर्विघ्न समाप्ति पर बरात की विदाई के समय तथा बदोला बदाली की शोभा यात्रा के समय बजाये जाने वाले ढोल के विशेष विशेष प्रकार।
थाकणो-(क्रि०) १ थकना। क्लान्त होना। २ दुबला होना। ३ अशक्त होना। कमजोर होना। ४ हैरान होना। ५ कम पड़ना।
थाकल-(वि०) १ थका हुआ। २ दुबला। ३ निधन।
थाकी-(सव०) तरो। थारो।
थाके-(सर्व०) तरे।
थाकेडो-दे० थाकोडो।
थाकेली-दे० थाकोडी।
थाकेलो-(न०) थकान। थकावट। श्रांति। थाक। (वि०) थका हुआ। श्रांत। शिथिल। थाकोडो।
थाको-(सव०) तरा। थारो। तेरो। (वि०) थका हुआ। थाकोडो।
थाकोडी-(वि०) १ दुबली। क्षीण। २ थकी हुई। थाकेली।
थाकोडो-(वि०) १ थका हुआ। श्रांत। २ क्षीणकाय। दुबल। कृश। ३ निधन।
थाका मांदो-(वि०) १ प्राय बीमार। प्राय अस्वस्थ रहने वाला। २ बहुत थका हुआ। अधिक श्रान्त। ३ दुबला। कृश। ४ कमजोर। निबल। ५ निबल स्थिति वाला। निधन।
थाग-(न०)१ पानी की गहराई की सीमा। थाह। २ गहराई का तल। ३ अंत। छेह। पार। थाह। ४ किनारा।
थागड-(न०) १ वाद्य का एक ताल। २ नृत्य की एक गति। ३ वाद्य की थापी के साथ पाँव उठाकर चलने की एक क्रिया। ४ धीमी चाल। मंद गति। ठाट से चलने की एक क्रिया। ५ वाद्य और नृत्य का अनुकरण शब्द। ६ ताताथई। ताथई।
थागड थया-(न०) १ नाच और गाना। २ वाद्य का ताल। ३ मौज मजा। तागड़ धिन्ना।

थागडदा–दे० थागड थया ।
थागणा–(क्रि०) पार पाना । थाह पाना ।
थाग लेणो–(मुहा०) १ पता लगाना । २ छेद लेना । ३ गहराई तक पहुँचना ।
थागियळ–(वि०) १ जिसका थाह नहीं पाया जा सके । २ जिसका थाह मिल गया हो । (न०) समुद्र ।
थाघ–दे० थाग ।
थाट–(न०) १ समूह । दल । २ सेना । फौज । ३ ठाट । शान । तड़कभड़क । ४ आराम । मजा । आनंद । ५ समृद्धि । ६ रचना । बनावट । ७ उत्सव । समारंभ । ८ अधिकता । पुष्कलता । ९ न्यूनाभाव । १० बैलगाडी के नीचे का भाग । ११ पशु समूह । १२ गायों के ठहरने का स्थान । बाड़ा । वाड़ा । १३ स्वर समुदाय । (संगीत) ।
थाटणो–(क्रि०)१ थट्ट लगाना । २ निर्माण करना । ३ शोभित करना ।
थाटथंभ–(न०) १ सेना-नायक । २ वीर । योद्धा ।
थाट बाट–दे० ठाट बाट ।
थाटवी–(न०) पाटवी (युवराज) का छोटा भाई । (पाटवी का उलटा या अनुकरण)
थाड–दे० थाड या ठाढ ।
थाडो–दे० ठाढा ।
थाढ–(ना०) ठंड । शीत । सरदी । ठाढ ।
थाढो–दे० ठाढा ।
थाण–दे० ठाण ।
थाणादार–(न०) पुलिस थाने का मुख्य अधिकारी । पुलिस सब इंसपक्टर । थानेदार ।
थाणापती–(न०) १ स्थान रक्षक देवता । क्षेत्रपाल । ग्राम-देवता । २ एक ही स्थान पर रहने वाला । ३ सर्प ।
थाणो–(न०) १ पुलिस थाना । २ आल-वाल । थाँवला । ३ मुकाम ।

थाती–(ना०) १ संचित धन । पूंजी । २ अमानत । धरोहर । अनामत ।
थान–(न०) १ स्थान । २ निवास । ३ किसी लोक देवता की मूर्ति का स्थान या मंदिर । ४ कपडे की निश्चित लंबाई का टुकडा । ताका । ताको ।
थानक–(न०) १ स्थान । २ देव-स्थान । ३ लोक देवता का चबूतरा । ४ तेरापंथी या बाईसटोला जैन साधुओं के ठहरने रहने का स्थान ।
थानकवासी–(न०) १ एक जैन सम्प्रदाय । २ थानक में रहने वाला ।
थान निमठ–(वि०) मूर्ख ।
थानूं–दे० थानै ।
थानै–(सर्व०) तुम्हें । तुमको ।
थाप–दे० १ थप्पड । झापट । २ स्थापन करने की क्रिया ।
थाप उथाप–(वि०)१ किसी को उच्च पद पर स्थापन और वहां से उत्थापन करने की शक्ति वाला । २ स्थापित किये हुए को उखाड़ने वाला । (न०)१ अधिकार । २ निर्णय करने का अधिकारी । ३ निर्णय ।
थाप उथापण–दे० थाप उथाप ।
थापट–दे० थप्पड ।
थापटणो–(क्रि०) १ थप्पड मारना । २ मारना । ३ थपड़ना ।
थापडी–(ना०) गोबर को थपेड़ कर बनाई हुई टिकिया । उपला । थेपड़ी । २ थप्पड़ । चांटा । थाप ।
थापण–(न०) १ स्थापन । २ माल । जायदाद । पूंजी । थाती । ३ घर जमा आदि अचल संपत्ति । ४ रहन रखी हुई वस्तु । थाती । धरोहर । गिरवी ।
थापण उथापण–दे० थाप उथाप ।
थापणो–(क्रि०) १ स्थापित करना । थापना । कायम करना । २ प्रतिष्ठित करना । ३ उपला थपना । ४ ... करना ।

निश्चित करना। ५ धापना। ६ स्पष्ट मानना। प्रहार करना।
थापन-(न०) स्थापन।
थापना-(ना०) १ किसी देव मूर्ति को प्राणप्रतिष्ठा करके मंदिर में या स्थान पर स्थापना। २ नवरात्रि में प्रथम दिन दुर्गा पूजा के निमित्त की जाने वाली घटस्थापना। ३ प्रतिष्ठा महोत्सव। ४ स्थापनादिवस। ५ अधिकार।
थापनाकारज-(न०) १ स्थापना करने या कराने वाला। २ स्थापनाकार्य।
थापन्न-(वि०) १ स्थापित किया हुआ। २ अपड़ा हुआ।
थापलणो-(क्रि०) १ थपड़ना। २ प्यार में थपकी देना। ३ उत्साह बढ़ाना।
थापी-(ना०) १ ढालक आदि वाद्यों पर लगाई जाने वाली थापी। २ हिमायत। ३ शह। उत्तेजन। उकसाव। ४ उभार। बढ़ावा। ५ मदद।
थापो-(न०) १ सिंह चीते आदि हिंसक पशुओं के अगले दोनों पाँवों के बीच के ऊपर का भाग। वक्षस्थल। २ गीला रोली में लगाया हुआ हथेली का छापा। थापा। ३ ओढनी आदि वस्त्रों पर छपाई जरी तथा कसीदे का कोई गोल बनावट।
थावो-(न०) १ किसी काम के लिये किसी के पास जाने पर, उसके नहीं बनने की निष्फलता। २ व्यर्थ आने जाने की क्रिया। चक्कर। आंटा। ३ हैरानी। परेशानी।
थावोखाणो-(मुहा०)१ व्यर्थ आना जाना। २ चक्कर खाना। ३ आंटा खाना।
थाम-(न०) १ थंभ। स्तंभ। थांभो। २ रोक। अवरोध।
थामणो-(क्रि०) १ रोकना। २ खड़ा करना। ३ पकड़ रखना।
थाम पूजा-(ना०) ... पूजा।
थामली-(ना०) थांभला।
थामलो-(न०) थांभो।
थाय (क्रि भू०) होना ... रूप। ... हुए और होते हैं।
थाया-(भू०क्रि०) थयो का ... बहुवचन रूप। हुए। थया। हुआ।
थारली-(सर्व०) तेरी। थारी।
थारलो-(सर्व०) तेरे वाला। तेरा। थारो।
थारी-(सर्व०) तेरी। थारी।
थारी म्हारी-(अव्य०) १ तेरी और मेरी का भ्रम। भ्रमजाल। माया जाल। तेरी मेरी। २ अधम प्रकार की गाली-गलौज। मम्मो चच्चो।
थारे-(सर्व०) तेरे।
थारो-(सर्व०) तेरा।
थाळ-(न०) १ बड़ी थाली। २ ठाकुरजी के नैवेद्य का थाल। ३ ठाकुरजी को थाल रखते समय गाया जाने वाला स्तोत्र गान।
थाल-(वि०) १ अनुकूल। सीधा। २ यथावत्। (ना०) १ अनुकूलता। अनुकूल स्थिति। सीधी स्थिति। २ किसी भारी वस्तु को उलटने की क्रिया।
थाळ अरोगणो-(मुहा०) भोजन करना। (रईसों के लिये प्रयुक्त)।
थाल पड़णो-(मुहा०) १ किसी काम का सफल अनुकूल पार पड़ जाना। काम का बन जाना। २ व्यवस्थित रूप से बनना।
थाळड़ियो-(न०) छोटी थाली।
थाळी-(ना०) १ थाली। २ एक वाद्य। थाली वाद्य। ३ भोजन। ४ परोसी हुई थाली।
थाळी बजावणी-(मुहा०) पुत्र जन्म की खुशी में थाली बजाना।

थाळी बाजणी-(मुहा०) १ पुत्र जन्म होना। २ पुत्र जन्म का उत्सव होना। ३ पुत्र जन्म पर थाली का बजना।

थाळे पडणो-दे० थाल पड़णा।

थाळो-(न०) १ जमीन का वह भाग, जिस पर मकान बनाना है। मकान बनाने की जमीन। प्लाट। ठाँयो। २ सोने या चाँदी के पत्तर पर ठप्पे से उठाई हुई, फूल और बेलबूटा से युक्त इष्ट देवता की मूर्ति जिस गले में पहिना जाता है। फूल। ३ कुएँ के मुँह पर वास के पानी को खाली करने के लिए बना हुआ छिछला कुंड। थाला। ४ छोटे वृक्ष की रक्षा के लिये बनाया हुआ घेरा। आल बाल। थाँवळो।

थावणो-(क्रि०) १ होना। २ बनना।

थावर-(न०) १ शनि। २ शनिवार। ३ पर्वत। पहाड़। (वि०) १ स्थावर। अचल। २ मूर्ख। नासमझ।

थावर वार-(न०) शनिवार।

थावरियो-(न०)१ शनि कोप निवारण हेतु दान लेने वाला एक ब्राह्मण जाति। २ इस जाति का व्यक्ति। सनीचरियो।

थावस-(न०) १ धीरज। २ स्थिरता। ३ विश्वास। ४ आश्वासन। सांत्वना। दिलासा।

थावसणो-(क्रि०) १ धीरज बँधाना। २ सांत्वना देना। दिलासा देना।

थासू (सर्व०) तेरे से। तुझ से।

थाह-(ना०) १ नदी तालाब आदि की गहराई की सीमा। थाह। तल। २ गहराई का पता। ३ छेह। पार। अंत।

थाहणो-(क्रि०) १ स्थिर करना। २ रोकना। (वि०) रोकने वाला।

थाहर-(न०)१ स्थान। २ सिंह की गुफा। ३ गढ़। ४ घर। मकान। ५ सीमा। हद। (वि०) असीम। बेहद। (सर्व०) तेरा। थारो।

थाहरी-(सर्व०) तेरा। थारी।

थाहरो-(सर्व०) तेरा। थारो।

था-(सर्व०) तुम। आप। थे।

थाँरी-(सर्व०) तुम्हारी। थाँरी।

थाँरे-(सर्व०) आपके। तुम्हारे। थाँरे।

थाँरो-(सर्व०) तुम्हारा। आपका। थाँरो।

थानू-(सर्व०) तुमको। थाँन।

थाँनै-दे० थाँनू।

थाँभ-(न०) १ विवाह का मंगल स्तम्भ। २ थंभ। स्तंभ। थांभो।

थाभणो-(क्रि०) १ रोकना। ठहराना। २ सहारा देना। ३ पकड़ना। लेना। ग्रहण करना। ४ खड़ा करना।

थाभ पूजा-(न०)दुल्हे द्वारा की जाने वाली स्तम्भ पूजा।

थाभली-(ना०) छोटा खंभा। थामली।

थाभलो-(न०) खंभा। स्तम्भ। थाँभो।

थाभायत-(न०)वंश का मूल पुरुष। शाखा पुरुष। बडेरो।

थाँभो-(न०)(न०)खंभा। स्तंभ। थाँभलो। २ सहारा। ३ वंश (वंश वृक्ष या उसकी बड़ी शाखा) का मूल पुरुष। ४ वंश बलि। ५ साधु सम्प्रदाय में वह साधु जिसके नाम से उसकी शिष्य परम्परा पहचानी जाती है।

थाँरी-(सर्व०) तुम्हारी। आपकी। थाँकी।

थाँरे-(सर्व०) तुम्हारे। आपके। थाँके।

थाँरे सू-(अव्य०) तुम्हारे से। थाँसू।

थाँरो-(सर्व०) तुम्हारा। आपका। थाँको।

थाँ सू-(अव्य०) तुम्हारे से। थाँरसू।

थाँहरी-दे० थाँरी।

थाँहरे-दे० थाँरे।

थाँहरो-दे० थाँरो।

थाँ हस्ते-(अव्य०) १ तुमारे द्वारा। २ तुमारी मारफत। ३ तुमारे हाथ से। ४ तुमारे यहाँ। ५ तुमारे अधिकार मे।

ळी-(सव०)तुमारी । आपकी । थांरी ।
ळो-(सव०) तुम्हारा । थारो ।
-दे० थग ।
णो-(क्रि०)१ रुकना । २ लड़खड़ाना ।
ामगाना ।
-(ना०) १ धन माल । २ अचल
पत्ति । ३ पृथ्वी । ४ स्थिरता । ५
डाव । (वि०) १ स्थित । आसीन ।
का हुआ । २ अचल । स्थिर । ३
दा । नित्य ।
वाहरो-दे० थन वाहरो ।
वाळो-दे० थतवाळो ।
हीणो-दे० थनहीणो ।
-(ना०) १ एक ही स्थान म एक ही
प म बना रहना । स्थिति । अस्तित्व ।
अवस्था । दशा । ३ आकार । स्व
प । ४ वैभव । ५ मुकाम । ६
वास ।
तयो-(अव्य०) लगातार । निरतर ।
ालू । बराबर । स्थाई तौर से । (वि०)
स्थिर । निश्चल ।
ी-दे० थयो ।
(वि०)१ स्थिर । निश्चल । २ स्थायी ।
(ना०) पृथ्वी । थिरा ।
रकणो-(क्रि०) १ चलायमान होना ।
२ नृत्य म पावों का तालबद्ध गति देना ।
थिरकना । ३ नृत्य म अग सचालन का
भाव दिखाना ।
रस-(वि०) स्थिर । निश्चल । (ना०)
स्थिरता । निश्चलता ।
चर-(वि०) स्थिर । अटल । निश्चल ।
चर-(ना०)भूमि पर रहने वाले प्राणी ।
भूचर । थलचर ।
ता-(ना०) १ स्थिरता । निश्चलता ।
२ धीरता । धीरज । ३ दृढ़ता । ४
संतोष ।

थिर थापत-(वि०) १ स्थिर स्थापित
स्थाई रूप से स्थापित । स्थाई तौर से
रहने वाला । (ना०) १ स्थायित्व ।
टिकाव । ठहराव । २ अन्यत्र नहीं होने
का स्थिति ।
थिरमो-थरमा ।
थिरा-(ना०) पृथ्वी । स्थिरा । जमी ।
धरती ।
थिरू-(वि०) स्थिर ।
थिहूर-(वि०) स्थिर ।
थी-(प्रत्य०) करण तथा अपादान कारक का
चिह्न । से । (भू०क्रि०) १ वर्तमान है
क्रिया का नारी जाति भूतकालिक रूप ।
२ भूतकालिक था का नारी जाति रूप ।
हती । हुती । हुती । छी । ही ।
थीणा-(न०) खीच खिचड़ी घाट आदि
रधेज । रधण । (वि०) ठमा हुआ ।
जमा हुआ ।
थुई-(ना०) १ ऊट का पीठ का उठा हुआ
भाग । ऊट का कूबड़ । २ पचमी तिथि
को किया जाने वाला एक जैन व्रत ।
पचमी स्तवन ।
थुड-(न०) १ वृक्ष का तना । थड़ । गाड़ ।
२ लड़ाई ।
थुडणो-(क्रि०) लड़ना । भिड़ना ।
थुडी-(ना०) भिड़त ।
थुतकार-दे० थुथकार ।
थुतकारणो-दे० थुथकारणो ।
थुतकारो-दे० थुथकारो ।
थुतनो दे० थुथकारो ।
थुथकार-(न०) थू शब्द ।
थुथकारणो-(क्रि०) दृष्टि-दोष के विरुद्ध
थूकने का टोना करना । थूक कर कृत्रिम
घृणा करना, जिससे किसी सुन्दर वस्तु
पर दृष्टि दोष का प्रभाव न हो ।
थुथकारो-(न०) १ दृष्टि दोष के विरुद्ध
थूकने का टोना । थूक कर की जाने वाली

एक कृत्रिम थूगा जिसग किसी सुन्दर वस्तु पर दृष्टि न्याप का प्रभाव न हो।
थुथरी–दे० थुथकारो।
थुगरी–दे० थुवागो।
थुग्थुरगो–दे० नरथरणो।
थुरमा–दे० थरमा।
थुठ–(वि०) दुष्ट। (न०) असुर।
थु ब–दे० थू ब।
थु भ–दे० थू ब।
थु भी–दे०
थु भेलकध–(वि०) बल की थु भी क समान दृढ कधा वाला। बलिष्ट।
थू–(अव्य०) १ थूकने का शब्द। २ घृणा सूचक शब्द।
थूक–(न०) १ मुह स निकलन वाला एक रस। लार। ष्ठीवन। २ खखार।
थूकणी–(ना०) १ खखार आदि थूकने का पात्र। २ थूकने की आदत। ३ मुँह म थूक की अधिकता होना।
थूकणो–(क्रि०) १ थूकना। २ घृणा करना। (न०) खखार आदि थूकने का पात्र।
थूकफजीता–(न०ब०व०) १ जबानी लडाइ। बोलाचाली। २ लडाइ झगडा।
थूणी–(ना०) लबा पतला लट्ठा। बल्ली।
थूथको–दे० थुथकारो।
थूथगा–(ना०) सूअर का मुह। थूयन। तुड।
थूथी–(वि०) १ गवार स्त्री। गँवारी। २ भद्दी। ३ मूर्खा। मोथी।
थू-र्–दे० थू।
थूथो–(वि०) १ गँवार। ग्रामीण। २ असभ्य। मूर्ख। मोथो।
थूर–(वि०) १ बडा। २ मोटा। ३ दृढ। ४ दुष्ट। (न०) राक्षस।
थूरहथ–(वि०) १ दृढ हाथो वाला। २ मोटे और लम्बे हाथो वाला।
थूळ–(वि०) १ स्थूल। मोटा। जाडा। २ बिना ढग का। ३ बडौल मोटे शरीर वाला। ४ मूर्ख। गवार। असभ्य। (न०) १ सूअर। २ असुर। राक्षस। ३ तटू।
थूळनाल–(न०) सूअर। शूकर।
थूली–(ना०) १ गेहू और जौ का दलिया। २ इस दलिये की खिचडी। थूली। गेहू के दलिये का रधन। रबेज।
थूना (न०) गेहू के आटे की छान। चोकर। चापर। चापड।
थू–(सर्व०) तू।
थू क–दे० थूक।
थू कणो–दे० थूकणो।
थू ड–(ना०) सूअर का मुँह। तुँड। थूथन।
थू डो–(ना०) १ तुँडो। नाभि।
थू ब–(ना०) १ ऊट की पीठ का उठा हुआ भाग। कूबड। ककुद। २ टेकरी। ३ छोटा टीबा।
थू बाळी–(ना०) ऊँटनी। साँयड। करमाळी।
थू बाळो–(न०) ऊँट।
थू भ–दे० थू ब।
थु भाळी–दे० थू बाळा।
थू भी–(ना०) १ खुमी। कुकुरमुत्ता। २ बल का कूबड। ककुद। ३ ऊँट की पीठ का उठा हुआ भाग।
थे–(सर्व०) १ तुम। आप। २ तुमने। आपने।
थेई–(ना०) छोटे बालक को पाँवो पर खडा करना। दे० थई थई।
थेई थई–(ना०) १ थिरक थिरक नाचने की एक मुद्रा। २ नाचने का ताल। ३ नाचने की आवाज। ४ बालक को खडा क ते समय का उद्गार।
थेकडो–(न०) १ सांकलदार गहने में जडा हुआ कांटा। गहने के बीच का कोई जडा हुआ कांटा। २ कुन्दन। दलाल।

थेगट–दे० थगा ।
थेगा-(न०) सहारा । मदद ।
थेघ-(न०) ढर । राशि । थाग । ढग ।
थेगाडूटो-(न०) १ बिना ढग की बनी हुई वस्तु । भद्दी वस्तु । २ कुम्हार का एक औजार (वि०) १ निडर । निर्भय । २ निलज्ज । ३ धृष्ट । धीठ ।
थेचो-(न०) लोंदा ।
थेट-(न०)१ प्रारंभ । २ अंत । ३ निर्दिष्ट स्थान । उद्दिष्ट स्थान । ४ दूर । फासला । ५ लक्ष्य । (वि०) १ उद्दिष्ट । निर्दिष्ट । २ लक्ष्य । (अव्य०) १ अंत तक । २ लक्ष्य तक ।
थेट तक-दे० ठेट तक ।
थेट ताणी-दे० थेट ताई ।
थेट ताई-(अव्य०) १ अंत तक । २ शुरू से आखिर तक ।
थेट सू -(अव्य०) शुरू से । प्रारम्भ से ।
थेटा ताणी-दे० थेट ताई ।
थेटा ताई-दे० थेट ताई ।
थेटालग-(अव्य०)अंत तक । शुरु से आखिर तक ।
थेटालगी-दे० थेटा लग ।
थेटू-(अव्य०)थेट से । आदि से । परंपरागत ।
थेड-(ना०) खंडहर ।
थेथड-(ना०) १ मुँह पर की सूजन । २ लपन । ३ मोटा लेपन । (वि०) १ निकम्मा । २ धूर्त । मोटा । जाडो ।
थेथडणो-(क्रि०) मोटा लेप करना । गाढा लेप करना ।
थेप-(ना०) मोटा लेपन ।
थेपडी-(ना०) थाप कर गोबर का छाना । गोबरी । उपला ।
थेपडो-(न०)१ थोड़ा चिपटा खपडा जिसके ऊपर नरिया रखा जाता है । खपुआ । खपडा । खपरैल । २ मोटे लेपन की उतरी हुई परत । खपड़ा ।
थेपणो-(क्रि०) १ थपथपाना । थपना । २ गोबर का पाथ कर उपला बनाना । थपली बनाना ।
थेवा-दे० थेगा ।
थेली-(ना०)१ थैला । बोरा । २ कोथली । कोथली ।
थेलो-(न०)१ थैला । बोरा । २ कोथला । कोथलो ।
थेह-दे० थेह ।
थं-(सर्व०) तुम । तून ।
था-(भू०क्रि०) 'होणो या होवणो क्रिया का भूतकालिक रूप । है का भूतकालिक पुल्लिंग रूप । था । हो ।
थोक-(न०) १ किसी वस्तु की व्यवस्थित राशि । २ माल की बडी राशि । इकट्ठा वस्तु । ३ फुटकर या खुदरा का उलटा । ४ सब का सब । एक साथ । ५ किसी वस्तु का इकट्ठा क्रय या विक्रय । ६ इकट्ठा बेचने की वस्तु । ७ ढर । राशि । ८ झुंड । समूह । ९ उपकार । सहायता । १० बात । काम । ११ वस्तु स्थिति । १२ संयोग । मेलघ । १३ हर बात में पूर्णता । १४ धनमाल । संपत्ति । १५ परिणाम ।
थोकडी-(ना०) १ गड्डी । २ राशि । ३ छोटी राशि ।
थोकडो-(न०) १ राशि । ढेर । २ बडी राशि । ३ झुंड । समूह ।
थोकबंध-(वि०)१ थोक में । एक साथ सब का सब । जथाबंध । २ खूब । बहुत । पुष्कल ।
थोगणो-(क्रि०) १ मुकाबिला करना । २ मुकाबिला करके शत्रु को आगे बढ़ने से रोकना । ३ रोकना ।
थोगळणो-(क्रि०) १ डरते हुए बोलना । २ बोलते हुए डरना । घबराते हुए बोलना । हड़बड़ाते हुए बोलना । ४

घबराना । भय खाना । हड़बड़ाना । उद्विग्न होना ।
थोघणो-(क्रि०) रोकना ।
थोडा बोलो-(वि०) थोड़ा बोलने वाला । अल्पभाषी ।
थोटी-दे० ठाडी ।
थोडीक-(अव्य०)१ थोड़ी ही । २ बिलकुल थोड़ी ।
थोडीक तो-(अव्य०) थोड़ी तो ।
थोडीताळ-(अव्य०) १ थोड़ी देर । जरा देर से ।
थोडीसीक-दे० थोडीक ।
थोडो-(वि०) कम । अल्प । थोड़ा । कुछ । जरा । (ना०) थोड़ी ।
थोडो-घणो-(वि०) १ थोड़ा ही । २ कम ज्यादा । ३ थोड़ा । कुछ ।
थोडैंगे-(वि०) थोड़ा सा ।
थोथ-(ना०) १ खोखलापन । पोल । २ बस्ती रहित प्रदेश । निर्जन प्रदेश । (वि०)१ खाली । पोला । २ निर्जन । वस्ती रहित ।
थोथो-(वि०) १ व्यर्थ । निकम्मा । २ निःसार । ३ खोखला । पोला । ४ शून्य । निर्जन । ५ निर्धन । ६ निकम्मा । ७ खाली । (ना०) थोथी ।
थोपणा-(क्रि०) १ इलजाम लगाना । आरोप लगाना । २ जमाना । रखना । थोपना ।
थोबड-दे० थोबडो ।
थोबडो-(न०) १ मुँह । मुख । २ लंबा मुँह । ३ क्रोध से बिगड़ा मुँह । ४ तोबड़ा ।
थोबणा-(क्रि०) रोकना ।
थोभ-(न०) १ रुकावट । अटकाव । २ रुकने का स्थान । ३ सहारा । आश्रय । ४ थमा । ५ सीमा ।
थोभणो-(क्रि०) १ रुकना । अटकना । २ रोकना । अटकाना ।
थोभावणो-(क्रि०) १ रोकना । २ रुकवाना ।
थोभो-(न०) १ सहारा । २ टेक । सहारे की वस्तु । ३ रुकने की जगह ।
थोर-(न०) थूहर । सेहुँड ।
थोरण-(ना०) थोरी जाति की स्त्री ।
थोरणो-(क्रि०) १ देने का आग्रह करना । २ देना । ३ अनुरोध करना । आग्रह करना ।
थोरा करणो-(मुहा०)१ मनुहार करना । २ आग्रह करना । ३ खुशामद करना । किसी बात को मनाने के लिये गरज करना ।
थोरी-(न०) १ एक जाति । २ उस जाति का मनुष्य । ३ शिकारी ।
थोरो-(न०) १ अनुरोध । खुशामद । २ मनुहार । ३ प्रार्थना । ४ आग्रह । जोर ।
थोहर-दे० थोर ।
थ्यावस-दे० थावस ।

द

द-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का १८ वाँ और त वर्ग का तीसरा दंत स्थानीय व्यंजन वर्ण । वह्रो । दाँदयो ।
द-(वि०) देने वाला' अर्थ का सूचित करने वाला एक ... न उपपद ... । जैसे- ... । (म ... २ ... दा।। -

घबराना । भय खाना । हड़बड़ाना । उद्विग्न होना ।
थोघणो-(क्रि०) रोकना ।
थोडा बोलो-(वि०) थोड़ा बोलने वाला । अल्पभाषी ।
थोटी-दे० ठाठी ।
थोडीक-(अव्य०)१ थोड़ा ही । २ बिलकुल थाड़ी ।
थोडीक ता-(अव्य०) थोड़ी तो ।
थोडीताळ-(अव्य०) १ थोड़ी देर । जरा दर से ।
थोडीसीक-दे० थोडीक ।
थोडो-(वि०) कम । अल्प । थोड़ा । कुछ । जरा । (ना०) थोड़ी ।
थोडो-घणो-(वि०) १ थाड़ा ही । २ कम ज्यादा । ३ थोड़ा । कुछ ।
थोडेरो-(वि०) थोड़ा सा ।
थोथ-(ना०) १ खोखलापन । पोल । २ बस्ती रहित प्रदेश । निजन प्रदेश । (वि०)१ खोखला । पोला । २ निजन । बस्ती रहित ।
थोथो-(वि०) १ व्यथ । निकम्मा । २ नि सार । ३ खोखला । पोला । ४ शून्य । निजन । ५ निधन । ६ निकम्मा । ७ खाली । (ना०) थोथी ।
थोपणो-(क्रि०) १ इलजाम लगाना । आरोप लगाना । २ जमाना । रखना । थोपना ।
थोबड-दे० थोबडो ।
थोबडा-(न०) १ मुंह । मुख । २ मुंह । ३ क्रोध स बिगड़ा मुं तोबड़ा ।
थोबणो-(क्रि०) रोकना ।
थोभ-(न०) १ रुकावट । २ रुकने का स्थान । ३ सहा ४ थमा । ५ सीमा ।
थोभणो-(क्रि०) १ रुक रोकना । अटकाना ।
थोभावणो-(क्रि०) १ वाना ।
थोभो-(न०) १ स की वस्तु । ३
थोर-(न०) थूह
थोरण-(ना०)
थोरणो-(क्रि
२ देना ।
करना ।
थोरा
२
क्रि
थो
थ
थ्या

द

द-सस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का १८ वाँ और त वग का तीसरा दत स्थानीय व्यंजन वर्ण । दद्दो । ददियो ।
द-(वि०) देने वाला' अर्थ को सूचित करने वाला जैसे-सुखद
२ पक्षी । ३
द।। -(अव्य०)

दधसुत-*(न०)* १ चन्द्रमा। दधिसुत। २ मोती। ३ अमृत।
दधि-*(न०)* १ समुद्र। २ दही।
दधिसुत-दे० दधसुत।
दन-*(न०)* दान।
दनादन-*(अव्य०)* १ एक के बाद एक। २ दन दन करते हुए। ३ तुरंत। झटपट।
दनुज-*(न०)* राक्षस।
दपट-*(वि०)* १ बहुत अधिक। पुष्कल। २ तेज।
दपटणो-*(क्रि०)* १ सभी ओर से आच्छादित करना। लपेटना। ढक देना। २ डांटना। धमकाना। ३ दौड़ना। भागना। ४ प्रहार करना। मारना। ५ पेट भर कर खाना।
दपरजात-*(न०)* १ चाकर। सेवक। नौकर। २ गुलाम। ३ गोला। गोलो।
दप्प-दे० दप।
दफण-*(न०)* दफन। गाड़ना।
दफणाणो-दे० दफणावणो।
दफणावणो-*(क्रि०)* १ जमीन में गाड़ना। दफनाना। दाटणो। २ मुर्दे को गाड़ना।
दफतर-*(न०)* १ कार्यालय। आफिस। २ हिसाब किताब तथा विवरण के कागजात।
दफतरी-*(वि०)* १ दफ्तर से संबंधित। २ राजकाज से संबंधित। *(न०)* १ दफ्तर का कर्मचारी। २ जिल्दसाज।
दब-*(न०)* १ दबाव। २ जोर। ३ डर। भय।
दबकणो-*(क्रि०)* १ छिपना। लुकना। २ डरना। भयभीत होना। ३ धातु के तार या पत्र आदि को सांचे डाई अड्डा आदि में ठोकने से ठीक करना या निश्चित करना। ४ हथोड़े से ठोक कर बनाना।
दबेल-*(वि०)* १ मातहत। आधीन। पराधीन। २ दबा हुआ। दबैल। ३ दबने वाला। ४ डरपोक। ५ नमनमथ।
दबक-*(क्रि०वि०)* तुरत। शीघ्र। झट।
दबणी-*(ना०)* हार। पराजय।
दबणो *(क्रि०)* १ बोझ के नीचे आना। दबना। २ विवश होना। ३ संकोच करना। ४ झुकना। ५ हारना। हार स्वीकार करना। ६ वश न चलना। ७ दुबकना। ८ बीमारी में मरने की स्थिति में आना। ९ स्थिति का कमजोर होना।
दबदबो-*(न०)* १ ठाटबाट। भपका। २ रोब। आतंक।
दबवाळ-*(न०)* दबैल।
दबंग-*(वि०)* १ निर्भय। २ उद्दण्ड। ३ प्रभाव वाला। ४ नहीं दबने वाला। ५ व्यक्तित्व वाला।
दबाक-*(ना०)* दुकान। छलांग। फदाक। *(क्रि०वि०)* झट। तुरत। दबक।
दबाण-*(न०)* १ भार। वजन। २ असर। प्रभाव।
दबाणो-दे० दबावणो।
दबादब-*(क्रि०वि०)* झट। तुरत। शीघ्र।
दबाव-*(न०)* १ दबाने की क्रिया या भाव। चांप। २ भार। बोझो। ३ प्रभाव। असर। ४ उत्तरदायित्व।
दबावणो-*(क्रि०)* १ दबाना। दाबना। भार के नीचे डालना। २ विवश करना। ३ संकोच में डालना। ४ झुकाना। ५ हराना। पराजित करना। ६ दूसरे का वश न चलने देना। ७ कमजोर बनाना। ८ दूसरे के गुणों का प्रकाश नहीं होने देना। ९ बलपूर्वक अपने अधिकार में लेना या करना। १० दबोचना। ११ ठूसना। दाबना। १२ उभड़ने नहीं देना। ऊँचा उठने नहीं

दगड–(न०) पत्थर ।

दग्ध–दे० दगध ।

दच्छ–दे० दक्ष ।

दच्छकन्या–(ना०) शिवजी की पहली पत्नी । सती ।

दछा–दे० दशा ।

दजोण–(न०) दुर्योधन ।

दझणो–(क्रि०) जलना । दग्ध होना ।

दटणो (क्रि०) १ गड़ना । दफन होना । दबना । २ पाँव रोपकर खड़ा होना । अड़ना । अड़णो । डटणो ।

दट्टो–दे० डाटो ।

दडड–(न०) १ पानी गिरने का शब्द । दडब्ड । २ मेघ गर्जन का शब्द ।

दडदड–(न०)१ पानी गिरने का शब्द । २ आँसुओं का गिरना । टपटप ।

दडपणो–(क्रि०) १ वस्त्र से आच्छादित करना । २ ढकना ।

दडवड–(ना०) दौड़ने की आवाज ।

दडवो–(न०)१ जमीन का ऊँचा भाग । २ टीबा । ३ अव्यवस्थित ढेर । ४ अनेक प्रकार की वस्तुओं का ढेर । ५ लोंदा । लूदो । ६ बिना ढंग से बनी हुई कुरूप वस्तु । ७ कबूतरा व मुर्गियों का खुड्डा ।

दडाछट–(क्रिवि०) १ दडे की भांति तेजी से भागता हुआ । उतावला भागता हुआ । २ तेजी से । शीघ्रता से ।

दडियद–दे० दडिंद ।

दडिंद–(न०) सूर्य । सूरज । दिनकर । दिणियर ।

दडी–(ना०)१ चिथड़ों से बनाई हुई गेंद । दड्डी । २ छोटी गेंद । कंदुक ।

दडीदोटो–(न०) एक खेल ।

दडूकणो–(क्रि०)१ सिंह का गर्जन करना । २ रोंभना ।

दडो–(न०) १ गोलाकार वस्तु । पिंड । गोला । २ गेंद । ३ टीबा । टीला । धोरो ।

दढ–(वि०) दृढ । मजबूत । दिढ़ । (ना०) दाढ । डाढ़ ।

दणियर–दे० दिणयर ।

दणी–(ना०) कमान । धनुष ।

दत–(न०) १ दत्तात्रेय । दत्त । २ दान । ३ दहेज । ४ भोजन । खुराक । ५ गाय भैंस आदि पशुओं को दी जाने वाली घी तेल दाना आदि की खुराक । पशुओं की (घास के अतिरिक्त) पौष्टिक खुराक ।

दतदायजो–(न०) दहेज । दात । दायजो ।

दतब–(न०) १ दान । दत्तब । २ खुराक । ३ पौष्टिक खुराक ।

दत्त–(न०) १ दत्तात्रेय । २ पूर्व जन्म में किया हुआ दान । (वि०) दिया हुआ ।

दत्तक–(न०) गोद लिया हुआ । खोळ ।

दत्तब–दे० दतब ।

दत्तात्रेय–(न०) महर्षि अत्रि तथा अनुसूया के पुत्र जो अवतार माने जाते हैं ।

ददियो–(न०) 'द' अक्षर । दद्दो ।

ददाम–दे० दमाम ।

ददामो–दे० दमामो ।

दद्दो–(न०) द अक्षर ।

दध–(न०) १ दही । दधि । २ समुद्र । उदधि । (ना०) १ जलन । २ ईर्ष्या । डाह । ३ शत्रुता । (वि०) १ दग्ध । जलाया हुआ । २ पीड़ित । दुखित । ३ अशुभ ।

दधआखर–(न०) १ छंद शास्त्र के अनुसार छंद के प्रारम्भ में अथवा छंद की प्रत्येक पंक्ति के आरंभ में प्रयोग वर्जित अशुभ अक्षर । कोई आठ (झ, ध, भ, घ, न, म, र और ह) और कोई सत्रह अक्षर (झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, प, फ, ब, भ, म, र, ल, व, ष और ह) अक्षरों को दग्ध मानते हैं । किन्हीं ने झ, म, र, ष और ह इन पाँचों अक्षरों को ही अशुभ माना है । २ अशुभ वचन । ३ गाली । अपशब्द ।

दधसुत-(न०) १ चंद्रमा । दधिसुत । २ मोती । ३ अमृत ।

दधि-(न०) १ समुद्र । २ दही ।

दधिसुत-दे० दधसुत ।

दन-(न०) दान ।

दनादन-(अव्य०) १ एक के बाद एक । २ दनादन करते हुए । ३ तुरंत । झटपट ।

दनुज-(न०) राक्षस ।

दपट-(वि०) १ बहुत अधिक । पुष्कल । २ तेज ।

दपटणो-(क्रि०) १ सभी ओर से आच्छादित करना । लपेटना । ढक देना । २ डाँटना । धमकाना । ३ दौड़ना । भागना । ४ प्रहार करना । मारना । ५ पेट भर कर खाना ।

दपरजात-(न०) १ चाकर । सेवक । नौकर । २ गुलाम । ३ गोला । गोलो ।

दप्प-दे० दप ।

दप्पण-(न०) दर्पण । आईना ।

दफणाणो-दे० दफणावणो ।

दफणावणो-(क्रि०) १ जमीन में गाड़ना । दफनाना । दाटणो । २ मुर्दे को गाड़ना ।

दफतर-(न०) १ कार्यालय । आफिस । २ हिसाब किताब तथा विवरण के कागजात ।

दफतरी-(वि०) १ दफतर से संबंधित । २ राजकाज से संबंधित । (न०) १ दफतर का कर्मचारी । २ जिल्दसाज ।

दब-(न०) १ दबाव । २ जोर । ३ डर । भय ।

दबकणो-(क्रि०) १ छिपना । लुकना । २ डरना । भयखाना । ३ धातु के तार या पत्र आदि को सँचे डाइ प्रदी आदि में हथौड़े से ठोक कर [illegible] करना । ४ हथौड़े से ठोक कर बढ़ाना ।

दबैल-(वि०) १ मातहत । अधीन । पराधीन । २ दबा हुआ । दबेल । ३ दबाया हुआ । ४ डरपोक । ५ असमर्थ

दबक-(क्रिवि०) तुरत । शीघ्र । झट ।

दबणी-(ना०) हार । पराजय ।

दबणो-(क्रि०) १ बोझ के नीचे आना । दबना । २ विवश होना । ३ सहन करना । ४ झुकना । ५ हारना । ६ स्वीकार करना । ६ वश न चलना । ७ दुबकना । ८ बीमारी में मरने की स्थिति में आना । ९ स्थिति का कमजोर होना ।

दबदबो-(न०) १ ठाटबाट । भपका । रोब । आतंक ।

दबबाे-(न०) दबैल ।

दबंग-(वि०) १ निर्भय । २ उद्दण्ड । प्रभाव वाला । ४ नहीं दबने वाला । व्यक्तित्व वाला ।

दबाक-(ना०) कुदान । छलाग । फलाक (क्रिवि०) झट । तुरंत । दबक ।

दबाण-(न०) १ भार । वजन । असर । प्रभाव ।

दबाणो-दे० दबावणो ।

दबादब-(क्रिवि०) झट । तुरत । शीघ्र

दबाव-(न०) १ दाबने की क्रिया या भाव चाँप । २ भार । बोझा । ३ प्रभाव असर । ४ उत्तरदायित्व ।

दबावणो-(क्रि०) १ दबाना । दाब भार के नीचे डालना । २ विवश करना ३ संकोच में डालना । ४ झुकाना ५ हराना । पराजित करना । ६ दूसरे का वश न चलने देना । ७ कमजोर बनाना । ८ दूसरे के गुणों का प्रकाश नहीं होने देना । ९ बलपूर्वक अपने अधिकार में लेना या करना । १० दबोचना । ११ ठूसना । दाबना १२ उभड़ने नहीं देना । ऊँचा उठने न

देना। १३ किसी बात को उठने या फैलने नहीं देना।

दवियोडो-(वि०) १ बोझ के नीचे आया हुआ, दबा हुआ। २ प्रभावित। ३ आतंकित। ४ विवश। ५ पराजित। ६ संकुचित। ७ गड़ा हुआ। ८ उठी हुई या फैली हुई नहीं। ९ हड़प किया हुआ। १० गुप्त। छिपा हुआ।

दवेल-दे० दवेल।

दब्बू-(वि०) डरपोक।

दम-(न०) १ दम। श्वास। सांस। २ दमा। श्वास रोग। दमे की बीमारी। ३ जीव। प्राणवायु। ४ ताकत। बूता। दम। कुव्वत। शक्ति। ५ टिकाव। स्थिति। ६ दृढ़ता। मजबूती। ७ संयम। निग्रह। ८ क्षण। ९ चिलम हुक्के आदि के धुएँ का कश। दम। धूम्रपान का सड़ाका।

दमक-(ना०) चमक।

दमकणो-(क्रि०) चमकना। दमकना।

दमगळ-दे० दमगळ।

दमजोडो-(वि०) कजूस।

दमडा-(न०ब०व०) १ रुपया पैसा। २ धन माल।

दमडी-(न०) १ पैसे का चौथा भाग। (कहीं कहीं आठवाँ भाग)

दमण-(वि०) १ दमन करने वाला। नाश करने वाला। (न०) १ बलपूर्वक शांत करने का काम। दमन। २ दमन। निग्रह। ३ नाश।

दमणो-(क्रि०) १ दमन करना। २ रोकना। ३ वश में करना। ४ दबाना।

दमदमो-(न०) १ मकान के ऊपर बनी छोटी कोठरी की छाजन। २ जीने (सीढ़ी) के ऊपर बनी कोठरीनुमा छाजन। ३ किलेबंदी की ओट में बनाई हुई वह छाजन या पाटन जिस पर बैठ कर बंदूकें चलाई जाती हैं। ४ मोरचा। ५ एक प्रकार की तोप। ६ धूल से भरी हुई बोरियाँ अथवा रुई से भरी हुई बरनियों के द्वारा युद्ध मोर्चे की बनी दीवाल। ७ आडंबर। ढोंग।

दमन्याटी-(ना०) डाँट। डाँट-डपट। धमकी।

दमदार-(वि०) १ दमवाला। २ जीवनी शक्ति वाला। जानदार। ३ दृढ़। मजबूत। ४ तेज। तीव्र। ५ चोखा। अच्छा।

दमबाज-(वि०) १ गाँजा चरस आदि नशीली वस्तुओं की चिलम पीने वाला। इन वस्तुओं का नशा लेने वाला। २ धोखेबाज।

दमगळ-(न०) १ युद्ध। लड़ाई। २ उत्पात। ३ उपद्रव।

दमाज-(न०) ऊँट।

दमाद-(न०) दामाद। जमाई।

दमाम-(न०) १ रोब। आतंक। दबदबा। २ नगाड़ा।

दमामी-(न०) १ ढोली। २ ढोल या नगाड़ा बजाने वाला।

दमामो-(न०) १ युद्ध का ढोल। २ युद्ध के समय बजाया जाने वाला नगाड़ा। ३ बड़ा ढोल या नगाड़ा।

दमैदो-(न०) १ एक मिठाई। ठोर। २ बड़ा बतासा। ३ तल कर बनाई हुई चीनी में पगी मोटी रोटी।

दया-(ना०) १ अनुकंपा। करुणा। रहम। २ शुभ नजर। ३ कृपा।

दयादृष्टि-(ना०) कृपा या अनुग्रह की दृष्टि। रहम नजर।

दयामणो-(वि०) १ ऐसी स्थिति वाला जिसको देखने से दया उत्पन्न हो। २ दयनीय। दया के योग्य। दया पात्र।

३ विकुल मुख । ४ गरीब । रंक । ५ दुखी ।

दया मया-*(ना०)* दया और मोह ममता ।

दयारास-*(न०)* राजस्थानी साहित्य की सोलह दिशाओं में की एक दिशा का नाम । आठ दिशाओं के अंतरवाला की एक दिशा ।

दयाळ-*(वि०)* १ कृपालु । दयालु । २ करुणाद्र । रहम दिल ।

दयाळजी-*(न०)* मारवाड़ के प्रसिद्ध निरंजनी सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक श्री हरिपुरुषजी । (हरिसिंह नाम के एक राजपूत का साधु और सिद्ध पुरुष हो जाने के बाद का एक नाम । इनकी समाधि और गद्दी डीडवाना (मारवाड़) के पास गाढा गाँव में है) ।

दयालु-*(वि०)* करुणाद्र । रहमदिल । दयालु ।

दयावत-*(वि०)* दयावाला । दयावान । दयालु ।

दयावान-*(वि०)* दयावत । दयालु ।

दर-*(न०)* १ चूहे आदि का बिल । २ भाव । ३ कीमत । ४ इज्जत । ५ द्वार । ६ गुफा । ७ दरवाजा । गता । ८ हृदय । (अ य) द्वरेक । प्रत्येक ।

दरक-*(न०)* ऊंट ।

दरकार-*(ना०)* १ आवश्यकता । २ परवाह । ३ मान । ४ इच्छा । चाह ।

दरकूच-*(ना०)* १ समूह जाता या सेना के प्रत्येक विश्राम (डेरे मंजिल दर मंजिल) के बाद की जाने वाली रवानगी या कूच । २ आक्रमण के लिए की जाने वाली चढ़ाई । ३ प्रस्थान । रवानगी । कूच ।

दरखत-*(न०)* दरख्त । वृक्ष । पेड़ ।

दरखास्त-*(ना०)* १ दरख्वास्त । प्रार्थना पत्र । अर्जी । २ प्रार्थना । अरज ।

दरगा-*(ना०)* १ ईश्वर का दरबार । २ राजा का दरबार । सभा । ३ पीर का कबर । मजार । दरगाह । मक बरा ।

दरगाह-दे० दरगा ।

दरगुजर-*(वि०)* १ माफ किया हुआ । २ मना किया हुआ ।

दरज-*(वि०)* १ वही खाता रजिस्टर आदि में लिखा हुआ (रकम कलम मालूम) । २ लिखा हुआ । अंकित । दर्ज । ३ प्रतिलिपि किया हुआ । *(ना०)* फटा हुआ । स्थान । दरार । दरार ।

दरजण-*(ना०)* १ दरजी की स्त्री । दरजिन । *(न०)* १ बारह वस्तुओं का समाहार । दर्जन । २ गिनती में बारह का समूह । दरजन । दर्जन ।

दरजी-*(न०)* दरजी । सूचिक ।

दरजो-*(न०)* १ अधिकार । २ कोटि । ३ कक्षा । श्रेणी । ४ ओहदा । पद ।

दरजाजणा-*(न०)* दुर्योधन ।

दरजोण-दे० दरजोजण ।

दरड-*(न०)* जमीन खोद कर बनाई हुई पतली नाली जगह जिसमें चूहे आदि जीव जंतु रहते हैं । बिल । दरडो । दर ।

दरडो-*(न०)* १ गड्ढा । गड्डा । खाडो । बिल । विवर ।

दरद-*(न०)* दुख । पीड़ा । दर्द । पीड़ ।

दरदरो-*(वि०)* जो मोटा पिसा, दला या कूटा हुआ हो । जो बारीक पिसा कुटा न हो ।

दरदवान-*(वि०)* १ दर्दी । दुखी । २ जरूरतमंद । आवश्यकता वाला ।

दरदी-*(वि०)* १ दर्दी । बीमार । मांदो । २ पीड़ित । दुखी ।

दरप-*(न०)* दर्प । गर्व । घमंड ।

दरपक-*(न०)* कामदेव । मनोज ।

दरपण-(न०) दपण । शीशा । आईना । काच ।

दरब-(न०) १ धन । द्रव्य । २ माल । मामान ।

दरबान-(न०) द्वारपाल ।

दरबार-(न०) १ राजसभा । २ राजा ।

दरबारी-(वि०) १ दरबार का । दरबार से सबंधित ।

दरभ-(ना०) दभ । डाभ ।

दरमजळ-(ना०) समूह यात्रा या सेना के अभियान का किया जाने वाला प्रत्येक विश्राम । दरमजिल । दर पड़ाव । मजिल दर मजिल ।

दरमावो-दे० दरमाहो ।

दरमाहो-(न०) मासिक वेतन ।

दरवाजा-(न०) १ द्वार । दरवाजा । २ किंवाड़ ।

दरवेस-(न०) १ मुसलमान फकीर । दरवेश । २ साधु ।

दरस-(न०) १ दशन । दश ।

दरसरण-दे० दशन ।

दरसणी-(न०) १ जो दर्शन करने योग्य हो । साधु पुरुष । २ संन्यासी । ३ दपण । ४ एक पक्षी । (वि०) १ वह (हुंडी) जिसका भुगतान तत्काल (जब वह आवे उसी समय) हो जाये । २ दशन करने योग्य । दर्शनीय । ३ मनोहर ।

दरसणीक-(वि०) १ दर्शन करने योग्य दर्शनीय । २ सुंदर ।

दरसणी-हुंडी-(ना०) वह हुंडी जिसके दिखाने ही उसमें लिखे हुए रुपयों का भुगतान करना पड़े । दर्शनी हुंडी ।

दरसणो (क्रि०) १ दिखाई देना । २ जानने में आना । ३ विचार में आना । ४ प्रतीत होना ।

दरसल-(अव्य०) दरअसल । वास्तव में ।

दरसाणो-दे० दरसावणो ।

दरसाव-(न०) १ दृश्य । २ दिखावा । आविर्भाव । ३ प्रगटीकरण ।

दरसावणो-(क्रि०) १ बताना । २ दिखाना । दरसाना । ३ समझाना । ४ दिखाई देना । ५ प्रगट होना । ६ प्रगट करना ।

दरग-दे० द्रग ।

दराज-(वि०) १ अधिक । बहुत । २ महत्वपूर्ण । श्रेष्ठ । ३ दीर्घ । विशाल । लंबा । (ना०) कागज आदि रखने का मेज में लगा खाना । मेज का कोष्ठक ।

दराड़-(ना०) फटा हुआ स्थान । दरार । दरज ।

दरि-(न०) १ दरीखाना । राजसभा । २ द्वार । दरवाजा । ३ घर ।

दरिगह-दे० दरगा ।

दरिद्र-(वि०) गरीब । निधन ।

दरिद्री-(वि०) १ गरीब निधन । २ गंदा । मैला । ३ आलसी । सुस्त ।

दरियादासी-(वि०) १ दरियावजी के पथ का अनुयायी । २ दरियावजी द्वारा प्रवर्तित (पंथ) ।

दरियाफत-(वि०) मालूम । ज्ञात ।

दरियाव-(न०) १ समुद्र । २ बड़ी नदी । ३ बड़ा जलाशय ।

दरियावजी-(न०) रैण (मरुधरा मारवाड़) की रामसनेही संप्रदाय (दरियापंथ) के एक मुसलमान रामभक्त साधु । दरिया साहब ।

दरी-(ना०) १ गुफा । २ तलघर । ३ मोटे सूत से बना हुआ बिछावन । दरी । सतरंजी । फरासी । सतरंजी ।

दरीखानो-(न०) १ अनेक दरवाजा बारियों वाला स्थान या बैठक । २ राजसभा का स्थान । ३ जागीरदार का मकान या बैठक । ४ राजसभा । दरबार ।

दळमोड़-(वि०) शत्रु सेना को पीछे हटाने वाला। वीर।
दळवइ-दे० दलपति।
दळ वादळ-(न०) १ सैन्य समूह। बहुत बड़ी सेना। २ बड़ा शामियाना। ३ अनेक कोष्टकों वाला सभी साधनों से युक्त विशेष प्रकार से सजाया हुआ बड़ा और ऊँचा शामियाना। ४ बड़ा महल। भव्य प्रासाद। ५ चित्रादि से अंकित और सज्जित ऊँचा महल। ६ मेघ घटा। ७ एक प्रकार का वस्त्र।
दळ सिणगार-(न०) १ सेना का शृंगार। अद्वितीय वीर सेनापति। (वि०) वीर। पराक्रमी।
दलाल-(न०) १ वह मध्यस्थ व्यक्ति जो शुल्क लेकर के दो व्यापारियों में खरीद फरोख्त (का सौदा) करने कराने में मे सहायता दे। सौदा ठीक कराने वाला। बिचवई। ब्रोकर। दलाल। २ शुल्क ले करके व्यापारियों का माल रेल द्वारा भेजने तथा रेल द्वारा आया हुआ माल छुड़ाने का काम करने वाला व्यक्ति। मुकादम। मारफतिया ३ कुटना। भडुआ। (वि०) दानशील। उदार।
दलाली-(ना०) १ दलाल का काम। २ दलाल के काम का पारिश्रमिक।
दळाव-(न०) दलपति। सेनापति।
दलिद्र-(वि०) दे० दळद्र।
दळियो-(न०)१ दला हुआ अन्न। दलिया। २ दले हुये अन्न का पका कर बनाया खाद्य पदार्थ। दलिया।
दळीचो-दे० दुलीचो।
दलील-(ना०)१ बात के समर्थन या विरोध में दिखाया हुआ कारण। तर्क। २ विवाद। बहस।
दलीची-(ना०) द्वार के पास का कमरा। दरीची।
दलेल-(वि०) १ उदार। २ दलाल। ३ दलील। तर्क। बहस।
दलोल-कलोल-रा मगरा-(न०) मेवाड़ का एक पर्वत श्रेणी।
दव-(न०) १ दावाग्नि। दावानल। २ अग्नि। आग। ३ जंगल। वन। ३ झगड़ा। कलह।
दवा-(ना०) १ औषधि। दवा। २ इलाज। चिकित्सा।
दवाई-(ना०) औषधि। दवा।
दवागीर-(वि०) दुआ देने वाला।
दवात-(ना०) स्याही रखने का छोटा पात्र। मसिपात्र। मजियासणी।
दवात-पूजा-(ना०) वाणी और श्रीवृद्धि के लिये दीपावली (और कहीं कहीं होली) पर दवात और कलम की जाने वाली पूजा।
दवा-दारू-(ना०) १ इलाज। चिकित्सा। २ इलाज की व्यवस्था। ३ औषधि समूह। औषधियाँ।
दवा पाणी-दे० दवादारू।
दवामी-(वि०) स्थाई।
दवामी काश्तकार-(न०) स्थाई कृषि करने का हक वाला कृषक।
दवामी पट्टो-(न०) इस्तमरारी पट्टा।
दवायती-(ना०) १ आज्ञा। इजाजत। २ अनुमति। स्वीकृति। ३ निस्तार। छुटकारा। ४ पंचों द्वारा जाती भोज करने की मनाही।
दवावेत-(ना०) १ राजस्थानी भाषा की उर्दू (मुसलमानी) प्रभाव वाली अनुप्रासवाली गद्य शैली। २ छोटा इतिहास प्रसंग।
दवे-(न०) ब्राह्मणों की एक अल्ल। द्विवेदी। दुबे।
दश-दे० दस।

दसकंठ (न०) रावण।
दशकंध-(न०) रावण।
दशकंधर-(न०) रावण।
दशन-(न०) दाँत।
दशनामी-दे० दसनामी।
दशनावलि-दे० दसनावळ।
दशम अवस्था-(ना०) मृत्यु। मौत।
दशमलव-(न०) गणित में भिन्न का एक भेद जिसमें हर दश पर उसका कोई घात होता है। इकाई के दसवें, सौवें इत्यादि भाग को सूचित करने के लिये संख्या के पहले लगाया जाने वाला बिंदु। २ उक्त पद्धति। ३ उक्त चिह्न युक्त संख्या।
दशमुख-दे० दसमुख।
दशरथ-(न०) श्रीराम के पिता।
दशशीश-दे० दस धू।
दशहरा-दे० दसरावो।
दशा-(ना०) १ स्थिति। हालत। २ ग्रहों का भोग्यकाल। दशा। ३ ग्रहों का भोग्यकाल। दशा। ४ बुरी दशा।
दशानन-(न०) रावण। दसमुख।
दशांग धूप-(न०) दस सुगंधित। द्रव्यों के मेल से बना धूप।
दशांश-(न०) दसवाँ भाग।
दस-(ना०) १ दस की संख्या १० (वि०) पाँच और पाँच।
दसखत-दे० दसखत।
दसकंध-(न०) रावण। दशानन।
दसकंधर-(न०) रावण। दशकंधर।
दसको-(न०) १ दस वर्ष का समय। २ दस वर्षों का समूह।
दसखत-(न०) १ हस्ताक्षर। दस्तखत। सही। २ अक्षर की लिखावट। ३ हाथ की लिखावट। ४ लिखावट। लेख।
दसग्रीव-(न०) रावण।
दसण-(न०) दाँत। दशन।
दसआनन-(न०) १ दशानन। रावण। २ दस आनन का समूह। दस जन।
दस द्वार-(न०) शरीर के दस छेद। यथा— आँखें २ कान २ नाक २ मुँह १ गुदा १ लिंग १ और ब्रह्मरंध्र (१०) दस
दसधू-(न०) दशानन। रावण। दस माथ।
दसनामी-दे० दसनामी संन्यासी।
दसनामी संन्यासी-(न०) १ आदि शंकराचार्य के दस शिष्यों द्वारा चलाया गया संन्यासियों का एक संप्रदाय। २ इन प्रकार के संन्यासी यथा—अरण्य आश्रम गिरि तीर्थ पर्वत पुरी भारती वन सरस्वती और सागर। ३ आदि शंकराचार्य के दसनामी संप्रदाय का संन्यासी।
दसनावळ-(ना०) दशनावलि। दंत पंक्ति। दंत मोळ।
दस वीसी-(वि०) दाय सौ।
दसम-(ना०) १ चान्द्र मास के प्रत्येक पक्ष की दसवीं तिथि। २ पक्ष का दसवाँ दिन। दशमी।
दसमाथ-(न०) रावण।
दसमी-(ना०) १ दशम तिथि। २ आटे को दूध में गूँध कर बनाई जाने वाली रोटी।
दसमुख-(न०) रावण।
दसमूळ-(न०) औषधि रूप में काम आने वाली दस प्रकार की जड़ें या उनका समूह।
दसमो-(वि०) दसवाँ। (न०) १ प्रसव के बाद के दसवें दिन का अशौच कर्म। दसवाँ। दसोठण। २ मृत्यु तिथि से दसवें दिन होने वाला प्रेत कृत्य। दसवाँ।
दसमो धोवणो-(मुहा०) प्रसूता का दिन प्रथम स्नान करना और जनन का प्रथम निवृत्ति कर्म करना।

दसमा साळगराम-(न०) जालोर के राव या हुइद सोनगरा की एक उपाधि।
दसरथ-दे० दशरथ।
दसरथ-तण-(न०) राम। दसरथ तनय।
दसरथ रावउत-(न०) १ श्री रामचद्र। २ पृथ्वीराज राठौड के इस शीर्षक या संबोधन वाले श्रीरामचद्र की स्तुति का दोहा काव्य।
दसरावो-(न०) आश्विन शुक्ल १० मी को भगवान राम द्वारा रावण के वध का उत्सव। रावण वध का मेला। विजया-दशमी। दशहरा।
दसराहो-दे० दसरावो।
दसवीसी-दे० दसवीसी।
दस सहसो-(न०) गहलोत क्षत्रियो की एक उपाधि।
दससिर-(न०) रावण।
दससीस-(न०) रावण। दसमाथ।
दसा-दे० दशा। (न०ब०व०) १ उपजाति के लोग। जैसे—दसा ओसवाळ, दसा श्रीमाळी इत्यादि। २ किसी जाति की पेटा जाति। उपजाति। ३ वर्णसंकर। जाति का वंश।
दसाणण-(न०) दशानन। रावण। दस मुख।
दसानन-दे० दसाणण।
दसावळ-(क्रि०वि०) दसो दिशाओं में।
दसादहाडो-दे० दहाडोजी स० १
दसा-वीसो-१ किसी वस्तु के गुण परिमाण आदि का अंतर। २ परस्पर दुगुना अंतर। ३ दस और बीस का अंतर। ४ एक खेल।
दसासुत-(न०) दीपक। दिशासुत।
दसी-१ दस वर्ष का समय। २ दस की संख्या का ताश का पत्ता।
दसी वीसी-(ना०) चढती पडती। उन्नति अवनति।
दसु-(न०) चोर। दस्यु।
दसूंदी-(ना०) १ कृषि उपज में से भाग के रूप में लिया जाने वाला दसांश। २ ब्रह्मभट्टा (रावो) को जाने वाला नेग। ३ ब्रह्मभट्टा (रावो) एक उपाधि।
दसेरक-(न०) १ मरुप्रदेश। २ मरु का एक भाग या सपादलक्ष (स्वाळ नाम से प्रसिद्ध है। नागौर जिल स्वाळख।
दसेरी-(ना०) दस सेर का तौल। दशमेरं
दसेरो-(न०) १ दशहरा। २ दश सेर तौल।
दसै-दे० दसमी।
दसो-(न०) १ जाति का उपभेद। २ सा जाति। ३ वर्णसंकर। ४ दसवां वर्ष
दसोठण-(न०) १ पुत्र जन्म के बाद दस दिन की जाने वाली अशौच शुद्धि। २ पुत्र जन्म के संबंध में किया जाने वाल एक भोजन समारोह।
दसोतरसो-दे० दाबोतर सो।
दसोतरी-(ना०) १ प्रति सौ के हिसाब से दश ओर। २ प्रति सौ के ऊपर दस और देने लेने का रिवाज। ३ मकान या जमीन बेचने पर प्रति सौ रुपयो पर दस रुपय के हिसाब से लिया जाने वाला मारवाड राज्य का एक पुराना कर।
दसोदिस-(अ०य०) १ चारो ओर। सब तरफ। २ दसो दिशाओ में। (ना०) दसो दिशाएँ।
दस्त-(न०) हाथ। (ना०) १ पतला पाखाना। दस्त। २ बार बार पाखाना लगने का रोग।
दस्तखत-दे० दसखत।
दस्तपोशी-(ना०) एक दूसरे से मिलने पर परस्पर हाथ मिलाना।
दस्तगी-(ना०) कागज की तख्ती।

शकुन रूप मांगलिक दही का टूके का तिलक करना।

दहीतरो-(न०) ठोर नाम की एक मिठाई। ठोर।

दहु-(वि०) दोनो।

दहेज-दे० दायजो।

दहोतरी-दे० दसोतरी।

दग-(न०) १ झगडा। लडाई। दगा। २ गृहकलह। ३ डर। भय। ४ अग्निकण। चिनगारी। (वि०) स्तब्ध। चकित। दिग।

दगळ-(न०) १ अखाडा। २ मल्लयुद्ध। ३ युद्ध।

दगा-(न०) १ दगा। बखडा। हुल्लड। २ विप्लव। बलवा। ३ दगा फसाद।

दगो फिसाद-(न०) दगा फसाद। लडाई झगडा। हुल्लड।

दड-(न०) १ जुरमाना। अर्थ दण्ड। २ सजा। ३ एक व्यायाम। ४ छडी। ५ डडा। ६ ब्रह्मचारी तथा सन्यासी के पास रहने वाला दड। ७ राजदड। शासन दड। ८ अधिकार। शासन। ९ छत्रदड। १० हस्ति सुण्ड। सूड। ११ चार हाथ का नाप। १२ साठ पळ का समय। एक घड़ी।

दंडणो-(क्रि०) १ दड करना। जुरमाना करना। २ सजा करना। ३ मारना। पीटना।

दंडवत-दे० दडोत।

दंडा-वेडी-(ना०) बीच म डडे वाली पाँव की बेडी।

दडाहुड-(न०) ढोल के ताल के साथ खेला जाने वाला एक डडा रास नृत्य।

दडी-(न०) १ दण्डधारी सन्यासी। २ एक प्रसिद्ध सस्कृत कवि।

दडो-दे० डण्डा।

दडोत-दे० डडोत।

दत-(न०) दांत।

दत कढ़ोणो-(वि०) निलज्जता से दाँत निकालने वाला। हैं हैं करने वाला। मूर्ख।

दत कथा-(ना०)१ जनश्रुति। किम्वदन्ती। मुख परपरा से चलती आई हुई बात। २ ... की बातचीत। बकवाद। ३ चक चक। ४ जबानी बातचीत। जबानी जमा खर्च।

दतलो-(न०) हँसिया। दराती। दातला।

दतार-दे० दताळ।

दताळ-(न०) १ गजानन। गणेश। २ हाथी। (वि०) होठो से बाहर निकले हुए बड दाँतो वाला।

दतालय-(न०) मुँह। मुख। मूडो।

दताळी-(ना०) घास फूस आदि हटाने या समेटने का कृषक का एक औजार। पाँचा। (वि०) बडे दाँतो वाली।

दताळो-(न०)१ हाथी। २ सिवाने (मार वाड) के पास की एक ऐतिहासिक पहाडी जिसके शिखर समूह दातो के समान उठे हुए है। (वि०) बड दाँतो वाला।

दतावळ-(न०) १ हाथी। २ दतपक्ति।

दती-(न०) १ हाथी। दती। २ कघी। (वि०) दाँतो वाला।

दतूसळ-(न०) १ हाथी या सूअर का बाहर निकला हुआ दाँत। २ दे० दाँतोर।

दतेह-(न०)सिर मे होने वाला एक फोडा।

दतार-दे० दाँतोर।

दद-(न०) १ झगडा। कलह। द्वद्व। २ उपद्रव। ३ दुविधा।

ददी-(वि०) झगडालू। उपद्रवी। द्वन्द्वी। झगड़ाखोर।

दपति-(न०) पति पत्नी का जोड़ा। पति पत्नी।

दपा-(ना०) बिजली। सपा। खिवण।

दभ-(ना०) १ पाखंड । ढोंग । २ गर्व । अभिमान । घमंड ।
दभी-(वि०)१ पाखंडी । ढोंगी । पाखंडी । २ अभिमानी । घमंडी ।
दभोळ-(ना०) वस्त्र ।
दश-दे० दस ।
दस-(ना०) १ दांत । [illegible] । २ बिच्छू वगैरा आदि का डंक । ३ सांप का डसना । ४ दांत से काटने या डंक मारने की क्रिया । ५ दांत से काटने या डंक मारने से होने वाला घाव । दंश । ६ कवच ।
दसणौ-(क्रि०) १ डंक मारना । डसना । (सांप आदि का)। ३ दांतों से काटना ।
दस्टी-(ना०) १ डसने वाला । सांप । २ सूअर । दंष्टी ।
दा -(प्रत्य०) किसी दस्तावेज के नीचे दस्तखत करने के पूर्व लिखा जाने वाला 'दस्तखत' शब्द का संक्षिप्त रूप ।
दा-(ना०) इच्छा । दाय । (ना०) १ दादा । पितामह । २ बार । दफा । मरतबा । ३ दांव । दाव । (प्रत्य०) षष्ठी का चिह्न । का
दाई-(ना०) १ धाय । उपमाता । २ बच्चा जनाने वाली स्त्री । दायण । ३ प्रकार । तरह । ४ बार । दफा । दाण । (वि०) समान । बराबर ।
दाकल-(ना०)१ डर । २ धमकी । डांट । धाकल । ३ ललकार । ४ डराने वाली । [illegible] की आवाज । दहाड़ । गरजन ।
दाकलणौ-(क्रि०) १ धमकाना । डांटना । २ डराना । ३ ललकारना ।
दाख-(ना०) द्राक्षा । दाख । द्राख ।
दाखणौ-(क्रि०) १ कहना । २ ध्यान में लाना । ३ दिखाना । बताना । ४ प्रगट करना । ५ दरियाफ्त करना । ६ गुण धर्म बताना । अमर दिखाना ।
दाखल-(वि०) १ दाखिल । प्रविष्ट । २ शामिल (ना०) प्रवेश ।
दाखला-(ना० १ उदाहरण । दृष्टांत । २ प्रमाण । [illegible] । ४ लिया जाना । इन्दराज । ५ सीख । सबक । ६ अधिकार । सत्व । ७ अनुभव । ८ प्रवेश ।
दागवणौ-दे० दागणौ ।
दाग-(ना०) १ मृतक का दाह संस्कार । अग्नि संस्कार । २ जलाने का चिह्न । ३ पशुओं के अंग पर पहिचान के लिये दग्ध क्रिया से बनाया हुआ निशान । ४ धब्बा । दाग । निशान । ५ दोष । अपराध । ६ कलंक । लांछन ।
दागड़-दोटो (वि०) [illegible] जैसा बर्ताव । [illegible] । (ना०) बच्चों का एक खेल ।
दागड़िया-(ना०)१ चालाकी से लेन खरीदने में ज्यादा और देने बेचने में कम परिमाण (तोल माप और नाप आदि) में खरीदने बेचने वाला धूर्त दूकानदार । २ छली । धूर्त । ठग । लुटेरा ।
दागड़ो-(ना०) १ लुटेरों का दल । २ समूह । झुंड । ३ लुटेरों का आक्रमण । ४ लूट ।
दागणौ-(क्रि०) १ दाग देना । शव का अग्नि संस्कार करना । २ जलाना । ३ डाम देना । गरम शलाका से अंग पर चिह्न करना । दागना । डामणौ । ४ बंदूक तोप आदि का छोड़ना । ५ कलंकित करना ।
दाग देणौ-(मुहा०) १ शव का अग्नि संस्कार करना । मृतक को जलाना । २ तप्त शलाका से पशु का चिह्नित करना ।
दागल-दे० दागी ।
दागळो-दे० डागळो ।
दागी-(वि०) १ दाग या धब्बे वाला । दागल । २ कलंकित । लांछित । दागल । ३ सड़ा हुआ । ४ त्रुटियाला । ५ खराबी वाला । दोष युक्त ।

दागीजणो *(क्रि०)* १ दाग लगना । २ नागा जाना । ३ मरना । ४ सन्ताप उत्पन्न होना ।

दागीणा-दे० गागीणा ।

दागीनो-*(न०)* १ गहना । आभूषण । २ सहारा । रग । मदद ।

दागो-*(न०)* १ धब्बा । दाग । २ लांछन । लाञ्छन ।

दाघ-*(न०)* १ कलंक । लांछन । २ धब्बा । निशान । ३ ताप । उग्र ।

दाजी-*(न०)* १ दादा । २ बडा भाई । ३ बडा बुड्ढा ।

दाझ-*(न०)* १ दाह । २ सन्ताप । ३ मानसिक कष्ट । ४ शत्रुता । ५ ईर्षा । डाह । द्वेष । ६ क्रोध । चिढ । ७ अनुकंपा । चिढ ।

दाझणो-*(क्रि०)* १ जलना । दग्ध होना । २ जलन होना । ३ संताप होना । ४ जलाना । दग्ध करना । ५ अत्यधिक कष्ट देना । संतप्त करना ।

दाट-*(न०)* १ रुकावट । रोक । २ समूह । ३ धमकी । फटकार । ४ बोतल शीशी आदि का डाग । डाट । ५ चोट । प्रहार । ६ तबाही । विनाश । ७ बारूद की सुरंग ।

दाटक-*(वि०)* १ वीर । बलवान । शक्तिवान । २ दृढ । मजबूत । ३ धमकाने वाला । फटकारने वाला । ४ रोकने वाला ।

दाटणो-दे० डाटणो ।

दाटी-दे० डाटी ।

दाटो-दे० डाटो ।

दाडम-*(ना०)* अनार । दाडिम ।

दाडो-*(न०)* दिन । वहाडो ।

दाडोजी-*(न०)* १ एक लोक देवता । दहाडाजी । २ स्त्रियों का एक व्रत । ३ स्त्री समाज की एक लोक वार्ता, जिसे स्त्रियाँ दाडाजी के व्रत के दिन सुनती है । दे० दहाडाजी ।

दाण-दे० डाण ।

दाढाळ-*(वि०)* दाढी वाला । २ बडी डाढ़ा वाला । *(न०)* सूअर ।

दाढाळी-दे० डाढाळी ।

दाढाळो-*(न०)* १ सूअर । शूकर । २ पुरुष । मर्द । ३ घनी दाढी । *(वि०)* १ दाढी वाला । डाढ़ार । २ मर्द ।

दाढी-*(ना०)* डाढा । *(वि०)* तन्दुरुस्त । २ अच्छा ।

दाढी सू टी-दे० डाढी सू टी ।

दाढो-दे० डाढा ।

दाढो भलो-दे० डाढो भलो ।

दाण-*(न०)* १ राजकर । चूंगी । महसूल । मालगुजारी । २ दान । ३ दंड । जुरमाना । जरीबानो । ४ दाँव । चाल । ५ चौपड, सतरंज आदि में खेलने का दाँव । बारी । ६ मौका । अवसर । ७ बार । दफा । ८ बारी । पारी । ९ भांति । प्रकार । १० हाथी का मद । मदजल ।

दाणत-दे० दानत ।

दाणलीला-*(ना०)* ग्वालिन गोपियों से दही दूध की चूंगी लेने की की हुई श्रीकृष्ण की लीला ।

दाणलो-दे० दाणव ।

दाणव-*(न०)* १ दैत्य । दानव । २ यवन । मुसलमान ।

दाणवगुरु-*(न०)* दानवगुरु । शुक्राचार्य ।

दाणव राह-*(ना०)* १ मुसलमानों के जैसा रहन सहन । २ मुसलमानी व्यवहार । ३ दानव राह पर चलने वाला । मुसलमान । ४ दुष्टता । ५ अत्याचार । *(वि०)* १ दुष्ट । २ आततायी । अत्याचारी ।

दाणव-*(न०)* १ दानवपति । २ रावण । ३ कंस । ४ यवन बादशाह ।

दागव राव-(न०) १ गारत। दागनों का स्वामी। २ बादशाह। यवन बादशाह।

दागवो-दे० दागव।

दागादार-(वि०) दागदार। दागवाला। खराबदार। कसोदार। कसीवाळो।

दागी-(न०) १ कर वसूल करने वाला व्यक्ति या कर्मचारी। २ दाग का अधिकारी। ३ दाग देने का काम करने वाला। नापावट। दागियो। ४ धारण करने वाला या करने वाला। अस्र या अंक करने वाला एक प्रत्यय। जैसे—पीस्तागा। सुगादागी आदि।

दाणा-(न०)१ अनाज। धान। २ अन्न का कण। दाना। ३ घोड़े को खिलाने में भिगाई जाने वाली चने की दाल आदि। दाना। ४ माल का दाना। मनका। ५ गठ्ठी। बल्ल। नग। ६ नग। अन्न। ७ नगीना। रत्न कण। ८ समझ। बुद्धि।

दाणा दाबणा-(मुहा०)१ विचार जानना। २ किसी के मन की जानने का प्रयत्न करना। ३ खुशामद करना।

दाणा देणा-(मुहा०) घोड़े, बैल आदि को दाना खिलाना।

दाणो पाणी-(न०) १ प्रारब्ध। नसीब। तकदीर। २ दाना पानी। अन्न जल। ३ जीविका। रोजी। ४ संयोगवश किसी स्थान पर रहना और वहां का अन्न जल लेना। रहने का संयोग।

दाणो पाणी करणा-(मुहा०) पड़ाव पर दाना पानी (भोजन) करना।

दात-(ना०)१ दहेज। २ दान। ३ दात। ४ दांत। हँसिया। (वि०) दाता। देने वाला।

दातडियाळ-दे० दातडियाळ।

दातण-(न०) दातुन। दतौन।

दातण कुरळो-(न०) १ मुख शुद्धि। २ दातुन और कुल्ला द्वारा दांत और गला साफ करने का कार्य। ३ दातुन नाश्ता आदि करने की क्रिया।

दातण पाणी-(न०)१ दातुन और पानी। २ दातुन और पानी से की जाने वाली हाथ मुंह की सफाई। ३ मुखशुद्धि। ४ दातुन नाश्ता आदि करने की क्रिया। ५ कलेवा। नाश्ता।

दातरडी-(ना०)१ छोटा हँसिया। गडासा। २ सूअर का बाहर निकला रहने वाला दांत।

दातरडो-(न०) हँसिया। दांत। गंडासा।

दातरळो-दे० दातरडो।

दातलो-दे० दातरडो।

दाता-(वि०) १ देने वाला। २ दानी। उदार। (न०) १ कुटुम्ब का वृद्ध पुरुष। २ पिता। ३ ईश्वर। ४ दानी पुरुष।

दातार-(वि०)१ दाता। २ उदार। (न०) १ ईश्वर। २ दाता पुरुष।

दातारगी-(ना०) दातृत्व। दानशीलता। बदान्यता।

दातार गुर-(वि०)बड़ा दानी। महादानी।

दातारी-दे० दातारगी।

दातावरी-(वि०) दानवाली। (ना०) दानशीलता। बदान्यता। दातारगी।

दातडियाळ-दे० दातडियाळ।

दायरो-(न०) भाप से सिझाने के निमित्त खाद्य वस्तु को बरतन में अधर रखने के लिये की जाने वाली पानी के ऊपर तृण आदि की परत या जाली।

दाद-(ना०) १ फरियाद। अर्ज। २ इन्साफ। न्याय। दाद। ३ किसी के व्यक्तित्व, काम या बात को समझने मानने या महत्व देने का भाव। ४ धन्यवाद। ५ एक चर्म रोग। दद्रु। दाद।

दाद फरियाद-(ना०) १ सुनवाई। पुकार। २ निवेदन। फरियाद। ३ न्याय। ४ माफ।

दादर-(न०) १ एक पक्षी। २ मेंढक। दादुर। ३ बादल। ४ पहाड़। ५ जीना। सीढ़ी। ६ एक वाद्य यंत्र।

दादरो-(न०) १ संगीत का एक तान। २ गान की एक तर्ज। एक राग। दादरा। ३ सीढ़ी।

दादागुर-(न०) गुरु का गुरु।

दादाणो-(न०) १ नानाणो (ननिहाल) शब्द के साम्य पर प्रयुक्त किया जाने वाला दादा पिता तथा दादा के पौत्र का घर। २ गुरु का घर। स्वगृह। ३ जिनके घर में जन्म लिया है वे पिता दादा आदि कुटुंबीजन। दादा का परिवार। ४ पीहर।

दादाभाई-(न०) बड़ा भाई। दादा।

दादारीगो-(वि०) १ सुस्त। ढीला। २ अकर्मण्य। ३ निर्बुद्धि। बेसमझ।

दादी-(ना०) पिता की माता। पितामही।

दादीजी-(ना०) १ दादी। पितामही (मानार्थक) २ दादी सास।

दादी मा-दे० दादी। (मानार्थक)।

दादी-सा-दे० दादीजी।

दादी-सासू-(ना०) सास की सास। ददिया सास।

दादी सुसरो-(न०) ददिया ससुर।

दादूजी-(न०) दादूपंथ के प्रवर्तक दादूदयाल (या दादूजी) नाम के एक संत। इनका निवास स्थान जयपुर जिले के नराणा गांव में था और वहीं इनका देहान्त हुआ था।

दादूपंथी-(वि०) संत दादूजी के चलाये हुये पंथ का अनुयायी।

दादो-(न०) पिता का पिता। पितामह। दादा।

दादाश्री-(न०) दादा (मानार्थक)।

दादासा-दे० दादाजी।

दाध-(ना०) १ द्वेष। २ शत्रुता। ३ जलन।

दाधारीगो-(वि०) १ आलसी। २ बिना ढंग का। ३ पागल। मूर्ख। ४ असभ्य।

दाधीच-(न०) दधीचि ऋषि का वंशज।

दान-(न०) १ श्रद्धापूर्वक धर्मबुद्धि से पुण्यार्थ किसी को दी जाने वाली कोई वस्तु। २ धर्म की दृष्टि से या दयावश किसी को कोई वस्तु बिना मूल्य लिए देने की क्रिया। दान। खैरात। ३ हाथी का मद। ४ खेल में प्राप्त होने वाला दाँव। बारी। पारी। (प्रत्य०) किसी संज्ञा शब्द के आगे रखने वाला धारण करने वाला या जानने वाला अर्थ को सूचित करने वाला प्रत्यय शब्द। उदा. कलमदान। पीकदान।

दानखो-(न०) दीवानखाना। बैठक।

दानगुरु-(न०) १ बड़ा दानी। दानवीर। दानेश्वरी।

दानत-(ना०) मनोवृत्ति। मन की अवस्था। मनस्थिति।

दान दखणा-(ना०) दान और दक्षिणा। दान की वस्तु। २ दान।

दानधर्म-(न०) दान करने का धर्म।

दानव-(न०) राक्षस। दाणव। राखस।

दानवीर-(न०) बहुत बड़ा दानी। दानेश्वर। दानेसरी।

दानाई-(ना०) १ बुद्धिमानी। २ विवेक। ३ भलमनसाई। ४ प्रामाणिकता। ईमानदारी। ५ बुढ़ापा।

दानापणो-दे० दानाई।

दानी-(वि०) दान देने वाला। दानी। उदार। (प्रत्य०) शब्द के आगे आने वाला प्रत्यय। जैसे पीकदानी।

दानी मानी-(वि०) दान देकर सम्मान करने वाला। २ बड़ादानी।

दानेसरी–(न०) दानेश्वरी। बड़ादानी। दानवीर।

दानेस्वर–(न०) दानेश्वर। बड़ादानी। दानवीर।

दानो–(वि०) १ समझदार। विवेकी। बुद्धिमान। २ वृद्ध। बुड्ढा।

दाप–(न०) १ दर्प। अभिमान। २ शक्ति। प्रताप। तेज। ३ दबदबा। ४ उत्साह ५ जोश।

दापटणो–दे० दपटणो।

दापड–दे० दाफड।

दापो–(न०) १ विवाह आदि उत्सवों में लगने वाला एक कर। २ एक राजकीय कर। ३ नेग। लाग। हक। हक का मांगना।

दापो छाडावणो–(मुहा०) दापा माफ कर देना।

दाफड–(न०) मच्छर आदि के काटने से चमड़ी में होने वाला चकत्ता। ददोरा।

दाब–(न०) १ बूरा चीनी और गाय के ताजे घी का एक योग जो गर्मी आ जाने पर रात को सोते समय खाया जाता है। २ दबाव। ३ आग्रह। ४ अंकुश। धाक। नियंत्रण।

दाबणो–(क्रि०) १ दबाना। दाबना। हुमसना। २ दमन करना। अंकुश में रखना। ३ किसी वस्तु को जबरदस्ती छीन कर अपने अधिकार में कर लेना। हड़पना। दबाना। ४ पगचंपी करना। ५ बोझ के नीचे रखना। ६ पराजित करना।

दाभ–दे० डाभ।

दाम–(न०) १ मूल्य। कीमत। २ रुपया पैसा। ३ एक प्राचीन सिक्का। ४ रुपया का चालीसवां भाग (जाज फतावट में)। ५ पैसे का पचीसवां भाग।

दामण–(ना०) १ बिजली। दामिनी। (न०) १ पल्ला। आंचल। दामन। २ पशुओं के पैर बांधने की रस्सी का टुकड़ा। बंधन।

दामणगीर–दे० दावणगीर।

दामणी–(ना०) १ एक प्रकार की ओढ़नी। २ विधवा स्त्री की ओढ़नी। ३ बिजली। दामिनी। ४ स्त्रियों के सिर पर का एक गहना। एक शिरोभूषण।

दामणो–(न०) १ स्त्रियों के हाथ की दो अंगुलियों में पहनने का एक छल्ला। दामो। २ गाय भैंस को दोहने के समय उनके पिछले दोनों पांवों को बांधने की रस्सी का एक टुकड़ा। छांद। नोइ। ३ ऊंट के पांव को बांधने की रस्सी का टुकड़ा। तोडा। ४ मथानी की रस्सी। नेतरो। नेतो। (वि०) १ दमन करने वाला। नाश करने वाला। २ बंधन में डालने वाला। (क्रि०) १ दमन करना। नाश करना। २ बंधन में डालना। कैद करना।

दाम दुपट–(न०) मूल रकम से ब्याज की रकम अधिक हो जाने की स्थिति में मूल रकम से दुगुनी रकम डिक्री द्वारा दिलाये जाने का एक नियम। कर्ज से दुगुना लेना। दून। २ दुगुना दाम। दुगुना रुपया।

दामन–दे० दामण।

दामनगीर–दे० दावणगीर।

दामी जोडो–(वि०) १ धन संचय करने वाला। २ कंजूस।

दामो–दे० दामणो सं० १

दामोदर–(न०) १ रुपया पैसा (व्यंग में)। २ श्रीकृष्ण।

दाय–(ना०) १ मर्जी। इच्छा। २ पसंद। अभिरुचि। ३ पैतृक सम्पत्ति का भाग। ४ प्रकार। तरह।

दायरो-(न०) १ दस वर्ष का अंतर। २ दस वर्षों का समाहार। दस वर्ष का समय। दशक।

दायजो-(न०) १ दहेज। २ स्त्रीधन।

दायरा-(ना०) भाई।

दायर-(ना०) १ तरह। प्रकार। २ इच्छा। दाय। ३ जो निर्णय के लिये न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया गया हो।

दायो-(न०) स्वत्व। हक। दावा। दावो।

दार-(ना०) १ स्त्री। नारी। २ पत्नी। ३ लकड़ी। काष्ट। दारु। ४ शब्द (यौगिक) के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय जिसका अर्थ होता है—रखने वाला। जैसे—पद्मासार मातबर इत्यादि।

दारख-(वि०) १ मारने वाला। २ चीरने वाला। (न०) ऊँट दरक। दमाज।

दारण-(वि०) १ दारुण। २ चीरने वाला।

दारमदार-(न०) १ काम का भार। २ आश्रय।

दारा-(ना०) पत्नी। स्त्री।

दारिगह-देः दरगाह।

दारिद-(न०) दारिद्र्य।

दारियो-(न०) वेश्या का पुत्र। जारज।

दारी-(ना०) १ पुत्री। २ भामी। ३ वेश्या।

दारू-(न०) १ शराब। मद्य। २ दवा। औषधि। ३ बारूद।

दारूडियो-(वि०) शराबी।

दारू-काड़ो-(न०) महुआ वृक्ष।

दाळ-(ना०) १ दला हुआ मूंग मोठ आदि द्विदल धान्य। २ मूंग मोठ आदि की दाल का पानी में भिगो कर पकाया हुआ तीवन। भिगाई हुई दाल में नमक मिर्च आदि लगाने डाला हुआ सालन। दाल।

दाळचीणी-(भा०) दालचीनी।

दाळद-(न०) १ दारिद्र्य। निर्धनता। गरीबी। २ कचरा। मैला।

दाळिदर-(न०) १ कचरा। २ गरीबी। निर्धनता।

दाळदरी-(वि०) १ गरीब। निर्धन। २ मैला कुचेला।

दाळ रोटी-(ना०) १ दाल और रोटी। २ निर्वाह। ३ पोषण।

दाळिद्र-(न०) १ दरिद्रता। निर्धनता। २ कचरा। मैला।

दाळियो-(न०) १ नमक मिर्च आदि मसाले मिला कर तली हुई दाल की टिकिया। बड़ा। भुजिया। २ चनौठी या काली मिर्च जितनी छोटी चमकदार प्याली (गुरिया) य गुरियाएँ जुड़ है वे तिलक बनाने के काम में भी आती हैं। ३ दाल परोसने का पात्र। ४ दार।

दाव-(न०) १ मौका। अवसर। दाँव। २ सुयोग। ३ युक्ति। ४ चाल। ५ छल। कपट। ६ सकर विकल्प। ७ आक्रमण। ८ वार। समय। मतबा। ९ पारी। बारी।

दावटणो-(क्रि०) १ दबाना। २ हराना।

दावण-(न०) १ लहँगा। घाघरा। २ चारपाई के पताने की रस्सी। दामर। बदामण। ३ आंचल। पल्ला।

दावणगीर-(वि०) १ दामनगीर। वस्त्र पकड़ने वाला। २ दावा करने वाला। पीछे पड़ने वाला। २ आश्रय में रहने वाला।

दावत-(ना०) भोज। जीमन। जीमण। गोठ।

दावपेच-(न०) १ युक्ति प्रयुक्ति। २ चालाकी।

दावागीर-(न०) १ शत्रु। २ अपना अधिकार जताने वाला। ३ दावा करने वाला।

दाँतापिसी-दे० दाँतापमी।

दाँती-(न०) १ हाथीदाँत आदि की चूड़ियाँ बनाने वाला व्यक्ति। चूड़ीगर। चीरविये। २ हाथीदाँत की चूड़ियों का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। ३ माथे के बालों में उत्पन्न जूँएँ और लीखों को निकालने के लिये बधी के दाँतों का धागा में बाँधने की क्रिया। ४ निगान का एक औजार।

दाँतूर-दे० दाँतोर।

दातूगळ-(न०) १ हाथी का दाँत। २ ऊपर नीचे के दाँतों के परस्पर भिड़ जाने का एक रोग। दाँतोर। मुँह और दाँत बंद हो जाने का एक रोग।

दातो-(न०) भारी आदि का दाँत। दाँता।

दाँतोर-(न०) दाँतों का एक रोग जिसमें ऊपर नीचे के दाँत परस्पर मजबूती से भिड़ जाते हैं।

दाँयर-(ना०) प्रकार। तरह।

दाँवण-(ना०) खाट की बुनन में पायतान की ओर बुनन और उसके में लगी रहने वाली रस्सी। चारपाई के पताने की रस्सी। अदावण। विदावण।

दावणो दे० दामणो।

दिखणा-दे० दिखण।

दिक-(वि०) हैरान। तंग। (ना०) दिशा। (न०) क्षय रोग।

दिक्कत-(ना०) १ मुश्किली। कठिनाई। हरकत। २ हैरानी। परेशानी।

दिखण-(न०) १ दक्षिण दिशा। २ दक्षिण में स्थित देश। दक्खिन। दखन। ३ मारवाड़ का दक्षिण प्रदेश।

दिखणाण-(न०) १ दक्षिण दिशा। २ दक्षिण देश। ३ दक्षिणायन। (वि०) १ दक्षिण दिशा का। २ दक्षिण ओर का।

दिखणाद-(ना०) दक्षिण दिशा। (अव्य०) दक्षिण दिशा में।

दिखणादी-(वि०) दक्षिण की ओर का। दक्षिणी। २ दक्षिणी। दक्षिण देश का।

दिखणादू-(वि०) दक्षिण दिशा का। (क्रि०वि०) दक्षिण में।

दिखणादो-दे० दिखणादी।

दिखणी-(वि०) १ दक्षिण का। दक्षिण संबंधी। दक्षिणी। २ दक्षिण देश का निवासी। महाराष्ट्रीय। दक्षिणी। (ना०) दक्षिणी भाषा। मराठी भाषा।

दिखणी चीर-(न०) एक प्रकार का मूल्यवान। ओढना। दखिणी चीर।

दिखाऊ-(वि०) १ जो केवल देखने भर का हो। २ बनावटी। ऊपरी। आडंबरी। दिखावटी। ३ कृत्रिम। नकली बनावटी।

दिखावणो-दे० देखावणो।

दिखाव-दे० देखाव।

दिखावट-(ना०) १ देखा जा सके वह। २ बनावट। ३ ढोंग। आडम्बर।

दिखावटी-दे० दिखाऊ।

दिखावड़ो-दे० दिखावड़ो।

दिखावणो-दे० दिखावणो।

दिखावो-(न०) १ ऊपरी तड़क भड़क। आडंबर। २ दृश्य। ३ पाखंड।

दिख्या-दे० दीक्षा।

दिग-(ना०) दिशा।

दिगमूढ-(वि०) दिग्मूढ। चकित। दंग।

दिगम्बर-(वि०) १ नंगा। अवस्त्र। (न०) १ एक जैन सम्प्रदाय। २ नंगा रहने वाला दिगम्बर का साधु। ३ महादेव। ४ सिद्ध महात्मा।

दिग्घ-(वि०) दीर्घ। डीघो।

दिग्विजय-(ना०) सब देशों को जीतना। सभी दिशाओं में की जाने वाली विजय। चारों दिशाओं में की जाने वाली जीत।

दिच्छा–दे० दीक्षा।

दिट्ठ–(वि०) दृष्ट। देखा हुआ। (ना०) १ दृष्टि। २ आँख। (भू०क्रि०) देखा।

दिठौणो–(न०) बच्चों की ललाट या गाल आदि पर नजर बचाने के लिए लगाई जाने वाली काजल की बिंदी। दिठौना।

दिढ–(वि०) दृढ। मजबूत।

दिढता–(ना०) दृढता। ...।

दिढाण–दे० दिढाव।

दिढाणो–दे० दिढावणो।

दिढाव–(न०) दृढाव। दृढता।

दिढावणो–(क्रि०) १ दृढ करना। मजबूत करना। २ निश्चय करना। ३ निश्चय करवाना। ४ बात को पक्की करना। ५ दुहराना। बहराणो।

दिण–(न०) दिन। दिवस।

दिणयर–(न०) दिनकर। सूर्य।

दिणंद–(न०) दिनेंद्र। सूर्य।

दिणयर–(न०) दिनकर। सूर्य।

दिणियर–(न०) सूर्य। दिनकर।

दित–(न०) १ आदित्य। सूर्य। २ दैत्य।

दिन–(न०) १ दिवस। दिन। २ काल। समय। ३ सप्ताह का दिन। वार। ४ मिति। तिथि।

दिनचर्या–(ना०) दिन भर का काम।

दिनमणि–(न०) सूर्य। सूरज।

दिनमान–(न०) १ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का मान। २ प्रारब्ध भाग्य। नसीब। ३ सूर्य।

दिनरात–(अव्य०) हमेशा। सदैव। (न०) दिन और रात।

दिनूगे–(अव्य०)१ गानवाले कल का सवेरा। कल सवेरे। २ आने वाला कल। ३ सूर्योदय के समय। (न०) प्रभात। प्रातःकाल। दिनोदय।

दिनेदिने–(अव्य०) प्रतिदिन। दिनोदिन।

दिनोदिन–(अव्य०) प्रतिदिन। दिनेदिने।

दिव–दे० दिव्य।

दिमाग–(न०) १ मगज। मस्तिष्क। २ बुद्धि। ३ गर्व। अभिमान।

दियण–(वि०) देने वाला। (क्रि०वि०) देने के लिये।

दियाळी–दे० दीवाळी।

दियासळाई–(ना०)आग जलाने की तीली। दियसलाई। तूळी।

दियो–(न०) दीपक। दीया। (क्रि०भू०) दिया। दे दिया।

दिराणो–दे० दिरावणो।

दिरावणो–(क्रि०) दिलाना। दिलवाना।

दिल–(न०) १ हृदय। २ चित्त। मन। ३ साहस। ४ इच्छा। प्रवृत्ति।

दिल टखूल–(वि०) १ दिल का कुटिल। २ निर्दय। बरहम। ३ कृपण। कंजूस। ४ श्रद्धाहीन। अभक्त।

दिलगहर–(वि०) १ उदार। २ गंभीर।

दिलगीर–(वि०) १ उदास। खिन्न। नाखुश। २ दुखी।

दिलगीरी–(ना०) १ उदासी। खिन्नता। नाखुशी। २ शोक। दुख। ३ खेद। अफसोस।

दिलडी–(ना०)१ दिल्ली नगर। ढिलडी। २ ...। ३ एक आभूषण। तिलडी।

दिल दराज–दे० दिल दरियाव।

दिल दरियाव–(वि०) १ जो बड़े हृदय वाला हो। उदार। २ दानशील।

दिल-दूठ–(वि०) १ कपटी। छली। २ दुष्ट। ३ साहसी। ४ दृढ। मजबूत।

दिल माठो–(वि०) कंजूस। कृपण।

दिलावर–(वि०) १ साहसी। २ वीर। बहादुर।

दिलासा–(ना०) आश्वासन। सांत्वना। ढाढस। धीरज।

दिलेर–(वि०) हिम्मतवान। द

दिलेसर-(न०) दिल्लीश्वर । राजा । बादशाह । (वि०) बड़े दिल वाला ।
दिल्लगी-(ना०) १ मनोरञ्जन । विनोद । मजाक ।
दिल्ली-(ना०) इतिहास प्रसिद्ध भारत की राजधानी का नगर ।
दिल्लीवोर-(न०)एक प्रकार का बड़ा बेर ।
दिल्लीव-(न०) १ दिल्लीपति । २ बादशाह ।
दिव-(न०) १ दिन । २ सूर्य । ३ दीपक । ४ स्वर्ग । ५ आकाश । (वि०) १ दिव्य । २ अलौकिक । ३ प्रकाशमान ।
दिव चख-(न०) १ सूर्य । २ ज्ञानचक्षु । दिव्यचक्षु ।
दिवटियो-दे० दीवटियो ।
दिवलो-(न०) दीपक । दिउला । दीवो ।
दिवलोक-(न०) स्वर्ग ।
दिवस-(न०) १ सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय । दिन । २ एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय । दिन । दिवस । ३ समय । जमाना । दिन । ४ दिन ।
दिवसकर-(न०) सूर्य ।
दिवसमुख-(न०) प्रभात ।
दिवाकर-(न०) सूर्य ।
दिवाटियो-दे० दीवटियो ।
दिवायर-(न०) दिवाकर । सूर्य ।
दिवाळी-दे० दीवाळी ।
दिव्य-(वि०) १ अलौकिक । २ भव्य । शानदार । ३ प्रकाशमान । ४ सुन्दर ।
दिव्य दृष्टि-(ना०) अलौकिक दृष्टि ।
दिव्यास्त्र-(न०) १ मंत्र द्वारा परिचालित अस्त्र । २ देवता द्वारा प्रदत्त अस्त्र ।
दिशा-(ना०) १ क्षितिज वृत्त के किये हुए चार विभागों में से एक । २ दिशाओं के चार कोण और दो आकाश पाताल-दस प्रकार दस दिशाओं में से प्रत्येक । (राजस्थानी में आठ निकोण (शकुन) दिशाओं की कल्पना करके १६ दिशाएँ और दो आकाश पाताल इस प्रकार कुल १८ दिशाएँ मानी गई हैं।) ३ ओर । तरफ । बाजू ।
दिशाशूल-(न०) ज्योतिष के अनुसार अमुक दिशा में जाने के लिए अशुभ गिना जाने वाला दिन ।
दिशासुत-(न०) दीपक ।
दिस-(ना०) १ दिशा । २ तरफ । ओर ।
दिसट-(ना०) दृष्टि ।
दिसनी-(अव्य०) १ ओर को । तरफ को । २ दिशा की ओर से ।
दिसतरी-दे० दिसातरी ।
दिसबर (न०) ईसवी सन का बारहवां (अंतिम) महीना । डिसेम्बर ।
दिसा-(ना०) १ क्षितिज वृत्त के किये हुये मुख्य चार ओर इनके अन्तर्गत राजस्थान में सोलह (आकाश पाताल के साथ १८) कल्पित विभागों में से एक । दिशा । दिक् । २ ओर । बाजू । तरफ । ३ पाखाना । विष्टा । टट्टी । ४ मल त्याग की क्रिया । (अव्य०) बाबत । संबंध में ।
दिसा जाणो-मल त्याग करना । पाखाना जाना । टट्टी जाना । झाडेजाणो ।
दिसा-फरागत-(न०) १ मल त्याग । फरागत । पाखाने जाना । झाडेजाणो ।
दिसाभूल-(न०) दिशाभ्रम ।
दिसावर-(न०)१ परदेश । विदेश । देशावर । २ प्रदेश ।
दिसावरी-(वि०) १ परदेश में रहने वाला । २ परदेश में व्यवसाय करने वाला । ३ परदेशी । ४ दिसावर से संबंधित । दिसावर का ।
दिसातरी-(न०) १ एक ब्राह्मण जाति जो मृतक का एकादशा कर्म करवाती है । २ शनिवार की पीड़ा निवारणार्थ दान लेने वाली एक जाति । डाकोत । ३

प्रेत कर्म कराने वाला और उसका दान लेने वाला ब्राह्मण। महा पात्र। महा ब्राह्मण। कट्टहा। कारटियो।
दिसि-(ना०) १ दिशा। २ ओर। तरफ।
दिसिया-(ना०) १ दिशा। २ ओर। तरफ।
दिहं-(न०) १ दिन। २ दिशा।
दिहाड़ी-(अव्य०) १ नित्य प्रति। प्रति दिन। हर रोज। (ना०) दैनिक पारिश्रमिक। एक दिन का वेतन। दैनगी।
दिहाडो-(न०) दिवस। दिन।
दिंग-(वि०) चकित। दंग। दङ्ग।
दी-(न०) १ दिन। दिवस। २ दशा का ग्रह। (प्रत्य०) सबंध कारक स्त्रीलिंग विभक्ति। की। (क्रि०भू०) दी। दे दी। प्रदान की।
दीकरी-(ना०)१ पुत्री। बेटी। २ कन्या।
दीकरो (न०) पुत्र। बच्चा।
दीक्षा-(ना०) १ गुरु के द्वारा व्रत नियम उपदेश व मंत्र प्राप्ति लेने की क्रिया। गुरु मुख से मंत्र ग्रहण। २ संन्यास। ३ शास्त्र विधि से लिया हुआ किसी देवता के मंत्र का उपदेश। ४ गुरुमंत्र।
दीखणो-(क्रि०) दिखाई देना।
दीघ-दे० दीध।
दीठ-(ना०) १ नजर। दृष्टि। (अव्य०) १ प्रति। पीछे। प्रत्येक। पर। २ प्रत्येक के हिसाब से। (वि०) बहुतों में से प्रति एक। प्रत्येक। हरेक।
दीठणो-(क्रि०) दिखना। दिखाई देना।
दीठां-(अव्य०) देखने से।
दीठी-(ना०) दृष्टि। दीठ। (क्रि०भू०) देखी।
दी-(भू०क्रि०) १ दिखाई दिया। २ देखा। (वि०) अनुभूत। देखा हुआ।
-(न०) १ गाहिल्य। सूर्य। २ चित्तौड़ के शासक सीसोदियों के पूर्वज वंश शर्मा र नाम गोहिलोत्पत्ति से भोगादीत तक ५५ पीढ़ियों की दीत या दीत ब्राह्मणों (ब्राह्मिय ब्राह्मणों) की अल्ल या गोत्र। दीत ब्राह्मण। (नणसी री ख्यात)
दीत ब्राह्मण-दे० दीत सं० २।
दीतवार-(न०) सूरजवार। रविवार।
दीद-(ना०) १ आँख। २ दृष्टि। नजर।
दीदा-(न०,स्त्री बहिन का पति। बहनोई।
दीदार-(न०) १ दर्शन। २ स्वरूप। ३ मुंह। ४ कान्ति।
दीदारू-(वि०) १ दीदार वाला। स्वरूपवान। कांतिमान। २ दर्शनीय।
दीदी-(न०) बडी बहन। जीजी।
दीध-(भू०क्रि०) दे दिया। दिया। (वि०) दिया हुआ।
दीधां-(अव्य०) देने से। देने पर।
दीधो-(भू०क्रि०) दिया। प्रदान किया।
दीधोड़ी-(वि०) दी हुई। प्रदत्त।
दीधोड़ो-(भू०कृ०) दिया हुआ। प्रदत्त।
दीन-(वि०) १ गरीब। २ दुखी। ३ विनीत। (न०) १ धर्म। मजहब। २ मुसलमानी धर्म।
दीनता-(ना०) १ गरीबी। २ नम्रता।
दीन दयाळ-(वि०) दीनों पर दया करने वाला। ईश्वर।
दीनदुखी-(न०) गरीब और दुखी।
दीनदुनिया-(ना०) लोक-परलोक।
दीनबंधु-(न०) १ दीनों का सहायक। २ ईश्वर।
दीनानाथ-(न०) १ दीन दुनिया का रक्षक। २ ईश्वर।
दीनार-(न०) १ ढाई रुपयों की कीमत का एक प्राचीन सिक्का। २ मध्ययुगीन एक सुवर्ण मुद्रा। ३ एक तौल।
दीनां-(अव्य०) देने से।
दीनो-दे० दीधो।
दीनोड़ो-दे० दीधोड़ो।
दीन्हो-दे० दीधो।

दीप-(न०) १ दीपक । २ द्वीप । टापू ।

दीपक-(न०) १ दीप । दीवो । २ एक अलंकार (साहित्य) । ३ संगीत का एक राग । ४ केसर । ५ अजवायन । (वि०) पाचनशक्ति बढ़ाने वाला । पाचक ।

दीपकधरा-(ना०) काजल ।

दीपकसुत-(न०) काजल ।

दीपघर-(न०) १ दीवट । २ फानूस ।

दीप झाड़-(न०) एक प्रकार ज्योत ।

दीपणो-(क्रि०) १ शोभना । शोभा पाना । २ चमकना । ३ प्रसिद्ध होना । प्रकाशित होना । ४ शोभायमान होना । फबना ।

दीपतो-(वि०) १ दीप्तिमान । कांतिमान । २ फबता । फबतो । यथाविहित । ३ चमकता हुआ । ४ शोभायमान ।

दीपदान-(ना०) १ दीवट । २ देवता के सामने दीपक जलाकर रखना ।

दीपमाळका-(ना०) दीपमालिका । दीवाली ।

दीपमाळा-(ना०) १ दीपकों की पंक्ति । २ दीवाली । दीपमाला ।

दीपसुत-(न०) काजल ।

दीपावणो-(क्रि०) १ शोभित करना । २ चमकाना । प्रकाशित करना । ३ किसी को प्रसिद्धि में लाना ।

दीपावती-(वि०) १ प्रकाशमान । २ दीपों से प्रकाशमान । ३ द्वीपावती । द्वीपवती । (ना०) पृथ्वी ।

दीपावली-(ना०) १ दीवाली का त्योहार । २ दीपों की पंक्ति ।

दीमक-दे० उदेई ।

दीर्घां-दे० दीर्घा ।

दीयो-(न०) दीपक ।

दीरघ-दे० दीघ ।

दीरघाव-(न०) १ दीर्घायु का आशीवचन । २ आशीर्वाद । ३ दीर्घायु । (वि०) दीर्घायु वाला ।

दीघ-(वि०) १ लंबा । दीघो । २ बड़ा ।

दीघ यळ-(न०) त्रिमात्रिक अक्षर । (प्ला)

दीव-(न०) १ द्वीप । २ धूप । ३ दीपक ।

दीवट-(ना०) दीपाधार । दीप वृक्ष ।

दीवटियो-(न०) १ दीपक जलाने का मिट्टी का कटोरी जैसा एक पात्र । दीप जलाने की मिट्टी की छोटी कुल्हिया । २ मशालची ।

दीवड़ी-(ना०) १ बकरी के चमड़े या मोटे कपड़े का बना जलपात्र । २ पाथेय । भातो ।

दीवा-टाणो-(न०) संध्या समय । सभी सांझ । दीपक जलाने का समय ।

दीवाण-(न०) १ दीवान । प्रधानामात्य । २ उदयपुर के महाराना की एक उपाधि । ३ बिलाड़ा (मारवाड़) नगर की आई माता के मन्दिर का मुखिया । ४ राज सभा । दरबार । ५ बड़ा कमरा । ६ परिच्छेद । अध्याय । प्रकरण । ७ गजल संग्रह की पुस्तक ।

दीवाणखानो-(न०) १ दीवानखाना । बैठक । २ बड़ा कमरा ।

दीवाणगी-(ना०) १ दीवान का पद । २ दीवान का काम ।

दीवाणी-(वि०) १ रुपये-पैसे और जायदाद के इन्साफ से संबंधित । २ पागल । (ना०) १ दीवान का काम । २ दीवानी अदालत । ३ दीवानी अदालत का मुकदमा ।

दीवाणी अदालत-(ना०) अर्थ संबंधी मुकदमों का न्यायालय ।

दीवाणी कचेड़ी-दे० दीवाणी अदालत ।

दीवाणो-(वि०) दीवाना । पागल । गहलो ।

दीवाधरी (ना०) दीपक सजोने वाली दासी ।

दीवान-दे० दीवाण ।

दीवार (ना०) भींत ।

दीवाळी-(ना०) १ दीपमालिका का उत्सव । कार्तिक अमावस्या का पर्व । २ भगवान राम के राज्यतिलकोत्सव का पर्व दिन ।

दीवाळी मिलण-(ना०) एक नागोरी कर जो दीवाली पर लिया जाता था।
दीवा वेळा-(ना०) दीया बत्ती करने का समय। सध्या समय। साँझ। सभीसांझ।
दीवाराळी-(ना०) दीपावली। दीवी। बूळी।
दीवी-(ना०) १ दीये म चिपड़े लपेट कर बनाइ गई माटी चिराग। मशाल। २ दीवट। चिरागदान। ३ छोटा दीपदान।
दीवेल-(ना०)१ दीय म जलाया जान वाला तल। २ इरडी का तेल।
दीवो-(ना०)१ दीपक। २ वशज। ३ पुत्र। ४ पौत्र। ५ कुल उन्नायक श्रेष्ठ पुरुष।
दीस-(ना०) दिवस। दिन। (ना०) दृष्टि।
दीसणो-(क्रि०)१ दूर की वस्तु का दिखाई देने की स्थिति म होना। दिखना। दिखाई देना। २ आँखो म देखने की शक्ति का विद्यमान होना। अधापा नहीं होना। सूझणो। ३ मालूम होना। ध्यान म आना। सूझना।
दीह-(ना०) १ दिन। दिवस। २ भाग्य। प्रारब्ध। ३ द्विमात्रिक। ह्रस्व का उलटा। दीर्घ।
दीहणो-दे० दीसणो।
दोहपत-(ना०) दिवसपति। सूर्य। सूरज।
दीहाडो-दे० दिहाडो।
दुअठ्ठ-(वि०) १ दुष्ट। २ दृढ़। मजबूत। ३ (दो बार आठ) सालह।
दुअसपाह-(ना०)दो घोडे रखने के अधिकार वाला सनिक। दो निजी घोडो वाला सनिक।
दुआ-(ना०) १ आशीर्वाद। २ प्राथना। विनती।
दुआदस-(वि०) द्वादश। बारह।
दुआदसी-दे० द्वादशी।
दुआदसो-(ना०) १ मृतक का बारहवें दिन होने वाला श्राद्ध। मृतक के बारहवें दिन का किया कम। २ मृत्यु के बारहवें दिन किया जान वाला भोज।
दुआयती-दे० दवायती।
दुआर-(ना०) द्वार। दरवाजा। बारणो।
दुआरका-दे० द्वारका।
दुआरामती-(ना०) द्वारिका। द्वारामती।
दुआल-(ना०) १ भगडा। वखेडा। २ भगडा टटा। ३ प्रपच। ४ छल। धोखा। ५ गवट। दुख। ६ ससार। सृष्टि। ७ यह दुनिया और इसका जजाल। जगजाल। ८ एक से दो होने का भाव।
दुआळो-(ना०) १ किसी काव्य की दो पंक्तियाँ। दुवाला। २ डिंगल गीत छद के समुदाय का कोई एक छद। ३ सपूर्ण गीत छद का एक भाग। ४ समष्टि गीत का एक छद। (गीत के छदो की सख्या निश्चित नहीं है, किन्तु प्राय चार छद होते हैं)। ५ पद्यास।
दुइ राह-(ना०) १ हिन्दू धम और मुसलमान धम। २ हिन्दू और मुसलमान। ३ न्याय अन्याय। ४ धम अधम। ५ निवृत्ति और प्रवृत्ति। ६ पुण्य और पाप। ७ आस्तिक और नास्तिक। ८ दो मार्ग। दोनो मार्ग। (वि०) अच्छा और बुरा। उत्तम और निकृष्ट।
दुई-(वि०) १ दो। २ दोनो। ३ दूसरी। (ना०) १ जुदाई का भाव। अपने को दूसरे से अलग समझना। पृथक्ता। २ अतर। ३ भेदभाव। ४ दो का भाव। द्वैत। ५ दो बूटी वाला ताश का पत्ता।
दुओ-(ना०) १ आज्ञा। आदेश। २ मुनादी। ढिंढोरा। घोषणा। ३ सामाजिक प्रतिबध। ४ दो की सख्या। ५ साम्य। मिलान। (वि०) दूसरा। द्वितीय।

दुकडिया-*(न०)* भोजन परोसने का दाना हाथों से पकड़ा जाने वाला दो बडा वाला पात्र।
दुक्डा-*(न०व०व०)* संगीत में ताल देने की चमड़े से मढ़ी हुई एक प्रसिद्ध नर मादा वाद्य की जोड़ी। तबला जोडी।
दुकर-*(वि०)* १ दुष्कर। कठिन। मुश्किल। २ दुष्ट। ३ नीच।
दुकान-*(ना०)* माल बेचने का स्थान। दूकान। हाट।
दुकानदार-*(न०)* दुकान वाला। दुकान का मालिक।
दुकानदारी-*(ना०)* दुकान चलाना। दुकान पर माल बेचने का काम। खरीद फरोख्त का धंधा।
दुकाळ-*(न०)* दुष्काल। अकाल। दुर्भिक्ष।
दुकृत-*(न०)* १ दुष्कृत्य। कुकृत्य। कुकर्म। २ पाप।
दुख-*(न०)* कष्ट। दुःख। तकलीफ।
दुखडो-*(न०)* १ दुख का वर्णन। दुख कथा। दुखडा। दुख। विपत्ति। ३ दुर्गति। ४ व्यथा।
दुखणियो-दे० दूखणियो।
दुखतर-*(ना०)* बेटी। पुत्री। दुख्तर।
दुखतरपति-*(न०)* जमाई। जामाता।
दुखदाई-*(वि०)* दुख देने वाला। दुखद। दुखदायी।
दुखदायक-दे० दुखदाई।
दुखदायण-*(वि०)* दुख देने वाली।
दुखाणो-दे० दुखावणो।
दुखारो-*(वि०)* १ दो क्षारों वाला। २ वह जिसमें चाँदी और तांबा मिला हो। (सोना) ३ वह जिसमें जस्त और तांबा मिला हो। ४ दो धातुओं की मिलावट वाला। ५ दुखी। ६ दुख दाई।
दुखावणो-*(क्रि०)* १ दुखाना। दर्द की जगह पर चोट करना। २ सताना। कष्ट पहुँचाना।
दुखावो-*(न०)* वेदना। पीड़ा। दर्द।
दुखियारी-*(वि०)* १ दुखियारा। दुखी। दुखिया। २ दुख देने वाला। ३ दुख देने वाली। दुखदाई। *(ना०)* दुखी स्त्री। दुखिता। दुखियारण।
दुखियारो-*(वि०)* १ कष्टग्रस्त। दुखी। २ दुख देने वाला। दुखदाई। ३ दूसरे के दुख में प्रसन्न होने वाला।
दुखियो-*(वि०)* १ दुखी। २ दरिद्र।
दुखी-*(वि०)* १ कष्टी। संतप्त। दुखी। २ व्यथित। ३ रोगी।
दुगणो-*(वि०)* दोगुना। द्विगुण। दूना। बमणो। बवणो।
दुगदुगी-*(ना०)* एक आभूषण। धुकधुकी।
दुगम-*(वि०)* १ दुर्गम। २ वीर। बहादुर। *(न०)* १ सूअर। २ सिंह।
दुगाणी-*(न०)* १ एक पुराना सिक्का। २ रुपये का चालीसवाँ भाग (ब्याज की फलावट में) ब्याज फालने का मान। दुगाणी। *(वि०)* छोटा। तुच्छ।
दुगाम-दे० दुगम।
दुगाय माता-*(ना०)* मारवाड़ के इदावाटी प्रदेश के दुगाय पर्वत की देवी का नाम।
दुगाह-*(वि०)* १ जो ग्रहण नहीं किया जा सके। २ जो जीता नहीं जा सके।
दुगुण-दे० दुगुणो।
दुगुणो-*(वि०)* दूना। दुगुना।
दुघडियो-*(न०)* १ दो दो घड़ी का मुहूर्त विधान। दो दो घड़ियों का वारों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त। *(वि०)* दो घड़ी का।
दुचित्तो-*(वि०)* खिन्न। अप्रसन्न। दुमणो।
दुचित-*(वि०)* १ चिंतातुर। २ दुखी। ३ खिन्न। अप्रसन्न।

दुचूर-(न०) सिंह।
दुछर-(न०) १ सिंह। २ योद्धा।
दुछरा-(ना०) १ दुधारा तलवार। दुधारा। २ तलवार। खड्ग। ३ कटारी। (न०) सिंह। (वि०) वीर। बहादुर।
दुछरा राव-(न०) १ शूरवीर। २ नृसिंह।
दुछरो-दे० दुछर।
दुज-(न०) १ ब्राह्मण। द्विज। २ ब्रह्मा। ३ ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य वर्ण के लोग। त्रिवर्ण। द्विज। ४ चंद्रमा। ५ अंडज प्राणी। ६ पक्षी। ७ दाँत।
दुजड-(ना०) तलवार।
दुजडभन-(वि०) १ खड्गधारी। २ वीर।
दुजड हथो-(वि०) १ खड्गधारी। २ वीर।
दुजडी-(ना०) १ कटारी। तलवार।
दुजण-(न०) १ दुजन। दुष्टजन। २ शत्रु। (वि०) दुष्ट। नीच।
दुजपख-(न०) गरुड़।
दुजराज-(न०) १ परशुराम। २ ब्राह्मण।
दुजवर-(न०) १ द्विजवर। ब्राह्मण। २ चार लघु मात्राएं (छंद)
दुजागरी-(ना०) १ परायापन। अलगाव। २ भेदभाव।
दुजाणी-दे० दुजाळी।
दुजाति-(न०) द्विजाति।
दुजायगी-(ना०) १ दूसरापन २ अलगाव। भिन्नता।
दुजाळी-(वि०) दूध देने वाली (गाय भैंस) दूधाळी। दूझणी।
दुजिंद-(न०) द्विजेन्द्र।
दुजीभ-दे० दुजीह।
दुजीह-(न०) १ द्विजिह्वा। सर्प। २ कटारी। (वि०) चुगलखोर। २ परस्पर भिड़ंत कराने वाला। ३ झूठा।
दुजीहो-(वि०) १ इधर उधर लगाने वाला। दोनों ओर भिड़ाने वाला। २ चुगलखोर। ३ उपकार के बदले अपकार करने वाला। कृतघ्न। (न०) सर्प। नाग।
दुजोण-(न०) १ दुर्योधन। २ शत्रु। (वि०) दुष्ट।
दुजोयण-(न०) दुर्योधन।
दुझड-दे० दुजड।
दुझळ-(वि०) १ क्रोधित। २ वीर। योद्धा।
दुझाळ-(वि०) १ महाक्रोधी। २ जबरदस्त। दुधर्ष। ३ वीर।
दुटपी-(वि०) १ दो टप्पी की (बात) अल्प। छोटी। २ दुतरफी।
दुठ्ठ-(वि०) १ वीर। २ दुष्ट।
दुडकी (ना०) घोड़े की एक चाल।
दुडबडी-(ना०) १ एक प्रकार का बाजा। २ दौड़ना। दौड़।
दुडियंद-(न०) सूर्य। दिनेंद्र।
दुडिंद-(न०) सूर्य।
दुत-दे० दुति।
दुतकारणो-(क्रि०) १ फटकारना। डाटना। २ धिक्कारना। तिरस्कार करना। ३ तिरस्कार करके दूर हटाना।
दुतरणि-(वि०) दुस्तर। अत्यंत। कठिन।
दुतरफ-(ना०) १ दोनों ओर। २ दोनों पक्ष।
दुतग-(न०) जीन में दोनों ओर कसा जाने वाला तंग।
दुति-(ना०) १ शोभा। २ किरण। ३ ज्योति। द्युति। ४ प्रकाश।
दुतिया-(ना०) द्वितीया। दूज। बीज।
दुतिवंत-(वि०) १ प्रकाशमान। २ द्युतिवान। सुंदर।
दुतीय-(वि०) द्वितीय। दूसरा। दूजो। बीजो।

दुत्तर–दे० दुत्थर।
दुत्थर–(वि०) दुस्तर।
दुथणी–(ना०) स्त्री। (वि०) दो स्तनों वाली।
दुदत–(न०) द्विदत। हाथी।
दुधारी–(वि०) दो धार वाली। (ना०) १ दो धार वाली तलवार। २ कटारी।
दुधारु–(वि०) १ दूध देने वाली (गाय भैंस) २ अधिक दूध देने वाली।
दुधाळ–दे० दुधारू।
दुनाळी–(ना०) दो नाल वाली बंदूक।
दुना–(वि०) दोनों। (न०) दोनों तरफ।
दुनिया–(ना०) ससार। जगत।
दुनियाण–(ना०) दुनिया।
दुनियादारी–(ना०) दुनिया का व्यवहार।
दुनी–(ना०) ससार। दुनिया।
दुपटी–(ना०) १ कधे पर रखने का वस्त्र। उपरना। दुपट्टी। २ दो पट्टी वाला एक वस्त्र। चादर। (वि०) दुतरफी।
दुपटो–(न०) दुपट्टा।
दुपट्टो–(न०) १ दो समान वस्त्रों की लबाई मे सिली हुई चादर या ओढना। २ स्त्रियों का एक जरी वाला ओढना।
दुपहरी–(ना०)१ दुपहर का समय। दुपहर का भोजन। दुपहरो। दुपारो।
दुपहरो–दे० दुपारो।
दुपारो–(न०) दुपहर म किया जाने वाला भोजन। दुपहरा।
दुफरावणो–(क्रि०) १ रोना। विलाप करना। २ पति के मरने के कुछ महीनों तक विधवा का कोने मे बैठ कर प्रातःकाल म रोना।
दुफसली–(वि०) जिसमे रबि और खरीफ दोनों फसलें होती हों।
दुबध्या–दे० दुविधा।
दुबारा (क्रि०वि०) दूसरी बार।
दुबारो–(न०) १ एक प्रकार का शराब। २ मदिरा। शराब।
दुबाह–(न०) घोडा। (ना०) १ सेना। २ तलवार। (वि०) १ वीर। बहादुर। शक्तिशाली। २ दुधप। ३ दृढ।
दुभाव–(न०) १ भेदभाव। २ भेद।
दुभावणो–(क्रि०) १ दुखी करना। २ ठेस पहुँचाना। दिल जलाना। ३ भेद भाव रखना।
दुभाँत–(ना०) १ भेदभाव। २ भेद। दुराव।
दुम–(ना०) पूछ। पूछड़ी।
दुमची–(ना०) जीन का वह बधन (पट्टी या तस्मा) जो घोडे की दुम के नीचे दबा रहता है।
दुमणो–(वि०) व्यग्रचित। खिन्न। दुमना। दुचित्तो।
दुमन–(वि०) खिन्न। अप्रसन्न।
दुमात–(ना०) १ सौतेली माता। विमाता। २ अक्षर के ऊपर की दो मात्राएँ। (वि०) १ दो माताओं वाला। २ दो मात्राओं वाला।
दुमायो–(वि०) सौतेली माता से उत्पन्न।
दुमार–(ना०) १ तगी। परेशानी। २ कमी। अभाव। ३ दो तरफ की मार। एक साथ दो ओर से आने वाला सकट। ४ धमसकट।
दुमारो–(न०) १ तगी। परेशानी। २ कमी। अभाव। दुमार।
दुमाळो–दे० घुमाळो।
दुमेळ–(न०) १ शत्रुता। वैमनस्य। २ एक डिंगल छन्द। (वि०) जो समान न हो। असमान।
दुय–(वि०) दो।
दुयण–(न०) १ दुर्जन। दुष्ट। २ शत्रु। वैरी।
दुयगम–(वि०) वीर। बहादुर।
दुर–(उप०) निषेध या दूषण सूचक अर्थ वाला एक उपसर्ग। जैसे—दुरभिमान,

दुवागण-द० दुहागण ।
दुवादस-(वि०) द्वादश । बारह ।
दुवादसी-(ना०) द्वादशी । बारस ।
दुवार-(न०) १ द्वार । दरवाजो । दहलो । मोडो । बारणो । २ घर ।
दुवारका-(ना०) द्वारका ।
दुवाळो-द० दुम्राळो ।
दुविधा-(ना०) १ मन का अस्थिर भाव । निश्चय अनिश्चय म डालना । २ चिंता ।
दुविहार-(न०) जैन मतानुसार दो प्रकार के आहार का एक व्रत ।
दुव-(वि०) दोनों ।
दुवा-द० दुम्रो ।
दुशालो-(न०) कीमती दोहरी शाल । ओढने का एक कीमती वस्त्र ।
दुश्मन-(न०) शत्रु । वैरी ।
दुष्ट-(वि०) दुर्जन । खल । अधम । दुसट ।
दुसकरमी-(वि०) बुरा काम करने वाला । दुष्कर्मी । खोटखणो ।
दुसट-द० दुष्ट ।
दुसटा-दळ-(न०) १ दुष्टों का दलन करने वाला । दुष्ट दलन । ईश्वर । २ शत्रुओं की सेना । ३ यवनों की सेना ।
दुसमण-(न०) दुश्मन । शत्रु । वैरी । वैरी ।
दुसमणाई-(ना०) दुश्मनी । शत्रुता । वैर । वैर ।
दुसमणावट द० दुसमणाई ।
दुसमणी-द० दुश्मनी ।
दुसमी-(वि०) दुश्मन । शत्रु । वैरी ।
दुसराणो-द० दुसरावणो ।
दुसरावणो-(क्रि०) दुसराना । दुहराना । बेहराणो ।
दुसह-(न०) शत्रु । (वि०) १ सहन नहीं होने योग्य । २ सहन नहीं करने योग्य । असह ।
दुसाका-(न०) दो प्रकार के शाक परोसने का एक जुड़वां पात्र ।
दुसासिया-(वि०) जहाँ गर्मी और शीत दोनों ऋतुओं की कृषि होती है । जहाँ रवी और खरीफ दोनों फसलें होती हों ।
दुसार-(ना०) १ तलवार । २ दुधारी तलवार । ३ दोनों बाजू घाव या सुराख करने का भाव । ४ यह छोर और वह छोर । (क्रि०वि०) एक छोर से दूसरे छोर तक । आर पार ।
दुसाला-(न०) दुशाला ।
दुसासण-(न०) दुर्योधन का छोटा भाई दुशासन ।
दुसुपन-(न०) खोटा स्वप्न ।
दुस्ट-द० दुष्ट ।
दुस्टी-(वि०) १ दुष्ट स्वभाव वाला । २ दुराचारी । ३ दुखदायी ।
दुस्तर-(वि०) जो कठिनता से तरा जाय । दुत्तर ।
दुहणो-(क्रि०) १ दोहन करना । चौपायों के थनों में से दूध निकालना । दुहना । दोहणो । २ दुख देना । दुहवणो ।
दुहवणो-(क्रि०) १ दुख देना । कष्ट पहुँचाना । २ नाराज करना ।
दुहाई-(ना०) १ दुहाई । शपथ । दुवाई । २ शासन । हुकूमत । ३ राजाज्ञा । ४ मुनादी । घोषणा ।
दुहाग-(न०) १ वैधव्य । विधवापण । २ पति के द्वारा पत्नी के साथ प्रेमालाप मान मिलन आदि स्त्री विषयक व्यवहार की की जाने वाली अवज्ञा । ३ सुहाग सुख का अभाव । पत्नी के प्रति अपमान वृत्ति । पति की नाराजी । पत्नी के प्रति विमुखता ।
दुहागण-(वि०) १ विधवा । २ अनादृता । तिरस्कृता । ३ वह सधवा जिसके ऊपर

दुरगा-(वि०)१ दो रंग वाला। २ दो प्रकार का। ३ दोहरी चाल चलन वाला। दोगला। ४ अस्थिर मति वाला। ५ खराब।
दुरंत-(वि०) १ जिसका अंत दूर हो। विकट। दुगम। दुस्तर। २ जिसका अंत दूषित हो। दूषित परिणाम वाला। अशुभ। खोटो। ३ अपमानजनक। ४ बहुत लंबा। दीर्घ। अपार। ५ भीषण। घोर। भयानक। ६ दुष्ट। ७ शत्रु।
दुराग-दे० दुराजो।
दुराचरण-(न०) खोटा आचरण।
दुराचार-(न०) बुरा आचरण। अनीति युक्त आचार। दुराचार।
दुराचारण-(वि०) खोटे आचरण वाली।
दुराचारी-(वि०) खोटे आचरण वाला।
दुराजो-(न०)१ वैमनस्य। वैर। २ नाराजगी। नाराजी।
दुराणा-(क्रि०) १ छिपाना। २ छल करना।
दुराव-(न०) १ भेदभाव। २ छिपाव। ३ छलकपट। ४ दुर्भाव।
दुरावणो-दे० दुराणो।
दुराशिष-दे० दुरासीस।
दुरासा-(ना०)१ झूठी आशा। २ दुराशिष।
दुरासीस-(ना०) दुराशिष। श्राप। बद दुआ।
दुरी-(वि०) १ अशुभ। दुष्ट। २ दुख दायी। ३ दो। (ना०) १ दो का चिह्न। २ दो के चिह्न वाला ताश का पत्ता।
दुरीस-(न०) दुष्ट राजा।
दुरखी-(वि०) १ दोनों प्रार की। २ दोनों पक्षों की।
दुरस्त-दे० दुरस्त।
दुरफ-(न०) भौंरा। द्विरेफ। भमरो।
दुग-दे० दुरग।
दुगति-दे० दुरगत।
दुगम-दे० दुरगम।
दुर्गंध-दे० दुरगंध।
दुर्गा-(ना०) १ पार्वती। २ आदि शक्ति। ३ नौ वर्ष की कन्या।
दुर्गादास राठौड़-(न०) महान त्यागी, स्वामी भक्त प्रणवीर और ख्यातनाम एक राठौड़ वीर।
दुगुण-दे० दुरगुण।
दुघटना-(ना०) अशुभ घटना। वारदात। अकस्मात।
दुर्जन-दे० दुरजण।
दुदशा-दे० दुरदसा।
दुर्दिन-दे० दुरदिन।
दुबल-दे० दुरबळ।
दुबुद्धि-दे० दुरबुध।
दुर्भाग्य-दे० दुरभाग।
दुर्भाव-(न०) १ बुरा भाव। २ तुच्छ विचार।
दुर्भिक्ष-दे० दुरभिख।
दुवचन-(न०) गाली।
दुलख-(न०) अलक्ष्य। (वि०) दो लाख।
दुलखणो-(क्रि०) १ दुलक्ष करना। २ उद्देश्यहीन समझना। (वि०) कुलक्षणी वाला। कुलखणो।
दुलडी-(ना०) दो लड़ी वाला स्त्रियों के गले का एक आभूषण। (वि०) दो लड़ी वाला।
दुलहण-(ना०) दुलहिन। दुल्हो। वधू। बीनणी।
दुलहो-(न०) दुलहा। वर। बींद।
दुलाई-(ना०) रजाई।
दुलार-(न०) लाड। प्यार।
दुलीचो-(न०) गलीचो। कालीन।
दुव-(वि०) १ दो। २ दूसरा।
दुवजीह-दे० दुजीह।
दुवा-(ना०) दुआ। आशिष।
दुवाई-(ना०) १ दुहाई। घोषणा। २ शपथ। सौगंध। ३ औषधि। दवाई।

दुवागण-क० दुहागण ।
दुवादस-*(वि०)* द्वादश । बारह ।
दुवादसी-*(ना०)* द्वादशी । बारस ।
दुवार-*(न०)* १ द्वार । दरवाजो । दरवाजा । मोटो । बारणो । २ घर ।
दुवारका-*(ना०)* द्वारका ।
दुवाळो-क० दुमाळो ।
दुविधा-*(ना०)* १ मन का अस्थिर भाव । निश्चय अनिश्चय में डालना । २ चिंता ।
दुविहार-*(न०)* जैन मतानुसार एक प्रकार के आहार का एक व्रत ।
दुव-*(वि०)* दोनों ।
दुवा-क० दुआ ।
दुशाला-*(न०)* कीमती ऊनी दोनों तरफ ओढ़ने का एक कीमती वस्त्र ।
दुश्मन-*(न०)* शत्रु । वैरी ।
दुष्ट-*(वि०)* दुर्जन । खल । अधम । दुसट ।
दुसकरमी-*(वि०)* बुरा काम करने वाला । दुष्कर्मी । खोटखणो ।
दुसट-क० दुष्ट ।
दुसटा दळ-*(न०)* १ दुष्टों का दलन करने वाला । दुष्ट दलन । ईश्वर । २ शत्रुओं की सेना । ३ यवनों की सेना ।
दुसमण-*(न०)* दुश्मन । शत्रु । वैरी । वैरी ।
दुसमणाई-*(ना०)* दुश्मनी । शत्रुता । वैर । वैर ।
दुसमणावट द० दुसमणाई ।
दुसमणी-क० दुश्मनी ।
दुसमी-*(वि०)* दुश्मन । शत्रु । वैरी ।
दुसराणो-द० दुसरावणो ।
दुसरावणो-*(क्रि०)* दुसराना । दुहराना । बेहराणो ।
दुसह-*(न०)* शत्रु । *(वि०)* १ सहन नहीं होने योग्य । २ सहन नहीं करने योग्य । असह ।
दुसाखी-*(न०)* दो प्रकार के पाक पकाने का एक तुर्की पात्र ।
दुसाखिया-*(वि०)* जहां वर्षा और सिंचाई दोनों साधनों से कृषि होती है । जहां रवी और खरीफ दोनों फसलें होती हों ।
दुसार-*(ना०)* १ तलवार । २ दुधारी तलवार । ३ दोनों बार घाव या सुराख करने का भाव । ४ एक द्वार और वह द्वार । *(क्रि०वि०)* एक द्वार से दूसरे द्वार तक । आर पार ।
दुसाला-*(न०)* दुशाला ।
दुसासण-*(न०)* दुर्योधन का छोटा भाई दुःशासन ।
दुसुपन-*(न०)* खोटा स्वप्न ।
दुस्ट-द० दुष्ट ।
दुस्टी-*(वि०)* १ दुष्ट स्वभाव वाला । २ दुराचारी । ३ दुखदायी ।
दुस्तर-*(वि०)* जो कठिनता से तरा जाय । दुत्तर ।
दुहणो-*(क्रि०)* १ दोहन करना । चौपायों के थनों में से दूध निकालना । दुहना । दोहणो । २ दुख देना । दुहवणो ।
दुहवणो-*(क्रि०)* १ दुख देना । कष्ट पहुँचाना । २ नाराज करना ।
दुहाई-*(ना०)* १ दुहाई । शपथ । दुवाई । २ शासन । हुकूमत । ३ राजाज्ञा । ४ मुनादी । घोषणा ।
दुहाग-*(न०)* १ वैधव्य । विधवापणो । २ पति के द्वारा पत्नी के साथ प्रेमालाप मान मिलन आदि स्त्री विषयक व्यवहार की की जाने वाली अवहेलना । ३ सुहाग सुख का अभाव । पत्नी के प्रति अपमान वृत्ति । पति की नाराजी । पत्नी के प्रति विमुखता ।
दुहागण-*(वि०)*१ विधवा । २ अनादृता । तिरस्कृता । ३ वह सधवा जिसके ऊपर

पति की प्यारी न हो । तिरस्कृता । (ना०) १ विधवा स्त्री । २ अनादृता स्त्री ।
दुहागपणो–दे० दुहाग ।
दुहिता–(ना०)पुत्री । बेटी ।
दुहितापति–(ना०) जामाता । जमाई ।
दुहुँ–(वि०) दोनों । दोही ।
दुहुँवाँ–(वि०) दोनों । (क्रिवि०) १ दोनों से । २ दोनों ओर । ३ दोनों ने ।
दुहुँव–(वि०) दोनों । (क्रिवि०) १ दोनों प्रकार से । २ दोनों ही । ३ दोनों ओर । दोही कानी ।
दुहेलो–(वि०) १ दुखदाई । कष्ट कर । २ दुष्कर । कठिन । ३ दुगम ।
दु द–(न०) १ युद्ध । द्वन्द्व । २ उत्पात । उपद्रव । ३ कलह । झगड़ा । ४ द्वन्द्व युद्ध । ५ कोलाहल । शोर । ६ धुंध । कुहरा । ७ अंधेरा । अंधारो ।
दु दभ–(न०) बड़ा नगाड़ा । दुंदुभि । नगारो ।
दु दुभि–(न०) १ बड़ा नगाड़ा । २ युद्ध का नगाड़ा ।
दु बो–(न०) १ मोटी पूछ वाला मेढ़ा । २ टीबो । टीबा । ३ ढेर । ढिगलो ।
दू–(वि०) विधवा । दुहागण ।
दूओ–दे० दूवो ।
दूख–(न०) दर्द । पीड़ा ।
दूखण–(न०) १ दोष । अपराध । २ पाप । ३ कलंक । दूषण ।
दूखणखाई–(ना०) एक कीड़ा ।
दूखणियो–(न०)१ फोड़ा । व्रण । छाळो । २ मिरची ।
दूखणो–(क्रि०) दुखना । दर्द होना । (न०) फोड़ा । फुंसी । छाळो । बाळ ।
दूछर–दे० दुछर ।
दूछरा-राव–(न०)१ नृसिंह । २ शूरवीर ।
दूज–(ना०) पक्ष का दूसरा दिन । द्वितीया । (वि०) द्वितीय ।
दूजवर–(न०) पत्नी के मर जाने से दूसरी कन्या से विवाह करने वाला पुरुष । दूसरी बार विवाह करने वाला पुरुष ।
दूजागारी–(ना०) १ दूसरापन । २ अलगाव । भिन्नता ।
दूजाणी–(न०) दूध देने वाली (गाय भैंस)।
दूजियाण–(वि०) दूसरी बार ब्याने वाली या ब्यायी हुई (गाय भैंसादि) ।
दूजो–(वि०) १ अन्य । दूसरा । पराया । बीजो । २ तुलना में आने वाला । बराबरी करने वाला ।
दूजोड़ी–(वि०) दूसरी । बीजोड़ी ।
दूजोड़ो–(वि०) दूसरा । अन्य । बीजोड़ो ।
दूझणी–(वि०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) ।
दूझणो–(न०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) । (क्रि०) गाय, भैंस आदि का दूध देना ।
दूझार–(ना०) गाय भैंस आदि का दूध देने का काल या स्थिति ।
दूझारू–दे० दूझार ।
दूझाळी–(वि०) दूध देने वाली । अधिक दूध देने वाला ।
दूठ–(वि०) १ जबरदस्त । बलवान । २ वीर । बहादुर । ३ दुष्ट ।
दूण–(वि०) दुगना । दुगुणो ।
दूणागिर–(न०) द्रोणगिरि । द्रोणाचल ।
दूणियो–(न०) १ दूध दोहने का पात्र । २ छोटा जल पात्र । धातु का छोटा घड़ा । (वि०) पीड़ित ।
दूणेटो–(वि०) १ दुगना । २ जितना लिया जाय उससे दुगना या उतना ही और मिलाकर वापस देने का भाव ।
दूणो–दे० दुगुणो ।
दूत–(न०)१ संदेश वाहक । दूत । हलकारो । २ जासूस ।

दूती-(ना०) १ झगडा कराने वाली स्त्री। २ कुलटा। ३ स्त्री संदेशवाहक। दूतिका। ४ कुटनी। कुटणी।

दूथी-(न०) चारण।

दूध-(न०) १ दुग्ध। दूध। २ आक बड आदि वनस्पतियो म से निकलने वाला सफेद रस। वनस्पति का दूध के रग का निर्यास। दूध। ३ चारो वर्णों म विभाजित कोई जाति। जाति। जात।

दूध पूत-(न०) १ पुत्र पौत्रादि की वश वेलि। २ गाय भस, धन धान्य और पुत्र परिवार। जनधन।

दूधार-दे० दुभार।

दूधारी-(वि०) दूध देन वाली। दूझणी। दे० दूधाहारी।

दूधारू-(न०)गाय भैंस आदि दूध देने वाला चौपाया। (वि०)अधिक दूध देने वाली।

दूधाळू-दे० दूधारू।

दूधाळो-(वि०) १ दूध वाला। २ दूध वचन वाला। ३ दूध मिलाकर तैयार किया हुआ।

दूधाहारी-(न०) केवल दूध का आहार करन वाला व्यक्ति।

दूधिया-(न०व०व०) लकडी क कोयल। (विपरीत नाम)।

दूधिया नशा-१ दे० दूधियाभाग। २ हलका नशा। हळको नसो।

दूधियाभाग-(ना०) दूध म औटा कर बनाया हुआ भाग का पय।

दूधियो-(वि०) १ दूध जस वण वाला। सफेद। २ दूध से मिला या दूध स बना। (न०)१ लकडी का कोयला। २ कोयला।

दूधी-(ना०) १ छोटी पत्तियो वाले घास का एक छत्ता जिसम स दूध के समान सफेद रस निकलता है। २ लौकी। दूधो।

दूधे न्हावो पूतेफळो(अव्य०)एक आशीवाद।

दूधेली-(ना०) दूधी नामक वनस्पति (घास) का छत्ता।

दून-दे० दूण।

दूनो-(न०) पत्तो का बना कटोरी जसा पात्र। दोना।

दूफर-दे० दुफरी।

दूफरणो-दे०दुफरावणो।

दूफराणो-दे० दुफरावणो।

दूफरावणो-दे० दुफरावणो।

दूफरी-(ना०) मृतक के पीछे रोन पीटने की क्रिया। रुदन। विलाप।

दूब-(ना०) दूर्वा। द्रोब।

दूबळाई-(ना०) दुबलता। कमजोरी।

दूबळी-(वि०) दुबल (ना०)।

दूबळो-(वि०) १ दुबल। २ निधन।

दूबैर-(ना०) विधवा स्त्री। दूजी लुगाई।

दूभर-(वि०) दु साध्य। कठिन। दोहरो।

दूमणो-(वि०) १ नाराज। २ चिंतित। ३ सतप्त। ४ दुमनस्क। ५ दुखी। खिन्न।

दूमो-दे० दुबो।

दूर-(क्रि०वि०) १ अलग। दूर। आघो। २ अतर। फासळो। ३ रद करना। ४ निकाल देना। दूरी करण। (अव्य०) दूरी पर। अतर पर।

दूरणो-(न०) गाय भैंस आदि दूध दन वाले पशु।

दूरदरसी-दे० दूरदर्शी।

दूरदर्शी-(वि०) १ दूर दृष्टि वाला। २ दूर की सोचन वाला।

दूरदृष्टि-(ना०) दूर तक जानवाली नजर।

दूरबीण-(ना०) दूरदर्शक यन्त्र। दूरबीन।

दूरतर-(क्रि०वि०) १ दूर स। २ दूर ही से। ३ दूर पर। आघो।

दूरतरि-दे० दूरतर।

दूरदेश-(वि०) १ दूर की सोचन वाला। २ भावी का विचार करने वाला। दूरदेश।

पति की कृपा न हो । तिरस्कृता । (ना०) १ विधवा स्त्री । २ अनादृता स्त्री ।

दुहागपणो-दे० दुहाग ।

दुहिता-(ना०)पुत्री । बेटी ।

दुहितापति-(न०) जामाता । जमाई ।

दुहुँ-(वि०) दोनों । दोहो ।

दुहुँवा-(वि०) दोनों । (क्रि०वि०) १ दोनों से । २ दोनों ओर । ३ दोनों ने ।

दुहुँव-(वि०) दोनों । (क्रि०वि०) १ दोनों प्रकार से । २ दोनों ही । ३ दोनों ओर । दोहो कानी ।

...हेलो-(वि०) १ दुखदाई । कष्ट कर । २ दुष्कर । कठिन । ३ दुर्गम ।

...द-(न०) १ युद्ध । द्वन्द्व । २ उत्पात । उपद्रव । ३ कलह । झगडा । ४ द्वन्द्व युद्ध । ५ कोलाहल । शोर । ६ धुंध । कुहरा । ७ अंधेरा । अंधारो ।

...दभ-(न०) बडा नगाडा । दुंदुभि । नगारो ।

...दुभि-(न०) १ बडा नगाडा । २ युद्ध का नगाडा ।

...ी-(न०) १ मोटी पूंछ वाला मेढ़ा । २ टीबो । टीबा । ३ ढेर । ढिगलो ।

...(वि०) विधवा । दुहागण ।

...-दे० दूवो ।

...-(न०) दर्द । पीडा ।

...ण-(न०) १ दोष । अपराध । २ ...प । ३ कलंक । दूषण ।

...णखाई-(ना०) एक कीडा ।

...णयो-(न०)१ फोडा । व्रण । छाळो । ...गिरटी ।

...णो-(क्रि०) दुखना । दर्द होना । (न०) ...डा । फुंसी । छाळो । बीज ।

...-दे० दुद्धर ।

...-राव-(न०)१ नृसिंह । २ शूरवीर ।

...(ना०) पक्ष का दूसरा दिन । द्वितीया ।

...(वि०) द्वितीय ।

दूजवर-(न०) पत्नी के मर जाने से दूसरी कन्या से विवाह करने वाला पुरुष । दूसरी बार विवाह करने वाला पुरुष ।

दूजागारी-(ना०) १ दूसरापन । २ अलगाव । भिन्नता ।

दूजाणो-(न०) दूध देने वाली (गाय भैंस)।

दूजियाण-(वि०) दूसरी बार ब्याने वाली या ब्यायी हुई (गाय भैंसादि) ।

दूजो-(वि०) १ अन्य । दूसरा । पराया । बीजो । २ तुलना में आने वाला । बराबरी करने वाला ।

दूजोडी-(वि०) दूसरी । बीजोडी ।

दूजोडो-(वि०) दूसरा । अन्य । बीजोडो ।

दूझणी-(वि०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) ।

दूझणो-(न०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) । (क्रि०) गाय भैंस आदि का दूध देना ।

दूझार-(ना०) गाय भैंस आदि का दूध देने का काल या स्थिति ।

दूझारू-दे० दूझार ।

दूझाळी-(वि०) दूध देने वाली । अधिक दूध देने वाली ।

दूठ-(वि०) १ जबरदस्त । बलवान । २ वीर । बहादुर । ३ दुष्ट ।

दूण-(वि०) दुगना । दुगुणो ।

दूणागिर-(न०) द्रोणगिरि । द्रोणाचल ।

दूणियो-(न०) १ दूध दोहने का पात्र । २ छोटा जल पात्र । धातु का छोटा घडा । (वि०) पीडित ।

दूणेटो-(वि०) १ दुगना । २ जितना लिया जाय उससे दुगना या उतना ही और मिलाकर वापस देने का भाव ।

दूणो-दे० दुगुणो ।

दूत-(न०)१ संदेश वाहक । दूत । हलकारो । २ जासूस ।

दूती-(ना०) १ झगड़ा कराने वाली स्त्री। २ कुलटा। ३ स्त्री संदेशवाहक। दूतिका। ४ कुटनी। कुटणी।

दूथी-(न०) चारण।

दूध-(न०) १ दुग्ध। दूध। २ आक बड़ आदि वनस्पतियों में से निकलने वाला सफेद रस। वनस्पति का दूध के रंग का निर्यास। दूध। ३ चारों वर्णों में विभाजित कोई जाति। जाति। जात।

दूध पूत-(न०) १ पुत्र पौत्रादि की वंश वृद्धि। २ गाय भैंस, उनके बच्चे और पुत्र परिवार। गोधन।

दूधार-दे० दुधार।

दूधारी-(वि०) दूध देने वाली। दूझणी। दे० दूधाहारी।

दूधारू-(न०)गाय भैंस आदि दूध देने वाला चौपाया। (वि०)अधिक दूध देने वाली।

दूधाळू-दे० दूधारू।

दूधाळो-(वि०) १ दूध वाला। २ दूध बेचने वाला। ३ दूध मिलाकर तैयार किया हुआ।

दूधाहारी-(न०) केवल दूध का आहार करने वाला व्यक्ति।

दूधिया-(न०व०व०) लक्ष्मी के कोयल। (विपरीत नाम)।

दूधिया नशा-१ दे० दूधियाभाँग। २ हलका नशा। हळको नशो।

दूधियाभाग-(ना०) दूध में औटा कर बनाया हुआ भांग का पेय।

दूधियो-(वि०) १ दूध जैसे वर्ण वाला। सफेद। २ दूध में मिला या दूध से बना। (न०)१ नकली या कोयला। २ कोयला।

दूधी-(ना०) १ छोटी पत्तियों वाली घास का एक क्षुप जिसमें से दूध के समान सफेद रस निकलता है। २ लौकी। दूधी।

दूधे न्हावो पूते फळो(अव्य०)एक आशीर्वाद।

दूधेली-(ना०) दूधी नामक वनस्पति (घास) का क्षुप।

दून-दे० दूण।

दूनो-(न०) पत्तों का बना कटोरी जैसा पात्र। दोना।

दूफर-दे० दूफरी।

दूफरणो-दे०दुफरावणा।

दूफरावणो-दे० दुफरावणो।

दूफरावणो-दे० दुफरावणा।

दूफरी-(ना०) मृतक के पीछे रोने पीटने की क्रिया। रुदन। विलाप।

दूब-(ना०) दूर्वा। दोब।

दूबळाई-(ना०) दुबलता। कमजोरी।

दूबळी-(वि०) दुबल (ना०)।

दूबळो-(वि०) १ दुबल। २ निर्धन।

दूबेर-(ना०) विधवा स्त्री। दूजुगाई।

दूभर-(वि०) दुसाध्य। कठिन। दोहरो।

दूमणो-(वि०) १ नाराज। २ चिंतित। ३ संतप्त। ४ दुमनस्क। ५ दुखी। खिन्न।

दूमो-दे० दुवो।

दूर-(क्रि०वि०) १ अलग। दूर। आघो। २ अंतर। फासळो। ३ रद करना। ४ निकाल देना। दूरी करण। (अव्य०) दूरी पर। अंतर पर।

दूरणो-(न०) गाय भैंस आदि दूध देने वाले पशु।

दूरदरसी-दे० दूरदर्शी।

दूरदर्शी-(वि०) १ दूर दृष्टि वाला। २ दूर की सोचने वाला।

दूरदृष्टि-(ना०) दूर तक जानेवाली नजर।

दूरबीण-(ना०) दूरदर्शक यंत्र। दूरबीन।

दूरतर-(क्रि०वि०) १ दूर से। २ दूर ही से। ३ दूर पर। आघो।

दूरतरि-दे० दूरतर।

दूरदेश-(वि०) १ दूर की सोचने वाला। २ भावी का विचार करने वाला। दूरंदेश।

पति की मृत्यु न हो । तिरस्कृता । (ना०) १ विधवा स्त्री । २ अनादृता स्त्री ।
दुहागपणो-दे० दुहाग ।
दुहिता-(ना०)पुत्री । बेटी ।
दुहितापति-(न०) जामाता । जमाई ।
दुहूँ-(वि०) दोनों । दोही ।
दुहूँवाँ-(वि०) दोनों । (क्रि०वि०) १ दोनों से । २ दोनों ओर । ३ दोनों में ।
दुहेर-(वि०) दोनों । (क्रि०वि०) १ दोनों प्रकार से । २ दोनों का । ३ दोनों ओर । दोही कानी ।
दुहेलो-(वि०) १ दुखदाई । कष्ट कर । २ दुष्कर । कठिन । ३ दुगम ।
दुंद-(न०) १ युद्ध । द्वंद्व । २ उत्पात । उपद्रव । ३ कलह । झगड़ा । ४ द्वंद्व युद्ध । ५ कोलाहल । शोर । ६ धुंध । कुहरा । ७ अंधेरा । अंधारो ।
दुंदभ-(न०) बड़ा नगाड़ा । दुंदुभि । नगारो ।
दुंदुभि-(न०) १ बड़ा नगाड़ा । २ युद्ध का नगाड़ा ।
दुंबो-(न०) १ मोटी पूंछ वाला मेढ़ा । २ टीबो । टीबा । ३ ढेर । ढिगलो ।
दू-(वि०) विधवा । दुहागण ।
दूओ-दे० दूवा ।
दूख-(न०) दर्द । पीड़ा ।
दूखण-(न०) १ दोष । अपराध । २ पाप । ३ कलंक । दूषण ।
दूखणखाई-(ना०) एक कीड़ा ।
दूखणियो-(न०)१ फोड़ा । व्रण । छालो । २ गिल्टी ।
दूखणो-(क्रि०) दुखना । दर्द होना । (न०) फोड़ा । फुंसी । छालो । बीज ।
दूछर-दे० दुछर ।
दूछरौ-राव-(न०)१ नृसिंह । २ शूरवीर ।
दूज-(ना०) पक्ष का दूसरा दिन । द्वितीया । (वि०) द्वितीय ।
दूजवर-(न०) पत्नी के मर जाने से दूसरी कन्या से विवाह करने वाला पुरुष । दूसरी बार विवाह करने वाला पुरुष ।
दूजागारी-(ना०) १ दूसरापन । २ मन भाव । भिन्नता ।
दूजाणी-(न०) दूध देने वाली (गाय भैंस)।
दूजियाण-(वि०) दूसरी बार ब्याने वाली या ब्यायी हुई (गाय भैंसादि) ।
दूजो-(वि०) १ अन्य । दूसरा । पराया । बीजो । २ तुलना में माने वाला । बरा बरी करने वाला ।
दूजोडी-(वि०) दूसरी । बीजोडी ।
दूजोडो-(वि०) दूसरा । अन्य । बीजोडो ।
दूझणी-(वि०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) ।
दूझणो-(न०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) । (क्रि०) गाय भैंस आदि का दूध देना ।
दूझार-(ना०) गाय भैंस आदि का दूध देने का काल या स्थिति ।
दूझाल-दे० दूझार ।
दूझाळी-(वि०) दूध देने वाली । अधिक दूध देने वाली ।
दूठ-(वि०) १ जबरदस्त । बलवान । २ वीर । बहादुर । ३ दुष्ट ।
दूण-(वि०) दुगना । दुगुणो ।
दूणागिर-(न०) द्रोणगिरि । द्रोणाचल ।
दूणियो-(न०) १ दूध दोहने का पात्र । २ छोटा जल पात्र । धातु का छोटा घड़ा । (वि०) पीड़ित ।
दूणेटो-(वि०) १ दुगना । २ जितना लिया जाय उससे दुगना या उतना ही और मिलाकर वापस देने का भाव ।
दूणो-दे० दुगुणो ।
दूत-(न०)१ संदेश वाहक । दूत । हलकारो । २ जासूस ।

दूती-*(ना०)* १ झगड़ा करान वाली स्त्री। २ कुलटा। ३ स्त्री संदेशवाहक। दूतिका। ४ कुटनी। कुटणी।
दूयी-*(न०)* चारण।
दूध-*(न०)* १ दुग्ध। दूध। २ आक वड आदि वनस्पतियों में से निकलने वाला सफेद रस। वनस्पति का दूध के रंग का निर्यास। दूध। ३ चारों वर्णों में विभाजित कोई जाति। जाति। जात।
दूध पूत-*(न०)* १ पुत्र पौत्रादि की वंश वृद्धि। २ गाय भैंस, धन धान्य और पुत्र परिवार। धनधन।
दूधार-दे० दुधार।
दूधारी-*(वि०)* दूध देन वाली। दूझणी। दे० दूधाहारी।
दूधारू-*(न०)*गाय भैंस आदि दूध देने वाला चौपाया। *(वि०)*अधिक दूध देने वाली।
दूधाळू-दे० दूधारू।
दूधाळा-*(वि०)* १ दूध वाला। २ दूध बेचन वाला। ३ दूध मिलाकर तयार किया हुआ।
दूधाहारी-*(न०)* केवल दूध का आहार करन वाला व्यक्ति।
दूधिया-*(न०व०व०)* नकली के कोयल। (विपरीत नाम)।
दूधिया नागा-१ दे० दूधियाभाग। २ हलका नशा। हळको नसो।
दूधियाभाग-*(ना०)* दूध में औटा कर बनाया हुआ भाग का पेय।
दूधियो-*(वि०)* १ दूध जैसे वर्ण वाला। सफेद। २ दूध से मिला या दूध से बना। *(न०)*१ नकली का कोयला। २ कोयला।
दूधी-*(ना०)* १ छोटी पत्तियों वाली घास का एक पौधा जिसमें से दूध के समान सफेद रस निकलता है। २ लौकी। दूधी।
दूधे हावो पुत्रे फळो*(अव्य०)*एक आशीर्वाद।
दूधेनी-*(ना०)* दूधी नामक वनस्पति (घास) का छत्ता।
दून-दे० दूण।
दूनो-*(न०)* पत्तों का बना कटोरी जैसा पात्र। दोना।
दूफर-दे० दूफरा।
दूफरणो-दे०दुफरावणा।
दूफरागो-दे० दुफरावणा।
दूफरावणो-दे० दुफरावणा।
दफरी-*(ना०)* मृतक के पीछे रोना पीटने की क्रिया। रुदन। विलाप।
दूब-*(ना०)* दूर्वा। द्रोब।
दूबळाई-*(ना०)* दुबलता। कमजोरी।
दूबळी-*(वि०)* दुबल (ना०)।
दूबळा-*(वि०)* १ दुबल। २ निर्धन।
दूबैर-*(ना०)* विधवा स्त्री। दूलुगाई।
दूभर-*(वि०)* दुःसाध्य। कठिन। दोहरो।
दूमणो-*(वि०)* १ नाराज। २ चिंतित। ३ संतप्त। ४ दुर्मनस्क। ५ दुखी। खिन्न।
दूमो-दे० दुबो।
दूर-*(क्रि०वि०)* १ अलग। दूर। आघो। २ अंतर। फासळो। ३ रद करना। ४ निकाल देना। दूरी करण। *(अव्य०)* दूरी पर। अलग पर।
दूरणो-*(न०)* गाय भैंस आदि दूध देने वाले पशु।
दूरदरसी-दे० दूरदर्शी।
दूरदर्शी-*(वि०)* १ दूर दृष्टि वाला। २ दूर की सोचने वाला।
दूरदृष्टि-*(ना०)* दूर तक जानेवाली नजर।
दूरबीण-*(ना०)* दूरदर्शक यंत्र। दूरबीन।
दूरतर-*(क्रि०वि०)* १ दूर से। २ दूर ही से। ३ दूर पर। आघो।
दूरतरि-दे० दूरतर।
दूरदेश-*(वि०)* १ दूर की सोचने वाला। २ भावी का विचार करने वाला। दूरदर्शी।

दूरा-(क्रिवि०) दूर। अलग। (अव्य०) दूर की बात। कठिन काम। (वि०) १ अधूरा। २ थोड़ा। कम।
दूरिट्ठ-(वि०) दूरस्थ। दूर रहने वाला।
दूरी-(ना०) अंतर। फासला।
दूळ्यो-(न०) वानवस्त्र।
दूवणो-दे० दूहणो।
दूवळ-(क्रिवि०) १ दूसरी ओर। २ दूसरी बार। ३ दोनों ओर।
दूवो-(न०) १ आज्ञा। २ घोषणा। मुनादी। दुहाई। ३ दोहा छंद। ४ दो की संख्या। ५ जाति भोज की घोषणा। ६ किसी को दंडित करने या दंडित को माफ करने आदि की जाति घोषणा।
दूषण-दे० दूसण।
दूसण-(न०) १ पाप। दूषण। २ अपराध। गुनाह। दोष। ३ दूषण। ऐब। खोट। ४ कलंक।
दूसरो-(वि०) द्वितीय। दूसरा। बीजो।
दूह-(वि०) विधवा। दुहागिन।
दूहणो-(क्रि०) गाय भैंस आदि के थनों को निचोड़ कर दूध निकालना। दोहना।
दूहो-(न०) चार चरणों वाला एक छंद। दोधक। दोधक। दोहा।
दूंग-(न०) चिनगारी। डूंगियो। डूंग।
दूंटी-(ना०) टुंडी। नाभि। सूंडी।
दूंदाळो-(वि०) तोंद वाला।
दृग-(न०) आंख। नेत्र।
दृढ-(वि०) १ मजबूत। पक्का। दिढ। २ टिकाऊ। स्थिर। दिढ।
दृढता-(ना०) १ मजबूती। पक्काई। २ स्थिरता। अटलता। टिकाउपना। दिढता। ३ टिकाव।
दृष्टांत (न०) १ उदाहरण। मिसाल। दिस्टांत। २ आभास। ३ स्वप्न। (वि०) आभास रूप में दीख पड़ने वाला अथवा जान पड़ने वाला। आभासीन।
दृष्टि-(ना०) १ नजर। २ देखने की शक्ति। ३ ध्यान। ४ लक्ष्य।
दृष्टिकोण-(न०) १ सोचने विचारने और देखने का पहलू। २ विचार धारा। ३ विचार बिंदु। ४ सिद्धांत। ५ सोचने का कोई विशिष्ट ढंग।
दृष्टिपात-(न०) देखना।
दे-(प्रत्य०) १ कतिपय स्त्री पुरुषों के नामों के अंत में लगने वाला देवी और देव अर्थ को सूचित करने वाला एक प्रत्यय। देवी और देव शब्दों का संक्षिप्त रूप। यथा-अजरगदे ईहडदे उगमगदे ऊमादे रूपांदे इत्यादि स्त्री नाम। कान्हडदे गोगादे रामदे बीसळदे इत्यादि पुरुष नाम। २ स्त्री पुरुषों के नामों के अंत में लगने वाला एक आदर सूचक प्रत्यय शब्द। ३ लोक गीतों का एक अव्यय शब्द। ४ एक पादपूर्णार्थक अव्यय। ५ एक स्वरार्थ संपुट। यथा-सडाक दे जातो रयो।
देई-(ना०) देवी।
देईवाण-दे० दइवाण।
देउळ-(न०) देवल। देवस्थान। मन्दिर। देवळ।
देखण जोग-(वि०) देखने योग्य। दर्शनीय।
देखण जोगो-दे० देखण जोग।
देखणवाळो-दे० देखणहाळो।
देखणहाळो-(वि०) देखने वाला। देखणियो। जोवणियो।
देखणाळो-दे० देखणहाळो।
देखणियो-(वि०) देखने वाला। जोवणियो।
देखणो-(क्रि०) १ देखना। जोवणो। २ सोचना। विचारना। ३ तलाश करना। ४ परखना। जांचना। जांचणो। ५ सम्हालना। ६ संशोधन करना। ७ ध्यान देना।

देखणो चोखणो (मुहा०)१ तलाश करना। २ जांचना। जांचणो।

देखणो-जोखणो-(मुहा०) प्रकृति गुण धम, प्रकार मूल्य तथा तौल आदि की जाँच करना।

देखता-पाण-(अव्य०) १ देखते ही। २ देखने के साथ। ३ देखते देखते। देखते रहने पर भी।

देखती आखे-(अव्य०) १ जानबूझ कर। २ आखो के सामने। सम्मुख।

देखभाळ-दे० देख रेख।

देखरेख-(ना०)१ सार सम्हाल। निगरानी। २ जाच पडताळ।

देखाई-(ना०) १ देखने का काम। २ दिखलाने का काम। ३ दिखलाने का मेहनताना। ३ तुलना। बराबरी।

देखाऊ-(वि०) बनावटी। नकली। दिखावटी। (अव्य०) देखने मे।

देखाणी-(अव्य०) १ देखता हूं सोचता हूं प्रतीक्षा करता हूं, देखता हूं कैसे कर लेता है। इत्यादि अर्थों का सूचक २ एक सपूट। जैसे आव देखाणी मार देखाणी इत्यादि।

देखाणो-दे० देखावणो।

देखादेख-दे० देखादेखी।

देखा देखी-(ना०) किसी को करते देख कर करना। अनुकरण। नकल।

देखाळणो-(क्रि०) दे० देखावणो।

देखाळो-(ना०) १ दिखाई देना। दर्शन। २ किसी देवता या प्रेत आदि का आवेश। आवेश परिचय। ३ प्रभात। प्रातःकाल का समय।

देखाव-(ना०) १ दिखाने का भाव। २ तडक भडक। आडम्बर। बनाव। ३ दृश्य। नजारा। देखावो। ४ सजावट। ५ आकार। आकृति। रूप। स्वरूप। ६ प्रत्यक्ष।

देखावडो (वि०) १ देखा जाता। २ रूपवान। सुन्दर। रूपाळो।

देखावणो-(क्रि०) १ दिखाना। २ जाँच करवाना। परखाना। ३ मादा और नर को मैथुन के लिये इकट्ठा करना। जोड़ा लगाना (पशु) ४ अपने प्रभाव का परिचय कराना। ५ जोर बताना। बल का परिचय देना।

देखावो-(ना०) १ दिखाने के लिये की जाने वाली तैयारी। प्रदर्शन। २ दिखाने के लिये सजाकर रखी हुई दहेज की सामग्री। दहेज प्रदर्शन। २ आडम्बर। ढोंग। ३ चमक दमक। तडक भडक।

देखीजतो-(वि०) १ प्रत्यक्ष। स्पष्ट। २ दिखाऊ।

देखीतो-(वि०) दे० देखीजतो।

देग-(ना०) खाना पकाने का तांबे या पीतल का बडा बर्तन। देगडो।

देगची-दे० देगडी।

देगचो-दे० देग।

देगडी-(ना०) देगची। छोटा देग।

देगडो-(ना०) १ पीतल का बना हुआ पानी का घड़ा। २ छोटा देग। हाण्डा। देगचा।

देगवट-(ना०) १ भोजन प्रकार। २ पाक क्रिया का मानदण्ड। ३ हर समय भोजन की तैयारी। ४ भोजन सत्कार।

देज-(ना०) दहेज। दात। दायजो।

देठाळो-(ना०) १ दृश्य। दृष्ट। दिखाव। २ दिखाने का भाव।

देडको-(ना०) मेढक। डेडको। डेडरियो।

देण-(वि०) देने वाला। देवणियो। (ना०) १ कर्ज। २ देना। दान।

देणदार-(वि०) कर्जदार। कर्जवाला। ऋणी। करजायत।

देणदारी-(ना०) कर्जदारी। ऋण। करजो।

देण लेण-(ना०) देन लेन का व्यवहार।

देणियो–(वि०) देने वाला । देवणियो । देणारो ।

देणी दे० देताणी ।

देणो–(क्रि०) १ देना । प्रदान करना । २ सौंपना । हवाले करना । ३ प्रहार करना । (ना०) ऋण । कर्जा । करजो ।

देताणी–(अव्य०) १ क्रिया विशेषण के साथ लगने वाला एक त्वराथ सूचक सयुक्त । यथा—वो भट देताणी भाग गयो । किवाड़ भट देताणी बद होगया । २ देने के साथ । देत ही ।

देनी–दे० नीवी ।

देनार–दे० दीनार ।

देधाण–(ना०) १ समुद्र । २ दधि । दधिसागर । ३ बड़ा समुद्र । महोदधि ।

देन–(ना०) १ प्रदत्त वस्तु । २ प्राप्त वस्तु । सौगात । ३ ईश्वर गुरुजनो आदि से प्राप्त बड़ी महत्वपूर्ण वस्तु । ४ कर्जा । ५ बाकी रकम ।

देनदार–दे० देणदार ।

देनदारी–दे० देणदारी ।

देय–(वि०) १ देने योग्य । देणजोग । २ दिया जा सके वह ।

देर–(ना०) १ विलब । दर । ढील । जेज । मोडो । २ समय ।

देराटी–(ना०) १ एक शकुन चिड़िया । २ उलूक जाति की एक रात्रि शकुन चिडी । दिवांधिका । भरव । भैरवी । चीबरी । कोचरी । ३ देव चिडी नाम की एक शकुन चिड़िया ।

देराणी–(ना०) पति के छोटे भाई की पत्नी । दवरानी ।

देरावणो–दे० दिरावणो ।

देरासर–(ना०) १ देव मदिर । २ जन मदिर ।

देरासरी–(ना०) १ देरासर मे नियमित पूजा करने वाला । भोजक । २ एक मल्ल ।

देरी–दे० देर ।

देरो–दे० देवर ।

देव–(ना०) १ देवता । देव । २ परमात्मा । परमेश्वर । ३ एक प्रत्यय जो पुरुष नामो के अत म लगता है । जसे रामदेव गुरुदेव ।

देवऊठणी इग्यारस–दे० देवठणी-ग्यारस ।

देवऊठी–दे० देव ऊठणी इग्यारस ।

देवकी (ना०) श्री कृष्ण की माता ।

देवगत–(ना०) १ दवगति । भाग्य । प्रारब्ध । २ देवगति । दवत्व । दव योनि । ३ मृत्यु । मरण । मौत ।

देवग्य–(ना०) ज्योतिषी । दवज्ञ । जोसी ।

देवचो–(ना०) १ वचन दान । प्रतिज्ञा । २ शपथ ।

देवजणी–(ना०) दवदासी ।

देवजी–(ना०) राजस्थान के एक प्रसिद्ध लोक देवता । यह गूजर जाति मे विशेष माय हैं । इनका जन्म आसीद (मेवाड) मे माघ सुदि ६ को वि स १३०० मे माना जाता है ।

देवजी-रोटो–दे० घणदेवजी रोटो ।

देवजोग–(ना०) १ दवयोग । २ सयोग । ३ होनहार ।

देवज्ञ–दे० देवग्य ।

देवझूलणी ग्यारस–(ना०) भादों सुदि एकादशी ।

देवठणीग्यारस–(ना०) देवोत्थनी एकादशी । कार्तिक शुक्ला एकादशी ।

देवणो–दे० देणो ।

देवत–(ना०) देवता ।

देवत कासो–(ना०) विवाह आदि मागलिक अवसरो पर कुल देवता के निमित्त परोसा जाने वाला भोजन सामग्री का थाल ।

देवतण-*(न०)* देवत्व।
देवता-*(न०)* १ सुर। देव। २ आग। अग्नि। ३ देवत्व। *(ना०)* देवी।
देवथान-*(न०)* देवस्थान। देवालय। देवमंदिर।
देवदार-*(न०)* एक जाति का वृक्ष और उसकी लकड़ी। देवदार।
देवदीवाळी-*(ना०)* १ देव मंदिरों में विशेष प्रकार से मनाये जाने वाले दीपोत्सव का कार्तिक पूर्णिमा का दिन। २ कार्तिक पूर्णिमा का पर्व। काती सुदि पूनम।
देवधाम-*(न०)* १ स्वर्ग। २ मृत्यु।
देवनदी-*(ना०)* गंगा नदी। सुरसरी। सुरसरिता।
देवनागरी-*(ना०)* १ संस्कृत राजस्थानी हिन्दी मराठी आदि भाषाओं की लिपि। बालबोध लिपि। बाळबोध।
देव पोढणी-*दे०* देव पोढणी ग्यारस।
देव-पोढणी ग्यारस-*(ना०)* १ आषाढ शुक्ल एकादशी। देवशयनी एकादशी। २ इस एकादशी का पर्व।
देवप्रयाग-*(न०)* हिमालय में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।
देवमख-*(न०)* १ देवताओं का भोजन। देवभक्ष्य। २ अमृत।
देवभाखा-*(ना०)* देवभाषा। संस्कृत भाषा।
देवभाषा-*(ना०)* संस्कृत भाषा।
देवमंदिर-*(न०)* देवस्थान। देवालय।
देवयोग-*दे०* देवयोग।
देवर-*(न०)* पति का छोटा भाई।
देवराज-*(न०)* इन्द्र।
देवराणी-*दे०* देराणी।
देवरिख-*(न०)* देवऋषि। नारद ऋषि।
देवरो-*(न०)* देवालय। देहरो।
देवळ-*(न०)* देवालय। देवरो। देवमंदिर।
देवळी-*(ना०)* १ स्त्रीमूर्त्ति। वीर सती स्त्री की पुत्तलिका। ३ छोटा देवालय। देवली। ४ स्मारक रूप से बनवाई हुई छत्री।
देवलोक-*(न०)* १ देवलोक। स्वर्ग। २ मृत्यु।
देवलोक जाणो-*(मुहा०)* मरना।
देवलोक पधारणो-*दे०* देवलोक जाणो।
देवलोक होणो-*दे०* देवलोक जाणो।
देववाणी-*(ना०)* संस्कृत भाषा।
देवविद्या-*(ना०)* निरुक्त विद्या। व्युत्पत्ति शास्त्र।
देवशयनी-*(ना०)* देवशयनी एकादशी। आषाढ शुक्ला एकादशी।
देवशरण-*(न०)* १ रामशरण। मृत्यु। मरण। २ भगवान की शरण।
देवसजोग-*दे०* देवजोग।
देवसंयोग-*दे०* देवजोग।
देवस्थान-*(न०)* देवालय। देवमंदिर। देवथान।
देवहूर-रा-मगरा-*(न०)* मेवाड की एक पर्वत श्रेणी।
देवाचा-*दे०* देवचो।
देवाण-*(न०)* १ देवता। २ देव समूह। ३ ब्रह्मा। ४ देवत्व।
देवाण विद्या-*(ना०)* १ सरस्वती। विद्या देवी। २ संस्कृत भाषा। *दे०* देव विद्या। *(वि०)* विद्या देने वाली।
देवातन-*(न०)* १ देवायतन। देवस्थान। देवमंदिर। २ देवस्वरूप। ३ देवत्व। *(वि०)* १ जिसके तन में देवी देवता का आवेश होता हो। २ देव्यांशी। ३ देवांश।
देवाघण-*(ना०)* गाय।
देवाधिदेव-*(न०)* देवताओं के देवता।
देवायर-*(न०)* दिवाकर। सूर्य। सूरज।
देवाळ-*(वि०)* १ देने वाला। २ दानी।

देवालय-(न०) देवमंदिर । देवळ ।
देवाळियो-(न०) कर्जा नहीं उतार सकने वाला व्यक्ति । दिवाळिया । नादार व्यक्ति ।
देवाळो-(न०) ऋण नहीं चुकाने की स्थिति व असमर्थता । दिवाला । नादारी ।
देवाँ प्रगवाणी-(न०) गणेश ।
देवांगना-(ना०) अप्सरा । अपछरा ।
देवांशी-(वि०) जो देवता के अंश से उत्पन्न हुआ हो ।
देवासी-दे० दवांनी ।
देविमाण-दे० देव्यायण ।
देवी-(ना०) १ आद्या शक्ति । दुर्गा । २ सरस्वती । ३ लक्ष्मी । ४ स्त्री नामों के अंत में लगने वाला एक गौरव सूचक प्रत्यय शब्द । ५ स्त्री (सम्मान वाचक) ६ एक चिड़िया । शकुन चिड़ी ।
देवेयान-दे० देवयान ।
देवेस-(न०) देवेश । महादेव ।
देव्यायण-(न०) बारहठ ईसरदास कृत देवी की महिमा व स्तुति का एक प्रसिद्ध भक्ति ग्रंथ । देविमाण ।
देश-(न०) १ देश । मुल्क । २ राष्ट्र । ३ क्षेत्र । ४ स्थान ।
देशज-(वि०) १ देश में उत्पन्न । २ लोक तथा देश की बोलचाल से उत्पन्न । शिष्ट भाषा की व्युत्पत्ति रहित लोगों की बोल चाल से उत्पन्न (शब्द) ।
देशी-(वि०) १ स्वदेश में उत्पन्न या बना हुआ । देशी । २ देश संबंधी । ३ देश में रहने वाला । (ना०) १ एक रागिनी । २ स्थान विशेष की बो- ...
देस-दे० देश ।
देसज-दे० देशज ।
देस दीवाण-(न०) १ ... दीवान ... का ... प्रकार ... निकाल ...
देश निकाला ।
देसपत-(न०) राजा । देशपति ।
देस रजपूत-(न०) १ साधारण राजपूत । बिना जागीरी का राजपूत । २ देश में विख्यात राजपूत । ३ देश में रहने वाला राजपूत ।
देसवटो-(न०) देश निकाला । निर्वासन । देश से बाहर निकाला की सजा ।
देसवाळी लोग-(न०) जसलमेर राज्य की मुसलमान प्रजा जिसको भी जजिया भरना पड़ता था ।
देसाटण-(न०) देशाटन । देशभ्रमण ।
देसावर-(न०) परदेश । देशावर ।
देसावरी-(वि०) परदेश में रहने वाला । परदेशी ।
देसी-दे० देशी ।
देसूंटो-दे० देसवटो ।
देसोटो-दे० देसवटो ।
देसोत-(न०) १ राजा । देशपति । २ जागीरदार ।
देह-(ना०) शरीर । देह । काया ।
देहत्याग-(न०) मृत्यु ।
देहपात-(न०) मरण । मृत्यु ।
देहरखो-(वि०) १ शरीर की ही विशेष चिंता करने वाला । २ अपनी रक्षा करने वाला । ३ स्वार्थी । (न०) कवच ।
देहरो-(न०) देवघर । देवालय ।
देहळियो-(न०) गाय भैंस के लिये कुट्टी आदि पकाने तथा खिचड़ा आदि रांधने का मिट्टी का बड़ा पात्र ।
... (ना०) देहली । देहलीज । ऊमरो ।
... गांव ।
... गांव का । ग्रामीण ।
देह
देह

देहुरो-(न०) मंदिर । देवळ । देवरो । दहरो ।
दण-(ना०) १ दुःख । संकट । संताप । क्लेश । २ झगडा । कलह । ३ दहन । जलन । मनस्ताप । ४ चिंता । फिक्र ।
दैणगियो-दे० ल्नगियो । (वि०) १ संताप करने वाला । २ दुखदाई । ३ झगडालू । कलहकारी ।
दैणगी-(ना०) १ दिनमान का काम या मजदूरी । २ दैनिक पारिश्रमिक पर किया जाने वाला काम । ३ दिनभर के काम का पारिश्रमिक । दैनिक पारिश्रमिक । ४ एक दिन का मेहनताना । दैनिकी । (वि०) दैनिक ।
दैत-(न०) दैत्य ।
दैतणी-(ना०) १ दैत्य की स्त्री । २ कुरूपा स्त्री । ३ झगडालू स्त्री ।
दैनगियो-(न०) दैनिक पारिश्रमिक पर काम करने वाला मजदूर । मजूर ।
दैनगी-दे० दैणगी ।
दैळियो-दे० देहळियो ।
दैवयोग-(न०) संयोग । इत्तिफाक ।
दो-(वि०) एक और एक । (न०) दो की संख्या । २
दोइण-दे० दायण ।
दोई-(वि०) दोनों ।
दोकडो-(न०) १ एक पुराना सिक्का । २ रुपये के सौवें भाग का एक सिक्का । ३ रुपये का सौवाँ भाग । (ब्याज फलावट का मान) ४ सौवाँ भाग । ५ प्रतिशत । ६ ब्याज । ७ धन । रोकड । पूंजी । पैसा ।
दोकलो-(वि०) जिसके साथ कोई और साथी हो । दुकेला । अकेला नहीं ।
दोकी-(ना०) १ दो चिह्नों वाला ताश का पत्ता । दुरी । दुक्की । २ शौच जाने के लिये दो अंगुलियाँ उठा कर किया जाने वाला संकेत । वेंरी । ३ मल त्याग । गौर । (वि०) दो ।
दोकी जाणो-(मुहा०) मल त्याग करने को जाना । वेंरी जाणो ।
दोख-(न०) १ दोष । ऐब । २ देवता की नाराजी । ३ देवता की नाराजी से हुआ कष्ट या रोग । ४ भूत प्रेत या किसी लोक देवता की नाराजी । ५ किसी लोक देवता का अभिशाप । ६ पीडा । ७ द्वेष । ८ रोग । ९ पाप ।
दोखण-(न०) १ पाप । २ दूषण ।
दोखी-(वि०) १ शत्रु । दुश्मन । २ बुरा चाहने वाला । ३ ईर्ष्यालु । ४ द्वेषी । ५ दूसरे के दुःख में सुखी और सुख में दुःखी होने वाला । ६ दुखियारा । ७ दुःखी । ८ दोषी । अपराधी ।
दोखो-(न०) १ बीमारी । रोग । २ प्राकृतिक संकट । ३ दुःख । कष्ट । ४ पाप ।
दोगलापणो-(न०) १ दोनों पक्षों से मिला रह कर दोनों में कलह कराने का काम । २ दुतरफी बात करने का काम । ३ वर्णसंकर व्यक्ति का काम ।
दोगलो-(न०) १ वर्णसंकर । जारज । २ दोनों पक्षों में मिला रह कर कलह कराने वाला । ३ दुतरफी बात करने वाला ।
दोज-दे० दूज ।
दोजख-(न०) दोजख । नरक ।
दोजखी-(वि०) १ दुखिया । २ ईर्ष्यालु । ३ वह जिसको न तो रात में और न दिन में चैन पड़े । ४ पापी । नारकी । दोजखी ।
दोजीवाती-(ना०) गर्भवती स्त्री ।
दोजीवी-दे० दो जीवाती ।
दोझो-(न०) १ थन । स्तन । (पशु) । २ दूध देने वाला पशु ।

देवालय-*(न०)* दवमदिर । देवळ ।
देवाळियो-*(न०)* कर्जा नहीं उतार सकने वाला व्यक्ति। दिवाळिया । नादार व्यक्ति।
देवाळो-*(स०)* ऋण नही चुका न की स्थिति व असमथता । दिवाला । नादारी ।
देवाँ-अगवाणी-*(न०)* गणेश ।
देवागना-*(ना०)* अप्सरा । अपछरा ।
देवाशी-*(वि०)* जो देवता के अ श से उत्पन्न हुआ हो ।
देवासी-दे० देवाँशी ।
देवियाण-दे० देव्यायण ।
देवी-*(ना०)* १ आद्या शक्ति । दुर्गा । २ सरस्वती । ३ लक्ष्मी । ४ स्त्री नामा के अ त म लगने वाला एक गौरव सूचक प्रत्यय शब्द । ५ स्त्री (सम्मान वाचक) ६ एक चिडिया । शकुन चिडी ।
देवेथान-दे० देवथान ।
देवेस-*(न०)* देवेश । महादेव ।
देव्यायण-*(न०)* बारहठ ईसरदास कृत देवी की महिमा व स्तुति का एक प्रसिद्ध भक्ति ग्र थ । देवियाण ।
देश-*(न०)* १ देश । मुल्क । २ राष्ट्र । ३ क्षेत्र । ४ स्थान ।
देशज-*(वि०)* १ देश मे उत्पन्न । २ लोक तथा देश की बोलचाल से उत्पन्न । शिष्ट भाषा की व्युत्पत्ति रहित लागा का बोल चाल से उत्पन्न (शब्द) ।
देशी-*(वि०)* १ स्वदेश म उत्पन्न या बना हुआ । देशी । २ देश सबधी । ३ देश म रहने वाला । *(ना०)* १ एक रागिनी । २ स्थान विशेष की बोली ।
देस-दे० देश ।
देसज-दे० देशज ।
देस दीवाण-*(न०)* १ देश का बडा दीवान । २ दीवान का एक ओहदा या प्रकार ।
देसनिकाळा-*(न०)* निर्वासन का दड । देश निकाला ।
देसपत-*(न०)* राजा । देशपति ।
देस-रजपूत-*(न०)* १ साधारण राजपूत । बिना जागीरी का राजपूत । २ देश म विख्यात राजपूत । ३ देश म रहने वाला राजपूत ।
देसवटो-*(न०)* देश निकाला । निर्वासन । देश से बाहर निकालने की सजा ।
देसवाळी लोग-*(न०)* जसलमेर राज्य की मुसलमान प्रजा जिसको भी जजिया भरना पडता था ।
देसाटण-*(न०)* देशाटन । देशभ्रमण ।
देसावर-*(न०)* परदेश । देशावर ।
देसावरी-*(वि०)* परदश म रहन वाला । परदेशी ।
देसी-दे० देशी ।
देसू टो-दे० देसवटो ।
देसोटो-दे० देसवटो ।
देसोत-*(न०)* १ राजा । देशपति । २ जागीरदार ।
देह-*(ना०)* शरीर । देह । काया ।
देहत्याग-*(न०)* मृत्यु ।
देहपात-*(न०)* मरण । मृत्यु ।
देहरखो-*(वि०)* १ शरीर की ही विशेष चिंता करने वाला । २ अपनी रक्षा करने वाला । ३ स्वार्थी । *(न०)* कवच ।
देहरो-*(न०)* देवघर । देवालय ।
देहळियो-*(न०)* गाय, भस के लिये कुट्टी आदि पकाने तथा खिचडा आदि राधने का मिट्टी का बडा पात्र ।
देहळी-*(ना०)* देहली । दहलीज । ऊमरो ।
देहात-*(न०)* गाँव ।
देहाती-*(वि०)* गाँव का । ग्रामीण । गामडियो ।
देही-*(न०)* १ देह । शरीर । २ देह धारण करने वाला । जीवात्मा । देह धारी जीव ।

देहुरो-(न०) मंदिर । देवळ । देवरो । देहरो ।
दरा-(ना०) १ दुख । संकट । संताप । क्लेश । २ झगड़ा । कलह । ३ दहन । जलन । मनसंताप । ४ चिंता । फिक्र ।
दैणगियो-दे० दनगिया । (वि०) १ संताप करने वाला । २ दुखदाई । ३ झगडालू । कलहकारी ।
दैणगी-(ना०) १ दिनमान का काम या मजदूरी । २ दैनिक पारिश्रमिक पर किया जाने वाला काम । ३ दिनभर के काम का पारिश्रमिक । दैनिक पारिश्रमिक । ४ एक दिन का मेहनताना । दैनिकी । (वि०) दैनिक ।
दैत-(न०) दैत्य ।
दैतणी-(ना०) १ दैत्य की स्त्री । २ कुरूपा स्त्री । ३ झगडालू स्त्री ।
दैनगिया-(न०) दैनिक पारिश्रमिक पर काम करने वाला मजदूर । मजूर ।
दैनगी-दे० दणगी ।
दैळियो-दे० देहळिया ।
दैवयोग-(न०) संयोग । इत्तिफाक ।
दो-(वि०) एक और एक । (न०) दो की संख्या । '२
दोइण-दे० दायण ।
दोई-(वि०) दोना ।
दोकडो-(न०) १ एक पुराना सिक्का । २ रुपये के सौवें भाग का एक सिक्का । ३ रुपये का सौवाँ भाग । (ब्याज फलावट का मान) ४ सौवाँ भाग । ५ प्रतिशत । ६ ब्याज । ७ धन । रोकड । पूंजी । पैसा ।
दोकलो-(वि०) जिसके साथ कोई और साथी हो । दुकेला । अकेला नहीं ।
दोकी-(ना०) १ दो चिन्हों वाला ताश का पत्ता । दुरी । दुक्की । २ शौच जाने के लिये दो अंगुलियाँ उठा कर किया जाने वाला संकेत । बेकी । ३ मल त्याग । शौच । (वि०) दो ।
दोकी जाणो-(मुहा०) मल त्याग करने को जाना । बेकी जाणो ।
दोख-(न०) १ दोष । ऐब । २ देवता की नाराजी । ३ देवता की नाराजी से हुआ कष्ट या रोग । ४ भूत प्रेत या किसी लोक देवता की नाराजी । ५ किसी लोक देवता का अभिशाप । ६ पीडा । ७ द्वेष । ८ रोग । ९ पाप ।
दोखण-(न०) १ पाप । २ दूषण ।
दोखी-(वि०) १ शत्रु । दुश्मन । २ बुरा चाहने वाला । ३ ईर्ष्यालु । ४ द्वेषी । ५ दूसरे के दुख में सुखी और सुख में दुखी होने वाला । ६ दुखियारा । ७ दुखी । ८ दोषी । अपराधी ।
दोखो-(न०) १ बीमारी । रोग । २ प्राकृतिक संकट । ३ दुख । कष्ट । ४ पाप ।
दोगलापणो-(न०) १ दोनों पक्षों से मिला रह कर दोनों में कलह कराने का काम । २ दुतरफी बात करने का काम । ३ वर्णसंकर व्यक्ति का काम ।
दोगलो-(न०) १ वर्णसंकर । जारज । २ दोनों पक्षों में मिला रह कर कलह कराने वाला । ३ दुतरफी बात करने वाला ।
दोज-दे० दूज ।
दोजग-(न०) दोजख । नरक ।
दोजगी-(वि०) १ दुखिया । २ ईर्षालु । ३ वह जिसको न तो रात में और न दिन में चैन पड़े । ४ पापी । नारकी । दोजखी ।
दोजीवाती-(ना०) गर्भवती स्त्री ।
दोजीवी-दे० दो जीवाती ।
दोभो-(न०) १ थन । स्तन । (पशु) । २ दूध देने वाला पशु ।

दोट-(ना०) १ दौड़ने की क्रिया। दौड़। २ आक्रमण। ३ आंधी। तूफान। ४ धक्का। टक्कर। ५ नदी व समुद्र म आने वाला अति वेग के साथ पानी का धक्का। जोर की लहर। ६ दड़ो। गेंद।

दोटी-(ना०) १ दड़ी। गेंद। २ एक प्रकार का कपड़ा। दुपट्टी।

दोटो-(न०) १ प्रहार। २ धक्का। ३ पानी का धक्का। ४ दड़ो। गेंद।

दोठा पुडी-दे० डोठा पुडी।

दोठो-दे० डोठो।

दोढ-दे० डोढ।

दोढवाड कूतो-दे० डाढवाड कूतो।

दोढो रावण-(न०) १ कुंभकरण। २ बड़ा रावण। (वि०) महा जबरदस्त।

दोणकी-दे० दोणी।

दोणियो-(न०) दुहने का पात्र। दोहनी। (वि०)। दुहने वाला।

दोणी-(ना०) दोहने का पात्र। दोहनी। दुहनी।

दो दो हाथ-(अव्य०)१ मल्लयुद्ध। २ बाहुयुद्ध। ३ आमने-सामने का युद्ध। ४ लड़ाई। बाथमबाथ। ५ सहकार। सहयोग।

दोधक-(न०) १ एक छंद। २ दोहा छंद।

दोधारो-(वि०) दो धार वाला। (न०) दुधारी तलवार।

दोनू-(वि०) दोनों। उभय।

दोनो-(न०) १ लाछन। कलंक। बजो। २ अपकीर्ति। कुजस।

दोपट-(वि०) दुहरा। दुपट।

दोपटो-(वि०) वस्त्र के दो पट लंबे सीए हुए। (न०) दो पट वाला वस्त्र। दोवटी।

दोपारो-(न०) दुपहर में किया जाने वाला अल्पाहार। दूसरे पहर का जलपान।

दोब-(ना०) दूर्वा।

दोभा-(वि०) १ वर्णसंकर। २ दो भांति का।

दोमज-(न०) युद्ध।

दोमळा-(न०) एक छंद।

दोय-(वि०) दो। (न०) दो की संख्या।

दोयण-(न०) १ शत्रु। दुश्मन। २ खल। दुर्जन।

दोर-(ना०) डोर। दे० दौर।

दोरप-(ना०) १ कठिनता। २ कष्ट। तकलीफ। संकट।

दोरम-दे० दोरप।

दोराई-दे० दोरप। (सोराई का उलटा)।

दोरिम-दे० दोरप।

दोळा-दे० दाळा।

दोळी-(वि०) १ चारों ओर। आजूबाजू। २ पीछे लगना। पीछा।

दोलू-(न०) दांत।

दोळू-दे० दोळी।

दोळै-(क्रि०वि०) १ पीछे। आजूबाजू। चारों ओर। ३ पीछे लगा हुआ।

दोळो-(अव्य०) १ चारों ओर। आजूबाजू। इधर उधर। २ पीछा।

दोवटी-(ना०) १ दो पट्टी वाली मोटी धोती। २ दो पट्टी वाला ओढ़ने का वस्त्र। ३ कंधे पर रखने का वस्त्र। दुपट्टी। दोटी। दुपट्टी।

दोवड़-(ना०) १ दुहरा सिला हुआ ठंड में ओढ़ने का एक वस्त्र। दो पट्टी का वस्त्र। ३ कपड़े की दो तह। दो तह। (वि०) दुगुना।

दोवड तेवड-(वि०) दुगुना तिगुना।

दोवड़ो-(वि०) १ दुहरा। दोहरा। २ डबल। दुगुना। ३ दोनों ओर का।

दो-वीसी-(वि०) चालीस।

दोष-(न०) १ दोष। अपराध। २ भूल। ३ लांछन। ४ पाप। ५ आरोप। ६

अभियोग । ७ कमी । खराबी । ८ साहित्य के गुण म कमी । काव्य। दोष ।

दोपारोपण-*(न०)* किसी के ऊपर दोष मँडने का भाव ।

दोस-*दे०* दोष ।

दोसण-*दे०* दूसण ।

दोसदार-*(न०)* दोस्त । मित्र ।

दोसदारी-*(ना०)* दोस्ती । मित्रता ।

दोसूती-*(वि०)* दो सूत का बुना । डबल धागा म बुना हुआ (कपड़ा) । दो सूत वाला ।

दोस्त-*(न०)* मित्र । साथी ।

दोस्ती-*(ना०)* मित्रता ।

दोह-*दे०* दोस ।

दोहग-*(न०)* १ दुर्भाग्य । २ दुख । कष्ट। ३ सकट ।

दोहणकी-*दे०* दोहणी ।

दोहणियो-*(न०)* दुहने का पात्र । दोहनी । *(वि०)* दुहने वाला ।

दोहणी-*(ना०)* दूध के दोहने का पात्र । दुग्ध पात्र । दोहनी । दोणी ।

दोहणो-*(क्रि०)* १ दुहना । दूहणो । २ किसी वस्तु का सार भाग निचोड़ देना ।

दोहराई-*(ना०)* तकलीफ । कष्ट । दुख । दोराई ।

दोहरो-*(वि०)* १ दुखिता । २ दुखियारो । दुखी । *(ना०)* तकलीफ । कष्ट । *(क्रि०वि०)* १ दुख से । २ कठिनता से । ३ तकलीफ मे ।

दोहरा-*(न०)* १ बेआराम । तकलीफ । कष्ट । २ एक छद । दोहा । *(वि०)* दुखी । *(क्रि०वि०)* १ कठिनता से । २ तकलीफ म ।

दोहलो-*(न०)* दोहा छन्द । दे० दोहिलो ।

दोहा-*दे०* दूहो ।

दोहितरी-*दे०* दोहीती ।

दोहितरो-*दे०* दोहीतो ।

दोहिलो-*(वि०)* १ कठिन । दुस्साध्य । २ दुखी । *(क्रि०वि०)* कठिनता से । दे० दुहेलो ।

दोहीती-*(ना०)* पुत्री की पुत्री । दोहित्री ।

दोहीतो-*(न०)* बेटी का बेटा । दौहित्र । दुहता ।

दोहेलो-*दे०* दुहेलो ।

दौड़-*(ना०)* १ दौड़ने की क्रिया । दौड़ । २ हमला । आक्रमण । धावा । ३ पहुँच । शक्ति । ४ प्रयत्न । ५ लूट ।

दौड़णो-*(क्रि०)* १ दौड़ना । भागना । २ पलायन होना । ३ हमला करना । धावा करना । ४ लूटना । डाका डालना । ५ प्रयत्न करना ।

दौडभाग-*(ना०)*१ दौड़ा दौड़ी । २ प्रयत्न । कोशिश ।

दौडादौडी-*(ना०)* १ बार बार दौड़ना । २ दौड़धूप । भागदौड़ । ३ जल्दबाजी ।

दौडो-*(न०)* १ चक्कर । फेरा । भ्रमण । दौरा । २ आक्रमण । ३ अधिकारी का अपने अधिकार क्षेत्र म निरीक्षण के लिये जाना । दौरा । ४ समय समय पर होने वाले रोग का आक्रमण । दौरा । रोग का वतन । ५ डाका ।

दौर-*(न०)* १ रोब । आतक । २ प्रभाव । ३ वैभव के दिन । ४ भ्रमण । फेरा ।

दौलत-*(ना०)* १ दौलत । पूजी । धन । २ जागीरी । ३ भाग्य । प्रारब्ध ।

दौलतखानो-*(न०)* घर । निवास स्थान ।

दौलत-छौळ-*(वि०)* १ जिसके पास दौलत लहरें ले रही हो । अपार धनवान । २ उदार । दातार ।

दौलतधारी-*(वि०)* धनवान ।

दौलतमद-*(वि०)* धनवान ।

दौलतवान-*(वि०)* धनवान ।

द्यउ-*(क्रि०)* दियउ । दीजिये । दे औ । (विनयार्थ)

द्याडो-(न०) दिवस । दिन ।
द्याणी-(वि०) दाहिनी । जीमणी ।
द्याणू-(वि०) दाहिना । जीमणो ।
द्याणो-(वि०) दाहिना । (न०) दाहिनी ओर । जीमणी काली ।
द्यामणो-दे० दयामणो ।
द्युति-(ना०) कान्ति । तेज ।
द्युतिवत-(वि०) १ कान्तिमान । सुदर । २ प्रकाशमान ।
द्योराणी-दे० देराणी ।
द्यो-(क्रि०) १ देना । २ दीजिये ।
द्योस-(न०) दिवस । दिन ।
द्रग-(न०)१ दृग । नेत्र । २ दृष्टि । नजर ।
द्रजीत-(न०) इद्रजीत । मेघनाद ।
द्रजोण-(न०) दुर्योधन ।
द्रढ-दे० दिढ ।
द्रढता-(ना०) दृढता । मजबूती ।
द्रढाव-दे० दिढाव ।
द्रढेल-(वि०) दृढ । दृढतावाला ।
द्रप-(न०) १ दप । गव । २ आतक । रोब । ३ उद्दडता ।
द्रब-(न०) द्रव्य । धन ।
द्रब-उभेळ-दे० दौलत छौळ ।
द्रब-छौळ-दे० दौलत छौळ ।
द्रम-(न०) १ वृक्ष । द्रुम । २ मरुस्थल । मरुप्रदेश । ३ प्रचड पवन । ४ वायु वेग । ५ एक प्राचीन सिक्का । द्रम्म ।
द्रमक-(न०) १ धमाका । २ गजन । ३ ढोलक का शब्द ।
द्रव-(न०) १ द्रव्य । २ किसी वस्तु का तरल रूपान्तर । रस । द्रव पदार्थों के तीन रूप—ठोस द्रव और गैस म से एक । तरल पदाथ ।
द्रवणो-(क्रि०) १ पिघलना । २ झरना । चूना । ३ गद्गद होना ।
द्रव्य-(न०) १ धन । पैसा । नाणो । २ पदाथ । वस्तु ।
द्रस्टात-दे० दृष्टान्त ।
द्रह-(न०) बहुत गहरे पानी का खड्डा । ह्रद । २ खड्डा । ३ बिना बँधा हुआ कुँआ ।
द्रहवाट-दे० दहवाट ।
द्रग-(न०) १ दुग । किला । २ गाँव । ३ टीबा । धोरो । ४ खड्डा । ५ देश । ६ नगर ।
द्रगडो-दे० द्रग ।
द्राख-(ना०) दाख । द्राक्षा ।
द्रिठ-दे० दीठ ।
द्रिठबध-(वि०) दृष्टिबध ।
द्रीठ-(ना०) १ दृष्टि । नजर । २ आँख । नेत्र ।
द्रुग-(न०) किला । दुग । गढ ।
द्रुत-(वि०) १ तेज । तीव्र । २ शीघ्र ।
द्रुमची-दे० दुमची ।
द्रुग-(न०)१ दुग । किला । गढ । २ गाँव । ३ टीबा । धोरो ।
द्रू-(न०) १ पवत । भाखर । २ जगल । ३ लकडी । ४ सोना । स्वण ।
द्रेठ-(ना०) १ दृष्टि । नजर । २ आँख ।
द्रेठि-दे० द्रेठ ।
द्रोण-(न०) १ पवन । २ पाडव कौरवो के गुरु द्रोणाचाय । ३ एक माप । ४ दोना । ५ रथ ।
द्रोपता-(ना०) द्रौपदी ।
द्रोपाँ-(ना०) द्रौपदी ।
द्रोब-(ना०) दूब । दूर्वा ।
द्रोह-(न०) १ ईर्ष्या । द्वेष । २ वैर । शत्रुता । ३ कपट । दगा । ४ विरोध । ५ बगावत ।
द्रोहणो-(क्रि०) १ द्रोह करना । २ विरोध करना । ३ बगावत करना ।
द्रोही-(वि०) १ द्रोह करने वाला । २ शत्रु । ३ दगाखोर । कपटी । ४ विरोधी । ५ बगावती ।

द्रौपदी-(ना०) राजा द्रुपद की पुत्री। पांडवों की पत्नी।
द्वंद-(न०) १ झगड़ा। द्वंद्व। २ द्वंद्व युद्ध। ३ दो का जोड़ा। द्वंद्व। ४ एक समास। (व्या०)।
द्वात-(ना०) दवात। मसिपात्र। मजिया सणो।
द्वादशी-(ना०) बारस तिथि। बारस।
द्वादशो-(न०) मृतक का बारहवाँ। बारियो। दुश्रादसो।
द्वापर-(न०) चार युगों में से तीसरा युग।
द्वार-(न०) दरवाजा। बारणो।
द्वारका-(न०) १ द्वारिका नगरी। २ चार प्रधान तीर्थों में से एक। सागर तट पर स्थित सौराष्ट्र का प्रख्यात तीर्थ क्षेत्र।
द्वारकाधीश-(न०) श्रीकृष्ण।
द्वारकानाथ-(न०) श्रीकृष्ण।
द्वारपाळ-(न०)द्वार पर रहने वाला रक्षक। द्वार पाल। डोढ़ीदार।
द्वारा-(अव्य०) जरिया। मारफत। से।
द्वार रोकाई-दे० बार रोकाई।
द्वारो-(न०) १ मंदिर। २ साधु संतों का स्थान। यथा—रामद्वारो।
द्वाळो-दे० दुश्राळो।
द्विज-(वि०)१ जन्म और यज्ञोपवीतधारण—इन दो संस्कारों द्वारा उत्पन्न। दो बार जन्मा हुआ। (न०) १ ब्राह्मण क्षत्री, वैश्य। त्रिवर्ण। २ ब्राह्मण। ३ पक्षी। ४ अंडज। ५ दाँत।
द्विदळ-(न०) मूंग मोठ चना आदि कठोळ धान्य। द्विदल धान्य।
द्विरद-(न०) हाथी। दुरद।
द्विवेदी-(न०) ब्राह्मणों की एक अल्ल।
द्वेष-(न०) १ ईर्ष्या। २ वैर। शत्रुता। ३ जलन।
द्वरद-(न०) हाथी। द्विरद।

ध

ध-संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्णमाला का उन्नीसवाँ और तवर्ग का चौथा व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दंतमूल है।
धइयो-(न०) १ विपत्ति। संकट। आफत। २ कष्ट। संताप। ३ टंटा झगड़ा। कलह।
धईडो-(न०) किसी चिंता, विपत्ति आदि की अचानक सूचना। २ ऐसी झूठी सूचना।
धक-(ना०) १ भय शोक आदि के कारण हृदय की गति तेज होने का शब्द। २ जोश। ३ क्रोध। ४ सहसा। ५ धक्का। (क्रिवि) एक दम। सहसा। अचानक।
धकचाळ-(ना०) १ युद्ध। लड़ाई। २ उपद्रव।
धकचाळो-दे० धकचाळ।
धकणो-(क्रि०) १ चलना। निर्वाह होना। २ निभाना।
धकधूराणो-(क्रि०) जोर से हिलना। झकझोरना।
धकपख-(न०) गरुड़।
धकलो आंक-दे० चक्तो आंक।
धकाणो-(क्रि०) १ निर्वाह करना। चलना। २ निभाना। ३ धक्का मार कर चलना। ४ खदेड़ना। ५ पीछे हटाना। ६ पराजित करना।
धकार-(न०) ध वर्ण। धधो। धध्धो।
धकावणो-दे० धकाणो।

धकीजणी–*(क्रि०)* १ धकाया जाना। धकेला जाना। २ थकना। ३ निभाना।

धकेलणो–*(क्रि०)* १ धकेलना। धक्का देना। ठेलना। २ किसी काम या बात को लापरवाही से यों ही आगे को ठेलते जाना।

धकेलो–*(न०)* धक्का। हुड़ैलो। हुड़सेलो।

धकै–*(अव्य०)* १ सामने। आगे। समक्ष। २ उपस्थिति में। ३ मुकाबले में। ४ भविष्य में। ५ अग्रस्थान में। आगे। अगाडी। ६ पूर्व। पहिले।

धको–*दे०* धक्को।

धक्कमधक्का–*(न०)* १ धक्कमधक्का। धक्काधक्की। २ भीड़।

धक्काधक्की–*दे०* धक्कमधक्का।

धक्काधूम–*(ना०)* १ धक्कमधक्का। ठेलाठेली। २ ऊधम।

धक्कामुक्की–*(ना०)* धक्का देना और मुक्का मारना। परस्पर धकेलने और मुक्के मारने की क्रिया।

धक्को–*(न०)* १ धक्का। टक्कर। २ ठोकर। ३ आक्रमण। ४ हानि। घाटा। ५ चक्कर। फेरा। ६ हानि, शोक दुख आदि का आघात।

धख–*(ना०)* १ अग्नि। आग। २ क्रोध। ३ जोश।

धखणो–*(क्रि०)* १ सुलगना। दहकना। २ क्रोधित होना।

धखपख–*(न०)* गरुड़। धकपख।

धखपखधज–*(न०)* १ श्री विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

धगड–*(न०)* मुसलमान। म्लेच्छ।

धगडी–*(ना०)* कुलटा स्त्री। *(वि०)* कुलटा।

धगडो–*(न०)* १ जार। लंपट। परस्त्री। लंपट। २ उपपति। ३ मुसलमान

धगन–*(ना०)* १ अग्नि। २ ज्वाला। ३ जलन। धुखण।

धगम–*(न०)* उत्साह। लगन। जोश।

धगार *(न०)* १ आकाश। २ जोश। उत्साह।

धचकणो–*(क्रि०)* १ जमीन के किसी भाग का नीचे धँस जाना। २ धक्का लगना। ३ दलदल में फसना।

धचकाणो–*(क्रि०)* १ फँसाना। धँसाना। २ धक्का लगाना।

धचकावणो–*दे०* धचकाणो।

धचको–*(न०)* १ झटका। धक्का। टक्कर।

धज–*(ना०)* १ ध्वजा। धजा। २ नोक। ३ भाला। ४ अग्रभाग। ५ घोड़ा। *(वि०)* १ अति तीक्ष्ण। २ दृढ़। ३ श्रेष्ठ। ४ जोशीला। ५ अग्रणी।

धजडंड–*(न०)* १ ध्वजडंड। धजा का डंडा। २ भाला।

धजणी–*(न०)* १ सेना। फौज। ध्वजिनी। २ घोड़ी।

धजनी–*दे०* धजणी।

धजपख–*(न०)* गरुड़।

धजबध–*(न०)* १ राजा। २ घोड़ा। ३ देवालय। *(वि०)* १ वीर। योद्धा। २ विश्वस्त। ३ धजाधारी। ४ प्रामाणिक। ५ अवक्र। सीधा।

धजबधी–*(ना०)* १ पार्वती। दुर्गा। २ घोड़ी। ३ राजा।

धजर–*(न०)* १ मान। २ मरोड़। ३ गर्व। ४ प्रतिष्ठा। ५ घोड़ा। ६ भाला। ७ तलवार। ८ कटारी। ९ धजा। १० मंदिर। ११ किला। १२ आकाश। *(वि०)* १ वीर। २ उच्च मना। ३ श्रेष्ठ। ४ मनोहर।

धजरग–*(वि०)* नोकदार। नुकीला।

धजराज–*(न०)* १ घोड़ा। २ राजा।

घजराळ-*(न०)* १ घोडा। २ राजा। ३ मदिर। ४ दुग। *(वि०)* घजाधारी। घजारो।

घजरेल-*(वि०)* १ श्रेष्ठ। २ वीर। ३ खड्गधारी। ४ घजाधारी। *(न०)* घोडा।

घजवड-*(न०)* १ तलवार। २ यश। कीर्ति। ३ मान। प्रतिष्ठा।

घजवडह्थो-*(वि०)* १ खड्गधारी। २ वीर। योद्धा।

घजवर-*(न०)* १ ध्वजधारियो म श्रेष्ठ। २ राजा। ३ शस्त्रधारियो मे श्रेष्ठ। ४ शस्त्रधारी। दे० घजवड।

घजवी-*(वि०)* १ शस्त्रधारी। २ घजाधारी। *(ना०)* घाडी।

घजा-*(ना०)* ध्वजा। पताका।

घजाडड दे० ध्वजदड।

घजाणी-दे० घजणी।

घजावध-*(वि०)* १ जिसके ऊपर ध्वजा फहरा रही हो। घजावाला। *(न०)* १ देवालय। मदिर। २ देवी। ३ देवता।

घजार-*(न०)* १ आकाश। २ भाला।

घजारो-*(वि०)* १ श्रेष्ठ। २ अग्रणी। ३ मुखिया। ४ घजावाला। ५ भालाधारी।

घजाळ-*(वि०)* १ घजाधारी। २ भालाधारी। भाला रखन वाला।

घजाळी-*(ना०)* देवी। *(वि०)* ध्वजावाली।

घजाळो-दे० घजाळ।

धज्जी-*(ना०)* १ कागज, कपडे आदि की लबी और पतली पट्टी। २ बदनामी। अपकीर्ति। कुजस।

घट-*(वि०)* १ श्वेत। सफेद। २ स्वच्छ। निमल।

घट चानणी-*(वि०)* विना बादलो के निमल चद्र प्रकाशवाली (रात्रि)। *(ना०)* निमल चांदनी। ज्योत्सना।

घट-चानणो-*(न०)* १ तेज प्रकाश। २ श्वेत प्रकाश। ३ चद्रमा का निमल प्रकाश। ज्योत्सना।

घड-*(न०)* १ गले के नीचे का भाग। २ विना सिर का शरीर। कबध। ३ शरीर। ४ पेड का तना। ५ सेना। ६ झुड। ७ खड। भाग।

घडक-*(ना०)* १ घडकना। हृदय की कपन। २ डर। भय।

घडकण-*(ना०)* हृदय का स्पदन।

घडकणो-*(क्रि०)* १ हृदय का धक धक करना। घडकना। २ कांपना। ३ भयभीत होना।

घडको-*(न०)* १ भय। डर। २ दिल की घडकन। ३ झटका। घडका। धक्का।

घड-खणती-*(ना०)* तलवार।

घडच-*(ना०)* तलवार। *(न०)* वस्त्र को फाडने का शब्द।

घडचणो-*(क्रि०)* १ चीरना। फाडना। २ सहार करना। नाश करना।

घडचाळो-*(वि०)* फटा हुआ।

घडचो-*(न०)* १ टुकडा। खड। २ छिन्न अश।

घडछ-*(न०)* टुकडा।

घडघडाट-*(न०)* १ घडघड की ध्वनि। २ हृदय की घडकन।

घडघडो-*(न०)* १ एक प्रकार की खडिया। जिप्सम। घाघडो। २ घडकन।

घडवाई *(ना०)* १ नाज तालने का काम। २ नाज तालने वाले से लिया जाने वाला कर।

घडहडणो-*(क्रि०)* १ घड घड करना। २ २ गजना। गाजणो। ३ कांपना। ४ युद्ध करना। लडना।

घडग-*(वि०)* १ नगा। २ मर्यादा रहित। निलज्ज। ३ मुँह फट।

धडाकाबध–(अव्य०) १ धडाका के साथ। २ एक दम। एक झपाटे म।

धडाको–(न०)किसी वस्तु के जोर से गिरने या फटने से उत्पन्न शब्द। धडाका।

धडाधड–(अव्य०)१ लगातार। बिना रुके। २ एक दूसरे के पीछे। (न०) 'धडधड' शब्द।

धडावद–(वि०) सम्पूर्ण। सब।

धडावदी–(ना०) दलबदी।

धडाम–(न०) ऊपर से एक बारगी गिरने का शब्द।

धडियो–(न०) १ नाज तोलने वाला। फडियो। २ पासग।

धडी–(ना०) १ किसी वस्तु का दस सेर का वजन। २ एक बार म दस सेर के बाट से तोला जाना। ३ एक बार म दस सेर तोली हुई वस्तु। (नोट–धडी का मान कहीं पाँच सेर का भी होता है)। ४ कान का एक आभूषण। ५ एक बार का तोल। एक तोल। एक वजन।

धडी करणी–(मुहा०) १ इकट्ठा करना। २ चुनना। ३ तोलना।

धडूकणी–(क्रि०)१ साँड का जोर से शब्द करना। डाँडना। २ सिंह का गरजन करना। दहाडना। ३ बादल का गरजना।

धडो–(न०) १ समूह। २ ढेर। राशि। ३ कई सख्याओं का योग। जोड। वह सख्या जो कई सख्याओं को जोडने से निकले। का। ४ किसी जाति या दल को दोमतो मे बटा हुआ एक विभाग। पक्ष। तड। ६ विचार। ७ पसग। पासग। ८ ढेला या ककड आदि से दिया हुआ खाली पात्र का वह समान तोल जिसम किसी वस्तु को डालकर वस्तु का निश्चित तोल करना होता है। पात्र का सम तोलन। ६ सेना। १० भीड।

धडो करणो–(मुहा०) १ इकट्ठा करना। २ चुनना। ३ किसी बरतन मे किसी वस्तु को डाल कर तोलने के पहिले खाली बरतन का तोल करना। खाली बरतन का सतुलन करना। ४ विचार बाँधना। ५ जोडना।

धण–(ना०) १ पत्नी। स्त्री। २ गायों का समूह। धन।

धणियाणी–(ना०) १ पत्नी। २ गृह स्वामिनी। ३ स्वामिनी। मालकिन। ४ देवी। शक्ति।

धणियाप–(न०) १ स्वामित्व। २ अधिकार। ३ कृपा।

धणियापो–दे० धणियाप।

धणियाँ–(सव०) आप। दे० धणी। (न०) १ २

धणी–(सव०) आप, तुम और वे के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक प्रयोग। आप। तुम। (न०) १ पति। खाविद। स्वामी। २ स्वामी। मालिक। ३ प्रभु। ईश्वर। ४ धनुष। ५ धनुष की डोरी। प्रत्यचा। (स्त्री० धण और धणियाणी।)

धणी जोग–(वि०) १ खरीददार को ही मिले ऐसी हुडी। २ वह व्यक्ति जिसके नाम की हुडी लिखी हुई हो। (न०) हुडी के रुपये पाने का अधिकारी व्यक्ति। यथा–'हुडी सिकार नै धणी जोग रुपया दे दीजो।

धणी-धोरी–(न०)१ स्वामी एव मुखिया। २ रक्षक। ३ कर्ता धर्ता। ४ वारिस। उत्तराधिकारी। दायद।

धणीवार–(अव्य०)१ प्रति व्यक्ति। २ जो जिसका हकदार या धनी हो।

धणीव्रत–दे० धणियाप।

घत-*(ना०)* १ जिद पकडने की आदत । २ हठ । दुराग्रह । ३ बुरी आदत । कुटेव । *(अ य०)* दुत्कारने का उद्गार । तुच्छकार का शब्द ।

धतूरो-*(न०)* १ एक विषैला पौधा । धतूरा । २ एक लोक गीत ।

धत्त-*(अ य०)* १ दुत्कारने का शब्द । २ दुत्कार । डाट । फटकार । ३ हाथी को वश मे करने या चलाने के लिए उच्चा रण किया जाने वाला शब्द । धत्त धत्त ।

धत्त-धत्त-*(अ य०)* हाथी को बिठाने, चलाने या वश मे करने का शब्द ।

धत्ती-*(वि०)* दुराग्रही ।

धत्तो-*(न०)* १ झूठा आश्वासन । धत्ता । जुल । झांसा । २ धोखा ।

धधक-*(ना०)* १ अग्नि । २ ज्वाला । ३ अग्नि की उग्रज्वाला की भडकन । अग्नि का सहसा भभक उठना । ४ उग्र क्रोध । क्रोधाग्नि । ५ दुर्गंध । बदबू ।

धधकणो-*(क्रि०)* १ अग्नि की ज्वाला उठना । २ क्रोध करना । ३ बदबू देना ।

धध्धो-*(न०)* ध अक्षर ।

धन-*(न०)* १ द्रव्य । माल । २ संपत्ति । जायदाद । ३ मूलपूंजी । ४ गाय भैंस आदि । ५ गायो का टोला । ६ धन्य । ७ गणित म जोड का (+) चिह्न । प्लस ।

धनक-*(न०)* १ स्त्रियो का एक रंगीन ओढ़ना । २ धनुष ।

धनगैलो-*(वि०)* अपने धन का अभिमानी । धनमदान्ध । धनांद ।

धनतेरस-*(ना०)* १ कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी । २ दीपावली से संबंधित कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी का उत्सव या त्योहार । ३ धन की पूजा का दिन ।

धनधान-*(न०)* १ धन और धान्य । २ समृद्धि ।

धनधाम-*(न०)* रुपया पैसा और घरबार । समृद्धि । धन और मकान ।

धनभिळणो-*(मुहा०)* गाय, भैंस आदि का गर्भ धारण करना ।

धनराज-*(न०)* कुबेर ।

धनरेखा-*(ना०)* धन बताने वाली हस्तरेखा ।

धनवत-*(वि०)* धनवान । धनी । मालदार ।

धनवतरी-*(न०)* देवताओ के वैद्य । धनवन्तरी ।

धनवान-*(वि०)* धनवत । धनी । अमीर । धनाढ्य ।

धनहीन-*(वि०)* निर्धन । गरीब ।

धनक-*(न०)* धनुष ।

धनजय-*(न०)* पांडु पुत्र अर्जुन ।

धनतर-*(न०)* धन्वन्तरि । *(वि०)* १ सत्यवक्ता । प्रामाणिक । २ बहुत बडा जानकार । ३ बडा धनवान । श्रीमंत ।

धनद-*(न०)* कुबेर ।

धनाढ्य-*(वि०)* धनी । धनवान । मालदार ।

धनावशी-*(न०)* रामानदी साधुओ का एक भेद, जो धना भक्त की शिष्य परम्परा मे कहा जाता है ।

धनासरी-*(ना०)* एक रागिनी ।

धनिक-*(वि०)* १ ऋणदाता । २ धनी । अमीर । धनवान ।

धनिक नाम-*(अव्य०)* ऋणी की ओर से ऋणदाता को लिखकर दिये जाने वाले ऋण पत्र (दस्तावेज, खत) मे ऋणदाता का परिचायक संकेत जो उसके नाम के पहले उसकी हैसियत के रूप म लिखा हुआ रहता है । ऋणपत्र म ऋणदाता (बोहरे) के नाम का परिचय कराने वाला एक पारिभाषिक पद । जसे-धनिक नाम तिलोकचद फूलचन्दाणी वास जोधपुर आग आसामी (ऋणी) जाट किरतो वीरमाणी रहवासी गाम बासणी रो

तिरण पासे गिरता रु० १००) भ्रखरै रुपिया सौ पूरा लेहणा । रुपिया किरता री छोकरी धनकी रै व्याव साह हाथ उधारा दीना छे । तिरण रा व्याज ।
धनी-*(वि०)* धनवान । मालदार ।
धनुख-दे० धनुष ।
धनुभ्रत-दे० धनुषधारी ।
धनुष-*(न०)* १ चाप । धनुष । २ इंद्र धनुष । ३ चार हाथ का एक माप ।
धनुषधारी-*(न०)* १ श्री रामचंद्र । २ भ्रजुन । *(वि०)* धनुष धारण करने वाला । बाणावळी । कमनत ।
धनुस-दे० धनुष ।
धनेस-*(न०)* कुबेर । धनेश ।
धनो भगत-*(न०)* जाट जाति का एक प्रसिद्ध भक्त । धना भक्त ।
धन्न दे० धन्य ।
धन्नासेठ-*(न०)* धनवान सेठ ।
धन्नो-*(न०)* जाट जाति का एक भक्त । धनो भगत । *(वि०)*धनवाला । धनवान ।
धन्य-*(भ्रव्य०)* धन्य । शाबास । धन । *(वि०)* १ कृतार्थ । २ प्रशसनीय । ३ भाग्यशाली । ४ पुण्यात्मा । पुण्यवान ।
धन्यवाद-*(न०)*शाबासी । साधुवाद । वाह वाह । शुक्रिया ।
धन्वदेश-*(न०) मारवाड । मरुदेश ।*
धनवंतरी-*(न०)* १ देवताओ के वैद्य । २ भ्राय चिकित्सा शास्त्र के तज्ञ एव प्रणेता ।
धन्वी-*(न०)* धनु धर ।
धपटणो-*(क्रि०)*१ खूब खाना या खिलाना । २ भ्रघा जाना । ३ दाडना । भागना । ४ खोसना । लूटना । ५ मारना । पीटना ।
पटमो-*(वि०)* १ भ्रत्यधिक । खूब । २ पूरा । धपाऊ । ४ भरपेट । धपाऊ । धापमो ।
धपळको-*(न०)* भ्रग्नि ज्वाला । भ्राग की लपट ।
धपाऊ-*(वि०)* १ भ्रत्यधिक । खूब । काम व्यवसाय भ्रादि । २ भरपेट । धापमो । ३ सतोष कारक ।
धपाणो-*(क्रि०)* १ पेटभर खिलाना । भ्रघाना । तृप्त करना । २ हैरान करना । परेशान करना । ३ सतुष्ट करना । ४ खूब देना ।
धपावणो-दे० धपाणो ।
धफणो-*(क्रि०)* हांफना ।
धबकणो-*(क्रि०)*१ धडकना । २ धब धब शब्द होना ।
धबकारो-*(न०)*धडकन । धडका । धडको ।
धबडको-*(न०)* धब धब का शब्द ।
धबसो-*(न०)* १ दोनो हथेलियों को मिला कर बनाई हुई भ्रजलि । धोबो । *दे०* धोबा । २ धबसो म समा जाये उतना पदार्थ । ३ भ्रजली ।
धबाक-*(ना०)* कुदान । छलाग । फलांग ।
धबाको-*(न०)* १ कूदने का शब्द । २ कुदान । छलाग । फलांग ।
धबोडणो-*(क्रि०)* १ प्रहार करना । २ मारना । पीटना । ठोकणो ।
धबोधब-*(भ्रव्य०)* १ ऊपरा ऊपरी । २ *झटपट । शीघ्रता से ।*
धब्बो-*(न०)* १ दाग । धब्बा । दागो । २ कलक । लाछन ।
धमक-*(ना०)* १ पाँवों की भ्राहट । २ भारी वस्तु के गिरने की भ्रावाज । ३ तोप बदूक की भ्रावाज । ४ वेग । जोश ।
धमकणो-*(क्रि०)* १ *भ्रचानक भ्रा जाना ।* वेग से भ्रा पहुँचना । २ धम धम शब्द होना । ३ ढोल भ्रादि का बजना ।
धमकाणो-दे० धमकावणो ।
धमको-दे० धमाको ।

धमकावणो-*(क्रि०)*१ धमकाना। डराना। २ डांटना। ३ उपालभ देना।
धमकी-*(ना०)*धुड़की। धमकाने की क्रिया। डांट। फटकार।
धमगजर-दे० धमजगर।
धमगज्र-दे० धमजगर।
धमचक-*(न०)* १ ऊधम। शरारत। २ उपद्रव। ३ युद्ध। लडाई।
धमचाळ-*(ना०)* १ युद्ध। २ लडाई। धमचाळ।
धमजगर-*(न०)*१ युद्ध। लडाई। २ शोर-गुल। ३ उपद्रव। ४ ऊपरा ऊपरी तापा के छूटने का शब्द। *(वि०)* धुए से भरा। धुआंधार।
धमजर-दे० धमजगर।
धमण-*(ना०)* १ लुहार की आरण (भट्टी) को फूकने का बकरी के चमडे का बना एक उपकरण धमनी। धौंकनी। भाथी। २ अग्नि। ३ ज्वाला। ४ जलन।
धमणि-*(ना०)* नाडी। नब्ज। नाड।
धमणी-*(ना०)* आग म फूक मारने की नली। भूगळी।
धमणो-*(क्रि०)* १ धौंकनी चलाना। धमना। धौंकना। २ आग को फूकना। ३ मारना। पीटना। ठोकणो।
धमधमो-दे० दमदमो।
धमन-दे० धमण स० २ ३, ४
धमरोळ-*(ना०)* १ अधिकता। बहुतायत। २ ऊधम। उपद्रव। ३ मारा मारी। ४ सहार। नाश। ५ खेलकूद।
धमरोळणो-*(क्रि०)* १ हिलाना। २ प्रहार करना। ३ नाश करना। ४ मारना पीटना।
धमळ-दे० धवळ।
धमस-*(ना०)* १ धम धम की ध्वनि। २ पदाघात। ३ मले या उत्सव की भीड भाड। ४ बहुत भीड। भारी भाड। ५ ऊधम। शोरगुल।
धमको-*(न०)* १ किसी वस्तु के गिरने का शब्द। धमाका। २ भाले क प्रहार का शब्द।
धमगळ-दे० दमगळ।
धमाको-*(न०)* १ एक प्रकार की छोटी बदूक। २ बदूक तोप आदि के दगने का शब्द। ३ किसी भारी वस्तु के गिरने की आवाज।
धमागळ-*(न०)* १ युद्ध। २ उपद्रव।
धमाधम-*(न०)* १ धम धम शब्द। २ ढोल आदि बजने का शब्द। ३ ऊधम। उत्पात।
धमाळ-*(ना०)*१ होली पर गाई जाने वाली एक राग। धमार। २ डिंगल का एक छद। ३ उत्पात। शैतानी। ४ उछल कूद।
धमासो-*(न०)* एक घास।
धमीड-*(न०)* किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २ मार। पिटाई। ३ प्रहार।
धमीडणो-*(क्रि०)* १ किसी भारी वस्तु को गिराना। २ मारना। पीटना। ३ प्रहार करना।
धमीडा लेणो-*(मुहा०)*१ छाती कूटना। २ दुखी होना। ३ पछतावा करना।
धमीडो-*(न०)* १ धमाका। दे० धमीड।
धमेडो-दे० धमीडो।
धमोडणो-दे० धमीडणो।
धमोडो-*(न०)* १ भाले के प्रहार का शब्द। २ धमाका। धमीडा।
धमोळी-*(ना०)* १ सावन भादो की तीज तिथियों के अवसर पर स्त्रियो के द्वारा किये जाने वाले उपवास के निमित्त दूज की पिछली रात को स्नान पूजा करके भोजन करने की प्रथा। २ धमोळी का विशिष्ट भोजन। ३ धमोळी के लिये सबंधियों द्वारा भेजी जाने वाली मिष्ठान

की सौगात । ४ स्त्रियों द्वारा धमोळी भोजन करने की क्रिया ।

धर-(ना०) १ पृथ्वी । धरा । २ संसार । ३ पर्वत । (वि०) १ धारण करने वाला । २ रक्षक । (प्रत्य०) 'धारक' अर्थ को व्यक्त करने वाला एक प्रत्यय । समासान्त शब्द । यथा—गजधर । धरणीधर आदि ।

धर-कखन-(न०) कट ।

धरकार-(न०) धिक्कार ।

धरकोट-(न०) १ जमीन पर बना हुआ कोट या किला । २ लकड़ी, कंटक, वृक्ष आदि से बनाया हुआ बाड़ा । अहाता ।

धरण-(ना०) १ धरणि । पृथ्वी । २ नाभि । टुंडी । ३ नाभि की नस ।

धरणई-(न०) धरणीपति ।

धरणियो-(वि०) धरने वाला । रखने वाला । धारण करने वाला ।

धरणी-(ना०)१ धरती । जमीन । २ संसार । भूमण्डल ।

धरणीधर-(न०) १ शेषनाग । २ पर्वत । ३ विष्णु । ४ कच्छप । ५ मारवाड़ की सीमा पर उत्तर गुजरात के ढेमा गाँव में आया हुआ एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ स्थान । (इसका प्राचीन नाम वाराहपुरी भी कहा जाता है । पैदल द्वारिका की यात्रा करने वाले उत्तर भारत के यात्रियों को धरणीधर का यात्रा भी करना जरूरी समझा जाता था) ।

धरणो-(क्रि०) १ रखना । २ पकड़ना । ३ संग्रह करना । ४ छोड़ना । ५ निश्चय करना । मन में विचार करना । ६ स्थिर करना । (न०) १ किसी के द्वारा माँग पूरी न होने पर उसके यहाँ अड़ कर बैठना । लाँगो । २ अनशन ।

धरती-(ना०) १ धरणी । जमीन । २ संसार । ३ राज्य । ४ देश ।

धरत्री-(ना०) धरित्री । पृथ्वी ।

धरथंभ-(न०) १ वीर । २ राजा ।

धरदीवो-(न०) देश का दीपक । सुकृतिजन ।

धरधी-(ना०) सीता । जानकी । धरसुता ।

धरधूधळ-(न०) रेगिस्तान । थळ ।

धरनी-दे० धरणी ।

धरपत-(न०) १ सतोष । तृप्ति । २ आरम्भ । शुरू । ३ धरापति । राजा ।

धरपति-(न०) राजा । धरापति ।

धरपाड-(वि०) १ दूसर की जमीन को खोसने वाला । दूसरों की भूमि या राज्य को छीनने वाला । २ दूसरा की धरती में लूट-खसोट करने वाला । आततायी ।

धरपुड-(न०) पृथ्वीतल ।

धरबण-(न०) १ मिट्टी की छत । छत । डागळो । २ ढेर । ३ पिटाई ।

धरबणो-(क्रि०) १ धरबण बनाना । २ ठोकना । पीटना । ३ पटकना । ४ ढेर लगाना ।

धरम-दे० धर्म ।

धरम करम-दे० धर्म कर्म ।

धरमकाम-दे० धर्म काम ।

धरम करणो-(मुहा०) १ पुण्य का काम करना । २ दान देना ।

धरमखाते-(अव्य०) पुण्यार्थ ।

धर मजलां धर कूचां-(अव्य०) राजस्थानी कहानियों में यात्रा (प्रायः सामूहिक कूच) के प्रसंग में बातपोश के द्वारा कहा जाने वाला एक सपुट (कथन) । पड़ाव दर-पड़ाव ।

धरमजुध-(न०) कपट रहित और नियम पूर्वक किया जाने वाला युद्ध । वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार के नियम का उल्लंघन नहीं हो ।

धरमधक्को-(न०) १ धर्म की सौगंद का विश्वास दिला कर नट जाना। झांसा। छल। धोखा। धर्मधक्का। २ अपना बचाव करने के लिये कही गई झूठी बात ३ मिस। बहाना। ४ व्यर्थ का फेरा। धर्मधक्का। ५ धर्म के कारण होने वाला कष्ट।

धरमधज-(न०) १ धर्मध्वज। पाखंडी। २ धर्माडंबर।

धरमधरा-(ना०) भारतवर्ष। धर्मधरा।

धरमधुज-दे० धरमधज।

धरमधुरधर-(वि०) १ धर्म की धुरा को धारण करने वाला। २ सबसे बड़ा धर्मज्ञ।

धरमपुरी-(न०) वह स्थान जहाँ गरीबों को खाना दिया जाता है।

धरमबहन-(ना०) वह स्त्री जिसके हाथ में धर्म की साक्षी से धर्म सूत्र बाँध कर बहिन का संबंध स्थापित किया गया हो।

धरमभाई-(न०) वह व्यक्ति जिसके हाथ में धर्म का साक्षी से धर्म सूत्र बाँध कर भाई का संबंध स्थापित किया गया हो।

धरमभिस्ट-दे० धर्मभ्रष्ट।

धरमराज-दे० धर्मराज।

धरमलाभ-(अव्य०) वंदना करने पर जैन साधु द्वारा दिया जाने वाला (धर्म का लाभ हो इस अर्थ को सूचित करने वाला) आशीर्वाद।

धरम सरूपी-(अव्य०) १ धर्म से। २ धर्म के अनुसार। ३ धर्म की सौगंध से। धर्मस्वरूप मानकर।

धरमसाला-(ना०) यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मार्थ बनवाया हुआ मकान। धर्मशाला। सराय।

धरमंडण-(न०) १ वर्षा। २ बादल। ३ इंद्र। ४ राजा।

धरमातमा-(वि०) धर्मनिष्ठ। धर्मात्मा।

धरमादा खातो-(न०) कारोबार में पुण्यार्थ निकाली जाने वाली रकमों का खाता।

धरमादेखाते-(अव्य०) पुण्यार्थ।

धरमादो-(न०) धर्मार्थ निकाला हुआ धन। दान।

धरमाधरमी-(अव्य०) १ धर्म की सौगंध से। २ धर्म अधर्म का विचार करके।

धरमारथ-(न०) १ धर्म और अर्थ। २ धर्म और परोपकार का काम। धर्मार्थ। (अव्य०) धर्म और परोपकार के लिये।

धरमाथ-दे० धरमारथ।

धरमी-(वि०) १ धर्मात्मा। धर्मी। धर्मिष्ठ। २ अमुक धर्म या गुण वाला। ३ धर्म करने वाला। ४ धर्म का अनुयायी। ५ कर्तव्य पालक। (न०) धार्मिक व्यक्ति।

धरमूळ-(अव्य०) आदि से। प्रारंभ से। (न०) प्रारंभ। शुरू। जड़मूल।

धरमेला-(न०)भाई भाई बाप बेटी या बहन भाई का वह संबंध जो (रक्त-वंश का न होकर) धर्म की साक्षी द्वारा स्थापित किया गया हो। धर्म संबंध।

धरवजर-(न०) इंद्र। वज्रधर।

धरवै-(न०) धरापति। पृथ्वीपति। राजा।

धरसण-(वि०) व्यभिचारिणी। कुलटा।

धरसडो-(न०) १ बिना जुती हुई बैल गाडी के आगे के भाग को जमीन से ऊंचा रखने के लिये उस (आगे के भाग) में नीचे की ओर लगा हुआ डंडा। २ बैलगाडी के आगे का लंबा लकडा। चोंच। ऊटडो।

धर-सधर-(न०) पर्वत।

धरसुता-(ना०) सीता। जानकी।

धरसूडो-दे० धरसडो।

धरहरणो-(क्रि०) १ धड़ धड़ शब्द होना। धड़धड़ाना। २ जोर की वर्षा होना। ३ गर्जन होना। गरजना।
धरहू डो-दे० धरसड़ो।
धरा-(ना०) १ पृथ्वी। २ देश। ३ राज्य। ४ ससार।
धराऊ-(न०) उत्तर दिशा।
धराणो-(क्रि०) १ रखवाना। २ थमाना। (न०) १ लेनदार का तकाजा या सख्ती। तलब। २ कर्ज। ऋण। देनदारी।
धरातळ-(न०) पृथ्वीतल। सपाटी।
धराधर-(न०) १ शेषनाग। २ पर्वत। ३ कच्छप। ४ विष्णु।
धराधव-(न०) राजा।
धराधिनाथ-(न०) राजा।
धराधिप-(न०) राजा।
धराधीश-(न०) राजा।
धरापूर-(वि०) शुरू से आखिर तक। सपूर्ण। पूरा।
धराभुज-(न०) पृथ्वी को भोगने वाला। राजा।
धराळ-(न०) जुए की ओर बैलगाडी म अधिक भार के कारण होने वाला झुकाव। बैलगाडी म आगे की ओर होने वाला झुकाव। 'उलाळ' का उलटा। २ पृथ्वी तल। ३ प्राणी। जीवधारी।
धराव-(न०) १ गाय, भैंस आदि पशु। २ पशुधन।
धरावणो-(क्रि०) दे० धराणो।
धराविधू सण-(ना०) तलवार। (वि०) १ ससार का नाश करने वाला। २ देश द्रोही। ३ लुटेरा।
धरावै-(न०) धरापति। राजा।
धराशायी-(वि०) १ धरती पर सोया या गिरा हुआ। २ युद्ध में मारा गया।
धरू-(न०) ध्रुव।
धरू डो-दे० धरसू डो।
धरेस-(न०) राजा। धरेश।
धरो-(न०) १ पेट भर खाने का भाव। अघाव। तृप्ति। २ सतोष। सब्र।
धरोड़-(ना०) धरोहर। थाती।
धर्ता-(वि०) धारण करने वाला।
धर्म-(न०) १ वेद विहित कर्म। २ लौकिक, सामाजिक और धार्मिक कर्तव्य। ३ गुण, लक्षण, कर्तव्य नीति, सदाचार और जन्म मरण एव ईश्वरादि गूढ़ तत्वों की विचारधाराओं का परम्परागत सम्प्रदाय। ४ दान-पुण्य। ५ कर्तव्य। ६ पथ। मत। मजहब। ७ नीति। ८ ऋषियों अथवा शास्त्र ग्रंथो द्वारा प्रतिपादित ईश्वर, जीव जीवन लोक परलोक इत्यादि से सबद्ध दर्शन एव आचार सहिता।
धर्मकथा-(ना०) धर्म का बोध कराने वाली कथा। धार्मिक कथा।
धर्म-कर्म-(न०) १ वह कर्म जिसका करना धर्मग्रंथो म आवश्यक कहा गया हो। २ शास्त्रो द्वारा प्रतिपादित कर्म विधान। ३ धर्म और कर्म। ४ धार्मिक कृत्य। ५ धर्मपूर्वक की गई प्रतिज्ञा। ६ धर्मयुक्त काम।
धर्म काम-(न०) पुण्य काम। भलाई का काम।
धर्म चर्चा-(ना०) धर्म सबधी बातचीत। धार्मिक चर्चा।
धर्मद्वार-(न०) १ स्वर्ग। धर्मद्वार। २ सत्सग। ३ शरण। आश्रम।
धर्मध्वज-दे० धरमधुज।
धर्मपत्नी-(ना०) शास्त्रविधि से बनी हुई पत्नी। विवाहित पत्नी।
धर्म पिता-(न०) पालक पिता।
धर्मपुत्र-(न०) १ युधिष्ठिर। २ गोद लिया हुआ लड़का।
धर्म भाई-(न०) धर्म की साक्षी से माना हुआ भाई।

धमभ्रष्ट–*(वि०)* धम से पतित ।

धमयुद्ध–दे० धरमजुध ।

धमराज–*(न०)* १ यमराज । २ युधिष्ठिर । ३ वह राज्य जिसमे सवत्र धम का पालन होता हो । ४ प्रामाणिक राज्य । धमराज्य ।

धमलाभ–*(न०)* श्रावक के वदना करने पर जन साधु की ओर से दिया जाने वाला आशीवाद ।

धमवीर–*(न०)* धम के लिये प्राण न्यो छावर करने वाला वीर पुरुष । शहीद ।

धमशाला–दे० धरममाळा ।

धमशास्त्र–*(न०)* १ धम का ज्ञान कराने वाला शास्त्र । २ धम विशेष के प्रमाण ग्रथ । ३ वह ग्रथ जिसमे समाज के शासन के लिये नीति तथा सदाचार सबधी नियम लिखे हुये हो । ४ किसी धम विशेष की निजी विधि । ५ धम या सप्रदाय के सिद्धान्तो क्रिया काण्डो इत्यादि के ग्रथ । ६ वेद पुराण इत्यादि ।

धमसकट–*(न०)* वह कठिन प्रसग जिसमे धम अधम की सूझ न पड़े । २ ऐसी स्थिति जिसमे दोनो पक्ष सकट का अनुभव करें ।

धर्माचाय–*(न०)* १ धमगुरु । २ सप्रदाय का आचाय ।

धर्मात्मा–*(वि०)* धमनिष्ठ । धर्मानुसार आचरण करने वाला । २ पुण्यवान ।

धर्मादो–*(न०)* दान । धरमादो ।

धर्मानुकूल–*(वि०)* धम सम्मत ।

धर्माथ–दे० धरमारथ ।

धर्मिष्ठ–*(वि०)* धर्मानुसार आचरण करने वाला ।

धर्मी–*(वि०)* धर्मिष्ठ । विशिष्ट गुण धम से युक्त ।

धरषां–*(अव्य०)* घरने से । रखने से । रखने पर ।

धव–*(न०)* १ पति । स्वामी । २ धव वृक्ष । धावडो ।

धवडाणो–दे० धवडावणो ।

धवडावणो–*(क्रि०)* स्तनपान कराना ।

धवटी–*(ना०)* १ पत्नी । २ वीरागना ।

धवराडणो–दे० धवाडणो ।

धवळ–*(न०)* १ बैळ । २ हस । ३ घर । महल । ४ एक डिंगल छद । ५ स्वागत । सम्मान । ६ मगलगीत । ७ एक रागिनी । *(वि०)* १ धवल । श्वेत । धोळो । २ उज्वल । ऊजळो । । ३ मुदर । ४ वीर ।

धवळगिर–*(वि०)* १ हिमालय पवत । २ कैलाश पवत । ३ मारवाड मे जमवनपुरा के पहाड का एक नाम । सूदो भाखर ।

धवळ मगळ–*(न०)* १ मागलिक अवसरो से सबधित गीत । मागलिक गीत । २ उत्सव । समारोह । ३ देवालयो मे की जाने वाली प्रात काल की आरती । मगल आरती । ४ मगल आरती के समय गाये जाने वाले पद या भजन ।

धवळहर–*(न०)* १ मकान । महल । प्रासाद । धवलगृह । २ ऊचा और श्वेत महल । धौळहर ।

धवळ ग–*(न०)* १ हस । २ भवन । महल । प्रासाद ।

धवळा–*(ना०)* १ पावती । २ देवी । महामाया । शक्ति । ३ गाय । ४ श्वेत गाय । धोळी ।

धवळागिर–दे० धवळगिर ।

धवळो–*(न०)* बल । बळद । *(वि०)* धौला । सफेद । धोळो ।

धवा–*(ना०)* देवी । शक्ति ।

धवाडणो–*(क्रि०)* स्तनपान कराना ।

धवाणो–दे० धवाडणो ।

धवावणो–दे० धवाडणो ।

धसकणो–*(क्रि०)* १ धसना । २ दहलना ।

धसणो–*(क्रि०)* १ भीड मे घुसना । बलात्

घुसना। २ पैठना। प्रवेश करना। ३ गड़ना। धँसना। भीतर घुसना।

धसमसणो-(क्रि०) १ ऊँचा नीचा होना। २ डोलना।

धसळ-(ना०) १ युद्ध। २ सेना के चलने की आहट। ३ आक्रमण। ४ रोब। धाक। आतंक। ५ मस्ती। ६ डाँट। धमकी। ७ फूहड़पना। भद्दापना। ८ धक्का।

धसळक-(वि०) १ फूहड़पन। बेशऊरी। २ फूहड़। बेढंगी (चाल)। ३ धीमी। (चाल। गति) ४ फिसलने की क्रिया। ५ आक्रमण।

धसारो-(न०) १ भीड़भाड़। २ धक्का। हमला। भीड़ का धक्का। ३ हल्ला। शोर। ४ अधिकता।

धक-(न०) १ क्रोध। २ पराक्रम। ३ इच्छा। ४ निश्चय। ५ धक्का। टक्कर। ६ भय। डर।

धख-(न०)१ ईर्ष्या। २ द्वेष। ३ शत्रुता। ४ क्रोध।

धतरजी-(न०)१ बहुत बड़ा विद्वान पुरुष। २ जबरदस्त व्यक्ति। (व्यंग्य में) ३ धन्वंतरि।

धंध-(न०) १ द्वन्द्व। उपद्रव। २ बिगाड़। नाश। ३ धुंधलापन। ४ अंधकार। ५ कुहरा।

धधारथी-(वि०) धंधे में लगा रहने वाला। धंधे वाला।

धधारथू-दे० धधारथी।

धधाळो-(वि०) धंधे वाला।

धधूणणो-(क्रि०) हिलाना। डुलाना। कँपाना। हिलाणो। धधोळणो।

धधो-(न०) १ उद्यम। रोजगार। धंधा। काम। २ व्यापार। ३ प्रपंच।

धधो-रोजगार-(न०) १ धंधा और रोजगार। २ कामकाज।

धधोळणो-दे० धधूणणो।

धस-(न०) १ नाश। ध्वंस। २ युद्ध। ३ सेना।

धसणो-(क्रि०)१ ध्वंस होना। नष्ट होना। २ ध्वंस करना। नाश करना। ३ गड़ना। भीतर घुसना। चुभना। ४ प्रवेश करना। पैठना।

धम्थळ-(न०)१ ध्वंस स्थल। खंडहर। २ युद्धभूमि। ३ छावनी।

धँसाणो-(क्रि०) १ ध्वंस करना। नष्ट करना। २ प्रवेश करना। पैठाना। ३ गड़ाना। चुभाना।

धँसावणो-दे० धँसाणो।

धा-(ना०) १ माता। जननी। २ बच्चे को दूध पिलाने और उसकी देख रेख करने वाली स्त्री। धाय। धात्री। ३ सरस्वती। ४ पार्वती। ५ पृथ्वी। (अव्य०) ओर। तरफ। (प्रत्य०) प्रकार। तरह।

धाउकार-(न०) १ मरण। मृत्यु। २ मृत्यु कष्ट। ३ मृत्युसदृश। पटकी। ४ ध्वंस। नाश।

धाउकार पड़ियो-(मुहा०) मृत्यु हो जाय या मृत्यु होगई इस आशय की अशुभ वाणी या गाली।

धाक-(ना०) १ डर। भय। २ अंकुश। ३ आतंक। रोब। ४ प्रभाव।

धाकल-दे० दाकल।

धाकलणो-(क्रि०) १ डराना। धमकाना। डाँटना। २ धाकल करके ऊँट, बैल आदि को चलाना। हाँकना।

धाका-धीको-(न०) ज्यों-त्यों करके किया जाने वाला गुजारा।

धाको-(न०)१ धाक। डर। २ आक्रमण। ३ गुजारा। निर्वाह।

धागड़ियो-(न०) १ लुटेरा। २ ठग। धूर्त। दे० दागड़ियो स० १

धागड़ो-(न०) १ समूह। झुंड। २ लुटेरों का समूह।

धागो-(न०) १ जनेऊ। यज्ञोपवीत। २ डोरा। डोरो। तागा। ततु। ३ क्रम। सिलसिला।

धाट-(न०) मारवाड के मारवानी प्रदेश का एक पश्चिमी भाग जो अब पश्चिमी पाकिस्तान के सिंध प्रान्त का एक भाग बना हुआ है। राजस्थान के बाड़मेर जिले की पश्चिमी सीमा पार का थर पारकर जिला जो पाकिस्तान में शामिल कर लिया गया है। थर पारकर। सोढाण। ढाट।

धाटी-(वि०) धाट (थर पारकर) प्रदेश का निवासी। धाट देशवासी। २ धाट सबधी। धाट देश का। ढाटी।

धाटेची-(वि०) १ धाट देश का रहने वाला। २ धाट देश सबधी। धाट देश का। धाटी। ढाटी।

धाटो-(न०) सिर पर शस्त्र की चोट से बचने के लिये बाधने का मोटा साफा। दे० ढाटो। २ साफा। फेंटो।

धाड-(ना०) १ पुकार। २ क्रन्दन। ३ लूटखसोट। डाका। ४ विपत्ति। सकट। ५ भय। डर। ६ लुटेरों का समूह। ७ डकैत।

धाडपाड-दे० धाडफाड।

धाडपाडू-(न०) लुटेरा। डाकू। धाडेती।

धाडफाड-(वि०) १ निडर। २ साहसी। ३ धाड पाडुओं को भगाने अथवा मारने वाला।

धाडवी-(न०) लुटेरा। डाकू। धाडायत। धाडेती।

धाडायत-(न०) लुटेरा। धाडेती।

धाडायती-दे० धाडायत।

धाडी-दे० धाडेती।

धाडेती-(न०) १ लुटेरा। २ चोर बाजारी करने वाला। धाडायती।

धाडो-(न०) १ लूट। डाका। २ आक्रमण। हमला। ३ बेची जाने वाली वस्तु को गाहक को तोल में कम देना। बाजार भाव से अधिक मूल्य लेना अथवा अच्छी वस्तु की बजाय खराब वस्तु देना। ठगी। ठगाई। लुटेरापन। ५ चोर बाजारी। लूट।

धाणको-(न०) १ धाणका जाति का व्यक्ति। २ एक जगली जाति का व्यक्ति। ३ महतर। ४ एक गाली।

धाणख-दे० धानख।

धाणा-(न०) धनिया। धाना।

धाणी-(ना०) भूजा हुआ गेंहू आदि धान्य। खील। लाजा। फूली।

धाणी करणी-(मुहा०) १ भूनना। २ नाश करना।

धाणौ-दे० धारणो।

धात-(ना०) १ वीर्य। धातु। दे० धातु स० (२ ३) २ पीटने से टुकड़े नहीं हो जाने वाले सोना चादी आदि खनिज पदार्थ। दे० धातु।

धाता-(न०) विधाता। ब्रह्मा। सृजनहार।

धातु-(ना०) १ क्रिया का मूल रूप (व्याकरण)। २ विभिन्न प्रकार के वे खनिज द्रव्य जो अपारदर्शक होते हैं शोधन करने पर जिनमें चमक प्रकट होती है और जिनको ताप देकर और पीटकर गहने बरतन और शस्त्र आदि बनाये जाते हैं। (सोना चादी ताबा लोहा रांगा सीसा और जस्ता—ये सात मुख्य धातुएँ हैं) खनिज द्रव्य। ३ शरीर को बनाये रखने वाले रस रक्त मास मेद मज्जा अस्थि और शुक्र—ये सात द्रव्य अथवा इनमें से प्रत्येक। ४ शुक्र। वीर्य।

धाधड़ो-(न०) एक प्रकार की खड़िया। खड़ी। धड़धड़ो। २ कलह। झगड़ा।

धा-धा-(अनु०) १ ढोल नगाड़े आदि की ध्वनि । २ मार पीट ।
धान-(न०) धान्य । अनाज ।
धानक-(न०) धनुष ।
धानकधारी-(न०) धनुषधारी ।
धानकी-(न०) धनुषधारी ।
धानख-(न०) धनुष ।
धानखी-दे० धानकी ।
धानखी फूल-(न०) कामदेव ।
धानतर-दे० धनतर ।
धाप-(ना०) तृप्ति । सतोष ।
धापड-दे० दापड ।
धापणो-(क्रि०) १ भोजन से पेट भर जाना । अघाना । २ मन भर जाना । तृप्त होना ।
धापतो-(वि०) १ सुखी । २ सम्पन्न । ३ तृप्त । ४ अभिमानी ।
धापमो-(वि०) १ जितने से पेट भर जाय । जितना खाया जा सके । २ जितने मे सतोष हो जाय । ३ चाहिये जितना । ४ जितना किया जा सके ।
धापियोडो-(वि०) १ अघाया हुआ । धापा हुआ । २ सम्पन्न ।
धापा-(न०) १ तृप्ति । तुष्टि । २ रिश्वत । घूस ।
धावळियाळ-(ना०) करनी देवी ।
धावळियो-(ना०) १ स्त्रियो का ऊनी ओढना । २ ऊनी घाघरा ।
धावळो-(न०) १ ऊनी ओल्ना व घाघरा । २ मोटे वस्त्र का घाघरा । ३ कबल । (ना० धावळी) ।
धा भाई-(न०) दूध भाई ।
धाम-(न०) १ तीर्थ स्थान । २ देवालय । देवमदिर । ३ चारो दिशाओं में स्थापित हिन्दू धर्म के चार बडे तीर्थस्थान । यथा—१ उत्तर मे बद्रीकेदार । २ पूर्व म जगदीश । ३ दक्षिण में रामेश्वर और ४ पश्चिम मे द्वारिका ।
धामण-(न०) १ एक प्रकार की घास । २ एक जाति का सर्प । ३ एक वृक्ष ।
धामधूम (न०) १ उत्सव । समारोह । २ आनद उत्सव की तैयारी । ३ उमग । उत्साह । ४ शोरगुल । हो हल्ला ।
धामा-दे० धामो स० २ ३
धामाजागर-दे० धमजागर ।
धामीणी-(ना०) १ गाय । २ कन्या दान के समय कन्या को दान मे दी हुई गाय । ३ प्रथम गौना के समय दहेज के साथ दी जाने वाली गाय ।
धामो-(न०) १ एक पात्र । २ किसी के मन के उपरान्त उसके यहाँ टिके रहना । ३ लबे समय तक पडाव डाले रहना ।
धाय-(ना०) १ माता । २ बच्चे को दूध पिलाने व उसकी देख भाल करने वाली स्त्री । ३ दफा । मरतबा । बार । (वि०) समान । बराबर । (अव्य०) दे० धायें ।
धायें-(अव्य०) ओर । दिशा । तरफ ।
धायो-(वि०) तृप्त ।
धायोडो-(वि०) १ स्तनपान किया हुआ । २ तृप्त । ३ मस्त ।
धार-(ना०) १ तलवार आदि शस्त्र का तीक्ष्ण किनारा । २ किसी तरल पदार्थ के बहने या गिरने का क्रम । ३ पानी की धारा । प्रवाह । ४ बाढ़ । ५ किनारा । छोर । ६ रेखा । ७ युद्ध । ८ तलवार । ९ प्रकार । भाँति ।
धारण-(ना०) १ तराजू (तराड़ू) के पलड़े म समान रखने या तौला जा सके उतना नाज गुड खांड आदि पदार्थ । २ पलड़े म नाज आदि भर कर तोलने की क्रिया । ३ किसी वस्तु का नाप या प्रमुख परिमाण (पसेरी, रतल आदि

को॰ तटतारा) म अनेक बार तोले जाने का क्रम। ४ तराजू का पलडा। ५ धारण करने का क्रिया। पकड। ग्रहण। ६ किसी वस्तु की राशि को तोलने की अनेक इकाइयो म से तकडी म एक बार तोलने का नम।

धारणा-(ना०) १ कल्पना। अनुमान। २ मनसूबा। ३ निश्चय। ४ स्मरण शक्ति। ५ स्मृति। ६ मन की एकाग्र वृत्ति। ७ निश्चित विचार। ८ विचार। ९ स्थिति।

धारणो-(क्रि०) १ मानना। समझना। २ धारण करना। ३ इच्छा करना। ४ निश्चय करना। ५ कल्पना करना। ६ अनुमान करना। ७ रखना। स्थिर करना। ठहरना। ८ सौंपना।

धारा-(ना०) १ युद्ध। २ तलवार। ३ खड्गधार। ४ सेना। ५ प्रवाह। धारा। ६ वर्षा। ७ रफा। धारा। नियम।

धारा करवत-(न०) काशी म करौत लेन का कठिन व्रत।

धाराकरोत-दे० धारा करवत।

धारागळ- वि०) बहुत बडा (महान)।

धारा तीरथ-दे० धारातीथ।

धारातीथ-(न०) १ युद्ध। सग्राम। २ युद्धभूमि। ३ देश और धर्म के लिये बलिदान होने की पुण्यभूमि। ४ युद्ध मृत्यु। वीर मृत्यु। वीरगति।

धाराधर-(न०) बादल। मेघ।

धाराधाम-(न०) १ युद्ध म प्राप्त वीर गति। २ धारा तीथ।

धाराधिनाथ-(न०) १ युद्ध विजेता। २ युद्ध विजेता। ३ राजा।

धारामोत-(ना०) द्वारका। द्वारामति।

धाराळ-(न०) १ तलवार। २ कटारी। ३ भाला। (वि०) वीर।

धाराळी-(ना०) १ तलवार। २ कटारी। ३ बरछी।

धाराहर-(न०) १ मेघ। २ वर्षा। ३ तलवार।

धारा-वाह-(न०) १ तलवारो के प्रहार। २ रणभूमि मे लगे शस्त्रो के प्रहार।

धारिया-दे० धारचा।

धारियो-(न०) एक शस्त्र।

धारियोडो-(वि०) १ विचारा हुआ। २ निश्चय किया हुआ।

धारी-(ना०) १ किनारी। २ रेखा। (प्रत्य०) धारण करने वाला अथ म प्रयुक्त होन वाला एक प्रत्यय जो शब्द के अत म लगता है। जैसे—भेखधारी।

धारीधर-(न०) पवत।

धारूजळ-(ना०) तलवार।

धारेचो-(न०) १ विधवा स्त्री का नियम पूवक किसी पुरुष को अपना पति मान कर उसके घर म रहने की स्थिति। २ पत्नी की भाति किसी अन्य पुरुष के घर मे रहने की क्रिया। ३ पति को छोडकर अन्य पुरुष के घर म पत्नी रूप से रहना।

धारो-(ना०) १ रिवाज। प्रथा। रीति। २ नियम। धारा।

धारोळो-(न०) १ जोर से वर्षा होने का झपाटा। वर्षा वेग। २ बादलो म से धुंध के रूप मे पृथ्वी को स्पर्श करती हुई दिखाई देने वाली वर्षा की धारा वली। धारावली।

धारचा-(अव्य०) धारण करने से। धारण करन पर।

धाव-(न०) १ विचार। २ निश्चय। ३ आक्रमण। हमला। ४ गति। चाल। दौड भाग। ५ पशु चौपाया।

धावड-(न०) १ आक्रमण। २ बाहर। पीछा। ३ स्तनपान करने की इच्छा। ४ स्तनपान कराने वाली (पत्नी) का

पति। धाय का पति। ५ स्तनपान कराने वाली धाय। ६ स्तनपान करने वाला बच्चा। *(वि०)* १ आक्रमण करने वाला। आक्रमणकारी। २ पीछा करने वाला। बाहर।

धावडधाय-*(ना०)* १ स्तनपान कराने वाली बडी धाय। २ बडी धाय।

धावडो-*(न०)* धव वृक्ष। *(वि०)* धव वृक्ष का। धव से संबंधित।

धावडो गूंद-*(न०)* धव वृक्ष का गोंद।

धावणियो-*(वि०)*१ स्तनपान करनेवाला। २ भागने वाला। ३ बाहर करने वाला। पीछा करने वाला। *(न०)* १ स्तनपान करने वाला बच्चा। २ दूत। धावक।

धावणो-*(क्रि०)* १ स्तनपान करना। २ दौडना। भागना। ३ बहना। ४ ध्यान करना।

धावना-*(ना०)* १ भक्ति। ध्यावना। २ सुमिरण। ध्यान।

धावो-*(न०)* आक्रमण। चढाई। हमला।

धासक-*(ना०)* डर। भय। दहशत।

धास्ती-*(ना०)* डर। दहशत। भय।

धाह-*(ना०)* चिल्ला कर रोना। धाड।

धाहड-*(न०)* १ पुकार। कूक। २ रोना। चिल्लाना।

धाहडी-*(ना०)* १ चिल्लाकर किया जाने वाला रुदन। क्रंदन। २ शीघ्रता (भागने की)।

धाहबू-*(वि०)* १ धावक। २ पीछा करने वाला।

धा-*(ना०)* १ तरह। प्रकार। २ दे० धास।

धाग-*(ना०)* नाज आदि से भरे थैलों का करीने से लगाया हुआ ढेर। राशि। करीने से रखी हुई भरे हुए थलों की राशि।

धांगड-*(वि०)* जंगली। अनाथ।

धांगडी-*(ना०)* १ बैलगाडी का एक उपकरण। २ किवाड की मजबूती के लिए उसके पीछे लगा रहने वाला डंडा।

धाधळ-*(ना०)* १ हडबडी। व्यग्रता। २ शोर। मनमानी। ४ रौला। बलवा। फसाद। ५ उत्पात। उपद्रव। ६ जबरदस्ती अपनी गलत बातें आगे रखना। ७ राठौडों की एक शाखा।

धांधळी-*दे०* धाधळ स १ से ६

धाधस्त-*(न०)* ध्वस्त।

धास-*(ना०)* १ आभूषण में लगी रहने वाली कील। २ कील। मेख। ३ खांसी। धांसी। ४ ध्वंश।

धांसणो-*(क्रि०)* खांसना।

धांसी-*(ना०)* सूखी खांसी।

धांसो *(न०)* ताला।

धाहू-*दे०* धास।

धिक-*(अ०य०)* धिक्कार सूचक उद्गार। धिग।

धिकणो-*दे०* धकणो।

धिकाणो-*(क्रि०)* १ निभाना। चलाना। २ निर्वाह करना।

धिक्कार-*(न०)* फटकार। लानत। तिरस्कार। धिक्कार।

धिक्कारणा-*(क्रि०)*फटकारना। धिक्कारना।

धिखणो-*(क्रि०)* १ कोप करना। २ युद्ध करना। ३ भिडना। ४ प्रज्वलित होना। जलना। धुखना।

धिग-*दे०* धिक।

धिन-*दे०* धन्य।

धिनवाद-*दे०* धन्यवाद।

धिनो-*दे०* धन्य।

धिनड-*दे०* धेनड।

धिया-*(ना०)* पुत्री। बेटी।

धियाग-*(ना०)* १ अग्नि। आग। २ ज्वाला। ३ क्रोधाग्नि। ४ आकाश।

धियारी-*(ना०)* पुत्री। बेटी।

धियो-*(न०)* पुत्र । बेटा ।
धिरकार-दे० धिक्कार ।
धिरगार-दे० धिक्कार ।
धिराज-*(न०)* अधिराज । राजा ।
धिरोज-*(न०)* १ सतोष । सब्र । २ धीरज ।
धिसणा-*(ना०)* बुद्धि ।
धी-*(ना०)* १ बेटी । पुत्री । २ बुद्धि । ३ दीपक । ४ मन ।
धीग्रड-*(ना०)* पुत्री । बेटी । डीकरी ।
धीक-*(ना०)* १ घूसा मारने की चोट । मुष्टि प्रहार । २ घूसा मारने की आवाज । ३ घूसा ।
धीकणो-*(क्रि०)* मारना । ठोकना ।
धीज-*(ना०)* १ विश्वास । २ प्रतिज्ञा । ३ सतोष । ४ धीरज । धैर्य । ५ सच्चे और झूठे की परीक्षा की एक प्राचीन न्याय विधि । ६ बहुत कडी परीक्षा । अग्नि, तप्त तेल आदि से अपराधियों की ली जाने वाली प्राचीन काल की परीक्षा-विधि ।
धीजणो-*(क्रि०)* १ धीरज होना । २ आश्वस्त होना । ३ भरोसा होना । ४ भरोसा करना । ५ भरोसा दिलाना । ६ विश्वास करना ।
धीजो-*(न०)* १ विश्वास । भरोसा । २ धीरज । धैर्य ।
धीट-*(वि०)* १ मूर्ख । २ ढीठ । धृष्ट । उद्दड । ३ लज्जा रहित । निलज्ज । ४ दोष प्रमाणित होने पर भी लज्जित नहीं होने वाला । ५ डींग हाँकने वाला । गप्पी । ६ वीर । ७ हठी । जिद्दी ।
धीटो-दे० धीट ।
धीठ-दे० धीट ।
धीठाई-*(ना०)* १ मूर्खता । २ धृष्टता । धीठता । निलज्जता । ४ जिद । हठ । ५ वीरता ।
धीठो-दे० धीट ।
धीण-*(ना०)* ऊन या जट का मोटा धागा ।
धीणू-दे० धीणो ।
धीणो-*(न०)* १ दुधारू गाय भैंस आदि का घर मे होना । घर मे गाय भैंस आदि दुधारू पशुओं के होने की स्थिति । २ किसी व्यक्ति के यहा वर्तमान मे दूध देने वाले गाय भैंस आदि की सख्या ।
धीणोधापो-*(न०)* १ दूध दही और घृत आदि के लिए गाय भैंस आदि का और अन्न का पूर्ण सग्रह । २ दुधारू गाय भैंस की अधिक सख्या मे अवस्थिति ।
धीप-*(न०)* दामाद । जमाई ।
धीपति-दे० धीप ।
धीब-*(ना०)* १ प्रहार । २ धीबन की ध्वनि ।
धीबणो-*(क्रि०)* १ मारना । पीटना । २ पटकना । ३ पछाडना । ४ प्रहार करना । ठोकणो ।
धीमर-*(न०)* धीवर । माछी ।
धीमत-*(वि०)* बुद्धिमान ।
धीमाई-*(ना०)* १ धीमापन । मदता । २ धैर्य । ३ गम्भीरता ।
धीमास-दे० धीमाई ।
धीमैं-*(अव्य०)* धीमाई से । धीरे से । आहिस्ता । धीरे ।
धीमो-*(वि०)* १ आलसी । २ शात प्रकृति का । ३ मद । शिथिल । ४ धीरे । धीमा । ५ धीरे चलने वाला । (ना० धीमी ।
धीय-*(ना०)* पुत्री । डीकरी ।
धीयड-*(ना०)* पुत्री । बेटी ।
धीयारी-दे० धियारी ।
धीयो-दे० धियो ।
धीर-*(वि०)* १ स्थिर चित्त । धैर्यवान । २ दृढ । ३ गभीर । ४ नम्र । ५

धीमा। (न०) १ संतोष। २ धैर्य। ३ सूर्य। ४ एक नायक। (साहित्य)

धीरजवान-(वि०) १ धीरज वाला। धैर्यवान्। २ संतोषवाला।

धीरट-(न०) हंस।

धीरणो-(क्रि०) १ उधार देना। कर्ज देना। २ कृषक को कृषि के निमित्त कर्ज देना। ३ विश्वास करना। भरोसा रखना। ४ आश्वासन देना।

धीरत-(न०) १ हंस। २ धीरज।

धीरता-(ना०) १ धैर्य। धीरज। २ संतोष।

धीरप-(न०) १ आश्वासन। २ विश्वास। भरोसा। ३ धैर्य। ४ चित्त की स्वस्थता। शांति। ५ गम्भीर।

धीरपरा-(क्रि०) १ धीरज बंधाना। २ संतुष्ट करना। ३ विश्वास दिलाना। ४ सांत्वना देना। (न०) धीरज।

धीरललित-(न०) हंसमुख रसिक एवं वीर नायक (साहित्य)।

धीराई-(ना०) १ धैर्य। धीरज। २ अव्यग्रता।

धीरे-(क्रि०वि०) १ मंद गति से। होळे। हवळे। २ धीमे स्वर से। ३ चुपके से।

धीरो-(वि०) १ वीर। धैर्यवाला। २ धीमा। मंद। ३ अव्यग्र।

धीरोदात्त-(न०) आत्मश्लाघा से रहित, क्षमावान वीर, विनम्र एवं दृढव्रत नायक (साहित्य)।

धीव-(ना०) पुत्री। बेटी। धी। डीकरी। दीकरी।

धीवड-दे० धीव।

धीवडी-दे० धीव।

धीवर-(न०) १ मल्लाह। केवट। २ मछलियाँ पकडने वाला। माछी।

धीस-(न०) १ अधीश। राजा। धीश। २ परमेश्वर। अधीश्वर। ३ मालिक। स्वामी। धणी।

धीह-(ना०) १ पुत्री। धी। २ नगाड़े का शब्द। ३ चिल्लाहट।

धींक-दे० धींक।

धींग-(वि०)१ वीर। बहादुर। जबरदस्त। २ हृष्ट पुष्ट। मोटा ताजा।

धींगड-दे० धींग।

धींगडमल-(न०) वीर पुरुष।

धींगलो-(न०)मेवाड और मारवाड में किसी समय प्रचलित तांबे का एक छोटा सिक्का।

धींगाई-(ना०) १ ऊधम। उत्पात। शरारत। २ ज्यादती। जबरदस्ती।

धींगा-गवर-(ना०) १ वैसाख वदी तीज को मनाया जाने वाला गणगौर का उत्सव। २ इस उत्सव पर प्रदर्शित की जाने वाली गौरी की मूर्ति।

धींगाण-(क्रि०वि०) बलात। जबरदस्ती।

धींगाणो-(न०)१ युद्ध। २ शोर। ऊधम।

धींगामस्ती-(ना०) १ ऊधम। लडाई। २ शरारत। बदमाशी। ३ धृष्टता।

धींगो-(वि०) १ जबरदस्त। धींग। २ मजबूत। दृढ। ३ उत्पाती।

धींगोळी-दे० तींगोळी।

धुक-(न०) १ अग्नि। २ जलन। ताप। ३ प्रज्वलन। ४ क्रोध। ५ जोश। ६ साहस। ७ कुढन। ८ युद्ध।

धुकणो-(क्रि०) १ अग्नि का प्रज्वलित होना। जलना। सिळगणो। २ धुआं निकलना। ३ जठराग्नि का प्रबल होना। ४ भीतर ही भीतर जलना। कुढ़ना। कुढणो। ५ क्रोध करना। ६ लडना। युद्ध करना।

धुकधुकी-(ना०)१ गले का गहना। जुगजुगी। धुगधुगी। २ कलेजे की धडकन। ३ भय। डर। ४ कंपन। थरथराहट।

धुख-दे० धुक।

धुखरा-(ना०)१ अग्नि। २ जलन। दाह। धगन।

धुखणो-(क्रि०) १ प्रज्वलित होना । धुखना । सिळगणो । २ क्रोध करना । ३ दुखी होना । जलना । ४ मारताप होना । बुदणो ।
धुखावणो-(क्रि०) १ अग्नि प्रज्वलित करना । सिळगाणो । २ दुखी करना । कष्ट देना । ३ नाराज करना । ४ क्रोधित करना ।
धुगधुगी-दे० धुकधुकी ।
धुज-(ना०) १ ध्वजा । पताका । २ घोड़ा । ३ भाला । (वि०) १ अग्रणी । २ श्रेष्ठ ।
धुढणो-(क्रि०) मकान दीवार आदि का गिरना । ढहना ।
धुणणो-दे० धूणणो ।
धुताई-(ना०) १ धूर्तता । २ ठगी ।
धुतारो-(वि०) १ धूर्त । २ ठग ।
धुन-(ना०) १ किसी कार्य में बराबर लगे रहने की प्रवृत्ति । लगन । २ चिंतन । ३ गाने का ढंग । ४ भजन की एक लंबे समय तक सतत चलने वाली ध्वनि । ५ मन की तरंग । ६ ध्वनि ।
धुनी-(ना०) १ ध्वनि । आवाज । शब्द । २ आवाज की गूंज । ३ धूनी ।
धुनीग्रह-(न०) कान । ध्वनिग्रह । श्रवणेंद्रिय ।
धुपणो-(क्रि०) १ धुलना । धुला जाना । २ क्रोध करना । ३ संपत्ति का नष्ट करना या होना । ४ नाश होना । मिटना । ५ बीमारी के कारण रक्त की कमी होना ।
धुपीजणो-(क्रि०) १ धोया जाना । २ शरीर में रक्त की कमी होना ।
धुपेडो-दे० धूपियो ।
धुपेल-(न०) सिर में डालने का एक सुगंधी-दार मसालों से बनाया हुआ तेल ।
धुबणो-(क्रि०) १ युद्ध करना । लड़ना । २ नगाड़े व ढोल का बजना । ३ तोप व बंदूक का छूटना । ४ जलना । ५ मार खाना । ६ जान से मारा ।
धुमाडो-दे० धुमाड़ो ।
धुमाळो-दे० धमाळो ।
धुर-(वि०) १ एक । २ प्रथम । ३ अगला । ४ आदि । मुख । (न०, १ उच्च स्थान । २ धुरा । धुरी । ३ प्रारंभ । शुरुआत । ४ बलगाड़ी का जुआ । ५ कर्जा लेन वाला । ऋणी । आसामी । ६ बोझा । भार । ७ जिम्मेवारी । (क्रि०वि०) १ पहले । २ निकट ।
धुरज (न०) घोड़ा ।
धुरधारण-(न०) बैल । बळद ।
धुरपड-(अव्य०) शुरू से ।
धुरवहो-(न०) बैल । बळद ।
धुरधर-(वि०)१ अग्रणी । प्रधान । श्रेष्ठ । धुरीण । २ प्रकाण्ड । ३ जो सबसे बहुत बड़ा प्रवीण या विद्वता वाला हो । ४ दायित्व निभाने वाला । ५ भार उठाने वाला । भार वाहक ।
धुरा-(न०) मत । (अव्य०) १ ठेठ तक । अंत तक । २ अंत में । तक । (ना०) १ वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से मिलती है । २ पृथ्वी की धुरी । अक्ष । ३ पहियों की धुरी । ४ समाधि ।
धुराधर-(वि०) १ अग्रणी । अगुआ । २ प्रधान । (अव्य०) १ जो अग्रणी है । २ अग्रणी भी । ३ अग्रणी सहित ।
धुरियो-(न०) १ ऋणी । २ धुरा । ३ बलगाड़ी का जुआ ।
धुरी-(ना०) लोहे का डंडा, जिसके सहारे पहिया घूमा करता है ।
धुरेळी-दे० धूरळी ।
धुरो-(न०)१ लोहे का डंडा । २ बलगाड़ी का जुआ । ३ धुरा ।
धुळेटी-दे० धूरेळी ।

धूडगट–दे० धूडकोट।
धूडधमासो–(न०) १ अव्यवस्था। २ खाने पीने की अच्छी बुरी सभी वस्तुओं का मेल। ३ खाने पीने की गडबडी या अव्यवस्था। ४ खान-पान में पथ्य-कुपथ्य के विचार का अभाव। ५ कचरा।
धूडधाणी–(ना०) नाश। बरबादी।
धूडीख–(ना०) १ आंधी। २ गर्द।
धूडो–(न०) १ धूल। गर्द। २ धूल का ढेर। ३ कचरा।
धूण–(ना०) १ धुन। लगन। २ अस्वीकृति। ३ गरदन। ४ एक परिमाण। (वि०) १ अधिक। २ बढिया। श्रेष्ठ।
धूणणो–(क्रि०) १ अस्वीकृति रूप में सिर हिलाना। अस्वीकार करना (सिर हिलाकर) २ मना करना। ३ देवता, भूत, प्रेत आदि के आवेश से कांपना। ४ प्रकंपित करना। शरीर को कंपित करना। ५ हिलाना। झकझोरना। ६ मारना। पीटना। ७ युद्ध करना। ८ चक्कर देना। ९ कंपित करना। कांपना। १० धुनकी से रूई साफ करना। रुई धुनना।
धूणी–(ना०) १ तापने की अग्नि। धूना। २ साधुओं के तापने का कुंड। ३ आग में डाले गये सुगंधित पदार्थों का धुंआं।
धूणो–(न०) बडी धूनी।
धूत–(वि०) १ धूर्त। २ ठग। ३ चालाक। ४ वीर।
धूतणो–(क्रि०) ठगना।
धूताई–दे० धुताई।
धू-तारण–(न०) ध्रुव का उद्धार करने वाले भगवान विष्णु।
धूतारी–(ना०) धरती। (वि०) ठगिनी।
धूतारो–(वि०) १ धूर्त। २ ठग। ३ बेईमान। ४ बदमाश।
धू-तारो–(न०) ध्रुवतारा।
धूती–दे० धुतारी।
धूधर–(न०) देह। शरीर।
धू धारण–(न०) १ पृथ्वी का धारण करने वाला। २ शेषनाग।
धून–(वि०) १ अधिक। २ बढिया। श्रेष्ठ। (ना०) १ धुन। लगन। तरंग। लहर। २ रट। ३ गरदन।
धून पाती–(ना०) १ श्रेष्ठ भाग। बढिया हिस्सा। २ बँटवारे में आने वाला अच्छा भाग।
धूप–(न०) १ घाम। सूर्य की गरमी। तावडो। २ सूर्य का प्रकाश। ३ एक सुगंधित द्रव्य। धूप। ४ देवता के निमित्त किया जाने वाला गुग्गुल आदि सुगंधित पदार्थों का धुंआ।
धूपटणो–(क्रि०) १ खासना। लूटना। २ मारना। पीटना। ३ मौज करना। माल उडाना। ४ खुले हाथों खर्च करना। ५ अधिकार करना। आक्रमण करके देश या धरती पर अधिकार करना।
धूपण–दे० धूपदाणी। (क्रि०) धूप, अगर बत्ती आदि जलाना। धूप करना।
धूपदाणी–(ना०) वह पात्र जिसमें धूप जलाया जाता है। धूपदानी। धूपपात्र। धूपदानियो। धूपियो।
धूपियो–दे० धूपदाणी।
धूपेरण–(न०) गुग्गुल का पेड।
धूपेल–(न०) बालों में डालने का सुगंधित तेल।
धूबको–(न०) कूदने की आवाज।
धूबणो–(क्रि०) क्रोध करना।
धूम–(ना०) १ हलचल। हल्ला गुल्ला। २ ऊधम। शरारत। ३ युद्ध। लडाई। ४ समारोह। ५ बडी भारी तैयारी। ६ धुआं। ७ उपद्रव।

घुलाई-दे० धोवाई ।
धुवणो-(क्रि०) धोया जाना ।
धुवाडणो-दे० धुवाणो ।
धुवाणो-(क्रि०) धुलाना ।
धुवावणो-दे० धुवाणो ।
धुवांधुज-दे० धु आधुज ।
धु अर-दे० धु ध ।
धु आडी-(ना०) धूनी । धूणी ।
धु आडो-(न०) धु आं । धूम्र । धु ओ ।
धु आधार-(क्रि०वि०) १ अधिक वेग से । बहुत जोर से । त्वरा से । २ अधिक जना के एक साथ त्वरा के प्रयत्न व परिश्रम से । (वि०) १ बडे जोर का २ बेशुमार । अपार । ३ धुएं से भरा । (अ०य०) धु आं ही धु आं । अपार धु आं । गोटमगोट ।
धु आधुज-(न०) अग्नि । आग ।
धु आधार-(न०) १ खूब उठ हुये या फले हुये धुएं के गोट । आकाश मे उठे हुये धुए के बादल । २ धुएं से होने वाला अंधेरा । (वि०) धुएं से परिपूर्ण । धूमायमान ।
धु आ वराड-(न०) प्रति चूल्हे पर (अथवा जलाने की लकडी पर) लिया जाने वाला प्राचीन समय का एक कर ।
धु आख-(न०) १ तोपो के छूटो से आकाश मे छाया हुआ धु आं । २ धुए के बादल ।
धु आडवर-दे० धु आख ।
धु ई-(ना०) १ धूनी । २ लावान धूप आदि का धु आं ।
धु ओ-(न०) धु आं । धूम्र । धुंआडो ।
धु गार-(न०) १ छौंक । बघार । २ फुलगारणो ।
धु गारणो-दे० धू गारणो ।
धु द-दे० धु ध ।
धु ध-(न०) १ आकाश म गद धु आं और ओस आदि से छा जाने वाला अधेरा । कुहरा । २ आंख का एक रोग जिसमे ज्योति मद पड जाने से चीजें धु धली दिखाई देती हैं । ३ ता । तु द । ४ अज्ञान ।
धु धकार-(न०) अधेरा । अधकार । अधारो ।
धु धलाणो-दे० धु धलावणो ।
धु धलावणो-(क्रि०) १ धु ध छा जाना । वातावरण का धु धला हो जाना । २ अ धेरा हो जाना ।
धु वाडो-दे० धु आडो ।
धू-(न०) १ ध्रुवतारा । २ ध्रुव भक्त । ३ शिव । ४ हाथी । ५ उत्तर दिशा । ६ सिर । ७ पुत्री । बेटी । कन्या । ८ ओर । तरफ । (वि०) १ प्रथम । २ एक । ३ स्थिर । अटल । ४ निश्चित । ५ शाश्वत । ६ वीर । ७ धूर्त ।
धूकळ-(न०) १ युद्ध । २ शोर । कोला हल । ३ उत्पात ।
धूजट-दे० धूजटी ।
धूजटी-(न०) धूर्जटि । महादेव ।
धूजणी-(ना०) कपन । धूजन ।
धूजणो-(क्रि०) १ धूजना । कांपना । २ हिलना ।
धूड-(ना०) १ धूलि । रज । २ मिट्टी । ३ गद ।
धूडकोट-(न०) १ मिट्टी का बना किला । धूलि दुग । २ अाउव का किला जिसे १८५७ के युद्ध में अग्रेजो ने फतह किया था । ३ मिट्टी की ऊची पालि से घिरा हुआ कोट । ४ शत्रु के किले की मिट्टी की बनाई हुई वह प्रति कृति जिसको असफल एव परास्त आक्रामक ध्वस्त करके उसे विजय करने की अपनी प्रतिज्ञा का पालन करता समझ लेता था । ५ काल्पनिक गढ या दुग ।

धूडगढ–दे० धूडकोट ।
धूडधमासो–*(न०)* १ अव्यवस्था । २ खाने पीने की अच्छी बुरी सभी वस्तुओं का मेल । ३ खाने पीने की गडबडी या अव्यवस्था । ४ खान पीने में पथ्य कुपथ्य के विचार का अभाव । ५ कचरा ।
धूडधाणी–*(ना०)* नाश । बरबादी ।
धूडीख–*(ना०)* १ आंधी । २ गद ।
धूडो–*(न०)* १ धूल । गद । २ धूल का ढेर । ३ कचरा ।
धूण–*(ना०)* १ धुन । लगन । २ अस्वीकृति । ३ गरदन । ४ एक परिमाण । *(वि०)* १ अधिक । २ बढिया । श्रेष्ठ ।
धूणणो–*(क्रि०)* १ अस्वीकृति रूप में सिर हिलाना । अस्वीकार करना (सिर हिलाके) २ मना करना । ३ देवता भूत प्रेत आदि के आवेश से कांपना । ४ प्रकंपित करना । शरीर को कंपित करना । ५ हिलाना । झकझोरना । ६ मारना । पीटना । ७ युद्ध करना । ८ चक्कर देना । ९ कंपित करना । कांपना । १० धुनकी से रुई साफ करना । रुई धुनना ।
धूणी–*(ना०)* १ तापने की अग्नि । धुनी । २ साधुओं के तापने का कुंड । ३ आग में डाले गये सुगंधित पदार्थों का धुआं ।
धूणो–*(न०)* बडी धूना ।
धूत–*(वि०)* १ धूर्त । २ ठग । ३ चालाक । ४ वीर ।
धूतणो–*(क्रि०)* ठगना ।
धूताई–दे० धुताई ।
धू तारण–*(न०)* ध्रुव का उद्धार करने वाले भगवान विष्णु ।
धूतारी–*(ना०)* धरती । *(वि०)* ठगिनी ।
धूतारो–*(वि०)* १ धूर्त । २ ठग । ३ बईमान । ४ बदमाश ।
धू तारो–*(न०)* ध्रुवतारा ।
धूती–दे० धूतारी ।
धूधर–*(न०)* देह । शरीर ।
धू धारण–*(न०)* १ पृथ्वी को धारण करने वाला । २ शेषनाग ।
धून–*(वि०)* १ अधिक । २ बढिया । श्रेष्ठ । *(ना०)* १ धुन । लगन । तरंग । लहर । २ लत । ३ गरदन ।
धून पाती–*(ना०)* १ श्रेष्ठ भाग । बढिया हिस्सा । २ बँटवारे में आने वाला अच्छा भाग ।
धूप–*(न०)* १ घाम । सूर्य की गरमी । तावडो । २ सूर्य का प्रकाश । ३ एक सुगंधित द्रव्य । धूप । ४ देवता के निमित्त किया जाने वाला गुगुल आदि सुगंधित पदार्थों का धुंआ ।
धूपटणो–*(क्रि०)* १ खोसना । लूटना । २ मारना । पीटना । ३ मौज करना । माल उडाना । ४ खुले हाथों खर्च करना । ५ अधिकार करना । आक्रमण करके देश या धरती पर अधिकार करना ।
धूपणो–दे० धूपटणो । *(क्रि०)* धूप, अगर बत्ती आदि जलाना । धूप करना ।
धूपदाणी–*(ना०)* वह पात्र जिसमें धूप जलाया जाता है । धूपदानी । धूपपात्र । धूपदाणियो । धूपियो ।
धूपियो–दे० धूपदाणी ।
धूपेरण–*(न०)* गुग्गुल का पेड ।
धूपेल–*(न०)* बालों में डालने का सुगंधित तेल ।
धूबको–*(न०)* कूदने की आवाज ।
धूबणो–*(क्रि०)* क्रोध करना ।
धूम–*(ना०)* १ हलचल । हुल्लागुल्ला । २ ऊधम । शरारत । ३ युद्ध । लडाई । ४ समारोह । ५ बडी भारी तैयारी । ६ धुंआं । ७ उपद्रव ।

धूमकेतु–(न०) पुच्छल तारा ।
धूमधडाकै–(अव्य०) खूब तयारी के साथ। धामधूम सूं । धूमधाम से ।
धूमधडाको–(न०) १ धूमधाम । २ शोर गुल । होहल्ला ।
धूमधाम–(ना०) १ बडी भारी तयारी । बडा आयोजन । २ समारोह । ३ शोरगुल । होहल्ला । ४ सजधज । ५ प्रदर्शन । धामधूम ।
धूमरव–(वि०) काला । श्याम ।
धूमग–दे० धोमग ।
धूमाळो–(न०) सिर पर बांधा जाने वाला मोटा साफा । बडी पगडी । धाटो ।
धूरजटी–(न०) धूर्जटि । महादेव ।
धूरत–(वि०) १ धूर्त । २ छली । ठग । ३ चालबाज ।
धूरेळी–(ना०) धुरेंडी । होली के दूसरे दिन का वह उत्सव जिसमें रग, गुलाल और धूल आदि एक दूसरे के ऊपर उडा कर बसतोत्सव मनाया जाता है ।
धूरो–(वि०) अधूरा ।
धूलका–(ना०) १ उत्तर दक्षिण दिशा । २ पासो के खेल में एक और दो की सज्ञा । ३ पासो के खेल में स्थान विशेष ।
धू-लकाऊ–(अव्य०) १ उत्तर से दक्षिण दिशा तक । २ उत्तर से दक्षिण दिशा सबधी । (न०) उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर का जमीन का माप ।
धूळेरी–दे० धूरेळी ।
धूस–(न०) १ नगाडा । धूसो । २ झुंड । समूह । ३ सेना ।
धूसणो–(क्रि०) १ नगाडा बजाना । २ ध्वस करना । नष्ट करना ।
धूसर–(न०) तली । (वि०) धूल के रग का ।
धूसो–दे० धूसो ।
धूंई–(ना०) १ धूनी । २ भूतप्रेत आदि की बाधा के निवारणार्थ गिरी आदि का किया जाने वाला धुंआं । ३ लाल मिर्च को जला कर किसी बाधा को दूर करने का टोटका ।
धूंकळ–(न०) १ ऊधम । शरारत । २ झगडा । टटा । दगाफसाद । ३ युद्ध । लडाई । ४ शोर । गुल । ५ हलचल । दौडधूप । ६ उपद्रव । उत्पात ।
धूंगारणो–(क्रि०) छीली कतरी हुई (बिना उबाली) साग सब्जी को घी का धुंआं देकर सस्कारित करना । काटी हुई सब्जी को घी का धुंआं देना । फुलगारणो । २ बघारना । छौंकना ।
धूंध–दे० धुंध ।
धूंधळो–(वि०) १ अस्पष्ट । २ धुंए के रग का । ३ धुंएं गर्द आदि से आच्छादित । धूमिल । ४ घने बादलो से छाया हुआ ।
धंधाणो–दे० धूंधावणो ।
धूंधाळो–(वि०) १ बकपट वाला । ताद वाला । २ धूमिल ।
धूंधावणो–(क्रि०) १ धमकाना । डराना । २ ठोकना । पीटना । ३ गोल चक्र की तरह फिराना । गोल गोल घुमाना । ४ तेज गति से चलाना । भागना । दौडना । ५ तेज भागने से साँस का बद होना ।
धूंधी–(ना०) १ सनक । २ कपन । धूजणी ।
धूंपियो–दे० धूपियो ।
धूंवो–(न०) १ ढेर । राशि । २ टाबा । भीटा । धोरो ।
धूंस–(न०) १ आतक । रोब । धौंस । २ डाँट डपट । घुडकी । ३ डर । भय । ४ ध्वस । नाश । ५ सेना । ६ भीड । समूह । ७ उत्सव । ८ नगाडा । ९ नगाडे का शब्द । १० गजन ।

धूसणो-(क्रि०) १ नष्ट करना । ध्वस करना । २ डराना । धमकाना । ३ नगाड़े का बजना । ४ नगाड़े का बजाना ।
धूस पडणो-(मुहा०) १ नगाडा बजना । २ भीड़भाड़ होना । ३ उत्सव होना ।
धूसरी-(ना०) १ खेह । रज । २ धुरी । ३ जुम्रा । जुम्राडो ।
धूसाळ-(वि०) १ यशस्वी । २ प्रभावशाली । ३ धौंस दिखाने वाला ।
धूसो-(न०) १ बड़ा नगाड़ा । २ सुयश । ३ पताप । आतंक । ४ सुराज्य का यशगान । ५ होरी की तर्ज में गाया जाने वाला मारवाड़ देश का एक प्रसिद्ध लोक गीत । ६ चीनी रेशम का एक सफेद दुपट्टा । ७ सन्नियों में ओढ़ने का एक वस्त्र ।
धूह-दे० धुंध ।
धूहर-(न०) कुहरा । धुंध ।
धृत-(वि०) धारण किया हुआ ।
धृति-(ना०) १ स्थिरता । २ धर्य । ३ मन की दृढ़ता ।
धृतराष्ट्र-(न०) कौरवों का पिता ।
धृष्ट-(वि०)१ निलज्ज । २ उद्धत । ढीट ।
धृष्टता-(ना०) १ ढिठाई । २ निलज्जता । ३ धूर्तता । ढीटपणो ।
धेख-(न०) १ द्वेष । डाह । २ शत्रुता । ३ युद्ध । ४ हठ । जिद्द । ५ विरोध ।
धेखी-(वि०) १ द्वेषी । २ विरोधी । ३ हठी । जिद्दी । (न०) शत्रु । दुश्मन ।
धेग-दे० धेग ।
धेजो-(न०) धीजो ।
धेटो-दे० धेठो ।
धेठाई-दे० धीठाई ।
धेठो-(वि०) १ धृष्ट । २ निलज्ज । धीट । २ सकोच रहित । (स्त्री० धेठी)
धेन-(ना०) गाय । धेनु ।
धेनड-(न०) १ प्रसव समय की पुत्र सना । २ पुत्र । बालक ।
धेनडियो-दे० धेनड ।
धेनु-(ना०) गाय । गौ ।
धेर-(न०) राशि । ढेर ।
धेली-(ना०) आधे रुपया का सिक्का । आठ नी । अधेली ।
धेलो-(न०) आधे पैसे का सिक्का । आधा पसा । अधेलो ।
धेख-दे० धेख ।
धैंड-(ना०) १ बिना बँधा हुआ कुँआ । कच्चा कुँआ । दहर । २ पानी से भरा हुआ गहरा खड्डा । ३ खड्डा । गड्ढा ।
धैडो-दे० धड ।
धैंधीगर-(न०) १ हाथी । २ सप । (वि०) १ प्रचंडकाय । भीमकाय । २ जबरदस्त ।
धैळियो-दे० दहलियो ।
धैळणो-(क्रि०) १ डरना । भयखाना । दहलना । भय से कापना ।
धोक-(ना०) १ प्रणाम । पा लागन । २ दडवत । ३ पूजा । ४ एक जगली वृक्ष ।
धोकणो-(क्रि०) १ प्रणाम करना । साष्टांग प्रणाम करना । पा लागना । २ किसी देवता तीर्थ आदि की यात्रा को जाना । ३ ठोकना । पीटना । ४ धातु के लबे टुकडे के सिरों पर हथौडे से चोटें मार कर छोटा करना ।
धोकळ-दे० धूंकल ।
धोको-(न०) १ जाडी लकडी का टुकडा । २ कपडे धोने की धोटी । ३ डडा । सोटा । दे० धाखो ।
धोखाधडी-(ना०)१ चालबाजी । चालाकी । २ ठगी । ठगाई । ३ धूर्तता ।
धोखाबाज-(वि०) धोखेबाज । कपटी । छली ।
धोखो-(न०) १ धोखा । छल । भुलावा । दगा । २ पश्चाताप । ३ क्षोभ । ४

भ्रांति। ५ अज्ञान से होने वाली भूल। ६ हानि। ७ चिंता।

धोणो–देо धोवणो।

धोत–(नाо) १ धोती। २ ओसवालों (जैनियों) में मृतक शौच मिटाने की ऐसी क्रिया जिसका किसी मांगलिक प्रसंग के पूर्व मंदिर में जाकर सम्पादन किया जाता है।

धोतड़ी–(नाо) छोटी धोती। पंचियो।

धोतियो–(नо) धोती।

धोती–(नाо) एक अधोवस्त्र। धोती। धोतियो।

धोती जोटो–(नо) धोती जोड़ा।

धोती जोड़ो–(नо) साथ में बुनी हुई दो धोतियां। धोती जोड़ा।

धोतीधारी–(नо) १ धोती पहनने वाला। २ हिंदू (अहिंदू की ओर से व्यंग्य में)।

धोप–(नо) १ धुलाई। २ धोये जाने की विशिष्टता। ३ धोने में आने वाला ओप या सफाई। ४ तलवार। (विо) १ श्वेत। २ उजला।

धोपटणो–देо धूपटणो।

धोबण–(नाо) धोबिन। धोबी की स्त्री।

धोबा देणा–(मुहाо) अंजलियाँ देना।

धोबी–(नо) कपड़े धोने का धंधा करने वाला। रजक। धोबी।

धोबी घाट–(नо) धोबी के कपड़े धोने की जगह।

धोबो–(नо) १ दोनों हथेलियों को मिला कर बनाई हुई अंजली। २ धोबे में समा सके उतना पदार्थ।

धोम–(नо) १ सूर्य। २ सूर्य का प्रखर ताप। ३ अग्नि। ४ क्रोध। ५ युद्ध। ६ धुआँ। ७ बड़ा समूह। अपार। भीड़। ८ ठाट बाट। ९ तोपों के छूटने की आवाज। (विо) १ खूब। अत्यधिक। २ बहुत बड़ा। बहुत दूर तक फैला हुआ। ३ जबरदस्त।

धोमचख–(विо) खूब क्रोधित। (नо) क्रोधित नेत्र।

धोमझळ–(नाо) अग्नि की ज्वालों।

धोम-मारग–(नо) १ बड़ा मार्ग। २ वह रास्ता जिस पर खूब आना जाना रहता हो। ३ किन्हीं गावों के बीच का वह मार्ग जिस पर पैदल और सवारियों का अधिकता से आना जाना होता हो।

धोमग–(नо) अग्नि। आग।

धोमानळ–(नाо) अग्नि। आग।

धोयोड़ो–(विо) धुला हुआ। धोया हुआ।

धोरण–(नо) १ रीति। पद्धति। २ नियम ३ पंक्ति। ४ श्रेणी। ५ स्तर।

धोरावणो–(क्रिо) धुलवाना।

धोरियो–(नо) १ छोटा टीबा। धोरो। २ बैल। बळद। ३ ऊंची नीची जमीन में समतल (लेवल में) बनाई हुई पानी की नीक। पाला चलाकर बनाई हुई पानी की नीक।

धोरी–(विо) १ मुख्य। प्रधान। मुखिया। २ वीर। योद्धा। ३ बड़ा। प्रशस्त। (नо) १ बैल। २ पुत्र।

धोरी मोडो–(नо) बड़ा द्वार। खास दरवाजा।

धोरी मोडो–(नо) अगुआ साधु। महंत। (तुच्छकार में)

धोर–(क्रिоविо) पास। निकट।

धोरो–(नо) १ अति सुगंधित वातावरण। २ अगर धूप आदि की सुगंधि की लहर। ३ बहुत बढ़िया सुगंधि। ४ खान-पान गायन अतर फुलेल की सुगंधि आदि का उल्लासपूर्ण वातावरण। ५ उत्साह और आनंद का वातावरण। ६ कोर-गोटा। गोटा किनारी। ७ खेत (जाव) की ऊंची-नीची भूमि में मिट्टी का बनाई हुई

समतल पाली जिस पर नाली बना कर क्यारी मे पानी पहुँचाया जाता है। पाली पर बनी हुई पानी की नीक। ८ नीक की पाली। ९ खेत की मेड। १० टीबा। धोरो। ११ माग।

धोलणो-*(क्रि०)* १ सफेदी करना। २ सफेद करना।

धोळहर-दे० धवळहर।

धोळाई-*(ना०)* १ सफेदी। पुताई। २ चूना पोतने की मजदूरी। सफेदी करने की मजदूरी।

धोळावणो-*(क्रि०)* मकान आदि की सफेदी करवाना।

धोळाम-*(न०)* धोलापन। सफेदी।

धोळियो-*(वि०)* धवल। सफेद। *(न०)* बल।

धोळो-*(वि०)* धवल। सफेद। *(न०)*१ बैल। २ श्वेत प्रदर।

धोळो आवणो-*(मुहा०)* श्वेत प्रदर का रोग होना।

धोळो धट-*(वि०)* खूब सफेद। एकदम सफेद। धोळोधप।

धोळोधप-दे० धोळोधट।

धोळो पटणो-१ श्वेत प्रदर का रोग होना। २ सफेद हो जाना। ३ खून कम हो जाना।

धोळोफट-दे० धोळोधट।

धोवण-*(न०)* १ वह पानी जिससे बरतन आदि धोये गये हो। वह पानी जिसमे कोई वस्तु धोई गई हो। २ पानी। ३ धोने की क्रिया या भाव।

धोवणियो-*(वि०)* धोने वाला। *(न०)* कपडे धोने की धोटी।

धोवणो-*(क्रि०)* पानी से साफ करना। धोना।

धोवती-दे० धोती।

धोवाई-*(ना०)* १ धोने की क्रिया। २ धोने की मजदूरी।

धोवाडणो-दे० धोवाणो।

धोवाणो-*(क्रि०)* पानी से साफ करवाना। धुलाना। धुलवाना।

धोवादाळ-*(ना०)* पानी में भिगोकर छिलके उतारी हुई दाल। मोगर।

धोवावणो-दे० धोवाणो।

धोस-*(ना०)* १ धमकी। २ रोब। धौंस।

धोसो-दे० धूसो।

धौंस-*(ना०)* १ रोब। आतंक। २ भय। डर।

धौळ-*(वि०)* धवल। सफेद। *(ना०)* १ एक रागिनी। २ गीत। गायन। *(न०)* सिर। मस्तक।

धौल-*(ना०)* थप्पड। चपत। लप्पड।

धौळहर-*(न०)* १ मकान। महल। २ राजमहल।

धौळागिर-दे० धवळगिर।

ध्याग-दे० धियाग।

ध्यान-*(न०)* १ चिंतन। २ लक्ष्य। ३ एकाग्रता। ४ स्मृति। ५ विचार। ख्याल। ६ चिंतन करने की वृत्ति। ७ चित्त। मन। ८ योग के आठ अंगों में से एक।

ध्यानी-*(वि०)* १ ध्यान करने वाला। २ चिंतनशील।

ध्यावणो-*(क्रि०)*१ ध्यान करना। २ स्मरण करना। ३ ईश्वर का सुमिरण करना।

ध्रकार-दे० धिक्कार।

ध्रग-दे० धिक।

ध्रगध्रगी-*(ना०)* हृदय की धडकन।

ध्रम-दे० धम।

ध्रमकणो-*(क्रि०)* ढोल का बजना।

ध्रमरत्तो-*(वि०)* धर्मानुरक्त।

ध्रवणो-*(क्रि०)* १ संतुष्ट करना। २ भागना। ३ आंसू बहाना। ४ मारना। पीटना।

ध्रयाग-(ना०) १ शब्द। आवाज। २ गिरने की आवाज।

ध्रग-दे० द्रग।

ध्राइणो-(क्रि०) तृप्त होना।

ध्रापणो-दे० धापणो।

ध्राव-(न०) गाय भैंस आदि मवेशी। पशु।

ध्रावणो-(क्रि०) तृप्त होना। धापणो।

ध्रीवणो-(क्रि०) १ पटकना। २ रखना। ३ जलाना। ४ मारना। पीटना। ५ पछाड़ना।

ध्रीह-(ना०) नगाड़े का शब्द।

ध्रुव-(न०)१ उत्तर दिशा का एक निश्चल तारा। २ राजा उत्तानपाद का प्रख्यात विष्णुभक्त पुत्र। ३ पृथ्वी जिस अक्ष पर फिरती है उसके दोनों सिरों में से प्रत्येक यथा—उत्तरी ध्रुव। दक्षिणी ध्रुव। ४ उत्तर दिशा। (वि०) १ स्थिर। निश्चल। अटल। २ निश्चित। ३ प्रथम। पहला।

ध्रुवणो-(क्रि०) १ बजना। २ लड़ना। ३ युद्ध करना। ४ मारना।

ध्रुव तारो-(न०) ध्रुव का तारा। उत्तर की दिशा का एक निश्चल तारा।

ध्रू-(न०)१ मुंड। मस्तक। २ ध्रुवतारा।

ध्रूजट-दे० धूजटी।

ध्रूमाळा-(ना०) मुंडमाला।

ध्रेस-(न०) १ द्वेष। वैर। २ विरोध।

ध्रोण-(न०) सिर। मस्तक।

ध्रोय-(ना०) दूर्वा। दूब।

ध्रोब आठम-(ना०) १ भादों शुक्ला अष्टमी। दूर्वा ग्रहणो अष्टमी। दूर्वाष्टमी। ध्रुवअष्टमी। (इसी दिन भगवान विष्णु ने अपने भक्त ध्रुव को दर्शन दिये थे, इसलिये यह ध्रुवाष्टमी भी कही जाती है। (मारवाड़ में खेड़ पाटण में ध्रुवनारायण के प्राकट्य का इस दिन बड़ा मेला भरता है। यहाँ ११वीं सदी का ध्रुवनारायण का बड़ा मन्दिर बना हुआ है जो अब रणछोड़राय के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है।)

ध्वज-(न०) झंडा। ध्वजा। (ना०)पताका। धजा।

ध्वनि-(ना०) १ आवाज। शब्द। २ व्यंजना।

ध्वनिग्रह-(न०) कान। श्रवणेन्द्रिय।

ध्वंस-(न०) नाश। बरबाद।

न

न-व्यञ्जन परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का बीसवाँ और त वर्ग का पाँचवाँ दंत स्थानीय अनुनासिक व्यंजन वर्ण।

न-(अव्य०) १ नकारात्मक शब्द। निषेध सूचक शब्द २ ना। नहीं। ३ एक उपसर्ग। (वि०) अन्य।

नई-दे० नैं।

नइड-दे० नड्यड।

नइयड-(न०) १ नदी के पास वाला देश। नन्द। २ नदी तट का उपजाऊ प्रदेश। ३ निकट की सीमा का प्रदेश।

नई-(ना०) नदी। (वि०) नवीन। नयी।

नक-(न०) नाक।

नक-छींकणी-(ना०)१ नसवार। सुंघनी। २ एक घास।

नकटाई-(ना०) १ निलज्ज। बेशर्मी। २ धृष्टता।

नकटी-(वि०) १ नाककटी। २ निलज्ज। ३ दुराचारिणी।

नक्टो-(वि०) १ नाककटा। नकटा। २ निलज्ज। बेशर्म। (न०) क्षुद्रता सूचक एक शब्द।

नकतोड-(न०) १ मुँहरी डाले जाने वाला ऊंट के नाक का एक छेद । २ ऊंट के नाक में डाली जाने वाली एक बाली । (वि०) नाक को तोड़ने वाली (ऊंट के नाक की तरह)

नक्द-दे० नगद ।

नक्दी-दे० नगदी ।

नकफूली-(ना०) स्त्री के नाक में पहिनने का एक गहना । नकबेसर ।

नक्कर-(वि०) ठोस ।

नकराई-(ना०)१ जिसके ऊपर हुंडी लिखी गई हो उसकी ओर से उसे सिकारने की अस्वीकृति । २ हुंडी की पक्की मुद्दत पर रकम नहीं चुका सकने की स्थिति । ३ हुंडी लिखने वाले के पास से लिया जाने वाला अस्वीकृति (नकराई) का खर्चा । ४ नकराई ली जाने का स्थानीय (व्यापारिक) नियम ।

नकरामणा-दे० नकराई ।

नकल-(ना०) १ मूल पर से उतारी हुई दूसरी लिखावट । २ लेख आदि की प्रतिलिपि । कापी । ३ अनुकृति । प्रतिरूप । ४ स्वाँग । वाणी वेश आदि का यथावत अनुकरण । ५ हँसी । मजाक ।

नकलनवीस-(न०) न्यायालय में दस्तावेजों की प्रतिलिपि करने का काम करने वाला कर्मचारी । लिपिक ।

नकलबाज-(वि०) १ नकल करने वाला । २ मसखरा ।

नकलवही-(ना०) वह बही जिसमें आवश्यक चिट्ठियों हुंडियों आदि की नकलें और उधार दी हुई वस्तुओं का विवरण लिखा रहता है ।

नकलंक-(वि०) निष्कलंक । कलंक रहित । (न०) कल्कि अवतार ।

नकली-(वि०) १ खोटा । असली नहीं । २ बनावटी । कृत्रिम । ३ नकल करके बनाया हुआ ।

नकलीडो-(न०) मसखरा । जोकर ।

नक वढियो-दे० नाक वढियो ।

नकवेसर-(ना०) नाक की बाली । छोटी नथ । नकफूली ।

नकसी-(ना०)१ नक्शी काम । कोतरणी । नक्काशी । २ चित्रकारी । ३ रंगसाजी । ४ बदनामी । अपकीर्ति । लोकनिंदा । (वि०) जिस पर बेलबूटे बने हों ।

नकसीर-(ना०) नाक में से निकलने वाला खून । नकोर । नाकोर ।

नकसो-(न०) १ किसी स्थान व प्रदेश का मापसर आलेखन । २ पृथ्वी के किसी भाग या खगोल का चित्र । मानचित्र । ३ रेखाचित्र । आकृति । ४ चालढाल । ५ दशा । ६ साँचा ।

नकट-(वि०) १ निष्कंटक । २ निर्विघ्न । बाधा रहित ।

नकाम-दे० निकाम ।

नकामो-दे० निकामो ।

न का-(अव्य०) नहीं तो ।

नकार-(न०) १ नहीं का बोध कराने वाला शब्द । २ अस्वीकृति । ३ 'न' वर्ण ।

नकारणो-(क्रि०) १ हुंडी को स्वीकार नहीं करना । २ अस्वीकार करना । नकारना । ३ नहीं कहना । किसी काम या बात को मान्य नहीं रखने का उत्तर देना ।

नकारो-(वि०) १ निकम्मा । दे० नाकारो ।

नकी-दे० नक्की ।

नकीब-(न०)१ राजा या धर्माचार्य की सभा में या उनकी सवारी के आगे उनके विरद, उपाधि आदि की घोषणा करने वाला व्यक्ति । २ मुनादी सुनाने वाला व्यक्ति । ३ छड़ीदार । ४ कड़खेत ।

नकूं-(अव्य०) १ कोई नहीं । २ कुछ भी नहीं । ३ नहीं ।

नकूचो-(न०) १ अंकुश । अंकोडा । २ साकल अटकाने का कांटा । कुंडा ।

नकेल-(ना०) १ ऊट के नाक को छेद कर डाला जाने वाला लकड़ी का एक उपकरण जिसमें मोहरी (रस्सी) बँधी रहती है।

नकेवळो-दे० निकेवळो।

नकै-(क्रि०वि०)['कन' का वर्ण व्यतिक्रम] पास। निकट। नजदीक।

न को-(प्रव्य०)१ कोई नहीं। २ नहीं।

नकोर-(वि०) १ अप्रताडित। २ नया। ३ बिना फलाहार का (उपवास)।

नक्की-(वि०) १ खरा। पक्का। दृढ। २ जिसका निर्णय हो गया हो। निर्णीत। निश्चित। ३ ठीक। ४ नाक से संबंधित।

नक्कीफूक-(ना०) पूंगी आदि मुँह से बजाये जानेवाले फूक वाद्यों की स्वरगति बंद नहीं होने देने के लिए नाक से श्वास को खींच कर मुँह से जारी रखी जाने वाली श्वासक्रिया।

नक्र-(न०) मगरमच्छ।

नक्षत्र-(न०)१ तारा। २ कृतिका रोहणी आदि २७ नक्षत्रों में से प्रत्येक।

नक्षत्रधारी-दे० नखतधारी।

नख-(न०) १ नाखून। नख। २ अल्प। उपगोत्र।

नख आवध-(न०)शेर चीता बिल्ली कुत्ता आदि तीक्ष्ण नखों वाला कोई हिंसक जानवर। नखायुध।

नखत-(न०) १ नक्षत्र। २ तारा।

नखतमिण-(न०) नक्षत्रमणि। सूर्य।

नखतर-(न०) नक्षत्र। (अश्विनी भरणी आदि २७ नक्षत्र)।

नखतरी-(वि०) शुभ नक्षत्र में जन्म लेने लेने वाला। भाग्यशाली। नक्षत्रधारी।

नखताळी-(ना०) नक्षत्रावलि। नक्षत्रपंक्ति।

नखतेत-(वि०) नक्षत्रधारी। भाग्यशाली।

नखतेस-(न०) नक्षत्रेश। चंद्रमा।

नखत्र-(न०) नक्षत्र।

नखनिवायो-(वि०) बहुत कम गरम। साधारण गरम (पानी)।

नखर-(न०) नख। नाखून। दे० निखर।

नखरधर-(न०) नख वाले हिंसक पशु। मांसाहारी पशु।

नखरादार-(वि०) नखरा वाला।

नखराळी-(वि०)१ नखरे वाली। २ शृंगार चेष्टा वाली। शौकीन।

नखराळो-(वि०) १ नखरे बाज। नखरा करने वाला। २ शौकीन।

नखरो-(न०) १ नखरा। विलास चेष्टा। हावभाव। २ शृंगारिक चेष्टा। ३ बनावटी चेष्टा। ४ बनावटी इनकार।

नखलियो-(न०)१ स्त्री के पाव की अँगुली में पहिना जाने वाला एक छल्ला। २ वीणा आदि तार वाद्यों को बजाने के लिए तर्जनी अंगुली में पहिना जाने वाला लोहे के तार का गूंथा हुआ एक छल्ला। मिजराब। ३ सुथार का एक औजार।

नखलो-(वि०) [मूल शब्द कनलो। ध्वनि भेद रूप नकलो का मवाडी वर्ण व्यतिक्रम] पास। निकट का।

नख सिख (न०)१ पैर के नाखून से लेकर सिर की शिखा तक के सभी अंग। २ शरीर के सभी अंगों का वर्णन। ३ सभी अंगों की सुन्दरता और उनके शृंगार का वर्णन। (वि०) समस्त। सभी।

नखावणो-(क्रि०) १ डलवाना। २ फिकवाना। ३ रखवाना। ४ दूर करवाना। बाजू पर रखवाना। ५ अंदर डलवाना।

नखायुध-दे० नख आवध।

नखावध-दे० नख आवध।

नखी-(न०) १ नखायुध। २ सिंह। ३ चीता। ४ तीक्ष्ण नखों वाला पशु।

नखीतळाव-(न०) आबू पर्वत पर का एक पवित्र रमणीय तालाब।

नगेद-(वि०) १ नीर। २ सुन्ना। ३ बदमाश। ४ अशुभ। ५ दूषित। निषिद्ध। (न०) निषेध। अभाव। रुकावट।

नगन-(क्रि०वि०) [मूल शब्द 'कन' का ध्वनि भेद रूप गन या नग व्यतिक्रम] पास। निकट। कने।

नगाद-(न०) १ सत्यानाश। उच्छेद। २ वंशनाश। कुलोच्छेद।

नगोदियो-(वि०) १ जिसका वंशोच्छेद हो गया हो। निर्वंश। २ [illegible]। ३ अशुभ। ४ एक गाली।

नगोरियो-(न०) नाखून का विकार। नख क्षत।

नग-(न०) १ कोई एक वस्तु। अदद। नग। २ एक का परिमाण। इकाई। ३ नगीना। रत्न। ४ मोती। ५ पर्वत। ६ वृक्ष। ७ सन्तान। ८ सुपुत्र। ९ कुपात्र। १० हाथी। ११ सर्प। १२ पाव। पद। १३ आठ की संख्या का वाचक।

नगटाई-दे० नकटाई।

नगटी-दे० नकटा।

नगटो-दे० नकटा।

नगद-(वि०) रोकड। नकद।

नगदनाणो-(न०) रोकडी मिलकत। रोकडे रुपये। तयार रुपये।

नगद नारायण-(न०) १ नकद रकम। २ रुपया।

नगदी-(ना०) १ रुपया। २ मालमत्ता। (वि०) नकद।

नगपति-(न०) १ हिमालय पर्वत। २ सुमेरु पर्वत। ३ कैलाश पर्वत। ४ आबू पर्वत। ५ ऐरावत।

नगर-(न०) १ बडी बस्ती वाला स्थान। शहर। २ शहर का मुहल्ला।

नगर नायका-(ना०) वेश्या। रंडी। पातर। नगर नायिका।

नगरनारी-(ना०) वेश्या। रंडी। पातर।

नगरसेठ-(न०) १ नगर का प्रधान साहूकार सेठ। २ वह जिसे नगर सेठ की उपाधि प्राप्त हो। ३ साहूकार और उदारता आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्ति।

नगराज (न०) १ हिमालय पर्वत। २ सुमेरु पर्वत। ३ अर्बुद गिरि। आबू पर्वत। ४ [illegible] पर्वत।

नगरी-(ना०) १ नगर। शहर। २ छोटा नगर। (वि०) नगर का। शहरी।

नगरै-दे० नगपति।

नगाधिप-(न०) १ हिमालय। २ आबू पर्वत।

नगारखाना-(न०) १ देवमन्दिर या किले आदि का वह स्थान जहां नियत समय पर नौबत नगाड़ा बजाया जाता है। २ वह स्थान जहां वाद्य सामग्री रखी रहती है।

नगारची-(न०) नौबत नगारा बजाने वाला। ढोली।

नगारबंद-(वि०) जिसको अपनी सवारी के आगे नगारा बजाने का अधिकार प्राप्त हो।

नगारी-(ना०) १ शहनाई गायन के साथ बजाई जाने वाली नौबत में बड़े नगारे के साथ बजाई जाने वाली छोटी नगारी। २ नगारची।

नगारा निशाण-(न०) १ वह नगारा और झंडा जो राजा तथा महंत की सवारी के आगे रहता है। २ नगारा और झंडा।

नगारो-(न०) नगाडा। धौंसा। दुंदुभि। धूंसो।

नगापत-(न०) १ नगपति हिमालय। २ आबू पर्वत।

नगाव-दे० नगपति।

नगीना-(न०) १ नगीना। रत्न। २ नागौर नगर का साहित्यिक नाम।

नगोट–दे० निगोट ।

नगोदर–*(ना०)*१ विविध प्रकार के रत्नों का हार । २ नौ रत्नों वाला हार । ३ पर्वत की गुफा ।

नचाइणो दे० नचाणो ।

नचाणो–*(क्रि०)*१ नाचने में प्रवृत्त करना । नचाना । २ हैरान करना ।

नचावणो–*(क्रि०)* दे० नचाणो ।

नचित–*(वि०)* निश्चित । बेफिक्र ।

नचितो–दे० नचित ।

नचीत–दे० नचित ।

नचीताई–*(ना०)* निश्चितता । बेफिक्री ।

नचीतापणो–दे० नचीताई ।

नचीतो–दे० नचित ।

नछत्री–*(वि०)*१ क्षत्रिय रहित । नक्षत्री । २ शुभ नक्षत्र वाला । नक्षत्री ।

नजर–*(ना०)* १ दृष्टि । नजर । २ लक्ष्य । ३ दृष्टि दोष । ४ भेंट । उपहार । नजराना । ५ निगरानी । सम्हाल । ६ कृपादृष्टि ।

नजर करणो–*(मुहा०)* १ भेंट धरना । २ दृष्टि डालना ।

नजरबंद–*(ना०)* १ एक ऐसी सजा जिसमें बंदी को हथकड़ी-बेड़ी नहीं पहनाई जाती किन्तु एक निश्चित सीमा या स्थान से बाहर नहीं जाने दिया जाता । निश्चित सीमा में ही रहने की एक कैद । २ वह स्थान जहां नजर कैदी रक्खा जाता है ।

नजरबंदी–*(ना०)* वह व्यक्ति जिसे नजरबंद का दण्ड दिया गया हो ।

नजर चूक–*(ना०)* १ नजर में से छूटी हुई भूल । नजर में नहीं आई हुई भूल । २ नजर चूक जाने का भाव । ३ किसी वस्तु का नजर में नहीं आना । ४ नजर बंदी ।

नजर पहोचणी–*(मुहा०)* १ देखा जाना । २ समझ में आना ।

नजरबद–*(वि०)*जहाँ आ जा नहीं सके ऐसी निगरानी में रखा हुआ ।

नजरबंदी–दे० नजरबंद । *(ना०)* बाजीगर का खेल । जादूगरी ।

नजरबाजी–*(ना०)* जादू या हाथ की सफाई से लोगों की दृष्टि में भुलावा डालने की क्रिया ।

नजरबाग–*(ना०)* मकान के आसपास का बगीचा ।

नजर बैठणी–*(मुहा०)* १ ध्यान में आना । २ समझ सकना ।

नजर लागणी–दे० नजरीजणो ।

नजरसानी–*(ना०)* १ मुकदमे में पुनर्विचार के लिए न्यायाधीश को दिये जाने वाला प्रार्थनापत्र । २ पुनर्विचार ।

नजराणो–*(ना०)* १ सट्टे के व्यापार में लगाया जाने वाला एक प्रकार का दाँव । वायदे के सौदे पर लगाये जाने वाले या खाये जाने वाले नफे नुकसान की प्रमुख सीमा का एक सौदा और उसकी शुल्क । नजराना । २ नजर की जाने वाली वस्तु । भेंट की वस्तु । ३ उपहार । भेंट ।

नजरियो–*(ना०)* नजर नहीं लगने के लिए बच्चों के हाथ या गले में पहनायी जाने वाली काली चीजों की साकल अथवा गाल पर लगायी जाने वाली काली बिंदी आदि । तावीज । टोटका । डिठौना ।

नजरीजणो–*(क्रि०)* दृष्टि दोष का असर होना ।

नजरोनजर–*(अव्य०)*१ आँखों के सामने । प्रत्यक्ष । २ नजर से नजर ।

नजलो–*(ना०)* जुकाम ।

नजारो–दे० निजारो ।

नजीक–*(अव्य०)* पास । निकट । नजदीक । नड़ो ।

नजीकी-(वि०) नजदीकी । पास का । निकटवर्ती । समीपस्थ ।
नजीर-(न०) उदाहरण ।
नजोरी-(वि०) जिस पर अपना जोर नही चले । जिसमे अपनी मजबूरी हो । विवश । (ना०) १ विवशता । मजबूरी । २ कमजोरी । असामर्थ्य । ३ अशक्ति ।
नट-(न०) १ रस्सी पर चलने या नाचने वाली एक जाति । २ बाजीगर । ३ अभिनेता । ४ एक राग ।
नटकळा-(ना०)नट की कला अथवा विद्या ।
नटखट-(वि०) १ चालाक । धूर्त । २ चचल । ३ शरारती ।
नटणी-(ना०) १ नटने का भाव । २ नट की स्त्री । नटी ।
नटणा-(क्रि०)१ नटना । इनकार करना । २ कह कर मुकर जाना । नटना ।
नटनागर-(न०) श्रीकृष्ण ।
नटबाजी-(ना०) १ नट का खेल । २ नट की कला । ३ चालाकी ।
नटराज-(न०)१ श्रीकृष्ण । २ महादेव ।
नटवर-(न०) श्रीकृष्ण ।
नटवर नागर-(न०) श्रीकृष्ण ।
नटविद्या-दे० नटकळा ।
नटाटूट-(क्रि०वि०)नही रुक कर । निरंतर ।
नटेसर-(न०) शिव । नटेश्वर ।
नठोर-(वि०) जो समझाने पर भी नही समझे ।
नड-(न०) १ मोटी रस्सी । २ चमड़े की रस्सा । ३ गर्दन । ४ धड । कबध । ५ झरना । ६ पर्वतीय माला । ७ विघ्न ।
नडणो-(क्रि०) १ रुकावट होना । रुकना । २ विघ्न करना । ३ प्रतिकूल होना । ४ रुकावट डालना । रोकना । ५ विघ्न डालना ।
नडर-दे० निडर ।
नडी-(ना०) १ चमड़े की रस्सी । नाड़ी । २ नस । रग ।
नढाळो-(वि०) १ मर्यादित । २ ढग रहित । ३ व्यवस्था रहित । ४ ढग बिना का ।
नणद-(ना०) पति की बहन । ननद ।
नणदल-दे० नणद ।
नणदी-दे० नणद ।
नणदीबाई-दे० नणद ।
नणदोई-(न०) ननद का पति । पति का बहनोई ।
नणदोतरी-(ना०) ननद की पुत्री । पति की बहिन की बेटी ।
नणदोतरो-(न०) ननद का पुत्र । पति की बहिन का बेटा ।
नणदोती-दे० नणदोतरी ।
नणदोतो-दे० नणदोतरो ।
नत-(अव्य०) नतो । नही तो । (वि०) १ झुका हुआ । २ विनीत । ३ उदास । ४ दे० नित ।
नतमाथ-(वि०) नत मस्तक ।
नताळ-दे० निराताळ ।
नतागिणि-(ना०) स्त्री । नारी । नतांगी । नतांगिनी ।
नतीजा-(न०) परिणाम । फल ।
नत्रीठ-(न०) १ एक बाजा । २ नगाड़ा । ३ घोड़ा । ४ वीर पुरुष । ५ युद्ध । ६ प्रहार । (वि०) १ निडर । निर्भय । २ भयकर । ३ तेज । (क्रि०वि०) जोर से । वेग से ।
नत्रीटणो-(क्रि०) १ नगाड़ा बजाना । २ तेज गति से चलना । ३ मारना ।
नत्रीठा वाहण-(न०) १ बहुत तेज गति से चलने वाला वाहन । २ अश्वरथ ।
नत्रीठो-(न०) १ पाला । २ युद्ध । ३ योद्धा । ४ बाजा । (वि०) १ तेज गति से चलने वाला । २ वीर । ३ भयकर । ४ प्रबल । ५ निर्भय । ६ अपूर्व । (क्रि०वि०) बराबर दाब ।

नथ-(न०) १ स्त्री के नाक में पहिनने का एक गहना । नाक की बाली । २ नाक । नकेल ।
नथ अनथ-(वि०) १ बिना नाथ वाले को नाथने वाला । २ वश में नहीं होने वालों को वश में करने वाला । ३ नहीं जीते जाने वालों को जीतने वाला ।
नथी-(अव्य०) १ नहीं । (वि०) नाथा वाला ।
नद-(न०) १ बड़ी नदी । २ वाद्य ध्वनि । नाद । ३ एक आभूषण ।
नदपत-(न०) समुद्र । नदीपति । नदपति ।
नदवै-(न०) नदपति । समुद्र ।
नदारद-(वि०) लुप्त । गायब ।
नदियाण-(न०) १ नदी का पानी । २ नदियों का समूह । ३ नदियों को अपने में समा देने वाला । समुद्र ।
नद्री-(ना०) नदी । सरिता ।
नदेसर-(न०) समुद्र । नदीश्वर ।
नद्द-(न०) नाद । (ना०) नदी ।
न धणियो-(वि०) बिना मालिक का । लावारिसी ।
नन-(अव्य०) १ नहीं । २ नहीं कुछ । (वि०) कुछ । थोड़ा । किंचित ।
ननसाळ-(ना०) ननिहाल ।
ननाणो-दे० नानाणो ।
ननामी-(वि०) जिस पत्र आदि में लिखने वाले या भेजने वाले का नाम नहीं लिखा गया हो । बिना नाम का । अनामिक । गुमनाम । (ना०) शव को श्मशान ले जाने की अरथी । टिकटी । सीढ़ी ।
ननामो-(न०) अनामिक । बिना नाम का । गुमनाम ।
नन्नो-(न०) न अक्षर । नकार । (अव्य०) नहीं । नकार ।
नपगो-(वि०) १ अविश्वसनीय । २ गप्पी ।
नपट-दे० निपट ।
नपावट-दे० निपावट ।
नपीरी-(वि०) जिसके पीहर में कोई नहीं रहा हो ।
नपुंसक-(वि०) १ पुरुषत्वहीन । २ हिजड़ा ।
नपूतो-न० निपूतो ।
नफक्करो-दे० नफिक्रो ।
नफट-(वि०) निलज्ज । बेशर्म ।
नफर-(न०) १ चाकर । २ दैनिक पारिश्रमिक ऊपर काम करने वाला मजदूर । दनगियो ।
नफरत-(ना०) तिरस्कार । घृणा ।
नफरी-(ना०) १ मजदूर का एक दिन का काम । २ मजदूर के एक दिन की मजदूरी । ३ मजदूरी का एक दिन । ४ सूची । ५ सैनिकों की गिनती ।
नफाखोर-(वि०) १ अधिक नफा खाने वाला । २ केवल नफा का ही विचार करने वाला ।
नफाखोरी-(ना०) केवल नफे का ही सोचने का भाव ।
नफिक्रो-(वि०) निश्चिन्त । बेफिक्र ।
नफीरी-(ना०) शहनाई ।
नफो-(न०) १ लाभ । फायदा । मुनाफा । २ आमदनी ।
नफो टोटो-(न०) १ लाभ हानि । २ नफा टोटा निकालने का हिसाब ।
नबळाई-(ना०) निबलता । कमजोरी । अशक्ति ।
नबळो-(वि०) निबल । कमजोर । अशक्त ।
नभ-(न०) आकाश ।
नभचर-(न०) १ पक्षी । पखेरू । २ नक्षत्र ।
नभणो-(वि०) १ अपढ़ । २ मूर्ख ।
नभणो-दे० निभणो ।
नभधज-(न०) मेघ । बादल । नभोध्वज । नभधुज ।
नभमिण-(न०) सूर्य । नभोमणि ।

नभवाणी-(ना०) आकाशवाणी । नभो वाणि । दैव वाणी ।

नभाव-दे० निभाव ।

नम-(ना०) १ मास के (कृष्ण और शुक्ल) दोनों पक्षों का नौवां दिन । नौमी । नवमी । २ सील । आर्द्रता ।

नमक-(ना०) लवण । लूण ।

नमक हराम-(वि०) १ सरकश । अधर्मी । २ कृतघ्न ।

नमकहरामी-(वि०) १ कृतघ्न । २ अधर्मी । (ना०) १ कृतघ्नता । २ अधम ।

नमकहलाल-(वि०)स्वामीनिष्ठ । वफादार ।

नमण-(ना०) १ तौलने में कुछ अधिक । २ तराजू में तौलते समय वस्तु की ओर झुकता पलडा । ३ झुकाव । ४ नमस्कार । प्रणाम । नमन ।

नमणो-(क्रि०) १ वंदन करना । प्रणाम करना । नमन करना । २ झुकना । नत होना । ३ नम्र होना । ४ हार मानना । ५ ताव होना । ६ शरण में आना । (वि०) विनीत । नम्र । विनय ।

नमता-(वि०) १ नीचे की ओर झुकता हुआ । नीचा । झुका हुआ । २ एक ओर को नीचे झुकता हुआ (तराजू का पलडा) । ३ शांत । नरम । ढीला ।

नमदो-(ना०) १ एक प्रकार का जमाया हुआ रेशमी या ऊनी कपडा । नमदा । २ मखमल का गद्दा ।

नमन-(ना०) नमस्कार ।

नमः-(अव्य०) १ नमन हो । २ नमन है । यथा—श्री गणेशायनमः

नमस्कार-(ना०)झुक कर किया जाने वाला अभिवादन । प्रणाम ।

नमस्ते-(अ य०) आपको नमस्कार ।

नमाज-(ना०) इसलामी मजहब के अनुसार का जाने वाली खुदा की बन्दगी ।

नमाडणो-(क्रि०) १ झुकाना । नमाना । २ विनीत बनाना । ३ नीचा दिखाना । ४ मजबूर करना । बाध्य करना । ५ प्रवृत्त करना । ६ झुका या दबा कर अधीन करना ।

नमाणो दे० नमाडणो ।

नमावणो-दे० नमाडणो ।

नमियो-(ना०) नौवें दिन का मृतक कर्म ।

नमूनदार-(वि०) १ उत्तम । २ नखरे बाज ।

नमूनो-(ना०) १ बानगी । बानगी । २ खाका । प्रतिरूप । ढांचा । ३ उपमा । ४ उदाहरण । ५ वह जिसके रूप गुण आदि का अनुकरण किया जाय । आदर्श । नमूना ।

नमो नारायण-(अव्य०)स यासी को किया जाने वाला नमस्कार ।

नमोरो-(ना०) बादशाह द्वारा आदेशित वह फरमाण (परवाना) जिस पर नौ मुहरें (शाही मुद्रा के ठप्पे) अंकित होते थे । नौमुहरा । नव माहरा । पक्का फरमान । नव मोहरो ।

नयण-(ना०) नयन । आंख ।

नयर-दे० नगर ।

नयो-दे० नवो ।

नर-(ना०) १ पुरुष । मनुष्य । मर्द । २ पुरुष जाति का कोई प्राणी या वस्तु । ३ पुरुष जाति वाचक शब्द । पुल्लिंग । (वि०) १ वीर । बहादुर । २ श्रेष्ठ ।

नरक-(ना०) १ धर्मशास्त्र के अनुसार वह स्थान जहां मरने के बाद पापियों की आत्मा को अपने कुकर्मों का फल भोगने के लिये जाना पडता है । दोजख । २ बहुत गंदा स्थान । ३ विष्ठा । मल । पाखाना ।

नरकवाडो-(ना०) बहुत गंदा स्थान ।

नरकुट-(ना०)नाक । नासिका ।

नरग–दे० नरक ।
नरगवाडो–दे० नरकवाडो ।
नरघो–(न०) ताल देने का एक वाद्य । तबला ।
नरज–(न०) काँटा । तराजू । तक ।
नरजाति–(ना०)१ पुरुष वर्ग । नरश्रेणि । २ पुल्लिंग । (व्या०) ।
नरजू–(ना०) खपरैल की छाजन के दीवाल से बाहर निकले हुए भाग को थामने के लिए दीवाल में लगाई जाने वाली खड़ी लकड़ी ।
नरडो–(न०) बंधन । चमड़े की रस्सी । नाडी ।
नरणो–दे० निरणो ।
नरतक–(न०) नर्तक । नृत्य करने वाला ।
नरतकी–(ना०) नाचने वाली । नर्त्तकी ।
नरती–(वि०) १ यथावश्यक । २ कम । थोडी । ३ खराब । निकृष्ट । ४ मृत्यु संदेश देने वाली (खबर) ।
नरतो–(वि०) १ यथावश्यक । २ कम । अल्प । ३ निकृष्ट । पतित । नीच ।
नरदळ–(न०) १ मानव समूह । २ सेना । ३ पदल सेना ।
नरदावो–दे० निरदावो ।
नरदेव–(न०)१ उपकारी तथा त्यागी पुरुष । २ राजा । ३ ब्राह्मण ।
नरनाथ–(न०) राजा ।
नर नारायण–(न०) १ मनुष्य और परमात्मा । २ एक ऋषि ।
नर नारी–(न०) पुरुष और स्त्री ।
नरनाह–(न०) राजा । नर नाथ ।
नरपति–(न०) राजा ।
नरपाळ–(न०) राजा । नृपाल ।
नरबदा–(ना०) नर्मदा नदी ।
नरभव–(न०) मनुष्य जन्म ।
नरम–(वि०)१ नरम । कोमल । मुलायम । २ सहल । आसान । ३ विनम्र । ४ गीला । पिचपिचा । ५ धीमा । सुस्त । मंदा । ६ निर्बल । ७ मंदा । सस्ता ।
नरमाई–(ना०) १ नरमी । सस्तापन । मंदी । २ नम्रता । ३ कोमलता ।
नरमी–दे० नरमाई ।
नरमेध–(न०) १ मनुष्य की बलिवाला यज्ञ । २ नर संहार । ३ महायुद्ध ।
नरमो–(न०) एक जाति का कपडा ।
नरलोक–(न०) मनुष्य लोक ।
नरलोय–(न०) नरलोक । मृत्युलोक ।
नरवै–(न०) नरपति । राजा ।
नर वर–(न०) राजा ।
नरस–(वि०) नीरस ।
नरसमद–(न०) १ जोधपुर (मारवाड) के राठौड राजाओं की दान, वीरता और उदारता की लोक विश्रुत उपाधि । २ मारवाड के महाराजा गजसिंह की उपाधि ।
नरसिंघ–दे० नरसिंह ।
नरसिंघ चवदस–दे० नृसिंह चतुर्दशी ।
नरसिंह–(न०) १ सिंह के समान वीर पुरुष । २ नृसिंह अवतार ।
नरसींगो–(न०) तुरही जैसा एक बाजा जिसे फूंक कर बजाते हैं । नरसिंघा ।
नरसू –(न०) बीता हुआ या आने वाला चौथा दिन । नरसो ।
नरहर–(न०) नृसिंह अवतार ।
नराज–दे० नाराज ।
नराजगी–(ना०) नाराजगी ।
नराट–दे० निराट ।
नराताळ–दे० निरांताळ ।
नराधम–(न०) महा दुष्ट व्यक्ति । अधम नर ।
नरीताळ–दे० निरीताळ ।
नरेण–(न०) राजा लोग । दे० नरेहण ।
नरेश–(न०) राजा ।
नरेस–(न०) राजा । नरेश ।

नरेस वरम्म-(न०)१ स्वामी के लिए कवच रूप। २ राजा का अंग रक्षक।

नरेहण-(वि०) १ निष्कपट। निश्छल। २ निष्कलंक। निर्दोष। ३ निष्पाप। ४ नहीं हटने वाला। पीछे पाँव नहीं देने वाला। ५ जबरदस्त। (न०) राजा। (अ०य०) राजा से। राजा के द्वारा।

नरेहर-दे० नरेहण।

नळ-(न०) १ पेट की बड़ी आंत। २ पडू की एक नाड़ी। ३ धातु की एक लंबी नलिका। नल। ४ एक वाद्य। ५ सिंह आदि हिंसक पशुओं के आगे के पाँव। ६ उनके आगे के पाँव की लंबी हड्डी। ७ घोड़े के अगले पाँव की लंबी हड्डी। ८ घोड़े का नथुना। ६ निषध देश के राजा का नाम जो दमयंति का पति था। १० सेतु बाँधने वाला राम की सेना का एक वानर।

नळको-दे० नळा।

नलज-(वि०) निलज्ज। बेशर्म।

नलजियो-(वि०) लज्जित नहीं होने वाला। निलज्ज।

नलजो-(वि०) निलज्ज। नलज।

नळणी (ना०) नलिनी। कमलिनी।

नळराजा-दे० नळ सं० ६

नळियो-(न०) १ नलिका। छोटा और पतला नल। २ मिट्टी का पका हुआ अर्द्ध वृत्ताकार टुकड़ा जो घर की छाजन पर दो खपड़ों की संधि ढकने के लिए रखा जाता है। नरिया। अर्द्ध वृत्ताकार खपड़ा। ३ मूढ़ या तिमणिया नामक स्त्रियों के गले में पहनने के गहने का वह भाग जो नलिका के जैसा होता है और जिसमें डोरी डाल कर गले में पहना जाता है।

नळी-(ना०) १ घुटने से नीचे की पाँव की हड्डी। २ कपड़ा बुनने की नली। ३ नलिका। भूंगळी। ४ एक फूंक वाद्य। तुरही।

नळो-(न०) १ सिंह चीते आदि का अगला पाँव। २ हिंसक पशुओं के अगले पाँव की लंबी हड्डी। ३ घोड़े के अगले पाँव की लंबी हड्डी। ४ नाला। ५ पर्वत।

नव-(वि०) १ नया। २ चार और पाँच। नौ। (न०) नौ की संख्या। ६'

नवकार मंत्र-(न०) जैन धर्मानुयायियों के जपने का एक मंत्र। जैनों का प्रसिद्ध नमस्कार मंत्र।

नवकारसी-दे० नोकारसी।

नवकुळी-(वि०) नौ कुल वाले (नाग)।

नवकोट-(न०) १ मारवाड़ देश। २ मारवाड़ के प्रसिद्ध नौ किले। ३ एक ऐतिहासिक नगर का नाम।

नवकोटी-(वि०) नौ प्रसिद्ध दुर्गों वाला (मारवाड़ देश)।

नवकोटी मारवाड़-(न०) नौ प्रसिद्ध और बड़े दुर्गों वाला मारवाड़ राज्य।

नवखंड-(न०) पौराणिक भूगोल के अनुसार पृथ्वी के नव खंड। २ समस्त पृथ्वी। ३ जंबूद्वीप के नौ खंड।

नवगढ-(न०) मारवाड़ के प्रसिद्ध नव किले।

नवग्रह-(न०) फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह।

नवघरी-दे० नोघरी।

नवचंडी-(ना०) १ नौ दुर्गा। २ नौ दुर्गाओं का पूजन हौम इत्यादि।

नवजणो-(न०) गाय को दुहते समय उसके पिछले पाँवों को बाँधने की रस्सी। छाँद। नोई। वगहा। नोजणो। नूजणो।

नवतर-(न०) जोतने से छोड़ा जाने वाला (बुवाई नहीं किया जाने वाला) खेत का कुछ भाग।

नवतेरही-(ना०)१ बाईसी सेना। बाईसी। २ बाईस सूरों की सेना।

नवदुगा-(ना०) १ नौ दुगा देवियाँ। २ नौरात्र में पूजी जाने वाली नौ दुर्गाएँ।

नवद्वार-(न०) शरीर के आंख, नाक, कान और गुह्येंद्रियों के दो २ और एक मुँह ये नौ द्वार।

नवधाभक्ति-(ना०) नौ प्रकार की भक्ति। श्रवण कीर्तन स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।

नवनवो-(वि०) १ नया नया। नया। २ विविध प्रकार का। ३ अजनबी।

नव नहचै-(अव्य०) निश्चय ही।

नवनाडा-(ना०) १ स्त्री के वस्त्र परिधान में लगने वाली नौ गाँठें। २ वे नौ ताबीज जो पति को वश में करने के लिये कुलटा स्त्री अपने वस्त्रों की नौ गाँठों में बाँधे रहती है। ३ कुलटा स्त्री।

नवनाथ-(न०)१ नौ प्रसिद्ध नाथ सन्यासी। २ नाथ संप्रदाय के संन्यासियों का एक भेद।

नवनिधि-(ना०)१ नौ प्रकार की निधियाँ। २ कुबेर का खजाना।

नवनीत-(न०) मक्खन। माखण।

नववीसी-(वि०) एक सौ अस्सी।

नवमी-(ना०) चान्द्रमास के दोनों पक्षों का नौवाँ दिन। नम।

नवमो-(वि०) गिनती में नौ के स्थान पर आने वाला (नवम। नौवाँ।) क्रम में आठ के बाद का। २ दे० नमियो।

नवमोहरो-दे० नमोरो।

नवरता-दे० नवरात।

नवरतो-(न०) नौरात्रि का एक कोई एक दिन।

नवरंग-(न०) १ औरंगजेब। नौरंग। २ एक छंद। ३ सुंदरता। (वि०) १ विविध प्रकार का। २ नये प्रकार का। ३ रूपवान।

नवरंगी-(वि०) १ नौ रंग की। २ रूपवान। ३ छलछबीली। ४ अद्भुत। विचित्र।

नवराई-दे० निवराई।

नवरात-(ना०)१ चैत और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें दुर्गा की विशिष्ट पूजा की जाती है। नवरात्र। नौरता। २ प्राचीन समय का एक रात्रि यज्ञ जो नौ रात दिनों में समाप्त होता था।

नवरातर-दे० नवरात।

नवरात्री-दे० नवरात।

नवरास-दे० निवरास।

नवरी-(वि०) १ खाली। २ बेकाम। निष्क्रिय। बेकार। ३ विधवा। ४ काम से फारिग। निवृत्त।

नवरो-(वि०) १ खाली। २ बेकाम। निष्क्रिय। बेकार। ३ काम से निबटा हुआ। फारिग। निवृत्त। ४ कंवारा। ५ विधुर।

नवरोजो-(न०) १ बादशाह अकबर द्वारा प्रवर्तित एक उत्सव जिसमें उसके अधानस्थ राजा नवाब और उनकी पत्नियों को सम्मिलित होना पड़ता था। नौरोजा। २ पारसियों के वर्ष का पहिला दिन। नौरोज। पारसी वर्ष के फरवर दिन मास का पहिला दिन। ३ पारसियों के नये साल का त्यौहार। पतेती।

नवल-(वि०) नया। नवो। नयो।

नवलखी-(ना०) १ कच्छ के निकट का सिंध प्रदेश। सिंध का एक प्रदेश। २ सिंध देश। ३ सौराष्ट्र का एक बंदर। ४ श्रेष्ठ जाति की घोड़ी। (वि०) १ सिंध के एक भाग का विशेषण। २ नौ लाख के मूल्य की। नौलखी। बहुमूल्य।

नवलखो-(वि०) नौ लाख के मूल्य का। २ बहुमूल्य।

नवल बनी-(ना०) नव वधू। नवोढ़ा। २ दुलहिन। बींदणी।

नवल बनो-(न०) दुलहा। वर। बींद। बींदराजा।

नवलागी-(वि०) १ नया। नवीन। २ मनोहर। सुन्दर। ३ नित्य नया प्राप्त करने वाला। (ना०) १ नव यौवना। २ नवल बाला।

नवलायक-(वि०) १ नालायक। अयोग्य। २ बदमाश। ३ मूर्ख।

नवलो-(वि०) नया। नवल। नवो।

नववींसी-दे० नववीसा।

नवसेरी मुनसब-(अ०न०) एक बादशाह मनसब।

नवसर हार-(न०) नौ लड़ा हार। नौलड़ा हार।

नव सहँसा-(अ०न०) १ राठौड़ क्षत्रियों की एक उपाधि। राठौड़ वंश का राजपूत। २ नौ सहस्र गांवों का अधिपति राव मालदेव। राव मालदेव का विरुद।

नवसादर-(न०) नौसादर।

नवसाहसो-दे० नवसहँसा।

नवहथी-(ना०) १ सिंहनी। शेरनी। २ २ ऊँटनी। ३ तलवार। (वि०) १ नौ हाथ की लंबी। २ वीरांगना।

नवहथो-(न०) १ सिंह। शेर। २ ऊँट। (वि०) १ नौ हाथ का लंबा। २ वीर। बहादुर।

नवम्बर-(न०) ईसवी सन् का ग्यारहवाँ महीना। नावम्बर।

नवाई-(ना०) १ नवीनता। नयापन। २ आश्चर्य। अचरज। (वि०) १ अद्भुत। अपूर्व। अनोखा। २ नवीन। नवाई।

नवाजणो-दे० निवाजणो।

नवाजस-दे० निवाजस।

नवाजूना-(वि०) नये तथा पुराने जानने योग्य (समाचार)।

नवाजूनी-(ना०) उथलपुथल। बहुत बड़ा परिवर्तन।

नवाण-दे० निवाण।

नवाणू-दे० निनाणू।

नवात-(ना०) मिसरी। मिश्री। साकर।

नवादो-दे० नवा०।

नवाद-(अ०न०) १ नये सिर से। फिर से। (वि०) १ नया। नवीन। २ दूसरा। और।

नवानो-(वि०) नयो। नवीन।

नवाया-दे० निवाया।

नवा गढ़-(न०) १ नौ कोटि मारवाड़। २ नौ ही गढ़। (वि०) नौ प्रसिद्ध गढ़ों वाला।

नवा री तरह-(अ०प०) सामर्थ्य से बाहर होना सा। जान कर सहने की ताकत हो सा।

नवार-दे० निवार।

नवि-(अ०प०) नहीं।

नवी-(वि०) नयी। नवीन। (ना०) नव वधू।

नवाजूनी-दे० नवाजूनी।

नवीत-(मि०वि०) निमय।

नवीसदो-(न०) १ आय व्यय और क्रय विक्रय आदि का हिसाब लिखने वाला व्यक्ति। मुनीम। २ हिसाब किताब का विशेषज्ञ व्यक्ति। गणितज्ञ। ३ लिखने पढ़ने में माहिर। ४ लिपिक। लेखक।

नवेली-(ना०) नव वधू।

नवेसर-(अ०प०) १ पुनः। और। २ नये सिरे से। ३ नये ढंग से।

नवेसर (अ०प०) दे० नवसर।

नवो-(वि०) १ नया। नवीन। २ तुरत का। ताजा। ३ अपरिचित। न जाना हुआ। ४ अनुभव हीन। ५ कोरा। अछूता। ६ स्थानापन्न। बदला हुआ।

(अव्य०) १ पुन । फिर । २ पुनरपि । फिर से । फिर भी ।

नवो जूनो-*(वि०)* १ नया और पुराना । २ पहिले और पीछे का । ३ सर्वदा सब । ४ जो हो सो ।

नवोडी-*(वि०)* १ जो नयी हो । २ अभी तयार की हुई ।

नवोडो-*(वि०)* १ जो नया हो । २ नया । ३ अभी तैयार किया हुआ ।

नवोढा-*(ना०)* १ नव विवाहिता । स्त्री । वधू । २ एक नायिका ।

नवो नकोर-*(वि०)* बिलकुल नया ।

नव्वो-*(न०)* १ नौ का अंक, '९' । २ सौ वर्ष की सवत् गणना मे आने वाला नौवाँ वर्ष ।

नशो-दे० नसा ।

नश्तर-दे० नस्तर ।

नश्वर-*(वि०)* नाश होने वाला ।

नष्ट-*(वि०)* १ जिसका नाश होगया हो । २ खराब । नीच । ३ मृत ।

नष्टभ्रष्ट-*(वि०)* सर्वथा नष्ट । बरबाद । पायमाल ।

नस-*(ना०)* १ शरीर की रक्तवाहिनी । नलिका । २ स्नायु । रग । ३ नाडी । ४ गरदन । ५ पत्ते का रेशा । ६ नस्य । सू घनी । ७ मुमेंद्री । लिंगेंद्री ।

नसकोर-*(ना०)*१ नाक मे से खून निकलने वाला रक्त । नकसीर । २ नाक से खून निकलने का रोग । ३ नाक का छेद ।

नसणो-*(क्रि०)* नाश होना ।

नसल-*(ना०)* १ नस्ल । वश । कुल । २ सतान ।

नसलव-*(न०)* ऊट ।

नसलवड-*(न०)* ऊँट ।

नसीत-*(ना०)* १ नसीहत । सीख । २ उपदेश ।

नसीब-*(न०)* भाग्य । प्रारब्ध ।

नसीबदार-*(वि०)* दे० नसीबधारी ।

नसीबधारी-*(वि०)* नसीब वाला । भाग्य शाली । नसीबवर ।

नसीहत-दे० नसीत ।

नस-गोसैं-*(वि०)* १ प्रामाणिक रूप से । सत्यता पूर्वक । २ सविवरण और सप्रमाण ।

नसो-*(न०)* १ नशा । कैफ । मद । २ मादक द्रव्य । ३ धन, विद्या, पद का अभिमान ।

नस्तर-*(न०)* १ एक शस्त्र । २ चीरा फाडी करने का डाक्टर का एक औजार । शस्त्र चिकित्सा का तेज चाकू । नश्तर ।

नह-*(अव्य०)* नही ।

नहचळ-*(वि०)* निश्चल ।

नहचेरा-दे० नहचै ।

नहचै-*(क्रिoवि०)* १ निश्चय ही । अवश्य । २ नि सदेह । *(न०)* १ निर्णय । २ पक्का विचार ।

नहचो-*(न०)* १ सदेह रहित ज्ञान । निश्चय । २ धीरज । ३ भरोसा । ४ सतोष ।

नहणो-*(क्रि०)*१ नाथना । वश मे करना । २ बनाना । ३ रखना । धरना । ४ धारण करना । थामना । ५ ग्रहण करना । लेना । *(न०)* बढइ का एक औजार । नहियो ।

नहरणी-*(ना०)* नख काटने का औजार । नहरनी । नखहरणी ।

नहराळ-*(न०)* १ तीक्ष्ण नाखूनो वाला मासाहारी पशु या पक्षी । २ मासाहारी पशु पक्षियो के तीक्ष्ण नख । *(वि०)* तीक्ष्ण नाखूना वाला ।

नहराळो-*(न०)* तीक्ष्ण नखो वाला मांसा हारी पशु या पक्षी ।

नहग-दे० निहग ।

नहियो-दे० नहणो ।

नहितर-*(अव्य०)* १ नहीं तो । २ वरना । अन्यथा । ३ अथवा । किम्वा ।

नहिं तो-दे० नहितर ।

नहीं-(अव्य०) न । ना । निषेध । नहीं ।
नहींतर-दे० नहिंतर ।
नहोरियो-दे० नोरियो ।
नहोरो-(न०)१ अनुरोध । निहोरा। आग्रह। २ मनुहार । खुशामद । ३ प्रार्थना । मिन्नत । ४ बाड आदि से घिरा हुआ पशुओं को बाँधने का स्थान । बाड़ा । ५ दीवाल से घिरा हुआ चौक या खुला मकान जहां बड़े भोज के बनाने और ज्योनार की व्यवस्था होती है ।
नखावणो-दे० नखावणो ।
नग-(न०) १ कोई एक वस्तु । अदद । नग । २ एक का परिमाण । इकाई । ३ जवाहरात । रत्न । ४ मोती । ५ संतान । ६ कुपुत्र । ७ कुपात्र । ८ पाँव । (वि०) १ नंगा । विवस्त्र । २ निलज्ज । ३ एकाकी ।
नंग धडंग-(वि०) १ नंगा । विवस्त्र । २ मुहफट । ३ बदमाश । ४ बेशर्म । ५ विधुर । ६ संतान रहित । ७ घर या कुल में एक मात्र । एकाकी ।
नगळियो-(न०) मिट्टी का छोटा जलपात्र ।
नगो-(वि०) विवस्त्र । नंगा । नागो ।
नँढरी-(वि०) नन्ही । छोटी । (ना०) १ नवजात कन्या । बच्ची । २ छोटी लड़की ।
नँढरो-दे० नँन्यो ।
नँन्यो-(वि०) नन्हिया । नन्हा । छोटा । (न०) १ बच्चा । शिशु । २ छोटा लड़का ।
नंदो-(वि०) नन्हा । छोटा ।
नंद-(वि०) नौ । ९ । (न०) १ श्रीकृष्ण के पालक पिता । २ एक राग । ३ [illegible] । ४ वणिक । बनिया । [illegible] ६ मगध राजाओं की [illegible] [illegible] ।
नंदकुँवर-(न०) १ [illegible] श्रीबालकृष्ण । २ [illegible]

का नाम । शिशु । बच्चा ।
नंदगिर-(न०) १ जूनागढ का प्राचीन नाम । २ गिरनार पर्वत । ३ अर्बुद गिरि । आबू का पर्वत । ४ गिरिराज । गोवर्धन पर्वत ।
नंदण-(न०) पुत्र । नंदन ।
नंदणो-(क्रि०) १ दीपक बुझाना । २ दीपक का गुल होना । बुझना । ३ आनंदित होना । ४ विदा करना ।
नंदनवन-(न०) नंदन नाम का इन्द्र का उद्यान ।
नंदनंदण-(न०) श्रीकृष्ण ।
नंद-राणी-(ना०) नंद की पत्नी । यशोदा ।
नंदा-(ना०) १ दुर्गा । पार्वती । २ प्रतिपदा छठ तथा एकादशी ।
नंदी-(ना०)१ नदी । २ शिव का वाहन । वृषभ । बैल । नांदियो ।
नंबर-(न०)१ संख्या । अंक । २ नम्बर ।
नंबरी-(वि०) १ नंबर वाला । २ प्रसिद्ध । श्रेष्ठ ।
ना-(अव्य०) नहीं । न । मत । [illegible] (प्र यo) संबंध सूचक [illegible] विभक्ति [illegible] बहुवचन रूप । [illegible] जैसे [illegible] वादळा ।
नाइक-दे० नायक ।
नाई-(न०)१ [illegible] २ नाई [illegible]

[illegible]

नाक-(न०) १ नाक । नासिका । २ इज्जत । आबरू । ३ स्वर्ग । ४ आकाश । ५ प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु ।
नाक कटणो-(मुहा०) बेइज्जत होना ।
नाक काटणो-(मुहा०) बेइज्जत करना ।
नाक कटियो-(वि०) १ नाक कटा । २ नकटा । ३ निर्लज्ज ।
नाक बढणो-दे० नाक कटणो ।
नाक वाढणो-दे० नाक काटणो ।
नाक मे सळ घालणा-(मुहा०) १ मना करना । २ घृणा करना । ३ नाराज होना । ४ अनिच्छा प्रगट करना ।
नाकाबंधी-(ना०) १ प्रवेश द्वार पर बैठाई गई चौकी । २ नाकों पर लगाई जाने वाले प्रवेश बंधी । ३ किसी रास्ते या प्रवेश द्वार में आगे बढने की मनाई ।
नाकाबिल-(वि०)अयोग्य । नकामो ।
नाकाम-(क्रि०वि०) नहीं ना । (वि०) १ निकम्मा । बिना काम का । २ कृपण । व्यर्थ । बेकाम । (न०) नहीं का उच्चारण ।
नाकारणो-दे० नकारणो ।
नाकारो-(न०) न या नहीं का बोध कराने वाला शब्द । नकार । इनकार । (वि०) निकम्मा । अयोग्य । नकारा । (अव्य०) नहीं ।
नाकी-(ना०) १ अंगरखी-कंचु की आदि में बटन डालने का नकुआ । २ प्रतिष्ठा । इज्जत ।
नाको-(न०) १ छेद । २ सुई या सुए का छेद । नक्का । नाका । ३ कर वसूल करने की चौकी । ४ गाँव में प्रवेश करते समय लिया जाने वाला कर । चुंगी । राहदारी । नकुआ । ५ छेद । क्षत । ६ गली या बाजार का मोड या प्रवेश द्वार । नुक्कड । ७ किनारा । ८ प्रमुख स्थान ।
नाखोर-दे० नखोर ।
नाखणो-दे० नांखणो ।
नाखत-(न०) नक्षत्र । तारा । ग्रह ।
नाखत्र-दे० नखत्र ।
नाखप-(ना०) अप्रावश्य ।
नाखिन-दे० नाखून ।
नाखून-(न०) नख ।
नाग-(न०) १ सांप । २ हाथी । ३ एक प्राचीन जाति । ४ पर्वत । ५ सीसा नाम की एक धातु । ६ देवों की एक जाति । ७ आठ का संख्यासूचक शब्द ।
नाग कन्या-(ना०) नाग जाति की कन्या ।
नागकेसर-(ना०) १ एक वनस्पति । २ कबाबचीनी । शीतलचीनी ।
नागछोर-दे० अफीम ।
नागछोळ-दे० नागछोर ।
नाग झाग-(न०) अफीम ।
नागडी-(वि०)१ बदमाश । २ धूर्त्त(स्त्री)।
नागडो-(वि०) १ बदमाश । धूर्त्त । २ नंगा ।
नागण-(ना०) नागिन ।
नागणी-दे० नागण ।
नागणेची-(ना०) राठौड़ों की कुल देवी ।
नागदमण-(न०) १ श्रीकृष्ण द्वारा किया जाने वाला काली नाग का दमन । २ कवि सांया झूला के एक काव्य ग्रंथ का नाम ।
नागदहो-(न०) १ मेवाड में एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान । २ नागदहा गाव के नाम पर मेवाड के राणाओं की एक उपाधि ।
नागपहाड-(न०) अजमेर के निकट आया वाला (अरावली) का एक भाग जिसमें से लूणी नदी निकलती है ।
नागपांचम-(ना०) १ नाग पूजा की भादों वदी पंचमी । नागपंचमी । २ नाग पूजा का एक त्योहार ।

नागफणी (ना०) १ एक वनस्पति । २ एक आभूषण ।

नागफीण-(न०) अफीम ।

नागफैण-दे० नागफीण ।

नागम-(ना०) छुट्टी । अवकाश । नागा । (वि०) अनजान । अज्ञान । बेखबर ।

नागर-(न०) १ नागर जाति । २ नागर जाति का व्यक्ति । ३ ब्राह्मणों की एक शाखा । ४ श्रीकृष्ण । ५ सोंठ । (वि०) १ नागर संबंधी । २ नागर जाति का । सभ्य । चतुर ।

नागर अपभ्रंश-(ना०) अपभ्रंश भाषा का एक प्रकार ।

नागरमोथो-(ना०) एक वनस्पति । नागर मुस्ता ।

नागरवेल-(ना०) १ पान बेलि । ताबूल लता । २ तांबूल ।

नागराज-(न०) शेष नाग ।

नागरी-(ना०) १ भारत की वह प्रमुख लिपि जिसमें संस्कृत, मराठी, राजस्थानी व हिन्दी लिखी जाती हैं । देव नागरी लिपि । २ नगर में रहने वाली स्त्री । ३ विद्वान स्त्री । ४ चतुर स्त्री ।

नागरीदास-(न०) भक्त कवि किशनगढ नरेश सावंत सिंह का काव्य नाम ।

नागलोक-(न०) पाताल ।

नागा-(ना०) १ छुट्टी । तातील । नागम । २ अनुपस्थिति । ३ अंतर । बीच । ४ नंगे रहने वाले साधु । ५ वैरागी साधुओं की एक शाखा । ६ एक जाति जो आसाम में रहती है ।

नागाई-(ना०) १ बदमाशी । लुच्चाई । २ धूर्तता । ३ निर्लज्जता । ४ हठीला पन । हठ । जिद ।

नागाणो-(न०) १ नागौर शहर । २ नागा समूह । ३ नागा साधुओं का झुंड । (वि०)१ नग्न । नंगा । २ निर्लज्ज ।

नागाणराय-दे० नागणेची ।

नागाणो-(न०)१ नागौर नगर । २ नागौर नगर का साहित्यिक तथा लोकभाषी नाम ।

नागी-(वि०) १ वस्त्र हीना । आवरण हीन । नंगी । २ निर्लज्जा । ३ भग ड़ाल् । ४ कुलटा ।

नागीराड-(ना०) १ एक गाली (स्त्री को)। २ छिनाल स्त्री ।

नागो-(वि०) १ विवस्त्र । २ नंगा । निलज्ज । नलजो । ३ भगडाल् । (न०) वैरागी साधु ।

नागो तड ग-(वि०) बिलकुल नंगा । वस्त्र हीन । साव नागो ।

नागोतूत-(वि०) बेशर्म । बिल्कुल बेशर्म ।

नागोबूच-(वि०)१ नीच और दुष्ट । २ बद माश । ३ निलज्ज । ४ जिसके परिवार में कोई नहीं हो । कुटुम्बहीन ।

नागोभूंगो-(वि०) १ बिल्कुल नंगा । २ बेइज्जत । ३ निर्धन ।

नागोर-(न०) मारवाड का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर ।

नागोरण-(ना०) राजस्थान के बीकानेर शेखावाटी आदि उत्तर पूर्व के प्रदेशों में दक्षिण पश्चिम में नागौर की ओर से चलने वाला वर्षा अवरोधक वायु ।(वि०) १ नागोर संबंधी । २ नागौर की (ना०) ।

नागोरी-(वि०) १ नागौर प्रदेश की नस्ल का (प्रसिद्ध बैल) । २ नागौर के नाम से प्रसिद्ध (कारीगरी में प्रसिद्ध मुसलमानी लुहार) । ३ नागोर का रहने वाला । नागोर निवासी । ४ नागौर संबंधी । (ना०) १ नागौर के आसपास का का प्रदेश । २ हथकड़ो बड़ी (नागौर में बनने के कारण) ।

नागोरी गहणो-(न०) हथकड़ी बेड़ी ।

नागो लुच्चा-दे० नागा बूच ।

नाच-*(न०)* १ नाचने की क्रिया या भाव। नृत्य। २ नाचने का उत्सव। ३ नखरा।

नाचकूद-*(न०)* १ उछल कूद। २ शरारत। ३ नाच तमाशा।

नाचण-*(ना०)* १ नाचने वाली। नृत्य की नर्तकी। २ नाज नखरो वाली स्त्री। नखरीली। ३ वेश्या गायिका। ४ विवाहादि म गाये जाने वाले समधिन सबधी गाली और व्यग्य के लोकगीतों की एक नायिका।

नाचणियो-*(न०)* नाचने वाला। नर्तक।

नाचणो-*(क्रि०)* १ नृत्य करना। नाचना। २ गोलाई मे घूमना। चक्रवत फिरना। गोल गोल फिरना। ३ क्रोध या यत्रना से ऊचा नीचा होना।

नाचरणो-*(क्रि०)*[न+आचरणो]आचरण नही करना।

नाचीज-*(वि०)* १ तुच्छ। २ निकम्मा। निकामो।

नाचेत-*(वि०)* बेहोश। अचेत।

नाछूटक-*(अव्य०)* विवशता से। लाचारी से।

नाज-*(न०)* १ अनाज। अन्न। २ नखरा ३ घमड।

नाजर-*दे० नाजिर।*

नाजरपाट-*(न०)* एक प्रकार का कपडा।

नाजायज-*(वि०)* १ अवध। २ अनुचित।

नाजिम-*(न०)* एक सरकारी प्रबधकर्ता।

नाजिर-*(न०)* १ पुरुष भेष मे रहनेवाला हिजडा। खोजा। २ निरीक्षक। ३ हाकिम। ४ अत पुर का खोजा कार्यकर्ता।

नाजुक-*(वि०)* १ अशक्त। कमजोर। २ २ निकृष्ट। खराब। ३ सूक्ष्म। पतला। ४ कोमल। सुकुमार। ५ तनिक आघात म फूट जाने वाला। ६ अवनत। पतित। ७ सकट पूर्ण। ८ गभीर।

नाजू-*(ना०)* १ प्रियतमा। २ कोमलांगी। नाजो। ३ लाडली। दुलारी। ४ राजस्थानी लोक गीतो की एक नायिका।

नाजोगो-*(वि०)* १ अयोग्य। नालायक। २ नही होने योग्य। ३ नही करने योग्य।

नाजोरी-*दे० नजोरी।*

नाजोरो-*(वि०)* १ अशक्त। निबल। २ विवश। ३ असमर्थ।

नाट-*(न०)* १ नृत्य। २ नकल। स्वाग। ३ काटा। ४ चुभे हुए काँटे को निकालने पर अग म रहने वाला उसका तीखा भाग। फाँस। ५ अभाव। ६ इनकार।

नाटक-*(न०)* १ रगशाला म किया जाने वाला चरित्र घटनाओ का प्रदर्शन। २ दृश्यकाव्य। ३ ढोग।

नाटणो-*(क्रि०)* १ नटना। इनकार करना। २ कहकर मुकर जाना। ३ नृत्य करना।

नाट थाट-*(न०)* १ नृत्य का थाट। नृत्योत्सव। २ ठाट का अभाव। ३ सकट।

नाट वाळ-*(वि०)* कजूस।

नाटसाल-*(वि०)* १ जबरदस्त। शक्तिशाली। २ वीर। योद्धा। ३ खटकने वाला।

नाटारभ-*(न०)* १ नृत्य। २ नृत्य नाटक।

नाटी-*(वि०)* १ जबरदस्त। शक्तिशाली। २ ठिगनी। ठींगणी।

नाटो-*(वि०)* १ जबरदस्त। २ ठिगना। ठींगणो। ठींगो।

नाठ-*(ना०)* भाग-दौड।

नाठणो-*(क्रि०)* १ भागना। भाग जाना। २ दौडना।

नाड-*(न०)* १ छोटी नाडी। छोटा जलाशय। नाडकी। २ पानी का गड्ढा।

नाड-*(ना०)* १ नस। २ नाडी। नब्ज। ३ गरदन।

नाडकियो-(न०) १ छोटा कच्चा तालाब । नाडो । २ पानी भरा हुआ खड्डा ।
नाडकी-दे० नाडी ।
नाडको-दे० नाडो ।
नाडर-दे० निडर ।
नाडा-छोड-(न०) १ पिशाब । मूत । लघु शंका । २ पिशाब करने को जाने की क्रिया ।
नाडा छोडकरणो-(मुहा०)पिशाब करना ।
नाडा टाकण-(ना०) वर्षा ऋतु मे दक्षिण पश्चिम की ओर से चलने वाली वर्षा अवरोधक वायु । नाडा टोकण ।
नाडा टोकण-दे० नाडा टाकण ।
नाडियो-दे० नाडकियो ।
नाडी-(ना०) तलाई । बिना घाट का छोटा तालाब । पाव्वर । नाडकी ।
नाडी-(ना०) १ नस । २ नब्ज । नाडी । ३ चमडे की रस्सी । ४ रस्सी ।
नाडी-तोड-(वि०) १ जबरदस्त । २ बल शाली । सँठो । ३ युवा ।
नाडी धमण-(न०) लुहार ।
नाडी वैद-(न०) नाडी देखकर निदान तथा चिकित्सा करने वाला वैद्य ।
नाडीव्रण-(न०) नासूर ।
नाडो-(न०) छोटा कच्चा तालाब । नाडकियो ।
नाडो-(न०) १ सूत का नारा । लहँगा आदि बाँधने का फीता । इजारबंद । २ नवजात शिशु का नाल । आँवळ । जेरी । ३ चमडे का रस्सा ।
नाडा-छोडणो-दे० नाडा छोडणो ।
नाडो छोडणो-(मुहा०) पिशाब करना । मूतणो ।
नाण्व-(ना०) १ बनरतोब । २ अम्य वस्तिपत ।
नाण-(न०) ज्ञान । बोध ।
नाणणो-(क्रि०) १ [न+आणणो] नहीं लाना । २ नहीं आने देना ।
नाण-विनाण-(न०)ज्ञान विज्ञान ।
नाणा बजार-(न०) १ सराफी बाजार । सराफा । २ जौहरी बाजार ।
नाणा-भीड-(ना०) पैसे की तंगी । अर्थ संकट ।
नाणो-(न०) १ धन । द्रव्य । २ रुपया पैसा । ३ चलता सिक्का । प्रचलित मुद्रा ।
नातणो-(न०) अगोछा । गमछा ।
नातर-(न०) १ रक्त प्रदर का रोग । २ रजस्राव । (अव्य०) नहीं तो ।
नातरात-(ना०)१ नातरो की हुई स्त्री । २ पुनलग्न की हुई स्त्री । पुनर्विवाहिता ।
नातरायत-दे० नातरात ।
नातराई-(वि०) १ जिस जाति मे स्त्री का पुनलग्न या नाता हुआ हो । (उसका विशेषण) नातरात । २ जिस व्यक्ति ने (पुनर्विवाह) नाता किया हो या जो नात रात का पुत्र हो (उसका विशेषण)।
नातरो-(न०) १ विधवा स्त्री का (बिना लग्न विधि के) दूसरा पति करने की एक विधि । विधवा का दूसरा पति करना । २ विधवा स्त्री का पुनलग्न ।
नातो-(न०) १ संबंध । रिश्ता । २ दे० नातरो ।
नाथ-(न०) १ ईश्वर । २ श्रीकृष्ण । ३ मालिक । स्वामी । ४ पति । शौहर । खाविंद । ५ राजा । ६ नाथ सम्प्रदाय । ७ सन्यासियों की एक उपाधि । सन्या सियों की दस उपाधियों में से एक । ८ गोरखपंथियों की एक उपाधि । ९ बैल आदि पशुओं को वश में रखने के लिए उनके नाक में डाली जाने वाली रस्सी ।
नाथ अनाथ-(न०)अनाथों के नाथ। ईश्वर ।
नाथणो-(क्रि०)१ बैल आदि का नाक बींध कर उसमें रस्सी डालना । नाथना । २ वश में करना । नाथना ।

नाथद्वारो-*(न०)* मवाड मे वल्लभ सम्प्रदाय क श्रीनाथजी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ स्थान। नाथद्वारा। श्रीनाथ द्वारा।

नाथपूत-*(न०)* कामदेव।

नाथवाळो-*(वि०)* पराधीन। *(न०)* ऊट, बल आदि जानवर।

नाथी-रो-वाडो-*(अ०य०)* १ सबक लिय खुला स्थान। बरोक टोक आन जान की जगह। २ व्यभिचारिणी स्त्रियो का अड्डा।

नाद-*(न०)* १ अव्यक्त शब्द। २ अनहद शब्द। ३ ध्वनि। शब्द। ४ शहनाई, नफीरी आदि का ध्वनि संगीत। ५ संगीत। ६ हरिण के सींग का एक वाद्य। सींग। सींगडी। ७ भारी शब्द। ८ घोर शब्द। गजन। ९ गव। अभिमान।

नादम-*(वि०)* १ निकम्मा। वदम। २ अशक्त।

नादरणो-*(क्रि०)* [न+आदरणो] १ प्रयत्न नही करना। २ आदर नही करना। ३ स्वीकार नही करना।

नादान-*(वि०)* १ नासमझ। मूख। २ छोटी ऊमर का।

नादारी-*(ना०)* १ ऋणमोचनाशक्ति। दिवालियापना। २ दिवाला। ३ गरीबी। ४ कायरता।

नादिरशाह-*(न०)* एक जुल्मी बादशाह।

नादिरशाही-*(ना०)* १ जुल्मी राज्य कारोबार। २ भारी अंधेर या अत्याचार। ३ निरकुश शासन।

नादेत-*(वि०)* १ सवसाधारण द्वारा प्रशसित। २ कीर्तिमान। यशस्वी।

नानक-*(न०)* सिक्ख सप्रदाय के सस्थापक महात्मा।

नानक पथ-*(न०)* गुरु नानक द्वारा स्थापित पथ।

नानकपथी-*(न०)* गुरु नानक के मत का अनुयायी।

नानकशाही-*(न०)* १ नानकशाह का शिष्य। २ मँगता। *(वि०)* झगडाखोर।

नानडियो-*(न०)* छोटा बच्चा। *(वि०)* छोटा।

नानडी-*(ना०)* छोटा बच्ची। *(वि०)* छोटी।

नानम-दे० नैनम।

नानाणो-*(न०)* ननिहाल।

नाना सुसरो-*(न०)* पति क लिय पत्नी का और पत्नी क लिय पति का नाना। ननियाससुर। नानीसुसरो।

नानी-*(ना०)* माता की माता। मातामही। नानी।

नानी सासरो-*(न०)* पति या पत्नी के लिय एक दूसर का ननिहाल।

नानी-सासू-*(ना०)* पति या पत्नी की नानी सास।

नानी सुसरो-दे० नाना सुसरो।

नानेरो-दे० नानाणो।

नान्नो-*(न०)* बाप का ससुर। माता का पिता। मामा का बाप। मातामह।

नान्हडियो-*(वि०)* छोटा। नन्हा। *(न०)* छोटा बच्चा।

नान्हो-दे० ननो।

नाप-*(न०)* लम्बाई चौडाई का परिमाण।

नापट-*(न०)* नाई। हज्जाम। (तुच्छता सूचक)।

नापटियो-दे० नापट।

नापणो-*(क्रि०)* किसी स्थान या वस्तु की लबाई चौडाई निश्चित करना। नापना। २ (न+आपणो) नहीं दना।

नापो-दे० नाप।

नापसंता-*(वि०)* अशोभनीय।

नाफिकरो *(वि०)* किसी प्रकार की बिना चिंता वाला। चिंता नही करने वाला। बेफिकर।

की-(न०) कस्तूरी से भरी हुई एक गाँठ जो हिमालय के कस्तूरी मृग की नाभि म उत्पन्न होती है।
बालिग-(वि०) जो वयस्क न हो। अव यस्क।
बालिगी-(ना०) १ वयस्क न होने की अवस्था। २ राज्य की वह अवस्था जिसमे उत्तराधिकारी अवयस्क होने से उसका शासन प्रभु राज्य चलाता है।
बूद-(वि०) १ नष्ट। ध्वस्त। २ समूल उच्छेद। निमू ल।
भ-दे० नाभि।
भल-(वि०) अच्छा नही। बुरा। खराब।
भादाम-(न०) भक्तमाल आदि ग्र थो के रचयिता एक प्रसिद्ध रामभक्त कवि।
मि-(ना०) १ नाभि। धुन्नी। तोंदी। टुंडी। २ मध्य भाग। नाह। ३ केन्द्र भाग। (वि०) १ मध्य। २ केन्द्र।
भी-दे० नाभि।
भोम-(वि०) अनजान। बेमालूम।
ाम-(न०) १ नाम। सना। २ धाक। ३ ख्याति। प्रसिद्धि। ४ स्मृति। यादगार। ५ कीर्ति। यश। ६ अर्थ। मान। मतलब। (अ०य०) १ अर्थात्। यथा—वीर नाम भाइ। तळो नाम कूओ।
ामगो-(न०) नाम। ख्याति।
ामजाद-(वि०) १ ख्याति प्राप्त। नामी। प्रसिद्ध। २ अपने नाम से प्रसिद्ध। मशहूर।
ामजादिक-दे० नामजाद।
ामजादो-दे० नामजाद।
ामजोग-(वि०) जिसका नाम लिखा गया हो उसी को मिले (हुडी के रुपये)। साह जोग।
ाम ठाम-(न०) पता ठिकाना। सरनामो।
ामणो-(क्रि०) १ नमाना। २ झुकाना। ३ प्रवाहित करना। ४ पानी को धार के रूप म गिराना। पानी डालना। ५ तरल पदार्थ का उँडेलना। ६ नमना। झुकना। ७ वदन करना।
नामदार-(वि०) प्रसिद्ध। नामी।
नामधारी-(वि०) १ नाम के अनुसार गुण कर्मों से रहित। केवल नाम वाला। २ ढोंगी। पाखडी।
नामना-(ना०) १ नाम। २ ख्याति। प्रसिद्धि। ३ कीर्ति। यश। नामवरी।
नाम निमाण-(न०) निशान। चिन्ह। नाम निशान।
नाम-मात्र-(अ०य०)१ मात्र नाम के लिये। २ कहने भर का। (वि०) बहुत थोडा। अत्यल्प।
नाम-माळा-(ना०) १ नामो का कोश। नामा की तालिका। २ पर्यायवाची शब्दकोश।
नामरजी-(ना०) अनिच्छा।
नामरद-(वि०) १ नामद। नपु सक। २ डरपोक।
नामरदी-(ना०) १ नपुसकता। २ कायरता।
नामराशि-(न०) एक ही नाम के दो या दो से अधिक व्यक्ति। (वि०) १ एक नाम वाले। २ एक राशि के नाम वाले।
नाम लेवो-(न०) उत्तराधिकारी। (वि०) १ याद करने वाला। २ नाम लेने वाला।
नामवर-(वि०) प्रसिद्ध।
नामवरी-(ना०) १ ख्याति। प्रसिद्धि। २ कीर्ति।
नामसाद-(वि०) विख्यात।
नामशेष-(वि०) १ मरा हुआ। मृत। २ नष्ट। ध्वस्त।
नामजूर-(वि०) १ अस्वीकृत। नामजूर। २ अमान्य।

नायाणो-दे० नायाणा।

नायो-(प्रत्य०) न+प्राया (न=नहीं+ प्रायो=प्राया) का छोटा रूप। नहीं प्राया। (न०) १ बढ़ई का प्रौजार। २ बलगाडी के पहिये के बीच में रहने वाला छेद युक्त एक लोहे का उपकरण जिसमें धुरा रहा करता है। पहिये का नाभि।

नार-(ना०) नारी। स्त्री।

नारकियो-दे० नारो।

नारकी-(ना०) नरक। (वि०) १ नरक का। २ नरक भागी।

नारका-दे० नारो।

नारगी-दे० नारकी।

नारद-(न०) १ एक प्रसिद्ध देवर्षि। २ चुगलखोर। ३ झगड़ा लगाने वाला।

नारदो-(न०) १ शौचालय। मलमूत्र करने का स्थान। २ गंदे पानी का नाला।

नारस-(वि०) नारस।

नारग-(न०) १ खून। रक्त। २ तलवार। ३ नारगी।

नारगफळ-(न०) १ कुच। स्तन। २ नारगी।

नारगी-(ना०) नारगी। संतरा।

नाराच-(न०) १ तलवार। २ बाण। ३ एक छंद।

नाराज-(ना०) १ तलवार। नाराच। २ बाण। नाराच। ३ भाला। (वि०) अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश।

नाराजगी-दे० नाराजी।

नाराजी-(ना०) अप्रसन्नता। नाखुशी।

नाराट-(न०) तीर। बाण।

नाराण-दे० नारायण।

नारायण-(न०) १ शेषशायी विष्णु भगवान। २ ईश्वर।

नारायणी-(ना०) १ लक्ष्मी। २ श्रीकृष्ण की सेना।

नारियण-दे० नारायण।

नारियळ-(न०) नारियल।

नारी-(ना०) स्त्री। नारी। महिला।

नारी जाति-(ना०) १ स्त्री जाति। २ स्त्रीलिंग (व्याकरण)।

नारू-(न०) १ नाई, धोबी, नाई बढ़ई आदि नौ जातियों के समूह का नाम। पौनी। २ विवाह आदि अवसरों पर नेग लेने वाला। पौना। ३ एक रोग जिसमें घाव में से सूत जैसा लंबा सफेद कीड़ा निकलता है। नहरुआ। बाळो।

नारळ-दे० नाळेर।

नारळी-दे० नाळेरी।

नारो-(न०) १ जवान और मजबूत बैल। २ छोटे कद का जवान बैल। नारकियो।

नाळ-(ना०) १ नाल। २ बंदूक। ३ बंदूक की नली। नाल। ४ पगडंडी। ५ दो पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग। घाटी। ६ मार्ग। ७ गली। ८ जंगली चींटियों के आने जाने का मार्ग। ९ परनाल। पनाला। १० जीना। सीढ़ी। ११ कमल की डंडी। १२ रस्सी जैसी वह नली जो गर्भस्थ शिशु की नाभि से और गर्भाशय से जुड़ी रहती है। १३ आवळ। जेरा। १४ भग। योनि। १५ छत की खपरैलों की संधि पर लगाया जाने वाला नरिया। १६ जूते के एड़ी के नीचे या घोड़े के खुर के नीचे जड़ा जाने वाला अर्द्धचंद्राकार लोहे का। १७ आग में फूँक देने की नली। १८ पशुओं को औषधि देने की एक नलिका। ढरका। १९ नाम। २० लोकव्यवहार। २१ जाति व्यवहार। २२ वंश परम्परा। २३ समूह। २४ पखावज जैसी एक ढोलक। (वि०) पुराना।

नाळ अलाम–(न०) चोर।
नाळक–(वि०) पुराना।
नाळ कटाई–(ना०) १ नवजात शिशु की नाभि मे लगी हुई नाल का काटने की क्रिया। २ नाळ कटाई का नेग या उजरत।
नाळकी–(ना०) १ एक प्रकार की खुली छोटी पालकी। (वि०) पुरानी। जूनी।
नाळको–(वि०) पुराना।
नाळचो–(न०) टीन म स तेल निकालने की एक विशेष नलिका।
नाळछेद–(न०)डिगल काव्य म जथाओं का निर्वाह नही होने का एक दोष।
नाळणो–(क्रि०) १ देखना। निहारना। २ खोजना। तलाश करना।
नाळनिहाव–(न०) तोप या बदूक के छूटने का शब्द।
नाळबद–(वि०) १ नाल बाँधने वाला। अश्वपादुकाकार। २ नाल बँधा हुआ। (न०) अश्वबंध।
नाळबदी–(ना०) नाल बाँधने का काम। (न०) एक कर।
नाळ भाखर–(न०) मेवाड का एक पर्वत।
नाळभ्रष्ट–(वि०) १ मास मदिरा सेवन करने के कारण जाति से बहिष्कृत। जाति च्युत। २ आचार नीति और धर्म से गिरा हुआ। धर्म मार्ग स च्युत। ३ पतित। अधम।
नालदा–(न०) १ बिहार का एक प्राचीन नगर। २ बौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र। ३ एक प्रसिद्ध विद्यापीठ जो पटना से ३० कोस दक्षिण म था।
नालायक–(वि०) १ अयोग्य। २ मूर्ख।
नाळिकेर–(न०) नारियल। नारिकेल।
नालिश–(ना०) १ फरियाद। २ शिकायत। ३ अन्याय अत्याचार के विरुद्ध न्यायालय म फरियाद करना। मुकदमा।

नाळी–(ना०)१ बदूक। २ तोप। ३ बदूक या तोप की नली। ४ छोटा नाला। ५ नाली। मोरी।
नाळेर–(न०) (नारियल का वर्ण व्यतिक्रम रूप) १ नारियल। श्रीफल। २ वाग्दान की एक प्रथा जिसमे कन्या का पिता किसी लडके के साथ अपनी कन्या की सगाई के निमित्त स्वर्ण या रौप्य मडित नारियल, कुकुम और मुद्रा भेंट पुरोहित के हाथ भेजता है।
नाळेरियो–(न०) १ नारियल। २ नारियल की टोपसी का बना हुआ हुक्का। (वि०) १ नारियल का। २ नारियल जसा। ३ नारियल का बना हुआ।
नाळेरी–(ना०) १ नारियल की खोपडी। २ नारियल की कटोरीनुमा आधी खोपडी। ३ नारियल की खोपडी का बना हुआ हुक्का। (वि०) १ नारियल का। २ नारियल का बना हुआ।
नाळेरी पूनम–(ना०) सावन की पूनम का रक्षाबधन पर्व। रक्षाबधन का दिन। राखडी पूनम। श्रावणी।
नाळो–(न०) १ बरसात आदि का पानी बहने का नाला। जलमार्ग। २ रस्सी की जमी एक नलिका जो गर्भस्थ शिशु की नाभि स और गर्भाशय से जुडा रहता है। नाळ। ३ मृत्युरोदन। क्रदन।
नाव–(ना०) नौका। किश्ती। पोत।
नावड–(ना०) १ नापसदी। २ अनिच्छा। अरुचि। ३ दौड। पहुँच ४ शक्ति। पहुँच।
नावडणा–(क्रि०) १ आगे जाने वाले को पहुँचना। पहुँचना। पकडना। पूगणो। २ पूरा करना। सम्पन्न करना। ३ मुकाबला करना। ४ मन नही लगना। ५ नही पहुँच सकना। नहीं पुगना। ६ नहीं आना। ७ समझ नहीं सकना।

नावडियो-(न०) नाव चलाने वाला। केवट।

नावणियो-(वि०) १ न+आवणियो। (न=नहीं+आवणियो=आने वाला) का छोटा रूप। नहीं आने वाला। २ नहीं पहुँचने वाला।

नावण-दे० नावण।

नावणो-(अव्य०)१ न+आवणो (=नहीं आना का छोटा रूप) नहीं आना। २ नहीं पहुँचना।

नावसी-(भू०कृ०)१ न+आवसी (=नहीं आयगा) का छोटा रूप। २ वरसी।

नावाकिफ-(वि०) अजान। अपरिचित। नावाक्फि।

नावारिस-(वि०) नावारिस। लावारिस।

नावियो-(क्रि०भू०का०) नहीं आया।

नाविक-(न०) नाव चलाने वाला। मल्लाह। नावडियो।

नावी-(न०) नाई। नापित।

नावेडो-(न०) नाखून और हाथ की अंगुली के बीच में होने वाला व्रण।

नाश-(न०) १ संहार। ध्वंस। २ बिगाड।

नाशवान-(वि०) नाश होने वाला। नश्वर।

नास-(ना०) १ नस्य। सूंघनी। नसवार। छींकणी। २ नाक। नासिका। ३ नाश। संहार। ४ नाक का छेद। नसकोर।

नासका-दे० नास १ व २

नासणो-(क्रि०) १ नाश होना। २ नाश करना। ३ भाग जाना।

नासत-दे० नास्ति।

नासता-दे० नास्ति।

नासफरिम-(न०) १ शत्रु का नाश नहीं हो सकना। शक्तिशाली होने पर भी शत्रु का नाश नहीं किये जा सकने की निराशाजनक स्थिति। २ आज्ञा भंग।

(मु०) ...पु ... मराया नहीं होने पर (वि०) ... ...।

नास भाग-(ना०) १ भाग दौड। ... २ घबराहट। हडबड। ३ ...।

नासमझ-(वि०) १ जिसे समझ न हो। निर्बुद्धि। अबूझ। नासमझ। २ बेवकूफ।

नासमझी-(ना०) मूर्खता। बेवकूफी। अबूझपणो।

नासवान-दे० नाशवान।

नासा-(ना०) नाक। नासिका।

नासिका-दे० नासका।

नासूर-(न०) १ नाक और गले का एक रोग। २ गहरा और छोटा घाव जिससे बराबर मवाद निकलता रहता है। नाडाव्रण।

नास्ति-(अव्य०) अविद्यमानता। अभाव। नहीं।

नास्तिक-(वि०) ईश्वर, परलोक और कर्म फल आदि नहीं मानने वाला।

नास्ती-दे० नास्ति।

नास्तो-(न०) कलेवा। नाश्ता। शिरावण।

नाह-(न०) १ पति। वर। २ नाथ। ईश्वर। ३ राजा। (अ०प०) नहीं।

नाहक-अव्य०) १ बिना हक। नाहक। अन्याय से। २ अकारण। नाहक। व्यर्थ। निष्प्रयोजन।

नाहका-(ना०) सूंघने की महीन तबाकू। तमकीर। छींकणी। सूंघणी।

नाहण-(ना०) नहान। स्नान।

नाह दुनियाण-(न०) १ राजा। २ ईश्वर।

नाहर-(न०) शेर। सिंह।

नाहरी-(ना०) सिंहनी। शेरनी। सिंही। नाहर की मादा। सिंघणी।

नाहा दौड-(ना०)१ भाग दौड। २ त्वरा। शीघ्रता। नास भाग।

नाहिमत-(वि०) १ बे हिम्मत। पस्त हिम्मत। साहसहीन। २ कायर।
नाही-(अव्य०) १ नही। २ कदापि नही।
नाहेट-दे० नायठ।
नाहेटू-दे० नायटू।
नाहेडू दे० नाहेटू।
नाहेसर रो मगरो-(न०) मेवाड का एक पर्वत।
ना-(प्रत्य०) १ कर्म और सम्प्रदान कारक की विभक्ति। को। (अव्य०) १ लग। तक। पर्यंत। लौं। २ के तांई। के लिये। ३ जो है।
नांई-(वि०) समान। तरह।
नांखणो-(क्रि०) १ डालना। गिराना। २ फेंकना। ३ धरना। रखना। ४ दूर करना। बाजू पर रखना। ५ अदर डालना। ६ दौड़ाना। वेग देना।
नांग-दे० नग सं० १, २, ३
नांगळ-(न०) १ नवनिर्मित गृह प्रवेश के समय की जाने वाली घट पूजा और गृह पूजा। २ गृह पूजा के समय किया जाने वाला भोज। ३ बलो की जोड़ी (हल मे जुतने वाली)। ४ मिट्टी का घड़ा। ५ अवरोध। ६ बंधन।
नांगळणो-(क्रि०) १ पशु के गले मे बंधी रस्सी से एक या अधिक पशुओ को एक साथ बांधना। २ एक साकळ (नोळ) मे ऊंट के दोनो पावो को बांधना। ३ लगर डालना। लगरणो। ४ बांधना।
नागळियो-दे० रगळियो।
नाघणो-(क्रि०)लांघना। नाघना। लांघणो।
नाज-(अव्य०) १ नही। २ नही ही। नहीं ज।
नाढ-(वि०) गवार। असभ्य।
नांदियो-(न०) शिवजी का बल। नदी।
नाव-(न०) नाम। दे० नाम।
नांवगो-दे० नामगो।
नांवजाद-दे० नामजाद।
नांव जादिक-दे० नांव जादीक।
नांवजादो-(वि०) अपने नाम से पहिचाना जाने वाला। विख्यात।
नांवजादीक-दे० नांवजादी।
नाव जादो-दे० नांवजादी।
नांव-ठांव-(न०) नाम और पता। पता ठिकाना।
नांवं-परनांव-(अव्य०)१ उस। उसके नाम पर। २ जिस जिसके नाम से। ३ प्रत्येक के नाम पर। (वि०) अति प्रसिद्ध।
नांह-(अव्य०) नही।
नि-(अव्य०)एक उपसर्ग। यह जिन शब्दो के पहले आता है बहुधा उनके अर्थ विपरीत कर देता है। जसे—निकलक। निकमो। निडर। इत्यादि।
निअ-दे० निज।
निअ,मत-(ना०) ईश्वर प्रदत्त धन सपत्ति, सौंदर्य, गुण कृपा इत्यादि। ईश्वर की देन। २ धन दौलत। ३ सुख। ४ दुर्लभ गुण। ५ बहुमूल्य पदार्थ।
निकट-(क्रि०वि०) पास। पास मे।
निकमाई-(ना०) निकम्मापन।
निकमो-(वि०) १ निकम्मा। नाकारा। २ व्यर्थ। बेकार। फजूल। ३ खोटा। बुरा।
निकम्मो-दे० निकमो।
निकर-(न०) समूह।
निकरम-(वि०) १ जो काम से रहित हो। जो काम मे लिप्त न हो। निष्कर्म। २ काम रहित। निष्क्रिय। ३ निकम्मा।
निकरमो-(वि०) निकम्मा।
निकल-(ना०) एक सफेद धातु।
निकळणो-(क्रि०) १ भीतर से बाहर आना। निकलना। २ चले जाना। गमन करना। ३ उदय होना। प्रगट होना। ४ उत्पन्न होना। ५ प्रवर्तित होना।

प्रचलित होना। ६ सिद्धि होना। हल होना। ७ प्रकाशित होना। ८ अपने को बचा जाना। ९ बिकना। खपना। १० रोकड़ (नकद) अथवा माल का लेन देन का हिसाब होने पर रुपये किसी के जिम्मे ठहराना। ११ उधार बाकी रहना। १२ अपने उद्गम से प्रादुर्भूत होना। १३ पार होना।

निकळक-(वि०) १ कलंक। २ निर्विघ्न। ३ निष्पाप। (ना०) १ विष्णु का कल्कि अवतार। कल्कि भगवान। २ निकलंक देव। ३ परब्रह्म।

निकळाणो-(क्रि०) निकलवाना।

निकळावणो-दे० निकळाणो।

निकसणा-दे० निकळणो।

निकसारो-(ना०) १ निकलने की क्रिया या भाव। निकाल। निकास। २ निर्गमन। ३ छेद। ४ द्वार। दरवाजा। ५ मार्ग। रास्ता।

निकट-दे० नकट।

निकाम-(वि०) १ निकम्मा। २ व्यर्थ। बेकार। ३ जिसमें किसी प्रकार की कामना न हो। निष्काम।

निकामो-(वि०) १ निकम्मा। बेकार। २ खराब। ३ अनुपयोगी। (अव्य०) अकारण। व्यर्थ। नाहक।

निका-(ना०) १ इस्लामी शादी। २ मुसलमान का विवाह।

निकारो-(वि०) निकम्मा।

निकाळ-(वि०) १ निकलने की क्रिया या भाव। २ निकलने का मार्ग। निकास। निष्कासन। ३ गमन। ४ उपाय। युक्ति। ५ बचाव का उपाय। ६ परिणाम। फल। निचोड़। ७ फैसला। निबटारा। निबडा। ८ बिक्री। ९ वंश का मूल।

निकाळणो-(क्रि०) १ जाने देना। निकालना। हटाना। २ अंदर से बाहर लाना। ३ दूसरी वस्तु में मिली हुई वस्तु को अलग करना। ४ नौकरी से हटाना। ५ बेचना। खपाना। ६ तय करना। सिद्ध करना। ७ रकम जिम्मे ठहराना। ८ निभाना। ९ पार करना। १० प्रकाशित करना। ११ प्रचलित करना। १२ बाकी निकालना।

निकाळो-(ना०) एक मियादी बुखार। आंत्रिक ज्वर।

निकास-(ना०) १ निकास। निष्कासन। २ माल का किसी दूसरी जगह में चालान या बिक्री। बाहर की खरीददारी। ३ वंश का मूल स्रोत। ४ माल बाहर भेजने पर लगने वाला कर।

निकासी-(ना०) १ निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। निस्सरण। २ किसी वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने पर लगने वाला कर। ३ किसी वस्तु को बाहर भेजने का आज्ञापत्र। निकालने की आज्ञा। परवाना। ४ यात्रा के निमित्त प्रस्थान। ५ पाणिग्रहणार्थ कन्या के घर जाने वाले वर की सवारी के साथ प्रस्थान करने वाली बारात की शोभा यात्रा। वर की शोभा यात्रा। वर की शोभा यात्रा का निकलना।

निकिरियावरा-(वि०) जिसके घर में किरियावर (क्रियावर) का काम न हुआ हो। उदारता व यश के कामों से रहित।

निकुटणो-(क्रि०) १ पत्थर तराशना। पत्थर पर खुदाई करना। २ पाषाण की मूर्ति तैयार करना। ३ निर्माण करना। घड़ना।

निकुटी-(ना०) १ शिला शिल्पी। संगतराश। सिलावट। २ पाषाण की मूर्ति बनाने वाला। मूर्तिकार। (भू०क्रि०) निर्माण की। बनाई। तराशी। तराशा दिया।

निकूल-(ना०) पास। समीप। निकट।

निकेवळ-(न०) १ शुद्ध स्वरूप। ज्ञान स्वरूप। कैवल्य। २ मुक्ति। कैवल्य। (वि०) केवल।

निकेवळो-(वि०) १ निखालिस। शुद्ध। २ स्वच्छ। स्वतंत्र। मुक्त। ३ ऋण मुक्त। ४ गृहस्थ व समाज के नैमित्तिक कर्त्तव्यों से निवृत्त। ५ मात्र। केवल। ६ अकेला। ७ एक ही। ८ अनेक। ९ निष्पक्ष। १० असल। ११ सत्य-वक्ता।

निखग-(न०) १ तरकश। निषंग। २ तलवार। खड्ग।

निखट्टू-(वि०) १ निकम्मा। २ मारा-मारा फिरने वाला। नकामो।

निखर-(वि०) १ निर्मल। स्वच्छ। २ सुन्दर।

निखरचो-(वि०) १ खर्चे बिना का (भाव या मोल)। नेट (मूल्य) २ बिना खर्चे का (कोई काम)।

निखग-दे० निखग।

निखरणो(क्रि०) १ साफ होना। निर्मल होना। २ नितरना। नितरणो।

निखरी-दे० निखरो सं० ४।

निखरो-(वि०) १ साफ। स्वच्छ। २ सुन्दर। ३ जो खरा न हो। खोटा। खराब। ४ घी में तली हुई भोजन सामग्री। सखरा का उलटा।

निखाद-(न०) १ एक जाति। निषाद। २ भील। ३ संगीत में सबसे ऊंचा स्वर। नी स्वर। निषाद।

निखार-(वि०) १ क्षार रहित। २ स्वच्छ। निर्मल। ३ बिना मिलावट का। (न०) निर्मलता। स्वच्छता।

निखारणो-(क्रि०) १ धोना। साफ करना। निर्मल करना। २ और स्वच्छ बनाना। सठारणो।

निखालस-(वि०) १ शुद्ध। पवित्र। २ पाक दिल। ३ जिसमें कोई मिलावट न हो। विशुद्ध। ४ कामिल। ५ ऋण रहित।

निखेध-(वि०) १ दुष्ट। २ झगड़ालू। ३ ईर्ष्यालू। ४ निषिद्ध। ५ तुच्छ।

निखोट-(वि०) खोट रहित। त्रुटि रहित। दोष रहित।

निगड-(ना०) १ हाथी के बांधने की मोटी सांकल। २ हथकड़ी। ३, बेड़ी। पकड़ी। ४ कैद। बंधन।

निगम-(न०) १ वेद। श्रुति। २ शास्त्र। ३ ज्ञान। ४ परमात्मा। ५ मार्ग। पथ। ६ समूह। (वि०) अगम्य।

निगमणो-(क्रि०) १ भीतर आना। २ पसंद नहीं आना। रुचिकर नहीं होना। रुचना नहीं। ३ कब्जे से नहीं जाने देना। अधिकार में रखना। ४ सौंप देना। ५ बिताना। ६ निगमन करना। निकलना। ७ बीतना। गुजरना। ८ दूर करना। ९ टालना।

निगमागम-(न०) १ वेद शास्त्र। २ वेद आदि शास्त्र।

निगरभर-(वि०) १ बहुत अधिक। २ सघन। पूर्णतृप्त। ४ निमग्न। तन्मय। ५ पूरा भरा हुआ।

निगराणी-(ना०) निरीक्षण। देखरेख। सम्हाल।

निगळणो-(क्रि०) मुंह में रखकर पेट में उतारना। लीलना। निगलना। गिटणो।

निगाळ-(न०) निगलने की क्रिया।

निगाळी-(ना०) १ वंशसूची। २ निग-लने की क्रिया। ३ गला। ४ नली। ५ हुक्के की नली। नै।

निगुणी-(वि०) १ जिसमें कोई गुण न हो। मूर्ख। २ उपकार वृत्ति से रहित।

नगुणो *(वि०)* १ जो उपकार को न माने। कृतघ्न। २ जिसमें कोई गुण न हो। मूर्ख।

नेगुरो-*(वि०)* १ बिना गुरु का। जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। अदीक्षित। २ जो उपकार को न माने। कृतघ्न। ३ उपकार के बदले अपकार करने वाला। ४ निलज्ज।

निगेम-*(वि०)* १ निष्पाप। २ निष्कलंक। ३ शांत। धीर। *(न०)* निगम। वेद।

निग-*(ना०)* १ दृष्टि। नजर। २ सम्हाल। देखरेख। ३ सावधानी। ४ सुधि। खबर। ५ खोज। तलाश। ६ परख। पहचान। जांच।

निगेदास्ती-*(ना०)* देखरेख। सम्हाल। निगरानी।

निगोट-*(वि०)* १ ठोस। २ दृढ। ३ बिना फलाहार का (उपवास)। निराहार।

निगोटव्रत-*(न०)* पानी फल आदि लिये बिना किया जाने वाला उपवास। बिना फलाहार का उपवास।

निगोडो-*(वि०)* १ अभागा। २ दुष्ट।

निघंटु-*(न०)* यास्क रचित वैदिक शब्दों का संग्रह। वैदिक कोश।

निघात-*(वि०)* १ युद्ध में जिसके प्रहार नहीं लगा हो। जिसके घाव नहीं लगा हो। २ जो घात से बच गया है। ३ अधिक। बहुत। ४ विशेष। ५ भयानक। ६ जबरदस्त। *(न०)* १ प्रहार चोट। २ भेद। रहस्य। *(क्रि०वि०)* शीघ्रता से।

निघोट-दे० निगोट।

निचलो-*(वि०)* नीचे का।

निचाई-*(ना०)* १ नीचे होने का भाव। नीचापन। २ नीच होने का भाव। नीचपन।

निचित-दे० नचित।

निचिताई-*(ना०)* निश्चितता।

निचितो-*(वि०, दे०)* नचित।

निचीतो-दे० नचित।

निचोड-*(न०)* १ कथन का सारांश। खुलासा। २ तत्व। सार। ३ निष्कर्ष। परिणाम। ४ वह अंश जो निचोडने से निकले।

निचोडणो-दे० निचोवणो।

निचोणो-दे० निचोवणो।

निचोर-*(अव्य०)* गोर वर्ण का विशेषण शब्द। यथा—गोरो निचोर।

निचोवणो-*(क्रि०)* १ निचोडना। निचाना। २ सार निकालना। ३ शोषण करना। ४ धन हरण करना।

निछटणो-दे० नीछटणो।

निछरावल-*(ना०)* १ न्योछावर की हुई वस्तु। नेग। २ न्योछावर।

निछावर-*(ना०)* १ न्योछावर। वारफेर। २ नेग। ३ उत्सर्ग। ४ इनाम।

निज-*(सर्व०)* खुद। स्वयं। *(वि०)* खुद का। अपना।

निजमंदिर-*(न०)* देवमंदिर का वह मध्य गृह जिसमें देवमूर्ति प्रतिष्ठापित की हुई रहती है।

निजर-दे० नजर।

निजळ-*(वि०)* जल रहित। निर्जल।

निजारो-*(ना०)* १ आंख का इशारा। २ दृश्य। झांकी। नजारा। ३ नजर।

निजी-*(वि०)* १ अपना। खुद का। २ व्यक्तिगत। प्राइवेट।

निजू-दे० निजी।

निजोखमो-*(वि०)* १ जिसमें किसी प्रकार की जोखिम न हो। आपत्ति रहित। २ हानि रहित।

निजोज-*(न०)* चाकर। सेवक।

निजोड़णो-(क्रि०) १ काटना । २ सहार करना । मारना ।
निजोर-(वि०) निबल । कमजोर ।
निजोरी-दे० नजारी ।
निजोरो-(वि०) कमजार । अशक्त ।
निझरणा-दे० नीझरणा ।
निझाडो-(वि०) वृक्ष रहित । सूखा । वनस्पति रहित (पवत) ।
निठ-(वि०) समाप्त । दे० नोठ ।
निठजाणो-(मुहा०) समाप्त हाना ।
निठणो-दे० नीठणो ।
निडर-(वि०) १ निभय । २ साहसी । ३ ढाठ ।
निडार-(वि०) १ निडर । २ अकेला ।
नित-(अव्य०) नित्य । प्रतिदिन । रोज । (वि०) १ कभी भी नष्ट न होने वाला । शाश्वत । अविनाशी । २ सदाकाल का । प्रतिदिन का ।
नितकम-दे० नित्य कम ।
नितनेम-(न०) १ स्नान, पूजा पाठ आदि प्रतिदिन का बँधा हुआ काम । नित्य नियम से किया जाने वाला काम । २ नित्य का नियम ।
नितनेमियो-(वि०) स्नान पूजापाठ आदि प्रतिदिन का बधा हुआ काम नियमपूवक करने वाला । नितनेमी ।
नितनेमी-दे० नितनेमियो ।
नितप्रत-(अव्य०) नित्यप्रति । हमेशा ।
नितरणा (क्रि०) घुले हुए मल का नीचे बैठ जाने से पानी का स्वच्छ हो जाना । नियरना । २ टपकना । ३ धन का खूट जाना । धनाभाव होना ।
नितत-(क्रि०वि०) १ बहुत अधिक । बहुत ही । २ एकदम । नितान्त । ३ बिल्कुल । सवथा ।
नितब-(न०) चूतड । ढूगा ।
नितबणी-(ना०) १ बड़े और सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री । नितबिनी । २ स्त्री । (वि०) बडे नितम्बा वाली । नितबिनी ।
नितार-(न०) १ निथार । २ निस्तार । ३ निष्कप ।
नितारणो-(क्रि०) १ नियारना । २ टपकना ।
नितात-दे० नितत ।
नित्य-दे० नित ।
नित्रीठ-दे० नत्रीठ ।
निदरसण-(न०) १ प्रदशन । निदशन । २ दृष्टा त । उदाहरण ।
निदरसी-(वि०) १ दशक । निदशक । २ सूचक ।
निदाघ-(न०) १ सूय की गरमी । आतप । २ धूप । तावडा ।
निदाढियो-(वि०) १ जिस (पुरुष) के दाढी मूछ नही आते हो । दाढी मूछ रहित । २ दाढी मूछे साफ कराया हुआ ।
निदाण-दे० नदाण ।
निदान-(न०) १ कारण । २ रोग निणय । ३ निश्चय । ४ अवसान । अत । ५ नदाण । (अव्य) १ अत म । आखिर । आखिरकार । २ इसलिये ।
निद्रा-(ना०) नीद । ऊघ ।
निद्राळू-(वि०) अधिक नीद लेने वाला । नींदाळू ।
निध-दे० निधि ।
निधडक-(क्रि०वि०) १ बेखटके । निशक । २ बिना रुकावट के । ३ बिना सकोच के ।
निधणियो-(वि०) १ जिसका सार सम्हाल करने वाला न हो । २ बिना स्वामी का । जिसका कोइ मालिक न हो ।
निधणीको-दे० निधणियो ।
निधन-(न०) १ मृत्यु । २ नाश ।
निधान-(न०) १ परिपूणता । २ आधार । आश्रय ३ निधि । कोष ।

निधि–*(ना०)* १ कुबेर के नौ प्रकार के रत्न। २ निधि। खजाना। भंडार। ३ नौ का संख्यासूचक शब्द।

निधुवन–*(न०)* १ रति। मैथुन। २ हंसी ठट्ठा। ३ कंपन।

निध्रसणो–दे० नीधसणो।

निनाण–दे० नदाण।

निनाणू–*(वि०)* न वे और नौ। सौ में एक कम। *(न०)* ९९ की संख्या।

निनाद–*(न०)*१ शब्द। ध्वनि। २ गुंजार।

निनामी–*(वि०)* बिना नाम की।

निनामो–*(वि०)* बिना नाम का। गुमनाम। ननामो।

निपगो–दे० नपगो।

निपज–*(ना०)* उपज। पैदास। उत्पादन।

निपजणो–*(क्रि०)* १ उत्पन्न होना। उपजना। पैदा होना। २ परिणाम आना। ३ परिपक्व होना। ४ उन्नति करना। बढ़ना।

निपजाणो–दे० निपजावणो।

निपजावणो–*(क्रि०)* १ उत्पन्न करना। २ पकाना। परिपक्व करना। ३ बनाना।

निपट–*(वि०)* १ बेशर्म। निफट। २ बहुत। अधिक। *(अव्य०)* बिलकुल। सर्वथा। निपट। सरासर।

निपटणो–*(क्रि०)* १ शौचादि क्रिया से निवृत्त होना। निपटना। २ निवृत्त होना। निपटना। ३ समाप्त होना। बीत जाना। ४ निर्णीत होना। तय होना।

निपटाणो–दे० निपटावणो।

निपटारो–*(न०)* १ झगड़े का फैसला। २ पूरा होना।

निपटावणो–*(क्रि०)* १ झगड़े का फैसला करवाना। झगड़ा मिटाना। २ समाप्त करना। बिताना।

निपतो–*(वि०)* बिना पते का।

निपाडणो–*(क्रि०)*१ मिटाना। २ उठना। ३ उत्पन्न करना।

निपाणियो–*(वि०)* १ जहाँ पानी का अभाव हो। २ अशक्त। कमजोर। ३ नपुंसक।

निपात–*(न०)* १ वह शब्द जिसके बनने के नियम का पता न हो। नियम विरुद्ध बनावट वाला शब्द (व्याकरण) २ अनियमित रूप। ३ विनाश। मृत्यु। ४ अध पतन। *(वि०)* बिना पत्ता वाला।

निपापो–*(वि०)* पाप रहित। निष्पाप।

निपावट–*(वि०)* १ खराब। गंदा। भद्दा। २ निकम्मा। अनुपयोगी। ३ मंद। सुस्त। शिथिल। ४ अयोग्य। ५ सारा। *(अव्य०)* बिलकुल। निपट। कतई। पूरा पूरा।

निपावणो–*(क्रि०)* १ उत्पन्न करना। २ बनाना। तैयार करना। ३ लिपवाना।

निपुण–*(वि०)* १ प्रवीण। दक्ष। २ अनुभवी। ३ योग्य।

निपूतो–*(वि०)* निपूता। निसंतान। नाऔलाद।

निपोचियो–*(वि०)* असमर्थ। शक्तिहीन। परिश्रम करने की शक्ति से हीन।

निब–*(न०)* लिखने के लिये होल्डर (लेखनी) में डाली जाने वाली लोहे या पीतल की बनी चोंच।

निबटणो–दे० निपटणो।

निबटाणो–दे० निपटावणो।

निबटारो–दे० निपटारो।

निबटावणो दे० निपटावणो।

निबळ–*(वि०)* निबल। अशक्त।

निबळाई–*(ना०)* अशक्ति। दुर्बलता। निबलता। नबळाई।

निबळो–*(वि०)* निबल। अशक्त।

निबहणो–दे० निभणो।

निवध-(न०) १ प्रवध । लेख । २ किसी विषय का सविस्तार विवेचन । ३ सहारा । आधार । ४ बधन । ५ रोक । रोकथाम ।

निवधणो-(क्रि०) १ निर्माण करना । २ एकत्रित करना । बाधना । दे० निमधणो ।

निबापो-(वि०) जिसका पिता जीवित न हो ।

निवाहणो-दे० निभाणो ।

निवीह-(वि०) निर्भीक । निडर ।

निंबोळी-दे० नीबोळी ।

निभणो-(क्रि०) १ निभना । २ टिके रहना । ३ निर्वाह होना । ४ पोसाना ।

निभवो-(वि०) १ निभय । २ निभाव वाला । ३ क्षमता वाला ।

निभाउ-(वि०) १ निभाने वाला । २ क्षमाशील । ३ सहनशील । ४ निभ सके जसा । ५ निभाने वाला । ६ काम चलाऊ ।

निभागो-(वि०) अभागा । निर्भागी ।

निभाणो-दे० निभावणो ।

निभाव-(न०) १ मेल मिलाप । बनाव । २ मेल मिलाप की स्थिति । अनबन रहित स्थिति । ३ आधार । टिकाव । ४ भरण पोपण । निर्वाह । गुजारा । ५ स्थिति और सबध आदि बनाये रखने का काम ।

निभावणो-(क्रि०) १ निवाहना । निभाना । २ जसे तैसे निर्वाह करना । ३ ज्यो का त्यो बनाय रखना । चला लेना । निभा लेना । ४ किसी परम्परा को चलाय जाना । ५ पालन करना । पूरा करना । ६ पालन करना । पोषण करना ।

निभ-(वि०) १ निभय । निडर । २ निवाह । निर्वाह ।

निभ्रत-(वि०) निर्भ्रान्त । भ्रात रहित । भ्रम रहित ।

निमख-(न०) १ निमेष । पलक । आँख का झपकना । २ क्षण । पल । निमेष ।

निमटणो-दे० निपटणो ।

निमटाणो-दे० निपटाणो ।

निमत-दे० निमित्त ।

निमधणो-(क्रि०) १ रचना । बनाना । २ मन मे धारण करना । मन मे विचार लाना । ३ बाधना । ४ इकट्ठा करना ।

निमत्रण-(न०) १ किसी को अपने यहाँ बुलाने का अनुरोध । २ भोजन के लिये बुलावा । तेडो । नतो । नूतो । नोतो ।

निमध-(न०) १ नियुक्त । मुकरर । २ निश्चय । ३ प्रबन्ध । ४ शत । ५ सबध । ६ निर्माण । (वि०) १ निर्मित । २ बनावटी ।

निमधणो-(क्रि०) १ मुकरर करना । नियत करना । २ नियुक्त करना । ३ शत करना । ४ बाँधना । ५ निश्चय करना । ६ प्रबध करना । ७ सबध स्थापित करना । ८ निर्माण करना । ९ उत्पन्न करना । १० एकत्रित करना । सकलित करना ।

निमसी-(वि०) मास रहित । जसे घोडा री निमसी नळी ।

निमाइत-(वि०) १ जिसके माता पिता जीवित न हो । माता पिता रहित । २ निर्माण करने वाला । निर्माण किया हुआ । ४ नियुक्त करने वाला । ५ नियुक्त किया हुआ ।

निमाडो-दे० नीवाडो ।

निमाणो-(वि०) १ निर्माल्य । अशक्त । २ निदय । क्रूर । ३ अपमानित । ४ निर्मित । (क्रि०) निर्माण कराना ।

निमायो-(वि०) मातृ हीन ।

मिख-दे० निमख।
मित्त-(न०) १ कारण। हेतु। २ उद्देश। अभिप्राय। ३ बहाना। मिस।
मूळ-(वि०) मूल रहित। निर्मूल।
मूछियो-(वि०) १ बिना मूछ का। २ निबल। ३ स्त्रण।
मिख-दे० निमख।
यत-दे० निज।
यत-(वि०) १ नक्की। निश्चित। २ स्थापित। ३ मन का इरादा। आशय। नीयत। ४ उद्देश्य।
नियम-(न०) १ धर्म, विधि आदि के द्वारा निश्चित आचरण के निश्चित सिद्धांत। २ कानून। विधि। ३ रीति। चाल। ४ परम्परा। ५ नियंत्रण।
नियमसर-(अव्य०) नियम के अनुसार।
नियंता-(न०) ईश्वर। (वि०) नियंत्रण या नियमन करने वाला।
नियंत्रण-(न०) १ नियमों में बाँध कर रखना। २ शासन बंधन। ३ प्रतिबंध। कंट्रोल।
नियाणी-दे० निहाणी।
नियामत-दे० निआमत।
नियारियो-(न०) सुनार, जड़िया या जौहरी की दुकान के नियार (कचरे) में से छाँट कर माल निकालने वाला। नियारिया। न्यारियो।
नियारो-(न०) सुनार जड़िया या जौहरी की दुकान का कचरा या झाड़न। नियार। न्यारो। बरड़ो। (क्रि०वि०) न्यारा। अलग।
नियोग-(न०) १ किसी स्त्री के पति द्वारा संतान न होने पर देवर या किसी उच्च कुल के वीर या विद्वान के साथ केवल संतान प्राप्ति के लिये किया जाने वाला शास्त्रोक्त विधि के अनुसार संबंध। २ आज्ञा। आदेश। ३ प्रयोग। उपयोग।
निर-(अव्य०) 'रहित', 'बिना' बाहर अर्थ बताने वाला एक उपसर्ग।
निरकार-(वि०) १ बिना काम का। २ बेकाम। व्यर्थ। दे० निराकार।
निरकुळ-(वि०) कुल रहित। अकुलीन।
निरख-(न०) भाव। दर। मूल्य। मोल।
निरखणो-(क्रि०) १ देखना। निरखना। निहारना। २ सूक्ष्मतापूर्वक देखना। निरीक्षण करना।
निरगात-(न०) निराकार। परमात्मा।
निरगुण-दे० निर्गुण।
निरगुणी-(वि०) १ कृतघ्न। २ गुण रहित। ३ अनाड़ी।
निरजर-दे० निर्जर।
निरजळ-दे० निर्जल।
निरजळा इग्यारस-(ना०) वह एकादशी या उसका उपवास जिसमें पानी भी नहीं पिया जाता। जेठ मास की सुदी एकादशी।
निरजोर-(वि०) निर्बल।
निरणी-(वि०) भूखी। निरन्ना।
निरणो-(वि०) दिन उगने के बाद से कुछ भी न खाया हुआ। निराहार। निरन्न। भूखा।
निरत-दे० नित। (वि०) १ लीन। मग्न। आसक्त। २ काम में लगा हुआ।
निरतकर-(न०) नर्तक।
निरतगार-(न०) नर्तक।
निरतणो-(क्रि०) नाचना। नाचणो।
निरति-(ना०) १ सुधि। खबर। पता। २ सम्हाल। ३ एक निष्ठा। ४ एक निष्ठ भक्ति। ५ प्रीति। अनुराग। ६ नऋत्य कोण।
निरतो-(वि०) १ कम। थोड़ा। २ आवश्यकतानुसार। ३ अनुरक्त। लीन। लगा हुआ। निरत। ४ खाली। ५ व्यर्थ। निरत।

रमाळियो-दे० निरमायळ ।
रमळ-दे० निमू ल ।
रमोही-दे० निर्मोही ।
रथक-(वि०) १ व्यथ । फजूल । २ जिससे कोई काम सिद्ध न हो ।
रलज्ज-दे० निलज्ज ।
निरळ ग-(वि०) १ अग रहित । २ अलग । ३ निलिप्त । ४ अलग । जुदा ।
निरवम-दे० निवश ।
निरवाण-(न०)चौहान वश की एक शाखा । दे० निर्वाण ।
निरवाळो-(वि०) १ सतान की शिक्षा विवाहादि से निवृत्त । २ सामारिक प्रपचो स दूर । ३ उत्तरदायित्वो से निवृत्त । निरवळो ।
निरवाह -दे० निर्वाह ।
निरवाहणो-(क्रि०) १ निर्वाह करना । निर्वाहना । २ परम्परानुसार बरतना । ३ निभाना । पालन करना ।
निरविकार-दे० निर्विकार ।
निरस-(वि०)१ बिना रस का । नीरस । २ स्वाद रहित । ३ सारहीन । ४ रूखा सूखा । ५ रागहीन । ६ गरीब । दीन ।
निरकार-(न०) १ निराकार । परमात्मा । २ आकाश ।
निरकुश-(वि०) अकुश रहित । कोई अकुश न मान । स्वेच्छाचारी ।
निरग-(वि०) १ अग रहित । २ रग रहित । ३ बदरग ।
निरजण-(न०) १ ब्रह्म । २ शिव । निरजन । (वि०)१ निष्कलक । २ निर्मल । ३ तजोमय । ४ अजन रहित ।
निरजणी-(न०) १ मारवाड मे डीडवाना नगर क पास गाढ़ा गाँव म सत हरिदास जी (हरिपुरुष जी) द्वारा प्रवर्तित एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय । २ इस नाम के अनको सम्प्रदायो म से एक । ३ निरजनी सम्प्रदाय का शिष्य । (वि०) १ निरजनी सम्प्रदाय सबधी । २ निरजनी सम्प्रदाय को मानन वाला ।
निरतर-(क्रि०वि०) १ सदा । लगातार । (वि०) १ अतर रहित । २ स्थायी ।
निराऊध-(वि०)आयुध रहित । निरायुध । निरस्त्र ।
निराकार-(वि०)बिना आकार का । (न०) १ परमात्मा । ब्रह्म । २ आकाश ।
निराट-(वि०) १ बहुत । प्रचुर । विपुल । २ मात्र । (अव्य०) १ बहुत ही । प्रचुर प्रमाण म । २ बिल्कुल । बिल्कुल ही । ३ सवथा । सभी प्रकार । समूचो ।
निराताळ-दे० निरोताळ ।
निरादर-(न०) आदर रहित । अपमान ।
निराधार-(वि०) १ आधार रहित । अवलब रहित । २ बेबुनियाद । निमू ल । ३ निराश्रय । असहाय ।
निरालब-(वि०)आलब रहित । निराधार ।
निराळो-(वि०)१ एका त । २ विलक्षण । अजीब । ३ अनुपम । ४ अद्वितीय । ५ अलग । जुदा । (न०) एका त स्थान ।
निराश-दे० निरास ।
निराशा-दे० निरासा ।
निरास-(वि०) निराश । ना उम्मेद । हताश ।
निरासा-(ना०) निराशा । नाउम्मेदी ।
निरात-(ना०) १ अवकाश । फुरसत । २ आराम । चन । सुख । ३ शान्ति । सलामती । ४ तृप्ति । सतोप ।
निराते-(अव्य०) १ अवकाश से । फुरसत से । फुरसत म । २ बिना उतावली के । दौड धूप किये बिना । ३ चन से । आराम से । सुख से । निरात सू ।
निरी-(वि०) बहुत । अधिक । घणो ।
निरीक्षक-(न०) निरीक्षण करन वाला ।
निरीक्षण-(न०) अवलोकन । मुआइना ।

निरदई–दे० निदय।

निरदळणा–(न०) नाश। निदलन। (वि०) नाश करने वाला।

निरदळणो–(क्रि०) नाश करना।

निरदावो–(न०) १ अभियोग को निरस्त करना। निरस्त अभियोग। २ जिस पर दावा किया गया हो उस पर अपना किसी भी प्रकार का स्वत्व शेष नहीं रहने का लिखित पत्र। दावा उठाने का दस्तावेज। स्वत्व को छोड़ने का हस्तलेख। ३ नाएतराजी। ४ किसी प्रकार के स्वत्व से मुक्त रहना। हक नहीं लगाने या जमाने का भाव। ५ माया या प्रपंच से अलग रहना।

निरदुंद–(वि०) १ रागद्वेष मानापमान इत्यादि द्वन्द्वों से रहित। निद्वंद्व। २ उपद्रव रहित। ३ जिसका विरोध करने वाला कोई न हो। (न०) शिव। महादेव।

निरदोख–(वि०) १ निर्दोष। बेगुनाह। २ बेऐब। दुर्गुण रहित।

निरदोस–दे० निरदोख।

निरदोसी दे० निरदोस।

निरधणा–(वि०) १ पत्नी रहित। विधुर। २ निर्धन। गरीब।

निरधन–(वि०) गरीब। निधन।

निरधनियो–दे० निरधन।

निरधार–(न०)निर्धार। निश्चय। (अव्य०) निश्चय पूर्वक।

निरधारणो–(क्रि०)निर्णय करना। निश्चय करना। तय करना।

निरदुंद–(वि०) १ जो रागद्वेष मानापमान हर्ष शोक आदि से रहित हो। निद्वंद्व। २ स्वच्छ। निर्मल। ३ अविकारी।

निरनुनासिक–(वि०) जिसका उच्चारण नाक से हो। (व्या०)

निरपख–(वि०) निष्पक्ष।

निरपराध–(वि०)अपराध रहित। निर्दोष। बेकसूर।

निरपराधी–(वि०) अपराध रहित। बेकसूर।

निरफळ–(वि०) निष्फल। व्यर्थ। निफल।

निरबल–दे० निबल।

निरबंध–(वि०) निर्बन्ध। बन्धन रहित। छूटा। आजाद।

निरबीज–(वि०) १ बीज रहित। वीर्य हीन। २ निर्वंश।

निरबुधी–(वि०) निर्बुद्धि। मूर्ख।

निरभख–(वि०) भूखा।

निरभय–दे० निर्भय।

निरभर–दे० निर्भर।

निरभागी (वि०) निर्भाग्य। अभागा।

निरभीक–दे० निर्भीक।

निरभेळ–(वि०)बिना मिलावट का। शुद्ध। खालिस।

निरभै–दे० निरभय।

निरमणो–(क्रि०) १ निर्माण करना। बनाना। रचना करना।। २ किसी योनि में जन्म देना। उत्पन्न करना।

निरमळ–दे० निर्मल।

निरमळा–(वि०)१ शुद्ध मत करने वाला। साफ दिलवाला। २ सीधा। सज्जन। ३ निर्मल। स्वच्छ। ४ शुद्ध। पवित्र।

निरमाण–दे० निर्माण।

निरमायल–(वि०) १ नामर्द। नपुंसक। २ अशक्त। कमजोर। ३ कायर। डरपोक। ४ निस्सत्व। ५ स्त्री के अधीन रहने वाला स्त्रैण। (न०) शिवार्पण वस्तु। निर्माल्य।

निरमाळ–(न०) १ निर्माल्य। देवार्पित वस्तु। २ शिवार्पण वस्तु। (वि०) १ बेजान। २ निस्सत्व। ३ अशक्त। कमजोर। ४ कायर। डरपोक। ५ स्त्रैण।

निरमाळियो-दे० निरमायळ।
निरमळ-दे० निर्मूल।
निरमोही-दे० निर्मोही।
निरथक-(वि०) १ व्यर्थ। फजूल। २ जिससे कोई कार्य सिद्ध न हो।
निरलज-दे० निर्लज्ज।
निरळग-(वि०) १ अंग रहित। २ अलग्न। ३ निर्लिप्त। ४ अलग। जुदा।
निरवस-दे० निर्वंश।
निरवाण-(न०)चौहान वंश की एक शाखा। दे० निर्वाण।
निरवाळो-(वि०) १ संतान की शिक्षा विवाहादि से निवृत्त। २ सांसारिक प्रपंचों से दूर। ३ उत्तरदायित्वों से निवृत्त। निकवळो।
निरवाह-दे० निर्वाह।
निरवाहणो-(क्रि०) १ निर्वाह करना। निर्वाहना। २ परम्परानुसार बरतना। ३ निभाना। पालन करना।
निरविकार-दे० निर्विकार।
निरस-(वि०)१ बिना रस का। नीरस। २ स्वाद रहित। ३ सारहीन। ४ रूखा सूखा। ५ रागहीन। ६ गरीब। दीन।
निरकार-(न०) १ निराकार। परमात्मा। २ आकाश।
निरकुश-(वि०) अंकुश रहित। कोई अंकुश न मानें। स्वेच्छाचारी।
निरग-(वि०) १ अंग रहित। २ रंग रहित। ३ बदरंग।
निरजण-(न०) १ ब्रह्म। २ शिव। निरंजन। (वि०)१ निष्कलंक। २ निर्मल। ३ तेजोमय। ४ अंजन रहित।
निरजणी-(न०) १ मारवाड़ में डीडवाना नगर के पास गाढ़ा गाँव में संत हरिदास जी (हरिपुरुष जी) द्वारा प्रवर्तित एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय। २ इस नाम के अनेकों सम्प्रदायों में से एक। ३ निरंजनी सम्प्रदाय का शिष्य। (वि०) १ निरंजनी सम्प्रदाय संबंधी। २ निरंजनी सम्प्रदाय को मानने वाला।
निरतर-(क्रि०वि०) १ सदा। लगातार। (वि०) १ अंतर रहित। २ स्थायी।
निराऊध-(वि०)आयुध रहित। निरायुध। निरस्त्र।
निराकार-(वि०)बिना आकार का। (न०) १ परमात्मा। ब्रह्म। २ आकाश।
निराट-(वि०) १ बहुत। प्रचुर। विपुल। २ मात्र। (अव्य०) १ बहुत ही। प्रचुर प्रमाण में। २ बिल्कुल। बिल्कुल ही। ३ सर्वथा। सभी प्रकार। समूचो।
निराताळ-दे० निरीताळ।
निरादर-(न०) आदर रहित। अपमान।
निराधार-(वि०) १ आधार रहित। अवलंब रहित। २ बेबुनियाद। निर्मूल। ३ निराश्रय। असहाय।
निरालब-(वि०)आलंब रहित। निराधार।
निराळो-(वि०)१ एकांत। २ विलक्षण। अजीब। ३ अनुपम। ४ अद्वितीय। ५ अलग। जुदा। (न०) एकांत स्थान।
निराश-दे० निरास।
निराशा-दे० निरासा।
निरास-(वि०) निराश। ना उम्मेद। हताश।
निरासा-(ना०) निराशा। नाउम्मेदी।
निरात-(ना०) १ अवकाश। फुरसत। २ आराम। चैन। सुख। ३ शांति। सलामती। ४ तृप्ति। संतोष।
निरात-(अव्य०) १ अवकाश से। फुरसत से। फुरसत में। २ बिना उतावली के। दौड़ धूप किये बिना। ३ चैन से। आराम से। सुख से। निरात सूं।
निरी-(वि०) बहुत। अधिक। घणी।
निरीक्षक-(न०) निरीक्षण करने वाला।
निरीक्षण-(न०) अवलोकन। मुआइना।

निरीताळ–(वि०) १ अधिक। बहुत। (ना०) १ दीर्घकाल। देर। विलम्ब। (अ०य०) अधिक समय तक। बहुत देर तक।
निरीह–(वि०) १ उदासीन। २ इच्छा रहित।
निरुत्तर–(वि०) १ जो कोई जवाब न दे सके। २ जिसके पास कोई उत्तर न हो। ३ जिसकी जबान बंद हो गई हो।
निरुपम–(वि०) उपमा रहित।
निरू खो–दे० निम्नाडो।
निरेणी–(ना०)नख काटने का एक औजार। नहरनी।
निरो–(वि०)१ अधिक। बहुत। २ निपट। बिल्कुल।
निरोग–(वि०) रोग रहित। स्वस्थ। नीरोग।
निरोगो–दे० निरोग।
निरोध–(न०) अवरोध। रोक।
निरोह–(न०) निरोध। अवरोध।
निरोहर–दे० नीरोवर।
निर्गुण–(न०) १ सत्व रज और तम इन तीन गुणों से परे। परमात्मा। निर्गुण। (वि०) १ जो तीन गुणों से परे हो। २ जिसमें कोई गुण न हो।
निर्जन–(वि०) १ निर्जन। जन शून्य। २ एकांत। ३ सुनसान।
निर्जर–(न०) १ देवता। निर्जर। (वि०) जो कभी वृद्ध या पुराना न हो।
निर्जल–(वि०) निर्जल। बिना पानी का। (प्रदेश)।
निर्जला एकादशी–दे० निरजळा इग्यारस।
निर्जीव–(वि०) १ बिना जीव का। निर्जीव। प्राण रहित। २ निर्बल। ३ निकम्मा।
निर्णय–(न०) १ फैसला। २ निश्चय।
निर्णीत–(वि०)जिसका निर्णय हो चुका हो।
निर्दय–(वि०) १ दया रहित। बेरहम। क्रूर।
निर्दोष–(वि०) दोष रहित। निरपराध।
निर्द्वद–दे० निरदुन्द।
निर्द्वंद्व–दे० निरदुंद।
निर्बल–(वि०) बल रहित। दुर्बल।
निर्बलता–(ना०) बल हीनता। कमजोरी।
निर्बीज–(वि०) १ जिसमें बीज न हो। बिना बीज वाला। निर्बीज। २ निर्वंश। निःसंतान। ३ नपुंसक। वीर्यहीन।
निर्बुद्धि–(वि०) बुद्धि रहित। मूर्ख।
निर्भय–(वि०) निडर।
निर्भर–(वि०) अवलंबित।
निर्भीक–(वि०) निडर। निर्भय।
निर्मळ–(वि०) १ निर्मल। मल रहित। स्वच्छ। २ शुद्ध। पवित्र।
निर्माण–(न०)१ बनाने का काम। रचना। २ वह वस्तु जो बनकर तयार हुई हो। ३ रूप। आकार।
निर्मूल–(वि०) १ बिना जड का। २ निर्वंश। ३ आधार रहित।
निर्मोही–(वि०) १ मोह रहित। २ ममता रहित। ३ निष्ठुर।
निर्लज्ज–(वि०) १ लाज रहित। बेशर्म। २ अविवेकी।
निर्लेप–(वि०)जो राग द्वेष आदि से विरक्त हो। निर्लिप्त।
निर्लोभी–(वि०) लोभ रहित। संतोषी।
निर्वंश–(वि०) जिसका वंश न चला हो। जिसके वंश में कोई न रहा हो। २ संतान रहित। निस्संतान।
निर्वाण–(न०) १ मोक्ष। निर्वाण। २ छुटकारा। ३ शांति। ४ निवृत्ति। ५ मृत्यु। ६ परमात्मा। ७ एक सम्प्रदाय। (वि०) १ निष्कलंक। २ शून्य। ३ शांत। ४ निश्चल। ५ अवश्य।

निर्वाह-(न०)१ किसी परम्परा का चलता रहना। निर्वाह। २ निभाव। गुजारा। पालन। ३ आश्रय। ४ पूरा किया जाना।

निर्विकार-(वि०) १ विकार रहित। २ उदासीन। (न०) परब्रह्म।

निर्विघ्न-(वि०) विघ्न रहित।

निव त्ति-(वि०) त्यागी। विरागी। (न०) १ शांति। आनंद। २ मोक्ष। ३ निष्पत्ति। समाप्ति। अंत। ४ छुटकारा। निवृत्ति।

निलज-(वि०) निलज्ज। बेशरम।

निलजता-(ना०) निलज्जता। बेशर्मी।

निलजो-दे० निलज।

निलज्ज-दे० निलज्ज।

निलवट-(ना०) ललाट। लिलवट।

निलाट-(ना०) ललाट। भाल।

निलाड़-(ना०) ललाट। भाल।

निलै-(ना०) ललाट। भाल।

निवड-(वि०) १ अधिक। बहुत। २ घनिष्ट। ३ दृढ। मजबूत। ४ वीर। (क्रि०वि०) तुरत। शीघ्र।

निवडणो-(क्रि०) १ निवृत्त होना। छुटकारा पाना। करने को शेष न रहना। २ समाप्त होना। बीत जाना। ३ फसला होना। निर्णीत होना। तै होना। ४ शौच क्रिया से निवृत्त होना। ५ सिद्ध होना। तैयार होना। ६ पूर्ण विकसित होना। प्रौढ होना। ७ भला या बुरा सिद्ध होना।

निवणो-(क्रि०) १ नमना। झुकना। २ झुककर प्रणाम करना। नमस्कार करना।

निवतो-(न०) न्योता। निमंत्रण।

निवराई-(ना०) फुरसत। अवकाश। खाली समय।

निवरास-दे० निवराई।

निवरो-(वि०) १ बिना काम काज का। निकम्मा। खाली। बेकाम। २ जिसके पास काम नहीं हो। ३ जो काम से निवट गया हो। फारिग। निवृत्त। ४ कंवारा। ५ विधुर।

निवसन-(न०) १ स्त्री का अधोवस्त्र। २ घर। (वि०) वस्त्र रहित।

निवाज-(ना०) १ मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना। नमाज। नवाज। २ कृपा। अनुग्रह। (वि०) कृपा करने वाला।

निवाजणो-(क्रि०) १ भेंट करना। भेंट देना। २ सिरोपाव इनाम पद खिलअत आदि देकर संतुष्ट करना। ३ कृपा करना। ४ अभिवादन करना। ५ प्रसन्न होना। खुश होना। ६ तुष्टमान होना। ७ इनाम देना।

निवाजस-(ना०) १ कृपा। रहम। मिहरबानी। नवाजिश। २ पुरस्कार। इनाम। ३ ताजीम।

निवाण-(न०) १ नदी तालाब कुआँ आदि जलाशय। २ नहाने का स्थान। ३ जलक्रीडा का स्थान। ४ मानसरोवर।

निवाणभर-(न०) मेघ। बादल।

निवायो-(वि०) थोडा गरम। गुनगुना।

निवार-(ना०)खाट बुनने की पट्टी। नेवार।

निवारणो-(क्रि०)१ हटाना। दूर करना। निवारना। २ छोड़ना। ३ रोकना। वरजणो।

निवाळो-(न०) कौर। ग्रास। कवो।

निवास-(न०) १ घर। स्थान। आश्रय। २ रहना। रिहाइश। ३ गरमी। उष्णता।

निवासी-(वि०) निवास करने वाला। रहने वाला।

निवियासी-(वि०) अस्सी और नौ। (न०) ८९ की संख्या।

निवृत्त-(वि०) १ जिसने काम से अवकाश पा लिया हो। २ छूटा हुआ। विरक्त। खाली।

निवत्ति-(ना०) १ छुटकारा। २ मुक्ति। मोक्ष।
निवेटणो-(क्रि०) १ निबटना। निबडना। फसला करना। २ परस्पर समझा बुझा कर टटा झगडा मिटाना। ३ समाप्त करना। निबटाना।
निवेटो-(न०) १ निबडा। फसला। २ सुलझाव। निबटारा। ३ समाप्ति। अजाम। ४ काम की समाप्ति। ५ निर्णय। निराकरण।
निवेद-(न०) दवता को अर्पित वस्तु। नैवेद्य।
निवेदक-(वि०) निवदन करने वाला।
निवेदन-(न०) १ नम्रतापूवक किया जाने वाला कथन। प्राथना। २ वणन। ३ अपण। भेंट।
निवेस-(न०) १ निवास। २ घर। मकान।
निशा-(ना०) रात।
निशाकर-(न०) चद्रमा।
निशाचर-(न०) १ राक्षस। २ चोर। ३ भूत। पिशाच। ४ उल्लू। घूघू। ५ चमगादड। बागळ। ६ शृगाल। सियाल। ७ सप।
निशान-(न०) १ चिह्न। २ ध्वजा।
निशाना-(न०) लक्ष्य। निमाणा।
निशानाथ-(न०) चद्रमा।
निश्चय-(न०)१ दृढ सकल्प। २ निणय। जाच। फसला। ३ विश्वास। यकीन।
निश्चल-(वि०) स्थिर। अटल।
निश्चित-(वि०) चिंता रहित। बेफिक्र।
निपिद्ध-(वि०) १ वर्जित। २ दूषित।
निषेध-(न०) १ शास्त्र विहित मनाइ। विधि का उलटा। २ मना। अवरोध।
निष्कपट-(वि०) १ छल कपट स रहित। २ शुद्ध हृदय वाला।
निष्कलक-(वि०) १ कलक रहित। २ निर्दोष।
निष्ठा-(ना०) १ गुरुजनों या धम के प्रति श्रद्धा भक्ति। २ विश्वास। निश्चय।
निष्ठावान-(वि०) निष्ठा रखने वाला।
निष्पक्ष-(वि०) पक्ष रहित। तटस्थ।
निष्पाप-(वि०) पाप रहित।
निष्प्राण-(वि०) १ मृत। मरा हुआ। २ मरियल। मुड्दल।
निष्फळ-(वि०) जिसका कोई फल न हो। निष्परिणाम। व्यथ।
निस-(ना०) निशा। रात। निशि।
निसकपट-दे० निष्कपट।
निसकलक-दे० निष्कलक।
निसकारो-(न०) निश्वास।
निसचर-दे० निशाचर।
निसड्डो-दे० निसरडो।
निसतरणो-(क्रि०) निसतरना। निस्तार पाना। छुटकारा पाना।
निसतार-(न०) निस्तार। छुटकारा। उद्धार।
निसदिन-(न०) रातदिन। निशिवासर। (क्रि०वि०) १ रात दिन। आठो प्रहर। २ हमेशा। सवदा।
निसनण-(न०) चद्रमा। निशानयन।
निसपत-(ना०) १ निसबत। सम्बध। २ रिश्वत। घूस। उत्कोच। ३ भरोसा। ४ तुलना। बराबरी। ५ अपेक्षा। ६ परवाह। चिंता। ७ निशापति। चद्रमा। (अव्य०) १ सबध मे। बारे मे। २ के माफत। के जरिये।
निसफळ-दे० निष्फल।
निसबत-दे० निसपत।
निसमडण-(न०) चद्रमा।
निसरडो-(वि०) १ जिद्दी। हठी। २ बेशम। निलज्ज। ३ अनाचारी। ४ ढीट। धृष्ट।
निसरणी-(ना०) १ सीढी। निसेनी। २ ढांचा।

निसरणो-(क्रि०) १ बाहर होना। निसरना। निकलना। २ चले जाना। पार करना। (न०) बडी निसेनी।
निसरमो-(वि०) निलज्ज। वेशम।
निसवादो-दे० नवादो।
निसवासर-(क्रि०वि०) रातदिन। हमेशा। नित्य। निशिवासर। सदा।
निसक-(वि०) निःशक। निडर। निर्भय।
निसग-(वि०) सग रहित।
निसडो-दे० निसरडो।
निसाचर-दे० निशाचर।
निसाट-(न०) १ मुसलमान। २ राक्षस।
निसाण-(न०) १ निशान। चिन्ह। २ झडा। पताका। ३ हाथी, घोडे या ऊँट पर बजने वाला नगाडा। ४ हस्ताक्षर की जगह लगाई जाने वाली अगूठे की छाप। ५ यादगार। स्मारक। ६ लक्ष्य। निशाना।
निसाणी-(ना०) यादगारी के लिये दी हुई वस्तु। स्मृति चिन्ह। निशानी।
निसाणो-दे० निशाना।
निसानाथ-(न०) चन्द्रमा। निशानाथ।
निसाफ-(न०) इन्साफ।
निसार-(न०) पश्चिम देशों के देश वासी। पाश्चात्य लोग। (वि०) १ पश्चिमी। पाश्चात्य। २ सार रहित। दे० निकास।
निसासो-(न०) १ निःश्वास। लबा सास। २ दुखपूर्ण लबी सास।
निसा-(वि०) खरा। पक्का। (न०) १ जाँच। तपास। २ आवभगत।
निसा खातर-दे० निसाखातरी।
निसाखातरी-(ना०)१ भरोसा। विश्वास। २ पूर्ण विश्वास। पक्का भरोसा।
निसियर-(न०) १ निशाकर। चन्द्रमा। २ निशाचर।
निसीथणी-(ना०) रात। निशा।
निसेणी-(ना०) निसैनी। जीना। सीढी। सोपान। निसरणी।
निस्त-दे० निश्चय।
निस्पाप-दे० निष्पाप।
निस्फ (वि०) दो बराबर भागो मे से एक। आधा।
निस्फळ-दे० निष्फळ।
निहकाम-(वि०) १ कामना रहित। निष्काम। २ काम रहित। बेकार। निकामो।
निहकामो-दे० निहकाम।
निहकुण-(न०) शब्द। आवाज।
निहखरणो-(क्रि०) पीछे दौडना। पीछे भागना।
निहचळ-(वि०) निश्चल। अचल।
निहचै-दे० निश्चय।
निहटणो-(क्रि०) १ नष्ट करना। २ खत्म होना। ३ रुक जाना। ४ अड जाना।
निहस-(ना०) १ निर्घोष। आवाज। २ चोट।
निहसणो-(क्रि०)१ जूझना। युद्ध करना। २ शक्तिमान होना। ३ गर्जना। ४ बाजा बजाना। ५ आहत होना। ६ वीर गति को प्राप्त होना। ७ बाजा बजना। ८ प्रहार करना। ९ मारना। काटना।
निहग-(न०) १ घोडा। २ तरकस। ३ आकाश। ४ निःसग। ५ ब्रह्मचारी। ६ कवारा। ७ विधुर। (वि०) १ अकेला। एकाकी। २ निलज्ज। बेशर्म।
निहगपुर-(न०) स्वर्ग।
निहग साधु-(न०)वह साधु जो विवाह नही करता (घर बारी साधु के मुकाबिले)। विवाह सबध न करने वाला साधु।
निहाई-(ना०) १ प्रहरण। २ प्रहार। चोट। ३ ध्वनि।

निहाणी-(ना०) १ बढई का एक औजार। रुखानी। निहानी। २ नाखून। काटने का औजार। निहानी। नखहरणी।

निहार-(न०) १ परिणाम। नतीजा। निकाल। २ दृष्टि। ३ निकलने का मार्ग या द्वार। ४ मलमूत्रादि की उत्सर्ग क्रिया।

निहारणो-(क्रि०) १ देखना। २ गौर से देखना। ३ विचार करना।

निहाळणो-दे० निहारणो १ २ ३। ४ कृपा पूर्वक देखना। देखने की कृपा करना।

निहाव-(न०) १ तोप छूटने का शब्द। २ नगाडे या ढोल के बजने का शब्द। ३ निहाई पर पडने वाले घन या हथोडे के घाव का शब्द। ४ ग्रहरण। निहाइ। ५ तोप। ६ घाव। चोट। प्रहार। ७ आकाश।

निंगळणो-दे० नीगळणो।

निंदक-(वि०) निंदा करने वाला।

निंदणो-(क्रि०) निंदा करना। वगोवणो।

निंदरा-(ना०) १ निंदा। बुराई। २ निद्रा। नींद।

निंदरोही-(ना०) निर्जन जंगल। रोही।

निंदवणो-(क्रि०) निंदा करना। वगोवणो। निंदणो।

निंदा-(ना०) १ दोष वर्णन। २ किसी में ऐसा दोष बताना जो वास्तव में न हो। ३ किसी की कल्पित या वास्तविक बुराई या दोष का वर्णन। ४ बदनामी। अपकीर्ति। वगोवणो।

निंदास्तुती-(ना०) १ निंदा के रूप में की जाने वाली स्तुति। व्याजस्तुति। २ बारहठ ईसरदास का इस प्रकार की गई ईश्वर स्तुति का एक ग्रंथ। 'गुण निंदा स्तुति।' ३ निंदा और स्तुति।

निंबार्काचार्य-(न०) द्वैताद्वैत सिद्धांत के प्रवर्तक व निम्बार्क संप्रदाय के आदि आचार्य।

निंबोळी-दे० नींबोळी।

नी-(अव्य०) १ निश्चय। जैसे हूं आयो हो नी ? २ अनुरोध जैसे लावनी, 'देवैनी, करनी। ३ नहीं। (न०) निषाद स्वर का नाम (संगीत)। (प्रत्य०) षष्ठी विभक्ति का एक नारी जाति चिन्ह। 'की। (-या०)।

नीक-(ना०) नाली। मोरी। माळो। (वि०) अच्छा।

नीकडै-(क्रि०वि०) १ सम्मुख। आगे। २ निकट।

नीको-(वि०) अच्छा।

नीगम-दे० निगम।

नीगमणो-दे० निगमणो।

नीगरडो-(वि०) अदीक्षित। निगुरा।

निघरियो-(वि०) गृहविहीन।

नीच-(वि०) १ अधम। निकृष्ट। २ खल। दुष्ट। खोटा। ३ निम्न श्रेणी का।

नीच ऊँच-(वि०) १ अच्छा बुरा। २ उन्नत अवनत। ३ खाटा खरा। ४ सुख दुख।

नीचकुळी-(वि०) नीच कुल में उत्पन्न।

नीचता-(ना०) क्षुद्रता। नीचपना।

नीचधुणियो-(वि०) १ धिक्कारने से लज्जा के मारे नीचे देखने वाला। २ नीचे देखते हुए चलने वाला। ३ नीची दृष्टि रखकर बात करने वाला। गरदन को नीची झुका कर (सामने नहीं देखकर) बात करने वाला। ४ बेशर्म। निलज्ज। निलजो। ५ निकृष्ट। अधम। नीचा जायो।

नीचाई-(ना०) नीचा या ढलुवां होने का भाव। ढलुवांपन।

वा जोया-(न०) १ किसी दुष्कर्म या कलंक के कारण समाज के सम्मुख लज्जित बन रहने की या दशा हुग्रा रहने की स्थिति । २ दुष्कर्म द्वारा उत्पन्न लज्जा के कारण मुख या नीचा दसन की स्थिति म हाना । ३ नाम स नीचा दखन का मयाग । ४ लज्जित होना पडे ऐसी स्थिति ।

ीचाण-(ना०) १ जमीन का नीचे का भाग । ढलुआँ भाग । नीची जगह । ढलुआँपन । २ निवाई । नीचात ।

ीचात-दे० नीचाण ।

ीचे-(क्रि०वि०) निम्न तल की ओर । अधो भाग म । हठ ।

ीचे ऊपर-(अव्य०) अव्यवस्थित । अस्त व्यस्त ।

नीचा-(वि०) १ जिसके आसपास का तल ऊचा हो । जो गहराई पर हो । जहाँ गहराई हो । २ ऊचाई म सामान्य की अपेक्षा कम । जो ऊचाई पर न हो । ३ झुका हुआ । नत । ४ कम ऊचाई वाला ५ खोटा । बुरा । ६ जो गुण, जाति पद म उतरता हुआ हो ।

नीचा जायो-दे० नीच पूणियो ।

नीछटणो-(क्रि०) १ प्रहार करना । मारना । २ मार मारना । पीटना । ३ निकलना । ४ फेंकना ।

नीछो- (न०) इनकार । अस्वीकार ।

नीझर-(न०) झरना । सोता । निझर ।

नीझरण-(न०) झरना । निझर । सोता झरणो । (ना०) १ वर्षा की झडी । २ वर्षा की ध्वनि ।

नीझरणी-(ना०) १ निझरणी । नदी । २ छोटा सोता । झरना ।

नीठ-(अव्य०) कठिनाई से । मुश्किल से किसी तरह । नीठां ।

नीठणो-(क्रि०) १ समाप्त होना । खतम होना । खूटणो । २ समाप्त करना । खतम करना । खूटावणो । ३ खीरज रखना । ४ आजमाना । जांचना । परखणो ।

नीठानीठ-(क्रि०वि०) बहुत मुश्किल से । जस तस करके ।

नीठां-दे० नीठ ।

नीठां सी-(क्रि०वि०) बहुत मुश्किल से ।

नीड-(वि०) कठिन । (न०) १ चिड़िया का घोसला । माळो । २ रहने का स्थान । निवास स्थान । ३ नदी के किनारे का प्रदेश । नइयड । (क्रि०वि०) निकट । पास ।

नीत-दे० नीति ।

नीतर-(अव्य०) नहीं तो ।

नीतरणो-दे० नितरणो ।

नीति-(ना०) १ लोक व्यवहार का ढग । २ धर्मानुसार आचरण । ३ सदाचार । ४ लोकाचार की वह पद्धति जिससे अपना हित होने के साथ साथ सभी का हित हो । ५ समाज की भलाई के लिये निश्चित आचार व्यवहार । नीति । नय । ६ व्यवहार का तरीका जिससे अपनी भलाई हो पर दूसरों को तकलीफ न हो । ७ सदाचार पूर्ण व्यवहार । नीति । ८ न्याय व्यवहार । ९ मशा । इरादा ।

नीतिभ्रष्ट-(वि०) १ नीति से विचलित । २ अनैतिक । ३ दुराचारी ।

नीतिरीति-(ना०) १ चालचलन । वतन । चालचलगत । २ सदाचार ।

नीतिहीन-(वि०) नीतिभ्रष्ट ।

नीतोताई-(वि०) १ उच्छृंखल । २ नखराली ।

नीधणियो-(वि०) १ जिसका कोई मालिक न हो । २ लावारिश (वस्तु) ।

नीधसणो-(क्रि०) १ नगाड़े का बजना । २ नगाड़े का बजाना ।

नीराकर-(न०) १ नीराकर । समुद्र । २ बादल ।
नीरो-(न०) १ नीरो । गाय भैंस आदि को खिलाया जाने वाला चारा । घास । कड़ब । २ चारा । चारा । ३ चारा डालने का काम ।
नीरालय-(न०) समुद्र ।
नीरोहर-(न०) समुद्र ।
नील-(ना०) १ नीला । नील । २ आसमानी रंग । ३ गुळी । लाल बुरज । ... का रंग । ४ एक पौधा । ५ सौ अरब की संख्या । ६ शरीर पर चोट लगने से पड़ने वाला नीला निशान । सौल ।
नीलक-दे० नीलक ।
नीलकंठ-(न०)१ महादेव । शिव । २ एक चिड़िया जिसके डैने और कंठ नीले होते हैं ।
नीलगर-(न०) १ नील के पौधे से रंग बनाने वाला व्यक्ति । २ रंगरेज ।
नीलटांच-(न०) एक पक्षी ।
नीलम-(न०) नीले रंग का एक रत्न । नीलमणि ।
नीलक-(न०) एक प्रकार का जरी के काम वाला वस्त्र ।
नीलग-(न०) हंस । दे० नीलक ।
नीलंबर-(न०) १ नीला वस्त्र । नीलांबर । हरा कपड़ा । २ आकाश । नीलाकाश । ३ बलराम ।
नीलाणी-(वि०) १ हरे रंग की । हरित । २ हरियाली से आच्छादित । ३ प्रफुल्लित । प्रसन्न । (क्रि०भू०) १ हरियाली से आच्छादित होगई । हरी होगई । नीली होगई । २ प्रसन्न होगई ।
नीलाणोजणो-(क्रि०) १ हरियाली से छा जाना । २ हरित होना । ३ प्रसन्न होना ।
नीलाणो-(क्रि०)१ हरियाली से छा जाना । २ हरा होना । ३ प्रसन्न होना ।
नीलाम-(न०) ... ... । नीलाम ।
नीली-(स्त्री०) १ दूब । ... रंग की । ... । २ आसमानी रंग की । ३ ... । ४ ... । ... । (न०) १ ... । २ ... रंग । पाड़े का नाम ।
नीलो-(वि०) १ हरा । हरे रंग का । हरित । ... । २ आसमानी रंग का । ३ सजल । रसवाला । जो सूखा न हो । हरा । तरोताजा । ४ गाढ़ । गीला । (न०) १ आसमानी रंग का घोड़ा । २ आसमानी रंग के घोड़े का नाम । ३ हरा घास । साग । घासपात ।
नीलो खड-(न०) हरा घास ।
नीली थोथो-(न०) तूतिया । नीलो थोथो ।
नीलोफर-(न०) १ नीलकमल । २ चादर की किनारी ।
नीव-दे० नींव ।
नीवडणो-(क्रि०) १ निपटना । निवृत्त होना । २ समाप्त होना । ३ तयार होना । ४ पूर्ण विकसित होना । प्रौढ़ होना । ५ अनुभवी होना । ६ ... होना । निर्णीत होना । ७ पहुँचना । ८ बुरा या भला सिद्ध होना ।
नीवत-दे० नीयत ।
नीवाडो-(न०) कुम्हार का (आग लगा कर कच्चे) बरतन पकाने का स्थान या भट्टा । आवाँ ।
नीवी-(ना०) १ स्त्री का अधोवस्त्र । २ नाड़ा । इजारबंद । नाड़ी ।
नीसरणी(ना०) निसनी ।
नीसरणो-दे० निसरणो ।
नीसाण-दे० निसाण ।
नीसाणी-(ना०) १ राजस्थानी काव्य का एक मात्रिक छंद । डिंगल का एक छंद । २ स्मारक । ३ निशानी । चिह्न ।

नीध्रस–दे० नीघस ।

नीध्रसणो–दे० नीघसणो ।

नीपज–दे० निपज ।

नीपजणो–दे० निपजणो ।

नीपण–(न०) १ चारण । २ याचक । ३ गारा । कीचड़ । ४ लीपने की वस्तु । ५ लीपने का काम ।

नीपणो–(क्रि०) १ गोबर मिट्टी आदि से किसी जगह को लेपना । लीपना । २ पोतना ।

नीपणो गू पणो–(क्रि०) लीपना पोतना । लीप पोत कर स्वच्छ करना ।

नीम–(ना०) १ नींव । २ आधार । पायो । ३ आधी दूरी । (न०) नीम वृक्ष । निंब । नीमड़ो । (वि०) आधा ।

नीमगिलोय–(ना०) नीम वृक्ष के ऊपर फलने से गिलोय लता का नाम ।

नीमजणो–(क्रि०) १ निमज्जना । स्नान करना । नहाना । २ उज्ज्वल होना । ३ पवित्र होना । ४ गोता लगाना । डुबकी मारना । ५ दो टुकड़ों में कट जाना । ६ जन्म लेना । उत्पन्न होना । ७ ठानना । आरंभ करना ।

नीमजर–(ना०) नीम की मंजरी । निंब मंजरी ।

नीमड़ो–(न०) नीम वृक्ष ।

नीमण–(वि०) जो भीतर से खाली या पोला न हो । ठोस ।

नीमणियाइत–(वि०) १ नियुक्त करने वाला । मुकर्रर करने वाला । २ जन्म देने वाला । उत्पन्न करने वाला ।

नीमणो–(क्रि०) १ नियुक्त करना । मुकर्रर करना । २ निश्चित करना । ३ निश्चय करना । विचार करना । ४ जन्म लेना । उत्पन्न होना । ५ निर्माण करना । बनाना ।

नीमवण–(न०)१ जन्म । उत्पत्ति । (वि०) उत्पन्न करने वाला । रचने वाला ।

नीम हकीम–(न०) ऊट वैद्य ।

नीमाड़ो–दे० नीवाड़ो ।

नीमी–(ना०) १ रुपया पैसा । २ माल मत्ता । धन । ३ जायदाद । (वि०) आधी ।

नीमे–(अव्य०) आधे हिस्से से (हुंडी) । जैसे—हुंडी रु० १०००) अखरै रुपिया हजार री नीमे रुपिया पाँच सो रा दूणा पूरा साहजोग दीजो ।

नीमोनीम–(अव्य०)१ आधाआध । २ आधे का आधा ।

नीयत–(ना०) १ मनोवृत्ति । आंतरिक भावना । २ आशय । ३ मंशा । इच्छा । मन का इरादा । ४ उद्देश्य ।

नीर–(न०) १ पानी । जल । २ कांति । आभा । ३ शोभा ।

नीरकी–(ना०) मद्य । शराब ।

नीरखीर–(न०) १ पानी और दूध । २ सारग्राही वृत्ति । (वि०) सारग्राह्य ।

नीरज–(न०) १ कमल । २ मोती ।

नीरण–(न०) १ घास-चारा । २ पशुओं को घास चारा डालने का काम । नीरण रो काम ।

नीरणी–(ना०) १ गाय, भैंस आदि घर के पशुओं को नियत समय पर डाला जाने वाला घास चारा । २ ढोरों को डाले जाने वाला घास ।

नीरणो–(क्रि०) घर के गाय भैंस आदि पशुओं को नियत समय पर घास चारा डालना । ढोरों को घास डालना ।

नीरद–(न०) बादल ।

नीरध–(न०) समुद्र । नीरधि ।

नीरस–(वि०) रस रहित । निरस ।

नीराजणो–(क्रि०) आरती उतारना ।

नीराजन–(ना०) आरती ।

नीरामय-(न०) १ नीराशय। जलाशय। २ तालाब।

नीरो-(न०) १ नीरी हुई घास का नहीं खाया जाने वाला शेष भाग। नीरा। कचरा। २ घास। चारा। ३ नीरणी करने का काम।

नीरोवर-(न०) समुद्र।

नीरोहर-(न०) समुद्र।

नील-(ना०) १ काई। लील। २ आसमानी रंग। ३ गुळी। लाल बुरज। नील का रंग। ४ एक पौधा। ५ सौ अरब की संख्या। ६ शरीर पर चोट लगने से पड़ने वाला नीला निशान। लील।

नीलक-दे० नीलक।

नीलकंठ-(न०)१ महादेव। शिव। २ एक चिड़िया जिसके डैने और कंठ नीले होते हैं।

नीलगर-(न०) १ नील के पौधे से रंग बनाने वाला व्यक्ति। २ रंगरेज।

नीलटांच-(न०) एक पक्षी।

नीलम-(न०) नीले रंग का एक रत्न। नीलमणि।

नीलक-(न०) एक प्रकार का जरी के काम वाला वस्त्र।

नीलग-(न०) हंस। दे० नीलक।

नीलंबर-(न०) १ नीला वस्त्र। नीलांबर। हरा कपड़ा। २ आकाश। नीलाकाश। ३ बलराम।

नीलाणी-(वि०) १ हरे रंग की। हरित। २ हरियाळी से आच्छादित। ३ प्रफुल्लित। प्रसन्न। (क्रि०भू०) १ हरियाली से आच्छादित होगई। हरी होगई। नीली होगई। २ प्रसन्न होगई।

नीलाणीजणा-(क्रि०) १ हरियाली से छा जाना। २ हरित होना। ३ प्रसन्न होना।

नीलाणा-(क्रि०)१ हरियाली से छा जाना। २ हरा होना। ३ प्रसन्न होना।

नीलाम-(न०) बोली बोल कर माल बेचने का एक ढंग। नीलाम।

नीली-(वि०) १ हरी। हरे रंग की। सब्ज। २ आकाशी रंग की। ३ गीली। आर्द्र। ४ सब्ज। रसवाली। हरेरी। (ना०) १ सफेद रंग की घोड़ी। २ सफेद रंग की घोड़ी का नाम।

नीलो-(वि०) १ हरा। हरे रंग का। हरित। सब्ज। २ आकाशी रंग का। ३ सब्ज। रसवाला। जो सूखा न हो। हररा। तरोताजा। ४ आर्द्र। गीला। (न०) १ सफेद रंग का घोड़ा। २ सफेद रंग के घोड़े का नाम। ३ हरा घास। चारा। घासपात।

नीलो खड-(न०) हरा घास।

नीली थोथो-(न०) तूतिया। लीलो थोथो।

नीलोफर-(न०) १ नीलकमल। २ बोडर की चित्रकारी।

नीव-दे० नींव।

नीवड़णो-(क्रि०) १ निपटना। निवृत्त होना। २ समाप्त होना। ३ तैयार होना। ४ पूरा विकसित होना। प्रौढ़ होना। ५ अनुभवी होना। ६ तै होना। निर्णीत होना। ७ पहुंचना। ८ बुरा या भला सिद्ध होना।

नीवत-दे० नीयत।

नीनाडो-(न०) कुम्हार का (आग लगा कर कच्चे) बरतन पकाने का स्थान या भट्ठा। आवा।

नीवी-(ना०) १ स्त्री का अधोवस्त्र। २ नारा। इजारबंद। नाडो।

नीसरणी(ना०) निसेनी।

नीसरणो-दे० निसरणो।

नीसाण-दे० निसाण।

नीसाणी-(ना०) १ राजस्थानी काव्य का एक मात्रिक छंद। डिंगल का एक छंद। २ स्मारक। ३ निशानी। चिह्न।

(ना०) 'नीसाणी' संज्ञक राजस्थानी काव्य ग्रन्थ । जैसे-'नीसाणी विवेक वार्ता री।
नीसासो- (न०) निस्स्वास । लँबी सांस । निश्वास ।
नीगळणो-(क्रि०) १ अधिक पुराना होने तथा चिकनाई आदि लगने से मिट्टी के पात्र की वह स्थिति होना कि वह चुए नहीं । २ अधिक समय तक पानी भरा भरा रहने से मिट्टी के घडे का पक्का हो जाना । ३ रोग आदि संकटों से मुक्त होना । ४ कुशलता प्राप्त करना । कुशल होना । ५ चालाक होना । धूर्तता सीखना । ६ निगलना । गिटना । ७ परिपक्व होना । ८ प्रौढ होना । ९ निपुण होना । १० अनुभवी होना ।
नीगारणो-(न०) १ कपडे का वह टुकडा जिससे चक्की की वाटी में से आटे को झाड़ पोंछ कर साफ किया जाता है । २ फटा हुआ पुराने कपडे का टुकडा । (क्रि०) चक्की की वाटी में लगे चून को कपडे से पोंछ कर साफ करना ।
नी-तर-दे० नहिंतर । नीतर ।
नी-तो-दे० नहीं तो ।
नीद-(ना०) निद्रा । ऊँघ ।
नीदर-(ना०) निद्रा ।
नीदाण-दे० नदाण ।
नीदामण-दे० नँदाण ।
नीदामणी-दे० नदाण ।
नीदाळ-(वि०) निद्रालु ।
नीदाळवो-(वि०) निद्रालु ।
नीदाळुवो-(वि०) अधिक सोने वाला । उनींदा ।
नीदाळु-(वि०) निद्रालु । निद्राशील ।
नीब-(न०) नीम वृक्ष ।
नीबडो-(न०) नीम।
नीबावत-(न०) निंबार्काचार्य का अनुयायी साधु ।
नीबू-(न०) एक प्रसिद्ध खट्टा फल । निम्बू । नींबू ।
नींबोळी-(ना०) १ नीम वृक्ष का फल । निबौरी । नीमकौडी । २ स्त्री के गले का एक गहना । मूट । तिमनिया । तिमणियो ।
नीव-(ना०) बुनियाद । नींव । आधार । जड । रांग ।
नीवाडो-दे० नीवाडो ।
नुकती-दे० नुगती ।
नुकतो-दे० नुगतो ।
नुकरो-(न०) १ छोटा टुकडा । २ अफीम का टुकडा । ३ सफेद रंग का घोडा । ४ घोडे का सफेद रंग । ५ चांदी ।
नुकळ-(न०) अफीम आदि नशीले पदार्थों के खाने के बाद मुँह का स्वाद सुधारने के लिए सुपारी मिश्री, खारक आदि का टुकडा । नुकरो ।
नुकल-दे० नकल । दे० नुकळ ।
नुक्स-(न०) त्रुटि । कसर । नुक्स ।
नुकसाण-(ना०) १ नुकसान । हानि । २ बिगाड । दोष । ३ हानि । घाटा । क्षति । ४ ध्वंस । नाश ।
नुकसाणी-(ना०)१ नुकसान । हानि । २ नुक्सान की पूर्ति । हरजाना ।
नुगणो-(वि०) १ निगुणी । मूर्ख । २ उपकार को नहीं मानने वाला । कृतघ्न । निगुणो ।
नुगती-(ना०)एक मिठाई । मोटी बुंदिया । नुक्ती ।
नुगतो-(न०) १ अवसर । मौका । २ नैमित्तिक कार्य । ३ नैमित्तिक भोज । ४ मृत्युभोज । नुकता । ५ सिफर । बिंदी । सुन । ६ सिंधी उर्दू, फारसी भाषाओं में हरूफ या लफ्ज के नीचे-ऊपर सजा के रूप में रखा जाने वाला बिन्दु । ७ पर्व या उत्सव आदि का विशिष्ट दिन ।

नुगरो–दे० निगुरो ।
नुगसाण–दे० नुकसाण ।
नुती–(ना०)स्तुति । प्रशसा ।
नुमाइश–(ना०) प्रदशनी ।
नुसखो–(न०) १ ग्रौषध विधान । उपचार पत्र । नुसखा । २ इलाज । उपाय । ३ टाटका ।
नुएली–(वि०) १ नवेली । युवती । २ नयी ।
नुग्रो–दे० नवो ।
नुवो–दे० नवा ।
नूखाणी–(ना०) १ यवनो का नाश करने वाली । यवन भक्षिणी । चडी । शक्ति । २ दुष्टो का मदन करन वाली ।
नूजणो–दे० नवजणो ।
नूतो–दे० नूतो ।
नूनता–(ना०) १ न्यूनता । कमी । २ वेसमझी । ३ ग्राच्छादन ।
नूनी–(ना०) बच्चे की मूत्रे द्री ।
नूप–(वि०) ग्रनूप । ग्रनुपम ।
नूपुर–(न०) परो म पहनन का एक गहना । पजनी । २ नेवर । नेवरी ।
नूर–(न०) १ तेज । प्रकाश । ज्योति । ग्राभा । २ शोभा । कांति । ३ शौय । ४ नत्र । ज्योति । ५ वाहन भाडा । ६ ईश्वर ।
नू–(प्रत्य०) कम ग्रौर सम्प्रदान कारक की विभक्ति । को । जसे—थानू (तुमको), मोनू (मुझको), राजानू (राजा को) । (ग्रव्य०) १ म । ग्रदर । २ लिये । के लिये ।
नूजणो–दे० नवजणो ।
नूतणो–(क्रि०) निमन्त्रण देना । निमत्रित करना ।
नूता–(न०) १ निमन्त्रण । भोजन करने को दिया जाने वाला निमत्रण । न्योता । नतो । नतरो । दे० नत ।
नूध–(ना०) १ नोंध । नोट । टिप्पणी । २ विवरण । प्रतिलिपि ।
नूधणो–(क्रि०) १ नाधना । दज करना । २ नोट लिखना । ३ विवरण लिखना ।
नूध वही–(ना०) दी हुई या बची हुई वस्तुग्रों को लिखने की वही ।
नृत्य–(न०) नाच ।
नृप–(न०) राजा । नरपति ।
नृशसता–(ना०) क्रूरता । निदयता ।
नृसिंह चतुदशी–(ना०) वैशाख शु १४, जिस दिन भगवान ने नृसिंह ग्रवतार लेकर हिरण्यकशिपु को मारा था ।
नेउर–दे० नूपुर ।
नेऊ–(वि०)निब्वे । (ना०)निब्ब की सख्या । ६०
नेक–(वि०) १ ग्रच्छा । भला । २ मनोहर । मनोरम । रमणीय । ३ प्रामाणिक । सच्चा । ४ धार्मिक । ५ नीतिमान । ६ सज्जन । शिष्ट । ७ थोडा । जरासा । किंचित ।
नेकनाम–(वि०) प्रतिष्ठित ।
नेकनामी–(ना०) १ नामवरी । सुयश । सुकीर्त्ति । सुख्याति । २ इमानदारी ।
नकी–(ना०)१ इमानदारी । प्रामाणिकता । २ धार्मिकता । ३ उपकार । भलाइ । ४ उत्तम व्यवहार । ५ सज्जनता । शिष्टता । ६ (राजा महाराजा के ग्रान पर) दुहाइ पुकारना । स्तुति वचन ।
नकीवध–(वि०) ईमानदार । (ना०) ईमानदारी ।
नेखम–(न०)१ सीमा चिन्ह । सेढो । २ निश्चय । (वि०) १ दृढ । मजबूत । २ पक्का । ३ स्थायी ।
नेग–(न०) १ विवाहादि ग्रवसरो पर ग्राश्रिता को दिया जान वाला पुरस्कार । पौनिया को दी जान वाली लाग । बख्शिश । दस्तूर । बधाण । २ इस प्रकार दने का प्रथा ।

नेमत–दे० निग्रामत ।

नेमवरम–(न०) १ पूजा पाठ ग्रादि धार्मिक कृत्य । २ वे कृत्य जा धम से सबध रखत हैं ।

नमिया–(वि०) १ नियम से पूजा पाठ करने वाला । २ नियम का पालन करने वाला । नियम से पालन करन वाला । नियमी । नेमी ।

नेर–(न०) १ कतिपय नगरो के नाम के ग्रत म लगने वाला प्रत्यय । जसे—बीकानेर, चपानर जोबनेर आदि । २ नगर का ग्रपभ्र श रूप । ३ नगर ।

नव–(न०) १ छपरे की छाजन का थेपडा । खपरल । २ नरिया । ३ छपरे की किनारी जिसम होकर बरसात का पानी नीचे टपकता है । छप्पर के छोर के खपरे। ओलती । ग्रारी । ४ ओलती म से गिरने वाला पानी ।

नवगी–दे० नेगी ।

नेवज–(न०) दवता को ग्रपण किया जाने वाला मधुरान्न । नवेद्य । भोग । प्रसाद ।

नव झरणो–(मुहा०) १ त्रुटि होना । २ दोष या ग्रवगुण होना । ३ छपर स पानी टपकना । ग्रोलता म म पानी गिरना ।

नेवर–(न०) १ स्त्री क पांवो का एक गहना । नेवरी । २ पाजेब । नुपुर । नेपुर । ३ कोतल घोडे के एक पांव म पहिनाया जाने वाला एक जेवर । नेवर ।

नेवरी–(न०) १ स्त्री के पावो का एक गहना । नेवरी । २ पाजेब । नूपुर ।

नेवाण–(न०) जगनमेर जिले का एक प्रदश । दे० निवाण ।

नेस–(न०) १ दान म दी हुइ भूमि या गाव । २ घर । मकान । ३ प्रदश । ४ किसानो तथा ग्वालो का जगल म बनाया हुग्रा भाड़ो वाला छोटा गांव । ढाणी । ५ जगल म बनाया हुग्रा ग्रस्थाइ निवास । ढाणी । ६ ऊँट के ग्रायु सूचक खास खास दात । ७ तालाब भर जाने पर पानी के निकाल के लिये बनाया हुग्रा माग । नेसटो । ८ ग्रसुर । राक्षस ।

नसटो–(न०) तालाब भर जाने पर पानी के निकाल के लिये बनाया हुग्रा माग । नेस । ओटो ।

नसाधर–(वि०) १ वह जिसके नेस के दांत ग्रा गय हो (ऊँट) । २ पक्का । खरा ।

नेह–(न०) १ स्नेह । प्रेम । २ तेल । स्नेह ।

नेहडी–(ना०) मथानी को सीधी खडी रखने का बिलोने का एक उपकरण ।

नेहडो–(न०) स्नेह । नेह ।

नेहडो–दे० नेहढो ।

नेहढो–दे० निसरडो ।

नेहप्रिय–(न०) दीपक । दीवो ।

नेह भीनो–(वि०) स्नेहसिक्त ।

नेहालदी–(ना०) प्रेमिका । (वि०) स्नेह लुब्धा ।

नेही–(वि०) प्रेमी । स्नेही । (न०) मित्र । सखा ।

नै–(प्रत्य०) १ कम कारक की विभक्ति । को । जसे—राम नै ग्रावण दो ग्रर्थात राम को ग्रान दो । २ क्रिया (मूलधातु) के ग्रत म लग कर करके, कर के ग्रर्थ को प्रकट करने वाला एक प्रत्यय जसे—'रोटी खायन ग्राऊ हू' ग्रर्थात रोटी खाकर (खा करके या खा के) ग्राता हू । ३ एक समानाधिकरण ग्रव्यय । वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोडने का काम करता है । ग्रौर । व । एव ही । जसे— राम न केशव रोटी खाय रया है ग्रर्थात राम ग्रौर केशव रोटी खा रहे हैं । ४ दिशा सूचक शब्द क साथ लग कर ग्रोर, तरफ ग्रथ को व्यक्त करने वाला एक प्रत्यय । जसे— प्रठीन 'उठीन

नेगदार–(न०) नेग पाने का अधिकारी। व्यक्ति। नेगी। पौनी।
नेगी–(न०) १ त्यौहार के दिन नेग (नेट) लेने वाला व्यक्ति। पौना। २ नेग पाने या लेने का अधिकारी। पौनी। नेगी।
नेचो–(न०) १ हुक्के की नली। मेर। २ निगाली।
नेजाळ–(न०) १ भाला बरदार। नेजा बरदार। २ भाले वाला।
नेजो–(न०) १ भाला। २ पताका। ३ चिलगोजा। नोजा। नेवजा।
नेट–(अव्य०) १ अंत तक। २ अंत में। ३ नहीं तो। (वि०) नष्ट। (न०) १ निश्चय। २ समाप्ति। ३ भेद। रहस्य।
नेटणो–(क्रि०) १ खतम होना। समाप्त होना। २ मर जाना। ३ खतम करना। समाप्त करना। ४ मारना।
नेठ–(वि०) १ नष्ट। २ मृत। (क्रि०वि०) कठिनता से। मुश्किल से।
नेठणो–(क्रि०) १ आजमाना। २ धीरज रखना। ३ खतम करना। समाप्त करना। ४ खतम होना। समाप्त करना। ५ मना करना। रोकना। ६ मुलतवी रखना।
नेठाव–(न०)१ धैर्य। धीरज। २ ठहराव। सहन शीलता। ३ समाप्ति। अंत। ४ विश्राम। रहना। ५ निवास।
नेठो–दे० नेठाव।
नेड–दे० नड्यड।
नेडो–(क्रि०वि०) समीप। पास। नजीक। (वि०) सबब वाला।
नेढ–(वि०) १ मूर्ख। २ हठी। (ना०) १ मूर्खता। २ हठ। ३ निलज्जता।
नेढो–(वि०) निलज्ज। निसड्डो।
नेत–(न०)१ मंगलसूत्र। २ कंगण डोरा। ३ विरुद। ४ व्यवस्था। ५ निश्चय। संकल्प। ६ मथानी की डोरी। ७ बेंत। ८ भाला। ६ पगड़ी। १० नेत्र। ११ झंडा। ध्वज। (वि०) सीधा।
नेतर–(ना०) बेंत। छड़ी। (न०)१ नेत्र। आंख। २ मूर्ति के लगाई जाने वाली कृत्रिम आंख। ३ शाखा।
नेतरो–(न०) बिलौना बिलौने की रस्सी। मथानी की रस्सी। नेती।
नेता–(न०) आगेवान। अग्रणी।
नेताजी–(न०) महान् क्रांतिकारी, वीर और अद्वितीय देशभक्त स्वनाम धन्य स्व० श्री सुभाषचन्द्र बोस का सम्माननीय नाम तथा विरुद।
नेति–(अव्य०) १ संस्कृत भाषा का एक पद जिसका ईश्वर की महिमा के रूप में प्रयोग किया जाता है। वह परब्रह्म जिसका अंत नहीं है। नेति। २ जिसकी इति नहीं। ३ हठयोग का एक भेद। नेती।
नेतो–(न०) बिलौने की रस्सी। नेतरो।
नेत्र–(न०)१ आंख। नेत्र। २ मथानी की रस्सी। ३ दो का संख्यासूचक शब्द। ४ छड़ी। ५ शाखा।
नेनो–दे० नेतरो।
नेपज–दे० नप।
नेपत–दे० नेप।
नेपाल–(न०) एक राष्ट्र।
नेपाळो–(न०) जमालगोटा।
नेप–(ना०) १ खेती की निपज। उपज। पैदाइश।
नेफो–(न०) पायजामे लहंगे आदि का वह ऊपरी भाग जिसमें नाडा (नारा) डाला जाता है। नफा।
नेम–(न०) १ नियम। २ प्रतिज्ञा। ३ रीति। रिवाज। ४ धार्मिक क्रियाओं का पालन।
नेमणो–(क्रि०) नक्की करना। निश्चय करना।

नेमत-दे० निग्रामत ।
नेमधरम-(न०) १ पूजा पाठ ग्रादि धार्मिक कृत्य । २ वे कृत्य जो धर्म से संबंध रखते हैं ।
नेमियो-(वि०)१ नियम से पूजा पाठ करने वाला । २ नियम का पालन करने वाला । नियम से पालन करने वाला । नियमी । नेमी ।
नेर-(न०) १ कतिपय नगरों के नाम के ग्रंत में लगने वाला प्रत्यय । जैसे—बीकानेर, चपानेर जोधनेर ग्रादि । २ नगर का ग्रपभ्रंश रूप । ३ नगर ।
नेव-(न०) १ छप्परे की छाजन का थेपडा । खपरेल । २ नरिया । ३ छप्पर की किनारी जिसमें होकर बरसात का पानी नीचे टपकता है । छप्पर के छोर के खपरे । ग्रोलती । ग्रारी । ४ ग्रोलती में से गिरने वाला पानी ।
नेवगो-दे० नेगो ।
नेवज-(न०) देवता को ग्रर्पण किया जाने वाला मधुरान्न । नवेद्य । भोग । प्रसाद ।
नेव भरणो-(मुहा०) १ त्रुटि होना । २ दोष या ग्रवगुण होना । ३ छप्परे से पानी टपकना । ग्रोलती में से पानी गिरना ।
नेवर-(न०) १ स्त्री के पांवों का एक गहना । नेवरी । २ पाजेब । नुपुर । नेपुर । ३ कोतल घोडे के एक पाँव में पहिनाया जाने वाला एक जेवर । नेवर ।
नेवरी-(न०) १ स्त्री के पांवों का एक गहना । नेवरी । २ पाजेब । नूपुर ।
नेवाण-(न०) जसलमेर जिले का एक प्रदेश । दे० निवाण ।
नेस-(न०)१ दान में दी हुई भूमि या गाव । २ घर । मकान । ३ प्रदेश । ४ किसानों तथा ग्वालों का जगल में बनाया हुग्रा भौंपड़ों वाला छोटा गाँव । ढाणी । ५ जगल में बनाया हुग्रा ग्रस्थाई निवास । ढाणी । ६ ऊंट के ग्रायु सूचक दांत दांत । ७ तालाब भर जाने पर पानी के निकाल के लिये बनाया हुग्रा मार्ग । नसटो । ८ ग्रसुर । राक्षस ।
नसटो-(न०) तालाब भर जाने पर पानी के निकाल के लिये बनाया हुग्रा मार्ग । नेस । ओटो ।
नसावर-(वि०) १ वह जिसके नेस के दाँत ग्रा गये हो (ऊंट) । २ पक्का । खरा ।
नेह-(न०)१ स्नेह । प्रेम । २ तेल । स्नेह ।
नेहनी-(ना०) मथानी को सीधी खडी रखने का जिलौन का एक उपकरण ।
नेहडो-(न०) स्नेह । नेह ।
नेहडो-दे० नेहढो ।
नेहढो-दे० निसरडा ।
नेहप्रिय-(न०) दीपक । दीवो ।
नेह भीनो-(वि०) स्नेहसिक्त ।
नेहालदी-(ना०) प्रेमिका । (वि०) स्नेह लुब्धा ।
नेही-(वि०) प्रेमी । स्नेही । (न०) मित्र । सखा ।
न-(प्रत्य०) १ कर्म कारक की विभक्ति । को । जैसे—राम ने ग्रावण दो ग्रर्थात राम को ग्राने दो । २ क्रिया (मूलधातु) के ग्रंत में लग कर करके कर, के ग्रर्थों को प्रकट करने वाला एक प्रत्यय जैसे—'रोटी खायने ग्राऊ हू ग्रर्थात रोटी खाकर (खा करके या खा के) ग्राता हूं' । ३ एक संयोजक ग्रव्यय । वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोडने का काम करता है । ग्रौर । व । एण्ड । जैसे— राम न केशव रोटी खाय रया है ग्रर्थात राम ग्रौर केशव रोटी खा रहे हैं । ४ दिशा सूचक शब्द के साथ लग कर 'ग्रोर तरफ ग्रर्थ को व्यक्त करने वाला एक ग्रव्यय । जैसे—'ग्रठीन कठीन

नोकरी–(ना०) सेवा । नौकरी । चाकरी ।

नोकार–(न०) जन धर्मानुयायियो के जपने का एक मत्र । नवकार ।

नोकारसी–(ना०)१ मात्र जनो को कराया जाने वाला भोजन समारभ । नौकारशी । २ एक व्रत (जन) ।

नोख–(ना०) १ बात । २ अच्छी बात । चोज । ३ आश्चय । (वि०) १ अद्वितीय । अनोखा । २ सुदर । ३ नया ।

नोखाई–(ना०) १ अनोखापन । विलक्षणता । विशेषता । २ नवीनता । ३ सुदरता ।

नोखी–(वि०)१ अद्भुत । नयी । २ जुदी । अलग ।

नोखीलो–(वि०) १ अनोखा । अद्भुत । २ सुन्दर ।

नोखो–(वि०) १ अनोखा । अद्भुत । २ नया । ३ जुदा । अलग । ४ दूर ।

नोघरी–(ना०) १ पहुँचे का एक गहना । २ नौ कोठो मे नौ ग्रहो क नौ रत्नावाला पहुचे म पहना जाने वाला एक गहना । नवग्रही । नवग्रही ।

नोछावर–दे० निछावर ।

नोज–(अव्य०) १ नही । नही ज । २ कभी नही । ३ क्यो । किसलिए । ४ न हो । ५ या न हो कि । एसा न हो कही । नौज ।

नोजणो–(क्रि०) नोइनी । नोई । छाद । नवजणो ।

नोजा–(न०) चिलगोजा । नेजा । नवजा ।

नोट–(न०) १ राज्य सरकार की ओर स प्रवर्तित वह कागज जिस पर राज्यचिन्ह और रुपया की सख्या छपी रहती है और जो उतने रुपया क रूप म चलता है । कागज का सिक्का । २ यादगाश्नी । ध्यान रखन क लिये लिखी जान वाली सक्षिप्त पंक्तिया । सार लेख । सार भाव । ३ टिप्पणी ।

नोपत–दे० नोबत ।

नोबत–(ना०)१ देवमदिरो या राज्यप्रासादो आदि म शहनाई के साथ बजाया जाने वाला एक मगलसूचक बाजा । नौबत । २ बडा नगाडा । ३ दशा । स्थिति । ४ सयाग । ५ वारी । पारी ।

नोबतखानो–(न०) १ मदिर प्रासाद आदि का वह स्थान जहा नौबत बजाई जाती है । २ मदिर राज्यप्रासाद आदि मे नौबत ढोल आदि वाद्य रखे जान का स्थान ।

नोबती–(न०) नौबत बजाने वाला ।

नोरता–(न०) १ नवरात्र काल । नवरात्रि के दिन । २ चत्र सुदी और आसोज सुदी प्रतिपदा स नवमी तक क नौ दिन जिनम नवदुर्गा का विशेष अनुष्ठान किया जाता है । ३ दुर्गापूजा का विशिष्ट उत्सव । ४ नवरात्रि के दिनो म किय जाने वाले व्रत उपवास ।

नोरियो–(न०) १ हिंस्र पशु का नख । २ हिंस्र पशु के नख की लगी हुई रगड । ३ नख की घषरण । ४ नाखून । नख ।

नोरा–दे० नोहरो ।

नोळ–(न०) ऊट क भाग न सकने क लिय अगल दोनो पाँवो मे बाँधी जाने वाली लोह की एक साकल । उँट भस आदि के पावा म बाधने का साकल जसा एक उपकरण ।

नोलखो–(वि०)नौ लाख रुपया के मूल्य का ।

नोळियो–(न०) नेवला ।

नोळी–(ना०) करधनी की तरह कमर म बाँधने की कपड की लम्बी थली जिसम रुपये भरे रहत हैं । बसनी ।

नोहराळ–(न०ज०व०) सिंह रीछ, चीता बिल्ली कुत्ता आदि ताक्ष नखो वाले हिंसक पशु

इत्यादि। (ना०) १ हुक्के का नली। २ नली। (प्रत्य०) १ किन्तु। लेकिन। २ क्योंकि। ३ केवल।
नैचो-(न०) हुक्के की वह नली जिस पर चिलम रखी जाती है। नचो।
नठो-दे० नठो।
नडापणो-(न०) निडरता।
नडापो-दे० नडापणो।
नडो-दे० नडा।
नण-(न०) नेत्र। नयन।
नैणसुख-(ना०) एक सूती कपड़ा।
नत-(ना०) १ विवाहादि म सगे सम्बन्धी आदिकों की ओर से दी जाने वाला नकद भेंट। २ नत देन की प्रथा। दे० नूतो।
नतणो-(क्रि०) १ भोजन के लिए योता देना। निमंत्रण देना। २ विवाह के भात (भोजन समारोह) म बरात को निमंत्रण रूप म गीत गाती हुई कन्यापक्ष की स्त्रियों का बरातियों के तिलक करने को जाना। कुंकुम, अक्षत नारियल आदि मांगलिक वस्तुओं और गीतों द्वारा अभिमन्त्रित करके भात म भोजन करने का निमंत्रण देना।
नतरणो-दे० नतणो।
नैतियार-(न०) निमंत्रित व्यक्ति। (वि०) निमन्त्रित।
नतो-(न०)निमंत्रण। भोजन का निमंत्रण। योता। नूतो।
नैदण-दे० नदाण।
नदाण-(न०) १ खेत मे नाज उग आने पर उसके आस पास के घास की की जाने वाली कटाई। २ खेत की शुद्धि। निराने का काम।
नदावणो-दे० नदाण।
ननप-(ना०) १ आर्थिक दृष्टि से कमजोर स्थिति। अर्थाभाव। २ वह अवयस्क परिवार जिसम बुजुर्ग नहीं हो। कुटुम्ब म बड़े आदमी का न होना। ४ खोट। कमी। क्षति। ३ अवयस्कता। नाबालिगी। ५ अवनति।
ननपण-(ना०)१ बचपन। छोटापन। २ नाबालिगी।
ननम-दे० ननप।
नना-(वि०) १ छोटा। २ महत्त्व रहित। ३ तुच्छ। क्षुद्र। (न०)बच्चा। बालक।
नना-सूनो-(वि०) साधारण। मामूली। नाचीज। छोटा सा।
नया-(न०) खाती का एक औजार।
नरणी-(ना०) नाखून काटने का एक औजार। नखबरणी।
नैराई-(ना०) १ ढिलाई। सुस्ती। २ देरी। समय। ढील। ३ धीरज।
नरात-दे० निरांत।
नैरित-(ना०) पश्चिम-दक्षिण के बीच की दिशा। नैऋत्य दिशा।
नरो-(न०) १ श्मसान। मसान। २ श्मशान तक शव के साथ जाने की क्रिया। शव का अग्नि संस्कार करने को जाना। लोकाचार। (वि०) न्यारा। अलग।
नवादो-(वि०)१ स्वाद रहित। नि स्वादु। अस्वादिष्ट। २ बिगड़े हुये स्वाद का। ३ बासी।
नवेद्य-(न०) देवता को अर्पण किया जाने वाला मधुरान्न। भोग।
नहडो-दे० निसरडो।
नैहडो-दे० निसरडो।
नढा-दे० निसरडो।
नोक-(ना०) १ नोक। अनी। अणी। सिरा। २ अग्रभाग। ३ सूक्ष्म अग्रभाग।
नोकर-(न०) सेवक। नौकर।
नोकरणी-(ना०) नौकरानी।
नाकराणी-दे० नोकरणी।
नाकरियात-(वि०) नौकरी करने वाला।

नोकरी-(ना०) सेवा । नौकरी । चाकरी ।
नोकार-(न०) जन धर्मानुयायियो के जपन का एक मंत्र । नवकार ।
नोकारसी-(ना०)१ मात्र जनो को कराया जाने वाला भोजन समारंभ । नोकारशी । २ एक व्रत (जन) ।
नोख-(ना०) १ बात । २ अच्छी बात । चोज । ३ आश्चर्य । (वि०) १ अद्वितीय । अनोखा । २ सुंदर । ३ नया ।
नोखाई-(ना०) १ अनोखापन । विलक्षणता । विशेषता । २ नवीनता । ३ सुंदरता ।
नोखी-(वि०)१ अद्भुत । नयी । २ जुदी । अलग ।
नोखीलो-(वि०) १ अनोखा । अद्भुत । २ सुंदर ।
नोखो-(वि०) १ अनोखा । अद्भुत । २ नया । ३ जुदा । अलग । ४ दूर ।
नोघरी-(ना०) १ पहुँच का एक गहना । २ नौ कोठो मे नौ ग्रहों के नौ रत्नोंवाला पहुँचे म पहना जाने वाला एक गहना । नवग्रही । नवग्रही ।
नोछावर-दे० निछावर ।
नोज-(अव्य०) १ नहीं । नहीं ज । २ कभी नहीं । ३ क्यों । किसलिए । ४ न हो । ५ यो न हो कि । ऐसा न हो कहीं । नोज ।
नोजणो-(क्रि०) नोइनी । नाइ । छाद । नवजणो ।
नोजा-(न०) चिलगोजा । नेजा । नवजा ।
नोट-(न०) १ राज्य सरकार की ओर से प्रवर्तित वह कागज जिस पर राज्यचिह्न और रुपया की संख्या छपी रहती है और जो उतने रुपया के रूप म चलता है । कागज का सिक्का । २ यादाश्ती । ध्यान रखने के लिये लिखी जान वाली संक्षिप्त पंक्तियाँ । सार लेख । सार नोट । ३ टिप्पणी ।
नोपत-दे० नोबत ।
नोबत-(ना०)१ देवमंदिरो या राज्यप्रासादा आदि म शहनाई के साथ बजाया जाने वाला एक मंगलसूचक बाजा । नौबत । २ बड़ा नगाड़ा । ३ दशा । स्थिति । ४ संयोग । ५ बारी । पारी ।
नोबतखानो-(न०) १ मंदिर प्रासाद आदि का वह स्थान जहाँ नौबत बजाई जाती है । २ मंदिर राज्यप्रासाद आदि म नौबत ढोल आदि वाद्य रखे जाने का स्थान ।
नोबती-(न०) नौबत बजाने वाला ।
नोरता-(न०) १ नवरात्र काल । नवरात्रि के दिन । २ चैत्र सुदी और आसोज सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें नवदुर्गा का विशेष अनुष्ठान किया जाता है । ३ दुर्गापूजा का विशिष्ट उत्सव । ४ नवरात्रि के दिनो म किये जाने वाले व्रत उपवास ।
नोरिया-(न०) १ हिंस्र पशु का नख । २ हिंस्र पशु के नख की लगी हुई रगड़ । ३ नख की घिसाई । ४ नाखून । नख ।
नोरा-दे० नोहरा ।
नोळ-(न०) ऊंट के भाग नहीं सकने के लिये अगले दोनो पाँवों म बाँधी जाने वाली लोहे की एक सांकल । ऊँट भैंस आदि के पाँवों म बाँधने का सांकल जैसा एक उपकरण ।
नोलखो-(वि०)नौ लाख रुपयो के मूल्य का ।
नोळियो-(न०) नेवला ।
नोळी-(ना०) करधनी की तरह कमर म बाँधने की कपड़े की नली जैसी थैली जिसमें रुपये भरे रहते हैं । वसनी ।
नोहराळ-(न०व०व०) सिंह, रीछ, चीता बिल्ली कुत्ता आदि तीखे नखो वाले हिंसक पशु

नोहरो-(न०) १ अनुरोध । निहोरा । २ मनुहार । ३ खुशामद । ४ गाय, भैंस आदि बाँधने का बाड़ा । बड़े भोज आदि की सामग्री तैयार करने का चारों ओर दीवाल से घिरा हुआ मैदान । बाड़ा ।
नौका-(ना०) नाव । डूंडो ।
नौकार-दे० नोकार ।
नौडियो-(न०) खींप या सिणिये के तृणों को बल देकर बनाई हुई रस्सी ।
नौडी-(ना०) दे० नौडियो ।
नौरंग-(न०) १ औरंगजेब । २ नवरंग पुष्प ।
नौरंगजेब-(न०) औरंगजेब बादशाह ।
नौरो-दे० नोहरो ।
नौरोजो-दे० नवरोजो ।
नौळ-दे० मोळ ।
नौलखो-दे० नवलखो ।
नौलासी-(ना०) छड़ी । दे० नवलासी ।
नौळियो-(न०) नेवला । नकुल ।
नौसादर-दे० नवसादर ।
न्याउ-(अव्य०) न्याय परक । न्याय संबंधी । (न०) न्याय ।
न्यात-(ना०)१ एक वर्ग या जाति का लोक समूह । ज्ञाति । जाति । बिरादरी । २ ज्ञाति भोज ।
न्यात-गंगा-(ना०) गंगा के समान पवित्र करने का महत्व रखने वाला ज्ञाति समूह ।
न्यात-जात-(ना०) १ अपनी ज्ञाति और दूसरी जाति । ज्ञाति और पर ज्ञाति । २ जात पांत ।
न्यात बारे-(वि०) ज्ञाति में से बाहर किया हुआ । ज्ञाति बहिष्कृत ।
न्याय-(न०)१ इंसाफ । न्याय । २ फैसला । निर्णय । (क्रि०वि०) निश्चय ही ।
न्यायकारी-(वि०) न्यायकर्ता ।
न्यायाधीश-(न०) न्याय विभाग का वह अधिकारी जो मुकदमों का निर्णय करता है ।
न्यायालय-(न०) अदालत । कचहरी ।
न्यायी-(वि०) १ न्याय करने वाला । २ न्याय पर चलने वाला । ३ न्याय से संबंधित ।
न्यार-(न०) १ मृतक की अरथी के साथ श्मशान तक जाने की क्रिया । न्यारो । लोकाचार ।
न्यारणी-(ना०) १ गाय भैंस आदि को नीरा जाने वाला घास चारा । २ न्यारिया की स्त्री ।
न्यारहाळो-दे० न्याराळो ।
न्याराळो-(वि०) १ न्यार के लिये जाने वाला । न्यारे जाने वाला । २ न्यारे गया हुआ ।
न्यारियो-दे० नियारियो ।
न्यारी-(क्रि०वि०) अलग । जुदी । (ना०) न्यारिये की पत्नी । नियारी ।
न्यारो-(क्रि०वि०) १ अलग । जुदा । (न०) नियार । नियारो । बरडो । दे० न्यार ।
न्याल-दे० निहाल ।
न्याळ-(ना०) शिकार के समय मनाई जाने वाली मांस की दावत । २ आखेट गोष्ठी । आखेट भोज ।
न्याव-दे० न्याय ।
न्यावटो-दे० न्याय ।
न्याव-पताव-(न०) १ न्याय निर्णय । २ पंचायत निर्णय । ३ पंच निर्णय । ४ न्याय । ५ न्याय करने का काम ।
न्यांई-(ना०) तरह । प्रकार ।
न्योछावर-दे० निछावर ।
न्योळ-मुखी-दे० न्योळ मुंही ।
न्योळ मुंही-(ना०) ऊंटनी की एक जाति । (वि०) नेवले मुंह वाली ।
न्रत्य-दे० नृत्य ।

न्रधोम-(वि०) १ धूम व मल रहित। २ प्रकाशवान्। उज्वल। ३ निर्धूम।

न्रप-(न०) नृप। राजा।

न्रपाळ-(न०) नरपाल। राजा।

न्रित-(न०) नृत्य। नाच।

न्रिप-दे० न्रप।

न्रिपाळ-दे० नृपाळ।

न्रिभ-(वि०) निर्भय। निडर।

न्रिभैमन-(न०) १ उदार। २ निडर। वीर।

न्रिमळ-(वि०) निर्मल। उज्वल।

न्हाल-(न०) मनोरथ सिद्धि। निहाल।

न्हवडावणो-(क्रि०) नहलाना। स्नान करवाना।

न्हवाडणो-(क्रि०) न्हवावणो।

न्हवाणो-दे० न्हवडावणो।

न्हवावणो-(क्रि०) नहलाना। स्नान करवाना।

न्हाठणो-(क्रि०) भागना। भाग जाना। नाठणो।

न्हाठ-भाग-दे० न्हास भाग।

न्हाणो-(क्रि०) १ नहाना। स्नान करना। २ भागना।

न्हाळणो-(क्रि०) देखना। निहारना। न्याळणो।

न्हावण-(न०) स्नान।

न्हावणो-दे० न्हाणो।

न्हासणो-(क्रि०) भागना।

न्हासभाग-(ना०) भगदड़। भागदौड।

न्होरियो-दे० नारिया।

न्होरो-दे० नहारो। नोहरो।